CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वविद्यालय प्रकाशन,
के ४०/६, भैरवनाथ,
वाराणसी-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनवरी

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

जरा मेरी सीधी पीठ और मजबूत हाथ पांव को तो देखिये

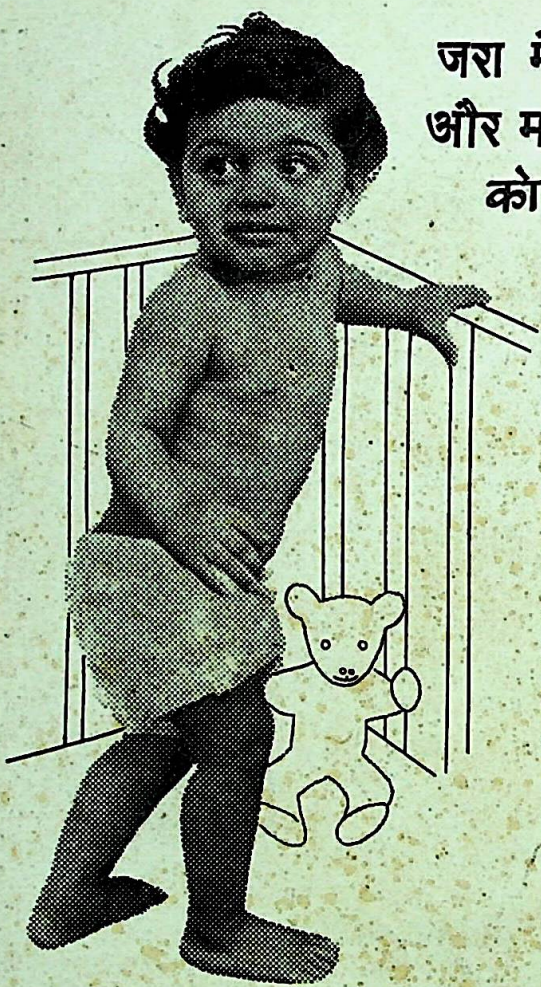

जब माँ ने खुद पिलाना बंद किया तो मेरे लिये शिशुओंका अत्युत्तम दुग्ध खाद्य "ओस्टरमिल्क" ही खरीदा, जो शुद्ध पौष्टिक और बहुत ही आसानीसे पचनेवाला है। अब मैं माँ का दूध पीनेवाले, किसी भी शिशु के इतना ही सुदृढ़ और तंदुरुस्त हूँ।

मैं ओस्टरमिल्क का शुक्र गुजार हूँ।

OSTERMILK

ओस्टरमिल्क माँ के दूध के समान

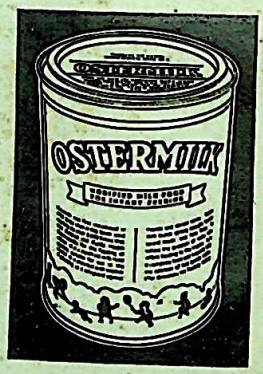

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • नई दिल्ली

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

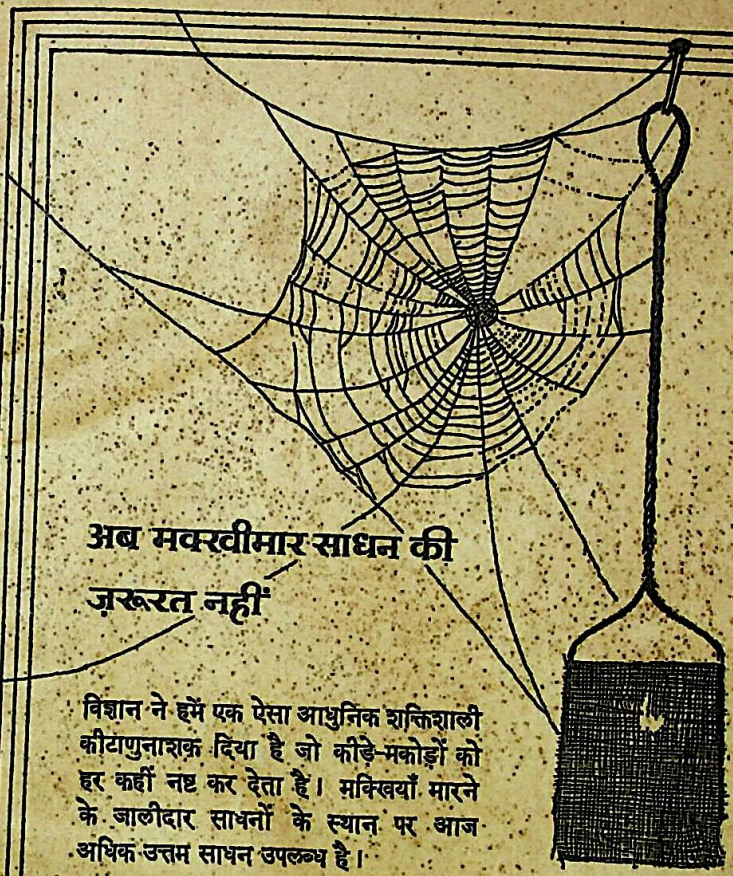

अब मक्खीमार साधन की ज़रूरत नहीं

विज्ञान ने हमें एक ऐसा आधुनिक शक्तिशाली कीटाणुनाशक दिया है जो कीड़े-मकोड़ों को हर कहीं नष्ट कर देता है। मक्खियाँ मारने के जालीदार साधनों के स्थान पर आज अधिक उत्तम साधन उपलब्ध है।

यह साधन है—डाईऐल्ड्रीन-युक्त शैल्टॉक्स। संसार के स्वास्थ्य-विशेषज्ञों ने यह जाँच करके सिद्ध किया है कि डाईऐल्ड्रीन एक अति शक्तिशाली कीटाणुनाशक है। जहाँ कहीं भी शैल्टॉक्स छिड़का जाता है उस स्थान के कीटाणु एकदम नष्ट होजाते हैं। फ़र्श, खिड़कियों, दीवारों, अल्मारियों आदि पर इस निरापद द्रव्य का छिड़काव कर देने मात्र से कीटाणु निकट नहीं आते।

आज गृहस्थ महिलाएँ, आहार-प्रदायक, मोटरचालक, उद्योगपति आदि, सभी लोग, आधुनिक तेल-अनुसंधान का लाभ उन पदार्थों द्वारा उठा रहे हैं जिनका वितरण बर्मा-शैल रात-दिन कर रहा है।

बर्मा-शैल . . . भारत के जीवन का एक अंग है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ीसा सिमेंट लिमिटेड

ताप अवरोधक उत्पादन :

शीघ्र ही प्रारम्भ होगा

आधुनिक उत्पादन विधि से निरन्तर भारी परिणाम में उच्चकोटि के ताप अवरोधक उत्पादन।

★ अग्नि मृत्तिका ★ कड़ा सफेद पत्थर ★ आजांगिज ★ वर्णकायन ★ विसंवाहन आदि। ★ सभी प्रकार माप और आकार के मट्टी, परिभ्रम और स्थापर वस्तुओं की सभी प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए

इस्पात, सीमेण्ट, शीशा और अन्य उद्योगों के लिए

डा० सी० ओटो एण्ड कंपनी, जर्मनी के सहयोग से

अनुसन्धान करें—

उड़ीसा सिमेंट लि०

राजगांगपुर, उड़ीसा

प्रबन्धकर्ता — डालमिया एजेन्सीज प्राइवेट लि०

O.C.H-12-57

A. I. A. B

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत की धुलाई-पद्धति में क्रान्ति लानेवाला राष्ट्र का अग्रदूत परिष्कारक डेट

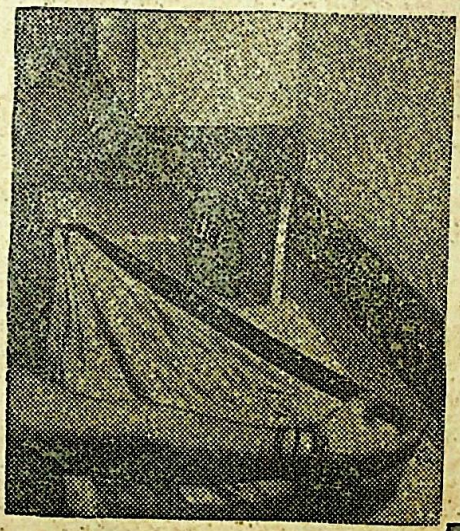

डेट एक सांश्लेषिक परिष्कारक है, वह साबुन की बुकनी नहीं हैं तथा तत्त्वतः साबुनविरहित है। किसी भी साबुन की तुलना में यह धुलाई में तेज है तथा गंदगी और चिकवाहट को पूरी तरह से हटाता है। यह आपको स्वच्छतम कपड़े के अधिक तर उपयोग तथा न्यूनतम घटाव का विश्वास दिलाता है, जो बढ़िया साबुन से भी मुमकिन नहीं है।

डेट फ़र्श, बर्तन, दीवारें आदि को भी धोता है क्यों कि वह परिष्कारक है। चाहे कपड़ा हों या फ़र्श, यह दोनो को समान कुशलता से धोता है।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि०, बम्बई

shilpi s-o-m 513 a hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी सहायता करें ताकि हम आपकी सहायता कर सकें

एक पुरानी कहावत है कि, 'स्वच्छता की गणना देवत्व के बाद है।' साफ-सुथरा वातावरण प्रसन्नता प्रस्फुटित करता है। बीमारियों के नियंत्रण में सफाई एक महत्वपूर्ण सहयोग देती है। रेलवे प्लेटफार्मों पर, प्रतीक्षालयों में और रेल के डिब्बों आदि में जहाँ अधिक संख्या में लोग जमा होते हैं, उनके स्वास्थ्य के लिए, यह अति आवश्यक है कि, हम स्वास्थ्य-सम्बंधी नियमों का पूर्णरूपेण पालन करें।

रेलवे की इन बीमारियों के प्रति जो मोर्चाबंदी है, उसमें आप निम्नलिखित रूप से सहायता कर सकते हैं—

—आप अपने आस पास के
स्थानों को साफ रखने में सम्पूर्ण
सहयोग दें और जरुरत पड़े तो
रेलवे के 'सफाई विभाग' के
कर्मचारियों की, भी मदद लें।
वे हर स्टेशन पर उपलब्ध हैं।

भारतीय रेलों के लिए उत्तर रेलवे द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश और विदेश में

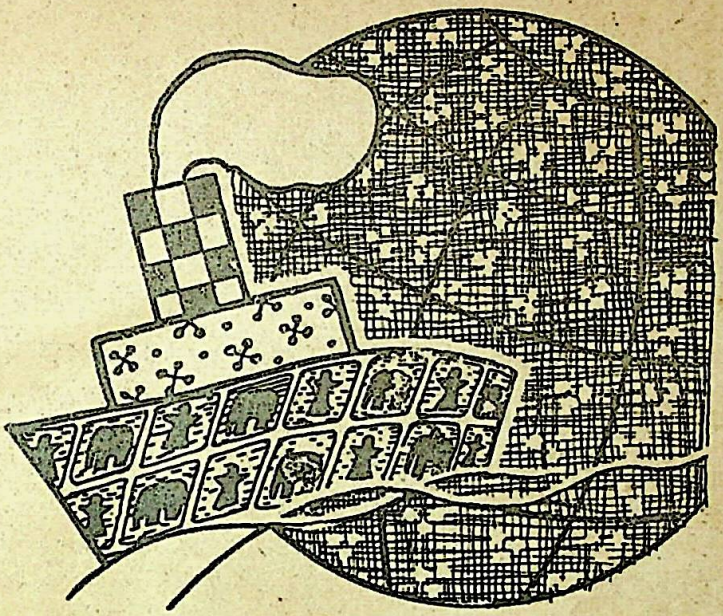

भारतीय हाथकरघा बुनकरों के लिए यह गर्व की बात है कि उनकी कुशलता और कारीगरी की अब देश में ही नहीं विदेशों में भी अत्यंत प्रशंसा हो रही है। फलस्वरूप हाथकरघा के वस्त्रों की मांग इतनी बढ़ गयी है जितनी कि अतीत में कभी न थी। प्रत्येक वस्त्र वैयक्तिक कुशलता का सुन्दर नमूना होता है, अतः इन वस्त्रों में बुनावट, डिजाइन और रंगों का सामंजस्य विविध और अनेक रूपों में मिल सकता है जैसा कि बृहत् मात्रा में तैयार होने वाले वस्त्रों में संभव नहीं। और मुख्य बात यह है कि इनके मूल्य प्रत्येक की सामर्थ्य के अनुकूल होते हैं।

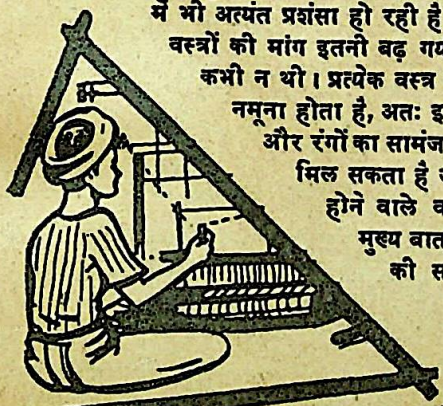

जिनकी आज
अत्यधिक मांग है

हाथकरघे के वस्त्र

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड
शाहीबाग हाउस, विटेट रोड, बम्बई।

ALL INDIA HANDLOOM BOARD

DA-57/239

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षय की गृह-चिकित्सा

क्षय की गृहचिकित्सा का तात्पर्य केवल औषधालयों की दवाओं का काम में लाना मात्र ही नहीं है।

इसका उद्देश्य रोगी को अपने परिवार एवं समाज के लिए सुरक्षित बनाकर क्षयरोग पर नियंत्रण पाना है। और यह कार्य रोगी की, उसके घर में ही, डाक्टरों एवं स्वास्थ्य रक्षकों द्वारा उसकी अक्सर देख-भाल द्वारा किया जाता है जो कि परिवार को स्पुटम का उचित उपार्जन एवं प्रयोग सिखाते हैं तथा रोक थाम के और भी अन्य उचित उपाय बताते हैं।

क्षय की सीलों के विक्रय से जो धनोत्पार्जन किया जाता है उससे इस कार्यक्रम को अत्यधिक सहारा मिलता है। तथा इसके उत्थान में सहयोग प्राप्त होता है।

अतएव, आप भी इन सीलों को खरीदकर अपनी शक्ति का पूरा सहयोग दीजिए।

भारत की आठवीं टी. बी. सीलों की बिक्री

क्षय की सीलों को काफी तादाद में खरीदकर अपने प्रान्तीय-संघठन के हाथों को मजबूत कीजिए।

सीलें निम्न स्थानों से प्राप्त हो सकती हैं :— ऑनरेरी सेक्रेटरी, बोम्बे प्रान्तीय क्षय-विरोध संघ, १५१ मिन्ट रोड़, रेडक्रॉस बिल्डिंग बम्बई, तथा प्रान्त की अन्य एजेन्सिया।

भारत में आठवाँ टी. बी. सील बिक्री अभियान

—विज्ञापनदाता—

हिन्द मिल्स लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम यहां ठहरते हैं.....

- पूर्ण वायुअनुकूलित
- निजी स्विमिंग पूल
- हर कमरे के साथ फोन, रेफ्रिजरेटर और फव्वारे के साथ स्नानघर
- कमरे ४०J और अधिक

दि अशोक होटल

पूर्व की सबसे बड़ी आरामदेह होटल

चाणक्यपुरी – नई दिल्ली

तार : "अशोक होटल" फोन : ३४४३१ (४० लाईन)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव में उसकी पसन्द का कारण है। उसे मालूम है कि वे देखने में सुन्दर हैं, बुनावट में मुलायम हैं, निर्दोष बुने हुये हैं, टिकाऊ हैं, पहनने में मजबूत हैं और इसके ऊपर भी वे उचित मूल्य के हैं। आप भी जब 'इन्दु फैब्रिक्स' पसन्द करेगें उसीकी भांति उत्सुक होंगे।

इन्दु फैब्रिक्स बम्बई

दि इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि.

भारत का सबसे बड़ा सूती मिल समूह.

२,४५,९०८ तकुये ६४१२ करघे

एजेण्ट्सः मेसर्स अग्रवाल एण्ड कंपनी.
इन्दु हाउस. डूगल रोड बलार्ड इस्टेट. बाबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंक सम्बन्धी
पूरी सुविधायें
आपकी सेवा में

चालू खाता
बचत खाता
मुद्दती खाता
कैश सर्टिफिकेट
हुण्डी का बट्टा
विदेशी विनिमय
सेफ-डिपौजिट वौल्ट
अग्रिम-ऋण

कार्यगत कोष
१५२ करोड़ रुपये
से अधिक

चेयरमैन :
एस० पी० जैन

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : सन् १८९५ ई०
प्रधान कार्यालय — दिल्ली
ए० एम० वॉकर — जनरल मैनेजर

BIS MIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंबई
शाखाएँ :
ठाकुरद्वार
कालबादेवी
परेल
और
दादर

साण्डू
च्यवन-प्राशावलेह
(अष्टवर्गयुक्त)

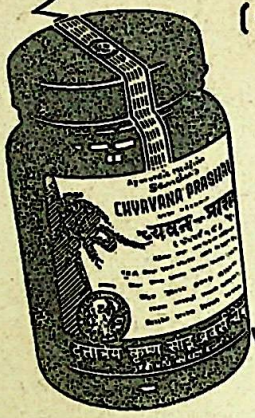

थण्डकालमे लेने के
लिये अुत्कृष्ट टॉनिक.
साथमे "चतुर्मुख"
लेनेसे जलद गुण
आता है.

दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रायव्हेट लि.
चेम्बूर-बम्बई-३८

बंबईके
मुख्य
वितरक
प्रामाणिक
स्टोर्स
मुगल
बिल्डिंग
डिलायल
रोड
बंबई—११

मॅक्लीन्स दाँतों को पहले से कहीं अधिक सफ़ेद और साफ़ रखता है!

MTY 44 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

REPRESENTATIONS

ARE

OFFERED

★

TWO THINGS
TO REMEMBER

"K"
for Kanoi
&
Kanoi
for
tea

KANOI TEA
(PRIVATE) LTD

POST BOX No. 982
CALCUTTA-I

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

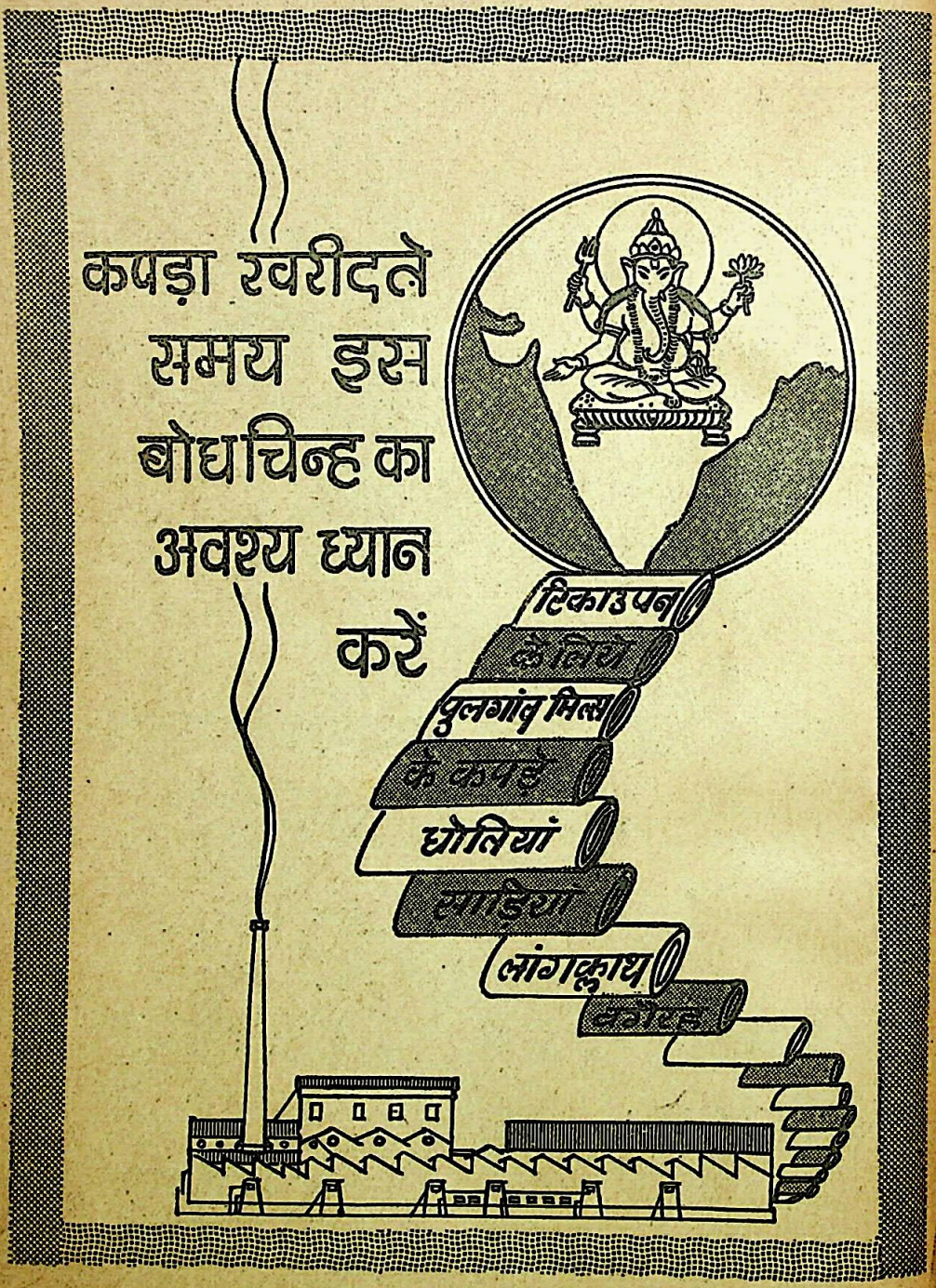

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection, Digitized by eGangotri

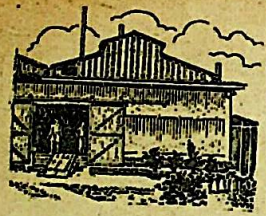

१९३७

१ लाख से ३० लाख छोटे औजार प्रतिवर्ष

१९५७

बदलता हुआ समय....

हिन्दुस्तान में औद्योगिक युग आ गया है। सारे देशमें मशीनों की आवाज औद्योगिक विस्तार की कहानी सुना रही है।

इन्डियन टूल मेन्यूफेक्चरर्स लि. का विकास छोटे अंशो में भारत के उद्योगिक विकास का दर्पण है। १९३७ के एक छोटे वर्कशाप से बढ़कर यह एक आधुनिक औजार बनाने का कारखाना बन गया है।

इसका छोटे औजार बनाने का उत्पादन १९३७ में १ लाख से बढ़कर १९५७ में ३० लाख से उपर पहुंच गया है। देश को सर्वोत्तम ट्विस्ट ड्रिल्स, रीमर्स, कटर्स और टैप्स की जल्दी और काफी मात्रा में आवश्यक्ता है, जिसे इन्डियन टूल मैन्यूफेक्चरर्स लि. पूरा कर रहा है—समय से आगे चलता हुआ।

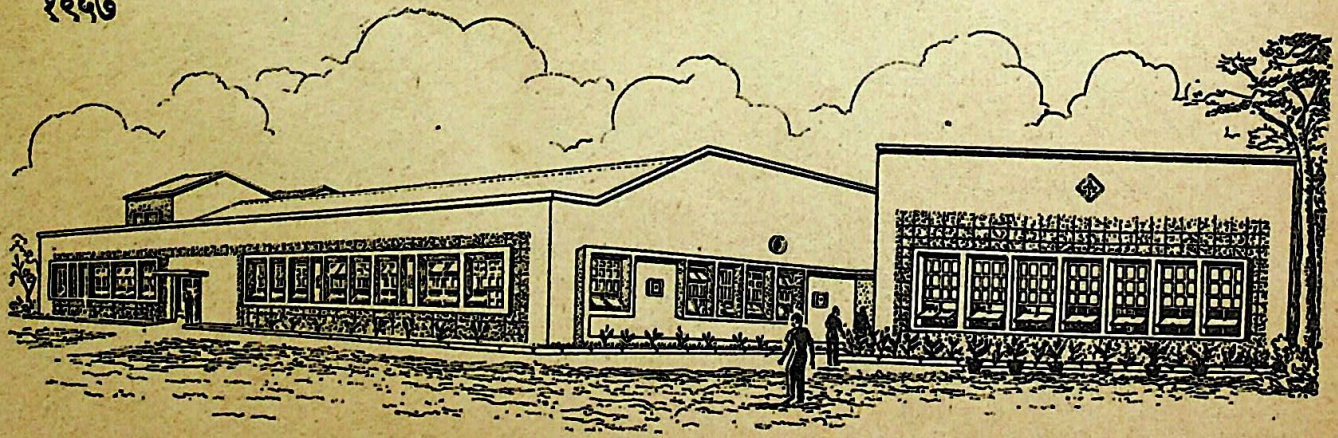

दि इन्डियन टूल मेन्युफेक्चरर्स लि० १०१, सायन रोड, बम्बई २२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर स्थान को
सुन्दर व आराम्प्रद
बनाइये

इस वर्ष और
प्रत्येक वर्ष

उषा
डि-लक्स पंखे

दि जे इंजिनीयरिंग वर्क्स लि०
कलकत्ता

बम्बई एजेन्ट : बाम्बे प्रीमियर ट्रेडिंग कं. २३०, हार्नबी रोड़, फोर्ट, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

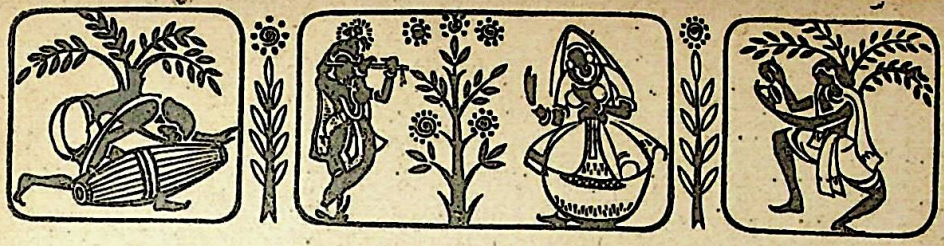

जनवरी

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

शिल्प: गोपालकृष्ण भोवे

सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र विद्याभूषण

लेख-सूची

१	अहंकार	परमहंस-वाणी	१
२	श्रद्धा परमधर्म है	'जातक' से	२
३	हृदय और बुद्धि	विनोबा	५
४	दुःख तो दुःख से ही... (गांधी-गंगा)	सुरेश शर्मा	६
५	मीनाक्षी-सुंदरेश्वर	श्रीगोपाल नेवटिया	९
६	नींव के पत्थर	रमण, बुंचे, कगावा	१५
७	मैं, पक्षी और हृदय	गगनविहारी मेहता	१७
८	दो अविनाशी स्मृतियाँ	अन्ना डोरोथी मजुमदार	१९
९	नेताजी	महात्मा गांधी	२०
१०	पिंजड़े का पक्षी	गाल्सवर्दी	२२
११	दर्पण में अपना मुख देखिये	विट्ठलदास मोदी	२४
१२	समय-सम्पुटों के खुलने पर	'कोरियर' से	२७
१३	गोवा	संकलित	३०
१४	भावी प्रजा को मेरा नमस्कार	काका कालेलकर	३२
१५	पक्षियों के आश्चर्यजनक देशाटन	सालिम अली	३४
१६	घर	हेमिंग्वे	३६
१७	युक्लिड : यूनान का वाचस्पति	अजितकृष्ण वसु	३८
१८	ज्यामिति : जीवन	प्लांक	४०
१९	अनुरोध (कविता)	अंचल	४३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०	प्राचीन मिस्र में...खेल-प्रतियोगिताएँ	मिस्र के प्रचार-विभाग से	४४
२१	प्राचीन भारत के 'स्टेडियम'	नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी	४५
२२	...बहुपति प्रथा : एक आवश्यकता	धर्मदेव शास्त्री	४७
२३	...मित्र बनाइये	'मानस-शास्त्री'	५१
२४	दूध क्या है	जे० एम्० बेरी	५३
२५	माइकेल-नाइजी	हंगेरियन लोक-कथा	५६
२६	केतकी अपनाने-योग्य खाद्य	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	६६
२७	बूँद-बूँद का सागर	'ज्ञान कोश' से	६८
२८	पांडु खाडे...	माधव केसरी	७०
२९	शिकारी शिकार हो गया	कप्तान जान हालैंड	७३
३०	कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	... ...	७८
३१	पत्नी (बंगला-कहानी)	नरेन्द्रनाथ मित्र	८१
३२	नहीं भूलेंगे (तमिल-कहानी)	'अखिलन'	८८
३३	ओल्गा (अमरीकी कहानी)	टिनेसी विलियम्स	९२
३४	कलापूर्णोदयमु (तेलुगु-महाकाव्य)	पिंगल सूरना	९७

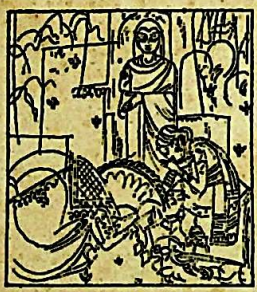

शस्त्र-संन्यास

[चित्र : दीनानाथ दलाल]

सूचना : 'नवनीत' में प्रकाशित प्रत्येक रचना, चित्र एवं स्केच पर 'नवनीत प्रकाशन लि०' का कापीराइट रहता है। अतः पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में इनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

वार्षिक मूल्य : दस रुपये — नवनीत प्रकाशन लि० — प्रति अंक : एक रुपया

विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये — ३४१, तारदेव, बम्बई ७ — विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठता का राज-पुरस्कार

भारत सरकार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

मुद्रण-आकल्पन राजपुरस्कार

श्रेष्ठता प्रमाणपत्र

१९५७

दैनिकेतर पत्र—'नवनीत' (हिन्दी डाइजेस्ट) पर
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, बम्बई को

गत २१ नवम्बर '५७ को भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा 'नवनीत' हिन्दी-डाइजेस्ट को प्राप्त श्रेष्ठता के प्रमाणपत्र का फोटो-चित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०	प्राचीन मिस्र में... खेल-प्रतियोगिताएँ	मिस्र के प्रचार-विभाग से	४४
२१	प्राचीन भारत के 'स्टेडियम'	नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी	४५
२२	...बहुपति प्रथा : एक आवश्यकता	धर्मदेव शास्त्री	४७
२३	...मित्र बनाइये	'मानस-शास्त्री'	५१
२४	दूध क्या है	जे० एम्० बेरी	५३
२५	माइकेल-नाइजी	हंगेरियन लोक-कथा	५६
२६	केतकी अपनाने-योग्य खाद्य	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	६६
२७	बूँद-बूँद का सागर	'ज्ञान कोश' से	६८
२८	पांडु खाडे...	माधव केसरी	७०
२९	शिकारी शिकार हो गया	कप्तान जान हालैंड	७३
३०	कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	... ...	७८
३१	पत्नी (बंगला-कहानी)	नरेन्द्रनाथ मित्र	८१
३२	नहीं भूलेंगे (तमिल-कहानी)	'अखिलन'	८८
३३	ओल्गा (अमरीकी कहानी)	टिनेसी विलियम्स	९२
३४	कलापूर्णोदयमु (तेलुगु-महाकाव्य)	पिंगल सूरना	९७

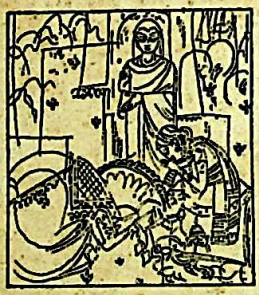

शस्त्र-संन्यास

[चित्र : दीनानाथ दलाल]

सूचना : 'नवनीत' में प्रकाशित प्रत्येक रचना, चित्र एवं स्केच पर 'नवनीत प्रकाशन लि०' का कापीराइट रहता है। अतः पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में इनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

वार्षिक मूल्य : दस रुपये — नवनीत प्रकाशन लि० — प्रति अंक : एक रुपया

विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये — ३४१, तारदेव, बम्बई ७ — विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठता का राज-पुरस्कार

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

मुद्रण-आकल्पन राजपुरस्कार

श्रेष्ठता प्रमाणपत्र

१९५७

दैनिकेतर पत्र—'नवनीत' (हिन्दी डाइजेस्ट) पर
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, बम्बई को

गत २१ नवम्बर '५७ को भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा 'नवनीत' हिन्दी-डाइजेस्ट को प्राप्त श्रेष्ठता के प्रमाणपत्र का फोटो-चित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूचना – मंत्रणालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित
पत्र–प्रदर्शिनी में शीर्ष स्थान में सुसज्ज 'नवनीत'!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ७ : : अंक १

जनवरी, १९५८

अहंकार

जरा-दुर्बल रामानुजाचार्य को सवेरे नदी-स्नान के लिए दूसरों के कंधों का सहारा लेना पड़ता था—जाते समय ब्राह्मण का और आते समय चमार का वे सहारा लेते। लोगों ने सक्षोभ पूछा—"प्रभो, स्नान के बाद शूद्र का सहारा? स्नान का क्या लाभ?" स्वामीजी बोले—"मुमुक्षुओ, अहंकार-दमन के उपदेशक को स्वयं भी अहंकार-शून्य होना चाहिए। स्नान से मेरा शरीर तो पवित्र हो जाता है; किंतु मन का मैल—अहंकार—तो क्षुद्रातिक्षुद्र के साथ एकाकार होने पर ही जाता है। अतः तन-शुद्धि के बाद मन माँजने के लिए मैं नित्य चमार के सहारे चलता हूँ।"

—परमहंस-वाणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धा परम धर्म है

श्रद्धा आचमनी है और ज्ञान भगवान् का चरणामृत। आचमनी ही ज्ञान को व्यक्ति तक पहुँचाती है। शुद्धाद्वैती वैष्णवों का यह मूल्यांकन आर्य-परम्परा की सनातन वाणी है। यहाँ हम 'जातक' के एक ऐसे ही प्रेरक साक्ष्य को प्रस्तुत करते हैं!

प्राचीन काल में, ब्रह्मदत्त वाराणसी के राजा थे। वे बड़े धर्मात्मा और प्रजापालक थे। उनके राज्य में न तो कभी अकाल पड़ता था और न महामारी ही आती थी। एक छोर से दूसरे छोर तक सारी प्रजा स्वस्थ, सुखी और समृद्ध थी। राजा बड़े पराक्रमी थे– प्रजा के प्रत्येक कष्ट-संताप से वे परिचित हो जाना चाहते थे। साथ ही, उन्हें अपने दोषों को जानने की भी जिज्ञासा थी। अतः एक दिन वे वेश बदल कर अपनी प्रजा की हालत देखने निकले। वास्तव में, वे यह जानना चाहते थे कि, उनके शासन में कहीं कोई गड़बड़ी तो नहीं है। अगर प्रजा असंतुष्ट होती, तो इसका अर्थ होता, शासन की अव्यवस्था और शासन की अव्यवस्था का अर्थ था, शासक की कमजोरी; किंतु ब्रह्मदत्त को कहीं कोई अपनी कमजोरी बतानेवाला नहीं मिला। तब उन्होंने राज्य अमात्यों को सौंपा और राजपुरोहित को ले, काशी से दूर, अपने दुर्गुणों की खोज के लिए निकल पड़े।

एक अन्य शहर में पहुँच कर, वे एक धर्मशाला में जा बैठे। थोड़ी देर बाद, उधर से शहर का एक करोड़पति गृहस्थ निकला। धर्मशाला में बैठे सुवर्ण-वर्ण और सुकुमार शरीरवाले ब्रह्मदत्त पर जब उसकी दृष्टि पड़ी, तो मन में श्रद्धा अनायास ही जाग्रत हुई। ब्रह्मदत्त से मिल कर उनसे कुछ देर वहीं रुकने का अनुरोध किया। फिर घर आकर उसने नाना प्रकार के स्वादिष्ट खाद्यान्न तैयार करवाये और सेवकों को थाली सजा कर ले चलने का आदेश दिया। जब वह ब्रह्मदत्त के पास पहुँचा, तो उस समय तक वहाँ हिमालयवासी एक तपस्वी भी आ पहुँचा था। नंदमूलक पर्वत से एक भिक्षु भी आकर वहीं बैठे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृहस्थ ने आदरपूर्वक राजा के हाथ-पैर धुलवाये और सेवकों को थाली उनके सामने रखने का आदेश दिया। किंतु राजा ने वह थाली अपने सामने से उठा कर राजपुरोहित को अर्पित कर दी। पुरोहित भी विचार कर उठा और उसने व्यंजनों की वह थाली उस हिमालय-वासी तपस्वी को दे दी। तपस्वी ने भी तत्काल ही थाली उठायी और श्रद्धापूर्वक भिक्षु के पास पहुँचा। बायें हाथ में भोजन की थाली तथा दाहिने हाथ में कमंडल ले, उसने सारा भोजन भिक्षु को अर्पित कर दिया। भिक्षु मौन थे। थाली के पाते ही उन्होंने उसमें से भोजन करना शुरू कर दिया और किसी से भी पूछे बिना, वे स्वयं सब भोजन खा गये।

बोधिसत्व

[चित्र : १२-वीं शताब्दी में चीन में निर्मित एक काष्ठ-शिल्प की सरल रेखानुकृति]

वह गृहस्थ, चकित-स्तब्ध खड़ा, यह सारा व्यापार देख रहा था। उसके उद्दीप्त कौतूहल पर एक प्रश्न अपराजित-सा खड़ा था। वह अपने-आप से ही पूछ रहा था—"मैंने उस सुकुमार गातवाले व्यक्ति को भोजन दिया, उसने ब्राह्मण को, ब्राह्मण ने तपस्वी को और तपस्वी ने उसे उस भिक्षु के भिक्षापात्र में डाल दिया। भिक्षु ने भी बिना किसी से पूछे, स्वयं सब खा लिया। आखिर इन सबके इस आचरण का क्या अर्थ है?" और, अपनी जिज्ञासा शांत करने के हेतु वह पहले राजा के पास गया। प्रणाम कर पूछा—"हे बंधु! तुम्हारा यह सुवर्ण-वर्ण और सुकोमल शरीर बता रहा है कि, तुम अवश्य ही किसी सम्पन्न और सम्भ्रांत कुल से सम्बंधित हो। तुमसे स्नेह हो जाने के कारण मैं तुम्हारे लिए अपने घर से भोजन बनवा कर ले आया; किंतु उन नाना प्रकार के पकवानों को स्वयं न खाकर तुमने उन्हें ब्राह्मण को दे दिया। तुम धन्य हो; लेकिन तुम्हारे इस आचरण का अर्थ क्या है? यह कौन-सा धर्म है तुम्हारा?"

राजा शांत भाव से बोले—"बंधु! तुम्हारे इस स्नेह के लिए मैं कृतज्ञ हूँ; किंतु ये ब्राह्मण देवता मेरे आचार्य हैं, मेरे लिए आदरणीय हैं—भोजन के लिए सर्वप्रथम आमंत्रित करने के योग्य हैं—इसी से मैंने वह भोजन इन्हें ही देना उचित समझा।"

गृहस्थ ने राजपुरोहित को प्रणाम कर अपना सवाल दुहराया। राजपुरोहित बोले—"मैं एक गृहस्थ हूँ। यह तपस्वी जीवन-मुक्त है। परिवार और अपने सगे-सम्बंधियों के प्रति मेरी आसक्ति है। इसके विपरीत, यह तपस्वी अध्यात्म-चिंतन का ही अनुरागी है। अतः यह मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धा का पात्र है, मुझसे अधिक यह तपस्वी लोकजीवन के लिए हितकर है। अतः भोजन पाने का पहला अधिकार इस तपस्वी ही को है, मुझे नहीं !"

तदुपरांत वह जिज्ञासु गृहस्थ तपस्वी के निकट गया और उससे भी वही प्रश्न पूछा। तपस्वी ने गृहस्थ के प्रश्न के उत्तर में कहा– "श्रद्धालु गृहस्थ, स्वाद को जीतना तपस्या का प्रथम चरण है। जिसने स्वाद के प्रति लोलुपता प्रदर्शित की, उसने अपनी रही-सही थाती भी खोयी। अतः मुझे यह स्वादिष्ट भोजन नहीं चाहिए। अतः मैंने यह भोजन उस भिक्षु के अर्पण कर दिया, जिसने स्वादेंद्रिय पर विजय प्राप्त कर ली है और जिसे स्वाद की माया पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकती !"

तब वह गृहस्थ भिक्षु के पास पहुँचा। प्रणाम कर बोला–"हे सुव्रती भिक्षु! तपस्वी ने तुम्हें वह पवित्र भोजन दिया और तुम उसे चुपचाप खा गये। तुमने किसी को भी खाने के लिए नहीं पूछा। भला यह कौन-सा धर्म है तुम्हारा ?"

भिक्षु ने जवाब दिया–"हे धर्मात्मन्, भोजन मेरे लिए खाद्य-मात्र है। चाहे वह पकवान हो या कंदमूल-फल। शरीर-धारण के लिए ही मैं खाद्य ग्रहण करता हूँ, स्वाद या बल-प्राप्ति के लिए नहीं। दूसरे, संग्रही या परिग्रही व्यक्ति ही अपरिग्रह को देता है। धर्म-नियम यही है; क्योंकि इससे अपरिग्रह में श्रद्धा बढ़ती है। इस दृष्टि से जितने व्यक्ति यहाँ उपस्थित हैं, वे सब परिग्रही हैं और मैं हूँ अपरिग्रही। अतः ये मुझे दें, यही प्रथम धर्म है। श्रेष्ठि, यह लोक, समाज और संसार, सब श्रद्धा के सिंचन से ही फलते-फूलते हैं। व्यक्ति से लेकर समाज तक श्रद्धा की जो शृंखला है, यदि उसकी कड़ियाँ कहीं से टूट जायें, तो यह जगत् चले कैसे ? श्रद्धा की इस धारा को अभंग बनाये रखना ही व्यक्ति और लोक का परम धर्म है। सद्गुणों और सद्गुणियों में ही नहीं, समस्त जड़-चेतन में श्रद्धा की भावना रखना धर्म की जड़ें सींचना है। इस श्रद्धा-भावना के खंडित हो जाने से ही शरीर में रोग, व्यक्ति में विकार और राष्ट्र में अधःपतन घर कर लेता है !"

अन्योक्ति

मुक्तं सभायां खलु मर्कटानां शाखास्तरूणांमृदुला सनानि।
सुभाषितं चीत्कृतिरातिथेयी दंतैर्नखाग्रैश्च विपाटनानि।

भावार्थ—अरे, बंदरों की सभा में और आशा ही क्या जा सकती! वहाँ तो वृक्षों की शाखाओं के ही 'कोमल' आसन, कर्णभेदी चीख-चीत्कार ही 'मृदुल' सम्भाषण और सुतीक्ष्ण दाँतों-नखों का प्रयोग ही 'मधुर' अतिथि-सत्कार होता है।

—'भामिनीविलास' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय और बुद्धि

आज की समस्त विसंगतियों के जनक बुद्धिवाद का विनोबाजी-द्वारा निर्दिष्ट एक अविफल उपचार

एक बार शंकराचार्यजी को कहना पड़ गया था—'जनकृपानैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम्।'—नैष्ठुर्य नहीं होना चाहिए। स्नेह-कृपा भी नहीं होनी चाहिए। कितनी भयंकर बात है! नैष्ठुर्य तो नहीं; परंतु स्नेह भी नहीं? स्नेह इतना हतभागी क्यों हुआ? उसको शंकराचार्य-जैसे महान् मति की मार इस प्रकार क्यों खानी पड़ी?

वास्तव में, प्रेम मार खाने-योग्य नहीं है; परंतु वह वैसा प्रायः बन जाता है। घर के अंदर वह काम-वासना का रूप ले लेता है और बाहर मत्सर का। इसीलिए शंकराचार्य ने यह भी कह दिया—'भूतदयां विस्तारय'—प्रेम और करुणा का विस्तार करो; क्योंकि प्रेम का विस्तार जब नहीं होता, तो उसका परिवर्तन दुर्गुणों में हो जाता है।

आधुनिक समाज स्पर्धा-प्रेरित है। अतः प्रेम का अनुभव होते हुए भी, उसकी शक्ति प्रकट नहीं होती। प्रेम के भीतर अपरिमित शक्ति है; परंतु वह प्रेम को खोलने में है, बंद रखने में नहीं। कुछ ताकतें ऐसी होती हैं, जो बंद रखने से प्रकट होती हैं और कुछ ऐसी, जो खोलने से प्रकट होती हैं। प्रेम के ठीक विपरीत क्रोध है। क्रोध को अगर खोल देते हैं, तो वह क्षीण हो जाता है। और यदि उसे पकड़ कर रखेंगे, तो तेजस्विता बढ़ेगी।

मैं मानता हूँ कि, आज हमारी बुद्धि ऋषियों से आगे बढ़ी हुई है। किंतु बुद्धि के साथ-साथ हमारा हृदय वैसा नहीं बढ़ा है, तो बुद्धि और हृदय में जितना अंतर होगा, असमाधान भी उतना ही पैदा होगा। हृदय छोटा हो और बुद्धि भी छोटी हो, तो भी समाधान हो सकता है। जंगल का जानवर कितना सुखी होता है; क्योंकि उसके दिल और दिमाग दोनों छोटे-छोटे हैं। असंतोष, असमाधान तो मनुष्य के जीवन में है; क्योंकि उसकी बुद्धि और हृदय के बीच अंतर पड़ा है। अगर हृदय छोटा है और वह बढ़ता नहीं, तो बुद्धि को छोटा बनाओ—ज्ञान को छोटा कर दो। मगर वह आज हो नहीं सकता; क्योंकि ज्ञान को छोटा करने का अर्थ है—भेड़-बकरियों का जीवन! किसी से किसी का सम्बंध नहीं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख तो दुःख से ही जायेगा

नववर्ष-समारम्भ के साथ 'नवनीत' अपने पाठकों के लिए एक अति मूल्यवान लेखमाला शुरू कर रहा है। राष्ट्रपिता गांधीजी देश के राजनीतिक स्वातंत्र्य के ही सूत्रधार नहीं थे, समग्र जीवन-विकास के भी वे मनीषी-शिल्पी थे। हजारों-लाखों व्यक्तियों के जीवन में उन्होंने काया-कल्प का समावेश किया था। किंतु आज हमारे सामने कुछ बड़े-बड़े लोगों-द्वारा लिखित संस्मरण-प्रसंग ही प्राप्य हैं। उनके अतिरिक्त अन्य सैकड़ों प्रेरक सूत्र जैसे लुप्त ही हो गये। सर्वसाधारण ने गांधीजी से क्या लिया, इसको लिपिबद्ध करने की दिशा में अभी कुछ नहीं हो पाया। 'नवनीत' इतना विशाल दायित्व तो नहीं ले सकता; किंतु एक दीपक की भाँति सूर्य के आने तक अँधेरे को प्रकाशित करने की चेष्टा अवश्य करना चाहता है। जब तक बन पड़ेगा, वह गांधीजी के सम्पर्क में आये सर्वसाधारण के पास जायेगा और उनके प्रेरणा-बिंदु अपने पाठकों के अर्पण करेगा। इस मास हम एक छोटे-से दुकानदार सुरेश शर्मा की स्मृति-अनुभूति प्रकाशित कर रहे हैं!

★

उस दिन दिल्ली में जब गांधीजी की प्रार्थना-सभा में गया, तो मैं निश्चय कर चुका था कि, वह दिन मेरी जिंदगी का अंतिम दिन होगा और उस शाम को इस संसार से जाते-जाते यों ही अकस्मात् मेरे मन में आ गया था कि, कम-से-कम एक बार तो गांधीजी को देख लूँ। उससे पूर्व, अपनी ३२ वर्ष की उम्र तक, मैंने गांधीजी को कभी नहीं देखा था। वास्तव में, ऐसा संयोग ही कभी नहीं आया था। यों मलाल हमेशा बना रहता था कि, अभी तक मैंने दुनिया के उस सबसे बड़े आदमी को नहीं देखा, जो मेरे ही देश में—मुर्दों को नयी जिंदगी देता हुआ, मेरे चारों तरफ—देश के हर कोने में घूमता फिर रहा है।

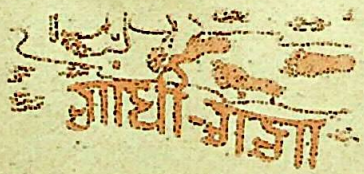

अपनी पत्नी, माँ और पिताजी को मैंने पत्र लिख रखे थे। पोस्ट बाक्स में डालने की ही देर थी। एक पत्र पुलिस-कमिश्नर के नाम भी मैंने लिख छोड़ा था। पिछले दो-तीन दिन से मन एकदम साफ हो चला था। हर चीज अपनी सही हालत में साफ-साफ नजर आने लगी थी। जिन लोगों से मैं लड़ता रहा था, जिनसे वैमनस्य था और जिन्हें मेरे कारण संताप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुँचा था, उनसे मैंने क्षमा-याचना पत्रों-द्वारा कर ली थी। लेन-देन का हिसाब भी निपटा दिया था। संसार के सारे प्रपंच-बंधन और राग-द्वेष से मुक्त, मैं ऐसे घूम-फिर रहा था, मानो इस भूमि पर मैं एकदम अजनबी हूँ— किसी सितारे से टपक कर यहाँ आ गया हूँ! होटल की खिड़की से लोगों की चिंतित चहल-पहल, उनकी सरगर्मी और जीवन का तुमुल संघर्ष— सब मेरे सम्मुख ऐसा अभिनय था कि, क्षण में मुझे उन पर दया आती और क्षण में उन सब पर मैं हँस पड़ता!

प्रार्थना शुरू हुई। गांधीजी को मैंने देखा। वे ध्यानमग्न, एकाग्र, अपने अंत-र्प्रदेश में केंद्रित बैठे थे। मैं देखता रहा, सोचता रहा उस तपोलीन मूर्ति के बारे में। रामधुन शुरू हुई। थोड़ी देर तक तो मैं निष्क्रिय-उदासीन-सा खड़ा रहा; किंतु शीघ्र ही मेरे होंठ भी हिलने लगे और मैं भी उस सामूहिक ध्वनि-साम्य में खो गया! फिर गांधीजी का प्यारा भजन 'वैष्णव जन' गाया गया—मेरे एकाग्र कानों की राह, वह मेरे दिल तक गया और बरबस मेरी आँखों में आँसू आ गये। इस भजन को कई बार लोगों को गाते हुए मैंने सुना था—काठियावाड़ के प्रवास में तो गाँव-गाँव में इसकी धुन कानों में समायी थी; किंतु प्रार्थना-सभा में तो वह भजन निराला ही रस दे रहा था।

मुझे ज्ञात नहीं है और मैं स्मरण भी नहीं कर पा रहा हूँ कि, कब मेरे नेत्र मुंद गये, उस गीत के प्रवाह में मैं कब खो गया! आत्म-विस्मृति के उन क्षणों में एक पुरानी दबी पड़ी याद—एक कभी पकड़ में न आनेवाली अनभूति—मेरे तन-मन में जाग गयी। काल ने जिसे मुझसे सदैव के लिए छीन लिया था और जिसे फिर से पाने के लिए मैं जन्म-जन्म के प्राणों के मूल्यों को भी तुच्छ समझता था, वह अनुभूति मुझे अनायास ही वहाँ मिल गयी—बिना मेरे खोजे, वह स्वयं ही जैसे मेरे पास चली आयी!

वह अनुभूति थी, मेरे बचपन की। बचपन में, रात के अंतिम ढलते प्रहरों में, जब मेरी नानी उठ कर चक्की पीसती थीं, तो वे इस गीत को अपने श्रद्धा-निर्भर गले से गाती थीं। मैं बिछौने में रजाइयों के नीचे दुबका उसे सुनता रहता था और उस तंद्रा और सर्दी की सिहरन में वह भजन बड़ा सुहावना—बड़ा प्रिय—लगता था। नानी के भजन के वे स्वर, अर्चना-लीन गले की आर्द्रता के वे कम्पन, मेरे प्राणों के प्रवाह में गति बना कर रम गये थे। किंतु एक दिन काल के हाथों सब लूट लिया गया। नानी चली गयीं; किंतु नानी का जो-कुछ भी 'सर्वश्रेष्ठ' था, वह तो मुझे प्राप्त था। मेरे ही अंतः-कोष में उसकी अवस्थिति थी। गांधीजी की प्रार्थना-सभा में वह प्रसुप्त—मेरे ही विकारों से विजड़ित—कोष खुल गया, मेरी खोयी निधि मुझे मिल गयी!

होटल में पहुँचा, तो रात-भर रोता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा। सवेरा होते-होते नींद आयी और जब उठा, तो सवा नौ बजे थे। किंतु दिन का प्रकाश फैलते ही; फिर वही अवसाद—जीवन की वे सारी जटिल गुत्थियाँ, जो मुझे आत्महत्या के निर्णय के किनारे लायी थीं! पिताजी का धर्म-संकट, उनकी बीमारी, विमाता की लोभाग्नि—जो परिवार के सारे शील और समृद्धि को चाट गयी थी—भाइयों की आपस में तनातनी, पत्नी को क्षण-प्रति-क्षण की यातना...और इन सब के ऊपर था, जमाने-भर का कर्जा! उसके साथ बँधी थी—कुललक्ष्मी की लाज, कुटुम्ब की पुरानी प्रतिष्ठा और उसका दबदबा!

जागने के साथ ही, ये सब गिद्धों की भाँति मुझ पर टूट पड़े। इस सामूहिक प्रहार से मैं तिलमिला उठा! कल का संकल्प फिर दृढ़ हो गया। अपनी दुर्बलता को मैंने खूब धिक्कारा। स्नान करके बाजार गया और एक अड्डे से पाँच रुपये में अफीम का एक ढेला खरीद लाया। दिन-भर कई मनसूबे बाँधता रहा। शाम हुई, तो फिर कदम प्रार्थना-सभा की तरफ मुझे घसीट ले गये और वहाँ फिर वही क्रिया शुरू हुई, जो कल हुई थी— वहाँ के वातावरण और अनुभूतियों ने मन को वैसे ही पिघला कर छोड़ दिया। किंतु उस दिन 'वैष्णवजन' के बाद एक और भजन गाया गया। भजन बँगला भाषा में था और बड़ी तल्लीनता में एक दाढ़ीवाले सज्जन ने उसे गाकर सुनाया था। बाद में, पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि, वह भजन रवीन्द्रनाथ ठाकुर का एक गीत था। गाने के बाद, उस गीत का भावार्थ भी हिन्दी में सुनाया गया, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। उस गीत का भावार्थ इस प्रकार था—

"दुःख की घटा घनघोर छायी है। चारों तरफ अंधकार की राशियाँ नागिनों की भाँति फुफकार रही हैं—तृण का भी अवलम्ब नहीं है..... किंतु तेरे रोने से क्या होगा? प्राण देने से क्या होगा? दुःख तो दुःख से ही जायेगा, रे! यह क्या सोचता है तू? क्या तू नहीं रहेगा, तो दुःख भी नहीं रहेगा? गलत है तेरा विचार! भ्रम में भूल गया है तू! तू हार कर जहाँ भी जायेगा, दुःख तेरे साथ जायेगा।.... भागना छोड़, जम कर खड़ा हो जा। दुःख अमर नहीं, तू अमर है। दुःख मरता है, मनुष्य नहीं मरता। छोड़ दे विषाद! थाम ले धीरज! दुःख ही तेरा शृंगार बनेगा, जीवन की निधि बनेगा!"

प्रार्थना के बाद, मैं सीधा होटल गया। सबसे पहले अफीम को नाली में फेंका, फिर सब चिट्ठी-पत्रियों को फाड़ा और बिल चुका कर बाहर निकल गया।

घर आया, तो परिस्थितियाँ और खराब थीं; लेकिन मेरा संकल्प दृढ़ हो चुका था। "दुःख मरता है, मनुष्य नहीं!"—यह ध्वनि-वाक्य मेरे तन-मन को अछेद्य बनाये हुए था। मैं संघर्ष में जुट गया और आज ग्यारह वर्ष बाद, मैंने जो चाहा, वही प्राप्त नहीं किया; बल्कि जीवन का शिल्प-कौशल भी मेरे हाथ आ गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

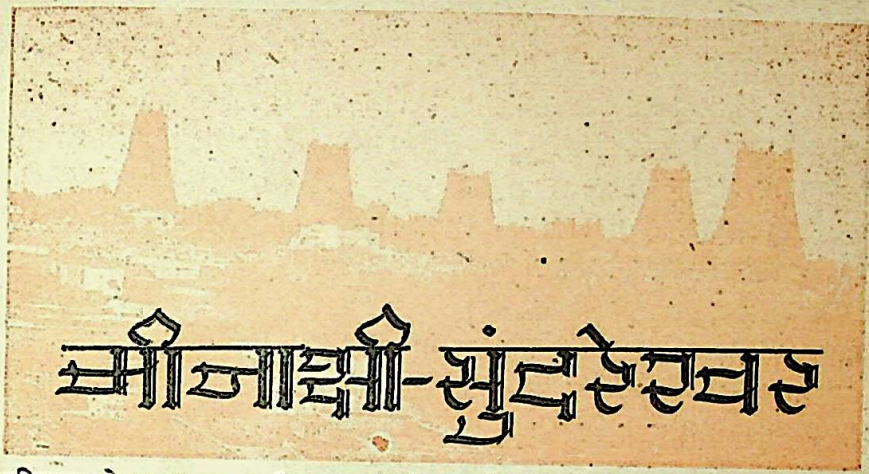

मीनाक्षी-सुंदरेश्वर

दक्षिणाचल के मानव-समाज की समस्त अंतश्चेतना और रसानुभूति अपनी पूर्णता में यदि कहीं चरितार्थ हुई है, तो वह मदुरा के मीनाक्षी-मंदिर में ! डा० आनंद कुमारस्वामी के उपर्युक्त आशय की एक झलक श्रीगोपाल नेवटिया-द्वारा लिखित प्रस्तुत लेख में देखिये। पिछले वर्षांत में, नेवटियाजी ने दक्षिणावर्त के देव-दर्शन के क्रम में मीनाक्षी-मंदिर के अप्रतिम शिल्प के भी दर्शन किये थे। पृष्ठभूमि में मंदिर-संस्कृति के प्रतीक मदुरा नगर का एक विहंगम-दृश्य है।

भारत का प्राचीन शिल्प दक्षिण के मंदिरों में आज भी अपने वैभव की गाथा अजस्र कह रहा है। दूर से दीखते गोपुरम् और मंदिर के भीतर की पाषाण-प्रतिमाएँ बोल कर बताती हैं कि, एक काल था, जब देश की अतुल समृद्धि इस रूप में प्रकट हुई थी।

दक्षिण के इन मंदिरों में सबसे सुंदर है, मदुरा का मीनाक्षी-मंदिर। यों, दक्षिण के सभी मंदिर देवता के नाम से प्रसिद्धि पाते हैं; पर मदुरा का यह मंदिर, भक्तों की कृपा से, देवी के नाम से ही पुकारा जाता है।

मदुरा दक्षिण का अति प्राचीन नगर है। श्रीलंका के 'महावंश' में मदुरा के पांड्यन-राजा की पुत्री से लंका के राजा विजय (५०० ई० पूर्व) के विवाह का उल्लेख है। मेगास्थनीज ने भी मदुरा और उसके पांड्यन-राजाओं का उल्लेख किया है। ईसा-पूर्व के वर्षों में मदुरा के यूनान और रोम से सम्बंध होने के भी प्रमाण मिलते हैं।

पांड्यन-शासकों में सबसे पहला उल्लेख, राजा उग्रपेरुवलुडि (१२८-१४० ई० पू०) का मिलता है—प्रसिद्ध काव्य 'कुरल' के रचयिता तिरुवल्लुवार के संरक्षक होने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण। १०-वीं शताब्दी में पांड्यन-शासकों को चोल-शासकों ने पराजित करके यहाँ १२-वीं शताब्दी तक शासन किया। १५-वीं शताब्दी में दिल्ली-सम्राट् के एक सेनापति मलिक काफूर ने मदुरा पर ४८ वर्ष तक अपना आधिपत्य रखा। बाद में, विजयनगर-सम्राट् ने उसे पराजित कर पांड्यन-राज्य की पुनःस्थापना की।

ईसवी सन् १५५९ से १७८१ के बीच का यह पांड्यन-शासन ही मदुरा का सर्वश्रेष्ठ जीवन-काल रहा है। आज जिस मदुरा के दर्शन मिलते हैं, वह इसी काल के 'नायक'-शासकों की देन है और मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर उन सबमें श्रेष्ठ है।

प्रसंग है कि, जब मलयध्वज पांड्यन ने पुत्रकामेष्ठि-यज्ञ किया, तो होमाग्नि से तीन स्तनोंवाली मीनाक्षी प्रकट हुईं। राजा विषाद-विचलित हो गये; पर उन्हें यह जान कर सांत्वना हुई कि, भावी पति का दर्शन करने पर यह तीसरा स्तन लुप्त हो जायेगा। राजा मलयध्वज की उत्तराधिकारिणी यही कुमारी मीनाक्षी हुईं। अनेक राजाओं को उन्होंने पराजित किया। अंत में, उन्हें मिले सुंदरेश्वर, जिनके दर्शन-मात्र से मीनाक्षी लज्जा एवं आदर से आपूरित हो गयीं और तत्काल ही उनका तीसरा स्तन भी तिरोहित हो गया। मंदिर के अष्टशक्ति-मंडप के एक भाग में उत्कीर्ण एक अत्यंत आकर्षक चित्र में मीनाक्षी और सुंदरेश्वर के विवाह का भी चित्रण किया गया है।

आगे है, मीनाक्षी-नायक-मंडप। द्वार पर शिव-पार्वती के दोनों पुत्रों— स्वामी कार्तिक एवं गणपति— की मूर्तियाँ हैं। सभी मंदिरों में प्रारम्भ में गणेश की मूर्ति रहती है; पर क्यों? इसका पुराण बड़ा रोचक है। एक बार माता-पिता ने कहा—"गणेश, विवाह कर लो।"

उन्होंने कहा—"कोई कन्या माता पार्वती के सदृश रूप, गुण एवं बलवाली मिले, तो विवाह करूँ।"

तब से क्वाँरे गणेशजी भीतर आनेवाली प्रत्येक कुमारी में अभीष्ट गुणों की खोज करने के लिए प्रत्येक मंदिर के बाहर बैठे हैं।

१६-वीं सदी के मध्य से १८-वीं शताब्दी तक के २०० वर्ष मदुरा-राज्य के भाग्याकाश में सूर्य के समान थे। नायक-घराने के योग्य शासकों ने मदुरा को सुराज, सुख-शांति और समृद्धि प्रदान की। नायक-घराने के प्रतिष्ठापक विश्वनाथ ने मदुरा नगर का पुनर्निर्माण किया। किंतु १७-वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, तिरुमलनायक के शासन-काल में, मदुरा ने जो समृद्धि प्राप्त की, वह नगरों के इतिहास में अद्वितीय है। आज से तीन सौ वर्ष पहले जिसकी वार्षिक आमदनी डेढ़ करोड़ रुपया हो, जनता के लिए कुछ खर्च करने की जिसकी जवाबदारी न हो, शत्रु के भय से जिस पर सेना का व्यय-भार न हो; पर हो मन में कलाकृतियों के निर्माण की महत्वाकांक्षा, वह क्या न करे? उसे ७२ विशाल गोपुरम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाने की साध थी; पर वह एक भी पूरा नहीं करवा पाया। हाँ, मीनाक्षी-मंदिर के विविध मंडपों, उनके स्तम्भों, और उनमें उत्कीर्ण मूर्तियों में तिरुमल-नायक की कला-प्रियता पूर्ण रूप से मूर्त हुई है। उसके जीवन का सबसे बड़ा सुख था, कलाकार को छेनी चलाते और एक-एक चोट के साथ उसके अपने मनोभाव को मूर्त-रूप में प्रकट होते देखना। वह कारीगरों को एकत्रित करता, उन्हें उत्साहित करता, उन्हें धन देता और अपने हाथ से पान खिलाता। उसने उनसे उस कला को प्रसूत करवाया, जो आज, सैकड़ों वर्ष बाद, भी कला-जगत् में भारत का मस्तक उन्नत किये हुए है।

आह्लाद-मूर्ति विष्णु के हाथों शिव-मीनाक्षी-पाणिग्रहण

[चित्र : मंदिर के एक शिल्प की रेखानुकृति]

किंतु जीवन तो विडम्बनाओं की निष्करुण क्रीड़ा है। कला को काल-विजयी बनानेवाला तिरुमल, कहते हैं, स्वयं ही अकाल-मृत्यु का ग्रास बना था। इस प्रसंग की कई जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। एक जनश्रुति के अनुसार, राजा तिरुमल अपनी २०० राजमहिषियों से भी संतुष्ट न रह कर एक परकीया की आसक्ति में पड़ा और कुयोग से गिर कर मर गया। दूसरी जनश्रुति के अनुसार, राजा ख्रिस्तियों के प्रभाव में आ गया और उसने हिन्दू-धर्म-शास्त्रियों की अवहेलना की। फलतः उसे कुएँ में ढकेल दिया गया और वह डूब कर मर गया।

प्रधान द्वार के पश्चात् मीनाक्षी-नायकन्-मंडप है। तिरुमलनायकन् के सचिव और मंदिर-निर्माण के प्रधान अधिकारी मीनाक्षी-नायकन् के नाम पर यह मंडप बना है। इसके आगे का मंडप है, मुदालि-मंडप। यहाँ के अँधेरे के कारण इसे 'अंध-मंडप' भी कहते हैं। आश्चर्य है, इतना कलापूर्ण यह मंडप इतना अंधकारपूर्ण है! पर भारतीय कला एवं देवाराधना का अँधेरे से गहन सम्बंध रहने की बात भी नयी नहीं है।

इस मंडप की आठ मूर्तियाँ पौराणिक गाथाओं को व्यक्त करती हैं। भिक्षुक-वेश में शिव एवं मोहिनी-रूप में विष्णु,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूर्तिशिल्प के उत्कृष्ट नमूने हैं। यहाँ एक ओर नाट्यशास्त्र-निर्धारित रूप-सज्जा-विभूषित नृत्य-सुंदरी का अप्रतिम शिल्प है, जिसके सम्मुख एक तपस्वी की मूर्ति भी है, जो सम्मोहित-सा उसे एकटक निहार रहा है।

इस मोहिनी के सम्मुख ही मूर्ति है, सती अनुसूया की। अनुसूया के जिस चरित्र को प्रकट करने के लिए यह मूर्ति उत्कीर्ण की गयी है, वह मननीय है। सतियों में शिरोमणि अनुसूया हैं– ऐसा कह कर नारद ने पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती के मन में ईर्ष्या की अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी। तीनों ने अपने पतियों को अनुसूया के परीक्षण के लिए बाध्य किया। तीनों भिखमंगे बन कर पहुँचे; पर भीख के साथ उन्होंने यह शर्त भी रखी कि, अनुसूया नग्न होकर भीख दें। अनुसूया बड़ी उलझन में पड़ गयीं। अंततः उनकी सतीत्व-शक्ति उदित हुई और उन्होंने तीनों को बालक बना कर दूध पिला दिया।

मुदालि-मंडप के आगे स्वर्णकमल-सरोवर है। नाम को सार्थक करने के लिए उसमें सुनहले ताम्बे का एक बड़ा सुंदर कमल बनाया गया है।

सरोवर के आगे किलिक्काट्टु-मंडप– तोतों का मंडप– है। कहते हैं, यहाँ मीनाक्षी देवी के प्रिय पक्षी, तोते रखे जाते थे।

इन सब मंडपों के बाद, सबसे भीतर का मंडप आता है, अर्द्ध-मंडप और उसमें विराजमान हैं, देवी मीनाक्षी। इतने विशाल गोपुरों और मंडपों के बाद एक छोटी-सी मूर्ति के सामने पहुँच कर अपनी श्रद्धा में तृप्त भक्त अनुभव करने लगता है कि इस समस्त वैभव की स्वामिनी देवी मीनाक्षी भुवन-स्वामिनी भी हैं!

मंदिर के दूसरे प्रधान कक्ष में शिव-मंदिर है। शिव यहाँ 'सुंदरेश्वर' नाम से लिंग-रूप में विराजमान हैं। सुंदरेश्वर में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर नटराज की बड़ी भव्य मूर्ति मिलती है। पुराण-वर्णित शिव के नृत्यों की सात मुद्राओं में से 'आनंद-तांडव'-मुद्रा इस मूर्ति में चित्रित है। नटराज की मूर्तियों में सर्वत्र शिव बायें पाँव पर नृत्यलीन पाये जाते हैं; किंतु यहाँ वे दायें पाँव पर नृत्य करते दिखाये गये हैं। इसका कारण स्थल-पुराण में इस प्रकार है– पांड्य-राजा राजशेखर नृत्यकला-पारंगत थे। शिव को निरंतर बाम पाद पर नृत्य करते रहने से जो श्रम होता है, उससे भक्त के हृदय को बड़ी पीड़ा पहुँची। उन्होंने शिवजी से प्रार्थना की–"हे भगवन्, यहाँ तो बाम पाद को विश्राम दीजिये।" शिव ने भक्त की प्रार्थना स्वीकार कर ली और वे वहाँ दक्षिण पाद से नृत्य करने लगे।

सुंदरेश्वर-मंदिर के सम्मुख का 'कम्बट्टाडि-मंडप' मदुरा ही नहीं, दक्षिण के सभी मंदिरों में सम्भवतः श्रेष्ठ है। इसके स्तम्भों में उत्कीर्ण मूर्तियों की तुलना नहीं की जा सकती। वृषभारूढ़ शिव-पार्वती, लिंग से उद्भूत होते शिव,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु को वर देते अनुग्रह-मूर्ति शिव, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर, त्रिपुरारि शिव, शिष्यों-सहित योग-संगीत-शिक्षक दक्षिणा-मूर्ति शिव, आदि मूर्तियाँ कला के उत्कृष्ट नमूने हैं; किंतु इनमें सर्वोपरि है, मीनाक्षी-सुंदरेश्वर के विवाह का चित्र। विष्णु पाणिग्रहण करवा रहे हैं। मनोनीत श्रेष्ठ पति की प्राप्ति पर नववध के मन के सलज्ज आह्लाद को कलाकार ने मीनाक्षी की मुद्रा में बड़ी एकाग्रता से उत्कीर्ण किया है। शिव भी यहाँ अवधूत नहीं, वे राज-पुरुष हैं। एक रूप-गुण-सुंदरी को वधू के रूप में पाकर पुरुष के मन में जो गौरव का उदय होता है, वह शिव-वदन पर जैसे सजीव हो उठा है। शिव-शक्ति के इस परिणय की मुदिता तो विष्णु की मुखश्री देखते ही बनती है!

'कम्पट्टादि-मंडप' से परे, पूर्वी द्वार की मूर्तियों में तीन शिव-रूप और चौथा काली का स्वरूप है। कलाविदों का कहना है कि, पाषाण में विविध अंगों-आभूषणों की गति और न्यास का इतनी सजीवता के साथ अंकन और कहीं नहीं। किंतु इन सबमें महत्वपूर्ण है— ऊर्ध्व-नृत्य की मुद्रा में शिव। उनका दक्षिण पाद ऊपर कान को छू रहा है। कहते हैं, काली शिव के प्रत्येक नृत्य की सफलतापूर्वक नकल करती चली गयीं, तब शिव ने ऊर्ध्व नृत्य के द्वारा उन्हें पराजित किया। दूसरी कथा यह है कि, ललाट-तिलक-नृत्य की भाँति इस नृत्य में शिव कर्णाभूषण के गिर जाने पर उसे पाँव के अँगूठे से उठा कर पहन रहे हैं।

मीनाक्षी-सुंदरेश्वर के इस भौतिक निवास का यह संक्षिप्त परिचय यहाँ के सहस्र-स्तम्भ-मंडप के उल्लेख के बिना अपूर्ण रहेगा। वास्तु-कला व मूर्ति-कला का यह उत्कृष्ट नमूना है। यहाँ कला ने कुछ स्वच्छंदता भी प्राप्त की है। देवताओं तक सीमित न रख कर, यहाँ कला मानव-जीवन में भी उतरी है। इस मंडप का निर्माण १६-वीं शताब्दी में आर्यनाथ मुदालि ने करवाया था। उनकी बड़ी मूर्ति यहाँ बनी हुई है।

इस मंडप के प्रवेश में कतिपय बड़ी महत्वपूर्ण मूर्तियाँ हैं— राजा हरिश्चंद्र की गाथा, मदुरा में पधारे कौतुकी शिव-द्वारा पत्थर के हाथी को गन्ना खिलाने की कथा, एक संतान को पीठ पर लादे, एक को टोकरी में लिये और एक को दूध

खुर्दबीन से होकर रही थीं, एक छो को कुरेदते हुए, समझाया— "देख चमत्कार! इसी केंद्रित करने मिलती है—इधर-खुर्दबीन के उस में सदैव पूरा-प्रयत्न किया है —डा० सी० वी०

में किसी काम तो बड़े उत्साह ा; पर शीघ्र उसे अपूर्ण ही था। गर्मियों मेरे पिताजी मुझे पुकारा— ऊँ।" मैं तुरत । अखबार के एक खुर्दबीन कर वे बोले— के ऊपर वे माते रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिलाती गरीब माता और पास ही वस्त्रा-भूषणों से लदे धनी पुरुष, कलियुग के प्रतीक स्त्री को कंधे पर लादे पुरुष, आदि चित्रण अपनी अभिव्यक्ति में अनुपम हैं। सरस्वती की मूर्ति भी विशेष उल्लेखनीय है—पतली कमर, उन्नत उरोज, सुडौल हाथ, वीणावादन के लिए बढ़े नख, वीणा के तार, सभी बड़ी सावधानी से उत्कीर्ण किये गये हैं मूर्ति उत्कीर्ण

सहस्र-स्तम्भ-मंडप के । सतियों में पर कामकला के चित्र कह कर नारद और भी कई मंदिरों में ऐ सरस्वती के है। सम्भवतः बुद्धिवादी ज्ज्वलित कर के सर्जन-सत्य को निर्विकों को अनुसूया करने की आज्ञा दी होगी; किया। तीनों चलानेवाले कलाकारों ने पर भीख के उसी निरपेक्षता से हृद भी रखी कि, यह विचारणीय है! दें। अनुसूया धर्मानुभूति लाखों में अंततः उनकी उपलब्ध होती है। अतः र उन्होंने तीनों प्रबोध सार्वजनिक नहीं हो दिया।

स्तर पर तो उसके स्वर्णकमल-को प्रायः विकृति ही स्पर्श करने के लिए

मदुरा-मंदिर नृत्य-मु क बड़ा सुंदर है। मीनाक्षी-सुंदरेश्वर है; पर नृत्य यहाँ के पत्थर-पत्थर में अनुप्राणित है। मंदिर के एक कक्ष में रखी छोटी मूर्तियाँ भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। इनमें से एक है, सुंदरेश्वर की एक स्वर्ण-प्रतिमा। इस मूर्ति पर एक नृत्य-कुमारी के चुम्बन का चिह्न अंकित है। स्थल-पुराण में इसकी कथा यों है— श्री पुष्पवन की नृत्य-कुमारी हेमा अपनी प्रत्येक प्राप्ति अपने आराध्य सुंदरेश्वर के अर्पण करती थी। उसकी सबसे बड़ी आकांक्षा यह थी कि, वह सुंदरेश्वर की स्वर्ण-प्रतिमा का निर्माण करे; पर इतना धन उसके लिए असम्भव था। निरुपाय, उसकी भक्ति उमड़ी में प्रवेश करते ने उसके बर्तनों को सोने की बड़ी भव्य । आराध्य के ही अनुग्रह वर्णित शिव के ध्य की इस मूर्ति के प्रति में से 'आनंद-त में इतना अनुराग उमड़ा चित्रित है। नट चूम लिया!

शिव बायें पाँव का ही नहीं, साहित्य का हैं; किंतु यहाँ के केन्द्र रहा है। सुंदरेश्वर-दिखाये गये हैं भाग में तमिल संघम् का पुराण में इस की स्थापना की रोचक राजशेखर नृत्य राण' में दी गयी है। को निरंतर बाम सरस्वती को पृथ्वी पर से जो श्रम होता पड़े; पर दया कर ब्रह्मा को बड़ी पीड़ा प एक साथ ही दे दिये। प्रार्थना की—'हे वती ४८ मानव-शरीरों में पाद को विश्राम कट हुईं— सब प्रकांड पंडित, की प्रार्थना स्वीक पांड्यन्-राजा ने उनको दक्षिण पाद आश्रय-आदर दिया और तमिल-भारती के संघ की स्थापना की। 'संघ'-द्वारा प्रशंसित हुए बिना कोई भी साहित्यिक कृति सम्मान नहीं पाती थी। उसी प्राचीन संघ का उत्तराधिकारी नया संघ सन् १९०९ से अब भी यहाँ पर चल रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नींव के पत्थर

बचपन मिट्टी का लौंदा है—जो साँचा मिले, उसी में ढल जाता है। अतः अच्छे साँचे की अपेक्षा अनिवार्य है। यहाँ हम तीन महापुरुषों के बचपन के प्रेरणा-सूत्र देते हैं, जिन्हें पकड़ कर वे आज कीर्ति के शिखर पर पूजित हैं। इस वर्षारम्भ से होनहार भावी नागरिकों के प्रेरणार्थ हम 'नवनीत' में प्रति मास इसी प्रकार के उद्बोधक मंत्र-सूत्र देने का प्रयास करेंगे।

★

खुर्दबीन

बचपन में, मैं किसी काम को शुरू तो बड़े उत्साह से करता था; पर शीघ्र ही ऊब कर उसे अपूर्ण ही छोड़ देता था। गर्मियों के मौसम में, एक दिन मेरे पिताजी ने अखबार पढ़ते-पढ़ते मुझे पुकारा—"देखो, एक तमाशा दिखाऊँ।" मैं तुरत ही उनके पास जा पहुँचा। अखबार के साथ-साथ उनके हाथ में एक खुर्दबीन भी थी। मुझे पास बैठा कर वे बोले—"देखो!" और, अखबार के ऊपर वे खुर्दबीन को कुछ देर तक घुमाते रहे। मुझे उसमें कोई खास बात नहीं दिखी; बोला—"कहाँ, कुछ भी तो नहीं है!" उत्तर में, वे मुस्कराये—"अब देखो।" और, खुर्दबीन को अखबार के ऊपर एक जगह उन्होंने कुछ देर के लिए स्थिर कर दिया। मेरे देखते-ही-देखते, अखबार में, जहाँ खुर्दबीन से होकर सूर्य की किरणें पड़ रही थीं, एक छेद हो गया। मेरे विस्मय को कुरेदते हुए, तब पिताजी ने मुझे समझाया—"देखा तुमने एकाग्रता का चमत्कार! इसी तरह एक जगह ध्यान केंद्रित करने से काम में सफलता मिलती है—इधर-उधर भटकने से नहीं!" खुर्दबीन के उस गुरुमंत्र को मैंने जीवन में सदैव पूरा-पूरा सम्मान देने का प्रयत्न किया है।

—डा० सी० वी० रमण (सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक)

★

रेलगाड़ी

गरीबी के कारण, पिताजी हम दोनों भाइयों के लिए दो रेलगाड़ियाँ लाने में असमर्थ थे; अतः दोनों के खेलने के लिए उन्होंने एक ही गाड़ी ला दी थी। यह गाड़ी हम दोनों भाइयों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाधिकार के लिए झगड़े की जड़ बन गयी। हम दोनों में उसके लिए रोज ही झगड़ा होता। इस झगड़े से परेशान हो, पिताजी ने अंत में, एक समाधान निकाला—"अच्छा, तो ऐसा करो, तुम दोनों बारी-बारी से, एक-एक सप्ताह, इस गाड़ी से खेलो। याद रखो, जिस सप्ताह जिसकी बारी नहीं होगी, वह गाड़ी को छूयेगा भी नहीं। लेकिन, एक बात और है— जिसकी बारी गाड़ी से खेलने की रहेगी, वही उस सप्ताह चूल्हे में जलाने के लिए लकड़ियों का भी प्रबंध करेगा।...." दोनों भाइयों की खुशी-रजामंदी से समझौता हो गया; किंतु दो सप्ताह से अधिक समय तक उसका पालन नहीं हो सका! बात यह थी कि, अकेले खेलने से मन तो संतुष्ट हो जाता था; पर खेल का आनंद नहीं आता था। दूसरी बड़ी समस्या थी, अकेले ही लकड़ियों का प्रबंध करना। अतः कटु अनुभव से प्रेरित हो, हमने यह तय किया कि, हम साथ-साथ ही खेलें और लकड़ियाँ जुटायें। हाँ, लज्जावश, पिताजी से इस नये समझौते के बारे में हमने बहुत दिनों तक कुछ नहीं कहा।...उस समय तो उस समझौते का कोई मर्म मेरी समझ में नहीं आया; पर आज सोचता हूँ कि, पिताजी ने कितने सरल ढंग से सहयोग का सुंदर सबक हमें सिखाया था!

—राफ बुंचे (प्रख्यात राष्ट्रसंघीय नेता)

टहनी का घोड़ा

उस समय मैं प्रायः छः वर्ष का था। एक दिन मुझे पिताजी के साथ टहलाने ले गये। धीरे-धीरे, हम घर से काफी दूर निकल गये और जब लौटने लगे, तब मैं पिताजी से बोला— "मैं बहुत थक गया हूँ। मुझे गोद ले लो।" उत्तर में, पिताजी ने कहा— "लेकिन थक तो मैं भी गया हूँ। तुम्हें गोद लेकर चलूँगा कैसे?" यह उत्तर पा, मैं रो-रोकर जिद करने लगा। पिताजी कुछ देर तक मौन खड़े रहे; फिर जेब से चाकू निकाल कर एक पेड़ की टहनी काटने लगे— "ओह, मुझे तो स्मरण ही नहीं था कि, मेरे बेटे का घोड़ा यहाँ भी मिल सकता है!" और, उन्होंने वह टहनी मुझे दे दी। 'घोड़ा' पाकर मैं अपनी सारी थकावट भूल गय' और उस पर सवार होकर "चल.. चला घोड़े...." कहता हुआ दौड़ने लगा। इस प्रकार हम हँसते-खेलते घर पहुँच गये।...वस्तुतः हमारे जीवन में भी तो यही होता है। जब हम मानसिक या शारीरिक दृष्टि से इतने थक जाते हैं कि, कुछ भी कर सकने में अपने को असमर्थ पाते हैं, तब यह 'टहनी का घोड़ा' ही तो मित्र, कविता, फूल प्रार्थना या बच्चे की मुस्कान के रूप में हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है!

—संत कगावा (जापान के गांधी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं, पक्षी और हृदय

वाशिंग्टन-स्थित भारत के राजदूत गगनविहारी मेहता-लिखित एक गुजराती गद्यकाव्य का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

कल रात, न-जाने क्यों मेरा मन अकस्मात् बड़ा खिन्न और अवसाद-पूर्ण हो गया था!

लेकिन दुःख की यह हिलोर मुझ पर सहसा क्यों छा गयी, कारण प्रयत्न करने पर भी मैं नहीं जान पाया हूँ।

...शायद दूर स्वदेश में बसे स्नेही-स्वजन-मित्रों के प्रति जो चिंता प्रायः व्याप जाती है, वही मेरे इस अवसाद का कारण हो।... या जीवन का अधिकांश शेष हो चुका है— थोड़ा रास्ता और बचा है, प्रतीति का यही गाम्भीर्य शायद मेरे मन पर बोझिल हो गया था।

...अथवा भविष्य के अँधेरे कोटर अकस्मात् चेतना को डरा कर, तन-मन के ढाँचे को अपनी जड़ता में जकड़ गये हों।

कारण यह हो अथवा वह—सबसे बड़ा सत्य जो मेरे सामने है, वह कुछ भी कारण हो; लेकिन यह है कि, मेरा मन सहसा शैथिल्य के शून्य में खो गया था।

इस क्लांति में टटोलते मुझे थोड़ा ही समय हुआ था कि, मेरे सामने की खिड़की के पास के वृक्ष पर एक मनोहर पक्षी उड़ कर आ बैठा—

कटि पर गागर
मन नट-नागर

[चित्र: रामचंद्र शुक्ल-निर्मित एक रेखाचित्र]

जब उसने बोलना शुरू किया, तो मुझे लगा, जैसे उसकी आवाज में मिठास की बनिस्बत व्यंग्य ही अधिक गहरा था। आशा और विश्वास के बजाय उसके स्वर में कटु कटाक्ष के ही उतार-चढ़ाव मुख्य थे। और, वह पक्षी धीरे-धीरे एक गीत गाने में लीन हो गया—

"भग्न-हृदय का पुनर्निर्माण फिर नहीं हो सकता।"

"यह बात मनुष्य कहता है, तो शायद सच ही होगी; लेकिन भग्न-हृदय के अर्थ क्या हैं? क्या वास्तव में, हृदय टूट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता है, या यह सब शब्दाडम्बर ही है !

"टूटे हुए पंखों को मैं जानता हूँ; फूटी हुई आँखें मैंने देखी हैं। बिखरे हुए पंखों को देख कर मेरी आँखों में आँसू भी आये हैं !

"बाज और चील से मैं डरता हूँ, बिल्ली मुझे और मेरे घोंसले को नष्ट कर देगी, इसका भय भी मुझे कम नहीं सताता है।

"शूर-वीर कहलाने के लिए, मानव हम-जैसे निरीह प्राणियों के संहारार्थ तीर-बंदूक चलाता है, इसे देख मेरे क्षोभ ने कभी-कभी अपनी सीमा भी त्यागी है।

"परंतु इतना सबके होते हुए भी मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि, हृदय कैसे टूटता है ! और, दरअसल 'हृदय' नाम की यह वस्तु है भी क्या ? मैं अकसर समझने की कोशिश करता हूँ।

"...जिसके विषय में प्रेमी-युगल निरंतर बातें करते थकते नहीं ?

"जिसके भग्न हो जाने के कारण विरह की वेदना सहन नहीं हो सकती !

"मैंने सुना है कि, ऐसी हालत में हृदय की चिकित्सा वैद्य नहीं; कवि करते हैं !"

× × × ×

"लेकिन प्रश्न मेरे सामने फिर वही है कि, इतना जिसका शोर है, वह हृदय वास्तव में, क्या है ?

"कहीं यह हृदय मनुष्य की कल्पना-मात्र तो नहीं है ?

"प्रबल अथवा तात्कालिक भावप्रवणता की बाढ़ तो नहीं है ?

"अथवा प्रेमोद्गार का आकस्मिक प्रवाह तो नहीं है ?

"इन प्रश्नों का उत्तर मेरे पास नहीं है और उत्तर खोजने पर मुझे प्रश्न के सिवाय कुछ मिला भी नहीं है। तो ऐसी स्थिति में, जब कि मैं सोच ही नहीं पाता कि, मनुष्य का हृदय क्या है, तब मैं अपने गीत में हृदय के सम्बंध में कह भी क्या सकता हूँ!

"...ऐसी अवस्था में प्रणय की क्लांति को मैं अपने स्वर में कैसे उतार लूँ ?

"विरह के आँसू की धारा से मैं अपने गीत को कैसे आर्द्र कर लूँ ?

"मृत्यु के रुदन को अपने कंठ से कैसे पूरित कर लूँ ?

"मगर मैं इन्कार भी नहीं कर सकता कि, हृदय-जैसी कोई चीज है ही नहीं !

"मनुष्य की दृष्टि मुझ से कहीं गहरी है, उसकी भावनाओं की जड़ें कहाँ-कहाँ से अपना रस लेती हैं और जब इतना सब सोचता हूँ, तो लगता है कि, मनुष्य ने हृदय को देखा-पाया होगा !"

और, वह पक्षी, बस इतना गीत गाकर वहाँ से उड़ गया। उड़ क्या गया, मेरे अंतर की व्यथा को और बढ़ाता गया !

✱

नारी के आँसू पोंछने से अधिक खतरनाक काम शायद ही मैंने देखा हो; क्योंकि आँसू नारी का अमोघ ही नहीं, अंधा शस्त्र भी है। —बर्नर्ड शा

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविस्मरणीय स्मृतियाँ

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के पुण्यस्मरण का यह प्रसंग जर्मनी-निवासिनी अन्ना डोरोथी मजुमदार की दैनंदिनी का एक मर्मस्पर्शी पृष्ठ है।

*

हम लोग काफी पी रहे थे– साथ-साथ बातचीत भी होती जा रही थी। बड़ा आत्मीयतापूर्ण वातावरण था। साथ ही, हमारी चर्चा के विषय भी ऐसे थे, जो उबाने की जगह उत्सुकता पैदा करते थे। सामान्यतः ऐसे अवसरों पर होनेवाली बातचीत को 'हल्की बातें' कहा जाता है। लेकिन मेरा अनुभव कुछ दूसरा ही है। ऐसे अवसरों पर होनेवाली बातचीत से मैंने प्रायः अजर-अमर चीज ही पायी है! उस दिन की बातचीत में भी यही हुआ – उस दिन मुझे एक ऐसी निधि मिली, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगी!

दक्षिणी जर्मनी में ब्रेंज नदी के तट पर बसे हाइडेनहिम नगर में यह काफी-पार्टी चल रही थी, अपराह्न-वेला में। हमारे मेजवान थे, एक यहूदी इंजीनियर, जो अभी-अभी, दो वर्ष पूर्व ही, रूसी कारागार से, स्वास्थ्य खराब होने के कारण, रिहा किये गये थे। उनकी पत्नी एक समय मेरे साथ पढ़ती थी, जिसके कारण मेरा उस परिवार से बहुत मेलजोल हो गया था।

हमारी बातचीत का विषय हर कुछ मिनटों के बाद बदल जाता था, जैसा कि ऐसे अवसरों पर सामान्यतः होता ही है। कई अन्य विषयों से उलझने के बाद, हम फील्ड-मार्शल रोमेल के दुःखद अंत पर

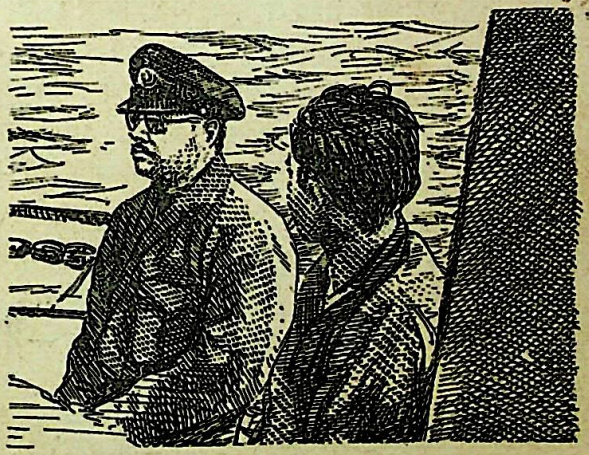

नेताजी श्री सुभाषचंद्र बोस का
यूरोप में लिया गया अंतिम चित्र
[चित्र : मूल चित्र का वी० एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टीका-टिप्पणी करने लगे। मार्शल रोमेल बीसवीं सदी के योग्यतम सेनापति थे—यहाँ तक कि, शत्रु भी उनकी रण-कुशलता की प्रशंसा करते थे। उनके प्रति हमारे सम्मोहन का एक दूसरा कारण यह भी था कि, वे हाइडेन-हिम के ही निवासी थे। जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, तब प्रायः ही उनकी माँ और बहन से मिलने जाती थी। उनकी बहन बचपन से ही मेरी सहेली रही है और अभी वह स्टुटगार्ट के प्रसिद्ध वाल्डर्फ-श्यूल में शिक्षिका है।

गत वर्ष रोमेल की विधवा पत्नी एवं पुत्र ने जब उनकी डायरी और अन्य कागज-पत्रों को प्रकाशित करवाया, तो बाजार में जैसे धूम मच गयी। इसी उपलक्ष में पिछली गर्मियों में हाइडेनहिम के मेयर ने श्रीमती रोमेल के सम्मान में एक प्रीतिभोज का आयोजन भी किया था; पर इन सारी प्रतिष्ठाओं के बावजूद, वे उस आध घंटे के समय को नहीं भूल पातीं, जिसका सामना उन्हें खून का घूँट पीकर करना पड़ा था। वह घड़ी उनके पास उल्म के निकटस्थ हर्लिंगन-नामक गाँव में आयी थी, जहाँ उन्होंने अपना नया मकान बनवाया था और जहाँ वे सपरिवार रहा करती थीं। नाजियों ने एक दिन अकस्मात् उस गाँव को घेर लिया था और फील्ड-मार्शल के समक्ष यह प्रस्ताव रखा था कि, या तो वे जहर खाकर आत्म-हत्या करें, अन्यथा सारे गाँव की—उनके परिवार-सहित—बर्बादी के लिए जिम्मेदार बनें। युद्ध के वीर-शिरोमणि फील्ड-मार्शल ने पहला प्रस्ताव ही पसंद किया!

इस विषय के खत्म होते-न-होते अकस्मात् एक मित्र ने मुझसे प्रश्न कर दिया—"आप कभी महान् भारतीय नेता श्री सुभाषचंद्र बोस से भी मिली हैं?...तो श्रीमती उंटशर से भी शायद आप नहीं मिली होंगी! वह हम लोगों के पास में ही तो रहती हैं। नेताजी को जो पनडुब्बी-जहाज ब्रेमरहेफ

नेताजी

सुभाष बाबू की महत्वपूर्ण सफलताओं में, भारत के बाहर के उस समय के कार्य हैं, जब वे देश से भागे और काबुल, इटली, जर्मनी और अन्य देशों से होकर जापान पहुँचे।

उस काल का उनका सबसे महान् और स्थिर रहनेवाला कार्य था, सब प्रकार के जातीय और वर्ग-सम्बंधी भेदों का उन्मूलन। वे केवल बंगाली ही नहीं थे। उन्होंने अपने-आपको कभी सवर्ण हिन्दू नहीं समझा। वे आमूल भारतीय थे। उन्होंने अपने अनुयायियों में भी यही आग प्रज्ज्वलित की, जिससे प्रेरित होकर वे भी सभी भेद-भाव भूल गये और एकसूत्र होकर काम करने लगे।

—गांधीजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सिंगापुर लाया था, उसका चालक श्रीमती उंटशर का बेटा ही था!"

....बातचीत का प्रसंग आगे बढ़ा, तो ज्ञात हुआ कि, सिंगापुर पहुँचने के बाद नेताजी और उनके सहायक को जापानी पनडुब्बी के लिए कई दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। फर्डिनेंड उंटशर नेताजी के व्यक्तित्व से, जो उसके लिए अपरिचित थे, बहुत ही प्रभावित हुआ था और उसने अपनी पनडुब्बी पर नेताजी और उनके सहायक की,उनके अज्ञान में ही, तसवीर भी उतारी थी। काफी दिनों के बाद, उसे उस व्यक्तित्व की वास्तविक जानकारी प्राप्त हुई और तब उसकी समझ में यह बात आयी कि, उतने गुप्त रूप से उन्हें क्यों भेजा गया था। फिर उसके बाद नेताजी यूरोपीय सागर-क्षेत्र में कभी नहीं आये और उंटशर-द्वारा उतारी गयी तसवीर ही यूरोपीय क्षेत्र में नेताजी की अंतिम तसवीर प्रमाणित हुई।

घर लौटने के बाद, फर्डिनेंड ने वह तसवीर अपनी माँ को दे दी और उसे सुरक्षित रूप से—पवित्र स्मृति के रूप में—रखने का निर्देश दिया। साथ ही, वह यह चेतावनी देना भी नहीं भूला कि, युद्धकाल में चित्र की चर्चा भूल कर भी किसी से नहीं की जानी चाहिए। उसके बाद जब वह फिर देश से बाहर गया, तो वापस नहीं लौटा!

...इतना सब सुनने के बाद मैं उस महिला से मिले बिना भला कैसे रह सकती थी। मैं उससे मिली और खूब हिलमिल गयी। अंत में, एक दिन उस महिला ने मुझे वह तसवीर दी और कातर स्वर में कहा—"मैं चाहती हूँ कि, इस तसवीर को भारतवासी एवं नेताजी के मित्र देखें। तुम कर सकोगी ऐसा? इस चित्र से संसार को भारत के एक अजेय सेनापति का एक बार स्मरण हो आयेगा; पर तुम तो जानती हो, इस चित्र में मेरे लिए दो स्मृतियाँ हैं— एक नेताजी की और दूसरी मेरे बेटे फर्डिनेंड की, जिसने मेरे स्तन्य को धन्य किया था!

★

जब भी वह अपनी मोटर ७० मील प्रति घंटे या उससे अधिक की रफ्तार से भगाता, तो इंजिन में बड़े जोरों की आवाज होने लगती। अंत में, वह उसकी जाँच करवाने एक कारखाने पहुँचा। मिस्त्री ने बड़ी सावधानी से जाँच की; पर मशीन में कहीं कोई गड़बड़ी नहीं थी। अतः उसने पूछा—"किस रफ्तार से मोटर चलाने पर आवाज होती है?"

"७० मील प्रति घंटे!"

"ओह!"—मिस्त्री ने कहा—"मोटर में कोई खराबी नहीं है। अवश्य ही, उस वक्त तुम्हें परमात्मा चेतावनी देता होगा!" —'नावक के तीर' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिंजड़े का पक्षी

साहित्य एवं कला की अनुभूति का निरूपण करनेवाली गाल्सवर्दी की एक गीति-कथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

"पर्वत की मैना... अरे, यहाँ कहाँ?" मेरे मित्र ने आश्चर्य से पूछा। मैंने उँगली से संकेत कर वह पिंजड़ा दिखा दिया। लोहे की तीलियों से चोंच लड़ा कर मैना एक बार फिर बोल उठी।

एकाएक मेरे मित्र के मुख पर वेदना के चिह्न स्पष्टतया दृष्टिगोचर होने लगे। ऐसा जान पड़ने लगा, मानो उनका हृदय किसी दुःखपूर्ण स्मृति से शोकाकुल हो उठा है। थोड़ी देर बाद, धीरे-धीरे हाथ मलते हुए, उन्होंने कहना आरम्भ किया—

"...कई वर्ष बीत जाने पर भी वह दृश्य मेरी स्मृति में ज्यों-का-त्यों ताजा बना हुआ है। मैं अपने एक मित्र के साथ बंदीगृह देखने गया था। हमें उस भयानक स्थान के सब भाग दिखा कर, जेलर ने अंत में कहा— 'आओ, अब तुम्हें एक आजन्म कारावास का दंड पाये हुए बंदी को दिखाऊँ।'

"जब हम कोठरी में घुसे, तो वह स्थिर दृष्टि से चुपचाप अपने हाथ के कागज की ओर देख रहा था। युवक होने पर भी वह वृद्ध जान पड़ता था— एक झुका.. काँपता-सा....नर-कंकाल, मैली-सी चादर में लिपटा हुआ!

"हमारे पैरों की आहट सुन कर उसने अपनी आँखें ऊपर को उठायीं— आह!. मैं उस समय उसके भाव को भली-भाँति न समझ सका; परंतु बाद में समझा और ऐसा समझा कि, कभी न भूल सकूँगा। उसकी आँखें क्या थीं— दारुण दुःख एवं कारुण्य की प्रति मूर्तियाँ। मैंने उन आँखों में स्पष्ट देखा— एकांतवास के लम्बे युग, जिन्हें वह इन दीवारों के भीतर काट चुका था और जो उसे अभी बंदीगृह के बाहरवाले जी सामने के कब्रिस्तान में दफनाये जाने के पहले काटने शेष थे! मेरा हृदय क्षण भर के लिए थम-सा गया! विश्व-भर के सारे स्वतंत्र मनुष्यों की सम्पूर्ण वेदना मिल कर भी उस मूक पीड़ा की बराबरी में मुझे न तुली! मैं संतप्त-सा कोठरी की एक ओर पड़े लकड़ी के टुकड़े को उठा कर देखने लगा। उस पर बंदी ने एक चित्र बना कर रखा था।

"चित्र में एक सुंदर युवती हाथ में फूलों का गुच्छा लिये पुष्पोद्यान के बीचों बीच बैठी थी। एक सर्पाकार बहता हुआ स्रोत, किनारे पर हरी-हरी दूब और एक अजीब-सा पक्षी। युवती के पार्श्व में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बहुत बड़ा सघन वृक्ष, जिसके पत्तों के बीच में बड़े-बड़े फल!

"मेरे साथी ने पूछा—'जेल आने से पहले चित्र बनाना जानते थे क्या?'

"'ना!'—उसने हाथ हिला कर कहा। 'जेलर साहब जानते हैं, यह किसी का चित्र नहीं, केवल कल्पना है।'— कह कर वह जिस प्रकार मुस्कराया, उससे हृदय-हीन पिशाच भी रो पड़ता! उस चित्र में उसने सुंदर युवती, हरे-भरे फलों से लदे पेड़-पौधे, स्वतंत्र पक्षी, गरज कि, अपने हृदय की समस्त सुंदर भावनाएँ निकाल कर रख दी थीं। अट्ठारह साल से वह उसे बना रहा था— बना कर बिगाड़ देता और फिर बनाता। कई सौ बार बिगाड़ कर उसने यह चित्र बनाया था।

"हाँ, सताईस वर्ष से वह वहाँ बंदी था— किसी भी प्राकृतिक वस्तु के स्पर्श, गंध, वर्ण से दूर उसकी स्मृति भी मिट-सी चली थी। अपनी दीर्घ-तृषित आत्मा से खींच कर उसने वह युवती, वृक्ष और पक्षी निकाले थे। मानुषिक कला की यह उच्चतम पराकाष्ठा थी और हृदय की शाश्वत-सनातन भावनाओं का अटल दर्पण! उस वीभत्स नरक के भीतर भी एक परमपावनी अनुभूति का स्पर्श मेरी आत्मा ने प्राप्त किया। 'क्रास' पर चढ़ाये इस साक्षात् क्राइस्ट के सम्मुख मेरा माथा आप-से-आप झुक गया। उसने चाहे जो अपराध किया हो, इसकी मुझे चिंता नहीं थी। चिंता यह थी कि, यह क्या बात है कि, हमारा न्याय हर दम क्षमा की बलि लेता है— क्या न्याय को दया, कृपा और क्षमा से सदैव उनका रक्त ही लेना है? मैं अपने रोमांच में सिहर उठा।

"और, जब कभी मैं किसी पक्षी को पिंजड़े में बंद देखता हूँ, तब मेरी आँखों के सामने उस अकथनीय व्यथा का दृश्य खिंच जाता है, जो मैंने उस बंदी की आँखों में देखा था और उसका वह चित्र तो मेरी स्मृति से कभी ओझल नहीं होगा, जिसके कारुण्य को माइ-केल एंजेलो भी शीश झुकायेगा। पीड़ित आत्मा का कैसा द्रवीभूत अमरत्व उस चित्र में था— काश, हमारे कवि और चित्रकार अंतर्यामी के इस कलासूत्र को हृदयंगम करते!"

✶

एक महिला अपनी सप्तवर्षीया बच्ची को चित्र-प्रदर्शनी दिखा रही थी। देश-विदेश से सुप्रख्यात कलाकारों की कृतियाँ आयी थीं। 'विचारक'-शीर्षक एक चित्र के निकट खड़ी हो, वह बच्ची बहुत ध्यानपूर्वक उसे देखने लगी। चित्र में एक नग्न व्यक्ति विचारपूर्ण मुद्रा में दिखाया गया था। बच्ची उसे देखती हुई बोली— "यह सोच क्या रहा है भला?" फिर मानो स्वयं ही उसने उत्तर भी दे दिया— "शायद सोच रहा है कि, उसे क्या पहनना चाहिए!" —'व्यंग्य-विनोद' से

✶

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्पण में अपना मुख देखिये

विट्ठलदास मोदी का एक मनो-स्वास्थ्य-सम्बंधी लेख

★

अगर आप आइने में देखने पर, अपनी शक्ल के बजाय किसी और की शक्ल देखें, तो शायद डर जायेंगे; पर ऐसा कभी होगा नहीं। आप आइने के सामने जो-कुछ भी रखेंगे, उसी का रूप उसमें प्रतिबिम्बित होगा। एक प्रकार से हमारा जीवन आइने के सामने रखी जानेवाली वस्तु के ही समान है। यह संसार एक बहुत बड़ा आइना है और हम जो-कुछ अपने सम्बंध में देखते हैं, वह प्रायः हमारा ही प्रतिबिम्ब होता है।

कहा जाता है कि, हाथी जलाशय में अपना प्रतिबिम्ब देख कर जितना क्रुद्ध होता है, उतना और किसी चीज से नहीं। वह चाहे कितना ही प्यासा क्यों न हो; पर अगर जल में अपना प्रतिबिम्ब देख ले, तो तैश में आ जाता है और पानी को हिलोरने लगता है और इस प्रकार पानी के हिल जाने और प्रतिबिम्ब नष्ट हो जाने पर ही पानी पीता है।

हाथी भले ही अपनी शक्ल पसंद न करे; पर प्रतिच्छाया पर क्रुद्ध होकर आक्रमण करने से उसका भद्दापन कम नहीं हो जाता। हाथी ही ऐसा प्राणी नहीं है, जो अपने प्रतिबिम्ब से कुढ़ता हो; आप लोगों ने उस बच्चे की कहानी अवश्य सुनी होगी, जो अपने ही शब्दों की प्रतिध्वनि सुन कर आपे से बाहर हो जाया करता था। यह तथा इस प्रकार की अन्य कहानियाँ मूर्खतापूर्ण कही जा सकती हैं; पर क्या यह सत्य नहीं है कि, हममें से बहुतेरे प्रकृत रूप सामने आने पर उस हाथी और लड़के की ही तरह हास्यास्पद रूप में आचरण करते हैं।

उदाहरण के रूप में किसी ऐसे व्यक्ति को ले लीजिये, जो किसी के प्रति सौहार्द्र का भाव व्यक्त नहीं करता। वह जहाँ कहीं भी जायेगा, उसके लिए कोई सौहार्द्र नहीं दिखलायेगा, कोई उसका स्वागत नहीं करेगा। वह अपने चारों ओर वही वातावरण प्रस्तुत करेगा, जो उसके अंदर मौजूद है। अगर उसमें मैत्री का भाव है, तो उसके मित्र होंगे—अगर स्वार्थपरायण है, तो कोई उसका साथ नहीं देगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर वह दूसरों का विश्वास करता है, तो दूसरे भी उसका विश्वास करेंगे। किसी ने ठीक ही कहा है कि, 'आपके पास जो सर्वोत्तम वस्तु है, उसे दूसरों को दीजिये।' परिणाम यह होगा कि, आपको भी प्रतिदान में अच्छी ही वस्तुएँ मिलेंगी। मनुष्य दूसरों में जो-कुछ देखता है, वह बहुत-कुछ उसी के जीवन का प्रतिबिम्ब-मात्र होता है।

अगर हम लोगों में से कुछ, जो परेशानियों के भार से दबे हुए हैं, अपने चारों ओर यह देखने के लिए नजर डालें कि, ये परेशानियाँ कहाँ से आयीं, तो उनको चकित रह जाना पड़ेगा। उदाहरणार्थ, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होनेवाला लड़का अगर अनुसंधान करे, तो इसका कारण सदोष शिक्षा न होकर अध्ययन के प्रति उसकी उदासीनता और आलस्य तथा प्रमाद ही होगा। आर्थिक स्थिति खराब होने और आवश्यकताएँ पूरी न होने का रोना रोते रहनेवाला व्यक्ति अपने दुर्भाग्य के कारणों की छानबीन करे, तो वह इसी निष्कर्ष पर पहुँचेगा कि, उसकी वह स्थिति काम और सहयोगियों में दिलचस्पी न लेने का परिणाम है। अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोषी ठहराना सबसे बुरी बात है। हम लोगों का जीवन बहुत-कुछ वैसा ही होता है, जैसा हम खुद उसे बनाया करते हैं।

दूसरे हमारी मदद कर सकते हैं और कुछ लोग नुक्सान भी पहुँचा सकते हैं; पर हमें निश्चयपूर्वक यह समझ रखना चाहिए कि, हमने अपने जीवन-भांडार में जो-कुछ संचित किया है, वही हमें प्राप्त होगा। ठीक वैसे ही, जैसे आइने के सामने रखी हुई वस्तु का ही रूप उस में प्रतिबिम्बित होता है। आइना अपनी ओर से न तो कुछ उसमें मिलाता है, न परिवर्तन करता है और न कुछ हरण ही करता है—वह तो वही वापस करता है, जो उसे दिया जाता है। "बबा सो लुनिये, लहिये जो दीन्हा" बहुत पुरानी उक्ति है।

अगर हम किसी पौधे का मूल ही तोड़ दें, तो उसमें फूल कहाँ से लगेगा! अगर हम प्रकृति के नियम का उल्लंघन करें, तो हमें उसका दंड भी भुगतना पड़ेगा। आप चाहें, तो दहकते हुए अंगारे पर हाथ

आइना

. . . और, तब वह एक बड़ा-सा आइना पकड़ कर मेरे सामने खड़ा हो गया। मैंने किंचित् आक्रोश से पूछा—"क्या मतलब है तुम्हारा? क्या मेरे प्रश्न का उत्तर यही है? क्या तुमने सुना नहीं, मैं स्वर्ग की इस मंजिल से मेरे छूटे हुए मर्त्यलोक को देखना चाहता हूँ। बताते हो या नहीं?" देवदूत तिरछी नजरों से मुस्कराया—"मेरे मालिक, विश्वास तो कीजिये, आइने में जो परछाईं आप देखते हैं, आपकी दुनिया उससे भिन्न नहीं होती!"

—संत जैकब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रख सकते हैं; पर हम हाथ जलने के लिए अंगारे को दोषी नहीं ठहरा सकते। अगर हम किसी ऊँची इमारत से कूदने की मूर्खता करें और हमारी खोपड़ी चूर-चूर हो जाये, तो इसके लिए गुरुत्वाकर्षण तो दोषी नहीं माना जा सकता। किसान बीजों को फेंक या नष्ट कर फसल की आशा नहीं कर सकता और न हम बुरे कामों को बोकर अच्छे जीवन की फसल काटने की आशा कर सकते हैं।

हमारा जीवन हमारे वास्तविक 'स्व' को जिस रूप में प्रतिबिम्बित करता है, उसे हम अगर देखा करें, तो यह निश्चित है कि, हमारे बहुत-से कष्टों और असफलताओं का आसानी से निवारण हो जायेगा और हम उस हाथी की तरह अपनी ही प्रतिच्छाया से चिढ़ने या अपनी दुरवस्था के लिए दूसरों को दोषी ठहराने के बजाय अपने ही तरीकों का सुधार करने में प्रवृत्त हो जायेंगे।

हम अपनी असफलताओं के लिए अपने पूर्वजों या बाह्य परिस्थितियों को भी दोष नहीं दे सकते। सम्भव है, उनके कारण हमारे जीवन में कुछ सहूलियत या कुछ कठिनाई हुई हो; पर वे हमारे जीवन का रूप नहीं निर्धारित कर सकतीं। उदाहरण के रूप में, हीरे का टुकड़ा ले लीजिये, जिसे हम फेंक देते हैं। हो सकता है कि, वह धूल से ढँक जाये या जहाँ जा पड़ा हो, वह जगह मल-मूत्र के त्याग आदि के कारण बहुत गंदी हो; पर वह वहाँ चाहे जितने दिन उस हालत में पड़ा रहे, वह रहेगा हीरा ही। इसलिए हमारे जीवन पर पड़ने वाले बाह्य प्रभाव चाहे जैसे भी हों, वस्तुतः हम ही उसका रूप निर्धारित कर सकते हैं।

माँ-बाप या शिक्षक केवल सफलता और सुख का मार्ग बतला सकते हैं—चलने का कार्य हमें ही करना पड़ेगा—रास्ते में पड़नेवाली पहाड़ियों या दर्रों को हमें ही पार करना पड़ेगा। अपने को समझना—हम क्या हो सकते हैं, इसका ज्ञान प्राप्त करना और उसके लिए उचित प्रयत्न करना सफलता के मार्ग में पहला कदम है।

हम प्रकृति में जो-कुछ देखते हैं, वही हमारी निधि है। धनी और निर्धन के बीच धन का अंतर नहीं होता—अंतर होता है, देखने के क्षितिज में। मनुष्य की दृष्टि अगर संकुचित है—अगर उसकी दृष्टि सिक्कों तक ही सीमित है, तो वह लखपति होते हुए भी कंगाल है। जिनका दृष्टिकोण व्यापक है, वे तुच्छातितुच्छ जीवन में भी ईश्वर की विभूति के दर्शन करते हैं और हम जो-कुछ देखते हैं, वही हमारे जीवन का वास्तविक रूप होता है। एक ही स्थान से देखनेवाले दो व्यक्तियों में एक की दृष्टि ऊपर तारा-मंडल की ओर होती है और दूसरे की पृथ्वी पर के पंक की ओर। दुनिया में पंक भी है और तारे भी। हम क्या देखते हैं, यह हमारे देखने पर निर्भर करता है। जीवन का यह आइना स्पष्ट कर देगा कि, हम किसे देख रहे हैं?

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय-सम्पुटों के खुलने पर

'कोरियर' में प्रकाशित सामग्री के आधार पर

*

"पुरातत्ववेत्ताओं ने धातु के बने एक वायु-अवरोधित सम्पुट को खोद निकाला है, जिसमें ५,००० वर्ष पूर्व के अभिलेख मिले हैं। अभिलेख सन् १९५२ के हैं और इनसे प्राचीन कैलिफोर्निया के जीवन की अच्छी-खासी जानकारी मिलती है।"

आज से ५० सदियों के बाद के समाचारपत्रों में अगर इस आशय का समाचार प्रकाशित हो, तो आश्चर्य नहीं। पाँच वर्ष पूर्व ही लास-एंजिल्स के भूमिगत बड़े गैरेज की दीवार के एक भाग में एक वायु-अवरोधित सम्पुट दबा दिया गया। उसमें समकालिक लास-एंजिल्स से सम्बंधित सूचनाओं का भांडार तथा माइक्रोफिल्म पर ली हुई अनेक समाचारपत्रों की प्रतिलिपियाँ हैं।

मिस्र के पिरामिड में अंकित एक नारी की मूर्ति, जिससे तत्कालीन वेष-भूषा का परिचय मिलता है। [चित्र : सुबोध मजुमदार - निर्मित एक रेखाचित्र]

हमारी सभ्यता जब विस्मृति के गर्त में चली जायेगी, तो उस वक्त के पुरातत्ववेत्ताओं की खुदाई उनके लिए काफी लाभप्रद सिद्ध होगी। आज विदेशों में अधिकांश नये भवनों की दीवारों में समय-सम्पुट चुने जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-कैलिफोर्निया के नये दंतचिकित्सा-भवन की दीवार में एक शीशे का डिब्बा है, जिसमें विद्यालय के इतिहास से सम्बंधित परचे बंद किये गये हैं।

कौन-सी असाधारण सामग्री इन सुरक्षित-सम्पुटों में रखी जाये, इस सम्बंध में कोई विशेष नियम नहीं है। हाल ही में लड़कों के एक क्लब के एक अधिकारी ने एक लड़के से पूछा—"तुम्हारी जेबों में जो चीजें रखी हैं, क्या उन्हें क्लब को दान कर सकोगे?" उस लड़के ने प्रसन्नतापूर्वक सारी चीजें दे दीं। वे चीजें थीं— मछली पकड़ने के कई काँटे, एक चाकू, सुतली का टुकड़ा, बोतल का कार्क, टूटा कम्पास और तीन पेनी। ये वस्तुएँ, बाद में, एक सम्पुट में नये क्लब-भवन की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीवार में गाड़ दी गयीं।

इस बात का भी कोई खास नियम नहीं है कि, समय-सम्पुट किसी विशेष आकार का ही हो। उदाहरण के लिए, बोस्टन के फेनियल-हाल की मीनार की चोटी पर २१० वर्षों से बैठे, चार फुट लम्बे ताम्बे के बने अद्भुत शलभ को ही लीजिये। हाल ही में जब लुहार उसकी मरम्मत कर रहा था, तो उसे कुछ विचित्र स्वर सुनायी दिया। उस खोखले कीड़े के भीतर उसे धातु का एक डिब्बा मिला, जिसमें ६० वर्ष पुराने बोस्टन के समाचारपत्र, कुछ टिप्पणियाँ और कुछ तात्कालिक नगर-अधिकारियों के कार्ड रखे हुए थे। ये वस्तुएँ सन् १८८९ में, जब उस प्राचीन शलभ की जाँच हुई थी, तब रखी गयी थीं।

पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि, जार्जिया के ओलेथ्रोप-विश्वविद्यालय-द्वारा निर्मित 'सभ्यता-सम्पुट' ८२-वीं सदी से पूर्व नहीं खोला जायेगा। यह सम्पुट सन् १९३६ में मोहरबंद किया गया था। विश्वविद्यालय के प्रबंध-भवन के नीचे, २,००० घन फुटवाला कक्ष, मोटी प्रस्तर-दीवारों से घिरा हुआ है तथा उसकी छत भी बिल्कुल चट्टान की भाँति है। इस सम्पुट में इस्पात के अनेक सम्पुट हैं। हरेक में न जलनेवाले खनिज का अंतरस्थ लिफाफा है, जो शीशे के मोहरबंद सिलेंडर के चारों ओर दृढ़ता-पूर्वक घेरा डाले है। इन सिलेंडरों में बीसवीं सदी के मनुष्यों की सामाजिक, वैज्ञानिक और धार्मिक योग्यता से सम्बंधित जानकारी है। यदि अँग्रेजी भाषा अप्रचलित हो गयी, तो उस वक्त के लिए, उसमें एक सांकेतिक यंत्र का भी प्रबंध है, जो १,५०० मूल शब्दों के दृष्टि तथा स्वर-सम्बंधी लक्षण प्रकट करता है। आशा की जाती है कि, इस सम्पुट को सन् ८११३ ईसवी के बाद में खोला जायेगा। यह तिथि आगे का इतना समय प्रकट करती है, जितना मानव-इतिहास की प्रथम अंकित तिथि से अब तक का है।

इस प्रकार सभ्यता सुरक्षित करने का विचार नया नहीं है। चाल्दिया (बेबीलोन) और असीरिया के प्राचीन मंदिरों में कितने ही ऐसे शिलालेख प्राप्त हुए हैं। मिस्र के पिरामिड प्रथम समय-सम्पुट हैं। इनमें से एक, राजा तुत का मकबरा, समस्त सम्पुटों में अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक प्रमाणित हुआ है। पुरातत्व-वेत्ताओं को इसमें बहुमूल्य अभिलेख, कलाकृतियाँ और प्राचीन मिस्र में दैनिक प्रयोग की अनेक वस्तुएँ मिलीं।

मध्य-युग में महत्वपूर्ण स्थानों पर शिलान्यास के समय, निर्माता अपने मित्रों को बुला लिया करते थे। आभार-प्रदर्शन के लिए, निर्माता उन स्मृति-चिह्नों को खोखले किये पत्थर में रखने के अलावा, भेंट देनेवालों के नाम भी अंकित करवा दिया करता था।

इसी प्रकार का एक रोचक समय-सम्पुट, लंदन में क्लिओपेट्रा के स्तूप के नीचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखा है। सन् १८७८ में आयोजित, इस भेंट-समारोह में भाग लेनेवालों ने नींव के पत्थर के नीचे अनेक वस्तुएँ रख दी थीं। उनमें १२ अँग्रेज सुंदरियों के चित्र, दूध की बोतल, बालों की पिनों का डिब्बा, सिगारों का डिब्बा, बाइबिल, कुछ समाचारपत्र और एक रेजर है।

ऐसा ही अद्भुत, 'वाशिंग्टन-मानुमेंट' का सन् १८४८ में रखा गया पत्थर है। २४,५०० पौंड के इस संगमरमर के ब्लाक में, संगतराशों ने एक बड़ी ताख बनायी, जिसमें जस्ते का बना हुआ एक सम्पुट रखा जा सकता था। इस सम्पुट में अधिकारियों ने अमेरिका का संविधान, जार्ज वाशिंग्टन का एक चित्र, समस्त प्रचलित सिक्कों के नमूने, अमेरिका का रेशमी ध्वज और भिन्न-भिन्न नगरों के लगभग ७५ समाचारपत्र-जैसी रोचक और समकालिक सामग्रियाँ रखी हैं।

कई वर्ष पूर्व, ह्वाइट-हाउस के पुनर्निर्माण के समय, मजदूरों को प्रवेश-कक्ष के नीचे, संगमरमर का एक डिब्बा मिला था। भवन की मरम्मत के समय सन् १९०२ में रखे गये इस अनधिकृत सम्पुट में समाचारपत्र, जिनमें प्रेसीडेंट थियोडोर रूजवेल्ट-द्वारा काँग्रेस को दिया गया वार्षिक संदेश प्रकाशित था, सात सिक्के और मेरीलैंड राई ह्विस्की की बोतल का लेबिल रखा हुआ मिला। प्रेसीडेंट ट्रूमैन के कहने पर, सम्पुट को नये स्थान पर कुछ और चीजें मिला कर रख दिया गया।

सन् १९३९ में, मैसाचुसेट्स, कैम्ब्रिज में 'मैसाचुसेट्स इन्स्टीटयूट आफ टेक्नालाजी' में एक पीतल के सम्पुट को वैज्ञानिक साहित्य और अपने समय की विविध सामग्री से भरा गया था। इसे सन् १९८९ में अध्ययन करनेवाले छात्र खोल सकेंगे। इसे एम० आई० टी० के साइक्लोट्न के विशाल चुम्बक की नींव के नीचे रखा गया है।

सन् १९३९ में, न्यूयार्क की संसार-प्रदर्शिनी का समय-सम्पुट इस प्रकार के सभी सम्पुटों में अनूठा था। टारपीडो-आकृति का यह संग्रहालय ८ इंच व्यास का और ७½ फुट लम्बा था। इस संग्रहालय के अंदर पाइरेक्स-शीशे का सम्पुट है, जो नाइट्रोजन से भर दिया गया था। भीतर जो सामग्री रखी गयी थी, उसमें ढक्कन खोलने का औजार, कलम, सिगरेट, कैमरा, कांतिवर्द्धक उबटन, दाँतों का ब्रश, भवन-निर्माण की वस्तुएँ, शब्द-कोश, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, माइक्रोफिल्म पर लिखित अन्य अभिलेख और एक महिला का हैट था।

बाद में, उसे ५० फुट गहरे कुएँ में छोड़ दिया गया। कुएँ में, सम्पुट को आर्द्रता तथा भूमि-अम्लों से बचाने के लिए, पाँच सौ पौंड पेट्रोलियम-पिच, क्लोरीन मिली डिफिनाइल और खनिज तेलों को भी डाला गया। इसका संकेत एक प्रस्तर-समाधि से मिलता है और अनुमान किया जाता है कि, यह सम्पुट सन् ६९३९ में खोला जायेगा।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाधीन एवं सर्वांगीण समृद्धि के स्वर्ग-स्वप्नलीन आधुनिक भारत की आँख की किरकिरी—गोवा—पर एक भू-भौतिक विहंगावलोकन

★

भारत में स्थित पुर्तगाली बस्तियों का सवाल अब उग्र स्वरूप प्राप्त कर चुका है। भारतीय तथा विदेशी समाचारपत्रों में इस प्रश्न को लेकर बहुत चर्चा हो चुकी है। सामान्य तौर पर इस प्रश्न का जिक्र 'गोवा-प्रश्न' के नाम से किया जाता है। लेकिन खेद की बात यह है कि, बहुत-से लोग जानते भी नहीं कि, यह गोवा क्या है ?

भारत में स्थित पुर्तगाली बस्तियों को राजकीय सुविधा के लिए तीन जिलों में बाँटा गया है— गोवा, दमण और दीव। ये तीनों बस्तियाँ भारत के पश्चिमी किनारे पर हैं। गोवा बम्बई के दक्षिण की तरफ कोंकण में और दमण और दीव बम्बई के उत्तर में, क्रमशः गुजरात और सौराष्ट्र के किनारे, मौजूद हैं। दमण जिले में दादरा और नगर हवेली भी आते हैं, जिनके चारों तरफ भारतीय भूमि है। ये दोनों प्रदेश २० जुलाई, सन् १९५४ को स्थानीय प्रजा ने आंदोलन करके मुक्त कर लिये। गोवा की जनता ने भी पुर्तगाली सत्ता हटाने के लिए लगातार भरसक कोशिशें की हैं। दुर्भाग्य से उन्हें अब तक सफलता नहीं मिल पायी है और आज भी महात्माजी के शांतिमय सत्याग्रह की नीति पर पुर्तगाली सत्ता का विरोध चल रहा है।

राजकीय दृष्टि से गोवा ११ तालुकों में विभाजित किया गया है। ये तालुके हैं, पेड़णें, बारदेस, साँखली, सत्तरी, तिसवाड़ी फोंडें, सांगें, मुरगाँव, सासष्टी, केपें और काणकोण। राज-व्यवहार के अलावा भी हरेक तालुके की अपनी -अपनी विशेषता है।

मुरगाँव तालुके में मुरगाँव शहर-स्थित है। इसे मार्मगोवा भी कहते हैं। यहाँ एक बड़ा, सुंदर और अच्छा नैसर्गिक बंदरगाह है। बड़े-बड़े जहाज सीधे किनारे तक आ सकते हैं। इसीलिए यह बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पा सका है। मुरगाँव बंदरगाह से कुछ ढाई-तीन मील के फासले पर, एक टेकड़ी के ऊपर मुरगाँव का हवाई अड्डा है। यह अड्डा यात्री-विमानों के लिए है। मुरगाँव तालुके में बंदरगाह से ४-५ मील के फासले पर हाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही में एक बहुत बड़ा सैनिक हवाई अड्डा बनाया गया है। ऐसी चर्चा है कि, यह अड्डा आधुनिकतम अमरीकी सामग्री से सज्ज है।

गोवा का कुछ हिस्सा २५ नवम्बर सन् १५१० को पुर्तगालियों के हाथ में गया था, जिसको वे 'पुरानी जीत' कहते हैं। बारदेस, तिसवाड़ी, सासष्टी और मुरगाँव तालुके पुरानी जीत के हैं। दूसरा हिस्सा वह है, जिस पर १८-वीं शताब्दी के आखिरी दिनों में पुर्तगालियों ने कब्जा किया, जिसको 'नयी जीत' कहा जाता है। दीव सन् १५४६ में उनके हाथ में गया और दमण सन् १५५९ में। दादरा और नगरहवेली पर सन् १७७९ में उनकी हुकूमत आयी।

दादरा और नगरहवेली के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों का कब्जा लेने के लिए ईसा का नाम लेनेवाले पुर्तगालियों ने मार-काट, लूट, आग लगाना, आदि का सहारा लिया है और वहाँ के सरकारी कागज-पत्रों में भी इसका स्पष्ट जिक्र मिलता है।

इन प्रदेशों का क्षेत्रफल इस प्रकार है— गोवा १४७२ वर्ग मील; दमण (दादरा और नगरहवेली के साथ) २१९ वर्ग मील, सिर्फ दमण ५४.५७ वर्ग मील और दीव १४ वर्ग मील।

सन् १९५० की जनगणना के अनुसार, इन बस्तियों की आबादी ६३७,५९१ है। इसमें से गोवा की ५४७,४४८, दमण की (दादरा और नगरहवेली के साथ) ६९,००५ (केवल दमण की २७,४२३) और दीव की २१,१३८ है। इनमें हिन्दू ३,८८,४८८, ईसाई २,३४,२९२ मुसलमान १४,१६२ और अन्य ६४९ हैं। राष्ट्रीयता की दृष्टि से इनमें भारतीय ६,३६,१५३, यूरोपियन ५१७, यूरेशियन ३३६, अफ्रीकन २५८, मिस्री २२६ तथा अन्य १०१ हैं। इनमें अशिक्षित ३८.३ प्रतिशत हैं।

गोवा की भाषा कोंकणी है। यहाँ मराठी का काफी प्रचार है। कई लोग हिन्दी भी जानते हैं। दमण तथा दीव की भाषा गुजराती है। पुर्तगाली जाननेवालों की संख्या केवल १.४३ प्रतिशत है।

इन बस्तियों में से बहुत-से जवान और पढ़े-लिखे लोग रोटी कमाने के लिए भारत के अन्य प्रदेशों में स्थायी रूप से चले आये हैं। इनकी संख्या १ लाख से भी अधिक है। पाकिस्तान, अफ्रीका और दुनिया के अन्य देशों में फैली हुई यहाँ की जनता की संख्या भी लगभग १ लाख ही है।

यद्यपि गोवा को निर्यात से अधिक आयात ही करना पड़ता है, तथापि कच्ची सामग्रियों के कारण विदेशों की दृष्टि में उसका एक महत्वपूर्ण स्थान है। आजकल गोवा से बड़े पैमाने पर निर्यात होनेवाला धातु है, मेंगनीज और लोहा। गोवा में ऊँचे दर्जे की अनेक खदानें हैं। सन् १९५१ में ४३६,३९५ टन लोहा और ८५,४२२ टन मेंगनीज बाहर, पश्चिमी देशों में, भेजा गया। भारत की खनिज सम्पत्ति की इस तरह लूट चल रही है और इस बारे में हम लोग कुछ भी नहीं कर सकते, यह एक विडम्बना ही तो है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावी प्रजा को मेरा नमस्कार

भावी स्वर्ण-युग और उस युग के परम-पुरुष की प्रतीक्षा हर वर्तमान की आदत होती है। आनेवाली तेजस्विता—प्राची के नवोदय— का सम्मान सदैव से ही मनुष्य की आस्था का आग्रह रहा है। काका साहेब की ये पंक्तियाँ इसी मानवीय भाव की द्योतक हैं।

★

आज इस पवित्र मंदिर में, युग के द्वार पर खड़ी भावी प्रजा को मैं नमस्कार करता हूँ और इस प्रजा के उस निर्माता, उस दिव्य पुरुष, की भी मैं वंदना करता हूँ, जो दीपक की तरह जन-मन को आलोकित करता रहा है। आगामी कल के इस पुरुष का वर्णन क्या शक्य है! उसका पूरा महत्व, उसकी सारी विभूतियों का वर्णन क्या सम्भव है? हर युग ने उसकी प्रतीक्षा की है, हर जाति ने उसका आह्वान किया है, संसार के सभी धर्माचार्यों और पैगम्बरों ने समय-समय पर उसके अवतरण का संदेश दिया है।

माँ की गोद में
कल का युग-पुरुष
[चित्र : नंदलाल वसु]

इस युग का मानव, आज का मनुष्य, पृथ्वी का श्रेष्ठ पुत्र नहीं है। आधुनिक मानव—आज का सुशिक्षित मानव, हिंस्र राष्ट्रों में जीने-मरनेवाला यह मानव, दो-दो महायुद्धों में भाग लेनेवाला यह मानव— परमेश्वर का प्रिय पुत्र नहीं हो सकता। वह 'पुरुषश्रेष्ठ' भी नहीं, वह तो 'पुरुष-व्याघ्र' है या फिर 'व्याघ्र-पुरुष'! सृष्टि ने आज तक की अपनी प्रसव-वेदना ऐसे मानव के लिए नहीं भोगी है। आगामी कल का मानव— वह पुरुषश्रेष्ठ— अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। लेकिन वह आयेगा अवश्य; क्योंकि समस्त विश्व उसके आने की आतुर प्रतीक्षा कर रहा है। धरती काँप रही है। संसार में रह-रह कर जो प्रचंड उथल-पुथल हो रही है, वह वस्तुतः उस महामानव के आने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुंदुभि-वादन ही है।

वह भविष्य का पुरुष हमारे जैसा, हमारी कल्पना के अनुसार भी, नहीं होगा। वर्तमान मनुष्य परिस्थितियों का गुलाम है, भविष्य का मानव देह के अनेक आग्रहों से मुक्त होगा। वर्तमान मानव दुर्बल है और इसी से वह पशुबल का आकांक्षी है। वह कृपण है, इसीलिए धन के पीछे प्राण तक लेने-देने को तैयार रहता है।

भविष्य का मानव इस अपेक्षा में 'अलौकिक' होगा। वह निःशस्त्र होकर भी शक्तिशाली और अकिंचन होकर भी समृद्ध होगा। वह किसी वस्तु पर अधिकार के लिए झपटेगा नहीं ; क्योंकि यहाँ का जो-कुछ है, सब उसी का होगा। शक्ति और अधिकार पर उसकी आसक्ति टिकेगी नहीं ; क्योंकि वह स्वयं सर्व-सिद्धियों का स्रोत होगा। आज का मानव विज्ञान पर आस्था रखता है; क्योंकि वह आत्मभ्रांत है। भविष्य का मानव स्वयंप्रज्ञ होगा। उसे ज्ञान की जीवंत अनुभूति प्राप्य रहेगी– जो-कुछ भी ज्ञेय है, उसका साक्षात्कार उसे हो जायेगा।

आज का मानव अपने ही द्वारा निर्मित अपूर्ण-अनिश्चित नियमों का पालन करता है और अपने–आपको शुद्धाचारी मानता है। किंतु आने वाले कल का मनुष्य बाह्य बंधनों से निर्बंध रहेगा और आज के मानव की धार्मिकता जहाँ किसी भी एक धर्म को मानने तक ही सीमित है। वहाँ भावी मानव की आस्था किसी एक धर्म में नहीं होगी। वह तो पूछेगा कि, शिखर पर रास्ते कैसे ? वस्तुतः सब धर्म उसके इसी प्रश्न की गंगोत्री में समाये रहेंगे। वह इस दुनिया का शासक भी होगा और सेवक भी। मेरे मानव-बंधुओ, थोड़ा रुको भी, मेरी सुनो भी! अरे, उस महामानव की कल्पना में ही क्यों रम रहे हो ? उसके वर्णन को ही क्यों सिद्धि मान बैठे हो ? अरे, तुम्हारे ही भीतर तो वह कल का मानव छिपा बैठा है। तुम्हारे ही देह-पुष्प में वह सौरभ छिपी पड़ी है – कैद पड़ी है ! उसे प्रकट करो–खिलो और महको ! हृदय-कपाट खोल कर उसे मुक्त करो। और बंधुओ, यह भी सुनो। एक परम रहस्य की बात कहता हूँ – वह पुरुष एक में ही नहीं, सम्पूर्ण समाज में फैलना चाहता है। सौरभ एक फूल में कैसे सीमित रहेगी–सूरज एक ही घर में कैसे दीप्त रहेगा ?

✤

बर्नर्ड शा के कोट की कुहनी एक बार तार-तार हो रही थी। एक परिचित व्यक्ति ने व्यंग्य करते हुए कहा— "विद्वत्ता आपके कोट के रास्ते बाहर झाँक रही है।"

"क्षमा कीजिये, आपका कथन गलत है"—शा ने तुरत जवाब दिया— "दरअसल, मूर्खता अंदर झाँक रही है!"

—'जीवन-कण' से

✤

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पक्षियों के आश्चर्यजनक देशाटन

बम्बई की नेच्यूरल हिस्ट्री सोसायटी के सालिम अली पक्षि-विज्ञान के विशेषज्ञ हैं—एशिया में ही नहीं, यूरोप और अमेरिका में भी उनके अनुभवों एवं ज्ञान को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। पक्षियों की पर्यटन-प्रियता पर उनकी खोज महत्वपूर्ण है। इसी प्रसंग का उनका यह लेख पढ़िये।

पक्षी-जगत् में जिनको जरा भी दिलचस्पी होगी, वे चिड़ियों के पर्यटन-प्रवृत्ति से परिचित होंगे। उनके आने-जाने का समय घड़ी की सूई की भाँति निश्चित होता है। और, अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, जितनी बड़ी संख्या में ये चिड़ियाँ, जितनी अधिक दूरी तय करती हैं, उसकी कल्पना-मात्र व्यक्ति को अवाक् कर देती है।

हमारी उत्तरी सीमा को लाँघ कर, ये चिड़ियाँ, अगस्त मास से ही आने लगती हैं और अक्टूबर का मध्य अथवा अंत होते-होते, इनके दल-के-दल सीमा लाँघते देखे जा सकते हैं। और, फिर ये इस विशाल देश के कोने-कोने में पहुँच जाती हैं—यहाँ तक कि, लंका में भी।

भारत में लगभग १,५०० किस्म की चिड़ियाँ पायी जाती हैं, जिनमें २५-से ३० प्रतिशत वे हैं, जो अपना घर-बार छोड़ कर जाड़े के दिनों में भारत आती हैं; क्योंकि उन दिनों उनकी मूल भूमि का मौसम उनके अनुकूल नहीं रहता।

बाहर से आनेवाली इन चिड़ियों में रूप-रंग, जाति तथा माप में बड़ा वैभिन्य है। बाहर से आने वाली इन चिड़ियों में जहाँ आदमी के कद के सारस तथा बड़े बगुले होते हैं और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५ रत्तल वजन वाले 'स्क्वैट पेलिकन' होते हैं; वहीं फुदकी भी होती है, जो आदमी के अंगूठे के बराबर होती है और जिसका वजन मुश्किल से आधी छटाँक होता है।

इन चिड़ियों का आना-जाना हमारे देश के उत्तरी-पश्चिमी तथा उत्तरी-पूर्वी सीमाओं पर, सिंध तथा ब्रह्मपुत्र की घाटियों में से होता है। पर कुछ चिड़ियाँ इन नदी-घाटियों तक पहुँचने के लिए हिमालय का चक्कर न लगा कर सीधे उसके ऊपर से भी आती हैं। पर्वतारोहियों ने कराकोरम तथा हिमालय की पर्वत-श्रेणी के ऊपर भी कई बार बड़ी-बड़ी बत्तखों तथा सारसों को उड़ते हुए देखा है।

एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले प्रथम दल ने १७,००० फुट की ऊँचाई पर 'कर्ल्यू', 'तुतवारी,' 'पिपिट' तथा 'हाउस मार्टिन' (गौरैया के समान एक चिड़िया) को उड़ते देखा है। सिक्किम की ओर से आने वाली चिड़ियाँ तो 'नाट्-ला'-सरीखे ऊँचे दर्रे को पार कर के आती हैं। तूफानी मौसमों को छोड़कर—जो हिमालय पर प्रायः आता ही रहता है और जब मौतें भी काफी होती हैं—हिमालय पार करने वाले ये पक्षी बिना किसी क्षति-विशेष के बड़ी सफलतापूर्वक अपनी मंजिल तय कर लेते हैं।

चिड़ियों के ऊँचे उड़ान की एक बड़ी महत्वपूर्ण सूचना देहरादून की वेधशाला के वैज्ञानिकों ने दी है। एक बार, चाँदनी रात में दूरबीन से नक्षत्रों को देखते हुए, उन्हें एक हंसिनी उड़ती दिखायी पड़ी। गणित-द्वारा उन लोगों ने हिसाब लगाया, तो निकला कि, वह हंसिनी उस समय ५ मील की ऊँचाई पर उड़ रही थी।

पर साधारणतः चिड़ियाँ ३,००० फुट से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम ऊँचाई पर और कुछ तो पृथ्वी से कुल १०० फुट की ऊँचाई पर ही उड़ती रहती हैं।

जब समुद्र के ऊपर उड़ती हैं, तो वे बहुत नीचे उड़ना पसंद करती हैं – कभी-कभी तो लहरों के इतने निकट कि, लगता है, जैसे वे तैर रही हों।

ये असंख्य चिड़ियाँ हमारे देश में कहाँ-कहाँ से आती हैं, इसकी जाँच के लिए, हम लोग भी विगत ३० वर्षों से उसी उपाय को काम में ला रहे हैं, जिसे अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है–चिड़ियों को पकड़ कर, उनके पैर में पता और पकड़ी जाने की तारीख-सहित, अल्यूमीनियम के छल्ले डालना।

और, इस जाँच से कुछ बहुत ही विस्मयकारी परिणाम हमें मिले हैं। सन् १९३० में, बीकानेर में एक तालाब के किनारे, नवम्बर महीने में, सफेद रंग के एक बड़े बगले के पैर का छल्ला मिला, जिसे देखने से पता लगा कि, वह पश्चिमी जर्मनी से आया था। उस छल्ले पर 'हेलीगोलैंड बर्ड आब्जर्वेटरी,' ब्रोशवीग (जर्मनी) का पता लिखा था और ११ जून की तारीख पड़ी थी। इसका अर्थ हुआ कि, वह बगला ५ महीने में जर्मनी से भारत पहुँचा था। और, अगर कैस्पियन सागर होते हुए बीकानेर की सीधी दूरी देखी जाये, तो वह होगी लगभग ३,५०० मील !

एक हरी तुतवारी–जो मैना की जाति की चिड़िया है और जिसका वजन मुश्किल से ढाई छँटाक होता है—दक्षिण-भारत में कोट्टयाम में मारी गयी। उसके पैर में मास्को के निकट छल्ला डाला गया था और कोट्टयाम तथा मास्को की सीधी उड़ान हुई ४,००० मील !

ऐसी बहुत-सी बत्तखें, जिनके पैर में भारत में छल्ले पड़े थे, साइबेरिया में पायी गयीं और जिनके पैर में रूस में छल्ले पड़े थे, भारत में मिली हैं। इससे पता चलता है कि पर्यटन करने वाली इन बत्तखों की–जो जाड़ों में भारत आती हैं–मूल भूमि रूस है और ये वहीं अंडे देती हैं। इस आने-जाने में इन चिड़ियों को प्रति वर्ष ५,००० मील या उससे भी अधिक दूरी की यात्रा करनी पड़ती है।

ऐसा ही दिलचस्प उदाहरण तिलयर नामक एक चिड़िया का है, जिसके पैर

घर

चिड़ियों को हजारों मील की यात्रा करते देख कर अकसर मैंने उनकी तुलना अपने से की है और मुझे लगा है कि, मनुष्य के मुकाबले में वे ज्यादा मुक्त हैं—मनुष्य का जीवन तो 'घर' के साथ बँध गया है; मृत्यु ही उसे इस स्वनिर्मित कैद से मुक्त करती है और इस 'घर' में बंदी रहकर उसने क्या किया—अणुबम बनाये, अपनी ही नस्ल के दुःस्वप्न गढ़े !

—हेमिंग्वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में पूर्वी हंगेरी में छल्ला डाला गया था। वह चिड़िया वहाँ से ३,००० मील की दूरी पर, कुछ ही महीनों बाद, लाहौर में पायी गयी। बाहर से आने वाली चिड़ियों में यह सबसे पहले भारत आ जाती है।

बाहर से आने वाली चिड़ियों में बहुत-सी ऐसी चिड़ियाँ हैं, जिनसे हम भली-भाँति परिचित हैं—पानी की चिड़ियाँ—जैसे बड़े बत्तख, सारस, शिकारी चिड़ियाँ—जैसे हेरियर गृद्ध, बाज तथा समुद्री चिड़ियाँ—जैसे फुदकी, थ्रशर आदि।

फुदकी, जो गौरैया से भी छोटी जाति की चिड़िया है, विदेश से भारत आती है। इस जाति की एक चिड़िया का, जो कोहिमा के पास देखी जाती है—अंडा देने की जगह उत्तरी रूस है। यह चिड़िया इतनी पर्यटनप्रिय है कि, वहाँ से ७,००० मील की दूरी पर, हेमंत में, अफ्रीका जाती है और फिर उतनी ही दूरी तय कर के वसंत में, कोहिमा आ जाती है। इसी जाति की एक अन्य फुदकी अंडे तो लैपलैंड तथा फिनलैंड में देती है और दक्षिणी-पूर्वी एशिया में प्रवास करती है—करीब ४,५०० या ५,००० मील की दूरी पर।

स्वाभावतः यह कौतूहल होता है कि, ये चिड़ियाँ इतनी लम्बी यात्रा करती कितने दिनों में हैं? अमरीका में एक चिड़िया ठीक एक महीने बाद छल्ला डाले जाने की जगह से, ३,८०० मील की दूरी पर पकड़ी गयी—इसका अर्थ हुआ कि, उसने प्रतिदिन १२० मील की यात्रा की। तुतवारी की जाति की एक चिड़िया 'यलोलेग' के पैर में उत्तरी अमरीका में छल्ला डाला गया था। वह ६ दिन बाद १,९०० मील की दूरी तय करके वेस्ट-इंडीज में मिली—अर्थात् प्रति दिन ३१६ मील की यात्रा। समुद्री तट की एक चिड़िया 'टर्नस्टोन' ने २५ घंटे में ५१० मील की यात्रा की थी। उसके पैर में हेलीगोलैंड में छल्ला पड़ा था और वह उत्तरी फ्रांस में पकड़ी गयी।

हेमंत में जब चिड़ियाँ दक्षिण की ओर बढ़ती हैं, तो उनकी गति साधारणतः धीमी रहती है; पर जब वे वसंत में उत्तर की ओर लौटने लगती हैं; तो उनकी गति अति तीव्र होती है और ज्यों-ज्यों उनका मूल स्थान निकट आता है, उनकी गति बढ़ती जाती है। फुदकी जो औसतन २० मील प्रति दिन उड़ती है, मूल स्थान के निकट पहुँचते-पहुँचते २०० मील प्रति दिन की यात्रा करने लगती है।

शिकारी चिड़ियाँ दिन में यात्रा करती हैं; पर फिंच (गौरैया की जाति की एक चिड़िया) तथा फुदकी रात में यात्रा करती हैं। और, बड़ी बत्तखें तथा समुद्र-तट पर रहने वाली चिड़ियाँ दिन तथा उजाली रात, दोनों समय अपनी यात्रा जारी रखती हैं। बटेर संध्या समय अपनी यात्रा प्रारम्भ करता है। वह रात-भर उड़ता ही रहता है और पौ फटते-फटते विश्राम करने के लिए, जमीन पर उतर पड़ता है—चाहे वह जगह उसके लिए कितनी भी अरुचिकर क्यों न हो!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युक्लिड

गणित का वाचस्पति

ज्यामिति के स्रष्टा-शोधक युक्लिड का आज कौन ऋणी नहीं ! हर इमारत की नींव, विज्ञान के हर चरण का कोण, व्योममंडल के हर ग्रह की गति में युक्लिड का प्रतिबिम्ब है। किंतु अजित-कृष्ण वसु-लिखित प्रस्तुत लेख में इन सबका नहीं, स्वयं युक्लिड महाशय और उनकी तपस्विनी पत्नी के जीवन की एक झांकी है।

युक्लिड मृत्यु-शय्या पर पड़े थे। उनके दोनों पुत्र, युडेमास और युफोनास, पास ही चिंतित-से बैठे थे। पत्नी युरेका भी अस्थिर चित्त से अपने स्वामी को निहार रही थी। युक्लिड ने अपनी सूनी दृष्टि आसपास दौड़ायी, तो युरेका का क्लांत चेहरा दिखायी पड़ा और वे धीमी आवाज में बोले—"पास आओ, युरेका, ज़रा बैठो यहाँ !"

युरेका पास आकर खड़ी हो गयी, बैठी नहीं—उसके गालों पर आँसू के बूँद ढुलक रहे थे।

"आँसू पोंछ डालो, युरेका !"—युक्लिड बोले—"इस असीम की यात्रा तो सबको करनी पड़ती है। कौन बच पाया है इससे ! अब तो तुम प्रसन्न-मन मुझे विदा दो, इसीसे मेरे मन को परितोष मिलेगा। मैंने अपने जीवन का लक्ष्य पूरा कर लिया है— अब मौत से मुझे कोई शिकायत नहीं है।... लोग अब तक मुझे विक्षिप्त ही समझते रहे, युरेका; लेकिन भविष्य बतलायेगा कि, मैं सनकी नहीं हूँ। मैंने जो-कुछ किया है, उसे एक दिन लोग समझेंगे—मुझे पूरा विश्वास है !" इन शब्दों ने युरेका को और विह्वल कर दिया—आँसुओं का प्रवाह अधिक तेज हो गया।

युक्लिड एक क्षण रुके, फिर बोले—"तुम्हारे आँसू भी उचित ही हैं। मैंने तुम्हारे साथ कम अन्याय नहीं किया है। अपनी धुन के पीछे मैं यह भूल ही गया कि, मेरी पत्नी भी है और उसकी भी कुछ अभिलाषाएँ होंगी। मैंने कभी दो पल तुम्हारे साथ प्रेम से बातचीत नहीं की—कभी तुम्हारे रूप-गुण की प्रशंसा में दो शब्द नहीं कहे...। और, आज मैं जा ही रहा हूँ।....."

"मैं भाग्यशालिनी हूँ, जो तुम्हारे-जैसा पति पाया। तुम व्यर्थ चिंता करते हो। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि, मैंने तुम्हारा सम्पूर्ण प्यार पाया है। मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं। लेकिन क्या तुम्हारे

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिछुड़ने की पीड़ा भी मुझे नहीं होनी चाहिए – क्या पत्थर हूँ मैं? मेरा, 'सर्वस्व' संकट में है और मैं रोऊँ भी नहीं। तुम..." रुलाई के कारण युरेका का कंठ अवरुद्ध हो गया–वह आगे न बोल सकी!

इतना बड़ा गणितज्ञ–ज्यामिति अथवा रेखागणित का जन्मदाता–मर रहा था, उसकी पत्नी और पुत्र बैठे आँसू बहा रहे थे; पर बाकी सब लोग उसे विक्षिप्त ही समझते थे और विक्षिप्त के जीने-मरने की भला चिंता कौन करता! उस जमाने के लोग युक्लिड की बातें समझने की क्षमता नहीं रखते थे और उनकी इस अक्षमता का परिणाम युक्लिड को सारा जीवन भुगतना पड़ा।

आचार्य युक्लिड

[चित्र : सुबोध मजूमदार]

युक्लिड के पिता युरेनस की किराने की दूकान थी। युरेनस जब काफी उम्र के हो गये थे, तब उन्हें युक्लिड के रूप में एकमात्र पुत्र प्राप्त हुआ था। युरेनस स्वयं पढ़े-लिखे नहीं थे, जिसके कारण उन्हें दूकान का हिसाब-किताब रखने में बड़ी असुविधा होती थी। इसीलिए उन्होंने युक्लिड को पढ़ने-लिखने के लिए एक पाठशाला में भेजा। कुछ समय तक तो युक्लिड ठीक से पढ़े-लिखे; लेकिन फिर शीघ्र ही उनके मस्तिष्क में 'विकृति' के लक्षण दिखायी पड़ने लगे। वे जहाँ-तहाँ तरह-तरह के नक्शे बनाते और कपाल पर हाथ रख कर चिंतामग्न हो जाते– कभी-कभी तो खानापीना और सोना भी भूल जाते। यह हाल देख कर युरेनस की चिंता बढ़ी; पर उनके कुछ साथियों ने परामर्श दिया–"उसकी राह में बाधा न बनो। वह जो चाहे, करने दो। पाठशाला में वह जरूरत से ज्यादा पढ़ गया है, इसी का यह परिणाम है। कुछ दिनों के बाद, सब-कुछ स्वयमेव ठीक हो जायेगा।"

एक दिन अकस्मात् युक्लिड का एक विचित्र गाना लोगों ने सुना और उनके पिता ने निराश हो सिर ठोंक लिया। वह गाना किसी की समझ में नहीं आया। गाने का अर्थ था–"किसी त्रिभुज की तीनों भुजाएँ बराबर होने पर उसके तीनों कोण भी आपस में बराबर होते हैं। इसी तरह त्रिभुज के तीनों कोण बराबर होने पर उसकी तीनों भुजाएँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बराबर होती हैं।" युरेनस ने अपनी पत्नी से कहा कि, युक्लिड को पागलखाने में भर्ती करा देना चाहिए; पर उन्होंने कुछ दिन और अपेक्षा करने की सलाह दी।

और, अवसर पाकर, एक दिन एकांत में युक्लिड से उनकी माँ ने पूछा —"बेटा, क्या हो गया है तुम्हें? तुम मुझे सब सच-सच बता दो।"

युक्लिड ने उत्तर दिया—"सच माँ, मुझे कुछ नहीं हुआ। बात सिर्फ इतनी है कि, मुझे एक ऐसे विषय की जानकारी हो रही है, जो अब तक कोई नहीं जानता। इसलिए लोग मुझे पागल और न-जाने क्या-क्या समझते हैं।"

सुन कर माँ को कुछ संतोष हुआ; फिर भी अविश्वास समूल नष्ट नहीं हुआ। बोलीं—"लेकिन बेटा, ध्यान रखना, कहीं इस अद्भुत विषय के पीछे कोई अनर्थ न हो जाये।"

"नहीं माँ, तुम एकदम निश्चित रहो!"—युक्लिड ने अपनी माँ को आश्वासन दिया; पर उनका 'उन्माद' क्रमशः बढ़ता ही गया और कुछ समय बाद, उनकी हरकतें उनके पिता के लिए असह्य हो गयीं। युक्लिड को सही मार्ग पर लाने के लिए अपने शुभेच्छुओं से वे निरंतर विचार-विमर्श करते रहते। अंत में, उनके एक मित्र एनोबार्बास ने एक समाधान प्रस्तुत किया—"तुम उसका विवाह कर दो, तो उम्मीद है कि, वह ठीक रास्ते पर आ जायेगा। वधू भी तैयार ही है—मेरा खयाल है कि, मेरी पुत्री युरेका तुम्हें पसंद आयेगी।"...

तदनुसार ही युक्लिड का युरेका के साथ विवाह हो गया; लेकिन सुंदर पत्नी उनके स्वभाव में परिवर्तन न ला सकी। एनोबार्बास के कुछ मित्र ने उसे इस बात के लिए धिक्कारा भी कि, उसने अपनी पुत्री को एक पागल के गले मढ़ दिया; पर एनोबार्बास अविचलित रहा। उसके कोई पुत्र नहीं था और धन-दौलत काफी थी, अतः उसने अपनी पुत्री और जामाता को अपने ही घर रख लिया। इसके बाद तो युक्लिड को भी इत्मीनान से अपने मन की करने की सुविधा प्राप्त हो गयी।

ज्यामिति : जीवन

ज्यामिति के अनुसार बिंदु ही गति का आदि है और बिंदु ही अंत। बिंदु-बिंदु मिलाकर ही रेखा बनती है, चाहे वह टेढ़ी हो, सीधी हो या गोल। इस प्रकार ज्यामिति जीवन की व्याख्या ही है। क्षण-प्रति-क्षण के हमारे जो बिंदु रेखा बनाते हैं, वह रेखा ही जीवन है—कभी सीधा, कभी टेढ़ा, कभी गोल। और, जैसा कि ज्यामिति का सिद्धांत है कि, बिंदु का आदि अंत भी हो सकता है और अंत आदि भी; वैसे ही हमारे जन्म-मृत्यु की स्थिति है!

—प्लांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बीच युक्लिड की माँ का देहांत हो गया और पत्नी के शोक में युरेनस ने भी खाट पकड़ ली। जब उनका अंतिम समय निकट आ पहुँचा, तब उन्होंने अपने पुत्र युक्लिड और बुआ के पुत्र युमेनस को बुलवाया। एकांत में युक्लिड से कहा—"अब मेरा अंत निकट है; अतः वसीयत करना चाहता हूँ। तुम्हारे कारनामों से तो सब लोग 'छिः-छिः' कर रहे हैं और मुझे भी उम्मीद नहीं है कि, तुम दूकान सम्भाल सकोगे। फिर भी यदि तुम वचन दो कि, तुम अपना रास्ता बदलोगे, तो मैं तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बना सकता हूँ; अन्यथा मैं युमेनस को सब-कुछ दे जाऊँगा।"

लेकिन सम्पत्ति का लोभ युक्लिड को अपनी धुन से अलग न कर सका— वे ज्यामिति-चर्चा में पूर्ववत् लगे रहे। उनके पिता खिन्न-मन ही स्वर्गवासी हुए। अंत तक वे यही कहते रहे—"युक्लिड उस दिन के लिए अपना सिर खपा रहा है, जो शायद कभी नहीं आयेगा।"

एनोबार्बास की, अपने जामाता के कारण, काफी भर्त्सना होती—साथ ही धमकियाँ भी मिलतीं। न-जाने क्यों, युक्लिड की वह धुन किसी को पसंद नहीं थी और लोग उनसे शत्रुता रखने लगे थे। एक दिन एनोबार्बास को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था—"आपका जामाता युक्लिड शैतान का उपासक है। उसकी गति-विधियाँ और हाव-भाव रहस्यपूर्ण हैं। उसी की शैतानी के कारण इस क्षेत्र में इन दिनों दुःख-दारिद्र्य का आगमन हुआ है—कई मनुष्य और जानवर भी काल के ग्रास बने हैं। युक्लिड शैतानी भाषा का अपने गुप्त कार्यों के लिए प्रयोग करता है और वह उसे 'ज्यामिति' के नाम से पुकारता है। हम अब और अधिक अपनी दुर्दशा नहीं देख सकते, इसलिए आप तुरत उसे यहाँ से हटा दीजिये; अन्यथा परिणाम बुरा होगा।"

वह पत्र उस क्षेत्र के पंचों की ओर से भेजा गया था और उसकी उपेक्षा करना सहज नहीं था। फिर भी अपनी पुत्री और जामाता से इस तरह अलग होना उसे पसंद नहीं था और वह किसी तरह अपने जामाता को निर्दोष साबित करना चाहता था। इसीलिए वह इलाके के प्रसिद्ध ज्योतिषी टेलिफोनास के पास गया। उस ज्योतिषी की एक खूबी यह थी कि, वह अपने को दूसरे साधारण लोगों से ज्यादा बुद्धिमान मानता था और यही साबित करने के लिए वह सबसे भिन्न कोई नयी बात बोलता था। युक्लिड के मामले में भी ऐसा ही हुआ। उसने सारी बातें सुनने के बाद निर्णय दिया—"इलाके के वे सारे लोग मूर्ख हैं, जो युक्लिड की निंदा करते हैं। इसकी महानता आनेवाला युग बतायेगा।.....लेकिन फिलहाल इसे कहीं भेज दो; क्योंकि इन मूर्खों का क्या ठिकाना, कब क्या कर बैठें!"

टेलिफोनास के परामर्श के अनुसार,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एनोबार्बास ने अपनी पुत्री और जामाता को अन्यत्र भेज दिया। वहीं निर्द्वंद्व होकर युक्लिड अपनी ज्यामिति की गुत्थियाँ सुलझाने लगे, वहीं दोनों पुत्रों का जन्म हुआ और वहीं वे आज मृत्यु-शय्या पर पड़े थे।...

युरेका के बाद अपने पुत्रों से युक्लिड बोले—"बेटे, देखो, युरेका ने जीवन-भर दुःख भोगा है। इसे मैं कोई सुख नहीं दे सका। अब तुम लोग इसे दुःखी न होने देना।....और, तुम लोगों को मैं विरासत में क्या दे जाऊँ! फिर भी, कुछ दे जाता हूँ।....युडेमास, अपने सारे जीवन की साधना का फल—ज्यामिति के तत्व—मैं तुम्हें देता हूँ। भविष्य में लोगों को इसकी जरूरत होगी।.....

और, युफोनास, तुम्हें मैं अपनी डायरी देता हूँ—शायद लोगों को इसकी भी जरूरत पड़े।....तुम दोनों भाई इन दोनों चीजों को सम्भाल कर रखना।..."

....और, कुछ क्षण बाद, युक्लिड का स्वर्गवास हो गया। वह महान् गणितज्ञ अपनी साधना का सुफल देखे बिना ही चला गया। उनकी मृत्यु के बाद, उनके दोनों लड़कों ने पिता की विरासत सम्भाल कर रखी तो; लेकिन शायद आगे जाकर युफोनास डायरी की रक्षा नहीं कर सका—वह कहीं खो गयी। फलतः आज ज्यामिति के सिद्धांत आदि तो मिलते हैं; पर यूक्लिड की साधना के वे ज्वलंत क्षण नहीं, जो उसने जीवन की खराद पर पसीने की स्थितप्रज्ञता से कमाये थे!

प्रलय के झंझावात में सारी सृष्टि विनष्ट हो चुकी थी। बचे थे सिर्फ कितुंग ऋषि। कितुंग ऋषि ने दूर तक फैली सूनी-सूनी धरती को देखा और फिर उदास मन से उन्होंने अपने लिए एक घर बनाया। घर की दीवार पर उन्होंने सफेद खड़िया से एक पुरुष और एक नारी की आकृति बनायी। फिर कितुंग ऋषि 'उमंगसम' (सूर्य भगवान्) के पास पहुँचे—"भगवन्! प्राणिविहीन यह धरा क्या आपको अच्छी लगती है?" सूर्य मुस्कराये—"कितुंग! तुमने जो दीवार पर आकृतियाँ बनायी हैं, जाकर उन्हें हरे पत्तों से ढँक दो। ठीक सात दिनों के बाद, अपनी कनिष्ठा उँगली चीर कर उन पर लहू टपका देना—दो बूँदें पुरुष की आकृति पर और तीन नारी की आकृति पर।" कितुंग ने वैसा ही किया। नौ दिनों के बाद, नारी की आकृति से एक नवजात बालिका बाहर निकल आयी और पुरुष की आकृति से एक नवजात बालक! कितुंग ऋषि ने उन दोनों का पालन-पोषण किया। युवा होने पर सूर्य भगवान् ने उनकी शादी करवा दी। कहते हैं, वर्तमान मनुष्य-जाति उन्हीं की संतान है। —मेक्सिकन लोककथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुरोध

यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ

(क)

है अगम चेतना की घाटी कमजोर बड़ा मानव का मन
ममता की शीतल छाया में होता कटुता का स्वयं शमन
बाधाएँ घुलकर बह जातीं खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन
होकर निर्मलता में सुरभित बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन
संकट में यदि मुसका न सको भय से कातर हो मत रोओ
यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ

(ख)

हर सपने पर विश्वास करो लो लगा चाँदनी का चंदन
मत याद करो मत सोचो ज्वाला में कैसे बीता जीवन
इस दुनिया की है रीत यही सहता है तन बहता है मन
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सके वह है चेतन
तुम इसमें जाग नहीं सकते तो सेज बिछा कर मत सोओ
यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ

(ग)

पग-पग पर शोर मचाने से मन में संकल्प नहीं जमता
अनसुना अचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता
संशय के किसी कुहासे में विश्वास नहीं पल-भर रमता
बादल के घेरे में भी तो जयघोष न मारुत का थमता
यदि विश्वासों पर बढ़ न सको साँसों के मुरदे मत ढोओ
यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ

— अंचल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राचीन मिस्र में
अंतर्राष्ट्रीय खेल-प्रतियोगिताएँ

आज जो हमारे सामने है, उसके दर्पण में जब हम पुरानी सदियों को देखते हैं, तो हमारे अहंकार का ही दमन नहीं होता, यह भी स्पष्ट हो जाता है कि, जो भी मनुष्य से संलग्न है, वह मनुष्य के लिए सौ-बार मर कर भी जीता रहता है। प्रस्तुत लेख में स्पेंगलर के इन्हीं विचारों की प्रतीति है। ऊपर चित्र में मिस्र के अमेनेमहते के मकबरे में बने ओलिम्पिक खेलों में लीन देश-विदेश के खिलाड़ियों की प्रतियोगिताओं के भित्ति-चित्र हैं।

★

अकसर समझा जाता है कि, ओलिम्पिक खेल का प्रारम्भ यूनान से हुआ; परंतु अब यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि, ईस्वी सन् से २००० वर्ष पहले फरोह के शासन-काल में मिस्र में अंतर्राष्ट्रीय खेल-प्रतियोगिताएँ हुआ करती थीं। उस जमाने में मिस्र के पड़ोसी देशों के खिलाड़ी मिस्री खिलाड़ियों से मुकाबला करने के लिए आमंत्रित किये जाते थे।

पटा-लकड़ी

[चित्र: एक प्राचीन भित्ति-चित्र की रेखानुकृति]

फरोहों की कब्रों और मंदिरों में ऐसे भित्ति-चित्र बने हैं, जिनसे पता चलता है कि, मिस्र-निवासी उस समय भी कितने ही खेलों में माहिर थे।

बेनी-हसन में उत्तरी मिस्र के १६-वें प्रांत के गवर्नर अमेनेमहते की समाधि में कुछ चित्र हैं, जिनमें मिस्री खिलाड़ी कुश्ती लड़ते, पटा खेलते, तीर चलाते, वजन उठाते, घूँसेबाजी करते, रस्साकशी करते, शिकार करते, मछली मारते तथा डोंगियाँ चलाते दिखाये गये हैं। यहाँ इस बात की ओर भी ध्यान आकृष्ट करना उपयुक्त होगा कि, अमेनेमहते की उपाधि, गवर्नर के साथ-साथ 'खेलों के सुपरिंटेंडेंट' की भी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्वानों का ऐसा मत है कि, इस रूप में खेलों का प्रारम्भ रामासेस तृतीय ने किया था। एक बार विदेशी सेना ने उसकी भूमि पर आक्रमण कर दिया। रामासेस की सेना बड़ी वीरता से लड़ी और विजयी रही। उस विजयोल्लास में रामासेस ने अपने मित्र देशों के खिलाड़ियों को आमंत्रित करके इस खेल-प्रतियोगिता का श्रीगणेश किया।

उक्त आयोजन में अपने विदेशी अतिथियों तथा दरबारियों के साथ सम्राट् रामासेस भी सम्मिलित हुए थे तथा कुश्ती, घूँसेबाजी और पटा खेलने को प्रामुख्य दिया गया था। इस उत्सव के सम्बंध में, जो भित्ति-शिल्प बने हैं, उनसे इस प्रतियोगिता के अंतर्राष्ट्रीय रूप में किंचित्-मात्र आशंका नहीं रह जाती। शिल्पकार ने अपने शिल्प के निर्माण में न केवल खिलाड़ियों के जाति-भेद-सूचक आकृति के अंतर को कुशलतापूर्वक दर्शाया है; बल्कि एक शिल्प में, पटा के खेल के निर्णायकों के पीछे, उसने विदेशी दर्शकों का भी बड़ी ही सुंदरता से अंकन किया है।

उस चित्र के साथ, जो आलेख है, उससे भी यह भलीभाँति स्पष्ट है कि, एक मिस्री किसी विदेशी से पटा लड़ रहा है।

शिकागो-विश्वविद्यालय के ओरियंटल-इंस्टीटयूट के श्री जे० ए० विल्सन ने इस सम्बंध में विशेष खोज की है। उनका कहना है कि, मिस्रियों के इन खेल-प्रतियोगिताओं में नियमों का पालन बड़ी दृढ़ता से किया जाता था और सभी खेलों में बड़ी गहरी प्रतियोगिता हुआ करती थी।

और, एक अति महत्वपूर्ण बात तो यह है कि, उस काल की कुश्ती में भी वे ही 'दाँव' प्रयोग किये जाते थे, जिनका प्रयोग आज होता है।

एल० विश्वविद्यालय के प्राध्यापक हार्पर ने भी इसका समर्थन किया है तथा लिखा है—"प्राचीन मिस्र की कुश्ती हमारी आधुनिक कुश्ती से बहुत मिलती-जुलती है और कुछ 'पकड़ें' तो ठीक वैसी हैं, जैसी कि, आज की कुश्तियों में देखने में आती हैं।"

यद्यपि उस काल की घूँसेबाजी के सम्बंध में हमें कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है; पर जो तत्सम्बंधी चित्र उपलब्ध हैं, उनके आधार पर यह भी बड़ी सरलता से कहा जा सकता है कि, फरोह-कालीन घूँसेबाजी भी आधुनिक घूँसेबाजी से बहुत-कुछ मिलती-जुलती थी।

प्राचीन भारत के 'स्टेडियम'

महाभारत में उल्लेख है कि, अपने शिष्यों की क्रीड़ा व्यायाम-प्रतियोगिता के लिए द्रोणाचार्य ने एक प्रेक्षागार (स्टेडियम) बनवाया था। ...इन प्रेक्षागारों (स्टेडियम) में कई मंजिलें, गैलरियाँ, कमरे, गवाक्ष और अर्द्ध चंद्र-पद्धति के झरोखे होते थे।

— नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पटा के खेल के सम्बंध में तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि, मिस्र को इस कला का जन्मस्थान होने का सौभाग्य प्राप्त है और शताब्दियों तक वह इस कला में अग्रगण्य रहा है। शिल्पों को देखने से ज्ञात होता है कि, मिस्रवासी लकड़ी के पटे का प्रयोग करते थे और पटे के अंत में, बटन के समान एक रोक रहता था। एक शिल्प में पटा प्रारम्भ करने से पूर्व एक व्यक्ति अपने प्रतिद्वंदी का अभिवादन कर रहा है और यह भी ठीक उसी तरह जैसे कि, हम आज अभिवादन करते हैं।

पटे की मार से बचाव के लिए वे चमड़े की ढाल का प्रयोग करते थे। ऐसे आरक्षक, खिलाड़ी की कमर में, बाहु के अग्रभाग में तथा ठुड्ढी में बँधे रहते थे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि, पटे का खेल वे अभिनय के लिए ही नहीं; बल्कि सूक्ष्म कला-प्रदर्शन के लिए खेलते थे।

गलत दाँव पर निर्णायक कुश्ती को रोक रहा है।

[चित्र : प्राचीन भित्ति-चित्र की रेखानुकृति]

फरोह के काल में भी विजयी व्यक्ति का उसी रूप में समादर किया जाता था, जैसा कि, आज ओलिम्पिक खेल में किया जाता है। विजयी खिलाड़ी निर्णायक के सम्मुख नत होने के पश्चात् फरोह को अभिवादन करता था और फरोह उसकी प्रशंसा करते तथा और आगे बढ़ने के लिए उसे उत्साहित करते।

इन समस्त साक्षियों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि, मिस्र खेलों तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का जन्मस्थान है।

इस तथ्य की ओर अब खिलाड़ियों का भी ध्यान गया है और वे भी बेनी-हसन को महत्व देने लगे हैं। गत वर्ष खेलों के इतिहास के जर्मन विद्वान डाक्टर कार्ल डीम इन भित्ति-चित्रों का अध्ययन करने गये थे और ओलिम्पिक-कमिटी के अध्यक्ष ऐवरी ब्रंडेज ने उनका अध्ययन करने के पश्चात् कहा- "खिलाड़ियों तथा खेल-प्रेमियों के लिए तो, निस्संदेह, यह जगह तीर्थस्थान है।"

अंतर्राष्ट्रीय ओलिम्पिक-कमिटी में, सन १९१० से ही यूनान का प्रतिनिधित्व करने वाले, सबसे अधिक वयस्क सदस्य एंगोलो बोलोनाकी ने बेनी-हसन देख कर कहा कि, पुरातत्वविदों तथा खेल-विशेषज्ञों की एक समिति इन चित्रों के अध्ययन के लिए नियुक्त की जानी चाहिए। खेलों के इतिहास में रुचि रखनेवालों के लिए वह रिपोर्ट बड़े महत्व की होगी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुपति-प्रथा : एक आवश्यकता

"संस्कृति जीने का तरीका-मात्र है, घटिया-बढ़िया का वहाँ सवाल नहीं। जो-कुछ हमारा है, उसे हम श्रेष्ठ और जो पराया है, उसे निकृष्ट बताते रहे हैं—लेकिन यह तो कोई मापदंड नहीं। भले-बुरे के होने और न होने के और भी कई कारण होते हैं!" श्री धर्मदेव शास्त्री का यह लेख बर्नर्ड शा के इस विवेचन के साथ पूरा न्याय करता है।

सीता और सावित्री के समान भारतीय समाज द्रौपदी को भी आदर्श नारी के रूप में मानता है। द्रौपदी पाँच पांडवों की समान पत्नी होने पर भी पतिव्रता मानी गयी है; क्योंकि धर्म समझकर वह पाँचों पतियों की समान रूप से सेवा करती थी। हिमालय के कुछ क्षेत्रों में पांडवकालीन बहुपति-प्रथा आज भी विद्यमान है। महाभारत के अनुसार हिमालय-वास के दिनों में ही पांडु के पाँच पुत्रों का जन्म हुआ है—इस प्रकार पांडव भी हिमालय के पुत्र हैं।

दो बहनें
[चित्र : सुबोध मजूमदार]

देहरादून शहर से केवल ३० मील दूरस्थ कालसी के पास से, जहाँ यमुना, अमला और तमसा, इन तीनों नदियों का संगम होता है, प्रारम्भ होनेवाला जौनसार बावर एक ऐसा आदिम जाति-क्षेत्र है, जहाँ बहुपति-प्रथा प्रचलित है। जौनसार बावर का क्षेत्रफल करीब ५०० वर्ग मील और जनसंख्या करीब ६०हजार है। यहाँ रहने वाली खस और कोल, दोनों जातियों में बहुपतित्व की यह प्रथा समान रूप से पायी जाती है। सगे भाइयों की समान पत्नी रहने की इस प्रथा का कारण आर्थिक होने के साथ-साथ सांस्कृतिक भी है। प्रदेश पहाड़ी होने से यहाँ खेती-योग्य भूमि बहुत कम है। इसके अतिरिक्त पशु-पालन भी यहाँ के जीवन का प्रधान अंग है। अतः सम्मिलित कुटुम्ब के बिना खेती, पशु-पालन तथा जंगल में रहते हुए जीवन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्वाह सम्भव नहीं। पृथक् विवाह का अर्थ है पृथक् घर, पृथक् बरतन, पृथक् पशु, पृथक् खेत और पृथक संतान। इसी कारण हजारों वर्ष पुरानी पांडव-कालीन प्रथा आज भी उक्त प्रदेश में ज्यों-की-त्यों विद्यमान है।

जौनसार बावर के निवासी अपने-आपको पांडवों का वंशज मानते हैं। मंडाण यहाँ का लोकप्रिय नृत्य है, जिसमें स्त्री द्रौपदी का और पुरुष पांडवों का सजीव अभिनय करते हैं। विवाह आदि अवसरों पर पांडव-सम्बंधी गीत गाने का प्रचलन बहुत दूर तक के हिमालय में मिलता है। कहा जाता है कि, अज्ञातवास के दिनों में पांडव, जौनसार बावर प्रदेश में ही रहे थे।

चकरौता से मसूरी जानेवाले पैदल-मार्ग पर चकरौता से १२ मील की दूरी पर एक किला है, जो राजा विराट् का पुराना किला बताया जाता है। इसे स्थानीय निवासी 'वैराट' कहते हैं। इसी प्रकार जमनोत्री जाने वाले पैदल-मार्ग पर चकरौता से २४ मील की दूरी पर यमुना-किनारे लाखा-मंडल नाम का एक ग्राम है, जहाँ महाभारत-कालीन लाक्षागृह-घटना घटित हुई बतायी जाती है। यहाँ बहुत बड़ी गुफा के साथ एक सुरंग है, जिसमें से लाक्षागृह-दाह के अनंतर पांडवों के निकल भागने की बात, ग्राम-वासी बताते हैं। पांडवों और विशेष कर अर्जुन के सम्बंध में ऐसे लोकगीत यहाँ प्रचलित हैं, जिनमें गेंडे के शिकार और राक्षसों के वध की बातें हैं। कहा जाता है कि, उन दिनों लाखा-मंडल के आसपास अनेक नरभक्षी राक्षस थे और उन्हें अर्जुन तथा भीम ने बड़ी बहादुरी से मार कर आतंक मिटाया था।

जौनसार बावर में प्रायः छोटी आयु में ही लड़के-लड़कियों का विवाह हो जाता है। पुरानी प्रथा के अनुसार इधर वर-यात्रा नहीं, वधू-यात्रा होती है। लड़की के सम्बंधी बारात के रूप में लड़के वाले के घर जाते हैं। लड़की के माता-पिता लड़की के नाम पर धन नहीं लेते। ग्राम के सम्बंधी साक्षी-रूप में केवल पाँच अथवा सात रुपये स्वत्व-मुक्ति के रूप में लेते हैं। इसे स्थानीय भाषा में 'जीव-धन' कहा जाता है। लड़कीवाले की ओर से यथाशक्ति लड़की को बरतन, भेड़-बकरी और गौ भी दी जाती है। विवाह के अवसर पर 'सूर' (मद्य), शिकार (माँस) की प्रचुरता में अब धीरे-धीरे कुछ कमी होने लगी है।

जौनसार बावर में विवाह बड़े भाई के नाम पर होता है; परंतु शेष भाई भी व्यवहार में समान रूप से पति रहते हैं। बड़े भाई का, परिवार और सम्पत्ति पर विशेष अधिकार माना जाता है। सम्भवतः परिवार के स्थायित्व के लिए ऐसा आवश्यक है। बहुपतित्व के साथ बहुपत्नीत्व भी यहाँ प्रचलित है। इस प्रकार एक घर में एक से अधिक भी पत्नियाँ होती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु वे सब सभी भाइयों की समान पत्नियाँ मानी जाती हैं। इस प्रकार इस प्रदेश में कोई स्त्री अथवा पुरुष कभी अविवाहित नहीं रहता।

बहुपतित्व का शुद्ध रूप तिब्बत के साथ लगे किन्नर प्रदेश में प्रचलित है, जहाँ सब भाइयों की केवल एक ही पत्नी रहती है। इसी कारण किन्नर जाति की हजारों लड़कियाँ अविवाहित रहती हैं। ये आगे चल कर बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर 'जोमो' बन जाती हैं।

जौनसार बावर और दूसरे बहुपतित्व वाले प्रदेशों में छूट अथवा तलाक का भी आम प्रचलन है। बहुधा स्त्रियाँ पूर्व-पतिगृह को छोड़ कर दूसरे पतिगृह चली जाती हैं। ऐसी दशा में प्रथम पति को भरपूर धन देकर दूसरा पति संतुष्ट करता है। यहाँ संतान सभी पिताओं की समान रूप से मानी जाती है। पुत्र अथवा पुत्री भी सभी पिताओं को समान रूप से 'पिता' अथवा 'बाबा' कहती है। पृथक् समझाने की आवश्यकता हो, तो पुत्र अपने पिताओं को उनके विशेष कार्य के साथ पृथक् नाम से पुकारते हैं; जैसे —बकरेवाला बाबा, भैंसवाला बाबा इत्यादि।

इनके यहाँ खूबी की बात यह भी है कि, औरत के कारण कभी भाइयों में झगड़ा नहीं होता। घर और बाहर पुरुषों तथा स्त्रियों के कार्य तथा अधिकार बँटे रहते हैं। इसी कारण अनेक शताब्दी पुरानी समाज-व्यवस्था अब भी चलती है। हमारे देश की जो पुरानी आदिम जातियाँ अपनी निराली समाज-व्यवस्था तथा अर्थनीति को बनाये रख कर अभी तक अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखे हुई हैं, उनमें जौनसार बावर की खस और कोल, हिमाचल के किन्नर तथा गढ़वाल के बौंल्टा, इन चार आदिम जातियों का प्रमुख स्थान है।

ये लोग अतिथि-सेवा और मधुर व्यवहार के गुणों से कभी-कभी नैतिक शोषण के भी शिकार हो जाते हैं। जौनसार बावर और दूसरे प्रदेशों में गैर सरकारी तथा सरकारी स्तर पर स्वराज्य के बाद, जो रचनात्मक कार्य हुए हैं, उनसे इस प्रदेश के मूल निवासियों का देश के शेष भाग से सम्पर्क स्थापित हुआ है, शिक्षा में प्रगति हुई है तथा स्थानीय नेतृत्व का भी विकास हुआ है।

बहुपतित्व की प्रथा जौनसार बावर के अतिरिक्त चीनी (किन्नर-प्रदेश) सिरमौर, जुब्बल, डोडरा क्वार (हिमाचल प्रदेश) तथा र बाँई जौनपुर (टिहरी-गढ़वाल) में भी चलती है। हाँ, बहुपति-प्रथा के स्वरूप में कुछ स्थानीय भिन्नता अवश्य मिलती है। उदाहरण के लिए, जुब्बल में दो भाइयों के बीच एक पत्नी का रिवाज है। यदि घर में तीन अथवा चार भाई हों, तो दो पत्नियाँ और यदि पाँच भाई हों, तो तीन पत्नियाँ लायी जाती हैं। अनेक कारणों से जब भाइयों में बँटवारा होता है, तब पंचायत की सहायता से पत्नियों का भी बँटवारा किया जाता है। बँटवारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में सबसे बड़े और सबसे छोटे भाई को विशेष भाग मिलता है। इसको स्थानीय भाषा में 'जेठंग' और 'कनंग' कहा जाता है। मँझले भाइयों को अपेक्षाकृत कम भाग मिलता है। सम्भवतः ऐसी व्यवस्था भी बँटवारे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए ही की गयी होगी।

हमारे देश के सभी भागों में प्रत्येक दशाब्दी के बाद, जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है; परंतु जौनसार बावर अपवाद है। यहाँ जनसंख्या बहुत धीमी रफ्तार से बढ़ती है। प्रजनन-शास्त्रियों के मत से बहुपति-प्रथा के कारण नारी की प्रजनन-क्षमता कम हो जाती है। इसके अतिरिक्त यौन-रोगों की अधिकता भी जनसंख्या की वृद्धि में प्रधान बाधक है।

अब शिक्षा और यातायात की सुविधाओं में वृद्धि के साथ, जौनसार बावर तथा अन्य पिछड़े प्रदेशों में नयी रोशनी का प्रवेश हो रहा है। इस कारण बहुपति-प्रथा भी कभी भूतकाल की घटना बन कर रह जायेगी; परंतु आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से जब तक जौनसार बावर-जैसे पिछड़े प्रदेश शेष भारत के समान स्तर पर नहीं आ जाते, तब तक बहुपतित्व-प्रथा को मिटाने का कोई भी प्रयास हानिकारक ही होगा। बहुपतित्व का आधार आर्थिक और सांस्कृतिक है और उसे हेय मान कर बहुपति-प्रथा वाली आदिम जातियों को हीन अथवा उपहास्य मानना अनुचित है। पुरानी सामाजिक प्रथाओं में परिवर्तन बाहर से करने के स्थान पर, स्वयं उनके इच्छानुसार, उन्हें समझा-बुझाकर, परिवर्तन लाये जायें, तभी परिणाम सुखद हो सकता है।

★

शाम के खाने के बाद, नारी-स्वभाव की बात चली, तो मार्क ट्वेन ने ऐसा रोचक एवं अद्भुत प्रसंग सुनाया कि, जो हँसे, दिल खोल कर हँसे और जो झुँझलाये, अपने में सिमटे रहे। वह प्रसंग यों था—

"पुरानी बात है— एक दिन स्वर्ग की एक नवयौवना अप्सरा ने शैतान की किसी दिक्कत को हल कर दिया। कृतज्ञ हो, शैतान ने कहा— 'तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। अब बोलो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ! जो भी तुम्हारी इच्छा हो, कहो! पलक मारते ही पूरी हो जायेगी।'

"अप्सरा क्षण-भर सोच में पड़ गयी। तत्काल ही यह निर्णय करना उसके लिए कठिन था कि, क्या माँगा जाये! शैतान ने इसे लक्ष्य किया, मुस्कराता हुआ वह बोला— 'तुम सुंदर बनना चाहती हो— है न?'

"लेकिन उसी क्षण उसके मुँह पर जोरों का थप्पड़ पड़ा और अप्सरा क्रुद्ध स्वर में बोल उठी— 'मूर्ख कहीं का। क्या मैं सुंदर नहीं हूँ?'"

—'इट्स ट्रू' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्म-समृद्धि के लिए मित्र बनाइये

जापानियों में एक प्रार्थना प्रचलित है—"प्रभो, आपका अनुग्रह अवर्णनीय है, भाषा में शब्द कहाँ और वाचा में शक्ति कहाँ, जो हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सकें। आपने हमें शरीर के लिए साहस, मन के लिए मित्र और आत्मा के लिए आनंद दिया है!" वास्तव में, मित्र भाग्यवान् के भाग्य का सबसे मूल्यवान् वरदान है। यहाँ, नीचे प्रश्न सूत्र-शैली में मित्र बनाने के कुछ पैने संकेत दिये जा रहे हैं। आप उन्के प्रकाश में अपने तौर-तरीकों को परखिये और आगे की मंजिल तय करने में जुट जाइये।

*

दो व्यक्ति अगर एक साथ हों, तो मित्रता होते देर नहीं लगती; किंतु उसी तरह, उनमें झगड़ा होते भी देर नहीं लगती। किसी को मित्र बनाना अथवा मैत्री बनाये रखना तो व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है। नीचे, मानस-शास्त्रियों की नवीनतम खोजों पर आधारित कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इन्हें पढ़ कर देखिये और पूरी ईमानदारी से 'हाँ' और 'ना' में जवाब दीजिये। आपके जवाब ही आपको बतायेंगे कि, मित्र बनाने में आप कितने समर्थ हैं!

१. क्या आप स्वयं से अधिक दूसरों का खयाल रखते हैं?

२. दूसरों की किसी बात अथवा उनके किसी कार्य से आपको कभी चोट पहुँचती है, तो क्या आप उन्हें क्षमा कर देते हैं?

३. दूसरों को खुश देखकर क्या आपको खुशी होती है और क्या आप उन्हें खुश रखने की चेष्टा करते हैं?

४. क्या आप बदले में कुछ पाने की आशा किये बिना ही दूसरों का काम कर देते हैं?

५. क्या लोगों से मिलते-जुलते रहने और उनके साथ काम करने में आपको खुशी होती है?

६. क्या आप सदा दूसरों की रुचि का ध्यान रखते हैं?

७. दूसरे जो-कुछ आपके लिए करते हैं, क्या आप उसकी प्रशंसा करते हैं?

८. क्या आप यह महसूस कर लेते हैं कि, कब दूसरे लोग आपसे बातें करने के बजाय चुप रहना चाहते हैं अथवा वे किसी अन्य काम को करने के इच्छुक हैं?

९. सदा अपने ही बारे में, परिचितों अथवा परिवार के बारे में बातें करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोभ क्या आप संवरण कर लेते हैं ?

१०. आपके मित्र आपके बजाय किसी और से अधिक मिलते-जुलते हों, तो क्या आप इसे सहन कर लेते हैं ?

११. कोई चीज आपके मन के विरुद्ध हो जाये, तो आपको स्वयं पर क्या इतना नियंत्रण है कि, झुंझलाहट में अपने आस-पास के व्यक्तियों पर न बरस पड़ें ?

१२. बहस के दौरान में, अगर आप गलत मार्ग पर हों, तो क्या आप अपनी गलती मानने को तैयार रहते हैं ?

१३. क्या आप दूसरों के विश्वास की रक्षा करते हैं ?

१४. क्या आप अपना वचन निभाते हैं?

१५. दूसरों की मुसीबतों में, क्या आप बिना किसी हिचक के, उनकी सहायता करते हैं ?

१६. मित्रों के लिए क्या आप प्रसन्नता-पूर्वक कष्टों का सामना करते हैं ?

अपने प्रत्येक 'हाँ' के लिए आपको ६ अंक मिलेंगे। अगर आपको ७२ अथवा उससे अधिक अंक मिले, तो इसका अर्थ है, आप मित्र बनाने में काफी समर्थ हैं। आपको कभी मित्रों का अभाव नहीं होगा। अगर प्राप्त अंक ६०-७२ के बीच हैं, तो चिंतित होने की बात नहीं। ४८ से ६० तक के अंक संतोषप्रद हैं; किंतु आपको अधिक अंक पाने की चेष्टा करनी चाहिए। हाँ, अगर आपको ४८ से भी कम अंक मिले हैं, तो अवश्य ही बात विचार करने की है। ऐसी स्थिति में प्रश्नों को एक बार फिर ध्यान से पढ़िये – अपने रोग का निदान आपके सम्मुख स्वयं स्पष्ट हो जायेगा। अब आप तदनुसार वर्तन कीजिये-विश्वास और एकाग्रता के साथ एवं अपनी मनीषा के सम्मुख सदैव यह दीप्त वाक्य अमिट रखते हुए कि, 'अपने ही लिए जीने का अर्थ है, दुःख का आह्वान और दूसरों के लिए जीने का अर्थ है, आनंद एवं जीवन की समृद्धि !'

बटन का फूल

भारत की तरह यूरोप के राजवंश भी अकसर फैशनों के स्रोत रहे हैं। उदाहरण के लिए, आजकल प्रचलित कोट का बटन-छेद रानी विक्टोरिया के पति की भावप्रवणता से सम्बंधित है। विक्टोरिया का पति ब्याह के लिए जब जर्मनी से इंग्लैंड आया, तो विक्टोरिया ने उसे एक गुलदस्ता भेंट किया। राजकुमार एल्बर्ट अपनी प्रेयसी की इस भेंट से इतना प्रभावित हुआ कि, फौरन ही उसने चाकू निकाला और अपने कोट के कालर में एक छेद किया। फिर उसने बड़े तपाक से झुकते हुए गुलदस्ते में से एक फूल लिया और उसे कोट के उस छेद में लगा लिया। अपने प्रेमी की इस अपूर्व प्रणय-मुग्धता को रानी आजीवन नहीं भूली।

—'पेजेंट' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूध क्या है

प्रजापति ने मनुष्य का सर्जन किया। किंतु हाथ-पैर-सिर, सब होते हुए भी मनुष्य मिट्टी के जड़ लोथड़े की भाँति निश्चेष्ट पड़ा रहा। ब्रह्मा ने बड़े प्रयत्न किये, देवताओं के तमाम वैद्यों ने भी कोई शक्ति-स्फूर्ति-प्रद औषध बाकी नहीं रखी; किंतु मानव पैरों पर खड़ा न हो सका। इस प्रकार सबको विफल-प्रयत्न देख, माँ धरित्री का वक्ष फूटा और उससे दूध की धार निःसृत हुई। "सर्जन से पोषण कठिन है; क्योंकि पोषण में हृदय के रक्त का सत्व जुटाना पड़ता है।"—माँ धरित्री ममत्व-पुलकित हो बोली। इसी सत्य को आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से नीचे परखिये।

गाय हरी घास खाकर सफेद दूध कैसे देती है? इस प्रश्न का उत्तर यदि आपको मालूम नहीं, तो इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं; क्योंकि कुछ ही समय पहले तक प्राणि-विज्ञान-शास्त्रियों को भी ज्ञात नहीं था कि, दूध कैसे बनता है?

दूध तैयार होने की प्रक्रिया का मुख्य स्थल स्तन है। रक्त के द्वारा जो खाद्य पदार्थ अथवा अन्य वस्तुएँ स्तन में पहुँचती हैं, उनसे स्तन दूध बनाता है। दूध के उत्पादन और निष्कासन पर हार्मोंस का नियंत्रण रहता है। दूध बनता है कोषों में और विभिन्न स्तनधारी प्राणियों में ये कोष विभिन्न प्रकार के होते हैं। गायों या स्त्रियों में इन कोषों की शृंखलाएँ छोटे-छोटे क्षेत्रों को घेरे रहती हैं, जिन्हें 'एल्विओलस' कहते हैं। कोष दूध बना कर प्रत्येक 'एल्विओलस' में छोड़ देते हैं। प्रत्येक 'एल्विओलस' में एक नन्ही-सी नाली रहती है और तमाम 'एल्विओलस' की नालियाँ मिल कर एक बड़ी नाली बनती है, ठीक वैसे ही, जैसे कई छोटी-छोटी नदियों के मिलने से एक बड़ी नदी बन जाती है। इन नालियों से दूध एक संग्रहालय में पहुँच जाता है और आवश्यकतानुसार उसमें से स्तन की घुंडी द्वारा निकाला जा सकता है।

परंतु हमारा प्रश्न है कि, रक्त के द्वारा आये हुए पदार्थों से ये कोष दूध कैसे बनाते हैं? दूध एक निराला पदार्थ है, जिसका शरीर के अन्य द्रवों से कोई साम्य नहीं। चर्बी (क्रीम), 'लैक्टोज' (एक प्रकार की शक्कर) और प्रोटीन दूध के प्रमुख तत्व हैं, जिनकी रासायनिक विशेषताएँ अनोखी होती हैं। दूध के प्रमुख प्रोटीन तत्व हैं—'केसीन' और 'बैटा-लैक्टोग्लोब्युलिन,' जो शरीर में और कहीं नहीं मिलते। 'लैक्टोज' भी केवल दूध में पाया जाता है। यद्यपि यह दो अत्यंत साधारण प्रकार की शक्करों, 'ग्लूकोज' तथा 'गलैक्टोज' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिल कर बनता है। दूध की चर्बियाँ दो तरह की होती हैं। एक तो वे, जो रक्त या शरीर के दूसरे तंतुओं में पायी जाती हैं और दूसरी वे, जो केवल दूध में पायी जाती हैं।

विभिन्न जाति के प्राणियों में इन तीनों पदार्थों की मात्रा भी भिन्न रहती है। गाय के दूध में औसतन चर्बी ४ प्रतिशत, लैक्टोज ५ प्रतिशत और प्रोटीन तीन प्रतिशत रहता है—शेष पानी होता है। स्त्रियों के दूध में चर्बी लगभग इतनी ही, लैक्टोज कुछ अधिक तथा प्रोटीन कुछ कम रहता है।

दूध और रक्त का बड़ा गहरा सम्बंध होता है। रक्त में प्रमुख रूप से चर्बियाँ, प्रोटीन, एमिनो एसिड, ग्लूकोज और लैक्टिक एसिड-तत्व रहते हैं। गायों और बकरियों के रक्त में एसिटिक और प्रोपियोनिक एसिड भी रहते हैं। स्तन इनमें किन पदार्थों को लेकर दूध बनाता है, यह अभी तक अज्ञात था; किंतु आज वैज्ञानिकों ने इसका पता लगा लिया है।

स्तनों में आने-जाने वाले रक्त के ग्लूकोज को माप कर वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि, बकरियों में एक सेर दूध के उत्पादन के लिए १५०-से-२५० सेर रक्त स्तन से गुजरता है।

इसी प्रकार आइसोटोपिक ट्रेसरों द्वारा कैल्शियम की मात्रा मापकर यह निष्कर्ष निकाला गया कि, गाय में एक सेर दूध के उत्पादन के लिए लगभग ४०० सेर रक्त स्तन से गुजरता है।

आइसोटोपिक ट्रेसरों की सहायता से उन पदार्थों का भी पता लग सका है, जिनसे स्तन दूध के विभिन्न तत्वों का निर्माण करता है।

भेड़ों और बकरियों पर प्रयोग करके वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि, दुधारू जीव के स्तन में सारा कार्बन-तत्व रक्त के ग्लूकोज से आता है, यानी दूध का प्रमुख तत्व लेक्टोज, रक्त के ग्लूकोज से ही बनता है! और, दूध के

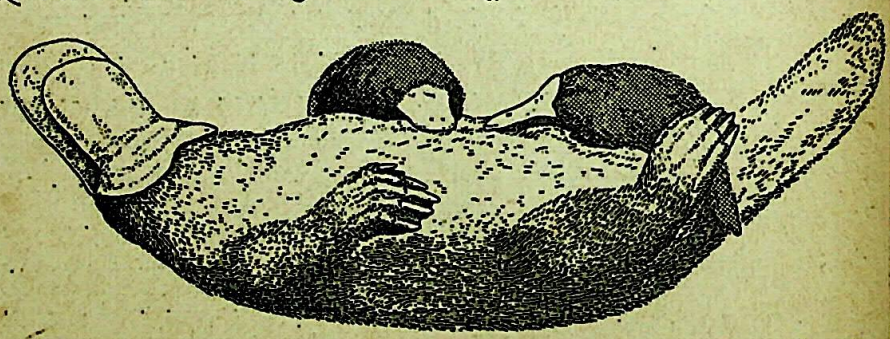

आस्ट्रेलिया का एक विनष्टप्राय पशु, जिसके पेट के प्रत्येक रोम-पुंज से दूध निकलता है। प्रस्तुत चित्र में पशु के दो नन्हे बच्चे इन्हीं रोम-पुंजों में दूध खोज रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनने तथा स्तन से निकलने में लगभग दो घंटे लगते हैं।

इस तरह दूध में पाये जानेवाले लैक्टोज का तो निर्णय हो गया। अब चर्बियों का स्रोत क्या है ? इसका उत्तर कुछ किसानों को ज्ञात है। यदि वे गायों को नर्म चर्बी वाले पदार्थ खिलाते हैं, तो गायों का मक्खन भी नर्म रहता ह। इसका अर्थ है कि, चर्बी का कम-से-कम एक भाग तो निश्चय ही रक्त से बना-बनाया मिलता है। इसका एक और प्रमाण यह भी है कि, रक्त तथा दूध की कुछ चर्बियों में समानता होती है। रेडियो-धर्मी आइसोटोप के द्वारा यह तथ्य निर्विवाद रूप से सिद्ध भी कर दिया गया है।

परंतु पहले कहा जा चुका है कि, दूध में कुछ चर्बियाँ ऐसी होती हैं, जो शरीर में अन्यत्र कहीं नहीं मिलतीं। इनके परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि, ये रक्त से प्राप्त हुए एसिटिक एसिड से बनती हैं। इंग्लैंड में एस० जे० फोली और जी० पापजेक ने बकरियों के रक्त में रेडियो-कार्बन मिश्रित एसिटिक एसिड का प्रवेश करा कर ये दोनों तथ्य असंदिग्ध रूप से सिद्ध कर दिये हैं। उन्होंने यह भी प्रमाणित किया है कि, वह ग्लाइसरोल, जो चर्बीले एसिडों से मिल कर चर्बी बनाता है, स्तन को रक्त के ग्लूकोज से प्राप्त होता है।

अब बचे प्रोटीन। प्रश्न यह है कि, स्तन, रक्त से प्राप्त हुए प्रोटीनों को 'केसीन' और 'बैटा-लैक्टोग्लोब्युलिन' के रूप में परिवर्तित करता है अथवा रक्त से प्राप्त हुए या स्वयं स्तन-द्वारा निर्मित एमिनो एसिड-खंडों से इनका निर्माण करता है।

बकरियों और खरगोशों पर प्रयोग करने से पता लगा है कि, दूध के प्रोटीनों में ९० प्रतिशत एमिनो एसिड, रक्त के स्वतंत्र एमिनो एसिड, से प्राप्त होते हैं।

प्रयोगों से यह भी ज्ञात हुआ है कि, एक प्रोटीन को दूसरे प्रोटीन में बदलने के लिए आवश्यक होता है कि, उस प्रोटीन को उसके मूलभूत एमिनो एसिड के रूप में लाया जाये। प्रकृति ने स्तनों को ऐसी शक्ति दी है कि, रक्त में पाये जाने वाले २० प्रकार के एमिनो एसिड में से अपनी जरूरत के एमिनो एसिड चुन कर उन्हें वे इस ढंग से मिलाते हैं कि, उससे 'केसीन' बन जाता है।

यह है दूध के निर्माण और उसकी प्रयोगशाला की रहस्यमयी कहानी, जिसके सीमांत तक अभी तक अणु-भंजी विज्ञान नहीं पहुँच सका है—चैतन्यस्वरूपा प्रकृति मशीन पर, लगता है, कभी-कभी दिल खोल कर हँसती है !

★

...मूर्खों की बात चली है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि, मूर्ख दो तरह के होते हैं। प्रथम वे, जो यह कहते हैं कि, कोई चीज अच्छी है; क्योंकि वह पुरानी है। द्वितीय वे, जो यह कहते हैं कि, कोई चीज अच्छी है; क्योंकि वह नयी है। —बर्नर्ड शा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माइकेल-नाइजी

हंगेरी के लोकजीवन की अत्यंत मर्मस्पर्शिनी यह गीतिगाथा समस्त पूर्वीय यूरोप—बेल्जियम से नार्वे तक—के भूभाग के काव्य, नृत्य एवं संगीत की प्रेरणा-स्रोत रही है। 'नवनीत' के पाठकों के मनोरंजनार्थ हम यूरोप की इस 'कादम्बरी-कथा को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित कर रहे हैं।

★

हंगेरी देश के उस मुसाफिरखाने में सोने के लिए मुझे जो कमरा दिया गया था, उसमें हरे रंग के पर्दे थे और लम्बी तथा गोलाकार छोटी-छोटी खिड़कियाँ। लहलहाते खेतों पर उस वक्त संध्या का साम्राज्य था। हरे मैदान पर ढलता हुआ सूरज लालिमा बिखेर रहा था और उसके पीछे, मानो परिस्तान के बीच में, पाइन-वृक्षों की ऊँची-ऊँची काली कतार थी। उस भूरे कारपेथियन के अप्सरालोक में कोई मिट्टी का मानव प्रवेश न कर ले—इसीलिए शायद वह रास्ता रोक कर खड़ी थी।

मुसाफिरखाने की मालकिन से मैंने पूछा—"कल तो इतवार है, इसलिए यहाँ के लोग उत्सव मनायेंगे— है न?"

"हाँ! आप बिल्कुल ठीक समय पर आये हैं। कल से यहाँ तीन दिन तक मेला लगेगा। आपको उस वक्त हमारी मेग्यर जाति के रस्मोरिवाज, लिबास-पोशाक और यहाँ के लोग देखने को मिल जायेंगे।"

"कोई जिंगारी भी आयेगा?"—बड़ी आशा से मैंने पूछा।

उस औरत ने कंधे हिलाये—"जिप्सी? आपका मतलब कामरू से है न? हाँ, वे भी एकत्र होंगे। उनका अब तक खातमा नहीं हुआ है। वह मदारी, जोजेफ बाबा, अपना रीछ लेकर आयेगा। जोजेफ मदारी तो उनकी ही तरह—" एकाएक वह चुप हो गयी।

"कामरू लुटेरे माइकेल की टुकड़ी का जोजेफ न?"—मेरे मुँह से अनायास ही निकल गया।

उस औरत का चेहरा फीका पड़ गया—"क्या! आप माइकेल और नाइजी के सम्बंध में जानते हैं? सरकारी जासूस हैं?"

"नहीं बहन, मैं तो एक साधारण अंग्रेज हूँ, यहाँ का रहनेवाला भी नहीं; पर उन कामरू पति-पत्नी, माइकेल-नाइजी की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें, तो सर्वज्ञात हो चुकी हैं।

तीक्ष्ण दृष्टि से उसने मुझे देखा—"तो कल जोजेफ मदारी के बारे में पूछियेगा। मिलने पर एक अशरफी उसके हाथ में चुपके से रख दीजियेगा—वह माइकेल-नाइजी के दास्तानों के ढेर लगा देगा। कितना सुंदर था वह जोड़ा भी! परी-जैसा रूप, बहादुरी भी वैसी ही, नाचने-गाने में गंधर्व-जैसे और खून करने में भी देर न लगे! किंतु गरीब को कभी नहीं लूटते थे!"

"क्या वे मर गये?"

"मर गये!"—औरत के मुँह पर रहस्यमय भाव झलकने लगा—"किसे मालूम, भाई! मर गये हों, तब भी अब तक धरती पर ही फिरते हमें दिखायी देते हैं।" यह कहते हुए उसने अपनी छाती पर हाथ रखे—"जोजेफ बाबा से पूछियेगा, मेरे होंठों पर, तो मुहर लगी है और हाँ, आप यहाँ किसी के सामने माइकेल का नाम मत लीजियेगा! नहीं तो, कोई छुरा भोंक देगा!"

मैंने वह चेतावनी समझ ली। शायद लुटेरों का जोड़ा यहीं-कहीं आस-पास छिपा होगा।

सुबह काफी देर से नींद खुली। हरे मैदान पर पंक्तिबद्ध तम्बू लग गये थे। मेला शुरू हो गया था। भटकते-भटकते मैं जोजेफ मदारी को ढूँढ़ने लगा। किसानों के एक समूह के बीच वह अपने रीछ का खेल दिखा रहा था। हाथ में जंजीर थी, रंग काला। कदावर और लम्बे बालोंवाला वह मदारी तीस वर्ष का था या साठ का, अनुमान लगाना कठिन था। उसके चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ थीं।

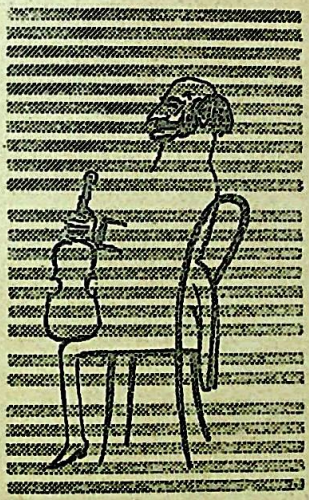

प्राचीन यूरोप का एक गाथा-गायक

खेल खत्म हुआ। रीछ सबको सलाम करता हुआ चारों ओर घूमने लगा। उसके गले में बँधे हुए डिब्बे में लोग पैसे डालने लगे और फिर वे दूसरा तमाशा देखने के लिए चले गये। तब उस अकेले बैठे हुए मदारी के पास जाकर मैंने उसके हाथ में एक अशरफी रखते हुए कहा—"मैं एक अंग्रेज हूँ। मैं आपसे माइकेल-नाइजी की कहानी सुनना चाहता हूँ, जोजेफ बाबा!"

तीक्ष्ण दृष्टि से चारों तरफ देखते हुए उसने मुझसे कहा—"अभी नहीं, रात को मेरे डेरे पर आना। वह रहा छोर पर मेरा तम्बू; पर एक मुहर और देते जाओ, मुझे कुछ जरूरत है?"

रात में अंतिम तम्बू में अकेला जोजेफ मदारी हुक्का पी रहा था। पास ही रीछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गले में बँधी जंजीर पैर के पंजे से पकड़ कर धरती पर बार-बार पटक रहा था।

"आओ भाई!"—मधुर इटालियन भाषा में उसने मेरा स्वागत किया।

"तुम इटालियन भाषा कैसे जानते हो, बाबा?"—मैंने चकित भाव से पूछा।

"मैं अपने मालिक माइकेल के साथ खूब भटका हूँ, भाई! मेरे मालिक नें आज शाम को मुझे आज्ञा दी है कि, मैं तुम्हें सारी बातें कह दूँ। उसने यह भी कहला भेजा है कि, तुम पहाड़ के लोढ़ा घाट के पास हाटजेग के साध्वी मठ में जाना। वहाँ पर माता ऐंजेलिन हैं न, उनका नाइजी के साथ सहेली का रिश्ता था। तुम उनसे सब बात कहना और मेरा नाम बताना। ऐंजेलिन माँ किसी भी पुरुष से नहीं मिलतीं; पर माइकेल की इच्छा है। अतः तुमसे अवश्य मिलेंगी। मेरे मालिक की ऐसी मेहरबानी आज पहले-पहल तुम पर ही हुई है—समझे?"

"पर माइकेल यहाँ है, तो क्या खुद मुझसे नहीं मिल सकता?"

"अरे भाई! मेरा मालिक माइकेल तो चार साल हुए, स्वर्ग-सिधार गया। ठीक आज ही के दिन वह मरा था।"

"पर तुमने तो अभी कहा कि....."

"हाँ, हाँ, मैंने ठीक कहा। उसकी आत्मा मुझसे बातें कर गयी है। उसकी आत्मा अब तक यहीं पहाड़ों में भटका करती है और अपने अपराधों के लिए पश्चात्ताप करती है। तुम्हें यह सब अभी मूर्खता मालूम होती होगी। लेकिन इतना जान लो कि, माइकेल-नाइजी-जैसे प्रेमियों को अलग करने की शक्ति तो मौत के पास भी नहीं!"

"तो क्या नाइजी जीवित है?"

"बाद में स्वयं जान जाओगे।" वह क्षण-भर के लिए चुप रहा; फिर उसने कहानी शुरू की—

"मैं बचपन में ही अपने कामरू लोगों की टोली से बिछड़कर जंगल में गुम हो गया था। वहाँ शिकार पर निकले एक अमीर ने मुझे उठाया और अपने यहाँ आश्रय दिया।

"बड़ा होने पर उसने मुझे अपने पुत्र माइकेल का अंगरक्षक बनाया। बुडा-पेस्ट नगर में माइकेल ने अपनी शिक्षा पूरी की। उन दिनों कई वर्षों तक मैं उसी के साथ रहा। और, माइकेल भी कैसा मालिक था! बड़ा ही नेक और साहसी। साथ-ही-साथ कैसा दयालु और विचारशील! कितनी ही अमीर लड़कियाँ उसका प्यार पाने के लिए तरसती थीं! पर माइकेल का मन-रूपी पक्षी महल के उन गुलाबों की ओर आकृष्ट न हो सका।

"उसका पिता चल बसा और उसके किसानों ने उसे धोखे से बिल्कुल कंगाल कर दिया। कोमल युवक कठोर न बन सका। मुझमें इतनी सामर्थ्य थी कि, अपना और अपने एक घोड़े का जैसे-तैसे निर्वाह कर लेता; लेकिन ऐसे कठिन समय में साथ कैसे छोड़ता! हम दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके पिता के एक रिश्तेदार के यहाँ गये और वहाँ नौजवान माइकेल पर न-जाने कैसे जादू चल गया !

"चौड़े मैदान में गाँव के रईस और अमलदारों की महफिल के बीच मेरी ही जिंगारी जाति के नट तमाशा दिखा रहे थे और तालियाँ पीटते हुए मर्दों और औरतों के बीच में एक कामरू युवती सरगम के लय पर सर्प-नृत्य दिखा रही थी।

"तभी मैंने देखा कि, माइकेल जैसे गहरी चोट खाकर इस कामरू सुंदरी की ओर टकटकी लगाये देख रहा है। मैं तभी सहम गया।

'"जोजेफ !'—उसने मुझसे कहा—'मैं इसी से विवाह करूँगा। जरूरत पड़ी, तो इसे उठा भी ले जाऊँगा।'

"सुनते ही मुझे किसी अपशकुन का अंदेशा हुआ; क्योंकि जिंगारी और कामरू लोग अपनी जाति के बाहर कभी विवाह नहीं करते। और, उनकी लड़की को उठा ले जाना तो मौत के साथ खेलने के बराबर है।

"संध्या हुई। वह लड़की—नाइजी—एक बहुत बड़े कमरे के कोने में बैठी सबकी हस्तरेखा देख कर भविष्य बता रही थी।

"माइकेल उसके पास गया। बोला—'मेरा भी भविष्य बता !'

"पहले तो कामरू लोग अपने व्यवसाय के मुताबिक जो ढोंग करते हैं, वही हुआ; फिर अचानक ही लड़की ने ऊपर देखा, उसकी वे दोनों काली बड़ी-बड़ी आँखें ताज्जुब के साथ काँपती हुई माइकेल के चेहरे पर स्थिर हो गयीं।

"'तेरी हस्तरेखा में काल है—मौत है— मौत के सिवा कुछ भी नहीं।' —वह चिल्लाकर बोली—'तेरी मौत—और तेरे साथ अनेक व्यक्तियों की ! अरे..कोई वहाँ से मेरा जादुई गोला तो लाओ ?'

"टोली का एक वृद्ध, कपड़े से ढँका एक काँच का गोला ले आया। मेज पर गोला रखा गया और कामरू युवती दीवार से सटकर खड़ी हो गयी। उसके ऊपर सात बार हाथ फेरते हुए उस वृद्ध ने उससे पूछा—'बिटिया ! तुझे इस गोले में क्या दिखायी देता है ?'

"बहुत देर तक कोई उत्तर नहीं मिला। फिर एक चीख मारकर गोले को मेज से उठाकर फेंकते हुए वह भागी। आँगन

विधवा नाइजी ने माइकेल की स्मृति में रोगियों और दीन-दुःखियों की सेवा का व्रत मृत्यु-पर्यंत निभाया। [चित्र : हंगेरी के एक प्रस्तर-शिल्प की सरल रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में, जहाँ साज बजानेवाले साज बजा रहे थे, जाकर वह पागलों की तरह नाचने लगी। जब तक माइकेल पूछे, तब तक अपना सिर पीछे की तरफ मोड़ कर कहकहे लगाती हुई वह बोली—'गोला कहता है कि, तेरा और मेरा भाग्य साथ ही जुड़ा है। पर मैं भाग्य को भी बदल दूँगी।'

"तीसरे दिन संध्या समय कामरू लोग चले गये और माइकेल दौड़ता हुआ मेरे पास आया—'जोजेफ, जल्दी घोड़ा तैयार करो। नाइजी ने मुझसे विवाह का वचन दिया है— यदि मैं एक वर्ष के अंदर दो लाख मुहरें लेकर उसके पास वापस आ गया, तब।'

'"दो लाख मुहरें!' मैंने आश्चर्य से पूछा!

'"चिंता की कोई बात नहीं। तुम मेरे साथ चले चलो, बस!'

"मेरा पागल मालिक पाटनगर गया। वहाँ उसने बची-खुची जायदाद बेचकर रकम हासिल की और फिर हम भूमध्य-सागर के किनारे बसे 'साँ-रेमों' के जुआखाने में पहुँचे।

"हारा—हारा—मेरा मालिक सब दौलत हार बैठा। उस जादूगरनी नाइजी को मैंने न-जाने कितने शाप दिये! वहाँ से हम फिर 'मांटे-कार्लो' के जुआघर में गये।

"जीत गया—जीत गया—अपरम्पार सोना वहाँ वह जीत गया। गठरी बाँध कर हम फिर बुडापेस्ट पहुँचे। कई मास बीत चुके थे। नाइजी ने कहा था कि, मेरी जाति के कामरू लोगों से मेरा पता पूछना।

"हम सबसे पूछने लगे—'नाइजी कहाँ है नाइजी कहाँ है?"

"कोई भी जवाब न मिला। आखिर हमने एक कामरू को पकड़कर मौत की धमकी दी, तो उसने बता दिया—'उस किलेवाले अमीर के साथ।'

"सरपट घोड़े दौड़ाकर हम उस अमीर के किले पर पहुँचे। पर उसे पहले से ही पता चल गया होगा। किले का द्वार बंद था। हमने द्वार पर हथौड़े मारे, तो एक बुड्ढे द्वारपाल ने द्वार खोला। हमें देखते ही उसने फिर द्वार बंद करने की चेष्टा की; पर हमने उसे मौका ही नहीं दिया। अंदर घुस गये। मकान के अंदर प्रवेश कर रहे थे कि, श्वेत वस्त्र धारण किये एक छाया-सी हमारे सामने खड़ी हो गयी।

"'आ पहुँचा मेरा काल—आ पहुँचा!' ये शब्द हमारे कानों से टकराये और पागल कर देने वाला अट्टहास गूँज उठा। वह नाइजी ही थी।

"'नाइजी! ओ नाइजी!'— माइकेल चिल्लाया—'यहाँ क्या करती है? इधर देख, तेरे कथनानुसार मैं दो लाख मुहरें लाया हूँ, अब तू अपना प्रण पूरा कर!'

"इतने में उसके पीछे से व्यंग्यपूर्ण शब्द सुनायी दिये। यह किले का मालिक टार्नफील्ड था।

"माइकेल पाषाणवत् खड़ा रहा। फिर उसने दर्द-भरी आवाज में कहा—'नाइजी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूने तो मुझे वचन दिया था ? तूने जितनी दौलत माँगी, उतनी लेकर आया हूँ ?'

"'आ-हा-हा-हा !' टार्नफील्ड हँसा—'इसे दौलत कहते हो जी तुम ? इससे कहीं ज्यादा धन तो इसने अब तक अपने पोशाकों और पैरों के जूतों के पीछे खर्च कर दिया है !

"'झूठ, एकदम झूठ !'—नाइजी अप्रत्याशित चिल्ला उठी।

"टार्नफील्ड काले साँप की तरह पीछे मुड़ा और नाइजी के मुँह पर उसने एक करारा तमाचा मारा। माइकेल से यह न देखा गया। वह टार्नफील्ड पर कूदा। टार्नफील्ड ने गोली चलायी; पर वार खाली गया। माइकेल ने उसके हाथ से पिस्तौल गिरा दी—'तेरी यह विवाहिता पत्नी है न ? पर यह अब विधवा बन जायेगी।'

"'मेरी भी यही इच्छा है, नौजवान ! कल सुबह सूर्योदय से पहले हम दोनों अकेले जंगल में मिलेंगे।

"पर मुझे दगाबाजी का शक हुआ। इसलिए अँधेरे मुँह ही, मैं उस अमीर के किले की दीवार पर कान लगा कर चक्कर काटने लगा। मेरा भय सच निकला। एक ऊपरी खिड़की पर कुछ मारामारी मची थी। ऐसा मालूम हो रहा था कि, नाइजी गुस्से से धमका रही है। जिसे वह बुरा-भला कह रही थी, वह टार्नफील्ड था। मेरा माथा ठनका !

"'धोखा हो गया ! माइकेल ! धोखा हो गया।'—चिल्लाता हुआ मैं जंगल की ओर दौड़ा। पाँच नकाबपोश खूनियों और माइकेल के बीच युद्ध हो रहा था। मैं भी भिड़ गया। हम दोनों ने मिल कर आखिर बड़े परिश्रम से पाँचों जल्लादों को ठिकाने लगा दिया। नकाब खोलने पर वे पहचान लिये गये। वे पाँचों टार्नफील्ड ही के नौकर थे !

"हम दोनों किले की तरफ भागे। सीढ़ी तक पहुँचे और उसी कमरे का द्वार धक्का मार कर खोल दिया। उसी वक्त की टार्नफील्ड की बंदूक ने हमारा स्वागत किया।

"एक कोने में नाइजी खड़ी थी। उसके काले लम्बे केश उसे चादर की तरह आच्छादित किये थे। उसके शरीर के कपड़े फट चुके थे। उसके ललाट पर के घाव से खून बह रहा था। उसके हाथ में छुरी थी। पति के विश्वासघात के कारण ही यह खून-खराबी हुई थी।

"टार्नफील्ड की पहली गोली दरवाजे से, सनसनाती हुई निकल गयी। माइकेल कमरे में दाखिल हुआ। जब तक टार्नफील्ड दूसरी गोली चलाये, नाइजी की छुरी उसके गले के पार हो चुकी थी।

"'नाइजी !'—माइकेल भुजाएँ फैला कर उससे मिला—'चलो, पुलिस के आने से पहले भाग चलें। हमने छः खून किये हैं और हम ठहरे लुटेरे, हमारे लिए दो ही रास्ते हैं—फाँसी का या पहाड़ों का।'

"पर नाइजी ने उसे धक्का देकर तीक्ष्ण मुस्कराहट से कहा—'देख माइकेल, मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में, जहाँ साज बजानेवाले साज बजा रहे थे, जाकर वह पागलों की तरह नाचने लगी। जब तक माइकेल पूछे, तब तक अपना सिर पीछे की तरफ मोड़ कर कहकहे लगाती हुई वह बोली—'गोला कहता है कि, तेरा और मेरा भाग्य साथ ही जुड़ा है। पर मैं भाग्य को भी बदल दूँगी।'

"तीसरे दिन संध्या समय कामरू लोग चले गये और माइकेल दौड़ता हुआ मेरे पास आया—'जोजेफ, जल्दी घोड़ा तैयार करो। नाइजी ने मुझसे विवाह का वचन दिया है— यदि मैं एक वर्ष के अंदर दो लाख मुहरें लेकर उसके पास वापस आ गया, तब।'

'"दो लाख मुहरें!' मैंने आश्चर्य से पूछा!

'"चिंता की कोई बात नहीं। तुम मेरे साथ चले चलो, बस!'

"मेरा पागल मालिक पाटनगर गया। वहाँ उसने बची-खुची जायदाद बेचकर रकम हासिल की और फिर हम भूमध्य-सागर के किनारे बसे 'साँ-रेमों' के जुआखाने में पहुँचे।

"हारा—हारा—मेरा मालिक सब दौलत हार बैठा। उस जादूगरनी नाइजी को मैंने न-जाने कितने शाप दिये! वहाँ से हम फिर 'मांटे-कार्लो' के जुआघर में गये।

"जीत गया—जीत गया—अपरम्पार सोना वहाँ वह जीत गया। गठरी बाँध कर हम फिर बुडापेस्ट पहुँचे। कई मास बीत चुके थे। नाइजी ने कहा था कि, मेरी जाति के कामरू लोगों से मेरा पता पूछना।

"हम सबसे पूछने लगे—'नाइजी कहाँ है नाइजी कहाँ है?"

"कोई भी जवाब न मिला। आखिर हमने एक कामरू को पकड़कर मौत की धमकी दी, तो उसने बता दिया—'उस किलेवाले अमीर के साथ।'

"सरपट घोड़े दौड़ाकर हम उस अमीर के किले पर पहुँचे। पर उसे पहले से ही पता चल गया होगा। किले का द्वार बंद था। हमने द्वार पर हथौड़े मारे, तो एक बुड्ढे द्वारपाल ने द्वार खोला। हमें देखते ही उसने फिर द्वार बंद करने की चेष्टा की; पर हमने उसे मौका ही नहीं दिया। अंदर घुस गये। मकान के अंदर प्रवेश कर रहे थे कि, श्वेत वस्त्र धारण किये एक छाया-सी हमारे सामने खड़ी हो गयी।

"'आ पहुँचा मेरा काल—आ पहुँचा!' ये शब्द हमारे कानों से टकराये और पागल कर देने वाला अट्टहास गूँज उठा। वह नाइजी ही थी।

"'नाइजी! ओ नाइजी!'— माइकेल चिल्लाया—'यहाँ क्या करती है? इधर देख, तेरे कथनानुसार मैं दो लाख मुहरें लाया हूँ, अब तू अपना प्रण पूरा कर!'

"इतने में उसके पीछे से व्यंग्यपूर्ण शब्द सुनायी दिये। यह किले का मालिक टार्नफील्ड था।

"माइकेल पाषाणवत् खड़ा रहा। फिर उसने दर्द-भरी आवाज में कहा—'नाइजी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूने तो मुझे वचन दिया था ? तूने जितनी दौलत माँगी, उतनी लेकर आया हूँ ?'

"'आ-हा-हा-हा !' टार्नफील्ड हँसा—'इसे दौलत कहते हो जी तुम ? इससे कहीं ज्यादा धन तो इसने अब तक अपने पोशाकों और पैरों के जूतों के पीछे खर्च कर दिया है !

"'झूठ, एकदम झूठ !'—नाइजी अप्रत्याशित चिल्ला उठी।

"टार्नफील्ड काले साँप की तरह पीछे मुड़ा और नाइजी के मुँह पर उसने एक करारा तमाचा मारा। माइकेल से यह न देखा गया। वह टार्नफील्ड पर कूदा। टार्नफील्ड ने गोली चलायी; पर वार खाली गया। माइकेल ने उसके हाथ से पिस्तौल गिरा दी—'तेरी यह विवाहिता पत्नी है न ? पर यह अब विधवा बन जायेगी।'

"'मेरी भी यही इच्छा है, नौजवान ! कल सुबह सूर्योदय से पहले हम दोनों अकेले जंगल में मिलेंगे।

"पर मुझे दगाबाजी का शक हुआ। इसलिए अँधेरे मुँह ही, मैं उस अमीर के किले की दीवार पर कान लगा कर चक्कर काटने लगा। मेरा भय सच निकला। एक ऊपरी खिड़की पर कुछ मारामारी मची थी। ऐसा मालूम हो रहा था कि, नाइजी गुस्से से धमका रही है। जिसे वह बुरा-भला कह रही थी, वह टार्नफील्ड था। मेरा माथा ठनका !

"'धोखा हो गया ! माइकेल ! धोखा हो गया।'—चिल्लाता हुआ मैं जंगल की ओर दौड़ा। पाँच नकाबपोश खूनियों और माइकेल के बीच युद्ध हो रहा था। मैं भी भिड़ गया। हम दोनों ने मिल कर आखिर बड़े परिश्रम से पाँचों जल्लादों को ठिकाने लगा दिया। नकाब खोलने पर वे पहचान लिये गये। वे पाँचों टार्नफील्ड ही के नौकर थे !

"हम दोनों किले की तरफ भागे। सीढ़ी तक पहुँचे और उसी कमरे का द्वार धक्का मार कर खोल दिया। उसी वक्त की टार्नफील्ड की बंदूक ने हमारा स्वागत किया।

"एक कोने में नाइजी खड़ी थी। उसके काले लम्बे केश उसे चादर की तरह आच्छादित किये थे। उसके शरीर के कपड़े फट चुके थे। उसके ललाट पर के घाव से खून बह रहा था। उसके हाथ में छुरी थी। पति के विश्वासघात के कारण ही यह खून-खराबी हुई थी।

"टार्नफील्ड की पहली गोली दरवाजे से, सनसनाती हुई निकल गयी। माइकेल कमरे में दाखिल हुआ। जब तक टार्नफील्ड दूसरी गोली चलाये, नाइजी की छुरी उसके गले के पार हो चुकी थी।

"'नाइजी !'—माइकेल भुजाएँ फैला कर उससे मिला—'चलो, पुलिस के आने से पहले भाग चलें। हमने छः खून किये हैं और हम ठहरे लुटेरे, हमारे लिए दो ही रास्ते हैं—फाँसी का या पहाड़ों का।'

"पर नाइजी ने उसे धक्का देकर तीक्ष्ण मुस्कराहट से कहा—'देख माइकेल, मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना भाग्य जान चुकी हूँ। देख, यह खून! अब तो इसकी धाराएँ बहने भी लगी हैं। यही है मेरे भाग्य का रास्ता। पर इस मार्ग पर मैं तुझे नहीं घसीटना चाहती— अकेली मैं ही जाऊँगी।'

"माइकेल ने बहुत समझाया; पर नाइजी नहीं मानी। तब माइकेल ने जबरन उसे अपने घोड़े पर बैठा लिया और हम चल पड़े। माइकेल ने मुझ से कहा—'जोजेफ, जल्दी कामरुओं के गाँव जा। नाइजी के चाचा को लेकर पहाड़ों पर आना। झर्नी-घाटी के पास हम तेरी राह देखेंगे।'

"हम सबने कारपेथियन पहाड़ के उस अभेद्य किले में आश्रय लिया और इसी किले में हमने सरकार से मोर्चा भी लिया। हमारी गिरफ्तारी के लिए बड़े-बड़े इनाम घोषित किये गये थे; पर पहाड़ों के जानकार जिप्सी लोगों में से कोई भी लालच में नहीं फँसा। इसलिए कि, जिप्सियों को सरकार से जलन थी। आस्ट्रिया के गवर्नर ने तीस जिप्सियों को तिल-तिल कर सताया था। झूंठमूठ के, कभी न किये गये खून उनसे मंजूर करवाये थे और मृतकों की लाशें न मिलने के कारण उन अभागे कामरूओं को मानव-भक्षी ठहराकर फाँसी दी थी।

"पर इस सारी तैयारी से मेरे मालिक को क्या मिला? जिसके लिए उसने इस काल का भी आह्वान किया था, वही नाइजी, इतना सब-कुछ होने के बाद भी उससे विलग एक संन्यासिनी की तरह रहती थी।

"अंत में, संतप्त माइकेल ने अपनी वेदना को व्यक्त करते हुए निर्णय किया— 'यह सब नाइजी को सौंप कर मैं वापस जाता हूँ। बस, सरकार की तोप के सामने जाकर खत्म हो जाऊँगा।'

"कामरुओं ने बहुत रोका; पर माइकेल घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा। मैं भी उसके साथ मरने के लिए उद्यत चल दिया। किंतु हम पहाड़ की तलहटी से निकल ही रहे थे कि, पीछे से घोड़े की टापों की आहट सुनायी दी। घोड़े को चाबुक मारती हुई, सिर पर पड़ा हुआ सफेद बादल-जैसा घूँघट फहराती नाइजी वहाँ आ पहुँची।

"माइकेल ने घोड़ा रोक लिया। वह नीचे उतरा। भुजाएँ फैलाती हुई नाइजी दौड़कर उसके चरणों में आकर गिरी— दोनों ने एक-दूसरे को समेट लिया।

"माइकेल! मैं तो इसलिए निष्ठुर हो गयी थी कि, मैं तुझे प्राणों से भी अधिक चाहती हूँ। मेरे भाग्य में खून लिखा है। तेरे और मेरे मिलाप में काल का निवास है। पर अब तो भले ही काल भी आ जाये। मेरा अंतर्यामी तुझसे विलग होने की स्वीकृति नहीं देता; अब तो नियति के साथ खुल कर खेलूँगी!'

"...और, दूसरे दिन ही दोनों का विवाह हुआ।

"उसके बाद तो अत्याचारी, प्रजा-विद्वेषिणी सरकार के कोष पर टूट पड़ना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही हमारा पेशा था। बहुत से नौजवान हमारी फौज में भर्ती हो गये। उदारता और स्नेह से प्रजा का पालन करना हमारा धर्म था। और, हमारे इस विशाल दल की रानी थी—नाइजी।

"किंतु एक वर्ष के बाद ही नाइजी बदल गयी। लुटेरों की जिंदगी उसे अप्रिय लगने लगी। उसका वैभव-विलासी मन शहर में जाने के लिए मचल उठा।

"अतः एक दिन मौका पाकर वह जासूस का वेश बनाकर पाटनगर पहुँच ही गयी। हम चार जनों को लेकर अब माइकेल भी किसान के वेश में उसे ढूँढ़ने चला।

"राजधानी की एक सराय में हम तीन दिन तक रहे, मेले में भी ढूँढ़ा; पर नाइजी न मिली। तीसरे दिन रात को वह अचानक आकर द्वार पर खड़ी हो गयी।

"क्रोध से उत्तप्त माइकेल उसे पकड़ने के लिए झपटा। फिर क्या था, नाइजी भी हाथ में छुरी लेकर तैयार हो गयी। मगर उसी क्षण द्वार खुला और सिपाहियों के साथ एक अफसर ने कमरे में प्रवेश किया।

"अपने पति को बचाने के लिए नाइजी बाहें फैलाकर माइकेल के सामने आकर खड़ी हो गयी। पर क्रोध में आपा खो बैठने के कारण माइकेल ने गोली चलायी। नाइजी के मुँह से खून आ गया और वह ढेर होकर जमीन पर गिर पड़ी। गिरते-गिरते कहने लगी—'माइकेल! तू भाग जा! अपनी जान बचा! मुझे छोड़ दे!'

"पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी। युद्ध शुरू हो गया। माइकेल जख्मी हुआ, अंतिम श्वास लेते समय भी वह यही रट रहा था—'जोजेफ! नाइजी को बचा!'

"रात के भयानक अँधेरे में मैं नाइजी के अचेत शरीर को उठा कर खिड़की से कूद पड़ा और आदेश दे पहाड़ों में घुस गया। नाइजी का जख्म गहरा था। थोड़ी देर में पाँच-छः जख्मी साथी भी माइकेल की लाश लेकर आ पहुँचे।

"उसके शव का हमने गुफा के बाहर ही अंतिम संस्कार किया। नाइजी ने अपना बिछौना बाहर लगवाया था। सिसकते हुए दिल पर पत्थर रख कर वह यह देखती रही। खेल खत्म हो चुका था।

"पर उसके बाद बड़ी विचित्र बात हुई! नाइजी को आराम पहुँचने लगा और थोड़े दिनों में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गयी। एक रात वह मेरे पास भय से काँपती हुई आयी; फिर भी उसके चेहरे पर शांति और सुख की एक अपूर्व झलक दिखायी दे रही थी।

"'माइकेल मुझे दिखायी पड़ा है।' वह बोली—'उसने मुझे क्षमा कर दिया। उसकी आत्मा दुःखित थी। उसने कहा है कि, इन सब जिप्सियों को मुक्त करके बाकी जीवन मानवता की सेवा में बिताना। जोजेफ! पापों का प्रायश्चित किये बिना उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी।'

"उसके बाद तुरत ही हम वहाँ से रवाना हुए। मैं यह रीछ का खेल दिखला-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर गुजारा करता हूँ और जहाँ कहीं किसी का दुःख देखता हूँ, वहाँ जाकर उसे बँटाने की चेष्टा करता हूँ। तब से कई बार माइकेल की आत्मा मुझे भी दिखायी पड़ी है और यही काम करते रहने को कह गयी है। यही मेरी कहानी है। और, कुछ सुनना चाहते हो, तो तुम्हें हाटजेग जाना पड़ेगा!"

× × ×

दूसरे दिन मैं एक मार्गदर्शक के साथ हाटजेग गाँव की तरफ चल पड़ा। हाटजेग पहुँच कर मार्गदर्शक घोड़े ले बाहर ही खड़ा रहा। मैं अकेला गाँव में दाखिल हुआ और एक ग्रामवासी से मैंने ऐंजेलिन माता के मठ का रास्ता पूछा।

चुपके से उसने उंगली से संकेत किया; फिर अपनी छाती पर उसने अपने हाथ रखे, मानो वह भयभीत हो गया था।

वह मकान लम्बा और गोलाकार खिड़कियोंवाला था। उसके विशाल बगीचे के चारों तरफ ऊँची दीवार थी। उसके सँकरे द्वार से मैंने अंदर झाँककर देखा। काली घूँघटवाली स्त्रियों का जत्था जा रहा था। दान लेने के लिए किसानों का समूह द्वार पर खड़ा था। उन्हें अन्न-वस्त्र बाँटे जा रहे थे। बीमारों को दवाइयाँ दी जा रही थीं। भूखों को खाना खिलाया जा रहा था।

एक वृद्ध आकर मुझे एक खाली कमरे में ले गया। वहाँ केवल दो ही कुर्सियाँ थीं।

मैं बैठा भी न था कि, इतने में द्वार खुला और एक श्वेतवस्त्रधारिणी ने प्रवेश किया। वह मुँह पर लम्बा घूँघट निकाले हुए थी। मैंने उठकर उसे नमस्कार किया और अपने आने का उद्देश्य बतलाया—"मुझे जोजेफ ने....!"

"मैं सब-कुछ जान चुकी हूँ।" यह आवाज किसी मधुर कंठ से निकली थी। उसने कहा—"तुम्हारे आने की खबर मुझे मिल चुकी है और तुम माइकेल के प्रेम तथा मरण की कहानी से परिचित हो चुके हो, यह भी मैं जानती हूँ। अब तुम क्या जानना चाहते हो?"

"नाइजी के बारे में। क्या वह भी मर गयी?"— मैंने पूछा।

"नहीं, मर गयी होती, तो अच्छा था; किंतु उसे तो दंड भोगना है—अकेली ही उन सब स्मृतियों की गठरी हृदय पर रखकर जी रही है। एक समय की उस अद्वितीय सौंदर्य-प्रतिमा के विलास के लिए आज मठ का अंधकार और प्रायश्चित के लिए प्रभु-प्रार्थना ही शेष है!"

मैं उस श्वेतवस्त्र धारिणी के निकट गया और धीमे स्वर में पूछ बैठा—

"क्या आप खुद ही नाइजी हैं?"

उत्तर में घूँघट ऊँचा उठा और कभी भुलाया न जा सके, ऐसा सौंदर्य मैंने इसी धरती पर देख लिया। बड़ी-बड़ी काजल-जैसी काली और बादल-जैसी वे दो आँखें ज्यों-ज्यों मेरी ओर देखने लगीं, त्यों-त्यों मुझे माइकेल के अंतर्यामी के आग्रह का स्मरण आने लगा—इस सौंदर्य के सामने माइकेल कैसे सविराम बैठे रहता?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने संसार के 'क्लासिक' पढ़े हैं, स्वयं भी देखा है कि, सौंदर्य में प्रेरणा के वज्र और बीज दोनों हैं– निर्माण और विनाश, दोनों का समन्वय सौंदर्य की प्रेरणा का अनुपम रूप है– होमर से लेकर कीट्स तक इसी स्तवगान की परम्परा है। नाइजी भी होमर की हेलेन अथवा दाँते की बीट्रीसी से कम नहीं थी– उसने जो रास्ता चुना, वह विनाश का था; किंतु रास्ते का निर्माण तो जगत् के हाथ में है, व्यक्ति के हाथ में कहाँ? यही हंगेरी की इस अजर-अमर नायिका नाइजी के जीवन की चरितार्थता है।

उसके आवरणहीन मुख को देख कर मैं इसी विवेचन में डूब गया और वह भी अपलक मेरी ओर देखती रही, मानो कहीं अतल में जाकर खो गयी हो!

"जिज्ञासु मानव, शायद तुम समझ गये होगे कि, इस करुण कथा का विष-मूल है, अपने सौंदर्य पर मेरा सम्मोहन!" उसने कहा–" मैं अपने ही रूप पर मुग्ध थी और उसका मूल्य मैंने बराबर चुकाया है! आत्मासक्ति अपनी बलि लेती है। मेरी अपनी आसक्ति ने ही मेरे प्यारे माइकेल के प्राण लिये।"

फिर थोड़ी देर के लिए वह मौन हो गयी. . . . बैठी रही. . . फिर कहने लगी– "किंतु यह भी तो झूठ है। माइकेल मर नहीं सकता– वह तो मेरे रोम-रोम में समा कर मुझे स्वयं अमरत्व दे गया है। वह मुझे भी नहीं मरने देगा। सच भी तो है, माइकेल और नाइजी दो थोड़े ही हैं– माइकेल मरेगा, तो नाइजी कैसे जीवित रहेगी? सो यह तुम्हारे सामने जो देह-धारिणी बैठी है, वह अजर-अमर नाइजी है– नश्वर नारी नहीं!

". . . और, इस प्रकार जब संघर्ष खत्म हो गया, तो अब जो-कुछ बचा है, वह दाक्षिण्य ही है – जीवन की नदी-पहाड़ियों से उतर कर मैदान में बहने लगी है। नाइजी अब बाढ़ नहीं, मैदान की नदी है, जो जन-जन के दुःख-दारिद्र्य को पाट देने के लिए ही बह रही है। प्रेम फल रहा है, अपरिचित! सो, जहाँ भी कहो, माइकेल-नाइजी की कहानी यों ही कहना कि, प्रेम जब फलता है, तो आसपास की भूमि का दैन्य समाप्त हो जाता है!"

फिर से वह लम्बा घूँघट उसके चेहरे पर छा गया और उसके हाथ की उँगलियों का श्रद्धा और आदर-सहित चुम्बन कर मैं वहाँ से लौट पड़ा।

बड़े-बड़े जो वृक्ष तुम्हारे उपवन में थे,
बापू! अब वे उतने बड़े नहीं लगते हैं;
सभी ठूँठ हो गये और कुछ ऐसे भी हैं
जो अपनी स्थितियों में खड़े नहीं लगते हैं।

—दिनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केतकी

अपनाने-योग्य पौष्टिक खाद्य

खाद्याभाव के नागपाश में ग्रस्त देश के लिए केतकी-जैसे नवीन खाद्य की कृषि पर विचार करना आज अत्यावश्यक हो गया है। डा० एस० के० कल्याणसुंदरम् ने प्रस्तुत प्रबंध में इस खाद्य की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला है। पार्श्व-भूमि में पत्तों-सहित केतकी के भुट्टे का चित्र है।

★

खाद्याभाव की स्थिति को सुधारने के लिए अभी जो विविध कार्यक्रम तैयार किये गये हैं, उनमें से एक, अनाज के अतिरिक्त दूसरी वस्तुएँ खाने की आदत डालने का है। इन वस्तुओं के उत्पादन और उपयोग से निश्चय ही हम अपनी समस्या को सुलझाने में बहुत हद तक सफल होंगे। नारियल, शक्करकंद, महुआ, सिंघाड़ा, चुकंदर, केला, मछली आदि-जैसी अनेक वस्तुओं से भारतीय अभिज्ञ हैं और सहायक खाद्यपदार्थ के रूप में इनका उपयोग भी करते हैं। इन्हीं की सूची में एक नया योग है— केतकी, जो उपजाने में आसान होने के साथ-साथ खाने में सुस्वादु और पौष्टिक भी है।

जिस केतकी की चर्चा यहाँ हो रही है, वह साधारण केतकी या केवड़ा नहीं है, जिसका उपयोग सुगंध-प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह केतकी-फल निकोबार और कारनिकोबार द्वीपों के तटीय प्रदेशों में बहुतायत से उपलब्ध है। पुर्तगाली भाषा में इसे 'मेलोरी' कहा जाता है। इसके वृक्ष लगभग ३५ फुट ऊँचे और देखने में खजूर के वृक्ष की तरह होते हैं। जड़ के पास इसके तने का, जो सुपारी-वृक्ष के तने की तरह होता है, व्यास लगभग एक फुट होता है और ऊपर जाकर पत्ते छितराये रहते हैं। पत्ते प्रायः ३

केतकी की मंजरियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फुट लम्बे और चार इंच चौड़े होते हैं। ये पत्ते गुच्छों के रूप में निकलते हैं और इन्हीं के बीच में फल निकलता है।

निकोबार-निवासियों को यह फल बहुत ही प्रिय है। इसकी पौष्टिकता और स्वाद की प्रशंसा करते वे नहीं थकते। यद्यपि इसी तरह के कुछ फल, जिनसे रोटी बनायी जाती है, अफ्रीका के मध्यवर्ती इलाकों, भारत के कुछ तटीय क्षेत्रों और फ्रांस के कुछ भागों में भी उपलब्ध हैं, तथापि वे इसका मुकाबला नहीं कर सकते—यह अपने ढंग का अनोखा फल है।

दक्षिण-भारत में भी केतकी बहुत बड़े परिमाण में पैदा तो होती है; पर उसका खाद्यपदार्थ के रूप में कोई महत्व नहीं है। यही बात बंगाल के तटों पर बड़ी मात्रा में उपलब्ध केवड़े के बारे में भी लागू होती है। भारतीय केतकी या केवड़े की उपयोगिता केवल सुगंध तक ही सीमित होती है। यों इसमें भी फल लगते हैं; पर उस केतकी-फल से इसकी कोई तुलना नहीं बैठती और लोग खाद्य के रूप में इसका उपयोग भी नहीं करते।

निकोबार का केतकी-फल बहुत-कुछ भारतीय फल 'अन्ननास' की तरह होता है। जब यह पकता है, तब इसका रंग गुलाबी लिये पीला हो जाता है। फल का अंतर्वर्ती भाग कड़ा होता है और साधारणतः उसमें दो बीज होते हैं। इन बीजों का आकार और स्वाद बादाम की तरह होता है। एक फल का वजन साधारणतः १५ से २० सेर तक होता है। इससे भोजन तैयार करने की निकोबारी प्रक्रिया बड़ी सीधी-सादी है। पहले वे फल के छिलके को उतार कर फेंक देते हैं; फिर एक मिट्टी की हाँड़ी में उसे रख कर, थोड़े पानी के साथ, आग पर चढ़ा देते हैं और ऊपर ढँकने के लिए पत्ते रख देते हैं। धीमी-धीमी आँच में कुछ देर तक उबलते रहने के बाद जब फल पक जाता है, तब वे उसे उतार कर ठंडा करते हैं और गूँधने के बाद रोटियाँ तैयार करते हैं। अच्छी तरह ढँक कर रखने से उनका यह भोजन कई दिनों तक काम देता है—खराब नहीं होता। इस फल से वे रोटी ही नहीं; बल्कि मसाले देकर सब्जी भी तैयार करते हैं।

केतकी-फल औषधीय दृष्टि से भी काफी लाभदायक है। कुष्ठ, चेचक, हृदय के दौरों और मस्तिष्क की गड़बड़ियों में इसके पत्तों का उपयोग लाभदायक साबित हुआ है। वैज्ञानिक कसौटी पर कसने पर अन्य रोगों में भी इसकी उपयोगिता प्रकाश में आ सकती है।

इस फल के चार पौधे ईस्ट इंडिया कम्पनी ने १८-वीं शताब्दी में कलकत्ता के बोटानिकल गार्डन में लगाये थे, जो अब भी वहाँ मौजूद हैं; लेकिन अब तो इसके भारत में बड़ी संख्या में लगाये जाने की आवश्यकता है। हमारे तटीय क्षेत्रों में इसकी उपज बड़े मजे में हो सकती है और इसकी मदद से खाद्याभाव की समस्या एक हद तक हल की जा सकती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूँद-बूँद का ज्ञान

जिज्ञासा हमारी जीवन-डोर है। उसे पकड़ कर ही जीवन की सारी चढ़ान हम चढ़ते हैं। शैशव से लेकर अंतिम साँस तक हम उसे थामे रहते हैं— दरअसल हम-आप जो कुछ हैं, सब किसी-न-किसी रूप में जिज्ञासा-पूर्ति के ही प्रतिफल हैं। मनुष्य का सारा व्यक्तित्व जिज्ञासा की छेनी से ही गढ़ा जाता है। जिंदगी के हर कदम पर हमें बंद द्वार मिलते हैं, प्रश्नों की एक-के बाद-एक गाँठें मिलती हैं। इन्हें खोलते हुए आगे बढ़ते जाना ही हमारा विकास है। इस स्तम्भ में प्रति मास 'नवनीत' के पाठकों को भौतिक जिज्ञासा के ऐसे ही प्रश्नोत्तर मिला करेंगे। आशा है, हमारे पाठक ज्ञानवर्धन के इस नवारम्भ से लाभ उठायेंगे।

★

पृथ्वी के भीतर क्या

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का अन्य नक्षत्रों पर जो प्रभाव पड़ता है, उसके आधार पर पृथ्वी का वजन निकालने पर ज्ञात हुआ है कि, वह वजन पृथ्वी की ऊपरी सतह पर उपलब्ध चट्टानों से काफी अधिक है; अर्थात् पृथ्वी के भीतर कुछ ऐसे पदार्थ भी हैं, जो ऊपरी सतह की चीजों की अपेक्षा बहुत अधिक भारी हैं।

कभी-कभी जो उल्काएँ पृथ्वी पर गिरती हैं, उनकी जाँच से यह पता चला है कि, मुख्य रूप से दो धातु— लोहा और निकल —से वे निर्मित होती हैं। उल्काएँ नक्षत्रों के खंड होती हैं। अतः इससे यह प्रमाणित होता है कि, अन्य नक्षत्र भी उन्हीं दो धातुओं से बने हुए हैं। यह पृथ्वी भी एक नक्षत्र है। अतः इसके निर्माण में भी उन्हीं दो धातुओं की प्रमुखता न हो, इसका कोई कारण नहीं दिखायी पड़ता।

पृथ्वी की ऊपरी सतह पर उपलब्ध चट्टानों और पृथ्वी के वजन के बीच के वैषम्य को देखते हुए यह धारणा और भी बलवती हो जाती है कि, पृथ्वी के भीतर भी इन्हीं दो धातुओं की प्रधानता है। इस आधार पर वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि, पृथ्वी की ऊपरी सतह से— जो दो हजार मील की गहराई तक है — नीचे इन्हीं दो धातुओं की चट्टानें हैं और इस धातु-क्षेत्र का व्यास प्रायः ४,४०० मील है।

★

पानी से आग बुझती क्यों

पानी आग को दो रूपों में बुझाता है। प्रथम, अधिक पानी पड़ने से आग पर पानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की एक तह-सी छा जाती है। फलतः उसे आक्सीजन मिलना बंद हो जाता है और आक्सीजन के अभाव में वह बुझ जाती है।

दूसरे, पानी गर्म चीज की गर्मी को स्वयं आत्मसात् करके वाष्प का रूप धारण कर लेता है। और, इस प्रकार जलती चीज की गर्मी कम हो जाती है।

लेकिन किसी भी वस्तु में लगी आग को पानी बुझा दे, ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए, तेल में लगी आग को ही लिया जाये। वैसी आग पानी से बुझेगी नहीं; क्योंकि तेल पानी के ऊपर आकर, आक्सीजन प्राप्त करके, आग को प्रज्वलित रखता है।

★

आकाश नीला क्यों

सूर्य का प्रकाश जब वायुमंडल में उतरता है, तब हवा, धूल और वाष्प के छोटे-छोटे कण उसे खंडित करके छितरा देते हैं। सूर्य का प्रकाश भी अन्य सभी श्वेत प्रकाशों की भाँति इंद्रधनुष के सातों रंगों का सम्मिश्रण होता है। जिस तरह पानी में पत्थर फेंकने से लहरें उठती हैं, ठीक उसी प्रकार विभिन्न रंगों के प्रकाश अपने-अपने तरंगदैर्घ्य (वेवलेंग्थ) के अनुसार गतिशील होते हैं। इन रंगों में से नीले रंग के प्रकाश का तरंगदैर्घ्य काफी छोटा होता है।

फलतः सूर्य का प्रकाश जब पृथ्वी के वायुमंडल से होकर गुजरता है और हवा, धूल तथा वाष्प के छोटे-छोटे कणों से टकराता है, तो नीले रंग का तरंग-दैर्घ्य ठीक वही साबित होता है, जो उन कणों का होता है। अतः नील-वर्ण इस संघर्ष में टूट कर बिखर जाता है। बाकी सब, तरंगदैर्घ्य लम्बे होने के कारण, वायुमंडल को पार कर जाते हैं। इस प्रकार वायुमंडल में तैरते कणों-द्वारा नीला प्रकाश बिखेरे जाने के कारण ही, आकाश का रंग नीला दिखलायी पड़ता है।

★

चीनी मीठी क्यों

स्वाद का सीधा सम्बंध हमारे दिमाग से है। हमारे दिमाग में एक पेटी ऐसी है, जिससे तानपुरे के तार की तरह स्वाद के तार जीभ तक गये हैं। जीभ पर जब कोई पदार्थ हम रखते हैं, तो इन तारों में प्रतिक्रिया होती है, जो दिमाग की स्वाद-पेटी को झंकृत करती है। यह झंकार ही हमारे कई प्रकार के स्वाद को व्यक्त करती है। स्वाद के इन तारों में एक तार मीठे स्वाद का भी है। अतः जब हम चीनी, शहद या कोई भी मीठी चीज खाते हैं, तो स्वाद का यह स्नायु दिमाग तक अपनी प्रतिक्रिया पेश करता है और उसके फलस्वरूप हम मिठास का अनुभव करते हैं। वैज्ञानिकों का मत है कि जीभ में विभिन्न स्वादों को व्यक्त करने-वाले १३८ स्नायु हैं, जिनका सक्रिय सम्बंध हमारे दिमाग से है और दिमाग ही हमारे कड़वे-मीठे, खट्टे-तीते, सबका भोक्ता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांडु खाडे

भारत का दुलारा भारतीय जाकी

भारतीय घुड़दौड़ के क्षेत्र में पांडु खाडे का व्यक्तित्व शुक्ल पक्ष के उत्तरोत्तर वर्धमान चंद्रमा की याद दिलाता है। जन्मकाल के एकदम बंजर मरुस्थल को अपनी श्रम-संलग्नता और प्रतिभा से आज उन्होंने अपने लिए जितना उर्वर बना लिया, वह परिस्थिति-पीड़ित प्रत्येक युवक के लिए प्रेरणा का प्रतीक है। गत वर्ष पांडु खाडे अंतर्राष्ट्रीय घुड़दौड़ में आमंत्रित होकर आस्ट्रेलिया गये थे।

*

"चैम्पियन! 'बक अप'! चैम्पियन! चेम्पियन!"

"हे! हू इज दैट न्यू फेलो? (यह नया व्यक्ति कौन है?) ही सीम्स टू बी ऐन इंडियन (वह तो भारतीय प्रतीत होता है)! इट्स स्ट्रेंज (ताज्जुब है)!"

घुड़दौड़ के मैदान में यही दो बातें सुनायी दे रही थीं। सन् १९४५ की उस 'डर्बी-रेस' में दौड़नेवाला घोड़ा 'चैम्पियन' और उसका 'जाकी'– एक २४-वर्षीय नवयुवक भारतीय!

वस्तुतः यह आश्चर्य की ही बात थी। इंग्लिश डर्बी में पहली बार एक भारतीय जाकी ने भाग लिया था और वह था– पांडु खाडे! पांडु खाडे– घुड़दौड़ की दुनिया में आज का सुप्रख्यात भारतीय जाकी!

सन् १९२१ के एक सुहावने दिन, कोल्हापुर के बावड़ा गाँव की धरित्री ने बड़ा ही मधुर स्वप्न देखा था और उसी क्षण, मानो उस स्वप्न को साकार करने के लिए ही, आज के विश्वविख्यात जाकी ने एक नन्हे शिशु के रूप में इस धरा पर पदार्पण किया। छत्रपति राजाराम महाराज की घुड़साल के दफादार को पिता के रूप में पा, पांडु खाडे ने बाप का स्नेह तो पाया; किंतु माँ के प्यार से वह वंचित ही रहा। बचपन में ही उसे माँ का विछोह सहना पड़ा।

ग्यारह वर्ष की उम्र में पांडु ने एक सुतार के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया और आज के इस सुप्रख्यात जाकी की उस वक्त आमदनी थी— डेढ़ आना, सिर्फ डेढ़ आना रोज! किंतु नियति ने तो कुछ और सोच रखा था। पांडु खाडे को तो जाकी बनना था और सन् १९३६ में जब महाराज ने उसे अपनी घुड़साल में रख लिया, तो वह पांडु के आज के जीवन का मानो आरम्भ था।

महाराज की तीक्ष्ण दृष्टि से पांडु में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निहित प्रतिभा छिपी नहीं रही और उन्होंने उसे एक निपुण घुड़सवार बनाने का निश्चय कर लिया। उस जमाने में भी घुड़दौड़ के शौकीनों का अभाव नहीं था; पर एक भारतीय को जाकी बनाने की बात किसी के दिमाग में शायद आयी भी नहीं थी। महाराज ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने इस दिशा में सोचा।

किंतु वे सोच कर ही रह जानेवाले व्यक्तियों में नहीं थे। सन् १९३८ में खाडे का नाम वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब के जाकी अपरेंटिस स्कूल में लिखा दिया गया। साल-भर तक सुप्रख्यात ट्रेनर सी० एच० नाथमूर और एन० डी० भोंसले के संरक्षण में रखने के बाद, महाराज ने खाडे को आस्ट्रेलिया भेजने की व्यवस्था की। पर दुर्भाग्यवश महाराज की मृत्यु हो गयी और खाडे का भाग्य-नक्षत्र कुछ काल के लिए सो-सा गया।

पांडु खाडे

पूरे तीन साल बाद, उसके भाग्य ने फिर करवट बदली और पांडु को सुप्रसिद्ध जाकी वेलेस सिब्रिट के संरक्षण में काम करने का अवसर मिला। सिब्रिट के बारे में प्रसिद्ध है कि, संसार-भर में जितने घुड़दौड़ के मैदान हैं, उन्होंने सभी में घोड़ा दौड़ाया था। सिब्रिट बड़े कड़े मिजाज के व्यक्ति थे। दौड़ जीतने की अपेक्षा दौड़ जीतने के तौर-तरीकों पर वे अधिक ध्यान देते थे। अतः खाडे किसी दौड़ में अगर जीत जाता और उसके तरीके में कहीं कोई भूल रह जाती, तो सिब्रिट दंड देने में तनिक भी संकोच नहीं करते। खाडे के आज के यशस्वी जीवन का अधिकांश श्रेय वस्तुतः सिब्रिट को ही है।

सन् १९४५ में बड़ौदा-नरेश की दृष्टि खाडे पर पड़ी और वे उसे अपने साथ इंग्लैंड ले गये। इंग्लैंड की घुड़दौड़ में एक भारतीय जाकी के भाग लेने का यह प्रथम अवसर था। लगभग बीस घुड़दौड़ों में वहाँ खाडे ने भाग लिया और एक घुड़दौड़ में वह सर्वप्रथम भी आया। यहीं डर्बी की रेस में वह 'चैम्पियन' घोड़े का भी सौभाग्यशाली जाकी बना।

वास्तव में, खाडे का भाग्य अब जाग रहा था। प्रतापसिंह का घोड़ा लेकर इंग्लैंड से ही उसे अमेरिका जाने का भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौका मिला, जहाँ वह दो घुड़दौड़ों में शामिल हुआ। और, इसके दो वर्षों बाद, सन् १९४७ से तो खाडे का सौभाग्य-सितारा बड़ी द्रुतगति से प्रशस्ति के नभ में ऊपर की ओर बढ़ने लगा। भारत लौटने पर इसी वर्ष पूना-घुड़दौड़ में उसे चैम्पियनशिप मिली। दूसरे वर्ष 'क्लासिक रेस' में भी जीत का सेहरा उसके सिर बँधा। और, सन् १९५० की भारतीय डर्बी ने तो उसे एक ही दिन में मानो यश के शिखर के करीब ला दिया। सन् १९५६-५७ की डर्बी भी खाडे ने ही जीती। उसने बम्बई में पाँच बार, पूना में दो बार और, बंगलोर में एक बार चैम्पियनशिप प्राप्त कर अपना रेकार्ड स्थापित कर दिया है। घुड़दौड़ के इतिहास में खाडे लगातार चार साल तक चैम्पियनशिप हासिल करने-वाला प्रथम जाकी है। आज तक वह ५६५ रेस जीत चुका है; लेकिन 'छत्रपति राजाराम महाराज-कप' जीतने की जितनी खुशी उसे है, उसके समक्ष अन्य रेसों की जीत उसके लिए नगण्य है।

घुड़दौड़ के मैदान में अपना एक विशिष्ट स्थान रखने वाले पांडु खाडे का पारिवारिक जीवन बड़ा सुखपूर्ण है। विभिन्न शहरों की घुड़दौड़ों में भाग लेते रहने के कारण उसे व्यस्त रहना पड़ता है; फिर भी वह अपनी पत्नी और बच्चों के लिए अवकाश निकाल ही लेता है।

खाडे की ईश्वर और धर्म में गहरी आस्था है। उसका वर्ली-स्थित निवास-स्थान विभिन्न देव-मूर्तियों से सुसज्जित है और कोई भी काम आरम्भ करने के पूर्व वह बड़ी श्रद्धा से उनकी पूजा करता है।

किंतु अपने इस सुखी-सम्पन्न जीवन में भी वह छत्रपति राजाराम महाराज के उपकारों को नहीं भूला है। अपने जन्मस्थान बावड़ा में, महाराज के नाम पर उसने एक स्कूल खोला है। स्कूल अभी अपनी आरम्भिक स्थिति में है; फिर भी लगभग ढाई सौ विद्यार्थी वहाँ शिक्षा प्राप्त करते हैं और २५ प्रतिशत विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। स्कूल के समुचित विस्तार के लिए खाडे पूर्ण प्रयत्नशील है और इसके लिए उसने तीस हजार रुपये एकत्र भी कर लिये हैं।

जहाँ तक दृष्टि जाती है, किसी भी जाकी ने अपनी जन्मभूमि एवं ज्ञान-परम्परा का ऐसा सम्मान नहीं किया है— खाडे के व्यक्तित्व को इस जाज्वल्यमान पक्ष ने वस्तुतः अत्यंत तेजस्वी बना दिया है।

खाडे के पास जहाँ अपने व्यवसाय का कौशल है, वहाँ जीवन-यापन का कौशल भी उसके पास कम महत्व का नहीं है। जीवन के बारे में उसकी धारणा एकदम एक सीधे-सादे भारतीय किसान की-सी है, जो केवल खाने के लिए ही नहीं, खिलाने के लिए भी अपनी खेती बोता है। खाडे भी कहता है—"जो कीर्ति मुझे भगवान् ने दी है, वह तो बँटने से रही; किंतु इसके अलावा जो भी शेष विभाजनीय है, उसे मैं ही क्यों अपने स्वत्व में रखता चलूँ!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकारी शिकार हो गया था

कप्तान जान हालैंड के एक शिकार-अनुभव का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

रामपुर का अर्जुनी इलाका घने जंगलों और खूँख्वार वन-पशुओं के लिए प्रसिद्ध है। मेरा शिकारी मित्र महमूद स्वास्थ्य-सुधार के सिलसिले में कुछ दिनों के लिए वहाँ रहने लगा था। जब मैं शिकार खेलने अर्जुनी गया, तो हर दूसरे-तीसरे दिन उसे देख आता था।

एक दिन मुझे महमूद के यहाँ पहुँचने में देर हो गयी। अपनी जीप खड़ी कर जब मैं महमूद की झोंपड़ी की ओर बढ़ा, तो शाम का धुँधलका सर्वत्र छा गया था।

महमूद की झोंपड़ी के निकट पहुँचने पर मुझे एक विचित्र-सी निस्तब्धता अनुभव हुई— मौत की भयावनी छाया जैसे वहाँ अपने चरण जमा चुकी हो।

किसी अज्ञात प्रेरणा से मैंने अपनी राइफल सँभाली और सतर्कतापूर्वक झोंपड़ी का दरवाजा भीतर की ओर ढकेला। उस निस्तब्धता में वह चर्र-र्-र् की आवाज बड़ी भयावह लगी। मैंने जेब से टार्च निकाली और अँधेरे को विदीर्ण करता प्रकाश सर्वत्र फैल गया। अचानक मैं रुक गया; पर क्षण-भर के लिए ही। फिर मैं दौड़ कर उस कोने में पहुँचा। महमूद वहीं पड़ा था— मृत। बड़ा वीभत्स दृश्य था। उसके शरीर पर जगह-जगह से माँस नोच लिया गया था और उसकी एक टाँग गायब थी। उसके चेहरे पर आतंक छाया था और भय तथा यंत्रणा की अधिकता से आँखें खुली हुई थीं। बगल में ही एक मृत भालू पड़ा था। बड़ी भयावनी आकृति थी उसकी और उसके मुँह में महमूद की अध-चबाई टाँग थी। एक कोने में एक खाली राइफल भी पड़ी थी।

क्षण-भर में ही मेरे दिमाग में कौंध गया कि, सारी घटना किस प्रकार घटी होगी। भालू जब महमूद की झोंपड़ी में घुसा होगा, उस समय महमूद अवश्य ही गहरी नींद में रहा होगा और भालू ने जब आक्रमण किया होगा, तो महमूद की नींद खुल गयी होगी। फिर वह लपक कर अपनी राइफल की ओर बढ़ा होगा और तब उस नरभक्षक 'दानव' पर गोलियाँ चलायी होंगी।

महमूद को मैं बहुत दिनों से जानता था और बहुत निकट से जानता था। साक्षात् मौत को स्वयं पर हावी देख कर भी वह न तो भयभीत होता था, न ही अपना

CC-0. Mumukshu Bhawah Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपा खोता था। उसका निशाना भी कभी खाली नहीं जाता था; किंतु यह भालू? मैंने एक बार उस मृत भालू की ओर देखा– साक्षात् दैत्य-सरीखा। भालू यों भी और जानवरों की अपेक्षा बड़ा विकट होता है। आप गोली चलाते जाइये और वह आपके निकट आता जायेगा। महमूद की गोलियाँ समाप्त हो गयी होंगी और दुबारा गोलियाँ भरने के पूर्व ही भालू उस पर टूट पड़ा होगा; पर महमूद की गोलियाँ भी बेकार नहीं गयी थीं। अपने 'शिकार' का पूर्णरूपेण उपभोग करने के पूर्व ही भालू ने दम तोड़ दिया था।

मैंने महमूद के मृत शरीर को उठाया और जीप की ओर बढ़ा। रात्रि का अंधकार बड़ी तेजी से बढ़ता आ रहा था। चारों ओर एक अजीब-सा भयावह सन्नाटा और कंधे पर महमूद का मृत शरीर– एक सिहरन-सी दौड़ गयी मेरे शरीर में।

जीप में उसके मृत शरीर को रख कर मैं ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। किंतु न-जाने क्या गड़बड़ी हो गयी थी– जीप ने वहाँ से खिसकने से इन्कार कर दिया। पेट्रोल पूरा था। अतः ढक्कन उठा कर मैं इंजिन की जाँच करने लगा। पर टार्च की रोशनी में भी मैं कुछ समझ नहीं सका और घंटे-भर तक व्यर्थ ही प्रयास करने के बाद; जब मैंने थक कर आँखें ऊपर उठायीं, तो क्षण-प्रति-क्षण गहरा होता अंधकार मानो खिलखिला कर हँस पड़ा। और, तभी वह घटना घटी।

जीप को ठीक करने की धुन में सम्भवतः मैंने आवाज नहीं सुनी थी। लेकिन जब इस ओर से निराश होकर मैं धीरे-धीरे महमूद की झोंपड़ी की ओर जा रहा था, तब अनायास ही, अपने पीछे गर्म साँस का अनुभव हुआ। खतरे का आभास मिलते ही, मैंने झटके से पीछे मुड़ने की चेष्टा की; पर तभी एक रोयेंदार हाथ मेरे कंधों पर पड़ा और मैं लड़खड़ा कर गिर पड़ा। भाग्य ने साथ दिया। जहाँ मैं गिरा था, उससे डेढ़ गज– सिर्फ डेढ़ गज की दूरी पर, जमीन ढालुआँ होने लगी थी। लेटे-लेटे ही मैंने करवट बदली और उस स्थान पर पहुँच कर लुढ़कने लगा। लेकिन यह ढलान भी साधारण ही थी–– कुछ ही दूर जाकर मैं पुनः समतल भूमि पर आ गया।

खीझ कर मैं उठ बैठा और ऊपर की ओर देखने लगा। वह नाममात्र की ढलान जहाँ आरम्भ हुई थी, वहीं वह खड़ा था। उस अँधेरे में भी मैं उसे पहचान गया– एक विशालकाय भालू। महमूद पर जिस भालू ने आक्रमण किया था, सम्भवतः उसी का साथी। मैंने राइफल के लिए हाथ बढ़ाया; पर वह तो जीप में ही रह गयी थी। अतः पैंट की पिछली जेब से रिवाल्वर निकाल कर निशाना साधा और उस ओर गोली दाग दी।

बड़े जोर से वह गरजा और मैं समझ गया, मेरा निशाना गलत नहीं था। लेकिन क्षण-भर बाद ही वह धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ने लगा। मैंने फिर निशाना लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब वह दौड़ने लगा था। मैंने तीसरी बार निशाना लिया; किंतु कोई आवाज नहीं। देखा, तो गोलियाँ खत्म हो चुकी थीं। फिर से गोलियाँ भरने का अवकाश नहीं था। और, भालू ? मेरे कुछ सोचने या करने के पहले ही उसके हाथ का जोरदार आघात मेरे मुँह पर पड़ा और मैं पीठ के बल गिर पड़ा। वह नीचे झुका और उसके नुकीले दाँत मेरे कंधे में गड़ गये— गर्दन से कुछ ही इंच एक ओर। एक असह्य-सी पीड़ा से मैं तिलमिला उठा।

उसके दाँत अंदर धँसते जा रहे थे। मेरी हड्डियाँ जैसे कड़कड़ा उठीं और पीड़ा तथा क्रोध से बौखला कर मैं अपने रिवाल्वर से उसके मुँह पर प्रहार करने लगा। पागल के समान मैं उसके मुँह पर मारता चला जा रहा था ! अकस्मात् वह बड़े जोर से गरजा और दूसरे ही क्षण मुझे छोड़ कर सीधा खड़ा हो गया। शायद उसकी आँख में गहरी चोट लगी थी। बड़े करुण स्वर में वह कराहा।

मैं लेटे-ही-लेटे खिसकने लगा और कुछ दूर पहुँच कर खड़ा हो गया। फिर मैं तेजी से महमूद की झोंपड़ी की ओर दौड़ने लगा।

टार्च तो, पता नहीं कब, हाथ से छूट कर गिर गयी थी। शायद भालू के प्रहार से पहली बार जब मैं गिरा था, तभी। पर अँधेरे में ही कुछ देर इधर-उधर खोजने के बाद, कुछ कारतूस मुझे मिल गये। और, महमूद की राइफल उठा कर मैं उसमें गोलियाँ भरने लगा।

तीन मिनट—कुल तीन मिनट—बाद ही झोंपड़ी के दरवाजे पर वह फिर आ खड़ा हुआ। उसका विशाल शरीर पूरे दरवाजे को घेर कर खड़ा था। मैंने निशाना लिया और एक-एक कर तीन गोलियाँ छोड़ दीं। वह बड़े जोर से गरजा और गिर पड़ा। फिर मेरे हाथ से राइफल कब छूट गयी और मैं कब अचेत हो गया— इसका मुझे स्वयं भी ज्ञान नहीं।

दूसरे दिन किस प्रकार गाँव के चरवाहों ने उस मृत भालू के करीब ही मुझे बेहोश

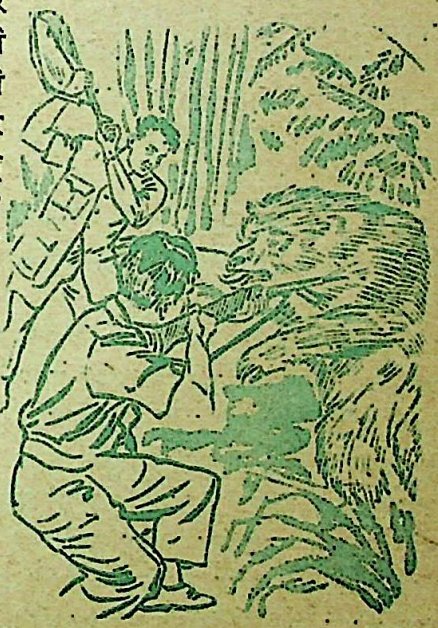

अँधेरे में खड़े जग्गू ने अपनी राइफल के कुंदे से उसके सिर पर एक तीव्र प्रहार किया और.....(पृष्ठ ७७)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाया और मैं किस प्रकार शहर पहुँचाया गया, यह एक लम्बी कहानी है। किंतु साक्षात् मृत्यु से मुठभेड़ की यह कहानी आज भी मुझे रोमांचित कर देती है। एक मजेदार बात और भी मैं नहीं भूला हूँ। इस घटना के तीसरे ही दिन मैंने अखबारों में पढ़ा था ".....के वन्य अधिकारी ने सूचना दी है कि, भालुओं का एक जोड़ा अर्जुनी के घनघोर जंगलों की ओर बढ़ता देखा गया है। कुछ ग्रामवासी जब अपने मवेशियों को चराने जंगल की ओर गये थे, उन्होंने उसे अपनी आँखों से देखा—वह बड़ा ही डरावना दीखता था...."

और, दूसरी बार जब मैं भालू के शिकार पर गया था! जब भी मैं इस विषय पर सोचता हूँ, वह पहली घटना से किसी प्रकार कम रोमांचक नहीं प्रतीत होती। पहली बार जिस प्रकार मृत्यु मुझे अपने आलिंगन में समेटते-समेटते रह गयी थी, दूसरी बार भी कुछ ऐसा ही हुआ था।

मेरे मित्र जग्गू की बड़ी इच्छा थी कि, भालू का शिकार किया जाये। और, तभी हमारे पास खबर आयी कि, नागपाताल के इलाके में एक नरभक्षक भालू ने बड़ा उत्पात मचा रखा है। जग्गू ऐसा मौका कैसे हाथ से जाने देता। हम दूसरे ही दिन चल पड़े और दोपहर होते-होते नागपाताल के घनघोर जंगल में पहुँच गये। साथ में हमने अपने एक और मित्र को ले लिया था— यासिन!

वहाँ ग्रामवासियों ने बताया कि, भालू के डर के कारण लोगों का घर से निकलना दूभर हो गया है। हमने उन्हें ढाढ़स बँधाया और भालू के शिकार की तैयारियाँ शुरू कर दी। किंतु जग्गू के भाग्य में सम्भवतः अभी और प्रतीक्षा बँधी थी। पूरे तीन दिन हमने व्यर्थ ही उस भालू की तलाश में गँवाये; किंतु उसका कहीं कोई पता न था। यह कहना भी मुश्किल था कि, वह उस इलाके को छोड़ कर अन्यत्र चला गया अथवा वहीं था; क्योंकि इन तीन दिनों में किसी प्रकार की दुर्घटना नहीं हुई। सबसे अधिक निराशा तो जग्गू को हुई; किंतु एक रात हमें अपना शिकार मिल गया और वह भी बड़े अप्रत्याशित रूप में, जब कि हम जंगल से लौट रहे थे।

हम जब अपने ठहरने के स्थान से मात्र तीन मील दूर रह गये, तब अकस्मात् 'हेडलाइट' के प्रकाश में एक वृक्ष के नीचे काली-सी कोई चीज नजर आयी। यासिन की नजर उस पर पड़ी और वह एकबारगी बोल उठा—"करादी (भालू)!"

क्षण-भर के लिए हम अवाक् रह गये; पर शीघ्र ही हमने स्वयं को सँभाल लिया। भालू हमसे करीब सौ गज की दूरी पर था। अतः मैंने मोटर प्रायः ४० गज और बढ़ने दी और तब उसे रोक कर उतर गया। मेरे साथ-साथ जग्गू भी उतर आया। यासिन को मैंने मोटर में ही बैठे रहने को कहा।

मोटर से उतरते ही जग्गू ने निशाना साध कर गोली चलायी। इस आशंका से कि, भालू कहीं इधर-उधर भाग न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...थे, मैं गाड़ी के 'हेडलाइट' के प्रकाश में राइफल तान कर बैठ गया था, जिससे उसकी नजर मुझ पर पड़े। और, हुआ भी वैसा ही। भालू लपक कर मेरी ओर बढ़ा और मैंने 'घोड़ा' दबा दिया; पर भालू की चाल पहले से तेज हो गयी— वह क्रुद्ध होकर मेरी तरफ बढ़ा।

जग्गू ने धड़ाधड़ दो-तीन गोलियाँ चलायीं और मैंने भी। लेकिन वह रुका नहीं, बढ़ता ही आया। तभी मेरे मन में यह संदेह भी उठ खड़ा हुआ कि, मैंने चार गोलियाँ चलायीं या पाँच। यदि पाँच, तो मेरी राइफल खाली थी। यही दशा जग्गू की भी थी। उसने पास आते भालू पर एक 'फायर' और किया; पर उसकी राइफल में गोली थी ही नहीं। मैंने उससे अविलम्ब मोटर में लौट जाने को कहा; पर मुझे छोड़ कर जाना शायद उसे स्वीकार नहीं था। भालू काल की तरह बढ़ा चला आ रहा था— मानो वह मृत्युंजय हो।

आखिर भालू मुझसे पाँच-छः फुट की दूरी पर आ गया। पास आते ही, अपने स्वभावानुसार वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अगले दो पंजे मेरी ओर बढ़ाता हुआ आगे बढ़ा। भालू के वे पंजे मानो साक्षात् यम के पंजे थे। बचने की तो कोई आशा थी नहीं। अतः मैंने अपने प्राणों का मोह छोड़ दिया और अविश्वास के बावजूद अपनी राइफल तानी— निशाना ठीक भालू की छाती पर था। अब वह इतना समीप आ गया था कि, राइफल की नली उसकी छाती से सटती-सी जा रही थी। तभी अँधेरे में खड़े जग्गू ने अपनी राइफल के कुंदे से उसके सिर पर एक तीव्र प्रहार किया और न-जाने किस अज्ञात प्रेरणावश मेरी उँगली ने भी 'घोड़ा' दबा दिया। भाग्य हमारा साथ दे रहा था। मेरी राइफल में एक गोली शेष थी। एक साथ हुए इन दो प्रहारों को भालू बर्दाश्त न कर सका और वहीं धड़ाम् से धरती पर गिर गया!

कह कर गया है...

यहीं शाख, तुम जिसके नीचे किसी के लिए चश्मे-नम हो, यहाँ अब से कुछ साल पहले मुझे एक छोटी-सी बच्ची मिली थी, जिसे मैंने आगोश में ले के पूछा था— 'बेटी! यहाँ क्यों खड़ी रो रही हो?' मुझे अपने बोसीदा आँचल में फूलों के गहने दिखा कर वो कहने लगी— 'मेरा साथी उधर', उसने उँगली उठा कर बताया, 'उधर, उस तरफ ही (जिधर ऊँचे महलों के गुम्बद, मिलों की सियाह चिमनियाँ आसमाँ की तरफ सर उठाये खड़ी हैं) ये कह कर गया है कि, मैं सोने-चाँदी के गहने तेरे वास्ते लेने जाता हूँ, राबी?'

—अख्तरुल ईमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़वे-मीठे जीवन-घूँट

★

स्वाभिमान

कड़ी दोपहरी में यात्रियों से भरी बस एक छोटे-से गाँव के 'स्टाप' से आगे बढ़ी। जब कंडक्टर टिकट देने के लिए, वहीं से चढ़ी एक वृद्धा के पास पहुँचा, तो उसने चवन्नी निकाल कर दी और जहाँ जाना था, बता दिया। कंडक्टर बोला—"माई! एक चवन्नी और निकाल!" वृद्धा चौंकी—" ऐसा कैसे हो सकता है? कल ही तो मैं अपने जग्गी के साथ यहाँ आयी थी। उसने तो चवन्नी ही मुझे दी। बोला— 'चार आने लगते हैं।'" कंडक्टर बोला—"नहीं माई! पूरे आठ आने लगेंगे।" वृद्धा ने मिन्नत की—"मान जा, बेटे! मेरा पहुँचना जरूरी है। बहू बीमार है। एक गरीब से अगर तू ज्यादा नहीं कमायेगा, तो...।" खीझ कर कंडक्टर बोला—"माई! बस सरकार की है, मेरी नहीं। इतने पैसे में तुझे तीन मील इधर ही उतरना पड़ेगा।" वृद्धा ने फिर विनती की—"फिर ऐसा कर—मेरे घर के सामने ही बस ठहरती है। कल लौटते समय, तू चार आने पैसे मुझसे और ले लेना।"

रुष्ट कंडक्टर आगे बढ़ गया। वृद्धा हताश चुप लगा गयी। मुझसे नहीं रहा गया। कंडक्टर को बुला कर मैंने एक चवन्नी दी और वृद्धा का टिकट काट देने के लिए कहा। कंडक्टर उसके निकट पहुँचा—"ले माई, यह तेरा टिकट! अब अपने घर ही उतरना!"

वृद्धा का चेहरा खिल उठा—"पहले ही मेरी बात मान लेता, तो...."

कंडक्टर ने बात काट दी—"पैसे मुझे पूरे मिल गये हैं, माई! एक बाबू ने बाकी पैसे दे दिये हैं।"

सहसा वृद्धा के चेहरे का रंग बदला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रुद्ध स्वर में वह चिल्लायी—"किसी बाबू ने दे दिये ? क्यों ? क्या मुझे भिखारिन समझा है उसने ?" फिर उसी विदग्ध गति से वह कंडक्टर की ओर मुड़ी—"रोक अपनी बस ! मैं यहीं उतरूँगी !"

—एस० एन० सलीम, त्रिचनापल्ली

★

मुक्ति

लगता है, विधाता ने मुझे फुर्सत के समय बनाया— जहाँ-जहाँ से उनकी इच्छा हुई, मुझे तोड़-मोड़ दिया है। अपने इस विकलांग शरीर को लेकर, सदा अपने परिचित-अपरिचितों के उपहास का पात्र रहा हूँ। फलतः जीवन में अजीब-सी कड़वाहट घनीभूत होती रही; किंतु एक दिन एक बिल्कुल ही छोटी-सी बात ने मेरे दृष्टिकोण को आमूल बदल दिया।

यों ही सड़क पर घूम रहा था। रंग-बिरंगे गुब्बारों की डोरियाँ हाथ में पकड़े एक गुब्बारेवाला वहीं खड़ा था। सहसा पीले रंग के गुब्बारे की डोर उसके हाथ से छूट गयी। गुब्बारा तेजी से आकाश की ओर बढ़ा। बच्चों ने प्रसन्न हो तालियाँ पीटीं और ललचायी नजरों से बँधे हुए गुब्बारों को देखा। बच्चों के इस प्रमोद ने शायद गुब्बारेवाले को भी आह्लादित कर दिया। उसने एक लाल गुब्बारे की डोर छोड़ दी— और फिर श्वेत रंग के गुब्बारे की भी।

उसी क्षण, पास खड़े एक श्यामवर्ण बालक ने कौतूहलवश पूछ लिया—"गुब्बारेवाले ! क्या यह काले रंग का गुब्बारा भी उतनी ही ऊँचाई पर पहुँच जायेगा, जितनी ऊँचाई तक दूसरे छोड़े हुए गुब्बारे गये हैं ?

गुब्बारेवाले ने उसकी ओर देखा और काले रंग के गुब्बारे की डोर छोड़ते हुए, बड़े स्नेह से कहा—"क्यों नहीं, बेटे ! काला और सफेद क्या ? असल चीज तो गुब्बारे के भीतर की गैस है !"

सुना, तो वह बच्चा मुक्त पक्षी की भाँति उछल पड़ा और बाकी बच्चों के बीच निःसंकोच नाचने लगा ! पहाड़ सिर पर से उतर गया। मेरा मन भी जैसे आजीवन की कैद से मुक्त हो गया— मानो गुब्बारेवाले के इन सीधे-सहज शब्दों ने मेरे सारे बंधन काट दिये। आज वर्षों बाद, जब मैं अपने सुखी जीवन पर नजर डालता हूँ, तो अपने को उस गुब्बारेवाले का ऋणी महसूस करने लगता हूँ। आसपास समाज का जो प्यार मैंने अर्जित किया है, उसका मार्ग मेरी चेतना ने उस गुब्बारे-वाले से ही पाया था !

—लक्ष्मीकांत शरभ, गोहाटी

★

आदर्श

सन् १९३६ में मैं वर्धा के ग्राम-सेवा-विद्यालय में एक शिक्षार्थी था। गांधीजी उन दिनों वर्धा से पाँच मील दूर सेवाग्राम-आश्रम में रहा करते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन हमारे विद्यालय के संचालक महोदय ने गांधीजी से कहा—"बापू, यदि आप शिक्षार्थियों को एक घंटा समय प्रति दिन देते, तो इनकी शिक्षा को बड़ा लाभ पहुँचता।"

बापू तुरत ही बोल उठे—"हाँ, हाँ, अवश्य। यदि शिक्षार्थी सवेरे नौ बजे तक यहाँ आयें, तो मैं उन्हें ९ से १० बजे तक का समय दे सकूँगा।"

तदनुसार हम प्रति दिन सेवाग्राम जाने लगे। लेकिन लौटते समय बड़ा कष्ट होता था—गर्मी के दिन थे; अतः सूरज सिर पर चढ़ जाता था।

अंत में, एक दिन संचालक महोदय ने गाँधीजी से पुनः अनुरोध किया—"बापू, दोपहर में लौटते समय, कड़ी धूप के कारण सबको बड़ा कष्ट होता है।"

"लेकिन वे सब तो ग्राम-सेवा करनेवाले हैं न?"—बापू ने पूछा।

"हाँ, बापू!"—संचालक महोदय बोले।

"तो फिर ऐसा कीजिये कि, उन्हें दिन के एक बजे बुलाइये। मैं एक से दो बजे तक का समय उन्हें दूँगा। हाँ, उनसे कहियेगा कि, आते समय वे रास्ते में पड़नेवाले तालाब से एक-एक पत्थर भी साथ लेते आयेंगे।"

और, हमें एक महीने तक नित्य वर्धा से सेवाग्राम तक दोपहर में चक्कर लगाना पड़ा। उसी दुपहरी में गांधीजी भी हमारे साथ ग्राम-सेवा का कार्य करके हमारे सामने उदाहरण उपस्थित करते। उसी समय मैंने अनुभव किया कि, सेवा का कार्य कितने त्याग की अपेक्षा करता है। गांधीजी ने वस्तुतः उस एक महीने में ही हमें सेवा का मर्म समझा दिया। उनकी वह मूक सीख आज भी जीवन-क्षेत्र में मेरा मार्ग-दर्शन कर रही है!

—यशवंत परीख, सूरत

एक दिन सियेटल (अमेरिका) में अखबार बेचनेवाले एक छः वर्ष के बालक ने मेरे पास आकर पूछा—"क्या आप अखबार खरीदेंगे?"

मैंने उत्तर दिया—"नहीं, मुझे अखबार नहीं चाहिए।"

"केवल एक आना। ज्यादा नहीं।"—बड़े करुण स्वर में वह बोला।

और तब, मैंने एक इकन्नी उसकी ओर बढ़ाते हुए पूछा—"क्या तुम्हारे माता-पिता बहुत गरीब हैं?"

उसने तीक्ष्ण विस्मय के साथ मेरी ओर देखा और पूछा—"क्यों?"

"क्योंकि तुम अखबार बेच रहे हो!"—मैंने जवाब दिया।

"क्षमा कीजियेगा, मेरे माता-पिता काफी सम्पन्न हैं; लेकिन उनकी सम्पत्ति पर निर्भर रह कर मैं अपने को पंगु बनाना नहीं चाहता।" कह कर वह आगे, एक दूसरे सज्जन की ओर, बढ़ गया!

—सत्यदेव परिव्राजक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह तावीज़ है आपकी रक्षा के लिये !

PTM

PARAGON FABRICS REGD. TRADE MARK

सावधान !

नहीं तो आप ख़रीददारी में धोखा खा जायेंगी। फिर भी घबराइए नहीं-यह तावीज़ आपकी रक्षा करती है।

आप शायद यह पूछें, वह कैसे ? जवाब बिल्कुल साफ़ है। यह तावीज़ एक असली पॅरेगॉन साड़ी की पहचान है। पॅरेगॉन के बक्से में रखी हुई साड़ी या उस पर पॅरेगॉन की क़ीमत का लेबिल लगा होने पर भी वह साड़ी कभी कभी पॅरेगॉन साड़ी नहीं होती। एक असली पॅरेगॉन साड़ी पहचानने का तो सिर्फ एक ही तरीका है-वह है साड़ी के दोनों पल्लों पर सुनहरे रंग में छपा हुआ PTM ट्रेड मार्क देखना कभी न भूलिये।

नई हालत में सभी नाइलॉन साड़ियाँ एक ही सी दिखती हैं लेकिन उनकी असलियत सामने आ जाती है उनकी धुलाई में। ऐसी नाइलॉन साड़ी जो बड़ी ख़ूबसूरती से धुले और जिसे इस्तरी की बिल्कुल ज़रूरत न हो, वह उत्कृष्ट साड़ी तो पॅरेगॉन ही बनाती है।

आप अपनी सहेलियों और परिवार के अन्य लोगों को होशियार कर दीजिये। देखिये वह कोई दूसरी साड़ी पॅरेगॉन समझ कर न ले आयें।

पॅरेगॉन

नाइलॉन साड़ियाँ

पॅरेगॉन टेक्स्टाइल मिल्स्
वरली—बम्बई, १३.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमती को साध्य करने की नवीन तरकीब !

अदाकार आगा की इस तरकीब को देख कर आप फ़िदा हो जायेंगे

जोरदार पारिवारिक कथानक में रसपूर्ण विनोद का गुंफन अर्थात.....

प्रसाद प्रॉडक्शन्स, मद्रास, कृत

शारदा

राज कपूर, मीना कुमारी, श्यामा

गीत : राजेन्द्र कृष्ण

संगीत : सी. रामचंद्र

दर्शकों की भारी भीड़के बीच चल रहा है:—

दिग्दर्शन : प्रसाद

स्क्रीन्स प्रकाशन

कृष्ण और अन्य छबिघरों में

: विश्वभर के वितरक :

राजश्री प्रोडक्शन्स, तारदेव बम्बई, ७.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन्दी

नरेन्द्रनाथ मित्र की एक बंगला-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

☆

यद्यपि ढाका-मेल रात को दस बजे प्लेटफार्म छोड़ता था, फिर भी लालमोहन साहा समय से दो घंटे पूर्व ही स्टेशन पर आ गया था। उसके साथ एक बड़ा ट्रंक, दो सूटकेस, एक टिफिन-कैरियर और बिस्तर था। कुली की सहायता से, उसने अपना सामान एक ओर रखवा लिया। टिकट वह पहले ही खरीद चुका था। लेकिन आजकल केवल टिकट खरीद लेने-मात्र से ही ढाका-मेल में सामान के साथ बैठने के लिए स्थान नहीं मिल जाता। पहले स्थानीय कस्टम-कार्यालय से 'परमिट' लेना होता है। वहाँ हरेक बक्से को खोल कर, उसकी अच्छी तरह से जाँच की जाती है और देखा जाता है कि, कोई अपने साथ पाकिस्तान को निषिद्ध माल तो नहीं ले जा रहा है।

दो सप्ताह पूर्व लालमोहन को काफी हानि उठानी पड़ी थी। कस्टम-अधिकारी उसको पुलिस के हवाले करना चाहता था। बड़ी मुश्किल से लालमोहन ने अपने-आपको जेल की हवा खाने से बचाया। उसने इस व्यापार से हाथ खींचने का भी निश्चय कर लिया था; लेकिन जैसे ही उसने कलकत्ता में कदम रखा, लोभ ने उस पर फिर काबू पा लिया था।

...और, इस बार भी लालमोहन ने कमीज के कपड़े, साड़ियों और धोतियों में तीन सौ रुपये व्यय किये। यह सब उसने बक्सों और बिस्तर में भर दिये और ऊपर से फल आदि रख दिये। इस बार वह काफी सतर्क था। अब वह दुबारा पुरुष-कस्टम-अधिकारी के पास नहीं जायेगा, यह उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया था। जहाँ तक होगा, वह किसी स्त्री-कस्टम-अधिकारी से जाँच करायेगा।

उसने यह भी देख लिया था कि, उस विभाग में दो या तीन जवान स्त्रियाँ काम करती थीं। वे स्त्री यात्रियों के बक्सों को नाम-मात्र के लिए खोल कर ही जाने की आज्ञा दे देती थीं।

उसके साथ कोई स्त्री न थी। वह अपनी बूढ़ी माँ को घर पर ही छोड़ आया था; लेकिन इससे भी कोई अंतर न पड़ता था हरबिलास सिल अपनी पत्नी को इलाज के लिए लाया था। अस्पताल में उसके एक सप्ताह तक ठहरने की सम्भावना थी।

लालमोहन उसे देखने के लिए सात दिन में तीन बार अस्पताल गया था और उसके लिए फल भी ले गया था। उसने मुस्करा कर, साथ ही घर लौटने का प्रस्ताव भी रख दिया था और उसे हरबिलास ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वीकार कर लिया था।

लालमोहन ने सुनयनी से कहा था—"मेरे साथ कुछ सामान रहेगा। अगर वे तुम से कुछ पूछें, तो कह देना कि, मैं तुम्हारा जीजा हूँ।"

"हाँ, हाँ"—सुनयनी भी मुस्करा उठी थी—"लेकिन कम कीमत पर एक अच्छी साड़ी देनी पड़ेगी।"—उसने कहा था।

"तुम चिंता न करो"—लालमोहन ने उसे आश्वासन दिया था—"समय आने दो, तुम्हारे लिए ढेर लगा दूँगा।"

दिन और समय भी तय कर लिया गया था। हरबिलास और उसकी पत्नी आज जाने वाले थे। जीजा के रूप में सुनयनी के साथ जाने की योजना, लालमोहन बना ही चुका था और इस तरह सुनयनी के साथ उसके सामान के निकल जाने की भी पूरी आशा थी।

उसने हर प्रकार की सावधानी बरती थी। अब उसे किसी बात की भी चिंता न थी। वह बड़े ट्रंक पर बैठ कर बीड़ी पीने लगा और हरबिलास तथा उसकी पत्नी के आने की राह देखता रहा।

रिक्शों, टैक्सियों और गाड़ियों की भीड़ जमा हो गयी थी। बहुत-से आदमी हर आयु की स्त्रियों के साथ आये; परंतु हरबिलास का कहीं पता न था। अब लालमोहन व्यग्र हो उठा। अभी वह उठ कर चला ही था कि, एक तेईस साल का नवयुवक दौड़ता हुआ लालमोहन के पास आया—"आप यहाँ हैं!"—उसने हाँफते हुए कहा—"मैं आपको हर स्थान पर खोजता फिर रहा था। मैं आपको यह बताने आया था कि, भाईसाहब आज नहीं जायेंगे। भाभी की तबियत फिर से खराब हो गयी है। डाक्टर का कहना है कि, उन्हें अभी और कुछ सप्ताहों तक यात्रा नहीं करनी चाहिए!"

फिर लालमोहन बैठा-बैठा बड़ी देर तक सोच-विचार करता रहा। उसे किसी भी मूल्य पर, आज गाड़ी पकड़नी ही थी। वह स्टेशन आते समय रिक्शेवाले को डेढ़ रुपया दे चुका था और अब सामान लौटा कर ले जाने के लिए भी उतना ही खर्च होना आवश्यक था।

हरबिलास अपनी पत्नी के साथ आज नहीं जायेगा; लेकिन अन्य यात्री तो अपनी पत्नियों के साथ जा रहे थे। लालमोहन उन्हीं में से किसी से कहेगा।

एक सुसज्जित नवयुवक अपनी सुंदर पत्नी के साथ कस्टम-कार्यालय के स्त्री-विभाग की ओर जा रहा था। लालमोहन ने बिना संकोच के कहा—"क्षमा कीजिये, आप रहते कहाँ हैं?"

सुन कर, नवयुवक चौंक पड़ा—"फरीदपुर"!—वह बोला—"लेकिन आपके पूछने का मतलब क्या है?"

"मैं भी फरीदपुर रहता हूँ!"—लालमोहन ने उत्तर दिया—"हम दोनों एक ही जिले के हैं, क्या समझे! मेरी कुछ मदद कर सकेंगे?"

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"

लालमोहन ने अपने सामान की ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त करके बड़ी नम्रता के साथ कहा—"आपको अधिक कष्ट नहीं होगा। बस बहनजी से कह दें कि, वह अपने सामान के साथ मेरा सामान भी निकलवा लें। उन्हें यह कहना पड़ेगा कि, मैं उनका करीब का रिश्तेदार हूँ।"

उस नवयुवक ने लालमोहन की ओर देखा और मुस्करा दिया—"मेरी पत्नी आप-सरीखे दिलचस्प आदमी के साथ सम्बंध जोड़ने का विरोध तो शायद नहीं करेगी; लेकिन हम कोई खतरा मोल लेने के लिए तैयार नहीं हैं। आप जानते ही हैं कि, आजकल सामान पर कितनी कड़ी निगरानी रखी जाती है।"

लालमोहन ने कई और दम्पतियों से आग्रह किया; लेकिन सभी ने एक ही उत्तर दुहरा दिया।

"देखता हूँ कि, गाड़ी पकड़ने से आज मुझे कौन रोकता है?"—उसने अपने साथी नंददास से कहा— "तुम यहीं सामान को देखते रहो। मैं अभी आता हूँ।"

उसने इधर-उधर इस नीयत से निगाह दौड़ायी कि, शायद कोई जान-पहचान का जोड़ा मिल जाये!

"बाबू, जरा सुनो तो!"

किसी स्त्री-कंठ का स्वर सुन कर, उसने पीछे मुड़ कर देखा, तो ठगा-सा खड़ा रह गया। वहाँ एक तरुणी खड़ी थी। उसके शरीर पर केवल एक फटी हुई साड़ी थी और वह गंदी भी इतनी हो चुकी थी कि, उसका असली रंग जानना कठिन हो गया था। वह दुबली-पतली थी; किंतु बड़ी आकर्षक लग रही थी!

"क्या चाहती हो?"—कुछ ठहर कर उसने उससे पूछा।

वह तरुणी पहले तो हिचकिचायी, फिर बोली—"मैंने आज कुछ भी नहीं खाया है और मेरी अपाहिज माँ भी भूखी है। अगर उसका बस चलता, तो वह मुझे ही खा जाती। आप मुझे कुछ दे सकेंगे?" और, उसने अपना हाथ फैला दिया।

"मेरे पास दया दिखाने के लिए समय नहीं है।"—उसने रूखे स्वर में कहा और मुँह फेर कर चल पड़ा।

"सुनिये, कुछ तो दे दीजिये।"—उस तरुणी ने मिन्नतें कीं।

लालमोहन ने उसे दुबारा गौर से देखा। वह बुरी तो नहीं लगती थी!

"मेरा कहना मानो, तो मैं तुम्हें कुछ दे सकता हूँ।"—वह बोला।

तरुणी ने अपनी दृष्टि उसके चेहरे पर गड़ा दी। उसने जो-कुछ सुना था, वह उसके लिए नया न था। वह पहले भी इस प्रकार की बातें सुन चुकी थी!

वह कुछ कदम आगे सरक आयी और मुस्करा कर मधुर स्वर में बोली—"क्यों नहीं? आप जो कहेंगे, करूँगी। बताइये?"

"वह बात मैं यहाँ नहीं बता सकता। मेरे साथ आओ!"—लालमोहन ने कहा—"तुम्हारा नाम क्या है!"

"चम्पा।"

"कितना प्यारा नाम है।"—लालमोहन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने मधुरता से कहा—"हाँ, चली चलो।"

वह प्रथम श्रेणी के विश्रामगृह के पास गया और अंदर झाँक कर देखने लगा। अंदर कोई भी न था। "अंदर आ जाओ।" —इधर-उधर देख कर वह बोला।

चम्पा उसके पीछे-पीछे चली गयी।

लालमोहन जब उसके समीप आने लगा, तो चम्पा एकदम पीछे हट गयी—"पहले यह बताओ कि, दोगे क्या?"—वह बोली।

परंतु उसने चम्पा को छुआ तक नहीं। उसने उसके ऊपर झुक कर आहिस्ते से कहा—"अगर तुम मेरे एक काम में मदद कर दो, तो मैं तुम्हें मुँहमाँगा पुरस्कार दूँगा।"

और, तब उसने चम्पा को सारी बातें समझा दीं। चम्पा के लिए इस प्रकार का प्रस्ताव अनोखा था। उसने ऐसी कोई बात सुनी ही न थी।

"और, अगर उन्होंने हमको पकड़ लिया तो?" —चम्पा ने कुछ देर के पश्चात् उससे प्रश्न किया!

उत्तर में लालमोहन मुस्करा दिया—"तब हम दोनों एक साथ जेल भेज दिये जायेंगे। मगर वह स्थान भी बुरा नहीं है। वहाँ रहने के अलावा हमें खाने को भी मिलता है।"

"खैर, कोशिश की जाये। जो होगा, देखा जायेगा।"—चम्पा ने कहा—"लेकिन भंडा-फोड़ का एक रास्ता और जो है—कस्टमवाले हमारी चाल पहचान जायेंगे। आपके कपड़े कितने साफ हैं और मेरी साड़ी! ऐसी दशा में हमें भला कौन पति-पत्नी कह सकता है?"

सुन कर, लालमोहन को जैसे होश आया—"तुम ठीक कहती हो!"—वह बोला—"चम्पा, तुम समझदार भी खूब हो। मेरी ही क्या, तुम तो बड़ी आसानी से किसी जज या अफसर की पत्नी बन सकती हो। अच्छा, तुम यहीं ठहरो।"

वह कुछ ही मिनटों में एक सूटकेस लेकर लौट आया और उसमें से पीले रंग की एक साड़ी निकाल कर चम्पा को दे दी—"लो!" —वह बोला—"अब तुम मेरी पत्नी लगने लगोगी। मैंने इसे सत्रह रुपये चौदह आने में खरीदा है। मुंशी के हाथों, अधिक नहीं तो, तीस रुपयों में तो बेच ही दूँगा।"

"आप सब साड़ियाँ बेच देंगे? अपनी पत्नी को एक भी न देंगे?"—चम्पा ने व्यंग्य-भरी मुस्कान के साथ पूछा।

"पत्नी?"—लालमोहन हँस पड़ा—"कहाँ है मेरी पत्नी? ओह, तुम हो!"

चम्पा का चेहरा लाल हो उठा। उसने कनखियों से लालमोहन की ओर देखा। वह साँवला, छरहरा और सुंदर दिखायी दे रहा था। उसकी आयु भी पच्चीस या छब्बीस वर्ष से अधिक न थी।

"अब आप बाहर चले जायें।"—चम्पा ने उससे कहा।

"क्यों?"—लालमोहन ने पूछा।

सुन कर, चम्पा पुलकित हो उठी। सचमुच ही वह विवाहित न था। उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...यों के बारे में कोई जानकारी न थी। वह अपनी भौंहें तान कर बोली—"मैं अपने कपड़े जो बदलूँगी ?"

लालमोहन तुरत अपनी भूल समझ गया! "माफ करना!"—उसने कहा—"एक बात और है। केवल कीमती साड़ी से ही काम न चलेगा। तुम अपने पति का साथ दे रही हो। तुम्हारी माँग में सिंदूर भी होना चाहिए। तुम साड़ी बदल लो। इसी बीच मैं सिंदूर ले आता हूँ। तुम्हारे लिए एक प्लेटफार्म-टिकट भी खरीदना होगा।"

और, जब वह लौटा, तो उसके हाथ में केवल सिंदूर ही न था; बल्कि दो पान भी थे। उसने एक चम्पा को दे दिया और कहा—"लो, इससे तुम्हारे होंठ लाल हो जायेंगे। विवाहित स्त्री पान न चबाये, तो वह शोभा नहीं देती।"

तभी स्टेशन की घड़ी ने टन् की आवाज की। लालमोहन एकदम उछल पड़ा—"अरे, साढ़े नौ बज गये। जल्दी करो, वरना मैं गाड़ी नहीं पकड़ पाऊँगा!"

वह एक सूटकेस लेकर लौट आया और उसमें से पीले रंग की एक साड़ी निकालकर चम्पा को दे दी। पृष्ठ ८४

थोड़ी देर में चम्पा तैयार हो गयी, तो लालमोहन उसे गौर से देखने लगा। साड़ी का पीला रंग उसके शरीर के रंग के साथ खूब मेल खा रहा था।

× × ×

बड़ी देर तक लालमोहन न आया, तो नंददास बेचैन हो उठा। और, जब वह उसके पास पहुँचा, तो एकदम बरस पड़ा! लेकिन जब उसने लालमोहन के साथ चम्पा को देखा, तो चौंक उठा—"यह कौन हैं ?"—उसने पूछा।

"मेरी पत्नी!"—लालमोहन बोला।

"पत्नी!"—नंददास एकदम चौंक पड़ा।

"अरे, हाँ, हाँ!"—लालमोहन बोला—"और, तुम मेरी पत्नी के भाई हो। तुम हमें पहुँचाने के लिए आये हो। यह है तुम्हारा प्लेटफार्म-टिकट। जो टिकट तुमने खरीदा है, वह मुझे दे दो।"

उसने झटपट एक कुली को बुला लिया और उसके सिर पर सामान रखवा कर चम्पा और नंददास के साथ कस्टम-कार्यालय के स्त्री-विभाग की ओर चल दिया।

वहाँ एक छोटा-सा 'क्यू' लगा था। एक बाईस-वर्षीय सुंदर युवती सामान की जाँच कर रही थी।

"आगे जाकर, उसे अपना सामान दिखा दो।"—लालमोहन ने चम्पा को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगे की ओर धकेल कर कहा।

चम्पा ने एक बार लालमोहन की ओर देखा और कस्टम-अधिकारी के पास जा पहुँची। स्त्री कस्टम-अधिकारी ने चम्पा को देख कर, सामान की परीक्षा आरम्भ कर दी—"तुम्हारे पास तो केवल दो टिकट हैं और सामान इतना है! बक्स कितने हैं? ये चारों?"

"हाँ!"—चम्पा ने कहा।

"कोइ गैर-कानूनी वस्तु तो नहीं है?"

"खुद ही देख लो न!"—कह कर चम्पा मुस्करायी।

किंतु स्त्री कस्टम-अधिकारी भी यों ही मान जाने वाली न थी—"क्यों नहीं, मैं उन्हें अवश्य देखूँगी। खोलो उन्हें। चाबियाँ कहाँ हैं?"

चम्पा और लालमोहन के हृदय धड़कने लगे। अगर स्त्री कस्टम-अधिकारी ने हर वस्तु ध्यानपूर्वक देखी, तो उनका बचना असम्भव था।

लालमोहन ने अपनी जेब से चाबी निकाल कर चम्पा को थमा दी और कहा—"खोलो उसे। मैंने पहले ही कहा था कि, इतना बड़ा ट्रंक ले जाकर क्या करोगी? परंतु मेरी बातों पर न तो तुमने और न तुम्हारी माँ ने, किसी ने भी तो ध्यान नहीं दिया।"

फिर वह स्त्री कस्टम-अधिकारी की ओर मुड़ा—"यह एक भी चीज पीछे नहीं छोड़ना चाहती। क्या समझीं? और मेरी सास की भी अक्ल मारी गयी है। उन्होंने बिछौने, कपड़े और न-जाने क्या भर दिया है—जैसे किसी और लड़की के कभी बालक हुआ ही नहीं।"

सुन कर, केवल चम्पा ही नहीं, वह स्त्री कस्टम-अधिकारी भी लजा गयी। उसके मस्तक पर पसीने की बूँदें छलक आयीं। उसने उन्हें रुमाल से पोंछा या अपनी मुस्कराहट छिपाने का यत्न किया—कौन जाने?

लालमोहन ने चम्पा को एक ओर हटा दिया—"छोड़ो, इसे मुझे खोलने दो! ऐसी दशा में यात्रा करने से तुम्हें क्या मिल गया! बड़ी आसानी से अपनी माँ के साथ रह सकती थीं। अभी से कितनी पीली पड़ गयी हो और अभी कितनी दूर और जाना है।"

"आप उस ट्रंक को न खोलें!"—स्त्री कस्टम-अधिकारी ने कहा—"और वस्तुएँ दिखा दीजिये।"

उसने सूटकेसों में बस झाँक कर और बिस्तर को अपनी नरम उँगलियों से दबा कर कहा—"ठीक है। आप जा सकते हैं!"

भीड़ के रेले में वे प्लेटफार्म नं० ६ पर पहुँच गये। किसी ने उनके टिकट भी न देखे। "हे भगवान्! कितनी भीड़ है!"—लालमोहन ने नंददास से कहा—"हर डिब्बा ठसाठस भरा हुआ है। अंदर कैसे घुसें? तुम कुली के साथ आगे जाओ। शायद इंजिन के पास वाले डिब्बे में स्थान मिल जाये। मैं भी अभी आता हूँ।"

दूसरी ओर एक मालगाड़ी खड़ी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लमोहन ने उधर जाकर चम्पा से कहा—"जल्दी करो, समय बहुत कम है। उस ओर जाकर साड़ी बदल डालो और लाकर मुझे दे दो। और हाँ, तुम क्या लोगी?"

चम्पा चुपचाप उसकी ओर ताकती रही! कुछ रुक कर बोली—"आपने मेरे इच्छानुसार देने का वचन दिया था।"

"बिल्कुल। क्या चाहिए तुम्हें?"

"मुझे क्या चाहिए?"—चम्पा ने अपनी सलज्ज ग्रीवा नीचे झुका ली।

लालमोहन थोड़ी देर तक सोच-विचार करता रहा और फिर उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाल कर गिने और चम्पा की हथेली पर रख दिये—"देखो, मैं तुम्हें सोलह आने दे रहा हूँ— कम नहीं हैं। अब झगड़ना नहीं! ऐं, समझी?"

लालमोहन फिर नहीं रुका। वह इंजिन की ओर दौड़ पड़ा।

"जल्दी करो!"—नंददास चीखा—"अंदर आ जाओ। मैंने तुम्हारे लिए स्थान रख छोड़ा है। कुली को डेढ़ रुपया देना पड़ा था।"

उसने सामान का निरीक्षण करके चैन की साँस ली और फिर जेब से दो सिगरेटें निकाल लीं। एक नंददास को देकर उसने कहा—"मुझको आशा नहीं थी कि, आज गाड़ी पकड़ लूँगा।"

अब आखिरी घंटी बज रही थी। वह जवान जोड़ा भी वहीं सामने आ बैठा था।

"अरे, आप भी इसी डिब्बे में हैं।"—लालमोहन ने बात चलायी।

"तो आप भी आ ही गये!"—युवक ने मुस्करा कर कहा—"किसके साथ आये?"

"और किसके साथ आता?"—लालमोहन ने कहा—"अपनी पत्नी के साथ।"

"पत्नी के साथ!"—वह युवक चक्कर में पड़ गया।

उसकी पत्नी ने भी लालमोहन को घूरा। शायद उसके मन में जिज्ञासा जाग उठी थी। वह सुंदर भी खूब थी। उसके माथे पर सिंदूर का टीका भी लगा हुआ था।

लालमोहन ने एक धक्का-सा अनुभव किया। चम्पा ने भी ऐसा ही टीका लगाया था। वह भी इससे कम सुंदर न थी!

युवक ने आगे कहा—"मेरा मतलब कुछ और नहीं था; लेकिन आपकी पत्नी..!"

किंतु लालमोहन ने कुछ सुना नहीं। जो नया स्मरण उसकी समस्त चेतना को झकझोर गया था— सामान ले जाने की समस्या के हल के पीछे वह, जो उपेक्षा घड़ चुका था, वह बिच्छू का डंक बन कर उसे संताप देने लगी थी! उसे खयाल आया, जैसे वह कुछ खो बैठा है। चम्पा का गम्भीर-उदात चेहरा उसकी आँखों के सामने नाचने लगा। क्या क्षण-भर का वह छद्म-संयोग अविनाशी संयोग नहीं बन सकता था—और, उसने बाहर झाँककर देखा—दूर प्लैटफार्म के पार तक! इंजिन धुँआ उगल रहा था। कोयले का एक मोटा-सा कण आकर उसकी आँख में गिर गया। वह आँखें मसलने लगा। गाड़ी की रफ्तार निरंतर तेज हो रही थी!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगे की ओर धकेल कर कहा।

चम्पा ने एक बार लालमोहन की ओर देखा और कस्टम-अधिकारी के पास जा पहुँची। स्त्री कस्टम-अधिकारी ने चम्पा को देख कर, सामान की परीक्षा आरम्भ कर दी—"तुम्हारे पास तो केवल दो टिकट हैं और सामान इतना है! बक्स कितने हैं? ये चारों?"

"हाँ!"—चम्पा ने कहा।

"कोइ गैर-कानूनी वस्तु तो नहीं है?"

"खुद ही देख लो न!"—कह कर चम्पा मुस्करायी।

किंतु स्त्री कस्टम-अधिकारी भी यों ही मान जाने वाली न थी—"क्यों नहीं, मैं उन्हें अवश्य देखूँगी। खोलो उन्हें। चाबियाँ कहाँ हैं?"

चम्पा और लालमोहन के हृदय धड़कने लगे। अगर स्त्री कस्टम-अधिकारी ने हर वस्तु ध्यानपूर्वक देखी, तो उनका बचना असम्भव था।

लालमोहन ने अपनी जेब से चाबी निकाल कर चम्पा को थमा दी और कहा—"खोलो उसे। मैंने पहले ही कहा था कि, इतना बड़ा ट्रंक ले जाकर क्या करोगी? परंतु मेरी बातों पर न तो तुमने और न तुम्हारी माँ ने, किसी ने भी तो ध्यान नहीं दिया।"

फिर वह स्त्री कस्टम-अधिकारी की ओर मुड़ा—"यह एक भी चीज पीछे नहीं छोड़ना चाहती। क्या समझीं? और मेरी सास की भी अक्ल मारी गयी है। उन्होंने बिछौने, कपड़े और न-जाने क्या भर दिया है—जैसे किसी और लड़की के कभी बालक हुआ ही नहीं।"

सुन कर, केवल चम्पा ही नहीं, वह स्त्री कस्टम-अधिकारी भी लजा गयी। उसके मस्तक पर पसीने की बूँदें छलक आयीं। उसने उन्हें रुमाल से पोंछा या अपनी मुस्कराहट छिपाने का यत्न किया—कौन जाने?

लालमोहन ने चम्पा को एक ओर हटा दिया—"छोड़ो, इसे मुझे खोलने दो! ऐसी दशा में यात्रा करने से तुम्हें क्या मिल गया! बड़ी आसानी से अपनी माँ के साथ रह सकती थीं। अभी से कितनी पीली पड़ गयी हो और अभी कितनी दूर और जाना है।"

"आप उस ट्रंक को न खोलें!"—स्त्री कस्टम-अधिकारी ने कहा—"और वस्तुएँ दिखा दीजिये।"

उसने सूटकेसों में बस झाँक कर और बिस्तर को अपनी नरम उँगलियों से दबा कर कहा—"ठीक है। आप जा सकते हैं!"

भीड़ के रेले में वे प्लेटफार्म नं० ६ पर पहुँच गये। किसी ने उनके टिकट भी न देखे। "हे भगवान्! कितनी भीड़ है!"—लालमोहन ने नंददास से कहा—"हर डिब्बा ठसाठस भरा हुआ है। अंदर कैसे घुसें? तुम कुली के साथ आगे जाओ। शायद इंजिन के पास वाले डिब्बे में स्थान मिल जाये। मैं भी अभी आता हूँ।"

दूसरी ओर एक मालगाड़ी खड़ी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लालमोहन ने उधर जाकर चम्पा से कहा—"जल्दी करो, समय बहुत कम है। उस ओर जाकर साड़ी बदल डालो और लाकर मुझे दे दो। और हाँ, तुम क्या लोगी?"

चम्पा चुपचाप उसकी ओर ताकती रही! कुछ रुक कर बोली—"आपने मेरे इच्छानुसार देने का वचन दिया था।"

"बिल्कुल। क्या चाहिए तुम्हें?"

"मुझे क्या चाहिए?"—चम्पा ने अपनी सलज्ज ग्रीवा नीचे झुका ली।

लालमोहन थोड़ी देर तक सोच-विचार करता रहा और फिर उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाल कर गिने और चम्पा की हथेली पर रख दिये—"देखो, मैं तुम्हें सोलह आने दे रहा हूँ— कम नहीं हैं। अब झगड़ना नहीं! ऐं, समझी?"

लालमोहन फिर नहीं रुका। वह इंजिन की ओर दौड़ पड़ा।

"जल्दी करो!"—नंददास चीखा—"अंदर आ जाओ। मैंने तुम्हारे लिए स्थान रख छोड़ा है। कुली को डेढ़ रुपया देना पड़ा था।"

उसने सामान का निरीक्षण करके चैन की साँस ली और फिर जेब से दो सिगरेटें निकाल लीं। एक नंददास को देकर उसने कहा—"मुझको आशा नहीं थी कि, आज गाड़ी पकड़ लूँगा।"

अब आखिरी घंटी बज रही थी। वह जवान जोड़ा भी वहीं सामने आ बैठा था।

"अरे, आप भी इसी डिब्बे में हैं।"—लालमोहन ने बात चलायी।

"तो आप भी आ ही गये!"—युवक ने मुस्करा कर कहा—"किसके साथ आये?"

"और किसके साथ आता?"—लालमोहन ने कहा—"अपनी पत्नी के साथ।"

"पत्नी के साथ!"—वह युवक चक्कर में पड़ गया।

उसकी पत्नी ने भी लालमोहन को घूरा। शायद उसके मन में जिज्ञासा जाग उठी थी। वह सुंदर भी खूब थी। उसके माथे पर सिंदूर का टीका भी लगा हुआ था।

लालमोहन ने एक धक्का-सा अनुभव किया। चम्पा ने भी ऐसा ही टीका लगाया था। वह भी इससे कम सुंदर न थी!

युवक ने आगे कहा—"मेरा मतलब कुछ और नहीं था; लेकिन आपकी पत्नी..!"

किंतु लालमोहन ने कुछ सुना नहीं। जो नया स्मरण उसकी समस्त चेतना को झकझोर गया था— सामान ले जाने की समस्या के हल के पीछे वह, जो उपेक्षा घड़ चुका था, वह बिच्छू का डंक बन कर उसे संताप देने लगी थी! उसे खयाल आया, जैसे वह कुछ खो बैठा है। चम्पा का गम्भीर-उदात चेहरा उसकी आँखों के सामने नाचने लगा। क्या क्षण-भर का वह छद्म-संयोग अविनाशी संयोग नहीं बन सकता था—और, उसने बाहर झाँककर देखा—दूर प्लैटफार्म के पार तक! इंजिन धुँआ उगल रहा था। कोयले का एक मोटा-सा कण आकर उसकी आँख में गिर गया। वह आँखें मसलने लगा। गाड़ी की रफ्तार निरंतर तेज हो रही थी!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं भूलेंगे

'अखिलन' की तमिल-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

"विख्यात वैज्ञानिक ..... द्वारा आत्महत्या !"

उस दिन प्रायः समग्र संसार के समाचारपत्रों का मुख्य शीर्षक यही था। सर्वत्र इसी समाचार की चर्चा थी। इतना बड़ा वैज्ञानिक, जिसके सामने विज्ञान रहस्य के आवरण से मुक्त था, आत्महत्या कर ले; यह बात सहसा विश्वास करने-योग्य निश्चय ही नहीं थी; पर जब खोज-ढूँढ़ कर सब लोग हार गये, तब विश्वास करने के सिवा और भला चारा ही क्या था ?

वैज्ञानिक अपने निवासस्थान पर अपना आखिरी पत्र छोड़ गया था, जो वस्तु-स्थिति को प्रकट करता था। उसमें लिखा था—"मैंने समुद्र में डूब कर आत्महत्या करने का निश्चय किया है। आज संसार मेरे सारे परिश्रम के फल को ध्वंसात्मक उपकरण के रूप में प्रयुक्त कर रहा है। अपने परिश्रम की यह निष्फलता मुझे कदापि सह्य नहीं है। अतः मैं इस जगत् से सदा के लिए विदा लेता हूँ !"

वैज्ञानिक का अपना कहने-योग्य कोई नहीं था। कुछ मित्र थे अवश्य; पर इस सम्बंध में पूर्णतः अनभिज्ञ ! जो परिचारिका उसका भोजन बनाती थी, उससे मात्र इतना ही ज्ञात हुआ कि, वह प्रायः आत्म-हत्या करने की ही बातें किया करता था। जिस समुद्र-तटवर्ती गाँव में वह रहता था, उसके निवासियों के दुःख की सीमा नहीं थी; पर उस देश की सरकार के सामने कुछ और ही परेशानी आ गयी थी। वैज्ञानिक किसी दूसरे देश में तो नहीं चला गया ? ऐसा होना वस्तुतः उस देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण था; क्योंकि वह एक महान् वैज्ञानिक था और आगामी विश्वयुद्ध के लिए उसकी सेवाएँ अत्यधिक महत्व रखती थीं। अतः उसने यथासम्भव देश-देश में गुप्तचर भेजे; पर निराशा ही हाथ लगी और यह बात तय पा गयी कि, वैज्ञानिक मर गया।

लेकिन वास्तव में, वैज्ञानिक जीवित था— उसने आत्महत्या का प्रयत्न तक नहीं किया था। वह उस गाँव से लगभग १,००० मील दूरस्थ एक ऐसे छोटे-से द्वीप में, अपने 'मोटर-बोट' से पहुँच गया था, जिसका सभ्य-जगत् से लेशमात्र भी सम्बंध नहीं था। वहाँ केवल जंगली लोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निवास करते थे। मुश्किल से दो सौ की आबादी होगी। उस द्वीप से वह पहली बार तब परिचित हुआ था, जब उसका विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर वहाँ गिर गया था और वहाँ के निवासियों ने यत्नपूर्वक उसके अपने देश जाने का प्रबंध कर दिया था। दूसरी बार, वैज्ञानिक स्वेच्छा से वहाँ कुछ दिनों के लिए भ्रमणार्थ गया था। इस प्रकार द्वीप-निवासियों के नेता से भी उसका अच्छा परिचय हो गया था। इस बार द्वीप-निवासियों ने वृद्ध वैज्ञानिक को अतिथि नहीं, आत्मीय मान कर ग्रहण किया। नया साथी पा, उन्होंने खूब राग-रंग मनाया।

वैज्ञानिक उस द्वीप की शोभा-श्री को देखते न अघाता। वनश्री की विभूतियाँ देख कर उसका हृदय गद्‌गद् हो उठता। प्रकृति तो मानो वहाँ साक्षात् नृत्य करती थीं। फूल-फूल में उनकी मुस्कराहट प्रकट होती थी। झरनों से झर-झर गिरते पानी में उनकी चपलता की स्पष्ट झाँकी मिलती थी। और, फिर वहाँ के निवासी— हर्ष-आह्लाद की जीवंत मूर्तियाँ! चाँदनी रात में स्त्री-पुरुषों का उल्लासमय नृत्य देख कर वैज्ञानिक का मन आनंद-विभोर हो उठता। उसे खेद होता कि, अब तक वह इस मोदमयी दुनिया से भला अलग क्यों रहा?

पहुँचने के कुछेक दिन बाद ही एक दिन वैज्ञानिक वहाँ के निवासियों की सहायता से उन यंत्रों को पहाड़ की चोटी पर ले गया, जिन्हें वह अपने साथ लाय था। वहाँ उसने कुछ यंत्रों को इस प्रकार बैठाया, ताकि वे पास में झर रहे झरने की धारा से संचालित हो सकें। लम्बे-लम्बे तारों का एक बाड़ा भी उसने तैयार किया। यह सब देख कर द्वीप के शासक ने उससे पूछा—"यह क्या कर रहे हैं आप? और, भला क्यों?"

वैज्ञानिक ने उत्तर दिया—"बाहरी संसार से मैं आपको परिचित कराऊँगा। कुछ दिनों के अंदर ही आप चलती-फिरती तसवीरें देखेंगे— गान-वाद्य भी सुनेंगे।"

सुन कर नेता बहुत खुश हुआ। दूसरे लोगों की भी खुशी का ठिकाना न रहा। वे उस दिन की बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा करने लगे, जब वे हँसती-बोलती-गाती तसवीरें देखते। लेकिन नेता के लड़के को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। उसे वृद्ध वैज्ञानिक की गतिविधियों पर संदेह था। उसने एक दिन कह भी डाला— "आपकी बातों पर मैं कैसे विश्वास करूँ? मुझे तो ऐसा लगता है कि, आप घेराबंदी करके यहाँ एक शिविर तैयार कर रहे हैं।"

नेता का पुत्र— भावी नेता। उसका संदेह व्यर्थ तो नहीं हो सकता था। अतः वैज्ञानिक चिंतित हो गया। वहाँ के निवासी केवल दो बातें जानते थे— जीवन और मृत्यु। उन्हें विशेष-कुछ समझाना फिजूल था। अतः वैज्ञानिक ने उत्तर दिया— "तुम्हारा संदेह अकारण नहीं है। किंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में तुम्हें वचन देता हूँ कि, जिस किसी दिन मेरे कारण तुम लोगों पर विपत्ति आये, उसी दिन तुम मेरे प्राण ले लेना, बस !"

युवक ने वैज्ञानिक की बात मान ली और इस घटना के सात दिन बाद ही वैज्ञानिक ने द्वीप-निवासियों को चलती-फिरती तसवीरें दिखायीं—गान और नाच देख कर वे खुशी से झूम उठे।

एक दिन अकस्मात् वैज्ञानिक ने नेता से घोषणा करवा कर सभी निवासियों को पहाड़ी बाड़े में एकत्र करवाया और कहा—"बड़ी भीषण वर्षा, बिजली, तूफान, भूकम्प—सब एक साथ आ रहे हैं। एक क्षण भी बाहर रहने का अवसर नहीं है—तुरत सब लोग गुफा के अंदर चले जाओ! सबने आज्ञा-पालन किया—वैज्ञानिक भी अंदर जाकर खड़ा हो गया।

कुछ ही क्षणों के बाद, कर्णभेदी गर्जन आरम्भ हुआ। आँखों को चकाचौंध करने-वाली बिजलियाँ चमकने लगीं। लाल, पीली, नीली. . . .सतरंगी अग्निशिखाएँ कुछ देर तक आँखों के सामने उठती रहीं और फिर बुझ गयीं। तदुपरांत आकाश से मिट्टी की वर्षा शुरू हुई। पृथ्वी थर-थर काँप उठी, भीषण तूफान उठा, समुद्र में प्रचंड ज्वार उठने लगे, वृक्षों के टूटने और गिरने का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। महाप्रलय आया था !

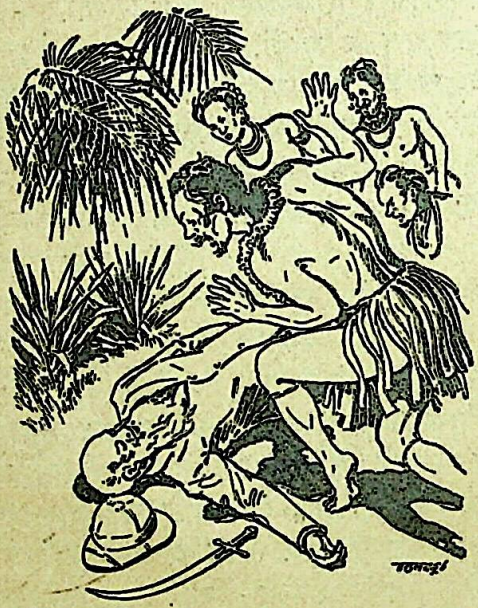

. . . . .छाती को चीरती हुई नेता-पुत्र की तलवार निकल गयी। वैज्ञानिक वहीं धरती पर लहू-लुहान होकर गिर पड़ा।

अंत में, तूफान शांत हो गया। वैज्ञानिक ने द्वीप-निवासियों से कहा—"विपत्ति-काल समाप्त हो गया ! अब हम बाहर निकल सकते हैं !" और, वैज्ञानिक सबसे आगे बाहर निकल आया। उसके पीछे-पीछे निकला नेता-पुत्र, जिसकी आँखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। वैज्ञानिक ने बाहर निकल कर चारों ओर एक दृष्टि डाली और गहरा निःश्वास छोड़ा। तभी नेता-पुत्र की कर्कश वाणी गूँज उठी—"वृद्ध, यह सब तेरी शैतानी का परिणाम था। अतः तुम्हारे वचन के अनुसार . . . . . ." और, वैज्ञानिक की छाती को चीरती हुई नेता-पुत्र की तलवार निकल गयी। वैज्ञानिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहीं धरती पर लहू-लुहान होकर गिर पड़ा। उपस्थित समुदाय में भारी हलचल मच गयी। नेता भीड़ को चीरता हुआ वैज्ञानिक के पास पहुँचा।

वृद्ध वैज्ञानिक के अधरों पर एक असाधारण मुस्कराहट विहँस रही थी, मानो पीड़ा से वह सर्वथा मुक्त था। उसने इशारे से नेता को अपने पास बैठने को कहा; फिर धीरे-धीरे कहने लगा—"...नये जगत् के स्रष्टाओ, तुम्हारा अभिनंदन!...आज इस संसार में तुम लोगों के— इस द्वीप के निवासियों के— अतिरिक्त कोई प्राणी जीवित नहीं है। संसार के सभी राष्ट्र अपनी परस्पर आणविक टक्कर में पिस कर मटियामेट हो चुके हैं! उनकी इस विनाश-क्रीड़ा में एक-एक कर सभी प्राणी अपना जीवन खो चुके हैं। पृथ्वी से मानव-जाति का लोप न हो जाये, इसीलिए मैंने इस द्वीप में आकर तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न किया था और नियति ने मेरे प्रयत्नों को सार्थक भी किया। अब इस संसार में मेरे-जैसे वैज्ञानिकों की आवश्यकता नहीं है—आवश्यकता है तुम-जैसे मनुष्यों की। अतः मैं भी तुमसे विदा लेता हूँ। पर अंतिम बार एक अनुरोध किये जाता हूँ—शांति का दामन कभी न छोड़ना और मुझ पर तुम्हारे द्वारा किया गया प्रहार तुम्हारे हाथों अंतिम हिंसा साबित हो।....."

सुन कर नेता-पुत्र का सिर लज्जा से झुक गया—उसके हृदय में ग्लानि की तरंगें भीषण रूप से उद्वेलित होने लगीं। उन्हें सहन कर सकने की क्षमता उसमें शेष न रही और उसने तत्क्षण वैज्ञानिक के चरणों में गिर कर साश्रु-नयन, रुद्ध स्वर में कहा—"महात्मन्, आपके वचनों को हम कभी नहीं भूलेंगे। विश्वास कीजिये!"

लेकिन तब तक वैज्ञानिक की पुतलियाँ उलट चुकी थीं।

★

काव्य-युद्ध

अरबों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, उनकी भाषा। प्रत्येक अरब, 'ऊँट' अथवा 'तलवार' के लिए कम-से-कम सौ पर्यायवाची शब्द जानता है। बचपन से ही उसे सुंदर-सुंदर शब्दों का प्रयोग सिखाया जाता है। एक साधारण अरब महिला भी गलत बोलने के लिए अपने बच्चे को कड़ा दंड देती है। अरब में प्रत्येक कबीले का अपना कवि होता है, जो कबीले के साथ हर लड़ाई में जाता है। जब सामने, दूसरे कबीले के लोग खड़े हो जाते हैं, तब दोनों कबीले के कवि अपनी-अपनी पंक्ति के आगे आ जाते हैं। फिर वे अपने कबीले की प्रशंसा और दूसरे कबीले की निंदा के गीत गाते हैं। जिस कबीले का कवि इस 'काव्य-युद्ध' में पराजित हो जाता है, वह अपनी हार मान, चुपचाप उल्टे पाँव लौट जाता है— न किसी अस्त्र का प्रयोग होता है और न कोई खून-खराबी!

—'व्यंग्य-मंजूषा' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टिनेसी विलियम्स की एक अमरीकी कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

मेरी मकान-मालकिन ओल्गा केद्रोवा ने मुझे एक डलिया पके टमाटर दिये हैं। ये उसी बाड़ी के फल हैं, जिसके समीप लेटी वह केलिफोर्निया की सफेद और नीली दोपहरी की धूप ले रही है।

मैंने कहा—"कृपालु ओल्गा! इतने सारे टमाटर खाने में तो मुझे पूरा एक महीना लग जायेगा।"

लेकिन वह अपने स्वाभाविक चापल्य में तरंगित-सी बोली—"क्या बात करते हो, टमाटर तुमने खाये कहाँ हैं? चखने के बाद, पूरे चट न कर गये, तो मेरा नाम ओल्गा नहीं।". और, ओल्गा का दावा सच निकला— मैं सब टमाटर खा गया।

× × ×

पाँच बजे का समय है। उस दिन भी यही वक्त था, जब कि ओल्गा ने मुझे टमाटर दिये थे और जरा देखिये तो, दस वर्ष पुरानी उस बात को मैं आज 'वर्तमान काल में' लिपिबद्ध कर रहा हूँ।

अब, चीनी मिट्टी के हल्के-नीले प्याले में कुछ ही टमाटर बचे हैं; लेकिन उनकी मिठास और ताजगी वैसी ही है; क्योंकि उनके स्वाद की जड़ें प्याले की सीमा में न होकर, उस बाड़ी में हैं, जिसके पास ओल्गा केद्रोवा लेटी है। और, बाड़ी ऐसी लगती है, जैसे फसल देते रहने की उसकी परम्परा कभी खत्म नहीं होगी!

ओल्गा ने नौकरी से अवकाश ले लिया है। आजकल वह बाड़ी के पास, अपने होटल के कमरे में, एक फटे-पुराने गद्दे पर दोपहरी-भर विश्राम करती है।

आज शनिवार है। पूरी दोपहर तरुण प्रेमियों के जोड़े सांता मोनिका की गलियों में, एकांत की खोज में, घूम रहे हैं। पुरुषों के एक हाथ में बैग और दूसरे में युवती की गुलाबी बाँह! और, ये जोड़े इस प्रकार चल रहे हैं, मानो घुटनों पानी में से जा रहे हैं। इस साल सांता मोनिका में ऐसे कई जोड़ों की भीड़ है। इनकी अंत हीन पंक्तियाँ आँखों के सामने से जा रही हैं। साँझ से लेकर रात के दो-तीन बजे तक नाच होते हैं और भोर के उदय के साथ ही फिर वही उदासी का आलम!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओल्गा इस जीवन और इसके मूल में अजस्र बहनेवाले रस-स्रोतों से परिचित है—सांता मोनिका में उसने मानव-जीवन का कौन-सा रहस्य उद्घाटित होते नहीं देखा है? शायद इसीलिए ओल्गा आज इतनी भाव-विहीन, मोह-विहीन एवं मुनियों-सी अंतर्मुखी होकर बैठी है। चाहे जिधर से देखिये, वह मिस्र की पुरानी कब्रों की अक्षय-अनंत, ममी-जैसी लगती है। मगर ओल्गा मजदूरों का अखबार 'डेली वर्कर' नियमित पढ़ती है। फिर उस पर लाल चिह्न लगा कर उसे मेरे दरवाजे में ठूँस जाती है और मैं बिना पढ़े ही उसे लौटा देता हूँ। अतः उसने घोषणा कर दी है कि, मैं पूँजी का दास हूँ और मेरा नाम 'टेनेसी' नहीं, 'टेनिस' है! जब बहार के दिनों में, मैं पहले-पहल यहाँ आया और बात-चीत के दौरान में मैंने बताया कि, मैं 'मेट्रो' का एक लेखक हूँ, तो वह बोली—"हाँ-हाँ, मैं तुम किराये के गणेशों को खूब जानती हूँ!"

मगर इतना सब होते हुए भी उसकी आस्था मुझमें कम नहीं है। मेरे बिना उसे प्रायः चैन नहीं आता — हमारी बातें जैसे खत्म ही नहीं होतीं! कभी-कभी तो मुझे स्नानगृह से भी उसकी गप्पें सुननी पड़ जाती हैं।

यह एक ऐसा मकान है, जो बिछौनों से ठसाठस भरा हुआ है और मुझे लगता है कि, ओल्गा केद्रोवा कभी-न-कभी उन सबमें लेटी है। मैं गलत हो सकता हूँ; किंतु ओल्गा दरअसल उन जीवों में से है, जो सीमित रहना नहीं जानते, जो नदी के बजाय सदैव बाढ़ ही बने रहते हैं।

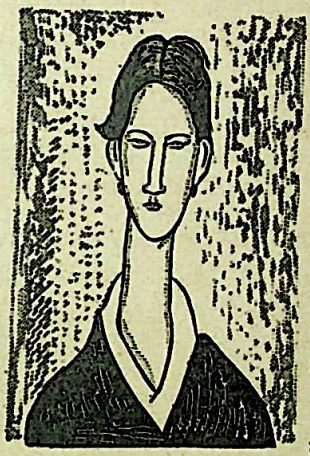

उत्कंठा

[चित्र: हंगेरियन चित्रकार बुलेस्की के चित्र की रेखानुकृति]

भावुकता नहीं, चेतना का तकाजा कहिये कि, बीमार आदमियों को हमारी सहानुभूति मिलनी चाहिए। ओल्गा का पति अर्नी बीमार है; लेकिन न-जाने क्यों मुझे इसका दुःख नहीं है। गलती उसकी ही है; क्योंकि वह स्वयं ही इस आँधी के साथ बँध गया है!

...जिस समय अर्नी होटल में औरतों का काम करता है, उस समय सीढ़ियों पर बैठी ओल्गा सुहानी धूप को अपने शरीर में ऐसे सोखती रहती है, जैसे नया ब्लाटिंग स्याही को सोख जाता है! इन सीढ़ियों से वह सारे जमाने को कोसती रहती है और भाव-शून्य दृष्टि से मोनिका के समुद्र-तट को ताकती रहती है।

कभी-कभी मुझको ऐसा लगता है कि, यह वही होटल है, जिसका उल्लेख चेखाव ने अपनी कृतियों में किया है और जादू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के जरिये यह क्रिमिया के किनारे से उड़ा कर यहाँ खड़ा कर दिया गया है चेखाव की कहानी का लेखक त्रिगोरिन यहीं मदाम आर्केदीना से परिचित हुआ है और यहीं उन्होंने कई सप्ताह एक साथ बिताये हैं!

वसंतागमन की, हीरे-सी चमकदार, एक सुबह की बात है। ओल्गा ने ऊपरी मंजिल के एक कमरे में झाँका। हाल ही में एक सैनिक ने इस कमरे को हफ्ते-भर के लिए किराये पर लिया था। उस सैनिक के साथ उसकी पत्नी भी थीं। ओल्गा ने देखा, पलंग पर बिछा हुआ गद्दा जगह-जगह फट गया है। उसकी रुई बिखर गयी है। ओल्गा का कलेजा धक् रह गया। साँस जहाँ-की-तहाँ बैठ गयी! यदि ऐसे ही ग्राहक आते रहे, तो निश्चय ही उसका एक-न-एक दिन दिवाला निकल जायेगा!

ओल्गा बिछौने तक जाती है और गद्दे को देखने के लिए चादर को झटक कर उठाती है—"हे भगवान्। हमारा गद्दा आज इस हालत में!"

"बहुत बुरी बात है।"—अर्नी ऐसे अवसर पर भला क्यों चुप रहता।

फिर दोनों पति-पत्नी मिल कर उस फटे गद्दे को बाहर लाते हैं।

इस प्रकार ओल्गा सागर और तट के ऊपर लहरानेवाली उस सुबह में कदम बाहर रखती है। ओल्गा ने गदेले के दोनों छोर मिला दिये हैं और उसे लम्बी तह में मोड़ लिया है। 'हूँ'— वह स्वयं से कहती है, उसे इस प्रलम्बाकार गद्दे का स्पर्श सुहाना लग रहा है और वह उसके भार में रस पा रही है। गद्दे के भार से वह पीछे झुक जाती है और अब साँस भारी हो गयी है और लगता है कि, उसकी शक्ति जवाब दे रही है।

और, सुबह की वह ताजी-ताजी बयार उसके पच्चीस बरस पुराने वक्त को नया जीवन दे जाती है— पच्चीस साल पहले का यह अशांत स्वप्न अभी तक जीवित है, स्वयं ओल्गा भी परख कर कई बार विस्मित हुई है। और, शायद इसीलिए वह मुझ से प्रायः कहती है—"जिसे तुम साहित्य कहते हो, वह छल है, निर्मम छाया है, जो दिल में रस-स्रोत बन कर बैठा है। जिसकी छाया में समय भी एक क्षण आगे नहीं बढ़ सकता, उसे तुम कागज पर अमर करने का दावा करते हो। मानती हूँ, फूल का चित्र तुम बना दोगे; मगर उसको जीवन देने के लिए डाली के दिल का प्राण-रस कहाँ से लाओगे!" ...मैं ओल्गा के इस ताने से सदैव परास्त हुआ हूँ। हाँ, तो ओल्गा एक नौसैनिक के बारे में सोचती है, जिसका पालन केन्सास के अनाथालय में हुआ था और जो उसे 'अम्मी' कहता है। पच्चीस बरस बाद, उसकी याद वेग से उभर आयी है और स्मृति के इस संक्रमण में वह उस बड़े गद्दे को अपनी पकड़ में मजबूती से जकड़े खड़ी है। गद्दे का भार उसे महसूस ही नहीं हो रहा है। प्रिय क्षणों के इस जादू को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने जीवन में कितनी बार देखा है। वह दूर-दूर तक नजर डालती है और अपने सपनों में ऐसी खो जाती है, जैसे वह है ही नहीं— जो है, सब सृष्टि-ही-सृष्टि है।

"..देखो-देखो!"—अर्नी कहता है—"तुम्हें चोट लग जायेगी।" "नहीं लगेगी।" —ओल्गा का जैसे स्वप्न टूट गया। अर्नी विस्मित-सा अपनी पत्नी को देखता है और उसकी मदद करने दौड़ता है; मगर फिर रुक जाता है—सोचता है, ओल्गा इस समय ओल्गा नहीं है, वह नारी है, सृष्टि की चिर-मुग्धा पहेली— उसकी थाह पाने के प्रयत्न में कौन नहीं हारा है! ओल्गा उसकी ओर एक तीक्ष्ण कटाक्ष से देखती है।

अक्सर ऐसे मौकों पर ओल्गा जान लेती है कि, उसका पंगु पति उसके बारे में क्या सोचता है? ओल्गा और अर्नी का सम्बंध न मैत्री का है, न शत्रुता का। मैंने महीनों इस पर विचार किया है, देखा-परखा है; किंतु जैसे ओल्गा अजीब है, वैसे ही यह सम्बंध भी अजीब है। इस नारी को मैंने अपनी प्रचंड घृणा का आघात भी दिया है; किंतु उसके सामने कभी-कभी मेरा सिर ऐसे झुका है कि, जैसे मैं सदियों से उसके महत्व का पुजारी रहा हूँ। अर्नी के सम्बंध में भी यही मेरे पल्ले पड़ा है। जब कभी अर्नी बीमार पड़ता है, ओल्गा उसकी परिचर्या में अपनी सारी आसक्ति लगा देती है। और, कभी जब वह शराब के नशे में जीने पर ही लुढ़क जाता है, तो ओल्गा उसे पीठ पर उठा कर ले आती है, बिस्तर पर लिटा कर सहलाती है और सुबक-सुबक कर रोती है।

अमेरिका-जैसे चरम स्वतंत्र देश में ओल्गा एक पंगु शराबी के साथ जकड़ी रहे और पूरी आस्था के साथ, मैं इसे आज भी नहीं समझ पा रहा हूँ—पर मेरे भीतर का कला-

तीन देवियाँ

[चित्र : एक प्राचीन इटालियन भित्ति-चित्र की सरल रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार मुझसे चुपके-से मुस्करा कर कह रहा है कि, मनुष्य जहाँ भी है, वह अंततः है मनुष्य ही !

हाँ, तो जीवन इसी प्रकार बीत रहा है और इसकी गति का कोई विरोध नहीं करता है।

केलिफोर्निया का विचित्र मौसम हमारे सिरों के ऊपर होकर, ओल्गा के होटल और उसकी गेलेरी के ऊपर होकर, उछलता हुआ चला जा रहा है। विभिन्न प्राणियों में यह मौसम विभिन्न रूपों में विद्यमान है। यह मेरी समस्त सफलताओं और असफलताओं के ऊपर निकला जा रहा है। बिना भेद और घृणा के यह सबके घाव भरता है।

इन दोपहरियों में से मैंने आज एक और दोपहरी बिता दी है। इसलिए मैं अपनी कुर्सी मेज से दूर हटा रहा हूँ। अपनी रीढ़ को विश्राम देना चाहता हूँ और छाती में जो हल्का दर्द हो रहा है, उस पर अपनी उँगलियाँ मलता हूँ और सोचता हूँ कि, रहने के लिए हमें जो यह सस्ती गठरी मिली है, कैसी विचित्र है। रबर-जैसा यह यंत्र-शरीर अधिक दिन नहीं चलेगा। किंतु इसी में कहीं वह रहस्यमय किरायेदार— आत्मा— है, जो इस सारे भोग्य को भोगता है। और, मैं क्या हूँ! वह आत्मा ही तो हूँ, जो अपने घरौंदे से इतनी दूर इस खिड़की में बैठा-बैठा सब कुछ देख रहा हूँ, सोच रहा हूँ और इस ओल्गा को अपनी आत्मीयता की कसौटी पर कस रहा हूँ।

फिर, खिड़की से मैं ओल्गा की ओर देख रहा हूँ। वह उसी फटे-पुराने गद्दे पर धूप ले रही है। इसी फुर्सत में उसने अपना सारा समय बिताया है और लगता है—युगांतरों से वह यों ही बैठी है और बैल की तरह जीभ से जीवन को चाटती जा रही है।

जीवन अपनी पूर्ति माँगता है। ओल्गा को वह मिली या नहीं, मैं नहीं कह सकता। मन तो कहता है, उसने दिया इतना है, सहा इतना है, तो बटोरा भी कम नहीं होगा। और, जब मैं उसकी उन अतल सागर-सी आँखों में पैठता हूँ, तो लगता है कि, उसके जीवन की प्रत्येक कोंपल अपनी ही आग में झुलस रही है— हर पानी में आग है, धुआँ है और इस आग और धुएँ में वह स्वयं खो गयी है। अजीब है ओल्गा भी! जो सुलग रहा है, उसे बुझाती नहीं है। मेरे खयाल से जन्म-जन्मांतरों से वह इस आग को अपने पेड़ पर पाले हुए है—लेकिन उसने पेड़ को जल भी नहीं जाने दिया है। जहाँ आग है, वहीं वह सीमित है— एक इंच आगे नहीं बढ़ी है। तो क्या ओल्गा इतनी समर्थ है कि, वह इन सबके साथ खेल रही है ?

★

यदि आपके पास कुछ भी करने के लिए समय नहीं है, तो इतना तो आप कर ही सकते हैं कि, आप कुछ नहीं कीजिये ! —चेखव

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महत्वपूर्ण कारण कि

आप

भी उन लाखों लोगों के साथ फोरहन्स टूथपस्ट क्यों इस्तेमाल करें

१ आपके मसूढ़े : फोरहन्स आपको मसूढ़ों को बीमारियों से होनेवाले नुकसान से बचायेगी। खूनी, नर्म, जलनेवाले व कमजोर मसूढ़ों पर यह टूथपेस्ट धीरे-धीरे मलिये। वे जल्द ही पहले जैसे मजबूत व स्वस्थ हो जायेंगे। फोरहन्स ही एकमात्र ऐसी टूथपेस्ट है जिसमें डा. आर. जे. फोरहन्स की पायोरियानाशक खास पौष्टिक दवा मौजूद है।

२ आपका स्वास्थ्य : क्या आप महसूस करते हैं कि मसूढ़ों की बीमारियों का आम स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है? और यदि वहां पीप पड़ जाये तो वे फट जायेंगे व रक्तप्रवाह दूषित हो जायगा? खतरा मत मोल लीजिये – फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कर अपने मसूढ़ों को इन खौफनाक बीमारियों से बचाये रखिये व अपने स्वास्थ्य को भी संभाले रहिये।

३ आप की सांस : बदबूदार सांस के कारण अपने मित्रों को मत खोइये। फोरहन्स टूथपेस्ट लगाने से आपका मुंह बिल्कुल स्वच्छ हो जाता है-मुंह से बदबू भी नहीं आती। यह न भूलिए कि सचमुच के साफ सांस के लिए जीभ व तालु का स्वच्छ रहना भी जरूरी है। थोड़ी-सी फोरहन्स अपनी जीभ पर रखिये व ब्रश या उंगली से उसे हल्के-हल्के साफ कीजिए, फोरहन्स टूथपेस्ट दान्तों में फंसे हुए भोजन के सारे कणों व रोगाणुओं को फौरन हटा देगी।

४ आपकी मुस्कान : स्वस्थ, मजबूत व चमकदार दान्त हजार नियामत हैं। फोरहन्स टूथपेस्ट से आपके दान्त मजबूत व स्वस्थ रहते हैं क्योंकि इसमें मौजूद विशेष औषधि रोगाणुओं का नाश करती है व दान्तों को गलने नहीं देती। फोरहन्स टूथपेस्ट इतनी नर्म है जैसे कि मलाई जो दान्तों के रंग को खराब किये बिना उन्हें प्राकृतिक रूप में चमकाती है।

फोरहन्स
टूथपेस्ट

दन्तचिकित्सक द्वारा
निर्मित टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO.
PRIVATE LTD.

H-112

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM-6

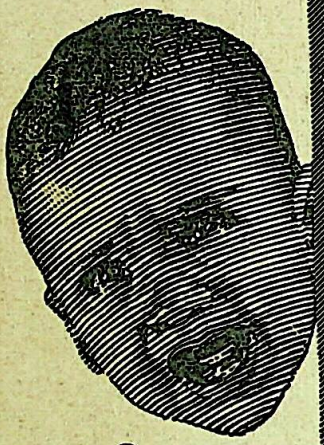

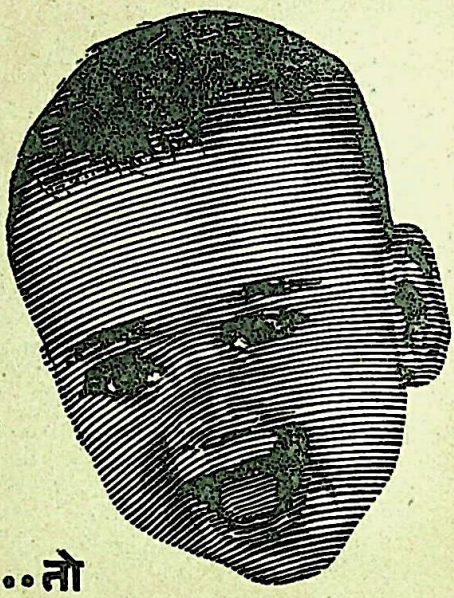

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

...तो
मॅनर्स ग्राइप
मिक्श्चर दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगानें के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण हैं।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कलापूर्णोदयमु' आंध्र की महिमामयी भूमि पर विकसित तेलुगु-काव्योद्यान का एक अक्षय सुरभित काव्य-कुसुम है। यह प्रबंध-काव्य वस्तु-कल्पना तथा विभिन्न घटनाओं की क्रमबद्धता की दृष्टि से अद्वितीय है। अन्य प्राचीन तथा सम-कालीन कवियों की तरह इस काव्य के प्रणेता पिंगल सूरना ने कथावस्तु के लिए पुराणों का सहारा नहीं ढूँढ़ा। अपनी उर्वर प्रतिभा तथा कल्पना-शक्ति के आधार पर उन्होंने एक कल्पित कथा लिखी और उसी की भित्ति पर सम्पूर्ण काव्य-सौध का निर्माण कर दिया। 'नवनीत' के पाठकों के लाभार्थ हम इन पृष्ठों में नाटकीय कथोपकथन से परिपूर्ण इसी काव्य का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर प्रस्तुत कर रहे हैं, रूपांतरकार हैं, बालशौरि रेड्डी।

★

द्वारका नगरी के चतुर्दिक अंबुधि इस प्रकार फैला था और उसकी मचलती ऊर्मियाँ इस प्रकार थीं, मानो पिता अपनी नन्हीं-सी पुत्री को अपनी बाँहों में लेकर बड़े स्नेह से झूला झुला रहा हो। द्वारका की सुंदरता अद्भुत थी—स्वर्णिम सौधों में जड़ी मणियों के प्रकाश में उस नगरी के सम्मुख अमरावती की शोभा भी जैसे फीकी पड़ गयी थी—

नलुगडलंदु गंबमुल नंदगि
रैवत कादि पर्वतं
बुलु पयिराचलुव पोलिकि
निंगियु, नंदु चित्र भं
गुलुपर्चारिचु सौधमणिकूट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलभाषिणी अपनी सहेलियों के साथ झूला झूल रही थी।

संयोग से कलभाषिणी ने आकाश-मार्ग में विचरते इन लोगों को देख लिया था और रम्भा तथा नारद मुनि की बातचीत भी लता-गुल्मों की आड़ में छिपकर सुन ली थी। नलकूबर के अप्रतिम रूप-यौवन को वह मुग्ध-भाव से तब तक निहारती रह गयी थी, जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो गया। नलकूबर का प्रणय प्राप्त करने की इच्छा ने उसके मन में जन्म लिया और अनायास ही यह इच्छा बलवती होती गयी। साथ ही, रम्भा के प्रति उसे ईर्ष्या भी हुई।

ईर्ष्या तो नारी की जन्म-जन्मांतर की संगिनी है। नलकूबर-जैसे रूपवान पुरुष का साथ पाने के लिए किसी भी युवती के दिल में लालसा पैदा हो सकती थी और वही साथ जब किसी को प्राप्त हो जाये, तो अन्य युवतियों का ईर्ष्या करना स्वाभाविक ही कहा जायेगा। फिर कलभाषिणी स्वयं भी रम्भा से किसी प्रकार कम सुंदर नहीं थी।

नारदजी के उद्यान में उतरते ही कलभाषिणी ने उनकी सादर अभ्यर्थना की और उनके आशीर्वाद की प्रतीक्षा किये बिना, अपने हृदय की आकुलता को शांत करने के लिए उनसे पूछ बैठी—"भगवन्! अभी-अभी आपसे जो नारी बात कर रही थी, उसके साथ साक्षात् सौंदर्य की प्रतिकृति, वह पुरुष कौन था?"

नारद पुनः मुस्कराये—"हे धवलाक्षी वह नलकूबर था और उसके साथ उसकी पत्नी रम्भा थी। पर तुम चिंतित न हो। रम्भा के भाग्य में सौत लिखी है। यदि विधि ने चाहा, तो यह स्थान तुम्हीं ग्रहण कर सकती हो।"

कलभाषिणी के कपोल क्षण-भर के लिए आरक्त हो उठे; पर वह अनजान-सी बन बोली—"देव! रम्भा-जैसी रूप-श्री-वैभव-सम्पन्न तरुणी ही उसकी सौत बन सकती है। मुझ-जैसी साधारण स्त्रियों के लिए भला यह कैसे सम्भव होगा!"

अपनी प्रशंसा बार-बार सुनने की दुर्बलता अधिकांश व्यक्तियों में होती है। देवर्षि से कलभाषिणी की यह दुर्बलता छिपी नहीं थी। फिर उन्होंने रम्भा से जो कह दिया था, उसे चरितार्थ करने के लिए कलभाषिणी का सहयोग बहुत जरूरी था, अतः उन्होंने कलभाषिणी से कहा—

रंभ मोदलैन ये यच्चरलकुनैन
दक्कुवे नीदु रूप सौंदर्य महिम
लेक्कुडे काक मिगुल नूहिचि चूड।

—कलभाषिणी! रम्भा अथवा किसी भी अप्सरा के रूप-सौंदर्य की तुलना में तुम्हारा सौंदर्य किसी प्रकार कम नहीं है, अपितु, यदि सचाई बरती जाये, तो तुम्हारे सौंदर्य के सामने उनका सौंदर्य फीका पड़ जायेगा।

कलभाषिणी मौन रही और तभी नारदजी अचानक पूछ बैठे—"क्या तुम मेरे साथ कृष्ण के पास चलोगी?"

ऐसे सुअवसर को व्यर्थ गँवानेवाली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूर्ख स्त्रियों में कलभाषिणी नहीं थी। तुरत बोली—"भगवन्! मैं धन्य हो जाऊँगी। जब-जब मैं आपको वासुदेव के अंतःपुर में प्रवेश करते देखती हूँ, सदा मेरे मन में यही इच्छा उठती है कि, आपकी वीणा मैं स्वयं उठा कर ले चलती। अगर आप अपनी सेवा का यह अवसर मुझे प्रदान करें, तो मैं वस्तुतः स्वयं को परम सौभाग्यशालिनी मानूँगी।"

[२]

परिचारिकाओं द्वारा जब देवर्षि के आने का समाचार भगवान् कृष्ण ने सुना, तो स्वयं उनकी अभ्यर्थना करने चले आये। नारद के साथ कलभाषिणी को उनकी वीणा लिये देख, कृष्ण ने कलभाषिणी की मुक्त कंठ से सराहना की—

अश्वारूढ़ नरेश

[चित्र : केयट-निर्मित एक रेखाचित्र]

नीमतिपेंपु बाडुकोनु नेरुपुलुन्
मृदु मंजुल स्वर
श्रीमधुरत्वमुं गनुचु जित्तमु
लोपल नेनु नेंतु नि
क्कोमलि गोंत नारदुनकुं
बरिचर्य योनर्चु नेनि वि
द्या महिमं गडु न्वेलयुनंचु
निनुंगनुगोन्न वेळलना।

—तुम्हारा सुमधुर गायन, मृदु-मंजुल स्वर-लहरी तथा तुम्हारी तीक्ष्ण बुद्धि देख, मैं सदा यही सोचा करता था कि, यदि तुम नारदजी की शिष्या बन जाओ, तो अवश्य ख्याति अर्जन करोगी—गायन-कला में निश्चय ही, तुम्हारा नाम हो जायेगा।

कलभाषिणी भला क्या बोलती? कृष्ण ने ही फिर जाम्बवती को बुलवाया और उसे नारद और कलभाषिणी को गायन-विद्या सिखाने का आदेश दिया।

चार वर्षों तक नारद ने रुक्मिणी, जाम्बवती तथा सत्यभामा के यहाँ संगीत-शिक्षा पायी। कृष्ण भगवान् ने भी नारद को गायन-विद्या के रहस्य बताये। कलभाषिणी ने भी अंतःपुर में गायन-विद्या का अभ्यास किया। हाँ, मणिकंधर को अवश्य यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। पर उसने पुंडरीकाक्ष की कृपा से गायन-विद्या के समस्त रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। अंत में, नारदजी अपनी शिक्षा पूरी कर द्वारका से चले। मार्ग में अपने शिष्य मणिकंधर तथा कलभाषिणी से उन्होंने कहा—"भगवान् कृष्ण तथा अंतःपुर की सभी स्त्रियों ने मेरी गायन-विद्या की बड़ी प्रशंसा की है। लेकिन मैं जब तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जान नहीं लूँ कि, वह प्रशंसा सच्ची है अथवा केवल मुझे प्रसन्न करने के लिए की गयी है, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।"

क्षण-भर मौन रह कलभाषिणी बोली—"देव! अंतःपुर की प्रायः सभी स्त्रियाँ जानती हैं कि, मैं आपकी शिष्या हूँ। अतः मैं यदि इस रूप या वेश में उनके पास जाऊँ, तो वे सच्ची बात कहने में संकोच करेंगी। कृपया मुझे, अपना मनचाहा नारी-रूप धारण करने का वरदान दीजिये। मैं वेश बदल उनके मन की सच्ची बात जानने का प्रयत्न करूँगी।"

देवर्षि को यह समझते देर नहीं लगी कि, इस बहाने वह रम्भा का रूप धर कर कुबेरपुत्र नलकूबर से मिलना चाहती है। और, यह भी मेरी अभिलाषा के अनुरूप ही है। यह सोच कर उन्होंने कलभाषिणी को इच्छित वर देते हुए कहा—"शीघ्र ही यदुकुलभूषण के अंतःपुर में जाओ और वहाँ की महिलाओं की सच्ची राय जान कर आओ।"

कलभाषिणी ने वैसा ही किया। नारदजी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कलभाषिणी को आशीर्वाद देते हुए कहा—

कोम्म मुन्नु नी वात्मलो गोरिनट्टि
कांतु रंभामनोहराकारु डगुचु
मेरयु वानिनि गूडि रमिंच गलवु
नम्मु पोम्मिक नी भवनमुनकु।

—हे कोमलांगी! तुम अपने इच्छित रम्भामनोहराकार (रम्भामनोहराकार से नलकूबर तथा नलकूबर-वेशधारी का भी अभिप्राय हो सकता है।)-से कांतिवान पुरु[illegible] का वंछित प्रणय प्राप्त करोगी। अ[illegible] तुम मेरे इस कथन को सत्य मान अपने भवन लौट जाओ।"

फिर मणिकंधर भी उनके आदेश से तीर्थयात्रा के लिए उनसे विदा हुआ और नारदजी अपनी राह चले गये।

कलभाषिणी ने महल में लौटकर गायन-विद्या का अभ्यास छोड़ दिया। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। नलकूबर को पाने की उसकी इच्छा तीव्रतर होती जा रही थी और उसकी व्याकुलता दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही थी!

एक दिन वह अपने उद्यान में अपने व्याकुल हृदय को शांत करने के विचार से वीणा के तारों को झंकृत कर रही थी कि, मणिस्तम्भ नामक एक सिद्ध योगी सिंह पर सवार, आकाश-मार्ग से, उद्यान में आ उतरा। कुछ क्षणों तक तो कलभाषिणी भय-सम्भ्रम एवं विस्मय के साथ मूर्तिवत् खड़ी रही। फिर उसने उसकी उचित अभ्यर्थना की।

उस सिद्ध को दूर-श्रवण और दूर-दृष्टि नामक तो शक्तियाँ प्राप्त थीं। उसने अपनी इन्हीं शक्तियों द्वारा कलभाषिणी के भूत, वर्तमान तथा भविष्य का परिचय देकर उसे चकित कर दिया। कलभाषिणी के मन में मणिकंधर के बारे में भी जानने की इच्छा हुई। सिद्ध ने उसे बताया—"नारदजी से विदा लेने के बाद मणिकंधर तीर्थ-यात्रा पर निकला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्यावर्त के पुण्य-तीर्थों का सेवन कर वह दक्षिणापथ गया। वहाँ के भी तीर्थ समाप्त कर इस समय वह घोर समाधि में लीन है।"

यह सारा वार्त्तालाप स्वर्गलोक से वहाँ आया हुआ एक शुक सुन रहा था। उसने सिद्ध के चुप होते ही कहा– "कलभाषिणी! मणिस्तम्भ ने जो-कुछ कहा, सत्य है। मणिकंधर की तपोमहिमा देख इंद्र तथा अन्य देवता बड़े व्याकुल हैं। देवेंद्र के आदेश से रम्भा मणिकंधर का तप भंग करने के लिए जाने वाली है।"

[३]

कलभाषिणी के अनुरोध पर मणिस्तम्भ वहाँ ठहर गया; पर वह द्वारका नगरी में नहीं गया। उसी उद्यान में उसका स्वागत-सत्कार एवं पूजा-अर्चना होती रही। एक दिन कलभाषिणी ने उससे पूछा– "महात्मन्! अपनी दूर-दृष्टि का उपयोग कर बताइये, इस समय रम्भा कहाँ पर है और मणिकंधर क्या कर रहे हैं?"

क्षणभर मौन रह मणिस्तम्भ ने बताया– "मणिकंधर इस समय घोर तपस्या में लीन हैं। इंद्र-द्वारा प्रेषित रम्भा तपोभूमि में प्रवेश कर चुकी है। मणिकंधर के तपोबल पर वह स्वयं विस्मित हो गयी है। उसकी समाधि भंग करना अपनी शक्ति के बाहर की वस्तु मान कर, वह हतोत्साहित हो रही है। परंतु देवेंद्र का आदेश! पुनः वह साहस बटोर कर आगे बढ़ रही है...और...और यह क्या? अचंचल समाधिस्थ मणिकंधर चंचल हो उठा। आह! उसका व्रत भंग हो गया। धर्माधर्म के प्रति वह अंध-बधिर हो गया!

"ज्ञान की तर्जनी वर्जन करती रही, सत्य स्वयं मूर्त होकर आश्वासन के प्रलम्ब बाहु फैलाता रहा; किंतु क्षणभर के लिए ही सही, एक बार और पुरुष को प्रकृति ने पराजित किया!"

सिद्ध योगी मौन हो गया। फिर उसने वहाँ से जाने का उपक्रम किया; पर कलभाषिणी रो-रोकर मणिकंधर के पास पहुँचा देने की जिद करने लगी। मणिस्तम्भ की सहायता के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था, इसी से वह उससे साथ ले चलने का अनुरोध करने लगी।

मणिस्तम्भ भी वस्तुतः इसी कार्य के लिए वहाँ आया था। सिंह पर कलभाषिणी को अपने साथ बैठा, वह गगन-मार्ग से उड़ चला। कुछ दूर चलने के उपरांत उन्हें रम्भा की सखियाँ दिखायी दीं। उनसे यह मालूम हुआ कि, इस समय रम्भा नलकूबर के साथ मणिकंधर के निकट से अन्यत्र जा चुकी है। कलभाषिणी यह जान कर बड़ी दुःखित हुई; पर सिद्ध ने उसे समझाया-बुझाया। कलभाषिणी को वह अभी ढाढ़स बंधा ही रहा था कि, अकस्मात सिंह दहाड़ मार कर रुक गया। सिद्ध ने बताया– "कलभाषिणी! घबराओ मत। यहाँ से कुछ दूर पर 'मृगेंद्रवाहनालय' (काली माई का मंदिर) है। इसीलिए यह मृगराज ठहर गया है। यदि हम भी वहाँ जाकर उस महाशक्ति की अर्चना करेंगे, तो हमारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इटलीमें ५०० मील की इन्टरनेशनल रेस में

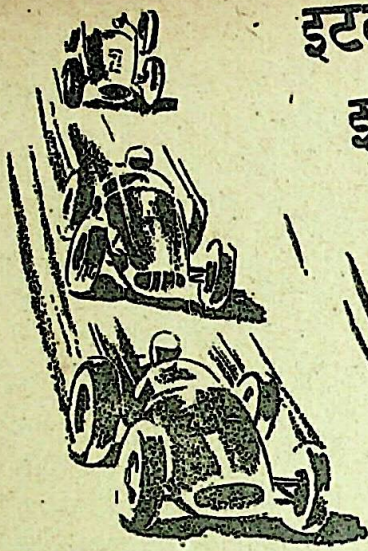

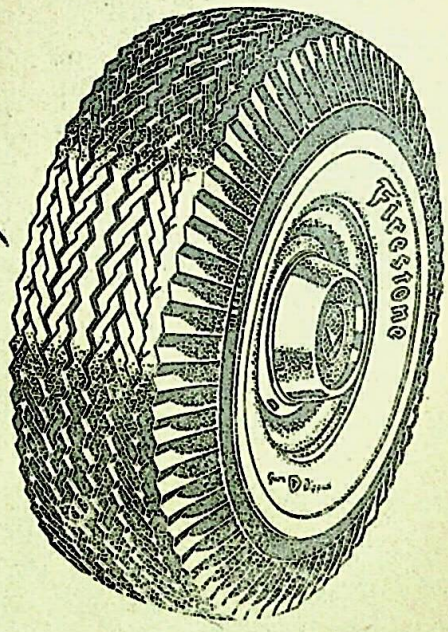

ज्यादा सुरक्षित मोटर-चालन के टायर का प्रमाण सिद्ध

मोंजा इटली की ५०० मील की इन्टरनेशनल रस टायर की सुरक्षा व गति के लिये भी प्रसिद्ध रही। रेस जीतनेवाले टायरों की विशेषताएँ उसी किस्म-नियंत्रण व उसी निर्माण-कुशलता में हैं जिनसे ज्यादा सु·क्षा पैदा होती है। फायरस्टोन फेमिली टाइप टायर अपनी मोटर में लगवा कर आप भी ज्यादा सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चेम्पियन ट्यूब सहित या ट्यूब रहित टायर जिसमें मानसिक-शांति बनी रहती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनोरथ अवश्य पूर्ण होंगे।"

कलभाषिणी तैयार हो गयी और मणिस्तम्भ के साथ वह मंदिर में पहुँची। कलभाषिणी को मंडप में बैठा सिद्धयोगी पूजा के लिए पुष्प लाने चला गया।

कलभाषिणी एकांत में बैठी नलकूवर को प्राप्त करने के सम्बंध में तरह-तरह की बातें सोच रही थी कि, वहाँ सुमुखासत्ति नामक एक वृद्धा आ पहुँची। उसने कलभाषिणी से कहा—"तुम यहाँ से जल्दी भाग जाओ। मणिस्तम्भ तुम्हारे इस सुंदर शरीर की बलि देकर राज्य पाना चाहता है! वह आये, इसके पहले ही चली जाओ।" कलभाषिणी ने उस वृद्धा को बताया—"सिद्ध के दूर-श्रवण तथा दूर-दृष्टि से प्रभावित होकर ही मैं उसके जाल में यहाँ तक आ गयी हूँ। विधि बलवान है। अब तो मुझे भागने का कोई मार्ग भी दिखायी नहीं देता है। यदि भाग भी जाऊँ, तो वह अपनी दूर-दृष्टि द्वारा मेरा पीछा करके मुझे पकड़ लेगा।" सुमुखासत्ति तब कलभाषिणी को दुर्गा-मंदिर के प्रवेश-द्वार के पास ले गयी। वहाँ रखा शिलास्तम्भ, शस्त्र, खड्ग आदि उसने दिखाया। उस स्तम्भ पर खुदा था—"यहाँ पर लगातार दो वर्ष तक जितेंद्रिय बन, भुवनेश्वरी का मंत्र जाप करने से, देवी प्रसन्न हो समस्त इच्छाओं की पूर्ति करेगी। यदि कोई तत्काल ही दूर-दृष्टि पाने का इच्छुक है, तो उसे चाहिए कि, वह यहाँ पर लटकने वाली छुरी से अपने नेत्र फोड़ ले। यदि कोई दूर-श्रवण-शक्ति पाने का अभिलाषी है, तो इस सलाख को कान में चुभो ले। साहित्य-मनीषी बनने का इच्छुक इस कटार से अपनी जिह्वा काटकर देवी के चरणों में अर्पित कर दे। जो साहसी वीर अपना सिर काटकर देवी के चरणों पर अर्पित करेगा, वह अपने बलवान शत्रु को भी परास्त करने की शक्ति प्राप्त कर लेगा। यदि गायन-विद्या में कुशल गायिका का कोई बलिदान देगा, तो वह श्री-सम्पन्न राज्य का नरेश बनेगा। यदि उपर्युक्त सभी विधियों के आचरण में स्वयं को अयोग्य तथा असमर्थ पानेवाला व्यक्ति, परमार्थ में अपने शरीर का बलिदान करेगा, तो उसे पुनः नवयौवन एवं रूप-लावण्य की प्राप्ति होगी।"

कलभाषिणी उस शिलालेख को पढ़कर

रीती नागरी, भरी गागरी

[चित्र : के० श्रीनिवासुलु-निर्मित एक रंगीन चित्र की प्रतिकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों को सुन्दर रखने के सरल साधन

टाटा का
सुगन्धित नारियल का तेल और शैम्पू

दि टाटा ऑयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षणभर तो अवाक् रह गयी। फिर उसने स्वयं को संयत कर विचार किया—भवितव्यता बड़ा प्रबल है। जो होना है, होकर ही रहेगा। व्यर्थ ही अफसोस करने से भला क्या लाभ हो सकता है?"

पूजा के लिए पुष्प की तलाश में निकला मणिस्तम्भ भी तब तक आ पहुँचा। उसने कलभाषिणी को पूजार्थ तैयार हो जाने के लिए कहा। कलभाषिणी के सिर नवाते ही, अपना खड्ग उठा कर मणिस्तम्भ ने बलि देने की तैयारी की ही थी कि, बीच में वह वृद्धा आ गयी। उधर वृद्धा का सिर धड़ से अलग होकर गिरा और इधर मृगेंद्रवाहना शक्ति की महिमा से कलभाषिणी और मणिस्तम्भ मणिकंधर की तपोभूमि के निकट जा गिरे।

[४]

कलभाषिणी जब काफी देर बाद मंदिर लौट कर आयी, तो उसने वहाँ एक नवयौवनप्राप्त सुंदरी को देखा। सुंदरी उसे देखते ही बड़े प्रेम से आगे बढ़ कर बोली—"कलभाषिणी! मैं वही सुमुखासत्ति नामक वृद्धा हूँ। भगवान् की कृपा से मुझे यह नवजीवन मिला है। मैं कश्मीर देश के एक ब्राह्मण की पुत्री हूँ।"

सुमुखासत्ति और कलभाषिणी में बातें हो ही रही थीं कि, वीणाधारी मणिकंधर वहाँ आ पहुँचा। कलभाषिणी ने उसका आदर-सत्कार किया। दोनों बहुत समय के बाद मिले थे। थोड़ी देर के बाद, मणिस्तम्भ नामक वह सिद्ध भी वहाँ आ गया। सबके आ जाने पर सुमुखासत्ति ने जिज्ञासा प्रकट की—"देवी द्वारा यहाँ से फेंक दिये जाने के बाद, तुम दोनों कहाँ जा गिरे और फिर यहाँ तक कैसे लौटे? सारी घटना विस्तार में बताओ।"

मणिस्तम्भ ने ही सबसे पहले अपनी कथा शुरू की—

"मृगेंद्रवाहना शक्ति की महिमा से हम दोनों यहाँ से दूर फेंक दिये गये और मणिकंधर की तपोभूमि के समीप एक लता-शय्या पर जा गिरे। वहाँ कलभाषिणी के अतिशय रूप-लावण्य और उसके छद्म मनःक्षेप को मेरी दुर्बलता पराजित नहीं कर सकी—विवेक का दीप कुछ देर तक तो अक्षय रहा; किंतु मन के तुरगों पर धर्म की जो परवशता थी, उसने ऐसा अंधड़ पैदा किया कि, मेरा अंतर्दीप ही नहीं, ये भौतिक चांद-सितारे भी बुझ गये—मेरा अधर्म प्रबल देख कलभाषिणी सहायता के लिए चिल्लायी। उसकी चीख पर वहाँ नलकूबर आ पहुँचे। रम्भा मार्ग में एक हिरण को देख, चकित हो रुक गयी थी! नलकूबर का प्रेम पाने की इच्छुक कलभाषिणी के लिए यह एक सुवर्ण अवसर था। तत्काल ही उसने देवर्षि नारद के वर के प्रभाव से रम्भा का रूप धारण किया। कुबेरपुत्र नलकूबर इस वेश-परिवर्तन को नहीं लक्ष्य कर सके। उन्होंने उसे रम्भा ही समझा।

"इस प्रकार वे दोनों प्रेमालाप में लीन थे कि, उसी समय वहाँ असली रम्भा

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उफ़—चौंधानेवाली रोशनी...

वाह ! आर्जेण्टा

बिना चकाचौंध के साफ़ रोशनी देता है !

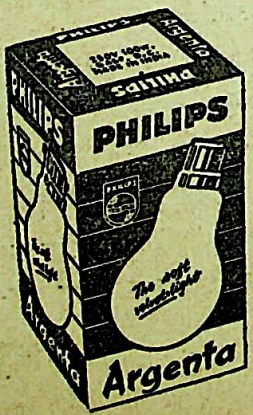

चाँदनी के समान मृदुल, फिर भी दिन की तरह साफ़ रोशनी देनेवाले परत चढ़े आर्जेण्टा बल्ब घर के लिए और कामकाज के स्थान के लिए सर्वोत्तम हैं। आज ही एक आर्जेण्टा बल्ब लीजिये और फिर देखिये कि उसकी रोशनी आपकी आँखों के लिए कितनी सुखद और आपके दिमाग़ के लिए कितनी आरामदेह रहती है।

उत्तम फ़िलिप्स बल्ब
सही दामों में ही ख़रीदिये

अपने दूकानदार से फ़िलिप्स की मूल्य-सूची दिखाने के लिए कहिये

PHILIPS

फ़िलिप्स इण्डिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयी ! नलकूबर चकित हो देखता रहा कौन असली रम्भा है और कौन माया- ! प्रतिरूप भी धारण करें, तो भी -सा अंतर दिखायी देता है; पर आश्चर्य ! ये दोनों सभी दृष्टि से एक ही हैं। यह सोच नलकूवर विस्मित हो खड़ा रहा। नलकूवर के शंकालु हृदय को देख स्वयं को असली साबित करने के विचार से कलभाषिणी ने कहा—

'"अट्लयिन ग्राणनायक ! निनु गौगिट बाप न वेरतु, नी मायलाडि यीं रूपुतो मन केडसेय नर्तेचि नदियो, तोल्लियु नोक्क यसुरजंत जनकनंदनकु रामुनकुनु नेडसेय गडगि वच्चुट विनबडुचु नुंडु।

'"—हे प्राणनाथ ! यह मायाविनी हम दोनों को वियोग-दुःख में डालने के लिए आयी है। मैं तुम्हारा वियोग नहीं सहन कर सकती। तुमने सुना भी होगा कि, बहुत प्राचीन समय में, एक दुष्टा, जनक महाराज की पुत्री जानकी एवं दशरथी के बीच विच्छेद पैदा करने आयी थी। यह भी कोई ऐसी ही मायाविनी प्रतीत होती है।'

"नलकूबर कुछ भी निर्णय नहीं कर सका। दोनों रम्भा में कलह आरम्भ हुआ। कलभाषिणी भी वाद-विवाद में चतुर थी। वह ईंट का जवाब पत्थर से देने लगी।

"किंतु सत्य की जीत हमेशा होती है। सो अंत में, असली रम्भा की ही जीत हुई। उसने नकली रम्भा (कलभाषिणी) को शाप दिया— 'तुम खड्ग के वार से शरीर-त्याग करोगी। यही तुम्हारे इस दुस्साहस का उचित दंड होगा।' फिर असली रम्भा नलकूवर को साथ ले अपने घर की ओर चली। लेकिन तभी एक घटना और घटी। कुबेर-पुत्र असली नलकूवर रम्भा को खोजता वहाँ आ पहुँचा।

"अब दोनों नलकूबर के बीच वाद-विवाद की नौबत आयी। रम्भा चकित खड़ी देखती रही। दोनों नलकूबर ने मल्लयुद्ध भी किया; पर दोनों ही बराबर रहे। अंत में, रम्भा ने ही अपनी चतुराई से असली नलकूवर को पहचान लिया और तब नलकूबर ने क्रुद्ध हो नकली नलकूबर को शाप दिया—'तुम अल्पायु हो, शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होगे।'—इस सारी कहानी को मैं छिपकर देख रहा था।"—मणिस्तम्भ ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा।

फिर बारी आने पर कलभाषिणी ने अपनी कथा कही।

[५]

"मणिस्तम्भ ! मेरी कथा में मेरे लिए अब बताने को रहा ही क्या ? तुमने सारी कहानी बता ही दी। रम्भा के शाप के प्रभाव से मैं पुनः यहाँ आ गयी। हाँ, यह जानने की मेरी इच्छा अभी तक बनी है कि, वह नकली नलकूबर कौन था ?"

यह सुन मणिकंधर ने मंद हास करते हुए कहा—"हे कामिनी ! उस रूप में मैं ही वहाँ था। रम्भा ने मेरी तपस्या भंग कर मेरी साधना नष्ट कर दी; फिर भी उसका मन नलकूबर में ही लगा था। अतः उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुण और उपयोग में सबसे बढ़िया

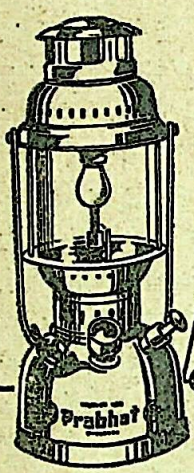

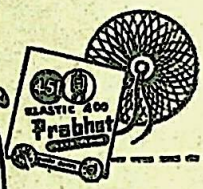

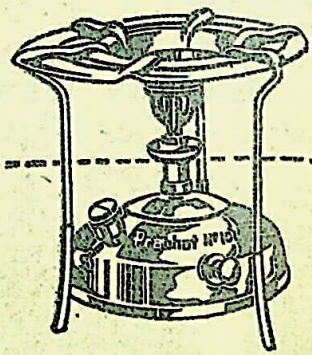

दस में से नौ गृहस्थ

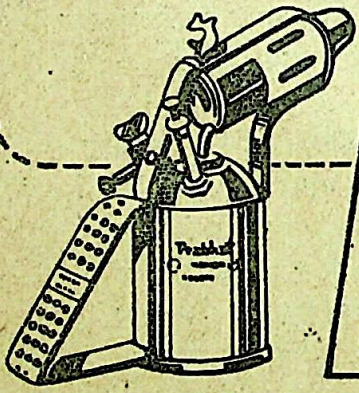

प्रभात

- स्टोव
- लालटैनें
- मैण्टल
- ब्लो लैम्प

इस्तेमाल करते हैं

प्रभात (स्टोव और लैम्प) प्राडक्टस् कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
नोबल चैम्बर्स, पारसीबाज़ार स्ट्रीट, बंम्बई - १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स व्यवहार से क्षुब्ध होकर मैंने अपनी स्या के प्रभाव से, नलकूबर का धारण कर लिया। जब तुम्हारे साथ यन-विद्या का अभ्यास कर रहा था, तभी से तुम पर मेरी आसक्ति थी। पर देवर्षि के शाप के भय से मैं अपने मन को नियंत्रण में रखता आया था। किंतु भाग्य भी कैसा प्रबल है। मुझे तुम्हारे सामीप्य का सुख भी कितने अनोखे ढंग से मिला!"

कलभाषिणी के नयन अचानक लजा गये। कुछ क्षणों बाद, वह बोली– "मैं व्याकुल थी कि, मुझे धोखा हो गया है। मैं भी स्वयं को तुम्हारे योग्य न समझ कर अपनी इच्छा दबाती रही हूँ। नलकूबर में तुम्हारी रूप-रेखा पाकर ही मैं लोभ का संवरण नहीं कर सकी। पर मेरे भाग्य से वह तुम्हीं निकले, इसलिए मैं कृतार्थ हो गयी!"

फिर सुमुखासक्ति, मणिस्तम्भ और कलभाषिणी के अनुरोध पर मणिकंधर अपनी अब तक की कहानी सुनाने लगा–

"अनेक पुण्यतीर्थों का सेवन करता हुआ अंत में, मैं 'अनंतपद्मनाथ स्वामी' के पास पहुँचा। वहाँ पर अनेक कवि, देवता की स्तुति कर रहे थे। मैंने भी उन कवियों-सी प्रतिभा प्राप्त करने का निश्चय किया। उन कवियों की सलाह से मृगेंद्र-वाहना के मंदिर में पहुँच कर शिलालेख में बतायी गयी विधि के अनुसार कविता करने की शक्ति मैंने प्राप्त कर ली। पुनः मैं लौट कर अनंत पद्मनाथ स्वामी के मंडप में आया। वहाँ पर एक आचार्य अपने कुछ शिष्यों को वेद पढ़ा रहे थे। आचार्य ने मेरा स्वागत किया और विद्यार्थियों को छुट्टी दी। थोड़ी देर में एक ब्रह्मचारी आया। उसने एक पुस्तक आचार्य के हाथ में दे सविनय प्रणाम किया। विलम्ब का कारण पूछने पर उस ब्रह्मचारी ने कहना आरम्भ किया–'गुरुदेव! क्षमा करें! जब मैं पहुँचा, तब शालीन अपने उद्यान के एक लतागृह में अपनी धर्मपत्नी सुगात्री के साथ संलाप कर रहे थे। बाद में, शालीन किसी कारणवश सुगात्री पर क्रोधित हो उठे। मेरे हाथ में यह पुस्तक देकर उद्यान में स्थित 'शतताळदघ्न' नामक सरोवर में कूद पड़े। पतिव्रता सुगात्री ने पति का अनुसरण किया।'

"यह वृत्तांत सुनकर आचार्य बहुत दुःखी हुए। फिर उन्होंने ब्रह्मचारी को उस पुस्तक में वर्णित शालीन और सुगात्री का कथा-वृत्तांत पढ़कर सुनाने का आदेश दिया। वह कथा यों है–

"'कश्मीर देश में एक ब्राह्मण परिवार था। उस दम्पति के घर बड़ी प्रतीक्षा के बाद सरस्वती देवी के अनुग्रह से एक पुत्री ने जन्म लिया। उसी बालिका का नाम सुगात्री पड़ा। शालीन उस ब्राह्मण-दम्पति का भांजा था। वह बचपन से ही अपने मामा के घर रहा करता था। शालीन और सुगात्री जब विवाहोचित वय को प्राप्त हुए, तब एक शुभ मुहूर्त में उन दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। पर सुगात्री विविध आभूषण से अलंकृत हो जब पति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल पक रहे हैं?

लोमा इस्तेमाल कीजिये व अपने प्राकृतिक सौंदर्य को फिरसे पाइये।

लोमा बालोंको प्राकृतिक ढंग से श्याम बनाने के लिए जगभर में प्रसिद्ध है व अब वह मुहरबंद ढकनवाली विशेष रूपसे बनी शीशीमें मिलता है।

लोमा
REGD.

सोल एजन्ट्स : एम. एम. खम्भातवाला, अहमदाबाद १
एजन्ट्स : सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी,
मंगलदास रोड, बम्बई २, फोन : ३०५७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के शयनकक्ष में गयी, तो शालीन ने उसे स्वीकार नहीं किया; क्योंकि आभूषणों से उसे घृणा थी। सुगात्री की सखियाँ प्रति दिन विविध आभूषण एवं पुष्पमालाओं से सजा कर उसे भेजतीं और शालीन प्रति दिन उसका तिरस्कार करता।

"'सुगात्री सभी प्रकार के प्रयत्न कर भी पति को प्रसन्न करने में असफल रही। सुगात्री की माता शालीन के इस व्यवहार की कड़े शब्दों में निंदा करती; पर सुगात्री सदा अपने पति का ही पक्ष लेती। खिन्न हो सुगात्री की माता ने शालीन को घर से निकालना चाहा; किंतु अपनी प्रिय पुत्री के अनुरोध पर उसने अपना विचार बदल दिया। शालीन वहीं रह, उद्यान का काम सम्भालने लगा।

"'एक दिन जब शालीन उद्यान के काम में लगा था, जोरों की वर्षा हुई। पति इस वर्षा में सकुशल हैं या नहीं, यह जानने के लिए सुगात्री उद्यान में पहुँची। स्वभावतः ही, वह आभूषणविहीन थी। शालीन ने प्रथम बार सुगात्री की ओर प्रेमपूर्वक देखा और उसके सहज लावण्य पर मुग्ध हो, उससे प्रेम-निवेदन किया। पति का प्रेम अब तक क्यों नहीं मिला था, यह भी उस क्षण सुगात्री जान गयी।

"'इस प्रकार वह दम्पति सुखमय जीवन व्यतीत करने लगा। पर एक दिन अकारण ही शालीन अपनी धर्मपत्नी सुगात्री पर कुपित हो शतताळदघ्न नामक सरोवर में कूद पड़ा। सुगात्री ने अपने पति को खोकर उसी का अनुसरण किया। यही उस दम्पति की कथा है।'"

इस वृत्तांत को सुनते ही सुमुखासत्ति ने कहा—"मैं ही वह सुगात्री हूँ।" यह भी सब को मालूम हो गया कि, मणिस्तम्भ ही शालीन थे।

तदनंतर कलभाषिणी ने नारद-द्वारा ज्ञात 'कळापूर्ण-वृत्तांत' सबको सुनाया। उसी समय 'मृगेंद्रवाहना' के जप के निमित्त अलघुव्रत नामक एक मलयाळी ब्राह्मण आया और उसने 'कळापूर्ण' की सारी कथा सुन ली। इस पर कळापूर्ण के दर्शन कर सुख प्राप्त करने के विचार से, वह घोर तपस्या में लीन हुआ। मृगेंद्र-वाहना ने उसकी तपस्या पर प्रसन्न हो, दूसरे जन्म में उसे अपना अभीष्ट पूर्ण होने का वरदान दिया।

कळापूर्ण का वृत्तांत समाप्त होने पर कलभाषिणी की बलि देने का कार्य मणि-कंधर को सौंपा गया। कलभाषिणी अपने बलिदान के लिए प्रसन्नचित्त तैयार हुई; किंतु मणिकंधर ने ही संकोचवश कुछ विलम्ब किया। बाद में, देवी ने प्रत्यक्ष हो मणिकंधर के विलम्ब पर क्रोधवश उसे शाप दिया—"अब इस जन्म में तुम्हें राज्य-प्राप्ति नहीं होगी, दूसरे जन्म में ही तुम्हें राज्य मिलेगा।" फिर कलभाषिणी के साहस पर प्रसन्न हो, उसे पुनः जीवित किया और द्वारका पहुँचा दिया। मणिकंधर दुःखित हो श्रीशैल तीर्थ में चला गया। सुमुखासत्ति और मणि-स्तम्भ भी तीर्थयात्रा के लिए रवाना हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चार दवाओं का वैज्ञानिक विधि से मिश्रण किया हुआ 'एनासिन' मैं लेती हूं।

- क्विनीन सल्फेट
- फिनासिटीन
- कैफीन
- एसिटील सालिसिलिक एसिड

सिरदर्द, सर्दी, बुखार, दांत का दर्द या स्नायु का दर्द शुरू होते हीं मैं २ टिकिया एनासिन को खा लेती हूं। यह मेरा अनुभव है कि किसी तरह के भी दर्द से शीघ्र आराम पाने के लिए एनासिन से बढ़ कर और कोई दूसरी दवा नहीं है-और न कोई दवा एनासिन से ज़्यादा निरापद ही है। डाक्टरी नुस्खे के अनुसार इसमें चार दवायें वैज्ञानिक विधि से मिलाई गई हैं-ताकि दर्द से शिघ्र, बिना नुकसान किये हुए शर्तिया आसम हो। आप भी अपने घर में हमेशा एनासिन रखिए।

१२ नये पैसे की एक पुड़िया

WILL NOT UPSET THE STOMACH

DOES NOT HARM THE HEART

ANACIN

TRADE MARK REGISTERED.

TABLETS

EACH CONTAINING
QUININE SULPHATE ½ gr.
ACETYL-SALICYLIC ACID 3 gr.
PHENACETIN 3 gr. CAFFEINE ½ gr.

FOR HEADACHE, COLDS, FEVER, TOOTHACHE & MUSCULAR PAIN

DOSAGE 2 TABLETS WITH WATER REPEATED TABLET IN THREE HOURS IF NECESSARY

CONTENTS 12 TABLETS

Made in India by
GEOFFREY MANNERS & COMPANY PRIVATE LIMITED
MAGNET HOUSE, DOUGALL ROAD, BOMBAY
Trademark Proprietors
WHITEHALL PHARMACAL COMPANY, NEW YORK, U.S.A.

'एनासिन' चार दवाइयों का नुस्खा

Registered User :
GEOFFREY MANNERS & COMPANY PRIVATE LTD.

H. 69.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[६]

अलघुव्रत ने अपनी तपस्या से मृगेंद्र-ा को प्रसन्न किया। देवी ने दर्शन र वरदान दिया—"अगले जन्म में तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।" फिर वह ब्राह्मण, देवी की महिमा से एक राजदरबार में जा गिरा। वहाँ के राजा उस वक्त एक बालिका को गोद में लिये थे। अलघुव्रत ने अपने पास की रत्नमाला उपहार-स्वरूप राजा को दे दी। वह रत्नहार उसे मणि-कंधर से प्राप्त हुआ था। वह हार साधारण हार नहीं था। राजा ने उसे बालिका की सम्पत्ति मान कर उसके गले में पहना दिया और उस रत्नहार के प्रभाव से वह छोटी-सी बालिका मुस्करा कर बड़ी अद्भुत बातें करने लगीं। उस हार के प्रभाव से उसे अपना पूर्वजन्म भी स्मरण हो आया। वह कहने लगी—

"पूर्वजन्म में मैं ब्रह्मलोक का तोता थी! देवी सरस्वती और ब्रह्मा का अपार स्नेह मुझे प्राप्त था। एक दिन ब्रह्मा ने सरस्वती को एक कथा सुनायी। वही कथा भूलोक में 'कळापूर्ण-कथा' नाम से विख्यात हुई। वह वाणी-ब्रह्मा के प्रेम-सम्बंधी सारे रहस्य बताती है। उन दिव्य दम्पतियों की महिमा से कळापूर्ण की कथा सर्वत्र प्रसिद्ध हो गयी। इस कथा को मैंने एक दिन देवराज इंद्र को सुनाया। इस पर कुपित हो सरस्वती ने मुझे शाप दिया—'तुम भूलोक में वारांगना के रूप में जन्म धारण करोगी।' किंतु ब्रह्मा ने अपने अतिशय वात्सल्य के कारण मुझ पर कृपा करके आशीर्वाद दिया—'तुम पुनर्जन्म में कळापूर्ण को पति-रूप में पाकर आजीवन सुख से रहोगी।'

"वाणी तथा ब्रह्मा के अभीष्ट के अनुसार भूलोक में घटित होनेवाली कथा का सारांश इस प्रकार है...." बालिका ने अपनी कथा आगे बढ़ायी—

"एक दिन मणिस्तम्भ ने अपने तपोबल से अपनी पत्नी का रूप धारण किया और सुमुखासत्ति को पुरुषत्व प्रदान किया। बाद में, पत्नी वेशधारी मणिस्तम्भ ने गर्भ धारण किया। इसके उपरांत वे दोनों समस्त प्रदेशों का भ्रमण करते हुए एक दिन 'कासार' नगर में पहुँचे। उस नगर के राजा ने उनका आदर-सत्कार किया और वहीं पर मणिस्तम्भ ने एक पुत्र-रत्न को जन्म दिया। वही शिशु कळापूर्ण के नाम से विख्यात हुआ। यह जन्म ब्रह्मा और सरस्वती के संयुक्त विधान से सम्पन्न हुआ था।

"कळापूर्ण युवावस्था में कासार नगर के राजा बने। उन्होंने 'अभिनवकौमुदी' नामक एक युवती से विवाह किया। फिर अंग-राज्य पर आक्रमण करके उन्हें युद्ध में पराजित किया। संयोगवश अंगराज की पट्टमहिषी 'रूपानुभूति' ने कळापूर्ण के कंठ में शोभायमान दिव्यमणि को देख लिया था। उसके प्रभाव से उसे एक पुत्री हुई। वह दिव्यमणि कळापूर्ण को 'स्वभाव-सिद्ध' नामक एक योगी से प्राप्त हुई थी। मणि के प्रभाव से रूपानुभूति ने जिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप

हज़ारों में एक

लगती हैं

जब आप अपनी वेषभूषा

फेंसी पॉपलिन
फेंसी वॉयल
छपे पॉपलिन
छपे हुए वॉयल
कैम्ब्रीक, लोन

नवजीवन फैब्रिक्स

से सुसज्जित करती हैं

—अत्याधिक सुन्दर छपे हुए फैब्रिक्स

नवजीवन मिल्स
प्राइवेट लि., कलोल
उ. गुजरात

NAVJIVAN MILLS KALOL

NJM.57.02D HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ालिका को जन्म दिया, उसका नाम 'मधुरलालसा' रखा गया। मधुरलालसा युवावस्था प्राप्त करने पर कळापूर्ण को पति के रूप में पाया।"

इसी वक्त सभाभवन में सत्यदात्म ने प्रवेश किया और उस बालिका से अपना वृत्तांत बताने का अनुरोध किया। पर अचानक बालिका के करवट लेने से वह रत्नहार उसके कंठ से अलग जा गिरा। इसलिए उस शिशु में सर्वज्ञता का ज्ञान नहीं रहा और वह साधारण बालिका बन रुदन करने लगी। कळापूर्ण ने उस बालिका को मदाशय-दम्पति के हाथों में समर्पित किया। वह दम्पति अत्यंत अनुराग एवं वात्सलय के बीच, उस बालिका का पालन-पोषण करने लगा। वही बालिका मधुरलालसा नाम से विख्यात हुई।

मधुरलालसा जब कुछ बड़ी हुई, तो अक्षराभ्यास-संस्कार पूरा किया गया। अल्पकाल में ही उस बालिका ने बड़ी आसानी से समस्त विद्याएँ सीख लीं। धीरे-धीरे उसमें यौवन के अंकुर फूटे।

एक दिन मधुरलालसा अपनी सखियों के साथ उद्यान में गयी। इधर-उधर थोड़ी देर तक टहलने के उपरांत वे जलक्रीड़ा करने लगीं। तभी वहाँ बाज के शिकार में भटकते कळापूर्ण आ पहुँचे। मधुरलालसा पर नजर पड़ते ही वे मुग्ध भाव से खड़े रह गये। दोनों ही एक-दूसरे की ओर बड़ी देर तक देखते रहे। फिर बड़ी मुश्किल से अपने हृदय पर नियंत्रण कर कळापूर्ण वहाँ से पैदल लौट आये।

पर मधुरलालसा तो कळापूर्ण के प्रेम में इस प्रकार रंग गयी थी कि, उनके जाते ही वह मूर्च्छित हो गयी। उसकी सखियों ने दौड़-धूप कर उपचार किया। जब वह होश में आयी, तो उसे उसके आरामकक्ष में ले गयीं। किंतु मधुरलालसा में धीरे-धीरे प्रणय का उद्रेक बढ़ने लगा।

[७]

कळापूर्ण भी मधुरलालसा की मनोहारिणी मूर्ति को भूले नहीं थे। उनका मन भी उसी पर लगा था। अंत में, एक दिन शुभ मुहूर्त का निर्णय हुआ और कळापूर्ण तथा मधुरलालसा का विवाह सम्पन्न हो गया।

एक दिन कळापूर्ण ने अपनी दोनों पत्नियों को बुलाया और उनका संगीत सुनने की इच्छा प्रकट की। दोनों ने ही मधुर गीत गा कर कळापूर्ण को प्रसन्न किया। पर मधुरलालसा का गायन अभिनवकौमुदी की अपेक्षा अधिक सुंदर था। स्वभावतः ही अभिनवकौमुदी के हृदय में मधुरलालसा के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हुई। तभी कळापूर्ण ने मृगेंद्रवाहनालय में रखी अपनी वीणा का स्मरण कर कहा—" मैं कभी एक बार और तुम दोनों का गायन सुनूँगा और तब तक एक सुंदर वीणा भी ला दूँगा।"

अभिनवकौमुदी की सहेलियों ने उसके कान भरे कि, उसका अपमान करने के लिए ही यह सब किया गया है। अभिनवकौमुदी क्रुद्ध हो रूठ गयी। शयनगृह में पति के आने पर उसने अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी किफ़ायतपूर्ण ! एक ही बार ब्रश करने से

कोलगेट डेन्टल क्रीम

८५ % तक

दंत-क्षय और दुर्गंध-प्रेरक जीवाणु ख़त्म कर देता है !

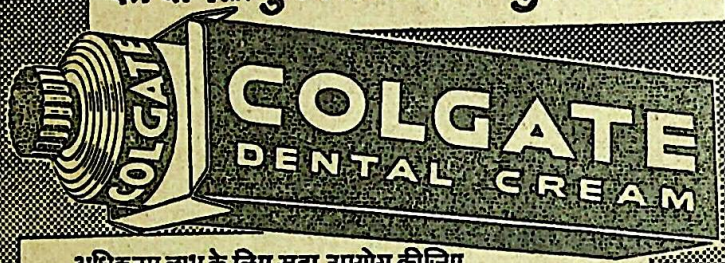

अधिकतम लाभ के लिए सदा उपयोग कीजिए

कोलगेट टुथ ब्रश

वर्षोंका दीर्घ अनुभव

जम्मी पिछले ४५ वर्ष से बच्चों की तिल्ली-जिगर की बीमारी के इलाज के विशेषज्ञ हैं। प्रति वर्ष वे हजारों बच्चों को मृत्यु से बचाते हैं। शीघ्र ही जम्मी से सलाह लीजिए और उनके विशाल अनुभव से लाभ उठाइए।

जम्मी का लिवरक्योर

बच्चों की तिल्ली-जिगर की शिकायत के लिए जम्मी के डाक्टर प्रति मास सब बड़े शहरों का दौरा करते हैं। उनके कार्यक्रम की सूचना प्राप्त कीजिए।

जम्मी वेंकटरमणैया एण्ड सन्स
प्रधान कार्यालय-मद्रास
शाखाएँ: बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, नागपुर, बंगलोर, विजयवाडा, तिरुचिरापल्ली, और कुम्भकोणम

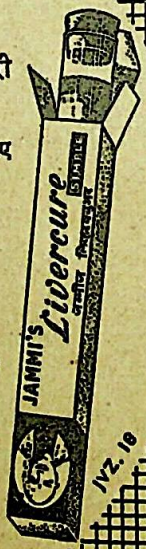

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रणय-कोप का भी परिचय दिया। कारण
न कळापूर्ण ने अभिनवकौमुदी को
न दिया—"मैं जो वीणा लानेवाला
उसे तुम्हीं को समर्पित करूँगा।"

यह समाचार जब मधुरलालसा को मिला, तो वह कुपित हो गयी। उसे भी अनेक प्रकार से समझा-बुझाकर कळापूर्ण ने वचन दिया—"तुम्हारे लिए मैं समस्त राजाओं के किरीटों में सुशोभित रत्नों को लाकर नूपुर बनवाऊँगा।"

[८]

अभिनवकौमुदी के लिए वीणा तथा मधुरलालसा के लिए नूपुर लाने के विचार से कळापूर्ण दिग्विजय करने निकले। पास-पड़ोस तथा दूर के गौड़, कलिंग, द्रविळ, चोळ, पांडिय आदि सभी राजाओं को उन्होंने पराजित किया। उन सब पराजित राजाओं से रत्नाभूषण एवं उनके नवरत्नखचित मुकुट लेते हुए वे मृगेंद्र-वाहनालय में गये और वीणा लेकर अपनी राजधानी लौट आये।

उनके नगर-प्रवेश करते समय वह नगर अलकापुरी को भी मात करनेवाले वैभव तथा अलंकारों से शोभायमान था। अपने प्रतापी एवं यशस्वी सम्राट् की नगरवासियों ने स्तुति की। उनके दर्शनों के लिए लोग दौड़ पड़े। उस समय का वह दृश्य वस्तुतः अभूतपूर्व ही था—

क्षोणितलेंद्रु जूड नोक कोम्म
वडिवरतेंचियुल्लस
द्वेणिभरंबुतो मोगपुतीगेवलग्नमु-
नदमर्रचि, यो
ड्डाणमु तीगेगानिडि, मेडन्
वलगोन्नदि चाल कड्डमै
पाणुल नुंड गौनु मरिबागुग
गानुक वेट्टु कैवडिन्।

—सम्राट् को देखने नर-नारी वेतहाशा दौड़े आये। एक बाला तो इस उल्लास में अपनी सुध-बुध भी इस तरह खो बैठी कि, कंठ में धारण करनेवाली मालाओं को उसने कटि-प्रदेश में खोंस लिया, कमरबंद को गले में डाल लिया और अपने सुकोमल करों को कटि-प्रदेश पर रख अपने सम्राट् को ऐसे निहारती रही, मानो वह स्वयं को उन्हें भेंट करने जा रही हो। उसके खड़े होने की मुद्रा ही ऐसी थी।

कळापूर्ण ने अभिनवकौमुदी को वीणा दी और फिर मधुरलालसा के पैरों में नूपुर पहनाने का उत्सव मनाया गया। मधुरलालसा उस उत्सव के लिए विशेष रूप से अलंकृत की गयी। बाल्यावस्था का रत्नहार उसके गले में शोभायमान था। नूपुर पहनाने स्वयं सत्यदात्म आये। इधर रत्नहार कंठ में धारण करते ही मधुरलालसा में सर्वज्ञता का उदय हुआ। उसने अपने अपूर्व ज्ञान से सत्यदात्म को 'मामा' कह कर सम्बोधित किया। इस पर विस्मित हो सत्यदात्म ने अपनी वास्तविक कथा का परिचय देने की प्रार्थना की।

मधुरलालसा सबके समक्ष ही सत्यदात्म की कथा कहने लगी—

"प्राचीन काल में महाराष्ट्र में 'सुग्रह'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामक एक प्रतापी राजा राज्य करते थे। सत्यदात्म उन्हीं का पुत्र है। सत्यदात्म की बहन ही रूपानुभूति है। सुग्रह ने कृष्ण भगवान् की उपासना कर रत्नहार प्राप्त किया। भगवान् कृष्ण ने सुग्रह के हाथ में उस रत्नहार को देते समय उन्हें बता दिया–'किसी भी ब्राह्मण के मन को दुखाओगे, तो यह हार तुम्हारे पास से चला जायेगा।'

"सुग्रह पास के एक मंदिर में पहुँचे। वहाँ की सुंदर मूर्तियों को देख, वे मुग्ध हो गये। इसी बीच 'वाचय' नामक एक मुनि वहाँ आये। उस तपस्वी ने एक अत्यंत सुंदर नारी-मूर्ति को देखा और उस शिला-प्रतिमा पर आसक्त हो, उसका आलिंगन किया। उसी समय उनकी दृष्टि उस मंदिर में आये हुए सुग्रह पर पड़ी। मुनि ने सोचा कि, इसने अवश्य मेरी चेष्टा देख ली होगी। यह सोच कर पागल का अभिनय करते हुए उन्होंने अपने उस कृत्य को ढँकने के लिए सभी प्रतिमाओं का आलिंगन किया। सुग्रह ने यह देखा, तो ठहाका मार कर हँस पड़े। तपस्वी स्वभावतः ही बड़ा दुःखी हुआ और इसी से सुग्रह का रत्नहार कृष्ण के कथनानुसार उसी क्षण अदृश्य हो गया। इधर तपस्वी ने भी, सुग्रह पर क्रुद्ध हो, शाप दिया–'तुम पागल हो जाओगे और तुम्हें किसी बात का स्मरण नहीं रहेगा।'"

यह सुन सत्यदात्म ने मधुरलालसा से पूछा–"तुमने यह कहानी मुझे पहले ही क्यों नहीं बतायी?" मधुरलालसा ने उत्तर दिया – "यह रत्नहार मुझसे अ[illegible] हो गया था। इसलिए मुझमें सर्वज्ञता [illegible] रही। यह उसी की महिमा है। [illegible] इस समय जो मैं यह वृत्तांत बता रही हूँ, वह इस हार के प्रभाव से ही!"

फिर मधुरलालसा ने आगे की कथा कही- "यह हार सुग्रह के हाथों से गायब होकर वापस कृष्ण के पास पहुँचा। कृष्ण भगवान् के सान्निध्य में नारद के साथ जाकर जब मणिकंधर ने कृष्ण को प्रसन्न किया, तो कृष्ण भगवान् ने हार मणिकंधर को दे दिया। मणिकंधर ने रत्नहार अलघुव्रत को दिया। अलघुव्रत ने उस हार को पुनः कळापूर्ण को दिया।" इस प्रकार उस हार का सारा वृत्तांत सुना कर मधुर-लालसा उसे कळापूर्ण को देने लगी; किंतु कळापूर्ण ने सस्नेह कहा–"यह तुम्हारी ही सम्पत्ति है, मधुरलालसे!"

वर्षों कळापूर्ण ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ सुखपूर्वक राज्य किया। और, एक दिन मधुरलालसा से जब उन्होंने 'लक्ष्मी-नारायण-संवाद' नामक कथा सुनी, तो उन्हें सांसारिक जीवन से विरक्ति हो गयी। वे उसी क्षण से प्रभु-प्रार्थना में लीन हो गये और उनके जीवन के बाकी दिन अपनी प्रजा के लिए सब प्रकार की सुख-सुविधा की व्यवस्था करने में ही बीते। वस्तुतः कळापूर्ण का चरित्र बड़ा आदर्श और प्रेरक था। प्रजा तो उन्हें अपना 'भगवान्' ही समझती थी!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वापुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई–२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

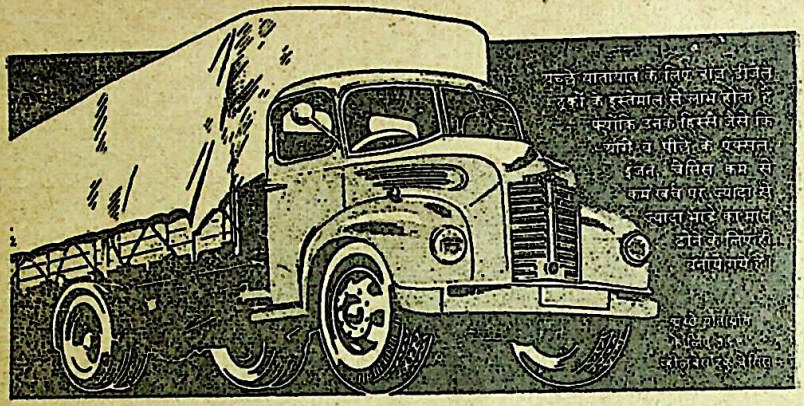

आज

डीजल

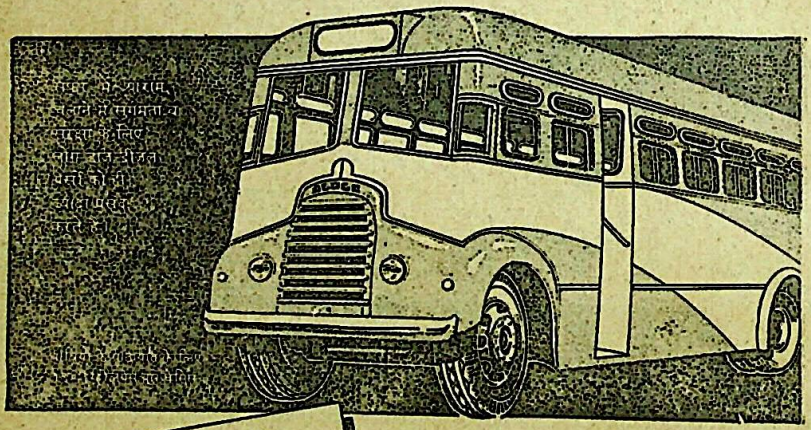

प्रगतिशील निर्माणकर्त्ता

दि प्रीमियर आटोमोबाइल्स लि.

बम्बई

अपने निकटतम् विक्रेता से सम्पर्क स्थापित कीजिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक पड़ोसी से

जमशेदपुर और राउरकेला के बीच आज जो लोगों का आवागमन हो रहा है, यह स्वाभाविक ही है क्योंकि इस समय जितने इस्पात के कारखाने बन रहे हैं उनमें राउरकेला ही भारत की पहली इस्पात-नगरी जमशेदपुर के सब से नजदीक है।

अगर इस आने-जाने के जरिये अनुभवों और नये-नये विचारों का आदान-प्रदान हो तो आश्चर्य की कोई बात नहीं क्योंकि जमशेदपुर पचास वर्षों

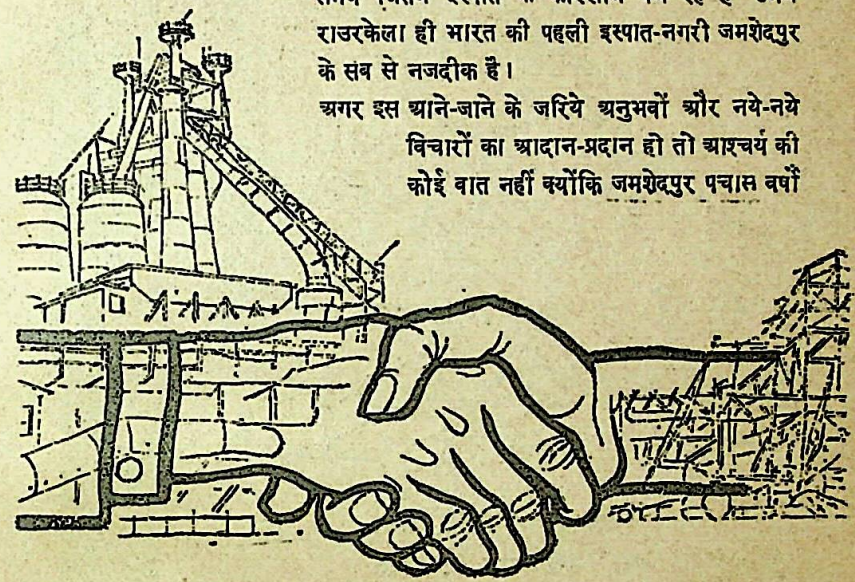

से इस्पात बनाता आ रहा है। राउरकेला के लिए इंजीनियरों और कारीगरों को शिक्षा देने का मौका मिलना जमशेदपुर के लिए बड़ी खुशी की बात है। इस समय जमशेदपुर में १५० कार्यकर्त्ता शिक्षा पा रहे हैं जिनमें ऊँचे अफ़सरों के साथ साधारण कारीगर भी हैं। जमशेदपुर के बहुत से पुराने कर्मचारी जो अब राउरकेला में हैं मित्रता के इस बन्धन को दृढ़ बना रहे हैं। जमशेदपुर इन्हें और इनके साथियों को शुभकामना और अभिवादन भेजता है।

राउरकेला के प्रति शुभकामना

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड

TN 1500

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यार्थी के लिए

एक आदर्श कलम

क्लास नोट्स, स्वच्छ घरेलू पाठ, परीक्षाओंके लिए, उसे एक विश्वस्त आसानीसे लिखनेवाली कलम चाहिये।

- स्याही रुकती नहीं
- नियन्त्रित प्रवाह
- चलनेमें आसान

Price. Rs. 6-12-0

सच ही, उसकी पसन्द है

चे म्पि य न (रजिस्टर्ड) ७७७

सब की मन पसन्द

गुजरात इन्डस्ट्रीज प्राइवेट लि.

बम्बई-२.

RPC

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

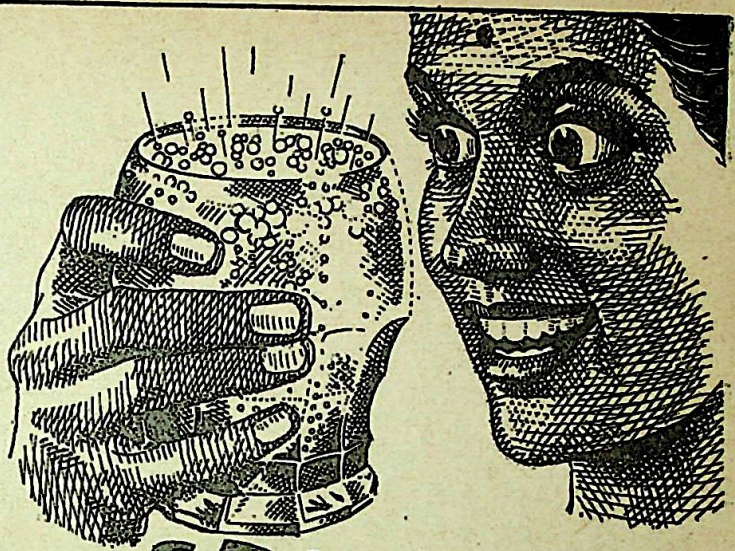

जोश भरा ईनो पेट की ख़राबी को आठ सेकण्ड में दूर करता है!

गला जलना, पेट अफरना आदि अपच के रोगों में तत्काल गुणकारी है।

यदि आपको पेट सम्बन्धी कोई शिकायत है तो जोश भरे ईनो फ्रूट साल्ट का एक ग्लास पीजिये। आठ सेकण्ड में पेट की गड़बड़ी दूर हो जायगी। खाली पेट थोड़ी अधिक मात्रा में लेने से यह हलके, असरकारक जुलाब का काम करता है। हमेशा ईनो की एक शीशी अपने घर में रखें।

जोशीला अम्लनाशक

ईनो 'फ्रूट साल्ट'

'ईनो' और 'फ्रूट साल्ट'
ये दोनों शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं।

ग्रूप लेबोरेटरीज (इण्डिया) प्राइवेट लि.

अब नयी सीलबन्द शीशियों में बिकता है

(२ साइज़ की शीशियाँ मिलती हैं)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाद और शक्तिदायी तत्वों का आदर्श मिश्रण!

पूर्ण मलाईदार दूध, कोको के संपूर्ण तत्व,
गन्ने की शुद्ध शक्कर---ये हैं वे पोषक पदार्थ
जिनके फलस्वरूप साठे की चॉकलेटों
की हर चखती स्वादिष्ट एवं शक्तिदायी
तत्वों से भरपूर रहती है। बच्चे-बूढ़े सभी इन
अत्यधिक स्वादिष्ट चॉकलेटों का आनन्द ले
सकते हैं। खाने पर आप कहेंगे कि
साठे की चॉकलेटों से ज़्यादा
अच्छी चॉकलेटें और
कोई नहीं!

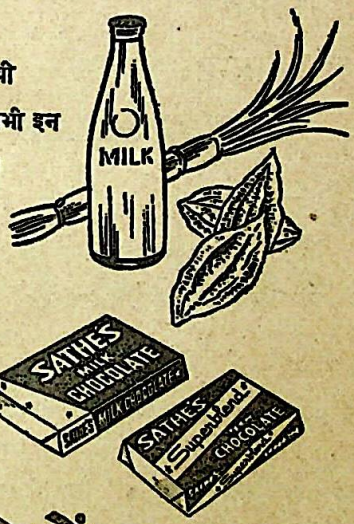

साठे की चाकलेटें

"दुनिया की सर्वोत्तम चाकलेटों के दर्जे की!"

साठे बिस्कुट एण्ड चाकलेट कं० लि० पूना-२

HIN HE205 No.76

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

FOR THE **FIRST TIME** IN INDIA

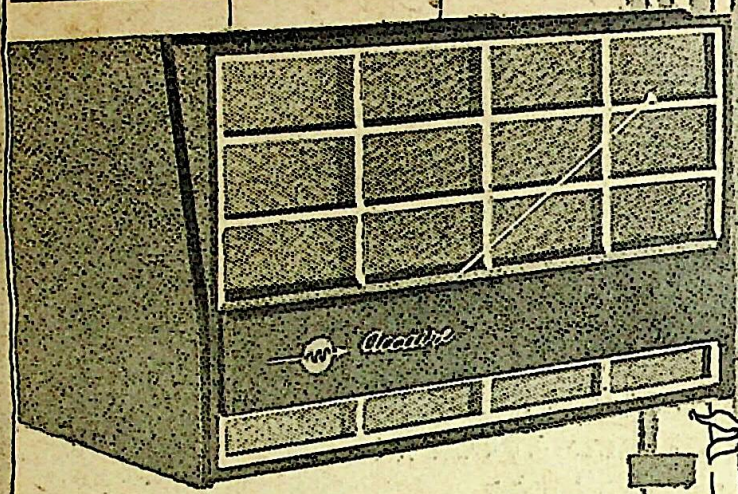

A RANGE OF

SIX COLOURS FOR YOUR CHOICE

Accaire AW—101

ROOM AIRCONDITIONER

Pick your new Accaire in a colour that blends with your room. Its unique design and compact construction makes it an excellent piece of furniture to adorn any room. What's more, it is made by an organisation with over a quarter century of experience in airconditioning.

OTHER ADVANTAGES INCLUDE :

- Better cooling capacity
- More silent operation
- Lower running cost
- Better service after sale
- One year's guarantee

Manufactured by

AIR CONDITIONING CORPORATION PRIVATE LTD.

Pioneers in Airconditioning in India

CALCUTTA • BOMBAY • NEW DELHI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

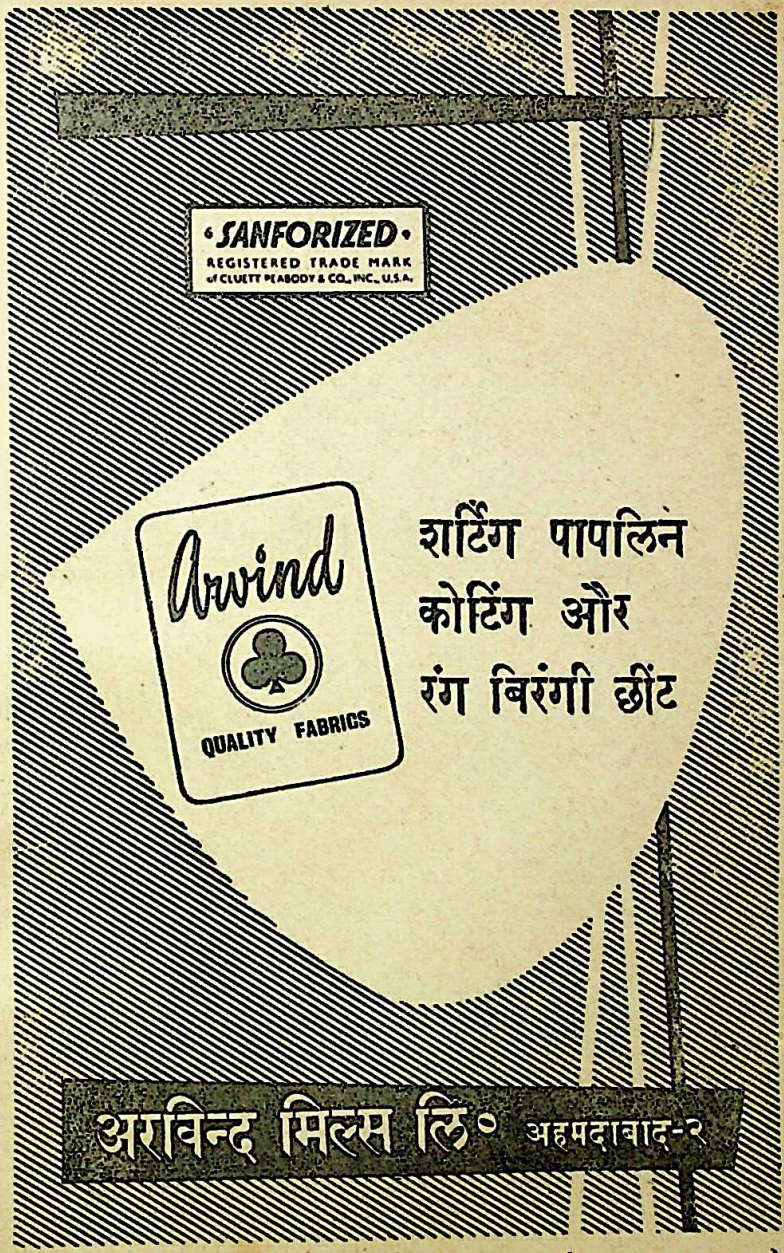

REGISTERED USER OF THE TRADE MARK 'SANFORIZED'.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केश हैं या कौवे के घोंसले !

धूल, गर्दी, खुश्की तथा नई-नई मल मिलकर अनायास ही आपके सुन्दर कौवे के घोंसले जैसे ही भद्दे हो सकते हैं। सुन्दर केशों की अधिकारिणी होने के लिये आपको उनकी देखभाल करनी ही पड़ेगी। जैसेतैसे सर में थोड़ा सा तेल डालकर जल्दी जल्दी स्नान करने से केशों को उनके साथ में बंधित होना पड़ता है तथा वे सुदृढ़ केश अपना साथ न पाकर मुरझाकर असमय में ही वार्द्धक्य को निकट लाता है। केशों की उचित देखभाल के लिये आपको कुछ अत्यावश्यक नियमों का पालन निश्चय ही करना पड़ेगा, जैसे केशों के मैल साफ कर, कंघी कर, फिर गूंधना, सप्ताह में एक दिन सर में साबुन लगाना आदि। प्रतिदिन नियमित रूप से कम से कम दस मिनट केशों के जड़ों को जवाकुसुम से मालिश करना न भूलें। जवाकुसुम वह प्रसिद्ध तेल है जो केवल मात्र सुगन्ध वितरण तथा स्नायु को स्निग्ध ही नहीं करता, बल्कि साथ ही साथ आपके केशों का स्वास्थ्य सुधारकर, उसे सुन्दर एवं सजीव बनाता है।

जवाकुसुम

केश तैल

सी. के. सेन एण्ड कं० प्राइवेट लिमिटेड
जवाकुसुम हाउस, ३४, चित्तरंजन एभिन्यू, कलकत्ता-१२
११७, आर्मेनियन स्ट्रीट, मद्रास-१

सुलेखा पेन

REGD.

संतोष जनक कार्य के लिए

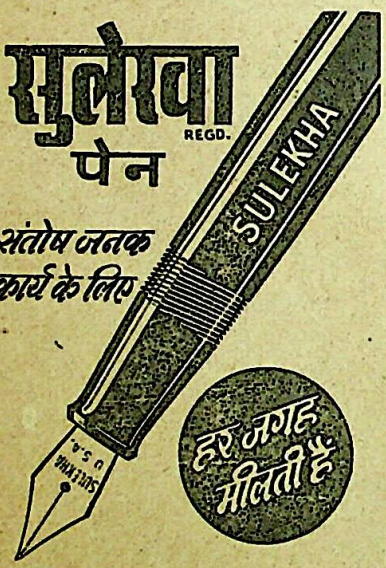

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :
पेन मेन्स इण्डस्ट्रियल सर्विसेज़
कांदीवली, बम्बई (एस० डी०)

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग—उर्दू)

मूल्य ८)

संपादक—पं. रामनरेश त्रिपाठी

उर्दू पढ़ना न आते हुए भी उर्दू शायरी का आनन्द लेने के लिए उर्दू शायरी हिन्दी में पढ़िये

प्रकाशक

नवनीत प्रकाशन लि. बम्बई-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी व्यापार में वास करती हैं—

प्राचीन समय में समुद्र-व्यापार द्वारा भारत ने अतुल धन का अर्जन किया।

आजकाल सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी लि० इस प्राचीन एवं परम्परागत व्यापार द्वारा देश को सम्पन्न बना रही है।

यह कम्पनी अपने माल-जलयानों एवं यात्रा-जलयानों द्वारा देश और विदेश के बन्दरगाहों के बीच यातायात को सुलभ और शीघ्र बनाने में दृढ़ संकल्प है।

सिंधिया के जलयान भारत की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

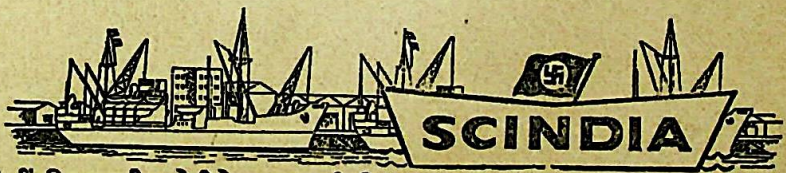

दि सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी लि०, सिंधिया हाऊस, बलार्ड एस्टेट, बम्बई—१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये बम्बई राज्य की
द्वितीय पंचवर्षीय योजना

सत्यमेव जयते

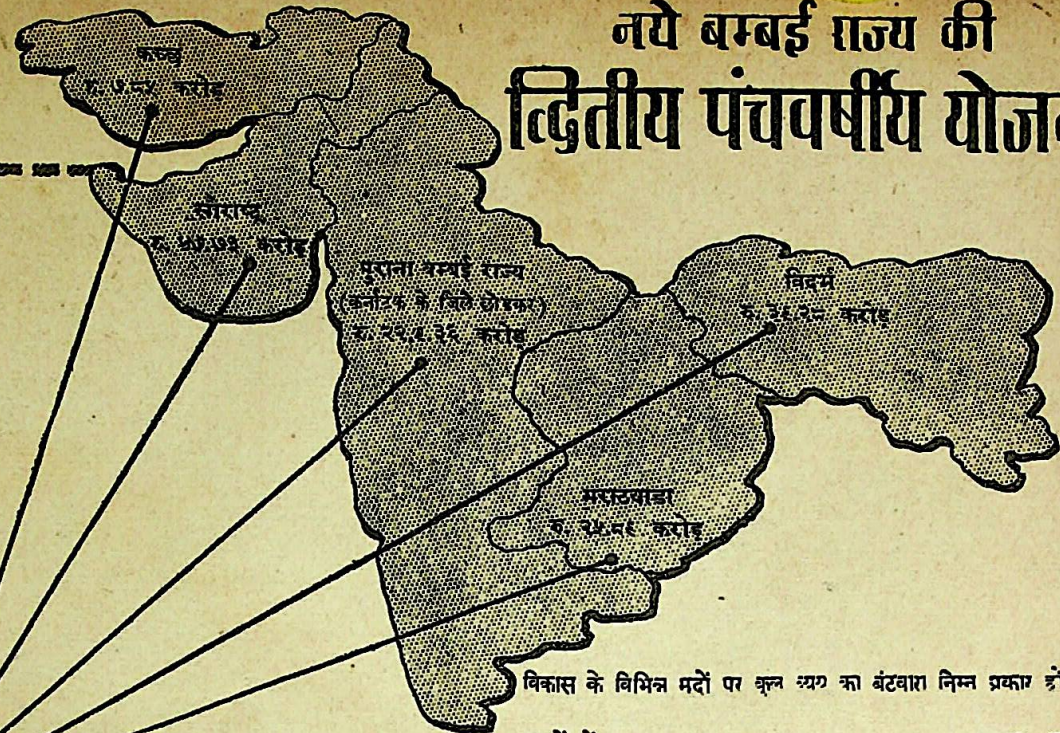

विकास के विभिन्न मदों पर कुल व्यय का बंटवारा निम्न प्रकार होगा :–

	रु. लाखों में		रु. लाखों में
१) कृषि और सामुहिक विकास	८,५२८.०८	६) स्वास्थ्य	२,७४६.०५
२) सिंचाई और बिजली	१३,७६६.५२	७) आवास	१,८१७.२१
३) उद्योग और खानें	१,३१०.५७	८) अन्य समाज सेवाएं	७६५.२२
४) यातायात और संचार	२,६२४.४१	९) वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध आदि	८०३.४२
५) शिक्षा	२,३५७.१६		

आबू तालुके के लिये की गई इन व्यवस्थाओं के लिये कुल रकम में से ४१ लाख ५५ हजार रुपये की कटौती की जायगी क्योंकि आबू तालुका राजस्थान राज्य में मिला दिया गया है।

बम्बई सरकार के प्रकाशित विभाग कि ओर से प्रकाशि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रा के शिष्टाचार

★ सफाई की गणना देवत्व के बाद की जाती है । सफाई की आदत डालिये । खाद्य पदार्थों के कचरे, फलों के छिलके तथा पानी आदि प्लैटफार्म पर या डिब्बे में न फेंकें । प्लैटफार्म पर तथा डिब्बों में रखे कूड़े के बरतन को प्रयोग में लायें ।

★ प्लैटफार्म पर इधर-उधर थूकना अस्वास्थ्यकर है । यह बुरी आदत है । कृपया थूकदान का प्रयोग कीजिये ।

★ रेलवे-स्टेशनों पर ठंडा तथा साफ किया पानी पीने के लिए मिलता है । किसी अन्य काम के लिए उसका उपयोग न करें ।

★ सीट पर पैर रख कर बैठने से दूसरे यात्री बुरा मानेंगे । कृपा करके डिब्बे में ठीक से बैठें ।

★ अपने भारी सामान को 'ब्रेक-वान' में 'बुक' करा दें तथा अपने साथ के यात्रियों और स्वयं अपने लिए डिब्बे में अधिक स्थान की गुंजायश करें ।

★ यदि साथ के यात्री सिगरेट पीने के लिए मना करें तो ट्रेन में सिगरेट पीना जुर्म है । जब साथ के यात्री मना करें, या बहुत भीड़ हो, या दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द हो, तो सिगरेट न पियें ।

★ रेलवे राष्ट्रकी सम्पत्ति है । रेलवे की सम्पत्ति को क्षति पहुँचाने वाले या चोरी करने वाले व्यक्ति को पहचान लेकर उसकी सुरक्षा करने में आप हमारी सहायता कर सकते हैं । यूनीफार्म–धारी रेलवे कर्मचारी को –जो ड्यूटी पर हों– उनकी सूचना देनी चाहिए । गैर कानूनी रुप में खतरे की जंजीर खींचने वाले के साथ भी इसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए ।

मध्यम तथा पश्चिमी रेलवे द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

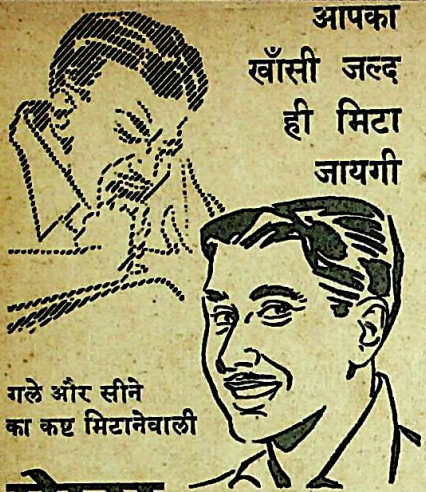

आपका खाँसी जल्द ही मिटा जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियाँ चूसिए और फिर देखिए कि इनकी आरामदेह भाप से दर्द किस खूबी से मिटता है तथा गले का दर्द, ब्रांकाइटिस, खाँसी व सर्दी पैदा करनेवाले कीटाणु कितने जल्द नष्ट होजाते हैं। पेप्स फ़ौरन आराम पहुँचाकर कष्ट को मिटाती हैं।

इनमें कोई नुकसानदेह दवाएँ नहीं होतीं ये बच्चों को बेखटके दी जा सकती हैं

ब्रांकाइटिस, गले का दर्द, नज़ले, जकड़न, सर्दी और खाँसी में शीघ्र आराम पहुँचाती हैं

सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ प्राप्य

FPY 54 HIN

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट:
केम्प एन्ड कं० लि०
पो. बॉक्स ९३७

हमारे प्रकाशन

उपन्यास

बावन पत्ते—कृष्णचन्द्र	५.५०
नगरसुंदरी—'धूमकेतु', अनु. किशोरी-रमण टंडन	४.२०
महामात्य चाणक्य—'धूमकेतु'	४.५०
चौलादेवी—'धूमकेतु', अनु. वीरेन्द्रकुमार जैन	५.५०
राज संन्यासी—'धूमकेतु', अनु. श्यामू संन्यासी	५.५०
भगवान् बुद्ध की आत्मकथा—परदेशी	४.००
बीरबल—रामचंद्र ठाकुर	४.५०
मीरां प्रेम दीवानी—रामचंद्र ठाकुर	५.००
नर्तकी—उमाकान्त	५.५०
सर्व मंगला—मामा वरेरकर, अनु. आ. विभुदेव	३.००
नया रास्ता—रतीलाल त्रिवेदी, अनु. दर्शन	३.७५
काला पानी—ईश्वर पेटलीकर, अनु. विभुदेव	३.००
प्रलय—रमणलाल देसाई अनु. मगनलाल जैन	५.५०

कहानी-संग्रह

नगीने—पं. सुदर्शन	३.००
पनघट—पं. सुदर्शन	३.५०
सुदर्शन-सुधा—पं. सुदर्शन	४.००
पुष्प-लता—पं. सुदर्शन	२.५०
दीपाली—सं. पं. सुदर्शन	२.५०
पाप का पुण्य—रावी	१.७५
मेरी श्रेष्ठ कहानी—(लब्धप्रतिष्ठ कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह)	४.००
श्रेष्ठ हास्य-कथाएँ—हास्य एवं व्यंग्य से परि-पूर्ण कथाओं का संग्रह)	४.००
विद्रोही आत्माएँ—खलील जीब्रान, पं. सुदर्शन	२.७५
सपनों का टुकड़ा—कुलभूषण	२.५०

वोरा एण्ड कं. पब्लिशर्स प्रा. लि.
३, राउन्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

so light
so refreshing...
so utterly lovely

FACE POWDER

MAX FACTOR

HOLLYWOOD

It puffs on so easily, blends so perfectly... adheres so well, you'll really be amazed. Yes, the exquisite matching shades of Max Factor Hollywood Face Powder... its silky-soft texture and its airy lightness ... offer you a truly new complexion sensation that will make you look lovelier... feel better, too.

Available at all Leading
Cosmetic and General Stores

GLYNIS JOHNS
in **RKO'S**
"ALL MINE TO GIVE"

SOLE AGENTS IN INDIA: ORIENT COSMETICS PRIVATE LTD: MADRAS, BOMBAY, CALCUTTA.

Ayers : TFS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को विशेष प्रिय

गोला

मिठाइयाँ
और
टाफ़ियाँ

गोला मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ जितनी स्वादिष्ट हैं, उतनी ही पौष्टिक भी। प्राकृतिक 'ए' 'बी,' 'बी₂', और 'सी' विटामिनों से परिपूर्ण होने के कारण वे बालकों के स्वाभाविक शरीर-विकास में बड़ी अमूल्य सहायता देती हैं।

दी हिन्दुस्तान शूगर मिल्स लि.
५१, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १

A.S.P.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

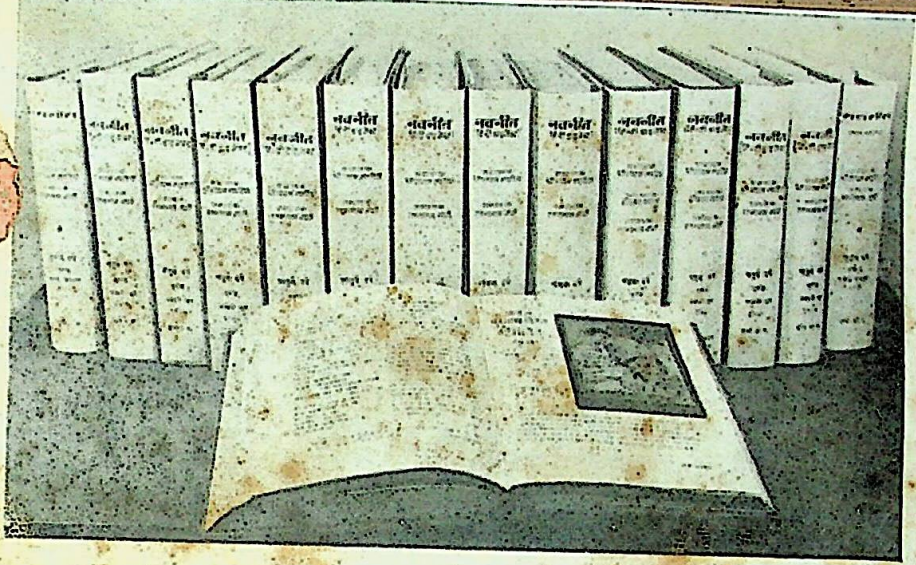

नवनीत की जिल्दों का छोटा-सा सुन्दर पुस्तकालय

'नवनीत' हिन्दी में अपने ढंग का सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्र माना जाता है। प्रतिमास प्रकाशित 'नवनीत' की सामग्री इतने स्थायी उपयोग व सर्वकालीन रुचि की होती है कि, उसका संग्रह प्रत्येक घर व पुस्तकालय के लिए वांछनीय है। नये ग्राहक पुराने अंकों को प्राप्त कर पूरा 'सेट' बना सकते हैं। जुलाई १९५२ से दिसम्बर १९५७ के छः-छः अंक (जनवरी-जून और जुलाई-दिसम्बर) को एक एक सुन्दर जिल्द में बँधवा दिया है। पिछले कुछ महीनों में बहुत से ग्राहकों ने इन जिल्दों को मँगवाया है। कुछ 'सेट' बच गए हैं—जिन पाठकों के आर्डर पहले आयेंगे उनको दे दिये जायेंगे।

जिल्दों का मूल्य

साधारण संस्करण ५)
विशेष संस्करण ७॥)
एक जिल्द पर १=) डाक खर्च लगेगा—जो ग्राहक को नहीं देना पड़ेगाः हम दे देंगे।

आर्डर इस पते पर भेजियेः—
वितरण—व्यवस्थापक
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड
३४१ तारदेव, बम्बई—७

संसार के नूतन [illegible]रातन ज्ञान—विज्ञान का सर्वोत्तम प्रतिनिधि

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B -.6248

जुहू बीच पर एक महल...

इन स्वस्थ, गोलमटोल और प्यारे-प्यारे हाथों का कमाल देखिए...रेत थोप-थोप कर और थपथपाकर जुहू बीच पर एक महल का निर्माण किया जा रहा है! और यहाँ से कुछ ही मील दूर कुर्ला, बम्बई में दूसरे हाथ भी रेत ही से निर्माण-कार्य कर रहे हैं...वे हमारे स्टील कास्टिंग्स के लिए साँचे तैयार कर रहे हैं। विशेष प्रकार की रेत और विशेष प्रकार के ही हाथ; क्योंकि साँचों में रत्तीभर भी फ़र्क न आना चाहिए। यह कौशल वर्षों के अनुभव से ही प्राप्त होता है।

हम सगर्व जाहिर करते हैं कि हमने सुप्रसिद्ध ब्रिटिश स्टील फाउण्ड्री, दी डेविड-ब्राउन इण्डस्ट्रीज़ लि. के साथ एक दीर्घकालीन यांत्रिक सहायता सम्बन्धी समझौता किया है। इस समझौते का दोहरा उद्देश्य है: एक तो यह कि हम दिसम्बर १९५८ तक अपने स्टील कास्टिंग्स का उत्पादन ३२५ टन प्रति मास से बढ़ाकर ६५० टन प्रतिमास कर सकें, और दूसरा यह कि नये उत्पादनों का विकास कर हम अपने स्टील कास्टिंग्स की किस्में भी बढ़ा सकें।

इस्पात की प्रगति का प्रतीक **मुकन्द**

मुकन्द आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स लि. कुर्ला – बम्बई-३७

मैनेजिंग एजेण्ट्स: जीवन प्राइवेट लिमिटेड ५१, महात्मा गान्धी रोड, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फरवरी

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

Digitized by eGangotri

जरा मेरी सीधी पीठ और मजबूत हाथ पांव को तो देखिये

जब माँ ने खुद पिलाना बंद किया तो मेरे लिये शिशुओंका अत्युत्तम दुग्ध खाद्य "ओस्टरमिल्क" ही खरीदा, जो शुद्ध पौष्टिक और बहुत ही आसानीसे पचनेवाला है। अब मैं माँ का दूध पीनेवाले, किसी भी शिशु के इतना ही सुदृढ़ और तंदुरुस्त हूँ।

मैं ओस्टरमिल्क का शुक्र गुजार हूँ।

OSTERMILK

ओस्टरमिल्क माँ के दूध के समान

बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · नई दिल्ली

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरते हुए बाल

आज की इस सामान्य तकलीफ का मुख्य कारण बालों की जड़ों को मिलनेवाले पोषक तत्वों की कमी है—जो.....

केशा

जैसा, अनेक सफल प्रयोगों के बाद तैयार किया हुआ तेल इस्तेमाल करने से आप सदा के लिए दूर कर सकते हैं। "केशा" बालों की वृद्धि करनेवाले जरूरी और सब पोषक तत्वों से बना है और इसीलिए जनता में ये इतनी जल्दी लोकप्रिय हो गया है।

★

सोल एजेन्ट :—

एम. एम. खंभातवाला रायपुर अहमदाबाद

एजेन्ट :—

सी. नरोत्तम एन्ड कं. मंगलदास रोड बम्बई—२. टे. नं. ३०५७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यार्थी के लिए

एक आदर्श कलम

क्लास नोट्स, स्वच्छ घरेलू पाठ, परीक्षाओंके लिए, उसे एक विश्वस्त आसानीसे लिखनेवाली कलम चाहिये।

- स्याही रुकती नहीं
- नियन्त्रित प्रवाह
- चलनेमें आसान

Price.
Rs. 6-12-0

सच ही, उसकी पसन्द है

चेम्पियन (रजिस्टर्ड) ७७७

सब की मन पसन्द

गुजरात इन्डस्ट्रीज प्राइवेट लि०
बम्बई-२.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...लेकिन अभी नहीं। जब मैं बड़ा होजाऊँगा तो अपने पिताजी की तरह एक बड़ा ट्रक चलाऊँगा। मैं माल से भरी लॉरी में ड्राइवर की जगह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति की हैसियत से बैठूँगा। यह काम विशेष महत्व का होगा; क्योंकि मैं अपनी लॉरी में खाद्यान्न और ऐसी चीज़ें ढोकर लेजाऊँगा जिनकी ज़रूरत लोगों को प्रतिदिन रहती है। मैं अपने पिता की ही तरह हमेशा बर्मा-शैल सर्विस स्टेशन से तेल लिया करूँगा और उसी छोटी-सी चाय की दुकान से चाय पिया करूँगा जहाँ सभी ड्राइवर चाय पीते हैं। बड़ा होकर मैं वैसी ही ट्रक लूँगा जैसी कि पिताजी के पास है। गाड़ी चलाने की मेरी वास्तविक बारी तो तभी होगी।

कड़ा काम करनेवाले जितने भी वाहन सड़कों पर दिखायी देते हैं उनमें से बहुतों में बर्मा-शैल द्वारा बेचा जानेवाला हाई स्पीड डीज़िल तेल ही इस्तेमाल होता है। इसके अलावा शैल के विभिन्न प्रकार के रोटेला तेल सभी किस्मों के डीज़िल इंजनों के रक्षाकारी ल्यूब्रीकेशन के लिए आदर्श हैं। हाई स्पीड डीज़िल और रोटेला तेल इस देश में डीज़िल-शक्ति की वृद्धि और किफायती यातायात संबंधी विकास के उन महत्वपूर्ण कार्यों में सहायता कर रहे हैं जिनपर द्वितीय पंचवर्षीय योजना की सफलता बहुत-कुछ निर्भर है। एच.एस.डी. और रोटेला तेल सदा ही विश्वसनीय हैं और हमारी राष्ट्र-व्यापी वितरण तथा सेवा संस्था के द्वारा हमेशा ही प्राप्य हैं।

बर्मा-शैल...भारत के जीवन का एक अंग है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुखद उपहार

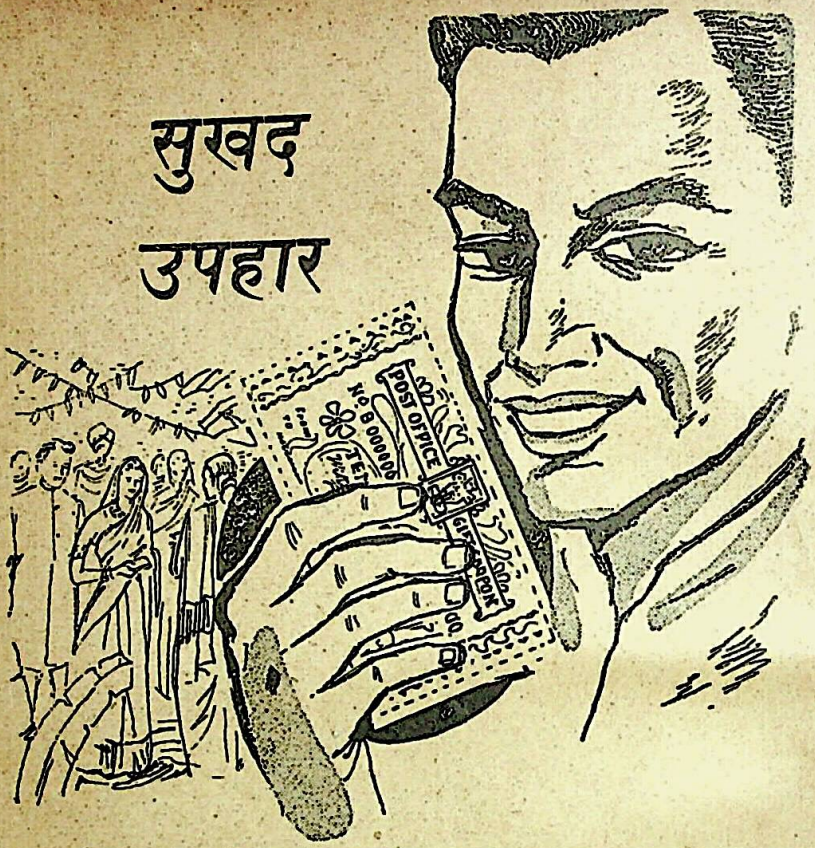

राष्ट्रीय बचत उपहार पत्र से दुहरा लाभ है:—

★ हीरे, जवाहरात, वस्त्र या नकद रुपये की तरह यह प्राप्तकर्ता के पास अस्थायी रूप में नहीं रहता अपितु दीर्घकाल तक स्मृति बनाये रखने का साधन है।

★★ इस में प्रयुक्त धन देश और देशवासियों की आर्थिक समृद्धि की नींव पक्की करने के काम आता है।

जन्मदिवस, विवाहोत्सव, वार्षिकोत्सव या अन्य शुभावसरों पर राष्ट्रीय बचत उपहार पत्र भेंट कीजिए।

५ रुपये से १,००० रुपये तक के उपहार पत्र सेविंग बैंक के कार्य करने वाले किसी भी डाकघर से खरीदे जा सकते हैं। ये पत्र उसी राशि के १२ वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेटों के रूप में बदले जा सकते हैं।

राष्ट्रीय बचत संगठन

उपहार पत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

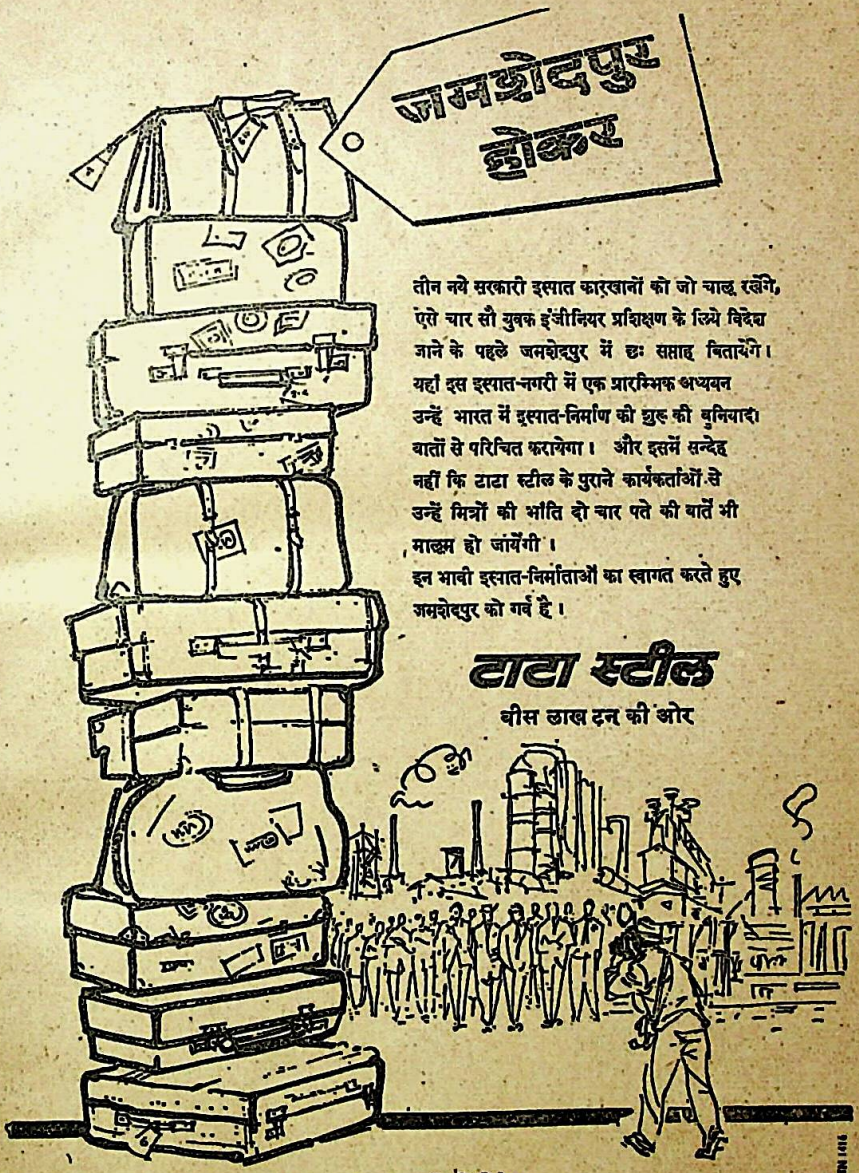

तीन नये सरकारी इस्पात कारखानों को जो चालू रखेंगे, ऐसे चार सौ युवक इंजीनियर प्रशिक्षण के लिये विदेश जाने के पहले जमशेदपुर में छः सप्ताह बितायेंगे। यहां इस इस्पात-नगरी में एक प्रारम्भिक अध्ययन उन्हें भारत में इस्पात-निर्माण की शुरू की बुनियादी बातों से परिचित करायेगा। और इसमें सन्देह नहीं कि टाटा स्टील के पुराने कार्यकर्ताओं से उन्हें मित्रों की भांति दो चार पते की बातें भी मालूम हो जायेंगी।

इन भावी इस्पात-निर्माताओं का स्वागत करते हुए जमशेदपुर को गर्व है।

टाटा स्टील

बीस लाख टन की ओर

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ीसा सिमेंट लिमिटेड

ताप अवरोधक उत्पादन :

शीघ्र ही प्रारम्भ होगा

आधुनिक उत्पादन विधि से निरन्तर भारी परिणाम में उच्चकोटि के ताप अवरोधक उत्पादन।

★ अग्नि मृत्तिका ★ कड़ा सफेद पत्थर ★ भ्राजांगिज ★ वर्णकायन ★ विसंवाहन आदि। ★ सभी प्रकार माप और आकार के मट्ठी, परिभ्रम और स्थावर वस्तुओं की सभी प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए

इस्पात, सीमेण्ट, शीशा और अन्य उद्योगों के लिए

डा० सी० ओटो एण्ड कंपनी, जर्मनी के सहयोग से

अनुसन्धान करें—

उड़ीसा सिमेंट लि०

राजगांगपुर, उड़ीसा

प्रबन्धकर्ता — डालमिया एजेन्सीज प्राइवेट लि०

O.C.H-12-57 A.I.A.B

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखूं तो... आप कितनी होशियार हैं!

क्या आप इतनी होशियार हैं कि आप एक असली पॅरेगॉन पहचान सकती हैं या आप दूकानदार की बात का ही यकीन करती हैं?

आप शायद पॅरेगॉन के बक्से में पॅरेगॉन की ही कीमत की लेबिल लगी हुई साड़ी खरीद लायें लेकिन यह भी तो हो सकता है कि वह साड़ी पॅरेगॉन न हो। एक असली पॅरेगॉन साड़ी पहचानने का तो सिर्फ एक ही तरीका है–साड़ी के दोनों पल्लों पर सुनहरे रंग में छपा हुआ PTM ट्रेड मार्क देखना कभी न भूलिये।

केवल असली पॅरेगॉन साड़ियों में यह PTM ट्रेड मार्क छपा होता है और पॅरेगॉन साड़ियां ६ गज़ की ही होती हैं...सिर्फ यह दो साधारण बातें याद रखिये और आप देखेंगी कि आप हमेशा असली पॅरेगॉन ही खरीद रही हैं... वह नाइलान साड़ी जिसमें कि सल नहीं पड़ती...जिसको कि धुलने के बाद इस्तरी की ज़रूरत नहीं...वह उत्कृष्ट साड़ी तो केवल पॅरेगॉन ही बनाती है।

आप अपनी सहेलियों और परीवार के अन्य लोगों को होशियार कर दीजिये। देखिये वह कोई दूसरी साड़ी पॅरेगॉन समझ कर न ले आयें।

PTM

PARAGON FABRICS REGD. TRADE MARK

पॅरेगॉन

नाइलॉन साड़ियाँ

पॅरेगॉन टेक्स्टाइल मिल्स्,
वरली, बम्बई-१३.

EVEREST

PT.57.17 A.HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत की धुलाई-पद्धति में क्रान्ति लानेवाला राष्ट्र का अग्रदूत परिष्कारक डेट

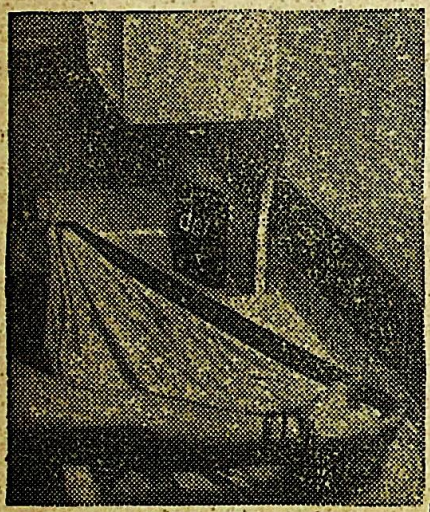

डेट एक सांश्लेषिक परिष्कारक है, वह साबुन की बुकनी नहीं हैं तथा तत्त्वतः साबुनविरहित है। किसी भी साबुन की तुलना में यह धुलाई में तेज है तथा गंदगी और चिकवाहट को पूरी तरह से हटाता है। यह आपको स्वच्छतम कपड़े के अधिक तर उपयोग तथा न्यूनतम घटाव का विश्वास दिलाता है, जो बढ़िया साबुन से भी मुमकिन नहीं है।

डेट फ़र्श, बर्तन, दीवारें आदि को भी धोता है क्यों कि वह परिष्कारक है। चाहे कपड़ा हों या फ़र्श, यह दोनो को समान कुशलता से धोता है।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि०, बम्बई

shilpi s-o-m 513 a hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोश भरा ईनो पेट की ख़राबी को आठ सेकण्ड में दूर करता है!

गला जलना, पेट अफरना आदि अपच के रोगों में तत्काल गुणकारी है।

यदि आपको पेट सम्बन्धी कोई शिकायत है तो जोश भरे ईनो फ्रूट साल्ट का एक ग्लास पीजिये। आठ सेकण्ड में पेट की गड़बड़ी दूर हो जायगी। खाली पेट थोड़ी अधिक मात्रा में लेने से यह हलके, असरकारक जुलाब का काम करता है। हमेशा ईनो की एक शीशी अपने घर में रखें।

जोशीला अम्लनाशक

ईनो 'फ्रूट साल्ट'

'ईनो' और 'फ्रूट साल्ट'
ये दोनों शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं।

ग्रूप लेबोरेटरीज़ (इण्डिया) प्राइवेट लि.

अब नयी सीलबन्द शीशियों में बिकता है
(२ साइज़ की शीशियाँ मिलती हैं)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदर्श पारिवारिक साबुन

प्रति दिन मार्गों सोप के व्यवहार से त्वचा कोमल व स्निग्ध रहती है। यह जीवाणुओं से चर्म की रक्षा करता है। मार्गों सोप की विपुल झाग रोम कूपों में प्रवेश कर शरीर को निर्मल रखती है। मधुर सुगन्ध युक्त यह आदर्श पारिवारिक साबुन कोमल से कोमलतम अंग के लिए निरापद है। शीतकालीन शुष्क आबहवा में भी मार्गों सोप ताज़गी प्रदान करता है।

मार्गों सोप

गंध विहीन नीम तैल से प्रस्तुत

प्रस्तुतकारक:

दि कैलकटा केमिकल क० लि० कलकत्ता २६

CMC-11 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवारोक
दफ़्ती के
डिब्बों में
बिस्कुट
ख़रीदिये

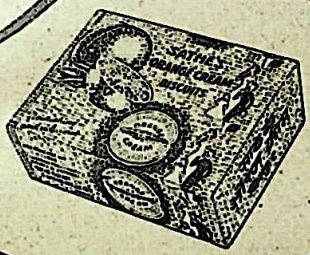

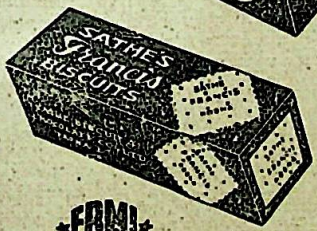

आकर्षक और
हवारोक दफ़्ती
के डिब्बों में
बिस्कुट ख़रीदकर अन्य
ऐसे पदार्थों के लिए
टीन बचाने में मदद
कीजिए जो काग़ज़ या
दफ़्ती के बक्सों में पैक
नहीं किये जा सकते ।

साठे
बिस्कुट
'करारे और स्वादिष्ट'

FBMI
FEDERATION
OF BISCUIT
MANUFACTURERS
OF INDIA

—ने बिस्कुट एण्ड चाकलेट कं० लि०, पूना-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल

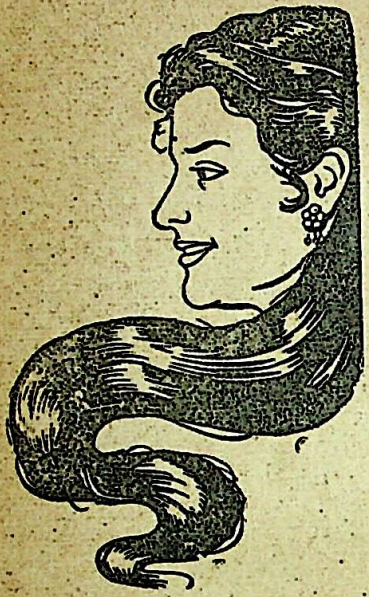

आयुर्वेदिक औषधि (रजिस्टर्ड)

सिरकी रुसी तथा गिरते बालों को रोकने के लिए एक अमूल्य हेयर टॉनिक शीघ्र ही गिरते हुए बालों को रोकता है और घने बाल उगाता है। प्राकृतिक काला रंग प्रदान करता है। सर्व ऋतु में सबके लिए उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ४/ छोटी शीशी २) रु. प्रत्येक स्थान पर मिलता है। ६/५० का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ४/- का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें। आसन चार्टः स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक खर्च सहित रु. २/- में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर किये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

दादर, (सेन्ट्रल रेलवे) बम्बई–१४

टेलिफोन : ६२८९९

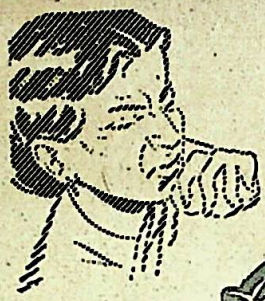

आपकी खाँसी जल्द ही मिटा जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियाँ चूसिए और फिर देखिए कि इनकी आरामदेह भाप से दर्द किस खूबी से मिटता है तथा गले का दर्द, ब्रांकाइटिस, खाँसी व सर्दी पैदा करनेवाले कीटाणु कितने जल्द नष्ट होजाते हैं। पेप्स फ़ौरन आराम पहुँचाकर कष्ट को मिटाती हैं।

इनमें कोई नुकसानदेह दवाएँ नहीं होतीं
ये बच्चों को बेखटके दी जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस, गले का दर्द, नज़ले, जकड़न, सर्दी और खाँसी में शीघ्र आराम पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

FPY 55 RIN

बम्बई के सोल एजेन्ट :
केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वसंत की प्रातः समीर-सा

आपके लिए आज भी और फिर प्रत्येक दिन !

काश्मीर बोके टेल्कम पाउडर में जादू-सी मादकता है। यह उत्कृष्ट पाउडर आपके शरीर को प्रातःकाल सी स्फूर्ति देता है और बहुत समय तक उसे सुवासित और शीतल रखता है। अतिरिक्त नमी को सोखता है....त्वचा की चिपचिपाहट और जलन को मिटाता है....और आपकी मोहकता तथा लावण्य को निखारता है।

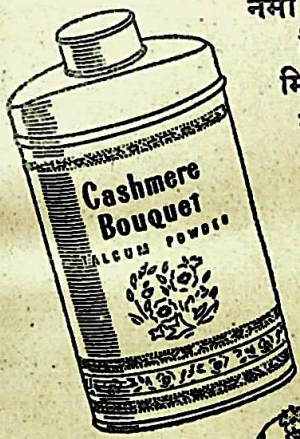

काश्मीर बोके

टेल्कम पाउडर

पुरुषों को मुग्ध करनेवाली सुगंध के साथ

कोलगेट—पामआलिव का एक उत्पादन

१८०६ से कोलगेट उत्कृष्टता का प्रतीक रहा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौंदर्य के लिये..

रेमी स्नो

* त्वचा सुकोमल रखता है

ए. व्ही. आर. ए. ॲण्ड कं. बम्बई नं. २

स्त्रियों के लिये पुरानी और प्रसिद्ध औषधि.

"रजीस्टर्ड"

जोमस्त्री

शक्ति, स्फूर्ति एवं चैतन्य के लिये उपयोगी.

निर्माता :-

जसमाईन एजन्सी

नडीआद. (गुजरात)

एजन्ट : कंचनलाल वाडीलाल एन्ड कं. प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई–१

,, कान्तिलाल आर. परीख, चांदनी चौक, देहली

,, कान्तिलाल आर. परीख, २७/८२, बीरहाना रोड, कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फगो

डीजल

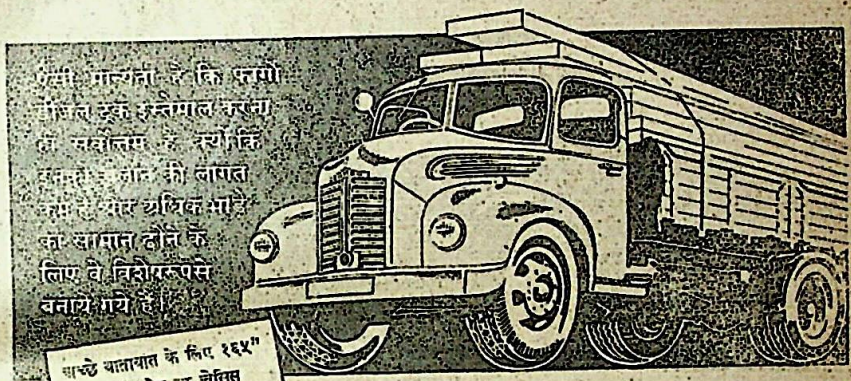

ऐसी मान्यता है कि फगो डीजल ट्रक इस्तेमाल करना ही सर्वोत्तम है क्योंकि इनकी रखरखाव की लागत कम है और अधिक भाड़े का सामान ढोने के लिए वे विशेषरूपसे बनाये गये हैं।

अच्छे यातायात के लिए १६५" व्हीलबेस ट्रक चेसिस

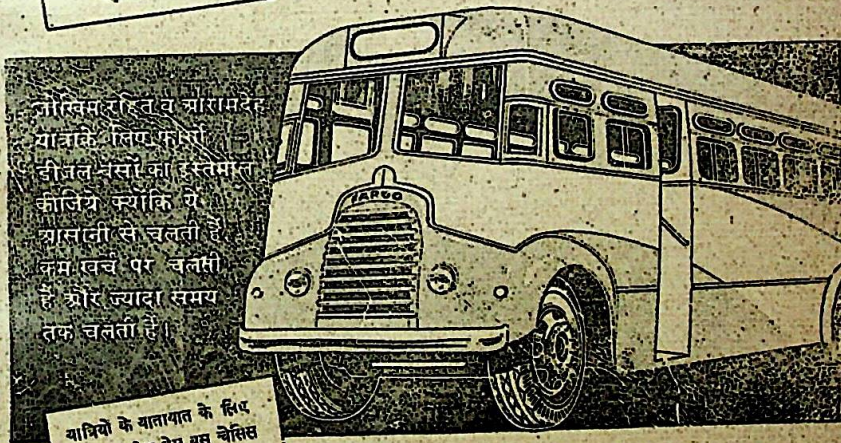

जोखिम रहित व आरामदेह यात्रा के लिए फगो डीजल बसों का इस्तेमाल कीजिये क्योंकि ये आसानी से चलती हैं, कम खर्च पर चलती हैं और ज्यादा समय तक चलती हैं।

यात्रियों के यातायात के लिए १९०" व्हील बेस बस चेसिस

अपने निकटतम् विक्रेता से सम्पर्क स्थापित कीजिए।

प्रगतिशील निर्माता

दि प्रीमिअर आटोमोबाइल्स लिमिटेड

बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केश हैं या कौवे के घोंसले !

धूल, गंदगी, सुस्ती तथा लट्टे-ये सब मिलकर अक्सर ये ही आपके केश कौवे के घोंसले जैसे ही भद्दे हो सकते हैं। सुन्दर केशों की अधिकारिणी होने के लिये आपको उनकी देखभाल करनी ही पड़ेगी। अँगेतेमें सर में थोड़ा सा तेल डालकर जल्दी जल्दी स्नान करने से केशों को उनके खाद्य से वंचित होना पड़ता है तथा ये कुत्सित केश अपना खाद्य न पाकर सूखकर असमय में ही वार्द्धक्य को निकट लाता है। केशों की उचित देखभाल के लिये आपको कुछ अत्यावश्यक नियमों का पालन निश्चय ही करना पड़ेगा, जैसे केशों के मैल साफ कर, कंघी कर, फिर गूंधना, सप्ताह में एक दिन यह में साबुन लगाना आदि। प्रतिदिन नियमित रूप से कम से कम दस मिनट केशों के जड़ों को जवाकुसुम से मालिश करना न भूलें। जवाकुसुम वह प्रसिद्ध तेल है जो केवल मात्र सुगन्ध वितरण तथा स्नायु को निरोग ही नहीं करता, बल्कि साथ ही साथ आपके केशों का खाद्य जुटाकर, उसे सुन्दर एवं सजीव बनाता है।

जवाकुसुम

केश तैल

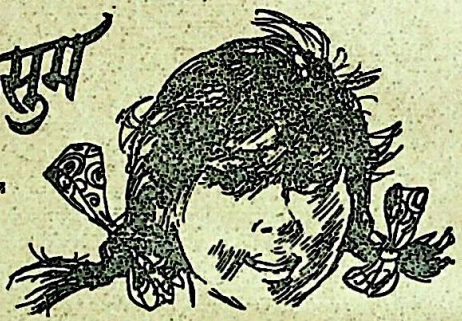

सी. के. सेन एण्ड कं० प्राइवेट लिमिटेड
जवाकुसुम हाऊस, ३४, चित्तरंजन एभिन्यू, कलकत्ता-१२
११७, आर्मेनियन स्ट्रीट, मद्रास-१

दद्रु विनाश

दाद, खाज, खुजली एवं इक्जीमा की

शर्तिया दवा
तीन दिन में फायदा

प्रतावमल गोबिन्दराम
पो. बक्स नं. २४६० कलकत्ता-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

REPRESENTATIONS

ARE

OFFERED

★

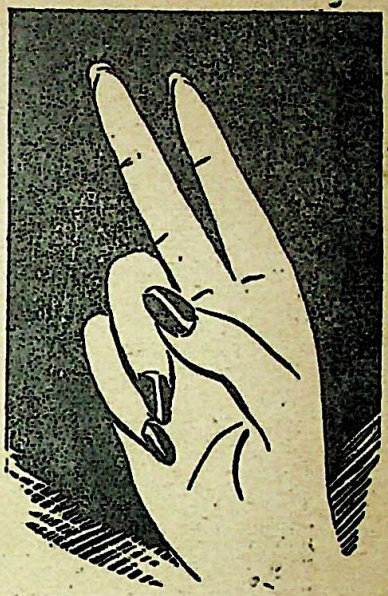

TWO THINGS
TO REMEMBER

"K"
for Kanoi
&
Kanoi
for
tea

KANOI TEA
(PRIVATE) LTD

POST BOX No. 982
CALCUTTA-I.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिलाई व कढ़ाई
प्रतियोगिता
के लिये
वस्तुएं पहुंचने की अन्तिम तारीख
२५ फ़रवरी

इस देशव्यापी सिलाई व कढ़ाई प्रतियोगिता करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम इन सुन्दर कलाओं का पुनरोत्थान कर सकें। इस प्रतियोगिता में जो चाहे भाग ले सकता है और यह निःशुल्क है। नियम आदि के लिये जय इनजिनियरिंग वर्क्स कलकत्ता - ३१ को लिखें अथवा अपने स्थानीय उषा डीलर से मिलें।

१,००० रु० से अधिक
के विभिन्न पुरस्कार जीतिये

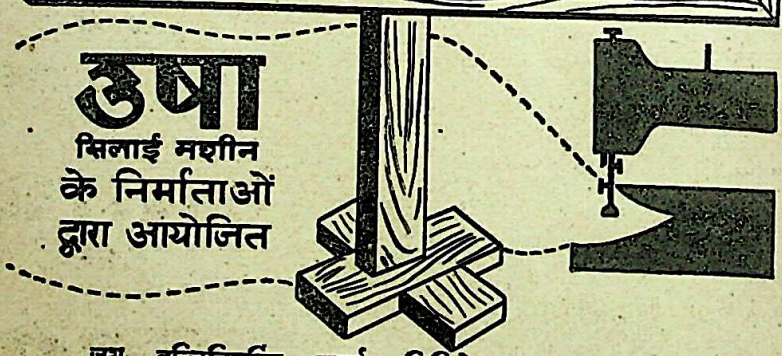

जय इन्जिनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता -३१

बम्बई एजेन्ट : बाम्बे प्रीमियर ट्रेडिंग कं., २३०, हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फरवरी . १९५८

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

शिल्पः गोपालकृष्ण भोबे

सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र विद्याभूषण

लेख-सूची

१	अभिषेक	'हंसबोध' से	१
२	अतिरथ और पिंगला	'महाभारत' से	२
३	...दुःख माँगिये... (गांधी-गंगा)	द्रौपदीदेवी मेघाराम आहुजा	१०
४	मर्यादा (कविता)	मैथिलीशरण गुप्त	११
५	प्रेरणा-पुष्प	स्वीत्जर	१३
६	नींव के पत्थर	विश्वेश्वरैया, माओत्सेतुंग, मेन्यूइन, गोल्डविन	१४
७	स्वीडन : हनूमानजी का जन्मस्थान	बालगोविंद द्विवेदी	१७
८	हनूमान-सीता	आचार्य स्वामी	१८
९	तुलवानी : मीठा जहर	कीस बोके	२०
१०	गुलाबोत्सव	असीरियन लोककथा	२१
११	मैं डेनी के : बच्चों का मित्र	डेनी के (अभिनेता)	२३
१२	हमारा प्रथम कर्तव्य	जेनेवा-चार्टर	२६
१३	२१-वीं सदी में ही...	प्रो० जनकेविच	२८
१४	गहराई की बात (कविता)	जानकीवल्लभ शास्त्री	३०
१५	अमृतमहल	एम० कृष्णन्	३१
१६	व्यास और गणेश	पंडित सुखलाल	३३
१७	नेति...नेति...नेति	श्रीगोपाल नेवटिया	३५
१८	नागा-प्रदेश	डा० वेरियर एल्विन	३९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९	बच्चे : लूले–लंगड़े, कुरूप	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	४५
२०	माइक्रो-धाराएं संदेश पहुँचायेंगी	जे० एम० फ्लेचर	४९
२१	संदेशा	ऐजाज पाशा	५१
२२	६०० वर्ष पूर्व का मूल्य-नियंत्रण	डा० जे० एन० चौधरी	५४
२३	कफ़ड़ा जो बुना नहीं जाता	डा० विपिनविहारी गुप्त	५७
२४	गगन-चप्पल	परशुराम	६०
२५	मजिस्ट्रेट को प्राणदान	महावीर त्यागी	६५
२६	वीर बापू	सुभाषचंद्र बोस	६६
२७	बूँद-बूँद का सागर	... ...	७०
२८	शिकार और भूत	आर० डे० ला बेरे बार्कर	७२
२९	कड़वे-मीठे जीवन–घूँट	सत्यदेव, सान्याल, नरेन्द्र, धीरेन्द्र	७८
३०	वीरता का अधिकार (हिन्दी-कहानी)	यशपाल	८१
३१	नूराँ (उर्दू-कहानी)	सतीश कुमार	८५
३२	दस रूपये का नोट (बंगला-कहानी)	आशापूर्णा देवी	८९
३३	स्वभाव	'गुलाब और काँटे'से	९१
३४	पत्थर का दर्जा (अरबी-कहानी)	महमूद तैमूर	९३
३५	दक्षिण-ध्रुव की विजय-यात्रा	(पुस्तक-संक्षेप)	९७
३६	स्वाधाय–समीक्षा	'विनायक'	११९

मृगया

[चित्र : राजस्थानी थैली]

स्केच :

एस० आर० वर्गे, रामचंद्र शुक्ल, चित्तोप्रसाद, शंकर, वाल्ट डिस्ने, वी० एन० ओके, अब्दुल हलीम, सेम्युअल फाक्स

सूचना : 'नवनीत' में प्रकाशित प्रत्येक रचना, चित्र एवं स्केच पर 'नवनीत प्रकाशन लि०' का कापीराइट रहता है। अतः पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में इनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

वार्षिक मूल्य : दस रुपये — नवनीत प्रकाशन लि० — प्रति अंक : एक रुपया

विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये — ३४१, तारदेव, बम्बई ७ — विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नवदिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ७ : : अंक २

फरवरी, १९५८

अभिषेक

संत एकनाथ कमंडलु में गंगाजल भरकर काशी से रामेश्वरम् की यात्रा कर रहे थे। रामेश्वर शिव का गंगाजल से अभिषेक बड़ा फलप्रद माना जाता है। गर्मी के दिन थे। मीलों तक पानी नहीं मिलता था। संत एकनाथ ने देखा, एक गधा प्यास से मर रहा है। उन्हे ने पानी का कमंडलु उसके मुंह में उड़ेल दिया। गधा जी उठा। शिष्यों ने देखा, तो आक्रोश की सीमा न रही—"यह आपने क्या कर दिया; अब भगवान् शिव का अभिषेक कैसे होगा?" एकनाथ ने परम तृप्ति के आवेश में कहा—"अरे रे! क्या तुमने नहीं देखा—स्वयं देवाधिदेव रामेश्वर ही तो गधे के रूप में यहाँ आये थे। कितने कृपालु हैं वे! स्वयं ही आ गये, हमें वहाँ तक जाने का कष्ट नहीं दिया!"

—'हंसबोध' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

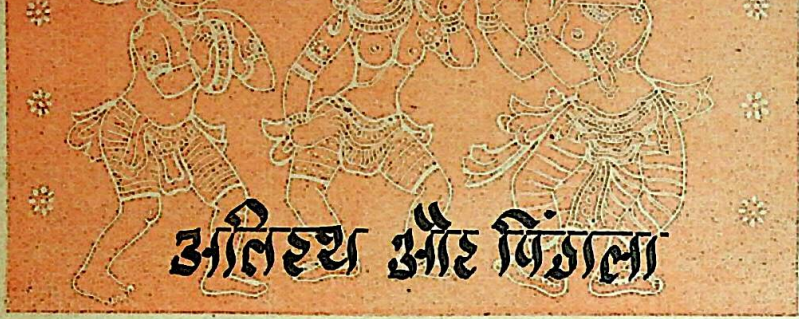

अतिरथ और पिंगला

महाभारत की एक रस-बोधमयी कथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

राजधानी की सर्वश्रेष्ठ राजनर्तकी रूपसी-कलावती-गायिका नृत्य-गीत से राज-सभा को प्रमोदित कर चली जाती; किंतु कुमार नरपति अतिरथ निर्विकार बैठे रहते। सभासदों के मोह और रूप-रस-गंध के प्रति कातरता को देखकर अतिरथ को बरबस हँसी आ जाती। प्रेम-प्रणय और अनुराग की कोई भी मनोवृत्ति उनके दुर्भेद्य वर्म को भेद नहीं पाती थी। राजसभा के मांडलिक जब किसी नर्तकी के मंजीरित चरणों पर माला डालते या किसी वारांगना की कुटिल हास्यरेखा पर मुकुट के रत्न उपहार में दे देते या सालमंजिका की वेणी से गिरे हुए फूल को शिरोमणि बनाते, तो अतिरथ को विस्मय होने लगता—"कितने तुच्छ प्रलोभन में ये लोग इस प्रकार अपने को खो बैठते हैं!"

नृत्य-सभा के चारों ओर अनेक धातव-पात्रों में शिलाजीत जल रहा था। हेम-मशालों के तीक्ष्णालोक से चकाचौंध और चारों ओर फैली कुसुम-राशि से उठे गंध से पवन विह्वल था। आज इस सांध्य-उत्सव में पिंगला पधारेगी।

महीपति अतिरथ पृथ्वी की कामनाओं के पास रहकर भी दूर थे। स्वयंवरों में जाते; किंतु केवल दर्शक बनकर। निमंत्रण की मानरक्षा भी क्या कम दुर्बलता थी, उनके विचार में!

स्वयंवर-सभा में आयत-नयना राज-कुमारियों की कमनीय दृष्टि पिपासातुर हो उठतीं, पुष्प-मौल्य धारण किये हुए कर-युगल काँप उठते; किंतु अतिरथ के निस्पृह दो नेत्र ताकते रहते—जैसे वे केवल पत्थर की मूर्ति हों! विषण्णवदना अलसनयना राजकुमारियाँ दूसरे पाणि-प्रार्थी की ओर चली जातीं। अतिरथ ने आज तक किसी नारी के प्रति आत्मसमर्पण की इच्छा का अनुभव ही नहीं किया।

अकस्मात् नूपुर-ध्वनि से नृत्य-सभा गूंज उठी। नृत्यांगना पिंगला आ गयी थी।

चंचल हार से लीलायित पीनोन्नत वक्ष, रक्त प्रवाल-सी अधरकांति के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूपाजीवन पिंगला अपने कस्तूरी-सुगंधित चीनांशुक को आंदोलित करती हुई, मणिमय रत्नाभूषणों को अनुरणित करती हुई पुष्पवलय-चिह्नित नृत्यस्थली के बीच में खड़ी हो गयी।

नृत्य-सभा के वादकों की गोद में सोये हुए नीरव वाद्य-यंत्र अकस्मात् जाग्रत् और मुखर हो उठे। उत्सुक और उत्कंठित हो गया मांडलिकवर्ग; किंतु इस सारी चंचलता के बीच पिंगला अचंचल-सी खड़ी थी। अतिरथ स्वर्ण-सिंहासन पर समासीन थे। पिंगला की नेत्र-युगल-दृष्टि कुमार अतिरथ के मुख पर निबद्ध थी। नृत्यस्थली की पुष्पकारियों को लांघकर मदावेश-मंथर-मराली-सी पिंगला धीरे-धीरे आगे बढ़कर अतिरथ के सामने जा खड़ी हुई।

राजनर्तकी

[चित्र : एस. आर. बर्गे-निर्मित एक दाक्षिणात्य शिल्प का रेखाचित्र]

देखा, तो राजा अतिरथ अप्रसन्न होकर बोले—"राजाज्ञा बिना राजा के पास आना उचित नहीं, नर्तकी!"

"राजसभा में आमंत्रित किया है, तो राजा के पास खड़े होने की आज्ञा भी दीजिये।"

"तेरा उद्देश्य सुने बिना आज्ञा नहीं मिल सकती।"

"अपने दर्शनीय के दर्शन और वंदनीय की वंदना करना चाहती हूँ—और मन का निवेदन भी।"

"कौन है तेरा दर्शनीय और वंदनीय?"

"आपके इस अमिताभ मुखमंडल की लावण्य-महिमा। आज अपने नयनकांत का मुख नयनों के पास रखकर देखना चाहती हूँ—इस मुख को अभी तक दूर से ही देखती रही हूँ।"

"और तेरा निवेदन क्या है?"

"मैं आपही के प्रणय की अभिलाषिणी नारी हूँ। सारे कौतूहल के उपास्य आप हैं। झरोखों से आपकी अश्वारूढ़ वीरमूर्ति देखी और देखा कि, शत्रु-दलन के लिए दौड़ती हुई सेना के सामने आप ही अग्रणी हैं—इच्छा होती है, सहचरी बनकर आपका तर्कस मैं ले चलूँ। देखा कि, कुमार अतिरथ रथ में बठकर इंद्रोत्सव में जा रहे हैं, इच्छा होती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि, इस कंठ की सुरभित मालाएं उनकी गोद में डाल दूँ। देखा कि, रास्ते-रास्ते पर आपकी दानयात्रा का समारोह है, याचकगण के हाथों में निःसंकोच आप रत्न, वस्त्र और शस्य दान करते चले जा रहे हैं– इच्छा होती है कि, दौड़कर आपके सामने खड़ी हो जाऊँ–याचिका के समान और याचना करूँ– 'प्रणय-दान से कृतार्थ कर दो नाथ और कुछ नहीं चाहती !'"

राजा अतिरथ मौन सुनते रहे। क्षण-भर मौन दृष्टिपात के बाद पिंगला फिर बोली–"राजाधिराज अतिरथ से मैं एक सामान्य अनुग्रह चाहती हूँ।

"कहो।"

"मुझे इस सभा में आज नाचने-गाने के लिए न कहें।"

अतिरथ ने भौंहें टेढ़ी कर कहा–"क्यों?"

"... आज मन चाहता है कि, कमलिनी के समान अपने नयन-युगल को विकसित कर केवल आपके मुख-मयूर-बिम्ब को पीती रहूँ।"

और भौंहें चढ़ाकर अतिरथ बोले–"प्रगल्भा, पणांगना तुम तो बडी ही दुःसाहसिनी हो।"

"मैं स्वभाविनी हूँ। स्मर-वीथिका-वासिनी मदामोदमधुरा नारी हूँ मैं। मन जिसे चाहता हो, उसे बुलाने का अधिकार है मुझे।"

"तेरा अधिकार ?"

"आप ही ने तो यह अधिकार मुझे दिया है– महाराज !"

"हीना पणांगना की कामना का बुलावा न मानने का अधिकार भी सबको है, यह सत्य न भूलो, विलास-निपुण वार-नारी !"

पिंगला के ओष्ठापुट पर हलकी-सी मुस्कराहट कुटिल होकर फूट उठी–"न मानने की शक्ति क्या सबमें है, महाराज?"

क्रोध-कठोर स्वर से अतिरथ ने कहा–"बुलाने की शक्ति क्या सबमें है, लास्य-जीवनी नारी ?"

पिंगला को ऐसा जान पड़ा, मानो विश्व का पौरुष उसके हास्य-लास्य-कटाक्षों की शक्ति को चुनौती दे रहा हो। प्रश्न हुआ–केतकी-पराग के आह्वान की उपेक्षा मदांध अलिंद क्या कर सकेगा ? कोजागरी में चकोर सोता ही रहेगा क्या ? सफेन-जल-हासिनी तटिनी का कल-स्वर सुनकर भी आकाशचारी कलहंस क्या तरंगालिंगन के लिए छाती खोलकर नहीं उतर आयेगा ?

रतिरूप-रम्या पिंगला अपनी आह्वान-शक्ति को आजमाने के लिए तैयार हो गयी।

नृपति अतिरथ ने आदेश किया–"अपना कर्त्तव्य-पालन करो, नर्तकी ! यह सांध्य-उत्सव नाच-गान से प्रमोदित कर दो।"

अकस्मात् प्रभात के जगे पक्षिगण के कलरव के समान पिंगला की पद-मंजरी बजने लगी। सलील बाहुविक्षेप, छंदायित अंगहार और मदन-तरलित कटाक्ष-धारा से रूपमाधुरी के कण चारों ओर बिखरने लगे। वादकों के निपुण करन्यास से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाद्य-यंत्रों के वक्ष से ताल-लय-मिश्रित नादामोद ने सभा-भवन को आभोर कर दिया। अतिरथ अपलक दृष्टि से ताकते रहे।

सुधा-स्वरा देव-जाया-सी पिंगला ने संगीत द्वारा अपने कामनाविधुर हृदय का आकुल निमंत्रण जताया—

"पूर्णतोया तटिनी के पास कितने ही प्यासे पथिक आते हैं। केवल तुम ही दूर खड़े हो? अंधे नहीं हो, फिर भी देख नहीं पाते हो। भीरु नहीं हो, तब डरते क्यों हो? आओ, सबके साथ तुम भी आओ। सुतरंगित सलिला-सरिता से रसाहरण करने के लिए तुम भी आओ। प्यासे पथिकों के साथ तुम भी आओ।"

संगीत रुक गया। पिंगला ने नृत्याकुल देहलता के मदोन्मत्त आंदोलनों को रोक लिया। किंतु नगरसो, जोहिनी पिंगला में ऐसी कोई शक्ति नहीं थी, जो अतिरथ के मन को मुग्ध कर लेती।

पिंगला ने दूसरी ओर मुंह फिरा लिया। क्षण-भर कुछ सोचती रही, फिर सभास्थली नृत्य-गीत से मुखरित हो उठी। उस गीत का भाव था—

बुलाता है सांध्य उपवन सब
पवनों से बढ़-चढ़ कर,
सब प्रियजन से प्रियतर, आओ तुम!
मंद-मंद सुगंधित समीरन।
इस उपवन के खिले पुष्पों के
अधरों की हँसी सबको भेंट—
में दी जा सकती है; किंतु ये
अधर केवल तुम्हारे हैं!

किंतु अतिरथ के मुख पर केवल व्यंग्य-भरी हँसी खिली हुई थी, इच्छा का लेश भी न था। पिंगला को यह पराजय मृत्यु से अधिक जान पड़ी। उसने फिर गाया—

"मैं राका-रजनी का आकाश हूँ और तुम हो राकेश। सब तारे बुझ गये हैं, केवल तुम चमक रहे हो। मेरे हृदय के महाशून्य म और कोई कहीं भी नहीं है, केवल तुम हो—मेरे सर्वस्व एकमात्र तुम हो। मेरी कामना के एकमात्र आनंद होकर आओ, तुम मेरे हृदय कुंज की देहली में ठहरो, हे चिर सुंदर अतिथि!"

गीत समाप्त हो गया। पिंगला ने नृत्य बंद कर अतिरथ की ओर ताका—देखा कि, राजा अतिरथ सुवर्ण-मंच पर निर्विकार बैठे हैं, मानो वज्र-पाषाण से बनी एक मूर्ति हो और उनके नेत्र कामनाहीन

मानिनी

[चित्र : रामचन्द्र शुक्ल-निर्मित एक रेखाचित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो रत्न के समान हों।

धीरे-धीरे पिंगला आगे बढ़ी कांचन-पीठ के पास जा खड़ी हुई।

"नृपति अतिरथ!"

"कहो, और क्या निवेदन करना है!"

"निवेदन कर चुकी हूँ, राजन् और कुछ नहीं कहना है। केवल आपसे वचन पाकर धन्य होना चाहती हूँ।"

अतिरथ ने रुष्ट होकर कहा—"वेश्या!"

भरी आँखों से राजा की ओर देखकर पिंगला ने कोमल स्वर में कहा—"कहिये, राजन्!"

"धूम्रलेखा मेघ का रूप धारण कर सकती है, चातक का मन नहीं मोह सकती!"

कशाहत प्राणी के समान वेदना से सिर नीचा किये पिंगला चुपचाप खड़ी रही।

"पिंगला! तुम्हारा कार्य समाप्त हो गया। अब प्रसन्नता के साथ यह पुरस्कार लो और घर जाओ।"

पिंगला को ये शब्द तीर-से लगे—

"इस पुरस्कार से मैं प्रसन्न नहीं हो सकती, राजन्! सोने के टुकड़ों से भरा यह चाँदी का थाल मैं नहीं चाहती!"

"क्यों नहीं चाहती नर्तकी?"

"आवश्यकता नहीं है! यदि आप प्रसन्न हैं, तो मुझे एक वर दीजिये। मेरे संकेत-कुंज में एक दिन पधारिये।"

क्रोध-भरे स्वर में राजा ने कहा—"दुःसाहस संयत करो, पणांगना।"

जूड़े में लिपटी मल्लिका-माला को राजा के पद-प्रांत में फेंक कर पिंगला ने निवेदन किया—"आपकी अनुरागिनी अंगना आपसे अनुरोध करती है, राजन्! आइये, इस कोलाहलमय जन-जीवन की बाधा, लज्जा और भीति से बहुत दूर, इस नगर के बाहर कुश-कुसुमाकीर्ण पथ-रेखा को पार कर, सप्तपर्ण वन के झरनों के किनारे, लताकुंज के एकांत में पिंगला के सामने एक बार विराजिये। कृष्ण द्वादशी के चंद्रालोक में इस नारी-मुख की ओर देखकर फिर आप सोचिये कि, क्या यह सब छलना ही है!"

"मुझे ऐसा हीन कौतूहल नहीं है, नारी!"

पिंगला ने दोनों हाथों से मुँह ढँक लिया, मानो एक उत्तप्त पाषाण स्तूप से उसके ऊपर कुछ ज्वलंत स्फुलिंग आ गिरे हों।

"दूसरा अनुरोध करो, पिंगला!"

पिंगला ने उत्तर नहीं दिया।

"अपनी बात समाप्त करो, नारी!"

अश्रुसिक्त और कांति-हीन मुख को ऊपर कर पिंगला ने कहा—"अपना अंतिम अनुरोध बताना चाहती हूँ, नृपति!"

"कहो।"

"कलावती पिंगला का संगीत आपको संतुष्ट नहीं कर सका। मुझे अपना अंतिम संगीत सुनाने का एक अवसर और दें।"

"तो सुनाओ, पिंगला अपना संगीत!"

"आज नहीं, यहाँ नहीं, नृपति!"

"तो कहाँ?"

"संकेत-कुंज में। कृष्ण द्वादशी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे प्रहर।"

नृपति अतिरथ आखें नीची कर कुछ देर सोचते रहे।

दूरस्थ देवालय से स्तोत्र-आरती और मांगल्य-मृदंग का स्वर तरंगित होकर आ पहुँचा। अकस्मात् नृपति ने हँसकर पिंगला की ओर देखा।

पिंगला ने मुग्ध भाव से कहा—"सुहृत्तम अतिरथ!"

"शोभनांगी भद्रे! तुम्हारे अंतिम संगीत द्वारा तुम्हारी हृदय-कामना की अंतिम बात सुनना चाहता हूँ, संकेत-कुंज में!"

मानस-हंसी के समान हर्षोफुल्ला पिंगला नृत्य-सभा से चली गयी।

० ० ०

.. और, उस कृष्ण द्वादशी की क्लांत निशीथिनी में जब हठात् निद्रा भंग होने के कारण अतिरथ झरोखों के पास आ खड़े हुए, तो देखा कि, कृष्ण द्वादशी का चंद्रमा पश्चिमाचलमुखी हो गया है। अट्टहास्य कर उठे नृपति। कसा ठगा छलनामयी नारी को मिथ्या वचन देकर!

सुदूर सप्तवर्ण वन-प्रांत में निर्झर के समीप, पल्लवासन पर अभिसारिका पिंगला बैठी थी। प्रहर-पर-प्रहर बीत गये; किंतु कुंज-द्वार पर प्रेमी की पद-ध्वनि सुनायी नहीं दी।

.. लाल जवाकुसुम के पराग से रचित रेखा के समान प्राची दिशा की माँग में अरुण-चुम्बित लज्जा-रागरेखा भी फूट पड़ी। किंतु अभिसारिका कामिनी पिंगला का प्रियजन नहीं आया... नहीं आया। करतल से युगल नयन ढंककर पिंगला बहुत देर बैठी रही।

धीरे-धीरे पिंगला का मन शांत होने लगा। उत्कंठिता पिंगला अब विफल प्रतीक्षा की यंत्रणा को धीरे-धीरे भूल रही थी। मानो किसी का करुणपूत हस्त-स्पर्श उसकी समस्त सत्ता पर फैल गया हो। पिंगला ने मुख उठाकर देखा कि, उसके प्रवंचित जीवन की सांत्वना के लिए विश्व-सृष्टि के कितने ही नवीन आनंद चारों ओर से उसकी अंतरात्मा के आसपास एकत्र हो गये हैं। उसके भूमि-पतित चीनांशुक पर एक हरिण-शावक न-जाने कब आकर सो गया है। पिंगला की गोद में पक्षहीन एक वृद्ध कपोत चोंच में यवांकुर दबाये बैठा है।

"...तुम ही आनंद! तुम ही अद्वितीय! तुम ही सर्वस्व हो! अन्य समस्त मिथ्या हैं।"

अनजाने में ही पिंगला के मुख से ये शब्द निकल पड़े—"मूढ़ा-मानवी पिंगला के सब मोह दूर कर दो प्रभु, जगत् के एकनाथ! तुम ही प्रेम, आनंद, शांति, सर्वाभिलाषी और सर्व-तृप्ति हो। तुम्हारी पूजा के फूलों को मर्त्य मानव के पैरों में निवेदित करने की भ्रांति को दूर कर दो, भगवान्!"

पिंगला आगे बढ़ गयी। झरने पर आकर खड़ी हुई। देखा कि, पेड़ों से गिरे जल-धौत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वल्कल-खंड किनारे पर ही पड़े हैं।

मानो विश्व के एकनाथ ने पिंगला के लिए उपहार भेज दिय हों– आनंदमय जीवन-पथ का संधान-संकेत बता दिया हो। अब विलम्ब न करो–इन सब तुच्छ और क्षणिक सुखों में मत्त होकर जीवन के अनेक क्षण नष्ट न करो। कामना क्षीण करो, एकनाथ की प्राप्ति होगी–वे ही समस्त सुंदरता शांति और आनंद के स्रोत हैं।

पिंगला ने सारे आभूषण झरने में फेंक दिये। स्नान कर, वल्कल पहन लिये और वह लता-निकुंज में बैठकर एकनाथ के ध्यान में डूब गयी। कृष्ण द्वादशी के चंद्रास्त के बाद, एक प्रहर में ही अभिसारिका प्रमदा नारी का संकेत-कुंज तपस्विनी की तपोभूमि में परिणत हो गया।

दिन-मास-वर्ष बीत गये। राजा अतिरथ के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अपने पौरुष और रूप-यौवन के अहंकार को लेकर वे वैसे ही अनासक्त निर्मल भाव से स्वर्ण-सिंहासन पर विराजमान थे। अभी तक किसी भी नारी को प्रणय-दान उन्होंने नहीं दिया था।

एक दिन यों ही कृष्ण-द्वादशी याद आते ही राजा अतिरथ ने पिंगला को नृत्य-सभा में आमंत्रित करने की आज्ञा दी। पिंगला! कहाँ गयी वह अपनी पराजय से पराभूत होकर! उस पराजिता लास्य-वदना की पराजय और अपने अजेय पौरुष के गर्व की अनुभूति के लिए अतिरथ एक बार फिर व्याकुल हो उठे!

पता चला कि, पिंगला एक वर्ष पहले ही तपस्विनी हो गयी है।

अतिरथ ने नृत्य-सभा भंग कर दी। वे अपने उपवन की एकांत वाटिका में जा बैठे। सोचने लगे, पिंगला तपस्या किस लिए करेगी? उन्हें ऐसा जान पड़ा कि, उनकी कल्पना में बसी नारी पिंगला ही है, वही उनके लिए अनन्य प्रेमिका बनकर तपस्या कर रही है। पिंगला की चरण-मंजरी नृत्य-सभा में नहीं, आज उनके हृदय के अणु-अणु में बज उठी। कुमार अतिरथ रथस्थ होकर उसी कुंज की ओर चल पड़े।

देखा कि, जटा-भार-सज्जिता, ध्यान-मग्ना एक नारी-मूर्ति कुंज में विराजमान है। अंग-प्रत्यंग की यौवन-माधुरी वल्कला-कृत होकर ज्योतिर्लेखा-सी लग रही है। वह लता-कुंज अब तपस्विनी की पर्णकुटी-सा बना गया है।

वहीं पर्णकुटी के द्वार पर ही प्रज्वलित शुष्कपत्राग्नि के शिखायित आलोक के पास खड़े होकर, अतिरथ पिंगला की ध्यानस्थ मुद्रा का सौंदर्य देखते रहे। प्रहर बीतते गये। पिंगला की तपस्या में कोई अंतर नहीं आया। अतिरथ ने पुकारा– "पिंगला! मेरी सब आकांक्षाओं की सारभूता सुमधुरा पिंगला!"

पिंगला के अधर नहीं काँपे। भौंहे नहीं हिलीं। कपोलों पर लालिमा नहीं आयी।

"इस कर्कश वल्कल का निठुर स्पर्श हटाओ, रूपेश्वरी पिंगला! जागो पिंगला!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पाषाणी मुद्रा को छोड़ो। राजा अतिरथ के प्रणय-विधुर हृदय की उत्सव-सभा में चिरनृत्य करो।"

पिंगला के शांत, निर्विकार और वेदनाहीन दोनों नेत्र खुले और बंद हो गये। होंठ हिले और धीरे-धीरे वनश्री के मर्मलोक से मधुस्रोत-गीतस्वर दिव्यलोक की मर्मर ध्वनि के समान जाग उठा—

"...तुम एकनाथ हो। तुम शांति, आनंद और निखिल प्राणाराम हो। समस्त दुःखों और सुखों का अंतर्भाव तुम हो। हीन का सम्मान, दीन की सम्पदा तुम हो। अपनी करुणा से मेरे जीवन की सब कामना क्षीण कर चुके हो। आनंदमय एकनाथ, तुमको मैं जान गयी हूँ। निरंजन! करुणाधन! हृदयेश्वर! एकनाथ, तुम मेरे हो, तुम सबके हो!"

भयभीत श्वापद की भाँति अतिरथ धीरे-धीरे पीछे हटते चले गये। यह अभिसारिका के कुंज का द्वार नहीं, कामना-विहीन तपस्विनी के पर्णकुटीर का द्वार था। पिंगला का गीतस्वर दावानल के समान अतिरथ का पीछा-सा करने लगा। आर्तनाद कर उठे राजा अतिरथ—"बंद करो तपस्विनि! क्षमा!"

वे रथ में बैठकर राज्य की ओर नहीं गये, वन की दूसरी ओर रात-भर चलते रहे। अंत में नीवारा नदी के तट पर पहुँच गये। पुण्यतोया नीवारा में स्नान से वासना-क्षय होता है, यह सुनकर राजा अतिरथ ने वहीं रथ रुकवा कर राजमुकुट रथ के खाली आसन पर रखते हुए सारथी को आज्ञा दी—"इसे लेकर तुम जाओ, राजधानी लौट जाओ।"

राजा अतिरथ धीरे-धीरे पुण्यतोया नीवारा में स्नानार्थ बढ़े। दूरस्थ पर्वत-मालिका की कुहेलिका और वन की छाया-रेखा की ओर उनके सतृष्ण नयन ताक रहे थे, मानो एक तपस्वी-जगत् उन्हें नीरव निमंत्रण दे रहा हो!

◎

हिन्दी—राष्ट्रवाणी—की अनन्य भक्ति में ही योग और भोग की समस्त सिद्धियों को स्वाधीन करनेवाले, अपरिग्रह के पुण्य-प्रतीक चंद्रबली पांडेय ने २४ जनवरी को अपना देह-दीपक परम ज्योति में लीन कर दिया! एकनिष्ठ सत्यशोधी मनीषी की अमरात्मा को 'नवनीत' की सादर श्रद्धांजलि!

◎

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसीसे कुछ मांगना हो, तो दुःख पहले माँगिये

श्रीमती द्रौपदीदेवी मेघाराम आहुजा की जबानी बापू की प्रेरणा के अमृत-स्पर्श की एक कहानी

*

सन् १९३९ का वर्ष हमारे जीवन का सबसे अंधेरा वर्ष था। जून के महीने में घर में आग लगी और माल-असबाब के साथ मेरी सबसे छोटी प्यारी बच्ची—तीन वर्ष की वह गुलाब की कली—जलकर मर गयी। पिता को वह बेहद प्यारी थी। कई दिनों तक उनकी आँखों के आँसू नहीं सूखे। शाम को जब घर आते, तो मुँह उतर जाता। मगर दुर्दैव को तो और भी कठोर प्रहार करने थे। कलकत्ता के पास रेलगाड़ी पटरी से उतर गयी और व्यापार के सिलसिले में गये हमारे दोनों जवान लड़के, नवीन और प्रमोद, भी हमारा साथ छोड़ कर चल दिये। एक की उम्र २८ वर्ष की थी और दूसरे की २४ वर्ष की। शव तक दोनों के नहीं मिले। पहाड़ ही टूट गया था। ऐसा दुर्भाग्य शायद ही किसी के हिस्से में आया होगा। एक महीने तक किसी को अपने-पराये का होश न रहा।

हमारी यह हालत मेरे भाई को ज्ञात हुई, तो वे कराची से हमारे पास आ गये और स्थान-परिवर्तन का प्रस्ताव उन्होंने हमारे सामने रखा। किसी आग्रह को उन्होंने नहीं माना और हम लोग कराची के लिए रवाना हो गये। करीब दो महीने वहाँ रहे; मगर मन का घाव हरा ही था। नवीन और प्रमोद के चेहरे मन की पीड़ा से ओझल नहीं होते थे। भूख-प्यास का अनुभव तो क्या, जीवन-मरण के फर्क तक को हम महसूस नहीं कर पा रहे थे।

एक दिन सुना कि, वहाँ गांधीजी आये हुए हैं और पड़ोस के कई लोग उनके दर्शनों को जा रहे हैं। मेरे भाई ने मुझसे भी आग्रह किया। समय पर हम लोग सभा-भवन में पहुँच गये। जीवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में पहली ही बार मैंने गांधीजी को देखा था। अनायास ही हाथ जोड़े मैं उन्हें एकटक देखती रही। उनका भाषण सुनकर जब घर आये, तो मैंने भाई साहब को अपनी प्रबल इच्छा बतायी—"भया, क्या ऐसा हो सकता है कि, मैं सिर्फ १५ मिनिट ही गांधीजी से बातचीत कर सकूँ।"

× × ×

दूसरे सवेरे हम लोगों को गांधीजी से मिलने का समय मिला। हम पहुँचे, तो जैसे वे तैयार बैठे थे। भाई साहब मुझे और माँ को वहीं छोड़कर चले गये। गांधीजी ने मुझे घूर कर देखा, तो मेरी आँखों से आँसू की धारा बह चली और एक शब्द भी मेरी जबान से नहीं निकल सका। माँ ने मेरी सारी दुःख-गाथा उन्हें सुनायी। सुनकर वे मौन बैठे रहे। मैंने कहा—"बताइये, अब मैं क्या करूँ? क्या बाकी बच गया है मेरे लिए? भला अब किसके लिए मैं जीऊँ?"

वे कुछ उदास-से हो गये। कुछ मौन के बाद बोले—"मैं जान गया हूँ, तुम्हारा बहुत-कुछ चला गया है। मगर केवल वही तो सर्वस्व तुम्हारा नहीं था। उसके अलावा और भी तो है। तुम्हारे पति हैं, तुम्हारा यह शरीर है, बुद्धि है और इन सबसे बढ़कर तुम्हारा मातृत्व है। पेड़ के फल मात्र गिर गये हैं, पेड़ तो जैसा था, वैसा ही है।.....और, यह तुम्हारा दुःख तो प्रेम के ओझल हो जाने का दुःख है—जिस पर बस नहीं, उस पर पछताने का दुःख है। मगर क्या तुम कह सकती हो कि, पीड़ा किसी को नहीं होती है, दुःख केवल तुम्हारे ही हिस्से में आया है? बेटा खोकर कौन-सी माँ सुखी है और माँ खोकर कौन बेटा सुखी होता है? थोड़े दिनों तक अपनों का अभाव सबको सताता है, फिर संसार-चक्र सबको अपने भुलावे में मोह लेता है। तुम अपनी क्षति नहीं भूली हो, तो अच्छा ही हुआ है। पीड़ा की अतिशयता, आखिर में शुभ ही होती है। पीड़ा की डोर पकड़कर मनुष्य भगवान् तक पहुँच जाता है। तुम इस डोर को पकड़े रहो—पर जरा जोर से पकड़ो; दोनों हाथों से पकड़ो। दुःख को घटाओ मत, उसे बढ़ाओ। कल से ही झोली

मर्यादा

वह अखिल सृष्टि की खेला।
करती नहीं कहीं भी अपने
नियमों की अवहेला।
अपनी सीमा के भीतर ही
भला भुवन का मेला।
कौन कहे कितनों ने क्या-क्या
लीक लाँघकर झेला।
पल में प्रलय मचा सकता है
अम्बुधि एक अकेला।
केवल मर्यादा के बल पर
बची हुई है बेला।

—मैथिलीशरण गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकर दुःख माँगने निकलो। तुम्हारी झोली में तो अभी एक कण-भर ही पीड़ा है—तिल के बराबर ही दुःख है। इतने से काम नहीं चलेगा। तुम भीख माँगना शुरू करो—घर-घर, द्वार-द्वार जाकर दुःख के दान की याचना करो। मैंने कई दान देखे हैं, सुने हैं, माँगे हैं; किंतु दुःख के दान से बड़ा कोई दान मुझे नजर नहीं आया। मेरी तो यह धारणा ह कि, अगर किसी से कुछ माँगना है, तो पहले दुःख ही माँगें।"

कहते-कहते बापू की आँखों में आँसू आ गये। वे करुणानिधान काफी समय तक मुझे समझाते रहे—लाख-लाख माता-पिता का स्नेह मानो उनकी उस अमृत-जैसी नजर में भरा था।

घर पहुँची, तो मैं बिल्कुल बदली हुई थी। साक्षात् परमेश्वर के सामने से लौटी थी। दुर्बलताएँ धुल चुकी थीं। नवीन और प्रमोद की याद आँखों के कोने में जागी अवश्य थी; किंतु खोयी प्रेम-मूर्तियों के रूप में नहीं, अनंत स्नेह के अक्षय प्रवाहों के रूप में! अपनी शक्ति के अनुसार मैं दुःख माँगने निकल पड़ी—हमने दो अनाथ बालक-बालिकाओं को गोद ले लिया। जीवन-लीला का प्रवाह फिर अपने क्रम में ढलने लगा। मगर अपनी झोली मैंने नहीं छोड़ी। मैं जहाँ तक जा सकती, जाती और प्रयत्न करती कि, पीड़ित की पीड़ा कुछ-न-कुछ मेरे हिस्से में आये। ज्यों-ज्यों मुझे इसमें सफलता मिलती गयी, मेरा सुख भी बढ़ता गया। यद्यपि मुझमें गांधीजी की सीख को पूरी तरह अमल में लाने की शक्ति नहीं है; मगर उनके एक दाने की फसल से भी मेरा काफी भांडार भरा है! मेरे आस-पास के जगत् को भी काफी कुछ मिला है।

★

कवि की पत्नी

संस्कृत के महाकवियों में माघ का स्थान बहुत ऊँचा है। एक दिन महाकवि घर बैठे अपने काव्य का नवम सर्ग लिख रहे थे, तभी अवंतिका से एक दरिद्र ब्राह्मण ने आकर अपनी कन्या के विवाह के लिए उनसे आर्थिक सहायता की याचना की। कविवर स्वयं आर्थिक कष्ट में थे। फिर भी उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। घर में कोई भी मूल्यवान् वस्तु शेष नहीं थी। एक खाट पर उनकी पत्नी पड़ी सो रही थी। उसके हाथ में स्वर्ण-कंकण थे। माघ ने चुपचाप उसके एक हाथ का आभूषण निकाल लिया और चलने ही वाले थे कि, इतने में स्त्री की आँख खुल गयी। उसे सारी स्थिति समझते देर नहीं लगी और उसने दूसरे हाथ का कंकण भी निकाल कर देते हुए अपने पति से कहा—"स्वामी, निर्धन ब्राह्मण का काम एक से नहीं चलेगा, इसलिए इसे भी सहर्ष दे दीजिये।"

—सत्यदेवनारायण सिन्हा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

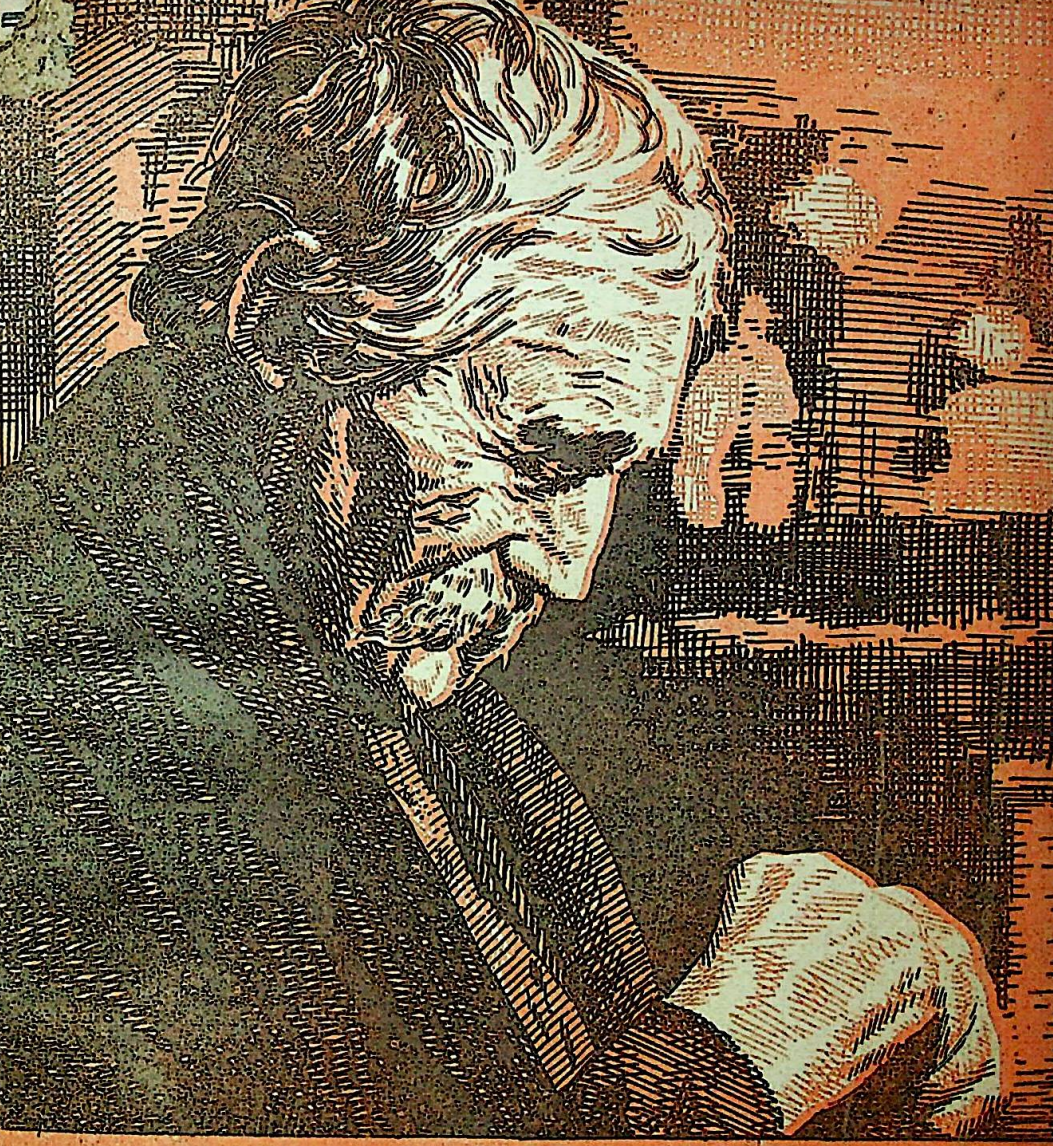

प्रति सवेरे जब जीवन अपना पृष्ठ खोलता है, तो कई क्लांत-करुण मानव-आकृतियाँ सामने आती हैं। मेरी आत्मा चीत्कार कर उठती है—"मेरे प्रभु का यह कैसा रूप!"...और तब दिन-भर करुणा की कूंची से उन मूर्तियों को रंगता हूं...अंतिम साँस तक यह पूजा करता रहूंगा। मानव-प्रभु से बड़ा कोई प्रभु मेरे संकल्प में नहीं है। —एल्बर्ट स्वीत्जर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नींव के पत्थर

बचपन मिट्टी का लौंदा है—जो साँचा मिले, उसी में ढल जाता है। अतः अच्छे साँचे की अपेक्षा अनिवार्य है। यहाँ हम चार महापुरुषों के बचपन के प्रेरणा-सूत्र देते हैं, जिन्हें पकड़ कर वे आज कीर्ति के शिखर पर पूजित हैं। होनहार भावी नागरिकों के प्रेरणार्थ हम 'नवनीत' में प्रति मास इसी प्रकार के उद्बोधक मंत्र-सूत्र देने का प्रयास करेंगे।

★

घड़ी दवा

नवें दर्जे तक स्कूल में समय पर पहुँचना मेरे लिए एक समस्या थी। अकसर देर हो जाती थी। देर ही क्यों, सारा घर मैं अपने सिर पर उठा लेता था। कुछ खाता, कुछ न खाता। कपड़े भागते-भूगते पहनता और कई बार तो जरूरी कापी-किताबें भी घर ही भूल जाता था। परीक्षा-भवन में भी मेरी यह हड़-बड़ी मेरी प्रगति को काफी रोकती। कभी पूरे प्रश्न करके मैं घर नहीं लौटा, जब कि, मेरे कई साथी पूरा पर्चा करके परीक्षा-भवन से बाहर निकलते। पिताजी को मेरी यह आदत कभी भली नहीं लगती। वे बार-बार मुझे समझाते। मेरा 'कार्यक्रम' बनाते और मुझे समय पर काम कर लेने के लिए प्रेरित करते। माँ जो थी, सवेरे से जगाने से लेकर रात के सोने तक मेरे आगे-पीछे बेचारी घूमती।

एक दिन शाम को मेरे चाचा जब घर आये, तो उन्होंने एक 'रिस्टवाच' मुझे देकर कहा—"यह है तुम्हारे रोग की दवा। कुछ भी काम करो, नजर घड़ी पर रखो। इससे तुम्हारे काम ही समय पर नहीं होंगे, वे काफी सरल भी बन जायेंगे।" मैं तो संतप्त था ही, घड़ी हाथ में बाँध ली और चाचाजी का आदेश शिरोधार्य कर अपने को चलाने लगा! उस दिन से शायद ही कभी को मैंने छला हो। मेरा हर काम समय समय पर हुआ और इस तरह मैंने काम ही ज्यादा नहीं किया, स्वस्थ रहने में भी मुझे बड़ी मदद मिली है। — विश्वेश्वरैया

★

फूल की जड़

बचपन से ही मुझको फूलों से प्रेम रहा है। नये-नये फूलों की तलाश में मैं अपने गाँव के आसपास के सारे जंगलों को छान डालता था। मेरी माँ को फूलों के बारे में काफी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानकारी थी। खेत में फसल की क्यारियों के बीच कहीं-कहीं उसकी फूल की क्यारी भी होती थी। कई तरह के फूल वह उगाती थी। मुझे उसकी ये क्यारियाँ बड़ी भली लगतीं। एक बार वह काफी बीमार हो गयी। खेत पर आना-जाना उसका बंद हो गया। ऐसी हालत में उसने मुझे अपनी क्यारियों की देखभाल का काम सौंपा और कुछ बीज भी फूल उगाने के लिए दिये। मैं तो स्वयं ही माँ के हाथों से यह काम लेना चाहता था—दोनों समय मैं खेत पर उसकी क्यारियों में पानी देता और उनके पास मंत्र-मुग्ध-सा बैठा रहता। लेकिन एक सप्ताह बाद ही वे क्यारियाँ मुरझाने लगीं। मैं चिंतित हो गया। मैंने माँ को अपना दुःख कहा। दूसरे दिन माँ धीरे-धीरे चलकर खेत पर पहुँची। क्यारियाँ देखीं, तो वह गम्भीर हो गयी। स्नेह के साथ मुझसे बोली—"यह क्या किया तूने? पेड़ों की पत्तियों को धोता रहा और जड़ों का खयाल नहीं किया। 'फूल की जड़ें होती हैं, पत्तियाँ नहीं।' क्या लाओत्से का यह सूत्र तुझे मालूम नहीं? एक चतुर माली जड़ों की खबर रखता है, फूलों की नहीं। ला, खुर्पी ला। इनकी जड़ों में खाद डालें।" माँ की यह नसीहत मेरे जीवन के रंध्र-रंध्र में बैठ गयी! मैं कल्पनाजीवी, सौंदर्योपासक जड़ को पकड़ने के बजाय फूल-पत्तों पर ही यहाँ-वहाँ भटकता फिर रहा था! अतः माँ ने जो जीवन-रहस्य मेरी नन्ही चेतना पर उतारा, वह पत्थर की लकीर बन गया। बाद में, यही प्रस्तर-लीक मेरा जीवन-दर्शन भी बनी। अपने को ही नहीं, अपने आसपास के जड़-चेतन को भी सुंदर बनाने में मैंने लाओत्से के इस स्वर्ण-सूत्र—'फूल की जड़ें होती हैं, पत्तियाँ नहीं!'—को अपनाया।

—माओत्से तुंग

★

दूर का सितारा

वायलिन बजाने के मेरे शौक को देख कर मेरी माँ ने मेरे लिए एक उस्तादजी की तजवीज की थी। उनक नाम था, जार्जेज एनेस्को। वे वायलिन बजाने में तो माहिर थे ही; मगर उससे भी ज्यादा वे जिंदगी की बारीकियों को समझते थे। एक दिन वे वायलिन सिखाते-सिखाते मुझसे बोले—"इस फन का उस्ताद बनने के लिए एक बात सबसे ज्यादा जरूरी है और वह यह कि, अपनी नजर पास के नहीं, दूर के सितारे पर रखो!" उस सीख का उस समय तो मैं कुछ खास मतलब नहीं समझ सका था; लेकिन ज्यों-ज्यों मैंने दुनिया देखी, मैंने समझा कि, कितने पते की बात उन्होंने कही थी। मेरी जिंदगी में ऐसे कई मौके आये हैं, जब मैंने आज की खुशी के लिए आनेवाले कल को नजर-अंदाज करने की कोशिश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की है ; लेकिन फिर इस सीख का खयाल कर अपने को सम्भाला है और दूर के सितारे को देखकर बिगड़ी को बना लिया है। ऐसी ही एक घटना पहली बड़ी लड़ाई के बाद की है। बर्लिन में अमरीकी हाई कमिश्नर ने मुझे प्रोग्राम करने को बुलाया, पर चूँकि उन दिनों वहाँ यहूदियों (मेरी अपनी जाति) को ईसाइयों ने बुरी तरह परेशान किया था और दोनों मजहबों के माननेवालों में जानी दुश्मनी की हालत थी, मेरे मन में वहाँ न जाने का खयाल उठा। लेकिन उस्ताद की उस सीख—'दूर के सितारे'—को याद कर मैं वहाँ गया और मैंने देखा कि, मेरे प्रोग्राम को सुनने के बाद दोनों पक्षों में मैत्री कायम हुई और कई ईसाइयों नें अपनी गलती के लिए मुझसे माँफी माँगी।

—वायलिन-वादक, येहूदी मेन्यूइन

★

मन

मेरी उम्र तब कोई दस-ग्यारह साल की रही होगी। मेरे पिता एक स्कूल में अध्यापक थे। एक सुबह, स्कूल जाते समय, उन्होंने मेरी माँ से कहा—"सामी से कहना, अगर उसे पसंद हो, तो आज बगीचा साफ कर डाले। बगीचे में बेतरतीब घास उग आयी है।" पर दरवाजे तक पहुँच कर वे रुके और मुड़कर बोले—"सामी को अगर यह काम पसंद न हो, तब भी कहना, उसमें मन लगाने का प्रयास करे—उसे पसंद करे!"

अपने मित्रों के साथ मैंने कई योजनाएँ बना रखी थीं। किंतु पिताजी की आज्ञा तो कुछ और थी। मैं अनमने भाव से बगीचा साफ करने बैठा; किंतु आश्चर्य, थोड़ी देर बाद ही, मुझे उसमें एक प्रकार का आनंद आने लगा। मैं दूने उत्साह से काम में जुट गया और जो काम मुझे पहाड़ लगता था, देखते-ही-देखते वह समाप्त हो गया। इतना ही नहीं, मुझे अपने मित्रों के साथ खेलने का पर्याप्त समय भी मिल गया।

...आज भी, जब मेरे सामने ऐसी कोई दुविधा आ जाती है, तो पिताजी के ये शब्द कान में गूँज उठते हैं—"अगर तुम्हें अपने मन के अनुकूल काम न मिले, तो जो काम तुम्हें मिले, उसी में मन लगाने का प्रयास करो! यह संसार अनिश्चय-अकस्मात् का ही कोष है। कब इससे क्या निकल पड़े, कुछ ठिकाना नहीं।" मैंने अनुभव किया है, पिताजी का सूत्र कई बार मेरे लिए पतवार साबित हुआ है।

—सैम्युअल गाडविन

★

गांधीजी गोलमेज-कांफ्रेंस में लंदन गये थे। एक दिन लोग उन्हें नाच दिखाने ले गये। अपनी-अपनी जोड़ी के साथ सब नाचने लगे। किसी ने व्यंग्य में कहा—"आप भी अपना पार्टनर चुन लीजिये!" गांधीजी मुस्कराये और अपनी लाठी बताकर बोले—"मेरे साथ पार्टनर है!" —'बड़ों के विनोद' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहस्य
हनूमानजी का जन्मस्थान

ले० बालगोविंद द्विवेदी शास्त्री

☆

प्राचीन भारतीय साहित्य में हनूमान के सम्बंध में जानने के लिए वाल्मीकीय रामायण से उपयुक्त स्यात् कोई ग्रंथ नहीं। आदि कवि ने जो-कुछ कहा है, पक्षपातरहित होकर कहा है। उनका भौगोलिक वर्णन इतना ठोस है, उसकी आधारशिला इतनी दृढ़ है, जो कहीं से भी हिलती नहीं।

सुंदरकांड के ३५-वें सर्ग में हनूमान ने सीताजी से अपनी जन्मभूमि बतायी है। प्रथम साक्षात्कार में सीता को हनूमान पर संदेह हुआ, उसी की निवृत्ति अथवा विश्वास उत्पन्न करने के लिए उन्होंने यह प्रमाण दिया—

माल्यवान्नाम वैदेहि
गिरिणामुत्तमो गिरिः,
ततो गच्छति गोकर्णं
पर्वतं केसरी हरिः।
स च देवर्षिभिर्दृष्टः
पिता मम महाकपिः,
तीर्थेः नदीपतेः पुण्ये
शम्बसादनमुद्धरन्।
यस्याहं हरिणक्षेत्रे
जातो वातेन मैथिलि,
हनूमानिति विख्यातो
लोके स्वेनैव कर्मणा।
हतेऽसुरे संयति शम्बसादने
कपिप्रवीरेण महर्षि चोदनात्,
ततोऽस्मि वायुप्रभवो हि मैथिलि
प्रभावतः तत्प्रतिमश्च वानरः।

—हे वैदेहि, पहाड़ों में माल्यवान् नामक एक उत्तम पर्वत है। उसके बाद गोकर्ण पर्वत है। वहाँ तक केसरी हरि पर्वत प्राप्त होता ह। वह केसरी हरि (हरिवर्ष) महाकपि (महाहरिवर्ष) देवर्षियों द्वारा मेरा पिता निर्णीत किया गया

प्रतिहारी

है; केवल महाकपि (महाहरि) पर्वत में उत्पन्न होने के कारण। समुद्र के पुण्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पवित्र तट पर शम्ब (भू-कटिवंध) से सादित महाप्रदेश होने से दैत्यरूप देश का उद्धार करते हुए, मैं शम्बसादन (स्वीडन) के हरिणक्षेत्र (हार्न) में वायु द्वारा उत्पन्न हूँ। जगत् में अपने ही कर्मों से हनूमान नाम से प्रसिद्ध हूँ। संग्राम (यह संग्राम प्रतिवर्ष होता है) में महर्षि की आज्ञा से (वेद-वाक्यानुसार) कपि-प्रवीर अर्थात् हरि-प्रवीर (सूर्य) से हत शम्बसादन (स्वीडन) में मैं वायु द्वारा उत्पन्न हूँ। मैं वायु-केसरी, हरिपर्वत (साइबेरिया, यूरोपीय रूस तथा स्कैंडिनेविया) में पैदा होने से वायुपुत्र हूँ। जैसे शम्बसादन पर्वत आकृति में वानर के सदृश है, उसी प्रकार मैं भी वहाँ का निवासी होने के कारण (वानर सदृश देश में उत्पन्न होने के कारण) एक आरोपित वानर ही हूँ।

संस्कृत भाषा में नक्शे न होने से, आधुनिक माप में माल्यवान् आदि पर्वत प्राप्त नहीं होते हैं, अतः शास्त्रप्रामाण्य से उन पर्वतों के सम्बंध में विचार करना चाहिए। भास्कराचार्य ने माल्यवान् पर्वत के सम्बंध में लिखा है—

माल्यवाँश्च यमकोटिपत्तना-
द्रोमकाच्च किल गन्धमादनः,
नील शैल निषधावधी
तावन्तरालमनयोरिलावृतम्।

भास्कराचार्य के इस कथन से यमकोटि-पत्तन (आस्ट्रेलिया) से नील, निषध पर्वत पर्यंत माल्यवान् पर्वत स्थित है। हरिवर्ष (साइबेरिया) से उत्तर भाग में आर्कटिक समुद्र के बीच जो भी पर्वतसत्ता है, वह नैषधी पर्वतसत्ता है, तथा रम्यक्वर्ष (कनाडा) से उत्तर भाग में आर्कटिक समुद्र के मध्य में नीलपर्वतीय सत्ता विद्यमान है। अतः त्रिविष्टप (चीन-तिब्बत) सहित सम्पूर्ण किन्नर देश माल्यवान् से व्याप्त है। त्रिविष्टप का एक देश गोकर्ण पर्वत—गंगोद्भवस्थल—प्रसिद्ध ही है। इसके बाद केसरी (प्रचंडवात) प्रचंड वात-प्रधान हरिवर्षीय पर्वत गोकर्ण पर्वत तक प्राप्त होता है। गोकर्ण पर्वत वाल्मीकि रामायण में मेरु-दुहिता हिमालय-पत्नी कहा गया है। मेनका के लिए उमा

हनूमान-सीता

उद्दाम-उच्छृंखल आँधी जब थककर धरती के सामने विनयावत खड़ी हो गयी, तो धरती ने सस्नेह कहा— "इस तरह कूद-फाँद कर तूने श्रांति के सिवाय और क्या पाया! अच्छा तो यह होता कि, आकाश के गह्वर में छिपे बादलों को नीचे उतार लाती।" आँधी का मुँह लज्जित-रक्तिम हो गया और वह बादलों को पकड़-पकड़ कर धरती पर लाने लगी। वातावरण की यह आँधी रामायण के हनूमान हैं और धरती रामायण की सीता।

—आचार्य स्वामी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओबी) नदी देखना चाहिए। यह गोकर्ण पर्वत महा विशाल है; हिमालय के सदृश ही। इसीलिए मंगल (मंगोलिया) तक मेनका (गोकर्ण) है और मंगलदेशोद्भवा उमा नदी मेनकापुत्री कही जाती है।

देवर्षियों द्वारा महाकपि (महाहरि) प्रचंड हरिपर्वत हनूमान का पिता कहा गया, है! शवर-(साइबेरिया) केसरी हरिवर्ष है। आधाराधेयभाव से वह पर्वत महाकपि याने महाहरि अर्थात् प्रचंड पवन और सूर्य का क्षेत्र है। अतः गोकर्ण पर्वत से पश्चिम और उत्तर दिशा के सम्पूर्ण पर्वत वात-प्रधान होने से पवन-पर्वत कहे गये हैं। पवनत्व सिद्ध होने से यह देश पवन, हरि, सिंह आदि एकार्थक नामों से विदित होता है। अतः शवर सूरसेन (साइबेरिया और रूस) हरिवर्ष हो जाता है। इसके दो नाम गंधमादन और पारिजात भी मिलते हैं। किंतु गंधमादन पर्वत अटलांटिक समुद्र (अतलदेश) तथा भारत के किंचित् पश्चिमी भाग तक व्याप्त है। उसके बाद समुद्र की पावन वेला (तट) में शम्बसादन दैत्य का निवासस्थान शम्बसादन देश है। वहाँ के हरिणक्षेत्र (वर्तमान हार्न) में शम्बसादन का उद्धार करते हुए, मैं पैदा हुआ हूँ और अपने ही कर्मों से हनूमान नाम से विख्यात हूँ। हनूमान के पूर्वोक्त कथन की पुष्टि इस प्रकार हो जाती है।

इस देश की विशेषता यह है कि, सूर्य के नाड़ीवृत्त से अत्यंत दूर हो जाने के कारण ११ नवम्बर से १५ जनवरी तक सूर्य का उदय नहीं हो पाता। ११ नवम्बर प्रायः कार्तिक अमावस्या के आस-पास ही पड़ता है और यह ध्यान देने की बात है कि, हनूमान का जन्म भी कार्तिक मास में हुआ है। शम्बसादन से पूर्व भाग में अर्कदेश (आर्चेंजिल) स्थित है, अतः रामायण में हनूमान द्वारा सूर्य का निगलना कहा गया है, (आर्चेंजिल का उच्चारण यदि अर्कांगिल किया जाय, तो बात काफी स्पष्ट हो जाती है)। शम्बसादन देश में जन्म होने से हनूमान भी शम्बसादन (पवन) पुत्र कहलाये। शम्बसादन भूमि अर्क देश तक आरूढ़ है; अतः हनूमान सूर्यभक्षक अथवा ग्रहणकर्ता कहे गये हैं। अर्क देश हनूमान से आक्रांत है, इसे स्पष्टतः नकशे में देखना चाहिए।

अब यह देखना है कि, हरिवर्ष में समुद्रतट पर शम्बसादन नाम का वह कौनसा देश हो सकता है, जो शम्ब रेखा से सादित (विद्ध) है। आप देखेंगे कि, शब्दतः और अर्थतः भी, स्वीडन देश ही शम्ब द्वारा ६६½ अंश पर विद्ध है तथा समुद्रवेला में भी है।

शम्बसादन शब्द में प्राकृतरीत्या 'शम्' का लोप होने से तथा 'व्यत्ययश्च' सूत्र से वकार, सकार का व्यत्यय होने से 'स्वादन' ही स्वीडन का रूप धारण कर लेता है। 'जो शम्ब अर्थात् भू-कटिबंध रेखा से सादित (विद्ध) हो' इस विग्रह से तथा समुद्रवेला में स्थित होने से इसका नाम स्वीडन पड़ गया है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलबानी मीठा जहर

एक फूल के शूल की दंशपूर्ण कहानी नीदरलैंड्स के विख्यात पुष्प-विशेषज्ञ कीस बोके की जबानी

*

आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व ओगियर डे बसबेक्यू नामक एक व्यक्ति जब कुस्तुंतुनिया से लौटा, तो अपने साथ तुलबानी के कुछ पौधे भी लेता आया। पहली बार पश्चिमी यूरोप के लोगों ने तुलबानी के सुंदर फूलों को देखा और मुग्ध हो उठे। फूलों के शौकीनों में एक उत्तेजना की लहर-सी दौड़ गयी और तुलबानी के फूलों को खरीदने की एक होड़ मच गयी। तुलबानी की नयी किस्मों और नये फूलों के लिए धनी, व्यवसायी और सामंत काफी रकम खर्च करने को तैयार हो गये।

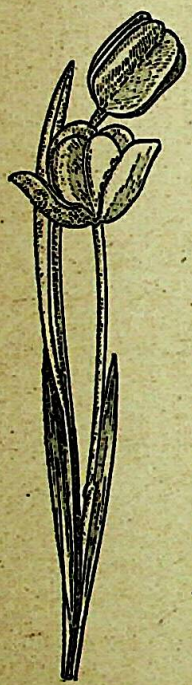

तुलबानी

प्रसिद्ध डच वनस्पतिशास्त्री कारोलस क्यूसियस ने यह देखा, तो बसबेक्यू से तुलबानी के बीज खरीद लिये और नये-नये प्रयोग कर तुलबानी की कुछ बड़ी सुंदर किस्में तैयार कीं। तुलबानी के ये फूल वास्तव में, बड़े आकर्षक और लुभावने थे; किंतु कारोलस ने उनके लिए इतनी अधिक कीमत माँगी कि, कोई भी खरीदने को तैयार नहीं हुआ। और, एक दिन, रात्रि के घने अंधकार में, उसके सब-के-सब फूल चोरी चले गये।

तुलबानी के फूलों का शौक बढ़ता गया। कुछ ही दिनों बाद, बगीचे में तुलबानी के फूल होना प्रतिष्ठा की एक निशानी बन गया। जिनके पास तुलबानी के साधारण फूलों से भिन्न, खास किस्म के फूल होते थे, वे बहुत ही प्रतिष्ठित और सम्भ्रांत माने जाते थे।

और, सन् १६२० तक तो तुलबानी का यह शौक सर्वव्यापी हो गया था। जिस किसी के पास बगीचा लगाने के लायक जगह थी, उसने तुलबानी के पौधे लगा दिये। किंतु तुलबानी की इस 'बीमारी' ने भयंकर रूप धारण किया, सन् १६३४ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हालैंड-वासियों पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। हजारों नागरिकों ने इस तुलबानी के पीछे अपनी संचित सम्पत्ति खर्च कर डाली। व्यवसायियों ने अपने व्यवसाय की उपेक्षा की, नौकरी-पेशा व्यक्तियों ने नौकरी छोड़ दी, लड़कों तथा प्रोफेसरों ने कालेज जाना छोड़ दिया, कई ने घर-बार गिरवी रख दिये और यह सब-कुछ हुआ सिर्फ तुलबानी के लिए। जुलाहे, जुलाहे न रहे, कोचवान, कोचवान न रहे, सड़क साफ करनेवाला भंगी, भंगी न रहा—सब तुलबानी का व्यापार करने लगे। सारे हालैंड की रूपरेखा ही बदल गयी—सारा व्यवसाय तुलबानी के फूलों में बदल कर रह गया। स्वभावतः ही इसका प्रभाव राष्ट्र की आर्थिक - सामाजिक स्थिति पर भी पड़ा।

जैसे-जैसे तुलबानी के फूलों की कीमत बढ़ती गयी, लोग रातों-रात धनी होते गये। और, फिर तो हालत यह हो गयी कि, हर जगह तुलबानी की ही चर्चा होने लगी। छोटे शहरों में वहाँ की सरायें बिक्री-केंद्र बन गयीं, जहाँ तुलबानी के व्यवसायी आते और खरीद-फरोख्त की बातें होतीं। अधिकांश लेन-देन कागजों पर होता था—सिर्फ थोड़ी-सी कीमत सिक्कों के रूप में चुकायी जाती थी। किंतु तुलबानी की कीमत उस वक्त इतनी अधिक थी कि, वह थोड़ी-सी रकम भी काफी हो जाती। तुलबानी के एक व्यवसायी ने स्वयं ही एक बार कहा था—"मैं इन सरायों में बहुधा गया हूँ। जब भी गया, मैंने काफी खर्च किया; किंतु घर लौटने पर मेरे पास हमेशा ही, जितनी रकम लेकर मैं गया था, उससे ज्यादा रकम ही रहा करती थी।"

एक दूसरे व्यवसायी के पास एक बार जहाज में लदकर सामान आये—गेहूँ, भेड़, अंडे, शराब, बीअर, सूअर, मक्खन, कपड़ा, चाँदी के बरतन और इसी तरह

गुलाबोत्सव

असीरिया की राजकुमारी को पीला गुलाब प्रिय था। आसपास के राजकुमारों में प्रचंड प्रतियोगिता शुरू हो गयी। परस्पर घोर युद्ध भी होने लगे। सम्राट् को बड़ी चिंता हुई। एक दिन उन्होंने विराट् पर्वोत्सव आयोजित किया। राजकुमारी ने अपने बगीचे के गुलाबों से मंजूषा भरी और सब फूल पर्वोत्सव के देवता को चढ़ा दिये—"प्रभो, जो सर्वश्रेष्ठ है, वह हमारा मानवों का नहीं, आप देवाधिदेव का है।" सम्राट् की यह युक्ति काम कर गयी। अन्य राजाओं ने भी पर्वोत्सव मनाये और अपने बगीचों के चुने हुए गुलाब देवता को चढ़ाये। कहते हैं, यह 'गुलाबोत्सव' कई वर्षों तक असीरिया में चलता रहा।

—एक असीरियन लोककथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की अन्य चीजें, जिनकी कीमत लगभग ढाई हजार स्वर्णमुद्राएँ थीं। और, इन सारे सामानों के बदले में व्यवसायी ने दिया तुलबानी का एक फूल!

तुलबानी की नयी-नयी किस्मों के लोगों ने अलग-अलग नाम भी रख छोड़े थे। 'वायसराय', 'गौडा', 'एडमिरल-लाइफकेन' ये सब तुलबानी के फूलों के नाम थे और इनकी कीमत ३ हजार से लेकर ४,४०० स्वर्णमुद्राएँ थी। किंतु सर्वाधिक लोकप्रिय और सर्वश्रेष्ठ किस्म के तुलबानी की कीमत थी, कम-से-कम साढ़े पाँच हजार स्वर्णमुद्राएँ। तुलबानी की इस किस्म के फूलों का नाम रखा गया था—'सेम्पर अगस्ट्स'।

तुलबानी के फूलों का व्यवसाय बढ़ता गया, उनकी कीमत बढ़ती गयी और एक दिन व्यवसायियों ने अधिक मुनाफा कमाने के विचार से अपने पास के फूलों को दबा कर रख लिया। फूलों के शौकीन व्यग्र हो उठे और व्यवसायियों ने मनमानी कीमत वसूल कर ली!

किंतु अक्तूबर, सन् १९२९ में एक दिन, अचानक ही जैसे उन पर वज्रपात हुआ। तुलबानी के फूलों की कीमत अनायास ही घट गयी। जिस 'सेम्पर अगस्ट्स' की कीमत साढ़े पाँच हजार स्वर्णमुद्राएँ थी, उसकी कीमत मात्र ५० रजतमुद्राएँ रह गयीं; किंतु फिर भी कोई खरीदार नहीं था। स्थिति ऐसी आ गयी थी कि, सब तुलबानी के फूल बेचने ही वाले थे, उन्हें खरीदने वाला कोई नहीं।

कागजों की लिखा-पढ़ी के अनुसार जो व्यक्ति लाखों-करोड़ों के मालिक थे, उनके पास सिर्फ 'बेकार' के कुछ फूल रह गये। जिनसे लिखा-पढ़ी हुई थी, उन्होंने रकम देने से इन्कार कर दिया और फूल लौटा गये। रकम देते भी कहाँ से — जब उन्हें ही कोई कुछ देनेवाला नहीं था! अदालत में भीड़ लग गयी; किंतु अदालत ने भी ऐसे समझौतों को 'एक प्रकार का जुआ' कह कर रद्द करार किया।

और, इसका परिणाम भी तत्काल ही हुआ। रातों-रात करोड़पति बन जानेवाले एक ही रात में भिखारी बन गये। जुलाहे फिर जुलाहे बन गये, कोचवान, कोचवान बन गया और भंगी ने फिर सड़कें साफ करना शुरू कर दिया। तुलबानी के इन 'शौकीनों' को एकबारगी ही उससे नफरत हो गयी। किंतु जो सही मानी में फूलों के शौकीन थे, उन पर इस उतार-चढ़ाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तुलबानी के फूल उनके बगीचे में वैसे ही खिलते रहे और उनका प्रेम वैसा ही अक्षुण्ण रहा।

हालैंड ने भी तुलबानी का तिरस्कार नहीं किया— उसे अपनाया; किंतु उसने इस बार विवेक और बुद्धि से काम लिया। धीरे-धीरे तुलबानी के फूलों का व्यवसाय हालैंड का एक प्रमुख व्यवसाय बन गया। आज जो तुलबानी के फूल बाजार में पहुँचते हैं, उनमें सबसे अधिक तथा सर्वाधिक सुंदर फूल हालैंड से ही आते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं डेनी के बच्चों का मित्र

सुप्रसिद्ध हँसोड़ अभिनेता डेनी के राष्ट्रसंघ की प्रशाखा 'यूनिसेफ' की प्रेरणा पर 'बच्चों की दुनिया' के राजदूत बनकर सन् १९५४ में विश्व-भ्रमण को निकले थे। एशिया, यूरोप और अफ्रीका के देशों के लगभग ४ करोड़ बच्चों का मनोरंजन करते हुए अभी तक उन्होंने एक लाख मील का सफर तय किया है। इस यात्रा के दौरान में उन्होंने अगणित पीड़ित-पंगु और असहाय-अनाथ बालकों की अंधेरी दुनिया में अपने अभिनय, विनोद और नाच-गान द्वारा हँसी-मुस्कान की जो रोशनी दी है, उसकी तुलना वस्तुतः संजीवनी से ही की जा सकती है। यहाँ हम स्वयं डेनी के द्वारा इस स्तुत्य मिशन का संक्षिप्त विवरण प्रकाशित कर रहे हैं। इस विवरण को पढ़कर, क्या ही अच्छा हो कि, हमारे देश के ख्याति-प्राप्त अभिनेता भी डेनी के की भाँति बच्चों की इस अंधेरी दुनिया में रोशनी की कुछ किरणें दें।

★

जब मुझे ही दूत बनने का मौका मिल गया, तो हो सकता है कि, एक दिन आप भी दूत बना दिये जायें और तब आप मेरे अनुभव से लाभ उठा सकें; इसलिए कुछ परामर्श मैं आपको देना चाहता हूँ।

पिछले तीन वर्षों में मैं यूरोप और अमेरिका के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तथा अफ्रीका में संयुक्त राष्ट्र के बाल-कोष के विशेष दूत के रूप में एक लाख मील की यात्रा कर चुका हूँ। संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक इतना बड़ा पत्र मेरे साथ रहता है, जिसे छः बार तह करने पर भी जेब में मैं मुश्किल से ही रख पाता हूँ। और, अब मुझे पता चल गया है कि, इस पत्र का सार केवल इतना है—"इस जंतु को जाने दो।" लेकिन इसका चमत्कार तो देखिये—बम्बई से अल्जीरिया तक यह पत्र 'कस्टम' के अधिकारियों के सामने जादू का काम करता है!

एक और बात जो मेरी समझ में आयी है, वह यह कि, इस पेशे में न-जाने कब किस भाषा की जानकारी जरूरी हो जाये। लेकिन इससे घबराने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि दुभाषिये हर जगह मिलते हैं। हाँ, इतना अवश्य है कि, दुभाषिये की सुविधा के लिए आप अपने वाक्यों को टुकड़े-टुकड़े कर के बोलें। फिर भी अगर कभी भूल से लम्बा वाक्य बोल जायें, तो दुभाषिये को कुछ परेशानी तो जरूर होगी, शायद वह नाराज भी हो—लेकिन फिर हो क्या सकता है; काम तो किसी तरह चलेगा ही!

दूत को जो दूसरी महत्वपूर्ण बात याद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखनी चाहिए, वह है–शिष्टाचार का हमेशा पालन करना।

शिष्टाचार क्या है, यह मैं मिसाल देकर ही समझा सकता हूँ। वियेना में मैं आस्ट्रिया के राष्ट्राध्यक्ष से भेंट करने गया। उसी रोज मैं मेयर, सामाजिक कल्याण-मंत्री और वित्त-मंत्री से मिल चुका था और मेरे पैर टूट रहे थे। राष्ट्राध्यक्ष कमरे में आये और खड़े-खड़े ही मुझसे बातें करने लगे। जब मेरे पैरों ने बिल्कुल जवाब दे दिया, तो मैंने उनसे आग्रह किया-"आप तशरीफ रखिये न!"

वे हैरान हो गये और बोले–"ओह, यह तो दर असल मुझे आपसे कहना चाहिए था!"

"तो अब कह दीजिये!" मैंने मुस्कराते हुए कहा। यह है शिष्टाचार!

डेनी के (व्यंग्य-चित्र)
[चित्र : 'शकर्स वीकली' से साभार]

दूतों के लिए सबसे महत्वपूर्ण नियम कदाचित् यह है–किसी की उपेक्षा मत करो। गत वर्ष बोन में संयुक्त राष्ट्रसंघ के बाल-कोष के अधिकारियों ने मुझे दावत दी। उसमें मैं प्रमुख अतिथि था, सो मेजबानों ने एक-एक करके मेरे प्रति शुभकामनाओं के 'टोस्ट' पान करने आरम्भ किये। दो-तिहाई मेजबानों के बाद मैं एकाएक खड़ा हुआ और अपना गिलास उठाकर चिल्लाया–"बाल-कोष के सैनिकों को! बैरों को!" और, सबने मेरे साथ बैरों के प्रति शुभकामनाओं के 'टोस्ट' का पान किया।

खैर, यह तो हुई मजाक की बात। असलियत यह है कि, शिष्टाचार की औपचारिकता से मैं बिल्कुल परिचित नहीं। जैसा मेरी बुद्धि कहती है, वैसा ही मैं आचरण करता हूँ। भाषा भी केवल अपनी जानता हूँ। फिर भी मैं दूत हूँ। भले ही मेरा कार्य-क्षेत्र बच्चों की हँसी-खुशी की दुनिया तक सीमित है। गेलिली के समुद्र के किनारे एक खुली हुई रंगशाला में मैंने ६,००० बच्चों को हँसाया है, तो एथेंस के पोलियो स्नानागार में केवल ६ को! अंकारा में मैं २०,००० तुर्कों के सामने विदूषक के रूप में प्रकट हुआ हूं, तो थाइलैंड में, 'या' रोग से पीड़ित, केवल ५० बालकों के सामने।

बाल-कोष से मेरा सम्बंध अकस्मात् ही जुड़ा। तीन वर्ष हुए, मैं पूर्व की यात्रा पर रवाना होने वाला था कि, कोष के कार्यकारी निर्देशक मारिस पेट ने मुझसे कहा कि, क्या मैं उनकी संस्था के केंद्रों में भी प्रस्तुत हो सकूंगा। मैंने स्वीकार कर लिया और तब से इस संस्था के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा यह सम्बंध कायम है।

मैंने स्याम में एक बच्चे को 'पेनिसिलिन' के सिर्फ एक इंजेक्शन से 'या' रोग से छुटकारा पाते देखा है; जिन कोरियाई बालकों को दूध के दर्शन दुर्लभ थे, उन्हें मैंने दूध पीते देखा है। इस वर्ष तो बाल-कोष ४ करोड़ दीन बालकों के लिए दूध और इलाज की व्यवस्था कर रहा है। मेरा दूत का यह पद इसी बाल-कल्याण-कार्य के लिए अपना अस्तित्व रखता है!

मैंने अपनी यात्रा में बहुत-सी बुराइयाँ भी देखीं—जैसे मोरक्को में बच्चों के मुँह पर मक्खियाँ भिनभिनाती ही रहती हैं। लेकिन जहाँ-जहाँ भी मैं गया; मैंने सबसे बड़ी बात यह देखी कि, कोई देश हो, कोई जाति हो, सभी बालकों की सेवा और सहायता बाल-कोष के अधिकारी समान भाव से करते हैं।

वस्तुतः इसी से मैंने बच्चों की सेवा करने की प्रेरणा पायी। हँसाना मेरा पेशा है। बच्चों को भी हँसाने का मैंने प्रयत्न किया। ऐसे-ऐसे बाल-समूहों के सामने मैंने अपनी कला का प्रदर्शन किया है, जिन्होंने डेनी का तो क्या, अमेरिका का भी नाम नहीं सुना था, जो मेरी भाषा तक नहीं समझते थे। परंतु जब कोई व्यक्ति मूर्खानंद की तरह आचरण करे, तो बच्चे भला हँसे बिना कैसे रह सकते हैं। मैंने अपनी चाल से उन्हें हँसाया, तरह-तरह से मुँह बना कर हँसाया, नकल उतार कर हँसाया।

अपनी इस हैसियत में एक प्रयत्न मैंने सदा विशिष्ट रूप से किया— उनकी भाषा के दो-एक शब्द सीखने का; क्योंकि अपनी यात्राओं से मैंने सीखा है कि, सामने-वाले व्यक्ति की भाषा का आप चाहे एक मुहावरा ही बोल दें, तो वह आनंद से भर जाता है। मैंने अपने इस प्रयोग से भी बच्चों को हँसाया है।

तीन वर्षों में एक लाख मील की इस यात्रा में मैंने बच्चे तो अच्छे भी देखे और बुरे भी; लेकिन वयस्क व्यक्ति एक भी ऐसा नहीं देखा, जो रोगी बालक के प्रति

डेनी के तुर्की के अनाथ बच्चों के बीच—कितने खुश हैं ये बालक! विनोद के अलावा क्या कोई दवा है ऐसी, जो रोतों को ऐसा हँसा दे? अभिनेता डेनी के धन्य हो गया!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहानुभूति न रखता हो, उसे रोगमुक्त न कराना चाहता हो।

सन् १९५६ की ग्रीष्म ऋतु में, मैं मोरक्को के एक छोटे-से कस्बे, जगोरा में गया। ६६७ आदमियों की यह बस्ती है। यहाँ आँखों का एक रोग, 'कंजंक्टिवाइटिस' खूब प्रचलित था और इससे अक्सर आँख में 'ट्रकोमा' हो जाता था, जो आँखों को दृष्टिहीन करके ही छोड़ता था। तीन साल हुए, सरकार ने इसकी रोक-थाम के उपचारों का अध्ययन किया और स्वास्थ्य-कर्मचारियों के १७ दल एक पहाड़ी की तलहटी के छोटे-से क्षेत्र में जा बसे। वहाँ गर्मी ११५ डिग्री तक पहुँचती थी; परंतु वे लगन से अपने काम में लगे रहे। छः महीनों तक वे दिन में दो बार १,१४,००० व्यक्तियों की आँखों का 'एन्टिबायोटिक' मरहम से इलाज करते रहे। और, अपनी मेहनत का उन्हें सुफल मिला—उस साल वहाँ एक व्यक्ति को भी 'कंजंक्टिवाइटिस' का भयंकर रोग नहीं हुआ।

इन दलों के एक फ्रांसीसी डाक्टर को मैं कभी नहीं भूल सकता। हर तीन-चार सप्ताह बाद, वह स्वयं इस रोग का शिकार होता था; परंतु अपना इलाज करके फिर काम में जुट जाता था। ऐसी लगन के कारण ही मोरक्को में 'ट्रकोमा' का नामोनिशान मिट रहा है।

परंतु बाल-कोष के कर्मियों तथा स्थानीय और 'विश्व-स्वास्थ्य-संगठन' के कर्मचारियों को अपना काम करने में कई कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है। उदाहरणार्थ, जो भय और शंकाएँ लोगों के अंदर पीढ़ियों से घर किये हुए हैं, उन्हें दूर करना होता है। चार साल हुए, बाल-कोष के कर्मचारियों ने सीरिया के एक गाँव में प्रसूति-गृह और बाल-उपचार-केंद्र खोले। परंतु वहाँ कोई आता ही न था। लोग उन्हें संदेह की निगाह से देखते थे। एक दिन रात को बालकोष-द्वारा प्रशिक्षित दाई को कुछ अरब पुरुष बुलाने आये। बात यह थी कि, एक गाय की प्रसूति में कुछ गड़बड़ हो गयी थी। वस्तुतः यह

हमारा प्रथम कर्त्तव्य

१. बालक को आपसे, समाज से, पूरा संरक्षण, प्रेम, आस्था और प्रेरणा मिले।

२. बालक को अपने सर्वांगीण विकास के लिए पूरे साधन, अवसर मिलें।

३. बालक भूखा न रहे, अपंग न रहे, बीमार न रहे, उपेक्षित न रहे, अनाथ-अशिक्षित न रहे।

४. बालक को जीविका कमाने की शिक्षा मिले, मार्गदर्शन मिले; सब प्रकार के शोषण से त्राण मिले।

५. बालक आज के बुढ़ापे की लकड़ी, कल की किश्ती का कर्णधार है। वह मानवता का ध्रुवतारा है।

—जेनेवा-चार्टर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोष के कर्मचारियों की परीक्षा थी। दाई वहाँ गयी और जो-कुछ गाय की प्रसूति के लिए वह कर सकती थी, उसने किया। और, उसकी सफलता के फलस्वरूप अगले दिन से केंद्र में स्त्रियों और बच्चों का, उपचार के लिए ताँता ही बँध गया।

अपने विचार से अंधविश्वास और संदेह के विरुद्ध मैंने सबसे जबर्दस्त लड़ाई नाइजीरिया में देखी। इस लड़ाई के प्रधान सेनापति हैं— डा० चार्ल्स मैकनाफी रास। २८ वर्षों से आप नाइजीरिया में हैं। इस समय वे ५० वर्ष के हैं। यदि उनकी आयु लम्बी हुई, तो अपने जीवन-काल में ही वे वहाँ कुष्ठ रोग को सदा के लिए मिटा देंगे। जो कुष्ठ-रोगी कुछ वर्ष पहले सामाजिक जीवन से बहिष्कृत हो जाते थे, उन्हें आज 'सल्फोन' की कुछ ओषधियों से नयी आशा मिल गयी है। पहले अपनी हीनता को छिपाने के लिए कुष्ठ-पीड़ित लोग छिपकर रहते थे, परंतु आज वे खुले-आम इलाज कराने आते हैं और एक सीमा तक सामाजिक जीवन भी बिताते हैं।

ऐसे प्रयत्नों के परिणामस्वरूप दुनिया के हीन लोग समझ गये हैं कि, उनके सौभाग्यशाली भाई उनकी सहायता करने को उत्सुक हैं। मैं उन लोगों से मिला हूँ। वे भीख माँग कर नहीं, मेहनत करके जिंदगी बिताना चाहते हैं और अब वे यह जान गये हैं कि, उन्हें इसका अवसर भी मिलेगा।

मेरा विश्वास है कि, सुख का कोई निश्चित मापदंड नहीं है—जैसे कुष्ठ-रोगी भले-चंगे लोगों में मिल-जुल कर बैठने से ही सुखी होता है। उत्तरी नाइजीरिया में कुष्ठ-पीड़ितों की एक बस्ती में मेरा जो स्वागत हुआ, वह मुझे अच्छी तरह याद है। कुष्ठ-पीड़ित लोग एक घेरा बना कर मेरे चारों ओर खड़े हो गये और जब ढोल बजाने वालों ने ढोल बजाने शुरू किये, तो बच्चे उनकी ताल पर नाचने लगे। मेरी भी नाचने की इच्छा हुई और मैं उनके साथ नाचने लगा। चक्कर ऐसे लग रहे थे और पैर ऐसे उठ रहे थे, जैसे हमने हफ्तों अभ्यास किया हो। मुझे आनंद आया, मेरे साथ नाचने वालों को आनंद आया और देखने वालों को भी— वे तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

लोगों को सुखी करने के उद्देश्य से कभी मैं डाक्टर बनना चाहता था। डाक्टर तो मैं नहीं बना; परंतु लोगों को हँसा कर सुखी करने में मैंने अवश्य सफलता हासिल की है और मेरा विचार है कि, हँसाना भी एक ओषधि ही है।

★

"आदमी के पास देने के लिए कितना-कुछ है—प्रेम का सागर है, हँसी के फूल हैं। और, इन दोनों की कोई कीमत नहीं लगती। तो भाई, सोचते क्या हो, देना शुरू कर दो—तुम्हारी क्यारी के फूल रोज-ब-रोज झड़ रहे हैं, जीर्ण होकर सड़ रहे हैं, उन्हें बाँटते चलो। स्वयं खिलो और दूसरों को खिलाते चलो।" —डेनी के

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१-वीं सदी में ही पर्वताकार मनुष्यों की जरूरत

समुद्र के इन पौष्टिक खाद्यों के पोषण से भविष्य का वैज्ञानिक मनचाहे आकार-प्रकार अथवा बुद्धि-बल के मनुष्यों का विकास कर सकेगा। प्रस्तुत लेख में रूस के विज्ञान-अकादमीशियन प्रो० जनकविच ने इन खाद्यों का यहाँ स्पष्टीकरण किया है।

★

यह सच है कि, समुद्र के जल में जितना सोना है, यदि वह सब निकाल लिया जाये, तो सोने का भाव ताँबे से अधिक नहीं रह जायेगा। सागर के ऐश्वर्य की बराबरी हमारी सूखी धरती भला क्या करेगी? पर सागर केवल रत्नों की ही दृष्टि से सुसम्पन्न नहीं है—खाद्य-पदार्थों, पोषक-पदार्थों और विटामिनों के मामले में भी उसकी सम्पन्नता विस्मित करनेवाली है।

उदाहरण के लिए, व्हेल मछलियों को ले लीजिये। उनके आकार को देख कर कोई सोचेगा कि, हाथियों की तरह उनको भी परिपक्वता तक पहुँचने में वर्षों लग जाते होंगे। लेकिन वे 'समुद्री हाथी' तो अपने जीवन के दूसरे या तीसरे वर्ष में ही परिपक्व हो जाते हैं और बच्चे देने लगते हैं। उनके इस तीव्र विकास का जो कारण विज्ञान बताता है, वह यह है कि, खाद्य-पदार्थों, पोषक-पदार्थों और विटामिनों के मामले में महासागर सूखी जमीन से कहीं अधिक धनी है।

पृथ्वी पर पौधों को गर्मी और ठंड से अपनी रक्षा करनी पड़ती है, मिट्टी से नमी निकालनी पड़ती है, हवा से लड़ना पड़ता है और सूरज की ओर बाँहें फैलानी पड़ती हैं। उनकी सारी शक्ति इसी में खर्च हो जाती है और जमीन के पौधों में कुल जितनी पोषक और उपयोगी सामग्री होती है, उसका केवल पाँच-छः प्रतिशत भाग ही मनुष्य के भोजन के रूप में उपयोग के लिए बचता है। दूसरी ओर समुद्र में पौधों को मजबूत तनों, बड़ी-बड़ी जड़ों, या संरक्षण के अन्य साधनों की आवश्यकता नहीं होती। जमीन के पौधों के बिल्कुल विपरीत, समुद्री घास लगभग पूरी तरह कोमल कार्बनिक पदार्थों की बनी होती है, जिनका भोजन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अतः महासागर की परिस्थितियाँ पौधों के जीवन के लिए आदर्श परिस्थितियाँ होती हैं। चारों ओर जल-ही-जल होता है, जिससे उनको पोषण मिलता है और ताप भी अनुकूल बना रहता है। वस्तुतः यह बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible]रण नहीं है कि, पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति सबसे पहले गर्म पानी के महासागरों के उपहृदों में हुई थी।

यह बात अब पूरी तरह प्रमाणित हो चुकी है कि, जमीन के किसी पौधे में विटामिनों का वैसा संकलन नहीं होता, जैसा समुद्री जीवों में होता है। यहाँ सूखी धरती पर, यदि आप किसी वनमार्ग के पेड़ों को काट डालें और नवजात बिरवे लगा दें, तो उनको परिपक्वता तक पहुँचने में चालीस वर्ष लग जायेंगे; लेकिन महासागर में, उन तमाम जीवों की, जिनमें भूगोल की अधिकतर आधारभूत वनस्पतियाँ आ जाती हैं, एक वर्ष म पचास पीढ़ियाँ तैयार हो जाती हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि, उनको महासागर से प्रचुर पोषण प्राप्त होता है। मछलियाँ सागरीय जीवन की इसी विशेषता को प्रकट करती हैं।

समुद्री खाद्यों पर जीवन-यापन करनेवाला न्यूजीलैंड का एक अतुल बलशाली प्राचीन निवासी

समुद्र के विशेष रूप से समृद्ध और पोषक पौधे वे हैं, जो 'प्लैंकटन' या 'मंद-प्लवक' कहलाते हैं। ये बहुत ही सूक्ष्म पौधे तथा जंतु होते हैं, जो बड़े-बड़े झुंड बनाकर जल के ऊपरी स्तर पर तैरा करते हैं। अधिकांश समुद्री मछलियों और जानवरों का आहार यही पौधे हैं। अब तो कहा जाता है कि, सबसे बड़े आकार की शार्क मछलियाँ भी दूसरी मछलियों को खाकर नहीं जीतीं; बल्कि दूसरों की तरह वे भी अपने भीतर जल खींच कर और उसे छानकर 'मंदप्लवकों' या 'प्लैंकटन' का भोजन करती हैं। शार्क मछलियों के पूर्वज निस्संदेह दूसरी मछलियों को खाया करते थे। लेकिन उनमें किसी का भी आकार इतना बड़ा नहीं था, जितना बड़ा आजकल की १६ मीटर (५२॥ फुट) लम्बी दैत्याकार शार्क मछली का होता है।

इतने चमत्कारी पोषण-तत्त्व-सम्पन्न इस पौधे को जान-समझ लेने के बाद भी मानव उसे अपने उपयोग में नहीं लायेगा, ऐसा सोचना गलती ही होगी। अभी ही उस दिशा में उसके प्रयोग आरम्भ हो गये हैं और सम्भवतः दस वर्ष जाते-न-जाते वह महासागर से 'प्लैंकटन' की विशाल राशियाँ बाहर निकालने में सफल हो जायेगा और उनका पालतू जानवरों के चारे के रूप में तथा अपने भोजन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप में भी प्रयोग करेगा। अनुमान है कि, वे बहुत-से प्राविधिक और डाक्टरी कामों में भी उपयोगी साबित होंगे।

फिर तो मानव की नयी पीढ़ियाँ—हमारे बच्चे और उनके बच्चे—समुद्र की जटिल एवं अत्यधिक उन्नत अर्थ-व्यवस्था का प्रबंध किया करेंगे। जब उसका वैज्ञानिक आधार पर संचालन किया जायेगा, तो वह लाभप्रद सिद्ध होगी। सब से पहले तो स्वयं समुद्री जंतुओं को इस्तेमाल किया जायेगा। इन जंतुओं को जीवित फैक्टरियाँ समझना चाहिए, जो 'प्लंक्टन' जीवों को अधिक मूल्यवान पदार्थों म, पोषक प्रोटी और विटामिनों में परिणत कर देती ह

मेरा खयाल है कि, लगभग ४० वर्ष के अंदर ही एक नया विज्ञान अपने जन्म की घोषणा कर देगा; वह होगा, समुद्रांतर-शस्य-विज्ञान। तब १०० मीटर (३२५ फुट) तक की गहराई पर, जहाँ सूर्य का काफी प्रकाश पहुँच जाता है और जल गर्म होता है, शस्य-वैज्ञानिक और मिस्त्री, डुबकी लगानेवालों के कपड़े पहने, द्रुतगामी पनडुब्बियों का संचालन करते हुए, उपयोगी पौधे और जंतुओं का पालन किया करेंगे।

★

गहराई की बात

जान कहाँ पाये उस अनजाने को ?

जो समीप इतना कि, नयन का तारा,
और दूर भी वहाँ, जहाँ ध्रुव तारा;
जो न समीप न दूर कि, जैसे सरि का
एक-एक हो दोनों ओर किनारा !
जो धनु पर चढ़नेवाला हो शर भी, अड़ा खड़ा हो औ' उर बिंधवाने को !
जान कहाँ पाये उस अनजाने को ?

चाह कहाँ पाये उस अनचाहे को ?

इतना-उतना...माप बताते आये,
गगन भ्रमण कर धूल दिखाते आये !
गहराई की बात सतह ही जाने,
सूखे तन से सिंधु नहाते आये !
कहीं जमे क्या पाँव ? आह बलि-वंचक ! थाह सके उस उथले-अनथाहे को ?

चाह कहाँ पाये उस अनचाहे को ?

—जानकीवल्लभ शास्त्री

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतमहल

विराट् निर्माण-योजनाओं के गगन-चुम्बी शिखरों से थककर भी यदि कभी हमारी विवेक दृष्टि इन सहज-साध्य 'वामनों' पर पड़े, तो भी कुछ कम हित हमारा नहीं होगा। श्री एम० कृष्णन् का यह प्रबंध पठनीय है।

*

"ये बहुत ही बलवान् और कामकाजू होते हैं और दौड़ने में तो सैनिकों को भी मात देते हैं। हम इन्हें भारत के 'अरबी घोड़े' कह सकते हैं!"—'अमृतमहल' बैलों के बारे में सन् १८१८ ईसवी में मैसूर के कमिश्नर द्वारा व्यक्त ये उद्गार शत-प्रति-शत सही हैं। इन बैलों की बलिष्ठता इसी से स्पष्ट हो जाती है कि, हैदरअली और टीपू सुलतान ने अपने सैनिक अभियानों में भारवाहक पशुओं के रूप में इनका उपयोग किया था।

अमृतमहल साँड

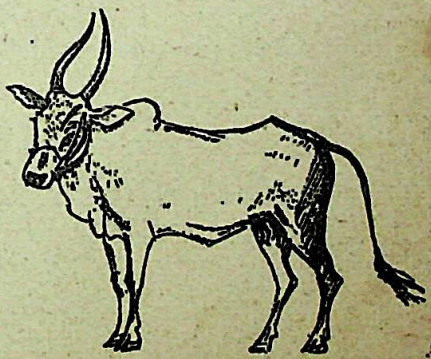

अमृतमहल गाय

बाद में, अंग्रेजी सेना ने अफगानिस्तान में तो इन्हें काम में लाया ही, प्रथम विश्व-युद्ध में भी मेसोपोटामिया में इनका उपयोग हुआ। बगदाद की 'डी' सेना के जनरल कमांडिंग अफसर ने इनके बारे में लिखा था—"ये बैल दौड़ने में खच्चरों से भी आगे हैं और नौका-पुलों को पार करने तथा दुर्गम मार्गों पर चलने में भी ये कठिनाई का अनुभव नहीं करते।"

यद्यपि आज अपने देश में यंत्रीकरण को काफी प्रोत्साहन मिल रहा है; तथापि यह सोचना कि, निकट भविष्य में ही हमारे ग्रामीण क्षेत्र अपने वर्तमान उपकरणों को त्याग कर यांत्रिकता को अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेंगे, ठीक नहीं होगा। अभी ट्रैक्टर और लारियाँ, हलों और बैलों का स्थान पूर्णतः ग्रहण नहीं कर सकतीं।

भारतवासियों ने बैलों के महत्व को एक लम्बे अर्से से समझ रखा है और इसी कारण उन्होंने उनकी तरह-तरह की नस्लें भी तैयार की हैं, जैसे—ओंगोल, नेलोर, सिंधी, कंगेयम, हल्लिकर, रेक्ला, आदि। पर 'अमृतमहल' की तुलना में प्रायः सभी नस्लें फीकी पड़ जाती हैं—केवल हल्लिकर नस्ल कुछ हद तक बराबर ठहरती है। सचमुच 'अमृतमहल' बैल बल और फुर्ती, दोनों ही दृष्टियों से एक अजेय पशु हैं।

इस नस्ल के बैलों और गायों, दोनों के ही सींग काफी लम्बे, सुडौल और तलवार की तरह किंचित् झुके होते हैं—साथ ही, चेहरा लम्बा और खूबसूरत होता है। ये बैल पाँच वर्षों तक विकास पाते हैं और उसके बाद, इनका शरीर गठने लगता है। आठ वर्ष की उम्र तक ये सम्पूर्णतः युवा हो जाते हैं और इसी समय से इनसे काम लिया जाने लगता है। एक पूर्णतः विकसित 'अमृतमहल' बैल की ऊँचाई प्रायः ५ फुट, लम्बाई ६ फुट और वजन लगभग दस मन होता है।

'अमृतमहल' और 'हल्लिकर' दोनों ही नस्लें सम्भवतः एक ही वंश से सम्बंध रखती हैं; लेकिन जहाँ 'हल्लिकर' बैल शांत प्रकृति के होते हैं और उन्हें सम्भालना आसान होता है, वहाँ 'अमृतमहल' अपरिचित को देखते ही भड़क उठते हैं। सम्भवतः इसका कारण यह है कि, बचपन से ही इन्हें उन्मुक्त वातावरण में रखा जाता है और गिरोहों के रूप में चरने के लिए जंगलों में भेजा जाता है। कहते हैं कि, ये बैल बाघों से भी टक्कर ले लेते हैं और इनके नुकीले सींग इनके हथियार का काम करते हैं। इतने बलिष्ठ इन बैलों का अक्खड़पन, पारखियों की दृष्टि में, दुर्गुण न होकर सद्गुण है।

लेकिन इतना सब होने पर भी यह खेदजनक ही है कि, इतनी अच्छी नस्ल के बैलों को, जिनकी साख विदेशों में भी जम चुकी है, स्वयं अपने देश में, मैसूर राज्य के बाहर बहुत कम लोग जानते हैं। यदि इनका प्रचार-प्रसार देश के अन्य भागों में भी हो, तो हमारी कृषि को काफी लाभ पहुँचे। पर बात आजमायी जा चुकी है कि, दो-या-तीन जोड़े 'अमृतमहल' बैल एक ट्रैक्टर के बराबर जोताई करते हैं और किफायती भी साबित होते हैं; क्योंकि जोताई के साथ-साथ ये परिहवन कार्य भी करते हैं और खाद भी देते हैं। अपने देश में जहाँ खेत छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त हैं और किसान गरीब तथा कम भूमिवाले हैं, ऐसी दशा में ट्रैक्टर सर्वत्र उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकते—उनका स्थान तो 'अमृतमहल'-जैसे बैल ही ले सकते हैं।

★

हम उसी को खुदा समझते हैं, जो मुसीबत में याद आ जाये ! —असर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यास और गणेश

साहित्य और साहित्यकार के तात्विक दायित्व का निरूपण करनेवाले प्रज्ञाचक्षु पंडित सुखलालजी का एक प्रवचन-प्रबंध

*

लेखक का अर्थ है—लिखनेवाला और लिखानेवाला—'लिखति लेखयति वा लेखकः।'

व्यास और गणेश की कथा प्रसिद्ध है, उसमें व्यास लिखानेवाले हैं और गणेश लिखनेवाले; परंतु वर्तमान लेखक व्यास भी और गणेश भी।

कथा के अनुसार जी ने सब सार-तत्व को कल्पना - शक्ति एक स्थल पर किया और उसे नाम दिया। किंतु समाज में यह ज्ञान - सौरभ फलता-फूलता रहे, इस उद्देश्य से उन्होंने इसे लिपिबद्ध करने का विचार किया। किंतु यह काम कौन करे? उनकी चिंता देखकर ब्रह्माजी ने कहा कि, गणेश का आह्वान कीजिये। वे ही इसे कर सकते हैं। बस, स्मरण-मात्र की देर थी—गणपति वहाँ आ उपस्थित हुए। व्यास ने प्रार्थना की—"भगवान्, जिस महाभारत की मैंने कल्पना की है, उसे मैं बोलूँ और आप लिख लें, तो बड़ी कृपा होगी!"

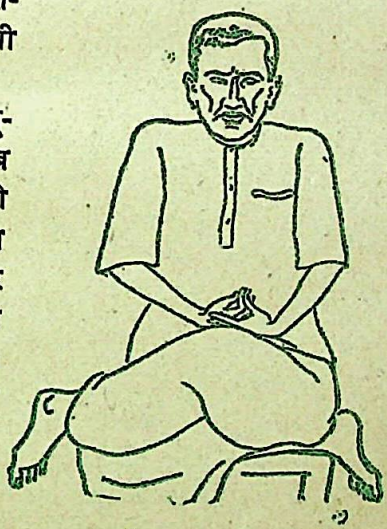

पं० सुखलालजी

गणपति ने उनकी बात मान ली; परंतु इस शर्त पर कि, लिखते समय मेरी लेखनी क्षण-मात्र के लिए भी नहीं रुके। इस शर्त के साथ व्यासजी नें भी अपना विकल्प गणपति के सामने रखा—"आपकी शर्त मुझे मान्य है, परंतु मेरा भी एक अनुरोध है कि, आप केवल वही लिखें, जो मैं बोलूँ। इससे परे एक अक्षर भी अपना न लिखें!"

व्यास लेखक के मानस में प्रतिष्ठित अमूर्त प्रतिभा हैं, प्रज्ञा हैं और शास्त्रों के अनुसार वह पश्यंती वाक्शक्ति हैं तथा गणपति हैं मध्यमा अथवा अंतर्जल्प द्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकट वैखरी वाणी। व्यास, अर्थात् सब शास्त्रों के अनुभूति-स्रोत, सम्पूर्ण शिल्प-कलाओं की मूल प्रेरणा और गणपति उस स्रोत से प्रवाहित वह स्थूल और बाहरी रूप, जो पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं को अनुभव हो सके—जिसे वे ग्रहण कर सकें।

व्यास और गणेश के उस सम्वाद से हमारे लेखकों को बहुत-कुछ सीखना है। व्यास जो कि, मूर्तिमंत प्रज्ञा हैं, यदि वे भी सविश्राम एवं निरुद्वेग गतिशील रहें, तो उससे जो रचना प्रसूत होगी, वह निर्बल होगी, उसका मूल्य शाश्वत नहीं होगा। अभिप्राय यह है कि, प्रतिभा की जड़ें चाहे जितनी गहरी हों, रचना में मौलिकता का अमरत्व एवं सप्राणता लाने के लिए मानस में शांति-सौमनस्य का वातावरण अपेक्षित है। बाढ़ का पानी नहीं जो झरे या जो समतल बहे, वह निर्मल और उपयोगी होता है।

सर्जन की यह पश्यंती शक्ति, यह अंतश्चेतना ही वस्तुतः समस्त विद्या, शिल्प और कला की गंगोत्री है, आदि-स्रोत हैं। किंतु इस प्रतिभा को परिमार्जित [illegible] परिपक्व करने की भी आवश्यकता क[illegible] नहीं है। परिपक्व प्रतिभा मंगलमयी [illegible] है। विधात्री, शिवस्वरूपिणी इस प्र[illegible] को विकसित करने का मुख्य मार्ग [illegible] है कि, लेखक अथवा कलाकार अपने [illegible] और वचन के प्रवाह के प्रति सदैव जाग[illegible] रहे— मांगल्य-संकल्प का साक्ष्य व[illegible] बिना किले के भीतर न तो किसी को [illegible] दें और न बाहर ही जाने दें। [illegible]

[illegible] जानते [illegible] के

एक बार चाङ-चुआङ बीमार पड़े। लाओत्से उन्हें देखने गये। कृपि[illegible] नें उनसे पूछा— "महोदय, आप बीमार हैं। क्या आपको अपने [illegible] लिए कोई संदेश देना है?" चाङ-चुआङ नें उत्तर दिया— "यदि तु[illegible] पूछते, तो भी मुझे तुमसे कुछ बातें कहनी थी।" और, लाओत्से से पू[illegible] "जब कोई अपने पुराने गाँव जाता है, तो गाँव की सीमा पर पहुँच[illegible] अपनी गाड़ी से क्यों उतर जाता है?" लाओत्से बोले— "इस प्रथा का यह तात्पर्य है कि, आदमी को अपना उद्गम भूल न जाना चाहिए।"

फिर चाङ ने अपना मुँह खोलकर पूछा— "मेरे मुख में दाँत हैं?" "नहीं तो!"— लाओत्से ने उत्तर दिया। "और जीभ?"— चाङ ने पूछा। "वह तो है।"— लाओत्से ने कहा। "ऐसा क्यों है, कारण बता सकते हो?"— चाङ ने पूछा। "महोदय, मेरा विचार है कि, नरम होने से जीभ बनी है और कड़े होने से दाँत विनाश को प्राप्त हुए हैं।" "हाँ, ठीक कहते हो। जगत् के सभी सिद्धांतों को तुमने समझ लिया है। अब मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है।"— चाङ ने संतोष-भरे शब्दों में कहा।

—'विजडम आव चाइना' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोति...जोति...जोति...

खगोल-सृष्टि के असीम विराट् का ससीम गवाक्ष से एक शब्द-दर्शन

★

प्रकाश एक सेकंड में १,८६,००० मील चलता है, अर्थात् एक सेकंड के सातवें भाग में वह पृथ्वी की परिक्रमा कर सकता है और सूर्य से पृथ्वी तक पहुँचने में उसे आठ मिनट लगते हैं। सम्पूर्ण सौरमंडल और उसके सारे ग्रहचक्र की यात्रा वह बारह घंटे में बड़े मजे से पूरी कर सकता है। पर ठहरिये, यह बारह घंटे या [illegible] है कितना बड़ा? उसकी [illegible] सेकंडों को १,८६,००० मीलों [illegible] करके देखिये। ब्रह्मा के वर्ष काल के नाप से, प्रकाश-वर्ष से दूरी [illegible] नाप, कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। [illegible] अर्थात् जो तारे-सितारे, जहाँ-[illegible] वे सभी कितनी दूर में फैले हैं, कितने-कितने बड़े हैं, कैसे हैं वे? उनके सम्बंध में मनुष्य का अंदाज ठीक उतना ही है, जितना एक चींटी का हिमालय पर्वत के सम्बंध में।

ब्रह्मांड का मापदंड मील-कोस नहीं है, प्रकाश के घंटे-दिन भी नहीं। उस मापदंड का छोटे-से-छोटा भाग है—प्रकाश-वर्ष। एक वर्ष में करीब ३.१५ करोड़ सेकंड होते हैं और उसका १.८६ लाख गुना कितना हुआ? ऐसे चार वर्ष की दूरी है, सूर्य और उसके निकटतम तारों के बीच। तब हमारा यह तारापुंज—फिर कितना बड़ा है? प्रकाश को उसके एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचने में एक लाख वर्ष लगेंगे। उसमें करीब एक खरब तारे समाये हुए हैं; पर उन्होंने इस तारापुंज में इतनी कम जगह रोक रखी है कि, उनसे दस लाख गुने और अधिक तारों के लिए भी स्थान हो सकता है—उन सब के अपनी-अपनी गति से निर्बाध—बिना टकराये—घूमते रहने के लिए।

और सुनिये, आज के शक्तिशाली दूरदर्शी यंत्र, जब हमारे इस तारापुंज को भेद कर उस ओर आगे देखते हैं, तो उन्हें एक हजार तारापुंज और दिखायी देते हैं। इस अंदाज से सब तारापुंज नाप में एक-से हों, तो उनके एक छोर से दूसरे छोर तक की दूरी, मीलों में यदि नापिये, तो वह ३.१५ करोड़ × १.८६ लाख × १ लाख × १ हजार होगी। पर बात यहीं नहीं समाप्त होती। क्या सम्पूर्ण सौर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंडल में १,००० तारापुंज ही हैं? कौन कह सकता है कि, उनकी संख्या लाखों, करोड़ों और अरबों में भी हो!

हमारी यह नीहारिका (तारापुंज) एक पहिये के आकार की है। पृथ्वी और सूर्य इस पहिये के मध्य से २६,००० प्रकाश-वर्षों की दूरी पर हैं और ये दोनों और सब तारे, १४० मील प्रति सेकंड की गति से उस मध्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं और उसकी एक परिक्रमा पूरी करने में उन्हें २० करोड़ वर्ष लगते हैं! इतने विशाल भवन के निवासी होने पर क्या हमें गर्व नहीं होना चाहिए?

आज से पौने दो सौ वर्ष पहले एक प्रसिद्ध खगोलवेत्ता ने हमारे इस भवन के ६८३ क्षेत्र अलग-अलग गिने थे। अपने अवलोकन के आधार पर उन्होंने इस भवन का एक मानचित्र भी उपस्थित किया था, जो चक्की के पाट-सरीखा था। किंतु इस भवन की रचना का जो-कुछ पता लगा है, वह 'माउंट विल्सन-वेधशाला' के सौ-इंची प्रतिक्षेपक (रिफ्लेक्टर) से और उससे भी बड़े दो सौ-इंची प्रतिक्षेपक से। हमारी नीहारिका का वर्त्तुल-रूप उन प्रतिक्षेपकों से स्पष्ट हो गया है। श्वेत, नील, भीमकाय तारों और उनसे सम्बंधित अंतर्तारकीय गैस व 'धूलि' से वर्त्तुल भुजाएँ स्पष्ट दिखायी देती हैं और पिछले कुछ वर्षों में इसकी तीन भुजाएँ 'सागिटा-रियस', 'ओरियन' और 'परसियस' की स्थिति बहुत-कुछ निर्धारित हो गयी। हमारा सूरज तो विचारा एक साधारण तारे के समान ओरियन भुजा के भीतरी किनारे पर ही स्थित है।

इस वर्त्तुलाकार निर्मिति के रूप-निर्धारण में रेडियो-प्रतिक्षेपण से भी बहुत सहायता मिली है।

रेडियो-दूरदर्शक यंत्र का एक बड़ा लाभ यह है कि, वह दूसरे दूरदर्शक यंत्र की अपेक्षा अधिक दूरी तक तथा 'धू[illegible] के बादलों को भेदकर भी देख सक[illegible] है। उसकी सहायता से हमारे पुंज [illegible] मध्य से ४० हजार प्रकाश-वर्षों की दूरी पर एक क्षीण-ज्योति-भुजा दिखायी [illegible] है। तारापुंज के मध्य से उस ओर त[illegible] हमारे और तारापुंज के मध्य के दूर[illegible] दो भुजाएँ और देखी गयी [illegible] यह भी देखा गया है कि, त[illegible] के मध्य भाग की हालत हमा[illegible] की हालत से कहीं अधिक विप्लव[illegible] है। वहाँ हाइड्रोजन के अणु हमारे [illegible] पड़ोस की अपेक्षा कहीं अधिक [illegible] से घूम रहे हैं।

इन सब अन्वेषणों के परिणाम-स्वरूप हमारे तारापुंज का रूप संक्षेप में यों निर्धारित होता है— इसके मध्य का २० हजार प्रकाश-वर्ष-व्यास का भाग परम प्रकाशवान् है, जो हाइड्रोजन के विप्लवमय अणुओं से परिपूर्ण है। मध्य से १५ हजार प्रकाश-वर्ष की दूरी पर पहली वर्त्तुल भुजा है। दूसरी भुजा २१ हजार प्रकाश-वर्ष दूर है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२७ हजार प्रकाश-वर्ष दूर, [illegible] तम हमारा सूर्य स्थित है। इन सबसे [illegible]रे ३५ हजार प्रकाश-वर्ष की दूरी पर, जो बड़ी वर्त्तुल भुजा है, वह आकार में प्रायः गोल है और उससे भी दूर ४० हजार प्रकाश-वर्ष पर क्षीण-ज्योति-भुजा [illegible], जो सम्भवतः हमारे तारापुंज की आखिरी भुजा है।

यह चित्र बहुत ही अपूर्ण है; पर अब [illegible] के इस विषय में जो ज्ञान प्राप्त हुआ उसी से हमें संतोष करना होगा।

आइये, अब अपने इस भवन—तारापुंज—के निवासी तारों के जीवन का कुछ परिचय प्राप्त करें। सदियों से हमारे पुरखे मानते [illegible]ा रहे हैं कि, तारे अजर-अमर हैं। पर [illegible]त्य नहीं है। कई तारे बहुधा [illegible] प्रकाशित देखे गये हैं। कुछ तारों [illegible] विस्फोट होते भी देखा गया [illegible]। [illegible]द काल [illegible] तारे सौर-[illegible] में हैं और [illegible] जानते-किंतु [illegible] हैं; [illegible] पर ऐसे भी तारे हैं, जो तारापुंज के जीवन में एक सूक्ष्म काल के लिए जन्मते हैं और अपना प्रकाश दिखाकर किसी ऐसे दूसरे पदार्थ में, जिसे हम नहीं जानते, परिवर्तित होकर विलीन हो जाते हैं।

इन तारों में शक्ति कहाँ से आती है? हाइड्रोजन के अणु को 'हिलियम' के अणु बनाने में जो आणविक परिवर्तन-जनित शक्ति होती है, वही सब तारों में विद्यमान् है और इस आणविक प्रतिक्रिया की मात्रा विभिन्न तारों में एक-सी नहीं है। हमारे सबसे अधिक उपयोगी साथी तारे सूरज का तत्सम्बंधी परिचय पाकर हम इस विषय का ज्ञान सरलता से अर्जन कर सकते हैं।

हमारी पृथ्वी पर पहुँचने वाली सूरज की गर्मी और शक्ति को हम नाप सकते हैं। एक घन सेंटीमीटर पानी को एक सेंटिग्रेड गर्म करने में जितनी शक्ति चाहिए, उसे एक 'अर्ग' नाम दिया गया है। इस प्रकार एक वर्ग सेंटीमीटर

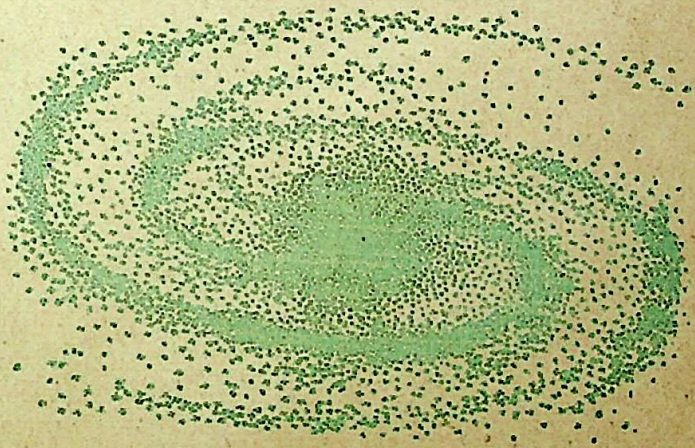

नीहार-मंडल की वर्तुलाकार गति-सृष्टि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमि पर एक सेकंड में दस लाख 'अर्ग' गर्मी सूरज से पहुँचती है। वैज्ञानिकों ने सूरज के नाप तथा उससे हमारी दूरी का व्यासार्द्ध के आधार पर हिसाब लगाया है कि, सूरज से प्रति सेकंड ४×१०^{३३} अर्ग शक्ति का उत्पादन होता है। सूरज का स्थूल है २×१०^{३३} ग्राम। इस प्रकार सूरज के स्थूल का प्रति ग्राम, प्रति सेकंड दो अर्ग-शक्ति उत्पन्न करता है। सूर्य की आयु तीन अरब वर्ष निर्धारित की गयी है। इस काल में सूरज के प्रत्येक ग्राम ने २×१०^{१७} अर्ग-शक्ति उत्पन्न की है।

संख्या के आगे के शून्य के शिरोभाग पर दूसरी संख्या लिखने का अभिप्राय है, उस संख्या के आगे उतनी वार शून्य। सूर्य-शक्ति-सम्बंधी ऊपर दी गयी संख्याओं का हिसाब लगाइयेगा, तो दूरी के लिए बनायी गयी प्रकाश-वर्षों की संख्या की भाँति ये भी 'अगण्य' सिद्ध होंगी।

जब हाइड्रोजन के ४ अणु मिलकर 'हेलियम' का १ अणु बनाते हैं, तब उनके वजन का १ प्रतिशत शक्ति में परिवर्तित हो जाता है। हमें मालूम है कि, सूरज में $१०^{३३}$ ग्राम हाइड्रोजन बचा है। इस प्रकार हिसाब लगाया गया है कि, सूरज अभी एक खरब वर्ष तक चमकता रहेगा।

सूरज तो बहुत धीरे जलने वाला तारा है। सूरज से ५ हजार गुणी तेजी से जलने वाले तारे भी हमारे तारापुंज में हैं। वे सम्भवतः दो करोड़ वर्ष से अधिक नहीं जी पायेंगे। यह आयु भी वे तभी पायेंगे, जबकि अपने सारे हाइड्रोजन को हे[illegible] बना लेंगे। इस प्रतिक्रिया के लिए [illegible] करोड़ डिग्री की गर्मी चाहिए और वह तारे के मध्य में ही सम्भाव्य है।

खगोलवेत्ताओं के एक समुदाय ने यह धारणा निश्चित की है कि, ५ अरब वर्ष पहले सभी तारे जवान थे और मान्य मुख्य अनुक्रम में स्थान पाये हुए थे। मुक्त गैस तथा धूलि के सर्वथा अभाव के कार[illegible] उनके नवनिर्माण की सम्भावना नहीं [illegible] उनका उद्भव प्रारम्भ हुआ—अपने भी[illegible] के हाइड्रोजन को हेलियम में परिवर्ति[illegible] करके—गर्म तारों का तेजी से और ठंड[illegible] तारों का धीरे से।

इन अनेक तारों की वही गाथा है [illegible] एक प्रज्ज्वलित भट्टी की हो [illegible] ऐसी भट्टी की, जिसे बाहरी [illegible] के जरूरत नहीं होती; जिसका जी[illegible] कृपि शक्ति उत्पादन करने में अरबों [illegible] व्यतीत होता आया है और व्यतीत [illegible] रहेगा— करोड़ों-अरबों वर्षों तक [illegible]

तारों की इस शक्ति का कौ[illegible] तोल कर सकता है? एक ह[illegible] ही १ अरब× १ अरब× ५लाख घोड़ों की ताकत की शक्ति का उत्पादन करता है और उसका एक छोटा-सा भाग ही पाकर हमारी यह पृथ्वी सुखी व समृद्ध है। सूर्य की पूजा के लिए प्रेरित होने वाले हमारे पूर्वज इसी भय से तो भीत हुए थे कि, कहीं यह अजस्र सुख का दाता सूर्य नाराज हो तिरोहित न हो जाये?

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नागा-प्रदेश

मानवशास्त्र के विख्यात शोधक-पंडित वेरियर एल्विन के एक लेख का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

लार्ड डलहौजी ने एक बार कहा था कि, उत्तर-पूर्वी सीमा-प्रदेश बेकार है; जिन लोगों ने वस्तुतः इस ३३,००० [illegible] फैले और एक ओर ब्रह्मपुत्र [illegible] था तिब्बत से और दूसरी [illegible] घिरे विशाल पर्वतीय भूभाग [illegible] ही है, उनका मत इसके [illegible] विपरीत है।

[illegible] १९-वीं शताब्दी और २०-वीं किंतु [illegible] प्रथम अर्द्ध-भाग में सन् १९४७ [illegible] उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी के निवासी बाहरी दुनिया के सम्पर्क में कम ही आये थे। उनका यह सम्पर्क सैनिकों के साथ, या उन व्यापारियों के साथ, जिनको कि, वे अपना माल बेचते थे; या कुछ अन्वेषकों के साथ तथा नक्शे-सम्बंधी जाँच-समिति के सदस्यों के साथ, या बाद में, उन राजनीतिक अफसरों के साथ हुआ था, जो उनके गाँवों में गये थे।

यहाँ के निवासियों के सम्पर्क में आने वाला पहला यूरोपीय चाय-बागान का एक माली एच० एम० क्रोवे था, जो सन् १८८९ में उनकी पहाड़ियों पर चला गया था। वहाँ उसका खूब स्वागत भी हुआ था। किंतु अगले ही वर्ष, जर्मनी के एक अन्वेषक वान एलर्स के साथ वहाँ बिल्कुल उल्टा ही व्यवहार हुआ। उसको लूट कर प्रदेश के बाहर निकाल दिया गया। चाय-बागान के एक और माली जे० ऐरल ग्रे ने, सन् १८९२ में बर्मा की सीमा से निःशस्त्र, इरावती की सहायक नदी तिसांग की घाटी में प्रवेश किया था।

जब भारत की नक्शों-सम्बंधी जाँच-समिति ने इस भूभाग की ओर ध्यान दिया, तो कई जाँच-दल भीतरी भागों में गये और कुछ दलों के नेताओं ने वहाँ के लोगों के साथ बड़ी सरलता से मैत्रीपूर्ण सम्बंध भी स्थापित कर लिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा तरीका, जिससे पहाड़ी लोग बाहरी दुनिया के सम्पर्क में आये, व्यापार का था। मिशमी लोग सदा से कुशल व्यापारी रहे हैं। वे लोग कस्तूरी, हाथी-दाँत और खालें बेचने के लिए नीचे आते थे। कस्तूरी को 'मिशमी तीता' भी कहा जाता था और उसका उपयोग ज्वर-औषध के रूप में होता था। एक बार आपा तेनी लोग काफी मात्रा में बेचने के लिए रबर लाये थे। अबोर लोग नमक के बदले में खालें, बेंत और ऊन दिया करते थे। मिशमी और तीरप के कुछ लोग मैदानों में अफीम का गैर-कानूनी व्यापार भी किया करते थे।

सन् १८९४ में एक राजनीतिक विभाग का अफसर, जे० एफ० नीधम की नियुक्ति, इन लोगों की भाषा तथा राजनीति का अध्ययन करने के लिए हुई थी। वह कई बार रीमा, हुकोंग की घाटी और उत्तरी बर्मा में गया और हर बार उसका सम्बंध वहाँ के निवासियों के साथ रहा। वर्तमान शताब्दी के पहले अर्द्ध-भाग में इन यात्रियों की संख्या भी बढ़ी थी, जिनमें सन् १९११ में उत्तरी सूबांसिरी को गया मीरी-मिशन और सन् १९४४ में अपर-कामला-घाटी की ओर डा० सी० फान फ्यूरर हेमेंडोर्फ द्वारा किया गया अभियान काफी महत्वपूर्ण है।

ये सम्पर्क क्षणिक और प्रासंगिक होते थे। इनसे लोगों के जीवन और उनकी संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ना सम्भव न था।। परंतु इनसे वहाँ के [illegible] को इतना अनुभव अवश्य होने [illegible] कि, उनकी पहाड़ियों से दूर का [illegible] संसार उनका शत्रु नहीं है और वह उनकी भलाई चाहता है।

सबसे बड़ी कठिनाई, जो उत्तर-[illegible] सीमा-प्रदेश का वर्णन करते समय [illegible] है, वह यह है कि, वहाँ के अधिकांश [illegible] को बदल दिया गया है। केवल एक [illegible] नहीं, अनेक बार, जिसका परिणा[illegible] हुआ है कि, नक्शे किसी काम के न[illegible] हैं। उदाहरण के लिए, 'वेस्टर्न से[illegible] सन् १९१५ के बाद, 'बालीपाड़ा फ्रं[illegible] ट्रेक्ट' कर दिया गया। सन् १९४६ में [illegible] 'सेला-सब-एजेंसी' और 'सूबांसिरी [illegible] में विभाजित होगया। सन् १[illegible] लगभग सभी नाम दुबारा ब[illegible] थे और आज 'नार्थ-ईस्ट-सी[illegible] के छः 'सीमांत-डिवीजनों' में [illegible] कामेंग, जिसका मुख्य कार्यालय [illegible] में है; सूबांसिरी, जिसका मुख्य [illegible] जीरों में है; सिआंग, जि[illegible] कार्यालय अलोंग में है; लोहि[illegible] मुख्य-कार्यालय तेजू में है; तीर[illegible] जिसका मुख्य-कार्यालय खेला में है; तथा तुएंसांग, जिसका मुख्य कार्यालय उसी के नाम के एक गाँव में है।

इस क्षेत्र के जनसंख्या-सम्बंधी आंकड़े भी अभी केवल अनुमानित ही हैं। अब जन-गणना की जा रही है। कुछ भागों की—जैसे तुएंसांग—जनसंख्या बहुत है। दूसरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की—जैसे उत्तरी सूवांसिरी और सिआंग—जनसंख्या कम है। सूवांसिरी ति वर्ष २०० इंच पानी बरसता है।

इस क्षेत्र में हर प्रकार का पर्वतीय दृश्य देखा जा सकता है। १४,००० फुट की ऊँचाई पर से-ला दर्रे से तावंग को जाते समय, रोडोडेंड्रन तथा अन्य रंग-बिरंगे फूलों को देख कर, यात्री को कश्मीर स्मरण हो आता है। सिआंग की मनहर में, जब बर्फ जमी होती है, तो क्षण ऐसा अनुभव होता है, जैसे आस्ट्रिया में है और दूसरे ही क्षण, सवर्थ की झीलों में। पटकई की ढाल, सांग की आभा और के गहन वनों को नहीं भुलाया जा क यात्री ने तो इस 'कमर तोड़ने वाला' लेकिन मैं 'हृदय लसित करने वाला' । यद्यपि यात्रा लम्बी किंतु प्रद होती है; किंतु तिनिधियों की सहृदयता स्वागत की भावना थकावट को पलक झपते ही दूर कर देती है।

उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी के लोगों में असाधारण रूप से संस्कृति, भाषा, वस्त्र और रीति-रिवाजों की भिन्नता पायी जाती है। पश्चिमी कामेंग में करीब ३४,००० मोनपा हैं, जो बड़े सरल और व्यवहारकुशल हैं। ये लोग खेती करते हैं और गाय-भैंस, भेड़ तथा घोड़े पालते हैं। इन पर तावंग के धार्मिक मठों द्वारा प्रचारित बौद्ध आदर्शों का पूरा प्रभाव है। इसी डिवीजन के पूर्व में, दफला लोग भी काफी संख्या में रहते हैं। उत्तर में सूवांसिरी की भयानक और उजाड़ पहाड़ियों पर अबोरों की उप-जातियाँ तागीन और गालोंग रहती हैं। पहाड़ी मीरी और ४०,००० दफला भी यहीं पर बसे हुए हैं। उत्तरी और पश्चिमी पर्वतों पर

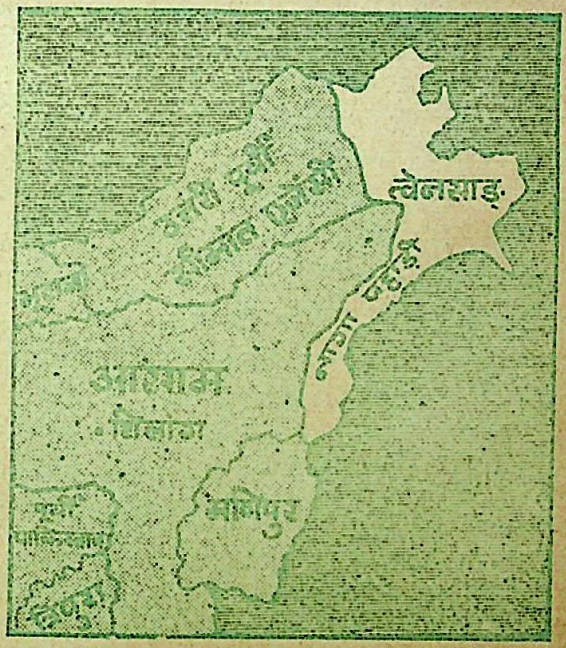

नागा-विद्रोह का क्षेत्र—मानचित्र का यह सफेद भाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहनेवाले लोगों का जीवन, जहाँ बेचारा मनुष्य प्रकृति के दैत्य से जूझता रहता है, आपा तेनियों के जीवन का उल्टा है। इन लोगों ने तो वहाँ की प्रकृति पर पूरा अधिकार कर रखा है।

उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी के डिवीजनों में, सिआंग विविधता का घर है। यहाँ के लोग 'अबोर' कहलाते हैं। यह असमी शब्द है, जिसका अर्थ होता है—स्वतंत्र! ये लोग सुंदर बुनाई करते और नाचते-गाते हैं। साथ ही काफी आकर्षक भी होते हैं। यहाँ विचित्र भिन्नताएँ भी देखी जा सकती हैं। एक और पासीघाट है, जो अब उन्नत जिला है। यहाँ के लोग यूरोपीय वस्त्रों को पहनने लगे हैं। दूसरी ओर उत्तर में दूरवर्त्ती घाटियाँ हैं, जहाँ अबोरों की उप-जातियाँ रहती हैं, जिनके बारे में अभी अधिक जानकारी ही नहीं मिल सकी है।

लोहित में मिशमिओं के तीन प्रमुख दल मिलते हैं। पहला ईदुओं का, जो छोटे-छोटे बाल रखते हैं। दूसरा और तीसरा तराओनों और कमानों का, जो बालों को बढ़ने देते हैं। आरम्भ के यात्रियों ने इनकी भद्दी सूरतों और असभ्य व्यवहार का खूब-बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया है। मैं जहाँ तक जानता हूँ, किसी ने औरतों के शारीरिक सौंदर्य को तो सराहा ही नहीं। तराओन और कमान औरतें बड़ी सुंदर होती हैं और अपने हाथ के बुने आकर्षक वस्त्र पहनती हैं। उनके बालों को वे स्वयं नहीं सँवारतीं—हज्जाम सँवारते हैं।

तीरप और तुएंसांग के लोगों ने मैदान के लोग नागा कह कर पुकारा है। डा० जे० एच० हटन का कहना है कि नागाओं और आसाम तथा बर्मा के दूसरे आदिवासियों में, जो नागा नहीं हैं, कोई अंतर बताना, यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। तीरप में वांचो जिन पर प्रभावशाली तथा धनी मुखिया का शासन है। नोकटे हैं, जो हिन्दू धर्म की ओर झुक रहे हैं और बाहरी दुनिया से सम्पर्क में खूब आते हैं। परिणामस्वरूप उनकी परम्परागत संस्कृति का प्रभाव धीरे-धीरे घट रहा है। इनके अलावा कई छोटे-छोटे दल हैं, जिनको सामूहिक रूप में तांग्सा कहते हैं। ये [illegible] आकर्षक और भले होते हैं। ये [illegible] आ कर बसे हैं। अभी भी इनका [illegible] सीमा-पास के लोगों से है। [illegible] दो जातियाँ, सिंगपो और खाम्पटी [illegible] यहाँ रहती हैं। तुएंसांग में [illegible] कम सात दल रहते हैं, जो पहले [illegible] का शिकार किया करते थे।

युद्ध के दिनों में जिन निवासियों को सुव्यवस्थित किया गया था, शांति के दिनों में वे काफी अनुशासित और आत्म-विश्वासी हो चुके हैं। उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी-भर में उनकी भौतिक संस्कृति श्रेष्ठ है। उनका रंग-सम्बंधी ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा है। वे कलात्मक सुंदर वस्त्र बुनते हैं। लकड़ी में नक्काशी करना,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य की आकृतियाँ, बरतन, [illegible] सामान और मिट्टी के बरतन [illegible] उन्हें खूब आता है।

[illegible]ता से पूर्व, यह प्रदेश आसाम [illegible] अंतर्गत था और वहाँ गवर्नर-[illegible] का एक 'एड्वाइजर' रहता था। [illegible]र-पूर्वी सीमांत एजेंसी संविधान [illegible] आसाम का ही भाग, मानी [illegible] परंतु सन् १९४७ में उसे अलग [illegible] था और [illegible] हाँ का शास-[illegible] बन गया था। [illegible]र्नर के दायित्व को [illegible]ता था और अब वह [illegible] के एजेंट का काम [illegible]

[illegible]योजन में राज-[illegible] भाग का एक [illegible] युक्त है, जो [illegible] में शासन की [illegible] का दायित्व सम्भा-[illegible] किंतु [illegible] सन् १९५६ में [illegible]तिनी[illegible]यर एडमिनि-स्ट्रे[illegible] सर्विस' की स्थापना कर दी गयी। इस क्षेत्र में सन् १८६८ में नियुक्त एक अंग्रेज अधिकारी टी० एच० लेविन ने इस क्षेत्र की महत्ता को भली-भाँति समझा। उसने एक स्थल पर लिखा है—"हमें इस क्षेत्र पर अपने हित की दृष्टि से शासन नहीं करना चाहिए; बल्कि यहाँ के निवासियों के हित को ध्यान में रख कर शासन चलाना चाहिए। यहाँ सुव्यवस्थित शासन के लिए सैनिक अभियान नहीं चाहिए; बल्कि ऐसा व्यक्ति चाहिए, जो सहिष्णु हो, नये विचारों को ग्रहण करने के लिए तत्पर हो तथा राष्ट्रीय भावना के प्रति अत्यंत सजग रहे। आवश्यकता इस बात की है कि, ऐसे व्यक्ति की देखरेख में यहाँ के निवासी धीरे-धीरे स्वयं सुसंस्कृत हों। उनके लिए शिक्षा का द्वार खोल देना चाहिए; पर उनके रहन-सहन को उसी प्रकार अछूता रहने देना चाहिए। फिर ये लोग नकली अंग्रेज न बनेंगे।"

एक नागा सरदार
[चित्र : चित्तोप्रसाद निर्मित एक रेखाचित्र]

पिछले पाँच सालों में आवागमन के साधनों की कठिनाई होते हुए भी शासन का विस्तार हुआ है और आज भारत की सीमा में किसी प्रकार भी राजनैतिक खोखलापन नहीं है। शासकीय-केंद्र—जो सन् १९४९ में १२ और सन् १९५६ में ६४ थे—खुलने का अर्थ विद्यालय और दवाखाने की सुविधा, कृषि-सम्बंधी उत्तम साधनों का उपयोग, टीके का प्रबंध, आवागमन के नये साधन और शेष भारत के साथ घनिष्ठ सम्बंधों की स्थापना होता है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत कृषि और आवागमन के साधनों के क्षेत्र में तो और भी उन्नति का प्रबंध किया गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है और केंद्रीय सरकार ने साढ़े नौ करोड़ रुपये मंजूर किये हैं, जो प्रति प्राणी के हिसाब से भारत-भर में अधिक हैं। इसका पहला उद्देश्य, इस क्षेत्र में खाद्य-सामग्री-सम्बंधी आत्म-निर्भरता उत्पन्न करना है। बाद में, आवागमन के साधनों, हवाई-अड्डों, सड़कों, पुलों और पैदल चलने वालों के लिए रास्तों का निर्माण होगा। विकास का कार्य तेजी से चल रहा है और अगले दस वर्षों में एकदम काया-पलट होने की सम्भावना है।

यह स्थान स्वास्थ्य के लिए अहितकर है। इसलिए दूरवर्त्ती गाँवों में भी उपचार की सुविधा पहुँचाने के लिए चलते-फिरते दवाखानों का प्रबंध किया गया है। क्षय के रोगियों के लिए अस्पताल बन रहा है और कोढ़ के रोगियों के लिए तीन घर पहले से ही हैं।

इधर शिक्षा की ओर भी पूरा ध्यान दिया जाने लगा है। प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम उनकी ही भाषा है। एक बड़ी संख्या में पाठ्य-पुस्तकें और लोक-कथाओं तथा गीतों की पुस्तकें तैयार की जा रही हैं, जिससे उन लोगों को उनकी ही भाषा में उनका साहित्य उपलब्ध हो सके। अभी से वहाँ के विद्यार्थियों को भविष्य का स्वस्थ नागरिक बनाने की चेष्टा जारी है।

कुछ महीनों पूर्व संसार की आँखें नागा-क्षेत्रों में हुए उपद्रवों पर जा टिकी थीं। यह क्षेत्र उत्तर-पूर्वी सीमांत-एजेंसी के अंतर्गत नहीं है; परंतु इनका अहितकर प्रभाव तुएंसांग में भी दिखायी

परंतु अब काफी परिवर्तन हो जो लोग एक-दूसरे को शत्रु समझते एक साथ बैठ कर भोजन करते है गाँव में सहकारिता की भावना है। इनके उत्थान के लिए सरकार कुछ कर रही है, उसके प्रति यहाँ काफी जागरूक हैं। तीरप में मैंने को एक गीत गाते सुना, जिसका "सरकार के आदमियों ने प्रदान की है, उन लोगों ने हमें में मित्रता करा दी है। शांति स्वरूप ही जीवन का आनंद है।"

शताब्दियों से प्रचलित दास-प्रथा ओर भी ध्यान दिया जा रहा है भविष्य में ही यह समाप्त हो

पंडित नेहरू ने एक बार "जब मैं देखता हूँ कि, केवल ही नहीं, हर बड़े देश में लोग अपने मुताबिक ढालने के लिए हैं, तो मुझे खतरा महसूस होने लगता वे उन पर रहन-सहन का विदेशी लागू करना चाहते हैं। पर आज की बात की है कि, आदिवासियों को को प्रोत्साहन दिया जाये और साथ ही उनकी सुरक्षा पर भी ध्यान रखें। हम उनकी उन्नति के प्रति चिंतित अवश्य हैं; लेकिन मुझे इस बात की भी चिंता है कि, कहीं वे कला, जीवन के आनंद और उस संस्कृति को न खो बैठें, जो उन्हें दूसरों से कई बातों में पृथक करती है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] लूले-लंगड़े : [illegible]

[illegible]ज्ञान के नये अनुसंधानों के आधार पर मनुष्य की शारीरिक विकलांगताओं के कारणों [illegible]करण। नवीन अनुसंधानों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि, ये विकलांगताएँ वंशानुगत नहीं होतीं, वरन् गर्भ में भ्रूण को क्षति पहुँचने से होती हैं।

*

[illegible] की उम्र का हिसाब [illegible] दिन से लगाया जाता [illegible]स्तव में, उसका जीवन उसी [illegible]रम्भ हो जाता है, जिस दिन उसकी [illegible] उसे गर्भ में धारण करती है। इसी [illegible] उसके साथ भयंकर दुर्घटनाएँ [illegible]शंका भी उसी दिन पैदा हो [illegible] यह बात अलग है कि, तब उन [illegible] का परिणाम प्रकट नहीं होता [illegible] भी है, तो माँ पर किसी रूप [illegible]विक परिणाम तो तभी सामने [illegible] जब शिशु का जन्म होता है — किंतु [illegible] फलस्वरूप कभी एक की [illegible] दो सिर होते हैं, या दो की [illegible] ही आँख होती है, या तालू फटा होता है, या वह पूर्णतया अंधा अथवा बहरा होता है।

यह सत्य पिछले पंद्रह वर्षों से ही स्वीकार किया जाने लगा है कि, ऐसी अधिकांश जन्मजात विकलांगताएँ वंशगत कारणों से नहीं होतीं। गर्भ के विकास की अवधि के बीच अगर कोई दुर्घटना हो जाये, तो उसका परिणाम इस रूप में प्रकट होता है। और, चूँकि ये विकलांगताएँ वंशगत कारणों से नहीं होतीं, इसलिए सावधानी बरतने से इन्हें रोका भी जा सकता है।

ये विकलांगताएँ इस युग की ही देन नही हैं। प्राचीन युग की गाथाओं और धर्मपुस्तकों में भी ऐसी कई घटनाओं के उल्लेख मिलते हैं। बर्बर युग में तो ऐसी घटनाएँ बहुधा हुआ करती थीं और विकलांग शिशुओं की, देवी-देवताओं के लिए, बलि दे दी जाती थी अथवा उन्हें नदी में फेंक दिया जाता था। किसी-किसी समाज में ऐसे शिशुओं को जन्म देने के अपराध में उनकी माताओं को कठोर दंड भी दिया जाता था।

अभी हाल तक विकलांगताओं के लिए शुक्राणुओं और वंशगत कारणों को उत्तरदायी ठहराया जाता था और नवीनतम खोजों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि, बात ऐसी नहीं है—यह सच है; फिर भी इसका अर्थ यह नहीं कि, शुक्राणुओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और वंशगत कारणों का इस दिशा में कोई महत्व नहीं। कुछ विकलांगताएँ वंशगत कारणों से भी होती हैं। परंतु तात्पर्य यह है कि, जिस शुक्राणु से पूर्णतया सामान्य बालक का जन्म होना चाहिए था और हो सकता था, उससे भी दुर्घटनाओं के कारण विकलांग शिशु जन्म लेता है। कुछ ही वर्ष पूर्व मादा पशुओं पर प्रयोग करने से यह सिद्ध हो गया है कि, भ्रूण के विकास की विशिष्ट अवस्थाओं में भ्रूण को चोट पहुँचने से पैदा होने वाले प्राणी के विकलांग होने की अधिकाधिक सम्भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

सन् १८३२ में फ्रांसीसी प्राणि-विज्ञान-शास्त्री आइसिडोर ज्योफ्री सेंट-हिलेअर ने अपनी एक पुस्तक में इस विषय का उल्लेख करते हुए कहा था – "किसी भी जीवधारी के विकलांग पैदा होने का अर्थ है, जब वह गर्भ में था, तब उसे किसी प्रकार की दुर्घटना का सामना करना पड़ा। हमें इन दुर्घटनाओं के कारणों की जाँच करनी चाहिए।" लगभग पचास वर्षों बाद एक अन्य फ्रांसीसी, कैमिल दारेस्ते ने इस विषय में कुछ प्रयोग मुर्गी के अंडों पर किये; परंतु उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। आधी शताब्दी और बीत गयी। तब वैज्ञानिकों ने स्तनधारी पशुओं पर कई प्रयोग किये। उन्हीं दिनों में महामारी फैली। वैज्ञानिकों के कार्य के लिए प्रकृति का यह 'वरदान' साबित हुआ। पशुओं पर किये गये प्रयोगों और महामारी ने यह दूसरे कर दिया कि, सेंट-हिलेअर की धारणा सत्य थी।

प्रकृति का यह कोप मनुष्यों की बीमारी। सन् १९४१ में जर्मनी का प्रकोप हुआ और अ[illegible] कर्ता यह देख कर हैरान [illegible] महामारी के फलस्वरूप अधिकांश ने अंधे, बहरे, हृदय-रोग से पीड़ित अविकसित मस्तिष्क वाले शिशुओं को दिया। इन बालकों को जन्म [illegible] स्त्रियाँ इस रोग का शिकार [illegible] स्वभावतः ही लोगों को यह [illegible] कि, भाग्य या शुक्राणुओं को [illegible] बालकों के जन्म के लिए [illegible] ठहराया जा सकता।

वैज्ञानिकों का उत्साह बढ़ [illegible] वे दूनी लगन से प्रयोग-कार्य [illegible] लगभग पंद्रह वर्षों के बाद [illegible] शिशु की पूरी-पूरी देख-भाल [illegible] से कई नयी बातें प्रकाश में आयीं। मुर्गी के अंडों पर किये गये प्रयोगों से ज्ञात हुआ कि, इन्क्यूबेटरों (अंडा सेने के यंत्र) में आक्सीजन का दबाव अधिक कर देने से, बच्चे निर्धारित समय के पूर्व ही पैदा हो सकते हैं और उनके अंधे होने की पूरी-पूरी सम्भावना बनी रहती है।

चौथे से आठवें सप्ताह तक के क्षतिपूर्ण भ्रूण-विकास का क्रम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिमा के अणुबम-विस्फोटों का
ाव पड़ा, वैज्ञानिकों ने इसकी
ज की और उन्हें ज्ञात हुआ कि, उस
ी गर्भिणी औरतों ने "मांगोलाइड"
पटे-चौड़े चेहरे और गोल सिर
ालकों को जन्म दिया था। इसी
के अन्य कई प्रयोग भी हुए और
ा यह विश्वास दृढ़ होता गया
विकलांग पैदा होने का मुख्य
के समय ही प्रत्यक्ष अथवा
से उस पर किसी दुर्घटना
ा प्रभाव !

स घटना का क्या प्रभाव होगा, यह
बात पर निर्भर है कि, वह घटना किस
घटती है। उदाहरण के लिए, डिम्ब
न (फर्टिलाइजेशन) के पश्चात्
वन के प्रथम अथवा द्वितीय
में कुछ हो जाने से बालक के केवल
व होने की आशंका रहती है।
बाद, वह स्थिति आती है, जिसमें
प्रकार की चोट लग जाने से, यदि
च्चे पैदा होने की स्थिति हो, तो
अलग नहीं हो पाते और दोनों
रे से जुड़े पैदा होते हैं। तीसरे
सप्ताह गहरी चोट लगने से हो सकता है
कि, हृदय अथवा अँतड़ियाँ, सीने अथवा
पेट के बाहर रह जायें या हाथ-पैर विकसित
न होने पायें; क्योंकि इस समय तक हृदय
और अँतड़ियाँ शरीर के बाहर ही होती
हैं तथा हाथ-पैर का विकास शुरू ही होता
है। चौथे हफ्ते की चोट से गले और श्वास-
नली के बीच छेद
रह जाता है। पाँचवे
सप्ताह में जब आँखों
के लेंस का निर्माण
होता है, बालक के
जन्म से ही मोतिया-
बिंद के मरीज होने
का खतरा रहता है।
सातवें सप्ताह में तालू
के फटे रह जानें की
आशंका रहती है।
और आठवें सप्ताह में
कुछ होने से पैदा होने
वाला बालक विकृत
और कुरूप हो सकता
है; क्योंकि आठवें
सप्ताह में मस्तिष्क
और खोपड़ी के
आधार, हृदय, नाक
की हड्डी और उंग-
लियों का विकास
आरम्भ होता है।
नवें सप्ताह में कान
के पर्दे बनते हैं। इस
समय गर्भिणी के साथ
कोई दुर्घटना हो, तो
शिशु बहरा हो
सकता है। भ्रूण के
विकास की विभिन्न
अवस्थाओं में इनके
अतिरिक्त और भी

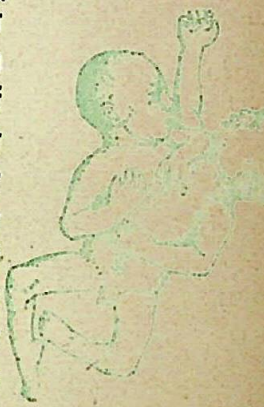

भ्रूण को क्षति पहुँचने के फलस्वरूप शारीरिक विकलांगताओं की तीन स्थितियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कई विकलताएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

गर्भ के उन्सठवें दिन मोटर की दुर्घटना में घायल होने वाली एक गर्भिणी ने जिन जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया, वे ऐसे ही विकृत और कुरूप थे। हिरोशिमा में अणुबम-विस्फोट के स्थल से एक मील से भी कम दूरी पर दो स्त्रियों पर विस्फोट का बड़ा घातक परिणाम हुआ। समय पर जब वे माँ बनीं, उनके बालक भी विकृत और कुरूप थे। केवल एक आँख होना, अतिरक्त अवयव होना, जन्मजात हृदय-रोग, बहरापन और फटा हुआ तालू आदि विकलांगताएँ भ्रूण के विकास की अलग-अलग नाजुक अवस्थाओं में हानि पहुँचने के परिणाम-स्वरूप होता है।

इसमें संदेह नहीं कि, शुक्राणु भी कुछ विकलांगताओं के लिए उत्तरदायी होते हैं। परंतु गर्भावस्था में दुर्घटनाओं के फलस्वरूप जो परिणाम हो सकते हैं, वे कहीं अधिक दुःखद और भयंकर होते हैं। उदाहरण के लिए, हिरोशिमा के कांड से बचे हुए व्यक्तियों के बालकों पर कोई दुष्प्रभाव प्रकट नहीं हुआ; पर उस कांड के समय जो गर्भिणी स्त्रियाँ विस्फोट के स्थल से डेढ़ घेरे के मील के अंदर थीं, उनमें पंद्रह स्त्रियों [illegible] खोपड़ी और दोष-युक्त मस्ति[illegible] शिशुओं को जन्म दिया।

किंतु वैज्ञानिकों के शोध-कार्य [illegible] भी प्रमाणित कर दिया कि, दूसरे [illegible] विकलांगताओं को रोका जा सकेगा। [illegible] ज्यों-ज्यों हम समझते जायेंगे कि [illegible] महिलाओं के साथ विभिन्न [illegible] विभिन्न रोगों से पीड़ित [illegible] पर क्या प्रभाव होता है [illegible] इन विकलांगताओं पर नियंत्रण [illegible] गर्भिणी स्त्रियों को बेहोशी [illegible] आंतरिक रक्त-स्राव से, रक्त [illegible] परिवहन-तंत्र के भयंकर रोगों से [illegible] का सुपरिणाम होगा भावी संतानों [illegible] जन्मजात दृष्टिहीनता, मस्ति[illegible] अपूर्णता तथा इसी प्रकार के [illegible] बचाना। गर्भिणी महिलाओं को [illegible] एक्स-रे-उपचारों, शल्य-क्रिया [illegible] हवाई उड़ानों से भी बचना चा[illegible] सकता है कि, किसी एक चीज [illegible] गर्भ के शिशु पर कोई प्रभा[illegible] परंतु सावधानी बरतना सदैव [illegible] होता है—अन्यथा परिणाम [illegible] बड़ा दुःखदायी हो सकता है!

एक उत्सव में किसी ने बर्नर्ड शा से पूछा— "यह व्यक्ति वायलिन अच्छा बजाता है न?" "इसका वायलिन बजाना देखकर मुझे पेडरवस्की की याद आ रही है।"—शा बोले। वह व्यक्ति चकित हो उठा— "किंतु पेडरवस्की तो वायलिन-वादक नहीं था?" शा ने गम्भीरता से कहा— "और, न यह व्यक्ति ही वायलिन-वादक मालूम होता है!"

—'राइटर्स वर्ल्ड' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

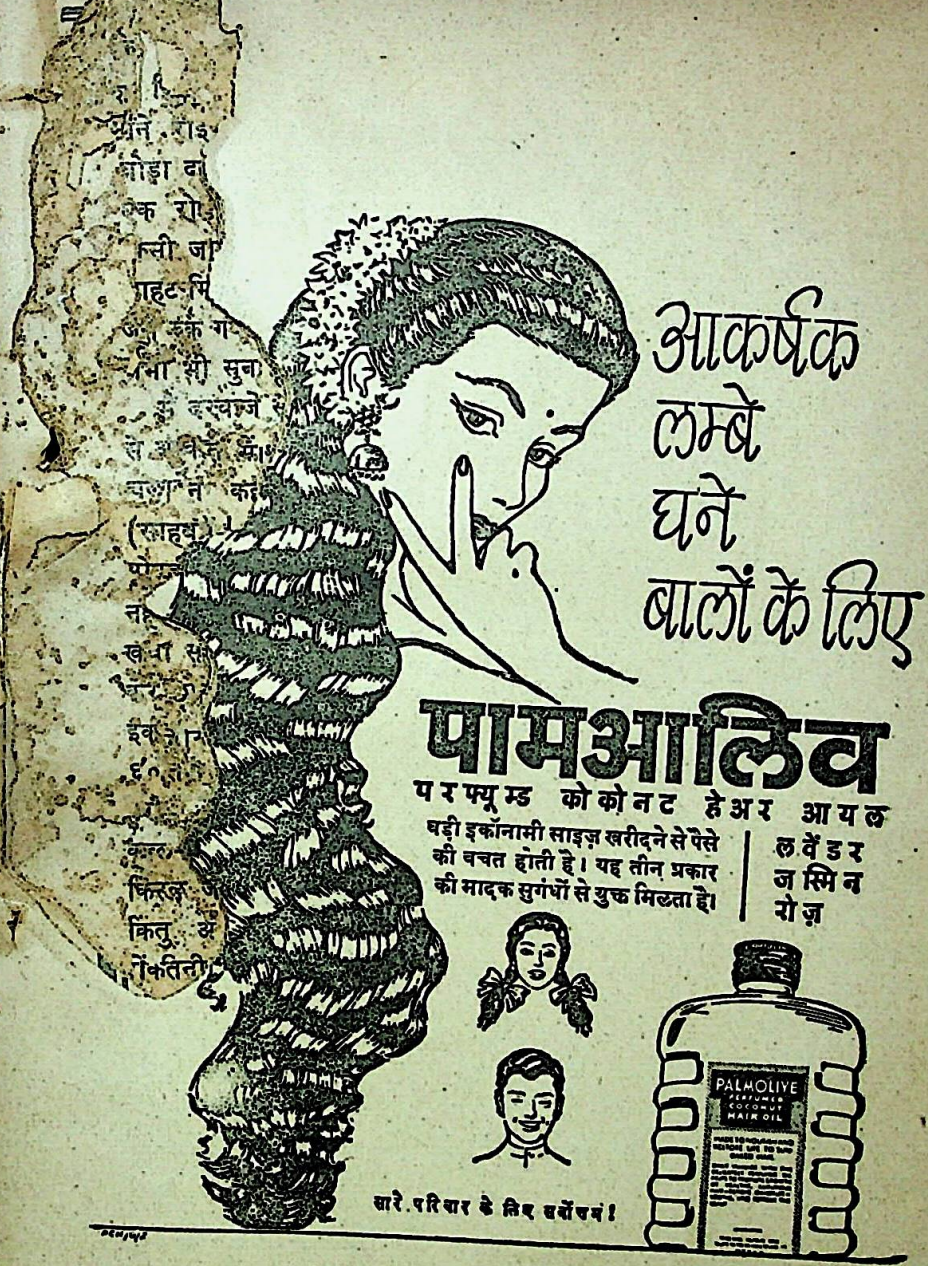

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साढ़े आठ पौण्ड

"इस महीने कोयला कितना आया ?"

"आया होगा कोई चार मन। ६ रुपये का !"

"देखो शीला, मैं इन बातों में दखल नहीं देना चाहता, लेकिन..."

"आप मुझे भी नहीं चाहते"। "लो अब रूठ बैठीं ! अच्छा तुम्हारी मर्ज़ी !"

नई नई शादी है। घर चलाने की सूझ न शीला को है न प्रसाद को। दोनों में ऐसी होती रहती है। शीला इसलिये नाराज़ होती है कि घर में कोई दोस्त आया नहीं कि नौकर को बाज़ार ! मंगाओ मिठाई और नमकीन ! जैसे कुबेर का धन इन्हें ही मिल गया। प्रसाद का कहना है कि हुआ क्या जो कभी कभी रुपया, डेढ़ रुपया ख़र्च हो गया।

शीला की पड़ोसन कमला जब इसे मिलने जाती है तो अपने आदमी की बातें करती कहती है शुरू ही से दबाव में रखा है। घर ख़र्च पर अगर सौ रुपया आता है तो डेढ़ सौ बताती हूँ।

कमला का पति मनोहर वास्तव में एक फक्कड़ आदमी है। कहता है "भाई पैसे के क्या करोगे ? भारत में पैसे को तो हमेशा हाथ का मैल समझा गया है, और खाओ आज कल जब कि दुनिया न जाने कब राख की ढेरी हो जाये—एटम बम, हाइड्रोजन बम, कोबाल्ट बम, रॉकेट—यह सब दुनिया की तबाही के सामान हैं। तो भय्या, जो चार दिन जीना है खाते पीते जिओ। कंजूसी से कुछ न होगा। अब मेरी बीवी को ले लो—उस का ख्याल है कि मेरी तन्ख़ाह २५० रुपये है लेकिन मुझे ३२५ मिलते हैं !"

लेकिन प्रसाद और शीला को यह बातें बिलकुल नहीं भातीं। उन्हें एक दूसरे से प्यार है। प्रसाद की सदा यही कोशिश रहती है कि वह शीला के लिये कोई चीज़ ख़रीद कर ले जाये। कभी कभी नादानी भी हो जाती है। अभी पिछले महीने एक ऊंची ऐड़ी का जूता ख़रीद लिया। शीला ने प्रसाद का जी रखने के लिये पहिन लिया मगर घर से निकलने से पहले दो बार गिर पड़ी। प्रसाद का पावँ कोई शीला के पावँ के बराबर ही होगा। कहने लगा "ऊंची ऐड़ी का जूता पहन कर चलना कोई मुश्किल काम नहीं। मुझे देखो" शीला देखती क्या ? प्रसाद कुछ इस बे-ढंगे तरीके से गिरा कि शीला की समझ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया कि हंसे या तरस खाये। खैर, प्रसाद उठा, कपड़े झाड़े और कहा "ऊंची ऐड़ी
स्त्री के स्वास्थ्य के लिये अच्छा नहीं होता।"

कल कुछ दिनों से शीला बड़ी उदास नज़र आ रही है, जैसे किसी गहरी सोच में डूबी
प्रसाद बार बार पूछता कि आख़िर बात क्या है ? मगर वह टाल देती है। कल क़थ
ई तो प्रसाद कहने लगा "भाई, पानी उबाल कर पिया करो, सब्ज़ियों को लाल दवा से धोया
और बाज़ार की कोई चीज़ न खाओ।" जवाब में शीला हंस पड़ी। आज कई दिनों के
शीला हंसी थी, लेकिन प्रसाद को फ़िक्र हुई कि कहीं हिस्टीरिया का दौरा न हो। भागा
डाक्टर के पास गया। सारी बात सुन कर डाक्टर हंसने लगा तो प्रसाद और भी
घबराया। डाक्टर ने प्रसाद को पास बुला कर कहा "देखो, तुम्हारी पत्नी को आज कल हर
जरूर पीना चाहिये। हरी सब्ज़ियां, फूटी हुई दालें, भी ज़्यादा खानी चाहियें
सेर भी ज़रूरी है।

दिल थामते हुये कहा "लेकिन डाक्टर साहिब, आख़िर बात क्या है ?"
साहिब कुछ देर तो टकटकी लगाये प्रसाद को देखते रहे, फिर उठे और
कर कहा "मुबारक हो, तुम एक बच्चे के बाप बनने वाले हो।"

प्रसाद की ख़ुशी का ठिकाना न था। दौड़ा दौड़ा बाज़ार गया। किताबों की दुकान से गर्भवती
स्त्रियों की देख भाल के बारे में जो किताब हाथ लगी, मोल ले ली। घर पहुँच कर शीला का दर्दी,
मित्र, मां, डाक्टर सब कुछ बन गया। प्रसाद ने खान पान के बारे में भी बहुत कुछ जान लिया
एक चिन्ता उसे खाये जा रही थी। घर से जो घी आया था वह ख़त्म हो रहा था।
के घी पर भरोसा न था। कमला और मनोहर ने भी यही कहा कि इन दिनों में घी
ना ज़रूरी है। 'डालडा' गर्भवती स्त्रियों को नुकसान पहुंचाता है। प्रसाद के दिल
बात नहीं बैठी। नुकसान पहुंचाता है तो आख़िर क्यों ? इस का जवाब उसे न मिला।
मुहर बन्द डिब्बों में आता है। सभी दुकानों पर मिलता है और हर कोई इसे ख़रीद
है। प्रसाद ने दिल में कहा कि डाक्टर से मिल कर इस का फ़ैसला करना चाहिये।

ने बात सुनकर कहा "कुछ लोग वहम के मारे होते हैं। मेरे घर में सभी खाने 'डालडा'
हैं। लोगों को शिकायत है कि इस से नदहज़मी और जाने क्या कुछ होता है। लेकिन
उन के खाने में लापरवाही का नतीजा है। 'डालडा' में तंदुरुस्ती के लिये विटामिन
और 'डी' मिलाये जाते हैं। एक गर्भवती स्त्री को विटामिन 'ए' की ज़रूरत होती है।
यह बीमारियों की रोक थाम की ताक़त देता है। विटामिन 'डी' से दांत और हड्डियां मज़बूत
बनती हैं। लेकिन घी हो या 'डालडा' इन से लाभ तभी हो सकता है अगर हम अपने रोज़ के
खाने में ऐसी चीज़ें खायें जिन से हमें पूरी पूरी ताक़त मिले।

प्रसाद 'डालडा' का एक डिब्बा घर ले आया। शीला को सारी बात समझाई। शीला सुनती
रही और बार बार 'गर्भवती' शब्द पर शरमाती रही। प्रसाद खुश था कि घी की समस्या
हल हो गई। पैसे भी बचे और 'डालडा' से बना खाना अपना असली मज़ा देने लगा।
लेकिन एक शाम जब घर वापस आया तो देखा कि न शीला घर है न पड़ोसन कमला !
तभी मनोहर को सामने आते देखा। लपक कर उस की तरफ़ बढ़ा। मनोहर ने कहा "साढ़े
आठ पौण्ड !"

"साढ़े आठ पौण्ड - साढ़े आठ पौण्ड क्या" ?

"हां हां, साढ़े आठ पौण्ड ! रंग ज़रा सांवला है, मगर है मर्द का बच्चा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
DL-1228-X29HI

पूर्णतया विशुद्ध....

जब आपको दांत अधिक साफ करने हों, एक टूथ ब्रश दूसरी के बराबर नहीं होती और आर्यन के बराबर कोई नहीं !

आर्यन के नायलोन बाल परिपूर्ण हैं सीधे काटे और चौरस लगाए हुए ! ये ऐंठते नहीं हैं और दांत को आगे-पीछे, उपर-नीचे इधर-उधर वास्तव में साफ करते हैं।

आर्यन प्रामाणिक व बच्चों की साइजों में आता है। प्लास्टिक डिब्बी में डी-लक्स क्वालिटी भी आती है।

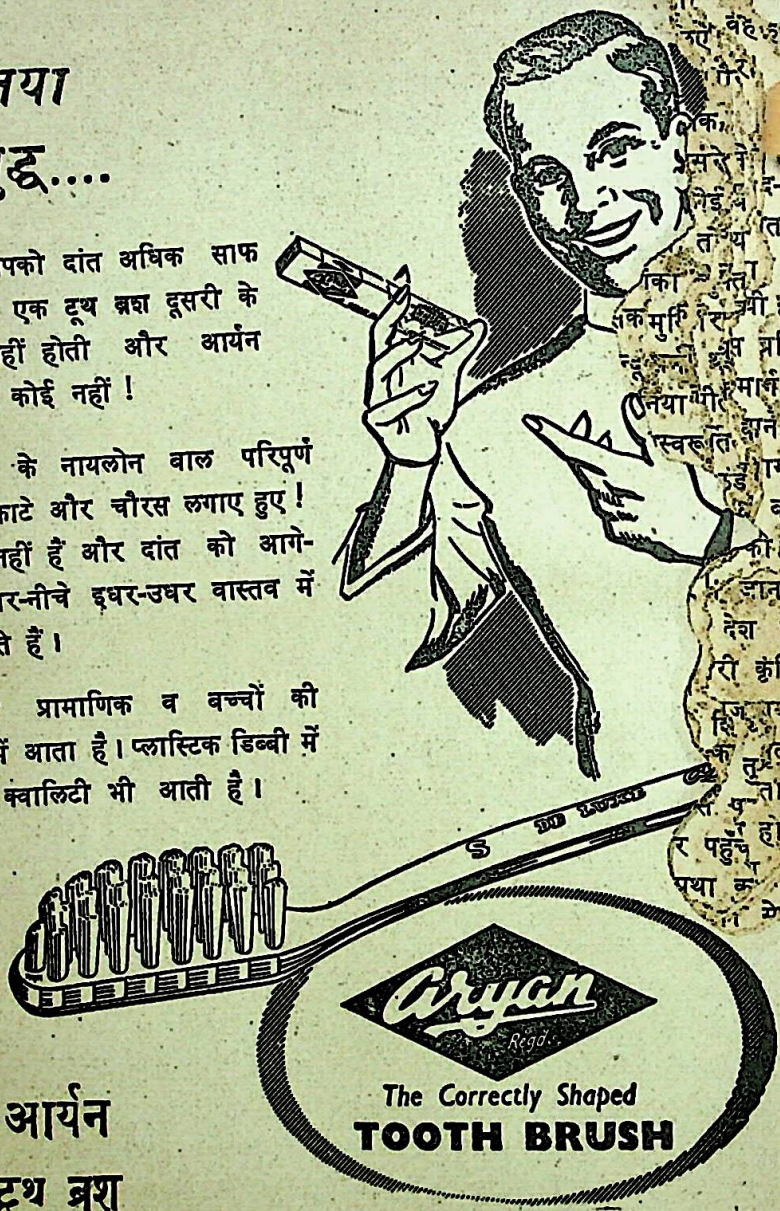

आर्यन

ट्रथ ब्रश

कहीं अधिक साफ करता है – कहीं अधिक टिकता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माइक्रो-धाराएँ संदेश पहुँचायेंगी

[illegible] जब गोकुल की गोपियाँ बिल्कुल नजदीक मथुरा में बसे श्रीकृष्ण तक अपना संदेशा न [illegible] थीं और वे अबला-असमर्थ गोपियाँ ही क्यों, अखंड सत्ताधारी सम्राट् जहाँगीर भी [illegible] का मेहरुन्निसा तक चालीस दिन में अपनी प्रणय-पाती पहुँचा पाया था! किंतु आज [illegible] विज्ञान के हाथों में आ गयी है कि, होंठों से निकले आपके शब्द एक ध्रुव [illegible] भी सुन ही क्यों, चंद्रलोक मंगललोक तक पहुँच जायें। प्रस्तुत लेख में इसी सिद्धि के एक सोपान का संकेत है।

★

[illegible] वर्ष पहले जन्म लेने के [illegible] विद्युत्-कण-विज्ञान आज एक [illegible] के रूप में परिणत हो गया है [illegible] भविष्य में ही वह बड़ा विशाल [illegible] करने जा रहा है। इस सम्बंध [illegible] में अब कोई गतिरोध नहीं [illegible]। उसी विज्ञान का एक नया [illegible] — 'माइक्रो-धारा-रेडियो'। [illegible] वहन के इस नये साधन का आज [illegible] से तेल ले जाने में उपयोग [illegible] है; पर सम्भव है कि, कल किंतु [illegible] में भी यह आने लगे।

[illegible] धारा, अति सूक्ष्म-तरंग-सम्पन्न रेडियो की एक किस्म है, जो साधारण सेटों की तुलना में, काफी उन्नत 'फ्रीक्वेंसी' पर काम करती है। माइक्रो-धारा किसी 'ब्राडकास्टिंग-स्टेशन' के सिगनल की भाँति सभी दिशाओं में न फैल कर, एक संकीर्ण मार्ग से होकर गुजरती है; ठीक उसी तरह, जिस तरह किसी 'सर्चलाइट' का प्रकाश एक सीध में जाता है। साथ ही, पृथ्वी की गोलाई के कारण, १५ से ३० मील की दूरी पर स्थित मीनारों के द्वारा इसके पुनःप्रसारण की आवश्यकता पड़ती है।

प्रकाश-क्षेत्र के अत्यंत संकीर्ण होने के कारण 'माइक्रो-धारा-ट्रांसमीटर' को केवल उतनी ही शक्ति की आवश्यकता होती है, जितनी एक छोटी 'फ्लैश-लाइट' में लगती है। अभी कुछ सम्वाद-वहन-प्रणालियाँ एक समय में ४०० से अधिक संदेश भेजने में समर्थ हैं। इस बात को दृष्टि में रख कर एक यंत्र-वेत्ता ने घोषणा की है कि, एक तार-पंक्ति से जितना कुछ काम लिया जाता है, उससे कम काम माइक्रो-धारा नहीं करेगी। साथ ही, यह अधिक विश्वसनीय और सस्ती भी सिद्ध होगी।

इसकी लोकप्रियता किस तरह शनैः-शनैः बढ़ रही है, इसका एक प्रमाण यह तथ्य है कि, मात्र एक वर्ष में— सन् १९५३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में– २०० लाख डालर से अधिक का माइक्रो-धारा-यंत्र निजी औद्योगिक उपभोक्ताओं को बेचा गया, जब कि सन् १९४८ में इसकी बिक्री केवल १० लाख डालर की थी। इस यंत्र का उत्पादन करनेवाली एक बड़ी संस्था, 'फिल्को कारपोरेशन' के उपाध्यक्ष, जोसेफ एच० गिलीज की भविष्यवाणी है कि, सन् १९६० तक इसकी वार्षिक बिक्री ५,००० लाख डालर से भी अधिक की हो जायेगी। सेना-सम्बंधी खपत इसमें सम्मिलित नहीं है; परंतु निर्माताओं का विचार है कि, वह खपत भी क्रमशः बढ़ रही है।

माइक्रो-धारा के इस्तेमाल से, कैंसास नगर-स्थित अपने कार्यालय में बैठा हुआ एक व्यक्ति 'प्लैटे पाइपलाइन कम्पनी' के ब्योमिंग से इलिनायज तक के १,००० मील के क्षेत्र में, २० इंच व्यास की पाइप में हो रहे तेल-प्रवाह पर अपना नियंत्रण रख सकता है। यह एक चमत्कार ही तो है कि, मात्र स्विच दबा कर कोई व्यक्ति विद्युत्-कणों की सहायता से, ११ पम्पिंग-स्टेशनों के किसी भी पाइप में प्रवाह आरम्भ कर सकता है, बंद कर सकता है अथवा मात्रा को बढ़ा या घटा सकता है। इतना सब-कुछ करने के अलावा वही माइक्रो-धारा, तेल की मात्रा और प्रवाह-सम्बंधी आवश्यक सूचनाएँ भी चौबीसों घंटे देती रहती है। साथ ही, ध्वनि-परिवहन की व्यवस्था समस्त पम्प-स्टेशनों और प्रवाह की देख-भाल करनेवालों के बीच सम्बंध जोड़ती है। [illegible]

विद्युत्-कण-सम्बंधी एक छो[illegible] योग-मात्र से, माइक्रो-धारा से [illegible] गतिशील रेडियो-प्रणालियों का [illegible] लिया जा सकता है, जिनमें [illegible] की भी कोई सीमा नहीं रह[illegible]

इस यंत्र के निर्माताओं का [illegible] कि, शीघ्र ही माइक्रो-धार[illegible] में भी होने लगेगा। [illegible] समर्थन में 'राक आइलें[illegible] का दृष्टांत रखा जा स[illegible] १९४९ से ही पश्चिमी [illegible] तथा गुडलैंड के मध्य, १०[illegible] तूफानी क्षेत्र में माइक्रो-धारा [illegible] प्रयोग कर रही है।

पिछले शिशिर में, वहाँ [illegible] सम्वाद-वहन के साधन, तार [illegible] को पूरे ५९२ घंटों तक अस्त-व[illegible] लेकिन इस अवधि में माइ[illegible] व्यवस्था केवल ३९ घंटे के लिए [illegible] रही। फिर एक बार, जब बा[illegible] की लाइनें बह गयीं, तो मा[illegible] ही कोई कठिनाई न होने [illegible] एक 'पुनःप्रसारण-मीनार' [illegible] बिल्कुल ही घिर गयी थी और उसे दो दिनों तक केवल बैटरी पर ही आश्रित रहना पड़ा था।

भविष्य में, माइक्रो-धारा का उपयोग और भी कई प्रकार से होने की कल्पना की जा सकती है। मार्गों पर आवागमन के नियंत्रण, गश्त लगानेवालों की सहायता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कामों में शीघ्रता के उपयोग सम्भावित है। टेलिविजन में, जहाँ दूरवर्ती केंद्रीय निरीक्षण-पट्ट से जोड़ना है, वहाँ यह उपयोगी साबित टर-टेलिविजन के लिए भी से यह काफी उपादेय है। के लिए एक और बड़ा चलती-फिरती गाड़ियाँ। जैसा स्टेशनों इतना अवश्य उस स्थिति रेडियो- संकट- द्युत्-उप- ट्रकों या ले जाना 'रेडियो आव

किंतु एम० जी० स्टाटन का कहना है कि, आपत्ति-काल में, जब नियमित संदेशसाधन अस्त-व्यस्त हो जायें, तब सचल माइक्रो-धारा-यंत्र वहाँ विशेष रूप से काम आ सकता है।

माइक्रो-धारा का औद्योगिक क्षेत्र में सबसे बड़ा उपयोग स्वचालन-व्यवस्था में होगा। इस सम्बंध में 'मोटरोला कम्पनी' के उपाध्यक्ष, डेनियल ई० नोबिल का कहना है कि, वास्तव में, स्वचालित नियंत्रण-व्यवस्था, सम्वाद-परिवहन का ही एक अंग है; क्योंकि वह सूचनाओं के प्रसारण को ही तो प्रकट करती है। स्वयं-संचालन तथा असाधारण यांत्रिक कार्रवाइयों के लिए, माइक्रो-धारा सूचना देने के मामले में बेजोड़ साबित हो सकती है।

माइक्रो-धारा क्या-क्या कर सकती है, इस दिशा में अपने बिजली के बिल के अपने-आप बन जाने की सम्भावना पर जरा ध्यान दीजिये। विद्युत् की मात्रा को, इसके द्वारा सरलता से जाना जा सकेगा। माइक्रो-धारा उपयोग में लायी गयी बिजली के बारे में कार्डों या फीते पर चिन्ह अंकित कर देगी और बाद में, यांत्रिक क्रिया से, उपभोक्ताओं के लिए बिल तैयार हो जायेंगे। इसी प्रणाली का उपयोग, पाइप-लाइनों से तेल लेनेवाले औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए बिल बनाने में भी हो सकता है।

अनेक संदेशों को एक ही रेडियो-मार्ग पर केंद्रित करने की जो विद्युत्-कण-सम्बंधी क्षमता माइक्रो-धारा में है, वह उसे औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए अत्यंत प्रभावशाली बना देती है। संदेश-साधन

संदेशा

माता नील के कगारों की जिस आर्द्र मिट्टी से मेरा मन बना है, उसी मिट्टी से तेरा मन भी! मेंहदी की जो महक मेरे श्वास में समायी है, वह तेरे प्राणों में भी और इंद्रधनुषों के जिन रंगों ने मेरा तन रंगा है, उन्हीं रंगों ने तेरा तन भी! शायद यही कारण है कि, जो मेरा दिल कहना चाहता है, उसे तेरे कान पहले ही सुन लेते हैं।

—ऐजाज पाशा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का स्वरूप बातचीत, 'टेलिटाइप-संदेश', या 'मीटररीडिंग' कुछ भी हो सकता है। वस्तुतः माइक्रो-धारा जितनी उपयोगी टेलिविजन-नाटकों के लिए है, उतनी ही कार्यालयों के बीच पत्राचार में भी— कार्यों के विभिन्न रूप उस पर कुछ विशेष असर नहीं डालते। रेडियो-संदेश-साधनों को अस्त-व्यस्त कर देनेवाली परिस्थितियों से भी, माइक्रोधारा अपनी उन्नत फ्रीक्वेंसी के कारण मुक्त रहती है। यह एक आश्चर्य ही है कि, माइक्रो-धारा की किरणें, बिना किसी हस्तक्षेप के, एक-दूसरे को पार कर सकती हैं।

माइक्रो-धारा-प्रसारण-प्रणाली पर सर्व-प्रथम, तेल और गैस की पाइप-लाइनों और सार्वजनिक संस्थाओं के अधिकारियों ने ध्यान दिया। यह व्यवसाय बड़े क्षेत्रों में फैला होता है और संतोषजनक कार्य-वाहियों के लिए आकस्मिक संदेश-साधनों की व्यवस्था आवश्यक होती है। पहले-पहल, सन् १९२० में, 'मिडवैली-पाइप-लाइन-कम्पनी' ने अपनी टैक्सास से ओहियो तक, १,००० मील की दूरी में, फैली हुई कच्चे तेल की पाइपों के संचालन के लिए, इस प्रकार के संदेश-परिवहन की व्यवस्था की थी। अभी जिन क्षेत्रों में माइक्रो-धारा-प्रणाली काम में लायी जा रही है, उनमें सबसे विस्तृत है, फालफरियस (टैक्स) से नेवार्क तक का १,८४७ मील का क्षेत्र, जो 'ट्रांसकांटीनेंटल गैस-पाइप-लाइन कारपोरेशन' के अधीन है।

औद्योगिक क्षेत्र के [illegible] उपयोग, 'बैल टेलिफोन क[illegible] रही है। आज टेलिविजन-प्र[illegible] काम ५२,००० चैनल-मीलों में [illegible] और इसमें से लगभग ३३,०० [illegible] माइक्रो-धारा का उपयोग किया [illegible] यह कम्पनी नियमित सम्वाद [illegible] लिए भी माइक्रो-धारा का उ[illegible]

'माइक्रो-धारा-प्रणाल[illegible] साधारणतः किसी क्षे[illegible] उपयोग और लम्बाई प[illegible] है। विशेष प्रणालियों पर [illegible] १,००० डालर प्रति मील [illegible] आता है। पर इसके उत्पादकों के [illegible] नुसार १,००० मील के क्षेत्र में [illegible] धारा लगाने का व्यय, तार-ला[illegible] से लगभग आधा ही आयेग[illegible] उतनी दूरी के लिए माइक्रो-ध[illegible] को लगभग ४०,००० पौंड मूल[illegible] की आवश्यकता होगी, जब [illegible] तारों के लिए ३० लाख पौंड की [illegible] कता होगी। वर्तमान मूल्यों [illegible] यह बचत लगभग ८,८८, [illegible] के बराबर ठहरती है।

अभी एक माइक्रो-धारा की पुनःप्रसारण मीनार का निर्माण करने में औसत लगभग ७,५०० डालर खर्च आता है। साथ ही, इसकी स्थापना में लगभग ११,४०० डालर प्रति मीनार और खर्च हो जाता है। लेकिन अनुमान है कि, कुछ प्रणालियों में मीनार का व्यय भी 'एरियल' को ऊँचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर, कम किया जा सकता
स्तविकता तो यह है कि,
रा का उपयोग करनेवालों के
का विचार ही प्रधान नहीं है—
विश्वसनीय देख-रेख के आगे
की बात भुलायी जा सकती है।
जिये कि, एक संस्था को
की लाइनों के बेकार
द भेजने की आवश्यकता
यही तूफान संदेशवाहक
अस्त-व्यस्त कर सकता
पास क्या चारा शेष रह
? ऐसी ही स्थिति में माइक्रो-धारा
उपयोगिता व्यक्त करता है।
सों का माइक्रो-धारा-मीनारों पर
भाव न होगा। और, यदि हो
तो स्वचालित सूचना देनेवाला
-विच्छेद के ठीक स्थान का
देगा— साथ ही, गड़बड़ी का
। फलतः तार-लाइनों की अपेक्षा
मत भी शीघ्र हो सकती है
रा की पुनःप्रसारण-मीनारें
किंतु ३० फुट तक ऊँची और लोहे
की बनी होती हैं। हर मीनार
के तल पर, छोटे कक्षों में, माइक्रो-धारा-
संकेतों के उठाव, विस्तार और प्रसार के
लिए 'रिसीवर' और 'ट्रांसमीटर' लगे
होते हैं। नवीन मीनारों में, नियमित यंत्र
के बिगड़ जाने की दशा में, उपयोग के लिए
रेडियो-यंत्र और विद्युत्-साधनों का भी
प्रबंध होता है। यदि प्रणाली का उपयोग
स्वर-संदेश-साधन के रूप में किया जाता
है, तो दोनों ओर संदेश भेजने और पाने के
लिए टेलिफोन-सरीखे यंत्र या 'माइक्रो-फोन'
और 'स्पीकर' का प्रबंध होता है।

व्यावसायिक दृष्टि से उपयोगी
माइक्रो-धारा-प्रणाली का जन्म राडार-
सम्बंधी खोजों के सिलसिले में हुआ।
द्वितीय विश्व-युद्ध-काल में करोड़ों डालर
राडार की खोज पर खर्च किये गये थे।
ठीक ढंग से काम करने के लिए राडार
को भी उन्नत-फ्रीक्वेंसी की आवश्यकता
थी। अतः उसके लिए जो अनुसंधान हुए,
वे माइक्रो-धारा के लिए भी स्वयमेव ही
उपयोगी साबित हुए। उसी समय के
प्रयत्नों के कारण उन्नत-फ्रीक्वेंसी उत्पन्न
करनेवाली 'वैक्यूम-ट्यूबें' युद्ध के बाद
उपलब्ध हो सकीं।

संसार का प्रथम माइक्रो-धारा-प्रदर्शन
सन् १९३१ में हुआ था, जब 'इंटरनेशनल
टेलिफोन एंड टेलिग्राफ कारपोरेशन'
के वैज्ञानिकों ने, इंग्लिश-चैनल के पार
माइक्रो-धारा-संकेत भेजा था। माइक्रो-धारा
तथा अन्य उन्नत-फ्रीक्वेंसी के रेडियो-
सम्बंधी अनुसंधानों से ही राडार-जाल
के निर्माण में सहायता मिली। यदि वैसा
नहीं होता, तो द्वितीय विश्व-युद्ध में
इंग्लैंड की रक्षा असम्भव ही हो जाती।

★

प्रेम होने पर गली के श्वान भी, काव्य की लय में गाते-भूँकते हैं। —दिनकर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६०० वर्ष पूर्व का मूल्य-नियंत्रण

एक बार चीन में अकाल पड़ा। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच गयी। संताप-निवार उपाय कारगर न देख, राजा-प्रजा दोनों महात्मा कन्फ्यूशस के पास गये। क कहा—"राजन्, खाद्य जब व्यापार की चीज बन जाता है, तो उसका परिणाम एक अकाल ही होता है। तुम खाद्य की बिक्री पर दंड का नियम लगा दो।" राजा ने और प्रांत में अकाल का निवारण हो गया। आज के मूल्य-नियंत्रणों का भी किंतु यहाँ एक ऐसे ऐतिहासिक मूल्य-नियंत्रण का ब्यौरा है, जो अपने ढंग लेख के लेखक हैं, डा० जे० एन० चौधरी।

द्वितीय महायुद्ध के समय हमें 'राशनिंग' तथा आवश्यक वस्तुओं के मूल्य-नियंत्रण का समुचित अनुभव हो चुका है। उसकी स्मृति अभी भी हमारे मस्तिष्क में ताजी बनी है। उसके पक्ष अथवा विपक्ष में हम चाहे जो कहें; पर यह निर्विवाद है कि, 'राशनिंग' तथा मूल्य-नियंत्रण ने लाखों को खाद्याभाव में मरने से बचा लिया। उस काल में, नियंत्रण का उद्देश्य यह था कि, लोगों को जीवन-यापन के लिए आवश्यक वस्तुएँ उचित मूल्य पर मिल सकें।

लेकिन छः सौ वर्ष पहले हमारे यहाँ एक और मूल्य-नियंत्रण हुआ था, जो जनहित को नहीं, सरकार और उसकी सेना के हित को दृष्टि में रख कर शुरू किया गया था। उद्देश्य यद्यपि भिन्न था; किंतु इस नियंत्रण से सामान्य जन-समुदाय को जो लाभ हुआ, वह वास्तव में, अपरिमित ही था।

उस समय हर चीज प्रचुर मा उपलब्ध थी और उनका मूल्य नहीं था। पर निश्चय ही, वह नहीं था, जितना कि सरकार के हित की दृष्टि से चाहती उसने कुछ आवश्यक वस्तुओं नियंत्रण लगा दिया।

नियंत्रण की यह कथा ६०० है। उस समय दिल्ली के तख्त खिलजी था। अपने विशा की रक्षा के लिए बहुत बड़ी सेना आवश्यक था। लेकिन राजकीय कोष से वह उतनी बड़ी सेना रख सकने में असमर्थ था। अतः अपनी समस्या का हल उसने दूसरे ढंग से निकाला।

इतिहासकार फरिश्ता ने उसकी चर्चा करते हुए लिखा है—"अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैनिकों का वेतन कम करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर घोड़े, हथियार तथा मूल्य घटाये बिना, सैनिकों कम करना सम्भव नहीं था। समस्या के हल के लिए, उसने पूरे में फरमान जारी किया और श्यक चीजों का मूल्य नियंत्रित और, खाद्यान्न का मूल्य कम मल्लिक कुबूल की देख-

यमुना

मार्गों पर ारी कल्पना बनवाये। , वह या तो खाद्यान्न की थवा किसी थी, इसका विवरण थ का कता- उसके समसामयिक ऐसा कपड़ा ार जियाउद्दीन ए इनमें से ग्रंथ से मिलता थवा आधु- यह बता देना आवश्यकता कि, उस समय गत रीतियों आज के १४॥ रेशों अथवा बराबर था और के ५ छँटाक के ज के पैसे के किंतु समय ताम्बे का जो था, उसका नाम 'जोतल' था। इस प्रकार के ६४ जीतलों का १ रुपया हुआ करता था।

नियंत्रित मूल्य

गेहूँ	७॥	जीतल प्रति मन
जौ	४	,, ,,
धान	५	,, ,,
दाल	५	,, ,,
चीनी	१॥	जीतल प्रति सेर
गुड़	॥।	,, ,,
मक्खन	१	,, २॥ सेर
नमक	५	,, २॥ मन

उस काल की कुछ चीजों का भाव फरिश्ता ने भी अपने इतिहास में दिया है—

मिश्री	२	जीतल प्रति सेर
घी	॥	,, ,, ,,

गाय और घोड़े भी तैयार होता है, नियंत्रित मूल्य पर ही कागज-जैसा है बिक सकते थे। प्रथम

इस कपड़े क श्रेणी के घोड़े १०० से प्रकार की वस्तु १२० टंका तक, द्वितीय पहनने के कपड़ श्रेणी के ८० से ९० टंका अस्तर के रूप तक और तृतीय श्रेणी के है। कई कामों ६५ से ७० टंका तक बिकते कपड़े का स्थान थे। खच्चरों का मूल्य और है। भविष्य व भी सस्ता था और १० से दिखायी देता है २५ टंका के अंदर खच्चर मिल जाते थे। दूध देने-वाली गाय ३ या ४ टंका में और बकरी १४ जीतल में मिल जाती थी।

अलाउद्दीन खिलजी

[चित्र : वी० एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

अलाउद्दीन को मालूम था कि, घोषणा-मात्र से कुछ लाभ नहीं होनेवाला है, जब तक कि बड़े-से-बड़े व्यापारी से लेकर छोटे-से-छोटा दूकानदार राजाज्ञा का पालन न करे। घोषणा करते समय वह उसके विरोध से भी अवगत था। पर वह बड़ा दृढ़ व्यक्ति था और सदा इस बात की निगरानी रखता था कि, कहीं कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजाज्ञा का उल्लंघन तो नहीं कर रहा है। नियंत्रण-सम्बंधी राजाज्ञा को कार्यरूप में परिणत करने के लिए उसने एक नया विभाग खोला और कर्मचारी रखे। और, अपने गुलामों को बाजार भेज कर टोह लिया करता था कि, दूकानदार मोल-तोल ठीक करते हैं या नहीं।

यदि कभी कोई दूकानदार वजन में कम चीजें देता, तो वजन [illegible] लिए उस दूकानदार की [illegible] ही माँस काट लिया जाता [illegible] कम देता था। बेईमानी [illegible] दारों को प्रायः सरकारी [illegible] मार कर दूकान से हटा [illegible] सम्बंधी नियमों की अवहे[illegible] को कोड़े लगाये जाते थे। [illegible] कानून इतनी कठोरता से [illegible] कि, थोड़े ही दिनों में [illegible] भयभीत हो गये और का[illegible] की उकनी हिम्मत जातीर[illegible] से-छोटे दूकानदारों से लेकर बड़े-से-बड़े व्यापारियों ने अवैध मुनाफाखोरी छोड़ दी।

खाद्यान्न की कमी न पड़ने पाये, इसके लिए सरकार ने अपने गोदामों में भी खाद्यान्न एकत्र कर रखा था। सरकार भूमि की लगान नकद न लेकर गल्ले के रूप में लिया करती थी। इस प्रकार भी सरकार के पास काफी खाद्यान्न जमा हो जाता था।

कोई व्यक्ति खाद्यान्न को जमा नहीं कर सकता था और यदि राजाज्ञा का उल्लंघन करके कोई ऐसी कुचेष्टा [illegible] रहने पर भी बेचने से इन्को[illegible] उसे कठोर दंड दिया जाता [illegible]

फरिश्ता ने लिखा है—"गल्ले [illegible] के लिए प्रोत्साहन दिया जात[illegible] खाद्यान्न अथवा अन्य किसी वस्तु [illegible] बंद कर दिया गया था। चो[illegible] करनेवाले को मृत्युदंड [illegible]

[illegible] के सम्मुख प्रति[illegible] लेख के लेखक हैं, डा० जे० एन० चौधरी [illegible]

[illegible] खान्न बिका अ[illegible]

[illegible] सम्राट् की ओर [illegible] में, अपरि[illegible] अधिकारी उन्हें सूचि[illegible]

उस स[illegible], किसने राजाज्ञा का उ[illegible] उपलब्ध थ[illegible] उसे क्या दंड दिय[illegible] नहीं था। [illegible]न के इस बुद्धिम[illegible] नहीं था, [illegible] में प्रचुर मात्रा [illegible] देश के के हित की[illegible] लगा। उसकी [illegible]री कृषि उसने कुछ[illegible]री कर्मचारियों [illegible] दारों पर निर्भर था। सम[illegible] इतिहासकारों ने लिखा है [illegible] राजकर्मचारियों ने बड़ी ही [illegible]र पहुँच [illegible] और तत्परता से अपना कार्य [illegible]

इसके फलस्वरूप अलाउद्दीन [illegible] व्यय में एक बड़ी सेना संगठित कर ली। मामूली सैनिक का वार्षिक वेतन उस समय २३४ टंका था और उस अल्प वेतन से भी उसके सभी सैनिक संतुष्ट थे।

प्रजा के लिए भी यह राजाज्ञा वरदान सिद्ध हुई तथा सभी सम्राट् की दूरदर्शिता की प्रशंसा करते।

[illegible] हमें 'राशनिंग' [illegible]तुओं के मूल्य- [illegible]व हो चुका है। [illegible]मारे मस्तिष्क [illegible] अथवा विपक्ष [illegible] यह निर्विवाद [illegible] मूल्य-नियंत्रण [illegible] मरने से बचा[illegible]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ा जो बुना नहीं जाता

खानों की खुदाई में शवों पर लिपटे जो कपड़े मिले हैं, उनकी बनावट ने वैज्ञानिकों में डाल दिया है। आज की भाषा में ये सब 'रासायनिक कपड़े' हैं, जो बुने नहीं गये आज पाँच हजार वर्ष बाद भी जीर्ण नहीं हुए हैं। यहाँ हम एक ऐसे ही नया किस्म क कर रहे है, जो लगता है भविष्य में कभी ऐसा ही अजर-अमर भी हो जाये!

★

ध में हमारी कल्पना ही रही है कि, वह या तो वना होगा, अथवा किसी का, या पूर्णतया हाथ का कता-होगा। किंतु अब तो ऐसा कपड़ा ा है, जिसके लिए इनमें से ाचीन-से-प्राचीन अथवा आधु-ाधुनिक साधन की आवश्यकता और न वह परम्परागत रीतियों ता है। रुई-ऊन के रेशों अथवा शों को प्लास्टिक के किसी पदार्थ एक-दूसरे से चिपका कर यह जाता है। निर्माण की पूरी भी गुप्त रखी जा रही है; सामान्य तौर पर, विभिन्न मोटाइयों के रेशों का एक विशेष यंत्र में जाल-सा बिछा दिया जाता है और चिपकानेवाला पदार्थ उस जाल पर छिटका जाता है। बाद में, जाल को सुखा कर उसे वांछित उष्णता प्रदान की जाती है और उस पर दबाव डाला जाता है, जिससे रेशे परस्पर दृढ़ता से चिपक जायें। इस तरह, जो कपड़ा तैयार होता है, वह सख्त किस्म के पतले कागज-जैसा होता है।

इस कपड़े का तेल के फिल्टरों, अनेक प्रकार की वस्तुओं को ढँकने के वस्त्र तथा पहनने के कपड़ों, जूतों, बक्सों आदि में अस्तर के रूप में उपयोग किया जा रहा है। कई कामों में तो यह कपड़ा परम्परागत कपड़े का स्थान लेने का दावा करने लगा है। भविष्य का वह दिन भी दूर नहीं दिखायी देता है, जब महिलाएँ इस कपड़े से तरह-तरह की पोशाकें बनवा कर बड़े शौक से पहनेंगी। इस कपड़े में कुछ कागज भी मिला होगा और इसका मूल्य इतना कम होगा कि, एक बार पहन लेने के बाद फेंक देने में भी कोई संकोच नही करेगा।

इस कपड़े की माँग विदेशों में तेजी से बढ़ती जा रही है। कृत्रिम रेशो और चिपकानेवाले पदार्थों का व्यापार करने वाली 'ड्यू पौंट कम्पनी' का अनुमान है कि, इस वर्ष बे-बुने कपड़े के लिए लगभग साढ़े सात करोड़ पौंड के, तरह-तरह के,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेशों का उपयोग होगा। सन् १९५० में कुल एक करोड़ पौंड के रेशे इस उद्योग में लगे थे। यह ठीक है कि, परम्परागत कपड़ा-उद्योग ने पिछले साल ६० अरब पौंड के रेशे इस्तेमाल किये थे, तथापि पिछले ६-७ वर्षों में ही जिस तेजी से इस नये उद्योग में रेशों की माँग बढ़ी है, उसे देखते हुए इसके उज्ज्वल भविष्य में संदेह की गुंजाइश कदापि नहीं रह जाती है।

यह कपड़ा मुख्यतया पिछले पच्चीस वर्षों की देन है। शुरू-शुरू में कपड़े के निर्माताओं ने रद्दी रेशों से, अस्पतालों में व्यवहार की जानेवाली पट्टियों के लिए यह कपड़ा बनाना आरम्भ किया था। अस्तर-जैसी टिकाऊ चीजें बनाने के प्रयोग पिछले महायुद्ध के बाद ही शुरू हुए हैं। अब विभिन्न श्रेणियों के तीस-चालीस कपड़ा-निर्माता इस क्षेत्र में तरह-तरह की वस्तुएँ बनाने लगे हैं।

बे-बुने कपड़े में मूलतया यह सुविधा होती है कि, उसके रेशों को इच्छानुसार एक-दूसरे के निकट या दूर रखा जा सकता है। साधारण कपड़े में यह सुविधा बहुत सीमित रहती है। इस तरीके से रेशों को परस्पर बहुत निकट रख कर जूते के अस्तर के लिए ब[illegible] नहीं किया जा सकता है और [illegible] वह [illegible] रख कर, गर्मियों में पहनने [illegible] का अस्तर बनाया जा सकता [illegible] कि, अतिरिक्त एक लाभ और है। [illegible] को इच्छानुसार, आड़ा-टेढ़ा रख [illegible] जा सकता है, इसलिए इस क[illegible] भी तरफ के खिंचाव क[illegible] नहीं होत[illegible] कताई ह[illegible] बुनाई; सा[illegible] रेशे का भी [illegible] जा सकता है, जो [illegible] कपड़ में काम नहीं अ[illegible] इसीलिए इस पर [illegible] होता है और उ[illegible] से कीमत भी कम [illegible]

चीन की महालक्ष्मी

[चित्र : एक प्राचीन चीनी शिल्प की रेखानुकृति]

परंतु यह [illegible] काम में, आज [illegible] हम पहनते हैं, [illegible] स्थान नहीं ले[illegible] विशिष्ट उपय[illegible] ही विशिष्ट [illegible] बनाया जाता है। उदाहरणार्थ, एक मिल में इस वर्ष महिलाओं के कोट के लिए इस कपड़े का ऊनी अस्तर तैयार हो रहा है और उस मिल का दावा है कि, इस अस्तर में शरीर की गर्मी को बचाये रखने की शक्ति सामान्य ऊनी कपड़े से लगभग ४० प्रति शत अधिक ही होगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कपड़े के थैले तैयार
में हवाई जहाज के इंजन-
क यंत्र सुरक्षित रूप से लपेटे
हैं। यह इंजन की नमी को सोख
र इसके रेशे, वगैरह इंजन में
से नुकसान नहीं पहुँचाते। बुने
के थैले में यह सम्भव नहीं है।
पहनने के कपड़ों के क्षेत्र
तक सबसे कम उपयोग
इस दिशा में इसका जो
, वह बहुत सीमित है—
बुने हुए कपड़ों के स्कर्टों
, पुरुषों की कमीजों के कालर
'सूट' में। इस तरह के उपयोग के
कपड़ा किसी रबर-जैसे चिपकाने-
से बनाया जाता है, जिससे
क अनोखी लचक आ जाती है।
कपड़े में एक प्रकार की
आ जाती है।

इस तरीके से प्रति दिन पहनने
ने वालेकपड़े बनाने की दिशा
को सफलता नहीं मिली है।
किंतु
सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि,
कपड़े में सामान्य कपड़े-जैसा
टिकाऊपन पैदा किया जाये, तो यह बहुत
सस्त हो जाता है—अर्थात् सामान्य कपड़े
में जो नर्मी और मजबूती एक साथ पायी
जाती है, उसका इस कपड़े में समन्वय
नहीं हो पाता है। यह गुण तभी आ सकेगा,
जब रासायनिक संस्थाएँ किसी विशेष
प्रकार का चिपकानेवाला पदार्थ खोज
निकालें। प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक
निरंतर जुटे हैं और खोज चल रही है।

गत वर्ष से, एक कागज-निर्माता ने
पहनने के कपड़ों के लिए, 'केसल' नामक
कपड़ा बनाने का काम शुरू किया है।
वास्तव में, इस कपड़े में दो तहें कागज
की होती हैं, जिनके बीच में रेशों की
एक तह जमाई और चिपकायी जाती है।

इस बे-बुने कपड़े के निर्माताओं
का खयाल है कि, प्रयोगशालाओं के लोग,
मेकैनिक अथवा कुछ अन्य व्यक्ति इस
कपड़े के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।
जी-भर पहनने के बाद, इस कपड़ेको फेंक
दिया जा सकता है—यह बात उन्हें प्रभा-
वित कर सकती है; परंतु सर्वसाधारण
तो तभी इस कपड़े की ओर आकर्षित
होगा, जब इसकी कीमत सामान्य
कपड़ों की धुलाई से भी कम पड़े। इस
दिशा में प्रयोग हो रहे हैं। सम्भव है, किसी
परिणाम पर पहुँचने में काफी समय लग
जाये; पर साथ ही ताज्जुब नहीं, अगर
धरती के इन वरद् पुत्रों से प्रसन्न होकर
सफलता इन्हें शीघ्र ही वरण कर ले!

★

मोटर-गाड़ियों के लिए सड़कों पर जो हिदायती-बोर्ड लगे रहते हैं, उनमें एक बोर्ड मुझे बड़ा मजेदार लगा। वह बोर्ड मैंने एक छोटे-से शहर में देखा था—"कृपया गाड़ी आहिस्ता चलाइये। निकट में कोई अस्पताल नहीं है।" —'व्यंग्यमंजूषा' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गगन-चप्पल

आधुनिक बँगला-भाषा के हास्यरसाचार्य परशुराम की एक हास-व्यंग्यपूर्ण प्रबंधिका हिन्दी-रूपांतर। नीचे की पंक्तियों में 'स्फुटनिक'-निर्माण से पैदा हुई 'स्फुटनिक [illegible] रोचक चित्रण है।

★

हाथीबागान के अबुबकर मियाँ अपनी पत्नी रमजानी बीवी के साथ ईद का चाँद देख रहे थे। हठात् रमजानी को आकाश में एक अद्भुत वस्तु दिखायी पड़ी। उसने अपने पति से पूछा—"देखते हो, वह कटार की तरह क्या चीज आकाश में चम-चम कर रही है?" अबुबकर मियाँ ने उसे देख कर कहा—"ना, कटार नहीं लगती; वह तो चप्पल की तरह है। लगता है, मल्लिक बाबू के यहाँ से आतिशबाजी छोड़ी गयी है।"

लेकिन अबुबकर का अनुमान ठीक नहीं था; क्योंकि दूसरे दिन और उसके बाद हर दिन वह अद्भुत वस्तु आकाश में दिखायी पड़ने लगी। न तो वह वस्तु आतिशबाजी की तरह इधर-उधर चलती-फिरती और न एक जगह स्थिर रहती—चाँद और नक्षत्रों की तरह उसका उदय-अस्त होता। इसे देख कर उदीयमान ज्योतिष-सम्राट् तारक सान्याल ने कहा—"सम्भवतः राहु है। घोर विपत्ति का पूर्वलक्षण ही समझिये इसे।" लेकिन उनके कथन का खंडन कर दिया, प्रवीण ज्योतिष-सम्राट् शशधर आचार्य ने—"ना, यह तो गोमुखी आकृति का है। राहु गोलाकार होता है। यह केतु है— [illegible] सूचक! ग्रह-शांति के [illegible] अविराम हरि-कीर्तन हो [illegible]

सर्वत्र एक आतंक छा [illegible] में तरह-तरह की बातें प्रका[illegible] एक सज्जन ने लिखा—"[illegible] वह उड़न तश्तरी है— धक्का [illegible] कारण चिपट कर चप्पल की तरह [illegible] रही है।" दूसरे सज्जन ने लि[illegible] अवश्य ही पूँछ-विहीन धूमके[illegible] के थोड़ा और निकट आने पर [illegible] सम्पन्न हो जायेगी। उसकी [illegible] पृथ्वी चूर्ण-विचूर्ण हो सकती है [illegible] हेड-पंडित कुंजविहारी तलापात्र ने [illegible] के नाम पत्र छपवाया—"वह अ[illegible] भयंकर पादुका किस महापु[illegible] लगता है, विद्यासागर महा[illegible] माध्यमिक शिक्षा-परिषद् का [illegible] देख कर उस तेजस्वी महात्मा का धैर्य टूट गया है और इसीलिए उन्होने अपनी एक चप्पल, क्रोधवश, नीचे फेंकी है। सम्भव है कि, वह शीघ्र ही धरती पर आकर शिक्षा-परिषद् के सिर पर गिरे।"

विधानसभा में विरोधी दल के एक प्रमुख सदस्य विरुपाक्ष मंडल ने लिखा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की चप्पल की सूँड़ नहीं थी। अवश्य ही, वह [illegible]पी डाक्टर महेंद्रलाल सरकार [illegible] है। मेडिकल कालेज और [illegible] की दुरवस्था देख कर उन्हें [illegible] आया कि, निकट और कुछ [illegible] कारण, उन्होंने अपने एक [illegible] ही, लक्ष्य कर फेंक दी [illegible]ों को साव-[illegible] चाहिए।"

[illegible] चट्टराज [illegible] कहे गगन-चप्पल [illegible] नहीं—साक्षात् दैव-[illegible] प्रतीक है। चोरी, [illegible] मिथ्याचार, व्यभिचार, [illegible] में वृद्धि, राज्य [illegible] की अकर्मण्यता, [illegible] का विलास-प्रेम, [illegible] प्रति लोगों का [illegible] आदि देख कर नट-[illegible] हो उठे हैं और [illegible] के लिए उन्होंने किंतु [illegible] पाँव बढ़ाया है। [illegible] पाँव बढ़ाने के कारण यह पादुका उनके पैर से निकल कर नीचे आ गिरी है। प्रलयंकर रुद्र-तांडव आरम्भ होने में अब देर नहीं है—संसार का ध्वंस शीघ्र ही होगा। इस आसन्न विपत्ति से रक्षा का केवल एक उपाय शेष है; वह यह कि, लोग धर्म-सम्मत आचरण करें।"

गर्वोत्फुल्ल ब्रह्मा और विष्णु ने जब सृष्टि का सर्जन-पोषण त्याग दिया, तो नारी से न रहा गया—जगन्माता के रूप में वह व्यक्त हो उठी!

लेकिन साधारण लोगों की ये कल्पनाएँ शिक्षितों को प्रभावित न कर सकीं। वे प्रतीक्षा में थे कि, विशेषज्ञ क्या कहते हैं? विश्वम्भर काटन मिल्स, विश्वम्भर बैंक, 'विश्वम्भरी' पत्रिका, आदि के स्वामी श्री विश्वम्भर चक्रवर्ती एक सर्व-विद्या-विशारद सज्जन थे और किसी भी प्रश्न के उत्तर में 'नहीं जानता' कहना नहीं जानते थे। किंतु गगन-चप्पल के बारे में प्रश्न किये जाने पर उन्होंने गम्भीर भाव से केवल ऊपर-नीचे-दायें-बायें सिर हिलाया। अंतरिक्ष-विज्ञान के अध्यापकों से प्रश्न किया गया, तो वे बोले—"अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता कि, वह क्या है; लेकिन इतना निश्चित है कि, वह ग्रह नहीं है।.....अंतरिक्ष-पर्यवेक्षण-शालाओं की रिपोर्ट की प्रतीक्षा की जानी चाहिए।"

रिपोर्ट भी शीघ्र ही आ गयी। देश-विदेश की समस्त पर्य-वेक्षणशालाओं की रिपोर्ट प्रायः एक ही थी, जिसका सारांश था—"सूर्य का निकटतम ग्रह है, बुध (मर्करी)। उसके बाद अवस्थित है, शुक्र (वेनस)। फिर आती है, हमारी पृथ्वी और तब मंगल (मार्स)। अंत में, बहुत दूर अवस्थित है, वृहस्पति (जूपिटर)। मंगल और वृहस्पति के कक्षों के मध्यवर्ती मार्ग में बहुत सारे छोटे-छोटे ग्रह हैं, जो सूर्य की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिक्रमा करते हैं। इन्हीं ग्रहों में से एक पथ-भ्रष्ट होकर पृथ्वी के निकट आ गया है। यह खंड-ग्रह गोलाकार नहीं है। भारतीय ज्योतिषियों ने इसे 'गगन-चप्पल' नाम दिया है। पाश्चात्य जगत्-वाले भी इसके लिए समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते हैं—'हेवनली स्लीपर'। इस गगन-चप्पल की कुछ तो निजी दीप्ति है और कुछ सूर्य का प्रकाश मिलने के कारण। पृथ्वी से इसकी दूरी पौने दो करोड़ मील है और यह दो वर्षों में एक बार की गति से सूर्य की परिक्रमा कर रही है। इसका आकार और वजन चंद्रमा से पाँच-गुना है। इसके निकट आ जाने के कारण, मंगल और चंद्रमा के कक्ष कुछ टेढ़े हो गये हैं। पृथ्वी पर ज्वार-भाटा का समय भी कुछ बदल गया है। अभी पृथ्वी से जितनी दूरी पर यह है, उससे तो कोई खतरा नहीं है; लेकिन चिंता की बात यह है कि, यह क्रमशः निकट आ रही है और यदि यह अधिक निकट आ गयी, तो बड़ा भयंकर परिणाम सामने आयेगा।"

इस विवरण के परिणामस्वरूप सब लोग भय से काँप उठे—कई स्थूलकाय धनी लोगों का तो हृद्गति रुक जाने से देहांत ही हो गया। हिन्दू-धर्म के स्वामी-महाराज लोग, मुस्लिम धर्म के मुल्ला-मौलाना लोग और ईसाई धर्म के पादरीगण अपने-अपने शास्त्रों के अनुसार हितोपदेश देने लगे। साहित्यिक लोग उपन्यास, कविता, आदि छोड़ कर परलोक की बातें लिखने लगे।

फिर आगे चल कर, [illegible] नक्षत्रीय सम्वाद प्रकाश में [illegible] उनके कारण, जो लोग अब तक [illegible] न थे, उनका भी सिर चकरा [illegible] वह दुष्ट ग्रह 'गगन-चप्पल' [illegible] निकट आ रहा था। और [illegible] दिन समाचार प्रचारित हुआ कि [illegible] के अंदर ही चंद्रमा की [illegible] और दोनों पृथ्वी पर आ[illegible] जो परिणाम सामने आये[illegible] उद्जन-बमों के एक साथ [illegible] अधिक भयंकर होगा। इस [illegible] कुछ पहले ही वायुमंडल विलुप्त हो [illegible] समुद्र में भयानक तूफान आये[illegible] सभी प्राणी दम घुटने के [illegible] जायेंगे। इस स्थिति से मुक्ति [illegible] कोई उपाय नहीं है!"

विभिन्न ईसाई सम्प्रदायों [illegible] लोगों ने एक संयुक्त वक्तव्य प्रका[illegible] कहा—"हालाँकि अपनी जीवन-रक्षा [illegible] हम लोग कुछ भी कर सकने में नहीं हैं; फिर भी कुछ काम [illegible] करने हैं। हमें शुद्ध अंतःकरण से [illegible] पाप स्वीकार करने चाहिए, निरंतर प्रार्थना करनी चाहिए, ईश्वर से करुणा की भिक्षा माँगनी चाहिए, सभी शत्रुओं को क्षमा-दान देना चाहिए और जितने भी दिन जीना है, दूसरों का दुःख दूर करना चाहिए! ...यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि, हमारी सामूहिक मृत्यु की यह व्यवस्था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ाति के पापों के ही .....”

मुस्लिम और बौद्ध धर्मों के भी ऐसे ही उपदेश देने लगे। ाचार्य के एकमात्र वंशज व्योमशंकर महाराज ने एक का छपवा कर उसकी ५० बँटवायीं। उस पुस्तिका “ऐ मेरे बच्चो! मृत्यु की आवश्यकता नहीं। वर्ष से ऊपर हो गयी है तुझसे छोटे, हो; किंतु इससे नहीं पड़ता; क्योंकि भय-यंत्रणा ग बालक-बूढ़े, सब एक समान हैं। हमारी आत्मा शीघ्र ही इस पिंजरे से निकल कर परमात्मा गी—यह तो परम आनंद की बात भय क्या? किंतु अपवित्र अवस्था ाग उचित नहीं है। तुम लोगों है कि, किसी बड़े आपरेशन रोगी से उपवास कराया जाता है देकर उसका कोष्ठ साफ किया किंतु साधारण-सी बात है कि, टिस या हर्निया या इसी तरह की अन्य बीमारियों की तुलना में प्राण-विसर्जन बहुत बड़ी बात है। अतः मृत्यु के समय मन में कोई कलुष रहना उचित नहीं है। अपने सारे पाप सबके समक्ष प्रकट करो और इस प्रकार मृत्यु से पूर्व आत्मशुद्धि का महत्वपूर्ण कर्तव्य पूरा करो। न हो, तो मेरी ही तरह पुस्तिका छपा कर उसमें अपने पापों का विवरण प्रकाशित करो। इस पुस्तिका के अंत में, उन मुख्य-मुख्य पापों की सूची दी गयी है, जो मैंने किये हैं और जो मुझे याद हैं।.....”

विलायत में आक्सफोर्ड-ग्रुप के उद्योग से बड़ी संख्या में नर-नारी अपनी-अपनी दुष्कृतियाँ स्वीकार करने लगे। दूसरे देशों में भी ऐसे ही शुद्धि-आंदोलन आरम्भ हुए। भारतवासियों में लज्जा जरा अधिक थी; अतएव आरम्भ में व्योमशंकरजी की अपील का कोई असर नहीं दिखायी पड़ा; लेकिन जब पालोमा-पर्यवेक्षणशाला ने घोषणा कर दी कि, 'गगन-चप्पल' काफी नजदीक आ गयी है और पृथ्वी का अभिकर्ष कम हो गया है, तब उन्होंने भी लज्जा त्याग कर अपने सारे कुकर्मों को प्रकाश में लाना आरम्भ कर दिया। यह काम इतनी तेजी से बढ़ा कि, छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा प्रेस भी २४ घंटे यही सब छापने लगा; फिर भी सब लोगों की पश्चाताप-पुस्तिका प्रकाशित कर सकने में वे असफल साबित हो रहे थे।

कलकत्ता के मान्यूमेंट के नीचे और इसी तरह हर गाँव और शहर के मैदानों में खड़े होकर लोग जोर-जोर से अपने कुकृत्यों की घोषणा करने लगे—जबर्दस्ती पकड़-पकड़ कर लोग एक-दूसरे को अपनी पाप-गाथा सुनाते।

बी० बी० सी० लंदन सब कार्यक्रम बंद कर चौबीसों घंटे—'नियरर् माइ गाड् टु दी'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(हे ईश्वर, तुम्हारे निकटतर होता जा रहा हूँ।) प्रसारित करने लगा। आकाश-वाणी के दिल्ली-केंद्र से भी निरंतर 'रघुपति राघव राजा राम' का पाठ होने लगा। पटना से 'राम नाम सत्य है' की लगातार घोषणा होने लगी। कलकत्ता-रेडियो को 'समुखे शांति-पारावार' की घोषणा करने से फुरसत नहीं थी। अन्य रेडियो-केंद्र भी इस तरह की बातें प्रसारित कर रहे थे। केवल मास्को-रेडियो पूर्णतः नीरव था; क्योंकि भगवान् के प्रति कम्यूनिस्टों का कभी सद्भाव नहीं रहा। अंत में, सोवियत राजदूत के अनुरोध पर भारतीय राष्ट्रपति ने गया जाकर कम्यूनिस्टों की आत्मा की सद्गति के लिए अग्रिम पिंडदान का कार्य सम्पन्न किया।

मनुष्य-तो-मनुष्य, राष्ट्र भी अपने कुकर्मों पर पश्चाताप करने लगे। चार बड़े राष्ट्रों—अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने विगत पचास वर्षों के कुकर्मों का विवरण देते हुए एक संयुक्त श्वेतपत्र प्रकाशित किया और एक घोषणा की—"सब मानव हैं भाई-भाई, नहीं किसी की कोई बुराई!"

तभी हठात् एक दिन अखबारों में तीन-तीन इंच मोटे अक्षरों में प्रकाशित हुआ—"दुष्ट ग्रह वापस लौट [illegible] में लिखा था—"वृहस्पति, [illegible] और नेपच्यून, इन प्रकांड ग्रह [illegible] साथ एक रेखा पर आ जाने से [illegible] चप्पल' पीछे की ओर खिंची [illegible] अब वह अपने पुराने कक्ष के नि[illegible]

यह समाचार पाकर लोगों [illegible] में-जान आयी; लेकिन [illegible] उनका हृदय काँप उठा—[illegible] को मुँह दिखाऊँ?" हर [illegible] सामने अपने नग्न स्वरू[illegible] हो चुका था। चोरी से व्या[illegible] आयकर बचानेवाले और [illegible] के दूसरे अपराध करनेवालों की [illegible] और भी आफत में थी! लेकिन [illegible] संकट शीघ्र ही टल गया। सर्वो[illegible] लय के मुख्य न्यायाधीश ने घो[illegible] दी—"पुलिस के दबाव में पड़[illegible] जानेवाले बयान अदालत में [illegible] ग्राह्य नहीं होते, उसी तरह 'ग[illegible] के भय से दिये गये वक्तव्य [illegible] कानूनी मूल्य नहीं रखते।"

साधारण लोगों ने भी अ[illegible] समझाकर आश्वस्त कर लिया [illegible] कोई अब नग्नअवस्था में है, तो कौन किसकी नग्नता पर हँसेगा?

★

गम राह नहीं कि साथ दीजे;
दुःख बोझ नहीं कि बाँट लीजे।
दरवेश रवाँ रहे तो बेहतर;
आबे-दरिया बहे तो बेहतर। —'गुलजारे नसीम' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी किफ़ायतपूर्ण ! एक ही बार ब्रश करने से

कोलगेट डेन्टल क्रीम

८५% तक

दंत-क्षय और दुर्गंध-प्रेरक जीवाणु ख़त्म कर देता है!

अधिकतम लाभ के लिए सदा उपयोग कीजिए

कोलगेट टुथ ब्रश

DCG/3488

पुस्तक बिल्कुल मुफ़्त

को फिर से प्राप्त करने के लिये

शक्ति औषधालय

"शक्ति बिना औषध"

मुफ़्त मंगावें

डी० ए० बी० लेबारेट्रीज़

पोस्ट बक्स १३७२ दिल्ली-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बचत, राष्ट्रीय वैभव की एक मात्र कुंजी है

आपकी पथप्रदर्शिका है अल्प बचत योजना

जो सरल तथा सुरक्षित है जिस से प्राप्त आय, आय-कर से, मुक्त है और जो अधिकतम पुरस्कार प्रदान करनेवाली सुरक्षिततम बचत है

आप खरीद सकते हैं

- १२ वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत-प्रमाण-पत्र जो रु. ५) तथा उसके अधिक गुणज में प्राप्य हैं
- १० वर्षीय कोष बचत अमानतें जो रु. १००) तथा उसके अधिक गुणज में स्वीकृति के लिए खुली हैं
- १५ वर्षीय वर्षासन या डाक-घर में, प्रारम्भ में, रु. २) जमा कर अपने नाम का खाता खोल सकते हैं

अल्प बचत योजना में ही अपनी संचित निधि जुटाइए

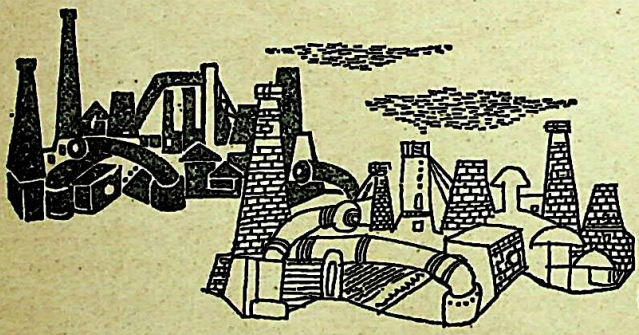

अधिक जानकारी के लिए कृपया निकटतम डाक-घर, जिला अल्प बचत अव्वल कारकून, तालुका मामलेदार या महालकरी अथवा अपने विभाग के राष्ट्रीय बचत कार्यालय केंद्रीय सरकार अथवा अल्प बचत डिरेक्टोरेट, बम्बई-सरकार, सचिवालय बम्बई से सम्पर्क स्थापित कीजिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

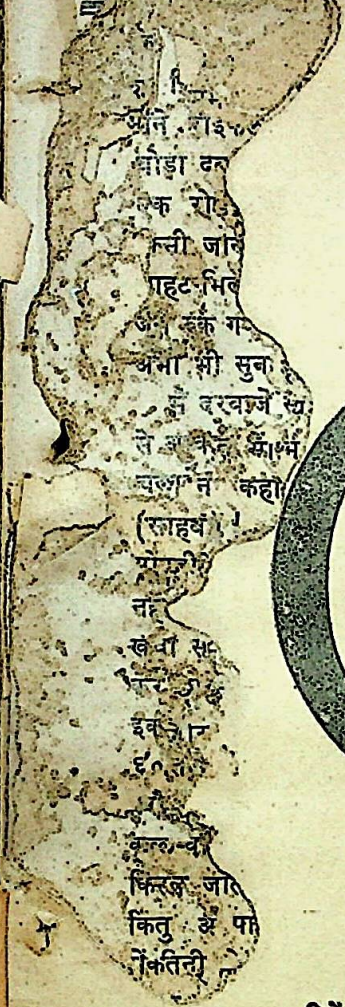

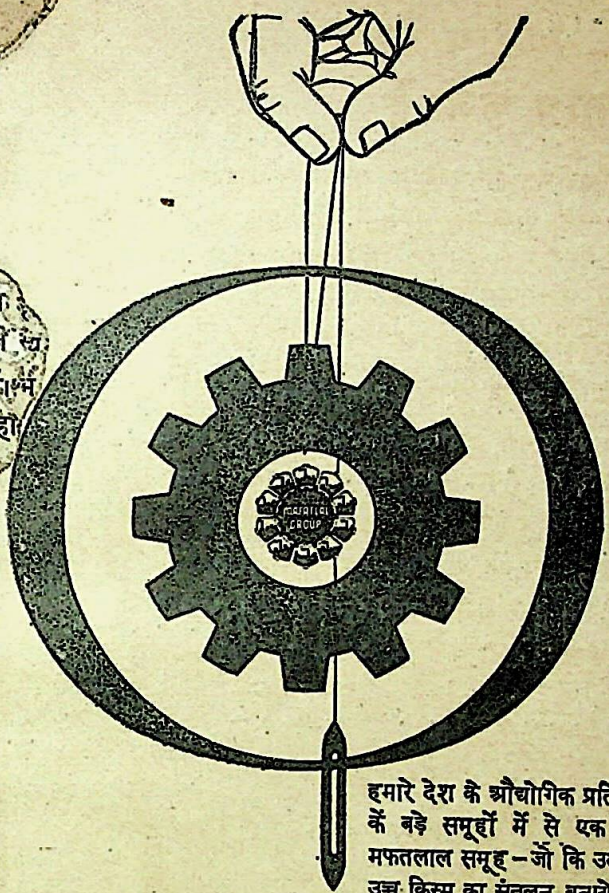

हमारे देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के बड़े समूहों में से एक है मफतलाल समूह—जो कि उत्पादन में उच्च किस्म का संतुलन बनाये हुए है। इस समूह से संबधित अनेक कपड़े की मिलें जो कपड़ा बनाती हैं वह डिझाइन बनावट व रूपरंग में बेजोड़ होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह समूह प्रत्यक्ष रूप में हजारों और अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों की रोजी का साधन है। कई लाख लोग इस समूह से लाभान्वित हैं।

मफतलाल मिलों का समूह प्रगति के साथ चलनेवाला

शॉरॉक, अहमदाबाद। न्यू शॉरॉक, नड़ियाड़। स्टेण्डर्ड, बम्बई। न्यू चाइना, बम्बई। ससून, बम्बई। न्यू यूनियन, बम्बई। सूरत कॉटन, सूरत व देवास। मफतलाल फाइन, नवसारी। गगलभाई जूट, कलकत्ता।

दूसरे उद्योग: रुई - शक्कर - रंग मफतलाल हाउस, बैकबे रिक्लेमेशन, बंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रगति का आह्वा

हमारे देश को समाजवादी ढांचे के समाज की ओर अग्रसर करने वाली दूसरी पंचवर्षीय आयोजना राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षा का मूर्त रूप है। इसका उद्देश्य मूलभूत और भारी उद्योगों का शीघ्र विकास, खाद्य और कृषि में अधिक उत्पादन, राष्ट्रीय आय में और वृ रोजगार के अवसरों का विस्तार और आर्थिक शक्ति एवं श्रम व के लाभों का अधिक समान वितरण करना है। इस समय सामने समस्यायें हैं वे इस प्रकार की पीड़ायें हैं जो देश की उ विकास के लिये झेलनी ही पड़ती हैं। चुनौती समझ कर संग साहस के साथ हम इनका सामना करें और पंचवर्षीय आयोजना के लिये सेवा, त्याग और बलिदान की पवित्र भावना से जुट जाएं।

आयोजना सफल बनाइए

प्रगति और समृद्धि के लिए

"अपने देश की नव रचना के विशाल और उस विराट कार्य में हम लोग जुटे हैं जिसमें केवल संगठित श्रम ही नहीं, अपितु उत्साह और पवित्र भावना से ओतप्रोत संगठित श्रम की आवश्यकता है।"

—जवाहरलाल नेहरू

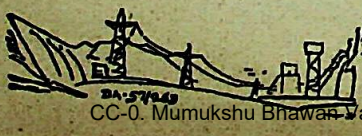

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मजिस्ट्रेट का प्राणदान

वीर त्यागी द्वारा लिखित स्वातंत्र्य-संग्राम-काल का एक मोहक-मधुर संस्मरण

*

एक तरफ़ तो स्कूल, अदालतों का वायकाट विलायती कपड़ों के आंदोलन जोरों पर था। ग्रेस-कमेटी के आज्ञानुसार ह-जगह से विलायती कपड़े इकट्ठे होलियाँ जलानी थीं। हम लोगों कपड़े माँगने शुरू कर दिये। श्री विश्वमित्र उन दिनों में वकालत करते थे। इनकी ज्ञानवतीजी को मैं जानता क्योंकि वे मेरठ के पुराने कांग्रेसी बाबू ज्योतिप्रसाद की बहन हैं। जोर गया, तो विश्वमित्रजी ने सेवा कर सकता हूँ?" मैंने कहा—"सबसे बड़ी सेवा यही है कि, शर्म की झूल उतार फेंको।" इतने में ज्ञानवतीजी ने कुछ रेशमी साड़ियाँ संदूक से निकाल कर हमारे सुपुर्द कर दीं। स्त्री को अग्रसर देखकर विश्वमित्रजी को जरूर कुछ शर्म आयी होगी तभी उन्होंने एक छड़ी से अपने गर्म कोट को खूंटी से उतार कर मुझे दे दिया। विलायती कपड़े माँगते हुए हम ऐसे लगते थे मानो सूर्य-ग्रहण के समय दान माँगने वाले ब्राह्मण और कपड़ा माँगने वाले मेहतर। विश्वमित्रजी के कोट को अपने कंधे पर लादकर मैंने ऐलान कर दिया कि, विश्वमित्रजी कांग्रेस के मेम्बर हो गये। वे तो सचमुच ही हो गये। उनके दूसरे साथी नेमीशरण जैन थे, जिन्होंने नयी वकालत शुरू की थी। बड़े उत्साही युवक थे। हम उनके घर पहुँचे और अपने नये मुंडे फकीर विश्वमित्रजी को भी साथ ले गये। हम लोगों की सूरत देखते ही नेमीशरण जैन समझ गये। अपनी स्त्री से परामर्श करके उन्होंने भी अपने विलायती कपड़े उतार दिये। वे भी कांग्रेस में आ गये।

जब काफी कपड़े इकट्ठे हो गये, तो हमने बिजनौर में एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला। प्रचार कार्य में इसका ध्यान रखना पड़ता है कि, कौन काम या कौन-सी बात ऐसी है, जो लोगों को ज्यादा-से-ज्यादा आकर्षित या उत्साहित कर सके। हिन्दुस्तान की गरीब जनता तो आधी नंगी और फटे-पुराने कपड़ों में अपना गुजारा करने की आदी थी। केवल अंग्रेज और उनके पिछलग्गू लोग ही हैट-कोट और टाई-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पतलन पहनते थे। इसलिए हैट उछालने के माने अंग्रेजों की 'टोपी उछालना' था। जुलूस में आगे बाजा, फिर हैट, कोट और पतलून से सुसज्जित कुछ गधे (सचमुच के) थे, जिनके गलों में एक-एक टाई बँधी थी और उनके पीछे हम लोग 'अंग्रेजी राज्य का नाश हो', 'विलायती कपड़े फूंक दो' के नारे लगाते हुए जा रहे थे। हर घर के सामने जुलूस खड़ा होकर नारे लगाता और जब घर वाले कुछ विलायती साड़ी या कोट-कमीज दे देते, तो उनको गधों पर लादकर आगे बढ़ जाता था। अभी हमारा जुलूस बाजार में पहुँचा ही था कि, कोतवाल और कुछ पुलिसवाले जुलूस के अंदर घुस आये और मुझको गिरफ्तार करके ले गये। मेरे बाद, श्री जगदीशदत्त सोती ने जुलूस का चार्ज ले लिया और श्री द्वारिका प्रसाद, मुरारीलाल बहल, लतीफ और जहूर साहब जुलूस को लेकर आगे बढ़े। मुझे एक मोटर में बिठाकर नगीना ले जाया गया और वहाँ से बुलंदशहर। कुछ महीने पहले जब जिला बिजनौर में मेरी जबानबंदी का हुक्म दफा १४४ के अनुसार हो गया था, तो दो महीने के लिए, प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी [illegible] जवाहरलाल नेहरू ने मेरी ड[illegible] बुलंदशहर में लगा दी थी। [illegible] जो भाषण दिये थ, उन्हीं के [illegible] दफा १२४ (बगावत) और १[illegible] स्तानी और अंग्रेजों में भेद [illegible] मातहत मेरी गिरफ्तारी [illegible] कटा था।

अगले दिन बुलंदशह[illegible] स्ट्रेट, मिस्टर डौव्स की [illegible] किया [illegible] हजार [illegible] मानों की भी [illegible] पहला-पहला म[illegible] लोगों में [illegible] था। मेरे [illegible] हथकड़ी पड़ी थ[illegible] अदालत में [illegible] खोली गयी। [illegible] के सामने [illegible] अदालत [illegible] होते "कोई [illegible] चाहता है?" मैंने तिरछ[illegible] करके जवाब दिया– "नाहिं।" मजिस्ट्रेट को मेरा लहजा अच्छा न लगा। उसने त्योरियाँ चढ़ाकर मेरी ओर देखा। मैंने भी तिरछी भौं उसकी तरफ को घूर दिया। अहिंसा का व्रत ले रखा था, शब्द तो कुछ न कहे; पर 'तेवर-युद्ध' में उसे २-३ पटकियाँ दे दीं। फिर गवाहों के बयान होने लगे। पहला बयान समाप्त

वीर बापू

निष्कपट-निर्लिप्त वीरता और पराक्रम में गांधीजी से बढ़कर उदाहरण मुझे इतिहास में नहीं मिलता। वे स्वयं किसी पर अन्याय नहीं करते; किंतु दूसरों पर अन्याय होते देख उनके भीतर जिस शौर्य का उदय होता है, वह मानवीय तल से बहुत ऊपर, देवत्व का ही प्रतीक लगता है। —सुभाषचंद्र बोस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] पूछा– "जिरे करना माँगटा [illegible] माँगटा!" मैंने कहा! उसने [illegible] मैंने भी घूर दिया। दूसरा गवाह [illegible] "जिरे?" मेरा जवाब– "नो!" [illegible] जानी [illegible] मेरा भाषण पढ़कर सुना [illegible] डौब्स ने कोर्ट-इंस्पेक्टर से [illegible] "भाषण का अनुवाद, [illegible] सुना [illegible] को [illegible] भाषण [illegible]।" कोर्ट-[illegible] ने कहा कि से उस [illegible] अनुवाद को [illegible] के हाथ से लेकर [illegible] हुए अपनी जेब [illegible] लिया कि, इसको [illegible] देखेंगे।

[illegible] विखरे बाल और [illegible] सूरत को देखकर [illegible] दोनों महानुभावों ने [illegible] था कि, मैं [illegible] जानता। बयान किंतु [illegible] मजिस्ट्रेट ने [illegible] पूछा– "जिरे?" मैंने अंग्रेजी में उत्तर दिया– "जिरह तो कुछ नहीं है; पर अदालत से कुछ पूछना चाहता हूँ। पहली बात तो यह कि, आपने मेरे विरोधी पक्ष से अंग्रेजी भाषा में जो खुसपुस की है, उसको रेकार्ड पर ला दिया जाये। दूसरे, मेरी फाइल का मुख्य अध्याय अर्थात्, मेरे भाषण का अनुवाद, जो कोर्ट-इंसपेक्टर न आपके हाथों से छीनकर अपनी जेब में छिपा लिया है, उसको बरामद करके फाइल में शामिल कर दिया जाये और मेरे दस्तखत करा लें; क्योंकि मुझे विरोधी पक्ष का एतबार नहीं है। तीसरे, यह बात साफ कर दी जाये कि, अनुवाद मूल भाषण के अनुकूल है या नहीं; क्योंकि आपने अंग्रेजी में कहा था कि, वह मेल नहीं खाता।" मेरे आसपास जो वकील और दूसरे लोग मुकदमा सुन रहे थे, वे इस जिरह पर बहुत खुश हुए और मुसलमानों ने जोर से, 'अल्ला हो अकबर' का नारा लगा दिया। मजिस्ट्रेट का रोब किरकिरा हो गया। उसने डाँटते हुए मुझसे अंग्रेजी में कहा– "क्या तुम बैरिस्टर है? यह कोई सवाल नहीं है।" मैंने अंग्रेजी में उत्तर दिया– – "बोलचाल में हर वाक्य के बाद प्रश्न-सूचक चिन्ह लगाना सम्भव नहीं है। अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार मैंने हर वाक्य की क्रिया को कर्ता से पहले कहा है।"

महावीर त्यागी

[चित्र : शंकर्स-वीकली से साभार]

मजिस्ट्रेट– "यह सवाल नहीं है, तुम्हारा बेवकूफी है।"

"मेरा नहीं, आपका है।"– मैंने निडर होकर उत्तर दिया।

अब तो साहब बहादुर बौखला उठे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े गुस्से से उन्होंने एक पुलिस वाले को हुक्म दिया– "मुल्जिम को थप्पड़ मारो।" बेचारा कांस्टेबल घबरा गया। उसकी हिम्मत न हुई। मैंने अपनी गर्दन नीची करके सहारा देते हुए उससे कहा– "तुम्हारा कोई कसूर नहीं है, मूजी की आज्ञा का पालन करो।" उसने चुपके से मेरी झुकी गर्दन पर हल्की-सी थपकी लगा दी।

मजिस्ट्रेट ने फिर चिल्लाकर कहा– "सुअर का बचा, मुँह पर मारो–जोर से मारो।" फिर उसने जोर से मुँह पर मार दिया। कई हजार आदमियों की भीड़ थी। उनसे बर्दाश्त न हुआ और धक्कामुक्की शुरू हो गयी। मजिस्ट्रेट डर के मारे कुर्सी छोड़कर दीवार से जा लगे और दोनों हाथ ऊपर उठाकर–"खामोश, खामोश!" बोलने लगे। इधर बुगरासी के एक पठान ने भीड़ को चुनौती देते हुए कहा–"काफिर बचने न पाये, वरना बुलंदशहर की नाक कट जायेगी!" वैसे तो मुझे भी गुस्सा बहुत था; पर अहिंसा के व्रत के कारण गुस्सा पीकर हथकड़ी से बंधे दोनों हाथ जोड़ जनता से शांति की अपील करने लगा। जब भीड़ काबू से बाहर होने लगी, तो मैंने अपने गले की मालाएँ तोड़-तोड़ कर फूल जनता की ओर फेंकने शुरू कर दियें और कहा–"जब तुम मेरा कहना भी नहीं मानते, तो ले जाओ अपनी मालाएँ।" लोग चुप हो गये। फिर मैंने मजिस्ट्रेट की ओर घूम कर अंग्रेजी में कहा–"दाऊ आर्ट सेफ अंडर द' केयर आव दाई प्रिजनर, मजिस्ट्रेट, सिट डाउन। दाई लाइफ। (अपने बंद में तू सुरक्षित है, मजिस्ट्रेट, मैं तुझे जीवनदान देता हूँ।

मजिस्ट्रेट वैसे काफी शरीफ शुक्रिया कह कर कुर्सी पर आ कहा–"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ अदालत में कोई दूसरा क आप बेफिक्री से मुकी जारी रखें।" मजिस्ट्रेट बोले "वातावरण प्रतिकूल होने कार्रवाई जारी नहीं रख आप कृपया इस भीड़ में से अपने बना लीजिये और सामने जेलखा उसमें चले जाइये। मैं २–४ आपको फिर बुला लूँगा।" बस को चीरता हुआ जेलखाने की आ पड़ा। हाथों में हथकड़ी थी औ पुलिस के दोनों सिपाही भीड़ में पी गये थे, मैंने उनके पकड़ने की जो जंजीरें हथकड़ियों थीं, उनको अपने कंधों पर जंजीरें लम्बीं थीं, जो आजाद ...नू के पीछे-पीछे जमीन पर घिसटती आ रही थीं। आगे-आगे मेरी जवानी और पीछे-पीछे भीड़ मस्तानी।

४-५ दिन बाद, मेरे भाई धर्मवीरजी, जो काशी-विद्यापीठ में प्रोफेसर थे, मुझसे मुलाकात करने आये। उन्होंने ता० १३ अक्तूबर, सन् १९२१ के 'यंग इंडिया' में गांधीजी की लिखी हुई एक टिप्पणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

[illegible] लिखा था—"थप्पड़ [illegible] त्यागी ने जो यह [illegible] दिया कि, अब वे कोई प्रश्न [illegible] न पूछेंगे, इससे उनकी कायरता [illegible] मिलता है।" इसको सुनकर [illegible] दास हो गया। मुँह लपेटकर [illegible]-कोठरी में आ लेटा। "इतना [illegible]पाद भी 'कायर' कहलाया? [illegible] पायेगी; लेकिन छूटकर [illegible] क्योंकि गांधीजी का [illegible] दुनिया-भर में पढ़ा जाता [illegible] कही बात तो देश-भर की [illegible] जाती है। भारतमाता ने [illegible]टक दिया कि, 'कायर ह'।" यह [illegible] बातें दिमाग में घूमने लगीं। बस, फिर [illegible]ना, हँसना-बोलना सब एक बारगी [illegible] हो गया। शायद अगले सप्ताह 'यंग इंडिया' में प्रतिवाद आ जाये। [illegible]श्किल से ७ दिन कटे। फिर जमादारों [illegible] भिड़ाकर अगले सप्ताह का 'यंग इंडिया' मँगाया, उसमें मजिस्ट्रेट की [illegible] मेरा वह बयान छपा था, जो किंतु [illegible] पाने के बाद अदालत में दिया था। तिरी गांधीजी ने मेरे इस साहस की सराहना नहीं की।

मेरा मुकदमा बुलंदशहर से मेरठ जेल भेज दिया गया। रास्ते म मैंने महात्मा गांधी को एक पत्र लिखा, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ मैंने लिखा—"मैं तो कायर हूँ ही; पर जरा अपनी ओर भी देख लीजिये। एक पत्रकार के नाते यह कौन-सी बहादुरी ह कि, यह जानते हुए भी, मैं काल-कोठरी में बंद पड़ा हूँ और किसी बात का प्रतिवाद नहीं कर सकता, आप खुले आम अपने समाचार-पत्र में मुझे कायर की उपाधि दे रहे हैं?" इस बीच में काशी के श्रद्धेय बाबू भगवान दास और पंजाब-केसरी लाला लाजपत राय ने भी महात्मा गांधी को 'प्रोटेस्ट' के पत्र भेजे। गांधीजी ने वे भी छाप दिये। मेरा पत्र भी छाप दिया।

१० नवम्बर, १९२१ के 'यंग इंडिया' में गांधीजी ने लिखा—

श्री त्यागी ने खुली अदालत में अपने व्यवहार से मजिस्ट्रेट को काफी तौर से प्रदर्शित कर दिया था कि, वे बहादुरी के साथ अपमान को केवल देश-हित में सहन कर रहे हैं—भयभीत होकर नहीं। मेरी पिछली टिप्पणी दूर की सुनी हुई बातों के आधार पर थी। मुझे दुख है कि, इस देशभक्त बहादुर और साहसी युवक के साथ मैंने अनजाने से अन्याय कर दिया, जिसके लिए मैं हजार बार क्षमा चाहता हूँ। मैं दूर बैठे उन पत्रकारों की कठिनाइयों का अनुभव करता हूँ, जो सच्ची सूचनाओं द्वारा जनता की राय को सही रास्ते पर डालना चाहते हैं।

जेल में इस 'माफी' को पढ़कर मैं और अधिक परेशान हो गया। 'यंग इंडिया' को छाती से लगाये चारों ओर रोता-फिरता था कि, इस देवता को मैंने गुस्ताखी-भरे शब्द क्यों लिख दिये!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूँद-बूँद का ज्ञान

जिज्ञासा हमारी जीवन-डोर है। उसे पकड़ कर ही जीवन की सारी चढ़ान हम चढ़ते, य
से लेकर अंतिम साँस तक हम उसे थामे रहते हैं— दरअसल, हम-आप जो-कुछ हैं, क विद्या,
न-किसी रूप में जिज्ञासा-पूर्ति के ही प्रतिफल हैं। मनुष्य का सारा व्यक्तित्व जिज्ञास ज्ञान-स्रोत
से ही गढ़ा जाता है। जिंदगी के हर कदम पर हमें बंद द्वार मिलते हैं, प्रश्नों की एक त
गाँठ मिलती हैं। इन्हें खोलते हुए आगे बढ़ने जाना ही हमारा विकास है। इस ग ता क
मास 'नवनीत' के पाठकों को भौतिक जिज्ञासा के ऐसे ही प्रश्नोत्तर मिला करेंगे। ना भी है
पाठक ज्ञानवर्धन के इस नवारम्भ से लाभ उठायेंगे। त प्रा
न मार्ग।

*

आँखें दो क्यों हैं?

आँख का सबसे प्रथम भाग एक पारदर्शक आवरण होता है, जिसे एक ऐसी खिड़की कह सकते हैं, जिसके द्वारा हम जगत् के दृश्य-व्यापार को देखते हैं। शीशे की इस खिड़की के ठीक पीछे एक स्वच्छ द्रव की पर्त और उसके पीछे आँखों के लेंस होते हैं। आँख के ये हिस्से हमारे द्वारा देखे गये सभी पदार्थों से प्रकाश प्राप्त करते हैं और उसे पटल की ओर भेज देते हैं। असंख्य ज्ञानतंतु आकर आँख के इस भाग में मिलते हैं। केमरे की भाँति हमारी आँख के पिछले आवरण में भी देखा हुआ पदार्थ, उल्टा चित्रित होता है और वहाँ से ज्ञान-तंतुओं द्वारा मस्तिष्क में पहुँचकर सीधा प्रतिबिम्बित हो जाता है।

अगर आप अपने कमरे को थोड़ी देर के लिए एक आँख बंद करके देखें, पहले से ज्यादा चौरस नजर आयगा, क्योंकि उस वक्त आपकी एक आँ लेंस काम नहीं करते। किंतु अ दोनों आँखों से देखें, तो हर वस्तु अ सूक्ष्म-से-सूक्ष्म विवरण के साथ नजर आयेगी। आप तब साफ-साफ सकेंगे कि, मेज का रंग गहरा है की टोकरी गोल है और कुर्सी बिल्कुल सटा कर रखी गयी है। होते आँखें एक-दूसरे से, दो से ढाइ दूरी पर हैं और जब हम दोनों आँखों से देखते हैं, तो इनके लेंस अलग-अलग ढंग से उस दृश्य-पदार्थ को ग्रहण करते हैं। दोनों आँखों के लेंसों द्वारा ग्रहण किये गये दृश्य-पदार्थ के वे रूप जब ज्ञान-तंतुओं के बीच पहुँचते हैं, तो वे उनके सम्मिश्रण से सही और वास्तविक रूप तैयार कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] ज देते हैं, जहाँ से वह [illegible] सीचेवत होता है। लेकिन एक [illegible] बनने पर यह प्रक्रिया अधूरी [illegible] छोड़ा दबने जाती है।

[illegible] क रोषयुक्त [illegible] सी जानवर [illegible] गाहट मिली [illegible] रुक गया।

★

[illegible]नी क्यों बरसता है?

अभी सी सुनायी [illegible] भोजन, नाइट्रोजन तथा अन्य [illegible] के दरवज्जे से व्यावा जल-वाष्प भी मौजूद [illegible] गर्म हवा में सर्द हवा की अपेक्षा [illegible] न कहीं अधिक रहते हैं। सागर, झीलों [illegible] से लिये गये जल-वाष्प से [illegible] में हवा जब किसी ठंडे प्रदेश में प्रवेश [illegible] करती है, तो कुछ जल-वाष्प बलात गर्म [illegible] से बाहर निकल आते हैं और पानी [illegible] छोटे-छोटे कणों का रूप ले लेते हैं। [illegible] करोड़ों कणों के मिलने पर बादल [illegible] है। अगर उस प्रदेश की हवा [illegible] और भी अधिक सर्द रही, तो अधिक [illegible] जल-वाष्प पानी के छोटे-छोटे कणों में [illegible] जाते हैं। ये कण आपस में मिलते किंतु [illegible] पानी बरसने लगता है। पानी [illegible] कितनी देर बरसेगा, ओले या बर्फ के साथ बरसेगा अथवा नहीं—तथा इसी प्रकार की अन्य बातें तापमान पर निर्भर करती हैं। तापमान के अलावा और भी चीजें हैं, जिनसे पानी बरसता है। विज्ञान के अनुसार हवा में पाये जानेवाले प्रत्येक धूलिकण के चारों ओर नमी की एक छोटी-सी बूँद लिपटी रहती है। अगर हवा में धूलि कण नहीं होते, तो शायद न बादल बनते, न पानी ही बरसता!

★

भूख क्यों लगती है?

हमारा पेट एक खोखले कमरे के समान है। कमरे की तरह उसमें भी दीवारें होती हैं। मगर ये 'दीवारें' सदा चलती और सिकुड़ती रहती हैं। जब हम खाते हैं, तो खायी हुई चीजें कुछ देर तक पेट में रहती हैं। मांसपेशियाँ वहाँ उन्हें आगे-पीछे की ओर धकेलती रहती हैं। इस क्रिया द्वारा वे तब तक उन्हें मथती और मिलाती रहती हैं, जब तक वे पाचन-क्रिया की दूसरी विधि के बिल्कुल उपयुक्त नहीं हो जातीं। इस दूसरी विधि के अंतर्गत थोड़ा-थोड़ा करके उन्हें भलीभाँति मसला जाता है। फिर वे हमारे पेट में से बाहर निकल जाती हैं।

जब तक हमारे पेट में भोजन रहता है, मांसपेशियों की हलचल हम अनुभव नहीं करते; किंतु जब पेट खाली हो जाता है, तो मांसपेशियों की हलचल बढ़ जाती है और वह पहले से अधिक सशक्त भी हो जाती है। यह क्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक मांसपेशियों से सम्बंधित स्नायु यह संदेश मस्तिष्क तक नहीं ले आता। मस्तिष्क इस संकेत को समझ लेता है कि, पेट खाली है। मस्तिष्क की यह अनुभूति ही भूख कहलाती है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकार और भूत

'रूफीजी (अफ्रीका) के राबिंसन क्रूसो' के नाम से विख्यात, सुप्रसिद्ध शिकारी आ[illegible] विद्या, बेरे बार्कर-लिखित शिकार-पुस्तक 'रूफीजी' की कुछ रोचक घटनाओं का संक्षिप्त हि[illegible]द-स्रोत

★

"चींपो! चींपो!"—रात्रि की स्तब्धता भंग हो उठी। सैदी बेन नैसोरी घबड़ा कर उठ बैठा। निश्चय ही, यह उसके गधे के रेंकने की आवाज थी। शायद कोई साँप अथवा अजगर उसके बाड़े में घुस आया था और गधा डर कर रेंक रहा था। अब तक सैदी बेन की पत्नी और उसके बच्चे भी जग गये थे। गधा रेंकता ही जा रहा था।

सैदी बेन उठ खड़ा हुआ। उसने पास ही पड़ा एक भारी-सा चाकू उठाया और दूसरे हाथ में टार्च ले, बाड़े की ओर चल पड़ा। पीछे-पीछे उसकी पत्नी और बच्चे थे। टार्च से निकलने वाली रोशनी अंधेरे की कालिमा को विदीर्ण करती आगे-आगे चल रही थी और जब वह गधे के निकट तक पहुँची, तो सैदी बेन सहम कर दो कदम पीछे हट आया। उसकी आशा के सर्वथा विपरीत, बाड़े के निकट दो सिंह खड़े थे और अपने पंजों से गधे को नोचने की कोशिश कर रहे थे। भय से चीखता गधा अपने बंधन तोड़ने के प्रयास कर रहा था।

सैदी ने तत्काल ही [illegible] बच्चों को घर जाकर राइफ[illegible] लिए कहा। किंतु जब तक [illegible] के हाथ में आयी, गधा अपने [illegible] में सफल हो चुका था। वह अपने [illegible] के नारियल के बगीचे से बेतहाशा भाग [illegible] रहा था। अपने शिकार को यों जाते देख [illegible] दोनों सिंह भी उसके पीछे भाग रहे [illegible]

राइफल हाथ में आते ही सैदी भी दौ[illegible] पड़ा। एक हाथ में राइफल और दू[illegible] में टार्च लिये, वह दो मील तक दौड़ [illegible] चला गया। गधा और सिंह तो कब [illegible] उसकी आँखों से ओझल हो गये थे। [illegible] उनके भागने की आवाज का ही [illegible] करता जा रहा था; किंतु जब यह आवाज भी बंद हो गयी, तो वह गुस्से में जोर-जोर से गालियाँ बकता और बदला लेने की कसमें खाता, अंदाज से बढ़ता गया। अचानक, वह अपने बड़े भाई के मकान के निकट पहुँच गया और वहीं, बरामदे में, उसका गधा पड़ा था। गधा जीवित था; परंतु वह बुरी तरह घायल हो चुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] वहाग से उसका सारा [illegible] अंत हो गया था।

[illegible] उसकी जाति के अन्य अरबों [illegible] घोड़ा दर्द के जख्मों की मरहम-पट्टी की। [illegible] एक रोपड़ा बरामदा ही गधे के लिए [illegible] जानजोन गया। सैदी को उसका गधा [illegible] राहट मिली था; पर उसकी हालत देख [illegible] एक गयोरला लेने का उसका विचार अभी भी सुधार हो गया?

[illegible] दरवाजे से [illegible] सहारा [illegible] साथ-साथ वह [illegible] कहीं बहुत प्रिय (सहर्ष)।

[illegible] ठीक से सुबह भी नहीं हुई थी कि, सैदी ने खतरे का नगाड़ा बजवा [illegible] आदिवासियों को इकट्ठा किया। लगभग ६० आदिवासी दौड़ते हुए आ पहुँचे। उनमें कुछ के पास पुरानी किस्म की बंदूकें थीं; किंतु अधिकांश के हाथ में सिर्फ भाले ही थे। सैदी उन्हें साथ लेकर सिंहों की तलाश में निकल पड़ा।

चलते-चलते वे एक छोटे-से सोते के निकट आ पहुँचे। किनारे पर बहुत कीचड़ था, जिसके ऊपर सिंहों के पैरों के निशान स्पष्ट दीख रहे थे। रात सम्भवतः सोते में अधिक पानी नहीं रहा होगा; इसी से सिंह उस ओर निकल गये थे; किंतु ज्वार आ जाने से अभी कम-से-कम दस फुट गहरा पानी वहाँ था।

उस पार पहुँच कर वे थोड़ी ही दूर चले थे कि, उन्हें रुक जाना पड़ा। कुछ ही गजों की दूरी पर उगी लम्बी-लम्बी घास से अचानक दो सिंह निकल पड़े। आदिवासियों के सँभलने के पूर्व ही वे तेजी से उनकी ओर झपटे। भगदड़ मच गयी और लोग पेड़ों की ओर भागने लगे। किंतु आसपास में अधिक पेड़ भी नहीं थे।

लम्बी-लम्बी घास से निकल कर सिंह अचानक झपटा। [चित्र : वाल्ट डिस्ने-निर्मित एक रेखाचित्र]

हाँ, सैदी नहीं भागा। उसने दो कदम पीछे हट-कर निशाना लिया और घोड़ा दबा दिया। एक तो उसका निशाना भी अचूक था, दूसरे भाग्य भी उसी का साथ दे रहा था। आगे वाला सिंह तत्काल ही उछला और गरजता हुआ भूमि पर गिर पड़ा। गोली ठीक उसके माथे में लगी थी। उसके साथ में सिंहनी थी। सिंह को गिरते देख उसने जोर से दहाड़ मारी और तेजी से उन व्यक्तियों की ओर लपकी, जिन्हें प्राण बचाने के लिए अभी तक कोई पेड़ नहीं मिल सका था। बचे हुए आदि-वासियों में फिर भगदड़ मच गयी और दौड़ते हुए वे वापस सोते की ओर भागे। क्रुद्ध सिंहनी सैदी की ओर मुड़ी; किंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बार एक आदिवासी ने साहस दिखाया। उसकी बंदूक की गोली ठीक सिंहनी के दिमाग में जाकर लगी।

इधर-उधर भागे आदिवासी लौट आये। उन्होंने मिल कर हर्ष मनाया और अपने दोनों शिकारों को बाँसों से लटका कर लौट आये। अपने घरों में आकर उन्होंने सैंदी और उस आदिवासी की वीरता की कहानी सुनायी और सारा दिन जशन मनाते रहे।

× × ×

शिकार की यह अपने ढंग की अनोखी कहानी मुझे जिस वक्त सुनने को मिली, उस वक्त मुझसे मिलने, दो और अंग्रेज आये थे। अफ्रीका में जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ आबादी नहीं है। चारों ओर जंगल-ही-जंगल हैं। थोड़े-बहुत आदिवासी अवश्य दिखायी दे जाते हैं। वैसे, जंगल के जीव-जंतु ही मेरे मित्र हैं। पिछले कई वर्षों से मैं बाहरी दुनिया से सम्बंध-विच्छेद कर जंगल में उन्हीं के साथ रह रहा हूँ। प्रकृति की उन्मुक्त गोद, जहाँ कृत्रिमता का आवरण नहीं हो– यही मेरे स्वर्ग की कल्पना रही है और भड़कीले होटलों, व्यर्थ के शोरोगुल प्रति क्षण आशंकित रहने वाली दुनिया से दूर, अफ्रीका के जंगलों में, मेरी कल्पना मूर्त रूप धारण कर चुकी है। बाहर से आनेवालों को मुझसे मिलकर आश्चर्य ही होता है।

जिस दिन शिकार की उपर्युक्त कहानी मुझे एक आदिवासी ने सुनायी, उस दिन भी मुझसे मिलने के लि[illegible] कौतूहलवश ही आये थे [illegible] सच्ची कहानी उन्होंने बड़े [illegible] बीच-बीच में उनके चेहरे का रं[illegible] जा रहा था और जब कहानी [illegible] हो गयी, तो उनके मुख पर [illegible] की रेखाएँ स्पष्ट हो उठीं। [illegible] इस कहानी की सचाई [illegible] अविश्वास नहीं हुआ।

अफ्रीका के जंगलों में [illegible] सिंह कम खतरनाक नहीं [illegible] है; लेकिन बहुत-से लोगों [illegible] मालूम होगा कि, साधारण [illegible] पर आक्रमण नहीं करता। जब वह [illegible] रहता है अथवा अधिक क्रुद्ध हो उठता है, तभी वह मनुष्य पर हमला करता है– अन्यथा जंगलों में छिपकर जान बचाना उसे अधिक पसंद है।

शिकार की एक ऐसी ही घटना, जिसमें शायद बहुत-से लोगों को कोई आनंद न आये, स्वयं मेरे साथ भी घट चुकी है। हाथी के शिकार के लिए अफ्रीका के एक जंगली इलाके में जब मैं गया था, तभी वह घटना घटी। अपने रहने के उपयुक्त स्थान की तलाश में मैं घूम रहा था। जिन दो आबादियों पर हाथियों के हमले होते थे, वह स्थान जब मील-डेढ़ मील रह गया था, तब मुझे एक आदिवासी मिला, जो एक झोंपड़ी की छत पर बैठा ताड़ के पत्तों से उसकी मरम्मत कर रहा था। मुझे देखकर वह मुस्कराया। उसने बताया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की खेती करनेवाला
रिश्तेदार उसकी इस खेती
ने वाले हैं। इसीलिए वह
पड़ी बना रहा है।
ी अच्छी बनी थी और मेरे लिए
ी थी, अतः मैंने उस व्यक्ति से
लिया। कुलियों ने मेरा सामान
और मैं उन्हें साथ ले, उन
ओर बढ़ा,
या करते
में, उनमें से
ने कहा—"बवाना
(रुग्हथ)! आपने वह
झोपड़ी लेकर अच्छा
नहीं किया। वह जगह
बड़ी बुरी है। वहाँ एक
सिंह आता ह; पर यह
सब जानते हैं कि, वह
सिंह नहीं है, बल्कि
हमारी आबादी के
सुल्तानी की मरी हुई
बीबी है, जो सिंह का
रूप धरकर आती है।
कोरोजियो तो— जिससे
आपने झोंपड़ी खरीदी है— वह बेवकफ
है या यह भी हो सकता है कि, वह भी
कोई भूत-प्रेत ही हो!"

स्वभावतः ही मेरी दिलचस्पी बढ़
गयी और मेरे पूछने पर उन लोगों ने जो
बताया, उसका सारांश यह था कि, प्रत्येक
बरसात में, जब घास बारह-तेरह फुट
ऊँची उग आती है, तो वह सिंह आता है।
उस स्थान पर एक ही पेड़ है—अंजीर का
पेड़। सिंह उस पेड़ के निकट ही रहता
है और उधर से गुजरनेवाले किसी भी
व्यक्ति को नहीं छोड़ता। एक तो आसपास
में जान बचाने की कोई जगह नहीं रहती;
फिर 'भूत' से कोई बचे भी कैसे!

सारी कहानी सुनकर उस 'भूत'-सिंह
को देखने की मेरी इच्छा
प्रबल हो उठी। संयोग
से हाथियों का उत्पात
इतना बढ़ा हुआ था कि,
उन्हें काबू में लाते-लाते
काफ़ी समय बीत गया
और तब तक घास बारह-
तेरह फुट ऊँची उग
आयी। कोरोजियो के
ज्वार भी काफी लम्बे
हो गये थे। उसने थोड़ी
दूर पर ही अपने लिए
दूसरी झोंपड़ी बना ली
थी और उसकी झोंपड़ी
के ठीक बगल में, उसके
ही एक रिश्तेदार—
किफारू— की झोंपड़ी थी।

[भगदड़ मच गयी और लोग पेड़ों की ओर भागने लगे। किंतु पेड़ भी अधिक न थे। पृष्ठ—७३]

बरसात शुरू हो गयी थी। पानी कभी-
कभी बहुत जोरों से पड़ता और तभी वह
'भूत' भी आया, जिसकी मुझे प्रतीक्षा
थी। अपने आने के लिए उसने एक सर्द
और काली रात चुनी। पानी धीरे-धीरे
बरस रहा था। घास पर उसके 'टप-टप'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की आवाज सुनायी दे रही थी। रह-रहकर मेंढकों की आवाज भी सुनायी दे जाती। सात मील दूर के गाँव से, रात की सर्द हवा पर तैरती, नगाड़े की आवाज जैसे किसी सुदूर प्रदेश से आती जान पड़ रही थी।

सहसा किसी के चिल्लाने की आवाज सुनायी दी। भय से अधिक क्रोध की भावना थी उसमें। दो मिनट बाद ही कोरोजियो झोंपड़ी से ही चिल्लाया—"बवाना! एक 'दुदु' मेरे घर में घुस रहा है।" 'दुदु' वहाँ की भाषा में किसी भी अवांछित पशु को—जो बलपूर्वक घुस आता है— कहते हैं।

एक हाथ में लैम्प और दूसरे में राइफल लिये मैं दौड़ता हुआ कोरोजियो की झोंपड़ी पर पहुँचा। कहीं कुछ नहीं था—सर्वत्र सन्नाटा और तभी कोरोजियो बाहर आया। उसके चेहरे पर जबर्दस्ती की हँसी थी। हमने पूरी झोंपड़ी की तलाशी ली और एक जगह बाहर, झोंपड़ी के निकट हमें सिंह के पैरों के ताजे निशान मिले। सम्भवतः कोरोजियो का चिल्लाना सुनकर सिंह वहाँ से भाग गया था।

मैं अपनी झोंपड़ी में लौट आया। राइफल अपनी बगल में रखकर मैंने सोने की चेष्टा की। किंतु आधे घंटे बाद ही किफारू की झोंपड़ी से एक साथ ही औरतों और बच्चों के चिल्लाने की आवाज सुनायी पड़ी। बिना पल-भर की देर किये मैं वहाँ पहुँच गया— एक हाथ में लैम्प और दूसरे में राइफल! झोंपड़ी के निकट पुनः सिंह के पैरों के ताजे निशान थे और झोंपड़ी की दीव[illegible] थोड़ी घास वहाँ पड़ी थी। बंदे[illegible] इस बार भी सिंह को झोंपड़ी [illegible] घुसने का प्रयास डर कर छोड़ देना पड़ा [illegible]

मच्छर मेरे नंगे पाँवों में बु[illegible] काट रहे थे, अतः तुरत ही मैं अप[illegible] में लौट आया। अपने पैरों को [illegible] से भलीभाँति ढँककर मैं आ[illegible] लेट गया। लैम्प बगल में [illegible] राइफल घुटने पर। दरवा[illegible] छोड़ दिया कि, अगर फिर जरूर[illegible] तो अविलम्ब बाहर निकल सकूँ। को[illegible]जियो भी वहीं आ गया था। वह नीचे जमीन पर ही सो गया।

समय बीतता गया। फिर पहले-सी निस्तब्धता छा गयी। सिर्फ मेंढकों और दूर से नगाड़े की आवाज रह-रह कर आ रही थी। बैठा-बैठा मैं ऊँघने लगा। कितनी देर तक मैं उस प्रकार झपकी लेता रहा, यह कहना तो मुश्किल है; लेकिन अचानक ही मेरी आँख खुल गयी। मेरा हृदय जोरों से धड़क रहा था और सारे शरीर में एक अजीब-सी सिहरन व्याप्त थी। किसी पशु-शरीर की तीव्र गंध भी मुझे मिल रही थी— सम्भवतः किसी सिंह की ही!

मैं वैसे ही लेटा रहा—सिर्फ अपनी राइफल मजबूती से पकड़ ली। 'सेफ्टी कैच' मैंने हटा दिया और 'घोड़े' पर उँगली रख ली। तभी खुले दरवाजे पर कोई छाया-सी दिखायी पड़ी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] सीधे या निशाना लिये [illegible] का घोड़ा दबा दिया। [illegible]ोड़ा दबने के साथ ही दरवाजे के बाहर [illegible]क रोषयुक्त गर्जन सुनायी दिया और [illegible]सी जानवर के कराहते हुए भागने की [illegible]हट मिली। कुछ दूर घासों में जाकर वह [illegible] रुक गया। उसके कराहने की आवाज [illegible] भी सुनायी दे रही थी।

[illegible] दरवाजे से बाहर आया और जिधर से [illegible] आ रही थी, उधर ही गोलियाँ [illegible]लाने लगा। सारी गोलियाँ खत्म हो गयीं; किंतु मेरी दो गोलियों के साथ ही होनेवाली एक आवाज ने मुझे बता दिया कि, मेरा श्रम व्यर्थ नहीं गया। किसी जानवर के कीचड़ में गिरने की आवाज थी वह! क्षण-भर बाद ही कराहने की वह आवाज भी बंद हो गयी।

कोरोजियो हाथ में लैम्प लिये मेरे पास ही खड़ा था। वह लकड़ी के डंडे, मिट्टी के बड़े-बड़े सख्त लोंदे और पत्थर उधर घास में फेंक रहा था। क़िफारु भी तब तक वहाँ आ पहुँचा। आदिवासियों द्वारा बनायी गयी उनकी 'मशालों' और मेरे लैम्प के प्रकाश में हम धीरे-धीरे आगे बढ़े। घास में ही वह 'भूत' मरा पड़ा था। हमने उसे देखा, वह एक वृद्ध सिंहनी थी!

एक बार अपने पत्र के पूजा-विशेषांक के लिए शरत् बाबू के एक सम्पादक मित्र ने उनसे एक रचना माँगी। शरत् बाबू ने हफ्ते-भर बाद भेज देने का वादा दिया; किंतु जब वादा पूरा नहीं हुआ, तो सम्पादक महोदय दौड़े हुए आये। शरत् बाबू ने अगले दिन भिजवाने का वादा किया और अगले दिन एक पत्र भेज दिया, जिसमें उन्होंने अगले वर्ष निश्चित रूप से अपनी रचना देने का वचन दिया था।

दूसरे वर्ष सम्पादक महोदय पुनः रचना लेने पहुँच गये। शरत् बाबू घबड़ाये और उन्होंने कुछ दिनों के लिए अवकाश चाहा। सम्पादक महोदय को वास्तविकता समझते देर न लगी। बोले– "खैर! मेरा एक काम कर दीजिये। इधर मुझे पैसों की सख्त जरूरत है। बड़ा बाजार में एक सज्जन के यहाँ अच्छा-सा ट्यूशन है। अगर...।" शरत् बाबू बीच में ही उठकर खड़े हो गये– "चलो, अभी चलकर कह देता हूँ।"

किंतु टैक्सी जब बड़ा बाजार पार कर गयी, तो शरत् चौंके–"कहाँ ले जा रहे हो?" सम्पादक महोदय ने मानो धमकी दी– "बस, चुपचाप बैठे रहिये।" टैक्सी आकर रुकी, सम्पादकजी जहाँ रहते थे, वहाँ। सम्पादकजी शरत् बाबू को अपने कमरे में बैठाकर एक कप चाय और आमलेट ले आये। हाथ में फाउंटेनपेन देकर बोले–"जब तक आप एक रचना लिखकर नहीं देंगे–इस कमरे से बाहर नहीं जा सकते।"

दो घंटे बाद, बाहर से ताला लगे कमरे में से, शरत् किवाड़ भड़भड़ाते हुए चिल्लाये–"अरे भाई, तुम्हारी रचना तैयार है।"

—विश्वनाथ मुखर्जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़वे-मीठे जीवन-घूँट

*

प्रेम-मूर्ति

उन दिनों मैं क्लोवरडेल (अमेरिका) में श्रीमती शलफ्रेड के बाग में अंगूर चुनने का काम कर रहा था। पहले कभी इस प्रकार का काम मैंने किया नहीं था। हाँ, वाशिंग्टन और आरेगन राज्यों में लकड़ी की मिलों में काम अवश्य किया था। लकड़ी की मिलों में काम करने के लिए शारीरिक बल की आवश्यकता होती है; पर अंगर चुनने में शरीर की फुर्ती और आँख की तेजी की।

मेरे साथ हेनरी नामक एक १७-१८ वर्ष के लड़के ने भी अंगूर चुनने का काम शुरू किया था। उसने शाम तक ४८ संदूक भर डाले और मैंने केवल २१ ही।

मेरी चेतना को बड़ी ठेस लगी। अतः दूसरे दिन सवेरे से ही मैंने तेजी से काम करना शुरू किया। फल यह हुआ कि, चाकू मेरे हाथ में घुस गया। मैंने किसी प्रकार खून तो बंद किया; पर लहू की कुछ बूंदें तो भूमि पर गिर ही गयी थीं।

हेनरी जब उधर आया, तो लहू के चिह्न देख कर बोला—"स्वामी, आपका हाथ कट गया है। आप काम न कीजिय।" "काम न करूँ? पैसे कहाँ से मिलेंगे?" मैंने सव्यंग्य उससे कहा।

किंतु संध्या को जब मैं अपनी दिन-भर की संदूकें रखने पहुँचा, तो देखा कि, मेरी दस संदूकों के बजाय मेरे सामने पच्चीस संदूकें थीं। मुझे पता चल गया, हेनरी ने अपनी पंद्रह संदूकें मेरी संदूकों में रख दी थीं। मेरा हृदय प्रेम-विह्वल हो उठा और हेनरी को आलिंगन करके मैं बोला—"हेनरी! धन्य हैं तुम्हारे माता-पिता...! मैं तुम्हारा हृदय से कृतज्ञ हूँ; पर इन बक्सों को मैं स्वीकार नहीं कर सकता।"

आज इतने वर्ष बाद भी हेनरी की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह प्रेरणा-मूर्ति मेरे हृदय-पटल पर ज्यों-की-त्यों अंकित है।

—सत्यदेव परिव्राजक, ज्वालापुर

*

भूल

उस छोटे-से अस्पताल में उन दिनों रोगियों की भरमार थी। सुबह से शाम तक एक मिनट का अवकाश मुझे नहीं मिलता। सबसे अधिक मुसीबत तो नर्स की थी। अकेली नर्स थी अस्पताल में। कई बार अधिकारियों को लिख चुका था; पर अभी तक व्यवस्था नहीं हुई थी।

पाँचवें दिन एक नया रोगी आया। शाम को ड्यूटी समाप्त कर मैंने नर्स को बुलवाया—"सिस्टर! आज डाक्टर मुखर्जी नहीं आयेंगे। उनकी तबीयत ठीक नहीं है। मेरे सिर में भी दर्द है, इसलिए मैं जा रहा हूँ। नये मरीज का ध्यान रखना। हर आधे घंटे पर उसे दवा पिला देना। भूलना मत!"

सुबह चार बजे मेरे पास खबर आयी—"नये मरीज की हालत खराब है।" मैं दौड़ा आया; पर तबतक वह मर चुका था। नर्स से पूछा—"तुमने दवा समय पर पिलायी थी?"

सिर नीचे झुकाये अपराधिनी-सी वह बोली—"डाक्टर! दो बजे के लगभग मुझे झपकी आ गयी थी। बहुत चेष्टा की; पर नींद....."

"बस!"—मैं रुष्ट स्वर में बोला—"यह लापरवाही मुझे पसंद नहीं! मैं इसकी रिपोर्ट करूँगा।"

"डाक्टर!"—वह कातर स्वर में बोली—"ऐसा न कीजिये। मेरा जीवन नष्ट हो जायेगा।"

मेरा रोष और भड़का। वह अनुनय-विनय करती रही; पर मैं क्रुद्ध होकर क्वार्टर में लौट आया। किंतु कुछ देर बाद, जब मैंने शांतिपूर्वक विचार किया, तो लगा, सचमुच ही, नर्स की यह कोई ऐसी बड़ी भूल नहीं थी। पाँच दिन-रात लगातार जागते रहने पर किसी को भी नींद आ सकती है।

किंतु घंटे-भर बाद जब ड्यूटी पर आया, तो नर्स कहीं नहीं दीखी। पता लगवाया, तो उसके क्वार्टर का दरवाजा भीतर से बंद था। किवाड़ खटखटाये; पर जवाब नहीं मिला। अंत में, मैं स्वयं वहाँ पहुँचा। किवाड़ तोड़े गये और आशंकित मन में कमरे के भीतर घुसा।

सामने ही नर्स चिर निद्रा में लीन थी। बगल की मेज पर 'स्लीपिंग पिल्स' की एक शीशी पड़ी थी—बिल्कुल खाली!

ग्यारह वर्ष पहले की यह दुर्घटना मेरी चेतना पर आज भी तीखे तीर की भाँति चुभ जाया करती है—रोष में बिगड़ी बात, मैंने देखा है, कभी नहीं बनती!

—डाक्टर सान्याल, कलकत्ता

★

मनचाहा-मन

कई दिन भटकने के बाद, आखिर एक दैनिक पत्र में मुझे 'प्रूफ-रीडर'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का काम मिला था। उस दिन जरूरत से ज्यादा गर्मी थी। जो व्यक्ति मुझे काम बता रहा था, उसके व्यवहार से मुझे बड़ी चोट पहुँची। शायद उसे छुट्टी दी जा रही थी और इसीलिए वह मुझसे असंतुष्ट था। वह मुझे खूब काम ही नहीं दे रहा था; डाँट-फटकार भी रहा था। उसके साथियों ने भी वही रवया अख्तियार कर रखा था—वे दिन-भर मुझ पर तानेकशी करते रहे। मेरा मर्म आहत हो रो पड़ा; किंतु काम कैसे छोड़ बैठता....काठ की तरह लगा रहा। रात के ग्यारह बजे काम खत्म हुआ, तो ऐसी थकान थी कि, खाने-पीने की कौन कहे, जीने-मरने की भी सुध न रही। श्रांत-विकल वहीं एक बेंच पर लम्बा हो गया। बाकी लोग नीचे होटल में खाने, चाय पीने चले गये। केवल वही व्यक्ति, जिसने मुझे सबसे ज्यादा सताया था, रुका रहा। उसने मुझे क्षण-भर गौर-से देखा। मुझे सोया देख उसने एक चादर मुझे ओढ़ायी और एक कुर्सी पर चढ़कर उस सौ वाट के बल्ब को निकाला, जिसकी रोशनी सीधी मेरी आँखों पर पड़ रही थी।

— नरेन्द्र राजगुरु, बम्बई

★

हक की रकम

उस रात खाना खाकर मैं सोने की तैयारी कर ही रहा था कि, नीचे रामदास के मकान से जोर-जोर से बोलने की आवाज सुनायी पड़ी। लम्बी बीमारी के बाद रामदास अभी सप्ताह-भर पहले ही अस्पताल से लौटा था। चिंता हुई, कहीं उसकी तबीयत फिर से तो नहीं खराब हो गयी। किंतु जब वहाँ पहुँचा, तो शंकरभाई और रामदास दोनों ही जोर-जोर से बातें कर रहे थे।

जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ बस, दो ही अच्छे दर्जी हैं—शंकरभाई और रामदास। सारे लोग इन्हीं दोनों के यहाँ अपने कपड़े सिलवाने आते हैं। अतः इन दोनों को यों झगड़ते देख, अगल-बगल के लोग भी उत्सुकतावश वहाँ आ गये थे। जब मैं पहुँचा, तो रामदास कह रहा था—"शंकर! ये रुपये तुमने कमाये हैं, इन्हें मैं कैसे ले लूँ?" किंतु शंकर अपनी ही बात कह रहा था—"रामदास! तुम समझते क्यों नहीं? जितने दिनों तुम्हारी दूकान बंद रही, तुम्हारे ग्राहक भी तो मेरे यहाँ आते रहे। तुम्हारी दूकान अगर खुली रहती, तो वे तुमसे ही काम करवाते। फिर बताओ, उन्होंने जो रुपये मुझे दिये, उन्हें मैं अपना कैसे मान लूँ? यह तो तुम्हारे ही हुए, रामदास!" पर रामदास भी रुपये लेने को तैयार नहीं हुआ। दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे। लोगों की भीड़ भी एक-एक कर घटने लगी; किंतु मैं काफी देर तक मूक विस्मय और श्रद्धा से उन्हें निहारता ही रह गया!

— धीरेन्द्र एम० शाह, पूना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/G

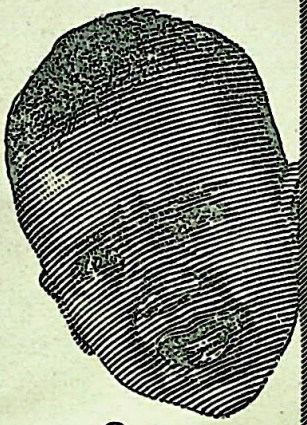

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

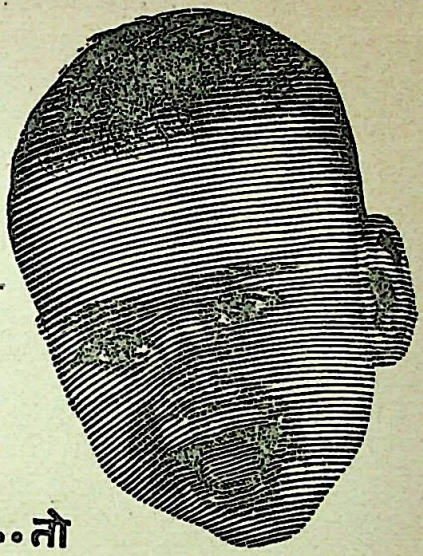

...तो
मॅनर्स ग्राइप
मिक्श्चर दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्टों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगानें के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई -१ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण हैं।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Telephone: 251218-19-10 Telegram: "SAHUJAIN"

BOMBAY VYAPAR PRIVATE LTD.

15-A, HORNIMAN CIRCLE,

BOMBAY-1.

Sole selling agents of:

ROHTAS INDUSTRIES LIMITED

DALMIANAGAR

for BOMBAY STATE

Special items of Manufacture;

KRAFT, SULPHITE, POSTER, MANILLA, DUPLEX BOARD, ENAMEL BOARD AND AIR FINISH ART BOARD.

STOCKISTS & DISTRIBUTORS ALL OVER THE STATE.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीरता का अधिकार

जेल के स्मरण-प्रसंग को लेकर लिखी यशपालजी की एक व्यंग्य-वेधक कहानी

★

वर्षा का कौतूहल शांत हो जाने पर जंगले फिर खाली हो गये। खपरैल की झीनी छत खूब टपक रही थी। रौंद की ड्यूटी के जमादार नरम तबीयत के थे। इसलिए कैदियों को टपकन के नीचे अपने ओटों पर ही बैठे या लेटे रहने पर जोर नहीं दिया। बस, इतना खयाल था कि, जेलर या बड़े साहब की रौंद की खट मिलने पर सब कैदी अपने-अपने ओटों पर चुपके से लेट जायें। कैदी टपकन से बच टोलियाँ बना जगह-जगह बैठे थे। हथेली पर सुरती मल कर झाड़ने से फट-फट की आहट हो रही थी।

कादिर निधड़क बीड़ी पी रहा था। लोचन शहर की सही उर्दू में कह रहा था—"खाँ साहब, ऐसे में तो हम संतरे (शराब) की पूरी बोतल लेते थे।"

रामजनवा ने संशोधन किया—"लौंडे हो न अभी बाबू, जो मजा गाँव में घर पर खिंची (शराब) में है, उसे तुम क्या जानो?"

विसराम ने सहयोग दिया—"हाँ चौधरी, चौपार में हो, महुआ की क्या कहने?" उसने होंठ चूसने का शब्द किया।

मुलुआ ने अपना मत प्रकट किया—"अरे भइय्या, नसा सुलफे का और सब हेच! नशे का राजा सुलफा।"

पढ़ा-लिखा राजनैतिक कैदी होने के कारण पढ़ने के लिए हरिकेन लालटेन की सुविधा मिली थी। साधारण कैदियों की अनाचारपूर्ण उच्छृंखलता के प्रति विरक्ति दिखा, लालटेन ले एक ओर फट्टे पर लेट गया। कम्बल का तकिया बना अंग्रेजी के एक चित्रमय साप्ताहिक में मन लगाने का यत्न कर रहा था। पत्र की अपेक्षा कैदियों की कामनाओं और अनुभूतियों का नग्न चित्रण अधिक आकर्षक हो रहा था; परंतु उसमें रस लेना सम्मानित राजनैतिक व्यक्ति के लिए उचित न था। दृष्टि पत्र पर लगी थी; पर कान सम्पूर्ण स्वतंत्र थे।

लालटेन के प्रकाश में मेरे हाथों में फैले अखबार पर चित्र देख मुलुआ कौतूहल से पीछे आ बैठा था। पुकार उठा—"बाघ है क्या? हुजूर, सचमुच बाघ ही तो है..! जय सत्यनारायण भगवान् की!"

मुलुआ से बात करने के लिए काफी कारण हो गये थे। करवट लेकर पूछा—"कभी बाघ देखा है?" मन में विचार था, चिड़ियाघर या सर्कस के जंगले में बंद बाघ देख लेना एक बात है, वर्ना बाघ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखना मामूली बात नहीं।

"हुजूर, हम लोगों का क्या देखना... ऐसे देखा काहे नहीं, खूब देखा है।..मरे पड़े हैं। किसी सरकार ने शिकार किया होय?" उसके मुख से निकला और विस्मय में उसके होंठ खुले-के-खुले रह गये। आदर से उसने मरे हुए बाघ के चित्र को नमस्कार कर लिया।

पूछा—"क्यों मुलुआ, बाघ का शिकार करने कभी गये थे?"

मरे हुए बाघ के चित्र की ओर लगी मुलुआ की आँखें आदर और विस्मय से फैल रही थीं। मेरी बात से उसका स्वप्न टूटा—"अरे सरकार, आप लोगों की जूती के गुलाम हैं। 'सिकार' आप साहब लोग, राजा लोग खेलते हैं। हम लोग 'सिकार' क्या खेलेंगे?" आदर के भाव से वह पीछे जरा सरक गया।

मुलुआ बुंदेलखंड की किसी रियासत की प्रजा था। अंग्रेजी इलाके में डाका डालने के अपराध में चौदह बरस की सजा काट रहा था। वही बात स्मरण कर पूछा—"क्यों, तुम्हारी तो रियासत में घर-घर बंदूक रहती है? शिकार नहीं खेलते, तो क्या डाका ही डालते हो?"

"अरे सरकार, पेट के लिए जानवर गिरा लिया, सो एक बात है। नाहर का 'सिकार' दूसरी बात।...वो राजा लोगन को काम है।" स्मृति में वीर रस के समावेश से वह तनकर बैठ गया। आँखें चमक उठीं—"'सिकार' सरकार, राजे-रजवाड़े खेलते हैं, 'अपसर' खेलते हैं। जैसे सुना, इस जंगल में नाहर आया है। रियाया के नाम डोंडी पिट गयी। चार गाँव की रैयत जंगल को घेर लेती है। जंगल को छान कर खेदा होता है। नाहर घेर लिये जाते हैं। तब सरकार हाथी पै आनकर मचान पर बैठते हैं।" वह वीर आसन से उचक उठा। कल्पना ने उसके हाथों में बंदूक थमा दी। निशाना साध कर वह बोला—"तब सबसे पहली गोली सरकार की 'दन' से चलती है। कभी 'जंट' साहब भी रहते हैं। सरकार चूक जायें, तो रजवाड़े लोगों की गोली। बंदूकची भी साथ में रहते हैं।"

मुलुआ अत्यंत उत्साह से हाथ और नेत्रों के संकेतों से शिकार का वर्णन कर रहा था—"ऐसा होता है सरकार, 'सिकार'?"

"तुमने काहे का शिकार किया है?" ...फिर भी पूछा।

"अरे सरकार यही कभी सखा, साही, हिरन, लूमड़, दाँती गिरा लिया कभी।"

"दाँती क्या?"

"यही, जिसे सरकार बनैला सूअर बोलते हैं।"

"बनैला सूअर?....क्या बंदूक से?"

"नहीं सरकार। बंदूक में बहुत खर्चा आता है। तोड़ेदार हो तब भी कम-से-कम दो आने का गोली-गट्टा तो चाहिए। यही बल्लम-कुल्हाड़ी से। दाँती पर पत्थर मारो, तो गोली की तरह सीधा आता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे सीधा बल्लम पर ले! ससुर अपने जोर पर बिंधा चला जाता है। बल्लम इस जगह दे।" अपनी पसली ठोक कर उसने कहा—"और बल्लम की नोंक धरती में गाड़ अपना बदन ऊपर तौल दे। नहीं तो ससुर बड़ा जालिम होता है। हुजूर, दाँत की चोट से पेड़ गिरा देता है। ताकत नाहर से कम थोड़े ही होती है। बस, सरकार यह समझो कि, नाहर पैना खंजर और दाँती भारी लाठी, जो किसी पर पड़ जाय, तो खतम कर दे।

"और सरकार, समझो कि, जिंदगी थी! बस वही रखने वाले हैं।"—उसने हाथ जोड़ आकाश की ओर संकेत किया।

"क्यों, क्या हुआ?"—करवट ले उत्सुकता से मैंने मुलुआ की आँखों में देखा।

"सरकार हुआ क्या, ऐसा हुआ कि!"—अपनी भुजाओं के पुट्ठों को कठोर हाथों में दवा उसने कहा—"सरकार हमारे 'गाम' से कोई आधे मील पर नदी है। वहाँ रात में जानवर पानी के लिए आते हैं। भैया ने कहा—'चलो, कुछ वेंध लावें, ससा, लूमड़, सेह, दाँती जो मिलजाय।'

"सरकार, क्वार के दिन थे। नदी किनारे सिर से हाथ-भर ऊँची 'सर' खड़ी फूल रही थी। अम्बर में चंद्रमा खूब चटक रहे थे। पूनो होने को थी। राह में भैया 'दिसा' बैठ गये। हम आगे-आगे चल रहे थे। बल्लम बाई काँख में लिये थे। दायें हाथ में ऐसे एक संटी थी। मुँह से सीटी देते, संटी से 'सर' पै यों ही मारते जा रहे थे।

"बस सरकार, भगवान् रखनेवाले हैं। सामने नजर पड़ गयी। नाहर दायें से बायें को रास्ता काट रहे थे कि, खटके से सहम गये। कनौती खड़ी कर हमारी नाईं तके। पूँछ सपोले की तरह लहर गयी। नथने फूले, जैसे सरकार बिलौटा मूसे को तकता है। चंद्रमा हमारे पिछाड़ी थे, सो नाहर के चेहरे पर पड़ रहे थे। उनकी आँखों में खून था। बस बल्लम सम्भाला। सरकार नाहर से कोई भाग

..... बल्लम शेर की गर्दन के पार निकल गया (पृष्ठ—८४)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़े ही सकता है! नाहर 'बफरे' और बिजली की नाईं उछले।

"बस, भगवान् रखने वाले थे कि, यह जेल का अन्न-जल कहाँ जाता? वे ऊपर से गिरे। हमने दब के बल्लम दे दिया!" मुलुआ ने अपने कंठ पर हाथ मारा—"हड्डी टूट कर, बल्लम पार निकल गया। हमने बल्लम की नोंक धरती पर दे बदन तौल दिया। बस हिले ही नहीं। हमारा चोटी का पसीना धरती पर चू गया।" बायें हाथ की उँगली दायें हाथ की तर्जनी की जड़ पर रख उसने कहा—"सरकार, इत्ते-इत्ते बड़े नख। पीठ पर छू ही गये तो कई दिन लौं पकती रही।

"इत्ते में भया आ गये, तो हमें बल्लम पर बदन तौले देख बोले—'क्या है?' सरकार हमारा बोल न फूटा। धीमें से कहा—'नाहर झपटे थे।'

"भैया बहुत डरे। बोले—'मुलुआ, बड़ा जुलम किया तुमने। अब कैसे हो?'

"हमने कही भैया जो कहो? जान पर आ गयी थी।"

विस्मय से मैंने पूछा—"क्या मतलब?"

"अरे सरकार, नाहर के मारन ताईं रियाया को हुकुम थोड़े ही है। सजा हो जाती है सरकार! भैया बोले—'बस, देर मत करो मुलुआ।'

"सरकार तुरतै 'सर' तोड़ दो रस्सी बाँटी। एक में नाहर के हाथ बाँधे, दूसरे में पाँव। दूर तक जमीन पर रक्त पड़ा था। उसमें चंद्रमा लौक रहे थे। गर्दन से बल्लम खींचा! दोनो बल्लम हाथ-पाँव में डाल, दोनों कंधों पर रखे, आगे भया हुए और हम पीछे। सरकार, इत्ती भारी लाश थी। बड़ा बोझ था।

"लाश 'नद्दी' में ले गये। कमर-कमर तक पानी में ले जा, ऊपर बीसियों पत्थर रखे। तब राम-राम करते आधी रात में हम घर लौटे।"

मुलुआ की वीरता से जो श्रद्धा मन में हुई थी, वह उसकी मूर्खता से झल्लाहट में बदल गयी। झल्लाकर कहा—"पागल हो, जब नाहर मारा था, तो दुनिया को बताते, तुम्हारा नाम होता।"

दोनों कान छूकर मुलुआ फिर बोला—"अरे सरकार और कहीं पटवारी के कान बात पड़ जाती, तो घर-बार बिक जाता। नहीं तो रियासत की जेल काटत-काटत जिंदगी बरबाद होती। रियाया कहीं नाहर मार सकती है? वो सरकार राजा लोगन का 'सिकार' है। ये बन के राजा और वो जग के राजा।"

मैं फिर पत्र में राजा साहब के शिकार का चित्र देखने लगा—राजा साहब मरे हुए नाहर पर पाँव रखे हाथ में बंदूक लिए अपनी वीरता का विज्ञापन कर रहे थे।

रियाया से जंगल घिरवा, हाथी पर चढ़, मचान पर बैठ, बारह बंदूकची पीठ पीछे बैठा, उन्होंने नाहर को मार गिराया था और मुलुआ, नाहर से दो-दो हाथ कर केवल भाले से उसे मार, भयभीत हो अपना हत्या का अपराध छिपा संतुष्ट था।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झुर्रियाँ

सतीश कुमार-लिखित उर्दू-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

फजल मोहम्मद अभी चौदह साल का भी न हुआ था कि, उसकी शादी हो गयी। एक साल चुटकी बजाते गुजर गया। दूसरा साल गुजर जाने का पता उसे उस वक्त चला, जब उसकी बूढ़ी माँ ने उसके दोस्त के यहाँ दूसरा लड़का पैदा होने की खबर सुनायी—"खुदा ने हमोले का नसीब जगा दिया, तुझसे चार दिन बाद ही तो उसका विवाह हुआ था।"

फजल को ऐसी खबरों से कोई खुशी न होती; बल्कि वह और उदास हो जाता।

एक दिन जब फसल कट चुकी थी, अनाज को बोरियों में भरने के बाद, हवेली के शाह से सौदा भी पट चुका था, तो फजल मोहम्मद को देशी साबुन से नहाने का खयाल आया। नहा-धोकर उसने बालों को घी लगाया और जब लकड़ी की कंघी बालों में फेरने लगा, तो उसने देखा कि, कनपटी पर कुछ आटा-सा लगा हुआ था। उसने उंगली से हटाने की कोशिश की; लेकिन आटा न उतरा। उसने धुंधले शीशे को थोड़ा और पास ले जाकर देखा, तो पता चला कि, वह गलत समझ रहा था। आटा-वाटा कुछ नहीं था, कनपटी के बाल सफेद होने लगे थे। कुछ देर के लिए उसे ऐसा लगा, जैसे बालों की सफेदी फैल रही है, माथे पर झुर्रियाँ दिखायी दे रही हैं और हाथ कमजोरी से काँप रहे हैं। क्या सारी उम्र यूँ ही बीत जायेगी? ये हाथ जब कमजोर हो जायेंगे, तो बैलों के गले में पंजाल कौन डालेगा? खेतों से चिड़ियों को कौन उड़ायेगा? —"या अल्लाह, एक बेटा होता।"

फजल की बीबी नूराँ छाछ बिलो रही थी और यह सोच-सोचकर खुश हो रही थी कि, फसल अच्छी हुई थी। फजल अनाज मंडी में जाकर बेच आयेगा या पास की कालोनी—'हेड सुलेमान की'—के मैनेजर के यहाँ दे आयेगा, वहाँ से भी पैसे ठीक मिल जाते हैं। घी तो खैर बेचना है ही और बिक भी जायेगा; लेकिन ये पैसे किसके काम आयेंगे, जब गोबर से लिपे-पुते घर में कोई पेशाब करने वाला ही नहीं है। अनार के झाड़ों पर सुबह-शाम चिड़ियों का झुंड चहचहाता है, उसे कोई नहीं उड़ाता। एक बच्चा होता, तो वह उसे मल-मलकर नहलाती, यही घी उसके बदन और बालों पर मलती और जब लड़का जवान-गबरू हो जाता, तो उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए गुड़िया-सी दुलहिन लाती, पोते-पोतियाँ बुढ़ापे में कभी भी अकेलेपन का खयाल न होने देते। लेकिन अब तो मरते वक्त कोई पानी का एक लोटा भी देने वाला नहीं, आगे और क्या गम होंगे, अल्लाह ही बेहतर जानता है।

नूराँ यह सोच-सोचकर परेशान हो उठती और उसके काले खद्दर के आँचल में कुछ आँसू टपक पड़ते।

'हेड सुलेमान की' से दो मील की दूरी पर एक बस्ती 'मखाना' नाम की थी। असल में मखाना पंजाबी में भुने हुए चने के उस दाने को कहते हैं, जिस पर शकर चढ़ी रहती है। कहते हैं कि, पहले बस्ती का नाम कुछ और था; लेकिन एक बार महाराजा रणजीतसिंह उधर से गुजरे और मखाने खाकर इतने खश हुए कि, उन्होंने इस गाँव का नाम 'रणजीतपुर' ही रख दिया।

अंग्रेजों के राज में एक बार गोरे लाट साहब भी इधर से गुजरे, तो उन्हें भी मखाने बहुत पसंद आये और उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि, वह वहाँ भी 'हेड सुलेमान की' की तरह पुल बनवा देते, जिस पर अनाज और भूसे से लदे हुए गधे गुजरते; मगर वहाँ नदी ही नहीं थी। फिर उन्होंने उसी गाँव का नाम रणजीतपुर से बदलकर 'मखाना' कर दिया और जाते वक्त वे कुछ मखाने भी अपने साथ ले गये।

ये बातें वहाँ के रहने वालों की पुश्तों-की-पुश्तें सीने में भरी हुई हैं। खैर, इस मशहूर गाँव में एक हकीम था, जो हकीम कम और 'नीम' ज्यादा था। फजल ने उससे नूराँ का इलाज कराया; फिर 'हेड सुलेमान की' के सरकारी अस्पताल से भी दवा ली; मगर कुछ न हुआ। इसके बाद, वह उसे मोटर पर 'हवेली' भी ले गया। मोटर पर नूराँ को बड़ी तकलीफ हुई। पेट्रोल की बू उसके दिमाग पर जा चढ़ी, जिससे बड़े चक्कर आये और कै भी हुई। इतनी मुसीबत उठाने पर भी कुछ न बना, तो वह मायूस हो गया।

कभी वह दूसरी शादी के बारे में सोचता; लेकिन फिर इस खयाल को दिल से निकालकर सजदे में गिर जाता और कहता—"तेरे यहाँ किसी चीज की कमी नहीं, जब भी मेरे खेत सूखने लगे, तूने पानी बरसाया। अभी तो मैं काफी तंदुरुस्त हूँ और तेरे करम से नूराँ भी फूल की तरह शादाब है।"

नूराँ तो जैसे बावली हो गयी थी, नित नये जादू-टोने करती। किसी ने उसे एक नया टोना बताया था। सुबह को जब मुर्ग की पहली बाँग की आवाज आया, वह उठी। खाली घड़ा उठाकर कुएँ की तरफ चली। घड़े में पानी भर कर अपने जिस्म को सरकंडों की ओट में छुपाती हुई कब्रिस्तान की तरफ चल दी। चाँद की धीमी-धीमी रोशनी हो रही थी। नूराँ को लगा, जैसे आसपास के तारे गाँव के लोगों की आँखें हैं, जो उसे घूर रही हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर कोई एकाएक कहीं से निकल आये और उसे इस हालत में देख ले, तो...? उसने जिनों-भूतों की कहानियाँ सुनी थीं, हालाँकि वह गाँव-भर में अपनी बहादुरी के लिए मशहूर थी; लेकिन इस वक्त किसी अनजाने डर से काँप रही थी। उसे ऐसा लगा, जैसे हर-एक कब्र से एक भूत निकल रहा हो और वह जिस कब्र पर नहा रही थी, उसके चारों तरफ घेरा डालने की कोशिश में हो। वह एकदम कपड़े उठाकर वहाँ से भागी। भागते-भागते उसका साँस फूल गया और वह कुएँ के पास गिर पड़ी। उसने पीछे मुड़कर देखा, कोई भी पीछा नहीं कर रहा था; उसने कपड़े पहने और अपने घर वापस आ गयी।

आशा - निराशा के तट पर
[चित्र : अब्दुल हलीम (पाकिस्तान)]

कितनी ही बार अनार की पत्तियों के बीच नन्हे-नन्हे सुर्ख फूल पैदा हुए, बढ़े और खत्म हो गये और वक्त के साथ-साथ नूराँ भी मायूस हो गयी। फजल तो बहुत पहले ही खुदा की रजा पर राजी होकर चुपचाप अपने काम में लग गया था।

एक दिन गाँव के एक कोने में एक पीरजी ने डेरा आ लगाया। लोग कहते थे, कई नामुरादों के घर उनके दम-कदम से आबाद हो गये थे। यह बात फजल और नूराँ ने भी सुनी। दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा और बगैर देर किये पीरजी की तरफ चल दिये।

मगर एक-एक करके पीरजी के सभी तावीज और नुस्खे नाकाम हो गये। नूराँ की गोद खाली-की-खाली रही। अचानक एक दिन उसने सुना कि, फजल दूसरी शादी की फिक्र में है। उसके पाँव के नीचे से जमीन खिसक गयी। उसने बहुत सोचा; मगर कोई इलाज दिखायी न दिया। आखिर फिर पीरजी के पास पहुँची और उनके पैरों पर अपना सिर रख दिया।

"जरा बहादुरी से काम लो, सब ठीक हो जायेगा।" पीरजी ने चढ़ावा जेब में डालते हुए कहा—"बस, जब सब लोग सो जायें, तो....., पाँच औरतों ने आजमाया है और खुदा की फजल से पाचों के घर चाँद निकले हुए हैं।"

नूराँ करवटें बदलती हुई सोच रही थी, वह फजल को दूसरी शादी हरगिज न करने देगी; लेकिन पीरजी की बात माननी भी ना-मुमकिन है। अगर कोई देखले तो? लेकिन दुनिया में नामुमकिन क्या है? वह उस दिन को याद करने लगी, जब सोते में उसे लगा, जैसे कोई उसके गले से जेवर उतार रहा है। आँखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुलीं, तो उसके दोनों हाथ चोर की कलाई पर जम गये थे। अंधेरे में सिर्फ दो आँखें नजर आ रही थीं, बाकी मुँह कपड़े में लिपटा हुआ था। लाख जतन करने पर भी कलाई न छुड़ा सका, तो उस जवान आदमी ने कमजोर औरत के पैरों में पगड़ी डाल दी और नूराँ ने तरस खाकर उसको छोड़ दिया था। यह उस वक्त का जिक्र है, जब वह नयी-नयी ब्याह कर लायी गयी थी। आज भी वह इतनी ही बहादुर है, यह खतरा वह अब भी मोल ले सकती है।

रात काफी गुजर गयी थी और चारों तरफ अंधेरा फैला हुआ था। तमाम थका-माँदा गाँव सोया हुआ था; लेकिन नूराँ जाग रही थी। वह एक पल भी सो न सकी थी, उसके कानों में पीरजी की आवाज गूँज रही थी। पास की झोंपड़ी वालों की चारपाइयों की तरफ से किसी बच्चे के रोने की आवाज आयी। नूराँ को ऐसा लगा, जैसे उसका अपना बच्चा रो रहा हो। उसने बच्चे के सिर पर हाथ फेरना चाहा, तो हाथ खुरदुरी चारपाई से जा टकराया। वह खिसयानी होकर उठ खड़ी हुई और करमबख्श की लड़की के बच्चे की तरफ चल पड़ी।....बच्चे को उठाने से पहले उसने चारों तरफ की आहट ली और फिर बच्चे को उठाकर खेतों की तरफ चल दी।

अभी एक क्षण में उसका अंगूठा बच्चे की साँस के तारों पर होगा, फिर वह लाश को खेत में दफ्ना देगी, पीरजी ने ही तो कहा था कि, जब सब लोग सो जायें, तो... और अल्लाह की रहमत से उसके यहाँ भी एक बच्चा होगा। क्या हुआ, अगर उसके चार लड़कों में से एक मर जाये और दूसरे का भला हो जाये। यह कुछ देर पहले रोया था, यह बहुत रोता है। पहले तो हँसमुख था। अब इसके दाँत निकल रहे हैं, इसलिए दिनों-दिन कमजोर हो रहा है। पैदाइश के वक्त कैसा तंदुरुस्त था! नूराँ ने झुककर देखा, बच्चा अभी तक सोया हुआ था। नन्हे-नन्हे होंठ, छोटी-सी खूबसूरत नाक! नूराँ को न-जाने क्या हुआ, उसने अपने होंठ उसके नन्हे गालों पर रख दिये, सीने से लगा लिया और वह वापस गाँव की तरफ चल दी।

★

इंग्लैंड के विख्यात व्यंग्य-लेखक जोनाथन स्विफ्ट ने एक बार सरकारी आमदनी बढ़ाने लिए बड़ी मौलिक सलाह दी। उसने कहा—"मैं देखता हूँ कि, पिछले बीस-तीस बरसों में चाहे किसी क्षेत्र में समृद्धि न हुई हो; किंतु नारी-सौंदर्य में सीमातीत समृद्धि हुई है। अतः यदि अर्थ-संकट की इस घड़ी में नारी-सौंदर्य पर कर लगा दिया जाये, तो समस्या काफी अंशों में हल हो जाये। यदि सरकार ने यह कानून बना दिया तो मेरा विश्वास है कि, हर नारी अधिक-से-अधिक रकम स्वतः सरकारी खजाने में दाखिल कर जायेगी। —'व्यंग्य-विनोद'से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दस रुपये का नोट

आशापूर्णा देवी-लिखित एक बंगला-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

यह सर्वथा अप्रत्याशित ही था! ऐसा भी हो सकता है, इसकी तिनकौड़ी ने कभी कल्पना भी नहीं की थी। पर हुआ यही और वह भी दिन के प्रकाश में—नगर के राजमार्ग पर!

तिनकौड़ी अविलम्ब ही पास की एक गली में घुस गया। उसके हृदय की धड़कनें बड़ी तेज हो गयी थीं—न तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था और न अपने अंतर के कथन पर। गली में कुछ दूर तक चले जाने के बाद, उसने अपनी आँखों को रगड़ा और तब मुट्ठी में बँधी वस्तु पर एक छिपी-छिपी नजर डाली। अविश्वास का कोई कारण न था। वह वस्तुतः वही था, जो उसकी आँखें कह रही थीं—मन कह रहा था। कागज का वह मुड़ा-मुड़ाया टुकड़ा—दस रुपये का नोट ही था!

तिनकौड़ी-जैसे अभागे के जीवन में इससे बड़ी विस्मयात्मक घटना और क्या घट सकती थी! बचपन में ही उसके माँ-बाप ने उसे समझा दिया था—"बेटे, हम लोगों की जिंदगी की कीमत तीन कौड़ी से अधिक नहीं है। इससे अधिक की कभी अपेक्षा न करना।" तदनुसार ही, तिनकौड़ी ने कभी अधिक की आशा की भी नहीं। बचपन से ही अपने माथे का पसीना पैरों तक बहा कर वह पृथ्वी के एक कोने में पड़ा रहा है। जितने प्रकार के काम वह कर सकता था, उसने सब किया; पर रुग्ण शरीर के कारण हर जगह उसे पराजय और निराशा की ही शरण लेनी पड़ी। अब अंत में, पिछले कुछ दिनों से उसने सड़कों-गलियों में बिखरे रद्दी कागज इकट्ठा करने का काम शुरू किया था।

एक फटा-सा हाफ पैंट और मैली-फटी गंजी उसका पहनावा था और पीठ पर चट का बड़ा-सा थैला जीविकोपार्जन का साधन! आज उसी तिनकौड़ी की मुट्ठी में दस रुपये का नोट था—एक-दो का नहीं, दस रुपये का नोट, जिसका तिनकौड़ी की दृष्टि में राज-ऐश्वर्य से कम मूल्य नहीं था।

तिनकौड़ी ने धीरे-धीरे पीठ का थैला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीचे उतारा और गली के मोड़ पर स्थित एक मकान के बरामदे पर पैर लटका कर बैठ गया। "अब क्या करूँ?– तिनकौड़ी की समस्या थी। उसके पैंट या गंजी में जेब थी नहीं और उसकी अपनी झोंपड़ी में कोई भी वस्तु सुरक्षित रह नहीं सकती थी–फिर, वह उस भारी रकम को कहाँ रखे, इस चिंता ने उसे परेशान-सा कर डाला था।

"तो क्या जेबवाली कोई गंजी या कुरता खरीद लूँ और उसी में इसे रख दूँ? लेकिन तब यह नोट रहेगा कहाँ– इसे तो कमीज खरीदते समय ही भुना देना पड़ेगा। ना, ऐसा नहीं हो सकता। फिर क्या करूँ?"–तिनकौड़ी की समस्या ज्यों-की-त्यों वर्तमान थी। कुछ समय बाद उसके मन में फिर एक बात उठी– "इससे कोई बड़ा काम कर डालूँ। अब तक तो खुदरे पैसे लेकर ही बाजार गया हूँ–पर कभी नोट लेकर मोदी की दूकान नहीं गया। इस बार नोट लेकर दूकान जाऊँ और मोदी को चमत्कृत कर दूँ। लेकिन इतने का खरीदूँगा क्या? ना, मोदी के यहाँ इतना कीमती नोट लेकर जाना व्यर्थ होगा! तब?"

पृथ्वी के समस्त आनंद-ऐश्वर्य से वंचित तिनकौड़ी के सामने वस्तुतः यह एक बहुत बड़ी समस्या थी। उसकी समझ में यह बात, लाख कोशिश करने पर भी, नहीं आ रही थी कि, भगवान्-द्वारा दिये गये उस परम ऐश्वर्य के साथ वह क्या व्यवहार करे।

अकस्मात् ही उसकी आँखों के सामने राजमार्ग पर स्थित मिठाइयों की वह बड़ी दूकान घूम गयी, जिसे जीवन में कई बार उसने ललचायी नजरों से देखा था—"आह, कितनी अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ वहाँ मिलती हैं! शाम के समय तो वह इतनी सजी रहती है कि, स्वर्ग भी उसके मुकाबले में क्या ठहरेगा! कभी वहाँ जाने का सुयोग मुझे नहीं मिल पाया–उतने पैसे ही नहीं हुए कभी! तो क्या यह साध पूरी कर लूँ?" लेकिन दूसरे ही क्षण उसका विचार फिर बदल गया– "कितना मूर्ख हूँ मैं भी! ऐसी सूरत, यह पोशाक–वहाँ के नौकर-चाकर भी मुझसे लाख दर्जे अच्छे लगते हैं। वे क्या मुझे अंदर घुसने देंगे? उल्टे यह हो सकता है कि, इतनी बड़ी रकम का नोट हाथ में देख कर वे मुझे पाकेटमार करार दें और धक्के मार कर बाहर कर दें। ना, ऐसी भूल मैं नहीं कर सकता।"

तिनकौड़ी की चिंता-धारा आगे बढ़ी– "तब क्या पोशाक की ही आवश्यकता पहले है? एक साफ-सुथरी पोशाक खरीद लूँ? सचमुच, जीवन में कभी कोई साफ कपड़ा नहीं पहना। इसी सड़े हाफ पैंट पर न-जाने कितने वर्षों से जिंदगी कट रही है। और, यह भी क्या खरीदा था? एक बाबू ने दया करके दे दिया था! बाबुओं से मिले कपड़ों पर ही तो अब तक की जिंदगी कटी है।.....हाँ, ठीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, एक धोती और एक कुर्ता खरीद लूँ।" पर तुरत ही उसका यह निश्चय भी चूर-चूर हो गया—"खरीद कर करूँगा भी क्या? आखिर काम तो यही कूड़े में से कागज चुनने का है!"

तभी सामने से एक मोटरकार धूल उड़ाती निकल गयी और तिनकौड़ी के मानस में एक नयी कल्पना ने दौड़ शुरू कर दी—"सच तो, यह कपड़ा-खाना तो किसी-न-किसी तरह चल ही जाता है; लेकिन मोटर पर चढ़ना कभी नसीव होगा, यह संदेहास्पद है। इतने पैसे एक साथ कभी फिर पाऊँगा क्या? तो... यही अच्छा है... टैक्सी पर कुछ देर घूम आऊँ— जिंदगी-भर की परेशानी मिट जायेगी; फिर अफसोस नहीं रह जायेगा!" उसका अंतःकरण आनंद से उत्फुल्ल हो उठा; लेकिन ज्योंही उसने उठने से पहले थैले को सम्भाला, त्योंही उसकी अंतरात्मा ने उसे धिक्कारा—"कितना मूर्ख है तू। इतनी रकम व्यर्थ ही क्यों गँवाना चाहता है?" और, तिनकौड़ी की पकड़ ढीली पड़ गयी—थैला जमीन पर आ रहा।

"फिर क्या करूँ?—" तिनकौड़ी की चिंतन-शृंखला ने फिर से जोर पकड़ा—"ऐसा कौन-सा असाधारण काम है, जो मैं इससे पूरा कर सकता हूँ?"

और, कुछ देर बाद, उसे अपनी समस्या का एक समाधान मिला — "मेरी इस दुरवस्था का एकमात्र कारण मेरी अस्वस्थता ही है। यदि स्वास्थ्य सुधार लूँ, तो सब ठीक हो जाये।... यही ठीक है। डाक्टर के पास जाकर दवा खरीदूँ और उसे खाकर अपना स्वास्थ्य ठीक कर लूँ। फिर तो मेरे पास भी लक्ष्मी आयेगी — दस नहीं, तो एक-दो रूपये के नोट तो आयेंगे ही। इस तरह का गंदा काम भी नहीं करना पड़ेगा — मैं भी किसी मिल में भर्ती हो जाऊँगा या रिक्शा चलाऊँगा।...."

इसी समय उसने सड़क पर बैंड बजाते-गाते बालकों का एक झुंड देखा। तिनकौड़ी उनके गाने की शब्दावली पर ध्यान केंद्रित करने लगा। संगीत की सुमधुर ध्वनि ने तो उसे मोहित ही कर लिया। बालकों

स्वभाव

अपने तने से लिपटे सांप से चंदन के पेड़ ने सक्रोध कहा—"क्या स्वभाव है तुम्हारा भी! जो अच्छा लगे, चाहे वह तुम्हारे उपयोग का न हो, उसे खा ही जाना चाहते हो। कल यहाँ पड़ी मणि निगल गये—पेट में रखी-रखी क्या काम आयेगी वह तुम्हारे? और अब मेरा तना पकड़कर पड़े हो। सुगंध मेरी—खजाना मेरा—पहरा तुम दे रहे हो। तुम्हारे डर से कोई मुझ तक पहुँच भी नहीं पाता—मेरी कमाई का लाभ कोई उठा ही नहीं पाता! हटो यहाँ से!" —'गुलाब और काँटे' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का झुंड ज्यों-ज्यों तिनकौड़ी के निकट आता जा रहा था, वह अपने शरीर में रोमांच-सा अनुभव कर रहा था।

उनके गाने का भावार्थ था—"हमें भोजन दो, वस्त्र दो! तुम्हारे ही सहारे हम जीवित हैं। माँ-बाप तक ने हमारा साथ छोड़ दिया। ईश्वर ने हमें तुम्हारे भरोसे ही इस संसार में भेजा है। हम अनाथ बच्चे हैं। सच पूछो, तो तुम्हारे बच्चे हैं। तुम क्या हमें भूखों मरने दोगे?..."

उनकी इन सीधी-सादी बातों को समझने में तिनकौड़ी को कोई कठिनाई नहीं हुई। बालक गाते-गाते आगे बढ़ते जाते थे और सड़क पर चलनेवाले लोगों में से कोई-कोई कभी-कदाच् आगे-आग चल रहे बालक के हाथों में रखी पेटी के छेद में दो-चार पैसे डाल देते थे।

अकस्मात् तिनकौड़ी का मस्तिष्क झन-झना उठा। उसने सोचा—"आज तक किसी को भी एक पैसा देने का अवसर मुझे नहीं मिला। मुझे अच्छा भोजन नहीं मिला, यह सच है; पर कुछ-न-कुछ तो खाता ही हूँ। पहनने को अच्छे वस्त्र नहीं मिलते, तो पुराने तो पहनता ही हूँ। मोटर पर चढ़ने का सुयोग नहीं मिला; पर दो-चार बार ट्राम पर तो चढ़ा ही हूँ। अंग्रेजी दवा नहीं, तो टोटका-टोटके वाली दवाइयाँ तो खायी हैं। लेकिन दान? दान तो मैंने कभी नहीं किया—कभी इतनी क्षमता ही नहीं हुई मेरी।"....

उसकी छाती फूल उठी—उसे सहसा आनंद की एक ऐसी अनुभूति हुई, जैसी पहले कभी नहीं हुई थी।

बालकों की टोली उसके निकट पहुँच चुकी थी। तिनकौड़ी का हाथ बालक के हाथों में रखी पेटी के निकट पहुँचने को मचलने लगें; पर अकस्मात् उसके दिमाग में ये सवाल नाच उठे—"अपने जीवन की यह अमूल्य निधि तुम इस तरह दे डालोगे? इतनी बड़ी रकम इस तरह नष्ट कर दोगे? इसकी सहायता से क्या तुम अपना जीवन नहीं सुधार सकते?"

तिनकौड़ी का हाथ रुक गया, पाँव रुक गये। बालकों की टोली गाती-बजाती आगे निकल गयी।

वह यों ही कुछ देर तक सड़क पर खड़ा सोचता रहा—अपने अंतर्द्वंद्व से उलझता रहा और जब उससे मुक्ति मिली, तो उसने आँखें ऊपर उठायीं। बालकों की टोली आँखों से ओझल हो चुकी थी!

तिनकौड़ी ने अपने अंतर में एक अद्भुत पीड़ा का अनुभव किया— उसके हृदय में भयानक हाहाकार मचा था! वह अपने को रोक न सका! उसके कदम आगे बढ़ने लगे। जिस दिशा में बच्चे गये थे, उधर वह चलने लगा। इस समय उसके पैरों में अद्भुत फुर्ती आ गयी थी—उसकी चाल तेज होती गयी।

और, जब वह लौटा, तो ऐसा खुश लगता था, मानो अभी-अभी का खिला फूल हो, जो अपनी ताजा सुगंध की मस्ती में फूला न समा रहा हो!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यार का दर्जा

मिस्र के 'प्रेमचंद' महमूद तैमूर की एक अरबी कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

बहरीन का जौहरी फिरदौस जमाल जब मरने लगा, तो द्वीप की संस्कृति और रीति-रिवाजों के अनुसार, उसने अपने बेटों को पास बुलाकर कहा—"आज मेरा आखिरी दिन है, इस जमीन पर! मेरा बुलावा आ गया है। आज मुझे जाना पड़ेगा। इसलिए तुम जल्दी से जरूरी रस्मो-रिवाज पूरे कर लो। मौलवियों को बुलवा लो। मातम करने वालों को भी और रिवाज के मुताबिक अच्छे-अच्छे पकवान भी बनवा लो। इतना इंतजाम कर शाम को मेरे पास आ जाओ, तो मैं अपनी दौलत की हिस्सारसी भी कर दूँ।"

शाम को जब सब-कुछ तैयार हो गया, तो वे तीनों फिर अपने पिता के पास गये। पिता ने सबसे पहले बड़े बेटे को बुलाकर कहा—"बेटे, तुम मेरे पुत्रों में सबसे बड़े हो। अतः तुम्हारी योग्यता को देखकर मैं तुम्हें अपना जहाजी बेड़ा सौंपता हूँ। जाकर हीरे-जवाहरात का व्यापार करो और मेरी ही तरह धनवान बनो। मगर एक जिम्मेदारी भी तुम्हारे ऊपर छोड़े जाता हूँ—अपने छोटे भाई कासिम को मेरी तरह ही प्यार करना; वह अभी नादान है। पढ़ा-लिखा नहीं है!"

आँसू-भरी आँखों से बड़े बेटे ने कहा—"प्यारे अब्बाजान, आपका हुक्म सिर-आँखों पर!"

"अल्लाह, तुम्हें बरकत दे।"—आशीर्वाद देते हुए जमाल ने दूसरे लड़के को बुलाया और उसे अपनी सारी जमीन, खजूर के पेड़ और खच्चरों का अस्तबल सौंपते हुए कहा—"इन्हें सौ गुना करना और मेरी तरह इज्जत बना कर रहना। इसके अलावा एक फर्ज और है तुम्हारे लिए—अपने छोटे भाई कासिम को मेरी ही तरह प्यार करना, उसे लिखाना-पढ़ाना और जरूरत पर उसकी रहनुमाई करना।"

पिता के गीले स्वर से उसकी आँखों में भी आँसू बह निकले। उसने कहा—"आपका हुक्म सिर-आँखों पर, अब्बाजान!"

तब फिरदौस जमाल ने कासिम को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुलवाया। उस निरे बालक को देख कर वह रो पड़ा। उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर वह बोला– "तुम्हारी यह उम्र देखकर बड़ा दुःख होता है। यह दुनिया बड़ी मक्कार है। मैंने तुम्हारे बड़े भाई को जहाजी बेड़ा और मंझले को जमीन और अस्तबल दिये हैं। वे दोनों तुम्हें मेरी तरह ही प्यार से रखेंगे। तुम उसका अदब करना, उनका हुक्म बजाना।"

सुबकते-सुबकते वह कुछ रुका, कुछ सोचा और बोला–"जरा, मेरे सिरहाने से वह थैली तो लाओ। उसे खोलो। उसमें सात हीरे रखे हैं।" कासिम ने थैली उठा ली। पिता के अगाध प्रेम के स्पर्श ने उसे विचलित कर दिया–वह फिरदौस के पाँव पकड़ कर रोने लगा।

फिरदौस ने उसे गले से लगा लिया– "इसके साथ एक बात और तुम्हें कहना चाहता हूँ। तुम गौर से सुनो– समुद्र के उस पार एक टापू है, जिसमें मरजवा नाम का एक शहर है। वहाँ मेरा एक साझीदार मुर्तुजा नवाजी रहता है। जरूरत महसूस करो, तो तुम उससे जाकर फौरन मिलना!"

फव्वारे की तरह बहते पिता के इस प्रेम ने कासिम को मोम की तरह पिघला दिया। बाप के दामन में मुँह छिपा वह जार-जार रोने लगा। बाप का जी भी भर आया, कासिम को छाती से लगा वह बोला– "सब्र कर मेरे बटे! दुनिया में जो भी आता है, उसे एक-न-एक दिन जाना ही पड़ता है। अब मेरे पास वक्त नहीं है। अपने भाइयों का हुक्म मानना, दुनियादारी को समझना और खुदा पर भरोसा रखना। अच्छा बेटे, अलविदा!"

बेटों ने खानदानी रिवाज के मुताबिक बाप को दफनाया, पूरा मातम मनाया और धीरे-धीरे सब अपने कामकाज में लग गय। जब काफी वक्त गुजर गया, तो कासिम बड़े भाई के पास गया और निहायत अदब के साथ बोला–"भाईजान, मेरी खता क्या है, जो आपने मुझे ऐसे तर्क कर दिया। मुझे कुछ काम दीजिये, मेरी रहनुमाई कीजिये! मैं कुत्ते की तरह घर-घर भटक रहा हूँ! मुझे अपने दामन का साया दीजिये!"

मगर बड़ा भाई अपने बाप की आखिरी सीख को भूल चुका था। उसने कहा– "मेरे पास अभी तो वक्त नहीं है। कुछ कमा लूँगा, तो तुम्हारी मदद करूँगा।"

और, जब मंझले भाई से भी ऐसा ही हृदयहीन उत्तर मिला, तो कासिम के पैरों से मानो धरती ही खिसक गयी। आखिर, होश-हवास ठीक हुए, तो वह घर से निकला और यहाँ-वहाँ मारा-मारा फिरने लगा। एक दिन जब वह समंदर के किनारे भटक रहा था, तो एक मल्लाह ने उससे कहा–" "भाई, सूरज डूब रहा है और हवा का रुख खराब है। जरा मेरी मदद करो। नाव को बाहर निकाल लें।" बातों-ही-बातों में मल्लाह से वह पूछ बठा– "क्यों चाचा, तुम्हारी नाव कहाँ तक जायेगी?" उत्तर में मल्लाह ने कहा–"हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईरान की खाड़ी के पार मरजबा शहर जा रहे हैं। क्या तुम्हें जाना है वहाँ ?"

मरजबा का नाम सुनते ही कासिम को पिता की नसीहत याद आ गयी और वह नाव में बैठ गया। मरजबा पहुँच कर वह मुर्तुजा नवाजी के घर पहुँचा। मुर्तुजा अपने साझीदार की मृत्यु के समाचार सुनकर रो पड़ा। तब उसने अपने नौकरों को बुलाकर कासिम के खाने-पीने और सोने का इंतजाम करवा दिया।

सवेरे नमाज से फारिग हो, मुर्तुजा कासिम के पास आया। उसके हाथ में एक हीरा था। हीरे को सामने रखते हुए मुर्तुजा कहने लगा—"मेरे बेटे, तुम्हारे बाप ने यह हीरा तुम्हारे लिए मुझे दिया था। उसकी यह अमानत आज मैं तुम्हें सौंपना चाहता हूँ। इस हीरे की जोड़ का कोई हीरा आज ईरान में नहीं है. . . ।" फिर कुछ रुककर वह बोला—"मगर बेटे, इस भारी जोखम के साथ तुम्हें मैं अकेले कैसे जाने दूँ। तुम यहीं मेरे पास ठहरो ! मेरे साथ तुम्हें दुनिया का तजुर्बा जब हो जायेगा, तो तुम शौक से घूमना-फिरना !"

मगर कासिम नहीं माना। उसने मल्लाहों और व्यापारियों से हिन्दुस्तान के राजे-महाराजों और साहुकारों के बारे में सुना था। हीरा देखा, तो उसके सामने हिन्दुस्तान की दौलत नाच उठी। उसने मुर्तुजा को अपना इरादा बताया। मुर्तुजा को यह नादानी ही लगी; मगर कासिम की जिद तो घुली गाँठ थी, जितना मुर्तुजा सुलझाता, वह उलझती ही जाती। आखिर खुदा की रहम पर भरोसा करके मुर्तुजा ने उसे हिन्दुस्तान जाने की इजाजत दे दी।

फारस की खाड़ी के बाद, अरब सागर पार कर, एक हफ्ते में उसका जहाज बम्बई के बंदरगाह पर लगा। शहर में पहुँच, एक सराय में ठहरा और खाने-पीने के बाद, मटरगश्ती को निकल पड़ा। तीन दिन तक बराबर घूमने के बाद उसे हीरा बेचने की याद आयी। कई दूकानों के चक्कर लगाने के बाद, वह जौहरी अब्बासी के यहाँ पहुँचा और उसे वह हीरा दिखाया। उसको देखकर अब्बासी साँस लेना ही भूल गया। अपनी जिंदगी में उसने ऐसा हीरा कभी नहीं देखा था।

हीरे की परख-पड़ताल के बाद अब्बासी ने कहा— "हीरा दरअसल लाजवाब है। मेरी हिम्मत नहीं कि, इसके दाम अदा कर सकूँ। मगर मैं यहाँ के एक नवाब को जानता हूँ। उनसे तुम्हारी मुलाकात करा दूँगा। लेकिन तुम उस सराय में मत ठहरो। सामान मेरे घर ले आओ।"

एक दिन रात के खाने के बाद, अब्बासी की भतीजी नर्गिस पान लेकर आयी। कासिम ने नर्गिस की खूबसूरती को देखा, तो वह अपने आपे में न रह सका।

दूसरे दिन खुदा की बंदगी के बाद उसने अब्बासी से जाकर कहा—"जौहरी, तुमने मुझसे झूठ बोला है कि, तुम्हारे पास मेरे हीरे का मोल नहीं है; लेकिन रात को मैंने उससे भी कीमती हीरा देखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है– वह है–तुम्हारी भतीजी नर्गिस!"

अब्बासी ने कुछ विचलित हो आश्चर्य से कहा–"आप यह क्या फरमाते हैं?"

कासिम ने कहा–"तुम्हारी भतीजी नर्गिस मेरे हीरे की कीमत है। इसकी शादी मेरे साथ कर दो, तो यह हीरा तुम्हारा हो जायेगा!"

शादी की तैयारियाँ होने लगीं। बाग-बगीचे सजाये गये और घरों में रोशनी जगमगाने लगी। सात दिन तक दावतें होती रहीं। शाही धूम-धाम के साथ कासिम की शादी नर्गिस से हो गयी।

जौहरी अब्बासी हीरा पाकर फूला नहीं समाया। कासिम की बेवकूफी पर उसे वाकई तरस आ रहा था।

एक दिन, पति को अनुकूल देखकर नर्गिस ने कासिम से कहा–"मैंने आपके साथ दगा किया है। मेहरबानी करके मुझे मुआफ कर दें। मेरे चाचा ने आपको ठग लिया है। यह सारी चाल थी। हीरे के लालच में ही उन्होंने यह साजिश की थी।"

नादान कासिम ने सुना, तो उसकी आँखें खिंची-की-खिंची ही रह गयीं। हिकारत में उसने बुरा-भला जो चाहा, कहा। प्रथा के अनुसार मेहमानों की सीख और विदा लेकर कासिम दुलहिन के साथ अफ्रीका के लिए रवाना हो गया।

नर्गिस पर भी वह कम नहीं बरसा। उसने उसे अपने सामने से हटाकर कहा–"दूर हट जा....उफ! मक्कारी तेरा ही नाम औरत है।" और जोर-जोर से रोने लगा।

मगर नर्गिस विचलित नहीं हुई। उसने कासिम के पैर पकड़ लिये और रुंधे गले से बोली–"मेरी कहानी अभी शुरू ही हुई है.... पहले, जरा सुन लीजिये, फिर सजा दीजिये। मेरे चाचा को मैं जानती हूँ, लोभ में आकर वे कुछ भी कर सकते हैं–यदि मैं शादी के लिए रजामंद न होती, तो वे आपको मारकर भी हीरे पर कब्जा कर लेते... .और आपकी मुहब्बत मुझ पर इतनी कि, आप सब-कुछ मेरे लिए कुर्बान करने को तैयार.... फिर मैं क्या करती.....!" फिर गीली आँखों से ही उसने आँचल की छोर खोला वही हीरा निकालकर बोली–"लीजिये, हीरा मैं ले आयी हूँ– आप इसे चोरी न कहें–यह तो आपका ही है। क्या आप बीवी खरीद कर मुझे गुलाम की हैसियत देना चाहते हैं–मैं इस हैसियत में आपके साथ जाने से इन्कार करती हूँ...!"

कासिम जैसे किसी पहाड़ से नीचे गिरा दिया गया हो और जहाँ गिरा हो, वह भी काँटों का बिछौना हो। वह एक बार हीरे को देखने लगा और दूसरी बार नर्गिस को! एकाएक वह उठा और बाहु तानकर वह हीरा उसने समुद्र में फेंक दिया–काफी दूर! नर्गिस चकित-चौंधियायी-सी खड़ी थी। चीख कर बोली–"क्या कर दिया तुमने यह? इतनी बड़ी सजा?"

तेज आँखों से घूरते हुए मौन-जैसी भाषा में कासिम ने कहा–"पत्थर को पत्थर का दर्जा ही मिलना चाहिए, नहीं तो वह जोखम हो जाता है!"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब सिर्फ उम्दा सिगरेट से ही संतोष हो

पनामा पीजिये

ये आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती हैं

GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता:
गोल्डन टोबैको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २५.

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रिय उद्योग

G.T. 221 Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

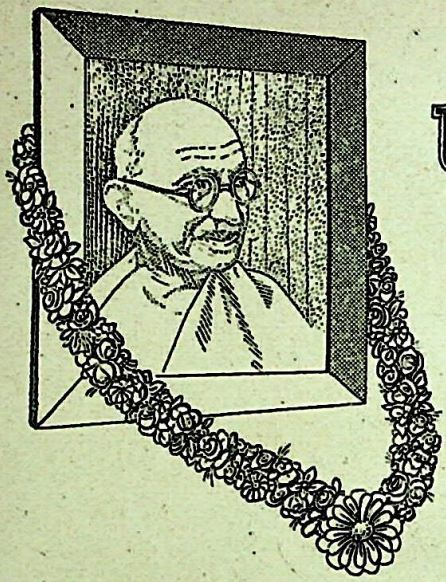

पुण्य स्मरण

ईश्वर हमें उनके बताये हुये मार्ग
पर चलने की बुद्धि और शक्ति दे

स्वदेशी

काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्

जैपुरिया ब्रदर्स लिमिटेड

दिल्ली · कलकत्ता · बम्बई · कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिण-ध्रुव की विजय-यात्रा

तेनजिंग के सहयोगी एवरेस्ट-विजेता सर एडमंड हिलेरी ने अभी पिछले महीने दक्षिण-ध्रुव के केंद्र-बिंदु पर पहुँचकर संसार को फिर एक बार अपनी साहस-तेजस्विता से चकित कर दिया। हिलेरी से पूर्व और भी वीरात्मा अन्वेषकों ने दक्षिण-ध्रुव की सफल यात्रा की थी। नार्वे का रोल्ड एमंडसेन (सन् १८७२–१९२८) उनमें सर्वप्रथम था। कप्तान एमंडसेन १४ दिसम्बर, सन् १९११ को दक्षिण-ध्रुव के केंद्र-बिंदु पर पहुँचा था। नीचे हम एमंडसेन की अन्वेषण-यात्रा के आधार पर दक्षिण-ध्रुव की यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जान कर कि, कुछ दिनों बाद, लोग स्वास्थ्य-सुधार और स्थान-परिवर्तन के लिए दक्षिण-ध्रुव जाया करेंगे, आप चौंकेंगे तो जरूर; लेकिन यह सत्य बात है। दक्षिण-ध्रुव का वातावरण बड़ा स्वास्थ्यवर्धक और मनोरम है। लम्बे दिनों में, महीनों तक यहाँ का मौसम सुहाना बना रहता है। जिस समय आवागमन के उचित साधन उपलब्ध न थे, तब की बात और थी; लेकिन अब तो वायुयान द्वारा दुनिया के किसी भी छोर तक पहुँचा जा सकता है। सन् १९१४-१९१६ और सन् १९२१-१९२२ में हुए शेक्लेटन्-अभियानों में, जो चार चिकित्सक साथ थे, उन्होंने स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से इस स्थान को आदर्श बताया था। और, बाद में यह बात प्रमाणित भी हो गयी। स्काट-अभियान-दल में एक डा० विल्सन थे, जो यक्ष्मा से पीड़ित थे। लेकिन दक्षिण-ध्रुव में तीन वर्ष बिताने के बाद, जब वे लौटे, तो उनके शरीर में रोग का कोई लक्षण शेष न रह गया था। सच बात तो यह है कि, यहाँ के वातावरण में रोग के कीटाणु पनप ही नहीं सकते।

जी हाँ, ऐसा है यह दक्षिण-ध्रुव-प्रदेश, जो धरती के तल पर किसी मन-मोहिनी राजकुमारी से कम प्रतीत नहीं होता। ऐसी राजकुमारी, जिसने नीले और सफेद हिम-वस्त्र धारण कर रखे हों और मदिर नयनों से किसी की बाट जोह रही हो!

अनंत आश्चर्यों का केंद्र-स्थल यह प्रदेश लगभग ६०,००,००० वर्ग मील के क्षेत्र में फैला हुआ ह और सृष्टि के आरम्भ से ही सभ्य संसार के लिए रहस्य-पूर्ण बना रहा है। भौतिक-विज्ञान-शास्त्रियों, भूतत्व-विज्ञान-शास्त्रियों और जीव-विज्ञान-शास्त्रियों के लिए यह विशाल क्षेत्र है, जहाँ वे तरह-तरह के प्रयोग कर सकते हैं; क्योंकि स्वयं प्रकृति ने ही इसका निर्माण रसायनशाला के रूप में किया है—ऐसी रसायनशाला, जिसका जोड़ विश्व के किसी कोने में भी उपलब्ध न हो सका।

इस प्रदेश की हिम-मात्रा किसी भी भूतत्व-विज्ञान-शास्त्री के लिए ऐसी एक दूरबीन का कार्य सम्पन्न कर सकती है, जिसमें से चट्टानों की परत-सम्बंधी अनेक बातों का अध्ययन सरलता के साथ किया जा सकता है— ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार एक खगोलशास्त्री शून्य की रिक्तता में सितारों पर दृष्टि डालता है। निस्संदेह, दक्षिण-ध्रुव के गर्भ में अनेक रहस्यों का स्रोत छिपा पड़ा है।

लेकिन इसमें भी कोई संदेह नहीं कि, मानव कभी भी संघर्ष-विमुख नहीं हुआ। वह प्रतिपल अपने लक्ष्य की ओर अनवरत गति से बढ़ता ही रहा है और जब तक वह वहाँ पहुँच नहीं गया, उसने चैन की साँस भी नहीं ली।

हाल ही में, एक बार फिर विश्व के लोगों की दृष्टि दक्षिण-ध्रुव की ओर उठ गयी है। सर एडमंड हिलेरी अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्य साथियों के साथ वहाँ जा पहुँचे हैं। परंतु हिलेरी दक्षिण-ध्रुव पर पहुँचने वाले प्रथम व्यक्ति नहीं हैं। इससे पूर्व भी इस दिशा में कई वार प्रयत्न किये गये हैं। दक्षिण-ध्रुव-अभियान के इतिहास में कप्तान जेम्स कुक, सर जेम्स क्लार्क रोज, सर अरनेस्ट शेक्लेटन और कप्तान राबर्ट फेकन स्काट के नाम भी सदा अंकित रहेंगे। किंतु जिस व्यक्ति का नाम दक्षिण-ध्रुव के प्रथम विजेता के रूप में सदा-सर्वदा लिया जायेगा, वह है नार्वे-निवासी रोल्ड एमंडसेन। दक्षिण-ध्रुव-अभियान के इतिहास में, उसका नाम साहस और श्रम की स्याही से लिखा जा चुका है। १४ दिसम्बर, सन् १९११ को वह स्काट के दल से लगभग एक मास पूर्व – दक्षिण-ध्रुव पर जा पहुँचा था।

एमंडसेन

[चित्रः बी० एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

कितना विचित्र संयोग है कि, मनुष्य घर से निकलता है किसी और कार्य के लिए; लेकिन सम्पन्न कुछ और हो जाता है। एमंडसेन अपने यहाँ से निकला था, उत्तर-ध्रुव पहुँचने के लिए; परंतु पहुँच गया दक्षिण-ध्रुव–समस्त विश्व को अपनी नाटकीय विजय से विमोहित करने के लिए! वह अपने मार्ग पर चुपचाप बढ़ता चला गया। औरों की तुलना में उसकी गति भी काफी तेज रही। स्काट के साथ मोटर-स्लेज और टट्टू थे; लेकिन एमंडसेन के साथ मात्र कुत्ते थे। इस बात को स्वयं एमंडसेन ने इस प्रकार लिखा है– "बचपन से ही उत्तर-ध्रुव मेरे लिए आकर्षण का केंद्र रहा; परंतु मैं पहुँच गया दक्षिण-ध्रुव। इससे बढ़ कर और कोई उल्टी बात नहीं हो सकती!" वास्तव में, यह एक ऐसी घटना है, जिसकी गणना विश्व की महान् घटनाओं में होनी चाहिए।

एमंडसेन की यात्रा का वृत्तांत भी काफी रोमांचपूर्ण है। किन भयानक परिस्थितियों में पर्वतारोहियों को आगे बढ़ना पड़ता है, उनकी झलक उसकी यात्रा में कदम-कदम पर मिलती है।

उसने लिखा है—

"उस दिन दिसम्बर की ४ तारीख थी। सूक्ष्मतम गणना के अनुसार हमारा दल ८७° अक्षांस (दक्षिण) में था। अब हमें उत्तर-पूर्व के भूखंड का मात्र छोर ही दिखायी दे रहा था। उस दिन हमने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितनी सुंदर...और कितनी मनमोहक!

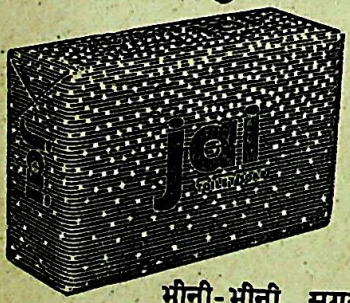

इसका रहस्य है...

टाटा का

जय

भीनी-भीनी सुगन्धवाला नहाने का मृदुल साबुन

दी टाटा ऑइल मिल्स कंपनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपारदर्शी हो, तो एस्किमो-कुत्तों को हाँकना भी बड़ी टेढ़ी खीर होती है; लेकिन हेंसेन ने उस समय जिस कौशल का परिचय दिया, उसके बारे में एमंडसेन ने लिखा है– "हेंसेन विशेष प्रशंसा का पात्र है।" हेंसेन कुत्तों को भी सम्भाल रहा था और कुतुबनुमा की सहायता से मार्ग का निदशन भी कर रहा था। ऊँची-नीची धरती पर जब बार-बार धक्का लगता है, तो कुतुबनुमा की सुई भी एक साथ कई चक्कर लगा उठती है और यदि कभी क्षण-भर के लिए ठहरती भी है, तो फिर पहले की तरह नृत्य करने लग जाती है; क्योंकि अचानक ही फिर उसे धक्का लग जाता है।

कदम-कदम पर बाधाओं का सामना करना पड़ रहा था; लेकिन उनकी गति में कोई अंतर न आ रहा था। सामने की कोई वस्तु दिखायी न दे रही थी; किंतु जब उन्होंने कुत्ता-गाड़ी का मीटर देखा, तो वह लगभग पच्चीस मील प्रकट कर रहा था और 'हिप्सोमीटर' में समुद्र से ११,०७० फुट ऊपर का चिह्न प्रकट हो रहा था। यह देखकर कि, वे बूचर से भी अधिक ऊँचाई पर जा पहुँचे हैं, उन लोगों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

६ दिसम्बर को भी मौसम में कोई विशेष परिवर्तन न हो सका। धरती और आकाश जैसे एक हो गये थे। उनमें कोई अंतर ही प्रतीत न होता था। चारों ओर हिम का साम्राज्य था। फिर धीरे-धीरे हिम-धाराओं का वेग कम होने लगा और मौसम भी साफ हो गया। एमंडसेन और उसके साथियों ने सुख की साँस ली और वे सब दूने उत्साह से अपने मार्ग पर अग्रसर होने लगे।

यदि इस प्रकार की परिस्थिति पहले आयी होती, तो कोई विशेष चिंता की बात न थी। परंतु इतनी ऊँचाई पर, जहाँ साँस लेने के लिए भी बार-बार ठहरना पड़ता था, परिस्थिति बड़ी भयावह हो उठी थी। फिर भी वे समस्त बाधाओं का सामना करते हुए अपने निश्चय को और भी दृढ़ करते जा रहे थे।

चलते-चलते ८८° अक्षांश (दक्षिण) पर उनका दिन बीत गया। ८८·९° अक्षांश (दक्षिण) में फिर उन्होंने तम्बू गाड़ दिया। उस संध्या को एक बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना हुई। एमंडसेन ने सोचा था कि, जितना समय पिछले दिन पानी गर्म करने में लगा था, उससे अधिक आज लगेगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ। उस दिन भी पहले दिन जितना ही समय लगा। एमंडसेन ने कई बार जाँच की; लेकिन परिणाम में कोई अंतर न आया, तो उसने अपने साथियों के बीच घोषणा कर दी कि, वे शिखर पर आ पहुँचे हैं।

७ दिसम्बर को भी ६ दिसम्बर जैसा ही अपारदर्शी मौसम बना रहा। लेकिन सूर्यास्त से पूर्व कोई भी परिवर्तन सम्भव था। प्रकृति को अपना रंग बदलते भला देर भी क्या लगती है! उत्तर-पूर्व से मंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द दूर करने के लिये चार दवाई मिली हुई 'एनासिन' मैं लेता हूँ

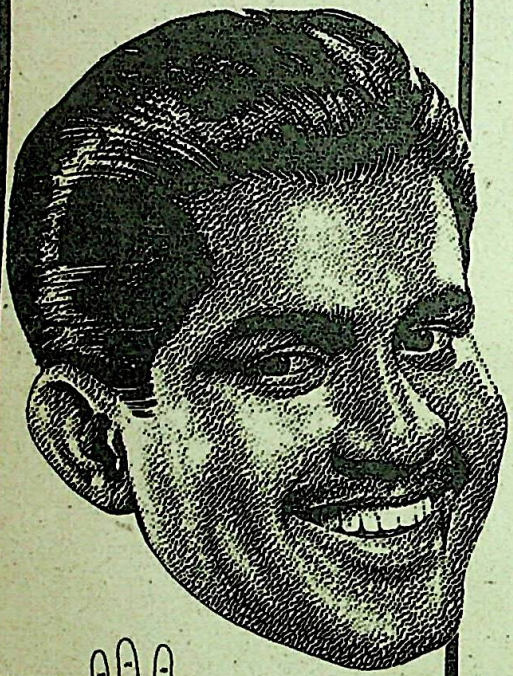

* क्विनीन सल्फेट
* फिनासिटीन
* कैफीन
* एसिटील सालिसिलिक एसिड

सिरदर्द, सर्दी, बुखार, दाँत का दर्द या स्नायु का दर्द शुरू होते हीं मैं २ टिकिया एनासिन को खा लेता हूं। यह मेरा अनुभव है कि किसी तरह के भी दर्द से शीघ्र आराम पाने के लिए एनासिन से बढ़ कर और कोई दूसरी दवा नहीं है-और न कोई दवा एनासिन से ज्यादा निरापद ही है। डाक्टरी नुस्खे के अनुसार इसमें चार दवायें वैज्ञानिक विधि से मिलाई गई हैं-ताकि दर्द से शिघ्र, विना नुकसान किये हुए शर्तिया आराम हो। आप भी अपने घर में हमेशा एनासिन रखिए।

१२ नये पैसे की एक पुड़िया

'एनासिन' चार दवाइयों का नुस्ख़ा

Registered User :
GEOFFREY MANNERS & COMPANY PRIVATE LTD.

WILL NOT UPSET THE STOMACH — DOES NOT HARM THE HEART

ANACIN
TRADE MARK REGISTERED.
TABLETS
EACH CONTAINING
QUININE SULPHATE 1 gr.
ACETIL-SALICYLIC ACID 3 gr.
PHENACETIN 3 gr. CAFFEINE 1 gr.

FOR HEADACHE, COLDS, FEVER, TOOTHACHE & MUSCULAR PAINS

DOSAGE 2 TABLETS WITH WATER. REPEAT ONE TABLET IN THREE HOURS IF NEEDED.

CONTENTS 2 TABLETS

Made in India by
GEOFFREY MANNERS & COMPANY PRIVATE LIMITED
MAGNET HOUSE, DOUGALL ROAD, BOMBAY
Trademark Proprietors
WHITEHALL PHARMACAL COMPANY, NEW YORK, U.S.A.

H.90 A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बयार वह रही थी और वे लोग तेजी के साथ दक्षिण की ओर बढ़े जा रहे थे। मार्ग भी अब इतना ऊबड़-खाबड़ नहीं रहा था; इसलिए उनके चलने की गति भी बढ़ गयी थी।

परंतु सबसे बड़ी बात जो हुई, वह यह कि, उनके कुत्ते एकदम बेहाल हो गये। चढ़ाई के कारण उन्हें काफी कष्ट सहन करना पड़ा था। पता नहीं क्यों, उन्हें भूख भी अधिक लगने लगी थी। जितना 'पेमीकन' उन्हें नित्य मिलता था, अब उसमें उनका पेट नहीं भर पाता था। इसलिए हर वक्त वे कुछ-न-कुछ सूंघने की चेष्टा ही करते रहते थे। उनकी नीयत हर वस्तु को निगल जाने की होने लगी थी। भोजन का मोह इतना बढ़ चुका था कि, वे हर वस्तु को चबाने लग जाते थे—यहाँ तक कि, अब वे चमड़े की वस्तुएँ भी चबाने लगे थे। एमंडसेन ने जल्दी ही इस बात का पता लगा लिया और फिर कुत्तों की निगरानी की जाने लगी। अब वे गाड़ियों के फीते भी चबाने का प्रयत्न करने लगे थे। उनके इस कार्य का परिणाम बड़ा भयंकर हो सकता था। अगर गाड़ियों के फीते कट या गल जाते, तो उनका हर भाग अलग-अलग हो सकता था। और फिर, ये गाड़ियाँ यात्रा के लिए आवश्यक थीं। उनके बिना एक नयी मुसीबत सामने आ खड़ी होती। एमंडसेन ने इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा कि, कुत्ते गाड़ियों के फीते न चबाने पायें। संध्या को जब कहीं भी तम्बू गाड़ा जाता, तो गाड़ियों को हिम से ढंक दिया जाता। इस प्रकार गाड़ियों की सुरक्षा का अच्छा प्रबंध हो गया; क्योंकि कुत्तों ने हिम की परतों को हटाने की चेष्टा तनिक भी नहीं की।

डा० फुक्स

हिलेरी के बाद २० जनवरी को डा० फुक्स भी दक्षिण-ध्रुव पर पहुँच गये हैं।

वैसे कुत्ते भी कम समझदार न थे। पर्वतारोहियों के भोजन पर उन्होंने कभी भी मुँह न डाला। वे डिब्बों को सूंघने का प्रयत्न जरूर करते थे; लेकिन जब तक उनको खाने के लिए उनका 'पेमीकन' नहीं दिया जाता था, वे शांत रहते। किंतु जैसे ही डिब्बे का ढक्कन हटाया जाता था, वे उस पर बाज की भाँति टूट पड़ते थे। इस पर भी उनकी भूख जब शांत न होती, तो वे और कुछ सूंघने का प्रयत्न भी करने लगते थे।

दोहपर को भूरे रंग के बादलों का घना आवरण कुछ हल्का हुआ, तो उन्होंने दूर तक देखने का प्रयास किया। क्षितिज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल पक रहे हैं?

लोमा इस्तेमाल कीजिये व अपने प्राकृतिक सौंदर्य को फिरसे पाइये।

लोमा बालोंको प्राकृतिक ढंग से श्याम बनाने के लिए जगभर में प्रसिद्ध है व अब वह मुहरबंद ढकनवाली विशेष रूपसे बनी शीशीमें मिलता है।

लोमा REGD.

लोमा एजन्ट्स : एम. एम. खम्भातवाला, अहमदाबाद १
एजन्ट्स : सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी,
मंगलदास रोड, बम्बई २, फोन : ३०५७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी थोड़ा दिखायी देने लगा था। इस समय, वे लोग अपनी आँखों को मल-मल कर इस प्रकार देख रहे थे कि, कुछ ही क्षण पूर्व उनकी आँख खुली हो! लगातार मंद-मंद प्रकाश रहने के कारण उनकी आँखें भी उसकी अभ्यस्त हो गयी थीं। इसलिए जैसे ही प्रकाश की मात्रा बढ़ी, तो उन्हें चौंध अनुभव होने लगा। लेकिन सूर्य के पूर्णरूपेण स्पष्ट होने से पूर्व ही, बादलों का झुंड पुनः घिर आया।

क्षितिज और सूर्य का परिधि-खंड जानना, उनके लिए अत्यंत आवश्यक था; क्योंकि तभी अक्षांश निर्धारित किया जा सकता था। ८६·४७° अक्षांश (दक्षिण) के बाद, उन्होंने कोई अनुमान ही न किया था और यह भी कहना कठिन था कि, कब अवसर मिलने की सम्भावना थी। अभी तक मौसम उनके अनुकूल न रहा था। यद्यपि सम्भावना कम ही थी, फिर भी वे लोग दिन के ११ बजे सूर्य-दर्शन के लिए ठहर गये। शायद सूर्य उन पर कृपा कर दे। कृत्रिम क्षितिज के आधार पर एक तरफ हसेल और विस्टिंग और दूसरी तरफ़ हेंसेन और एमंडसेन 'सेक्सटेंट' यंत्र के द्वारा दूरी मापने का प्रयत्न करने लगे।

इस प्रकार सूर्य की प्रतीक्षा उन लोगों ने कभी न की थी। काफ़ी प्रतीक्षा के बाद जब कहीं सूर्य के दर्शन हुए, तो उसका प्रकाश बहुत मंद था। बादलों का झुंड अब भी उसके आसपास मंडरा रहा था। परंतु जब वे लोग अपना कार्य समाप्त कर चुके, तो आशा के विपरीत सूर्य अभी तक चमक रहा था। फिर वे अपने यंत्रों को रख कर अनुमान लगाने में व्यस्त हो गये। उनके चेहरों से उत्तेजना का भाव स्पष्ट झलक रहा था और वे अपनी अब तक की यात्रा का परिणाम जानने के लिए उत्सुक हो उठे थे। काफी देर तक जोड़ना और घटाना ही चलता रहा और जब परिणाम निकला, तो वे एकदम चौंक उठे। उनके अनुमान और गणना में कोई भी अंतर न था। उनका अनुमान भी ८८·१६° अक्षांश (दक्षिण) था। जब तक सूक्ष्म रूप से गणना न कर ली जाये, आगे, बढ़ना अनुचित ही प्रतीत होता है। फिर उन्होंने जल्दी-जल्दी दो-एक बिस्कुट खाये और आगे बढ़ने लगे।

उस दिन का कार्य और दिनों की तुलना में काफी महत्वपूर्ण था। वे उस स्थान की ओर कदम बढ़ा रहे थे, जहाँ कभी मनुष्य के कदम ही न पड़े थे। उन्होंने अपना रेशमी ध्वज भी लहराने के लिए तैयार कर लिया था और उसे दो तख्तियों के साथ बाँध कर हेंसेन की गाड़ी में रख दिया था। एमंडसेन ने उसे यह भी बता दिया था कि, जैसे ही ८८.२३° अक्षांश आये, वह ध्वज को लहरा दे। शेक्लेटन बस यहीं तक पहुँच पाया था। उसने सन् १९०८ में दक्षिण-ध्रुव पर पहुँचने का पहला प्रयास किया था। उसके तीन वर्ष बाद, कप्तान स्काट ने अपनी यात्रा आरम्भ की थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुण और उपयोग में सबसे बढ़िया

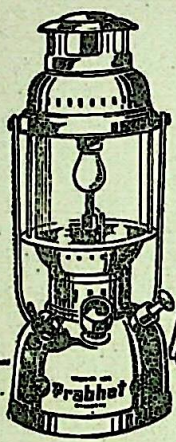

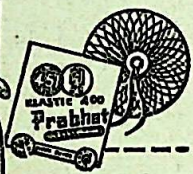

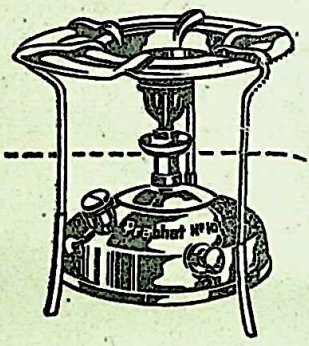

दस में से नौ गृहस्थ

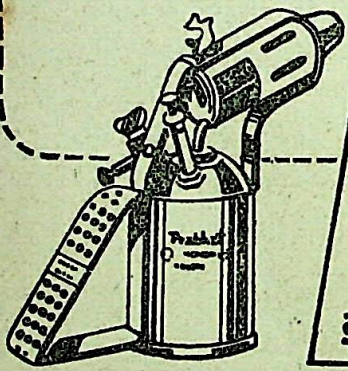

प्रभात

- स्टोव
- लालटैनें
- मैण्टल
- ब्लो लैम्प

इस्तेमाल करते हैं

प्रभात (स्टोव और लैम्प) प्राडक्टस् कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
नोबल चैम्बर्स, पारसीबाज़ार स्ट्रीट, बंम्बई - १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शक्लेटन और स्काट दोनों ने ही कवि-हृदय पाया था। लेकिन हिम-खंडों के सौंदर्य ने उन पर ऐसा जादू किया कि, उनके मुँह से बोल ही न निकल सके। वे ठगे-से प्रकृति की लीला को निहारते रहे और जब उन्होंने कुछ कहना चाहा, तो उनको ऐसा अनुभव हुआ कि, उनके पास उस सौंदर्य का वर्णन करने के लिए उचित शब्दों का अभाव है। सम्भवतया भविष्य में भी कदाचित् ही कोई इस सौंदर्य को शब्दों में बाँध सके।

एमंडसेन और उसका दल उसी प्रकार आगे बढ़ता रहा अब उनका हर काम मशीन की तरह हो रहा था। उनके हृदय में उत्साह की मात्रा प्रतिपल बढ़ रही थी और वे अपने लक्ष्य की ओर अबाध गति से चलते जा रहे थे। एमंडसेन की दशा औरों से कुछ भिन्न हो गयी थी। वह दिवा-स्वप्न देखने में उलझ गया था। ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ रहे थे, एमंडसेन का मन दूर-दूर की उड़ानें भरने लगता था। पर उसके कदम नपे-तुले ही बढ़ रहे थे। वह सबसे आगे था। अन्य लोग उसके पीछे आ रहे थे; लेकिन जिस समय एमंडसेन की तंद्रा भंग हुई, तो सब लोग आह्लाद से चीख रहे थे और आगे वाली गाड़ी पर नार्वे का ध्वज लहराने लगा था। सर्वत्र हिम-ही-हिम था। श्वेत हिम के बीच वह रेशमी ध्वज बड़ा भला प्रतीत हो रहा था। ८८·२३° अक्षांश निकल गया था और अब वे लोग उस स्थान पर पहुँच गये थे, जहाँ उनसे पहले किसी मनुष्य ने कदम नहीं रखा था।

चढ़ाई

बर्फ के पहाड़ पर चढ़ता हुआ हिलेरी का केमरा-मैन—रावर्ट राबिंसन [चित्र : सेमुएल फाक्स-निर्मित एक रेखाचित्र]

खुशी के मारे एमंडसेन की आँखों में आँसू छलछला आये। थोड़ी देर तक वह निर्निमेष दृष्टि से ध्वज की ओर ताकता रहा। वह भावनाओं के वेग को सम्भालने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था। फिर वह धीरे-धीरे अपने साथियों के पास पहुँचा और उसने उन्हें बधाई दी और सभी ने एक-दूसरे से हाथ मिलाये। यह उनके सहयोग का ही परिणाम था कि, वह स्थान उनके कदमों के नीचे आ सका था। लेकिन अभी तो उन्हें और भी आगे बढ़ना था।

दक्षिण-ध्रुव-अभियान के इतिहास में सर शक्लेटन का नाम भी स्वर्णाक्षरों में सदा के लिए लिखा जा चुका है। वे अपने लक्ष्य से कुछ ही पीछे अपने देश का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं!

खेलना कूदना तंदुरुस्ती के लिये जरूरी है — पर खेल कूद हो या काम काज हम गंदे जरूर हो जाते हैं।

गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं, जिन से हमारी तंदुरुस्ती को खतरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के कीटाणुओं को धो डालता है और आप की रक्षा करता है।

हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये और गंदगी के कीटाणुओं से अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये—यह आप के शरीर को ताज़गी देता है!

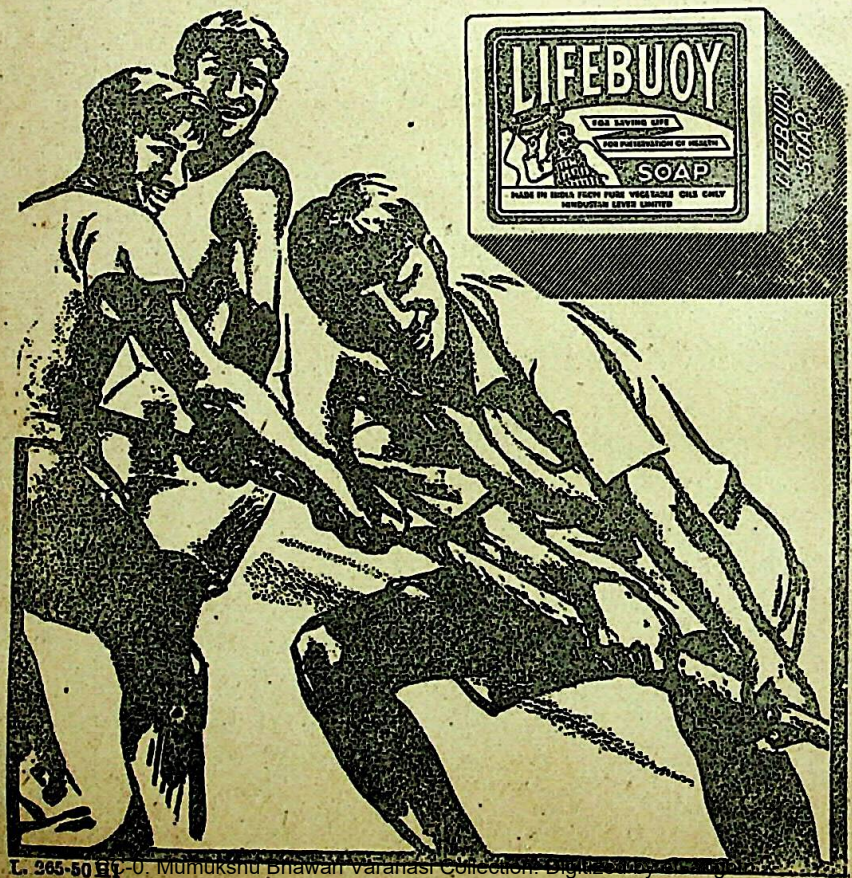

L. 265-50 BG
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्वज लहराने में सफल हो सके थे। एमंडसेन और साथियों ने श्रद्धा से अपने सिर झुका दिये। फिर उन्होंने अपने केमरों को बाहर निकाल लिया और वहाँ के अपूर्व दृश्यों को 'रीलों' पर अंकित कर लिया।

फिर वे और आगे बढ़े तथा ८८·२५° अक्षांश में उन्होंने तम्बू गाड़ दिया। मौसम अब तक कुछ सुधर गया था। बाद में, उसमें और भी सुधार होता चला गया। चारों ओर शांति का वातावरण व्याप्त था। ०.४° फेरनहीट तापक्रम पर भी मौसम में उष्णता का आभास हो रहा था। तम्बू के अंदर तो और भी अधिक उष्णता अनुभव हो रही थी।

तम्बू में बैठे वे काफी देर तक विचार करते रहे। उन्होंने निश्चय किया कि, उस स्थान पर एक गोदाम स्थापित कर दिया जाय; क्योंकि गाड़ियों का भार हल्का करना आवश्यक हो चला था। भार कम होने से काफी लाभ की सम्भावना थी। गोदाम की स्थापना का भी लाभ था; क्योंकि उससे एक ऐसा चिह्न निर्माण हो सकता था, जिसे देख कर आसानी से मार्ग का पता लगाया जा सकता था।

अगले दिन तक वे गोदाम के निर्माण और चिह्नों के अंकन में व्यस्त रहे। हेंसेन के कुत्ते सचमुच ही बड़े विकट थे। उन पर किसी प्रकार का भी प्रभाव न हुआ था। वैसे वे कुछ-कुछ दुबले जरूर हो गये थे; लेकिन उनकी शक्ति में तनिक भी अंतर न पड़ा था। इसलिए यह भी निश्चय किया गया कि, हेंसेन की गाड़ी को बिल्कुल न छेड़ा जाये। और शेष दोनों गाड़ियों का बोझ हल्का कर दिया जाये। फिर दोनों गाड़ियों से लगभग २२० पौंड वजन कम हो गया। वहाँ का हिम इस योग्य न था कि, किसी अनूठे स्मारक का निर्माण सम्भव हो सकता, फिर भी उन्होंने एक स्मारक तयार कर डाला। उन्होंने 'पेमीकन' और बिस्कुटों का काफी भाग वहाँ छोड़ दिया। अब उनकी गाड़ियों पर लगभग एक मास के लिए सामग्री शेष रह गयी। संयोग से, यदि उनकी सामग्री जल्दी भी समाप्त होने लगती, तो वे अपने गोदाम तक वापस लौट सकते थे। तख्तों की सहायता से उन्होंने चिह्न भी अंकित कर दिये थे। तख्तों का रंग काला था और हर तख्ते के बीच में सौ कदमों का फासला छोड़ दिया गया था। साथ ही हर तख्ते के सिरे पर काले कपड़े का एक-एक टुकड़ा भी बाँध दिया गया था। जो तख्ते पूर्व दिशा की ओर थे, उन पर और चिह्न अंकित कर दिये गये थे, जिससे उन्हें देखने-मात्र से ही ज्ञात हो सके कि, वे गोदाम के पूर्व में हैं। लेकिन जो तख्ते पश्चिम दिशा की ओर थे, उन पर कोई चिह्न न लगा था।

पिछले दिनों की उष्णता के कारण उनके शरीर पर पपड़ियाँ पड़ गयी थीं। उनके चेहरे बड़े अजीब लगने लगे थे। दक्षिण-पूर्वी तूफान के कारण एमंडसेन और हेंसेन के अलावा एक और साथी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोरहन्स

टूथपेस्ट

अनेक महत्वपूर्ण तरीकों से बेहतर है!

१ मसूढ़ों के लिए बेहतर: सूनी, नर्म, जलनेवाले व कमजोर मसूढ़ों पर फोरहन्स टूथपेस्ट धीरे-धीरे मलनी चाहिए। वे जल्द ही पहले जैसे मजबूत व स्वस्थ हो जायेंगे। फोरहन्स ही एकमात्र ऐसी टूथपेस्ट है जिसमें डा. आर. जे. फोरहन की पायोरियानाशक खास पौष्टिक दवा मौजूद है। यही वजह है कि वह आपकी मसूढ़ों की बीमारियों से होनेवाले नुकसान से बेहतर रक्षा करती है।

२ दान्तों के लिए बेहतर: रोजाना फोरहन्स टूथपेस्ट से दान्त साफ करने पर दान्तों को गलाने वाले रोगाणु प्रभावशाली ढंग से नष्ट होते हैं क्यों कि इसमें विशेष पौष्टिक दवा है। भारत में हालही मे हुई फोरहन्स प्रतियोगिता में ४५ से ९३ साल की उम्रवाले प्रतियोगी शामिल हुए थे जिनके सारे दान्त अब भी मजबूत व स्वस्थ हैं। उन्होंने यही बताया कि रोजाना फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने से उन्हें यह लाभ हुआ।

३ सांस के लिए भी बेहतर: फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने से मुंह बिल्कुल स्वच्छ होता है – मुंह से बदबू भी नहीं आती। यह न भूलिये कि सचमुच के ही साफ सांस के लिए जीभ व तालु का स्वच्छ रहना जरूरी है। थोड़ी-सी फोरहन्स अपनी जीभ पर रखिये व ब्रश या उंगली से उसे हल्के-हल्के साफ किजिये; फोरहन्स टूथपेस्ट दान्तों में फंसे हुए भोजन के सारे कणों व रोगाणुओं को फौरन हटा देगी।

४ मुस्कान के लिए भी बेहतर: फोरहन्स टूथपेस्ट इतनी नर्म है जैसे कि मलाई जो दान्तों के रंग को खराब किये बिना उन्हें प्राकृतिक रूप में चमकाती है। दान्तों के नियमित आरोग्य से ही आप की मुस्कान चमकदार बन सकती है। रोजाना फोरहन्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कीजिये।

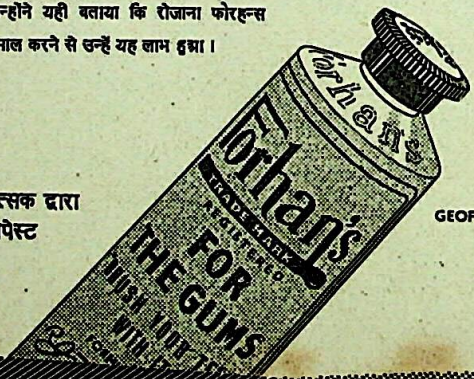

दन्तचिकित्सक द्वारा
निर्मित टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO.
PRIVATE LTD.

H 113

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के चेहरे भयानक हो उठे थे। चेहरों का बाँया भाग बड़ा घिनौना हो गया था और वे लफंगों-जैसे लगते थे। उस समय यदि उन लोगों के निकट-सम्बंधी भी उन्हें देखते, तो कदाचित ही पहचान पाते। बाद में, इन घावों के कारण उन्हें और भी तकलीफ का सामना करना पड़ा। हवा में तनिक भी तेजी आती कि, उन्हें अनुभव होने लगता, जैसे कोई तेज चाकू से उनके माँस को काटने लगा हो। इन घावों के भरने में भी बड़ा समय लगा। तीन मास बाद, जब वे लोग होबार्ट पहुँचे, तब भी हेंसेन अंतिम पपड़ी को उतारने की चेष्टा कर रहा था।

९ दिसम्बर भी चमकते हुए सूर्य और साफ मौसम के साथ उदय हुआ। तापक्रम १८.४° फेरनहीट रहा और ज्यों ही हवा में तेजी आयी कि, उनके घाव दर्द करने लगे। परंतु किया भी क्या जा सकता था। परिस्थिति का मुकाबला करना उन्हें खूब आता था। फिर उन्होंने प्रकाश-स्तम्भों को प्रज्ज्वलित कर लिया। ये प्रकाश-स्तम्भ उतने बड़े नहीं थे, जितने कि, उन्होंने वेरियर में बनाये थे। इस बात का अनुमान उन्होंने पहले ही कर लिया था, मात्र तीन फुट ऊँचे प्रकाश-स्तम्भ काफी रहेंगे। उनकी सहायता से हिम की किस्म सरलता से जानी जा सकती थी। ८८.२५° के दक्षिण में अच्छे हिम का मिलना नितांत असम्भव था। वहाँ तम्बू का ६ फुट लम्बा बाँस बिना किसी रुकावट के अंदर घुस जाता था। प्रकट था कि, वहाँ हिम की कड़ी परत न थी।

अब उनका हर कदम, उन्हें ध्रुव के निकट ले जा रहा था। १४ दिसम्बर के दोपहर तक वहाँ पहुँच जाने की पूरी सम्भावना थी। अब वे पहुँचने के समय के बारे में ही चर्चा कर रहे थे। एमंडसेन के चेहरे पर अनोखी गम्भीरता का भाव उभरन लगा था। सभी के चेहरों पर उत्तेजना के लक्षण थे; किंतु मानने के लिए कोई भी तैयार न हो रहा था। ध्रुव पर पहुँचते ही दिखायी क्या देगा? इस प्रश्न ने अब उनके मस्तिष्क में जन्म ले लिया। और, वे उस स्थान की कल्पना करने लगे। वह स्थान एक अंतहीन मैदान होगा, जहाँ अभी तक किसी मनुष्य के भी कदम नहीं पड़े. . . . नहीं, अभी यह नहीं कहा जा सकता। लेकिन जिस गति से वे आगे बढ़े थे, उसके अनुसार उनको ही सब से पहले पहुँचना चाहिए था। संदेह की कोई बात नहीं थी और थी भी।

एमंडसेन चुपचाप आगे बढ़ रहा था। जब वह अपने एक साथी की गाड़ी के पास से गुजरा तो साथी ने कहा—"यह उरोआ क्या सूंघ रहा ह?" उस कुत्ते के अलावा अब और भी कुत्ते अपनी नाकों को ऊपर उठा कर दक्षिण दिशा की ओर कुछ सूंघने का प्रयत्न करने लगे थे। सम्भवतया उस ओर कोई असाधारण बात जरूर थी।

८८.२५° अक्षांश (दक्षिण) से बैरो-मीटर' और 'हिप्सोमीटर' इस बात का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीका की सबसे कठिन रेस

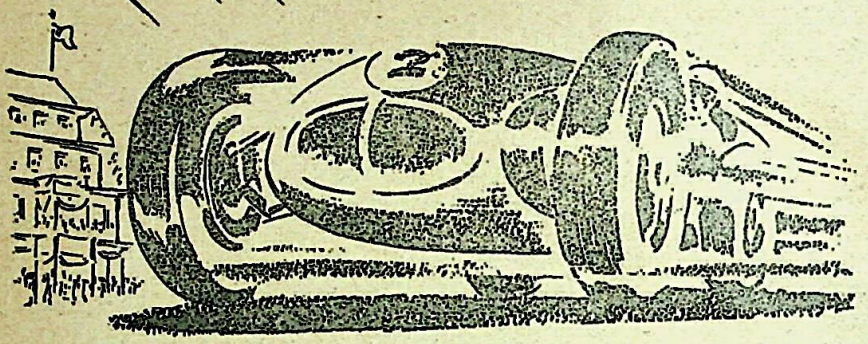

सुरक्षित मोटरचालन के टायर का प्रमाण

लगातार ३४ वर्षोंसे, प्रसिद्ध इण्डियानापॉलिस "५००" रेस फायरस्टोन टायरों के जरिए जीती जा रही है। इन फायरस्टोन टायरों में रेस जीतने की अंदरूनी मजबूती जिस कार्य-कुशलता व किस्म संबंधी नियंत्रण से बनी है वे ही आपके 'फैमिली कार' टायरों को बेजोड सुरक्षावाले बनाते हैं।

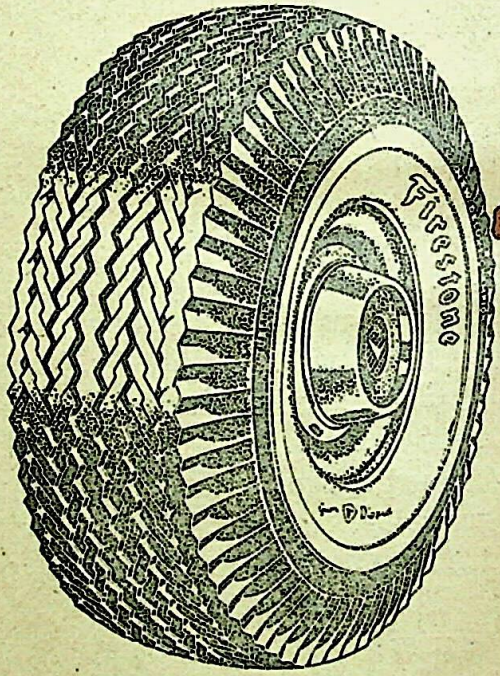

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन

टयूबरहित या टयूबसहित

टायर जिससे मानसिक शांति बनी रहती है

I 55B

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पष्ट संकेत करने लगे थे कि, आगे उतार आ रहा था। इससे उन्हें आश्चर्य होने के अलावा सुख की अनुभूति भी हुई। ९ दिसम्बर को अनुमान और गणना में मात्र एक मील का अंतर रहा। १० दिसम्बर को भी यही परिणाम निकला। अब गणना और अनुमान में केवल दो किलोमीटर का अंतर प्रतीत हुआ। मौसम में कोई विशेष परिवर्तन न हुआ था। दक्षिण-पूर्व की ओर से मंद बयार बह रही थी और ताप-क्रम–१३° फेरनहीट था। एक बार तो अनुमान और गणना में बिल्कुल भी अंतर न रह गया। उसके अनुसार वे ८९.१५° अक्षांश (दक्षिण) में थे। और, फिर १२ दिसम्बर को ८९.३०° अक्षांश में पहुँचने पर गणना और अनुमान में मात्र एक किलोमीटर का अंतर ही रह गया।

१३ दिसम्बर दोपहर को अनुमान के अनुसार ८९.३७° अक्षांश (दक्षिण) था और गणना से ८९.३८·५° होता था। लगभग भौगोलिक आठ मील चलने के बाद, वे लोग विश्राम के लिए ८९.४५° अक्षांश (दक्षिण) में ठहर गये। यह अक्षांश गणना के अनुसार निकाला गया था।

दोपहर से पूर्व मौसम में कोई अंतर न पड़ा था। वह पहले जैसा ही सुहाना था; लेकिन बाद में दक्षिण-पूर्व की ओर से हिम की बौछारें आरम्भ हो गयी। परंतु फिर भी उस रात को उन्हें बहुत खुशी अनुभव होती रही। जैसे कि, अगले दिन कोई त्योहार आने वाला हो। एक महान क्षण निकट आता जा रहा था, जिसकी प्रतीक्षा में उन्होंने अपने प्राणों का मोह भी त्याग दिया था। उस रात एमंडसेन की कई बार नींद टूटी और वह विचित्र स्वप्न देखता रहा। जब वह बच्चा था, तो 'क्रिसमस' का इंतजार भी इसी तरह किया था।

१४ दिसम्बर को मौसम एकदम साफ हो गया। शायद प्रकृति को उन लोगों के प्रति सहानुभूति होने लगी थी। उन्होंने उस दिन जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और तम्बू के बाहर निकल आये। और दिनों की भाँति आज भी उन्होंने अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। दोपहर तक वे ८९.५३° अक्षांश में जा पहुँचे। लगभग दस बजे से ही दक्षिण-पूर्व की ओर से हवा चलने लगी थी, अतः वे दोपहर को अक्षांश ज्ञात न कर सके। ऊपर हल्के बादलों ने घेरा डाल दिया था। कभी-कभी सूर्य भी चमक उठता था। आज उन्हें आगे बढ़ने में काफी तकलीफ हो रही थी; लेकिन वे रुकने का नाम न ले रहे थे। ठीक मशीन की भाँति उनका हर कदम उठ रहा था।

तीन बजते-बजते वे अपनी मंजिल के निकट जा पहुँचे। और, फिर थोड़ी ही देर में उनके कदम दक्षिण-ध्रुव को नाप रहे थे। यद्यपि निश्चित स्थान का पता लगाना उस समय कठिन हो रहा था; लेकिन कुछ ही मीलों का अंतर कोई विशेष महत्व न रखता था। लेकिन फिर भी वे अपनी आत्मा को संतुष्ट करना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेतन आनंद के चित्र "अंजलि", की तारिका

शीला रामाणी कहती हैं

"मैं हमेशा लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूँ
—यह शुद्ध भी है और सफ़ेद भी!"

शीला रामाणी को बालपन ही से नाचने और स्वांग भरने का शौक़ था।

हंसमुख, चंचल शीला जानती हैं कि चित्र तारिका के लिये मनोहर रंग रूप कितना ज़रूरी है!—"इसी लिये मैं हमेशा शुद्ध और सफ़ेद लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूँ।"

संसार भर की सुंदर स्त्रियों की तरह आप भी शुद्ध, सफ़ेद और सुगंधित लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल कीजिये।

लक्स टॉयलेट साबुन

चित्र-तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहते थे। वहाँ रुक कर उन्होंने एक-दूसरे को बधाई दी और एमंडसेन के आग्रह पर सभी ने मिल कर ध्वज को लहराया। फिर स्नेह और गर्व से पूरित निगाहें उस ध्वज पर जम गयीं। वह किसी एक का कार्य न था। वह ऐतिहासिक घटना सभी के सहयोग से घटी थी। एमंडसेन का सपना साकार हो गया था। प्रथम बार भौगोलिक दक्षिण-ध्रुव पर ध्वज लहरा दिया गया था।

एमंडसेन ने मन-ही-मन कहा—"हे प्रिय ध्वज! हम तुझको दक्षिण-ध्रुव पर गाड़ रहे हैं और इस भूखंड का नामकरण सातवें हाकून बादशाह के नाम पर करते हैं।"

और, फिर उन्होंने अपना तम्बू वहाँ गाड़ दिया। तम्बू के गड़ जाने पर हेंसेन उठा और उसने हेल्गे का वध कर डाला। हेंसेन को अपने प्रिय साथी से बिछुड़ने का बड़ा दुःख हुआ। वह सुबह से शाम तक बिना किसी प्रकार की अड़चन के गाड़ी को खींचता रहता था। लेकिन पिछले सप्ताह से उसकी दशा बिगड़ने लगी थी। ध्रुव पर पहुँचते-पहुँचते उसकी हालत और भी बिगड़ गयी थी और वह काम भी कम करने लगा था। उठारह कुत्तों में से यह यह दूसरा कुत्ता था, जो उनसे बिछुड़ गया था। अब सोलह कुत्ते शेष रह गये और उन्होंने उन्हें दो दलों में विभाजित कर दिया।

उस संध्या को तम्बू में काफी रौनक रही। यद्यपि वहाँ 'शेम्पेन' तो उपलब्ध न हो सकती थी; किंतु सील-गोश्त से ही उन्होंने संतोष कर लिया। वह भी वैसे कम स्वादिष्ट न था। अंदर बैठे जब वे गोश्त चख रहे थे, बाहर उनका रेशमी ध्वज फरफरा रहा था। और, दिनों की भाँति आज वे लोग गुमसुम नहीं बैठे रहे। काफी देर तक अनगिनती के विषयों पर चर्चा होती रही। उन्होंने मन-ही-मन अपने-अपने घरों को संदेश भी भेजे।

और, फिर अपनी-अपनी वस्तुओं पर 'दक्षिण-ध्रुव' लिखने का काम शुरू हो गया। साथ में तारीख लिखना भी वे न भूले। क्योंकि अब वे ही वस्तुएँ उनके पास स्मृति-चिह्नों के रूप में रह जाने वाली थीं। चिह्नों के अंकित करने में विस्टिंग कमाल दिखा रहा था। बहुत दिनों से उन लोगों ने तम्बाकू न पिया था। तम्बाकू के छल्ले ऊपर की ओर न छोड़े गये थे? वैसे कभी-कभी सुर्ती का उपयोग तो हो गया था। एमंडसेन के साथ तम्बाकू पीने का पाइप भी था। जब उसने पाइप को बाहर निकाला, तो विस्टिंग ने अप्रत्याशि रूप से उसके सामने तम्बाकू पेश कर दिया। उसके थैले में थोड़ा तम्बाकू रखा हुआ था। और अब वह यह चाहता था कि, एमंडसेन उसका धुआँ बना कर उस हिम-प्रदेश में उड़ा दे।

दोपहर को अक्षांश निर्धारित न किया जा सका था; इसलिए अब आधी-रात को उसका निर्धारण होना आवश्यक था। मौसम भी एकदम साफ हो चुका था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगभग ग्यारह बजे, वे अपने-अपने थलों से बाहर निकल पड़े। इससे अच्छा अवसर फिर हाथ न आ सकता था। और, फिर परिणाम बड़ा ही दिलचस्प निकला। १२.३० पर उन्होंने अपने यंत्रों को एक ओर रख दिया और संतोष की साँस ली। परिणाम ८९·५६ अक्षांश (दक्षिण) पाकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

दो दिनके बाद, १७ दिसम्बर को उन्होंने लौटने की तैयारी कर दी। अब तक उनका एक साथी बिल्कुल भी न बोला था; किंतु आज वह भी खूब चहक रहा था। जैसे वह कोई अच्छा वक्ता हो। भाषण के अंत में, उसने जब अपनी जेब से सिगारों का डिब्बा निकाला तो सभी चौंक पड़े। ध्रुव पर सिगार पाकर उनका रोमांचित हो उठना स्वाभाविक ही था।

फिर उन्होंने अपने तम्बू को वहीं छोड़ दिया। तम्बू के सिरे पर नार्वे का ध्वज लहरा रहा था और तम्बू में थोड़ा-सा सामान पड़ा था। मार्ग लम्बा था और बीच में कोई भी अप्रिय घटना घट सकती थी। अतः उन्होंने अपनी यात्रा का वृतांत भी लिख कर तम्बू में छोड़ दिया था और उसका द्वार मजबूती से बंद कर दिया था, ताकि हवा अंदर की किसी वस्तु को खराब न कर सके।

अंत में, उन्होंने दक्षिण-ध्रुव को नमस्कार किया और गम्भीरता के साथ वापस लौट पड़े। कदम-कदम कर के उनका मार्ग तय होने लगा और शीघ्र ही उन्हें अपने पुराने निशान मिल गये। लेकिन जब तक उन्हें अपना ध्वज दिखायी देता रहा, वे मुड़-मुड़ कर पीछे की ओर देखते रहे थे। धीरे-धीरे जब हिम उड़ने लगा, तो उन्हें ध्वज का दिखायी देना बंद हो गया था।

और, इस प्रकार वह वीर एमंडसेन अपने देश का ध्वज दक्षिण-ध्रुव पर लहरा कर लौट आया।

उसके जाने में किसी प्रकार का स्वार्थ न छिपा था। लेकिन वह दिन भी दूर नहीं है, जब कि लोग स्वार्थों के कारण दक्षिण-ध्रुव की यात्रा करेंगे। धनार्जन के दृष्टिकोण से भी इस स्थान का महत्व काफी है। यहाँ कोयले का अक्षय भंडार है। कोयले के अलावा और भी अनेक खनिज-पदार्थ—चट्टानों की परतों में छिपे पड़े हैं। अभी यातायात के साधन की समस्या हल नहीं हो पायी है इसलिए लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हो पा रहा है, अन्यथा वहाँ एक पूरी बस्ती ही बस गयी होती।

दक्षिण-ध्रुव को अन्न-प्रशीतक के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है। विश्वास कीजिये, यहाँ अन्न किसी भी दशा में नष्ट नहीं हो सकता। इस सब के अलावा, प्रकृति की कला का जो उत्कृष्ट रूप यहाँ देखने में आता है, विश्व के किसी भी कोने में दृष्टिगोचर नहीं हो सकता। लगता है कि, काव्य, संगीत और शिल्प तीनों का ही सामंजस्य दक्षिण-ध्रुव के हिम-शिखरों पर हो गया है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

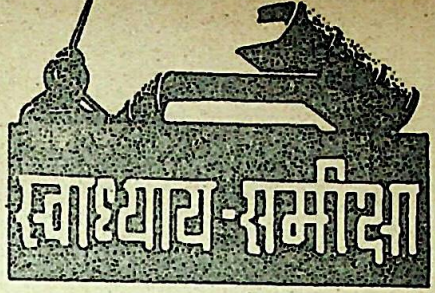

स्वाध्याय हमारा यहाँ यज्ञ है। अरबी में भी प्रसिद्ध है कि, 'अच्छी किताब पढ़ना खुदा की इबादत का दूसरा नाम है।' लेकिन संताप की बात यह है कि, आज बुरी किताबें ही ज्यादा पढ़ी जा रही हैं—रुचि-भ्रष्ट करनेवाले साहित्य की ऐसी बाढ़ हमारे बीच बह रही है कि, सुसाहित्य की जड़ें ही उखड़ने लगी हैं। इस दुःस्थिति का अवरोध हम सबका कर्तव्य है। अपने पाठकों के इसी प्रकार के आग्रह को स्वीकार करते हुए 'नवनीत' इस नये स्तम्भ का आरम्भ कर रहा है। यहाँ हम प्रति मास विश्व के साहित्योद्यान के नित्य-नये खिलते फूल अपने पाठकों के स्वाध्याय के निमित्त प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

★

'आटोबाइग्राफी आव ए योगी'—(योगी की आत्म-कथा) इस मास के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशनों में से है। इस पुस्तक के लेखक परमहंस योगानंद बीसवीं सदी के महान् योगियों में से थे। ७ मार्च, सन् १९५२ में उन्होंने यह कहते हुए 'महासमाधि' ग्रहण की थी—"सत्य की परम सत्ता का यह जो स्वरूप मैं अपनी सहस्र-सहस्र आँखों से देख रहा हूँ, वह प्रेम का ही तो विराट् सरोवर है। मैं इसके प्रत्येक अणु से यह वाणी सुन रहा हूँ—'प्रेम ही है यह सब प्रकाश, जो प्राण का चैतन्य बनकर मिट्टी के प्रत्येक कण को जीव की संज्ञा दे रहा है? मेरे भूतलवासी बंधुओ, सब को त्याग कर प्रेम को पकड़ो। जीवमात्र जिस डोर से बँधा है, वह शाश्वत डोर ही थामने योग्य...है...!" सारी पुस्तक मानो इसी अनुभूति तक पहुँचने की मील-प्रतिमील की यात्रा है, जिसे लेखक ने अपना समस्त मर्म उड़ेलकर लिखा है।

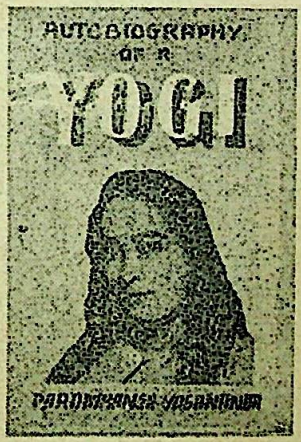

भारत में 'योग' की साधना के पश्चात् योगानंदजी तीस वर्ष तक अमेरिका के प्रवासी रहे थे। इन तीस वर्षों में उन्होंने भारतीय योग-विद्या और वेदांत का पाश्चात्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देशों में अथक प्रचार किया। स्वामी विवेकानंद के बाद पूर्व-पश्चिम के अध्यात्म-सेतु योगानंदजी ही रहे। थामस मान-जैसे विचारक ने उनकी यह आत्मकथा पढ़कर जो उद्गार व्यक्त किये थे, उन्हें अपने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हम इस पुस्तक को पढ़ने की सिफारिश करते हैं—"परमहंस की यह पुस्तक आज के आस्था-भंग मानव के नाव की बड़ी विश्वसनीय पतवार है।" पुस्तक की कीमत १६ रु० ६२ नये पैसे है। मिलने का पता है—राइडर एंड कम्पनी, लंदन। अथवा किसी भी अच्छे बुकसेलर के द्वारा मँगायी जा सकती है।

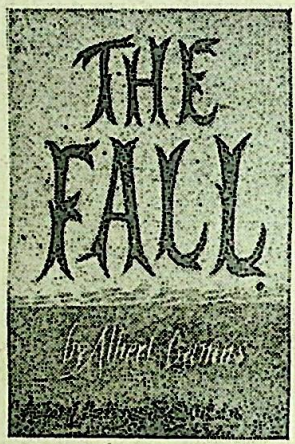

'द'फाल'—(पतन) इस वर्ष के नोबेल-पुरस्कार-विजेता फ्रेंच-साहित्यकार एल्बर्ट कामू की नयी कृति है। सारी पुस्तक आत्म-निवेदन की शैली में लिखी गयी है। अहम् और पाखंड के पूर्ण प्रतीक आज के समाज के एक ऐसे व्यक्ति के मुख से सारी कथा कहलवायी गयी है, जो आत्म-ग्लानि से विदग्ध होकर बार-बार पादरी के पास स्वीकारोक्ति करने जाता है और हर बार मन की विकृतियों को दोहराता जाता है। इस पुनरावृत्ति में कितना हाथ उसका स्वयं का है और किताना प्रचलित समाज-व्यवस्था का, लेखक ने बड़ी चतुराई से, सूक्ष्म संकेत देते हुए, आज की सारी सामाजिक परिधि और उससे घिरे व्यक्ति की दुर्बलताओं से अपने पाठकों को परिचित कराया है। आज के व्यक्ति ने अपने अहम् को प्रोत्साहन देकर समस्त समाज के लिए जो भस्मासुर विकसित कर दिया है, उसका विश्लेषण एल्बर्ट कामूँ ने एक निपुण रसायनशास्त्री की तरह किया है। आज के पाश्चात्य मानव के बौद्धिक विपर्यय की एक झलक प्राप्त करने और औद्योगिक विकास की उन अनेक कलुष-कुंठाओं से सावधान रहने के लिए एल्बर्ट कामूँ के इस उपन्यास को भारतीय पाठक अवश्य पढ़ें। कामूँ की 'प्लेग', 'रिबेल' (विद्रोही) रचनाएँ भी पठनीय हैं। किसी भी भारतीय बुकसेलर के द्वारा मंगवायी जा सकती है। 'द' फाल' (पतन) की कीमत ६ रु० ५१ नये पैसे है।

*

मास का पठनीय साहित्य

विश्व-साहित्य की रूपरेखा— ले० भगवतशरण उपाध्याय; प्र० राजपाल ऐंड सं०, दिल्ली, मू० १२. रु०

वासवदत्ता (अंग्रेजी में) ले० स्व० अरविंद घोष, अरविंद आश्रम पांडिचेरी, मू० ५. ००

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पायुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई–२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरिस्टोक्रैट

डिप्लोमैट

रोटेरियन

इलाइट

लोकप्रिय सूटिंग्स
और
सुपरशीन शाटुंग प्रिंट्स

सुन्दर डिज़ायनों व रंगों में

ग्वालियर रेयन

द्वारा

पहिनने में सुन्दर
देखने में प्रतिभाशाली
स्पर्श में मुलाइम

ऐसे वस्त्र जिन्होंने फैशन
में नया स्थान बनाया है

ड्राईक्लीनिंग की आवश्यकता नहीं

घर पर गुनगुने पानी में साबुन के चूरा
के साथ आसानी से धोये जा सकते हैं

GWALIOR RAYON FABRICS

ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यु० (वी०) कं० लि०,
विरलानगर – ग्वालियर

१ मेसर्स डायाभाई ब्रदर्स,
सैन्डर्स्ट ब्रिज, बम्बई

२ ग्वालियर इन्डस्ट्रीज (प्रा.) लि०
११५ महात्मा गांधी रोड, बम्बई–१

३ मेंसर्स जीवनदास दयालजी,
गोविंद गली, एम. जे. मार्केट बम्बई–२

४ मेसर्स चन्द्रकांत पोपटलाल, ५ वी गली
चन्द्रा चौक, एम. जे. मार्केट बम्बई–२

५ मेसर्स अजीत लाल ब्रदर्स, ४ थी गली,
चन्द्रा चौक, एम. जे. मार्केट, बम्बई–२

६ मेसर्स रंजीत कंपनी, माधवराय गली
एम. जे. मार्केट, बम्बई–२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप में शक्ति होनी चाहिए

क्या आप शिथिलता और थकान महसूस करते हैं?

क्या आप में उत्साह की कमी है? आप ग्लूकोविटा लीजिए। ग्लूकोविटा आपको शक्ति देगा। ग्लूकोविटा में आपके लिए अनिवार्य रक्त-शक्कर ऐसे रूप में रहती हैं कि तत्काल ही रक्त में घुलमिल जाती हैं। यही कारण है कि ग्लूकोविटा आपको आवश्यकता पड़ने पर तत्काल ही शक्ति और उत्साह प्रदान करता है।

ग्लूकोविटा में शामिल विटामिन आपको शक्तिपूर्ण, जीवनपूर्ण और स्वस्थ रखते हैं।

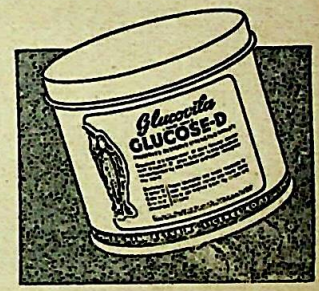

ग्लूकोविटा

तत्काल

शक्ति देता है!

कॉर्न प्रोडक्टस कं. (इंडिया) प्राइवेट लि.

बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मॅक्लीन्स दाँतों को पहले से कहीं अधिक सफ़ेद और साफ़ रखता है !

इकोनोमिक डुप्लीकेटर

९) रु. तथा उच्चतर मूल्यों में

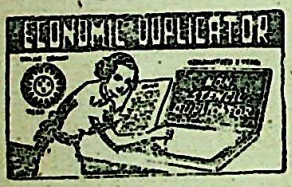

* स्टेन्सिल पेपर के बिना
* बिना अतिरिक्त खर्च के
* बिना किसी खास तरह की कलम या कागज के
* बिना छापने की स्याही के

एक बार के संचालन में ही एक या अधिक रंगों की सैकड़ों प्रतियां सुलभ हो जाती हैं।

सोल डिस्ट्रीब्युटर्स

सेलारका ब्रदर्स

जी. पी. ओ. बाक्स नं. ३१२ ए. बम्बई १

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :

पेन मेन्स इण्डस्ट्रियल सर्विसेज़

कांदीवली बम्बई (एस० डी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

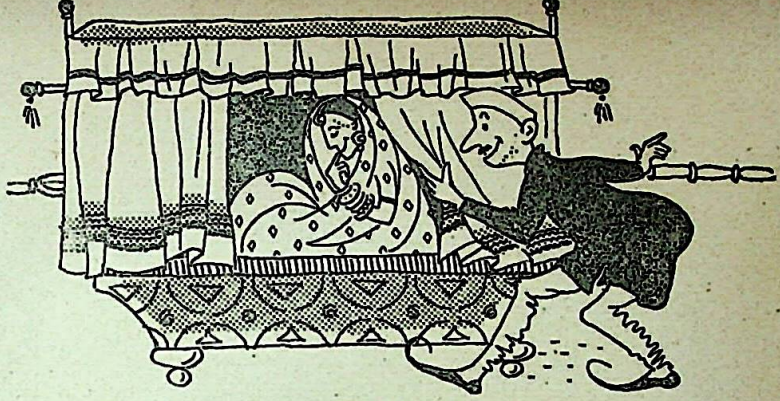

सुन्दरता जिसके साथ रहने को जी चाहे...

मर्फी रेडियो बनाया गया है आपके घर में अधिक प्रसन्नता लाने के लिए.....उसे अधिक सुन्दर बनाने के लिए।

मर्फी आज का सबसे अधिक पसन्दवाला रेडियो!

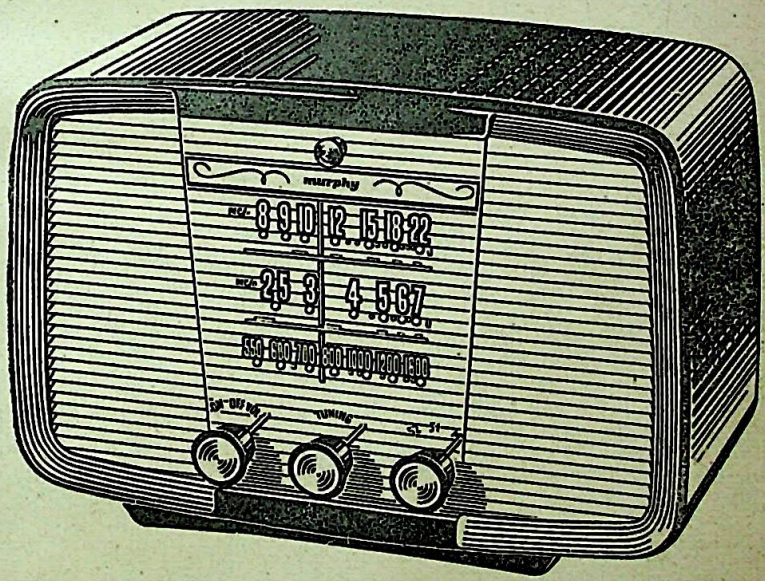

अच्छा बजता है!
अच्छा दिखता है!

- मोडेल २२२
- आल-वेव • ३-बैन्ड • ५-वाल्व
- एसी या एसी/डीसी • रु. ३००) स्थानीय कर अतिरिक्त

मर्फी रेडियो ऑव इन्डिया लि०, बम्बई-१२.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : सन् १८९५ ई०

प्रधान कार्यालय — दिल्ली

हमारे आकर्षक कैश सर्टिफिकेट योजना का लाभ उठाइये

३-साल के कैश सर्टिफिकेट

व्याज

४·२३%

प्रतिशत

रु० ८८.७५ विनियोग पर
रु० १००.०० पाइये

५-साल के कैश सर्टिफिकेट

व्याज

४·३९%

प्रतिशत

रु० ८२.०० विनियोग पर
रु० १००.०० पाइये

अल्प-समयी जमा भी आकर्षक दरों पर लिया जाता है

अपने निकटवर्ती कार्यालय से जानकारी प्राप्त करें

चेयरमैन
एस० पी० जैन

जनरल मैनेजर
ए० एम० वॉकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम यहाँ ठहरते हैं.....

- पूर्ण वायुअनुकूलित
- निजी स्विमिंग पूल
- हर कमरे के साथ फोन, रेफ्रिजरेटर और फव्वारे के साथ स्नानघर
- कमरे ४०) और अधिक

दि अशोक होटल

पूर्व की सबसे बड़ी आरामदेह होटल

चाणक्यपुरी – नई दिल्ली

तार : "अशोक होटल" फोन : ३४४३१ (४० लाईन)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

FOR THE **FIRST TIME** IN INDIA

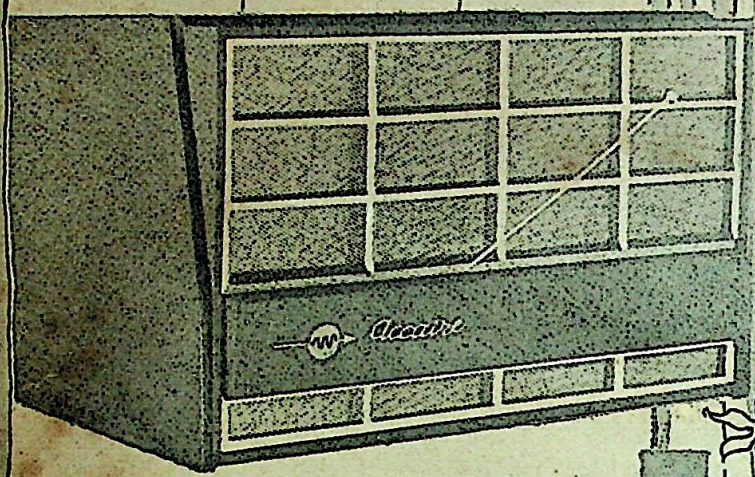

A RANGE OF

SIX COLOURS FOR YOUR CHOICE

Accaire AW—101

ROOM AIRCONDITIONER

Pick your new Accaire in a colour that blends with your room. Its unique design and compact construction makes it an excellent piece of furniture to adorn any room. What's more, it is made by an organisation with over a quarter century of experience in airconditioning.

OTHER ADVANTAGES INCLUDE :

- Better cooling capacity
- More silent operation
- Lower running cost
- Better service after sale
- One year's guarantee

Manufactured by

AIR CONDITIONING CORPORATION PRIVATE LTD.

Pioneers in Airconditioning in India

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठता का राजपुरस्कार

गत २१ नवम्बर '५७ को भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा 'नवनीत' हिन्दी-डाइजेस्ट को प्राप्त श्रेष्ठता के प्रमाणपत्र का फोटो-चित्र

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B .6248

जुहू बीच पर एक महल...

इन स्वस्थ, गोलमटोल और प्यारे-प्यारे हाथों का कमाल देखिए ... रेत थोप-थोप कर और थपथपाकर जुहू बीच पर एक महल का निर्माण किया जा रहा है! और यहाँ से कुछ ही मील दूर कुर्ला, बम्बई में दूसरे हाथ भी रेत ही से निर्माण-कार्य कर रहे हैं ... वे हमारे स्टील कास्टिंग्स के लिए साँचे तैयार कर रहे हैं। विशेष प्रकार की रेत और विशेष प्रकार के ही हाथ; क्योंकि साँचों में रत्तीभर भी फ़र्क़ न आना चाहिए। यह कौशल वर्षों के अनुभव से ही प्राप्त होता है।

हम सगर्व जाहिर करते हैं कि हमने सुप्रसिद्ध ब्रिटिश स्टील फाउण्ड्री, दी डेविड-ब्राउन इण्डस्ट्रीज़ लि. के साथ एक दीर्घकालीन यांत्रिक सहायता सम्बन्धी समझौता किया है। इस समझौते का दोहरा उद्देश्य है: एक तो यह कि हम दिसम्बर १९५८ तक अपने स्टील कास्टिंग्स का उत्पादन ३२५ टन प्रति मास से बढ़ाकर ६५० टन प्रतिमास कर सकें, और दूसरा यह कि नये उत्पादनों का विकास कर हम अपने स्टील कास्टिंग्स की किस्में भी बढ़ा सकें।

इस्पात की प्रगति का प्रतीक **मुकन्द**

मुकन्द आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स लि. कुर्ला – बम्बई-३७

मैनेजिंग एजेण्ट्स: जीवन प्राइवेट लिमिटेड ५१, महात्मा गान्धी रोड, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्च

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे अपनी सीधी पीठ और मजबूत हाथ पांव पर अभिमान है

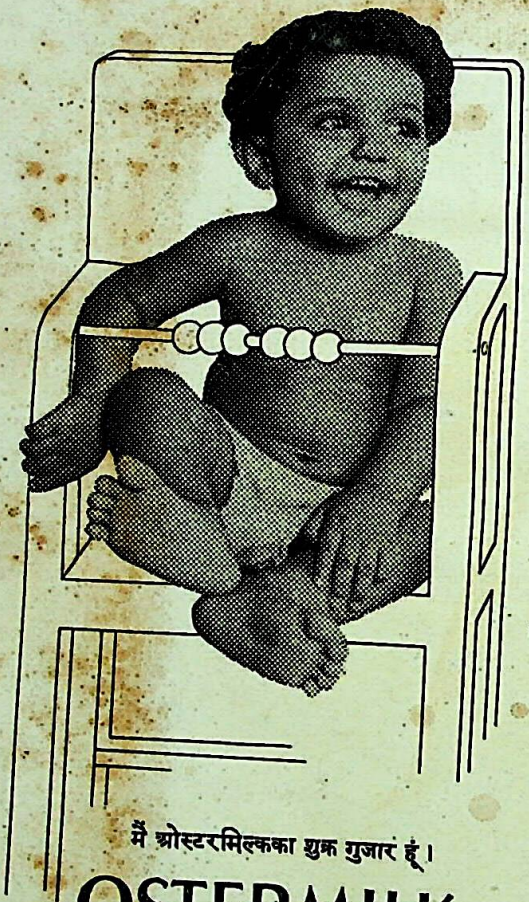

इसमें कोई शक नहीं कि बोतलसे दूध पिनेवाले बच्चों के लिये, ओस्टरमिल्क ही अत्युत्तम दुग्ध खाद्य है। जो कि, शुद्ध, पौष्टिक और बहुत आसानीसे पचनेवाला है। और जिसमें माँ के दूधके संपूर्ण अवशेष पाये जाते है। जरा देखिये तो मै कितना तंदुरुस्त बच्चा हूं!

मैं ओस्टरमिल्कका शुक्र गुजार हूं।

OSTERMILK

ओस्टरमिल्क माँ के दूध के समान

बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · नई दिल्ली

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

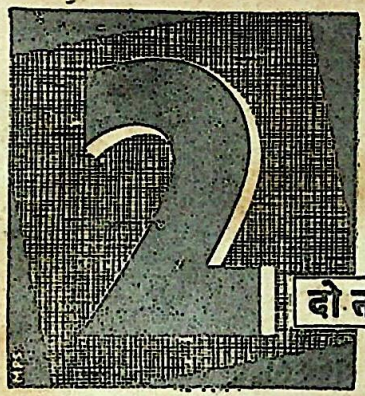

दो तरीके, भूरे बालों को

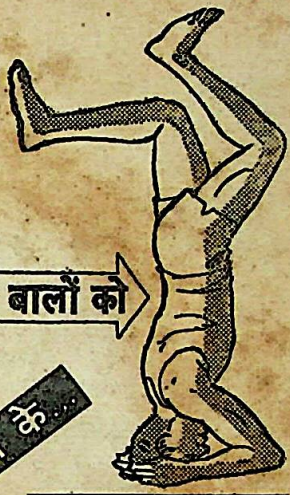

श्याम बनाने के...

कहा जाता है कि 'शीषसिन' का नियमित रूपसे अभ्यास करने से भूरे बाल श्याम बन जाते हैं, परन्तु इसके लिए काफी समय व मानसिक शांति की ज़रूरत है।'

आधुनिक जमाने में, भूरे बालोंको श्याम बनाने का सब से अचूक, सुरक्षित व आसान तरीका 'लोमा' का नियमित रुप से इस्तेमाल करना ही है।

अब 'लोमा' खासतौर पर बनी सीलबंद सुरक्षित कार्क वाली शीशीमें मिलता है।

लोमा

सोल एजेन्टस् : एम. एम. खम्भातवाला, अमदाबाद-१
एजेन्ट्स : सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी, मंगलदास रोड, बम्बई-२, फोन ३०५७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : सन् १८९५ ई०

प्रधान कार्यालय — दिल्ली

हमारे आकर्षक कैश सर्टिफिकेट योजना का लाभ उठाइये

३-साल के कैश सर्टिफिकेट	५-साल के कैश सर्टिफिकेट
ब्याज ४·२३% प्रतिशत	ब्याज ४·३९% प्रतिशत
रु० ८८.७५ विनियोग पर रु० १००.०० पाइये	रु० ८२.०० विनियोग पर रु० १००.०० पाइये

अल्प-समयी जमा भी आकर्षक दरों पर लिया जाता है

अपने निकटवर्ती कार्यालय से जानकारी प्राप्त करें

चेयरमैन — एस० पी० जैन

जनरल मैनेजर — ए० एम० वॉकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वसंत की प्रातः समीर-सा

आपके लिए आज ही और फिर प्रत्येक दिन !

काश्मीर बोके टेल्कम पाउडर में जादू-सी मादकता है। यह उत्कृष्ट पाउडर आपके शरीर को प्रातःकाल सी स्फूर्ति देता है और बहुत समय तक उसे सुवासित और शीतल रखता है। अतिरिक्त नमी को सोखता है....त्वचा की चिपचिपाहट और जलन को मिटाता है....और आपकी मोहकता तथा लावण्य को निखारता है।

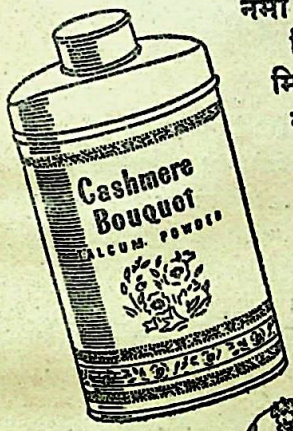

काश्मीर बोके

टेल्कम पाउडर

पुरुषों को मुग्ध करनेवाली सुगंध के साथ

कोलगेट—पामआलिव का एक उत्पादन

१८०६ से कोलगेट उत्कृष्टता का प्रतीक रहा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उचित कीमत पर अच्छी चीज

अच्छी चीज़ बनाने में खर्च कम से कम होता है। कोई प्रस्तुतकर्ता घटा उठाकर अच्छा माल नहीं बना सकता। बनस्पती जैसी चीज़ अच्छी होनी चाहिए क्योंकि इसीसे पकाये भोजन पर आपका स्वास्थ्य निर्भर है। आपको हमेशा इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि आपके घर में अच्छा बनस्पति ही आये। इससे कम कीमत में आप कुसुम जैसा अच्छी क्वालिटी का बनस्पति नहीं खरीद सकते।

अधिक कीमत देकर भी आप कुसुम जैसा अच्छा बनस्पति नहीं खरीद सकते

कुसुम

इसमें विटामिन ए की पूर्ति और विटामिन डी भी है

उचित कीमत पर बहुत अच्छा बनस्पति

खरीदिए नथ्रा

AD/0/230

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपमें शक्ति होनी चाहिए

क्या आप शिथिलता और थकान महसूस करते हैं?
क्या आपमें उत्साह की कमी है? आप ग्लूकोविटा लीजिए। ग्लूकोविटा आपको शक्ति देगा।
ग्लूकोविटा में आपके लिए अनिवार्य रक्त-शक्कर ऐसे रूप में रहती हैं कि तत्काल ही रक्त में घुलमिल जाती हैं। यही कारण है कि ग्लूकोविटा आपको आवश्यकता पड़ने पर तत्काल ही शक्ति और उत्साह प्रदान करता है।
ग्लूकोविटा में शामिल विटामिन आपको शक्तिपूर्ण, जीवनपूर्ण और स्वस्थ रखते हैं।

ग्लूकोविटा

तत्काल शक्ति देता है!

कॉर्न प्रोडक्ट्स कं. (इंडिया) प्राइवेट लि.
बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ीसा सिमेंट लिमिटेड

ताप अवरोधक उत्पादन :

शीघ्र ही प्रारम्भ होगा

आधुनिक उत्पादन विधि से निरन्तर भारी परिणाम में उच्चकोटि के ताप अवरोधक उत्पादन।

★ अग्नि मृत्तिका ★ कड़ा सफेद पत्थर ★ आजांगिज ★ वर्णकायन ★ विसंवाहन आदि। ★ सभी प्रकार माप और आकार के मट्टी, परिश्रम और स्थावर वस्तुओं की सभी प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए

इस्पात, सीमेण्ट, शीशा और अन्य उद्योगों के लिए

डा० सी० ओटो एण्ड कंपनी, जर्मनी के सहयोग से

अनुसन्धान करें—

उड़ीसा सिमेंट लि०

राजगांगपुर, उड़ीसा

प्रबन्धकर्ता — डालमिया एजेन्सीज प्राइवेट लि०

O.C.H-12-57

A.I.A.B

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मंज़िल दूर नहीं

टाटा स्टील का बीस लाख टन विस्तार कार्यक्रम अब अपनी आखिरी किश्त पूरा करने जा रहा है। इस कार्यक्रम के पूर्ण होने का निर्धारित समय १९५८ का मध्य भाग है और अब समय से होड़ लगी है।

जमशेदपुर में आज सर्वत्र काम करने की नई तत्परता दिखाई पड़ती है...इस विस्तार कार्यक्रम को पूरा करने के लिये चौबीसों घंटे काम हो रहा है।

टाटा स्टील के इस विस्तार कार्यक्रम में कच्चा लोहा उगाहने और खानों से कोयला निकालने से लेकर इस्पात बनाने तक उत्पादन के सारे पहलू हैं। इसके अन्तर्गत उत्पादन दुगुना होकर २० लाख टन हो जायेगा जो हमारे राष्ट्रीय लक्ष्य का एक तृतीयांश है।

प्रति दिन १६५० टन पिग आयरन तैयार करनेवाला यह ब्लास्ट फर्नेस शीघ्र ही बनकर तैयार हो जायेगा।

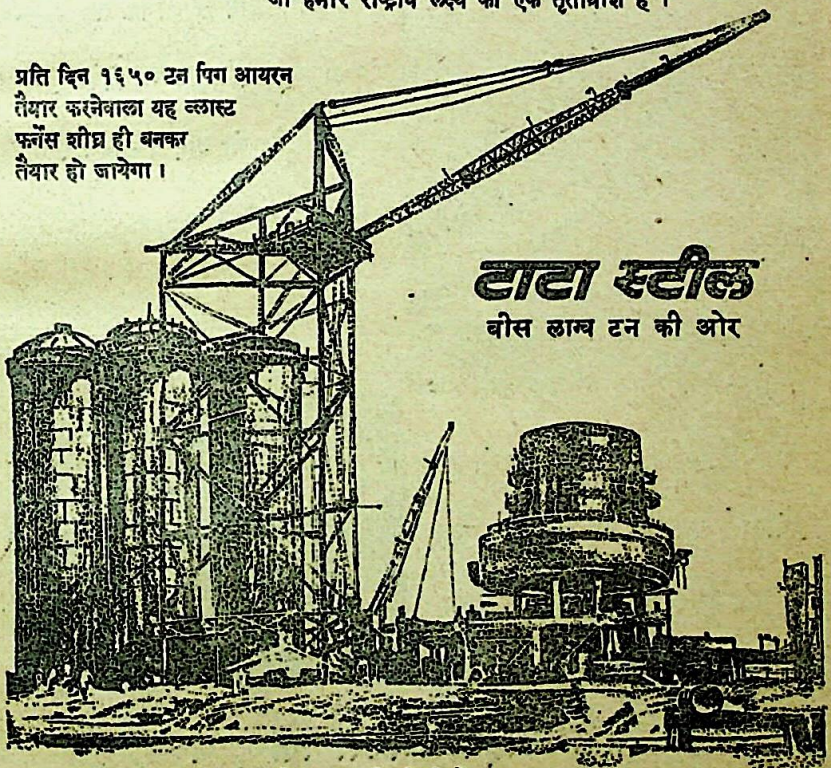

टाटा स्टील
बीस लाख टन की ओर

दि टाटा आयरन ऐण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड

TN 1763

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत की धुलाई-पद्धति में क्रान्ति लानेवाला राष्ट्र का अग्रदूत परिष्कारक डेट

डेट एक सांश्लेषिक परिष्कारक है, वह साबुन की बुकनी नहीं है तथा तत्त्वतः साबुनविरहित है। किसी भी साबुन की तुलना में यह धुलाई में तेज है तथा गंदगी और चिकचाहट को पूरी तरह से हटाता है। यह आपको स्वच्छतम कपड़े के अधिक तर उपयोग तथा न्यूनतम घटाव का विश्वास दिलाता है, जो बढ़िया साबुन से भी मुमकिन नहीं है।

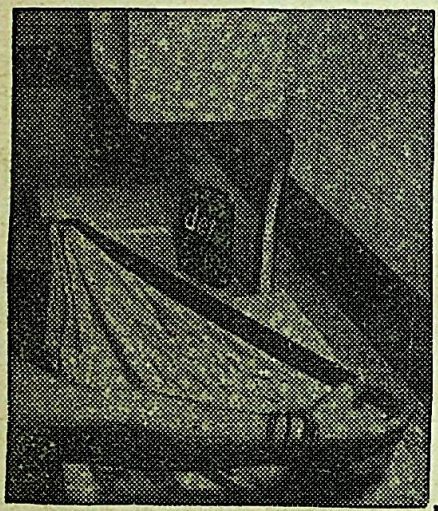

डेट फ़र्श, बर्तन, दीवारें आदि को भी धोता है क्यों कि वह परिष्कारक है। चाहे कपड़ा हों या फ़र्श, यह दोनो को समान कुशलता से धोता है।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि०, बम्बई

shilpi s-o-m 513 a hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप मुझे क्या बताते हैं !

मैं तो पहले ही जानती हूँ कि साठे की चाकलेटों में पूरी मलाईवाले दूध के शक्तिदायी तत्व रहते हैं। इसीलिए तो मेरी माताजी ने मुझे इस बात की छुट्टी दे रखी है कि ये स्वादिष्ट चाकलेटें मैं चाहे जितनी खा सकती हूँ। माँ को यह भी मालूम है कि इन चाकलेटों में गन्ने की शुद्ध शकर और शक्तिदायी कोकोज रहती हैं। ताकत पाने और शरीर के विकास के लिए ये ही तो चाहिए। और फिर ये चाकलेटें इतनी स्वादिष्ट होने के साथ-साथ बहुत ही कम दामों में मिलती हैं। मुझे तो ये बेहद पसन्द हैं।

साठे की चाकलेटें

"दुनिया की सर्वोत्तम चाकलेटों के दर्जे की!"

साठे बिस्कुट एण्ड चाकलेट कं० लि० पूना-२

HERO'S No. 74. HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक गृहिणी के मुख पर ...

वास्तव में उसकी पसन्द का कारण है। उसे मालूम है कि वे देखने में सुन्दर हैं, बुनावट में मुलायम हैं, निर्दोष बुने हुये हैं, टिकाऊ हैं, पहनने में मजबूत हैं और इसके ऊपर भी वे उचित मूल्य के हैं। आप भी जब 'इन्दु फैब्रिक्स' पसन्द करेगें उसीकी भांति उत्सुक होंगे।

इन्दु फैब्रिक्स बम्बई

दि इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि.

भारत का सबसे बड़ा सूती मिल समूह.

२,४५,९०८ तकुये ६४१२ करघे

एजेण्ट्सः मेसर्स अग्रवाल एण्ड कंपनी.
इन्दु हाउस. डूगल रोड. वलार्ड इस्टेट. बाबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज रविवार है— सर धोना मत भूलिये

घने, काले तथा लम्बे सुन्दर केशों की अधिकारिणी होना कौन नहीं चाहती ? परन्तु सब वस्तुओं की तरह इसके लिये भी आवश्यकता है यत्न पूर्वक देखभाल की। सप्ताह में एक दिन अच्छी तरह सर धोने की अत्यन्त आवश्यकता है क्यों कि आपके केश अच्छे रखने के लिये उनमें धूल, मिट्टी तथा खुश्की न जमने पाये इसकी ओर सर्व प्रथम सतर्क दृष्टि देनी होगी। सर धोने के पश्चात केश सूख जाने के बाद कम से कम दस मिनट जवाकुसुम से मालिश कीजिये। यह सुप्रसिद्ध तेल आपके केशों को खाद्य देकर उन्हें सुन्दर तथा हरा भरा बनाये रखेगा।

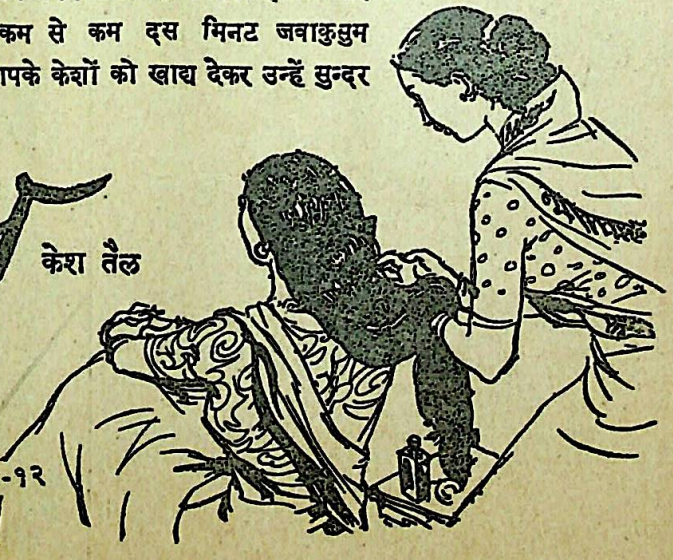

जवाकुसुम केश तैल

सी. के. सेन एण्ड कं० प्राइभेट लिमिटेड
जवाकुसुम हाउस, ३४, चितरंजन एभिन्यू, कलकत्ता-१२
११७, आर्मेनियन स्ट्रीट, मद्रास-१

JK.55.H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिभा

सौंदर्य के लिये..

रेमी स्नो

* त्वचा सुकोमल रखता है

ए. व्ही. आर. ए. अँण्ड कं. बम्बई नं. २

मॅक्लीन्स दाँतों को पहले से कहीं अधिक सफ़ेद और साफ़ रखता हैं!

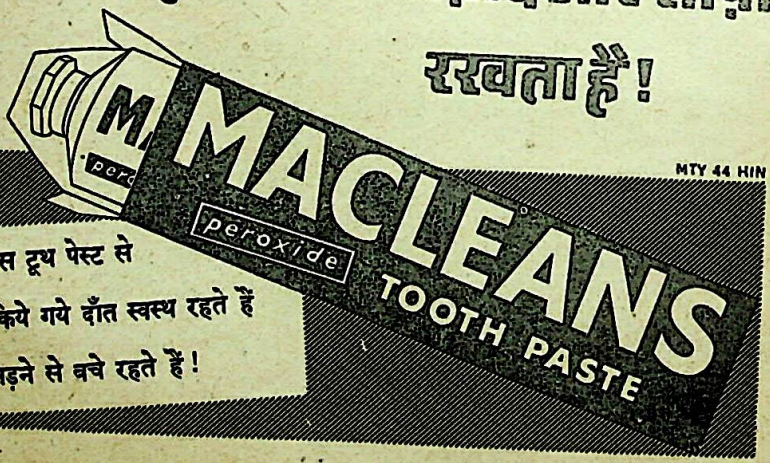

MTY 44 HIN

मॅक्लीन्स टूथ पेस्ट से
साफ़ किये गये दाँत स्वस्थ रहते हैं
और सड़ने से बचे रहते हैं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्न सत्य होरहा है

यह केवल एक मजदूर ही नहीं। जिस सिंचाई की महान योजना के निर्माण में यह हाथ बटा रहा है उससे ५० ही मील दूर एक गांव में इसके पास ५ एकड़ जमीन भी है। इसका भविष्य सुखद है। लगभग २ वर्षों से यह इस बांध पर काम कर रहा है और इसके देखते देखते यह पूरा होने के निकट आ गया है। एक स्वप्न सत्य हो रहा है। जब यह अपने गांव लौटेगा तो अपनी आवश्यकतानुसार सब कुछ पैदा कर सकेगा और संभवतया यह आय वृद्धि के लिए कोई कुटीर उद्योग भी शुरू कर सकेगा।

ऐसी अनेक नदी घाटी योजनाओं का भारत भर में निर्माण हो रहा है जिनसे अब अधिक भूमि की सिंचाई होगी, कारखाने चलाने के लिए सस्ती बिजली मिलेगी और बाढ़ों से हमारे जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा होगी। इन सब के लिए धन और अधिकाधिक धन की आवश्यकता है।

आप जो अपनी बचत राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेटों और सरकार द्वारा प्रमाणित अल्प बचत की अन्य मदों में जमा करते हैं उन्हीं से यह धन इकट्ठा होता है। यह धन आपको कर-मुक्त ब्याज सहित वापस मिल जायेगा।

१२-वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेट

★ प्रतिवर्ष ५.४१ प्रतिशत कर-मुक्त ब्याज।

★ ५ रुपये से लेकर ५,००० रुपये तक सभी डाकखानों में आसानी से मिल सकते हैं।

★ भारत सरकार द्वारा प्रमाणित।

अल्प-बचत-योजना के अंतर्गत अन्य सरकारी मद:

१०-वर्षीय ट्रेजरी सेविंग डिपॉजिट सर्टिफिकेट, पोस्ट आफिस सेविंग बैंक डिपॉजिट

छोटी बचतें - बड़े लाभ
भारत-निर्माण में सहायता कीजिये

राष्ट्रीय बचत संगठन

अधिक जानकारी और नियम आदि नेशनल सेविंग कमिश्नर, नागपुर से या अपने राज्य के रीजनल नेशनल आफिस से आप मिल सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल

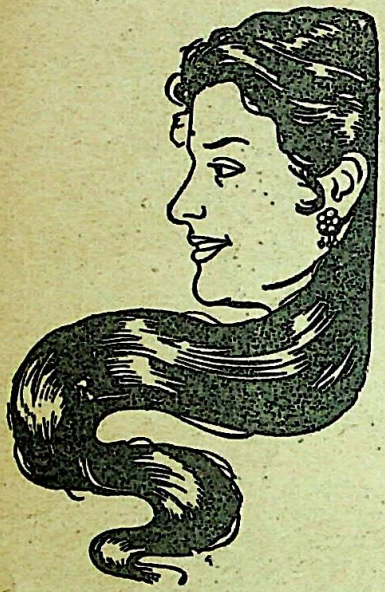

आयुर्वेदिक औषधि (रजिस्टर्ड)

सिरकी रुसी तथा गिरते बालों को रोकने के लिए एक अमूल्य हेयर टॉनिक शीघ्र ही गिरते हुए बालों को रोकता है और घने बाल उगाता है। प्राकृतिक काला रंग प्रदान करता है। सर्व ऋतु में सबके लिए उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ४/ छोटी शीशी २) रु. प्रत्येक स्थान पर मिलता है। ६/५० का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ४/- का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें। आसन चार्ट: स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक खर्च सहित रु. २/- में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर किये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

दादर, (सेन्ट्रल रेलवे) बम्बई–१४

टेलिफोन : ६२८९९

ब्रांकाइटिक जल्द ही ठीक हो जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली जग-प्रसिद्ध

पेप्स टिकियाँ लीजिए।

गले का दर्द, ब्रांकाइटिस, खाँसी व सर्दी—ये तकलीफ़ें गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली पेप्स टिकियों से जल्द ही मिट जाती हैं। पेप्स चूसकर देखिए तो उसकी आरामदेह भाप से कितना आराम पड़ता है, रोग-कीटाणु कितने जल्द नष्ट होते हैं, और दर्द से किस खूबी के साथ छुटकारा मिलता हैं।

पेप्स

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली टिकियाँ

सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं।

FPY 56 HIN

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :

केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

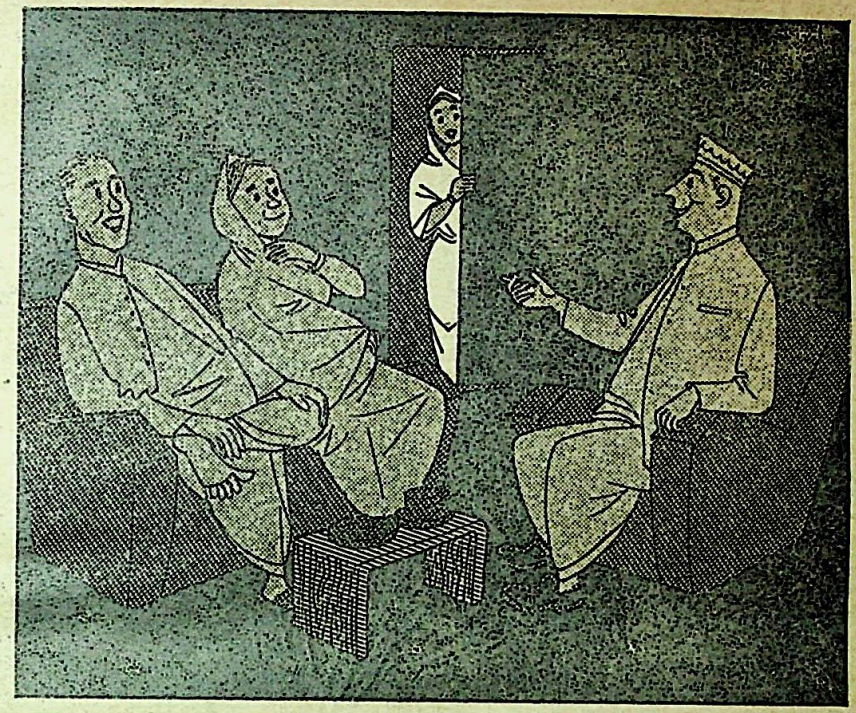

'आपकी सुपुत्री ... जीहां ... चौदहवी का चांद भले ही न हो परन्तु मैं जानता हूं कि वह मेरे बेटे की अच्छी बहु बनेगी कितनी समझदार कन्या है यह! मैंने देखा है...

उसने अपनी साडी के लिए

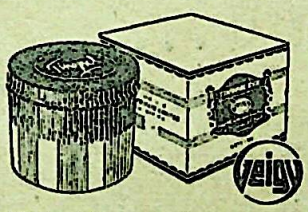

'टिनोपाल' जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल, स्विटजरलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

टिनोपाल

का उपयोग किया है'

निर्माता: सुहृद गायगी प्राइवेट लिमिटेड, वाडी वाडी, बडौदा

एकमात्र वितरक: सुहृद गायगी ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, पो. ओ. बाक्स ९६५, बम्बई

थोडा-सा टिनोपाल सफेद कपडो को सबसे अधिक सफेद बनाता है

SISTA'S-SG-12-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेलना शक्ति

घटाता है...

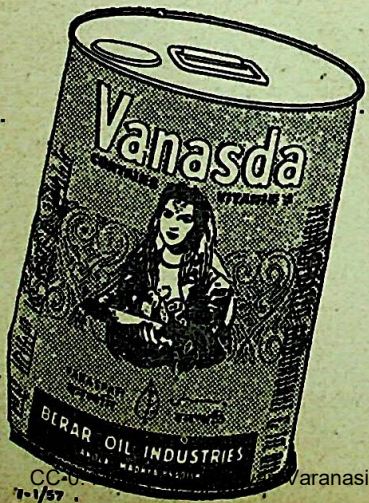

पौष्टिक भोजन इसकी पूर्ति करता है। वनस्दा में बना कोई भी भोजन खाद्य-उपयोगिता में श्रेष्ठतम हो जाता है।

वनस्दा

एक विटामिन-युक्त वनस्पती है

बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज, आकोला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाँ भी वे मिलती हैं उनको बात होती है मोरारजी के वस्त्रों के बारे में

हर कहीं
उनकी नई चमकदार
छींट उनकी विख्यात
क्वालिटी के साथ
श्रीमतीजी को भा गई है
इस बार कपड़ा
खरीदते समय
मोरारजी के कपड़े माँगिए।

मैनेजिंग एजेंट—पीरामल एन्ड सन्स

दी मोरारजी गोकुलदास स्पि. एन्ड वी. कं. लि. परेल, बम्बई-१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी सहायता करें ताकि हम आपकी सहायता कर सकें

एक पुरानी कहावत है कि, 'स्वच्छता की गणना देवत्व के बाद है।' साफ-सुथरा वातावरण प्रसन्नता प्रस्फुटित करता है। बीमारियों के नियंत्रण में सफाई एक महत्वपूर्ण सहयोग देती है। रेलवे प्लेटफार्मों पर, प्रतीक्षालयों में और रेल के डिब्बों आदि में जहाँ अधिक संख्या में लोग जमा होते हैं, उनके स्वास्थ्य के लिए, यह अति आवश्यक है कि, हम स्वास्थ्य-सम्बंधी नियमों का पूर्णरूपेण पालन करें।

रेलवे की इन बीमारियों के प्रति जो मोर्चाबंदी है, उसमें आप निम्नलिखित रूप से सहायता कर सकते हैं—

—आप अपने आस पास के स्थानों को साफ रखने में सम्पूर्ण सहयोग दें और जरुरत पड़े तो रेलवे के 'सफाई विभाग' के कर्मचारियों की, भी मदद लें। वे हर स्टेशन पर उपलब्ध हैं।

भारतीय रेलों के लिए उत्तर रेलवे द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बालों का सौन्दर्य

सहजता से बनाए
रखनेवाला साधन है
मंद सुगंधि से परिपूर्ण
आल्हाददायी

स्वस्तिक सुगंधित कॅस्टर ऑईल

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

SHILPI-SOM-543-A-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हि मा नी

चेहरे व शरीर के पाउडर

कितने
ताज़े
कितने
खुशबूदार
*

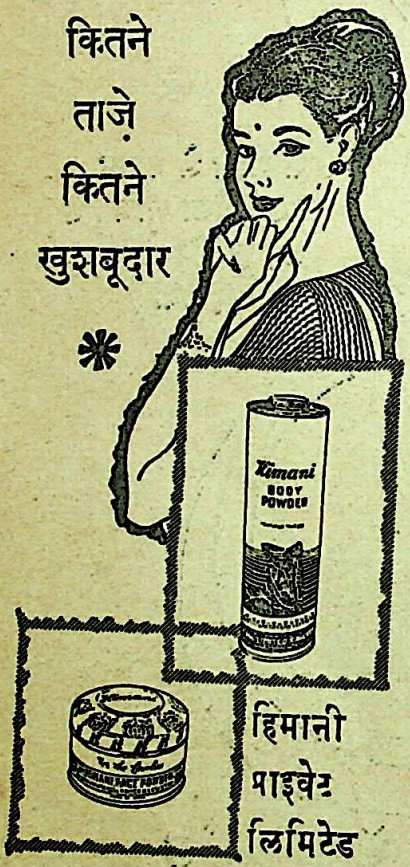

हिमानी
प्राइवेट
लिमिटेड
कलकत्ता-२

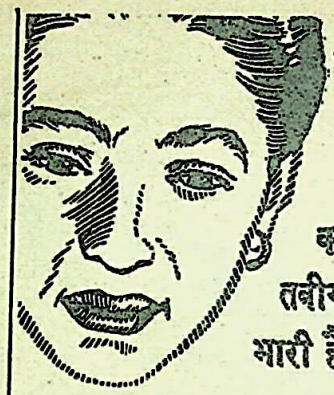

क्या
तबीयत
भारी है ?

सेरिडोन की
एक टिकिया
वयस्कों के लिए पूरी खुराक है

* दर्द में राहत देती है
* आराम पहुँचाती है
* ताज़गी देती है

१२ नये पैसे

बच्चों के लिए १/४ से १/२ टिकिया तक
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स : वोल्टास लिमिटेड

VT 6291

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदा

चमकीली

मुस्कान

ग्रीन

कोलिनॉस

असरदार क्लोरोफिलवाले टूथपेस्ट का शुक्रिया

आज ही ग्रीन 'कोलिनॉस' टूथपेस्ट का इस्तेमाल शुरू कीजिये। इससे दान्त कितने चमकीले सफेद होते हैं, यह आप देखते ही रह जायेंगे। सारा रहस्य इसके असरदार क्लोरोफिल में है। ग्रीन 'कोलिनॉस' का बढ़िया झाग बारीक से बारीक दरार में पहुंचकर दन्तक्षय करनेवाले रोगाणुओं का नाश करता है और आपके दान्तों को पहले से कहीं अधिक स्वच्छ व सफेद रखता है।

हमेशा ग्रीन 'कोलिनॉस' ही लीजिये।

Registered User
Geoffrey Manners &
Company Private Ltd.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर स्थान को
सुन्दर व आराम प्रद
बनाइये

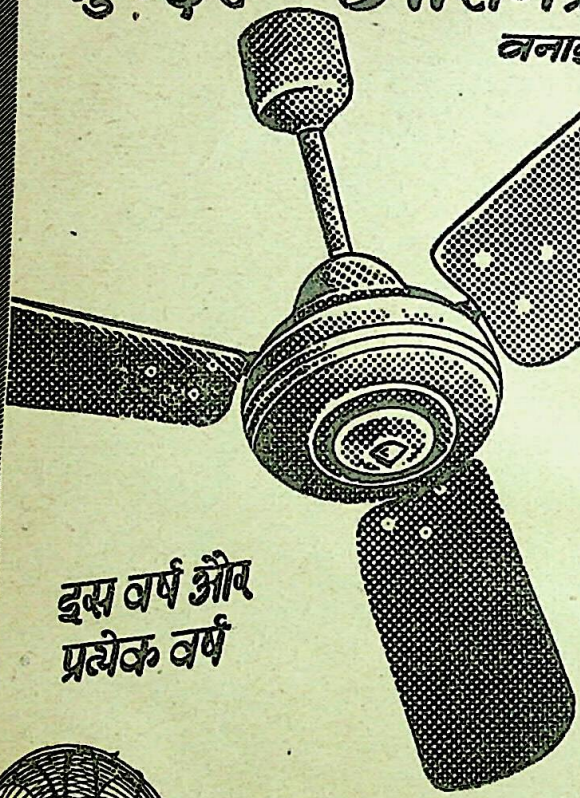

इस वर्ष और
प्रत्येक वर्ष

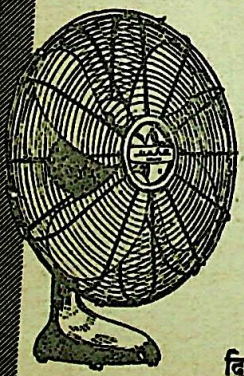

उषा
डि-लक्स पंखे

दि जे इंजिनीयरिंग वर्क्स लि०
कलकत्ता

बम्बई एजेन्ट : बाम्बे प्रीमियर ट्रेडिंग कं., २३० हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्च

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

शिल्पः गोपालकृष्ण भोबे

सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र विद्याभूषण

लेख-सूची

१	संत का मूल्य	'स्वाति-विंदु' से	१
२	आग्रह की निष्ठा	जातक-कथा	२
३	संशय	महमूद तैमूर	४
४	स्मरणांजलि	रतनलाल जोशी	६
५	कृष्णमूर्ति	अमिताभ	८
६	प्रेरणा-पुष्प	कृष्णमूर्ति	९
७	नींव के पत्थर	महर्षि कर्वे, हो ची मिन्ह	१०
८	हम रथवान	नरेन्द्र शर्मा	१२
९	...रोटी चूल्हे में पकती है	मंगलसिंह चौहान	१३
१०	अण्णा से एक भेंट	मालतीबाई वेडेकर	१७
११	मिट्टी	ह्वाङ पो	१८
१२	अतिसुख-अतिदुःख	वीतनामी 'संतोपाख्यानमाला' से	२२
१३	सुख-दुःख	पश्तो-लोककथा	२२
१४	कवि और उसका जगत्	डा० सम्पूर्णानंद	२३
१५	उत्तर	रोम्याँ-रोलाँ	२४
१६	विनोदी रवीन्द्रनाथ	दुर्गादत्त रश्मि	२६
१७	सूमों के सरदार	सुब्रह्मण्य भारती	२७
१८	...महासागर बन गया	गौरीशंकर ओझा	२९
१९	मेरे दोस्त	प्यारासिंह सहराई	३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२० ...जीवन के साठ बरस	सालिमअली	३३
२१ पेड़ देखते हैं	डा० विभूतिभूषण भट्टाचार्य	३८
२२ शक्ति : हमारी जीवन-गति	त्रिवेणी प्रसाद	४०
२३ हेलिकाप्टर का निर्माता	श्रीगोपाल नेवटिया	४४
२४ मसीहुल्मुल्क	जकी अहमद देहलवी	४९
२५ दीपमहल	अजमलखाँ	५१
२६ तीन मोती	जगमोहननाथ रैना 'शौक'	५३
२७ हिमालय का प्रेत	रमेशचंद्र तिवारी	५४
२८ हीनता	कविवर किशि	५६
२९ भोजन रुचिमय हो	डा० मालती सिंह	५८
३० अहिरा में गरजै बाँस हो	इंदिरेश गौराहा	६१
३१ ...जरा अपने को परखिये	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	६३
३२ बूँद-बूँद का सागर	...	६५
३३ ...तुपारियों से मिलिये	'परिव्राजक'	६७
३४ कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	संध्यारानी, बलवंतसिंह, अविनाश चटर्जी, कमलेश	७३
३५ मीठा पीर (उर्दू-कहानी)	मंटो	७६
३६ प्रेत का जमाई (बँगला-कहानी)	शरदिंदु वंद्योपाध्याय	७९
३७ सपने जागे (हिन्दी-कहानी)	सोमा वीरा	८६
३८ दौलतसिंह खींची (पुस्तक-संक्षेप)	विद्यानंद श्रीवास्तव	९१
३९ स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	११९

जीवन-गठरी

[चित्र : वी० प्रभा]

—स्केच—

वी० एन० ओके, एल ग्रेको, होकुसाई, एस० आर० बर्गे, अब्दुल हलीम।

सूचना : 'नवनीत' में प्रकाशित प्रत्येक रचना, चित्र एवं स्केच पर 'नवनीत प्रकाशन लि०' का कापीराइट रहता है। अतः पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में इनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

वार्षिक मूल्य : दस रुपये — नवनीत प्रकाशन लि० — प्रति अंक : एक रुपया

विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये — ३४१, तारदेव, बम्बई ७ — विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नवदिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ७ : : अंक ३

मार्च, १९५८

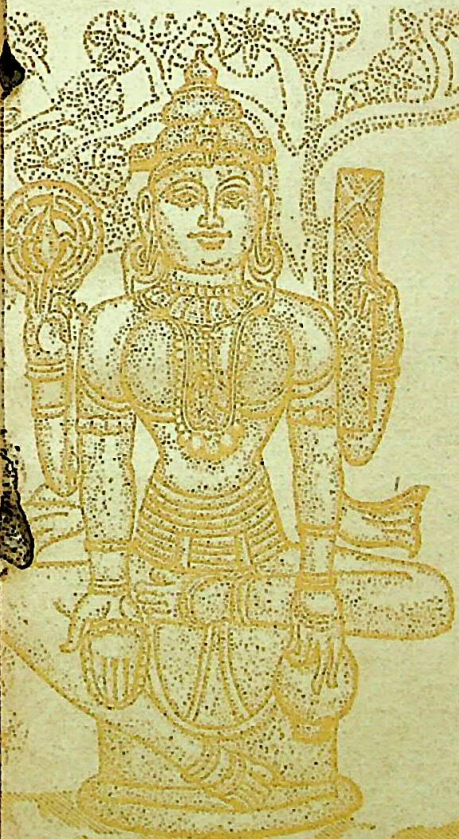

संत का मूल्य

तुर्कों और ईरानियों में भीषण युद्ध चल रहा था। तुर्क निरंतर हारते जा रहे थे। एक दिन कुयोग से सुप्रसिद्ध सूफ़ी-संत फरीदुद्दीन अत्तार तुर्कों के चंगुल में पड़ गये। जासूसी के इलजाम में उन्हें मौत की सजा दी गयी। एक धनवान ने उनकी तौल के बराबर हीरे दे दिये; बहुतों ने अपने प्राण ही बदले में अर्पित कर दिये; किंतु सुलतान ने अत्तार को नहीं छोड़ा। तब ईरान का बादशाह स्वयं पहुँचा और सुलतान से यों बोला—"जिस राज्य के लिए आपकी कई पीढ़ियाँ हमसे लड़ती आ रही हैं और वह आपको नहीं मिल रहा है, वही आप हमसे ले लीजिये और अत्तार को छोड़ दीजिये। धन नश्वर है, राज्य भी नश्वर है; किंतु संत तो अविनाशी हैं। अत्तार को खोकर ईरान हमेशा के लिए कलंकित हो जायेगा!"

—'स्वाति-बिंदु' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आग्रह की निष्ठा

जिज्ञासा का आग्रह ऐसी तेज छुरी है, जो हमारे निजत्व को जकड़े कई संशय-ग्रंथियों को काटती है। वास्तव में, आग्रह के बिना बुद्धि और विवेक के हाथों जीवन-मोती आये भी कब हैं? किंतु आग्रह केवल कुतूहल न हो, सत्य के शोध की तीव्र लगन हो। प्रस्तुत जातक-कथा में इसी चेतावनी को स्पष्ट किया गया है।

प्राचीन काल में, वाराणसी से कुछ दूर, पर्वत की गुफा में, एक मानव-भक्षिणी यक्षिणी रहती थी। वह उधर से आने-जानेवाले मनुष्यों को पकड़ कर खा जाती थी। एक दिन एक अति रूपवान ब्राह्मण-कुमार उधर से निकला। यक्षिणी ने उसे पकड़ लिया; किंतु उसकी सुंदरता को देख, यक्षिणी के मन में अनुराग उत्पन्न हो आया। अतः मारने के स्थान पर उसने उसे अपना पति बना लिया और इस डर से कि, वह कहीं भाग न जाये, बाहर जाते समय सदा ही यक्षिणी गुफा के द्वार पर एक बहुत भारी शिला रख दिया करती।

कुछ काल बाद, बोधिसत्व ने उस यक्षिणी की कोख से जन्म लिया। यक्षिणी बड़े स्नेह से उसका पालन करने लगी। कुछ बड़े होनें पर बोधिसत्व ने एक दिन कुतूहलवश अपने पिता से पूछा—"तात, मेरी माँ और आपकी आकृतियों में इतना अंतर क्यों है?" पिता ने उत्तर दिया कि, उसकी माँ मानवी नहीं, यक्षिणी है और मनुष्यों का भक्षण करती है। बोधिसत्व ने कहा—"तब तो हमें नहीं रहना चाहिए। चलिये, मनुष्यों की बस्ती में चलें।"

एक दिन जब यक्षिणी भोजन जुटाने के लिए बाहर गयी थी, तो शिला को द्वार से खिसका, अपने पिता के साथ बोधिसत्व भाग निकला।

यक्षिणी ने लौटने पर जब उन्हें नहीं देखा, तो वह वायु-वेग से दौड़ी और रास्ते में ही उन्हें पकड़ लिया; किंतु पुत्र के प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण उसने दोनों में से किसी को क्षति नहीं पहुँचायी।

कुछ दिनों बाद, बोधिसत्व ने बातों-ही-बातों में अपनी माँ से जान लिया कि, उसकी माँ उस प्रदेश में कहाँ तक जा सकती है! दूसरे दिन, जब यक्षिणी सदा की भाँति बाहर गयी, तो वह अपने पिता को साथ ले भाग निकला और अपनी माँ के द्वारा बतायी सीमा लाँघ कर आगे निकल गया। इसी बीच यक्षिणी भी वहाँ पहुँच गयी। उसने नदी के तट पर खड़ी हो, दोनों से लौट चलने की बहुत विनती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की; पर वे तयार नहीं हुए। अंततः पुत्र-स्नेह के वशीभूत हो, उसने बोधिसत्व को एक मंत्र बताया, जिसके प्रभाव से १२ वर्ष पहले भी कहीं गये मनुष्यों के पद-चिह्नों का अनुसरण किया जा सकता था।

वाराणसी-नरेश ने यह सुन कर कि, बोधिसत्व बारह वर्ष पूर्व चोरी गये सामानों का भी पद-चिह्नों के जरिये पता लगा सकता है, उसे प्रति दिन एक हजार मुद्रा के वेतन पर नौकर रख लिया।

राजपुरोहित को राजा का यह कृत्य बड़ा अखरा। अवसर पाकर उसने एक दिन राजा से कहा– "महाराज! अभी तक हमें यह ज्ञात नहीं कि, वह व्यक्ति वस्तुतः पद-चिह्नों का जानकार है भी या नहीं! हमें उसकी परीक्षा लेनी चाहिए।"

महाराज मान गये। फिर एक दिन योजनानुसार दोनों व्यक्ति कई मूल्यवान मुद्रा-आभूषण कोष में से ले, प्रासाद के चक्कर काट, विभिन्न मार्गों से पुष्करिणी के किनारे पहुँचे और वहाँ पुष्करिणी की तीन बार परिक्रमा कर, नीचे उतर, पुष्करिणी में उन्हें छिपा दिया।

अमिताभ

[चित्रः छठी शताब्दी में चीन में निर्मित एक शिल्प की सरल रेखानुकृति]

अगले दिन राजकोष से आभूषणों के चोरी जाने का समाचार सर्वत्र फैल गया। महाराज ने बोधिसत्व को बुला कर कहा– "तात! राजकोष से जो आभूषण चोरी गये हैं, उनका पता लगा सकते हो?"

बोधिसत्व ने स्वीकार कर लिया और माँ से प्राप्त मंत्र के बल-द्वारा, जिस-जिस मार्ग से तथा जिस प्रकार चोर गये थे, उसी प्रकार उनके पद-चिह्नों का अनुसरण कर, उसने मुद्रा-आभूषण खोज निकाले। इस अद्भुत खोज को देखने के लिए सारी प्रजा उमड़ पड़ी थी। महाराज ने मुद्रा-आभूषण तो ले लिये; लेकिन उनके मन में संदेह हुआ कि, बोधिसत्व सिर्फ चोरी गये माल का ही पता लगा सकता है, चोरों का नहीं। अतः उन्होंने कहा– "किंतु तात! चोरों के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं!"

बोधिसत्व संकोच में पड़ गया; किंतु फिर भी उसने उत्तर दिया– "महाराज! चोर भी यहीं हैं, दूर नहीं हैं।"

"कौन हैं वे चोर?"–राजा ने कृत्रिम उत्सुकता से पूछा।

"महाराज! चोरी का माल मिल गया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब चोरों की बात जाने दें।" किंतु महाराज आग्रह पकड़ गये। हार कर बोधिसत्व ने कहा—"महाराज! मैं आपको एक कथा सुनाता हूँ, जो आपको चोर का भी पता बता देगी।

"बहुत पहले, नदी के उस पार के गाँव में एक नट रहता था। एक दिन वह अपनी भार्या के साथ नगर में आया। नाच-गाकर उसने काफी धन इकट्ठा कर लिया और फिर अपनी भार्या को साथ ले, गाँव लौट चला। नदी-किनारे पहुँच कर उसने गर्दन में महा-वीणा बाँधी और नदी में उतर पड़ा। नदी में काफी पानी था। किंतु वह नट महा-वीणा के सहारे एक हाथ से अपनी भार्या को पकड़े निर्द्वंद्व तैरने लगा। किंतु अकस्मात् वीणा के छिद्रों में पानी भर गया और वह पानी में डूबने लगा। नटी किसी तरह तैर कर उस पार पहुँच गयी और किनारे पर जा उसने अनुरोध किया—'स्वामी! मरने के पहले मुझे कम-से-कम एक गीत तो बता दें, जिससे मैं अपना जीवन-निर्वाह कर सकूँ!' नट डूबते-डूबते बोला—'भद्रे! मैं तुझे गीत कैसे बताऊँ! इस क्षण तो समान भाव से समस्त चराचर को जीवन देनेवाला यह जल ही मेरी मृत्यु का कारण बन रहा है।'

"महाराज!"— बोधिसत्व ने कथा समाप्त करते हुए कहा—" मुझे विश्वास है कि, चोर का पता आपको अब लग गया होगा। किंतु महाराज ने स्पष्ट इन्कार कर दिया—"नहीं जी, संकेत मैं नहीं समझता। साफ-साफ बताओ, चोर कौन है?"

तब बोधिसत्व ने दूसरी कथा कही—

"देव! बहुत पहले एक ग्राम में एक कुम्हार रहता था। बर्तन बनाने के लिए रोज एक ही जगह से मिट्टी लेते-लेते उसने वहाँ गहरा गड्ढा खोद दिया था। एक दिन जब वह मिट्टी खोद रहा था, तो बड़े जोरों की वर्षा हुई। वर्षा के बहते जल से गड्ढे के ऊपरी किनारे ढह कर गिर गये। कुम्हार का सिर फूट गया और उसने रोते-रोते ये उद्गार प्रकट किये—'आह! जिस भूमि में बीज पैदा होते हैं, जो सबको शरण देती है, आज वही मेरी पीड़ा का कारण बन रही है।'

"देव!"— बोधिसत्व ने कथा समाप्त

संशय

रोज की तरह उस दिन भी द्वार पर संशय के दैत्य ने मुझे रोका। मैं रुक गया, तो वह मुझे खाने भी दौड़ा। मैंने देखा, वहाँ हड्डियों के ढेर लगे थे और मेरे-जैसे कई यात्री डर कर पीछे भाग भी रहे थे। मैंने गरज कर कहा—"मैं भीतर जाऊँगा। हट जाओ।" उसने क्षण-भर मेरे तेवर देखे और बड़ी विनम्रता से कहा—"जाइये हुजूर! आपके लिए द्वार खोल देता हूँ!"

—महमूद तैमूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए कहा—"अब तो आप अवश्य ही चोर को पहचान गये होंगे।"

किंतु महाराज हठ पर अड़े ही रहे। तब बोधिसत्व ने तीसरी कथा कही—

"राजन्! एक बार इसी नगर में एक गृहस्थ के घर में आग लग गयी। उसने एक दूसरे व्यक्ति से कहा—'अंदर जाकर मेरा सामान ले आ।' जब वह आदमी सामान लेने अंदर गया, तो आग के प्रकोप से बाहर निकलने का रास्ता ही नष्ट हो गया। वह वहीं घिर गया और सिर पीट कर बोला—'हाय, जो अग्निदेव हमें जीवित रखते हैं, हमारा भोजन पकाते हैं, हमें ऊष्मा देते हैं, आज वही मेरे शरीर को जला रहे हैं।"

किंतु महाराज की जिज्ञासा पूर्ववत् ही अपूर्ण रही— उनके हठ के कपाट नहीं खुले। तब विवश होकर बोधिसत्व ने अपनी चौथी कथा आरम्भ की—

"महाराज! एक बार हिमालय के वन्य प्रदेश के दो विशाल वृक्षों की शाखाएँ आपस में टकरा गयीं और इस परस्पर-संघर्ष से आग निकल पड़ी। दोनों वृक्ष जलने लगे और उन पर निवास करनेवाले पक्षी, भयभीत हो, उड़ चले। उड़ते-उड़ते सबसे वृद्ध पक्षी ने अत्यंत कारुण्य के साथ कहा—'क्या विडम्बना है यह भी! जिस वृक्ष ने जीवन-भर आश्रय दिया, आग की लपटों से हमें वही अब जला रहा है।"

किंतु राजा ने इस बार भी चोरों को पहचानने से इन्कार कर दिया। बोधिसत्व बड़ा क्षुब्ध हुआ। उसने किंचित् रोषावेश में राजा से कहा—"महाराज, मेरी परीक्षा हो चुकी है। अब आप जो-कुछ कर रहे हैं, वह आपका दुराग्रह है। फिर, मेरी विद्या कोई ऐसी विद्या भी नहीं है, जिसकी परीक्षा में आपको और मुझको इतनी शक्ति और श्रम खर्च करना पड़े। मैं मानता हूँ, अति प्रश्न पूछना अच्छा है; तत्व के केंद्र तक पहुँचने की राह यही है। किंतु महाराज, यहाँ तत्व की कोई भी बात नहीं है। अतः आपका जो आग्रह है, वह ज्ञानप्राप्ति या सत्यान्वेषण के लिए नहीं है; बल्कि मूढ़ कुतूहल-मात्र के लिए है। महाराज, यह प्रवृत्ति त्यागिये, सत्य के शोध की दिशा में प्रवृत्त होइये। मिथ्या के लिए हठ ठानना विनाश का मार्ग है।" किंतु महाराज पर तो दुराग्रह का राक्षस सवार था। उन्होंने सक्रोध कहा— "तात! या तो चोरों का पता बताओ या यह स्वीकार कर लो कि, तुमने स्वयं चोरी की थी!" इस प्रकार बोधिसत्व ने जब देखा कि, राजा अपनी मूढ़ता से डिगता नहीं है, तो एकत्र प्रजा की ओर मुड़ कर बोला—"प्रजाजनो! अब मुझे इस रहस्य का उद्घाटन करना ही पड़ेगा। सुनो, हमारे शासक ने ही हमारा भक्षण किया है। स्वयं महाराज और राज पुरोहित ने ही मिल कर यह चोरी की थी।"

लोग क्रुद्ध हो उठे और उस उत्तेजित भीड़ ने तत्काल ही उस दुराग्रही राजा और पुरोहित का वध कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्मरणांजलि

दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए रतनलाल जोशी-लिखित एक पुण्य-स्मरण

१९३७ के मार्च के एक अपराह्न में मैं अपने जीवन का वह सौभाग्य पा सका था, जिसके लिए बरसों से लालायित था। मौलाना आजाद ने मुझे कृपया अपने दर्शनों का सुअवसर दिया था। उनके कक्ष में घुसते ही, मैं अपना सारा बौद्धिक साहस खो बैठा था—इतनी प्रखर गरिमा के सम्मुख मेरी लघिमा अपने सम्पूर्ण दौर्बल्य-दुःसाहस में निरावरण हो गयी थी। आज भी मुझे अपनी वह भीति याद है, जब कि मैंने काँपते हाथों गुलाब के ताजे फूलों का एक गुच्छा उनके अर्पण किया था। स्नेहभरी आँखों से किंचित् मुस्करा कर उन्होंने जब मेरी यह भेंट स्वीकार की थी, तो मैंने जैसे अनुभव कर लिया था कि, महत्ता की इस स्वीकृति में मैंने अपने जीवन की सारी अपूर्णताएँ पूरी कर ली हैं। उनका आश्वासन पाकर मैं बैठा ही था कि, उन्होंने कहा—"अच्छा, अपने वे तीन प्रश्न पूछ लो, जिनका जिक्र तुमने अपने पत्र में किया है।"

मैंने आज्ञा शिरोधार्य की और पूछा—"कृपया बतलाइये कि, आपकी नजर में, जीवन से साहित्य का क्या सम्बंध है?"

प्रश्न सुन कर वे हँस पड़े। अपने युवाकाल में साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी के सामने यह प्रश्न आता है और वह उसे अपने परिपूर्ण परितोष के साथ समझना चाहता है। हजार तरह के उत्तर उसके सामने आते हैं और प्रायः किसी से भी उसकी तृप्ति नहीं होती है।

मगर मौलाना आजाद ने जो उत्तर मुझे दिया, उससे मेरे इस प्रश्न के सभी सहस्रमुखी तर्क-वितर्क शांत हो गये। उन्होंने बड़े सरल भाव से कहा था—"मनुष्य और उसके भूगोल की तरह जीवन और साहित्य भी अन्योन्याश्रित हैं। दोनों में एक-दूसरे को गढ़ने की होड़ है।"

मेरा दूसरा प्रश्न था—"साहित्य और दर्शन ही मूलतः आपकी अनुरक्ति पर काबू जमाये रहे हैं— इसलिए मेरा खयाल है कि, कोई ऐसी घटना कभी अवश्य घटी होगी, जिससे आपके भीतर भारतीय स्वतं-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रता की कल्पना अकस्मात् जाग पड़ी।"

मेरे स्पष्टीकरण को बीच में ही काट कर वे बोले—"तुम्हारा खयाल काफी हद तक ठीक है। बचपन से ही मैंने देखा है कि, राज्य की निरंकुश शक्ति प्रायः धर्म और साहित्य को अपना वाहन बना लेती है। विदेशी राज्य-शक्ति ने तो अपने धन और सत्ता के बल पर शासितों पर अपनी अति निकम्मी संस्कृतियाँ तक थोपी हैं। यह दासत्व आर्थिक दासत्व से कहीं ज्यादा खतरनाक सिद्ध हुआ है। मनुष्य अपनी मंगल-यात्रा में, इस प्रकार रोका ही नहीं गया, काफी सदियों पीछे ढकेला गया है। परतंत्र समाज में धर्म और बुद्धि तक को जब मेरी युवावस्था ने बिकते देखा, तो मैंने महसूस किया कि, व्यक्ति के विकास की पहली शर्त शोषणमुक्त समाज ही है।"

तीसरे प्रश्न की बारी आयी, तो मुझे काफी हिम्मत बटोरनी पड़ी थी। प्रश्न क्या था उत्तरदाता के साथ खेल में उतरने की स्पष्ट चेष्टा! मैंने पूछा— "हुजूर, यदि आज ही स्वराज्य मिल जाये, तो कल से आपके जीवन का क्रम क्या होगा?"

पहले तो वे उन गहन-गम्भीर आँखों से मुझे घूरते रहे। फिर किंचित् मुस्कराये, मानो शतदल अपने स्वाभाविक माधुर्य में खिल उठा हो! दुपट्टा सम्भालते हुए बोले— "बात तुम्हारी खुशनुमा जरूर है; मगर गले उतरती, तो जानता। फिर भी अगर निकट भविष्य में तुम्हारी कल्पना मूर्त हो गयी, तो हम फिर से अपना अखबार शुरू करेंगे।"

इसके बाद, ४५ से ४७ तक पाँच-छः बार उनकी भेंट-कृपा से अनुगृहीत हुआ। जो मन में था, पूछा और औदार्य एवं मानवत्व के उस हिमालय से इतना पाया कि, गंगा-यमुना ने भी गिरिराज से कभी पाया नहीं होगा। प्रश्नों के परितोष ही नहीं, अनुग्रह-आशीर्वाद भी मुँहमागे मिले। क्या था सामीप्य भी उनका—बुझे दीप आते, ज्योति-पूत होकर जाते! उनके स्नेह-स्पर्श से कब मन की कली खिली नहीं? उनके निकट पहुँचने का अर्थ था, निर्मल महत्ता में स्नान!

पिछली बार, दुर्भाग्य कि आखिरी बार, गत दिसम्बर, १९५७ में उनके दर्शन किये, तो वे काफी दुर्बल और थके-थके-से लगे। आँखें अवश्य राजसी तेजस्विता में उद्दीप्त थीं; मगर चेहरे का वह रौब शिकनों में बँट कर रह गया था। मन को अकस्मात् एक आघात लगा। बातों-ही-बातों में, जब मैंने सन ३७ की उस मुलाकात की याद दिलायी तो, बोले— "भला कैदी क्या अखबार निकालेगा? पहले अँग्रेज़ की कैद थी, अब जवाहरलाल की कैद है!"

लेकिन चेहरे की स्नेह-स्रोतस्विनी-सी मुस्कान क्षण-भर में ही विलीन हो गयी और उसके स्थान पर एक अतल गम्भीरता भृकुटियों पर छा गयी। काफी भीतर डूबे हुए-से उन्होंने कहा— "अब कोई उम्मीद हमसे मत रखो.....

जंजीरे-आहनी को समझते थे शाखे-गुल
वोह हौसले शिकस्ता दिलों में कहाँ रहे!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्णमूर्ति

कृष्णमूर्ति आज के युग के ज्ञान-योगियों में सर्वत्र आदरणीय स्थान पाते हैं। आत्म-विश्लेषण की प्रणाली से उन्होंने आधुनिक जीवन से सम्बद्ध एवं परम्परागत कई ग्रंथियों को खोला है। कृष्णमूर्ति का जन्म १८९५ ईसवी में मदन-पल्ले (दक्षिण-भारत) में एक निर्धन ब्राह्मण-परिवार में हुआ। कृष्णमूर्ति बचपन से ही स्वप्नदर्शी थे। अपने छोटे भाई नित्यानंद के साथ वे अकेले नदी के किनारे घूमा करते थे। एक दिन थियासोफिकल सोसाइटी में उन्हें श्रीमती एनी बीसेंट के सामने लाया गया। श्रीमती बीसेंट ने उनके भीतर 'युगावतार' के दर्शन किये। उन्होंने दोनों भाइयों को गोद ले लिया। दोनों की शिक्षा-दीक्षा में कोई कसर नहीं रखी गयी। बड़े होने पर श्रीमती बीसेंट ने उन्हें 'मसीह' घोषित भी कर दिया। इस प्रकार एक बड़े भारी धार्मिक संगठन—थियासोफिकल सोसाइटी—का दायित्व उनके कंधों पर आ पड़ा। किंतु १९२२ में अचानक नित्यानंद की मृत्यु हो गयी। दुःख का भीषण आघात कृष्णमूर्ति पर लगा। इस उत्पीड़न में उन्होंने अपने निजत्व का परीक्षण किया। पूरे ७ वर्ष तक, इस दारुण आत्म-विश्लेषण में लीन, वे विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक घूमे। पश्चिम और पूर्व के कई युगधर्म उनकी तुला पर तुले— व्यापक जीवन की हर पर्त को उन्होंने परखा और अंत में, १९२९ ईसवी में, उन्होंने श्रीमती बीसेंट के स्वर्ण-महल को इस आशय की घोषणा के साथ त्याग दिया—

"मुझे विश्वास हो गया है कि, सत्य मार्गविहीन भूमि है। अतः धर्म, सम्प्रदाय या अन्य कोई भी रास्ता सत्य तक नहीं पहुँचा सकता...मैं रास्तों को कैद मानता हूँ। मैं मनुष्य को अपनी चरम मुक्ति में विचरण करता देखना चाहता हूँ— आकाश-विहारिणी स्वानंद-लीन चिड़ियों की भाँति मुक्त और सहज-स्वच्छंद!"

उस दिन से कृष्णमूर्ति अपनी उपर्युक्त अनुभूति को जन-मन में प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्नशील हैं— पश्चिम से लेकर पूर्व तक, सर्वत्र उनकी अध्यात्म-वाणी समान श्रद्धाभाव से सुनी जाती है!

कृष्णमूर्ति का यह निर्णय सिद्धार्थ के महाभिनिष्क्रमण के निर्णय से किसी प्रकार कम नहीं है। तत्वानुभूति के मार्ग में जो वैभव-विपुलता और सत्ता उन्हें बाधक लगी, उसे उन्होंने तृणवत् त्याग दिया और इस प्रकार सारे आडम्बरों से मुक्त होकर आरण्यक-ऋषि के रूप में, इस धरित्री पर निवास कर रहे जन-जन के संशयों का शमन करने की अपनी महान् तपोयात्रा पर निकल पड़े।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि, सत्य तक पहुँचने का मार्ग तुम्हें अपने लिए खुद बनाना पड़ेगा; क्योंकि, असल में, तुम जिसे सत्य या ईश्वर कहते हो, वह तुम्हारे अपने प्रेम-पारावार के सिवाय और कुछ नहीं है। तुम्हें बस इतना ही करना है कि, इस सिंधु की सीमाएँ तोड़ दो और प्रवाह को मुक्त-असीम बहने दो। इस प्रकार ससीम से असीम होकर ही तुम मुक्त हो सकोगे! —कृष्णमूर्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नींव के पत्थर

महर्षि कर्वे और हो ची मिन्ह के बचपन की प्रेरक घटनाएँ

★

अपनी सुनो

नवीनता मेरे जन्म के साथ जनमी थी। मुझे याद है, मेरे नहाने, खाने और घर में रहने के सारे ढंग अपने निजी थे। घर और बाहर के सभी लोग मेरी दिनचर्या को आश्चर्य और कुतूहल की भावना से देखते थे। वाचाल मैं नहीं था; किंतु दूसरों के तौर-तरीकों और रहन-सहन से प्रायः सहमत नहीं रहता था और ऐसे प्रसंगों को लेकर उग्र बहस में कूद पड़ता था। वाद-विवाद एवं आलोचना-प्रत्यालोचना की यह प्रवृत्ति मेरे भीतर अपनी जड़ें निरंतर दृढ़ करती रही। पिताजी इसी कारण मुझसे असंतुष्ट रहते– मित्रों का स्नेह भी सीमित होकर बूँद-दो-बूँद रह गया। किंतु अपने दादाजी को मैंने कभी अपने प्रतिकूल नहीं पाया। वे मुझे समझाते और समझदारी से घर और समाज में रहने के लिए प्रोत्साहित-प्रेरित करते। एक दिन उन्होंने मुझे ज्ञानेश्वर के जीवन का एक प्रसंग सुनाया– वह प्रसंग मुझे, उनकी उस भाव-विभोर वाणी में, अब भी याद है। ज्ञानेश्वर अपने रहन-सहन में निपट निराले थे। फिर वे साधु-पुत्र थे। अतः गाँव के बच्चे उन्हें पूरी निर्दयता के साथ चिढ़ाया करते थे। चारों तरफ से भीषण आघात उन्हें सहने पड़ते थे। जगत् के इस निर्मम व्यवहार ने ज्ञानेश्वर का हृदय विदीर्ण कर दिया और एक दिन उन्होंने अपने को कुटिया के भीतर बंद कर लिया। उनकी बहन ने यह स्थिति देखी, तो उससे न रहा गया। उसने उन्हें प्रबुद्ध करने के लिए प्रशांत-प्रेमप्लुत स्वर में कहा–"जो निराला है, नया काम करने निकलता है, नयी जीवनगति अपनाता है, उसे लोग प्रश्नवाचक दृष्टि से देखेंगे ही– तुम तो संत बनने चले हो, तो इस सारी अग्नि के बीच में अचल रहे बिना कैसे संत बन सकोगे? भैया, जो 'कुछ' करने के लिए निकल पड़ता है, वह सबकी सुनता हुआ चलता है। लोग हमारे बारे में जो-कुछ कहते हैं, उससे हमें दुःख क्यों हो, रोष क्यों उमड़े–संसार की ताड़ना तो हमारे दर्पण को स्वच्छ ही करती है।"

प्रसंग समाप्त करते हुए, दादाजी ने अपनी वात्सल्यदृष्टि से मेरे प्राणों में नवचेतन उड़ेलते हुए कहा–"बेटे, सुनो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबकी सुनो, फिर उनमें से चुनो और जो तुम्हें अपने मार्ग में उपयोगी लगे, उस पर अमल करो। यों कदम-कदम पर उलझते रहोगे, तो जहाँ हो, वहीं रह जाओगे।" मैं जानता हूँ कि ,दादाजी की यह सीख मैं अक्षरशः नहीं अपना सका हूँ– इतनी क्षमता मेरे भीतर नहीं है; किंतु प्राणों की गाँठ में बँधी इस सीख को मैं अपनी सबसे बड़ी सम्पत्ति मानता हूँ।

–धों. के. कर्वे

☆

बहते रहो

नौ बरस का था। परीक्षा में असफल हो गया– स्वास्थ्य भी दिन-ब-दिन गिरने लगा। घर में या जंगल में अकेला बैठा रहता। न खाने की सुध थी, न पीने की और न जिंदगी के आगे के मार्ग की। नतीजा यह हुआ कि, मन और अस्वस्थ हो गया। निराशा और निष्क्रियता का यह संयोग ऐसा जीवन पर आरूढ़ हो गया कि, आत्महत्या का निश्चय बार-बार मन की परिधि पर मँडराने लगा। पिताजी ने समझाया, माताजी की आँखों के आँसुओं ने रुलाया और हमारे कुल-पुरोहित ने कई बार मुझे नवचेतन देने के लिए अभिमंत्रित फल खिलाये। किंतु सारी सीखें–सारी दुआएँ–बेकार हुईं। मेरी जीवन-गति जिस खूँटे पर बँध गयी थी, वहीं सड़ने लगी। रातें जाग कर बिताता, नींद नहीं आती थी– भयानक और अवसाद के अंधकार-ग्रस्त विचार विश्राम को कुतर-कुतर कर खाते जा रहे थे। एक रोज ऐसे ही जब नींद नहीं आयी, तो घर से चुपके से भाग निकला। चलता गया। एक बौद्ध चैत्य से गाने की मीठी धुन आ रही थी। काफी निकट पहुँच गया, तो मुझे ज्ञात हुआ कि, एक भिक्षु-कवि अपनी कविताएँ गा रहा है। गीत का सार था–"पानी मैला क्यों नहीं होता? क्योंकि वह बहता है। पानी सड़ता क्यों नहीं? क्योंकि वह बहता है। पानी सबको निर्मल क्यों करता है? क्योंकि वह बहता है! पानी के मार्ग में बाधाएँ क्यों नहीं आतीं? क्योंकि वह बहता है। पानी का एक बिंदु झरने से नदी, नदी से महानदी और महानदी से समुद्र क्यों बन जाता है? क्योंकि वह बहता है। इसलिए मेरे जीवन तुम रुको मत, बहते रहो, बहते रहो!"

काफी देर तक मैं वहीं अचल-अवाक् खड़ा रहा। जब घर आया, तो मैं बहता जल था– आज भी मैं बहता जल हूँ। पानी को जैसे छोटे-बड़े, नीचे-ऊँचे, गंदे-साफ से कोई एतराज नहीं है, वैसे ही मुझे भी ऐसी कोई शिकायत नहीं। मैं सब जगह जाता हूँ– सर्वत्र बहता हूँ और अपनी गति में जो-कुछ मुझमें शेष-अशेष है, सबको देता हूँ और इसी में अपने को सार्थक पाता हूँ।

—हो ची मिन्ह (वीतनाम के राष्ट्रपति)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम रथवान

हम रथवान, व्याहली रथ में, रोको मत पथ में!
हमें तुम रोको मत पथ में!!

माना, हम साथी जीवन के,
पर तुम तन के हो, हम मन के,
हारे समरथ में नहीं, तुम्हारी गति है मनमथ में!
हमें तुम रोको मत पथ में!!

हम हारे की धनि के रथवाहक,
तुम तस्कर परधन के गाहक;
हम हैं परमारथ-पथ-गामी, तुम रत स्वारथ में!
हमें तुम रोको मत पथ में!!

दूर पिया, अति आतुर दुलहन;
हम से मत उलझो तुम इस क्षण;
अरथ न कुछ भी हाथ लगेगा रेंगे अनरथ में
हमें तुम रोको मत पथ में!!

अनधिकार कर जतन थके तुम,
छाया भी पर छू न सके तुम;
सदा स्वरूपा एक सुहृद वह पथ के इति अथ में!
हमें तुम रोको मत पथ में!!

काशी-मुख पर घुँघट-पट झीना,
चितवन दिव्य-स्वप्न-लवलीना;
दरस-आस में बिंधा हुआ मन-मोती है नथ में!
हमें तुम रोको मत पथ में!!

नरेन्द्र शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दावानल में नहीं, रोटी चूल्हे में पकती है

मंगलसिंह चौहान की जवानी बापू के करुणामय स्पर्श की एक प्रेरक कहानी

नौवाँ दर्जा पास किया ही था कि, पिताजी का देहांत हो गया। घर का सारा भार मेरे कंधों पर आ पड़ा। माँ, दो छोटे भाई और एक छोटी बहन—मेरे पुरुषार्थ के पवित्र दायित्व थे। व्यापार-व्यवसाय करने के लिए न तो घर में पूँजी थी और न पैतृक परम्परा का अनुभव एवं प्रोत्साहन। पिताजी पुलिस-आफिस में हेड क्लर्क थे। अतः मैं भी वहीं आरजी क्लर्क की हैसियत से काम करने लगा। छः महीने बाद मैं मुस्तकिल भी हो गया। दो साल की नौकरी ने मेरी माँ को मेरे स्थिर-स्थायी भविष्य के प्रति आश्वस्त कर दिया। फलतः मेरी शादी हो गयी और साल-भर बाद, मैं एक बेटी का बाप भी बन गया—पूरा गृहस्थ, तन-मन-आत्मा से संसार-शकट को चलाने में लीन। प्राण का एक छोर रोटी देनेवाले आफिस के वृक्ष को सींचता और दूसरा परिवार के प्रेम-पारावार को यथासाध्य भरता!

किंतु यह संतोष और श्रम-कर्तव्य की यह पूजा ज्यादा निभ नहीं सकी। मेरी ओर से कोई गलती नहीं हुई—अपनी निष्ठा और संकल्प में मैंने कमजोरी नहीं आने दी। मगर संसार-चक्र ऐसी दुष्ट गति से घूमा कि, एक निर्दोष राहगीर उसके नीचे कुचले जाने से बाल-बाल बचा—यों कहिये कि, किसी चमत्कार को फलित होना था, जो मैं यह कहानी कहन के लिए आपके सामने उपस्थित हूँ। नहीं तो इस दुनिया ने तो मुझे अपना शत्रु बना कर हमेशा के लिए नरक में ढकेल ही दिया था!

पत्नी को क्षय हो गया और हालत तेजी से खराब होने लगी। घर का भार माँ के दुर्बल सामर्थ्य पर पड़ा। भरसक उसन बोझ खींचा; मगर क्षीण प्राण कब तक उसके स्नायुओं को सींचते। एक दिन बुखार में ही काम में जुटी वह सीढ़ियों पर से गिर पड़ी और दो दिन बाद हम पर से वात्सल्य का साया समेट कर चल बसी। अब प्रश्न आया, पत्नी के इलाज का और घर सम्भालने का। मैंने छुट्टी के लिए दरख्वास्त दी। मगर सात रोज की छुट्टी भी मेरे लिए स्वीकृत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं हुई। मैंने बड़े साहब से अपील की, अपनी सारी परिस्थिति उन्हें समझायी; मगर मेरे अफसर की सिफारिश के बिना वे कुछ करना उचित नहीं समझते थे। क्या करता! आफिस नहीं छोड़ सका।

पत्नी की बीमारी बढ़ती गयी। पुश्तैनी मकान था। गिरवी रख कर पत्नी की चिकित्सा शुरू करवायी; किंतु उपचार के बजाय उसे विश्राम और जलवायु-परिवर्तन की ही आवश्यकता ज्यादा थी। और, मुझे छुट्टी मिल नहीं रही थी। तो फिर जो होना था, वही हुआ। पत्नी की काया सम्भल नहीं सकी और जब मैं एक दिन दौरे पर था, तो वह बिचारी उस आकुल-आक्रांत प्राण-पखेरू को अपने सड़े-गले पिंजड़े में ज्यादा रोक नहीं सकी—काया-कोटर का निवासी भला कभी थिर रहा है— हमारे-आपके मोह की उस असंगसंगी ने भला कभी परवाह की है!

मेरा चमन उजड़ गया। तन का साथी ही नहीं गया, मन का साथी भगवान् भी चला गया—अब संसार मेरा शत्रु था और मैं संसार का जानी दुश्मन! मेरी आँखों के सामने बस एक ही दर्शन था— प्रतिशोध; एक ही संकल्प था— संसार से बदला लेना।

एक हफ्ते बाद दफ्तर गया। अग्रिम तनख्वाह की अर्जी दी; मगर मंजूर न हुई। अफसर से 'तू-तू' 'मैं-मैं' हो गयी। क्रोधावेश में उन्होंने मुझे तमाचा मार दिया। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया। हवालात में बंद कर दिया गया। मैंने गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की; मगर आँसू की वाणी सुननेवाले दिल शायद वहाँ आग की भट्टी हो गये थे। तो फिर मेरे आँसू भी सूख गये और ऐसे सूखे कि, फिर काफी अर्से तक आँखों की कगारों में नहीं बहे।

रात को मैंने संतरी से बंदूक छीनी और हवालात से निकल भागा— कई उग्र-हिंसक स्वप्नों में विह्वल। मैंने लूटमार और डाके डालने का निश्चय कर लिया। धन और सत्ता के खिलाफ मेरे बुलंद प्रतिशोध ने एक दर्जन साथी भी आसपास एकत्र कर दिये। हमारे सपने बढ़ने लगे। लूटमार से बढ़ कर हम लोक-राज्य कायम करने की सुनहली कल्पनाएँ सँजोने लगे। इन राक्षसी इच्छाओं ने हमें शराब का भी अनुरागी बना दिया— राजा ही ऐशो-आराम नहीं करेगा, तो क्या कंगाल मजदूर करेगा!

यद्यपि हम लोगों ने कोई आक्रमण कहीं किया नहीं था; किंतु हमारा आतंक आसपास के सभी गाँवों पर छा गया था। पुलिस हमारे पीछे पड़ गयी थी। एक दिन हम लोगों ने अचानक पुलिस की एक टुकड़ी को घेर लिया। सब नये रंगरूट ही थे उसमें। कुछ मेरे परिचित भी थे। मुझे देखा, तो उनकी सहानुभूति उमड़ आयी। हम लोगों ने साथ-साथ ही खाना खाया। मेरे घर की करुण अवस्था उन्होंने मुझे बतायी; किंतु मैं विचलित नहीं हुआ, उल्टे मेरी हिंसा हीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उससे भड़की। मैंने पुलिस की उस टुकड़ी से गरज कर कहा—"प्राणों की खैर चाहो, तो इधर मत आना। चले जाओ, आज तुम पर गोली नहीं चलाऊँगा।"

हमारी टोली रोज-ब-रोज बढ़ रही थी। कुछ उसमें मेरे जैसे आदर्शवादी भी थे। संगठन की इस सफलता ने हमारे सपनों में नया रंग भरना शुरू कर दिया। सशस्त्र राजनीतिक क्रांति का विचार हमारी चेतना में नित-नये ज्वार उठाने लगा। आखिर देशी रियासतों के गढ़ों पर तिरंगा गाड़ने की योजना हमने बना ही ली। आज उस सब पर हँसी आती है। किंतु उस समय तो यह सब दोपहर के सूरज की तरह का सत्य था। हम सबके दिलों में त्याग-वैराग्य जैसे अनायास ही हिलोरें भरने लगा था! आसपास के गाँवों से हमको रसद मिल जाती थी—प्रायः बल-प्रयोग अथवा आतंक ही से हम लोग उसे प्राप्त करते थे।

एक शाम को हम लोग गाँव के बाहर इमलियों के पेड़ के नीचे बैठे शराब पी रहे थे कि, मैंने देखा, मेरे फूफा बैलगाड़ी में बैठे कहीं से आ रहे हैं। मैंने मुँह फेर लिया—हटो, इस दुनिया से मुझे अब कुछ लेना-देना नहीं! किंतु जब गाड़ी मेरे सामने से निकल गयी, तो मेरा कंठ ही मेरे साथ घात कर बैठा। मैंने चिल्ला कर कहा—"फूफाजी!" फूफाजी की गाड़ी रुक गयी। फूफाजी ने मुझे देखा। पहचान नहीं सके; किंतु जब मैं उनके सामने पहुँच गया और मेरे हाथ उनके पैरों पर झुके, तो वे दहाड़ मार कर रो पड़े। मेरे भीतर के वज्र भी पिघलने लगे। किंतु परिस्थिति समझ कर मैंने उनसे कहा—"कल रात को मैं घर आऊँगा, रात के ग्यारह बजे। तब तक आप मेरे बारे में न तो कुछ सोचें और न ही कुछ करें!"

उस रात को फूफाजी से काफी बातें हुईं। मैंने बड़े गर्व के साथ अपनी योजना उन्हें बतायी और उनका आशीर्वाद माँगा। वे सुनते रहे। बहुत थोड़ा बोले—गौर से मेरे उद्दीप्त चेहरे को, मेरी वेग-संवेगमयी हरकतों को देखते रहे। अंत में, उन्होंने कहा—"काम तू जो कर रहा है, वह बेशक अच्छा है। मगर तू तो जानता है, मैं अपने को गांधीजी को सौंप चुका हूँ। उन्हें ही मैं अपना सेनापति मानता हूँ। तेरे लिए भी मेरी सलाह तो यही है कि, तू उनसे जाकर आशीर्वाद माँग।"

बात मुझे जँच गयी। गर्व-गरिमा से मेरी आँखें चमक उठीं। मगर दूसरे ही क्षण सारा उत्साह-उल्लास निःश्वास के रूप में काफूर हो गया। कहाँ गांधीजी और कहाँ मैं? मैं एक बागी, डाकू, शराबी कैसे उन तक पहुँचूँगा? मगर मेरी समस्या शायद फूफाजी ने ताड़ ली थी। उन्होंने कहा—"तू मेरे साथ परसों चलना। हम लोग सेवाग्राम चल कर बापू से मिलेंगे।"

और, इस भेंट के पाँचवें दिन हम लोग गांधीजी के पास पहुँच गये। फूफाजी को देखते ही वे बोले—"तेरी घाणियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूब चल रही हैं। रिपोर्ट मैंने पढ़ी है। हरिजन-आवास कितना बन गया?" फूफाजी ने कैफियत दी; मेरे बारे में जितना कह सकते थे, सब कहा और मुझसे भी कहलवाया। बापू ने मुझे ध्यान से देखा—"कितनी बंदूकें तुम्हारे पास हैं?" मैंने अविलम्ब कहा—"बत्तीस।" "ये तो बहुत हैं।"—कह कर वे जोर से हँस पड़े। फिर मुझसे पूछा—"घर में साँप घुस गया, तो क्या घर में आग लगा दोगे?" मेरी गरदन झुक गयी। वे फिर बोले—"आवेश में अपनी आहुति मत डालो। मरना यों तो बड़ा आसान है—सभी मरते हैं; किंतु मरने-मरने में फर्क होता है। जो बंदूक के भरोसे जीता है, भला वह मरना क्या जाने? तुम त्याग और बलिदान की बातें करते हो, तो क्या है तुम्हारे पास देने के लिए? मुझे तो दान नहीं चाहिए, दाता चाहिए। दाता तुम हो नहीं। जिसकी निष्ठा ही दूषित, वह कैसा दाता? अर्पण भी तो मन का ही होता है; किंतु मन जब फूल नहीं, शूल है, तो फिर अर्पण की क्या गति? रोटी चूल्हे में पकती है, दावानल में नहीं। बाढ़ से भी क्या खेत सींचे गये हैं? अपने को उपयोगी बनाओ। प्रतिशोध किससे लोगे? उसी डाल से न, जिस पर तुम्हारा घोसला है? समाज कोई पराया है क्या? उबाल को ठंडा करो और फिर मन के स्थिर जल में अपने को देखो। हो सके, तो अपने गाँव के कुछ काम आओ; नहीं तो देह का धर्म निबाहते जाओ। अपना बिछाओ, अपना समेटो। दूसरों के लिए बीमारी मत बनो!"

मैं उनकी तरफ देख नहीं सका। उनके चेहरे पर संताप का तनाव था। मैं उनके दुःख का कारण था। मुझे एक आघात लगा—मेरे अंतर्मन ने जैसे मुझे लाख-लाख शूलों से वेध दिया हो—"रे दुर्मति! कितनी पीड़ा तूने पहुँचायी कोटि-कोटि के इस वात्सल्य-वारिधि को!" मैं रो पड़ा। आँखों की उस अथिर बरसात में ही मैंने उनसे क्षमा माँगी। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रख दिया। जीवन के उस परमधन्य क्षण की याद आज भी मुझे परम सौभाग्यवान् बना कर चली जाती है! फिर प्रेम-प्रवाहित स्वर में वे बोले—"सुन, दुःख सहना कभी निष्फल नहीं जाता। सहे बिना गति भी कहाँ? मगर जिसने सहा, वह रुका नहीं है, आगे बढ़ा है। दुःख पचा सको, तो अमृत है; नहीं तो उससे बुरा कोई हलाहल नहीं।"

हम लौट आये। फूफाजी से सलाह लेकर मैंने एक स्कूल खोल दिया—हरिजन बालकों को पढ़ाने के लिए। कुछ ही दिनों में मुझे इस काम में अटूट श्रद्धा हो गयी और मैंने इसे अपना जीवन-ध्येय बना लिया। इसके पश्चात् तो कई बार गांधीजी से मिला और एक दिन वह भी आया, जब मेरे द्वारा चार-चार स्कूल संचालित देख, उन्होंने हँस कर कहा—"अब अगर तू चढ़ाये, तो तेरी बलि मैं जरूर लूँगा!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अण्णा से एक भेंट

महर्षि कर्वे को राष्ट्रपति ने इस वर्ष 'भारतरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया है। आगामी अप्रैल मास में कर्वे अपने ज्योतिर्मय जीवन के सौ वर्ष भी पूरे कर रहे हैं। श्रद्धालु 'नवनीत' इस युगऋषि का अभिनंदन करते हुए, सत्प्रसंग के रूप में, मालतीबाई बेडेकर-लिखित एक भेंट-संस्मरण प्रकाशित कर रहा है।

★

धोंडू केशव कर्वे— जो महाराष्ट्र में महर्षि अण्णा साहब कर्वे के नाम से विख्यात हैं— अगले अप्रैल मास में १०० वर्ष के होनेवाले हैं। मेरा विचार है कि, भारत में अकेले एक वही व्यक्ति हैं, जिनका जीवन सामाजिक प्रगति के साथ-साथ चलता रहा। उनका जीवन समाज के दुर्गुणों के प्रति मौन संघर्ष का प्रतीक है।

मैं विगत ४० वर्षों से उन्हें उसी सड़क पर— मौन और अपने स्वप्नों में विस्मृत— टहलते देखती हूँ। वे अपने पुत्र के अहाते में नित्य टहलते हैं— उसी तरह गम्भीर और उसी तरह विचारमग्न! आज उनके आदर्श करीब-करीब मूर्त हो चुके हैं।

जीवन के इस सौवें वर्ष में भी युवकोचित उमंग-उल्लास के प्रतीक महर्षि कर्वे [चित्र: वी० एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

पिछली बार जब मैं उनसे मिली, तो मैंने उस प्रेरणा-स्रोत को समझने की चेष्टा की, जिसके आधार पर इस अवस्था तक उनके जीवन में निरंतर रस-संचार होता रहा है।

मालतीबाई— "अण्णा साहब, वृद्धावस्था तो आपको अखरती होगी!"

अण्णा साहब— "क्यों, अभी भी मेरे पास बहुत-से काम रहते हैं। टहलना, बातें करना, खाना और उन कामों को करना, जिन्हें मैं अब तक नहीं कर सका हूँ। मैं आजकल पढ़ता अधिक हूँ। अब भी मुझे जीवन में रस मिलता है। मैं जीवन से जरा भी थका नहीं हूँ।"

मालतीबाई— आजकल आप पढ़ते क्या हैं?

अण्णा साहब— "मुझे सभी तरह की पुस्तकों में रुचि है। जो मिल जाती है, वही पढ़ता हूँ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अण्णा साहब सभी तरह की पुस्तकें पढ़ते हैं– नृतत्व-शास्त्र, वनस्पति-शास्त्र, जीवनचरित, कहानियाँ, उपन्यास, कभी-कभी तो वे बच्चों की स्कूली किताबें भी बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। पर वे बोलते बहुत कम हैं। वे तभी बात करते हैं, जब कोई उनसे बात करे। और, जब बोलते हैं, तो भी बहुत कम– उतना ही, जितना बोलना अत्यंत आवश्यक होता है। उनके इर्द-गिर्द जो लोग होते हैं, अण्णा साहब को प्रायः उनकी उपस्थिति का भान नहीं होता और न अण्णा साहब यह चाहते ही हैं कि, उनकी उपस्थिति का भान किसी को हो पाये।

मा ल ती बा ई– "आपको अपने जीवन में जो सफलता मिली है, क्या आपको उसका भी भान नहीं है?"

अण्णा साहब–"नहीं, मालतीबाई!"

मालतीबाई–"कहा जाता है कि, व्यक्ति की महानता की झलक बचपन से ही मिलने लगती है। क्या आपको अपने बचपन में इस बात का अनुभव होता था कि, आप कोई महान् कार्य करनेवाले हैं?"

अण्णा साहब–"आप चाहती हैं कि, मैं सौ वर्ष पुरानी बातें फिर से स्मरण करूँ। जहाँ तक मेरा खयाल है, मैं एक साधारण बालक था। अपने दर्जे में थोड़ा चालाक अवश्य था, बस। बचपन में मार-पीट मुझे पसंद नहीं थी और न मैं यह चाहता था कि, स्कूल में लड़के पीटे जायें। मैं लज्जाशील और कुछ भीरु प्रकृति का था।"

मा ल ती बा ई– "विगत १०० वर्षों के सिंहावलोकन में कौन-कौन सी घटनाएँ ऐसी घटीं, जो आज भी आपको अच्छी तरह स्मरण हैं?"

अण्णा साहब-"मेरा ऐसा विचार है कि, सभी के जीवन में ऐसे अवसर आते हैं, जब व्यक्ति के जीवन में अकल्पनीय परिवर्तन होते हैं। यह बात मेरे साथ भी सत्य है। जहाँ तक स्मरण है, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि, मैं नारी-शिक्षा का काम अपने हाथ में लूँगा या उन्हें सामाजिक दासता से मुक्त कराने का काम करूँगा। दो-एक घटनाएँ ऐसी घटीं कि, मेरा हृदय फट गया और मुझे वह कार्य करने की प्रेरणा मिली, जिसे

मिट्टी

उगता सूरज डूबता है; आया जीवन जाता है। काल का यह अखंड क्रम देख, नश्वर मिट्टी ने अनश्वर आकाश से कहा–"विनाश ही ध्येय है, तो मुझे क्यों बनाया– क्यों रोज हँसूँ, क्यों रोज रोऊँ?" आकाश मुस्कराया, बोला–"सरले, काल भी तो मुझसे यही शिकायत करता है। कहता है, मुझे इतना बल देकर भी इतना दुर्बल क्यों बनाया कि, मैं जितना रुलाता हूँ, यह मिट्टी उतनी ही हँसती है।"

—हवाङ पो (चीनी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाद में, मैंने अपने जीवन का लक्ष्य ही बना लिया। हालाँकि यह भी सत्य है कि, मैं समाज-सुधार के सम्बंध में पढ़ा करता था और समाज-सुधार के लिए जो संघर्ष चलते थे, उनसे प्रायः प्रभावित भी होता था।"

मालतीबाई—"वे कौन-सी घटनाएँ थीं, जिनसे आपके जीवन में परिवर्तन आया?"

अण्णा साहब—"लाख विरोधों के बावजूद, मेरे मित्र बाबा साहेब जोशी ने अपनी विधवा बहन का विवाह किया। यह एक ऐसी घटना थी, जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। दूसरी बात, जो मुझे स्मरण है, यह है कि, एक बड़ी सुशीला युवती विधवा निःसहाय छोड़ दी गयी थी। उसे एक दुराचारी की काम-वासनाओं का शिकार बनना पड़ा। मुरुड में उसे कहीं आश्रय नहीं मिला। बाध्य होकर वह नरसिंहवाडी चली गयी। वहाँ एक मंदिर में रह कर और भिक्षा माँग कर आजीवन जीवन-यापन करती रही। जहाँ तक याद है, इस घटना का मेरे ऊपर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। इसी कारण से, जब मेरी पत्नी मरीं, तो मैंने किसी विधवा से ही विवाह करने का निश्चय कर लिया।"

परम्परा-पुरुष

[चित्र: फ्रांस के कीर्तिलब्ध चित्रकार एल ग्रेको के चित्र की रेखानुकृति]

मालतीबाई—"अण्णा साहब, जीवन के प्रति आपके अनासक्त भाव से मैं सदा चकित रही हूँ। केवल बातचीत करने के उद्देश्य से आप किसी से बातचीत नहीं करते। किसी कार्य के लिए किसी व्यक्ति की टीका-टिप्पणी करते मैंने आपको कभी नहीं देखा। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि, यद्यपि आप अपनी पत्नी तथा बच्चों-सहित मकान में रहते हैं, तथापि उनमें आप कोई विशेष रुचि नहीं लेते। आपको जो-कुछ भी परोस दिया जाता है, उसे चुपचाप खा लेते हैं। आप अपने ही विचारों में निमग्न रहते हैं और बोलते बहुत ही कम हैं। क्या यह बात सत्य नहीं है?"

अण्णा साहब—"जहाँ तक मैं सोचता हूँ, यह मेरी प्रकृति है। दूसरे के जीवन में लेश-मात्र भी दखल देना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।"

मालतीबाई—"अपनी पत्नी और बच्चों के सम्बंध में भी नहीं?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अण्णा साहब–'नहीं, यदि वे सब ठीक-ठीक रह रहे हों, तो मैं उनके मामलों में दखल नहीं देना चाहता।"

मालतीबाई–"इससे आपके स्वभाव का पता तो चल जाता है; पर जीवन में ऐसी घड़ियाँ भी अवश्य आयी होंगी, जब आप विचलित हो गये होंगे।"

अण्णा साहब–'हाँ, स्वभाव से मैं बहुत ही शांत व्यक्ति हूँ। पर मुझे दो-एक ऐसे अवसर अवश्य स्मरण हैं, जब मैं पूर्णतः विचलित हो गया था। फिर भी मैंने हिम्मत बाँधी और तब उन पर सफलता पा सका।"

मालतीबाई– "वे कौन-से अवसर थे, कृपया बतायेंगे ?"

अण्णा साहब– "सबसे पहला था, जब मेरी प्रथम पत्नी का निधन हुआ। वे मेरे लिए बड़ी सहायक थीं। उन्होंने मेरे जीवन को आमोदमय बना रखा था।"

मालतीबाई–"हाँ, अण्णा साहब, राधाबाई के बारे में मैंने यह बात सुन रखी है; पर बाया (अण्णा साहब की दूसरी पत्नी), जिन्हें मैं भी भली-भाँति जानती हूँ, उनसे कुछ भिन्न हैं – क्या यह बात सही है ?"

अण्णा साहब– "हाँ, राधाबाई गाय की तरह सीधी-सादी थीं और बाया विचारशीला हैं। दोनों के पृथक्-पृथक् व्यक्तित्व रहे हैं। जीवन के सम्बंध में बाया की दृष्टि भिन्न है और वह यह इच्छा रखती हैं कि, उनके विचारों की प्रतिष्ठा की जाये।"

मालतीबाई–"बाया के स्वतंत्र विचारों के सम्बंध में आपका क्या मत है ?"

अण्णा साहब– "मैं उन्हें पसंद करता हूँ; क्योंकि उनके कारण मुझे बहुत-से प्रश्नों पर विचार करने का अवसर मिला।"

मालतीबाई– "अण्णा साहब, राधाबाई के निधन पर तो आप विचलित हो गये थे! क्या ऐसी कोई अन्य घटना भी आपको स्मरण है, जब आप विचलित हुए हों ?"

अण्णा साहब– "हाँ, वह घटना ऐसी थी, जिसने मेरी आस्था की शक्ति को चुनौती दी थी। मैं जीवन में कुछ करने के लिए कटिबद्ध था। जब मैंने पुनर्विवाह किया, तो मेरे गाँव के लोगों ने मेरा सामाजिक बहिष्कार कर दिया। बाया को भी उसका फल भोगना पड़ा। उस समय मैं भीरु नहीं था। यह भी बात थी कि, मैं किसी का कुछ बुरा नहीं मानता था; लेकिन इस सामाजिक बहिष्कार से मैं किंचित्-मात्र नहीं झुका।"

मालतीबाई – "उस वक्त आप बहुत दुःखी तो हुए ही होंगे ?"

अण्णा साहब– "हाँ, मैं दुःखी अवश्य था; लेकिन मैंने यह भी समझा था कि, जो लोग मेरा बहिष्कार कर रहे थे, वे भी उस परिस्थिति में सही थे। उनके भी अपने विश्वास थे। मैं दुःखी इस बात से अवश्य था कि, मेरी माँ तथा मेरे अन्य निकट सम्बंधी, जो मुझसे स्नेह करते थे, वे भी इस बहिष्कार के कारण मुझसे दिन में नहीं मिल सकते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें डर था कि, कहीं उनका भी सामाजिक बहिष्कार न हो जाय।"

मालतीबाई—"आपने बताया कि, आप भीरु स्वभाव के थे। फिर आपने पुनर्विवाह— और वह भी विधवा से— कैसे कर लिया?"

अण्णा साहब—"यह एक संयोग की बात थी। मैं इस बात पर दृढ़प्रतिज्ञ था कि, मैं स्वयं विधुर हूँ; अतः मैं किसी अविवाहित लड़की से विवाह न करूँगा। मेरा यह भी विचार था कि, किसी कम उम्र की लड़की से विवाह करने के लिए मेरी उम्र बहुत ज्यादा हो गयी है। मेरा यह निर्णय मेरे मित्र नरपति जोशी को ज्ञात था और विवाह का प्रस्ताव उनकी ही ओर से आया था। विधवा होने के नाते बाया भी सामाजिक अभिशाप का शिकार थीं। पर शारदा-सदन में वे भरती हो गयी थीं और पंडित रमाबाई से प्रभावित थीं। उनके पिता ने जब पुनर्विवाह का प्रस्ताव उनके सम्मुख रखा, तो वे उसके लिए तैयार हो गयीं। जब उन दिनों की परिस्थितियों पर ध्यान जाता है, तो निश्चय ही मुझे बाया की हिम्मत की प्रशंसा करनी पड़ती है।"

मालतीबाई—"अब तो आपके विश्वास को आगे बढ़ाने के लिए बहुत-सी संस्थाएँ खुल गयी हैं। उनकी वृद्धि पर आपको प्रसन्नता अवश्य होती होगी!"

अण्णा साहब—"हाँ, मुझे प्रसन्नता अवश्य होती है; पर बाज-बाज अवसरों पर मैं दुःखी भी होता हूँ। मुझे प्रसन्नता इस बात की अवश्य होती है कि, वे हमारे लक्ष्य को पूरा करने के लिए कार्यरत हैं। लेकिन उनके प्रसार की कुछ घटनाओं से मैं दुःखी भी हुआ हूँ। मुझे स्मरण है कि, विधवाओं के अतिरिक्त अन्य लड़कियों की शिक्षा के लिए बड़ा विरोध किया गया और जब मातृ-संस्था से पृथक् उनके लिए दूसरी संस्था खोलने का निश्चय किया गया, तो मैं बहुत ही दुःखी हुआ।

"कुछ भी हो, जो-कुछ कर सकना मेरे लिए सम्भव था, उसे मैंने किया— न केवल लड़कियों और विधवाओं की शिक्षा के लिए; बल्कि उनके लिए भी, जिन्हें अछूत कहा जाता है। अपने ढंग से मैंने जात-पाँत-तोड़क-आंदोलन में भी हाथ बँटाया। मैं इस कहावत में विश्वास करता हूँ कि, जब इच्छा होती है, तो मार्ग मिल ही जाता है। मेरा मस्तिष्क सदा नये रास्तों की खोज करता ही रहा है। जीवन के प्रति अपनी रुचि का कारण मुझे यही मालूम होता है कि, मुझे जीने की नयी विधियाँ बराबर मिलती रही हैं।

*

बीस वर्ष की उम्र में व्यक्ति का जो चेहरा रहता है, वह प्रकृति की देन है; तीस वर्ष की उम्र का चेहरा जिंदगी के उतार-चढ़ाव की देन है; लेकिन पचास वर्ष की उम्र का चेहरा व्यक्ति की अपनी कमाई है। —अष्टावक्र

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतिसुख : अतिदुःख

भारत की भाँति वीतनाम में भी साधु-संन्यासियों के लिए यात्रा-पर्यटन की परम्परा है। वहाँ के संत भी अपनी शिष्यमंडली के साथ गाँव-गाँव में जाकर डेरा डालते हैं और इस प्रकार देश-दर्शन के साथ-साथ जीवन के अनुभव संचित करते हैं। यहाँ हम वीतनाम की 'संतो-पाख्यानमाला' का एक पुष्प 'नवनीत' के पाठकों के अर्पण करते हैं।

*

"संयोगवश एक सिंह और एक चूहा एक उजड़ी नगरी में पहुँच गये। नगरी एक-दो दिन पहले ही उजड़ी थी; अतः वहाँ नाना प्रकार के भोजन-पकवानों और पेयों के ढेर लगे थे। स्वाद का लोभी सिंह रात-दिन खाने-पीने में लीन रहने लगा। चूहा बेचारा, सिंह के डर के मारे, कुछ भी नहीं खा पाता था। कई दिनों की भूख के कारण वह अत्यंत दुर्बल हो गया और सिंह दिन-ब-दिन मोटा होता गया। एक दिन जैसे ही सिंह को झपकी लगी, भूख से एकदम मरणासन्न वह चूहा, जीवन-मरण का मोह छोड़ कर, खाने पर लपका। किंतु सिंह की नींद खुल गयी। वह चूहे पर झपटा। किंतु एक तो वह बेहद मोटा हो गया था और फिर उस दिन उसने इतना खा लिया था कि, उछलते ही मर गया। चूहा मर तो वैसे ही रहा था; सिंह के झपटते ही उसके भी प्राण-पखेरू उड़ गये।" दृष्टांत का सार निचोड़ते हुए आचार्य ने अपने जिज्ञासु शिष्यों से कहा— "तरुणो, अति-दुःख और अतिसुख, दोनों ही समान रूप से घातक हैं। व्यक्ति और समाज, दोनों की जिम्मेदारी है कि, प्रजा में न अतिदुःख रहे और न अतिसुख। समता-संतुलन ही सुख और धर्म के वास्तविक पोषक हैं।"

सुख-दुःख

आदम की दो बेटियाँ थीं। दोनों बड़ी सुंदर और गुणवती थीं। एक दिन दोनों बगीचे में फूल तोड़ने गयीं। उस बगीचे में एक ही फूल था। दोनों उस पर झपटीं। बड़ी ने बढ़ कर फूल तोड़ लिया। छोटी का हाथ पड़ा काँटों पर। काँटे चुभे, तो वह रोने लगी। बड़ी बहन को दया आ गयी। उसने अपना फूल छोटी बहन को देना चाहा; मगर उसने नहीं लिया और वह रोती ही रही। नादान बहन को उसने खूब मनाया; पर वह मानी नहीं। आदम की यही दोनों अमर बेटियाँ—सुखकुमारी और दुःखकुमारी— दुनिया में सुख और दुःख के नाम से अब तक पुकारी जाती हैं। —पश्तो-लोककथा

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि और उसका जगत्

कवि एवं कविकर्म पर डा० सम्पूर्णानंद के मननीय विचार

*

कलाकार की रचना को 'कृति' कहने का दस्तूर है। किंतु 'कृति' अनुपयुक्त शब्द है। एक मिस्त्री जिस कुर्सी या मेज को तैयार करता है, उसको भी 'कृति' कह सकते हैं। परंतु इस प्रकार की 'कृति' में और एक अच्छे गायक की उठायी हुई रागिनी या एक महाकवि की रचना-रूपी 'कृति' में आकाश-पाताल का अंतर है। 'कृति' फोटो को भी कह सकते हैं और अजंता या सारनाथ में मिली हुई बुद्ध की मूर्तियों को भी। परंतु दोनों को एक कोटि में रखना 'कला' शब्द की निर्मम हत्या होगी। सच्चे कलाकार की रचना के उद्गम का स्रोत इस दृश्यमान जगत् से बहुत दूर होता है। उसकी पीठिका कलाकार के मस्तिष्क से बहुत ऊपर होती है। जिस जगत् में सच्चा कलाकार रहता है, वह इस जगत् में ओत-प्रोत है और इसके बाहर भी है।

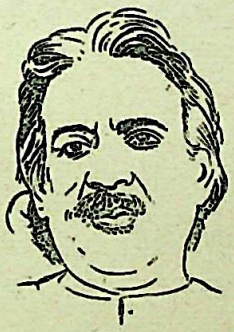

डा० सम्पूर्णानंद

इस जगत् का जो प्रतीयमान रूप है, वह इसका यथार्थ रूप है, ऐसा कोई समझदार नहीं कह सकता। विज्ञान के अनुसार जगत् की मूल सामग्री, वे ईंटें, जिनसे इस भवन का निर्माण हुआ है, विभिन्न तत्वों के परमाणु हैं। परमाणु सब-के-सब गतिशील हैं। और, गम्भीर दृष्टि से विचार करके वैज्ञानिक कहता है कि, जगत् सम्भावनाओं की लहरियों के सिवाय और कुछ नहीं हैं और इससे भी आगे बढ़ कर एक विद्वान् को तो ऐसा प्रतीत होता है कि, यह जगत् किसी महागणितज्ञ के चित्त में उठा हुआ विचार है। कहने का तात्पर्य यह है कि, दार्शनिकों की बात को तो जाने दीजिये, विज्ञान भी ऐसा मानता है कि, इस जगत् की सत्ता उसके इस बाहरी दृश्यमान रूप से भिन्न है। इस अवसर पर स्वभावतः ही यह प्रश्न उठता है कि, वह सत्ता क्या है—कैसी है? यह निश्चय है कि, वह इस जगत् में सर्वत्र व्याप्त है और उसके प्रतीयमान रूप के बाहर भी है, जैसा कि श्रुति ने कहा है— "वह इस विश्व को हर जगह स्पर्श करता है और इस दस दिशाओंवाले विश्व के बाहर भी है।" उस सत्य का यथार्थ वर्णन नहीं हो सकता। वाणी को भी उसी से प्रकाश मिलता है। अंश की यह शक्ति नहीं है कि, अंशी का वर्णन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर सके। इसीलिए श्रुति उसको 'नेति-नेति' कहती है।

परंतु सम्पूर्ण विवरण न सही, कुछ-न-कुछ तो जाना, समझा और कहा ही जा सकता है। आदि-दार्शनिक कपिल और फिर उनके बाद प्लेटो, शंकराचार्य, कांट, हीगेल, शापेनहावर, बेर्ग्सां तथा बौद्ध और जैन विचारकों ने अनेक दृग्विंदुओं से इस कार्य का सम्पादन किया है। किंतु दार्शनिक जिस निष्कर्ष पर पहुँचता है, उसमें एक कमी होती है, जिसको कि, ब्रह्मसूत्र में इस रूप में कहा गया है—'तर्काप्रतिष्ठानात्'—'तर्क अप्रतिष्ठित है।'

यों कलाकार योगी नहीं होता। वह योग की किसी साधना का अवलम्बन नहीं करता। परंतु पूर्व-जन्मों के संस्कार उसके चित्त को एक विशेष दिशा में झुकाते हैं। हमारे प्राचीन शब्दों में उसको 'योग-भ्रष्ट' कहते हैं। वह ऐसा व्यक्ति है, जो पिछले किसी जन्म में योग-मार्ग का अनुसरण करनेवाला रहा होगा; परंतु किन्हीं कारणों से पर्याप्त दूरी तक नहीं जा सका। अस्तु, कोई पूर्वजन्म के सिद्धांत को माने या न माने, यह तो मानना ही पड़ता है कि, सच्चे कलाकार के चित्त की एक विशेष स्थिति होती है। वह दार्शनिक विवेचन करने नहीं बैठता, सम्भवतः विज्ञान की बातों को कम ही जानता है। फिर भी जगत् के प्रतीयमान रूप के पीछे उसको किसी और ही सत्य की झलक दीख पड़ती है। एक कुतिया अपने बच्चे को दूध पिला रही है। इसको सब देखते हैं; परंतु किसी-किसी को उसके पीछे वह जगद्धात्री आद्याशक्ति दीख पड़ती है, जो मातृरूप से सारे विश्व का पालन कर रही है। कवि को और दूसरे सच्चे कलाकार को उसी के दर्शन होते हैं। मोर नाचता है, नर्तकी नाचती है; परंतु उनके नाच को देखते हुए किसी-किसी को उस नटराज की पदध्वनि सुनायी पड़ती है, जिसके डमरू से शब्दशास्त्र की सृष्टि हुई थी, जिसके नृत्य के साथ इस जगत् का संकोच होता है और जिसके श्रमसीकरों से प्रति-क्षण अनंत ब्रह्मांडों का सर्जन होता रहता है। वही व्यक्ति कलाकार है। मेरा ऐसा मत है कि, पारिभाषिक शब्द में योगी न होते हुए

उत्तर

चाँद की रोशनी में ही जब एक तारा टूट कर वहाँ, दूर क्षितिज पर, जा गिरा, तो मेरी आँख के अति क्षीण-ज्योति तारे ने अपने ज्योतिर्मय से कहा—"अपनी स्थिति से गिरना ही अगर पतन है, तो क्षणिक टिके रहने का क्या उद्देश्य?" ज्योतिर्मय बोले—"सब खेल छंद का है। छंद में बद्ध रहना ही उद्देश्य है—पत्ते का डाल से बँधे रहना उद्देश्य है—बूँद पानी से और कड़ी शृंखला से बिछुड़ी, तो फिर वह क्या रह गयी?"

—रोम्याँ-रोलाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी, सच्चा कलाकार वितर्क का अतिक्रमण करके विचार और आनंद की भूमिकाओं के बीच पेंगें मारता रहता है। साधना के अभाव के कारण वह किसी एक जगह टिक नहीं सकता; परंतु थोड़ी देर के लिए उसको सत्य की जो आभा दीख पड़ती है, जड़-चेतन के आवरण के पीछे अर्द्धनारीश्वर की जो झलक मिलती है, वह उसको इस जगत् से ऊपर उठा देती है, और उसके जीवन को पवित्र तथा प्रकाशमय बना देती है।

ऐसे कलाकार के सामने भी वही कठिनाई है, जो योगी के सामने होती है—अपनी अनुभूति दूसरों तक कैसे पहुँचाये? बिना पहुँचाये जी भी नहीं मानता। जब नशा चढ़ता है, तो मुँह खुल ही जाता है। फारसी में एक सूफी ने कहा है—"मन नमीं गोयम् अनल्हक यार मी गोयद बगो!"—मैं 'अहम् ब्रह्मास्मि' नहीं कहता; लेकिन मेरा प्रियतम मुझको विवश करता है कि, तू ऐसा ही कह।

यही दशा कलाकार की होती है। उसके ऊपर भी उसके माध्यम का बंधन है। यदि वह मूर्तिकार है, तब तो बंधन बहुत ही स्थूल है। चित्रकार की तूलिका का मार्ग कुछ अधिक प्रशस्त है, फिर भी माध्यम स्थूल है। सबसे ऊँची कला संगीत है। गायक शब्दों से नहीं, स्वरों से काम लेता है, जो बहुत ही उन्मुक्त और सार्वभौम हैं। जहाँ तक गीत गाये जाते हैं, वहाँ तक शुद्ध संगीत नहीं है, गाकर पढ़ा गया पद्य रचना है। मैं संगीत के विषय को यहीं छोड़ता हूँ। गायन से नीचे; परंतु और सब कलाओं से ऊपर, काव्य है। यों तो 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्' के अनुसार गद्य और पद्य, दोनों ही काव्य हो सकते हैं। शंकराचार्य का 'वेदांत-भाष्य' देखिये—पन्ने-पर-पन्ना उलटते जाइये, काव्य का आनंद आता है। फिर भी गद्य की अपेक्षा पद्य में कवि को अधिक सुविधा होती है। छंद, मात्रा, पढ़ने के ढंग, श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया, आदि से भाव के उद्बोधन में कवि को बहुत सहायता मिलती है।

★

ब्रिटिश म्यूजियम में कितनी पुस्तकें हैं, इसका ठीक-ठीक किसी को पता नहीं। अनुमान है कि, वहाँ ५० लाख पुस्तकें हैं और उन्हें जिन आलमारियों में रखा गया है, यदि उन्हें एक सीध में खड़ा कर दिया जाये, तो वे ६० मील लम्बा स्थान घेरेंगी। सन् १९३१ ईसवी में उन पुस्तकों का सूचीपत्र तैयार करने का काम आरम्भ किया गया और २३ वर्ष के लगातार परिश्रम के पश्चात् अनुभव किया गया कि, कार्य-समाप्ति में ५२ वर्ष अवश्य लगेंगे। इस समय जिस गति से यह काम हो रहा है, उसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि, यह कार्य सन् २०३६ में समाप्त होगा। उस समय तक पुस्तकों की आलमारियाँ ८० मील तक फैल जायेंगी। —यूनेस्को

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विनोदी रवीन्द्रनाथ

दुर्गादत्त रश्मि-द्वारा संगृहीत गुरुदेव के रस-व्यंग्य-कोश की कुछ फुलझड़ियाँ

★

वैशाख की २५-वीं तिथि, कवि के जन्म-दिन पर, कलकत्ता में उनके निवास-स्थान पर, मित्रों के जलपान का आयोजन था। जलपान में मिठाई और फलों की व्यवस्था थी। आगत सज्जनों में एक थे, सुकुमार बाबू। सुकुमार बाबू फल नहीं खाते थे। कवि को मालूम था कि, सुकुमार फल नहीं छूते। जलपान का कार्यक्रम चल रहा था। सब लोग अपनी-अपनी रुचि का मिष्टान्न और फल ले रहे थे। रवीन्द्रनाथ आग्रह-पूर्वक भी कभी-कभी किसी को कुछ परोसवा देते थे। तभी हास-परिहास और उन्मुक्त वार्तालाप के उस वातावरण के बीच रवीन्द्र-नाथ ने गम्भीर स्वर में कहा—"सुकुमार बाबू, मैंने सुना था कि, तुम नियम से गीता-पाठ करते हो।" सबने सिर उठा कर एक बार सुकुमार बाबू को और फिर कवि को देखा। कवि ने फिर गम्भीर स्वर में बात को बढ़ा कर कहा—"देखता हूँ, तुम्हारा गीता-पाठ सार्थक हो गया है!" बात किसी के पल्ले नहीं पड़ी। एक ने पूछा—"सो कैसे, गुरुदेव!" उत्तर में कवि ने कहा—"भाई, देखते नहीं हो. सुकुमार बाबू ने 'माफलेषुकदाचन' की कैसी गाँठ बाँधी है!" सारी सभा यह सुनते ही खिलखिला कर हँस पड़ी।

उन दिनों बंगला के पत्रों में 'बंगवासी' का बड़ा नाम था। एक दिन गुरुदेव के साथ बातचीत करते-करते शरत् बाबू ने कहा—"मगर यह 'बंगवासी' इतनी पुरानी-पुरानी बातें क्यों छापता रहता है?"

गुरुदेव ने कहा—"बेचारा 'बंगबासी' जो ठहरा, शरत्! बासी बात न छापे, तो और क्या करे!"

एक दिन कवि सवेरे उत्तरायण के बरामदे में बैठे थे कि, क्षितिमोहन सेन आये। थोड़ी देर बाद वनमाली एक ग्लास में कवि को कोई पेय देकर चला गया। क्षितिमोहन बाबू बातचीत करते-सुनते बीच-बीच में कवि के हाथ में रखे हुए उस ग्लास पर भी दृष्टिपात कर देते थे। कवि समझ गये कि, सेन महाशय के मन में पेय के प्रति लोभ उत्पन्न हुआ है। उन्होंने वनमाली को पुकार कर पेय लाने का इशारा किया। वनमाली ने लाकर पेय क्षिति बाबू को दे दिया। क्षिति बाबू ने एक बार अपने और फिर गुरुदेव के ग्लास की ओर देखा कि, उनके ग्लास में इतना पेय और मेरे ग्लास में इतना-सा। नौकर की ओर मन में विरक्ति का भाव आया;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु कह क्या सकते थे। गुरुदेव सब देख-समझ रहे थे और अपना पेय जैसे मजा ले-लेकर पी रहे थे।

क्षितिमोहन बाबू ने शायद सोचा, कोई खूब कीमती पेय है– सारा ग्लास एक साथ मुँह में उलट लिया! किंतु गले के नीचे कैसे उतारें! वह तो नीम के पत्तों का रस था। उधर गुरुदेव मंद-मंद मुस्करा रहे थे।

कवि ने आयु के पचास वर्ष पूरे किये। अभ्यर्थना में सभा का आयोजन हुआ। वंग-देश के समस्त शीर्ष-स्थानीय साहित्यिकों ने मिल कर आयोजन किया था। आयोजन सम्पन्न होने के कई दिनों बाद, कवि ने सभी साहित्यिक बंधुओं को अपने यहाँ जोड़ा-साँकू में आमंत्रित किया। निर्दिष्ट समय पर सभी आ गये थे, केवल यतीन्द्रमोहन बागची तब तक नहीं आये थे; किंतु सभा प्रारम्भ हो गयी! कवि से जब कविता पढ़ने को कहा गया, तो उन्होंने कविता प्रारम्भ की–"नहीं आँख से देखा अब तक, केवल खाँसी सुनता हूँ!" लोग हैरान थे कि, यह कैसी कविता है। तभी यतीन बाबू कमरे में आये और सब लोग जोर से हँस पड़े। आते हुए यतीन बाबू की खाँसी सुन कर कवि ने गीत की प्रथम पंक्ति में बाँसी-(वंशी) की जगह यह प्रशस्त परिवर्तन कर दिया था!

एक बार एक तरुण, कवि से मिलने आये। कम उम्र में ही सिर के बाल उड़ कर चाँद निकल आयी थी। बातचीत होते-हवाते कवि ने कहा–"चंद्र-मंडल की रचना तो कम उम्र में ही खासी कर डाली तुमने!"

तरुण बोला–"जी, पिताजी के भी कम अवस्था में ...."

गुरुदेव ने कहा–"ठीक है। पिता की आज्ञा तो शिरोधार्य करनी ही चाहिए!"

आश्रम में एक नाटक होनेवाला था। कवि उन दिनों आश्रम में श्री दिनेन्द्रनाथ ठाकुर के निवास-स्थान के दुमंजिले पर रहते थे। नाटक का 'रिहर्सल' इसी घर की पहली मंजिल में होता था। अभिनय के एकाध दिन पहले 'ग्रैंड रिहर्सल' हो

सूमों के सरदार

कुबेर 'सूमों के सरदार' कहलाते हैं। आख्यान है कि, उनकी नहूसत ने कुछ दिन तक बड़ा गजब ढहाया। सूम और कंजूसी सदा साथ चलते हैं। अतः स्वर्ग लीलाधाम न रह कर मुर्दाघाट ही हो गया। विष्णु को बड़ी चिंता हुई। वे विदूषक बन कर कुबेर के दरबार में गये और वहाँ उन्होंने अपने व्यंग्यों से कुबेर को खूब हँसाया। नित्य के इस हास-परिहास से कुछ ही दिनों में कुबेर में उदारता-रसमयता आ गयी। विनोद ने बंदिनी लक्ष्मी के बंधन काट दिये और स्वर्ग फिर आनंदधाम बन गया। —सुब्रह्मण्य भारती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा था। घर का वातावरण नाटक की आवाजों के सिवा शांत था। जिन्हें बोलना पड़ रहा था, उनके सिवाय सब चुपचाप होकर 'रिहर्सल' देख रहे थे। दिनेन्द्रनाथ बाबू का उस नाटक में अपना भी काम था। उसमें एक वाक्य था—"इसी समय घर छोड़ कर चले जाओ!"

जैसे ही दिनू बाबू ने यह वाक्य कहा, कवि बोल उठे— "दोमंजिला छोड़ने से भी काम चल जायेगा!" उस गम्भीर परिवेश में इस वाक्य ने हँसी की एक उन्मुक्त लहर-सी दौड़ा दी!

रवीन्द्रनाथ जब अपने साथ रोज उठने-बैठनेवाली अंतरंग-मंडली में होते, तो कभी-कभी बुझौवल भी चल पड़ती थी। एक बार उन्होंने पूछा—"बताओ, तीन अक्षरों का वह कौन-सा शब्द है, जिसका पहला अक्षर छोड़ दें, तो 'कान' उड़ जाये! दूसरा अक्षर छोड़ दें, तो 'मान' उड़ जाये! और, तीनों छोड़ दें, तो 'प्राण' उड़ जाये!"

लोगों ने आकाश-पाताल के कुलाबे एक कर दिये; मगर बात कुछ समझ में नहीं आयी। अंत में उन्होंने कहा—"कामान (कमान को बंगला में कामान कहते हैं!) का पहला अक्षर छोड़ दें, तो 'मान' बच जाता है, 'कान' उड़ जाता है! दूसरा अक्षर छोड़ दें, तो 'कान' बच जाता है; मगर 'मान' उड़ जाता है और अगर तीनों छोड़ दें, तो 'प्राण' उड़े बिना नहीं रह सकता!"

एक बार कवि की आँखों में बड़ा कष्ट हुआ। अतः कवि के सेक्रेटरी श्री अनिल चंद की धर्मपत्नी श्रीमती रानी चंद दिन में तीन-चार बार आँख में कोई दवा डालने पर नियुक्त थीं। दवा बहुत तेज थी। उसे डालने पर आँखें जलती थीं और पानी भी काफी गिरता था। इसीलिए जब रानी चंद हाथ में दवा की शीशी और 'ड्रापर' लेकर कवि के पास आतीं, कवि कहते—"तुम आ गयीं मुझे रुलाने! बताओ तो सही, इस तरह मुझे रुलाने में तुम्हें कौन-सा सुख मिलता है? हे चक्षुदायिनी, तुम इतिहास में अमर होकर रहोगी—ऐसा लगता है। जब कभी रवीन्द्रनाथ की जीवनी लिखी जाये, तब लेखक से कहना कि, एक व्यक्ति ने रवीन्द्रनाथ को आठ-आठ आँसू रुलाया था और वह व्यक्ति थीं तुम! बाप-रे-बाप, कितना-कितना रुलाती हो तुम मुझे आजकल!"

कवि अपने जीवन के अंतिम दिनों में बहुत कमजोर हो गये थे। उस समय डाक्टरों ने उन्हें 'ग्लैक्सो'-सेवन की सलाह दी! सुन कर कवि रोगशय्या पर पड़े-पड़े हँस कर बोले—"तो मैं आज से 'ग्लैक्सो-बेबी' हुआ!" कमजोरी की हालत में गाढ़ा 'ग्लैक्सो'-दूध भी उन्हें माफिक नहीं आयेगा, इस आशंका से पहले कवि को दो महीने के बच्चे के योग्य पतला 'ग्लैक्सो' तैयार करके दिया गया और फिर क्रमशः उसका परिमाण बढ़ाया जाने लगा।

कवि इसी का मजाक उड़ा कर परिचारिकाओं से पूछते— "क्यों भई, मैं आज कितने महीने का बच्चा हूँ।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब
महाद्वीप महासागर बन गया

श्री गौरीशंकर ओझा-लिखित पुरातत्व के एक प्रसंग का संक्षिप्त विवरण

*

आज यह निर्विवाद सिद्ध हो गया है कि, एक समय वर्तमान एटलांटिक महासागर के स्थान पर एक महाद्वीप था, जिसे आज के पुरातत्ववेत्ता 'एटलांटिस' कहते हैं। इतना ही क्यों, भू-विज्ञानवेत्ताओं का तो यह भी मत है कि, कभी हम पैदल सूखी पृथ्वी के ऊपर से न्यूयार्क से लगा कर आस्ट्रेलिया तक आ-जा सकते थे और स्टाकहोम से लेकर पीकीङ तक के सारे मार्ग में नौका-द्वारा आया जा सकता था। भूगर्भ-विद्या के काल को दृष्टि में रखते हुए बहुत समय नहीं हुआ, जब कि लंदन की रीजेंट स्ट्रीट, आक्सफोर्ड स्ट्रीट और हाइडपार्क गहरे नमकीन जल के नीचे थे। ब्रिटिश द्वीप-समूह में बहुत कम भाग या चट्टानें ऐसी हैं, जो कभी समुद्र के नीचे नहीं थीं।

इस एटलांटिस महाद्वीप के वक्ष को आज खोदा जा रहा है, जल के भीतर अनुसंधान किये जा रहे हैं और अफ्रीका के पश्चिमी किनारे पर उस काल के कितने ही ध्वस्त नगर भूमि को खोदने के फल-स्वरूप निकले हैं। इन खंडहरों तथा अन्य प्रमाणों से विदित होता है कि, पुरातन युग में एटलांटिस के निवासियों ने ज्ञान-विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में आश्चर्य-जनक उन्नति की थी। प्राच्य इतिहासकारों के अनुसार, जब उसके विनाश का समय समीप आया, तो कितने ही लोग अपने नेता 'मनु' की अध्यक्षता में उत्तरी अमेरिका, मिस्र एवं मध्य-एशिया की ओर चले गये और उन्होंने वहाँ विशाल साम्राज्यों की स्थापना की। ये प्रदेश उसी समय पानी के नीचे से ऊपर आये थे। एटलांटिस की जल-समाधि की इस घटना का हिन्दुओं, ईसाइयों एवं मुसलमानों के धार्मिक ग्रंथों में जल-प्रलय अथवा 'नूह की बाढ़' के नाम से उल्लेख है।

ब्रिटिश म्यूजियम में संगृहीत प्रसिद्ध 'त्रोनो' पांडुलिपि का ली प्लोंजियन-द्वारा किया गया अनुवाद भी इस विषय पर प्रामाणिक प्रकाश डालता है। ये लेख युकाटान के 'मय' लोगों में लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व के अनुमान किये जाते हैं। एटलांटिक महासागर में अवस्थित एटलांटिस के अवशेष—पोसीडोनिस—के विलय का विवरण उसमें इस प्रकार दिया गया है—

"ग्यारहवीं 'मुलुक' के छठे केन वर्ष में जैक के महीने में भयंकर भूकम्प आये, जो अनवरत रूप से तेरहवीं 'चुएन'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक जारी रहे। मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीलों के देश—'मु'— की भूमि ध्वस्त हो गयी। वह दो बार जोर के साथ ऊपर उठी और अकस्मात् रात में, समुद्र में विलीन हो गयी। ज्वालामुखियों की प्रलयंकर शक्ति से इस भू-भाग का धरातल लगातार काँप रहा था। सारा द्वीप समुद्र में डूब गया और कई स्थानों में अनेक गुना पानी ऊँचा उठ गया। अंत में, धरातल छिन्न-भिन्न हो गया और दस देश अलग-अलग होकर छितरा गये।"

श्री डब्ल्यू० स्काट इलियट ने एटलांटिस-सम्बंधी अन्य प्रमाणों के साथ विभिन्न कालों के विश्व के चार भौगोलिक मान-चित्र भी दिये हैं, जिनसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि, भिन्न-भिन्न कालों में घटनेवाली प्रलयंकर घटनाओं के परिणामस्वरूप किस प्रकार एटलांटिस महाद्वीप का अस्तित्व लुप्त हो गया।

प्रथम मानचित्र में भू-मंडल का वह स्वरूप प्रदर्शित किया गया है, जो आज से दस लाख वर्ष पूर्व विद्यमान था। उस काल में यह महाद्वीप पूर्व में शून्य देशांतर से पश्चिम में १००° देशांतर तक तथा ग्रीनलैंड और आइसलैंड के दक्षिण में ६३° अक्षांश उत्तर से ३०° अक्षांश दक्षिण तक विस्तृत था। उत्तरी इंग्लैंड भी इसका भाग था। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का पूर्वी भाग तथा मैक्सिको और दक्षिणी अमेरिका का ब्राजील, कोलम्बिया, वेनेजुला, गायना राज्य इस महाद्वीप के पूर्वी और दक्षिणी भाग थे। अफ्रीका में केवल उत्तरी मोरक्को, लीबिया, मिस्र, सूडान तथा ईथोपिया के भागों का ही अस्तित्व था। एशिया एवं अफ्रीका के संयुक्त भूखंड और एटलांटिस के मध्य समुद्र की केवल पतली पट्टियाँ ही अवस्थित थीं।

दूसरे मानचित्र में आठ लाख वर्ष पूर्व के खंड-प्रलय के फलस्वरूप भू-मंडल में

मेरे दोस्त

मेरी मंजिल मेरी बाट जोह रही है,
यह तो मँझधार है, किनारा तो नहीं,
मेरे दोस्त!
पैरों के छाले भी महक छोड़ रहे हैं,
अब तो सफर भारी नहीं लगता,
मेरे दोस्त!
जो दिल स्वयं सूरज चढ़ा सकते हैं,
वे कैसे जुगनू का सहारा ढूँढ़ें,
मेरे दोस्त!
मुझे सघन अंधकार का गम नहीं,
पग-पग पर तारे उदय होते हैं,
मेरे दोस्त!
हमारे आँगन में तो धूल चमक उठी,
प्रकाश का प्रसार भी तो देख,
मेरे दोस्त!
आँख बहुत रोयी, पर बन गया
आखिरी आँसू एक सितारा
मेरे दोस्त!

(पंजाबी कविता) —प्यारा सिंह सहराई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होनेवाले परिवर्तन दिखाये गये हैं। इस काल में पूर्व में शून्य देशांतर से आरम्भ होनेवाला एटलांटिस का भू-भाग उससे कट गया और उसका रूपांतर भी हो गया। अब वह एक स्वतंत्र द्वीप बन गया, जिसमें नार्वे, स्कैंडिनेविया, ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड भी सम्मिलित हो गये। उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका का कोई भी भाग अब एटलांटिस का भाग न रह गया था। एटलांटिस के पूर्व में समुद्र की पट्टी चौड़ी हो गयी। उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका का एक बड़ा भू-भाग अब अस्तित्व में आ गया; किंतु कनाडा और अलास्का के बड़े भू-भाग का अभी जन्म न हुआ था। वेनेजुला, सम्पूर्ण गायना तथा ब्राजील के कुछ भाग अपना अस्तित्व समाप्त कर चुके थे। अर्जेंटाइना अभी समुद्र-गर्भ में ही था। इस काल में सहारा को छोड़ कर अफ्रीका का सम्पूर्ण भाग समुद्र के गर्भ से बाहर आ गया था। दक्षिणी यूरोप भी सागर की सतह से ऊपर उभर आया था।

तीन पुरखे

[चित्र : मार्सियानो-निर्मित एक रक्रैपर बोर्ड-चित्र]

इस खंड-प्रलय का प्रभाव मध्य-एशिया पर भी पड़ा और उस समय मध्य-एशिया में बसनेवाले आर्यों को शायद हिमालय पर शरण लेनी पड़ी होगी। वैदिक साहित्य की जल-प्लावन की कथा इसी काल से सम्बद्ध जान पड़ती है; क्योंकि भारत का उत्तरी भाग, जिसमें तिब्बत सम्मिलित है, इस घटना के फलस्वरूप समुद्र में डूब गया था। साइबेरिया के उत्तरी और पूर्वी भाग समुद्र से बाहर आ गये थे; किंतु मध्य-एशिया के ऊपर जल-ही-जल लहरा रहा था।

तृतीय काल के मानचित्र में दो लाख वर्ष पूर्व की दूसरी प्रलयंकर घटना का परिणाम अंकित है। इस घटना के फलस्वरूप एटलांटिस के दो भाग हो गये। इनके मध्य में लगभग १० अंश तक समुद्र की पट्टी आ गयी। उत्तर का बड़ा द्वीप 'रुत' और दक्षिण का द्वीप 'दैत्य' कहलाया। यूरोप तथा एशिया का एक बड़ा भू-भाग अस्तित्व में आ गया। किंतु उत्तरी पोलैंड और रूस का पश्चिमी भाग अभी भी समुद्र के गर्भ में था। मध्य-एशिया में भी अभी तक समुद्र था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहारा, दक्षिणी लीबिया, मिस्र तथा सूडान समुद्र के गर्भ में विलीन हो गये थे तथा अफ्रीका का शेष भाग भी जल से बाहर आ गया था।

ज्यों-ज्यों यह महाद्वीप डूबता गया और एटलांटिक महासागर अपना विस्तार बढ़ाता गया, त्यों-त्यों भू-मंडल के वर्तमान महाद्वीप अपने रूप का विस्तार पाते गये। ये दोनों द्वीप भी लगभग ८० हजार वर्ष पूर्व की इस घटना के बाद से निरंतर अपना रूप क्षीण-से-क्षीणतर करते गये। उत्तर का द्वीप क्षीण होते-होते लगभग सऊदी अरब के विस्तार-क्षेत्र के बराबर रह गया और दक्षिणी द्वीप मैडागास्कर के आधे के बराबर। उस समय उत्तरी द्वीप का नाम 'पोसीडोनिस' पड़ गया।

चौथे मानचित्र में श्री डब्ल्यू० स्काट इलियट ने इसी 'पोसीडोनिस' को दिखाया है, जिसके जल-विलय की घटना, ब्रिटिश म्यूजियम के हस्तलेखों में प्रमाणित है। इस द्वीप के विलीन होने के पश्चात् हमारे भू-मंडल के महाद्वीपों ने लगभग अपना वर्तमान स्वरूप प्राप्त कर लिया।

एटलांटिस महाद्वीप के विषय में सबसे अधिक प्रामाणिक साक्षी प्लेटो की है। 'टिमियस' में उसने इस महाद्वीप का उल्लेख किया है; किंतु 'क्रिटियाज' अथवा 'एटलांटिक्स' तो इस महाद्वीप के निवासियों की कला, संस्कृति एवं परम्पराओं का विशद इतिहास ही है। 'टिमियस' में प्लेटो ने एटलांटिस से वहाँ के वीर निवासियों के यूरोप तथा एशिया में सदल-बल घुसने का उल्लेख किया है।

मध्य-अमेरिका के प्राचीन साहित्य में इस बात का उल्लेख पाया जाता है कि, अमेरिका महाद्वीप का एक भाग सुदूर एटलांटिक महासागर में विस्तृत था। विभिन्न कालों में आनेवाली भयंकर प्राकृतिक आपत्तियों के परिणामस्वरूप वह भाग समुद्र में विलीन हो गया। ब्रिटेन के कैल्ट लोगों में यह जनश्रुति प्रचलित है कि, उनका देश किसी समय सुदूर एटलांटिस तक फैला हुआ था; किंतु बाद में, वह विनष्ट हो गया। गाल्स (फ्रांसीसी) लोगों में भी एटलांटिस का ज्ञान परम्परागत रूप से चला आया था।

उक्त प्रमाणों के अतिरिक्त अमेरिका, जर्मनी और ब्रिटेन-द्वारा एटलांटिक महासागर के तल का अनुसंधान किया गया था। फलस्वरूप सम्पूर्ण महासागर के तल का मानचित्र तैयार हो गया है और एटलांटिक के मध्य में ठीक उसी स्थान पर, जहाँ एटलांटिस महाद्वीप के विलीन हो जाने का विवरण प्लेटो ने दिया है, दूर-दूर तक विस्तृत विशालकाय और ऊँची पर्वत-श्रेणियाँ-सी पायी गयी हैं।

*

जीवन, वास्तव में, अमृतफल है—लेकिन वह एक कँटीले पेड़ का फल है, जिसे न-जाने कितने युगों से सींचा गया है, हलाहल की नदी से! —सरोजिनी नायडू

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंखी-प्रवासियों के प्रेम में जीवन के सार दृश्य

अनगिनती घटों में भरा हुआ यह जीवन-चैतन्य अनगिनती रूपों में सत्य का उद्घाटन करता है— मिट्टी के हर घरौंदे में लीलामय की लीला अजस्र रस-प्लाविनी की भाँति चल रही है— विराट् के इस दर्शन की साधना में जो तृप्ति मिलती है, उसे साधक ही जानते हैं। श्री सालिमअली ऐसे ही साधकों में से एक हैं। आजीवन पक्षियों के निकटतम सम्पर्क में रह कर उन्होंने जीवन का जो रूप देखा— पक्षिजीवन के माध्यम से उन्होंने जीवन का जो मधु बटोरा—वह उनकी अपनी ही नहीं, विश्व-ज्ञान-भांडार की अमूल्य सम्पत्ति है। यही कारण है कि, श्री सालिमअली आज व्यक्ति न रहे, संस्था हो गये हैं; भारत देश के ही निवासी न रहे, विश्व-नागरिक हो गये हैं। संसार की तमाम जीव-विज्ञान-संस्थाओं ने उन्हें अपना सम्मानीय सदस्य बनाया है। इस वर्ष राष्ट्रपति ने भी 'पद्मभूषण' के सम्मान से उन्हें सम्मानित किया है। यहाँ हम श्री सालिमअली की जबानी उनका संक्षिप्त जीवन-वृत्त प्रकाशित कर रहे हैं।

कुछ इत्तिफाक ही ऐसा रहा कि, मेरी जिंदगी के ६० वर्षों में मेरा ज्यादातर वक्त चिड़ियों के ही साथ बीता। बात ऐसी हुई कि, जब मैं बिल्कुल बच्चा ही था, मेरे पिताजी इंतकाल कर गये। अतः मुझे अपनी माँ के साथ अपने चाचा के पास चला आना पड़ा। मेरे चाचा के पास अच्छी-खासी जमींदारी थी और वे बहुत अच्छे शिकारी थे। लेकिन चिड़ियों के बारे में उनका ज्ञान बस उन्हीं चिड़ियों तक महदूद था, जो खाये जाने के काम में आती हैं। अपने चाचा के साथ ने ही चिड़ियों में मेरी दिलचस्पी पैदा कर दी। मेरे पास एक हवाई बंदूक थी और मैं उससे रोज शिकार किया करता था।

एक दिन, जब मैं ९ साल का रहा हूँगा, मैंने एक गौरैया मारी। उस गौरैया पर एक पीला दाग था। मुसलमानों में कुछ चिड़ियों का खाया जाना मना है। उस गौरैया पर अजीब तरह का दाग देख कर, मैंने अपने चाचा से पूछा कि, क्या यह चिड़िया खायी जा सकती है?

मेरे चाचा ने सन् १८८३ में 'बाम्बे नैचुरल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिस्ट्री सोसाइटी' की स्थापना की थी। उन्होंने मुझे सोसाइटी के अजायबघर के क्यूरेटर सर नार्मन किन्नियर—जो बाद में 'ब्रिटिश म्यूजियम आफ नैचुरल हिस्ट्री' के डाइरेक्टर हो गये—के नाम एक पत्र दे दिया। मैंने अपने चाचा से पूछा तो यह था कि, यह चिड़िया खायी जा सकती ह या नहीं; पर इसका उत्तर मुझे नहीं मिला। लेकिन जब मैं उसे लेकर सर नार्मन के पास पहुँचा, तो उन्होंने मुझे यह अवश्य बताया कि, उसमें कपास भर कर उसे कैसे रखा जा सकता है।

उस दिन से मैं रोज अजायबघर जाने लगा। मैं वहाँ जाता और चिड़ियों पर किताबें माँग कर पढ़ता। फिर मेरी दिलचस्पी इस प्रकार चिड़ियों में बढ़ी कि, मैं उनके बारे में किताबें भी खरीदने लगा। चिड़ियों का यह चस्का मुझे ऐसा लगा कि, पढ़ाई-लिखाई की ओर मेरा ध्यान कम होने लगा। मेरे चाचा मेरी इस प्रवृत्ति से बहुत दुःखी रहने लगे; पर मैं भी अपनी आदत से मजबूर था।

किसी तरह मैं यूनीवर्सिटी तक पहुँचा था कि, मुझे अपने भाई के पास बर्मा जाना पड़ा। उनकी वहाँ कुछ खानें थीं और उन्होंने मुझे उसमें कुछ इंतजामी का काम दे दिया था। जंगल में रहने का यह मेरा पहला इत्तिफाक था। वहाँ मुझे अपने काम के लिए भी बड़ी सुविधा थी और मैंने वहाँ कई नयी किस्म की चिड़ियाँ भी जमा कर लीं।

बर्मा में तीन साल रहने के बाद, मैं फिर बम्बई लौट आया और जंतु-विज्ञान की नियमित पढ़ाई शुरू कर दी। पढ़ाई खत्म करने के बाद, सन् १९२५ में, मैं 'नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' का असिस्टेंट क्यूरेटर बना। इसी काल में मुझे बर्लिन और लंदन जाकर अध्ययन करने का मौका मिला। पर इस काम पर मैं बहुत दिनों नहीं रह सका। सरकार की 'खर्चा कम करो'-योजना में मैं सन् १९३० में उस पद से हटा दिया गया।

तब से मैं निजी तौर पर खोज का काम करता रहा हूँ। यह सौभाग्य की बात थी कि, मेरे पास अपना खर्च चलाने का जरिया था और मेरी बीवी भी—जो अब इस दुनिया में नहीं हैं—मेरी बड़ी मददगार रहीं। उनके पास कुछ पैसा था। हालाँकि वह बड़ी किफायतशार औरत थीं और बहुत समझ-बूझ कर पैसा खर्च करती थीं; पर मेरे काम के लिए जब भी पैसों की मुझे जरूरत होती, वह देने में जरा भी नहीं हिचकती थीं—हालाँकि उन दिनों का मेरा काम किसी भी तरह की आमदनी का जरिया नहीं था।

चिड़ियों के बारे में मैंने कुछ किताबें भी लिखी हैं। "द' बुक आव इंडियन बर्ड्स", "इंडियन हिल बर्ड", "द' बर्ड्स आव ट्रैवेनकोर एंड कोचीन", "बर्ड्स आव कच्छ" और "द' बर्ड्स आव सिक्किम" मेरी प्रकाशित किताबें हैं। इनके अलावा एक और किताब तैयार करने का मेरा खयाल है। उसमें १२७८ जातियों और ७-८ सौ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपजातियों की भारतीय चिड़ियों का जिक्र होगा। यह किताब मैं और 'येल फैकल्टी' के डाक्टर डिल्लन रिप्ले, दोनों ही मिल कर तैयार कर रहे हैं। यह किताब पाँच जिल्दों में होगी।

चिड़ियों के इस शौक के कारण मेरे पिछले ३५ साल का ज्यादातर वक्त सफर में ही बीता। अपने देश की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर स्थित आसाम के आखिरी छोर तक ही नहीं; बल्कि उसके पार भी गया हूँ। दक्षिणी बर्मा में ७ वर्षों तक रहा हूँ। वहाँ मुझे तनासरम की चिड़ियों के बारे में जानकारी हासिल करने का मौका मिला। उत्तरी-पश्चिमी दिशा में, मैं अफगानिस्तान के दूसरे छोर तक—रूस की सीमा ओक्सस नदी तक—गया हूँ। इनके अतिरिक्त मैंने उत्तर में तिब्बत की सीमा में स्थित कैलास-मानसरोवर तक की यात्रा भी की है।

सालिमअली

[चित्र : वी० एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

तिब्बत-यात्रा की इच्छा मुझे बहुत पहले से थी; क्योंकि अक्तूबर से अप्रैल तक के बीच भारत आनेवाली बहुत-सी चिड़ियाँ तिब्बत से ही हमारे देश में आती हैं। अतः हमारे देश में तिब्बती चिड़ियों के अध्ययन का केवल जाड़े में ही मौका मिलता है। इसके अलावा हमें यह जानने का मौका ही नहीं मिलता कि, अपने देश में उनका रहन-सहन कैसा है? कुमायूँ की ओर से हिमालय पार करके मेरी तिब्बत की यात्रा बड़ी आकर्षक रही। पर पक्षियों-सम्बंधी खोज की अन्य यात्राओं की तरह ही, इस कैलास-यात्रा का भी खर्च मुझे अपनी जेब से उठाना पड़ा। इस यात्रा में मुझे न केवल परिचित चिड़ियों की जीवन-चर्या का लुप्त सूत्र मिला; बल्कि कितनी ही नयी चिड़ियों से भी परिचय प्राप्त हुआ।

यह चर्चा तो मेरी अध्ययन-यात्राओं की हुई। इनके अतिरिक्त अपने इसी काम से यूरोप और अमेरिका जाने के भी अवसर मुझे मिले हैं।

चिड़ियों के चक्कर में इस प्रकार घूमने और आबादी से दूर जंगलों में अक्सर लम्बे वक्त तक रहने में कई बार रोमांचक अवसर भी मुझे मिले और कई बार कुछ घटनाएँ भी घटीं। उनमें से तिब्बत की दो ऐसी घटनाएँ हैं, जिनकी याद आज भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे दिमाग में ताज़ी है।

मानसरोवर, खुले समुद्र से १५ हजार फुट ऊँचे, पठार पर स्थित है। जहाँ तक आदमी की नजर जाती है, एक-सी ही जमीन दिखलायी देती है। हंसों (बारहीडेड गीज) के बच्चा देने के अवसर पर वहाँ रहने के खयाल से, मैं तीर्थयात्रियों से लगभग १ मास पहले वहाँ चला गया था। सन् १९४५ में जब मैंने उक्त इलाके का सफर किया था, तब तिब्बत कम्यूनिस्ट-चीन के अधिकार में नहीं था और रास्ते में डाकुओं का बहुत ज्यादा खतरा रहता था।

इस सफर में मेरे साथ गर्ब्याङ का एक आदमी था, जिसे मैंने पथ-प्रदर्शन और दुभाषिये के काम के लिए ले लिया था। उसे हमेशा डाकुओं का ही डर लगा रहता। वह मुझे बराबर कहा करता था कि, बिना बंदूक के इस इलाके में सफर करना बड़ा ही खतरनाक है। एक दिन वह खतरा मेरे सामने भी आ धमका। एक दिन जब मैं एक झुरमुट में से होकर एक हंस के घोंसले को देखने के लिए जा रहा था, तो रास्ते में एक झाड़ी हिलती देखी। पहले तो मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया। पर जब मैं उससे १० गज की दूरी पर रह गया, तो देखा कि, उसमें से एक आदमी बाहर निकल आया। उसका चेहरा बड़ा ही खूँख्वार था। कुछ बड़बड़ाते हुए उसने अपनी कमर से कटार निकाल ली। थोड़ी देर तक, उसका इस नाटकीय ढंग से आना मेरी समझ में नहीं आया। पर तभी मेरी नजर अपने साथी पर पड़ी। वह तो पीला पड़ गया था। डर से किसी को इतना पीला पड़ते, मैंने कभी नहीं देखा था। खैर, मैंने चतुराई से काम लिया और अपने साथी से बैठने-वाली छड़ी माँगी। उसके ऊपर की 'सीट' को पट-पट करके खोला, फिर झूठे ही जेब से गोली निकाल कर भरी और कंधे से ऐसे लगा लिया कि, जैसे गोली चलाने ही वाला हूँ। अपनी झूठी बंदूक से लैस होकर मैंने उस आदमी से डपट कर पूछा—"बोलो, क्या काम है?" उस जंगली इलाके के डाकू ने कभी ऐसी चमकती छड़ी नहीं देखी रही होगी। मेरे दिमाग की सूझ काम कर गयी। वह डर कर भाग गया। पर अब भी, जब मैं उस निर्जन जगह के खतरे को सोचता हूँ, तो दिल काँप जाता है।

इस घटना को बीते ज्यादा वक्त नहीं हुआ था कि, एक बार, जब मैं तिब्बत में ही काली चोंचवाले सारस का घोंसला देखने एक जगह जा रहा था, तो वाकई मौत के नजदीक ही पहुँच गया।

तिब्बत में जमीन हद से ज्यादा समतल होने से जब बर्फ पिघल कर बहती है, तो उसका पानी बहुत दूर तक फैल जाता है और वहाँ दलदल हो जाता है। उस दलदल पर पानी की एक पतली तह बहा करती है। उस पानी में, जगह-जगह पर, कुछ उठी हुई जमीन पर घास उगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखलायी देती है। वस्तुतः वह घास-उगी जमीन भी दलदल ही होती है। जब पानी की धारा पार करनी होती है, तो आदमी घासवाले एक टीले से दूसरे टीले पर और दूसरे से तीसरे पर फाँद कर जाता है। ये टीले इतने ठोस नहीं होते कि, आदमी का वजन बहुत देर तक सम्भाल सकें। अतः फाँदने की यह योजना पूरी तरह से बना कर ही आदमी फाँदना शुरू करता है। एक बार मैं इसी तरह एक धारा पार कर रहा था, तो एक ऐसे टीले पर पहुँचा, जहाँ पानी काफी गहरा था और आगे फाँदने के लिए कोई टीला नहीं था। अब ख़ैरियत इसी में थी कि, मैं वापस चला जाऊँ; पर इतनी बात ध्यान में आने से पूर्व ही मैं कमर तक बर्फ-सरीखे ठंडे पानी में पहुँच गया। इस बार भी मेरे साथ गर्म्याङ का वही आदमी था। वह किनारे से खड़ा-खड़ा, चिल्ला-चिल्ला कर, मुझे तरकीबें बता रहा था। मैंने उसकी बात तो कुछ सुनी नहीं; पर जान पर खेल कर वहाँ से उछल जरूर पड़ा। और, शुक्र था खुदा का कि, उस क्रिया से एक टीले पर पहुँचने में मेरे हाथ सफल हो गये।

साधारण आदमी पूछेगा कि, ऐसे खतरों से भरी जिंदगी में मैंने किया क्या? इसका जवाब मैं 'नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' के कामों से ही दे सकता हूँ। हमारी 'सोसाइटी' के संग्रह में लगभग २०,००० कपास-भरी चिड़ियाँ हैं। भारत में शायद २-४ किस्म की ही ऐसी चिड़ियाँ मिलें, जो हमारे यहाँ नहीं हैं। यह भारत में अपने ढंग का सबसे बड़ा अजायबघर है। इसके अलावा हमारे यहाँ लगभग ५,००० किताबें हैं, जिनमें लगभग ५०० चिड़ियों-सम्बंधी हैं। मैंने स्वयं लगभग १२ उपजाति की चिड़ियों की खोज की है, जिनका पता वैज्ञानिकों को नहीं था और वे मेरे नाम से —जैसे, 'जेस्टेराप्स पालोब्रोसा सालिम-अली', 'परेडीक्यूला आरगूंडा सालिम-अली'—उन्हें पुकारते हैं।

अभी हाल में बया पर मैंने खोज की है। आदमी के इर्द-गिर्द रहनेवाली इस चिड़िया को हम इतने दिनों से जानते हैं, सबने इसके घोंसले देखे हैं और इतना जानते हैं कि, बया इस तरह का घोंसला बनाते हैं। पर वस्तुतः इतनी ही बात नहीं है। नर बया एक घोंसला बनाता है। मादा बया घोंसला बन जाने के बाद, उस नर की जिंदगी में दाखिल होती है और नर बया, उसे उस घोंसले में रखता है। फिर वह दूसरा घोंसला बनाना शुरू करता है। तब दूसरी मादा बया उसकी जिंदगी में आती है। उसे नर बया दूसरे घोंसले में जगह देता है। इस तरह ५-६ मादाएँ उसके पास रहती हैं और सबके लिए नर अलग-अलग घर का इंतजाम करता है।

बया-सम्बंधी मेरी खोज से प्रभावित होकर कम्ब्रिज यूनीवर्सिटी ने एक छात्र बया-सम्बंधी खोज करने के लिए मेरे पास भेजने का निश्चय किया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेड़ देखते हैं

वनस्पति-विज्ञान की नयी खोजों के आधार पर डा० विभूतिभूषण भट्टाचार्य-द्वारा लिखित एक पठनीय लेख

☆

नये-नये फल-पौदों के आविष्कारक मिच्यूरिन को अक्सर लोग अपने बगीचे में पेड़ों के पास बड़बड़ाते सुनते थे। एक धुनी आदमी के बारे में जैसा कि अक्सर सोच लिया जाता है, मिच्यूरिन को भी लोग 'पागल' ही समझते थे। मगर जब मिच्यूरिन ने वृक्षों के रोगों के निदान और उपचार के बारे में लेख लिखने शुरू किये और इससे भी आगे बढ़ कर, वृक्षों के मनोविश्लेषण पर वह उतर आया, तो समझदारों की आँखें खुलीं। वे मिच्यूरिन की बातों पर गहराई से विचार करने लगे। मिच्यूरिन ने एक लेख में स्पष्ट लिखा था कि, मैं पेड़ों को हँसते-रोते, गाते-विलापते देखता हूँ। कुछ वृक्ष तो मेरे वैसे ही साथी हैं, जो मेरे कुत्ते की भाँति, मेरे सुख-दुःख में सुखी-दुःखी होते हैं। मैं उनकी आँखों की पुस्तकें पढ़ सकता हूँ। मिच्यूरिन के अनुभव को खोज का विषय बना कर एक जर्मन वृक्ष-विज्ञानवेत्ता ने अभी-अभी वृक्षों की आँखों के प्रमाण भी प्रकाशित किये हैं।

नयी वनस्पतियों का विश्वकर्मा
मिच्यूरिन

आँखों का मुख्य कार्य होता है, बाहर के जगत् के ज्ञान को भीतर पहुँचा देना। बाहर जो-कुछ हम देखते हैं, उसे जब छोटे-से स्थान पर बिम्बित करना चाहते हैं, तब हमें उन्नतोदर काँच की जरूरत पड़ती है। हमारे कैमरों में ऐसा ही काँच लगा रहता है। इसी पर पड़ कर बाहर की बड़ी वस्तु की छोटी आकृति कैमरे के अंदर आती है। कैमरे की तरह हमारी आँखें भी जब बाहर की किसी वस्तु की आकृति छोटी करके अपने भीतर उतारती हैं, तो इसी प्रणाली को काम में लाती हैं।

हमारी आँखों के भीतर उन्नतोदर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काँच तो नहीं है ; किंतु इस काँच का ही काम करनेवाला एक तरल पदार्थ अवश्य है। यह पदार्थ आँखों के भीतर उसी प्रकार रहता है, जिस प्रकार कैमरे के भीतर उन्नतोदर काँच रहता है। आँखों की पुतलियों पर यह पदार्थ बाहर की वस्तुओं की आकृति छोटी करके उन्नतोदर काँच की ही तरह डालता है।

जर्मनी और अमेरिका के वृक्ष-विज्ञान-वेत्ताओं ने आज ऐसा ही द्रवपदार्थ वृक्षों के भीतर भी खोज लिया है और इस प्रकार यह प्रमाणित कर दिया है कि, हमारी तरह पेड़ों के भी आँखें होती हैं और वे अपने आसपास की दुनिया के कार्य-व्यापार भी देखते हैं।

पेड़ों की त्वचा के ऊपरी भाग पर जो बिंदु-सदृश छोटे-छोटे कोश होते हैं, उन्हीं में से कितने एक प्रकार के तरल पदार्थ से भरे रहते हैं। वह रस उन्नतोदर काँच का ही काम देता है। बाहर के दृश्यों की छोटी आकृति का प्रतिबिम्ब ही इन कोशों के भीतर नहीं पहुँचता, वरन् सूर्य की किरणों की गर्मी भी उस रस की सहायता से इन कोशों में भर जाती है। इसी गर्मी से ये कोश अपना काम करते हैं। तरल पदार्थ के ये हजारों केंद्र ही इन पेड़ों की आँखें हैं।

अब प्रश्न उठता है, इतनी आँखों का उपयोग क्या ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें छोटे-छोटे कीट-पतंगों की आँखों के बारे में विचार करना होगा।

मक्खी के यों होती तो दो आँखें हैं ; किंतु इन दो आँखों का निर्माण अनेक छोटी-छोटी आँखों से हुआ है। वैज्ञानिकों ने प्रायः चार हजार आँखें मक्खी में गिनी हैं। तितली के तो इससे भी अधिक आँखें होती हैं। सिर के दोनों तरफ जो दो आँखें होती हैं, इनमें से प्रत्येक आँख सतरह-सतरह हजार छोटी-छोटी आँखों के संयोग से बनी हैं। मक्खियाँ और तितलियाँ एवं उनके जैसे ही सैकड़ों जीवधारी, इन हजारों आँखों की सहायता से अपने चारों ओर के जगत् को देखते हैं और देख कर हँसते-रोते सुख-दुःख भोगते हैं। जीव-जंतुओं को शरीर-रक्षा के लिए इन आँखों की बड़ी आवश्यकता रहती है। पेड़-पौदों को भी प्रकृति ने इतनी आँखें इसीलिए प्रदान की होंगी।

"पेड़ों की अपनी भाषा होती है, अपनी सृष्टि होती है, अपनी अलग संस्कृति होती है"—बुरबांक की इस बात को हम मानते हैं किंतु इस अनुभूति को भौतिक संग्रहण की सतह पर उतारना होगा। जीवन विराट् है; पर जीवन का चैतन्य उतना ही सूक्ष्म—इस फासले से ही विज्ञान जूझता है। दरअसल, जब पेड़-पौदों की आँखों के बारे में हमें पूरा ज्ञान हो जायेगा, तो हमारे सामने एक ऐसी सृष्टि की परम्परा आ खड़ी होगी, जो सदियों से हमारे कई गोप्य क्रिया-कलापों को देखती-सुनती रही है और अपनी भाषा में धिक्कारती या आदर देती रही है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शक्ति

हमारी जीवन-शक्ति

हमारे शरीर में शक्ति-तत्व के महत्व को लेकर आज जो वैज्ञानिक निष्कर्ष सम्मुख आये हैं, प्रस्तुत लेख में त्रिवेणीप्रसाद ने उन्हें शृंखलाबद्ध करके प्रस्तुत किया है।

☆

उस दिन ९५-वर्षीय भारतरत्न डा० विश्वेश्वरैया ने अपने भाषण में एक वाक्य ऐसा कहा, जिसने समस्त श्रोताओं को—मुझे भी—चमत्कृत कर दिया। इस ९५ वर्ष की आयु में भी श्री विश्वेश्वरैया महाशय इतने स्वस्थ और फुर्तीले हैं कि, देख कर आश्चर्य होता है। इसीलिए हमने उनसे अपने सुस्वास्थ्य के रहस्य एवं वार्द्धक्य के अनुभवों पर प्रकाश डालने का अनुरोध किया था।

श्री विश्वेश्वरैया का वह वाक्य था—"अभी मेरे शरीर में जितनी शक्ति है, उससे अधिक शायद मेरा शरीर सम्भालने में असमर्थ होता!"

आज की स्थिति में, जबकि ३० वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते लोग सामान्य जीवन बिताने में भी थकावट अनुभव करने लगते हैं और शक्ति प्राप्त करने के लिए दवाओं के संधान में लग जाते हैं, उनकी यह उक्ति कितनी अनोखी थी, यह स्पष्ट है। आजकल साधारणतः पुरुष ३० वर्ष की और महिलाएँ २५ वर्ष की उम्र पार करने के साथ ही हृदय की धड़कन बढ़ने और माँस-पेशियों में पीड़ा होने की शिकायत करने लगती हैं। साधारण कार्य करने में भी उन्हें थकान महसूस होती है—सुबह सोकर उठना भी उन्हें भार-सा लगने लगता है।

हमारा शरीर बहुत-कुछ एक रेल-इंजन की तरह है। जिस प्रकार कोयला और पानी के संयोग से उत्पन्न वाष्प-शक्ति से इंजन चलता है, उसी प्रकार हम जो-कुछ खाद्य पदार्थ ग्रहण करते हैं, वह शरीर के अंदर विभिन्न प्रक्रियाओं से शक्ति में परिणत हो जाता है और उस शक्ति से हमारा शरीर संचालित होता है। हमारे शरीर के अंदर स्थित दुरूह यंत्रादि साधारणतः खाद्य पदार्थों को शक्ति में परिवर्तित करने और उनका उपयोग करने में सक्षम होते हैं। इस शक्ति का निर्माण खाद्य पदार्थों में निहित शर्करातत्व एवं आक्सीजन के एक साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जलने से होता है।

हम जो भोजन करते हैं—चाहे वह सुपाच्य कार्बोहाइड्रेट-तत्ववाला हो या पचने में भारी प्रोटीन अथवा चर्बी-तत्व-वाला—वह अपने वास्तविक रूप में पचने के योग्य नहीं होता ; यानी खाद्य पदार्थों को उनके मूल रूप में हमारे शरीर के यंत्र अपना जलावन नहीं बना सकते। अतः शरीर के अंदर पहुँचने पर उन्हें लुआब और आँतों से उत्पन्न रस गलाते हैं और इस प्रकार उन्हें 'ग्लूकोज' का रूप प्राप्त हो जाता है। 'ग्लूकोज' को बहुत हल्की बनायी हुई चीनी कह सकते हैं—जैसी चीनी अंगूर के रस से निकलती है। यही 'ग्लूकोज' हमारे शरीर-रूपी इंजन के लिए मूल ईंधन का काम देता है। यह आँत से हमारी रक्तवाहिनी नलियों में प्रविष्ट होता है और फिर आक्सीजन के साथ सारे शरीर में पहुँच जाता है।

इस प्रकार 'ग्लूकोज' हमारे शरीर में स्थित रक्तकोश के अरबों छोटे-छोटे रासायनिक कारखानों में पहुँचता है और वहाँ आक्सीजन के साथ जल कर कार्बन डाइ-आक्साइड और पानी का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। अपनी इसी अवस्था में वह गर्मी या शक्ति का, जिसे कैलोरी में मापा जाता है, सृजन करता है। लेकिन यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है। खाद्य पदार्थों से निकला समस्त 'ग्लूकोज' एक साथ शक्ति में परिवर्तित नहीं होता—लगभग आध सेर से भी अधिक 'ग्लूकोज' यकृत में जमा रहता है, 'ग्लाइकोजेन' के रूप में। जब शरीर विशेष श्रम-रत होता है, तब 'ग्लाइकोजेन' रक्त-वाहिनी नालियों में प्रवेश करता है और शक्ति का निर्माण करता है। ज्यों-ज्यों मनुष्य की उम्र बढ़ती है, त्यों-त्यों सुरक्षित 'ग्लाइकोजेन' की यह मात्रा घटती जाती है। फलस्वरूप मनुष्य की श्रम करने की

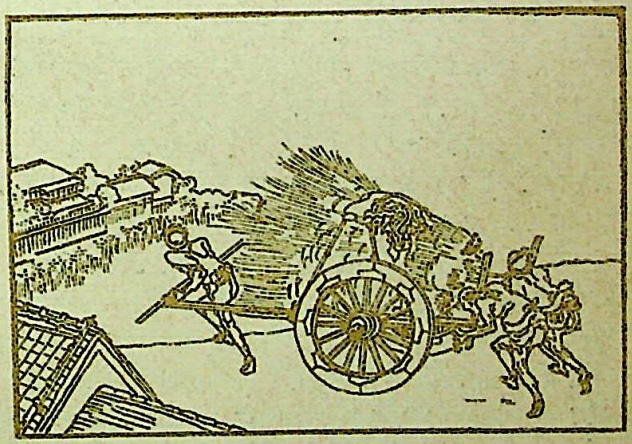

श्रमोपासना

[चित्र : होकुसाई-निर्मित एक रंगीन चित्र की सरल रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षमता में शनैः-शनैः ह्रास होने लगता है।

लेकिन कम उम्र में ऐसा क्यों होता है, यह निस्संदेह एक विचारणीय बात है। यहाँ मैं आप को एक व्यवसायी का ही हवाला दूँ। मैं उसका पारिवारिक डाक्टर था। एक दिन वह मेरे पास आया और बोला कि, उसकी छाती और माँस-पेशियों में दर्द होता है एवं सवेरे सोकर उठने में भी तकलीफ होती है। उसकी उम्र लगभग ३५ वर्ष थी और इस उम्र में ये शिकायतें होना निश्चय ही चिंता की बात थी। अतः मैंने उसकी भली-भाँति परीक्षा की; पर शिकायत का कोई कारण नजर नहीं आया। अतः मनोविकृति का मामला समझ कर मैंने उसे दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम का परामर्श दिया और उससे उसे लाभ भी पहुँचा। मस्तिष्क, नाड़ी-प्रणाली और मानवीय शक्ति के बीच इतना घनिष्ठ सम्बंध ही है कि, एक-दूसरे का आपस में प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।

वजन की दृष्टि से तो मस्तिष्क कुल शरीर का केवल २ प्रतिशत भाग ही होता है; लेकिन इसके भोजन का परिमाण कहीं अधिक है। हमारे शरीर के आक्सीजन का २३ प्रतिशत भाग और 'ग्लूकोज' का एक बड़ा भाग केवल मस्तिष्क अपने उपभोग में लाता है। यदि मस्तिष्क को यह भोजन प्राप्त न हो, तो आठ मिनट के अंदर ही जिंदगी मौत में बदल जाये। हमारा शरीर भी अपने भोजन के मामले में लगभग इतना ही कट्टर है। अनुमान है कि, एक २ मन वजन के मनुष्य को साधारणतः अपनी साँस चालू रखने और अंगों को कार्य करने-योग्य बनाये रखने के लिए प्रतिदिन लगभग १,८०० कैलोरी की जरूरत पड़ती है। बाकी शक्ति, जो साधारणतः १,००० से २,००० कैलोरी के बीच होती है, शारीरिक और मानसिक श्रम, उत्तेजना, चिंता, उदासी, आदि में खर्च होती है।

उत्तेजना, चिंता और उदासी, ये तीनों हमारी शक्ति के अपव्यय के लिए बहुत अधिक जिम्मेदार होती हैं। सामान्यतः उचित यह है कि, दो माँस-पेशियों का मिलन केवल काम के समय हो; लेकिन उत्तेजित व्यक्ति की माँस-पेशियाँ प्रायः ही एक-दूसरे से सटी होती हैं— खास कर पीठ के ऊपरी और निचले हिस्सों में। इसके कारण न केवल शक्ति का अपव्यय होता है; बल्कि पीड़ा भी उत्पन्न हो जाती है। चिंतित रहनेवाले व्यक्तियों के साथ दुर्भाग्य यह है कि, एक काम करने में वे जितनी शक्ति खर्च करते हैं, उससे दुगुनी शक्ति, काम पूरा हो जाने के बाद, विश्राम करते समय खर्च कर डालते हैं। उदासी भी चिंता की ही भाँति हमसे शक्ति का अपव्यय कराती है। इस प्रकार आज के अधिकांश मनुष्यों की शक्ति-क्षीणता का कारण उनके मस्तिष्क-द्वारा बड़ी मात्रा में ग्रहण किया जानेवाला आहार है।

अभी हाल में शरीर-शास्त्रियों ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शक्ति और स्नायविक उत्तेजना के बीच आश्चर्यजनक रासायनिक सम्बंधों का पता लगाया है। इसमें यह बात भी शामिल है कि, चिंता 'ग्लूकोज' के उस परिमाण को घटा देती है, जो हम अपनी रक्त-धारा में ग्रहण करते हैं। साथ ही, यह भी प्रमाणित हो गया है कि, चिंतन और उदासीनता के कारण रक्त में 'इन्स्युलिन' की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे शक्ति का ह्रास होता है।

शक्ति का अर्थ सामान्यतः लोग किसी व्यक्ति की माँस-पेशियों की सुदृढ़ता से लगाते हैं। हालाँकि यह धारणा एक-पक्षीय है और इससे मस्तिष्क-पक्ष की उपेक्षा होती है; फिर भी यह गलत नहीं है। मस्तिष्क की ही तरह हमारी माँस-पेशियाँ भी कैलोरी का भोजन करने में बड़ी चतुर हैं। श्रम करते समय माँस-पेशियों की 'ग्लूकोज' की आवश्यकता सामान्य अवस्था की तुलना में १५-गुना तक बढ़ जाती है। विश्राम की अवस्था में हमें मुश्किल से एक प्याला आक्सीजन की जरूरत होती है; पर श्रम के समय यह परिमाण छः गैलन तक पहुँच जाता है।

इसीलिए लोग शक्ति-वृद्धि के लिए माँस-पेशियों की सुदृढ़ता पर ध्यान देते हैं और इसके लिए कसरत का नाम प्रायः ही लिया जाता है। वस्तुतः कसरत से माँस-पेशियाँ सुदृढ़ होती भी हैं। इससे माँस-पेशियों की कार्य-क्षमता ४० प्रतिशत तक एवं शक्ति की मात्रा दुगुनी तक बढ़ जाती है; लेकिन अनियमित कसरत का परिणाम उल्टा होता है— लाल रक्त-कोषों को वह विनष्ट कर डालती है। अतः आवेशवश कसरत की शरण जाना हानि-कारक ही साबित होता है।

एक धारणा लोगों में—निश्चय ही शरीर-विज्ञान के जानकारों में नहीं—यह भी पायी जाती है कि, अधिक भोजन करने से अधिक शक्ति पैदा होती है। पर यह धारणा यथार्थतः निर्मूल है। पेट में अधिक खाद्य पदार्थ जाने का परिणाम यह होता है कि, रक्त में निहित 'ग्लूकोज' माँस-पेशियों और मस्तिष्क में जाने के बजाय खाद्य पदार्थों को गलाने और पचाने के लिए पेट और आँतों में आ जाता है, जिसके परिणामस्वरूप भोजन करने-वाला कमजोर और आलसी हो जाता है। अतः शक्ति-सम्पन्नता के लिए भोजन पर अधिक ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। स्वास्थ्य-विशारदों के परामर्शानुसार एक साधारण पुरुष को प्रतिदिन १२० ग्राम (४८० कैलोरी) प्रोटीन, ४८० ग्राम (१९२० कैलोरी) कार्बोहाइड्रेट और ९० ग्राम (३६० कैलोरी) स्निग्ध पदार्थों का सेवन करना चाहिए। भोजन की यह मात्रा दिन-रात में तीन बार में ग्रहण की जानी चाहिए।

★

"देखा है, दूसरों को असफल करने के प्रयत्न ही हमें असफल बनाते हैं।" —इमर्सन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेलिकाप्टर का हिमायती

ल्यूनार्द द' विंशी के स्वप्न को साकार करनेवाले एकांत लगन-पराक्रम के प्रतीक आइगर स्कोर्स्की के प्रेरक जीवन की एक झाँकी

पिछली सदी की समाप्ति का वर्ष था ! रूस के एक गाँव—कीव—में ग्यारह वर्ष के एक बालक को उसकी माँ प्रसिद्ध कलाकार और विज्ञान-विचारक ल्यूनार्द द' विंसी के बारे में बता रही थी। इसी क्रम में उसने उसकी यह अभिलाषा भी व्यक्त की कि, एक ऐसा हवाई जहाज बनाया जाये, जो एक वर्तुलाकार वायु-पेच हो और उसके सिर पर घूमने पंख हों, जो उसे सीधा ऊपर उड़ा ले जायें। उसी दिन, उसी घड़ी, से उस बालक के मस्तिष्क में सीधे ऊपर उठ कर उड़नेवाला हवाई जहाज मँडराने लगा और साल-भर बीतते-न-बीतते उसने रबर के फीते की ताकत से उड़नेवाला एक हवाई खिलौना बना भी लिया— वही था हेलिकाप्टर का पहला 'माडल' ! और, वह बालक था, आइगर स्कोर्स्की— तब का एक रूसी और सन् १९१९ के बाद का एक अमरीकी !

दिसम्बर, १९०३ ईसवी में सबसे पहले मनुष्य हवाई जहाज में उड़ा था। विलबर और ओरविल राइट ने यह चमत्कार कर दिखाया था। इस संवाद को सुनते ही, १४ वर्ष के बालक स्कोर्स्की ने हवाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ान को अपना जीवन सौंप देने का निश्चय कर लिया और उस निर्णय को उसने निभाया भी खूब! एक ध्येय को जीवन समर्पित करके, अनेक विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी, एक पथ पर अग्रसर होते जाने की जीवन-गाथाओं में स्कोर्स्की की गाथा किसी से कम महत्व की नहीं।

कुछ पढ़-लिख कर– कीव की विज्ञान-शाला में थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर– १५ वर्ष की आयु में उसने अपना हेलिकाप्टर बनाने की ठान ली। वह हवाई जहाजों की तत्कालीन जन्मभूमि पेरिस गया, अपने भावी हेलिकाप्टर के लिए एक इंजिन खरीदने के उद्देश्य से। वहाँ जा, बड़ी बहन ओल्गा से उधार लिये हुए धन से, उसने एक इंजिन एवं कुछ सामान खरीदा। फिर घर के पिछवाड़े उसका कारखाना खुला। उस समय उसके सहायक थे, टूट-फूट सुधारनेवाले कारीगर। अढ़ाई वर्ष तक शरीर और जी तोड़ कर, परिवार को ऋण-ग्रस्त बना कर, उसने अपना पहला हेलिकाप्टर बनाया; पर वह जमीन से ऊपर उठा नहीं! दूसरे हेलिकाप्टर की भी यही हालत हुई। पर उसी 'असफल' युवक ने, तीस वर्ष बाद, हवाई जहाजों का चमत्कार–हेलिकाप्टर–सफलतापूर्वक बना कर संसार को दिखा दिया!

अपने जीवन के इन तीस वर्षों में वह निराश व निठल्ला नहीं बैठा रहा। उसने तो ऊपर चढ़ने की सीढ़ी पर पाँव रख दिया था। नीचे की सीढ़ियों पर वह फिसला जरूर; पर आगे की सीढ़ियाँ चढ़ना तो मानो उसके लिए कोई विशेष प्रयत्न का काम ही नहीं था। सीधे ऊपर उठ कर उड़नेवाले हेलिकाप्टर के निर्माण को छोड़ कर पहले वह हवाई जहाज के निर्माण में जूझा। असफलता-के-बाद-असफलता हुई। तीन जहाजों की असफलता के बाद उसका चौथा जहाज उड़ा भी, तो केवल आठ मिनट के लिए और फिर अपने निर्माता को ले एक नाले में गिर पड़ा! उसके पाँचवें जहाज ने आशाप्रद उड़ान दिखायी जरूर; पर अचानक १५० फुट ऊपर पहुँच कर उसने जवाब दे दिया। गिरने के बाद, जहाज का अंगविच्छेद करने पर मालूम पड़ा कि, तेल की नली में मच्छर घुस गया था और उससे इंजन बंद हो गया था! कैसी दिल तोड़नेवाली बात थी! पर सन् १९१२ में उसके छठे हवाई जहाज ने मास्को में हुई हवाई जहाजों की प्रदर्शनी में सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया और फिर तो उसका सितारा चमक ही उठा। परिवार का, एक लाख से ऊपर का, कर्ज चुकाने में उसे देर नहीं लगी।

२३ वर्ष का वह होनहार युवक रूस की तत्कालीन सबसे बड़ी रेल-रोड कम्पनी का वायुयान-निर्माता नियुक्त हुआ। वहाँ उसने चार इंजनों का– ९२ फुट के पंखों का– 'ग्रांड' हवाई जहाज बनाया, जिसमें मुसाफिरों के लिए खुले में बैठ कर उड़ान का मजा लेने के लिए छज्जा भी बना हुआ था और शौचालय भी! रूस के सम्राट् ने उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा, सराहा और स्कोर्स्की को पुरस्कृत किया। उसके बाद, 'ग्रांड' से भी बड़ा विमान उसने बनाया, जो पहले महायुद्ध में रूसी बममारों का अग्रज बना। स्कोर्स्की ने वैसे ७५ बममार बनाये, जिनमें से केवल एक लड़ाई में विनष्ट हुआ।

पहले महायुद्ध के बाद के रूसी विप्लव ने जब वहाँ का जीवन ही बदल दिया, तो स्कोर्स्की को अपने विकास-मार्ग में अवरोध दिखायी देने लगा। स्कोर्स्की तब सम्पत्तिवान था, ख्यातिप्राप्त था। पर सदा आगे बढ़ने के लिए आतुर उसका मन, मार्ग को अवरुद्ध देख कर, भला शांत कैसे रहता! उसने अपना सब-कुछ—अपने परिवार को भी—वहीं छोड़ दिया और इंग्लैंड चला गया। फिर वहाँ से वह साल-भर के लिए पेरिस गया और बममार विमानों के नकशे बनाने लगा; पर वस्तुतः उसकी नजर तो लगी थी, अमेरिका की ओर!

मार्च, १९१९ में वह ३० वर्षीय युवक अमेरिका पहुँचा—एक मामूली पेटी में कुछ कपड़े, जेब में ५०० डालर और ज्ञान का भांडार अपना मस्तिष्क अपने कंधों पर लिये! न्यूयार्क की उन ऊँची अट्टालिकाओं और वहाँ के उस प्रवाही जीवन में भी वह 'अपना' आदमी खोया नहीं। वह तो एडिसन और फोर्ड की क्रियाशीलता और सफलता से उत्साहित था। वह जानता था—यह स्थान उसका भावी कार्यक्षेत्र है, जहाँ वह अपनी योग्यता का आनंद लूट सकेगा।

पर उस आनंद तक पहुँचने के मार्ग में कष्ट के खड्डे तो थे ही। डिजाइन बनाने के उसे दो-एक काम मिले भी; पर युद्धोत्तर काल की अस्थिरता में उसके पाँव नहीं जमे। ६०० डालर की जमा पूँजी घटने लगी और उसे गरीबी से रहना पड़ा, यहाँ तक कि भूखे भी! हवाई जहाज-सम्बन्धी काम के अभाव में, उसने रूसी शरणार्थियों को पढ़ा कर अपना गुजारा चलाया। साथ ही, अपने समय का उपयोग उसने अपने गणित के ज्ञान की वृद्धि में भी किया।

अमेरिका-प्रवास के उसके ये पहले कुछ वर्ष उस अवस्था के समान थे, जब एक गिरा आदमी बोझ को उठा कर खड़ा होने के प्रयास में होता है। तब उसे अपनी ताकत के साथ ही किसी के सहारे की भी जरूरत होती है। स्कोर्स्की को सहारा मिला अपने श्रोताओं का, जिनमें अधिकांश रूसी शरणार्थी थे। उन्हीं में से कारीगर और छोटी-छोटी पूँजी लगानेवालों को एकत्र कर उसने 'स्कोर्स्की ऐरो इंजीनियरिंग कारपोरेशन' की स्थापना की।

इन्हीं रूसी शरणार्थियों में से एक, एलिजाबेथ सेमियों नामक अध्यापिका से उसने सन् १९२४ में विवाह किया।

जीवन के अपने ये ५ वर्ष उसने फिर से हवाई जहाज की दुनिया के शीर्ष-स्थान पर पहुँचने के अनवरत प्रयास में बिताये। अपने निवास के उस एक ठंडे प्रकाशहीन कमरे में, अपने दिमाग को कागज पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उतारना उसे भारी मालूम पड़ रहा था। न्यूयार्क के सार्वजनिक पुस्तकालय की एक मेज को उसने अपना 'ड्राइंग-बोर्ड' बनाया और वहीं उसके दिमाग से प्रसूत हुए वे हवाई जहाज, जो ४०-५० मुसाफिरों को समुद्रपार पहुँचाने में समर्थ सिद्ध हुए। स्कोर्स्की बहुत ही गम्भीर एवं धार्मिक वृत्तिवाला व्यक्ति है। किस प्रकार वह उड़ान-सम्बंधी गहन समस्याओं को हल करता है, यह वह स्वयं नहीं बता सकता। वह तो यही कहता है—"यह सब किसी अज्ञात प्रेरणा के कारण ही संभव होता है।"

डिजाइन बनाने की उसकी कहानी से अधिक महत्वपूर्ण और रोचक है, उसके द्वारा अमेरिका में पहला जहाज बनाये जाने की बात! केवल एक हजार डालर की जमा पूँजी से उसने अपना पहला हवाई जहाज बनाने का उपक्रम किया। एक खेत में छप्पर डाल कर हवाई जहाज का 'कारखाना' स्थापित किया गया और उसके लिए पहली मशीन ली गयी, एक पुराना ड्रिल-प्रेस—दो डालर से भी कम कीमत में! लड़ाई के रद्दी सामान एवं पुरानी चीजों की दूकानों से यंत्रादि बटोर कर, हेंगर के अभावमें ठिठुरते हाथों से, 'स्कोर्स्की ऐरो इंजीनियरिंग कारपोरेशन' के कारीगरों ने अपना पहला हवाई जहाज तैयार करना शुरू किया!

बीस सप्ताह तक बिना तनख्वाह पाये काम करके उन कर्मिष्ठों ने जब जहाज तैयार किया, तो उसे उड़ाने के लिए एक टिन पेट्रोल के लिए भी उनके पास पैसा नहीं था; अतः पास के विक्रेता से पेट्रोल उधार लाया गया। फिर उसके सभी 'निर्माता' उसकी सवारी का आनंद लेने के लिए व्यग्र थे; अतः जहाज जहाँ तीन जनों को लेकर भी मुश्किल से उड़ पाता, वहाँ सात सवार हो गये। स्कोर्स्की किसको रोकता—सभी का समान अधिकार था! अंत में, जहाज उड़ा; पर जैसे ही थोड़ा ऊपर उठा, उसका पुराना इंजन बोझ को नहीं ढो सका—जहाज एक नाले में गिर कर टूट गया! पर इससे स्कोर्स्की और उसके साथियों के दिल नहीं टूटे।

कुछ भी हो, सफलता के लिए एक अच्छे नये इंजन की जरूरत थी और उसके लिए चाहिये थे, २५०० डालर। अतः स्कोर्स्की ने अपने सब भागीदारों को एकत्र किया, अपना दिल खोल कर उनके आगे रखा और दरवाजे को ताला लगाते हुए कहा—"२५०० डालर इकट्ठा होने पर ही यह दरवाजा खुलेगा।" आखिर, इतने डालर भी इकट्ठे हो ही गये!

सितम्बर, १९२४ में स्कोर्स्की का पहला अमरीकी जहाज बन कर तैयार हो गया, जिसने आगे चल कर कुल ५ लाख मील की उड़ान भरी। उसमें १४ मुसाफिर सवार हो सकते थे—दो इंजनोंवाला वह पहला अमरीकी जहाज था, जो आवश्यकता पड़ने पर एक इंजन के सहारे भी उड़ सकता था!

अब स्कोर्स्की के पाँव जम गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारों तरफ से उसे वाहवाहियाँ और आर्थिक सहायता मिलने लगी। उसका काम चल पड़ा। वह औरों से कहीं बेहतर जहाज बनाने में सफल हुआ, जिसे सेना व हवाई उड़ान की कम्पनियों ने खूब पसंद किया। उसने वैसे १०० जहाज बना कर बेचे और उसके कारपोरेशन को ५० लाख डालर की पूँजी मिल गयी।

अब स्कोर्स्की बड़े-बड़े हवाई जहाज बनाने में लगा। चार इंजनवाली २० टन की प्रसिद्ध अमरीकी उड़नकिश्तियाँ उसी ने बनायीं, जिन्होंने अमेरिका के दोनों ओर के महासागरों को आसानी से लाँघा! पर स्कोर्स्की के दिमाग में तो वही सीधा ऊपर उठ कर उड़नेवाला हवाई जहाज लगातार चक्कर काट रहा था।

सन् १९२९ से उसने अपनी सीधे ऊपर उठती चिड़िया का डिजाइन बनाना शुरू किया और १९३१ में उसे पेटेंट करवाया। पर उसे ६ वर्ष और रुकना पड़ा। १९३७ में जर्मनी में हेलिकोप्टर बनने और उसके सवा घंटे उड़ने की खबर आयी। अब स्कोर्स्की ने अपनी कम्पनी-वालों को भी अपना प्रयोग पूर्ण करने देने के लिए बाध्य किया और इच्छा नहीं होते हुए भी, स्कोर्स्की की योग्यता के प्रतिमान-स्वरूप, कम्पनीवालों ने उसे हेलिकाप्टर बनाने की सम्मति दी। विविध असफल-ताओं के बाद, सन् १९४१ में, स्कोर्स्की ने अपना पूर्ण सफल हेलिकोप्टर बनाया। और, उसके बाद तो इस सीधा ऊपर उठनेवाली, हवा में स्थिर रह सकनेवाली और आगे-पीछे दायें-बायें उड़ सकने वाली 'चिड़िया' का युग ही प्रारम्भ हो गया! एक-दो ही नहीं, दस-बीस व्यक्तियों तथा मनों सामान उठा कर उड़ सकनेवाले हेलिकाप्टर आज की सैनिक व नागरिक आवश्यकताओं में प्रमुख हैं। वर्तमान विज्ञान-युग में मानवता के इस रक्षक और सेवक की गुण-गाथा आये दिन पढ़ने को मिलती ही रहती है।

पर ऐसा सफल वैज्ञानिक है कैसा? बहुत ही विनयशील, मृदुभाषी और सरल-स्वभाव! उसके चेहरे, पोशाक, व्यवहार और बोली से कभी यह लक्षित नहीं होता कि, वह एक असाधारण पुरुष है। वैज्ञानिकता के प्रवाह में धार्मिकता प्रायः बह जाया करती है; पर स्कोर्स्की जितना बड़ा वैज्ञानिक है, उतना ही बड़ा धार्मिक भी। वह हेलिकोप्टर का निर्माणकर्ता है, तो कई धार्मिक व आध्यात्मिक पुस्तकों का रचयिता भी!

७० वर्ष की आयु के समीप पहुँचता वह 'वृद्ध युवक' आज भी क्रियाशील है। हेलिकाप्टर की सम्भावनाओं की बातें कोई उससे सुने, तो पता लगे कि, वह क्या सोच रहा है। वह आगे आनेवाला वह दिन देख रहा है, जब हेलिकाप्टर फैक्ट-रियों से बने-बनाये घर लाकर सही जगह पर खड़ा कर देंगे, जब पुलों के भाग फैक्ट-रियों से उड़ कर आयेंगे और नदियों पर कुछ घंटों में ही यातायात होने लगेगा।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल पियर्स ही एक ऐसा साबुन है, जिस की शुद्धता आप अपनी आंखों से देख सकते हैं!

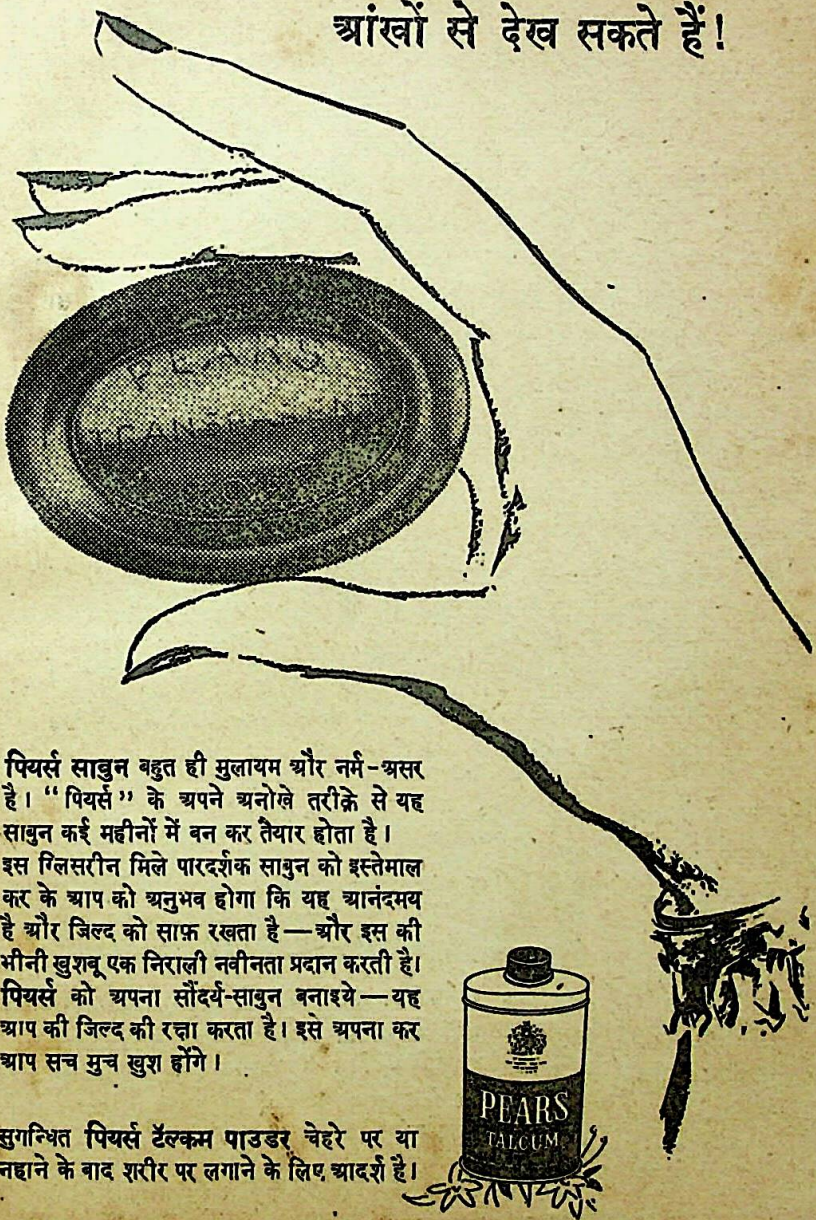

पियर्स साबुन बहुत ही मुलायम और नर्म-असर है। "पियर्स" के अपने अनोखे तरीक़े से यह साबुन कई महीनों में बन कर तैयार होता है। इस ग्लिसरीन मिले पारदर्शक साबुन को इस्तेमाल कर के आप को अनुभव होगा कि यह आनंदमय है और जिल्द को साफ़ रखता है—और इस की भीनी खुशबू एक निराली नवीनता प्रदान करती है। **पियर्स** को अपना सौंदर्य-साबुन बनाइये—यह आप की जिल्द की रक्षा करता है। इसे अपना कर आप सच मुच खुश होंगे।

सुगन्धित **पियर्स टॅल्कम पाउडर** चेहरे पर या नहाने के बाद शरीर पर लगाने के लिए आदर्श है।

PSP. 7-50-55 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई, ने ए. ॲन्ड एफ. पियर्स लिं., लन्दन, के लिये भारत में बनाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

For that Fascinating look

अन्य विशेषताएं:
साटन, क्रेप,
शानटूंग्स, प्लेन
तथा प्रिन्टेड,
बुश क्लाथ, साटन
और क्रेप फ्लावर
लाइनिंग क्लाथ,
टेपस्ट्री।

मोदी नाइलोन साड़ियां

- अधिकाधिक नवीन रंग तथा आकर्षक प्रिंट्स।
- सर्वोत्तम आयात किये गये माल से स्थायी चमकीले फिनिश में तुलनीय हैं।
- घर में आसानी से धोई जा सकती है तथा श्रिंक नहीं होती।

मोदी रेयन एण्ड सिल्क मिल्स, मोदीनगर (यू० पी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसीहुल्मुल्क

गांधीजी के शब्दों में "हकीम अजमल खाँ शारीरिक रोगों के ही नहीं, कौम के रोगों के भी हकीम थे। न रोगी उनसे निराश हुए और न उनका मादरेहिंद !" हकीम साहब अपने जीवन-काल में ही 'मसीहुल्मुल्क' कहलाने लगे थे। यहाँ हम उनके ही एक शिष्य हकीम जकी अहमद देहलवी-द्वारा लिखित उनके जीवन की एक झाँकी पेश करते हैं।

*

हकीम साहब बड़ी खूबियों के आदमी थे। खुद अमीर थे और एक अमीर घराने में पैदा हुए थे; लेकिन गरीबों-जैसी सादगी उन्हें पसंद थी। वे अमीरों के सामने मुगल बादशाहों की शान और दबदबे का नमूना थे; मगर गरीबों के लिए हमदर्दी और कुर्बानी की तसवीर थे। हमेशा मुल्क की भलाई और हिन्दू-मुसलमानों के सियासी मिलाप के लिए सरगर्म और बेचैन रहे।

आप बुखारा (तुर्किस्तान) के मशहूर सूफी बुजुर्ग ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार के खानदान से थे। हजरत ख्वाजा के पोतों—ख्वाजा हाशिम और ख्वाजा कासिम—को शहनशाह बाबर अपने साथ हिन्दुस्तान लाया था। बाबर ने अपने रोजनामचे, 'तुजकबाबरी', में इन दोनों भाइयों का जगह-जगह जिक्र किया है, जिससे पता चलता है कि, उसके दिल में इन बुजुर्गों की कितनी इज्जत थी। बाबर का अकीदा (विश्वास) था कि, उसका दादा 'तैमूर' जो एक चरवाहा होते हुए भी एक जबर्दस्त फातह (विजयी) बन गया, यह हजरत ख्वाजा अहरार की दुआओं का ही नतीजा था।

मुद्दतों तक इस खानदान के लोग मजहबी पेशवा होते रहे। शहनशाह जहाँगीर के जमाने में, अकमल खाँ ने हिकमत-व-तबाबत (चिकित्सा-शास्त्र) सीखी। उसी वक्त से इस घराने में तबाबत का सिलसिला जारी हो गया और हकीम शरीफ खाँ, हकीम सादिक अली खाँ और हकीम महमूद खाँ-जैसे नामवर तबीब पैदा हुए। अहमद शाह बादशाह के जमाने तक इस खानदान के लोग शाही तबीब बने रहे।

हकीम अजमल खाँ, हकीम महमूद खाँ के छोटे बेटे थे। हकीम अब्दुलमजीद खाँ और हकीम वासिल खाँ उनके बड़े भाई थे। हकीम महमूद खाँ के तीनों बेटों ने बाप का नाम खूब चमकाया और तमाम उम्र खुदा के लाखों बंदों की खिदमत बिना किसी जाती गरज (निजी स्वार्थ) के करते रहे।

हकीम साहब सन् १८६४ ई० में पैदा हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने सबसे पहले कुरानशरीफ जबानी याद किया। घर में अच्छे-अच्छे काबिल उस्ताद पढ़ानेवाले थे। चुनाँचे, अट्ठारह साल की उम्र में ही फारसी और अरबी में फलसफा, अदब (साहित्य) और मंतिक (तर्क-शास्त्र) की आला तालीम हासिल कर ली; फिर 'तिब' (चिकित्सा-शास्त्र) की तरफ तवज्जह की और इल्मी और अमली, दोनों तरीकों से पहले अपने वालिद हकीम महमूद खाँ से, फिर बड़े भाई हकीम अब्दुल मजीद खाँ और चचाजाद भाई हकीम गुलाम रजा खाँ से तिब सीखा।

तिब के सिवा दूसरे उलूम-व-फनून में भी आप की मालूमात उस्तादाना हैसियत की थीं– खास तौर से इस्लामी उलूम फिकाह(इस्लामी कानून), हदीस और इल्मे-कलाम (इस्लामी तर्कशास्त्र) के बारे में। वे अरबी, फारसी और उर्दू के बेमिसाल आलिम थे।

हकीम अजमलखाँ
[चित्र : बी० एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

उनका रोजाना का मामूल था कि, सुबह चार बजे उठते और दिन-भर के अलावा बड़ी रात गये तक काम करते रहते। मौलाना शिबली नोमानी कहा करते थे–"हकीम अजमल खाँ की इतनी मेहनत और इतना सख्त काम देख कर हैरत होती है कि, उनका दिल-व-दिमाग हमेशा किस तरह तरोताजा बना रहता है!"

रियासत रामपुर से उनका मुलाजमत का ताल्लुक था, इसलिए बार-बार वहाँ जाना होता। रामपुर पहुँच कर हमारे लिए उनका सबसे पहला हुक्म लायब्रेरी से किताबें लाने का होता था। वे इतना पढ़ते थे!

पहली बड़ी लड़ाई खत्म होने पर, वह पूरी तरह मैदाने-सियासत में आ चुके थे। सन् १९२०-२१ में खिलाफत कमेटी और काँग्रेस में जो समझौता हुआ, उसमें हकीम साहब का बहुत बड़ा हाथ था। इसके बाद ही वे अहमदाबाद-काँग्रेस के प्रेसिडेंट चुने गये।

उनके जमाने के तमाम सियासी लीडर उनकी बड़ी इज्जत करते थे और जब कभी आपस में कोई उलझन आ पड़ती थी, तब हकीम साहब को मामला सुलझाने के लिए बुलाया जाता था। जब गाँधीजी को सरकार ने नजरबंद किया, तो उन्होंने अपनी जगह हकीम साहब को ही काँग्रेस का 'डिक्टेटर' मुकर्रर किया।

हकीम साहब के खानदान का और खुद हकीम साहब का दस्तूर यह रहा है कि,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर कोई रईस या किसी रियासत का नवाब या राजा उन्हें देहली से बाहर बुलाता, तो उससे एक हजार रुपये रोजाना फीस लिया करते थे। लेकिन देहली में कोई भी अमीर या गरीब उनके पास आता या घर पर बुलाता, तो वे उससे कोई फीस नहीं लेते थे। अपने पास से जो दवा देते थे, उसकी भी कीमत वे नहीं लिया करते थे। अच्छी-खासी कीमती दवाएँ अपने पास से वे बिला कीमत दे देते थे।

निजी जिंदगी में हकीम साहब एक सच्चे सूफी और दुर्वेश (संत) थे, यह बात उनके मिलने-वालों में कुछ खास-खास लोग ही जानते हैं। मिजाज में बड़ी ही बुर्दबारी (शांति) थी। उन्हें कभी किसी मुलाजिम या दूसरे साथ वाले आदमी पर गुस्सा नहीं आया। उनकी जाती जिंदगी के सैकड़ों वाकये मेरे सामने हैं, जो उनकी बुलंद सीरत पर रोशनी डालते हैं। एक वाकया सुनिये, जो एक सफर में पेश आया– मरहूम के साथ यह मेरा पहला सफर था।

नौशहरा (सीमाप्रांत) के पास मानकी-शरीफ एक पहाड़ी जगह है। सन् १९१७ में आप वहाँ के रूहानी पेशवा पीर साहब मानकी-शरीफ के इलाज के लिए तशरीफ ले जा रहे थे। हकीम साहब रात के ग्यारह बजे नागदह-मेल से रवाना हुए। साथियों में, मैं, मेरे बड़े भाई और इदरीस, यही तीनों थे। स्टेशन पर जरा देर से पहुँचे। हकीम साहब को तो खैर पहले दर्जे में जगह मिल गयी। हम दोनों भाइयों को दूसरे दर्जे में बैठना था, जिसकी कोई भी सीट खाली न थी। आखिर में, एक डब्बा खाली नजर आया, उसमें हम बैठ गये। रेल के टिकट और नकद रुपये भाई साहब के पास ही थे। भाई साहब को पान खाने का बड़ा शौक था, इसलिए कुछ देर बाद इदरीस से कह कर उन्होंने पान की टोकरी हकीम साहब के डब्बे से अपने पास मँगवा ली और इदरीस को भी अपने ही डब्बे में आकर सो जाने की सलाह दी। इदरीस ने वैसा ही किया।

हकीम साहब ने इदरीस को हुक्म दिया

दीपमहल

जिंदगी और परछाईं, दोनों एक ही तो हैं। फर्क इतना ही है कि, एक परायी रोशनी के सहारे कायम है और दूसरी अपनी खुद की रोशनी के सहारे। खुद की रोशनी ही साथ देती है—यह सब जानते हैं; मगर भीतर मुड़ कर कितनी बार हम रोज के दीये को रोशन करते हैं? अँधेरे में टटोलते रहेंगे, ठोकरें भी खायेंगे; मगर परायी को ही ताकेंगे, खुद के दीपमहल से कुछ न लेंगे। कस्तूरी का मिरग तो जानवर ठहरा, जो अपनी खुशबू नहीं जानता; मगर इंसान तो खुद उस परवरदिगार की तस्वीर है।

—अजमलखाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था कि, फीरोजपुर के स्टेशन पर चाय मँगाना। लेकिन हम जिस डब्बे में बैठे थे, वह भटिंडा के स्टेशन पर कट गया और नागदह-मेल आगे चला गया। फीरोजपुर स्टेशन पर हकीम साहब जागे और इदरीस के चाय लाने का इंतजार करने लगे। लेकिन न चाय ही आयी और न हाथ-मुँह धोने के लिए गरम पानी ही आया।

लगभग एक घंटे के बाद, गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकी। आप को बड़ी सख्त भूख लगी थी। पान भी वे बहुत खाते थे। इसलिए 'बाथरूम' के ठंडे पानी से हाथ-मुँह धोकर पान की पिटारी देखी, तो वह भी गायब! गाड़ी से उतरे और पूरी गाड़ी को देख गये; लेकिन दोनों शागिर्दों में से कोई नजर न आया— न इदरीस खिदमतगार का ही कुछ पता चला। अपनी निगाह की गलती का खयाल करके दूसरी बार फिर पूरी गाड़ी में नजर दौड़ायी; लेकिन नतीजा वही रहा। कुछ देर बाद, गाड़ी रवाना हो गयी और हकीम साहब को फिर अपने डब्बे में सवार होना पड़ा। रास्ते में अजीब हालत रही—शागिर्द कहाँ रह गये? खिदमतगार को क्या हुआ? पान खाकर वक्त गुजार सकते थे, वह भी न मिले। जेब टटोली, तो एक पाई भी न थी और न रेल के टिकट ही!

उधर जब यार्ड में हमारी आँखें खुलीं, तो बहुत घबराये। भाई साहब उठे और स्टेशनमास्टर के पास पहुँचे। टिकट के नम्बर देकर तार दिलवाया, जो हकीम साहब को लाहौर के स्टेशनमास्टर ने पहुँचाया और बताया कि, आपके आदमी भटिंडा स्टेशन पर रह गये हैं; अगर आप आगे जाना चाहें, तो यह टिकट का नम्बर है।

हकीम साहब वक्त के बड़े पाबंद थे, इसलिए आगे जाना तय कर लिया। कुलियों को हुक्म दिया कि, हमारा सामान जी० आई० पी० मेल में रखो। कुलियों ने सामान पहुँचाने के बाद, अपनी मजदूरी तलब की। लेकिन जेब में क्या था, जो देते? जरा सोचिये कि, उस जमाने का मसीहुलमुल्क और देहली का रईसे-आजम लाहौर स्टेशन पर इतनी भीड़ में मजबूरी से कुलियों के तकाजे सुन रहा था। उनके लिए आसान था कि, लाहौर ठहर जाते और सब कुछ मोहैया हो जाता; मगर प्रोग्राम के मुताबिक चल रहे थे, ठहरते तो कैसे? एक कुली ने तंग आकर यहाँ तक कह दिया कि, जेब में तो पैसे नहीं और सफर इतने बड़े दर्जे में कर रहे हैं। इत्तफाक से नौशहरा के खानबहादुर मुशर्रफ शाह— जो कभी हकीम साहब से देहली में इलाज करा चुके थे— नजर आये। उन्होंने परेशानी की वजह जान कर फौरन दो सौ रुपये नजर किये। हकीम साहब ने कुलियों को इनाम में २५ रुपये देकर रुखसत किया और खाना मँगाया। प्रोग्राम के मुताबिक शाम को नौशहरा पहुँचे और पीर साहब मानकी-शरीफ के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ तशरीफ ले गये।

हम लोग तीसरे दिन शाम को नौशहरा पहुँचे, स्टेशन से बाहर आकर भाई साहब मानकी-शरीफ जाने के लिए सवारी का इंतजाम कर रहे थे कि, सामने से हकीम साहब की सवारी आती हुई दिखायी दी। दो दिन मानकी-शरीफ ठहर कर वे वापस आ रहे थे। सबने सलाम किया, हाथ के इशारे से जवाब मिला और सबको साथ लेकर वे पेशावर के लिए रवाना हो गये। नौशहरा से पेशावर तक उन्होंने हममें से किसी के साथ कोई बात न की और न किसी खिदमत का हुक्म दिया।

पेशावर पहुँच कर वे सेठ अब्दुर्रशीद के यहाँ ठहरे और जब खाने पर बैठे, तो मेजबान के पूछने पर सफर के सब हालात सुनाये— हमारी खताएँ भी माफ कर दीं और आदमी के हाथ खानबहादुर मुशर्रफशाह को दो सौ रुपये भेजने का हुक्म दिया।

यही एक वाकया उनके 'कैरेक्टर', इरादे की मजबूती और सखावत के अंदाजे के लिए काफी है। यह सफर आपने बिला किसी फीस के किया था और रास्ते का खर्च भी अपनी जेब से उठाया था; क्योंकि अल्लाहवालों से उन्हें अकीदत (श्रद्धा) और मोहब्बत थी और उनसे वे कभी फीस न लेते थे।

किस्सा मुख्तसर, मसीहुलमुल्क हकीम अजमल खाँ तरह-तरह की खूबियों के एक संगम थे। अमीर भी थे, दुर्वेश भी, आलिम भी थे और मुदब्बिर (अच्छी तदबीर निकालनेवाला) भी और फैयाजी (दानशीलता) और कुर्बानी में तो उनका दर्जा बहुत ही ऊँचा है, जिसकी जिंदा यादगार 'आयुर्वेदिक ऐंड यूनानी तिब्बिया कालेज देहली', 'जनाना तिब्बिया कालेज' और उनका कायम किया हुआ 'हिन्दुस्तानी दवाखाना' है, जो कालेज के लिए वक्फ है। इसी आमदनी से कालेज-जैसा इदारा (संस्था) चल रहा है।

हकीम साहब अरबी, फारसी और उर्दू के आला पाये के शायर भी थे। उनका उर्दू कलाम 'दीवाने-शैदा' के नाम से जर्मनी में छप चुका है।

★

तीन मोती

कैसा बुतखाना, कहाँ का दैर, कैसी खानकाह,
जिस जगह सजदा किया हमने वोह काबा हो गया।

रह-रह के पूछते हैं यही बाग़बाँ से हम,
ले जायें चार तिनके कहाँ आशियाँ से हम।

इसी को इन्तहाये-इश्क़ क्या ऐ 'शौक़'! कहते हैं,
कि मुझको खुद नहीं मालूम क्या है आरज़ू मेरी।

—जगमोहननाथ रैना 'शौक'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिमालय का प्रेत

हिममानव की खोज फिर शुरू हुई है। पामीर के आसपास पर्यटन करते एक रूसी अन्वेषक-दल ने अभी-अभी हिममानवों का एक दल पर्वत की गुफाओं में घुसते देखा है। यहाँ हम हिमालय के इस रहस्यमय प्राणी के बारे में रमेशचंद्र तिवारी-लिखित कुछ और जानकारी प्रकाशित कर रहे हैं।

*

पिछले महीनों में फिर से समाचार-पत्रों में 'यती' अथवा 'हिममानव'-सम्बंधी विविध समाचार प्रकाशित हुए हैं। एक समाचार के अनुसार, इस प्राणी को पकड़ने के लिए अब अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर होड़ आरम्भ हो गयी है। रूस का एक दल पामीर के पठारों में यती की खोज करता घूम रहा है और अमेरिका का एक दल शीघ्र ही हिमालय की वरुन घाटी में यती की खोज करने के लिए रवाना होनेवाला है। सन् १९५२ में एवरेस्ट-विजय करके लौटनेवाले ब्रिटिश पर्वतारोही-दल ने जब उत्तुंग हिम-शिखरों और बर्फीली घाटियों में यती के पदचिह्न मिलने की बात कही थी, तभी से सम्पूर्ण सभ्य-जगत् चौकन्ना होकर इस अद्भुत और विचित्र प्राणी के जीवित अथवा मृत पकड़े जाने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा है।

सन् १९२१ में प्रथम ब्रिटिश एवरेस्ट-अभियान-दल के नेता कर्नल बरी ने सबसे पहले समुद्र-तट से लगभग २० हजार फुट ऊपर हिमालय-शृंखला के लाखपा-ला दर्रे के निकट इस विचित्र प्राणी के पैरों के निशान देखे थे। उनके साथ के शेरपा कुलियों को इन निशानों को देख कर आश्चर्य नहीं हुआ। उल्टे, उन्होंने ही सबसे पहले कर्नल बरी की शंका का निवारण करते हुए बताया कि, ये निशान किसी आदमी या पहाड़ी जानवर के नहीं; बल्कि 'मिच कांगामी' के हैं। मिच कांगामी से उनका तात्पर्य हिममानव से ही था। इससे यह बात तो निश्चित हो गयी कि, ये शेरपा कुली इस विचित्र प्राणी से पूर्वपरिचित हैं। तिब्बती लोगों में भी हिममानव के लिए 'मिलोह-काम्पी' नाम प्रचलित है, जिसका शाब्दिक अर्थ हुआ, 'भयानक हिममानव'।

आरम्भ में, कर्नल बरी की हिममानव-सम्बंधी रिपोर्ट पर ब्रिटेन के नृतत्व-शास्त्रियों में बड़ा मतभेद उत्पन्न हुआ। एक नृतत्वशास्त्री ने यह सिद्धांत प्रतिपादित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने की कोशिश की कि, कर्नल वरी को दिखायी पड़नेवाले पंजे के निशान जिस प्राणी के हैं, वह वहुत सम्भव है, तिव्वत अथवा भारत से भाग कर हिमालय की ऊँची शृंखलाओं में छिप कर रहनेवाले किसी मानव अपराधी के हों, जो कानून की पकड़ में आने की अपेक्षा घोर निर्जन प्रदेश में रह कर दिन काट रहा हो। यह भी हो सकता है कि, ये निशान पर्वत की गुफाओं में तपस्या करने के लिए रहनेवाले किसी साधु-संन्यासी के हों, जो मानव-सम्पर्क से वचने के लिए आदमियों को देख कर उनसे छिप जाता है।

सन् १९२५ में एक इटालियन पर्वतारोही ने सिक्किम के निकट जेमू ग्लेशियर से करीव १० मील दूर, नीचे घाटी में, एक अद्भुत प्राणी देखने की वात लिखी। उसने लिखा कि, वह प्राणी नीचे घाटी में उकड़ूँ वैठा हुआ शायद पेड़-पौधों की जड़ें खोद रहा था। दूर से देखने पर भी, वह आदमी से मिलता-जुलता लगता था और चलने पर विल्कुल सीधा, आदमियों की भाँति, चलता भी था। टोम्बाजी को इससे अधिक अध्ययन-निरीक्षण का अवसर नहीं मिला; क्योंकि उसके साथ के कुलियों ने उस विचित्र प्राणी को देख कर भय के मारे चिल्लाना शुरू कर दिया, जिससे वह एकदम उठा और देखते-देखते अदृश्य हो गया। उसके पंजों के निशान साफ दिखायी पड़ते थे।

सन् १९३६ में रावर्ट कालवैक नामक एक पर्वतारोही ने सालमीना-क्षेत्र में, समुद्र-तल से १५ हजार फुट की ऊँचाई पर, वैसे ही अद्भुत पदचिह्न देखे। इसी वर्ष नंदादेवी-क्षेत्र में ब्रिटिश विमान-सेना के एक अधिकारी को भी वही पदचिह्न दिखायी पड़े। ये पदचिह्न आखिर किसके हो सकते हैं, यह प्रश्न हल नहीं हो पा रहा था। प्राणि-शास्त्रियों का कहना था कि, ये पदचिह्न पहाड़ी भालू के हैं; किंतु इतनी ऊँचाई पर पहाड़ी भालू

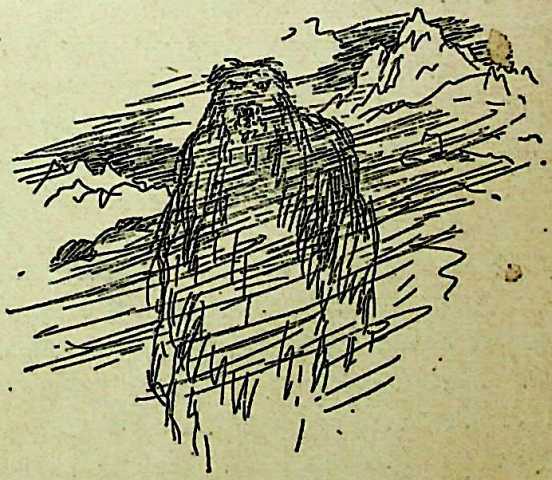

एरिक शिप्टन-द्वारा वर्णित प्रथम दृष्टि में हिममानव की एक झलक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता ही नहीं।

"ये पदचिह्न किस प्राणी के हो सकते हैं?"—अभी इसी प्रश्न पर विवाद चल रहा था कि, स्मिथ नामक एक विश्वपर्यटक ने गढ़वाल-क्षेत्र में काफी ऊँचाई (लगभग १६ हजार फुट) पर एक विचित्र प्राणी के अति विशाल पदचिह्न देखे। स्मिथ ने तुरत उन पदचिह्नों का फोटो खींच कर उस पर कुछ गवाहों के बयान ले लिये। सन् १९३७ में बिआफो ग्लेशियर और बर्चगंगा के पास भी ऐसे ही पदचिह्न देखे जाने की खबर मिली। सन् १९३८ में विख्यात पर्वतारोही ए० डब्ल्यू० टिलमैन को कंचनजंगा और सिमवू के बीच, १८ हजार फुट की ऊँचाई पर, कुछ विशाल और गोल आकार के पदचिह्न दिखायी पड़े। सन् १९५२ में एवरेस्ट-विजय के समय तक अन्य बहुत-से लोगों ने यती के पदचिह्न देखने की बात तो कही; किंतु किसी को भी उसे देखने का अवसर नहीं मिला। सन् १९५२ में भी उसके पदचिह्नों के फोटो तो संसार के लगभग सभी पत्रों में प्रकाशित हुए; किंतु इन पदों के स्वामी का कोई पता किसी को नहीं चला। यती को खोजन के सभी प्रयास व्यर्थ हुए और इस समय तक हो रहे हैं। हिममानव एक भ्रम की भाँति रहस्यमय बना हुआ है।

किंतु यदि तिब्बत के दलाई लामा के प्रतिनिधि और काठमांडू-स्थित मठ के प्रधान, लामा पुण्यवज्र की बात का विश्वास किया जाये, तो एक प्रकार से हिममानव का रहस्य खुल ही चुका है। लामा पुण्यवज्र का दावा है कि, वे हिमालय के उन प्रदेशों का चार महीने तक भ्रमण कर चुके हैं, जहाँ हिममानव रहते हैं। अपने इस भ्रमण-काल में उन्होंने 'यतियों का बहुत निकट से अध्ययन किया है। उनका यह भी दावा है कि, यदि मेरी सरकार मुझे अनुमति प्रदान कर दे, तो मैं एक यती को जीवित अथवा मृत, जिस अवस्था में भी सम्भव हुआ, ला सकता हूँ।

लामा पुण्यवज्र ने अपने यती-अध्ययन के आधार पर हिममानवों के तीन प्रकार बताये हैं— लामा न्यालमो हिममानव, राक्सी बोम्पू हिममानव और सामान्य तरह के हिममानव।

हीनता

सूरज के तेज, चाँद के रूप, सितारों की छवि, वायु के वेग, वरुण की गहराई और धरती के धैर्य में ढला यह मनुष्य जब अपने को मिट्टी का घरौंदा मान बैठता है, तो मैंने देखा है कि, आसमान की हर आँख में आँसू छलका है, अप्सराओं के चेहरे कुम्हलाये हैं, देवताओं की हिम्मत टूटी है और स्वर्ग का स्वामी बड़ा मायूस हो गया है। —कविवर किशि (जापान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लामा पुण्यवज्र के अनुसार लामा न्यालमो जाति का यती १३ से १५ फुट तक ऊँचा होता है। वह शुद्ध माँसाहारी होता है। वे समूहों में रहते हैं और पहाड़ी बकरियों और हिरनों का शिकार करके खाते हैं। शिकार करते समय अपने समूह का नेतृत्व मादा न्यालमो करती है। यों भी मादा न्यालमो ही परिवार की प्रधान होती है और शासन करती है।

राक्सी बोम्पू जाति के यती वरुन घाटी के आसपास के क्षेत्रों में रहते हैं और कंद-मूल खाकर जीवन-निर्वाह करते हैं। उनकी ऊँचाई अधिक-से-अधिक ५ फुट होती है। इस जाति के यती अनाज और आटा खाना बहुत पसंद करते हैं और कभी-कभी निकटवर्ती गाँव की पनचक्कियों में रात के समय धावा करके वहाँ का अनाज और आटा लूट कर खा जाते हैं।

अभी हाल ही में नेपाली शेरपाओं का एक प्रतिनिधिमंडल नेपाल-सरकार के पास अपनी फरियाद लेकर काठमांडू आया था। इस फरियाद में राक्सी बोम्पू जाति के यतियों-द्वारा होनेवाले उपद्रवों से गाँववालों को होनेवाले कष्टों का सविस्तार विवरण था।

तीसरी जाति के यती के सम्बंध में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है। वह मध्यम आकार का होता है और अधिक-से-अधिक ८ फुट और कम-से-कम ६ फुट का होता है। जहाँ तक भोजन-सम्बंधी आदतों का प्रश्न है, वह माँस और कंद-मूल, दोनों ही खाता है।

लामा पुण्यवज्र की एक बात विशेष रूप से ध्यान देनेवाली है। उनका कहना है कि, यती की खोपड़ी माथे से करीब एक फुट ऊँची और तिकोनी होती है। अभी हाल ही में शेरपाओं के एक गाँव में कथित 'यती' की एक खोपड़ी मिली भी है, जो तिकोनी है। इस पर एक इंच लम्बे और लाली लिये हुए भूरे रंग के बाल हैं।

सबसे हाल में और साथ ही सबसे रोचक यती-कथा जो सुनने में आयी है, वह है एक 'यती-बालिका' की। 'यती-बालिका' का अर्थ यती की लड़की नहीं है। यह कथा एक ऐसी शेरपा-बालिका की है, जिसे ६ वर्ष की आयु में एक यती उठा ले गया था और कई वर्ष तक अपने पास रख कर अंततः उसे वापस उसके गाँव पहुँचा गया था। यह बालिका यतियों की बोली बोल लेती थी और उन्हीं की भाँति कीड़े-मकोड़े तथा कंद-मूल खाना सीख गयी थी। यती के पास से लौटने के पश्चात् फिर आदमियों-जैसी आदतें सीखने में इस बालिका को अनेक वर्ष लगे।

★

कोयल को बोलते सुन, कौवी ने चिढ़ कर कौवे से कहा—"भगा क्यों नहीं देते इस बदजबान को। यह रेंकती है, तो मुझे गाने का 'मूड' ही नहीं आता।" —'बिखरे कण'से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन रुचिमय हो

भोजन में पोषण ही सब-कुछ नहीं है। पोषण से भी जो अत्यावश्यक है, वह है रुचि। ईसा ने सच ही कहा है कि, रुचि का सूखा टुकड़ा लाख के पकवान से कहीं ज्यादा पोषक है। आज मन की उलझनों और शरीर की निष्क्रियता ने हमारी भोजन-रुचि पर कुठाराघात किया है—शहरों में यह 'मरुथल' बड़ी तेजी से फैलता जा रहा है। यहाँ हम अमरीकी डाक्टर फ्रैंक कथबर्स्टन के कुछ प्रशंसनीय प्रयत्नों का विवरण दे रहे हैं, जिन्होंने भोजन को रुचिमय बनाने की दिशा में काफी सफलता पायी है।

फ्रैंक कथबर्स्टन सचमुच बागवानी के जादूगर हैं। उन्होंने वर्षों के अथक परिश्रम से तरकारियों के रूप-रंग, आकार और स्वाद में ऐसे परिवर्तन कर दिये हैं कि, उन्हें देख कर साधारणतः कोई पहचान भी नहीं सकता। उनकी यह कीर्ति ब्रिटेन तथा अमेरिका, दोनों ही देशों में व्याप्त है। रीडिंग (ब्रिटेन) की 'सटन ऐंड संस'-द्वारा टिन के डिब्बों में बंद करके भेजी जानेवाली 'सेलरी' (एक प्रकार का शाक), जो अति नरम होती हैं; ब्रेसेल्स के स्प्राउट (एक प्रकार की कोंपलें), जो अति छोटे, ठोस और गाढ़े काले रंग के होते हैं और चौड़ी सेमें, जिनकी फलियाँ १४-१५ इंच लम्बी होती हैं, कथबर्स्टन की ही देन हैं। 'सटन ऐंड कम्पनी' सब्जियों की दुनिया में क्रांति करनेवाली विश्व की सर्वप्रथम संस्था है। उसने यह कार्य सन् १९२१ में प्रारम्भ किया था। और, अमेरिका की 'सी० सी० मोर्स सीड कम्पनी' को तो पूर्णतः कथबर्स्टन का ही सृजन कहना चाहिए। उससे एक लम्बे अरसे से सटन ऐंड कम्पनी बीजों का आदान-प्रदान किया करती है।

घटना इस प्रकार घटी कि, एक बार अमेरिका की 'कैम्पवेल सूप कम्पनी' का ध्यान इस बात की ओर गया कि, जब गाजर को चौकोर टुकड़े काटनेवाली मशीन में डाला जाता है, तो उसका बहुत-सा भाग व्यर्थ चला जाता है। कुछ गाजरें हल्की पीली होती हैं और कुछ गाढ़े नारंगी रंग की। यह बात भी उस सूप कम्पनी को भद्दी मालूम होती थी; क्योंकि 'सूप' में दो रंग के टुकड़े देखने में अच्छे नहीं लगते थे।

'कैम्पवेल सूप कम्पनी' ने इस सम्बंध में 'सी० सी० मोर्स सीड कम्पनी' के सम्मुख अपना विचार रखा। मोर्स कम्पनी के अध्यक्ष लेस्टर मोर्स को भी यह बात जँच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयी। उन्होंने गाजर पर प्रयोग करने के लिए अपने यहाँ एक विभाग ही खोल दिया और फ्रैंक कथवर्स्टन को उस विभाग के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त कर दिया।

उस समय तक फ्रैंक कथवर्स्टन केवल फूलों पर ही प्रयोग कर रहे थे और कुछ फूलों के रूप-रंग बदलने में उन्होंने सफलता भी प्राप्त कर ली थी। उनके लिए तरकारियों का यह क्षेत्र बिल्कुल नया था। पर अपने कार्य की दुरूहता से अभिज्ञ होने के बावजूद वे किंचित्-मात्र निराश नहीं हुए।

गाजर पर उनके प्रयोग की कहानी सन् १९२०-३० के बीच की है। गाजर का रंग ठीक नारंगी-सरीखा ही गाढ़ा हो, इसके लिए कथवर्स्टन तथा उनके सहकारी वाल्टर निक्सन को हजारों बार प्रयोग करने पड़े। गाजरें बोयीं और हर गाजर की जड़ का बराबर परीक्षण करते रहे। जहाँ कोई गाजर अधिक गाढ़े अथवा हल्के रंग की नजर आती, वे उसे निकाल फेंकते। ८ वर्षों के सतत् परिश्रम के बाद, १० गाजरें वे ऐसी उपजा सके, जिनका रंग और रूप ठीक वही था, जैसा कि वे चाहते थे। उन १० गाजरों की संतान आज अमेरिका में १ लाख एकड़ क्षेत्र में फैली है।

इसी बीच घर के बगीचों में तरकारी बोनेवालों ने ऐसे चुकंदरों की माँग की, जिन पर गेरुई रोग का प्रभाव न पड़ सके। कथवर्स्टन ने पहले एक विशेष प्रकार का चुकंदर उपजाया और फिर उसे ऐसे खेत में बोया, जिसके चुकंदरों में गेरुआ लग चुका था। उस खेत में चुकंदर के बहुत-से बीज तो मर गये; पर जो पैदा हुए, उनमें गेरुआ रोग से संघर्ष करने तथा विजय पाने की शक्ति थी। मोर्स के वे चुकंदर अमेरिका में बड़े ही लोकप्रिय हुए। उक्त कम्पनी के अध्यक्ष ने कुछ वर्ष पूर्व पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि, वर्ष में तीन लाख पौंड चुकंदर का बीज हम लोग बेच लेते हैं; पर इससे हमारे सब ग्राहकों की माँग पूरी नहीं हो पाती।

चीन में भोजन बनाना नारी की सर्वोच्च सिद्धि मानी जाती है।

इसके अतिरिक्त कथवर्स्टन ने एक और तरह का चुकंदर उपजाया है। इस चुकंदर में पत्तियाँ अधिक और साधारण चुकंदर की अपेक्षा कोमल होती हैं। जो लोग जड़ के लिए नहीं; बल्कि शाक के लिए चुकंदर की खेती करते हैं, कथ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बर्स्टन का यह नया चुकंदर उन्हीं के लिए है।

बीज के व्यवसाय में एक बड़ा दुर्गुण यह है कि, बाजार में एक बार कोई नया बीज गया कि, अन्य बीज बेचनेवाली कम्पनियों को भी वह बीज उपलब्ध हो सकता है। और, बहुत-सी छोटी कम्पनियाँ किसानों से बीज प्राप्त करके उन्हें अपनी कम्पनी का बीज कह कर बेचने लगती हैं। कथबर्स्टन को भी इस कठिनाई का सामना करना पड़ा। कितने ही बीज बेचनेवालों ने उनके उपजाये बीजों को किसानों से प्राप्त करके अपना बीज कह कर बेचना शुरू कर दिया; पर इससे कथबर्स्टन कभी हतोत्साहित नहीं हुए। वे कहते हैं—"मैंने तो किसानों की कठिनाइयों को दूर करना अपना धर्म बना लिया ह। मैं बीज उपजाता हूँ। यदि कोई कम्पनी उसे किसानों से अवैध रूप में प्राप्त करके अपने नाम से बेचती है, तो उससे मेरे कार्य को कहाँ क्षति पहुँचती है? मैं तो इसे अपनी सहायता मानता हूँ।"

फ्रैंक कथबर्स्टन कितने संघर्ष से आज सब्जी-बगान के जादूगर बने, इसकी कहानी वे स्वयं अपनी मित्र-मंडली में सुनाया करते हैं। वे कहते हैं—"सन् १९११ में, जब मैं अपने जन्मस्थान स्काटलैंड से कैलीफोर्निया आया, तो उस समय मेरी जेब में केवल ४ पौंड (लगभग ६० रुपये) थे। इसी कम्पनी के 'फार्म' में मुझे पहली नौकरी मिली। उस समय मैं इस फार्म में फालतू घास उखाड़ा करता था। घास उखाड़ते-उखाड़ते मुझे बागवानी में रुचि उत्पन्न हुई और अपने अतिरिक्त समय में मैं छिप कर फूलों पर अपने प्रयोग किया करता था। एक दिन फार्म के मालिक मोर्स की नजर मेरे छोटे-से जखीरे पर पड़ गयी और उस दिन से वे भी हमारे काम में रुचि लेने लगे। जब मैं मोर्स कम्पनी में गाजर के सम्बंध में प्रयोग करने लगा, उस समय भी अपने फालतू समय में मैं अपने जखीरे पर काम करता। अपने जखीरे में मैंने सबसे पहले मटर पैदा किया। मोर्स को जब उसकी विशेषताएँ मालूम हुईं, तो मेरे बीजों को उन्होंने अपने 'फार्म' में लगाया। मटर की वे फलियाँ बाजार में चौगुने दामों पर बिकीं। उन मटर की फलियों की बिक्री देख कर मोर्स ने कम्पनी के कुछ 'शेयर' मुझे दे दिये; पर मेरे लिए शेयर से अधिक महत्व की बात थी, काम का अवसर! और, उस अवसर के ही उपयोग का यह फल है कि, यद्यपि मोर्स इस कम्पनी के मालिक हैं, इसका सबसे बड़ा अधिकारी मैं हूँ।

"मेरी इस उन्नति का बहुत-कुछ श्रेय मोर्स को है, जो मेरे साथ सहयोग करते रहे और नये-नये प्रयोगों का अवसर देते रहे। मटर के बाद मैंने दूसरा प्रयोग गोभी पर किया। इस प्रयोग में मुझे पूरे ९ वर्ष लगे। मोर्स इस काल में भी पूर्णतः शांत रहे और उनके इस धैर्य का ही परिणाम है कि, आज उस गोभी की बाजार में लाखों टन की माँग है!"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहिरा में गरजै बाँस हो

इंदिरेश गौराहा-द्वारा अहीरों के शौर्यगीत– 'बाँस-गीत'– का विवरण

☆

लेख का शीर्षक छत्तीसगढ़ी अहीरों के बाँस-गीत का अंतिम चरण है। सम्पूर्ण पद्य इस प्रकार है–

वन में गरजै बनपती,
डिलवा में गरजै नाँग हो;
कोठा में गरजै कंठी बगरिया,
अहिरा में गरजै बाँस हो।

—जैसे वन में वनराज सिंह दहाड़ता है, जैसे टीले की बाँबी में नाग गरजता है, जैसे गोठे में 'कंठी' भैंस हुंकार भरती है, वैसे ही अहीरों में बाँस।

आत्मश्लाघा-रहित आत्माभिमान ही मानो इन पंक्तियों में साकार हो उठा है। अनेक उपमाओं के मिस अहीर का हृदय पुकार-पुकार कर कह रहा है– अहीरों में जो-कुछ है, वह 'बाँस' में ही है। उसके बिना उसका अस्तित्व ही नहीं।

बाँस-गीत का नामकरण गीत में बजाये जानेवाले 'बाँस' (बाँसुरी के सदृश वाद्य-यंत्र; किंतु आकार में उससे पर्याप्त बड़ा) के आधार पर हुआ है। वैसे अहीर लोग, जिन्हें 'राउत' अथवा 'रावत' भी कहते हैं, बाँसुरी का भी प्रयोग करते हैं और कई-कई तो बड़ी अच्छी बाँसुरी बजाते हैं; लेकिन न-जाने क्यों, बाँस के प्रति ही उनकी रीझ अधिक दिखायी पड़ती है।

भारतीय वाङ्मय की वह परम्परा, जिसमें किसी भी कृति के आदि में परमे-

गौ-गोपाल

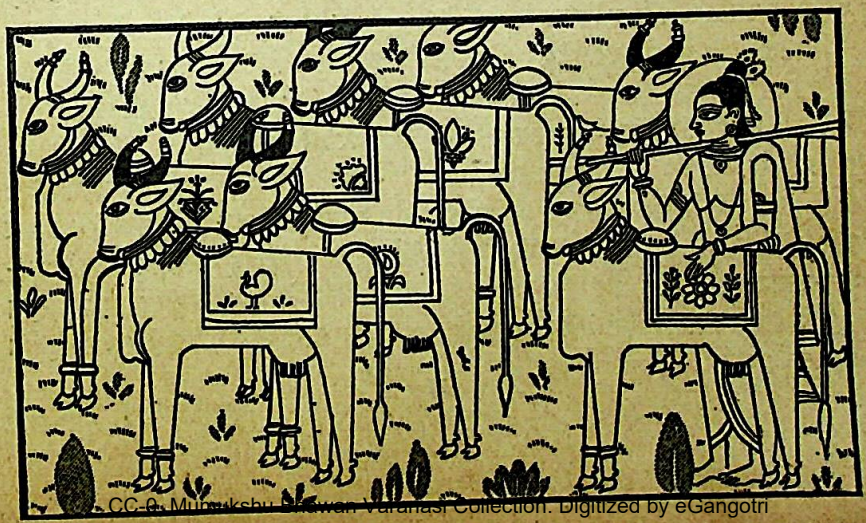

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वर एवं गुरु का स्तवन अपरिहार्य है, बाँस-गीतों में भी अक्षुण्ण है। गीतों की स्वर-लहरियों में डूबने-उतराने के पूर्व ही गायक श्रद्धानत होकर कहता है—

एतन बेर मैं कउने देव ल सँउरौं,
लेहौं कउने देव के नाँव हो।
अलख निरंजन अपन गुरु ल बंदौं,
लेहौं जननी तोर नाँव हो।

—इस समय मैं किसे स्मरण करूँ, किस देवता का नाम लूँ ? अपने गुरु अलखनिरंजन को प्रणाम करके, हे माता (शारदा) ! मैं तुम्हारे नाम का उच्चारण करता हूँ !

छत्तीसगढ़ी अहीर अपने को श्रीकृष्ण का वंशज बतलाते हैं और गो-चारण उनकी जीविका का प्रधान साधन है। लेकिन आश्चर्य है कि, उनके गीतों में श्रीकृष्ण का कहीं उल्लेख तक नहीं। 'आगे के कवि रीझिहैं तौ कविताई, नहिं राधा-गोविंद सुमिरन को बहानो है—' इस रूप में भी नहीं। तो क्या आज तक छत्तीसगढ़ी अहीर जिसे अपना गीत कहते हैं, वह मूलतः उनका नहीं है ? यदि है, तो श्री कृष्ण उनमें कहाँ और किस रूप में हैं ?

राउत छत्तीसगढ़ की एक वीर जाति है। पराधीनता ने जब इतर जनों को पूर्णतः निशस्त्रः करा दिया, तब भी राउत अपनी लाठियों से न्यारे न हो सके। यही कारण है कि, दस राउतों में से आठ अच्छे लठैत होते हैं। तदनुसार ही, उनके गीत भी वीर-भावनाओं से ओत-प्रोत हैं।

जैसे वीरगाथाकालीन हिन्दी-साहित्य शौर्य और प्रणय से परिवेष्टित है, वैसे ही बाँस-गीत भी। वीरासन में बैठ कर तथा मूँछें मरोड़ कर जब अहीर बाँस-गीत गाता है, तब आल्हा-ऊदल का युग प्रत्यक्ष होने लगता है। वही साहस, वही पराक्रम और वही हेंकड़ी। अकेला अहीर सैकड़ों में घुस कर मार करता है। जो लौह-द्वार हस्ति-आघातों की अपेक्षा करते हैं, वे ही अहीर वीर के भुज-दंडों के प्रहार से चकनाचूर हो जाते हैं।

उनके गीतों के कुछ पद तो रस-सिद्ध कवियों की जोड़ के शब्द-चित्र प्रस्तुत करते हैं।

रुमझुम रइया चिरइया भइया,
रुखुवा ले बोलत है ना।
खलभल खइया कोदइया भइया,
नँदिया मैं धोवत है ना।

संध्या और गृहिणी के व्यापारों का कैसा सुमधुर वर्णन है ! कवि कहता है—संध्या में नदी-तट का दृश्य अपूर्व है। एक ओर वृक्षों से पक्षियों का कलरव मुखरित हो रहा है और दूसरी ओर गृहिणी 'कोदई' (कोदों के दाने) धो रही है।

घुरुर घुरुर तोर जँतवा बाजै,
घर घर गिरै पिसान।
धीरे धीरे तुम डोंड़ौ गौंटिया,
दूबर होवै किसान।

—जैसे 'घुर-घुर' शब्द करती चक्की अनाज को पीस कर आटे में परिणत कर देती ह, वैसे ही, हे जमींदार ! तुम शनः-शनैः किसानों पर जुर्माना करते हो। तुम्हारे शोषण से वे दरिद्र होते जा रहे हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीजिये
जरा अपने को परखिये

डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्-द्वारा 'नवनीत' के पाठकों से कुछ प्रश्न

✱

"दूसरों पर नजर डालने से पहले स्वयं को एक नजर देख लो!"—सुकरात की यह उक्ति वास्तविकता के कितनी निकट है और कितनी प्रेरक! स्वयं को भलीभाँति परखे बिना आप जीवन में कुछ नहीं कर सकते! नीचे, मानस-शास्त्रियों के नवीनतम शोधों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर कुछ वर्गीकरण किये गये हैं। ध्यानपूर्वक पढ़िये और आप जिस वर्ग ('क' अथवा 'ख') से सम्बंधित हों, उसे चिह्नित कर दीजिये। इससे आप स्वयं को अधिक निकट से जान सकेंगे और यह आपको सुखी जीवन की ओर अग्रसर करने में सहायक होगा।

१. स्वास्थ्य

(क) आप अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेष्ट रहते हैं। स्वास्थ्य-सम्बंधी नवीनतम शोधों से प्राप्त तथ्यों की जानकारी के लिए आप चिंताशील रहते हैं और अपने खाने-पीने में संयम बरतते हैं।

(ख) स्वास्थ्य आपकी चिंता का विषय नहीं है और खाने-पीने के सम्बंध में आपके संयम का कोई निश्चित नियम नहीं है।

२. पोशाक

(क) आपके शरीर पर कौन-सी पोशाक फबती है, यह आप जानते हैं। और, कपड़े खरीदते समय आप इसका ध्यान भी रखते हैं। आप अपने कपड़ों को सावधानी से रखते हैं और नियमित रूप से उनकी सफाई करते हैं। अपनी औकात के अनुसार आप अच्छी-से-अच्छी पोशाक भी पहनते हैं।

(ख) बिना यह सोचे हुए कि, आपके शरीर पर यह खिलेगा अथवा नहीं, आप क्षणिक आवेश में कोई कपड़ा खरीद लेते हैं। आपके कपड़ों पर बहुधा धब्बे पड़े रहते हैं और ऐसा लगता है, काफी दिनों से उन पर इस्त्री नहीं हुई है।

३. संतुलन

(क) आप ठीक से खड़े होने, उठने-बैठने और चलने की महत्ता समझते हैं। आप इस सम्बंध में बड़े संतुलित हैं और आपको अपने शरीर पर पूरा नियंत्रण है।

(ख) आप बहुधा अपने चलने की धुन में लोगों को धक्का देते हुए निकल जाते हैं। आपके चलते कहाँ क्या क्षति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई, आप इसकी ओर से लापरवाह रहते हैं। कई बार आप कुर्सी पर, पैर-पर-पैर रख कर अथवा मेज के किनारे बड़ी बेतकल्लुफी से बैठ जाते हैं।

४. तौर-तरीके

(क) दूसरों के अच्छे तौर-तरीकों की आप प्रशंसा करते है और उन्हें अपनाने की चेष्टा भी करते हैं।

(ख) आपको कठोर और उद्दंड होना पसंद है अथवा आप उन्हीं से नम्रता का व्यवहार करते हैं, जिनका रुष्ट होना आपके लिए हानिकारक हो सकता है— जैसे आपके 'बौस' (अधिकारी)।

५. वार्तालाप

(क) दूसरों से मिलना-जुलना, और बातें करना आपको बहुत प्रिय है। दुनिया में कहाँ क्या हो रहा है, आप इसकी जानकारी रखते हैं और कहाँ कैसी बातें करनी चाहिए, यह भी जानते हैं। आपके बोलने का लहजा मधुर और शिष्ट है।

(ख) आप बातचीत करने में बहुत शरमाते हैं। आपको भय है, दूसरे आपका मजाक उड़ायेंगे।

६. उद्देश्य

(क) जीवन के प्रति आपका एक निश्चित उद्देश्य है— एक लक्ष्य है।

(ख) आपके जीवन की कोई निश्चित धारा नहीं है— आप बार-बार एक चीज से दूसरी चीज पर दौड़ते रहते हैं।

७. आकांक्षा

(क) आपकी आकांक्षाएँ यथार्थता की सीमा के भीतर ही हैं और आप उन्हें पूरा करने के लिए श्रम भी करते हैं।

(ख) आप चाहते हैं, अनायास ही आपके जीवन में सुख-सुविधाओं की बाढ़-सी आ जाये। आपकी आकांक्षाएँ काल्पनिक उड़ानों पर आधारित हैं।

८. काम के प्रति आपका रुख

(क) आप अपने काम के प्रति बड़े सचेष्ट और ईमानदार रहते हैं और सदा उन्नति के अवसर की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

(ख) आपको अपने काम से अधिक अपने वेतन में दिलचस्पी है। अपने काम के प्रति आप उतनी ही दिलचस्पी दिखाते हैं, जितनी से आप पर कोई आँच न आने पाये।

९. लोगों के प्रति आपका रुख

(क) आप लोगों को समझने की चेष्टा करते हैं। स्वयं से अधिक आप दूसरों में रुचि रखते हैं।

(ख) आपको सिर्फ अपनी ही चिंता है; दूसरों से मिलने में इसलिए डरते हैं कि, वे आपकी आलोचना करेंगे अथवा आप स्वयं को दूसरों की तुलना में तुच्छ मानते हैं।

प्रत्येक चिह्नित (क) के लिए ५ अंक हैं। आपको कम-से-कम ३५ अंक प्राप्त करने चाहिए। २५ अंक भी मिलें, तो संतोष की बात है; किंतु यदि २५ से कम अंक मिलें, तो आपको अपनी कमजोरियों पर ध्यान देना चाहिए; क्योंकि अगर जीवन का सही-सही उपभोग आपने नहीं किया, तो जीवन व्यर्थ है। प्रत्येक चिह्नित (ख) आपकी दुर्बलता का द्योतक है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक किफायतपूर्ण!

PROTEX
All Purpose
TOILET POWDER

सारे परिवार के लिए
एकही टैल्कम् पाउडर

मनमोहक सुगंधियुक्त, प्रोटेक्स बढ़िया क्वालिटी का सर्व-उपयोगी पाउडर है, जो बड़े डिब्बे में...कमसे कम कीमत में मिलता है। सुहानी मोहक सुगंधवाला प्रोटेक्स हर प्रयोजन के लिए उपयोगी है। इसी कारण भारत में हजारों परिवार प्रोटेक्स को ज्यादा पसंद करते हैं...

अब सुन्दर पफ भी साथ में मिलता है!

प्रोटेक्स
सर्व-उपयोगी
टायलेट पाउडर

कोलगेट का एक और उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी किफ़ायतपूर्ण ! एक ही बार ब्रश करने से
कोलगेट डेन्टल क्रीम
८५ % तक
दंत-क्षय और दुर्गंध-प्रेरक जीवाणु ख़त्म कर देता है !

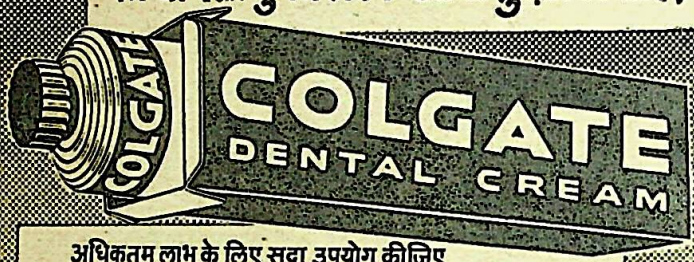

अधिकतम लाभ के लिए सदा उपयोग कीजिए
कोलगेट टुथ ब्रश

DCG/25-82

स्त्रियों के लिये पुरानी और प्रसिध्ध औषधि.

"रजीस्टर्ड"
जीमेस्त्री

शक्ति, स्फूर्ति
एवं चैतन्य
के लिये
उपयोगी.

तीन प्रकार के पेकींग में हर जगह मिलती है.

निर्माता :-
जसमाईन एजन्सी
नडीआद (गुजरात)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूँद-बूँद का रहस्य

★

आँसू क्यों आते हैं

आँसू का मुख्य काम हमारी आँखों को नहलाना और साफ रखना है। आँखों की ऊपरी पलकों में एक ऐसी ग्रंथि है, जिसमें यह तरल पदार्थ सदा निर्मित होता रहता है। जितनी बार हमारी पलकें गिरती हैं, वे इस तरल पदार्थ से आँख को साफ कर देती हैं।

पलकों-द्वारा आँख को साफ करने की यह क्रिया, एक व्यक्ति के जीवन में लगभग २५ करोड़ बार होती है। जब सफाई का कार्य समाप्त हो जाता है, तब तरल पदार्थ आँखों के नीचे स्थित दो ग्रंथियों में चला जाता है और वहाँ से एक पतली नली के द्वारा नाक में जाकर सूख जाता है।

लेकिन कुछ अवसर ऐसे भी आते हैं, जब ग्रंथियाँ अपनी उत्पादन-गति बढ़ा देती हैं। इस दशा में भी नीचे की ग्रंथियाँ उन्हें सुखाने की भरपूर चेष्टा करती हैं और इसके लिए नाक का सहारा लेती हैं; पर जब अश्रु की मात्रा बहुत बढ़ जाती है, तो आँसू गालों और चेहरे पर बहने लगते हैं और ज्यों ही अश्रु-उत्पादन करनेवाली ग्रंथियाँ साधारण स्थिति को पहुँच जाती हैं, आँसू का बहना बंद हो जाता है।

★

मच्छर के दाँत कितने

मच्छर काटता तो है; पर उसके दाँत होते ही नहीं। उसके अग्रभाग में चोंच-सरीखी एक चीज होती है। उसकी सहायता से ही वह हमें काटता है। चोंच साधारणतः मादा मच्छरों के ही होती है। नर मच्छर तो फूलों, फलों और पौधों के रस पर निर्वाह करते हैं। मादा मच्छरें खून की बड़ी प्यासी होती हैं। वे चिड़ियों, मछलियों, मेढ़कों और तितलियों पर भी आक्रमण करती हैं। अवसर पाते ही, वे शरीर पर बैठती हैं और उस स्थान का परीक्षण करती हैं। यदि वह स्थान नर्म रहा; तो वे अपनी चोंच त्वचा के निकट की रक्त-प्रवाहिका में घुसा कर रक्त चूसने लगती हैं।

दर-असल यह साधारण-सी चोंच बहुत जटिल यंत्र है। यह मच्छर के अधर से निकलती है। इसके अंदर ६ बड़े सूक्ष्म यंत्र होते हैं। चोंच के अग्रभाग में दो चुभनेवाले यंत्र तथा दो आरी-सरीखे यंत्र होते हैं। ये यंत्र त्वचा को काटने का काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं। उसके बाद 'इंजेक्शन' लगाने-वाली पिचकारी-सरीखा एक यंत्र उस कटे भाग में एक तरल पदार्थ डालता है, ताकि खून जमने न पाये और तब, अंत में, चोंच का वह अंग आता है, जो खून चूसता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि, त्वचा के कटते समय आदमी पीड़ा का अनुभव नहीं करता। पीड़ा तो तब होती है, जब उसमें तरल पदार्थ डाला जाता है।

*

सागर-तल कितना गर्म

गर्मी के दिनों में गहरा पानी ढंडा रहता है अवश्य; पर इसका अर्थ यह नहीं है कि, सर्वत्र पानी की गहराई जितनी बढ़ती जाती है, ठंडक भी उतनी ही बढ़ती जाती है। यदि ऐसा होता, तो समुद्र की पूरी तलहटी 'ग्लेशियर' बन जाती!

समुद्र उक्त सामान्यतः मान्य तथ्य का खंडन करता है। उसका स्वभाव ऐसा नहीं है कि, कहीं अति गर्म रहे और कहीं अति ठंडा। जब सूर्य के प्रकाश से समुद्र की ऊपरी सतह का पानी गर्म हो जाता है, तब वह नीचे चला जाता है और नीचे का ठंडा पानी ऊपरी सतह पर आ जाता है। इस पद्धति तथा आबहवा, समुद्री धाराओं, ज्वार-भाटा, आदि के कारण समुद्र के तल का तापमान सर्वत्र ४ अंश सेंटीग्रेड अथवा ३९.२ अंश फारेन-हाइट बना रहता है।

*

चाँद घटता-बढ़ता क्यों

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर, अपनी वार्षिक धुरी पर, औसतन ९ करोड़ ३० लाख मील की दूरी पर चक्कर काटती है और चंद्रमा २७ दिन ७ घंटे और ४३ मिनट में पृथ्वी के चारों ओर, औसतन २,३९,००० मील की दूरी पर, एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर २४ घंटे में एक बार घूम जाती है, जिसके फलस्वरूप दिन और रात का जन्म होता है। चंद्रमा भी अपनी धुरी पर घूमता है; पर जितनी देर में वह पृथ्वी की एक परिक्रमा करता है, उतना ही समय उसे अपनी धुरी पर एक बार घूमने में भी लग जाता है। फलतः वहाँ लगभग २ सप्ताहों तक दिन रहता है और २ सप्ताहों तक रात।

जब चंद्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच में होता है, तो उसके उस भाग में, जो सूर्य के सामने होता है, दिन रहता है और उस भाग में, जो पृथ्वी के सामने होता है, रात रहती है। फिर धीरे-धीरे चंद्रमा के दिन का भाग हम लोगों के सम्मुख आने लगता है। इस तरह हमें पहले अति पतला चंद्रमा दिखलायी पड़ता है और उसके दिन का भाग ज्यों-ज्यों पृथ्वी के सामने आता है, त्यों-त्यों हमें बड़ा चंद्रमा दिखलायी देता है। इस तरह, अंत में, एक दिन पूरा चंद्रमा भी हमें दिखलायी पड़ जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राज़ील के तुपारियों से मिलिये

भारत के आदिवासी गोंडों की भाँति, ब्राजील के आदिवासी तुपारी भी अपने रस्मोरिवाज और रहन-सहन में निराले होते हैं। शिकार करना, तरह-तरह के आमिष-भोजन बना कर सहभोज रचना और सारी रातें नाच-गान में बिता देना उनके जीवन-क्रम की कुछ विशेषताएँ हैं। यहाँ हम उन्हीं तुपारियों के कुछ रोचक प्रसंग प्रकाशित कर रहे हैं। ऊपर तुपारियों के मकान का चित्र है।

ब्राजील में, अमेजन के वनों में, 'तुपारी' आदिवासियों के बीच जब हम लोग पहुँचे, तो मेरा मन बाँसों उछल रहा था! ब्राजील के जगप्रसिद्ध जंगल और नये-नये जीव-जंतु– इनसे परिचित होने का लोभ एक शिकारी के लिए उत्तेजना की ही तो सृष्टि कर सकता था! ब्राजील के उस वन्य प्रदेश के जन-जीवन को चूँकि मैं अधिकाधिक निकट से देखना चाहता था, मैंने मुखिया से 'विशाल कुटी' में ही ठहरने देने का अनुरोध किया। यों अधिकांश विदेशी शिकारी अपने खेमे या अलग कुटी में ही सोना पसंद करते हैं; पर मेरा विश्वास है कि, खतरनाक आदिवासियों पर भी पूरा-पूरा विश्वास किया जा सकता है– उनसे दूर-दूर रहना न-जाने क्यों मुझे कभी नहीं भाया।

ब्रांको नदी के प्रदेश में बसे तुपारी केवल एक ही 'विशाल कुटी' में रहते हैं। यह विशाल गोलघर अंदर से तो अनेक भागों में विभक्त रहता है और हर भाग में एक परिवार रहता है; पर यह विभाजन दीवारों की सहायता से नहीं किया जाता, दो भागों के बीच में बस एक खम्भा ही होता है। इस तरह उस कुटी के केवल एक स्थान पर खड़े होकर समस्त आदिवासियों का जीवन निरखा जा सकता है। यह व्यवस्था केवल दिन में ही नहीं; बल्कि रात में भी रहती है और इससे विवाहित लोगों को भी कोई असुविधा नहीं होती, यह एक आश्चर्य की ही बात है।

वे लोग शिकार करके खाने को प्राथमिकता देते हैं। बंदरों, जंगली सूअरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जंगली वत्तखों के अलावा और भी अनेक प्रकार की चिड़ियों और साँपों का गोश्त वे खाते हैं। वैसे तो जो-कुछ उन्होंने खाया, वही हमने भी खाया; परंतु बंदर के मामले में हमने परहेज रखा— वे मनुष्य के पूर्वज जो ठहरे! तुपारियों का प्रिय पेय है 'चीचा', जो जुआर को निचोड़ कर तैयार किया जाता है।

वहाँ के निवासी तड़के ही बिस्तर त्याग देते हैं और जब तक सूर्य की सतरंगी किरणें फूल-पत्तों पर उतरें-उतरें, तब तक सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हो चुके होते हैं। उनकी कर्मठता देखते ही बनती है। जो लोग शिकार के लिए जाते हैं, वे तो पौ फटने से पूर्व ही निकल जाते हैं और बाकी लोग नाश्ते के उपरांत कार्यशील होते हैं; पर यह सब सूर्योदय के पूर्व ही हो जाता है। उनकी स्त्रियाँ भी बड़ी मेहनती होती हैं और घरेलू कार्यों के अतिरिक्त खेतों में भी जाकर श्रम करती हैं। आदिवासी होते हुए भी खेती से उनका विशेष अनुराग है; पर सबसे अधिक महत्व वे श्रम को देते हैं, जो कि उनके कथनानुसार सुखी और सम्पन्न मानव-जीवन का मूलमंत्र है।

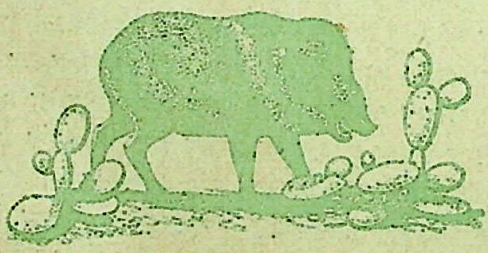

ब्राजील के जंगलों का भयंकर शासक

एक दिन तड़के मैं वहाँ के मुखिया अबाइतो के साथ, जो शिकार के लिए जा रहा था, निकला। उसके हाथों में धनुष और बाण थे और मेरे कंधे पर राइफल। हम करीब आधा घंटा ही चले होंगे कि, कुछ अजीब-सी आवाजें सुनायी पड़ीं। अबाइतो ने मेरी जिज्ञासा शांत की— "काले बंदर हैं।" और फिर अपने होंठों को एक विशेष प्रकार से मोड़ कर उसने बिल्कुल बंदरों-जैसी आवाज की। दोनों आवाजों में समानता इतनी थी कि, बंदरों ने भी उसका उत्तर दिया। फिर तो यह क्रम तब तक चलता रहा, जब तक हम उस वृक्ष के नीचे न पहुँच गये, जहाँ से शरारत करते हुए बंदरों को मजे में देखा जा सकता था। हम छिप कर चुपचाप उन्हें देखने लगे।

अकस्मात् अबाइतो ने मेरी राइफल की ओर संकेत किया। यह पहला अवसर था, जब मुझे किसी बंदर को निशाना बनाने के उद्देश्य से राइफल उठानी पड़ी और वह भी तब, जब कि वे बालकों की भाँति उछल-कूद रहे थे। "क्या उस बड़े बंदर को मार दूँ?" —मेरे मन ने प्रश्न किया— "और छोटों को छोड़ दूँ।...नहीं, यह तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्दयता होगी। तब किसी छोटे बंदर को... लेकिन उसकी माँ के सामने ही... यह बात भी उचित न होगी।"

मेरे हाथ काँपने लगे; लेकिन तभी अबाइतो बोल उठा—"अरे-रे, गोली मत चलाना।" और, उसने राइफल छीन कर एक ओर पटक दी। तत्पश्चात् उसने अपना धनुष ऊपर उठाया, डोरी खींची और सर्र से एक बाण जाकर एक बंदर को लग गया। तभी कष्ट-क्रोध-पीड़ित उस बंदर ने भी अद्भुत सूझ का परिचय दिया। उसने शीघ्र ही, चीखते-चिल्लाते हुए, बाण को अपनी छाती से बाहर खींच लिया और जब खून अधिक बहने लगा, तो एक हाथ से अपना ही खून पीना आरम्भ कर दिया। शायद इस प्रकार वह अपनी शक्ति को नष्ट न होने देने की चेष्टा कर रहा था। फिर हमारे देखते-ही-देखते वह वृक्ष के बहुत ऊपर चढ़ गया। वहाँ जाकर उसने अपनी पूँछ को जकड़ लिया और फिर धीरे-धीरे निढाल होने लगा। उस समय मुझे न-जाने कैसा अनुभव हो रहा था। यदि मैं उसकी मृत्यु का कारण हुआ होता, तो सचमुच ही मुझे स्वयं से घृणा हो गयी होती।

शिकार की खोज में एक तुपारी

लेकिन, अबाइतो क्षण-भर के लिए भी नहीं हिचकिचाया और उसने झट से एक वृक्ष से लता तोड़ ली और उसे अपने पैरों में विशेष प्रकार से बाँध कर तेजी से वृक्ष पर चढ़ गया।

कुछ ही देर बाद, अबाइतो की पीठ पर उसका शिकार लदा था और हम आगे बढ़ रहे थे। उस समय भी मेरी आँखों के सामने उस बंदर की करुण मूर्ति नाच रही थी! अचानक ही अबाइतो ठिठका और जमीन का निरीक्षण करने लगा। मैंने भी ध्यानपूर्वक देखा। किसी 'जैगवार' (ब्राजील का शेर) के पदचिह्न थे।

"जुआर के खेतों की ओर गया मालूम होता है।" —अबाइतो बुदबुदाया —"जरा देखा जाये!" और, हम उन चिह्नों के सहारे आगे बढ़ने लगे। वे निशान ताजे थे— बस, कुछ ही मिनट पहले के। मैं कुछ परेशान-सा हो उठा— "कुछ ही मिनट पहले वह जुआर के खेतों की ओर गया है। वहाँ उसे कोई मिल भी सकता है। अभी दिन है और स्त्रियाँ अपने खेतों में काम कर रही होंगी।"

इस विचार-मात्र से ही हमारी चाल में तीव्रता आ गयी और थोड़ी देर बाद, हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथार्थतः दौड़ रहे थे। जब हम खेतों के पास पहुँचे, तो औरतें काम में लगी हुई थीं। "शुक्र है, कुछ हुआ नहीं!"—मैंने कहा; पर तभी अबाइतो ने मुझे आगे बढ़ने से रोक दिया और एक गिरे हुए तने की ओर संकेत किया। उस पर वह खूँख्वार पशु पड़ा था; पर वह काफी सतर्क भी लग रहा था। उसके काले धब्बों-वाले बाल खड़े थे—अब वह कुदान भरने ही वाला था। तभी अबाइतो ने अपना सबसे बड़ा बाण धनुष पर चढ़ा लिया। मैंने भी अपनी राइफल ऊपर की ओर की; लेकिन अभी मैं निशाना भी नहीं साध पाया था कि, मेरे साथी के बाण ने 'जैगवार' को वेध दिया। बाण लगते ही वह बड़ी तेजी से उछला; पर उसकी उछाल पूरी भी नहीं हुई थी कि, एक दूसरा बाण उसके मर्मस्थल पर जा लगा और वह एक विचित्र गुर्राहट की ध्वनि करता हुआ पृथ्वी पर आ रहा। फिर उछलने की उसने कोशिश भी नहीं की। इतना सधा हुआ निशाना था, अबाइतो का। इसी बीच एक मानवीय कराह की ध्वनि उस स्थान से आयी, जहाँ 'जैगवार' बैठा था। झपट कर हम वहाँ पहुँचे—एक स्त्री बुरी तरह घायल अवस्था में पड़ी थी और चारों ओर खून-ही-खून छितराया था। स्त्री के सिर, मुँह, बाँहों और जाँघों पर गहरे घाव थे और वह पीड़ा से कराह रही थी। यदि हमें कुछ सेकंडों की भी देर हो जाती या अबाइतो का निशाना ही चूक जाता, तो उसकी मृत्यु निश्चित थी। शेर का शिकार केवल बाण से इतनी आसानी से किया जा सकता है, इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी!

वहाँ लगभग प्रतिदिन ही साँपों का सामना होता था, इसलिए हम सतर्क हो गये थे। हममें से प्रत्येक व्यक्ति जूते पहनते समय उन्हें झाड़ लेते थे; क्योंकि उनके अंदर बिच्छू या साँप के घुस जाने की आशंका रहती थी। मार्ग में भी हमें उनका पूरा ध्यान रखना पड़ता था।

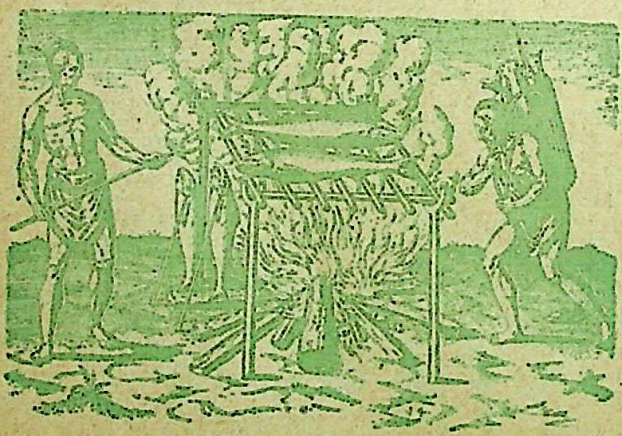

तुपारी कबीले के सहभोज के लिए चतुर रसोइये मछलियाँ पका रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन, जब मैं तुपारियों की सामाजिक कुटी में बैठा था, तो एक लड़का दौड़ता हुआ वहाँ आया और बोला—"वन की ओर शीघ्रता से जाइये। वहाँ मुखिया और एक विशालकाय साँप में भीषण संघर्ष हो रहा है।" मैं तुरत ही उस लड़के के साथ रवाना हो गया। पहुँच कर देखा, सचमुच ही अबाइतो हाथों में लकड़ी थामे एक 'बोआ' साँप से, जो काफी लम्बा था, उलझा हुआ था।

मेरी पहली दृष्टि पड़ी, तो साँप उसकी ओर झपट रहा था। उसने भी बड़ी फुर्ती से साँप के मुँह को लकड़ी के एक सिरे से एक ओर ढकेल दिया और तुरत ही दूसरे सिरे से उस पर प्रहार किया। परंतु लकड़ी इस प्रकार वापस उछली, मानो रबड़ से टकरायी हो। तभी साँप ने शीघ्रतापूर्वक कुंडली मारना आरम्भ कर दिया और अबाइतो की एक टाँग को जकड़ने में सफल भी हो गया। उसका फन बाहर निकला हुआ था और वह बुरी तरह फुँफकार रहा था। स्पष्ट ही, वह अपने शत्रु को काटने की चेष्टा में लगा था।

मुझे लगा, जैसे अबाइतो के जीवन और मृत्यु में कुछ ही क्षणों का अंतर रह गया है। अतः मैंने अपना रिवाल्वर बाहर निकाल लिया; पर जैसे ही घोड़ा दबाना चाहा, अबाइतो चिल्ला उठा—"बीच में मत पड़ो! मुझे ही निबटने दो इससे!"

उसके शब्दों से मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैं तो सोच रहा था कि, मेरी सहायता पाकर वह खुश होगा; लेकिन हुआ कुछ दूसरा ही। पहले तो मेरी समझ में बात न आयी; पर कुछ ही क्षणों के उपरांत सब-कुछ स्पष्ट हो उठा। यह शिकारी के सम्मान का प्रश्न था; अतः अबाइतो अपने शत्रु से अकेले ही निबटने को कृतसंकल्प था!

एक ओर, जहाँ अबाइतो के चेहरे पर शत्रु को परास्त करने का संकल्प झलक रहा था, वहीं दूसरी ओर, साँप की गतिविधियाँ उसके भयानक क्रोध को प्रकट कर रही थीं। मेरे देखते-ही-देखते साँप बड़ी तेजी से उछला। उसके खुले मुँह का रुख अबाइतो के मुँह की ओर था। वह तो हिल भी नहीं सकता था; क्योंकि उसका पैर साँप की पूँछ में जकड़ा हुआ था। उसके उछलने में बस, कुछ ही सेकंड लगे; किंतु अबाइतो ने उतने समय का भी पूरा लाभ उठाया और लकड़ी उसके जबड़ों में ठूँस दी।

साँप ने तिलमिला कर सिर पीछे कर लिया; लेकिन फिर तुरत ही उसने आगे बढ़ कर लकड़ी पर फन मारा। और, इस बार अवसर मिलते ही अबाइतो ने उसके मुँह को दोनों हाथों से दबोच लिया। लकड़ी अलग जा गिरी। साँप छूटने का पूरा प्रयत्न करने लगा और उसे अबाइतो की गर्दन में अपना बीच का भाग डालने का अवसर भी मिल गया। उसने पैर खींच कर, अबाइतो को धरती पर लुढ़का दिया। आदमी और जानवर अब व्याकुल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से लुढ़क रहे थे। कुछ देर तक अजीब कशमकश की स्थिति रही; पर अंत में, अबाइतो ने चतुराई के साथ अपना सिर मुक्त कर लिया और जैसे ही साँप ने अपनी स्थिति में आना चाहा, उसने हाथों को थोड़ा नीचे की ओर सरका कर, ठीक सिर के नीचे, दोनों हाथों से कस कर उसकी गर्दन दबोच ली।

अब साँप बड़ी तेजी से इधर-उधर छटपटा रहा था और अपनी समस्त शक्ति से अबाइतो का दूसरा पैर भी जकड़ने के लिए प्रयत्नशील था; पर अबाइतो टाँगों को बचाता रहा और शीघ्र ही उसने बड़ी चतुराई से साँप की पूँछ को पैरों से दबा लिया।

साँप के मुँह से खरखराहट का विचित्र स्वर निकलने लगा। उसके फूत्कारों में भी निराशा का पुट आ गया था। अबाइतो भी थक-सा गया था– उसका शरीर पसीने से लथपथ था; फिर भी वह पीठ के बल पड़ा हुआ साँप के मुँह को पूरी शक्ति के साथ दबोचे हुआ था।

कुछ मिनटों तक वह यों ही शांत पड़ा रहा और तब अचानक उछल कर खड़ा हो गया– साँप का शरीर धरती पर गिर गया। पर अबाइतो ने साँप की ओर देखा तक नहीं। आगे बढ़ता हुआ मेरे साथ के लड़के से बोला–"इसकी खाल खींच लो। खाने में स्वादिष्ट होगा!"

वास्तव में, वह बड़ा स्वादिष्ट निकला; परंतु उस संघर्ष को, जो कि अलौकिक था, मैं कभी नहीं भूल सकूँगा।

प्राचीन चीन का एक देहाती युवक जब शहर जाने लगा, तो उसकी पत्नी ने उससे एक कंघी लेते आने का अनुरोध किया। सीधे-सादे ग्रामीण ने कभी कंघी देखी नहीं थी, सो उसने उसकी रूप-रेखा के बारे में पत्नी से पूछा। पत्नी ने जवाब दिया–"बाल सँवारने के काम आती है और वह–"आकाश में उगे षष्ठी के चाँद की ओर इशारा कर बतलाया–"उस तरह की होती है।"

ग्रामीण को शहर पहुँचने में आठ-नौ दिन लग गये। वहाँ पहुँच कर उसे कंघी का स्मरण आया और उसने आकाश में उगे पूर्णिमा के चाँद को दिखा कर दूकानदार से 'बाल सँवारने की चीज' माँगी। दूकानदार ने उसे आइना दे दिया। घर लौटने पर उसकी पत्नी ने आइने में अपनी आकृति देखी, तो रोने-चिल्लाने लगी और अपनी सास को पुकार कर बोली–"मैंने इन्हें कंघी लाने को कहा था; पर ये मेरे लिए सौत उठा लाये।" युवक की माँ चकरायी। उसने पतोहू के हाथ से आइना ले लिया और उसे ध्यानपूर्वक देखने के बाद, गम्भीर स्वर में कहा–"बेटे, दूसरी बहू ही लानी थी, तो बुढ़िया को क्यों पसंद किया? कोई युवती नहीं मिली तुम्हें?"

—'चाइना रिकंस्ट्रक्ट्स' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़वे-मीठे जीवन-घूँट

★

उपहार

अपने विवाह के उपलक्ष में मुझे जो उपहार मिले थे, उनमें से एक को मैं आज तक नहीं भुला पायी हूँ और न ही भविष्य में भुला पाऊँगी। यह उपहार उस आया ने दिया था, जिसने बचपन में मुझे गोद में सस्नेह खिलाया था।

विवाह के उपरांत, जब मैं ससुराल से लौट कर मायके आयी, तो एक दिन वह आया मेरे पास आकर बोली—"ओह, मुझे तो पता ही नहीं था कि, मेरी 'बेबी' दूल्हन बन गयी। आज मालूम हुआ, तो सोचा, मैं भी अपनी ओर से कुछ उपहार दे आऊँ।..."अपने बचपन की उस 'यथार्थ माता' से मिल कर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, कह नहीं सकती। उसे मैंने अपने पास ही एक कुर्सी पर बैठाया और बातचीत करने लगी।

पर मैं इधर-उधर की बातचीत क्या करती; वह तो घूम-फिर कर रसोई घर और गृहस्थी के पचड़े उठा देती थी। फिर उसने कहा—"यदि पति अपने से अधिक पत्नी का और पत्नी अपने से अधिक पति का खयाल रखे, तो सच मानो, कभी किसी को किसी से कोई शिकायत न रहे। उनका सुखी जीवन देख कर एक बार तो भगवान् भी ईर्ष्या करें।"

इसी तरह कुछ देर बातचीत करने के बाद वह चलने लगी, तो मैंने बालसुलभ चंचलता दिखाते हुए पूछा—"और, मेरा उपहार, बाई?" वह रुक गयी, उसकी आँखें भर आयीं, बोली—"गरीब बाई तुम्हें और क्या दे सकती है, बेबी?" सच ही तो, वह मुझे और क्या देती? कोई भी माँ अपनी बेटी को और क्या दे सकती है!

—संध्यारानी, बम्बई

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनाफा

उन दिनों लंदन की एक 'क्रेडिट' (कर्ज देनेवाली) कम्पनी का मैं व्यवस्थापक था। एक दिन एक युवा दम्पति मेरे पास आये। परिवार में एक बच्चे की दुस्साध्य बीमारी के कारण उनके पास जमा सब पैसे खर्च हो गये थे और अब मोदी का लगभग २०० रुपये का बिल चुकाने के लिए उन्हें कर्ज की आवश्यकता थी। आर्थिक दुरवस्था के बावजूद वे गरीब मोदी का बकाया नहीं रखना चाहते थे।

मैं उन्हें कर्ज देने को तैयार हो गया और पूछा—"क्या सीधे आपके मोदी को ही रुपये भिजवा दूँ ?" उन्होंने सहमति प्रकट की। अतः दूसरे दिन मैंने उनके मोदी को फोन किया और सही रकम के बारे में पूछा, जिससे उसके पास उतनी ही रकम का चेक भेज दूँ।

मोदी ने पूछा—"तो वे लोग मेरा बकाया चुकाने के लिए आपसे कर्ज ले रहे हैं ?"

उत्तर में, मैंने सब-कुछ उसे साफ-साफ बतला दिया। बड़े धैर्य से वह मेरी बातें सुनता रहा, फिर बोल उठा—"वे लोग आज पूरे १० वर्षों से मेरे ग्राहक हैं और मेरा कभी उन पर बकाया नहीं रहा। उन्होंने कभी किसी से कर्ज लिया हो, ऐसा भी नहीं सुना— वे बहुत सम्भ्रांत हैं। आज वे मेरे लिए कर्ज लें, ऐसा मैं कैसे स्वीकार कर सकूँगा ! पिछले दस वर्षों में मैंने उनसे बहुत-कुछ मुनाफा कमाया है; पर मेरा सबसे बड़ा मुनाफा तो यही है कि, उन-जैसे सज्जन मेरे ग्राहक हैं।... मैं अभी बकाया-वसूली की रसीद भेज रहा हूँ। उन्हें धन्यवाद-सहित दे दीजियेगा !"

शाम को वे आये, तो मैंने रसीद उन्हें दे दी और मोदी की ओर से 'धन्यवाद' भी कह दिया। पर वे इससे प्रसन्न नहीं हुए; सिर झुका कर बोले—"बुरा हुआ ! भले आदमी को समझाना ही पड़ेगा !" और, वे अभिवादन कर चले गये।

—बलवंत सिंह, नयी दिल्ली

★

मुआवजा

उस दिन, भरसक प्रयत्न के बावजूद, धर्मतल्ला-स्ट्रीट पर खड़ी एक कार से मेरी कार की टक्कर हो ही गयी।

मैं अपनी कार रोक कर नीचे उतरा और दूसरी कार का निरीक्षण करने लगा कि, उसे कितनी क्षति पहुँची। क्षति कुछ अधिक नहीं थी, केवल पिछले चक्के का एक 'मडगार्ड' थोड़ा पिचक गया था— गाड़ी पुरानी भी थी। फिर भी, मैं उस कार के मालिक की खोज करने लगा; पर कोई दिखायी न पड़ा। अंत में, मैंने अपना पता लिख कर तथा मुआवजे के लिए कार्यालय में आने का निमंत्रण देकर एक पत्र उस कार में डाल दिया।

दूसरे ही दिन, मेरे कार्यालय में एक वृद्ध सज्जन आये। उन्होंने वह पत्र मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने रख दिया। मैंने उन्हें सादर बैठाया; फिर उस दुर्घटना का विवरण देने के बाद, जेब से 'मनीबेग' निकाला। तभी वे बोल उठे—"पागल हुए हो? यह क्या करते हो? मैं मुआवजा लेने थोड़े ही आया हूँ। मैंने तो यह देखना चाहा था कि, आज भी इतना ईमानदार व्यक्ति कौन है, जो अपनी गलती स्वीकार करने से पीछे नहीं हटता। अन्यथा मत समझना. . मेरी ओर से यह एक छोटी-सी भेंट है! भगवान् तुम्हें इसी तरह सत्य-पथ पर चलने की शक्ति दे!" और, उन्होंने कागज में लिपटी एक बड़ी चौकोर वस्तु मेरी ओर बढ़ा दी। खोल कर देखा, तो बड़े ही कीमती सुनहले फ्रेम में बँधी, बापू की एक तसवीर थी! —अविनाश चटर्जी, कलकत्ता

वरदान

कानपुर के उस स्कूल में अध्यापन-कार्य आरम्भ किये अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि, मैं बुरी तरह बीमार पड़ गया। प्रायः तीन महीने बीत गये; पर स्वास्थ्य में कोई विशेष सुधार न हुआ। ऐसी ही अवस्था में, एक दिन, मुझे एक बड़ा भारी लिफाफा मिला। स्कूल के दो सौ छात्रों ने मेरे स्वास्थ्य-लाभ के लिए शुभकामनाएँ भेजी थीं।

मेरा भाई उन्हें पढ़ कर सुनाता रहा और उस रुग्णावस्था में भी मैं अपने मन में एक अजीब-सी स्फूर्ति अनुभव करता हुआ सुनता रहा। बच्चों ने तरह-तरह से अपने स्नेहसिक्त उद्गार व्यक्त किये थे। वस्तुतः डाक्टरों की दवाओं और इंजेक्शनों ने जो परिणाम दिखाने में असफलता पायी थी, वह ये पत्र सहज ही दिखा रहे थे। मेरी आँखों के सामने उन बच्चों के मासूम चेहरे निरंतर छविमान हो रहे थे और मैं उनमें खो-सा रहा था। तभी छोटे भाई ने एक नया पत्र सुनाना आरम्भ किया—"मान्यवर मास्टर साहब! आपकी इस बीमारी से मैं कितना दुःखी हूँ, यह मैं कैसे बताऊँ! आपके स्वास्थ्य-लाभ के लिए भला मैं कर भी क्या सकता हूँ—सिवाय इसके कि, भगवान से प्रार्थना करूँ! फिर भी, एक वचन मैं आपको देता हूँ कि, अब से अपना आचरण मैं आपके इच्छानुसार बनाऊँगा और आपको मुझसे कोई शिकायत नहीं रहेगी! मुझे पूरा विश्वास है कि, ईश्वर शीघ्र ही, मेरे बदले हुए रूप को देखने के लिए, आपको भला-चंगा कर देगा।—विमल।"

सुन कर मुझमें अजीब उत्साह, शक्ति और जीवन का प्रादुर्भाव हुआ—व्याधि से लड़ने की मेरी शक्ति बढ़ गयी और एक दिन वस्तुतः जब मैं क्लास में पहुँचा, तो विमल एकदम नये रूप में मेरे सामने आया, मानो उसने नया जीवन धारण किया हो। मेरी वह व्याधि मेरे लिए कितना बड़ा वरदान लेकर आयी थी—स्मरण कर आज भी हृदय आनंद से भर उठता है!

—कमलेश, इंदौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोल दो

उर्दू के सुविख्यात कहानीकार मंटो-लिखित एक कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

आग की लपटें फैल रही थीं। बेहद गर्मी थी। चारों तरफ लूट-खसोट मची हुई थी। सबको अपनी ही पड़ी थी। पड़ोसी जाये चूल्हे में!

उधर एक रंगीला हारमोनियम लिए खुश-खुश गाता हुआ जा रहा था—"जब तुम ही गये परदेश....."

उधर एक छोटा लड़का झोली में पापड़ों का अम्बार उठाये भाग रहा था—घबराहट में ठोकर लगी, तो पापड़ों की एक गड्डी नीचे गिर पड़ी। लड़का उसे उठाने के लिए झुका, तो एक आदमी ने, जो सिर पर सिलाई की मशीन उठाये जा रहा था, कहा—"रहने दे, बेटा, रहने दें। अपने-आप भुन जायेंगे।"

ठीक मेरी आँखों के सामने, उधर बाजार में, एक भरी हुई बोरी गिरी। एक आदमी आगे बढ़ा और अपनी तेज छुरी से उसका पेट चाक कर दिया। मगर बोरी पेट जो नहीं थी— आँतों की जगह चीनी, सफेद-सफेद दानोंवाली चीनी, उमड़ कर बाहर निकल आयी। लोग इकट्ठा हो गये और अपनी झोलियाँ भरने लगे। एक आदमी बगैर कुरते के था। उसने जल्दी में अपना तहमत खोला और मुट्ठियाँ भर-भर उसमें डालने लगा....।

"हट जाओ! हट जाओ!" एक ताँगा, ताजा-ताजा रोगन की हुई आल्मारियों से लदा हुआ, पास से ही गुजर गया...।

उस ऊँचे मकान की खिड़की में से मलमल का एक थान फड़फड़ाता हुआ बाहर गिरा— शोले की जीभ ने हौले से उसे चाटा...सड़क पर पहुँचते-पहुँचते राख हो गया!

"पों-पों-पों-पों-पों!"— मोटर के हार्न की आवाज के साथ दो औरतों की चीखें भी थीं.....।

लोहे का एक 'सेफ' दस-पंद्रह आदमियों ने खींच कर बाहर निकाला और कुल्हाड़ियों की मदद से वे उसे तोड़ने लगे।

'काऊ ऐंड गेट' दूध के कई टीन दोनों हाथों पर उठाये, अपनी ठोड़ी से उनको सहारा दिये, एक आदमी दूकान से बाहर निकला और धीरे-धीरे बाजार में चलने लगा.....।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ऊँची आवाज आयी– "आओ, लेमनेड पियो! गर्मी का मौसम है!" गले में मोटर का 'टायर' डाले हुए एक आदमी ने दो बोतलें लीं और बगैर शुक्रिया अदा किये ही आगे बढ़ गया।

ऐसे में एक आवाज यह भी आयी– "अरे, कोई 'फायर ब्रिगेड' को फोन करो– देखते क्या हो, सब-कुछ राख हो जायेगा!" मगर अक्लमंदों की आवाज ऐसे वक्त होती ही कितनी बुलंद है! कौन सुनता?

एक तरफ आग अपनी जीभें फैला रही थी और दूसरी तरफ लूट-खसोट का बाजार गर्म था। काफी देर के बाद अचानक 'तड़-तड़' की आवाजें आने लगीं–गोलियाँ चलने लगी थीं।

पुलिस को बाजार खाली नजर आया– मगर काफी दूर धुएँ से भरे उस मोड़ के नजदीक एक आदमी का साया दिखायी दिया। सिपाही सीटियाँ बजाते हुए उसकी ओर दौड़े– साया तेजी से धुएँ में गायब हो गया। मगर सिपाहियों ने भी उसका पीछा न छोड़ा।

धुएँ का इलाका खत्म हुआ, तो पुलिस के सिपाहियों ने देखा कि, एक कश्मीरी मजदूर पीठ पर भारी बोरी उठाये भागा चला जा रहा है।

सीटियों के गले खुश्क हो गये; मगर वह कश्मीरी न रुका। उसकी पीठ पर बोझ था। मामूली बोझ नहीं, एक भरी हुई बोरी थी; परंतु वह यों दौड़ा जा रहा था, जैसे पीठ पर कुछ है ही नहीं।

सिपाही हाँफने लगे। एक ने तंग आकर पिस्तौल निकाला और दाग दिया। गोली मजदूर की पिंडली में लगी। बोरी उसकी पीठ पर से गिर पड़ी। घबड़ा कर उसने अपने पीछे धीरे-धीरे भागते हुए सिपाहियों को देखा। पिंडली से बहते हुए खून को भी उसने देखा; मगर एक ही झटके से बोरी उसने फिर उठायी और पीठ पर डाल कर फिर वह भाग चला।

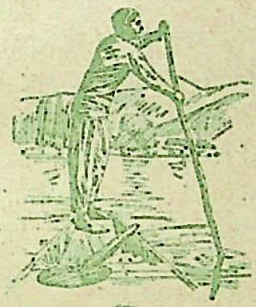

नाविक

[चित्र : अब्दुल हलीम कश्मीरी-निर्मित रेखाचित्र]

सिपाही पस्त हो चुके थे। कौन दौड़ता, सोचा–"जाने दो, जहन्नुम में जाता है तो!"

मगर गोली खाकर कश्मीरी कब तक चलता, खून बहने से वह आखिर गिर पड़ा। बोरी उसके ऊपर आ रही। सिपाहियों ने आगे बढ़ कर उसे गिरफ्तार कर लिया और मय बोरी के उसे थाने ले गये।

रास्ते में कश्मीरी मजदूर ने कहा– "हुजूर, आप मुझे क्यों पकड़ती हैं...मैं तो गरीब आदमी होती....चावल की एक बोरी होती...घर में खाती..आप नाहक मुझे गोली मारती...!". मगर उसकी एक न सुनी गयी।

थाने में भी कश्मीरी मजदूर ने बड़ी मिन्नतें कीं –"हुजूर, दूसरे लोग बड़ा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा माल उठाती...मैं तो फकत एक चावल की बोरी लेती...हजरत! मैं बहुत गरीब होती...हर रोज भात खाती।"

जब वह सब कह कर हार गया, तो उसने अपनी मैली टोपी से माथे का पसीना पोंछा और चावलों की बोरी की ओर भूखी नजर से देखते हुए थानेदार के आगे हाथ फैला कर कहा—"हजरत, तुम बोरी अपने पास रख— मैं अपनी मजदूरी माँगती —चार आने!"

× × ×

दूसरे दिन से ही लूटा हुआ माल बरामद करने के लिए पुलिस ने जगह-जगह छापे मारने शुरू कर दिये।

लोग डर के मारे लूटा हुआ माल रात के अँधेरे में बाहर फेंकने लगे। कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने डर के मारे अपना खुद का माल भी अपने से अलग कर दिया!

मगर एक आदमी को बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा। उसके पास चीनी की दो बोरियाँ थीं, जो उसने पंसारी की दूकान से लूटी थीं। एक को तो वह रात के अँधेरे में पासवाले कुएँ में फेंक आया था; मगर जब दूसरी डालने लगा, तो खुद भी साथ चला गया।

शोर सुन कर लोग इकट्ठे हो गये। कुएँ में रस्सियाँ डाली गयीं। दो नौजवान नीचे उतरे और उस आदमी को बाहर निकाल लिया— मगर चंद घंटों के बाद ही वह मर गया।

दूसरे दिन, जब इस्तेमाल के लिए लोगों ने उस कुएँ में से पानी निकाला, तो वह मीठा निकला। ...उसी रात उस आदमी की कब्र पर दिये जल रहे थे।

✱

एक बहुत धनी व्यक्ति से एक दिन उसके मित्र ने कहा—"मित्र, मुझे एक भोज का आयोजन करना है। यदि तुम अपना मकान एक दिन के लिए दे देते, तो समस्या हल हो जाती।" कृपण धनाढ्य चिंतित हो गया; पर यह सोच कर कि, लोग भोज का आयोजक मुझे ही मान कर मेरी प्रशंसा करेंगे, उसने स्वीकृति दे दी। भोज के दिन मकान में बड़ी चहल-पहल रही। यह देख, उधर से गुजर रहे एक परिचित राहगीर ने दरबान के पास जा पूछा—"आज यह क्या आश्चर्य देख रहा हूँ! तुम्हारे मालिक ने भोज का आयोजन किया है?" दरबान मुस्कराया—"आपने भी खूब कही! मेरा मालिक इस जन्म में नहीं, अगले जन्म में भोज का आयोजन करेगा।" संयोगवश धनाढ्य दोनों की बातचीत सुन रहा था। जब राहगीर चला गया, तो वह दाँत पीसता हुआ दरबान के पास पहुँचा—"मूर्ख, तुम्हें यह सब बकवास करने को किसने कहा था। किसने कहा था, तुमसे कि, मेरी ओर से अगले जन्म के लिए भोज का वादा कर दो?....."

—'नावक के तीर' से

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

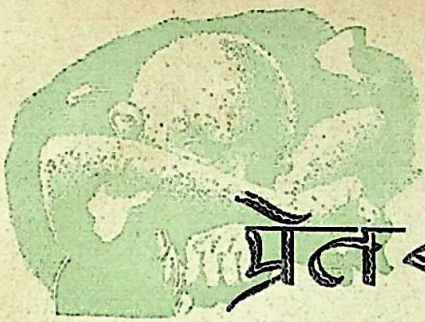

प्रेत का जमाई

शरदिंदु बंद्योपाध्याय-लिखित एक बँगला-कहानी का बादलकुमार बनर्जी-द्वारा संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

"नहीं, नहीं, मुझसे नहीं होगा। मुझे व्यर्थ परेशान न कीजिये।"—मेरे इस कथन से प्रेत बड़ा मर्माहत हुआ, कातर नेत्रों से मेरी ओर देखता हुआ बोला—"आप यदि कृपा न करेंगे, तो लड़की की जिंदगी बर्बाद हो जायेगी।" उसका कंठस्वर घिसा-घिसा था—गाना शुरू होने से पूर्व रिकार्ड जैसा शब्द करता है, बहुत-कुछ वैसा ही; पर मुझ पर उसके अनुनय का कोई असर नहीं हुआ और मैं विरक्तिपूर्वक बोल उठा—"लेकिन मेरी भी तो मजबूरी है! आप किसी दूसरे के पास क्यों नहीं जाते?"

प्रेत निराश स्वर में बोला—"और किसके पास जाऊँ? सब चोर हैं।"

प्रेत की इस बात से मेरा मन जरा द्रवित हुआ। यह सच है कि, कर्जदारों के डर से मैं मुँह छिपाये हूँ, फिर भी चोरी न करूँगा, यह विश्वास प्रेत को भी है। मैं बोला—"आप लड़की या उसके पिता को ही अपनी बात क्यों नहीं कहते? वे अपनी फिक्र आप कर लेंगे। मुझे भला इस प्रपंच में लपेटने की क्या जरूरत है!"

सुन कर उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा, फिर कहा—"चेष्टा न की हो, ऐसा नहीं है; पर वे तो मुझे देखते ही धाड़ मार कर रोने लगे!"

रात्रि के बारह बज रहे थे, अतः मैंने फूँक मार कर मोमबत्ती बुझायी और बिस्तरे पर लेट गया। प्रेत भी जाते-जाते कहता गया—"फिर सोचियेगा। ईश्वर आपका कल्याण करेगा।"

देखी आपने मेरी विपदा! मैं एक साहित्यिक हूँ। उस समय तक प्रसिद्धि भी थोड़ी-बहुत पा चुका था। परंतु साहित्य-संसार में प्रसिद्धि पैसों का अभाव नहीं दूर कर देती। फलतः एक दिन जो मेरे मित्र थे, वे ही मेरे महाजन बने हुए थे और मुझे देखते ही कुत्तों की तरह पीछा करने लगते थे। अतएव सोचा, कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

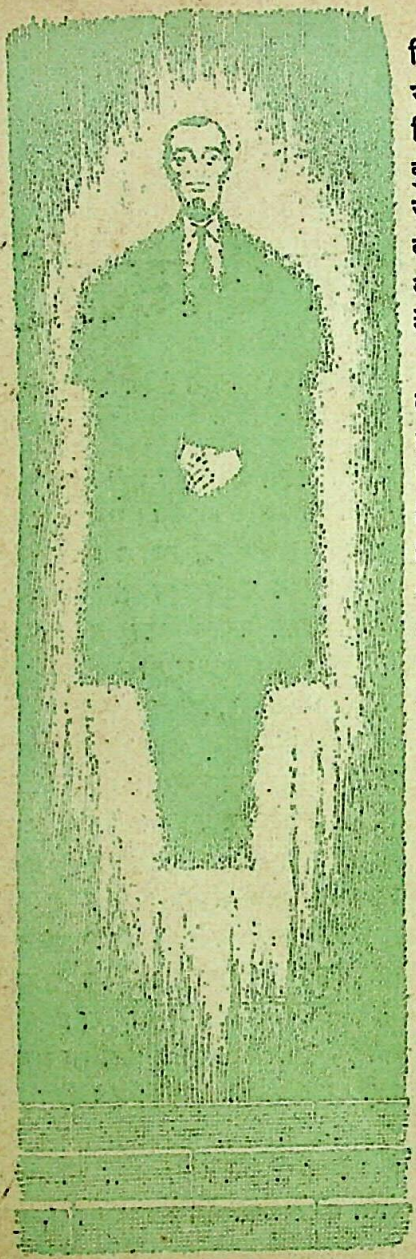

दिनों के लिए कलकत्ते से मुँह छिपा लूँ। भाग्यवश एक प्रकाशक ने एक उपन्यास लिखने का अवसर भी दे दिया और मैंने कुछ पेशगी भी इसी बहाने वसूल कर ली। उन्हीं पेशगी रुपयों को लेकर मैं पश्चिम बंगाल के उस छोटे-से शहर में रह रहा था और बिना उपन्यास समाप्त किये वहाँ से नहीं जाने का निश्चय कर चुका था।

मेरे रहने के कमरे की खिड़कियाँ टूटी थीं। ऊपर खपरैलों की छाजन भी दुरुस्त नहीं थी। जिन्होंने यह कमरा किराये पर दिया था, वे पास ही, दीवार से घिरे शानदार मकान में, रहते थे—लेन-देन का कारबार भी करते थे। उनका नाम था, निकुंज बाबू। मकान से थोड़ी ही दूर पर एक सस्ती किस्म का भोजनालय था। वहीं मैंने अपने भोजन की व्यवस्था की थी।

वहाँ प्रथम तीन दिन निर्विघ्न कट गये। मैंने अपना उपन्यास भी शुरू कर दिया। उस समय तक मुझे मालूम न था कि, मेरे उस जीर्ण कमरे में 'उपदेवता' का भी आगमन होता था। चौथे दिन रात को, बत्ती बुझा कर सोते समय, मैंने बीड़ी जलाने के लिए दियासलाई जलायी, तो दिखायी पड़ा कि, मेरे सोने के तख्ते के किनारे कोई बैठा, एकटक मेरी ओर निहार रहा है। चौंक कर मैं बोल उठा—"कौन?" पर आकृति तुरत ही अदृश्य हो गयी। मैंने सोचा, मुझे ही भ्रम हुआ होगा। यों भी, मेरे स्नायु दुर्बल नहीं हैं—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

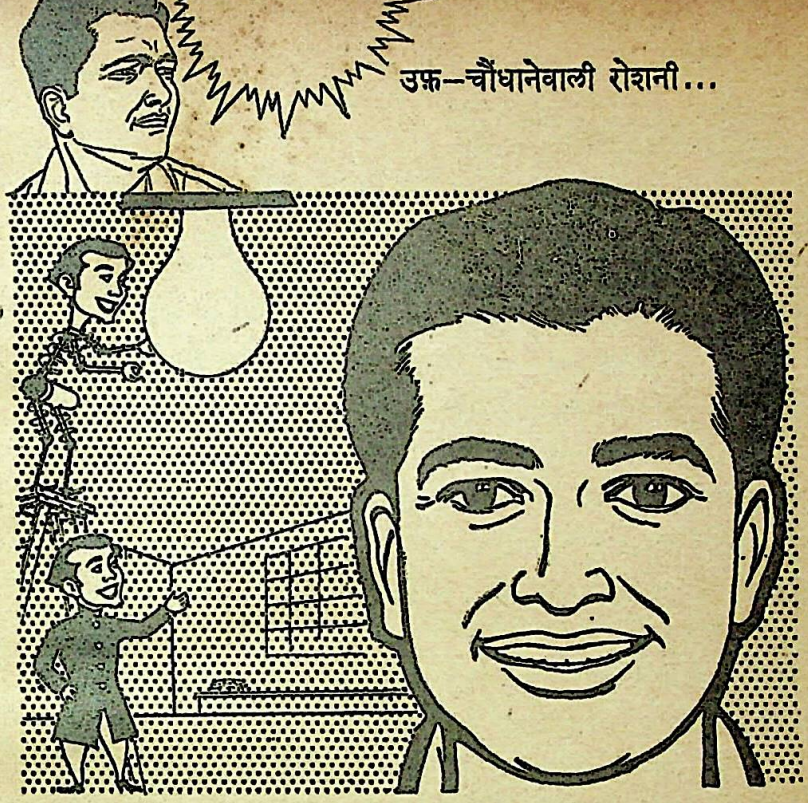

वाह ! आर्जेण्टा

बिना चकाचौंध के साफ़ रोशनी देता है !

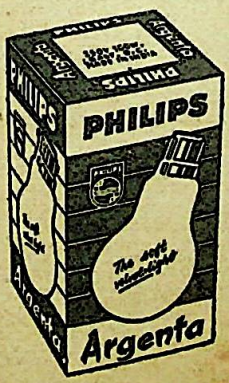

चाँदनी के समान मृदुल, फिर भी दिन की तरह साफ़ रोशनी देनेवाले परत चढ़े आर्जेण्टा बल्ब घर के लिए और कामकाज के स्थान के लिए सर्वोत्तम हैं। आज ही एक आर्जेण्टा बल्ब लीजिये और फिर देखिये कि उसकी रोशनी आपकी आँखों के लिए कितनी सुखद और आपके दिमाग़ के लिए कितनी आरामदेह रहती है।

उत्तम फ़िलिप्स बल्ब
सही दामों में ही ख़रीदिये

अपने दूकानदार से फ़िलिप्स की मूल्य-सूची दिखाने के लिए कहिये

PHILIPS

फ़िलिप्स इण्डिया लिमिटेड

PH 5766

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं जो एक ख़ानदानी महाराज हूँ!

महाराज का मतलब राज अधिराज राजाओं से नहीं उन के महाराज से है जिसे आप आज मुँह बिगाड़ कर रसोइया कहते हैं—भले वक़्तों में राजा लोग मेरे बड़ों को महाराज कह कर पुकारते थे। अब तो आप समझ गए होंगे कि मैं एक ख़ानदानी रसोइया हूँ और यह लेख इस लिए लिख रहा हूँ कि आप मेरे बड़ों की ग़लतियों से सबक़ लें, उन की सूझ बूझ से फ़ायदा उठाएं और प्रार्थना करें कि भगवान उन्हें स्वर्ग में वह पदवी दे जो दुनिया वालों ने उन से छीन ली थी।

ऐ होने वाली बीवियो! मरद के दिल पर क़ाबू पाना चाहती हो तो उस की ज़बान और तालू के चटख़ारे की नबज़ हाथ में लो। ऐ होने वाले रसोइयो यदि तुमहारे पकवानों से तुम्हारा मालिक खुश है तो तुम दाल सब्ज़ी ख़रीदते समय बड़े आराम से अपने पान बीड़ी के लिए पैसे निकाल सकते हो—हमारे दादा की फूफी के चाचा के नाना ने, जो राजा पेट्टू मल के ख़ास रसोइया थे और महाराज के नाम से मशहूर थे, इसी बचत में से पान बीड़ी की दुकान खोल रखी थी—इस का भेद यही था कि राजा खाने के रसिया थे तो महाराज पकाने के—राजा के आगे खाना रखने से पहले उसे अच्छी तरह चख कर देखते—ज़बान ऐसी नाज़ुक थी जैसे नमक मिरच जांचने का यन्त्र—हवा भर नमक ज़्यादा हो तो थू थू कर के लहू थूक देते—रत्ती भर मिरच कम हुई तो पकवान के फीकेपन से जी घबराने लगता—खाना पकाने को तो रामू भटियारा भी पकाता है और आप भी—परन्तु यह पता नहीं चलता कि दाल खा रहे हैं या मटर? खाना वह जिस का मज़ा कहे मैं भुरते की शकल में बैंगन हूँ या आलू—इसी गुण के कारण राजा साहब, महाराज की इज़्ज़त करते थे और हर समय साए की तरह साथ रखते थे।

एक बात बता दूँ—खाने में यह कमाल पैदा करना आसान नहीं—मैं ने ख़ुद बरसों इसी छान बीन में गुज़ार दिए हैं और अब आ के इस का गुर पाया है—

DL. 3264-X29/III CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घबराइये नहीं मैं अपने बड़ों की तरह यह भेद अपने साथ नहीं ले जाऊँगा—वैसे मेरी आज़माई हुई चीज़ कुछ और है उन की निश्चयी कुछ और थी—यदि मौत महाराज को मुहलत देती तो वह मरने से पहले अपने अनुभव और ज्ञान से दुनिया को माला माल कर के ही जाते—परन्तु हुआ क्या कि एक रोज़ महाराज खाना पकाने और चखने के बाद बीड़ी पीने के लिए पल भर को रसोई से बाहर गए तो किसी दुश्मन ने सारे खानों में मुट्ठी मुट्ठी भर नमक और छोड़ दिया—खाना जब राजा साहब ने खाया तो ज़हर लगा—फ़ौरन महाराज को हुकम दिया, "सारा खाना अभी खा जाओ"—कहाँ उन की नाज़ुक ज़बान जो ज़रा नमक ज़्यादा हो तो खून थूकने लगे और कहाँ यह ज़हर? भगवान सब देखता है—महाराज की यह बेकदरी होते देख कर उस ने झट यमदूत को भेज कर उन्हें अपने पास बुला लिया—अच्छे रसोइये की तो आप जानते ही हैं हर जगह ज़रूरत है—बाद में राजा साहब को असली बात का पता चला तो बहुत रोए चिल्लाए—दिन रात यही कहते फिरते "जीने का मज़ा खाने के साथ है और खाने का मज़ा महाराज के साथ चला गया!"

इतनी लम्बी कथा कहने का मतलब केवल इतना था कि खाना पकाना दो धारी तलवार है—पति हो या मालिक, खाने की मेज़ पर दोनों किसी राजा से कम नहीं—खाना अच्छा है तो साथ साथ लिए फिरेंगे—प्यार करेंगे—नहीं तो देख लो महाराज के साथ क्या हुआ?

मैं जो एक ख़ानदानी रसोइया हूँ और आज इस पदवी पर पहुँचा हूँ कि सेठ न्योता मल मुझे साथ लिए बग़ैर साथ के गाँव में भी नहीं जाते—क्यों कि मेरे खानों से उन की ज़बान चटख़ारा लेती है—वह क्या जानें कि यह कमाल सिरफ़ 'डालडा' की वजह से है कि दाल, सब्ज़ी, चावल कुछ भी पकाऊँ हर चीज़ का अपना असली मज़ा उभरता और निखरता है—वैसे तारीफ़ मेरे पकाने की होती है—कुछ लोगों को वहम है 'डालडा' केवल तलने के काम आता है परन्तु मैं तो 'डालडा' से सेठ साहब के लिए मिठाइयाँ, दाल, सब्ज़ी, कचौरी, समोसे, पराठे बल्कि रोटी भी इसी से चुपड़ता हूँ—सेठ साहब और उन के मेहमान मेरी तारीफ़ करते नहीं थकते—सेठ साहब के चेहरे पर पहले से ज़्यादा सुरखी आ गई है और मैं खुद भी हट्टा कट्टा हो गया हूँ—इस का कारण 'डालडा' में विटामिन ए और डी हैं।

सेठ साहब के साथ जब कभी बाहर जाना पड़े तो मैं डालडा के डिब्बों के बग़ैर क़दम नहीं उठाता—सेठ साहब खाना खा के मज़े की नींद सोते हैं इस लिए रसोई के ख़र्च के हिसाब पर किसी की अंगुली नहीं उठती—और इस प्रकार मैं हर महीने रोज़ के पान बीड़ी का ख़र्च निकाल बीवी के लिए एक आध ज़ेवर भी आसानी से बनवा लेता हूँ।

DL. 328B-129 HT हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं भूत-प्रेत से नहीं डरता। प्रेत की अपेक्षा मनुष्यों से ही मुझे ज्यादा डर लगता है।

दूसरे दिन रात को भी, अभ्यासानुसार बीड़ी-सेवन कर, सोने का उपक्रम कर रहा था, तभी सुना, कोई घिसे कंठस्वर से पुकार रहा है—"सो गये क्या?" अंधकार में कुछ दिखलायी तो न पड़ा; पर समझ गया कि, जिसने प्रश्न किया है, वह तख्त के किनारे बैठा है। कुछ क्षण नीरव रह कर मैंने प्रश्न किया—"आप कौन हैं?"

उत्तर मिला—"क्या कह कर अपना परिचय दूँ? जब जिंदा था, तब नाम था, नंददुलाल नंदी।"

मैंने कहा—"बड़ा अच्छा नाम है। आप शायद प्रेत-योनि को प्राप्त हुए हैं?"

"हाँ, पर आप बिल्कुल भयभीत न हों। मेरा कोई बुरा मतलब नहीं है।"

मैंने एक जम्हाई ले कहा—"बुरा मतलब रहे भी, तो आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हवा से भला डरने की क्या बात है?" तभी खयाल आया, दियासलाई की डिबिया सिरहाने रखी है। उधर हाथ बढ़ा कर बोला—"मुझसे कोई काम है क्या?"

प्रेत बोला—"कोई खास नहीं। यों ही बातचीत करने को कोई नहीं है, सो सोचा, आप तो स्वजातीय हैं....."

इसी समय बिस्तरे पर बैठ, मैं दियासलाई जलाने को तत्पर हुआ, तो वह बोला—"दियासलाई जलायेंगे?"

"हाँ,क्यों?"

"अचानक रोशनी करने से जरा कष्ट होता है, इसीलिए....."

"तब रहने दीजिये।" मैंने कहा।

इसके बाद कुछ क्षण तक नीरवता रही और तब मैंने प्रश्न किया—"आप क्या नजदीक ही रहते हैं?"

"हाँ, बगल में दीवार से घिरे बगीचे में, पुराने नीम के वृक्ष पर, मेरा निवास है।"

"निकुंज बाबू के किरायेदार हैं!"

पर प्रेत मेरी रसिकता न समझ, बोला—"मकान और बगीचा, दोनों एक दिन मेरे ही थे। मेरे प्रपौत्र से निकुंज पाल ने खरीदा है।"

"तो आपके प्रपौत्र अभी जिंदा हैं?"

"हाँ; पर उसकी आर्थिक अवस्था इन दिनों बड़ी विपन्न है।"

"तब तो आप लगभग अस्सी-नब्बे वर्ष पहले इस संसार में रहे होंगे?"

"हाँ, प्रथम भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के समय मैं मौजूद था। रुपये के लेन-देन का कारबार कर मैंने काफी पैसा कमाया था। सोचा था, मेरे बाद सात पीढ़ी मजे से बैठी खायेगी; परंतु....."

इसी बीच बीड़ी सुलगाने के लिए भूल से मैंने दियासलाई जला दी और प्रेत पलक मारते अदृश्य हो गया। वह पुनः आयेगा, ऐसा सोच मैंने कुछ क्षण बीड़ी के गहरे कश लगाये; पर प्रेत न आया। इसके बाद भी लगातार कई रात्रि तक वह न आया।

उस दिन आहार समाप्त कर, बत्ती जला, लिखने बैठा था। खूब मन लगा कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिख रहा था। अकस्मात् दृष्टि ऊपर उठी, तो देखा, मेज की दूसरी ओर प्रेत खड़ा मंद-मंद मुस्करा रहा है। उसी दिन मैंने प्रेत को पहली दफा अच्छी तरह देखा। छोटा चेहरा था, फीते से बँधी मिर्जई थी, नुकीली मूँछें ऊपर उठी थीं और आँखों की दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण थी। उम्र यही पचपन के करीब होगी।

प्रेत ने सस्नेह पूछा—"इतना क्या लिखते रहते हैं?"

मैंने कहा—"उपन्यास!"

"उपन्यास भला किसे कहते हैं?"

समझाया, तो वह बोल उठा—"अच्छा, गुलबकावली की कहानी—रूपकथा! सुनाइये न जरा, सुनूँ।"

संक्षेप में उसे कहानी सुना दी; पर सुन कर वह बोला—"छिः-छिः, कितना गंदा लिखते हैं आप।"

मैं बोला—"छिः-छिः करने से कैसे काम चलेगा? बिना ऐसा लिखे आजकल पुस्तकें बिकतीं ही नहीं।"

कुछ देर और उससे बातें होती रहीं और तब मैंने उसे विदा कर दिया।

एक दिन प्रेत ने मुझसे पूछा—"आपने घर-गृहस्थी बसायी है या नहीं?"

"सर्वनाश! अकेले तो रहने का ठिकाना नहीं और फिर ब्याह।"—मैं अविलम्ब ही बोल उठा।

प्रेत मंद-मंद मुस्कराया; फिर कुछ क्षण बाद अचानक बोला—"कुछ दिनों के आलाप-परिचय से मैं समझ गया हूँ कि, आप चोर-उचक्के नहीं, सज्जन व्यक्ति हैं। मैं बहुत दिनों से एक सज्जन व्यक्ति की खोज में था। मेरा एक अनुरोध आपको पूरा करना ही होगा।"

मेरे कान खड़े हुए—"कैसा अनुरोध?"

और, प्रेत ने अपने वंश की कहानी आरम्भ कर दी, जिसका सारांश था कि, नंददुलाल नंदीने, ईस्ट इंडिया कम्पनी के फिरंगियों के साथ साझे में व्यापार कर प्रचुर धन कमाया था। जमींदारी, खेत, बगीचे, सबका वह मालिक बना। जब उसकी उम्र तिरपन साल की थी, उसी समय सन् १८५७ के गदर की धूम मची। इस तरफ यद्यपि युद्ध की आशंका नहीं थी; पर जिसके पास रुपया हो, उसकी शंका की भला क्या सीमा? एक दिन रात को नंददुलाल ने पीतल के एक घड़े में सौ मुहरें भरीं और उसे बगीचे के नीम के वृक्ष के नीचे गाड़ दिया। उसने सोचा था कि, विद्रोह के समय यदि सब चला गया, तो भी सौ मुहरें तो रहेंगी।

वह क्षेत्र गदर से तो प्रभावित न हुआ; पर अराजकता अवश्य बढ़ गयी और एक दिन आधी रात को नंददुलाल के घर डाका पड़ा। नंददुलाल का हृदय दुर्बल था; अतः वह अचानक ही हृदय की गति रुक जाने से मर गया। फिर क्रमशः देश में अमन-चैन लौट आया।

नंददुलाल मितव्ययी था। उसके समय में रईसी ज्यादा न बढ़ पायी थी; पर उसके पुत्र यशोदादुलाल के जमाने में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रईसी बढ़ी और हरिकीर्तन के स्थान पर वेश्याओं के नाच होने लगे। नंददुलाल के पौत्र व्रजदुलाल ने तो विलासिता को चरम सीमा तक पहुँचा दिया। उसने जब पृथ्वी से विदा ली, तब तक लक्ष्मी भी विदा ले चुकी थीं। बचा रहा, सिर्फ बगीचे से घिरा मकान।

व्रजदुलाल का पुत्र गोपीदुलाल सीधा-सादा निकला। पिता की छोड़ी जूठी पत्तल जितने दिन चाट सका, चाट कर, अंत में विवश हो, उसे मकान बेचना पड़ा। इसके बाद पिछले बीस वर्षों से गोपीदुलाल एक छोटी-मोटी नौकरी कर किसी प्रकार अपना पेट पाल रहा था। उसकी पत्नी तो मर चुकी थी; पर पुत्री थी, जिसकी उम्र लगभग इक्कीस वर्ष होगी। वह धनाभाव के कारण अविवाहित थी और कुछ वर्षों से गोपी दमे से पीड़ित था।

कहानी समाप्त करते हुए प्रेत बोला—"अभी वह वणिक्-मुहल्ले में एक टूटे मकान में रहता है। अब ज्यादा दिन नहीं जियेगा। उसका काल नजदीक है। लड़की बेचारी बर्बाद हो जायेगी।"

तो पुरोहिती करने आया है, मैंने सोचा और मन को दृढ़ कर कहा—"मैं पहले ही कह चुका हूँ, शादी-ब्याह करने का मेरा बिल्कुल इरादा नहीं है। आप यह अनुरोध मुझसे न करें।"

प्रेत ने छूटते ही उत्तर दिया—"नहीं, नहीं, यह अनुरोध मैं नहीं कर रहा। मैं तो कह रहा था कि, आप मुहरें गोपीदुलाल तक पहुँचा दें, जिससे वह अपनी बेटी का विवाह करा कर सुख से मर सके।"

अवाक् हो, मैं बोला—"तो मुहरों का घड़ा अभी तक वृक्ष के नीचे दबा है?"

प्रेत बोला—"हाँ, मरने से पहले किसी को कह न पाया था, सो मुहरें वैसे ही पड़ी हैं। इसीलिए तो नीम का वृक्ष मैं नहीं छोड़ पा रहा हूँ।"

मैं कुछ क्षण तक स्तम्भित-सा बैठा रहा। सौ सोने की मुहरें, अर्थात् दस हजार रुपये—दस हजार!

मैंने क्षीण स्वर में कहा—"इतना सोना—इसकी कीमत तो बहुत होगी!"

"इसीलिए तो और किसी पर मेरा विश्वास नहीं है। सिर्फ आप पर ही भरोसा है।"

चौंक कर मैं बोल उठा—"मैं?"

"हाँ, घड़ा आपको खोद कर बाहर निकालना पड़ेगा। ज्यादा नहीं, हाथ-भर जमीन खोदने से ही काम चल जायेगा।"

मैं विस्मित हो बोला—"आप तो अच्छा कह रहे हैं! वह बगीचा निकुंज पाल के कब्जे में है—वह भला मुझे क्यों खोदने देगा? और, मैं भी क्या कहूँगा भला? क्या यह कि, महाशय, आपके बगीचे में मुहरें गड़ी हैं, इसीलिए खोदने आया हूँ?"

"नहीं, नहीं, आप दिन में भला क्यों जायेंगे? आधी रात को चुपचाप दीवार लाँघ कर...और फिर नीम का वृक्ष मकान से बहुत दूर है, बगीचे के एक कोने में। रात को वहाँ कोई नहीं जाता।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—प्रेत ने रास्ता दिखाया।

"माफ कीजिये, मुझसे यह काम नहीं होने का। रात को किसी दूसरे के बगीचे में यदि पकड़ा गया, तो पैरों में बेड़ियाँ पड़ेंगी। ना बाबा, मुझसे नहीं होगा।"—मैंने साफ इन्कार कर दिया।

इसके बाद कई रात मेरे और प्रेत के बीच कशमकश चलती रही। इधर मैं अटल, उधर प्रेत भी पल्ला न छोड़े। मैं जितना ही कहता—'मुझसे नहीं होने का', प्रेत उतना ही कहता—'दया कीजिये'। मेरी अवस्था संगीन हो उठी। रात-भर नींद नहीं आती, सारी रात प्रेत से बहस चलती। अंत में, एक दिन मैंने कहा—"ठीक है, मैं राजी हूँ। पर मुहरों में मेरा भी हिस्सा होना चाहिए।"

कुछ क्षण उसने विचार किया, फिर कहा—"ठीक है, पाँच प्रतिशत आपका।"

अब 'नहीं' करने का रास्ता ही न रहा। पाँच मुहरें, यानी पाँच सौ रुपये। पाँच सौ रुपये के लिए दुस्साहसिक कार्य नहीं करेंगे, ऐसे भला कितने साहित्यिक हैं? मुझे दुःख तो बस इसी बात का था कि, बाकी ९५ मुहरें मैं उदरस्थ नहीं कर पाऊँगा। पेट की ज्वाला बुझाने को भले ही अश्लील उपन्यास लिखूं; पर चोरी नहीं कर सकता—एकदम नहीं।

एक रात प्रायः ढाई बजे प्रेत का अनुगामी हो, मैं बाहर निकला। चाँद के क्षीण प्रकाश में दीवार कूद कर निकुंज पाल के बगीचे में दाखिल हुआ। प्रेत देख कर जो भय नहीं हुआ था, वह अब हुआ—छाती के भीतर हथौड़ियाँ चलने लगीं। प्रेत ने एक स्थान दिखाया, जहाँ फावड़ा, कुदाल, इत्यादि पड़े हुए थे। मैंने एक कुदाल उठा ली और आध घंटे के अंदर ही घड़ा लेकर अपने कमरे में लौट आया। उसमें भरीं सौ मुहरें देख कर मन मचल उठा।

दूसरे दिन सवेरे मैंने पुनः घड़े का मुँह खोल कर देखा—सौ मुहरें पूर्ववत् झिलमिला रही थीं। उनमें से पाँच निकाल, बाकी मुहरें एक पोटली में बाँध मैं बाहर निकला। सोचा, ज्यादा देर करना ठीक नहीं—सोने का मोह बुरा होता है। थोड़ी पूछताछ के बाद ही, मैंने वणिक्-मुहल्ले के एक छोर पर गोपीदुलाल का घर खोज निकाला और दरवाजे की कुंडी हिलायी।

एक लड़की ने आकर द्वार खोले और जरा अंदर को हट, नजरें नीचे टिका कर, घबड़ाये स्वर में वह बोली—"बाबूजी घर पर नहीं हैं।"

समझ गया, यही गोपीदुलाल की अविवाहिता पुत्री है। शरीर का रंग गोरा, चेहरा सुंदर और सभी अंग यौवन के स्पर्श से खिले हुए। पर गरीबी स्पष्ट झलकती थी। वह अपने पिता की एक मैली धोती पहने थी और ब्लाउज के अभाव में उसने आँचल को छाती पर दो बार लपेटा था।

मेरा गला मानो किसी ने धर दबोचा, हकलाते हुए बोला—"यह गोपीदुलाल बाबू का ही मकान है न?"

"हाँ; लेकिन वे अस्पताल गये हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। लौटन में शायद देर होगी।"

"अच्छा, मैं शाम को फिर आऊँगा।" —बोल कर मैं लौट पड़ा।

अपने कमरे में आने के बाद, मैं एक-के-बाद-एक दूसरी बीड़ी सुलगाने लगा। सिर गर्म हो उठा। आँखों के सामने बार-बार युवती की आकृति नाचने लगी। मैं बुरी तरह उधेड़-बुन में पड़ गया। वह युवती, वे ९५ मुहरें—दोनों बारी-बारी से मेरे मानस को झकझोरने लगे और मैं उनके थपेड़ों के बीच पड़ा रहा, सोचता रहा।

शाम को मैं पुनः वहाँ पहुँचा। इस बार वे पाँच मुहरें भी मैंने साथ ले ली थीं। उस युवती ने ही इस बार भी द्वार खोले और कहा—"बाबूजी की हालत खराब है। मुलाकात नहीं कर सकेंगे। क्षमा कीजियेगा।"

मैंने अविलम्ब कहा—"देखो, तुम अपने बाबूजी से कहो कि, मेरे यहाँ उनकी कुछ रकम बाकी है, वही देने आया हूँ।"

सुन कर वह भीतर चली गयी और कुछ क्षण बाद आकर बोली— "आइये. . . ."

गोपीदुलाल बाबू बिस्तरे पर बैठे हाँफ रहे थे। उन्होंने मेरे चेहरे को गौर से देखा, फिर कहा— "आप पर मेरा कुछ उधार है, स्मरण नहीं पड़ता।"

मैंने हिम्मत की, बोला—"रुपयों की बातें बाद में होंगी, पहले यदि आप बुरा न मानें तो, मेरा एक प्रस्ताव है। मैं आपकी ही जाति का एक भले घर का लड़का हूँ। आपकी कन्या मुझे पसंद है—उससे ब्याह करना चाहता हूँ।" ये शब्द कहते समय मेरे दिल की धड़कन आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गयी। इन्हें सुन कर गोपीदुलाल भी स्तब्ध-से हो रहे और तब मैंने विस्तृत रूप से अपना परिचय दिया। सुनने के बाद, वे बोले—"कमला के हाथ पीले कर मरूँ, यह मेरे लिए सपने-सी असम्भव बात है! मेरे पास पैसा कहाँ है?"

"है क्यों नहीं? यह देखिये. . ." —कह कर मैंने सौ मुहरें उनके सम्मुख उड़ेल दीं। उतनी मुहरें पा, मरणासन्न वृद्ध को मानो नवजीवन मिल गया और एक सप्ताह के अंदर ही उन्होंने मेरे साथ कमला का विवाह सम्पन्न करा दिया। जिसकी मैंने कभी कोई कल्पना नहीं की थी, वही उस प्रेत की माया से हो गया। एक बात और, विवाह के दूसरे ही दिन, श्वसुरजी भी स्वर्ग सिधार गये, मानो केवल कमला के विवाह के लिए ही वे इस दुनिया में टिके हुए थे।

अब कलकत्ते लौट कर मैंने दोस्तों का ऋण चुका दिया है और पुस्तक-प्रकाशक बनने का आयोजन कर रहा हूँ। उक्त उपन्यास फाड़ कर फेंक दिया है। अब शिष्ट उपन्यास लिखूँगा, जिसे पढ़ कर कमला लज्जित न हो।

हाँ, विवाह के बाद, नंददुलाल से भी एक बार भेंट हुई थी और मैंने कहा था—"अब तो आप खुश हुए?" इस पर उस बेशर्म प्रेत ने मंद मुस्कराहट के साथ कहा था—"बेइमानी पर तुम भी चले ही गये; पर अब क्या कहूँ, दामाद जो ठहरे!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयानक जागो

सोमा वीरा-लिखित एक हिन्दी-कहानी

सावन-भादों की अँधेरी रात, मूसलधार वर्षा, अंधड़ और तूफान! पथिक को विवश हो अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ी। यमुना के तीर-बसे उस निकटवर्ती ग्राम में वह आश्रय खोजने चल पड़ा।

रात अधिक नहीं हुई थी; पर प्रकृति के प्रचंड तांडव के कारण गाँव में सर्वत्र अंधकार और सन्नाटा छाया था। समीपवर्ती सर्वप्रथम कुटिया का द्वार खटखटाते हुए उसने पूछा—"आश्रय मिलेगा?"

"कौन?"

"राह-भूला एक पथिक।"

"आओ अतिथि, पौर में चले आओ!"

अश्व की लगाम टूटी खपरैल में अटका, पथिक ने कुटिया में पैर रखा। पौर में मंद-मंद दीप जल रहा था। पर उसकी आभा में प्रतिभासित उस विकट भयावने सिंह के पुष्ट अंग-प्रत्यंग पर दृष्टि पड़ते ही वह काँप कर दो पग पीछे हट गया।

सिंह के समीप बैठी धूमिल आकृति धीमे-से हँस पड़ी, बोली—"बस, डर गये?"

पथिक के हृदय में रोष उमड़ आया—अपने पौरुष का अपमान सहने में असमर्थ उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा पड़ा।

कुटिया का मालिक फिर धीरे-से हँसा।

पथिक का रोष लज्जित हो गया! वह शांत स्वर में बोला—"आकस्मिक विस्मय को भय नहीं कहते, युवक! क्या यह तुम्हारा पालतू पशु है?"

"समीप आकर देखो न, पालतू है, या वन का जीव।"

उस गम्भीर स्वर में निहित व्यंग्य आगंतुक से छिपा न रहा। वह निर्भीक भाव से आगे बढ़ते हुए बोला—"मेरे शरीर में भी राजपूत क्षत्राणी का रक्त है, वीर! यह न समझना कि, तुम्हारा यह चूहा..." किंतु उसकी बात पूरी न हो सकी, मुख के बोल कंठ में ही अटक कर रह गये। उसके ठीक सामने, उसके कदमों के समीप, केवल एक चित्र था—जिस पर चित्रित सिंह, गर्व-भरे अभिमान से उसे ताक रहा था।

आगंतुक के विस्मय की सीमा न रही। वह स्तब्ध-विमूढ़, देखता रह गया। फिर कुछ क्षण बाद उसने पूछा—"चित्रकार, तुम्हारा नाम?"

तरुण चितेरा बोला—"चित्रकार का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिचय उसके नाम में नहीं, सेनापति! उसकी कृति ही उसका परिचय है!"

आगंतुक ने विस्मित हो पूछा—"तुमने कैसे जाना कि, मैं सेनापति हूँ?"

युवक खिलखिला उठा—"शाही मनसबदार की पोशाक धारण कर चाहते हो कि, मैं तुम्हें एक दीन-हीन पथिक समझ लूँ? किंतु ठहरो, दीन-हीन न सही, पथभूले तो हो ही और भूख भी लगी होगी। मैं अभी आया।" कहते-कहते वह द्वार की ओर बढ़ चला। मुगल ने उसे रोकना चाहा; किंतु तब तक वह जा चुका था।

मुगल के नेत्र पुनः चित्र की ओर घूम गये और उसकी ओर देखते-देखते वह मन की आँखों से उसके रचयिता को देखने लगा, जो रात्रि की निस्तब्धता में, केवल एक दीप के सहारे, ऐसे अद्भुत सौंदर्य की सृष्टि कर रहा था। वह खो-सा गया।

अचानक अपने कंधे पर कोमल हाथ का स्पर्श पा, वह जागा; मुड़ कर बोला—"अपना नाम तुम्हें बताना ही होगा, बंधु! केवल चित्र देख कर चित्रकार का परिचय पा सके, ऐसा इस विश्व में कोई नहीं।"

"विश्व की तो नहीं; पर अपने देश की बात जानता हूँ। हमारे यहाँ एक रमणी है, जो केवल चित्र देख कर ही चित्रकार का परिचय पा लेती है।"

मुगल ने साश्चर्य पूछा—"कौन है वह?"

"राजरानी मेहरुन्निसा।"

मुगल की देह से मानो तप्त लौह शलाखा छू गयी। तीखे स्वर में उसने पूछा—"उसे तुम कैसे जानते हो?"

"क्यों, क्या तुम भी उसे प्यार करते हो?"—चित्रकार ने चपलतापूर्वक पूछा।

यह युवक बात-बात पर व्यंग्य करता है! मुगल के अधर रोष से फड़क उठे। कुपित स्वर में उसने पूछा—"इसका अर्थ?"

"अर्थ? उसका एक प्रेमी था, अली कुली खाँ, जिसने उसके लिए अपने प्राण गँवा दिये और दूसरे हैं, हमारे नेक शहंशाह, जो अपने प्राण गँवाने को तुले हैं।"

मुगल ने दीर्घ निःश्वास फेंका—"तुम सच कहते हो। मेहरुन्निसा न मिली, तो शहंशाह देह त्याग देंगे।"

तभी द्वार पर कुछ खटका हुआ और दीपक उठा, कुटिया के मध्य आलोक छितराते हुए, युवक ने कहा—"अच्छा, आओ, इधर आसन पर बैठो।"

मुड़ते ही मुगल ने देखा, दीप के आलोक से एक और चित्र आलोकित हो उठा था—हाथ में थाल उठाये एक रमणी। अनायास ही वह बोल उठा—"वाह, खूब, मैंने तो समझा था, तुम केवल पशुओं के ही चित्र बनाते हो; लेकिन देखता हूँ, मानव का अंकन करने में भी तुम उतने ही माहिर हो!"

युवक की मीठी हँसी से दीप का आलोक झिलमिला उठा। उसने कहा—"भ्रम में न पड़ो, दोस्त, यह अनुपम कलाकृति मेरी नहीं, उस चतुर चितेरे की है, जिसने मेरी और तुम्हारी रचना की है। आओ मणि, भोजन का थाल इधर रख दो।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुगल लाज से पानी-पानी हो गया!

किशोरी आगे बढ़ी, भोजन का थाल आसन के समीप रखते हुए बोली—"आइये, बैठिये। इनकी अटपटी बातों का बुरा न मानियेगा। इनका स्वभाव ही ऐसा है।"

"जी!"—युवक ने उसकी बात बीच में ही काट दी—"और आपका स्वभाव बड़ा अच्छा है, जो एक अपरिचित के सम्मुख, मेरे गुणों का बखान कर रही हैं।"

"ओहो! बड़े गुणी हैं न आप!"—किशोरी ने चपल भाव से कहा और फिर आगंतुक से बोली—"आप भोजन करने बैठिये। कहीं इस व्यर्थ की चर्चा में यह रूखा-सूखा भोजन निःस्वाद न हो जाये।"

"किंतु मुझे तो भूख नहीं।"— मुगल ने प्रतिवाद किया।

"लगता है, पुर्तगालियों की बस्ती में रह आये हो!"—युवक ने मुस्कराते हुए मुगल से कहा।

"क्यों?"

"नहीं तो यह क्यों भूल जाते कि, एक भारतीय के घर आया अतिथि भोजन किये बिना नहीं जा सकता।"

मुगल चुपचाप आसन पर जा बैठा और कौर उठाते हुए बोला—"तुम कभी दिल्ली नहीं आते। दरबार में कभी देखा नहीं तुम्हें।"

"अभी तक तो नहीं गया; पर सोचता हूँ कि, इस बार, शहंशाह के विवाह के अवसर पर, अवश्य जाऊँगा और दरबार की शोभा देखूँगा। मणि भी मेरे साथ आयेगी। क्यों मणि?"

मणि हँस दी—"मणि को सपनों का संसार बसाने का अवकाश नहीं, माधव! उसके विवाह में केवल बाईस दिन शेष हैं और तुम्हारी मेहरुन्निसा भी कदापि शहंशाह से विवाह न करेगी। अतः तुम्हारी दोनों इच्छाओं में से एक भी पूरी न हो सकेगी, यह समझ लो।"

सम्राट् जहाँगीर
[चित्र : केयट-निर्मित एक सरल रेखाचित्र]

"तुम देखना, मणि, तुम्हें उस कंजूस मोटे सेठ से विवाह करने का अवसर कदापि नहीं मिल सकेगा और मेहरुन्निसा को भी अपने विवाह की स्वीकृति देनी ही होगी।"

"भूलते हो, माधव, मेहरुन्निसा को अपने पति से प्रेम था। वह प्राण तज देगी; पर किसी अन्य को अपने मन में स्थान देकर अपने प्रेम को कलंकित न करेगी!"

"तुम भी यह न भूलो, मणि, मेहरुन्निसा केवल नारी ही नहीं, माँ भी है। आज नहीं तो कल, उसे अपनी स्वीकृति देनी ही होगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ऐसा नहीं हो सकता।"—मणि ने दृढ़ स्वर में कहा।

"और, यदि ऐसा हो गया, तो.... तो क्या तुम भी किसी तरह अपने विवाह को केवल एक महीने के लिए रुकवा दोगी? मैं एक महीने के अंदर उस सेठ की एक-एक पाई चुका दूँगा— तुम्हारे पिता का सारा कर्ज उतार दूँगा!"

अब तक भोजन समाप्त हो चुका था— मुगल आसन से उठ गया। मणि ने झुक कर थाली उठा ली और आगे बढ़ती हुई बोली—"अब जाती हूँ, माधव! अवकाश मिले, तो कल आना एक बार।"

× × ×

दुःखिनी मेहरुन्निसा शाही हरम में पिंजरे के पंछी-सी तड़प रही थी। इतने दिनों से उसके मन में जो निदारुण संशय घुमड़ रहा था, अब मानो उसे उसकी थाह मिल गयी थी। क्यों उसके प्रिय पति को धोखे से मरवा डाला गया था? पति का आश्रय खो जाने पर, क्यों उसे पिता की रक्षा में नहीं जाने दिया गया था? उसके लाख-लाख अनुरोधों के बावजूद क्यों उसकी स्नेह-भरी गोद खाली कर दी गयी थी? उत्तर देने के लिए उसे आज ७ दिन का समय मिला था।

मृत्यु का मेहरुन्निसा को भय न था। इस दारुण विरह-वह्नि में तिल-तिल जलने की अपेक्षा, मृत्यु को कंठ से लगा लेना, उसके लिए कहीं अधिक सुखद था। वह तो स्वयं ही मृत्यु का आलिंगन कर लेना चाहती थी। जिस समय उसके पति की रक्तरंजित लाश उसकी गोद में ला रखी गयी थी, उसी समय उसने अपनी छाती में भी कटार भोंक लेनी चाही थी, किंतु जिसका कातर मुख देख, उस दिन उसने अपना बढ़ा हाथ वापस लौटा लिया था, वही भोला शिशु-मुखड़ा अब भी उसे कायर बना रहा था। वह चिंतामग्न थी।

एक-के-बाद-एक छः दिन बीत गये। आज सातवाँ दिन है— अंतिम दिन! आज मेहरुन्निसा को अपना निर्णय देना है। जिंदगी या मौत— दोनों में से किसी एक को उसे चुन लेना है।

इन सात दिनों में उसने लाड़ली को पल-भर भी अपनी आँखों की ओट न होने दिया था। अपने हाथ से स्वादिष्ट भोजन बना-बना, उसे अपनी गोद में बैठा, स्वयं अपने हाथों से खिलाया था। अनेक बार, अनेक प्रकार से, धाय को आदेश-उपदेश दिये थे कि, वह मातृहीना लाड़ली का पालन-पोषण किस विधि से करेगी। आज अंतिम दिन था। आज उसे अपनी प्यारी बेटी से विदा लेनी थी!

उसने बुलाया, तो लाड़ली दौड़ी आयी और आते ही उसके गले में अपने नन्हे-नन्हे हाथ डाल, उसकी पीठ पर झूल गयी।

शहरयार भी भागता-भागता आ पहुँचा और मेहरुन्निसा के दामन का छोर पकड़ कर खींचते हुए उतावली-भरे शब्दों में बोला—"नयी आपा! नयी आपा! जल्दी चलो! अरे, जल्दी!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतने दुःख में भी मेहरुन्निसा मुस्करा पड़ी, बोली—"अरे, पर कहाँ ?"

"चलो भी ! उठो न !"—शाहजादे ने उसे खींचते हुए कहा।

मेहरुन्निसा उठ खड़ी हुई। मृत्यु से पूर्व, अंतिम बार, बच्चों का मन संतुष्ट कर देने के लिए, वह उनके नन्हे-नन्हे भागते-दौड़ते पैरों के पीछे चल पड़ी और बारादरी में आ खड़ी हुई।

नीचे, दरबार में, धीमा-धीमा रव था। उस अस्पष्ट कोलाहल के ऊपर आसफखाँ की तेज वाणी गूँजी—"हठ न करो, नवजवान ! मलिका मेहरुन्निसा की तबीयत बहुत नासाज हैं। वे हरगिज दरबार में नहीं आ सकेंगी।"

युवक ने हठीले स्वर में कहा—"उन्हें आना ही होगा, खाँ साहब ! मैं जानता हूँ, उनको क्या रोग है। उसे दूर करने का बीड़ा उठा कर ही मैं यहाँ तक आया हूँ।"

पीछे कुछ आहट हुई। मेहरुन्निसा ने घूम कर देखा— जहाँगीर उसके पार्श्व में आ खड़ा हुआ था। उसका हृदय वेग से धड़कने लगा। तभी जहाँगीर ने मृदु स्वर में कहा—"रियाया का मन रखना हमारा फर्ज है, मेहरुन्निसा !" और, हाथ बढ़ा उसने चिलमन एक ओर खींच दी।

दरबार का प्रत्येक व्यक्ति साँस रोक, सिर झुका, उठ खड़ा हुआ और जहाँगीर ने गम्भीर स्वर में कहा—"चित्रकार, दिल्ली की धरती पर तुम्हारा स्वागत है।"

उस स्वर को सुन, युवक विस्मित हो उठा। दृष्टि ऊपर उठाते ही, उसके नयनों के सम्मुख, एक थके बटोही का भीगा मुख झूम उठा ! झूम उठी, एक आँधी-तूफान-भरी, सावन-भादों की काली अँधियारी रात ! उसके हाथों से चित्र छूट गया। रेशमी आवरण उड़ कर दूर जा गिरा। ...वह था पति-परित्यक्ता, शोकरता शकुंतला का सलोना चित्र, जो अपनी प्यासी आँखों में आँसू और सूखे अधरों पर गीली मुस्कान सँजोये, काँटों में से फूल चुनती, अपने भरत के लिए राजमुकुट रचने में खोयी थी।

तभी लाड़ली ने पुकारा —"अम्मी !"

मेहरुन्निसा मानो सोते से जागी। उसकी दृष्टि दीवान पर चढ़े उन दो बालकों पर जा अटकी, जिनके काले-काले घुँघराले बालोंवाले सिर मुँडेरे पर आधे झुके नीचे की ओर झाँक रहे थे।

जहाँगीर की भी चेतना लौटी। अपने गले से हीरे का हार उतार, युवक चित्रकार की ओर उछालते हुए, उसने कहा—"दोस्त, मेरी यह नाचीज भेंट कबूल करो।"

युवक के नेत्र हर्ष से जगमगा उठे !

तभी लाड़ली न मेहरुन्निसा से पूछा—"कौन है, अम्मी ? किसकी तसवीर ह ?"

मेहरुन्निसा ने प्राण-पण से प्रयत्न कर, कंठ तक उमड़ आये उस रुदन को बलपूर्वक दबा लिया, कहा—"अब्बाहुजूर जहाँपनाह से पूछो, लाड़ली !" और, साथ ही, अपने गले का चंद्रहार उतार कर उसने उस चितेरे की ओर फेंक दिया !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८५७ के रक्त-रंजित विप्लव को 'केवल असंतुष्ट तत्वों का विद्रोह' कहना इतिहास के साथ अन्याय करना है। देश के कोने-कोने में ऐसे सहज-मुखर साक्ष्य बिखरे पड़े हैं, जो सत्य की उपेक्षा के इस दुराग्रह की स्पष्ट भर्त्सना करते हैं। स्वामी विद्यानंद श्रीवास्तव ने ऐसे कुछ साक्ष्य एकत्र करके, एक नीर-क्षीर-विवेचक इतिहासकार की दृष्टि से उन पर निर्णय देते हुए, एक पुस्तक तैयार की है, जो वस्तुतः १८५७ सम्बंधी हमारे कई भ्रमों का निराकरण कर देती है। इसी शोध के सिलसिले में विद्यानंदजी की निगाह से वे वीर-व्रती नर-पुंगव भी गुजरे, जिनके व्यक्तित्व अभी इतिहास के क्षितिज पर उदित नहीं हुए हैं। मालवे का दौलतसिंह खींची—इस मार्च मास के 'नवनीत' का चरित-नायक—ऐसा ही एक अविस्मरणीय क्रांतिवीर है। विद्यानंदजी की यह खोज, आशा है, देश के इतिहासकारों, विशेषतः शोध में लीन नूतन-उदीयमान इतिहास-निर्माताओं के भीतर १८५७ के स्वातंत्र्य-संग्राम के अंधकार-लुप्त 'नरसिंहों' को प्रकाश में लाने के प्रयत्न का संकल्प जगायेगी।

★

सन् सत्तावन का अजेय वीर दौलतसिंह खींची

रात्रि का अंधकार घनीभूत हो उठा! चारों ओर विराजती निःस्तब्धता भी धीरे-धीरे गहरी होती जा रही थी। राघोगढ़-दुर्ग में भी निःस्तब्धता छायी थी। किंतु यह निःस्तब्धता साधारण न थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंदौर से उत्तर-पूर्व चौबीस मील और देवास से दक्षिण-पूर्व सोलह मील की दूरी पर बने इस दुर्ग पर छायी निःस्तब्धता में जैसे मृत्यु का गहरा सन्नाटा भी शामिल था। सिर्फ दुर्ग से कोस-भर की दूरी पर कुछ व्यक्तियों की, अँधेरे में घूमती छाया का आभास, उनके चलने से होनेवाली आवाज से मिलता था। ये व्यक्ति मौन अपना कार्य कर रहे थे। सहसा अँधेरे को विदीर्ण करती कालीसिंध नदी के किनारे, उस स्थान पर, एक चिता प्रज्वलित हो उठी। आग की लपटों में चिता को घेर कर खड़े व्यक्तियों की आकृतियाँ स्पष्ट हो उठीं और तभी १५-वर्षीय एक किशोर ने अपनी तलवार खींच ली। उसका चेहरा तमतमा उठा और उसने धीर-गम्भीर वाणी में प्रतिज्ञा की—"शपथ है मुझे अपने पिता की इस जलती चिता की आग की, जब तक मरहठों और उनके सहायक अँग्रेजों से अपने पिता की मृत्यु का बदला न ले लूँ, देश को स्वाधीन न कर लूँ, कभी चैन से न बैठूँगा। चाहे मुझे वन-वन भटकना पड़े, कंद-मूल खाकर क्षुधा शांत करनी पड़े; पर मरहठों और अँग्रेजों से आजीवन युद्ध करता रहूँगा।" तलवार उसने म्यान में रख ली और वहाँ खड़े व्यक्तियों के मुँह से एक साथ ही गम्भीर गर्जना निकली—"हर-हर महादेव! ठाकुर दौलतसिंह की जय!"

दौलतसिंह ने अपने साथियों की ओर देखा। आग की लपटों से दमकते उनके चेहरों पर दृढ़ निश्चय की झलक स्पष्ट थी। एक दीर्घ श्वास खींच, दौलतसिंह ने चिता की ओर हाथ जोड़, जैसे अपने स्वर्गवासी पिता को प्रणाम किया और अपने निवासस्थान—राघोगढ़-दुर्ग—की ओर बढ़ चला। बाकी राजपूत भी मौन उसके पीछे-पीछे चलने लगे।

यह सन् १८४० का वर्ष था। मालवा की हालत उस समय बड़ी शोचनीय थी; किंतु वस्तुतः इस घटना का सूत्रपात सन् १६९३ से होता है। मुगल-सम्राट् औरंगजेब उस समय दक्षिण में मरहठों से जूझ रहा था और अनेक मरहठा सरदार मुगल-सेना को उधर व्यस्त देख, मालवा की ओर अपनी लोलुप दृष्टि लगाये थे। मौका मिलते ही, उन्होंने नर्वदा नदी पार कर, मांडु पर आक्रमण किया और प्रचुर धनराशि लूट कर लौट गये। मालवा के निवासी मुगलों से अत्यंत क्षुब्ध थे; अतः उन्होंने मरहठों का स्वागत किया। मरहठों ने मालवा में अपने पैर जमाने शुरू किये—मालवावासियों ने संतोष की साँस ली; किंतु शीघ्र ही उन्हें ज्ञात हो गया कि, उन्होंने मुगलों से छुटकारा पाने की धुन में एक अधिक निर्दय और धनलोलुप शक्ति के हाथों में स्वयं को सौंप दिया है। जिन मरहठों का उन्होंने हृदय से स्वागत किया था, उन्हीं के प्रति उनके हृदय में घृणा के बीज अंकुरित हो उठे। मरहठों का अत्याचार ज्यों-ज्यों बढ़ता गया, त्यों-त्यों ये बीज भी पनपते गये। मालवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के राजपूत सरदारों ने अपनी हिफाजत के लिए 'विलायती मुसलमानों' को अपनी फौज में भर्ती करना शुरू कर दिया। मकरानी, अफगान और सिंधी मुसलमानों को उन दिनों 'विलायती मुसलमान' के नाम से पुकारा जाता था।

इन मुसलमानों ने पूरी वफादारी बरती और अब मालवा में तीन बड़ी शक्तियों के बीच अधिकार के लिए संघर्ष होने लगे—मुगल, मरहठे और राजपूत। राजपूतों के दल में भील और भिलाला भी थे। सन् १८०० तक—पूरे १०७ वर्षों तक—यह अधिकार-संघर्ष निर्बाध रूप से चलता रहा। मरहठों के ग्वालियर, इंदौर, धार, देवास आदि अनेक राज्य इस अवधि में अवश्य स्थापित हुए; किंतु मालवा में उनके पाँव पूरी तरह जम नहीं पाये थे। इस स्थिति का लाभ उठा, अँग्रेजों ने मालवा में प्रवेश किया। पहले मरहठों के साथ उनकी मुठभेड़ हुई और कुछ काल तक लड़ने

[illegible] गयी। देवास-नरेश [illegible]त अवसर मिला। [illegible]क्रमण कर दिया। [illegible]रे भाई कुँवर राम- [illegible] राजपूतों के समक्ष [illegible] चली। अंत में, [illegible] को नाना प्रकार [illegible] ओर मिलाने का [illegible]च्चे राजपूत कहीं [illegible]र कर देवास-नरेश [illegible] भेज दी—"राघोगढ़ [illegible]मर्थ्य के बाहर है!" [illegible]का सूरज अभी पूरी [illegible] था कि, विप्लवी [illegible] बढ़ता-बढ़ता इंदौर [illegible] को सूचना मिल [illegible] के सँभलने के पहले [illegible]ायक सदात खाँ के [illegible] रेजिडेंसी पर टूट [illegible] मुकाबला किया; [illegible] चारों ओर [illegible] एक तम्बू के भीत[illegible] थे। सदात खाँ, [illegible] तथा अन्य व्यक्तियों [illegible] भी मौजूद था। सद[illegible] भूपाल के निष्कासित [illegible] खाँ भी बैठा था। [illegible] करने के बाद, सदात [illegible] कारागार से मुक्त [illegible]

सभी व्यक्ति किस[illegible] कर रहे थे। कुछ [illegible] दौलतसिंह ने दृढ़ [illegible] खाँ! रेजिडेंसी-कोष [illegible] मिले हैं; उनका उप[illegible] में ही करना होगा। [illegible] वली मोहम्मद को भू[illegible] करना भी अभी [illegible] अम्बापानी के नवा[illegible] भी भूपाल पर उत[illegible] शत्रुओं का दमन [illegible] धीरे-धीरे अपना काफी विस्तार कर लिया था; परंतु दौलतसिंह के पिता के हाथ में जब राज्य आया, तो अधिकांश हिस्सा हाथ से निकल चुका था। दौलतसिंह के पिता ने अपने खोये राज्य को पाने की बहुत चेष्टा

के पश्चात् होल्कर, सिंधिया, आदि ने उनका संरक्षण स्वीकार कर लिया। अँग्रेजों ने उन्हें आश्वासन दिया कि, मरहठों के विरुद्ध जो भी शस्त्र उठायेगा, अँग्रेजी फौज उसका दमन करेगी। अँग्रेजों ने अपना यह आश्वासन निभाया भी और कई राज्याधिकारियों ने मरहठों की अधीनता स्वीकार कर ली। किंतु अँग्रेजों तथा मरहठों से डट कर लोहा लेनेवाले राजपूत सरदारों की कमी नहीं थी, जो आजन्म युद्ध करते-करते अपने अंतिम काल में, अपने पुत्र को विरासत के रूप में, अँग्रेजों तथा मरहठों के विरुद्ध लड़ने की सीख दे जाते थे। ठाकुर दौलतसिंह का पिता भी ऐसे ही राजपूत सरदारों में था। दौलतसिंह के वंशजों ने मालवा में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की; पर अँग्रेजों और मरहठों के संयुक्त सैन्य के सम्मुख उसे सदा पराजित होना पड़ा। यही नहीं, उसका बचा-खुचा राज्य भी उससे छिन गया और वह राघोगढ़ के जागीरदार के रूप में देवास के अधीन करार दिया गया। किंतु यह से होनेवाली स्वीकार नहीं की। अंतिम ये व्यक्ति मौन तथा अँग्रेजों के विरुद्ध ल। सहसा अँधेरे में, एक वीर राजपूत के लीसिंध नदी के मृत्यु का आलिंगन कि एक चिता प्रज्व- दौलतसिंह में अपने ी लपटों में चिता गुण वर्तमान थे। उस यों की आकृतियाँ की जलती चिता के अ तभी १५-वर्षीय की थी, वह उसके कि लवार खींच ली। आवेश न थी, वरन् उठा और उसने अपने सम्मान के लिए तिज्ञा की—"शपथ का परिचायक थी। इस जलती चिता आकर दौलतसिंह सा रहठों और उनके योजनाएँ तैयार करत पिता की मृत्यु दिन उषा की लालिमा को स्वाधीन न कि, राघोगढ़-दुर्ग से न बैठूँगा। चाहे तेजी से घोड़े दौड़ाते, कंद-मूल खाकर गये। ये घुड़सवार द पर मरहठों और थे, जो नरवर, पिपलि करता रहूँगा।" हँडिया जा रहे थे। ख ली और वहाँ

नरवर, पिपलिया, एक साथ ही राजपूत-सरदार ठाकुर दौलतसिंह के सम्बंधी होने के साथ-साथ समवयस्क भी थे। राज्य छिन जाने का दुःख उन्हें भी था। ठाकुर दौलतसिंह के सैनिक जब उनके पास पहुँचे, तो उन्होंने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया और ठाकुर दौलतसिंह का साथ देने का वचन दिया। इस प्रकार लगभग पच्चीस छोटे-मोटे राजपूत, भील, भिलाला और विलायती सरदारों ने दौलतसिंह के नेतृत्व में आजन्म मरहठों और अँग्रेजों उसके पीछे-पीछे शपथ ग्रहण की! भावी यारियाँ होने लगीं।

यह सन् १८४० म पहाड़ियों में सहस्रों- की हालत उस समय क शिक्षा लेने लगे। किंतु वस्तुतः इस घ उसके अनुयायियों ने १६९३ से होता हठों के खजानों पर औरंगजेब उस सम भ कर दिया। जो धन से जूझ रहा था और उसे सैन्य संगठन और मुगल-सेना को उधर तैयारियों पर ही की ओर अपनी लो मौका मिलते ही, उन न्य शक्ति बढ़ती गयी। कर, मांडु पर आक्र ों पर छापा मारने धनराशि लूट कर ल क जारी था। यहाँ निवासी मुगलों से अ ी तरह आतंकित हो उन्होंने मरहठों का स न् १८५७ के आरम्भ ने मालवा में अपने पै तिहासिक विप्लव का मालवावासियों ने स दौलतसिंह के लिए किंतु शीघ्र ही उन्हें आ उपस्थित हुआ। उन्होंने मुगलों से छुट स्वातंत्र्य-संग्राम में में एक अधिक निर्द रूप से उसने अँग्रेजों शक्ति के हाथों में स्व द्ध युद्ध की घोषणा जिन मरहठों का कर दी। उसने दुर्गम पहाड़ियों और घोर कानन से घिरे सतवाँस को अपना केंद्र बनाया। हजारों सैनिक वहाँ उसके आदेश पर मरने-मारने को तैयार थे। राघोगढ़ में भी उसने एक हजार सैनिक रख छोड़े थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अँग्रेजों को उनके मरहठे मित्रों ने दौलतसिंह की इस योजना की खबर कर दी। इंदौर-रेजिडेंसी के तत्कालीन अधिकारी विलियम डूरांड ने देवास-नरेश को राघोगढ़ पर नजर रखने का आदेश दिया। सेना में नये व्यक्तियों को नियुक्त करने की छूट भी उसे मिल गयी। देवास-नरेश को तो जैसे बहुप्रतीक्षित अवसर मिला। उसने राघोगढ़ पर आक्रमण कर दिया। किंतु दौलतसिंह के चचेरे भाई कुँवर रामसिंह और उसके वीर राजपूतों के समक्ष देवास-सेना की एक न चली। अंत में, देवासवालों ने रामसिंह को नाना प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाने का प्रयास किया; किंतु सच्चे राजपूत कहीं प्रलोभन में आते हैं? हार कर देवास-नरेश ने डूरांड को सूचना भेज दी—"राघोगढ़ को अधीन करना मेरे सामर्थ्य के बाहर है!"

इधर १-ली जुलाई का सूरज अभी पूरी तरह निकला भी न था कि, विप्लवी सैनिकों का जत्था बढ़ता-बढ़ता इंदौर जा पहुँचा। डूरांड को सूचना मिल चुकी थी; परंतु उसके सँभलने के पहले ही होल्कर-सेना के नायक सदात खाँ के नेतृत्व में विप्लवकारी रेजिडेंसी पर टूट पड़े। अँग्रेज सैनिकों ने मुकाबला किया; पर टिक न सके। महू से हंगरफील्ड अपने आश्वासन के अनुसार सेना न भेज सका और डूरांड के लिए अपने सैनिकों तथा रेजिडेंसी का मोह छोड़, स्वयं को छुपा कर भाग निकलने के अलावा कोई मार्ग न रहा। रेजिडेंसी पर विप्लवकारियों का अधिकार हो गया। दौलतसिंह तथा उसके सहयोगियों को उपयुक्त अवसर मिला। उन्होंने घूम-घूम कर मरहठों का विनाश करना आरम्भ किया।

और, उसके कुछ दिनों बाद—

चारों ओर सशस्त्र सैनिकों से घिरे एक तम्बू के भीतर कुछ व्यक्ति बैठे हुए थे। सदात खाँ, वंशगोपाल, अरोरासिंह तथा अन्य व्यक्तियों के अलावा दौलतसिंह भी मौजूद था। सदात खाँ की बगल में ही भूपाल के निष्कासित नवाब वली मोहम्मद खाँ भी बैठा था। रेजिडेंसी पर अधिकार करने के बाद, सदात खाँ ने उसे वहाँ के कारागार से मुक्त किया था।

सभी व्यक्ति किसी गूढ़ प्रश्न पर विचार कर रहे थे। कुछ क्षणों के मौन के बाद दौलतसिंह ने दृढ़ स्वर में कहा—"सदात खाँ! रेजिडेंसी-कोष से जो ९ लाख रुपये मिले हैं; उनका उपयोग हमें सैन्य संगठन में ही करना होगा। और, मेरे विचार से वली मोहम्मद को भूपाल का नवाब घोषित करना भी अभी उचित नहीं; क्योंकि अम्बापानी के नवाब फाजिल अली का भी भूपाल पर उतना ही अधिकार है। शत्रुओं का दमन करने के पश्चात्, जब सर्वत्र शांति स्थापित हो जायेगी, तभी हम इस पर विचार करेंगे। और, सच पूछो, तो विचार करने के लिए है भी क्या? इन दोनों में जो भी अधिक वीर होगा, भूपाल उसी का होगा और इनकी वीरता की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीना कुमारी अपनी जिल्द का संवार निखार लक्स टॉयलेट साबुन से करती हैं मीना कहती हैं: "यह बिल्कुल सफ़ेद है और बिल्कुल शुद्ध!"

फ़िल्म-स्टुडिओ की चौंधानेवाली रौशनी में भी मीना का रंग रूप निखरा रहता है, क्योंकि—"मैं सदा शुद्ध, सफ़ेद और सुगंधित लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूँ।"

जिल्द में नई सुंदरता और प्रफुल्लता पैदा करने के लिये आप भी लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल कीजिये।

कमाल अमरोही के चित्र "पाकीज़ा" की तारिका

लक्स
टॉयलेट साबुन
चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

LTS. 544-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कसौटी है, हमारा यह स्वातंत्र्य-संग्राम!"

वली मोहम्मद की भौंहें सिकुड़ गयीं; किंतु उसके कुछ कहने के पूर्व ही सदात खाँ ने इनकार में सिर हिलाते हुए कहा—"नहीं! दौलतसिंह, नहीं! इन ९ लाख रुपयों पर हमारा अपना अधिकार है— हम चाहे, जिस तरह खर्च करें और मेरे खयाल से वली मोहम्मद ही भूपाल की गद्दी का असली हकदार है। उसे नवाब घोषित करना बिल्कुल जायज है।"

दौलतसिंह की मुख-मुद्रा कठोर हो गयी। उसने अन्य व्यक्तियों की ओर देखा; किंतु सबने सिर झुका लिये। स्पष्ट था, वे सदात खाँ का साथ दे रहे थे। बड़े प्रयत्न से दौलतसिंह ने स्वयं को रोका। कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद वह बोला—"सदात खाँ! जब अभी से तुम्हारी नीयत में फर्क आ गया, तो हमारा-तुम्हारा साथ कैसे निभ सकता है? अच्छा है, हम अभी ही अलग हो जायें। आज से हमारा रास्ता अलग है; किंतु एक बार फिर कहता हूँ, सोच लो, वर्तमान परिस्थिति में किसी एक को भूपाल का नवाब घोषित करना किसी प्रकार भी उचित नहीं होगा।"

'५७ का सेनानी तात्या टोपे

[चित्र : एक समसामयिक चित्र का वी० एन० ओके-निर्मित रेखाचित्र]

पर सदात खाँ अपनी बात पर अड़ा रहा। लाचार दौलतसिंह अपने साथियों के साथ उससे अलग हो गया। सदात खाँ, नवाब वली मोहम्मद और अन्य सभी लोग बढ़े; लेकिन यह साथ भी अधिक समय तक न रहा। सारंगपुर पहुँचते-न-पहुँचते सदात खाँ और नवाब वली मोहम्मद में विरोध हो गया। कोई एक-दूसरे का एकाधिपत्य स्वीकार करने को तैयार न था। अपनी तकदीर को रोता नवाब वली मोहम्मद दौलतसिंह के पास पहुँचा; किंतु दौलतसिंह ने किसी प्रकार की सहायता करने से साफ इनकार कर दिया। हताश नवाब वली मोहम्मद फिर कहाँ गया, इस सम्बंध में कुछ भी पता नहीं चलता— इतिहास यहाँ पर मौन है!

—२—

झाबुआ-नरेश की भृकुटि तन गयी—"किंतु...." पर तभी बड़वानी-नरेश ने संकेत किया खामोश रहने को। मरहठे मुस्कराये। फिर सिंधिया बोला—"आप समझने की कोशिश तो कीजिये। यह तो सबको ज्ञात है कि, यह विप्लव सम्पूर्ण मालवा में फैल गया है। अँग्रेजों की अभी पराजय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'एनासिन'

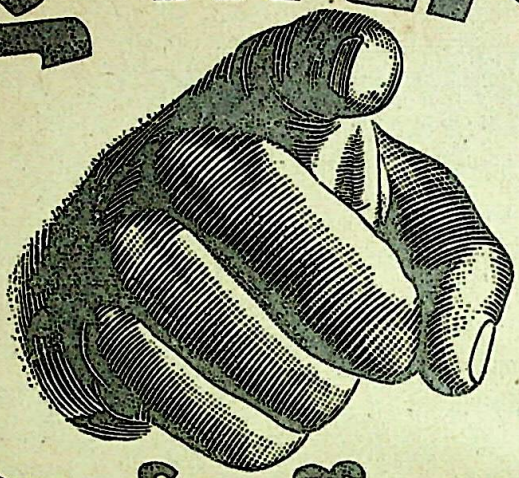

सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों के दर्द से आपको फ़ौरन आराम देती है

क्यों कि इसमें चार दवाइयाँ हैं

'एनासिन' को महज़ एक ही दवा मत समझिये। डाक्टर के नुस्ख़े जैसा चार दवाइयों के मिश्रण का यह वैज्ञानिक फ़ार्मूला है जो आपको सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दान्त-दर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम देता है। सिर्फ़ एक दववाली दर्दकी कोई भी दवा आपको 'एनासिन' जैसा फ़ौरन...हानिरहित ... और अचूक आराम नहीं दे सकती। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

एक पैकट १२ नये पैसे

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD. REGISTERED USER.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो रही है और अंत में किसकी विजय होगी, कहना कठिन है। ऐसे वक्त में इस 'स्वातंत्र्य-युद्ध' का समर्थक कहलाने में कोई हानि तो है नहीं। फिर यह वास्तविकता भी तो नहीं है। विप्लवकारियों को हमने आश्वासन-भर दिया है कि, हम उनके साथ हैं। उसी प्रकार अँग्रेजों को भी तो यह विश्वास है कि, हम उनके साथ हैं। विप्लवी जब पूछते हैं कि, हम अँग्रेजों को धन और शस्त्रास्त्र क्यों देते हैं, तो हमारे पास जवाब भी मौजूद है– 'भाई! अँग्रेज हमसे बलपूर्वक छीन लेते हैं।' उसी प्रकार अँग्रेजों के प्रश्न का भी तो हमारे पास जवाब है कि, जनता की सहानुभूति विप्लवियों के साथ है। हमारी सेना भी उन्हीं के साथ है; किंतु हम तो वस्तुतः आपके ही साथ हैं! फिर भय की क्या बात है?"

सिंधिया की बातें सुन, झाबुआ-नरेश कुछ आश्वस्त हुए। उन्होंने होल्कर, पवार तथा अन्य मरहठा सरदारों की ओर देखा; फिर बोले–"यह दोरंगी नीति कहाँ तक ठीक है, नहीं कहा जा सकता; लेकिन शायद वर्तमान परिस्थिति में यही सर्वोत्तम है। पर अमझेरा-नरेश महाराज बखतसिंह के सम्बंध में क्या तय हुआ? इंदौर-रेजिडेंसी पर अमझेरा की सेना ने ही विजय पायी है। ब्रिटिश एजेंट मि० हेचिंसन को सपरिवार अमझेरा की सेना के कारण ही, प्राणों का मोह ले, भागना पड़ा। वह तो सौभाग्य कहिये कि, हमारी सेना ने उनकी रक्षा की। वहाँ भी तो झाबुआ के विप्लवी उन्हें छीन लेना चाहते थे; पर हमारे सैनिकों के सामने उनकी एक न चली और अब तो समाचार आया है कि, महू के कमांडिंग अफसर मि० हंगरफील्ड ने दो सौ सवार और तोपखाना झाबुआ की ओर, मि० हेचिंसन की सुरक्षा के लिए, रवाना कर दिया है। वह भी दो-तीन दिनों में पहुँच ही जायेगा। पर महाराज बखतसिंह से अँग्रेज बड़े नाराज हैं और अगर उनके सम्बंध में हमने कोई कदम नहीं उठाया, तो हमारे मार्ग में भारी संकट उपस्थित हो सकता है!"

बड़वानी-नरेश ने भी समर्थन में सिर हिलाया और वहाँ बैठे व्यक्तियों के चेहरे पर चिंता की लहर व्याप्त हो गयी। सबने एक-दूसरे की ओर देखा और भविष्य की योजनाएँ बनाने में जुट गये।

× × ×

टप-टप-टप! घोड़े की टापों की आवाज पहाड़ियों में गूँज उठी। अभी-अभी लम्बे सफर से लौटे दौलतसिंह ने पहरेदार की ओर देखा। दुर्ग के सबसे ऊँचे हिस्से पर नियुक्त पहरेदार ने खबर दी– "अकेला ही है। बड़ी तेजी से घोड़ा दौड़ाता चला आ रहा है।...शायद अपना ही कोई व्यक्ति है!" कुछ मिनटों बाद, अश्वारोही ने दुर्ग के सामने घोड़ा रोका और दौलतसिंह के पास पहुँच कर कहा– "ठाकुर साहब! गजब हो गया। हेचिंसन साहब सपरिवार इंदौर पहुँचा दिये गये। होल्कर ने वहाँ विप्लवियों को संतुष्ट करने के लिए प्रचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत ही अच्छे कारण

जिनके लिए इतने लोग

फोहान्स

टूथपेस्ट पसंद करते हैं

१ स्वस्थ मसूढ़े : खूनी, नर्म, जलनेवाले व कमज़ोर मसूढ़ों पर फोहान्स टूथपेस्ट धीरे-धीरे मलनी चाहिए। वे जल्द ही पहले जैसे मजबूत व स्वस्थ हो जायेंगे। फोहान्स ही एकमात्र ऐसी टूथपेस्ट है जिसमें डा. आर. जे. फोहान की पायोरिया नाशक खास पौष्टिक दवा मौजूद है। यही वजह है कि मसूढ़ों की बीमारियों से होने वाले नुकसान से वह आपकी बेहतर रक्षा करती है।

२ मजबूत दान्त : रोजाना फोहान्स टूथपेस्ट से दान्त साफ करने पर दान्तों को गलाने वाले रोगाणु प्रभावशाली ढंग से नष्ट होते हैं क्योंकि इसमें विशेष पौष्टिक दवा है। भारतमें हाल ही में हुई फोहान्स प्रतियोगिता में ४५ से ९३ साल की उम्रवाले प्रतियोगी भी शामिल हुए जिनके सारे दान्त अब भी मज़बूत व स्वस्थ हैं। उन्होंने यही बताया कि रोजाना फोहान्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने से उन्हें यह लाभ हुआ।

३ सांस में बदबू नहीं : फोहान्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने से मुंह बिल्कुल स्वच्छ होता है-- मुंहसे बदबू भी नहीं आती। यह न भूलिये कि सचमुच के ही साफ सांस के लिए आप की जीभ व तालु का स्वच्छ रहना जरूरी है। थोडी सी फोहान्स अपनी जीभ पर रखिये और टूथब्रश या उंगली से उसे हल्के-हल्के साफ कीजिये; फोहान्स टूथपेस्ट दान्तों में फंसे हुए भोजन के सारे कणों व रोगाणुओं को फौरन हटा देगी।

४ चमकदार मुस्कान : फोहान्स टूथपेस्ट इतनी नर्म है जैसी कि मलाई जो दान्तों के रंग को खराब किये बिना उन्हें प्राकृतिक रूप में चमकाती है। दान्तों के नियमित आरोग्य से ही आपकी मुस्कान चमकदार बन सकती है। रोजाना फोहान्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कीजिये।

दन्त चिकित्सक द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर रखा है कि, मिसेज हेचिंसन को वे अपनी बहन मानते हैं। यों लोगों ने उनका विश्वास तो नहीं किया है; फिर भी यह प्रचार....." वह कुछ क्षण रुक कर बोला—"पर दूसरी खबर तो इससे भी भयानक है। झाबुआ और बड़वानी-नरेश ने महाराज बखतसिंह को बंदी बनाने की सारी तैयारियाँ कर रखी हैं। महाराज को इस विश्वासघात की खबर भी नहीं। जल्दी कुछ कीजिये, नहीं तो उनके प्राणों पर भी बन सकती है।"

सफर की थकान अभी मिटी भी नहीं थी; किंतु दौलतसिंह ने अविलम्ब अपने साथियों को तैयार होने का आदेश दिया और कुछ काल बाद ही सब चल पड़े। मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करता यह दल भूपावर पहुँचा। किंतु दौलतसिंह को आने में देर हो चुकी थी। महाराज बखतसिंह, अपने प्रधान सेनापति और तीन अन्य कर्मचारियों के साथ, तब तक बंदी बनाये जा चुके थे। होल्कर, झाबुआ-नरेश और सिंधिया की संयुक्त सेना के संरक्षण में उन्हें महू पहुँचाया जा चुका था।

दौलतसिंह पागलों-सरीखा महू चला। महू पहुँच कर उसने अनेक बार कारागार पर आक्रमण किया; पर तोपों के सम्मुख उसे हर बार पराजित होना पड़ा। निरुपाय दौलतसिंह ने सर्वप्रथम तोपें प्राप्त करने का निश्चय किया। धार और इंदौर के विप्लवी सैनिकों के पास काफी तोपें थीं। दौलतसिंह ने उनसे कुछ तोपें भेजने की प्रार्थना की; किंतु उन लोगों ने तोपें भेजना स्वीकार नहीं किया। हाँ, धारवालों ने सहायतार्थ कुछ विलायती सैनिक अवश्य भेजे। पर ये सैनिक भी महू न आकर भूपावर चले गये और वहीं स्वच्छंदतापूर्वक लूट-पाट करने लगे। अब सतवाँस, अम्बा-पानी अथवा आस्टा से ही तोपें लायी जा सकती थीं और इसमें पर्याप्त समय भी लगता; क्योंकि उस वक्त वर्षा-ऋतु के कारण सभी नदी-नाले जल-प्लावित थे। पर दूसरा कोई मार्ग न था। लाचार, महू में बैठ कर वर्षा-ऋतु के समाप्त होने की प्रतीक्षा करना व्यर्थ समझ, दौलतसिंह सतवाँस लौट आया। असीरगढ़ तक नयी अँग्रेजी फौज के आने का समाचार उसे मिल चुका था। वर्षा के कारण ही वह फौज भी रुकी हुई थी।

दौलतसिंह और उसके साथियों ने तय कर रखा था कि, किसी भी हालत में इस नयी अँग्रेजी फौज को नर्वदा नहीं पार करने दिया जायेगा। अगर यह फौज नर्वदा पार कर लेती, तो निश्चय ही विप्लवकारियों की शक्ति कम हो जाती। अतः दौलतसिंह और उसके साथी इंदौर तथा महू जानेवाले मार्ग पर डटे बैठे थे। दौलतसिंह स्वयं तो सतवाँस में था; पर अपनी सैन्य टुकड़ियों की देखभाल करने बहुधा पहुँच जाया करता था।

वर्षा समाप्त होते ही, असीरगढ़ से अँग्रेजी फौज के प्रस्थान करने का समाचार मिला। होशंगाबाद में आश्रय लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेजिडेंट डूरांड ने जब यह खबर सुनी, तो आगे बढ़ कर वह उससे मिला। डूरांड का साथ होना अँग्रेजी सेना के लिए भी लाभदायक साबित हुआ; क्योंकि मालवा में बिना मार्ग-प्रदर्शन के, इन नये सैनिकों का महू अथवा इंदौर पहुँचना असम्भव था— विप्लवी और उनके समर्थक प्रत्येक गाँव में फैले हुए थे!

डूरांड ने निश्चय किया कि, एक साथ नर्वदा पार करने के स्थान पर अँग्रेजी सेना अलग-अलग टुकड़ियों में नर्वदा पार करेगी। पूरी सेना छः टुकड़ियों में बाँट दी गयी और प्रत्येक टुकड़ी अलग-अलग स्थान से नर्वदा पार करने चली। प्रत्येक टुकड़ी के साथ बड़ी तोपें भी थीं। डूरांड ने कुछ नौकाएँ इधर-उधर से एकत्र कीं और उन्हें अपनी सैन्य टुकड़ियों में बाँट, ऐसे स्थानों पर नदी पार करने का आदेश दिया, जहाँ उनके पहुँचने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। अतः विप्लवी उन्हें रोकने की सारी तैयारियाँ किये रह गये और अँग्रेजी सेना इस ओर आ गयी।

नर्वदा पार करते ही हैदराबाद-रेजिमेंट के ब्रिगेडियर स्टुअर्ट और मेजर ओर कुछ सैनिकों को लेकर सतवाँस चले। दौलतसिंह उस समय हँडिया में अपने सैन्य दल का निरीक्षण कर रहा था। समाचार मिलते ही भागा-भागा सतवाँस पहुँचा। जब वह सतवाँस पहुँचा, तो शाम का अँधेरा चारों ओर छाने लगा था। अँग्रेजी फौज सतवाँस के निकट पहुँच चुकी थी; किंतु तेजी से बढ़ती आनेवाली रात्रि ने उसे सुबह तक के लिए आक्रमण करने से रोक दिया था।

रात्रि की कालिमा फैलती गयी। धीरे-धीरे सर्वत्र सन्नाटा छा गया। एकाएक सतवाँस-दुर्ग का फाटक खुला और एक-एक कर कई मानव-आकृतियाँ बाहर निकलीं। ये आकृतियाँ सतर्क कदमों से आगे बढ़ीं और लुकती-छिपती उस स्थान पर पहुँचीं, जहाँ अँग्रेज सैनिक विश्राम कर रहे थे। ये दौलतसिंह और उसके वीर साथी थे। पलक झपकते ही ये अँग्रेजों पर टूट पड़े। किंतु अँग्रेजी सेना भी बिल्कुल असावधान न थी। वह शीघ्र ही सँभल गयी। डट कर लड़ाई हुई और दौलतसिंह तथा उसके साथी अँग्रेजी तोपों पर कब्जा न कर सके। विफल हो, उन्हें दुर्ग में वापस आना पड़ा।

सुबह होते ही, अँग्रेजी फौज ने हमला कर दिया। दौलतसिंह का दुर्भाग्य अभी प्रबल था। मध्याह्न तक दूसरी अँग्रेजी सेना भी सतवाँस पहुँच गयी। दौलत सिंह और उसके साथी चारों ओर से घेर लिये गये। पर शौर्य के धनी आपत्तियों से घबड़ाते नहीं— न ही वे हिम्मत हारते हैं। इतनी फौज और तोपों के बावजूद अँग्रजों के लिए सतवाँस पर अधिकार पाना हिमालय-विजय के समान ही था।

लगातार कई दिनों तक युद्ध होता रहा। दौलतसिंह के साथी एक-एक कर मारे जा रहे थे। अंत में, दौलतसिंह और उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM-6

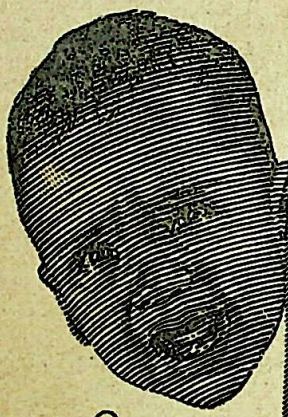

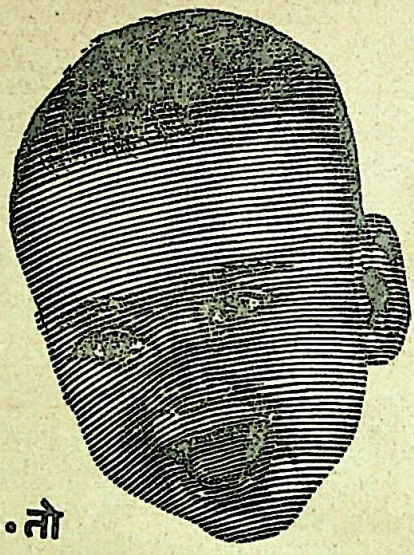

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

...तो
मॅनर्स ग्राइप
मिक्श्चर दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगानें के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण हैं।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथियों ने निश्चय किया कि, अधिक दिनों तक युद्ध जारी रखना व्यर्थ है। या तो मैदान में उतर कर दुश्मनों को मार-काट कर निकल जाया जाये, अथवा लड़ते-लड़ते वीरों के समान रणभूमि में मृत्यु का आलिंगन किया जाये।

उस दिन उगते सूरज की लालिमा में राजपूतों ने एक-दूसरे का स्नेह से आलिंगन किया और केसरिया धारण कर मैदान में उतर पड़े। धीर-स्थिर गति से दौलत सिंह अपने साथियों के साथ उत्तर की ओर तैनात ब्रिटिश वाहिनी की ओर बढ़ा। दूसरी दिशाओं की अँग्रेज सेना भी अपने सैनिकों की सहायता में सिमट कर उधर ही बढ़ने लगी। दौलतसिंह तो इसी अवसर की प्रतीक्षा में था। ज्यों ही उत्तर दिशा की ब्रिटिश सेना के सहायतार्थ, पूरब और पश्चिम के सैनिक उधर पहुँच कर अपनी तोपें जमाने लगे, दौलतसिंह और उसके साथी गजब की फुर्ती से मुड़ पड़े। उनमें असाधारण तेजी आ गयी और जब तक अँग्रेज सैनिक सँभलें, दौलतसिंह और उसके साथी पश्चिम की बची-खुची सैन्य पंक्ति को तोड़ते हुए जंगलों में घुस गये। दुर्गम कानन में दौलतसिंह और उसके साथियों को खोजना आसान नहीं था; अतः अँग्रेज सेनापति मन मसोस कर रह गया। हाँ, निर्दोष ग्रामवासियों पर तरह-तरह के अत्याचार कर, उसने अपना रोष शांत करने का प्रयास अवश्य किया।

इधर जंगलों में लुकता-छिपता दौलत-सिंह अपने साथियों के साथ अम्बापानी की ओर बढ़ा।

—३—

"नहीं भाईजान!"—अफजलअली ने कुछ दृढ़ता के साथ कहा—"हमें भूपाल पर हमला कर ही देना चाहिए। अँग्रेजों-द्वारा गद्दी पर बैठायी गयी सिकदरजहाँ बेगम को अपने अधीन करने में देर करना उचित नहीं होगा।"

"मुन्नाजान!"—नवाब फाजिलअली ने शांत स्वर में कहा—"हमारी लड़ाई अँग्रेजों के विरुद्ध है। सिकंदरजहाँ बेगम को अपने अधीन करने का सवाल उतनी अहमियत नहीं रखता। हम भूपाल न सही, कहीं और से भी तो लड़ाई लड़ सकते हैं। एक नादान-नासमझ औरत पर हाथ उठाना सच्चे मुसलमान का काम नहीं।"

तभी पहरेदार ने आकर सूचना दी—"ठाकुर दौलतसिंह अपने साथियों के साथ आपके पास आने की इजाजत चाहते हैं।"

दोनों भाई लपकते हुए बाहर आ गये। उन्होंने दौलतसिंह को छाती से लगाया और भीतर ले आये। दौलतसिंह ने सतवाँस पर अँग्रेजी फौज का अधिकार होने की सारी कहानी कह सुनायी। उसके चुप होते-न-होते अफजलअली ने तलवार खींच ली—"भाईजान! अब ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता। आपका फैसला कुछ भी हो; मैं अपने साथियों के साथ अँग्रेजी फौज पर छापा मारने का आखिरी फैसला कर चुका हूँ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टाक कार के टिकाऊपन के रेकार्ड्स

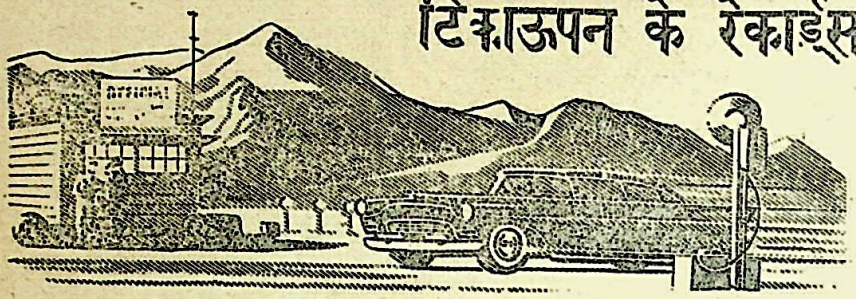

सुरक्षित मोटरचालन के टायर के प्रमाण हैं

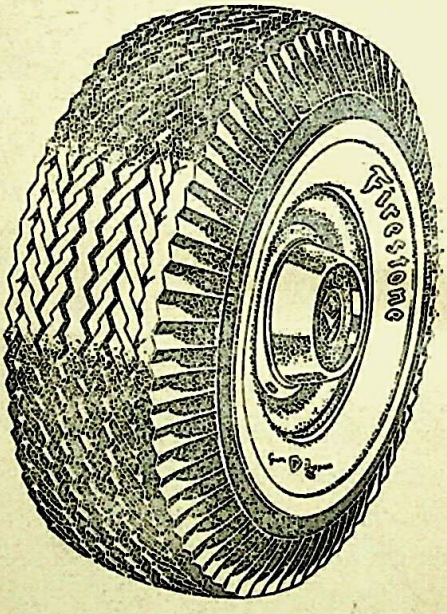

स्टाक कार के बारे में औसतन १०८ मील प्रतिघण्टे की रफ्तार से ५०,००० मील का अमरीकी रेकार्ड, जिस पर सहज विश्वास नहीं होता, एक टायर के भी खराब हुए बिना फायरस्टोन टायरों पर ही कायम हुआ। इन टायरों में जिस निर्माण-कुशलता और किस्म संबंधी नियंत्रण से यह टिकाऊपन आया है वे ही आपकी कार के फायरस्टोन टायरों को अति सुरक्षित व टिकाऊ बनाते हैं।

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यूबरहित या ट्यूबसहित

टायर जिससे मानसिक शांति बनी रहती है

L-67A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अफजल !"—फाजिलअली ने पूर्ववत् स्थिरता से कहा—"जल्दी का काम शैतान का होता है। दौलतसिंह मेरे जिगरी दोस्त का बेटा है। वह यहाँ से नाउम्मीद नहीं लौटेगा। हम उसकी मदद जरूर करेंगे; लेकिन जल्दी करने से हमारा नुकसान ही हो सकता है। अभी यह थका-माँदा आया है। इसे आराम करने दो। फिर हम सोच-विचार कर आगे की कार्रवाई तय करेंगे।"

अफजलअली खामोश हो गया। नवाब साहब का कहना जायज था। और, इसके दूसरे या तीसरे दिन नवाब फाजिलअली ने दौलतसिंह और अफजल-अली को अपने पास बुला कर कहा—"मैंने इस बीच अच्छी तरह सोच-समझ लिया है। मेरे खयाल में मौजूदा हालत में खुल्लम-खुल्ला लड़ने के बजाय, अँग्रेजी फौज का पीछा करना और मौका मिलते ही छापा मारना अधिक अच्छा रहेगा। साथ ही, एक साथ लड़ने के बजाय अलहदा-अलहदा रह कर लड़ना ठीक रहेगा; क्योंकि वक्त-जरूरत में हम एक-दूसरे की मदद कर सकें। मेरी राय में दौलतसिंह अपने साथियों के साथ धार की ओर बढ़नेवाली अँग्रेजी फौज के पीछे पड़े। अफजल ! तुम सिहोर की तरफ जाओ और मैं खुद होशंगाबाद और हरदा होकर बढ़नेवाली अँग्रेजी फौज का मुकाबला करूँगा।"

राय माकूल थी, अतः दौलतसिंह अविलम्ब ही अपने साथियों के साथ धार जानेवाली अँग्रेजी सेना के पीछे चल पड़ा। किंतु अब तक काफी देर हो चुकी थी दौलतसिंह के धार पहुँचने के पूर्व ही अग्रेजों का वहाँ अधिकार हो चुका था। साथ ही, दौलतसिंह की गिरफ्तारी के लिए आदेश भी निकल चुके थे। दौलतसिंह को गिर-फ्तार करानेवाले को दो हजार रुपये बतौर इनाम दिया जानेवाला था। डूरांड अब तक अपने दल-बल के साथ मंदसौर रवाना हो चुका था।

धार में समय गँवाना व्यर्थ समझ, दौलतसिंह डूरांड के पीछे लगा। पीछा करते हुए कई बार उसने अँग्रेजी फौज पर छापा मारा; किंतु विशेष सफलता नहीं मिली। अँग्रेजी सेना बढ़ते-बढ़ते मंदसौर जा पहुँची और देखते-ही-देखते वहाँ के दुर्ग पर गोले उगलने लगी। सिंधिया की विप्लवी सेना ने वहाँ फिरोज खाँ को बादशाहे-हिन्द एलान कर गद्दी पर बैठा दिया था। उसने बड़ी बहादुरी से अँग्रेजी फौज का मुकाबला किया। चार रोज तक लड़ाई चलती रही। दौलत-सिंह भी रह-रह कर छापा मारता; किंतु उसके बाद, ब्यावर से अँग्रेजी फौज के पहुँचते ही युद्ध ने पलटा खाया। अँग्रेजी फौज की ताकत बढ़ गयी और गोलों की मार से मंदसौर-दुर्ग क्षत-विक्षत हो गया। फिरोज खाँ तथा दौलतसिंह के लिए मंद-सौर छोड़ देने के अलावा कोई चारा न रहा। अतः शाहजादा अपने सैनिकों के साथ दुर्ग से निकल कर अँग्रेजी फौज की उस टुकड़ी पर टूट पड़ा, जिस पर पीछे से दौलतसिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

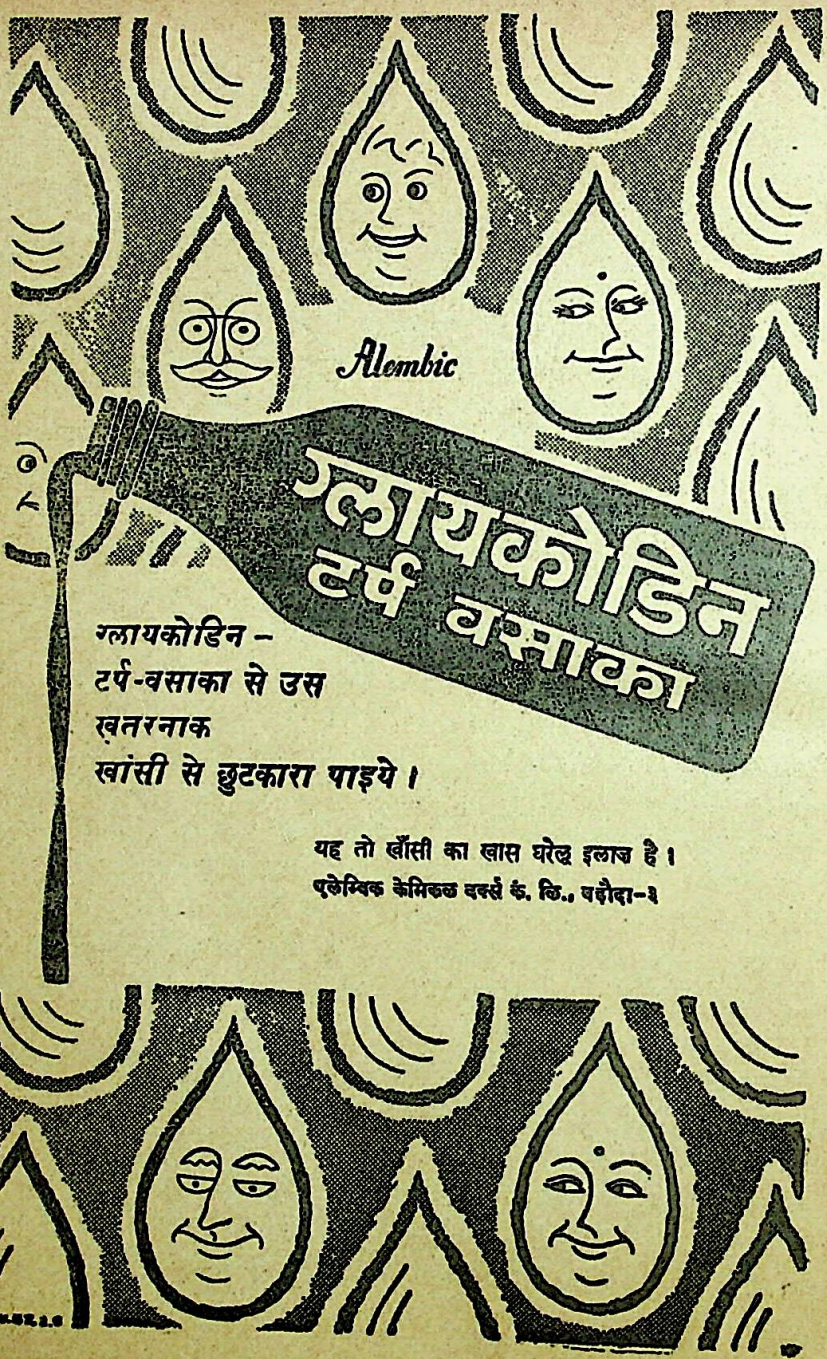

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने छापा मारा था। दोनों ओर की मार से अँग्रेज सैनिक घबड़ा उठे और शाहजादा अपने साथियों के साथ निकल कर आगे बढ़ा। ठाकुर दौलतसिंह ने उससे मिल कर अपना परिचय दिया और इस हार से हौसला न हारने के लिए भी कहा। फिर राय-मशविरा कर एक ओर से दौलत सिंह तथा दूसरी ओर से शाहजादा फिरोज अँग्रेजी फौज का पीछा करने लगे।

इंदौर पहुँच कर दौलतसिंह को समाचार मिला कि, अमझेरा-नरेश महाराज बखत-सिंह, उनके प्रधान गुलाबसिंह, सेनापति ठाकुर भवानसिंह और अन्य व्यक्तियों को सैनिक न्यायालय में हाजिर किया गया था। रेजिडेंट हैमिल्टन, सिंधिया, होल्कर, देवास-नरेश, नवाब बावनी और दतिया के वकील ने मिल कर महाराज बखतसिंह, गुलाबसिंह, भवानसिंह आदि को प्राण-दंड की सजा दी। सिर्फ एक व्यक्ति चैनराय को आजन्म दीपांतर-वास का दंड दिया गया है। जहाँ काननवासी भीलों ने स्वातंत्र्य-ध्वज फहराया था,वहीं गुलाब सिंह, ठाकुर भवान सिंह तथा अन्य व्यक्तियों को पेड़ों से लटका कर फाँसी भी दे दी गयी। पर जब तक गवर्नर जनरल और महाराज सिंधिया की अनुमति नहीं आ जाती, तब तक महाराज बखतसिंह की फाँसी रुकी रहेगी।

सुनते ही, दौलतसिंह क्रोधाभिभूत हो उठा। महाराज बखतसिंह को मुक्त करने के लिए उसी क्षण अपने साथियों के साथ प्रस्थान करने को तैयार भी हो गया; किंतु तभी उसे सूचना मिली कि, देवास की सेना ने राघोगढ़ पर आक्रमण कर दिया है। अगर जल्दी मदद नहीं पहुँची, तो अनर्थ हो सकता है। स्वभावतः ही दौलतसिंह अपने साथियों के साथ राघोगढ़ की ओर बढ़ चला।

रात्रि का अंधकार विदीर्ण करता हुआ, जब बालरवि अपनी किरणों-द्वारा राघोगढ़ को दिन निकलने की सूचना दे रहा था, देवास के हर्षोन्मत सैनिकों पर दौलत-सिंह और उसके साथी टूट पड़े। चौबीस मील की दूरी रातोरात तय कर वे उस वक्त राघोगढ़ पहुँचे ही थे और थकान की तनिक परवाह किये बिना, युद्धभूमि में उतर पड़े थे।

इस अप्रत्याशित आक्रमण से देवास के सैनिक घबड़ा उठे। दौलतसिंह और उसके साथी विद्युत्-सी फुर्ती से शत्रुओं को धराशायी करते हुए किले की ओर बढ़ने लगे। कुँवर रामसिंह को बाहर से सहायता आने की जानकारी मिल गयी। अतः दुर्ग से बाहर निकल, अपने बचे-बचाये साथियों के साथ, दूने उत्साह से वह शत्रु-सेना पर टूट पड़ा। देवास के सैनिकों की हिम्मत साथ छोड़ गयी और वे मैदान छोड़ कर भागने लगे। जो थोड़े-बहुत बचे, उन्होंने देवास जाकर महाराज रुक्मांगदराव पवार को सारी कहानी सुना दी।

× × ×

ब्रिटिश सेनापति रोज ने एक बार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिलकश...
मजेदार...
संतोषदायक...

पनामा

एक सिगरेट जिन्हे पीकर आप

लुत्फ उठायेंगे खुश होंगे और याद रखेंगे

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता:
गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २५.

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रिय उद्योग

G.T. 222 Greens' Adv.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्रि के अंधकार और फिर अपने पीछे-पीछे चलनेवाले अश्वारोही-दल की ओर देखा। सर्वत्र छायी निस्तब्धता में सिर्फ घोड़ों की टाप की आवाज सुनायी दे रही थी ! महाराज रुक्मांगद-राव पवार से दौलतसिंह के राघोगढ़ में होने की सूचना मिलते ही, हैमिल्टन ने रोज को राघोगढ़ घेर लेने की आज्ञा दी थी। रोज अभी वहीं जा रहा था। सुबह के पूर्व ही राघोगढ़ पहुँच जाने की योजना थी। तोपखाना भी दिन में वहाँ आ जानेवाला था।

दूसरे दिन, राघोगढ़-दुर्ग के भीतर बैठे दौलतसिंह के पास एक राजपूत सैनिक ने पहुँच कर कहा—"ठाकुर साहब ! अनर्थ हो गया। दुर्ग को चारों ओर से अँग्रेजी फौज ने घेर लिया है और ब्रिटिश सेनापति रोज ने संदेश भेजा है कि, हम चौबीस घंटे के अंदर आत्मसमर्पण कर दें। अगर हमने आत्मसमर्पण नहीं किया, तो ब्रिटिश तोपें दुर्ग का नामोनिशान नहीं रहने देंगी।"

दौलतसिंह की भौंहें तन गयीं। उसने उस राजपूत सैनिक को वहाँ से जाने की आज्ञा दी और अपने भाई रामसिंह के साथ परिस्थिति की गम्भीरता पर विचार करने लगा। वंश और कुल को जीवित रखने के विचार से दौलतसिंह ने एक बार रामसिंह को आत्मसमर्पण करने की राय दी; किंतु एक सच्चा राजपूत इसे कैसे मान सकता था ? अंतःपुर की ललनाओं ने भी दौलतसिंह की इस राय का समर्थन नहीं किया। बाकी राजपूत सैनिक भी आत्मसमर्पण की अपेक्षा लड़ते-लड़ते प्राणों की आहुति चढ़ा देने के पक्ष में थे।

अतः रोज के संदेश का जवाब बंदूकें चला कर दिया गया। ब्रिटिश तोपें भी गरज उठीं। किंतु दुर्ग की दीवारें इतनी मोटी और मजबूत थीं कि, उन्हें तत्काल ही ध्वस्त नहीं किया जा सकता था। दिन-भर लड़ाई होती रही; पर ब्रिटिश सैनिक जहाँ थे, वहीं रहे—दुर्ग तक पहुँचने में वे सफल न हो सके।

सूर्यास्त के समय दुर्ग के भीतरी प्रांगण में एकाएक अग्नि प्रज्वलित हो उठी। धीरे-धीरे उसकी लपटें दुर्ग की दीवारों की ऊँचाई लाँघ जैसे नभ को छूने का प्रयास करने लगीं। राजपूतों ने देखा और एक-साथ उनके कंठों से फूटा—"धन्य हैं हमारी ललनाएँ ! हर-हर महादेव !" राजकुल की ललनाओं का यह जौहर ब्रिटिश सैनिकों ने भी देखा और वे विस्मय-विमूढ़-से देखते रह गये !

रात्रि का घोर अंधकार जब सर्वत्र व्याप्त था, तो दुर्ग का दरवाजा खुला। एक-एक करके कई मानव-आकृतियाँ दुर्ग से बाहर निकलीं और एक ओर की ब्रिटिश सैन्य-पंक्ति पर टूट पड़ीं। इस अप्रत्याशित आक्रमण से ब्रिटिश सैनिक घबड़ाये; किंतु उनके सँभलने के पूर्व ही, ये मानव-आकृतियाँ मार-काट करती हुईं, ब्रिटिश घेरे को तोड़, रात्रि के अंधकार में विलीन हो गयीं। ये आकृतियाँ थीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दौलतसिंह और उसके साथियों की।*

—४—

"ठाकुर साहब!"—आनेवाले गुप्तचर ने सूचना दी—"कर्नल रोज को राघोगढ़ तो बिल्कुल खाली मिला ही, पिपलिया में भी उसे कोई नहीं मिला। वहाँ के ठाकुर समाचार मिलते ही, उसे खाली कर वन का आश्रय ले चुके थे। अब ब्रिटिश सेना आस्टा-मार्ग से सिहोर होते हुए राहतगढ़ में नवाब फाजिलअली पर आक्रमण करनेवाली है। उसका तोपखाना और गोला-बारूद से भरी गाड़ियाँ भी महू से प्रस्थान कर चुकी हैं। आस्टा होकर ये गाड़ियाँ राहतगढ़ जायेंगी। जब तक ये गाड़ियाँ नहीं पहुँचेंगी, रोज चुपचाप इंतजार करेगा।"

दौलतसिंह के माथे की सिकुड़नें गहरी हो गयीं। उसने गुप्तचर को जाने का आदेश दिया। फिर वह अपने साथियों के साथ आगे का कार्यक्रम निश्चित करने लगा। तोपखाना और गोला-बारूद से भरी इन गाड़ियों को रोकना अत्यंत आवश्यक था; पर किस प्रकार? प्रश्न विकट था। कुछ सोच कर दौलतसिंह ने एक व्यक्ति को बुलवाया और उसे कुछ आदेश दिये। दूसरे दिन, उस व्यक्ति ने आकर बताया—"लगभग दो सौ घुड़सवार आगे और इतने ही पैदल सैनिक पीछे हैं। घुड़सवारों के बाद पंद्रह गाड़ियाँ हैं, जिनमें छोटी-छोटी तोपें हैं। तोपों के पीछे गोले और कारतूस से भरी सात-आठ गाड़ियाँ हैं और उनके बाद बारूद से भरी गाड़ी। इन गाड़ियों के कारण, पूरे दल को बहुत धीरे-धीरे अपना रास्ता तय करना पड़ रहा है। इंदौर से यह दल देवास न जाकर आस्टा होकर निकल जायेगा।"

दौलतसिंह पुनः अपने साथियों के साथ विचार करने बैठा। योजना खतरनाक थी, इससे दौलतसिंह ने स्वयं जाने का निश्चय किया। कुँवर रामसिंह और अन्य सभी ने वहाँ जाने की इच्छा प्रकट की और दौलतसिंह को जाने से रोका; पर निश्चय के धनी दौलतसिंह ने स्वीकार नहीं किया। तय हुआ, बाकी साथी वहीं रह, उसके आदेश की प्रतीक्षा करेंगे।

× × ×

ब्रिटिश सैन्यदल अपना तोपखाना लिये जिस समय आस्टा की ओर बढ़ रहा था, ठीक उसी समय निकट के वन से निकल कर एक छाया रास्ते पर आ गयी। एक बार उस छाया ने उस दल को देखा और फिर कुछ फासला देकर उसके पीछे-पीछे चलने लगी। लुकती-छिपती उस छाया ने उस दल का पीछा करते-करते दिन-भर का समय व्यतीत कर दिया।

---

* ४ जनवरी, सन १८५८ को राघोगढ़ पर अधिकार करने के पश्चात् रोज ने राघोगढ़-जागीर की जब्ती की घोषणा की। लगभग दो वर्ष पश्चात्, सन् १८६० में, राघोगढ़ पारितोषिक-स्वरूप बड़ी पाँती देवास के महाराजा रुद्रमांगद राव को दे दिया गया; किंतु आधा हिस्सा छोटी पाँती देवास के महाराजा हैवत राव को भी मिला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों को सुन्दर रखने के सरल साधन

टाटा का
सुगन्धित नारियल का तेल और शैम्पू

दि टाटा ऑयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरसता के लिये

सुघड़ता के लिये

सुन्दरता के लिये

फिनले की **साड़ियाँ**

दी फिनलेक्स ग्रुप की मिलें

ASP/JF-22

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाम की कालिमा जब धीरे-धीरे गहरी होने लगी, तो ब्रिटिश सैन्य दल एक सुरक्षित-सा स्थान तलाश कर विश्राम के लिए रुक गया। सैनिकों के पहरे में बारूद और गोले-कारतूस से भरी गाड़ियाँ खड़ी की गयीं। संयोग से बारूद की गाड़ी जहाँ खड़ी की गयी, उससे ठीक सटी एक ऊँची-सी पहाड़ी थी। तीनों तरफ सैनिक तैनात कर दिये गये– चौथी ओर तो प्रकृति-प्रदत्त वह पहाड़ी थी ही!

रात्रि जब काफी व्यतीत हो चुकी और सर्वत्र नीरवता विराजने लगी, तो दिन के आरम्भ से ही ब्रिटिश सैन्य दल का पीछा करनेवाली छाया, अपने गुप्त स्थान से निकल आयी। उसने सतर्कतापूर्वक एक बार चारों ओर देखा। पहाड़ी से सटा कर खड़ी की गयी बारूद-गाड़ी पर भी उसकी दृष्टि पड़ी। क्षण-भर वहीं खड़ी रह, कुछ सोचने के बाद, वह धीरे-धीरे चक्कर काट कर पीछे की ओर से उस पहाड़ी के निकट जा पहुँची। पहाड़ी ऊबड़-खावड़ तथा नुकीले पत्थरों से भरी थी; फिर रात का अँधेरा। उस पर चढ़ना आसान न था। जरा-सी चूक हुई, पाँव फिसले और फिर कहीं कुछ शेष नहीं रह जाता। किंतु वह छाया तनिक नहीं हिचकी। मन-ही-मन भगवान का स्मरण कर वह उस पहाड़ी पर चढ़ने लगी।

पैर फिसले; पर उसने सँभाल लिया– ठोकरें खायीं; पर उसने अपना ऊपर चढ़ना न रोका। आखिर किसी प्रकार वह पहाड़ी पर काफी ऊपर पहुँच गयी। वहीं रुक कर उसने नीचे नजर डाली। कारतूस और बारूद से भरी गाड़ी ठीक नीचे ही थी। छाया ने एक पत्थर की ओट में हो, चकमक पत्थर से आग जलायी और अपने साथ लायी बत्ती में आग लगा उसे नीचे गिरा दिया। जलती बत्ती सीधे बारूद-गाड़ी में जाकर गिरी। पल-भर का विलम्ब किये बिना छाया, पहाड़ी पर ऊपर की ओर चढ़ने लगी। दो-तीन-पाँच-आठ-दस– कुल दस ही हाथ वह छाया ऊपर चढ़ पायी थी कि, एक भयंकर विस्फोट से सारा प्रदेश काँप उठा*। ऊपर चढ़ती छाया का उस विस्फोट के वेग से संतुलन गड़बड़ाया, पाँव फिसले और वह लुढ़क पड़ी। किंतु भाग्य उसका साथ दे रहा था। जिस ओर विस्फोट हुआ था, उस ओर न लुढ़क कर, वह पहाड़ी की दूसरी ओर गिरी और अचेत हो पड़ी रही।

उस छाया को जिस वक्त होश आया, पहाड़ी के दूसरी ओर, ब्रिटिश सैन्य दल में भयंकर कोलाहल मचा हुआ था। छाया उठी और चुपचाप लुकती-छिपती वहाँ से दूर निकल गयी। पहाड़ों और जंगलों से

---

* थामस लो-लिखित पुस्तक 'सेट्रल इंडिया' में भी इसका उल्लेख है–"...मध्यरात्रि में अचानक भयंकर गर्जना हुई। मालूम हुआ, बारूद की गाड़ी उड़ गयी है।...दृश्य बड़ा भयंकर था। सम्भवतः कोई पत्थर पहाड़ से नीचे लुढ़क पड़ा होगा और उसके आघात से बारूद में आग लग गयी होगी।... काफी नुकसान उठाना पड़ा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हुए, जब वह अपने निर्दिष्ट स्थान में पहुँची, तो पल-भर तो उसके साथी अवाक्-से उसके काले पड़े शरीर को देखते रहे; फिर लपक कर उन्होंने उसका स्वागत किया। कुँवर रामसिंह उससे लिपट गया—"भैया!"

वह छाया दौलतसिंह ही थी!

योजना पूरी हो चुकी थी। राहतगढ़ पर आक्रमण का संकट कुछ काल के लिए टल चुका था; किंतु इसकी सूचना नवाब को देना जरूरी था; अतः विश्राम कर अपनी थकावट दूर करने के पश्चात् दौलतसिंह ने अपने साथियों के साथ राहतगढ़ के लिए प्रस्थान किया।

राहतगढ़ पहुँच, दो-तीन दिनों तक आराम करने के पश्चात्, दौलतसिंह जब २१ जनवरी, १८५८ को नवाब फाजिल-अली के पास पहुँचा, तो वे बड़े परेशान थे। ज्ञात हुआ, अँग्रेजी फौज सिहोर में सैकड़ों बेगुनाहों को मृत्यु की गोद सुला, भूपाल पहुँची और वहाँ से तीन दिन पहले भिलसा के लिए रवाना हो चुकी है। कुछ ही काल बाद वह राहतगढ़ भी आ पहुँचेगी। अफजल-अली और वानपुर के राजा साहब मर्दन सिंह को अँग्रेजी फौज की राह में रोड़े अटकाने भेजा गया था; किंतु उनका भी कुछ समाचार नहीं मिला था। अगर अँग्रेजी फौज को बढ़ने से रोका न गया, तो अनर्थ हो जायेगा।

सुनते ही दौलतसिंह ने नवाब फाजिल-अली से मशविरा किया और अपने राजपूतों को इकट्ठा कर जाने के लिए तैयार हो गया। दुर्ग के गुप्त मार्ग से निकल कर वह बीना नदी के किनारे-किनारे बढ़ा। गवारिसपुर-घाट पर अँग्रेजी सेना को इस पार आने से रोकने की योजना थी; किंतु उसे पहुँचने में देर हो चुकी थी। अँग्रेजी सेना घाट उतर चुकी थी और अब उसे रोकना सम्भव न था।

दौलतसिंह तत्काल राहतगढ़-दुर्ग लौट आया। समाचार मिलते ही युद्ध की सारी तैयारियाँ हो गयीं। अँग्रेजी सेना भी जल्दी ही आ पहुँची। गोलियाँ चलने लगीं, तोपें दागी जाने लगीं। शुरू में तो नवाब की फौज का पलड़ा भारी रहा; पर शीघ्र ही युद्ध ने पलटा खाया और अँग्रेजी फौज भारी पड़ने लगी। तीन-चार दिनों के युद्ध के बाद २७ जनवरी, १८५८ को अँग्रेजी फौज ने राहतगढ़ को चारों ओर से घेर लिया और उसके दूसरे दिन, जब दुर्ग की दीवारें अनेक स्थानों से टूट गयीं, तो दौलतसिंह अपने बचे-बचाये साथियों को लेकर, दुर्ग से बाहर आ, ब्रिटिश फौज पर टूट पड़ा। संयोग से, उसी वक्त वानपुर-नरेश, महाराज मर्दनसिंह ने भी पीछे से अँग्रेजी सेना पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश फौज में भगदड़ मच गयी। दौलतसिंह ने इस सुअवसर से लाभ उठा, ब्रिटिश फौज की रसद से भरी पचासों गाड़ियों और तम्बू-कनातवाली गाड़ियों में आग लगा दी। डेढ़ सौ बैल, ५५ ऊँट और दो हाथी भी उसके हाथ लगे; किंतु वह उन्हें लेकर करता क्या? अतः उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ सैनिक उन जानवरों को दूर छोड़ने ले गये। इस बीच काफी समय व्यतीत हो गया और जब वह युद्ध में प्रवृत्त हुआ, तो युद्ध का रंग पुनः पलट चुका था। गुप्त मार्ग पर भी अँग्रेजों का अधिकार हो गया था। दुर्ग में लौटना आसान नहीं था।

दौलतसिंह ने अपने साथियों के साथ जंगलों में आश्रय लिया और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। इधर सारी रात तोपें गरजती रहीं। २९ तारीख को भी तोपें चलती रहीं; पर सायंकाल आते-आते दुर्ग से तोपों का चलना बंद हो गया। दौलतसिंह का हृदय भावी आशंका से धड़क उठा। वह दुर्ग की ओर सतर्कता-भरी निगाहों से देखता रहा। डेढ़-दो प्रहर रात्रि बीतने के बाद, उसे गुप्त मार्ग के निकट दुर्ग से कुछ व्यक्तियों के नीचे उतरने का आभास मिला। उस स्थान पर ब्रिटिश फौज की ओर से भूपाल के सैनिक नियुक्त थे। दौलतसिंह ने उन्हें अपनी ओर मिला लिया और उसकी सहायता से राहतगढ़-दुर्ग के बचे-खुचे व्यक्ति सकुशल वहाँ से निकल जंगलों में खो गये!

— ५ —

भयंकर वन-प्रांतर, दुर्गम पहाड़ियाँ! और, इन भयानक गिरि-पर्वतों की गोद में छिपी बाघ की गुफाओं में जब साँझ उतर रही थी, तब दौलतसिंह ने अपने साथियों के साथ प्रवेश किया। राहतगढ़ से चलने के बाद ही, उसने कुँवर रामसिंह और अपने साथियों को बहुत समझाया था कि, वे उसका साथ छोड़, आत्मसमर्पण कर दें, जिससे बाकी जीवन शांति से बिता सकें; किंतु शौर्य के पुजारियों को भला यह कैसे मान्य हो सकता था?

फिर रामसिंह का कहना भी सर्वथा उचित था—"आप भूल रहे हैं, भाईसाहब कि, स्टुअर्ट साहब ने मंदसौर से महीतपुर जाते समय, किस प्रकार राह चलते लोगों को पकड़ कर वृक्षों से लटका, फाँसी दे दी थी। यह कैसे कहा जा सकता है कि, आत्मसमर्पण करनेवाले अपने सैनिकों के साथ भी वे ऐसा ही व्यवहार न करें!" दौलतसिंह मौन रह गया। आत्मसमर्पण की बात उसने फिर नहीं की। सतवाँस में जब वह पहुँचा, तो उसे ज्ञात हुआ कि, अमझेरा, बड़वानी, झाबुआ, रतलाम, आदि रियासतों की जनता बहुत उत्तेजित है। अतः उन्हें संगठित कर एक बार पुनः अँग्रेजों से मोर्चा लेने के विचार से वह बाघ की गुफाओं में पहुँचा था। सतवाँस में ही उसे ज्ञात हुआ था कि, उसके पुराने सहायकों में ठाकुर राजसिंह, सूरजमल और सदात खाँ के सम्बंध में लोगों को उनके जीवित होने का अनुमान है; क्योंकि युद्ध में घायल होने के बाद भी, उनके मृत शरीर नहीं पाये गये थे। दौलतसिंह को विश्वास था कि, वे अगर मिल जायें, तो वह दूने उत्साह से पुनः स्वातंत्र्य-संग्राम आरम्भ कर सकता है।

अपने साथियों के साथ उसने एक गुफा में आश्रय लिया और थक कर चूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए शरीर को विश्राम देने के लिए सोने का प्रयास करने लगा। किंतु चिंतित आँखों में नींद कहाँ? मध्यरात्रि के आसपास एक प्रकार की आहट से वह सजग हो उठ बैठा। बगल की किसी गुफा में निश्चय ही कुछ और लोग थे। लेकिन कौन? दोस्त अथवा दुश्मन?

दौलतसिंह ने अपने साथियों को सावधान किया और चार व्यक्तियों को साथ ले उसी ओर चल पड़ा, जिधर उसे आहट मिली थी। एक गुफा में अलाव चलाये पाँच जटाजूटधारी व्यक्ति बैठे थे। छिपता-छिपाता जब दौलतसिंह गुफा के निकट पहुँचा, तो उसके कानों में आवाज आयी—"महाराज बखतसिंह को परसों, 'ध्वज-स्थान' पर लाकर फाँसी दे दी गयी।"

सुनते ही, दौलतसिंह सामने पहुँच गया और कड़कते स्वर में बोला—"तुम लोग कौन हो? अमझेरा-नरेश महाराज बखतसिंह के शुभचिंतकों में हो अथवा दुश्मनों में?"

अलाव के पास बैठे एक व्यक्ति ने शांति से उत्तर दिया—"हम चाहे कोई हों; पर तुम्हारे मित्र हैं। तुमने पहचाना नहीं? देखो, ये हैं ठाकुर सूरजमल, ये हैं ठाकुर राजसिंह और मैं हूँ, सदात खाँ!"

दौलतसिंह लपक कर सदात खाँ से लिपट गया। उसके साथी भी गुफा में आ गये। सदात खाँ ने अपने बाकी दोनों साथियों का भी परिचय दे दिया—अमझेरा के स्वर्गीय सेनापति भवानसिंह के पुत्र ठाकुर हरिसिंह और ठाकुर राजसिंह के आश्रित भिलाला राजपूत ठाकुर जयरामसिंह!

दौलतसिंह को महाराज बखतसिंह के फाँसी लटकाये जाने का दुःखद समाचार भी विस्तार से सुनने को मिला। इस घटना के समय वहाँ उपस्थित रहनेवाले ठाकुर जयरामसिंह ने बताया—"लाखों की संख्या में लोग रोती आँखों से यह करुण दृश्य देख रहे थे! किंतु मजबूरी हमारा हाथ रोके हुए थी। सुना है कि, हैमिल्टन साहब ने गवर्नर साहब को पत्र लिखा—'महाराज बखतसिंह इतने अप्रिय थे कि, किसी ने उनकी मृत्यु पर तनिक भी शोक नहीं प्रकट किया!'* किंतु यह असत्य है!"

दौलतसिंह की मुखाकृति क्रोध से तमतमा उठी; किंतु यह क्रोध का अवसर न था और क्रोध करके किया भी क्या जा सकता था! किसी प्रकार स्वयं को संयत कर वह अपने सभी साथियों के साथ भविष्य की योजना बनाने लगा। तय हुआ कि, हरिसिंह अमझेरा से भली-भाँति परिचित है, अतः वह और जयराम-सिंह घूम-घूम कर नवयुवकों को इकट्ठा करें। जब हजार-दो हजार व्यक्ति एकत्र हो जायेंगे, तो हम इंदौर-रेजिडेंसी पर

---

* वस्तुतः हैमिल्टन ने गवर्नर जनरल के पास पत्र लिखा था—"मैं यहाँ यह बता देना चाहता हूँ कि, बखतसिंह की फाँसी के विरोध में न किसी व्यक्ति ने आवाज उठायी, न ही किसी ने कोई दुःख प्रकट किया!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आक्रमण करेंगे। रेजिडेंसी अधिकार में आते ही हमारी शक्ति बहुत बढ़ जायेगी और हम अन्य स्थानों पर भी अँग्रेजों को परास्त कर सकेंगे।

दूसरे दिन से ही हरिसिंह और जयरामसिंह निकल पड़े। दिन-रात श्रम कर उन्होंने अल्प समय में ही लगभग ५ हजार उत्साही नवयुवकों को एकत्र कर लिया। ठाकुर दौलतसिंह का हृदय आनंदातिरेक से भर उठा। भारत को अँग्रेजों के बंधन से मुक्त करने का अपना स्वप्न उसे सजीव होता दीख पड़ा। अपने साथियों के साथ मिल कर उसने योजना बनायी कि, इन पाँच हजार सैनिकों को दस भागों में बाँट लिया जाये। ठाकुर हरिसिंह, कुँवर रामसिंह, ठाकुर राजसिंह, ठाकुर सूरजमल, ठाकुर जयरामसिंह, ठाकुर मनोहरसिंह, ठाकुर भीमसिंह, ठाकुर नरपालसिंह, सदात खाँ और स्वयं दौलतसिंह के अधीन एक-एक सैन्य टुकड़ी रहेगी। आगामी पूर्णिमा को जब पूर्ण चंद्रग्रहण से सर्वत्र अंधकार रहेगा, तो प्रत्येक दल अपने-अपने ध्येय-स्थान के निकट पहुँच कर छिप जाये और घोर अंधकार होते ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ आक्रमण कर दे।

इंदौर-रेजिडेंसी, इंदौर-राजमहल, धार, झाबुआ, मंडलेश्वर, देवास, अमझेरा तथा सतवाँस पर एक साथ आक्रमण की योजना थी। एकादशी के दिन सभी सैनिक गुफा में एकत्र होनेवाले थे।

किंतु दुर्भाग्य ओट में खड़ा हँस रहा था। भारत को तो पराधीन होना था; फिर स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति चढ़ानेवाले इन वीरों की मनोकामना कैसे पूरी उतरती!

झाबुआ और बड़वानी-नरेशों को दौलतसिंह और उसके साथियों की इस योजना की खबर लग गयी। तत्काल ही ब्रिटिश अधिकारियों को सूचित किया गया और अँग्रेजी फौज बाघ की गुफाओं की ओर चल पड़ी। झाबुआ और बड़वानी की सेना भी साथ थी।

फाल्गुन शुक्ल दशमी का मनहूस दिन था वह! उस समय बाघ की गुफाओं में ठाकुर दौलतसिंह, राजसिंह, सूरजमल, सदात खाँ आदि के अतिरिक्त पैंतीस या चालीस राजपूत और थे। दुश्मनों की सेना का समाचार मिलते ही वे दोनों ओर के प्रवेश-मार्ग पर डट गये। अँग्रेजी फौज आ पहुँची और दोनों ओर से एक-दूसरे पर बंदूकें चलायी जाने लगीं। कम होते हुए भी दौलतसिंह का पक्ष मजबूत था; क्योंकि उसे प्राकृतिक सुरक्षा प्राप्त थी; पर संख्या में अधिक होने से अँग्रेजों का पक्ष ही धीरे-धीरे सबल होने लगा। दौलतसिंह के साथी जैसे-जैसे मरते जाते थे, उसका पक्ष कमजोर पड़ता जा रहा था।

द्वादशी के प्रातःकाल बाहर से एकत्रित नवयुवकों से कुछ सहायता मिली और किसी प्रकार मार-काट करते हुए अचेत पड़े दौलतसिंह और राजसिंह को उनके साथी वहाँ से निकाल ले गये। सदात खाँ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाकुर सूरजमल,रामसिंह एवं अन्य कई व्यक्ति इस युद्ध में मृत्यु को प्यारे हो गये।

इसके बाद की कथा मानो उपसंहार ही है। कई महीनों तक मृत्यु से युद्ध करने के पश्चात् दौलतसिंह ने उस पर विजय पायी। किंतु उस समय तक स्थिति और भी भयानक बन चुकी थी। दौलतसिंह को जीवित या मृत पकड़ानेवाले व्यक्ति को झाबुआ, बड़वानी-नरेश, होल्कर, सिंधिया तथा अन्य कई राज्य के राजाओं ने इनाम देने की घोषणा की थी। नवम्बर, सन् १८५७ की घोषणा की ही पुनरावृत्ति थी यह; किंतु इस बार गवर्नर जनरल ने अलग से एक घोषणा की थी, जिसके अनुसार दौलतसिंह का पता देनेवाले को काफी रकम इनाम में दी जानेवाली थी।

परंतु दौलतसिंह के वफादार साथियों ने सदा उसकी रक्षा की। बाद में, वह छिपता-छिपाता, निमार प्रदेश में अपने सम्बंधियों के पास पहुँचा। उसी समय संयोगवश तात्या टोपे भी निमार पहुँचा ने अंतिम प्रयास की आशा में, दौलतसिंह उससे मिला; लेकिन सैद्धांतिक मतभेद के कारण दोनों अलग-अलग हो गये। निराश और भग्नहृदय दौलतसिंह ने अपने साथियों के साथ गोविलगढ़ के भयानक जंगलों का रास्ता लिया। भाटों के कथनानुसार वह उसके बाद बीस वर्षों तक जीवित रहा। अँग्रेजों ने उसे पकड़ने की बड़ी चेष्टा की; पर उन्हें सफलता न मिली। उल्टे अपने अंत समय तक दौलतसिंह मौका पा उनका खजाना लूट लिया करता था। उसकी मृत्यु कैसे हुई, कोई नहीं जानता; किंतु सन् १८७८ के बाद, भारत के इस लाड़ले सपूत के सम्बंध में इतिहास कुछ नहीं बताता।

★

नागौर-विजय के बाद, मारवाड़ के राव चूंडा ने अपनी नवविवाहिता पत्नी किशोरकँवरि के वशवर्ती हो, घर का सारा प्रबंध उसे सौंप दिया। रानी थी कंजूस। उसने घोड़ों का घी भी बंद कर दिया। यह देख, राव बोले—

कलह करे मत कामणी घोड़ां घी देतां; आडा कदेक आवसी वाड़ेली वहतां!

—घोड़ों को घी देने में कलह न किया करो—युद्ध के समय वही काम आयेंगे।

उत्तर मिला— आक चटूकै पवन भख तुरियां आगल जाय;
हूँ तन पूछूँ सायबा, हिरण किसा घी खाय।

—हरिण तो आक चरते हैं और हवा पीते हैं, घी नही खाते; फिर भी दौड़ने में तो घोड़ों से आगे ही रहते हैं।

राव चुप हो गये। धीरे-धीरे घी का खर्च तो ३३० मन से घट कर १ मन रह गया; पर घोड़े दुर्बल होते गये और राजपूतों ने भी साथ छोड़ दिया। इसी समय शत्रुओं ने हमला किया और सैन्य दृष्टि से कमजोर राव युद्ध में मारे गये।—'राजस्थानी' से

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशिंग वेल (मानव की मंगल-यात्रा)– मनुष्य का विकास कैसे हुआ? क्या यह वस्तुतः एक संयोग था अथवा इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए उसने संघर्ष किया? ये प्रश्न नये नहीं हैं। इन्हें लेकर अब तक बहुत-कुछ लिखा गया है और अधिकतर यही बताया गया है कि, इस विकास में अवसर अथवा संयोग का अधिक हाथ रहा है। निश्चय ही, यह उत्तर बड़ा आसान है; किंतु ऐसा प्रमाण भी तो उपलब्ध है, जो बताता है कि, प्राणियों के– विशेषकर स्तनधारी प्राणियों के– जीवन में, अधिक सजगता के प्रति संघर्ष करने की अद्भुत शक्ति है। इस पुस्तक में बड़े ही रोचक ढंग से, कहानियों के रूप में, इसी पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक का लेखक जेराल्ड हर्ड आधुनिक पाश्चात्य जगत् का अद्वितीय तत्वदर्शी होने के साथ-साथ भारतीय वेदांत का भी अच्छा ज्ञाता है। स्वामी प्रभवानंदजी-द्वारा स्थापित हालीउड के वेदांत-केंद्र की मान-प्रतिष्ठा को विश्वव्यापी बनाने में हर्ड का बहुत बड़ा हाथ रहा है। हक्सले भी हर्ड की प्रेरणा से ही इस केंद्र में आया। अपनी इस पुस्तक में हर्ड ने स्तनधारी प्राणियों के क्रमिक विकास की कथा कही है– कोई ६-७ करोड़ वर्ष पूर्व की कहानी, जब धरती पर बड़े छोटे-छोटे जीव-जंतु रहते थे। उन्हें प्रयास-द्वारा स्वयं को विकसित करने की इच्छा-शक्ति प्राप्त थी। क्षणिक सफलता के आवेश में प्रायः सभी जंतुओं ने अपनी इस अद्भुत शक्ति का गलत उपयोग किया। सिर्फ एक प्राणी ने अपनी बुद्धि नहीं खोयी– उसने अपनी सजगता-संवेदनशीलता-सतर्कता बनाये रखी। यही प्राणी विकसित होकर मनुष्य बन गया है – सृष्टि के समस्त प्राणियों में

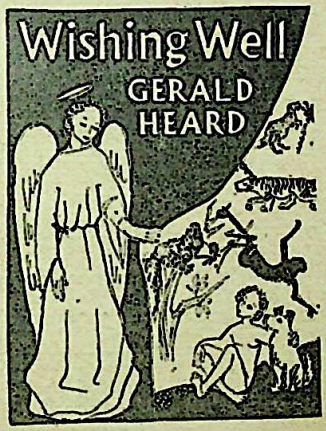

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मात्र ऐसा प्राणी, जो अभी भी निर्माण की दिशा में अपनी इच्छा-शक्ति का उपयोग कर सकता है, जिसे दिया गया दान अभी तक समाप्त नहीं हुआ है और जिसमें अभी भी अपने भविष्य को इच्छानुरूप गढ़ने की शक्ति है! किसी को भी आकर्षक प्रतीत हों– ऐसी कहानियों के रूप में लेखक ने अपनी इस पुस्तक में यही दर्शाया है। इस सर्वांग-सुंदर पुस्तक की शोभा सुप्रसिद्ध चित्रकर्तृ सुसाने सूबा के कलात्मक चित्रों से द्विगुणित हो गयी है। पुस्तक का मूल्य है–१७ (सत्रह) रुपये ६ (छः) नये पैसे। मिलने का पता है – फेबर ऐंड फेबर लिमिटेड, २४ रसेल स्क्वायर, लंदन। अथवा किसी भी अच्छे पुस्तक-विक्रेता के जरिये यह प्राप्त की जा सकती है।

परम्परा – राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर की त्रैमासिक खोज-पत्रिका है। प्रस्तुत अंक 'डिंगल-कोशांक' है। डिंगल भाषा में प्राप्य नौ प्राचीन कोशों का वैज्ञानिक शोध के साथ सम्पादन करके उन्हें सटिप्पणी यहाँ प्रकाशित किया गया है। किसी भाषा का कोश उसकी समृद्धि का मापदंड है। डिंगल-भाषा के ये कोश स्पष्ट करते हैं कि, उसका प्राचीन साहित्य काफी विविध और वैभवपूर्ण रहा है। दूसरे, भाषा-कोश किसी देश या प्रदेश-विशेष के सांस्कृतिक प्रतिबिम्ब भी होते हैं। प्रस्तुत नौ कोशों का शब्द-चयन इस बात को स्पष्ट कर देता है। इन कोशों का सम्पादन श्री नारायणसिंह भाटी ने किया है। हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि, सम्पादक ने इस दुरूह कार्य में बड़े विवेक, प्रतिभा एवं श्रम का परिचय दिया है। हमारी राय में, डिंगल भाषा के विकास और उसके साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी इसमें जोड़ देते, तो विशेष हितकर होता।

राजस्थानी शोध-संस्थान-द्वारा बड़ा श्लाघ्य काम हो रहा है। ऐसी संस्थाओं की हमारे यहाँ बड़ी आवश्यकता है। परम्परा का वार्षिक मूल्य १० रु० और एक अंक का ३ रु० है।

*

मास की पठनीय पुस्तकें

कामेंट्रीज आन् लिविंग : कृष्णमूर्ति : विक्टर गोलेंज लि०, लंदन : मू० ९.०० भारत : मेरा घर (अनु०) सिंथिया बौल्ज : पर्ल पब्लिकेशन्स, बम्बई-१ : मू० ७५ न.पै.

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है ...
वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं!

खेलना कूदना तंदुरुस्ती के लिये ज़रूरी है—पर खेल कूद हो या काम काज, हम गंदे ज़रूर हो जाते हैं। गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं, जिन से हमारी तंदुरुस्ती को ख़तरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के कीटाणुओं को धो डालता है और आप की रक्षा करता है।

हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये और गंदगी के कीटाणुओं से अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये—यह आप के शरीर को ताज़गी देता है!

L. 266-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखने में सुन्दर

यहाँ आधुनिक बनावट और परम्परागत गौरव का मिश्रण हैं... बोनट से लेकर फैले हुए पीछे के भाग को एक नाटकीय हवाई बहाव सी रेखा जोड़े हुए हैं

चलाने में आनन्ददायक

चलाने में आश्चर्यजनक आसानी...गियर बदलने में निर्विघ्नता-आसानी से पढ़ा जाने व पहुँच के भीतर यन्त्रों का समूह और विशाल दृश्य वाला सामने का शीशा

बहुतायत से सजा हुआ भीतरी भाग

अनुरूप रंगों में सीटों के कवर...दरवाजा खोलते ही छोटी लाइट चालू हो जाती है और बन्द करते ही बुझ जाती है—अच्छी स्प्रिंग और लेटेक्स फोम कुशन वाली सीटें

नए सुरक्षा साधन

आकस्मिक अवसरों में ड्राइवर और अगली सीट वालों को अधिक भीतर गया हुआ स्टियरिंग व्हील और पैडींग किए हुए जोड़ सुरक्षित रखते हैं...चारों तरफ सेफ्टी ग्लास

नई हिन्दुस्थान एम्बेसेडर

को चलाकर देखने के लिये आप आमन्त्रित हैं

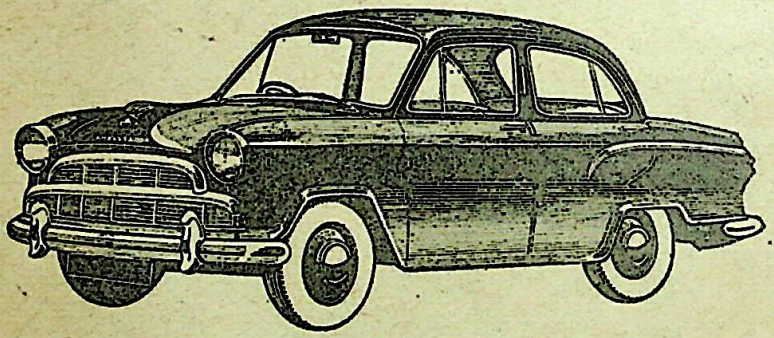

हिन्दुस्थान मोटर्स लि० | मूल्य रु. ११,१६१/– फैक्टरी पर |

विक्रेतागण :-आगरा, अम्बाला कैन्ट, अजमेर, अहमदाबाद, इलाहाबाद, बड़ौदा, बंगलौर, बम्बई, बरेली, बनारस, कलकत्ता, कटक, कोयम्बटोर, डिब्रूगढ़, गोहाटी, इंदौर, जयपुर जोधपुर, जलगाँव, जोरहाट, जमशेदपुर, जालंधर सिटी, जम्मू, कानपुर, कोल्हापुर, लखनऊ, मद्रास, मदुरा, मंगलोर, मेरठ, मानभूम, नागपूर, नई दिल्ली, नेपाल, पटना, पूना, पलायमकोटाइ, पान्डिचेरी, राजकोट, रांची, सतना, सम्बलपुर, शिलोंग, सिकन्दराबाद, सिलचर, श्रीनगर, तेजपूर, त्रिचुरापल्ली, त्रिवेन्द्रम, विजयवाडा, विजयानगरम्।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

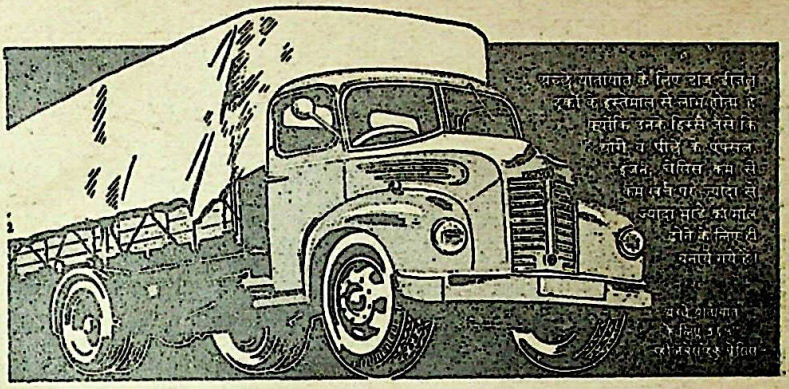

डोज

डीजल

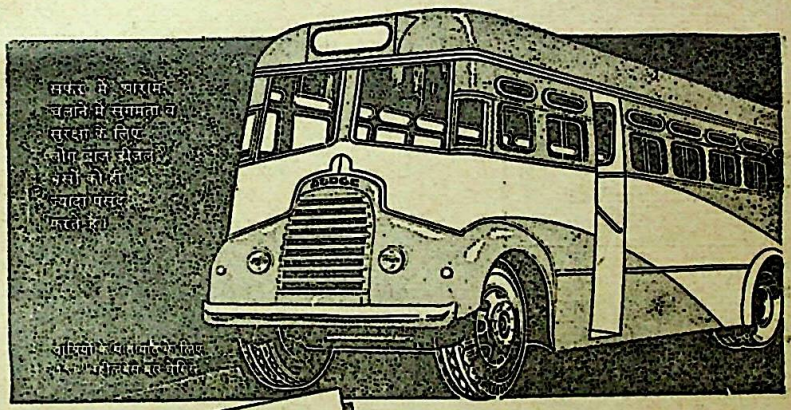

प्रगतिशील निर्माणकर्ता
दि प्रीमियर आटोमोबाइल्स लि.
बम्बई

अपने निकटतम् विक्रेता से सम्पर्क स्थापित कीजिए

BETA-2-PAL-214-HIND

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तक बिल्कुल मुफ़्त

किसी भी कारण से किसी भी आयु में खोए हुए।

शक्ति और यौवन

को फिर से प्राप्त करने के लिये

"शक्ति बिना औषध" मुफ़्त मंगावें

डी० ए० बी० लेबारेट्रीज़
पोस्ट बक्स १३७२ दिल्ली-६

इकोनोमिक डुप्लीकेटर
११) रु. तथा उच्चतर मूल्यों में

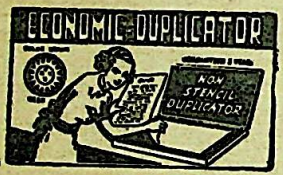

* स्टेन्सिल पेपर के बिना
* बिना अतिरिक्त खर्च के
* बिना किसी खास तरह की कलम या कागज के
* बिना छापने की स्याही के

एक बार के संचालन में ही एक या अधिक रंगों की सैकड़ों प्रतियां सुलभ हो जाती हैं।

सोल डिस्ट्रीब्युटर्स
सेलारका ब्रदर्स
जी. पी. ओ. बाक्स नं. २६२ ए. बम्बई १

सुलेखा पेन REGD.

संतोष जनक कार्य के लिए

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :
पेन मेन्स इण्डस्ट्रियल सर्विसेज़
कांदीवली, बम्बई (एस० डी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोभनीय और उपयोगी !

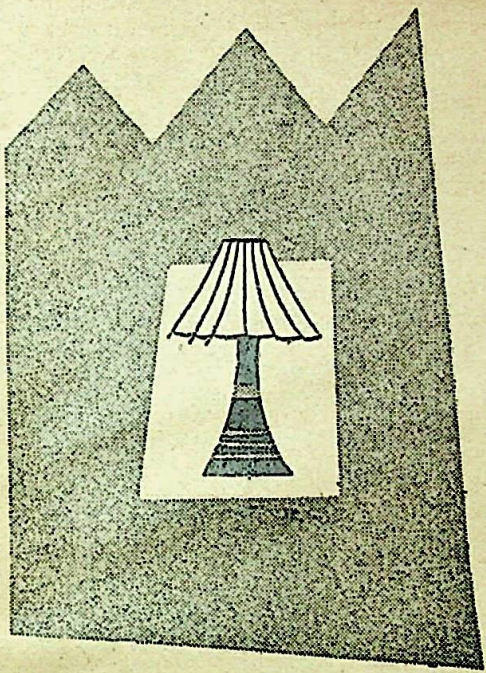

भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुएं केवल अनूठी कलाकृतियां ही नहीं होतीं, वे दिन प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली वस्तुएं होती हैं। घरेलू-अर्थव्यवस्था के आधार पर निर्मित होने वाली इन वस्तुओं में उच्चकोटि का शिल्प कौशल और कलाकार की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का सम्मिश्रण होता है। सुन्दरता और उपयोगिता का सुन्दर समन्वय होने के साथ साथ ये हमारी कला अनुभूति को प्रवल और श्रेष्ठतर वनाती हैं। ये शानदार जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

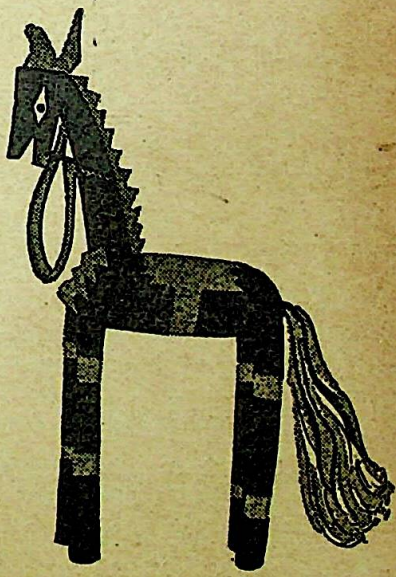

सुन्दरता और उपयोगिता के लिये

भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुएं

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

नयी दिल्ली

D.A.F./398 . 1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

McK
McKENZIES LIMITED

हमसे परामर्श करें

निम्नलिखित विशेष कार्यों के सम्बन्ध में :—

- वाइब्रो और प्रीकास्ट पाइल फाउन्डेशन्स
- आर. सी. सी. सिलोज
- पानी की टंकी
- रिजर्वायर्स
- ट्रेलर, ट्रालियाँ
- टीपिंग वेगन्स
- एम्बुलेन्स, रेडियो और एक्सप्लोजिव की गाड़ियाँ
- मैल-मलीदा निकालनेवाली गाड़ियाँ
- सड़कें, बाँध और पुल
- वाटरप्रूफ छतें
- भीतरी सजावट
- आधुनिक फर्नीचर
- मोटर गाड़ियों के ढाँचे (सभी खात, अलुमिनियम और कम्पोजिट)

प्रधान कार्यालय :—

मैकेन्ज़ीस लिमिटेड

शीवरी, बम्बई.

(टे. नं. ६०००७/८/९)

बच्चे का स्वास्थ्य...

बच्चों की तिल्ली व जिगर की बीमारी का ठीक से इलाज न किया जाय तो वह जानलेवा बन जाती है। अपचन, भूख न लगना, पेट का बढ़ जाना, हल्का बुखार आदि तिल्ली व जिगर खराब होने के सूचक हैं।

शीघ्र ही जम्मी से सलाह लीजिए और मार्गदर्शन प्राप्त कीजिए।

जम्मी का

लिवरक्योर

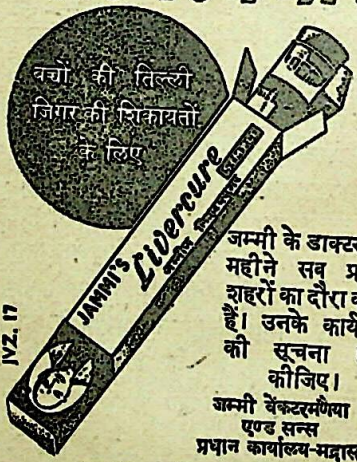

जम्मी के डाक्टर हर महीने सब प्रमुख शहरों का दौरा करते हैं। उनके कार्यक्रम की सूचना प्राप्त कीजिए।

जम्मी वेंकटरमणैया एण्ड सन्स
प्रधान कार्यालय-मद्रास

शाखाएँ: बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, नागपुर, बंगलोर, विजयवाडा, तिरुचिरापल्ली, और कुम्भकोणम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

FOR THE FIRST TIME IN INDIA

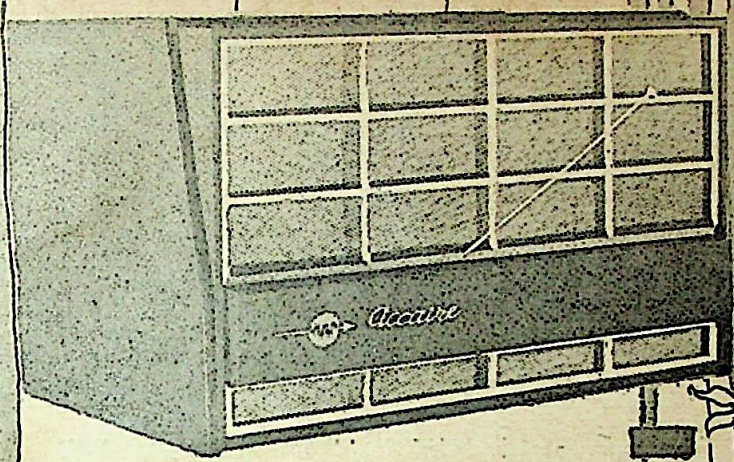

A RANGE OF

SIX COLOURS FOR YOUR CHOICE

Accaire AW—101

ROOM AIRCONDITIONER

Pick your new Accaire in a colour that blends with your room. Its unique design and compact construction makes it an excellent piece of furniture to adorn any room. What's more, it is made by an organisation with over a quarter century of experience in airconditioning.

OTHER ADVANTAGES INCLUDE :

- Better cooling capacity
- More silent operation
- Lower running cost
- Better service after sale
- One year's guarantee

Manufactured by

AIR CONDITIONING CORPORATION PRIVATE LTD.

Pioneers in Airconditioning in India

CALCUTTA • BOMBAY • NEW DELHI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रा के शिष्टाचार

★ सफाई की गणना देवत्व के बाद की जाती है। सफाई की आदत डालिये। खाद्य पदार्थों के कचरे, फलों के छिलके तथा पानी आदि प्लैटफार्म पर या डिब्बे में न फेंकें। प्लैटफार्म पर तथा डिब्बों में रखे कूड़े के बरतन को प्रयोग में लायें।

★ प्लैटफार्म पर इधर-उधर थूकना अस्वास्थ्यकर है। यह बुरी आदत है। कृपया थूकदान का प्रयोग कीजिये।

★ रेलवे-स्टेशनों पर ठंडा तथा साफ किया पानी पीने के लिए मिलता है। किसी अन्य काम के लिए उसका उपयोग न करें।

★ सीट पर पैर रख कर बैठने से दूसरे यात्री बुरा मानेंगें। कृपा करके डिब्बे में ठीक से बैठें।

★ अपने भारी सामान को 'ब्रेक-वान' में 'बुक' करा दें तथा अपने साथ के यात्रियों और स्वयं अपने लिए डिब्बे में अधिक स्थान की गुंजायश करें।

★ यदि साथ के यात्री सिगरेट पीने के लिए मना करें तो ट्रेन में सिगरेट पीना जर्म है। जब साथ के यात्री मना करें, या बहुत भीड़ हो, या दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द हो, तो सिगारेट न पियें।

★ रेलवे राष्ट्रकी सम्पत्ति है। रेलवे की सम्पत्ति को क्षति पहुँचाने वाले या चोरी करने वाले व्यक्ति को पहचान लेकर उसकी सुरक्षा करने में आप हमारी सहायता कर सकते हैं। यूनीफार्म–धारी रेलवे कर्मचारी को–जो ड्यूटी पर हों–उनकी सूचना देनी चाहिए। गैर कानूनी रुप में खतरे का जंजीर खींचने वाले के साथ भी इसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए।

मध्यम तथा पश्चिमी रेलवे द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

REPRESENTATIONS

ARE

OFFERED

★

KANOI TEA
(PRIVATE) LTD

POST BOX No. 982
CALCUTTA-I

TWO THINGS TO REMEMBER

"K"
for **Kanoi**
&
Kanoi
for
tea

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े दानेवाली सफेद चमकदार चीनी के लिए
प्रख्यात

श्री लक्ष्मीजी शुगर मिल्स कं. लि.
महाली

श्री अजुधिया शुगर मिल्स कं. लि.
राजा का साहसपुर
मुरादाबाद

और
सर्वाधिक टिकाऊ
एवं सस्ती
शर्टिंग, कोटिंग, धोतियों
व
चादरों
के
लिए

अजुधिया टेक्सटाइल मिल्स कं. लि. दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभात (स्टोव और लैम्प) प्राडक्टस् कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
नोबल चैम्बर्स, पारसीबाजार स्ट्रीट, बम्बई - १

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंगाई कला

अर्काट में छपा हुआ वस्त्र

किसी भी राष्ट्र का सौंदर्य के प्रति झुकाव उसके कुशल कारीगरों द्वारा सृजित कला के नमूनों से प्रदर्शित होता है। भारतीय रंगरेज अपनी छपाई व रंगाई कला द्वारा भारतीय नारी के रंग के प्रति आकर्षण का सम्मान करता है। उसके सुन्दर वस्त्र रंगरेज के रंगो से सुन्दरतम् बन जाते हैं।

भारतीय उपभोक्ता की जटिल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अतुल ने उच्चतम् किस्म के रंगो का उत्पादन करने में बड़ा कदम उठाया है। उत्पादन कार्य उच्च शिक्षा प्राप्त रसायन शास्त्री व वैज्ञानिकों के हाथों में है। उत्साह और मेल से काम करते हुए आशावादी युवक भारत की कला और औद्योगिक परम्परा को बढ़ाने में संलग्न हैं। हर भारतीय के लिये यह अभिमान और खुशी की बात है—रंगो के इस युग में भारत के इस नए उद्योग की सहायता किए बिना वो अपनी प्रसन्नता किस प्रकार प्रदर्शित कर सकता है।

सदा अतुल ही मांगिये

दि अतुल प्राडक्टस् लि०

अतुल, द्वारा बलसार, पश्चिम रेल्वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्रैल

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

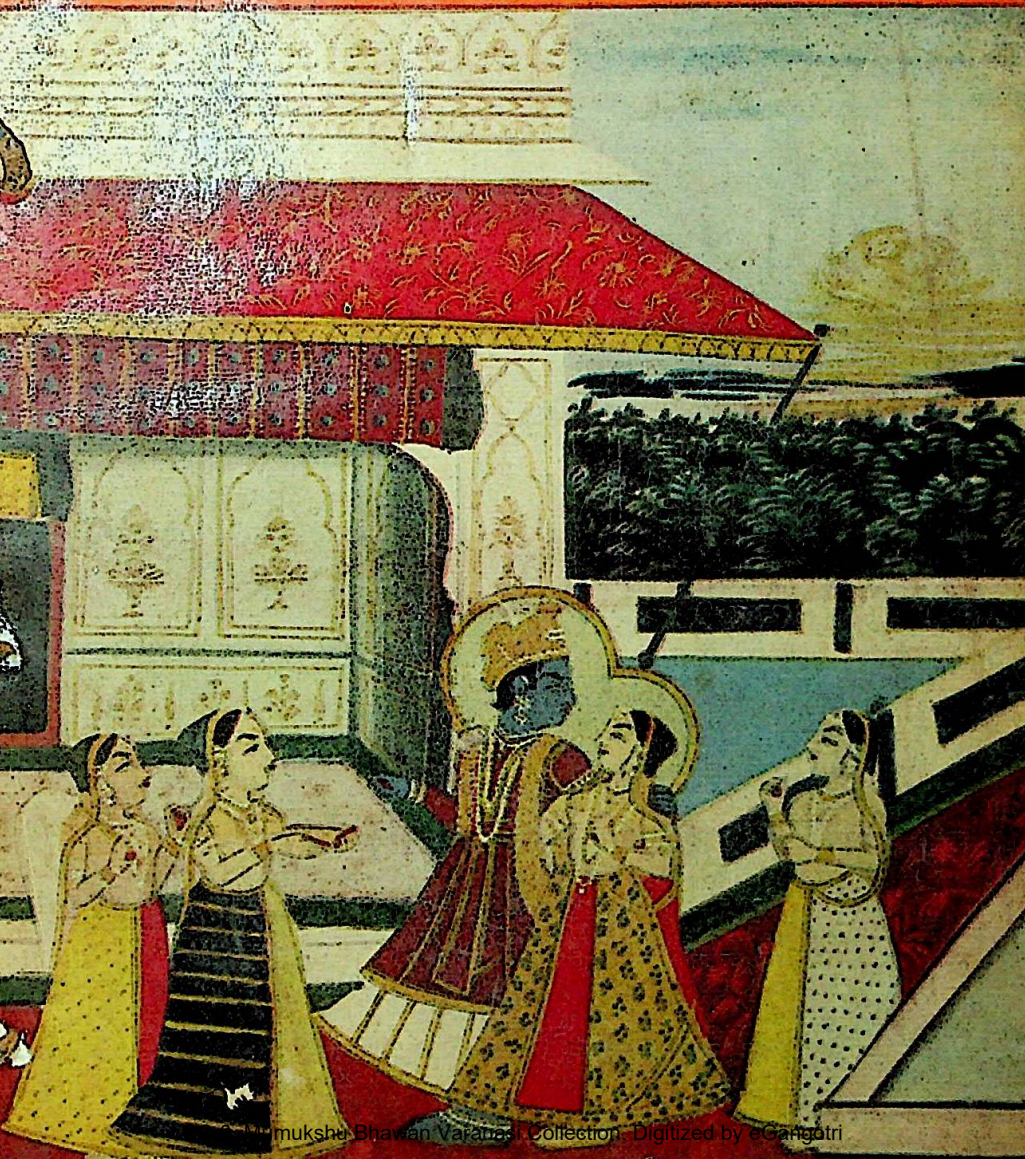

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरा मेरी सीधी पीठ और मजबूत हाथ पांव को तो देखिये

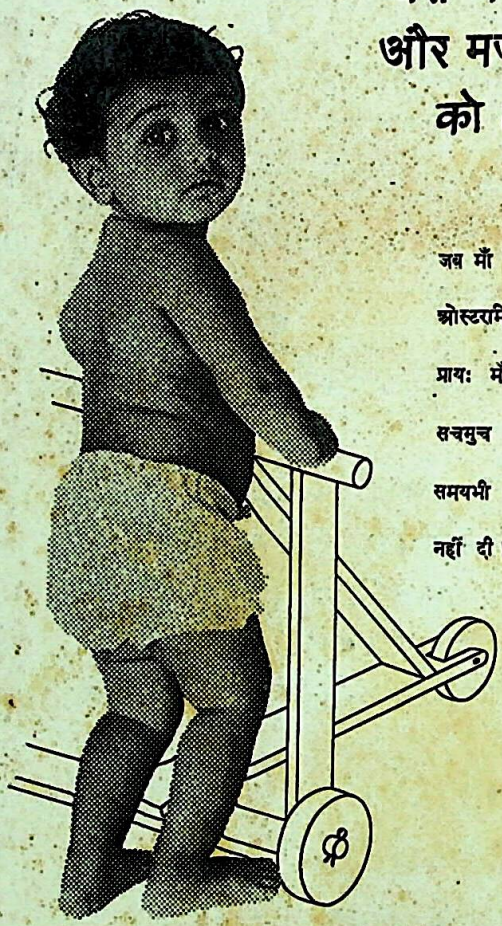

जब माँ का दूध कम पड़ा, तो मुझे ओस्टरमिल्क दिया गया। जो कि प्रायः माँ का ही दूध है। और सचमुच यहांतक कि, दांत निकलते समयभी कोई दिन बिल्कुल तकलीफ नहीं दी।

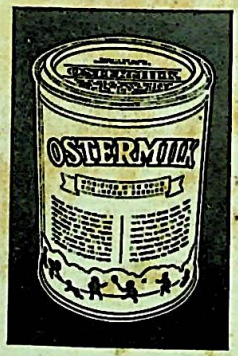

मैं ओस्टरमिल्क का शुक्र गुजार हूँ।

OSTERMILK

ओस्टरमिल्क माँ के दूध के समान

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • नई दिल्ली

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरते हुए बाल

आज की इस सामान्य तकलीफ का मुख्य कारण बालों की जड़ों को मिलनेवाले पोषक तत्वों की कमी है—जो.....

केशा

जैसा, अनेक सफल प्रयोगों के बाद तैयार किया हुआ तेल इस्तेमाल करने से आप सदा के लिए दूर कर सकते हैं। "केशा" बालों की वृद्धि करनेवाले जरूरी और सब पोषक तत्वों से बना है और इसीलिए जनता में ये इतनी जल्दी लोकप्रिय हो गया है।

★

सोल एजेन्ट :—

एम. एम. खंभातवाला रायपुर अहमदाबाद

एजेन्ट :—

सी. नरोत्तम एन्ड कं. मंगलदास रोड बम्बई—२. टे. नं. ३०५७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय योजना की सेवा में

पंजाब नैशनल बैंक में जो रुपया जमा होता है, राष्ट्रीय-निर्माण कार्यों में लगाया जाता है।

आज, पहले से भी अधिक, अपने अनुभव और संगठन से पंजाब नैशनल बैंक, बचत के सदुपयोग द्वारा देश की सेवा कर रहा है।

कार्यगत कोष
१५२ करोड़ रुपये से अधिक

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : सन् १८९५ ई०
चेयरमैन
एस० पी० जैन

प्रधान कार्यालय — दिल्ली
जनरल मैनेजर
ए० एम० वाँकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वसंत की प्रातः समीर-सा

आपके लिए आज ही और फिर प्रत्येक दिन !

काश्मीर बोके टेल्कम पाउडर में जादू-सी मादकता है। यह उत्कृष्ट पाउडर आपके शरीर को प्रातःकाल सी स्फूर्ति देता है और बहुत समय तक उसे सुवासित और शीतल रखता है। अतिरिक्त नमी को सोखता है....त्वचा की चिपचिपाहट और जलन को मिटाता है....और आपकी मोहकता तथा लावण्य को निखारता है।

काश्मीर बोके

टेल्कम पाउडर

पुरुषों को मुग्ध करनेवाली सुगंध के साथ

कोलगेट—पामआलिव का एक उत्पादन

१८०६ से कोलगेट उत्कृष्टता का प्रतीक रहा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेलना शक्ति

घटाता है...

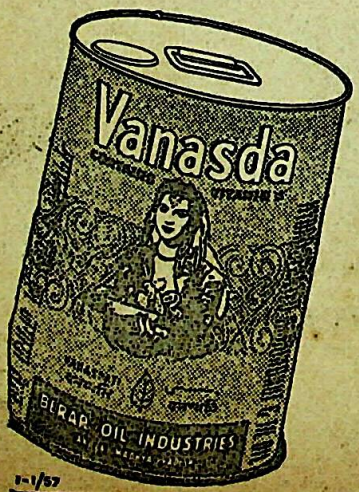

पौष्टिक भोजन इसकी पूर्ति करता है। वनस्दा में बना कोई भी भोजन खाद्य-उपयोगिता में श्रेष्ठतम हो जाता है।

वनस्दा

एक विटामिन-युक्त वनस्पती है

बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज, आकोला

1-1/57

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

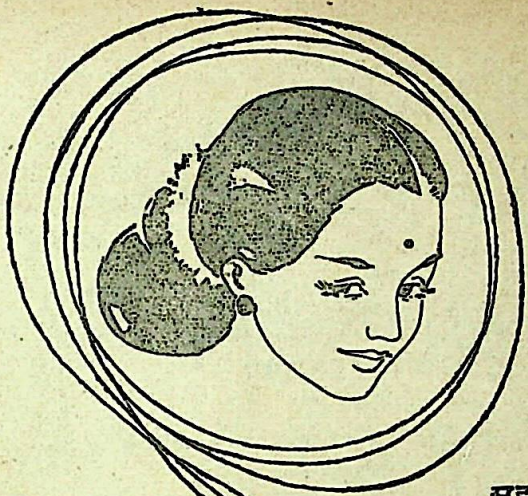

इसके बालों का सौन्दर्य

सहजता से बनाए
रखनेवाला साधन है
मंद सुगंधि से परिपूर्ण
आल्हाददायी

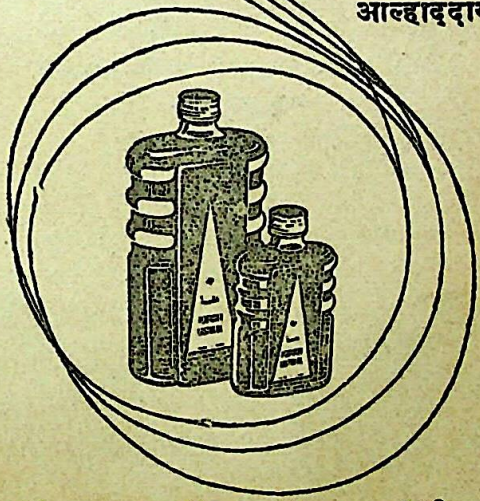

स्वस्तिक सुगंधित कॅस्टर ऑईल

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

SHILPI-SOM-543-A-HIR

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ीसा सिमेंट लिमिटेड

ताप अवरोधक उत्पादन :

शीघ्र ही प्रारम्भ होगा

आधुनिक उत्पादन विधि से निरन्तर भारी परिणाम में उच्चकोटि के ताप अवरोधक उत्पादन।

★ अग्नि मृत्तिका ★ कड़ा सफेद पत्थर ★ भ्राजांगिज ★ वर्णकायन ★ विसंवाहन आदि। ★ सभी प्रकार माप और आकार के मट्टी, परिश्रम और स्थावर वस्तुओं की सभी प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए

इस्पात, सीमेण्ट, शीशा और अन्य उद्योगों के लिए

डा० सी० ओटो एण्ड कंपनी, जर्मनी के सहयोग से

अनुसन्धान करें—

उड़ीसा सिमेंट लि०

राजगांगपुर, उड़ीसा

प्रबन्धकर्त्ता — डालमिया एजेन्सीज प्राइवेट लि०

O.C.H-12-57

A.I.A.B/

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फ़्लिट

'याद रखो बच्चो,
यह ख़तरे का निशान है!'

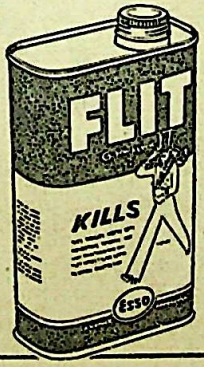

फ़्लिट
... स्टैन्‌वैक
द्वारा बेची जाती है।

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी
(सीमित दायित्व सहित
यू. एस. ए. में संस्थापित)

V. 6481

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल

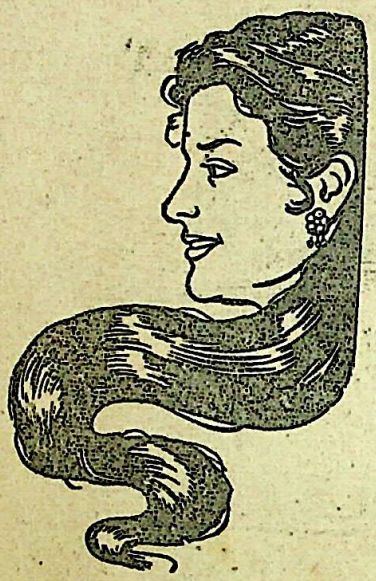

आयुर्वेदिक औषधि (रजिस्टर्ड)

सिरकी रूसी तथा गिरते बालों को रोकने के लिए एक अमूल्य हेयर टॉनिक शीघ्र ही गिरते हुए बालों को रोकता है और घने बाल उगाता है। प्राकृतिक काला रंग प्रदान करता है। सर्व ऋतु में सबके लिए उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ४/ छोटी शीशी २) रु. प्रत्येक स्थान पर मिलता है। ६/५० का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ४/- का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें। आसन चार्ट: स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक खर्च सहित रु. २/- में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर किये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

बादर, (सेन्ट्रल रेलवे) बम्बई-१४

टेलिफोन : ६२८९९

McK

McKENZIES LIMITED

हमसे परामर्श करें

निम्नलिखित विशेष कार्यों के सम्बन्ध में :—

- वाइब्रो और प्रीकास्ट पाइल फाउन्डेशन्स
- आर. सी. सी. सिलोज
- पानी की टंकी
- रिजर्वायर्स
- ट्रेलर, ट्रालियाँ
- टीपिंग वेगन्स
- एम्बुलेन्स, रेडियो और एक्सप्लोजिव की गाड़ियाँ
- मैल-मलीदा निकालनेवाली गाड़ियाँ
- सड़कें, बाँध और पुल
- वाटरप्रूफ छतें
- भीतरी सजावट
- आधुनिक फर्नीचर
- मोटर गाड़ियों के ढाँचे (सभी खात, अलुमिनियम और कम्पोजिट)

प्रधान कार्यालय :—

मैकेन्ज़ीस लिमिटेड

शीवरी, बम्बई.

(टे. नं. ६०००७/८/९)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरिस्टोक्रैट

डिप्लोमैट

रोटेरियन

इलाइट

लोकप्रिय सूटिंग्स
और
सुपरशीन शार्टिंग प्रिंट्स

सुन्दर डिज़ायनों व रंगों में

ग्वालियर रेयन

द्वारा

पहिनने में सुन्दर
देखने में प्रतिभाशाली
स्पर्श में मुलाइम

ऐसे वस्त्र जिन्होंने फैशन
में नया स्थान बनाया है

ड्राईक्लीनिंग की आवश्यकता नहीं

घर पर गुनगुने पानी में साबुन के चूरा
के साथ आसानी से धोये जा सकते हैं

ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यु० (बी०) कं० लि०,
बिरलानगर – ग्वालियर

१ मेसर्स डायाभाई ब्रदर्स,
सैन्डर्स्ट ब्रिज, बम्बई

२ ग्वालियर इन्डस्ट्रीज (प्रा.) लि०
११५ महात्मा गांधी रोड, बम्बई–१

३ मेसर्स जीवनदास दयालजी,
गोविंद गली, एम. जे. मार्केट बम्बई–२

४ मेसर्स चन्द्रकांत पोपटलाल, ५ वी गली
चन्द्रा चौक, एम. जे. मार्केट बम्बई–२

५ मेसर्स अजीत लाल ब्रदर्स, ४ थी गली,
चन्द्रा चौक, एम. जे. मार्केट, बम्बई–२

६ मेसर्स रंजीत कंपनी, माधवराय गली
एम. जे. मार्केट, बम्बई–२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौंदर्य के लिये..

रेमी स्नो

* त्वचा सुकोमल रखता है

ए.व्ही.आर.ए.अँण्ड कं. बम्बई नं.२

स्त्रियों के लिये पुरानी और प्रसिध्ध औषधि.

"रजीस्टर्ड"

जोमस्त्री

शक्ति, स्फूर्ति एवं चैतन्य के लिये उपयोगी.

तीन प्रकार के पेकींग में हर जगह मिलती है.

निर्माता:-
जसमाइन एजन्सी
नडीआद. (गुजरात)

एजन्ट : कंचनलाल वाडीलाल एन्ड कं. प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई–१
" कान्तिलाल आर. परीख, चांदनी चौक, देहली
" कान्तिलाल आर. परीख, २७/८२, बीरहाना रोड, कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"उस भीड़ में बालू किसी की नजर से बच नहीं सकता क्योंकि वही

एक ऐसा है जिसके कपड़े

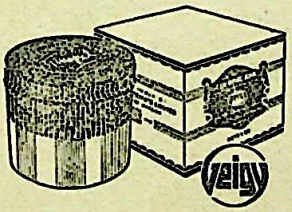

टिनोपाल

के उपयोग से हमेशा चमचमाते

सफेद होते हैं।"

'टिनोपाल' जे. आर. गायगी, एस. ए., बाल, स्विटजरलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

निर्माता: सुहृद गायगी प्राइवेट लिमिटेड, वाडी वाडी, बडौदा

एकमात्र वितरक:

सुहृद गायगी ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, पो. आ. बाक्स ९६५, बम्बई

थोडा-सा टिनोपाल सफेद कपडों को सबसे अधिक सफेद बनाता है

SISTA'S-SG-45-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को विशेष प्रिय

गोला

मि ठा इ याँ
औ र
टा फ़ि याँ

गोला मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ जितनी स्वादिष्ट हैं, उतनी ही पौष्टिक भी। प्राकृतिक 'ए' 'बी$_1$' 'बी$_2$', और 'सी' विटामिनों से परिपूर्ण होने के कारण वे बालकों के स्वाभाविक शरीर-विकास में बड़ी अमूल्य सहायता देती हैं

दी हिन्दुस्तान शूगर मिल्स लि.
५१, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १

A.S.P.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरती को उर्वरा बनाकर

अधिक अन्न उपजाइये

राष्ट्र की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए द्वितीय पंचवर्षीय आयोजना के अन्तर्गत कम से कम १५५ लाख टन अधिक अन्न उपजाना आवश्यक है ।

गहन कृषि, अधिक खाद और उर्वरकों, खेती के अच्छे तरीकों, सुधरे बीजों और सिंचाई के श्रेष्ठतर साधनों द्वारा यह लक्ष्य पूरा किया जा सकता है ।

आयोजना

सफल बनाइये

प्रगति और समृद्धि के लिए

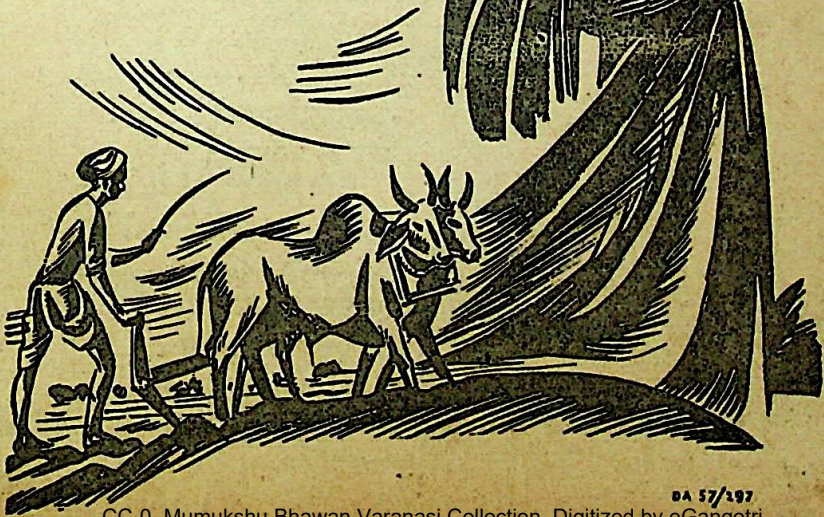

DA 57/297

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

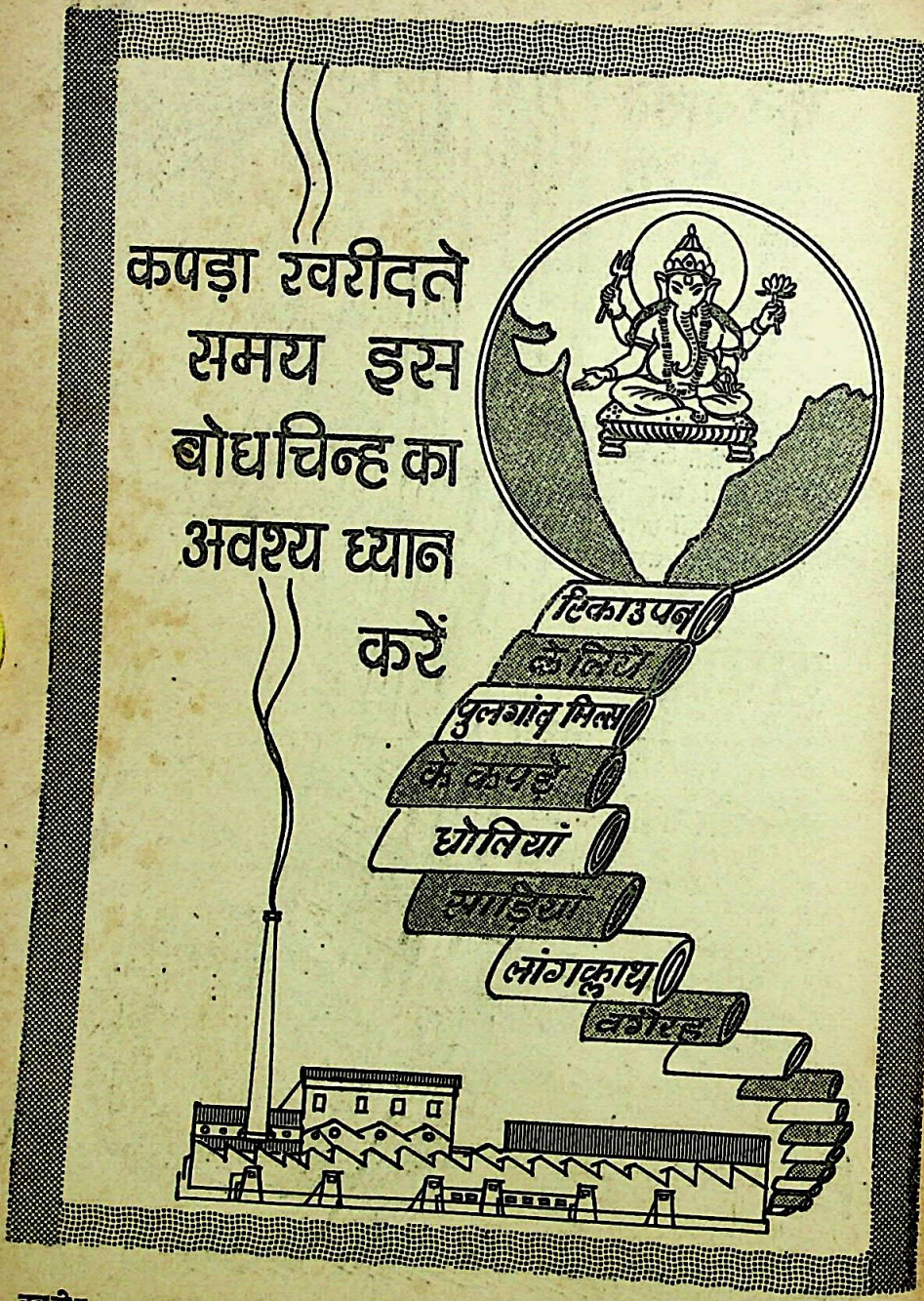

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोने के अंडे देने वाली मुर्गी

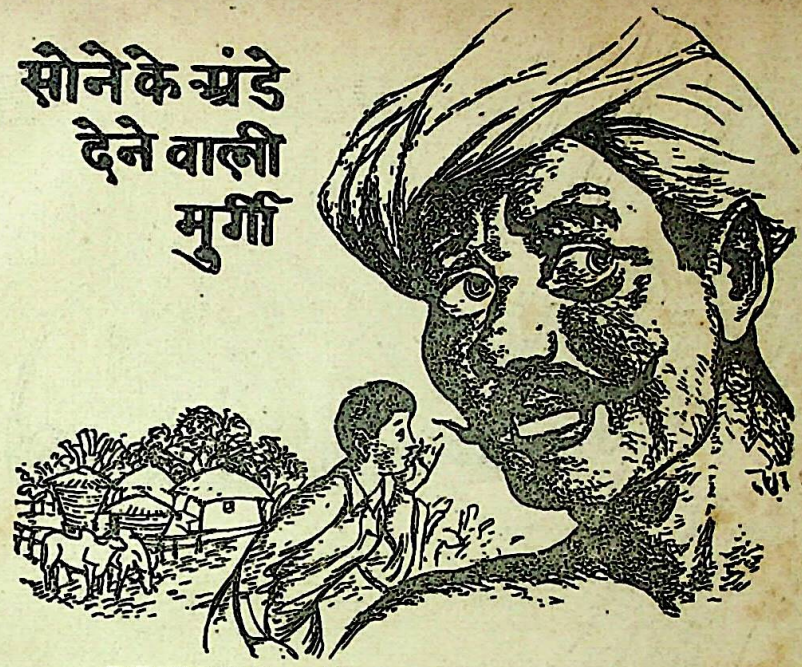

मनु एक समझदार लड़का है। उसका पिता एक सम्पन्न किसान है। मनु जानता था कि उसके पिता ने कमाया हुआ धन घर में छिपा कर रख छोड़ा है। वह उलझन में पड़ा था। उसके अध्यापक ने उसे विचारपूर्वक समझाया था कि संचित कर घर में रखा हुआ धन कोई लाभ नहीं पहुंचाता। उसे चोरों से चुरा लेने का खतरा ही नहीं बल्कि उससे अपनी जान की भी जोखिम रहती है। पर अपने कोषी पिता के सामने कुछ कहने की उसे हिम्मत न होती। इसी बीच गांव में चोरी हो गई और उसे अवसर मिला। हिम्मत बांध कर उसने पिता को बताया कि समझदारी पूर्वक निवेश में लगाया हुआ धन सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी के समान है और दबा कर रखा हुआ धन लाभकारी नहीं होता। यह जानकर उसको प्रसन्नता का ठिकाना न रहा कि उसके पिता ने उसकी सलाह मान ली। ऐसा कौन है जो अपने जीवन और अपनी पूंजी की सुरक्षा नहीं चाहता?

राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेटों और भारत सरकार द्वारा प्रमाणित अल्प बचत योजना की मदों में लगाए हुए धन से आपको कर-मुक्त ब्याज मिलता है और साथ ही यह गर्व की भावना कि आपने राष्ट्रीय विकास योजनाओं को पूरा करने में अपना सहयोग दिया है।

१२-वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेट

- प्रतिवर्ष ९ ४१ प्रतिशत कर-मुक्त ब्याज
- २ रुपये से लेकर ५,००० रुपये तक सभी आसानी से आसानी से मिल सकते हैं।
- भारत सरकार द्वारा प्रमाणित।

अल्प-बचत-योजना के अंतर्गत अन्य सरकारी मद

१०-वर्षीय ट्रेजरी सेविंग डिपॉजिट सर्टिफिकेट

पोस्ट ऑफिस सेविंग बैंक डिपॉजिट

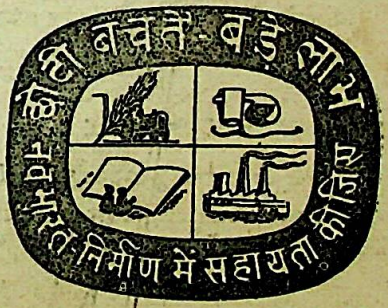

राष्ट्रीय बचत संगठन

अधिक जानकारी और नियम आदि नेशनल सेविंग कमिश्नर, नागपुर से या अपने राज्य के रीजनल नेशनल सेविंग आफिसर से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

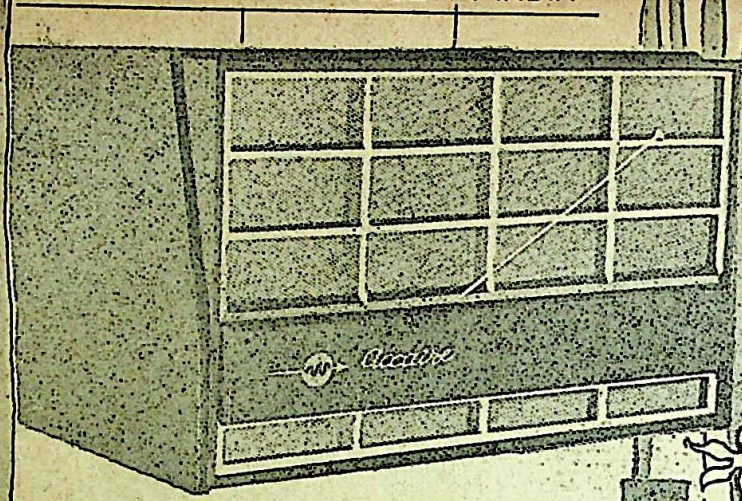

A RANGE OF

SIX COLOURS FOR YOUR CHOICE

Accaire AW—101

ROOM AIRCONDITIONER

Pick your new Accaire in a colour that blends with your room. Its unique design and compact construction makes it an excellent piece of furniture to adorn any room. What's more, it is made by an organisation with over a quarter century of experience in airconditioning.

OTHER ADVANTAGES INCLUDE :

- Better cooling capacity
- More silent operation
- Lower running cost
- Better service after sale
- One year's guarantee

Manufactured by

AIR CONDITIONING CORPORATION PRIVATE LTD.

Pioneers in Airconditioning in India

CALCUTTA • BOMBAY • NEW DELHI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

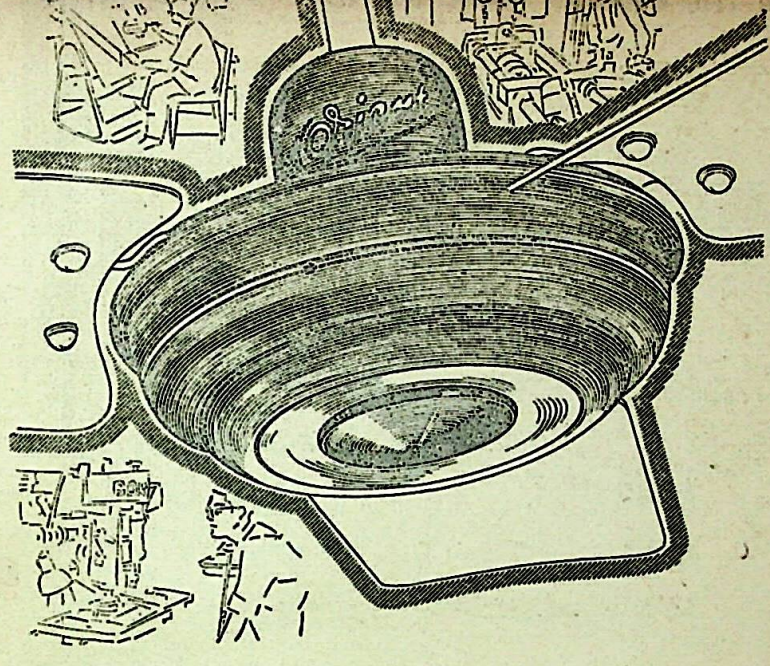

पंखा निर्माण में नवीन उन्नत-स्तर!

सुन्दरता, आराम, कार्यक्षमता और टिकाऊपन— इन सारी दृष्टियों से यह पंखा ठीक वैसा ही है, जैसा कि आप चाहते हैं। विभिन्न विशेषताओं से परिपूर्ण यह ओरिएन्ट पंखा निर्माण-कला की दक्षता का अपूर्व उदाहरण है। यह प्रगतिशील इंजीनियरिंग दक्षता से प्रेरित नवीन बनावट और कला-कौशल का अनुपम परिणाम है।

प्रेसर डाई कास्ट, सुदृढ़ रोटर, सम्पूर्ण डाई कास्ट केसिंग, सेन्टरलेस प्राउण्ड सैफ्ट, स्टोव एनमिल्ड रंगाई— ये सब इसकी कार्य विशेषता और अद्वितीय फिनिश के कारण हैं।

यह पंखा आधुनिक डिज़ाइनरों, टूल इंजीनियरों तथा अन्यान्य विशेषज्ञों की सहायता प्राप्त ओरियेन्ट के दक्ष टेकनिशियनों की सृष्टि है, इसी कारण इस देश के तथा विदेशों के समस्त ग्राहकों की सारी माँगों को यह पूरा करता है।

Orient FANS

ओरिएन्ट पंखा—
सौन्दर्य और सेवा में सदैव अग्रगामी

ओरिएन्ट जेनरल इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
६, घोर बीबी लेन, कलकत्ता-११

वितरक : मेसर्स ओरिअन्ट जेनरल एजेन्सीज
हमाम हाऊस (पहला माला) हमाम स्ट्रीट फोर्ट, बम्बई टेलिफोन : ३५१७९३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यार्थी के लिए

एक आदर्श कलम

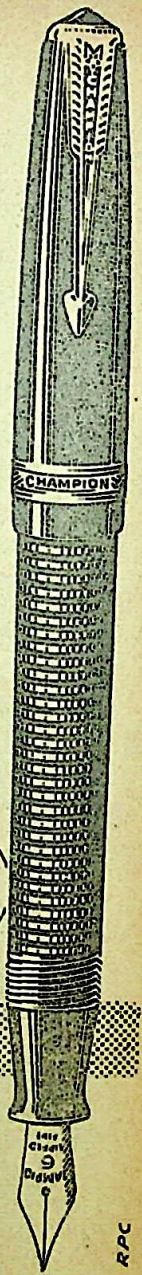

क्लास नोट्स, स्वच्छ घरेलू पाठ,
परीक्षाओंके लिए, उसे एक विश्वस्त
आसानीसे लिखनेवाली कलम चाहिये।

- स्याही रुकती नहीं
- नियन्त्रित प्रवाह
- चलनेमें आसान

सच ही, उसकी पसन्द है

Price.
Rs. 4.75

चेम्पियन (रजिस्टर्ड) ७७७

सब की मन पसन्द

गुजरात इन्डस्ट्रीज प्राइवेट लि०
बम्बई-२.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत की धुलाई-पद्धति में क्रान्ति लानेवाला राष्ट्र का अग्रदूत परिष्कारक डेट

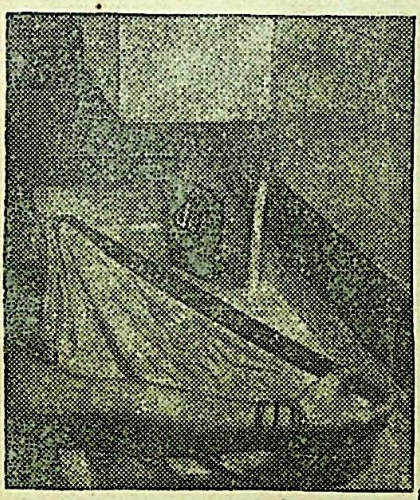

डेट एक सांश्लेषिक परिष्कारक है, वह साबुन की बुकनी नहीं हैं तथा तत्त्वतः साबुनविरहित है। किसी भी साबुन की तुलना में यह धुलाई में तेज है तथा गंदगी और चिकनाहट को पूरी तरह से हटाता है। यह आपको स्वच्छतम कपड़े के अधिक तर उपयोग तथा न्यूनतम घटाव का विश्वास दिलाता है, जो बढ़िया साबुन से भी मुमकिन नहीं है।

डेट फ़र्श, बर्तन, दीवारें आदि को भी धोता है क्यों कि वह परिष्कारक है। चाहे कपड़ा हों या फ़र्श, यह दोनो को समान कुशलता से धोता है।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि०, बम्बई

shilpi s-o-m 513 a hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स (सेन्ट्रल) नियम, १९५६, के ८ वें नियम के अन्तर्गत, "नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट)" नामक समाचार-पत्र के स्वामित्व तथा अन्य विषयों के सम्बंध में प्रकाशित किया जाने-वाला विवरण

फार्म ४

१. प्रकाशक का स्थान :–	३४१, तारदेव, बम्बई ७.
२. प्रकाशन का अवधिक्रम :–	प्रत्येक मास
३. मुद्रक का नाम :–	श्री रतनलाल जोशी
राष्ट्रीयता :–	भारतीय
पता :–	राज भुवन, मरवा रोड, मलाड, बम्बई
४. प्रकाशक का नाम :–	श्री रतनलाल जोशी निमित्त स्वत्वाधिकारी नवनीत प्रकाशन लिमिटेड
राष्ट्रीयता :–	भारतीय
पता :–	राज भुवन, मरवा रोड, मलाड, बम्बई
५. सम्पादक का नाम :–	श्री रतनलाल जोशी
राष्ट्रीयता :–	भारतीय
पता :–	राज भुवन, मरवा रोड, मलाड, बम्बई
६. उन शेयरहोल्डरों के नाम और पते, जिनके पास कुलपूंजी के १ प्रतिशत से अधिक शेयर हैं :—	श्री. एस. जी. नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री. ए. के. नेवटिया, हिन्दुस्तान शुगर मिल्स, गोलागोकर्ण नाथ; श्री. एम. पी. नेवटिया, ज्योति सदन, मरीन ड्राइव, बम्बई; श्री. हरिप्रसाद नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री. कमल-नयन नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री. विमल नयन नेवटिया, रत्नाकर, बम्बई ६; श्री. टी. एस. गोखले, ३२४ विट्ठलभाई पटेल रोड, बम्बई; श्री. आर. जे. त्रिवेदी, २०९ सी. विसेंट रोड, बम्बई १९; श्री. बंसीधर डागा, ५ मर्लीन पार्क, बालीगंज, कलकत्ता; श्री. रामेश्वर प्रसाद जाजोदिया, विश्वा ट्रेडर्स लि., ९ ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता; श्री. श्रीराम चोखानी, चोखानी ट्रेडिंग, कं., इतवारी बजार नागपुर; बिड़ला काटन स्पि. एण्ड वी. मिल्स लि., दिल्ली; अवध ट्रेडिंग कं. लि., सीतापूर, यू. पी.; उत्तर प्रदेश ट्रेडिंग कं. लि., ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता; दरभंगा मार्केटिंग कं. लि., ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता; चंपारन मार्केटिंग कं. लि., ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता; सरन ट्रेडिंग कं. लि., ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।

मैं, रतनलाल जोशी, यह घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये सब विवरण, जहाँ तक मैं जानता हूँ तथा मेरा विश्वास है सत्य हैं।

अप्रैल, १९५७ प्रकाशक के हस्ताक्षर (रतनलाल जोशी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फार्गो

डीजल

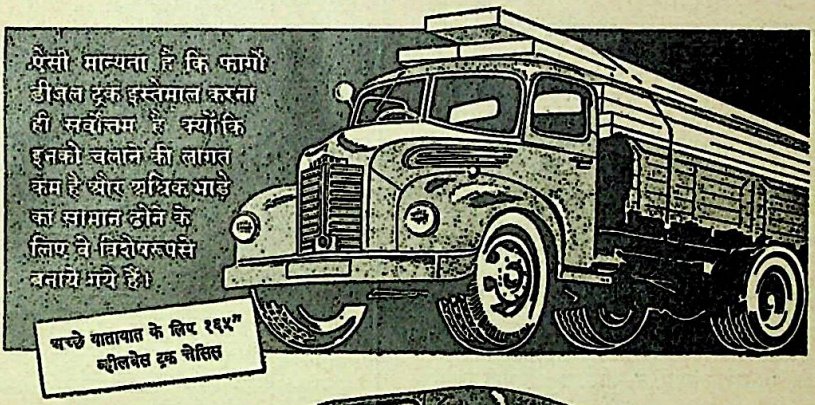

अपने निकटतम् विक्रेता से सम्पर्क स्थापित कीजिए।

प्रगतिशील निर्माता

दि प्रीमिअर आटोमोबाइल्स लिमिटेड

बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

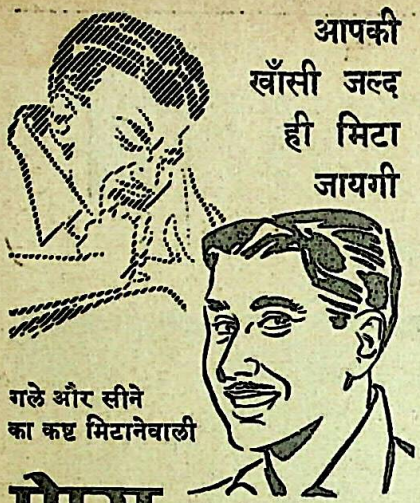

आपकी खाँसी जल्द ही मिटा जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियाँ चूसिए और फ़िर देखिए कि इनकी आरामदेह भाप से दर्द किस खूबी से मिटता है तथा गले का दर्द, ब्रांकाइटिस, खाँसी व सर्दी पैदा करनेवाले कीटाणु कितने जल्द नष्ट होजाते हैं। पेप्स फ़ौरन आराम पहुँचाकर कष्ट को मिटाती हैं।

इनमें कोई नुकसानदेह दवाएँ नहीं होतीं ये बच्चों को बेखटके दी जा सकती हैं

ब्रांकाइटिस, गले का दर्द, नज़ले, जकड़न, सर्दी और खाँसी में शीघ्र आराम पहुँचाती हैं

सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ प्राप्य

FPY 54 HIN

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :

केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

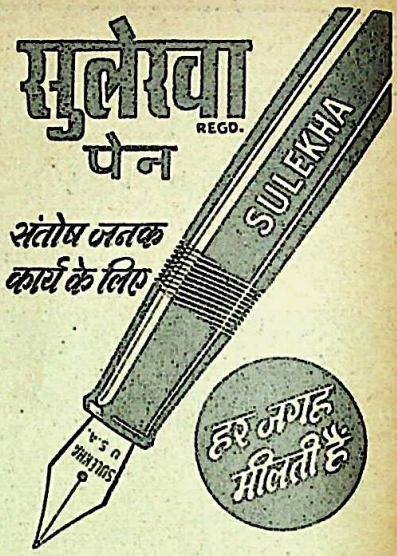

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :

पेन मेन्स इण्डस्ट्रियल सर्विसेज़

कांदीवली, बम्बई (एस० डी०)

इकोनोमिक डुप्लीकेटर

११) रु. तथा उच्चतर मूल्यों में

* स्टेन्सिल पेपरके बिना
* बिना अतिरिक्त खर्च के
* बिना किसी खास तरह की कलम या कागज के
* बिना छापने की स्याही के

एक बार के संचालन में ही एक या अधिक रंगों की सैकड़ों प्रतियां सुलभ हो जाती हैं।

सोल डिस्ट्रीब्युटर्स

सेलारका ब्रदर्स

जी. पी. ओ. बाक्स नं. २६२ ए. बम्बई १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

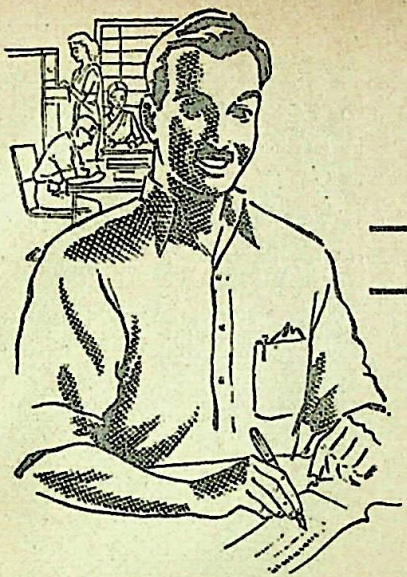

फ़र्नीचर की बनावट व उत्पादन में आलविन के अग्रगण्य होने के कारण वे अत्यधिक विश्वसनीय है और यही उनकी सबसे बड़ी सिफ़ारिश है। युटिलिटी केबिनेट (उपयोगी अलमारी) में

• अधिक जगह होती है और वह कई तरह से उपयोगी होती है : उसमें अधिक सामान रक्खा जा सकता है। आलविन के खंडों (शेल्फ़), छोटे छोटे खानों (पिजन होल) व तिजोरी (लाकर) में हेरफेर आसानी से किया जा सकता है।

युटिलिटी केबिनेट ...

यह चाहे घर या दफ़्तर में उपयोग के लिए हो, आलविन द्वारा परखी हुई आधुनिक बनावट व सज्जा बेजोड़ है।

• अधिक सुरक्षा : यह बहुत अच्छी तरह बन्द होती है। आलविन की अलमारी धूल, कीड़े-मकोड़े व ताला लगाने की विशिष्ट व्यवस्था के कारण चोरों से १०० प्रति शत सुरक्षित है।

• अधिक टिकाऊपन : अलमारियाँ बनाने में चुनिंदा विशेष रूप से तैयार किये गये इस्पात की चादरें काम में लायी जाती है। इनमें जंग नहीं लगती, न दरारें पड़ती हैं और न ये मुड़ती हैं।

• योग्य कीमत : मूल्य का मिलान कीजिए। सारे राष्ट्र में माँग होने के कारण आलविन के दाम कम हैं।

आलविन से पूरा संतोष होता है।

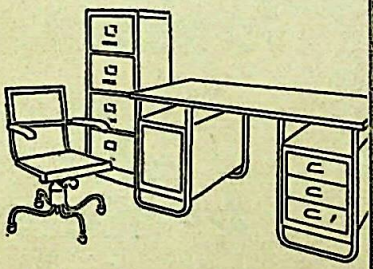

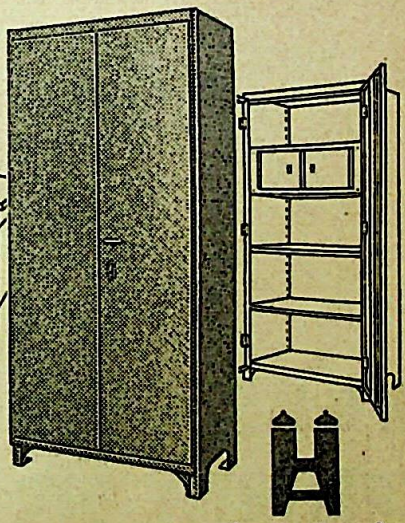

अपने सबसे निकट के विक्रेता से मिलिए या सचित्र सूचिपत्र मँगाइए।

बनावट व टिकाऊपन के लिए—

आलविन

प्रसिद्ध फ़र्नीचर

हैदराबाद आलविन मेटल वर्क्स लिमिटेड,
सनतनगर, हैदराबाद-१८.

बम्बई, सौराष्ट्र, कच्छ और दक्षिण भारत में वितरक

बम्बई ऑफिस:
मेसर्स रोनिओ लिमिटेड,
३९, बॉरिटअन रोड, फोर्ट,
बम्बई-१

मद्रास ऑफिस:
मेसर्स रोनिओ लिमिटेड,
३५, माउंट रोड,
मद्रास-२

हेड ऑफिस
मेसर्स रोनिओ लिमिटेड,
पी. १३, मिशन रो
एक्सटेन्शन, कलकत्ता-१

दक्षिण और पश्चिम भारत में सभी प्रमुख शहरों में हमारे डीलर और एजेन्टस हैं।

HAM-57 1A.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

REPRESENTATIONS

ARE

OFFERED

★

KANOI TEA
(PRIVATE) LTD

POST BOX No. 982
CALCUTTA-I

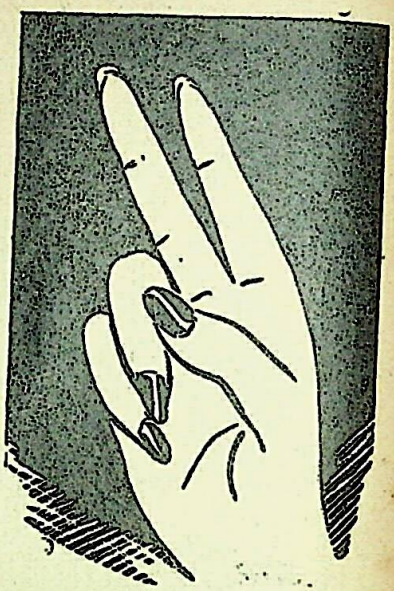

TWO THINGS
TO REMEMBER

"K"
for Kanoi
&
Kanoi
for
tea

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

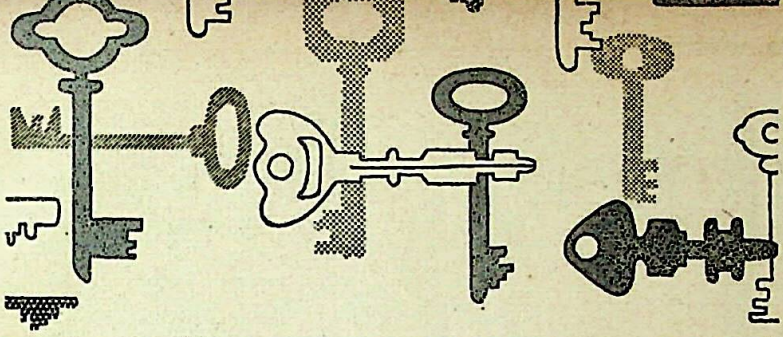

All keyed up!

प्रत्येक मर्फी रेडियो आपके घर में विशिष्टता लाने के लिये बनाया गया है.....आपको वर्षों का सुखद श्रवण देने के लिये!

मर्फी

आज का सबसे अधिक पसन्दवाला रेडियो

SOUNDS GOOD!
LOOKS GOOD!

माडेल २५४

● ६ वाल्व-४ बैन्ड ● एसी या एसी/डीसी (दो माडेल)

MR 28

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

● रु. १९० स्थानीय कर अतिरिक्त

हर स्थान को
सुन्दर व आराम्प्रद
बनाइये

इस वर्ष और
प्रत्येक वर्ष

उषा
डि-लक्स पंखे

दि जे ईञ्जिनीयरिंग वर्क्स लि०
कलकत्ता

बम्बई एजेन्ट : बाम्बे प्रीमियर ट्रेडिंग कं., २३० हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

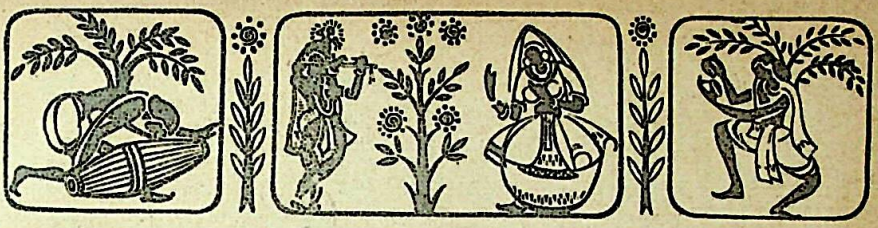

अप्रैल

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

शिल्प: गोपालकृष्ण भोबे

सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र विद्याभूषण

लेख-सूची

१	अधिकार	एल्डुअस हक्सले	१
२	अनुभव की वाणी	'वालाहस्स जातक' से	२
३	शंखघोष	महाकवि वल्लतोल	४
४	प्रेरणा-पुष्प	डा० कर्वे	५
५	...वह झूठा है (गांधी-गंगा)	विद्यावती गर्ग	६
६	धरती के तारे	डा० रमन	१०
७	नींव के पत्थर	डा० सुकार्नो, पिकासो	१४
८	...मूसा दुनिया में आये	जैन-साहित्य से	१६
९	धन किसका	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	१८
१०	ज्ञान : धन	रमण महर्षि	१९
११	५ मिनट : इमर्सन के साथ	रामवृक्ष बेनीपुरी	२१
१२	मोह	इमर्सन	२३
१३	धरती मेरी ही चेरी हो	जेराल्ड हर्ड	२५
१४	शांति-कपोत	ऊ वा-पे	२५
१५	आर्याना	रघुनाथ सिंह	२७
१६	वातायन से हिमालय-दर्शन (कविता)	डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन'	३३
१७	४० करोड़ वर्षों की यात्रा	जे० बी० एस० हाल्डेन	३४
१८	लौहदेश की राजकन्या	शिवनंदन कपूर	३९
१९	...डाके और हत्याएँ	शारदाचरण मिश्र	४२
२०	ट्रेजेडी	हिकमत	४३
२१	वाल्टर हंट...	एस० के० कल्याणसुंदरम्	४५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२२	कंगनमाता	सुखवीर सारथी	४९
२३	पद्मश्री बलवीर सिंह	किशनलाल	५३
२४	अंतिम पैंतरा	जातवेद शास्त्री	५५
२५	गजल (कविता)	डा० सम्पूर्णानंद	५६
२६	मृगजल के नाना रूप	अमृता मेहता	५७
२७	आँख का भ्रम	'फारस के मोती' से	५८
२८	आप कितने हँसमुख हैं	हमारे 'मानसशास्त्र-विभाग' द्वारा	६०
२९	मुँह : नाक	'वेधड़क' बनारसी	६१
३०	दोस्तों से बचाओ	सैयद सज्जाद हैदर	६२
३१	प्रेमिका	'कुतिया' से	६५
३२	बूंद-बूंद का सागर	'नवनीत-ज्ञानकोश' से	६७
३३	सूअर ही जीता	ठाकुर जयमंगल सिंह	६९
३४	सूअर से कुश्ती	कर्नल जोरावर सिंह	७०
३५	दो विज्ञापन	आचार्य अत्रे	७४
३६	कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	एस० के० वेदक, के० एल० डिसोजा, वी० डी० व्यास	७५
३७	लेकिन (उर्दू-कहानी)	मुमताज मुफ्ती	७७
३८	मेरी भानजी (मराठी-कहानी)	मामा वरेरकर	८३
३९	लड़का लापता है (बँगला-कहानी)	प्रेमेन्द्र मित्र	८८
४०	...अल्लाह ही अल्लाह है	मौलाना आजाद	९३
४१	ईद (कविता)	सादी : भवानी प्रसाद मिश्र	९५
४२	रे मानव (कविता)	डा० बच्चन	१०१
४३	स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	१२१

विहार

—स्केच—

वी० एन० ओके, एस० आर० वर्गे, होकुसाई, सुबोध मजूमदार, शंकर, असगर बेग, नीलिमा सेन।

वार्षिक मूल्य : दस रुपये
विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये

नवनीत प्रकाशन लि०
३४१, तारदेव, बम्बई ७

प्रति अंक : एक रुपया
विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई ७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ७ : : अंक ४ अप्रैल, १९५८

अधिकार

उस रोज ओपेरा देख कर लौटा तो विचारों ने आ घेरा। अधिकार को लेकर सवाल खड़े हो गये। मगर मेरी बुद्धि तो उलझना जानती नहीं। वर्तमान को पाकर स्मृति यहूदियों के धर्मग्रंथ 'तालमूद' की थाह लेने लगी। 'तालमूद' में लिखा है कि, जब तक प्रेम की लगाम न लगायी जाये, अधिकार जंगली घोड़ा है। वह सवार को कुपथ पर ही नहीं, मृत्यु-पथ पर भी ले जा सकता है। अब प्रश्न उठा कि, यह प्रेम क्या है? इसका उत्तर भी 'तालमूद' देता है। प्रेम कभी विफल नहीं होनेवाला अनुरोध है। उसे कभी इन्कार नहीं मिला।

...मेरी समस्या का हल मिल गया—देकर ही लिया जा सकता है। अपने को दीजिये और दूसरे को लीजिये। देने और लेने को अलग-अलग किया कि, खतरा शुरू हुआ।

—'हेविन ऐंड हेल' में हक्सले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुभव की वाणी का सम्मान कीजिये

वाणी के स्रोत दो हैं– ईश्वर और अनुभव। दोनों स्रोतों से निकली वाणी सत्यरूपा है– एक भगवान् के अनुग्रह का प्रसाद है, तो दूसरी मनुष्य की कर्मोपासना का फल। दोनों वाणियाँ सदैव आदरणीय हैं; क्योंकि मनुष्य की जीवन-यात्रा में जहाँ एक आत्मा का बल देती है, वहाँ दूसरी सही मार्ग दिखाती है। इन वाणियों की अवज्ञा करनेवाले दुःख ही नहीं भोगते, पतन के गहरे गर्त में भी गिरते हैं। 'वालाहस्स जातक' की इस कथा का यही मंतव्य है।

प्राचीन काल में सिरीसवत्थु नामक एक नगर था। यह नगर ताम्रपर्णी द्वीप में था और यहाँ यक्षिणियाँ निवास करती थीं। ये यक्षिणियाँ सम्भ्रांत कुल की महिलाओं का वेश बना सागर-तट पर घूमा करती थीं। जब कभी व्यापारियों की नौकाएँ टूट जातीं अथवा कोई अन्य दुर्घटना होती और व्यापारी किसी प्रकार उस द्वीप पर पहुँचते, तब यक्षिणियाँ उनके सामने पहुँच जातीं। अपनी माया से वे वहाँ किसी मानव-बस्ती के समान ही पालतू पशु यहाँ-वहाँ विचरने के लिए छोड़ देतीं और अपनी गोद में बच्चे लिये, किसी सम्पन्न परिवार की महिलाओं के समान, दासियों से घिरी वहाँ जा पहुँचतीं।

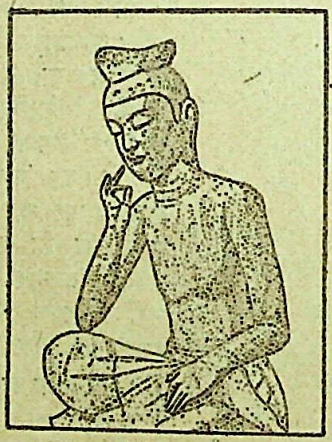

बोधिसत्व

[चित्र : एक प्राचीन काष्ठ-शिल्प की रेखानुकृति]

व्यापारियों का यथोचित आदर-सत्कार कर वे उनसे सारी बातें पूछ लेतीं– कहाँ से आये हैं? कहाँ जा रहे थे? आदि। फिर उनके दुर्भाग्य पर सहानुभूति प्रकट करते हुए कहतीं –"वरुण देव की अकृपा है हम लोगों पर। हमारे पति भी, आज तीन वर्ष हुए, व्यापार के लिए गये थे; किंतु अब तक नहीं लौटे।" और, जब सहज शिष्टाचारवश व्यापारी उनसे सहानुभूति प्रकट करते, तो वे नारी-सुलभ कोमलता से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहतीं—"अब हमें ही अपने चरणों की सेवा करने का अवसर दीजिये।"

फिर नाना प्रकार के हाव-भाव से उन्हें आसक्त कर अपने यहाँ ले जातीं। पहले से पकड़े हुए जो व्यक्ति उस समय तक वहाँ रहते थे, उन्हें वे कारागार में डाल देतीं और इन नये व्यक्तियों के साथ भोग-विलास करतीं। जब दूसरे नये व्यापारी फँसते, तो इन व्यापारियों को कारागार में डाल देतीं और प्रति रात्रि बारी-बारी से उन्हें मार कर खा जातीं।

एक बार एक बहुत बड़ी नौका किसी चट्टान से टकरा कर टूट गयी। लगभग पाँच सौ व्यापारी किसी प्रकार अपने प्राण बचा, उस द्वीप पर पहुँचे। यक्षिणियाँ उन्हें भी लुभा कर अपने यहाँ ले आयीं।

रात्रि की निस्तब्धता में जब सब व्यापारी सो गये, तो प्रति रात्रि के समान यक्षिणियाँ उनके पास से उठीं और कारागार में जा पहले के व्यापारियों का रक्त पीने लगीं। फिर सदा की भाँति अपने-अपने नये 'पति' के पास आकर सो गयीं। व्यापारियों का मुखिया बड़ा चतुर और अनुभवी व्यक्ति था। जब उसकी यक्षिणी वापस आकर सोने लगी, तो उसकी नींद खुल गयी। पर वह आँखें मूँदे मौन पड़ा रहा। बाद में, उसने जब यक्षिणी का शरीर-स्पर्श किया, तो उसका शरीर असाधारण रूप से ठंडा था। उसे समझते देर नहीं लगी कि, वह यक्षिणियों के जाल में फँस गया है।

दूसरे दिन, उसने अन्य व्यापारियों से कहा—"बंधुओ, ये यक्षिणियाँ हैं। दूसरे व्यापारियों के आते ही, हमें भी खा डालेंगी। अतः हम यहाँ से भाग चलें।"

ढाई सौ व्यापारियों को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने वहाँ के विलासमय जीवन को छोड़, अन्यत्र जाने से इन्कार कर दिया; किंतु अन्य व्यापारी तैयार हो गये और अवसर मिलते ही वे भाग निकले।

बोधिसत्व उस समय बादल-अश्व की योनि में पैदा हुए थे। उनके शरीर का रंग हिम के समान श्वेत था; बाल मूँज की तरह थे और सिर कौए-जैसा। वे प्रतिदिन हिमालय से, आकाश-मार्ग के जरिये, ताम्रपर्णी द्वीप आते और वहाँ कीचड़ में स्वयं उग आये धान खाकर लौट जाते। अपने दयालु स्वभाव के कारण जाने के पूर्व, वे प्रति दिन मनुष्य की वाणी में पुकारते—"कोई जनपद जानेवाला है?"

इन व्यापारियों ने यह पुकार सुनी, तो उनके पास जा पहुँचे। हाथ जोड़ कर निवेदन किया—"स्वामी! हमें ले चलिये।"

बोधिसत्व ने उन्हें पीठ पर सवार होने के लिए कहा। कुछ पीठ पर बैठ गये, कुछ व्यापारियों ने उनकी पूँछ पकड़ ली और बाकी, स्थान शेष न रहने से, हाथ जोड़े नम्रतापूर्वक खड़े रहे। बोधिसत्व उनके शिष्ट व्यवहार से प्रसन्न हो गये। उन्होंने अपने शक्ति-बल से सबको उनके घर पहुँचा दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंखघोष

'महाकवि वल्लतोल' के नाम से प्रख्यात केरल के महाकवि नारायण मेनन वल्लतोल ने गत १३ मार्च को ८० वर्ष की वय में अपनी इहलीला संवरण कर ली। भिक्षा ढोनेवालों से लेकर तर्करत्न पंडितों तक उनके काव्य की अनुरक्ति थी। सैकड़ों गीतों, प्रबंधों एवं अन्योक्तियों के बीच उनका वाल्मीकि रामायण और ऋग्वेद का अनुवाद ऐसी कृतियाँ हैं, जो वल्लतोल के नाम को तुलसी-रवीन्द्र की परम्परा का अमरत्व प्रदान करती रहेंगी। वल्लतोल की दूसरी बड़ी देन है 'केरल कलामंडलम्', जो कथकली-नवोत्थान की अकादमी है। भारत-भूमि की इस दिवंगत विभूति को 'नवनीत' श्रद्धासहित नमन करते हुए उनके कुछ पद सानुवाद प्रस्तुत करता है।

☆

कनिञ्ञु कैकालुकळ् नल्कियिट्टुण्टेनिक्कु विश्वांबिक वेल चेय्वान्,
धनि प्रभुक्कळ्कु चविट्टुवानाय् कुनिञ्ञु निल्कुं मुतुकेल्लितल्ला।

—प्रकृति ने असीम कृपा से परिश्रम करने के लिए मुझे हाथ-पैर दिये हैं और अपने में पूरे विश्वास के बल पर ही मैं कहता हूँ कि, मेरी रीढ़ की हड्डी धन और सत्ता के आततायी कदमों के लिए कभी सोपान नहीं बन सकेगी।

अरक्षितस्नेहिकळ् पिच्च तेण्टुं नरकुं तीर्प्पिच्च पोरुप्पिटङ्ङळ्,
ओरर्थिये किट्टुवतिन्नु पाषपे ट्टिरक्कु माराक तोषिल परप्पाल्।

—मेरी कामना है, काम ऐसा बढ़ जाये कि, ये बड़ी इमारतें, जो अरक्षित स्नेही लोगों ने याचकों के लिए बनवायी हैं, स्वयं याचकों के लिए भी याचक बन जायें।

करुत्तु नम्मल् कोरुमप्पयट्टु मरुन्नुमर्त्योचितमां शुचित्वं,
परुत्तितन् पूवितुट्टुप्पु पेट्टिट वरुत्तुमो नां वरुतिक्कु तक्कं?

—हमारी शक्ति है, एक साथ मिल कर प्रयत्न करना। हमारी दवा है, मनुष्य के भीतर की पवित्र ईमानदारी...और, ये कपास के फूल हमारे वस्त्रागार हैं। हम गरीबी को आने का प्रवेश-द्वार देंगे ही नहीं।

निरुद्ध चैतन्य मपौरुषत्तिल् चुरुण्टु कूटोल्ल सगर्भ्यर् वीण्टुं,
गुरु प्रदत्ताक्षर विद्यनेटि त्तिरुत्तणं नां विधि दुर्विलेखं।

—मेरे भाइयो, फिर से हम निरुद्ध-चैतन्य न बनें, अपने अपौरुष में न डूब जायें। गुरुजनों-द्वारा दी जानेवाली विद्या को सीख दुर्विधि के लेख को सुधारें।

☆

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

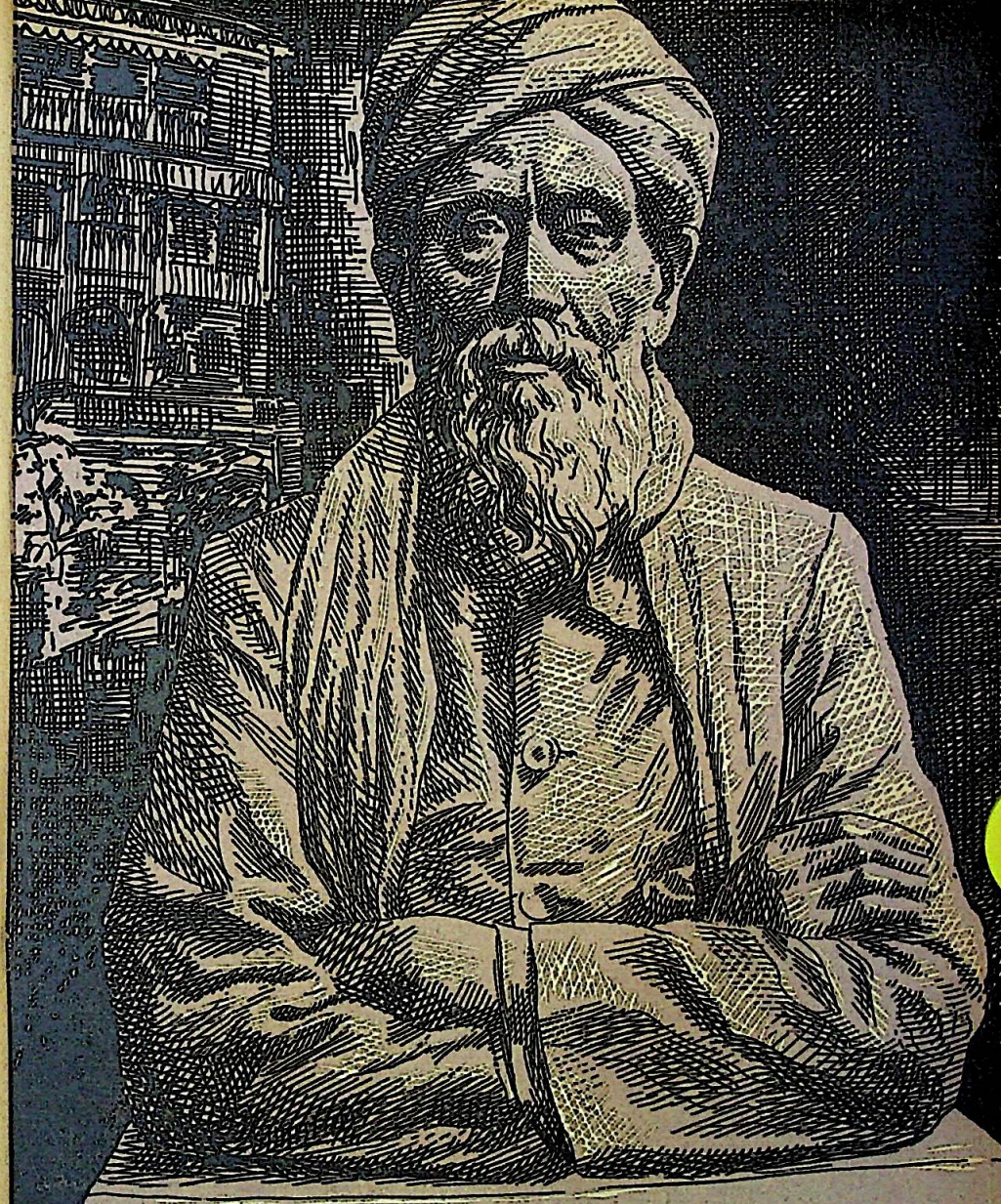

मैंने अपने को खानाबदोश यात्री माना है। जहाँ थक गया, छत डाल कर सो गया; फिर चल दिया। आप कहते हैं, मैंने ऐसी कई छतें बनवायी हैं, जिनके नीचे भूले-भटकों को क्षेम मिलता है। मुझे तो याद नहीं। अगर सच है, तो अच्छा ही हुआ; 'प्रदान' के भान से दब कर मैं भी खत्म हो जाता!

—धों० के० कर्वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब देकर जिसने मनचाहा नहीं पाया, वह झूठा है

विद्यावती गर्ग को अनायास ही प्राप्त गांधीजी के प्रेरणा-प्रसाद की मर्मस्पर्शी कहानी

महाकाल के पट पर हर क्षण अंकित होनेवाले लाखों-करोड़ों अनुभवों में से यह भी एक अनुभव है। सचमुच अनुभव का एक बिंदु-मात्र ही इसे समझिये, कोई व्यक्तिगत तपोसिद्धि या महानता का उपार्जन नहीं। क्योंकि अनुभव एक ऐसे व्यक्ति का है, जिसने साधना की एक पंखुड़ी भी देवता के अर्पण नहीं की है; यों ही संयोग से उसके कीचड़ में एक कमल उग आया। शायद अतिशयोक्ति को पकड़ बैठी हूँ; मगर सोचती हूँ कि उस अनुभूति को कमल न कहूँ, तो क्या कहूँ, जिसने जन्म-भर के कीचड़ को भाग्य बना दिया, जिसने कचरे को कीमत दे दी!

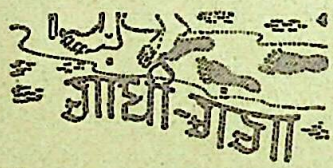

मेरे पति एक जिम्मेदार सरकारी ओहदे पर काम कर रहे थे। कस्बे में उनका खानदान भी कम सम्मानीय नहीं था। जब मैं पत्नी बन कर उनके घर में आयी, तो मेरी सास के सिवाय घर में कोई बड़ा-बूढ़ा नहीं था। मेरी दो छोटी ननदें और दो देवर थे। घर के ठाट-बाट और ख़र्चे के बाहुल्य को देख, प्रथम दिन ही मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ; क्योंकि मेरे पिताजी आर्थिक दृष्टि से गरीब ही थे। वे स्थानीय पोस्ट आफिस में एक क्लर्क-मात्र थे। खर्चे की तंगी अक्सर आ जाती थी। यह मेरी चतुर माता का ही दमखम था कि, गृहस्थी की गाड़ी धीमी-तेज किसी-न-किसी तरह चलती जाती थी।

पति के घर के अंधाधुंध खर्च की शिकायत मैंने अपनी सास से की; किंतु दिन-भर के पूजा-पाठ से उन्हें घर देखने की बहुत ही कम फुरसत मिल पाती थी। सारा काम नौकरों के जिम्मे था। मैंने नौकरों पर नियंत्रण रखना चाहा प्रयत्न करने पर भी सफल न हो सकी। नौकरों के इस मनमाने वर्तन की शिकायत मैंने एक दिन आखिर अपने पति से की। किंतु उनसे जो जवाब मिला, उससे मुझे लगा, जैसे नौकरों ने पहले ही मेरे नियत्रण की नमक-मिर्च लगी कहानियाँ उन्हें कह दी थीं। वे बोले—"तुम इस सबकी तरफ ध्यान मत दो। तुम्हें अनुभव नहीं है, दुनिया में रहन-सहन की ही कीमत होती है। खर्च करनेवाले के पास ही पैसे आते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। तुम अपना तरीका बदलो। तुम आज पिता के यहाँ नहीं हो, मेरे घर में हो; तुम एक नामी-गिरामी खानदान की कुलवधू हो, यह क्यों भूलती हो!"

सुना, तो मैं चुप हो गयी और मौन-मूक सब ज्यादतियाँ बर्दाश्त करने लगी। पानी की तरह पैसे बहाये जाते थे। कुछ दिन तक, यद्यपि मैं काफी अधीर हो चुकी थी, मैंने आँख मूँद कर सब चलने दिया। किंतु जब पड़ौस की सहेलियों के कुछ अजीब-से ताने सुने, तो मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक दिन मैंने अपने पति से पूछा—"यदि नाराज न हों, तो एक बात पूछूँ? वेतन के दो सौ रुपये मासिक के अलावा अपनी आमदनी के और जरिये क्या हैं?"

वे हँसे और थोड़े गर्वीले स्वर में बोले—"वेतन तो एक बहाना ठहरा। कमाई की जगह मिलनी चाहिए, फिर दिमाग अपनी खान आप खोद लेता है। केवल वेतन ही सब-कुछ हो, तो आदमी भूखों मर जाये। मगर तुमको इस सबसे क्या पड़ी है? खाओ और मौज उड़ाओ!"

"नहीं, मुझे यह मौज नहीं चाहिए। वेतन के अलावा जो भी पैसा मिले, उसे मैं हराम का पैसा समझती हूँ। यह कमाना नहीं, गँवाना है। आप यह सब छोड़िये।"

मगर उन्होंने मेरी बात नहीं मानी—अपने रवैये को नहीं बदला। मैं खूब रोयी, अनशन किये; मगर उनकी जिद ढीली नहीं पड़ी। उल्टे और नयी बर्बादियाँ घर में प्रवेश करने लगीं। गानेवालियों के मुजरे, ताश के खेल और शराब के जाम भी शुरू हो गये। महफिलों के दौर रात-भर चलते रहते। मैंने अपनी सास को सारी वस्तुस्थिति बतायी; किंतु उन्होंने जो सीख मुझे दी, वह मेरे मर्म पर एक और क्रूर प्रहार कर गयी। वे बोलीं—"बहू, तुम्हारा यह दुःख मेरी समझ में नहीं आता। मर्दों के काम से हमें क्या सरोकार? तुम्हारी दुनिया घर की। सुख से रहो, खाओ-पीओ और अपना काम करो। हमारे यहाँ तो बहुएँ मर्दों के काम में कभी हस्तक्षेप नहीं करतीं!"

भीतर की आँच में मौन-निरुपाय जलते-जलते इसी प्रकार दो वर्ष बीत गये और मैं एक बच्ची की माँ भी बन गयी। इस अरसे में परिस्थिति और भी नाटकीय हो गयी। वे अक्सर घर नहीं आते—कभी-कभी तो हफ्तों बाहर ही रह जाते। कहा-सुनी, शिकवे-शिकायत और विनय-आग्रह सब उनके मन की परिधि से कोसों दूर जा पड़े थे। अब वे उत्तर भी शब्दों में नहीं, मारपीट में देते थे। एक दिन उन्होंने अपनी ही कली-सी कोमल, अबोध बच्ची को पलंग से यह कह कर नीचे फेंक दिया—"अपने परमेश्वर-तुल्य पति से घृणा करनेवाली पत्नी की संतान जायज हो सकती है, मैं इसे नहीं मान सकता।"

सर्वनाश उनके दिल पर अपना पूरा काबू पा चुका था। मैंने यह भी सहन कर लिया; किंतु एक दिन जब उन्होंने मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सास पर हाथ उठा दिया, तो मेरी आत्मा सारी मर्यादाएँ और भय-भीतियाँ तोड़ कर उनसे उलझ बैठी और सास के साथ उस घर से बाहर निकल आयी।

पिताजी ने सुना, तो थोड़ी देर तक बड़े विचलित रहे ; फिर अपनी स्वाभाविक दृढ़ता के साथ बोले—"बुरा इसमें कुछ नहीं हुआ। अच्छा किया, सर्वस्व जाने से पूर्व ही तुम यहाँ आ गयीं।"

चार महीने पिताजी के यहाँ ही बीते।

पिताजी पेंशन पर 'रिटायर' हो चुके थे और अपना अधिकांश समय 'नयी तालीम' के प्रचार-प्रसार में लगाते थे। मेरी सास तो अपने भगवान् में आकंठ बूड़ी हुई थीं। यहाँ निर्द्वंद्व अवकाश पाकर वे फिर अपने पूजा-पाठ में लग गयीं। किंतु मेरे मन में तो संताप सहस्र-सहस्र वृश्चिक-दंशों में करवटें मार रहा था। सास के अति प्रेम-भरे आग्रह के बावजूद न तो मेरा मन 'भगवान्' के भजन में लगा और न पिताजी की नयी तालीम में। संसार मेरे लिए जैसे कुम्हार का आवा था— ऐसा आवा, जिसमें मिट्टी के तन के साथ मन के विश्वास की मेरी एकमात्र निधि भी सुलग-सुलग कर जल रही थी! तन दुःख में, मन पति के भीतर और आत्मा उखड़े तम्बुओं के लिए नये सम्बल खोजने में— तीनों ऐसे लुप्त थे कि, जीवन का एक क्षण भी ग्रंथिहीन नहीं था।

पति के बारे में सुनती, तो आँख की झड़ी थमती नहीं। उनके हाल और बिगड़ते गये। वे फिसलते रहे और हम अट्ठारह महीनों तक दूर से उन्हें नित-नयी अधोगति में डूबते देखते रहे; पिताजी मुझे समझाते, धीरज बँधाते; मगर जहाज का पंछी फिर आकर दुःख के जहाज पर ही बठता था— परित्राण का छोर उसे कहीं नहीं मिलता।

पिताजी का सुदृढ़ मन भी मेरी पीड़ा देख, संताप की आँच खाने लगा। वे मेरे बारे में चिंतित रहने लगे। एक दिन 'नयी तालीम' के काम से उन्हें वर्धा जाना था, तो उन्होंने मुझे भी साथ चलने को कहा। मगर मेरा मन तो अपने 'वर्तमान' से दूर होना नहीं चाहता था। मैंने इन्कार कर दिया। किंतु पिताजी तो मेरे विषय में पूरी योजना बना चुके थे। उन्होंने कहा— "मैं तुम्हें कुछ दिन इस 'देशकाल' से दूर रखना चाहता हूँ। तुम्हारे उबरने का अब यही एक उपाय शेष बच गया है। तुम कुछ दिन वर्धा या दक्षिण में अरुणाचलम् में रहो। मैंने तुम्हारे लिए सारा प्रबंध करवा दिया है। मेरे साथ चलो— जहाँ तुम्हारा मन भावे, वहाँ कुछ दिन रह कर अपनी उपयोगिता को इन नागपाशों से मुक्त करो।"

वर्धा में एक सप्ताह रह कर हम लोग सेवाग्राम गये। मगर शायद भाग्य दुर्बल थे। उसी दिन गांधीजी दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। भेंट तो क्या, दर्शन का भी अवसर न मिल सका। किंतु पिताजी का इरादा जल्दी घर लौटने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं था। हम लोग वर्धा से सेवाग्राम और सेवाग्राम से वर्धा के चक्कर काटते रहे। आखिर बापू आ गये और पिताजी के साथ मैं उनसे मिलने चल पड़ी।

दोनों ओर की थोड़ी-बहुत पूछताछ और प्रश्नोत्तर के बाद पिताजी ने कहा—"अब इसे 'नयी तालीम' में ही लगाना चाहता हूँ; क्योंकि इसके लिए कोई दूसरा चारा नहीं है।" उन्होंने मेरी तरफ गौर से देखा, पूछा—"इसके पति क्या करते हैं?" पिताजी ने संक्षेप में सारी स्थिति स्पष्ट कर दी। बापू ने सुना, तो थोड़े सोच में पड़ गये। फिर मुझसे पूछा—"तेरा क्या इरादा है? क्या तू यह कर सकेगी?"

मैंने श्रद्धा-विनीत स्वर में उत्तर दिया—"जो आज्ञा होगी, उसका पालन करूँगी।" आगे मैं कुछ कह न सकी। गला रुँध गया।

बापू ने एक ही नजर में जैसे मेरे सारे अंतस् को पढ़ लिया। मधुर-स्पष्ट वचनों में बोले—"कह तो देती है; मगर तेरे से कुछ होगा नहीं— कुछ भी नहीं हो सकेगा। मैंने देख लिया है, तू यदि कुछ कर सकेगी, तो वहीं, जहाँ तेरा उपयोग है, जहाँ तेरे मन की, तेरे विश्वास की अर्थमयता है। और जगह तो तू अर्थविहीन ही रहेगी। ....अपनी सार्थकता के देश में जब तू पहुँचेगी, तभी करने-जैसा कुछ प्रवाह तेरे भीतर जागेगा। मैं तो कहता हूँ, तू अपने पति के घर वापस चली जा। उनसे अधिक विच्छिन्न रहना मुनासिब नहीं। कुछ भी होता, तुझे अपनी गृहस्थी से भाग कर नहीं आना था। जहाँ तेरी अर्थमयता थी, वहीं से तू भाग खड़ी हुई, तो निरर्थक ही होगी, चाहे जहाँ चली जा। मन की तृप्ति वहीं तो होती है, जहाँ अतृप्तियाँ निःशेष हो जायें।...तू अब आग्रह में अपने को बाँध मत। अपने घर चली जा। तेरे से वहाँ जो दिया जा सकेगा, उसका लाखवाँ हिस्सा भी तू कहीं नहीं दे सकेगी।"

पिताजी की आँखों से टप्-टप् आँसू पड़ रहे थे। मेरी हस्ती तो जैसे सम्पूर्ण द्रवित होकर बह जाना चाहती थी। बापू ने अपना वरद हस्त मेरे माथे पर रखा—"देख, जहाँ सम्पूर्ण अर्पण की शर्त है, वहाँ कण-मात्र भी कृपणता दुःख ढा देती है। सब देकर जिसने मनचाहा नहीं पाया, वह झूठा है। देना पाने का ही पर्याय है, दोनों एकरूप हैं। तू कंजूसी कर गयी। जिसे सब-कुछ देने के लिए तू गयी थी, उसके साथ एकरूप हुए बिना ही, तू मनमाना पाने की जिद कर बैठी! यहीं तेरी भूल हुई है। भूल का दंड तूने भोग लिया है। अब वापस लौट जा। तुलसी का क्यारा आँगन में ही सार्थक है, जंगल में नहीं।"

आज बाईस बरस के लगभग हो गये हैं— बापू की वाणी के ये अक्षर प्राणों के प्रत्येक गतिबिंदु में प्रवाहित हैं। बिगड़ी सारी बन गयी है। श्मशान सरसब्ज चमन हो गया है। यद्यपि आर्थिक दृष्टि से हम लोग सम्पन्न इतने नहीं हैं; किंतु अन्य दिशाओं में हमारी सम्पत्ति इंद्र-कुबेर से कम नहीं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरती के तारे

सी० वी० रमण के एक लेख का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

रात को जुगनू की चमक, जिसका ध्यान उधर न हो, उस व्यक्ति को भी अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। अतः यदि उस चमक ने लेखकों और दार्शनिकों को अपनी ओर आकृष्ट किया और उन लोगों ने कवितामय अथवा रहस्यवादी ढंग पर उसका उल्लेख किया, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

जब एक ही जुगनू की चमक में इतना आकर्षण है, तो उस समय का क्या कहना, जब लाखों जुगनू एक साथ ही चमकें। स्याम में ऐसे दृश्य प्रायः देखने को मिलते हैं। एक प्रत्यक्षदर्शी ने उसकी चर्चा करते हुए लिखा है– "गोधूलि के समय जुगनू जंगल से निकलते हैं और अपनी रुचि के पेड़ों की ओर बढ़ते हैं। इन पेड़ों का अधोभाग नदी के जल में होता है। अतः इन पेड़ों के चारों ओर वे जब नाना प्रकार से खेलते हैं, तब ऐसा दृश्य उत्पन्न हो जाता है, मानो कहीं रोशनी की गयी हो और जैसे रोशनी का हर चिराग जीवित हो। बड़े सहज-सरल ढंग से वह रोशनी जलती-बुझती है। और, थोड़ी देर में पेड़ की हर शाखा और पत्ती का रूप ऐसा हो जाता है, मानो हीरे की कनी के समान छोटे-छोटे चमकते अंगारे उनमें जड़ दिये गये हों। पर दूसरे ही क्षण पुनः सब अंधकारमय हो जाता है। कुछ क्षण बाद फिर ये अगणित दीप जल उठते हैं।" यह प्रदर्शन घंटों जारी रहता है। मौसम अथवा हवा का उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

ये चमकनेवाले जंतु केवल स्थल पर ही नहीं, समुद्र में भी होते हैं। अटलांटिक पार करते हुए, एक अफसर ने लिखा है– "१४-वीं तारीख की रात को हमें एक अद्भुत दृश्य देखने का अवसर मिला। उस समय मैं डेक पर खड़ा था। बड़ी अच्छी बयार बह रही थी और जहाँ तक हमारी दृष्टि जाती – अंतरिक्ष तक– समुद्र की हर लहर प्रकाश की धारा के समान चमक रही थी। जहाज के पिछले भाग में, जहाँ पानी कट रहा था, नीले और हरे रंग की रोशनी दिखलायी दे रही थी। पानी की जो बूँदें ऊपर आतीं, ऐसी लगतीं कि, जैसे पीले रंग की चिनगारियाँ निकल रही हों। जहाज के अगले भाग में तो, जहाँ चक्र पानी काटता है, इतनी काफी रोशनी थी कि, आदमी बारीक छपे हुए अक्षर भी पढ़ सकता था। लगता था कि, आकाश-गंगा अपने कोटि-कोटि तारों के साथ आज समुद्र में उतर आयी है और हम उसे पार कर रहे हैं।"

समुद्र के पानी में इस तरह के प्रकाश की बात से सिद्ध है कि, समुद्र में बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी संख्या में चमकनेवाले जंतु हैं। उनमें से कुछ तो इतने छोटे हैं कि, खुर्दबीन से ही देखे जा सकते हैं और कुछ ऐसे भी हैं, जिन्हें नंगी आँख से भी देख सकना सम्भव है। समुद्र का पानी किनारे से टक्कर लेकर जब लौटता है, तो उस समय कोई भी व्यक्ति बालू पर से बहते चमकते जंतुओं को रात में देख सकता है।

तथ्य तो यह है कि, प्रकाश और जीवन, दोनों का बड़ा गहरा सम्बंध है। बड़े-से-बड़े और छोटे-से-छोटे प्राणी में प्रकाश की अनुभूति करनेवाले अंग हैं। हाँ, प्रकाश को विकीर्ण करने की शक्ति अवश्य उच्चतर प्राणियों– जैसे पेट के बल रेंगनेवाले जानवरों, चिड़ियों, स्तन-पान करानेवाले पशुओं तथा जल-थल दोनों पर चलनेवाले जंतुओं– में नहीं है। पर सत्य तो यह है कि, जीवन के माप का श्रीगणेश ही प्रकाशोत्पादक रूपों से होता है।

सी० वी० रमण

[चित्र : वी० एन० ओके-निर्मित रेखाचित्र]

वनस्पति-जगत् में कुछ किस्मों के 'बैक्टीरिया' और फफूँद (फंगी) स्वतः प्रकाश देनेवाले हैं। पशुओं में अवश्य ही बहुत-से ऐसे हैं, जो प्रकाश का विकिरण करते हैं– जैसे गोजर की जाति के कुछ जंतु, गोबरैला की जाति के कुछ जंतु तथा घोंघा की जाति का एक जंतु। इनके अतिरिक्त बहुत-से अन्य समुद्री जीव-जंतु भी हैं, जो चमकते हैं– जैसे 'जेली', 'श्रिम्प', 'स्क्विड' तथा कुछ किस्मों की मछलियाँ।

इनमें प्रकाश देनेवाला 'बैक्टीरिया' विशेष रूप से आकर्षक है। वैज्ञानिक लोग ऐसा स्वीकार करते हैं कि, ऐसा 'बैक्टीरिया' मरी मछलियों से पैदा होता है। इस प्रकाश देनेवाले 'बैक्टीरिया' को जमीन पर से उठा कर काँच के बर्तन में भी पाला जा सकता है। 'बैक्टीरिया' बहुत ही छोटी चीज है। 'बैक्टीरिया' की एक इकाई से इतना कम प्रकाश विकीर्ण होता है कि, देखा भी नहीं जा सकता; लेकिन यदि एक बोतल 'बैक्टीरिया' जमा कर लिया जाये, तो उससे इतना प्रकाश फैलेगा कि, आदमी उसकी रोशनी में बैठ कर पढ़ सकेगा।

बहुत-से फंगी-कुकुरमुत्तों में से प्रकाश निकलता है। इसी प्रकार, बहुत-से पुराने पेड़ों के तनों और सड़ी हुई पत्तियों से भी रोशनी निकलती है। इन परिस्थितियों में मूल प्रकाश वस्तुतः उन वस्तुओं का नहीं होता; बल्कि उन पर फैले 'फंगस' के तंतुओं का होता है, जिन्हें वैज्ञानिक शास्त्रीय भाषा में 'माइसीलियम' कहते हैं। 'फंगस'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का चमकने वाला अंग भी 'बैक्टीरिया' के चमकनेवाले भाग के समान ही है।

प्रकाश बिखरनेवाला सबसे छोटा कीट 'प्रोटोजोआ' जाति का एक जंतु है। उनमें 'नाक्टील्यूका मिलियरिस' सबसे अधिक परिचित जंतु है। समुद्र में यह जंतु अत्यधिक संख्या में उपलब्ध है। इसका धड़ अर्द्धवृत्ताकार होता है। वस्तुतः इसी जंतु के कारण वैज्ञानिकों को यह बात ज्ञात हुई कि, समुद्री पानी में भी चमकनेवाले पदार्थ जीवित जंतु हैं। और, अब तो यह बात सिद्ध हो गयी है कि, समुद्र के अंदर जो प्रकाश रहता है, उसका कारण 'डीनो-फ्लेगेलेटस' नामक अत्यल्प आकार के कीटाणु हैं।

कभी-कभी इन कीटाणुओं की समुद्र में इतनी बहुतायत हो जाती है कि, समुद्र का पानी दिन में गुलाबी दिखने लगता है।

जिन्हें हम जुगनू समझते हैं, वे वस्तुतः गोबरैला की जाति के जंतु हैं। गोबरैला —जो रेंगता है— 'लारवा' की स्थिति में होता है या मादा होता है। जुगनू की भी सैकड़ों जातियाँ हैं। यद्यपि यह जानवर उष्णकटिबंध में अधिक मिलता है; पर इसकी कुछ जातियाँ उत्तरी अक्षांशों पर भी पायी जाती हैं। यहाँ हम 'कुकुजो' नामक जंतु का उल्लेख करना चाहेंगे। यह जंतु वेस्ट इंडीज में मिलता है और काफी चमकदार होता है। इन जंतुओं की चमक का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि, पहले इनका प्रयोग मोमबत्ती के स्थान पर हुआ करता था। जब यह जानवर उड़ता है, तो ऐसा लगता है कि, जैसे कोई तारा टूटा हो। इस जंतु के दो अंग चमकते हैं। आगे के भाग से कुछ हरी रोशनी निकलती है और पेट में से नारंगी रंग की। जब यह जंतु उड़ता है, तो काफी तेज नारंगी रंग की रोशनी दिखलायी पड़ती है।

प्रकाश बिखेरनेवाले बड़े प्राणियों में हम मछली का नाम ले सकते हैं। कुछ मछलियों के विशेष अंग से प्रकाश निकलता रहता है। बात यह है कि, इन मछलियों के उक्त अंग में 'बैक्टीरिया' भरा रहता है और वस्तुतः 'बैक्टीरिया' के ही कारण उनके उक्त अंग से रोशनी निकलती है। यहाँ मैं बंदा सागर में मिलनेवाली एक मछली का जिक्र करना चाहूँगा, जिसकी दोनों आँखों के नीचे से प्रकाश निकलता है। 'बैक्टीरिया' की यह रोशनी मछली के लिए 'लैम्प' का काम करती है।

कुछ ऐसी मछलियाँ हैं, जिनके चमकनेवाले अंग मछली की देह के अवयव होते हैं। गहरे समुद्र की जाँच से पता चला है कि, ऐसी सैकड़ों प्रकार की मछलियाँ हैं, जो चमकती हैं। ऐसी मछलियाँ यदि समुद्र-तल से पकड़ कर ऊपर लायी जायें और 'हाइपोडरमिक' सूई से उनमें 'ऐड्रेनेलिन' के हल्के घोल का 'इंजेक्शन' लगा दिया जाये, तो इन मछलियों के ये अंग अधिक प्रकाश देने लगेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाममात्र का अंतर

मानसिक ग्रंथियों को सुलझानेवाला विनोबा जी का एक प्रवचन

★

क्राइस्ट ने कहा है—"ऐग्री विथ दाउ एडवर्सरी क्विकली"—अपने से मत-भेद रखनेवाले के साथ फौरन एकमत हो जाओ। कितना सुंदर विचार है और इसमें जो 'फौरन' शब्द है, वह तो बहुत ही महत्व का है। यानी सामनेवाला जो सुझाव पेश करता है, या हम जो सुझाव पेश करते हैं, उसके मूल में कुछ विचार होते हैं। विचार एक दृष्टि से एक रूप लेता है और दूसरी दृष्टि से दूसरा रूप! दृष्टि-भेद से उसमें फर्क पड़ता है। इसे पहचान कर जो समान अंश दिखेगा, उसे साररूपेण ग्रहण करन की हममें शक्ति होनी चाहिए। जितने भी हम सब विचार-विमर्श में हिस्सा लेनेवाले हैं और जिनके विचार का परिणाम प्रस्ताव पर होनेवाला है, उनको एक-दूसरे के लिए ऐसा सहज विश्वास चाहिए, जिसे सिद्ध करने की जरूरत न हो!

जो भी विचार किया जा रहा है, वह सद्हेतुमूलक है, यह विश्वास मन में न रहा और सामनेवाले के बारे में शंका रही, तो हमारी बात नहीं बन सकती। अगर यह शंका हमारे मन में न रहे, तो सद्हेतु की कल्पना करते हुए हम फौरन दूसरे के साथ एकरूप होने की कोशिश कर सकते हैं। इस तरह हम एक-दूसरे की तरफ आ सकते हैं। बुनियादी सद्भाव पर हमारी श्रद्धा बिना किसी परीक्षण के— बिना किसी सबूत के— होनी चाहिए। अगर वह हो, तो हमारा सारा काम एकरस हो सकता है।

इससे निर्णय शीघ्र नहीं होंगे, ऐसा एक आक्षेप उठाया जाता है। परंतु कभी-कभी निर्णय शीघ्र न होना भी जरूरी हो जाता है। जहाँ उतनी तीव्र परिस्थिति नहीं होगी, वहाँ कर्म शीघ्र न होंगे, तो गुण तो हैं— इस दृष्टि से सोचते हुए, एकमत से काम करने का निश्चय अगर हम करते हैं, तो इसमें कोई दोष नहीं है।

आचार में बुद्धि-भेद का निर्माण हुआ, तो समाज का भला नहीं होगा— कर्मयोग नहीं चलेगा, प्रगति नहीं होगी। विचार-भेद तो चाहिए ही। उसके बगैर विचार-शोधन नहीं होगा। परंतु जहाँ आचार का सवाल आयेगा, वहाँ जिस पर एक राय होगी, उसी को धर्म मानेंगे और उसी के अनुसार चलेंगे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन के पत्थर

बहते रहो

उस स्कूल का वह मेरा सातवाँ और अंतिम वर्ष था। उसी साल मेरे पिता के एक घनिष्ठ मित्र हमारे यहाँ कुछ दिनों के लिए रहने आये। बड़ा ही हँसमुख स्वभाव था उनका। शीघ्र ही मैं उनसे हिल-मिल गया। कुछ दिनों के बाद मेरी परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। मैं उत्तीर्ण हो गया था। अब मुझे दूसरे स्कूल में अपने आगे की शिक्षा पूरी करनी थी। मैं नये उछाह, नये उत्साह से स्कूल गया; किंतु दस दिनों के भीतर ही मेरा उत्साह ठंडा पड़ गया। नये-नये विषय पढ़ाये जाते, नयी-नयी बातें और स्कूल के पुराने छात्रों का मुझ-जैसे 'अनाड़ी' छात्रों का मखौल उड़ाना— मैं घबड़ा उठा और दूसरे दिन जब स्कूल जाने का वक्त आया, तो मैंने साफ इन्कार कर दिया। घरवाले बहुत नाराज हुए; पर मैं किसी तरह नहीं माना। मेरे पिताजी के मित्र महोदय ने सारी घटना सुनी, तो बोले—"अच्छा बेटे! जाने दो, स्कूल नहीं जाना, लेकिन मेरे साथ घूमने चलोगे न?" मैंने आँखों में संदेह-भर कर देखा, तो बोले—"अभी न चलना चाहो, तो शाम को चले-चलना।" मैं तैयार हो गया। शाम को वे मुझे अपने साथ एक छोटे-से सोते के किनारे ले आये। बोले—"आओ, हम यहाँ थोड़ी देर बैठें।" बैठने के कुछ क्षण बाद उन्होंने कहा—"पानी कितनी तेजी से भागा जा रहा है। इसे रोक दें, तो कैसा रहेगा?" मैं मुस्कराया; पर वे नहीं माने। एक बड़ा-सा पत्थर उठा लाये और सोते के बीच में फेंकते हुए बोले—"देखो, यह पत्थर इसका बहना रोक देगा।" पानी का बहाव क्षण-भर को अस्थिर तो हुआ; लेकिन फिर उस पत्थर को अपने गर्भ में छुपा अविराम गति से बहने लगा। मैं तालियाँ पीट कर हँस पड़ा; लेकिन वे गम्भीर स्वर में बोले—"बेटे! किसी भी रुकावट से घबड़ाना नहीं चाहिए। तुमने इस सोते के पानी को देखा न? किस प्रकार अपनी रुकावट पर विजय पा, यह अपनी राह चला जा रहा है। तुम भी इसके समान ही निर्बाध बहते रहो; तभी कुछ कर सकोगे!"

ज्यों-ज्यों मेरी जीवन-लीला अपने अंतिम छोर के निकट पहुँचती जा रही है, त्यों-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्यों इस गुरुमंत्र का अर्थ-वैभव मेरे मानस में अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है।

—डा० सुकार्नो (इंडोनेशिया)

*

नये बनो

चित्रकार बनने की आकांक्षा मेरे बचपन से ही रही है; किंतु यह घटना तब की है, जब मैं शैशव की सीढ़ियाँ पार कर किशोरावस्था में कदम रख चुका था। अपने समवयस्क मित्रों तथा छात्रों में मैं एक 'अच्छा' चित्रकार माना जाता था; किंतु तब तक मुझे अपने चित्रों के लिए एक ही विषय पसंद था—लोगों की आकृतियाँ बनाना। लोगों की आकृतियाँ याने 'पोर्ट्रेट' बनाने में मुझे बड़ा आनंद मिलता। किसी दूसरी वस्तु को चित्र का रूप देने में मेरे लिए कोई विशेष आकर्षण नहीं था। तभी हमारे यहाँ ड्राइंग के नये मास्टर आये। बड़े ही अच्छे व्यक्ति थे। मेरा बनाया 'पोर्ट्रेट' देखा, तो खुश हो गये। उन्होंने मुझे इस ओर और भी मन लगाने के लिए कहा और उस दिन से मेरा विशेष ध्यान रखने लगे। एक बार उन्होंने हमारी कक्षा में चित्र-प्रतियोगिता की। तब तक कक्षा में नये-नये विद्यार्थी भी आ गये थे। उनकी चित्रकला से मैं अधिक परिचित तो नहीं हो पाया था; पर अपनी सफलता का मुझे विश्वास था। किंतु जब प्रतियोगिता का परिणाम निकला, तो पारितोषिक एक नये छात्र ने पाया। अपनी असफलता के साथ-साथ उस नये छात्र के प्रति ईर्ष्या भी हुई। पुरस्कृत चित्र को लपक कर देखा, तो मुझे अजीब-सा लगा। उपेक्षा से मुँह फेर मन-ही-मन विक्षुब्ध होता, मैं वहाँ से घर लौट आया। दूसरे दिन कक्षा में जाने की भी इच्छा न हुई और तीसरे दिन नये मास्टर साहब स्वयं मेरे घर आये। कक्षा में नहीं आने का कारण पूछा, तो मेरा अब तक का रोष-विक्षोभ फूट पड़ा। वे सुनते रहे; फिर शांत-संयत स्वर में बड़े स्नेह से बोले— "देखो, किसी एक ही चीज से स्वयं को बाँध लेना उचित नहीं। आगे बढ़ते समय के साथ चीजें पुरानी होती जाती हैं। अगर तुम साथ नहीं चले, नहीं बदले, तो तुम भी पुराने हो जाओगे। दुनिया हमेशा नयी चीजों की कद्र करती है; अतः तुम भी नये बनो!"

मेरे आज के चित्रकार का जन्म तभी हुआ। इस अमूल्य सीख को आज भी मैं अपने जीवन की सर्वोपरि निधि मानता हूँ!"

—पाब्लो पिकासो

*

—जो वास्तविकता है, उसे सौ पुस्तकों की शक्ति भी अवास्तविक नहीं बना सकती।

—जिमूतिवाहन

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन मूसा दुनिया में आये

एक प्राचीन जैन-पुस्तिका का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

☆

खुदा-बंद-करीम के दरबार में हजरत मूसा ने पहुँच कर ताजीम बजायी ही थी कि, खुदा ने उनसे कहा—"मूसा, मैंने संसार का निर्माण कर दिया है। बेहतर है, अब तुम वहाँ जाकर उसे एक बार देख आओ।"

हजरत मूसा खुदा की आज्ञा शिरोधार्य कर, मनुष्य-लोक में पहुँचे, तो उनकी नजर सबसे पहले फत्तू नाम की एक बुढ़िया पर पड़ी। वह दरिद्रा-वस्त्रहीना थी और धूल से अपने को ढँक कर—"कुछ दे-दे खुदा, कुछ दिला दे खुदा!" कह रही थी। मूसा को देख कर अत्यंत आर्त्त स्वर में उसने कहा—"हजरत, खुदा से मेरी इतनी सिफारिश तो करो कि, मुझे तन ढँकने के लिए एक कपड़ा मिल जाये। कितने दिनों से भूखी हूँ। एक दाना भी इधर नसीब नहीं हुआ। खुदा से कहना कि, इतनी दया करें कि, कम-से-कम दोनों वक्त एक रोटी तो मयस्सर हो जाया करे।"

हजरत मूसा

हजरत मूसा ने उसकी बात बड़े ध्यान से सुनी और उसे आश्वासन देकर वह आगे बढ़े। रास्ते में उन्हें सिलेमा का मकान मिला। उसकी श्री-सम्पत्ति की पूरे नगर में बड़ी चर्चा थी। हजरत उसके मकान के सामने ठिठक गये। सिलेमा ने भी हजरत को पहचान लिया। बड़े आदरपूर्वक उन्हें मकान में ले गया और उनकी बड़ी खातिर की। हजरत जब गमनोद्यत हुए, तो सिलेमा बोला—"हज़-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रत, खुदा से कहना कि, मुझे किस जाल में फँसा रखा है उन्होंने ! यह दौलत थोड़ी कम कर देते, तो उनकी इबादत का मौका तो मिलता !"

हजरत वहाँ से विदा लेकर आगे चले। रास्ते में उन्हें दरवेशों का एक दल मिला। दरवेशों के पास जाकर हजरत बोले—"खुदा के बंदो ! मैं मूसा हूँ। खुदा के हुक्म पर इस दुनिया को देखने आया हूँ। अगर तुम्हें खुदा से कुछ कहना हो, तो बताओ। मैं तुम्हारा संदेश उन तक पहुँचा दूँगा।"

दरवेशों ने हजरत से ये जो बातें सुनीं, तो उन्हें पकड़ लिया और बोले—"हजरत, इतने दिनों से हम लोग भूखे हैं और आप खुदा के लिए हमसे संदेश पूछते हैं ? सीधे से दो बकरी, डेढ़ मन घी और थोड़ी शक्कर मँगा दीजिये; नहीं तो हम लोग आपको छोड़नेवाले नहीं हैं— कुत्तों से आपका सिर नुचवा डालेंगे।" हजरत मूसा ने अविलम्ब उन सब चीजों की व्यवस्था कर दी, तब कहीं उनकी जान छूटी।

बस, इतना देख, हजरत का जी भर गया। वे लौट गये। खुदा के सम्मुख पहुँच कर, उन्होंने पूरी कथा कह सुनायी। खुदा बोले—"मूसा, अगर तुमने उस भूखी-नंगी औरत की सिफारिश की, तो मैं उसे तन ढँकने के लिए धूल भी न दूँगा और अगर सिलेमा का धन कम करने की बात कही, तो मैं उसका धन हजार-गुना ज्यादा कर दूँगा।"

साश्चर्य हजरत मूसा ने सवाल किया—"ऐसा क्यों, हुजूर ?"

खुदा बोले—"उस दरिद्रा ने सुखी अवस्था में कभी मेरा नाम नहीं लिया। सुख के बाद अब दुःख की बारी आयी है, तो वह मेरा नाम लेती है ! और, सिलेमा सौदागर ! मैं उस भक्त के धन को कम करने की तो बात सोच ही नहीं सकता। उसने पहले मेरी बड़ी भक्ति की है और आज भी वह वैसा ही निष्ठावान् है।"

मूसा ने कहा—"हुजूर, बुढ़िया और सिलेमा के लिए तो आपने यह आदेश दिया और दरवेशों के लिए आपने कुछ नहीं कहा।" खुदा ने कहा—"मूसा ! बहिश्त और दोजख नाम के दो खाने हैं। भक्तों को मैं बहिश्त में जगह देता हूँ और देव-गुरु-निंदक तथा धर्म-द्रोहियों के लिए दोजख है। ये दरवेश, जिनकी तुम चर्चा कर रहे हो, केवल वेश के दरवेश हैं। वास्तव म, वे अकर्मण्य, क्षुद्र, मद्यप और दुराचारी हैं। इन धर्म-द्रोहियों के लिए तो कब से मैंने दोजख में स्थान निश्चित कर रखा है।"

★

अंत में, उन उपेक्षित पुस्तकों को एक आलमारी में रखवा कर पुस्तकाध्यक्ष ने सूचना लटका दी—"सर्वसाधारण के लिए नहीं, कुशाग्रबुद्धि और गम्भीर व्यक्ति ही इन्हें समझ सकते हैं !" दूसरे दिन से ही लोग उन पुस्तकों की माँग करने लगे और दिन-भर में ही आधी आलमारी खाली हो गयी ! —'लाइब्रेरी-न्यूज़' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन किसका

भारतीय संस्कृति में धन को किस कोटि के महत्व से विभूषित किया जाता रहा है, वेद-वाङ्मय के मर्मज्ञ पंडित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने प्रस्तुत लेख में इस प्रसंग को स्पष्ट किया है।

★

यजुर्वेद के ४०-वें अध्याय का प्रथम मंत्र निम्नलिखित है –

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्;
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य-
स्विद्धनम् !

इस मंत्र में प्रश्न पूछा गया है–'कस्य स्वित धन' यानी 'यह धन किसका है ?' आज भी विश्व में सर्वत्र यही प्रश्न पूछा जा रहा है। वैश्य कहते हैं कि, धन उनका है; क्षत्रिय कहते हैं कि, वे उसके स्वामी हैं; शूद्र कहते हैं कि, उस पर उनका अधिकार है और ब्राह्मण भी उस पर अपना आधिपत्य जमाने में किसी से पीछे नहीं। तो फिर आखिर वह है किसका ?

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

उपर्युक्त पद में ही प्रश्न का उत्तर भी दिया गया है। 'स्वित' का अर्थ 'निश्चय' भी है तथा 'क' का अर्थ है 'प्रजापति'– यानी 'प्रजापति' का यह धन है। प्रजापति से यहाँ तात्पर्य राज्य से है। पुराने समय में राजा प्रजापति होते थे। राजसूय-यज्ञों में जनता उनका वरण करती थी। राजा का अर्थ ही यह था कि, वह प्रजा का रंजन करे। राजा की यह संस्था भी आदिकालीन नहीं है। वेदों में एक प्रजापति को हटा कर उसके स्थान पर दूसरे प्रजापति को रखने का वर्णन है। तात्पर्य यह ह कि, धन को प्रजा का मान कर प्रजापति उसका विनियोग करता था। प्रजा या समाज स्थायी तत्व हैं और प्रजापति गौण।

यह सब भाव धारण करके ही–'कस्य स्वित धन' के पूर्व 'मा गृधः' यानी 'मत ललचाओ' कहा गया ह। इसका अर्थ यह है कि, धन-मात्र का लालच मत करो। अनेक विद्वान् उपर्युक्त दोनों मंत्रभागों को एक करके अर्थ करते हैं कि, किसी के धन का लालच मत करो; लेकिन यह अर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अशुद्ध है। इसका तात्पर्य तो यह होता है कि, अपने धन का लालच करने में वेद को कोई आपत्ति नहीं है। पर धनी व्यक्ति अपने धन का लालच करेगा, तभी कलह तथा वर्गविद्वेष उत्पन्न होंगे। अतः मुख्य प्रश्न यह है कि, अपने धन का उपयोग किस तरह किया जाये?

इस प्रश्न का उत्तर मंत्र के तीसरे भाग में है—'त्येन त्यक्तेन भुंजीथाः'—अर्थात् धन का त्याग-पूर्वक भोग करो। भोग मनुष्य के लिए आवश्यक है, यह पहली बात है। भोग दो प्रकार के होते हैं। भोग से भोग और त्याग से भोग। वेद ने भोग से भोग को वर्जित ठहराया है। भोग से भोग की वैसे भी मर्यादाएँ हैं। मान लीजिये, कोई व्यक्ति मिठाई का भोग करता है, तो वह एक निश्चित मर्यादा से अधिक मिठाई नहीं खा सकता। यदि वह उससे अधिक मिठाई का भोग करेगा, तो परिणाम में, मिठाई ही उसका भोग करने लगेगी! मनुष्य अनेक विवाह कर सकता है, सैकड़ों स्त्रियाँ रनिवास में रखनेवाले राजा-महाराजा हुए हैं; लेकिन वह एक समय में एक का ही भोग कर सकता है। जो भोग प्रकृति-द्वारा वर्जित है, उसका कौन समर्थन करेगा? इसलिए वेद ने कहा है कि, 'त्याग से भोग करो।' ध्यान देने की बात है कि, त्याग से भोग की कोई मर्यादा नहीं है, वह अमर्यादित है। आप अन्न-दान, विद्यादान, औषधदान, धनदान आदि जितना भी चाहें, कर सकते हैं। फिर त्यागपूर्वक भोग में ही सच्चा आत्म-सुख है। वह समाज-सेवा है। अर्थनीति पर राज्य का नियंत्रण न होते हुए भी अर्थ के वितरण और बहाव की कैसी अच्छी व्यवस्था है। इसमें व्यक्ति को ही अपने-आप पर, अपने आर्थिक व्यवहार पर, नियंत्रण रखना पड़ता है। कुछ देशों में यह समस्या आज खड़ी हो रही है, जबकि वेदों में इसका हल पहले से ही मौजूद है।

सब धन यज्ञ के लिए है, यह वैदिक विचारधारा है। यह कहने से भी यही

ज्ञान : धन

एक दिन ज्ञान और धन, दोनों लड़ते-लड़ते आत्मा के पास पहुँचे, बोले—"हम दोनों में श्रेष्ठ कौन है, न्याय कर दीजिये!" आत्मा को इस प्रश्न पर बरबस हँसी आ गयी, बोली—"यह संघर्ष ही गलत है। दोनों उपार्जन-मात्र हैं। बड़े-छोटे का सवाल ही नहीं उठता। सारा दारोमदार व्यक्ति पर है, जो ज्ञान या धन का अर्जन करता है। यदि वह अपने धन या ज्ञान का सही उपयोग कर सका, तो धन या ज्ञान उसके लिए भवसागर के जहाज हैं और अगर वह इनका दास बन गया, तो धन हो या ज्ञान, दोनों ही गलफासियाँ हैं!"

—महर्षि रमण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तात्पर्य निकलता है कि, सब धन प्रजा के लिए है और उसी के पालन में वह लगना चाहिए। 'यज्ञ' का अर्थ, जिससे श्रेष्ठों का सत्कार हो, प्रजा का संगठन हो और असहायों को सहायता मिले, किया गया ह। सत्कार-संगति दानात्मक कर्मयज्ञ हैं।

यज्ञ की कल्पना मूलतः किस सिद्धांत से उत्पन्न हुई, यह देखना चाहिए। वेद ने मानव-समाज की व्यवस्था दो शब्दों में कही है—'जगत्यां जगत्।' यह भी उपर्युक्त मंत्र का ही एक खंड है। इस कथन का पदशः अर्थ यह है कि, 'जगती के आधार से जगत् रहता है।' 'जगत्' का अर्थ—जो गतिमान है, चलता है, प्रगति करता है, वह जगत् है। सब विश्व गतिमान है, अतः उसे जगत् कह सकते हैं। परंतु देखना है, उसमें भी सच्ची प्रगति कौन करता है, मनुष्य ही अपनी बुद्धि-शक्ति के कारण सब चराचर प्राणियों से अधिक गतिमान है। इसलिए यों सामान्यतः सब विश्व-पदार्थ 'जगत्' कहलाते हैं; लेकिन पूर्ण रीति से मनुष्य ही 'जगत्' है।

एक व्यक्ति को जगत् कहा जाता है तथा अनेक जगतों की समष्टि को जगती कहते हैं। जगत् मरता है, जगती स्थायी है। व्यक्ति मरता है, समाज स्थायी है। धन भी मरनेवालों का कभी नहीं हो सकता, अमर का ही हो सकता है। 'जगत्यां जगत्' के अनुसार जगती के आधार पर जगत् है अथवा समष्टि के आधार पर व्यष्टि है। व्यष्टि समष्टि के आधार से रहती है, अतः उसे उचित है कि, वह समष्टि के लिए भोग का त्याग करे।

प्राचीनकाल में जो अनेक यज्ञ किये जाते थे, उनमें एक सर्वमेध-यज्ञ भी होता था। इस यज्ञ में सब धन जनता के लिए अर्पित कर दिया जाता था। इस यज्ञ को करनेवाले धनहीन बन जाते थे। सम्राट् भी दूसरे दिन से मिट्टी के ही पात्र बरतता था। सर्वमेध-यज्ञ का उद्देश्य ही यह था कि, किसी के पास धन-संग्रह न हो। आज ऐसा नहीं होता। इसी कारण यूरोप, अमेरिका, आदि देशों में व्यक्ति के पास धन-संग्रह हो रहा है। यह अयज्ञीय जीवन है— दुःखों को बढ़ानेवाला है।

अब यह देखें कि, धन के स्वामित्व के विषय में वेद क्या कहता है? उपर्युक्त मंत्र में ही कहा गया है—'ईशा वास्य इदं सर्वं यत्किंच'— अर्थात् यहाँ पर जो-कुछ भी है, उस पर ईश का स्वामित्व होने-योग्य है। अनीश का उस पर कोई अधिकार नहीं। जिसमें ईशन-शक्ति, अर्थात् शासन करने, शक्तिमान होने, समर्थ होने की शक्ति रहती है, उसे ईश कहते हैं। स्वामित्व का यह सिद्धांत सभी देशों में दिखायी पड़ता है।

वेदों ने धन के महत्व को भलीभाँति समझ लिया था। सभी झगड़े, कलह, स्पर्धा, युद्ध, आदि धन के ही कारण होते हैं। इसीलिए वेद ने युद्ध को एक नाम 'महाधन' भी दिया था और युद्ध का मूल कारण धन को माना था।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एमिनट इमर्सन के साथ

अमेरिका का ब्रह्मवादी राफ वाल्डो इमर्सन केवल देह से अमरीकी था, आत्मा में तो वह भारत के वेदांत का चैतन्य-रूप ही था। इसीलिए अमरीकी भूमि पर उसके जन्म को 'भौगोलिक भूल' बताया जाता है। जीवन के चरम तत्वों की खोज में आजीवन लीन इमर्सन की लेखनी ने संसार के वैचारिक क्षेत्र को कुछ बहुत ही सुवासित सुमन प्रदान किये हैं। रामकृष्णजी बेनीपुरी ने इन्हीं में से कुछ सुमन चुन कर 'नवनीत' के पाठकों के सम्मुख रखे हैं।

★

अभी मैं अपने गाँव गया था। वहाँ चार-पाँच दिनों तक इमर्सन की रचनाओं में डूबा रहा। इमर्सन—नयी दुनिया का एकमात्र ऋषि, कवि, चिंतक! नया संदेश—नयी भाषा में। यह वही अमरीकी ऋषि था, जिसने चिल्ला कर कहा था—"बोलने के समय सदा यही मत सोचो कि, कल क्या कहा था; यह तो छोटे दिमाग की बात है, जिसकी कदर तुच्छ राजनीतिज्ञ करते आये हैं। जो सोचते हो, खुले कंठ से, कठोर शब्दों में कहो और कल जो सोचो, उसे भी इसी कंठ से, कठोर शब्दों में कहना—भले ही वह आज की बात के बिल्कुल विपरीत हो!"

इमर्सन

इसी सूत्र को पकड़ कर फिर उसने आगे कहा था—"यह मत पूछो कि, मैं एक साल पहले क्या सोचता था, यह या वह! पूछो यह कि, मैं आज क्या सोचता हूँ!"

इमर्सन का जन्म आज से डेढ़ सौ साल पहले बोस्टन नगर में हुआ था। पहले वह अपने नगर के प्रसिद्ध गिरजाघर में उपदेशक का काम करता था। लेकिन ज्यों-ज्यों वह सत्य के निकट पहुँचता गया, उसने देखा, वह अपने को किसी घेरे में बाँध कर रख नहीं सकता। चालीस वर्षों तक वह अपने स्वतंत्र चिंतन का अमूल्य प्रसाद बाँटता रहा—कविता के रूप में, लेखों के रूप में, व्याख्यानों के रूप में। प्रकृति का पुजारी—प्रजातंत्र का पुजारी! उन्मुक्त आत्मा ही स्वतंत्रता का यथार्थ रसास्वादन कर सकती है और वह स्वतंत्रता व्यर्थ है, जो आत्मा को बंधन-विमुक्त नहीं करे—जीवन-भर पुकार-पुकार कर वह कहता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा ! जो विज्ञान मस्तिष्क को हृदय से अलग कर दे, जो सभ्यता पुरुष को प्रकृति से दूर कर दे, उस विज्ञान और सभ्यता के विरोध में भी वह आवाज उठाता रहा !

मैंने इमर्सन के साथ पाँच दिन गुजारे; क्या आप पाँच मिनट भी इसके लिए नहीं दे सकेंगे ? तो लीजिये, उसके चिंतन की कुछ मुक्ताएँ—

सदा विजय की, सफलता की ही बात क्यों करो; कुछ सत्य की, आनंद की, आराम की बात भी तो करो।

× × ×

जीवन तो एक प्रयोग है ! जितने अधिक प्रयोग कर सको, उतना ही अच्छा है। क्या हुआ, यदि वे तीखे हुए ? क्या हुआ, तुम असफल रहे—एकाध बार धूल में गिर पड़े ? अरे, उठ खड़े हो, अब तुम्हें ठोकर खाने से डर नहीं लगेगा।

× × ×

मितव्ययिता का अर्थ यह नहीं है कि, कम कोयले जलाओ, बल्कि क्षण-क्षण जलने-वाले समय का सदुपयोग करो।

× × ×

प्रेम को पाप बना दो, फिर वासना का ही बोलबाला रह जायेगा।

× × ×

विद्वानों से बचो—उनके विचार चहार-दीवारी के अंदर बंद पीले, पिलपिले और खोखले हैं। एक स्वस्थ पुरुष के बाहरी ज्ञान इनसे कहीं अच्छे, जिनमें ताजगी और जिंदगी होती है।

× × ×

प्रत्येक विचार बीज है और फल भी।

× × ×

अतिविश्वास और अविश्वास, दोनों पड़ोसी हैं। आस्तिकता की अति नास्तिकता तक पहुँचा देती है।

× × ×

अरे, सत्य को ढूँढ़ो, सत्य को। जो तुम नहीं जानते, कह दो, उसे मैं नहीं जानता ! जिनकी परवाह तुम नहीं करते, कह दो, तुम उनकी परवाह नहीं करते !

× × ×

आदमी की पहचान के लिए देखो, वह पढ़ता क्या है, किनकी संगत में रहता है, किनकी प्रशंसा करता है, उसकी पोशाक कसी है, वह कैसी कहानी कहता है, वह चलता कैसे है, उसकी आँखें इशारा कैसे करती हैं ? अरे, उसके मकान का रुख, उसके कमरे की सजावट, ये सब उसके व्यक्तित्व की झाँकी देते हैं। संसार में सब-कुछ एक-दूसरे से सम्बद्ध है।

× × ×

तुम्हारी बात लोग समझ लें, यह आशा करना भी ऐयाशी है।

इमर्सन एक महान् लेखक भी था। लेखकों और उनके कर्त्तव्यों के बारे में भी उसने कुछ मार्मिक बातें कही हैं। "लिखो वह, जो तुम हो।"—इस एक वाक्य में उसने एक ऐसा सत्य कहा है, जिसका अनुसरण हम करें, तो साहित्य के नाम पर जो आज कूड़ा-कचरा फैल रहा है, उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंत हो जाये। वह आगे कहता है—

अच्छा लेखक सदा अपने बारे में लिखता है। हाँ, उसका ध्यान उस सूत्र पर रहता है, जो संसार को उससे जोड़ता है।

× × ×

ठोस वाक्य लिखो; फिर विराम-चिह्नों की भी आवश्यकता नहीं।

× × ×

साहित्य क्या है? कर्म को, मस्तिष्क के आनंद के लिए, विचार का रूप देना है। इसका आदर्श विशुद्ध सत्य है। किंतु यह सदा याद रखना है— शब्द में वह शक्ति नहीं कि, वस्तु को पूर्णतः प्रकट कर सके। तुम सूर्योदय के सौंदर्य का सही चित्रण कर नहीं सकते।

× × ×

मेरी डायरी में आप विनोद नहीं पायेंगे; क्योंकि अकेले में हर आदमी गम्भीर बन जाता है।

राजनीति से इमर्सन को जैसे चिढ़ थी— आज से सौ वर्ष पहले भी, जबकि राजनीति में आदर्शवाद की पुट थी, उसके दूरदर्शी नेत्र देख सके थे कि, राजनीति किस दलदल में फँसने जा रही है। वह स्वीकार करता है—"कोई भी आदमी अपने युग के प्रश्नों से अपने को अलग नहीं कर सकता। तुम अपने को राजनीति से उसी प्रकार अलग नहीं रख सकते, जिस प्रकार रास्ता चलते हुए धूप या धूल से।" तो भी वह चिल्ला उठता है—

क्या उन सम्मानीय चोरों को रोकने का कोई उपाय नहीं है, जो राजनीति के मंदिर में घुस कर देवता के फूल-अक्षत तक चुराने से बाज नहीं आते।

× × ×

तुम किसी सरकार को समझा नहीं सकते कि, बेईमानों की हिस्सेदारी व्यापार की तरह राष्ट्र को भी चौपट कर डालती है।

× × ×

तुम देशभक्ति के गीत गाओ। मैं तो देखूँगा कि, उसके हाथ में स्वच्छता और हृदय में पवित्रता है या नहीं।

मोह

तन की डाल पर बैठा मन-पंछी एक बार डाली में लगे मीठे फलों को देखता है और दूसरी बार आकाश में खड़े उस अनंत 'सुंदर' को, जो उसे सदैव अपनी तरफ खींचता रहा है। बेचारा पंछी सोच में पड़ जाता है, किस आकर्षण में लीन कर दे अपने को वह? तन कहता है—"रे अबोध, फल क्षणिक है, क्षण में ही झड़ जायेंगे; खा ले उन्हें।" आकाश कहता है—"रे मूढ़, पंख क्षणिक हैं, क्षण में झड़ जायेंगे, उड़ कर जल्दी आ जा!" मेरा पंछी काफी देर तक इन दो आह्वानों में उलझा रहा— आखिर वह ऊपर उड़ा। मगर बीच अंतरिक्ष में ही पहुँचा था कि, उसने देखा, डाली के फल झड़ गये हैं और ज्यों ही निराशा का निःश्वास उसके मुख से निकला, उस बेचारे के पंख भी जीर्ण होकर टूट पड़े। —इमर्सन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षा, संस्कृति, महानता, आदि प्रश्नों पर भी उसकी अनेक सूक्तियाँ मोतियों की तरह आबदार हैं। जहाँ कहीं भी वह इन विषयों पर बोलता है, लगता है, वह अपने कलेजे को कागज पर रख रहा है। वह कहता है :—

बच्चों के दिमाग में जोड़-घटाव, तारीख और फारमूले भरने के पहले, उन्हें जंगलों और खेतों में घूमने दो कि, उनके रहस्य वह समझ सके। उन्हें गुल्ली-डंडा, गेंद और कुश्ती खेलने दो, जिससे उनके पुट्ठों में रस आये! उन्हें खाली पीठ घोड़े पर उछल कर बैठने दो। उन्हें मछली मारने दो, पेड़ों और खम्भों में धक्के देने दो, पंडुक और मुर्गावियों पर निशाना साधने दो! तभी वे कालेज की पोशाक पहन कर प्रेमगीत गाने या सभ्य व्यवहार करने के योग्य हो सकेंगे।

× × ×

अपने बच्चे को चलना-भर तुम सिखला सकते हो; दौड़ना तो वह स्वयं सीखता है!

× × ×

संस्कृति अलग चीज है और दिखावट अलग। जब तक विशुद्ध नैतिकता न हो, उच्च संस्कृति आ नहीं सकती। एक सुसंस्कृत व्यक्ति के निकट कोई भी सुंदरी, कोई भी बच्चा, कोई भी गरीब सदा अपने को सुरक्षित समझेगा।

× × ×

महान् कार्य स्वभावतः ही बंद कोठरियों में नहीं किये जाते। वे सूर्य देवता के सामने, संसार की ओर से, उन्मुक्त प्रकाश में किये जाते हैं।

× × ×

भगवान् बड़े आदमियों को चापलूसों से बचायें!

× × ×

मैं डंके की चोट कहता हूँ, अज्ञान ही पाप है। जो चोरी करता है, वह अपने को चुराता है। जो धोखा देता है, वह अपने को धोखे में रखता है। जो कर्ज लेता है, वह अपना ही कर्जदार बनता है। और, जो दूसरे को जितना देता है, उतना ही अपना लाभ करता है।

× × ×

एक साथ अधिक कामों में हाथ मत डालो। असीम कार्य-साधन की इच्छा दिवालियापन की ओर घसीट ले जाती है।

× × ×

सच मानिये, पूरी ईमानदारी की कमी ही असफलता की जननी है।

× × ×

सबसे सुखी वह है, जो अपने काम में लगा हुआ है, उसकी सफलता पर ही जिसका ध्यान है; न कि इस बात पर कि, लोग क्या कह रहे हैं और जमाना क्या कहेगा?

★

हम जो-कुछ पाते हैं, उससे अपना जीवन-यापन करते हैं; पर जो-कुछ हम देते हैं, वस्तुतः उसी से हमारे जीवन का निर्माण होता है। —इमर्सन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरती मेरी ही चेरी हो

जेराल्ड हर्ड की एक बोधकथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

थोड़े अरसे पहले की बात है। एक घने जंगल में एक बाघ अपने परिवार के साथ रहता था। एक दिन सवेरे ही बाघ सोकर उठा और अपनी पत्नी को जगाते हुए बोला—"उठो, उठो, आज से इस जंगल का राजा मैं हूँ!"

"क्या कहते हो! जंगल का राजा तो सिंह है!"—बाघिन ने साश्चर्य अपने पति को देखते हुए कहा।

"हाँ, कल तक था; पर अब परिवर्तन आवश्यक हो गया है!"—उत्तेजित बाघ बोलता गया—"देखती नहीं, सम्पूर्ण सृष्टि में क्रांति के लिए शोर मच रहा है; फिर हम ही क्यों पीछे रहें?"

बाघिन ने अपने कान सीधे किये; पर किसी तरह का शोर उसे सुनायी नहीं पड़ा। केवल उसके अपने बच्चे ही भूख के कारण गुर्रा रहे थे।

उधर, महत्वाकांक्षी बाघ अभी बोलता ही जा रहा था—"आज रात जब चंद्रमा आकाश में आयेगा, तब मुझे इस जंगल का राजा पायेगा। तुम देख लेना; मेरे सम्मान में आज चंद्रमा का भी रंग पीला होगा और उसमें काले रंग की पट्टियाँ होंगी। मेरा रंग ग्रहण करके वह भी मेरी प्रभुता स्वीकार करेगा!"

बाघिन ने इस समय तर्क करना उचित नहीं समझा और "हो सकता है!" बोल कर वह अपने बच्चों की ओर बढ़ गयी।

थोड़ी देर पश्चात् बाघ अपनी गुफा से निकला और सिंह के दरवाजे पर जाकर चिल्लाया—"बाहर आकर जंगल के राजा

शांति-कपोत

वे दो शांति-कपोत थे, जो विरोधी दिशाओं से सात समंदर पार कर उस वृक्ष पर आ बैठे थे। दोनों ने परस्पर परिचय पूछा। दोनों ही एकधर्म में लीन! बड़े प्रसन्न हुए। साथ ही खाया, साथ ही पिया। विश्राम के समय, बातों-ही-बातों में, एक ने कहा—"भाई, तुम्हारे मालिक के पास मेरे मालिक की अपेक्षा सैन्यबल बड़ा कम है।" दूसरे ने कहा—"झूठ! सरासर झूठ!!" और, क्षणमात्र में ही दोनों शांति-कपोत एक-दूसरे पर झपट पड़े और जब तक निर्जीव नहीं हो गये, अपनी सच्चाई की रक्षा के लिए लड़ते रहे। —बर्मी कवि ऊ बा-पे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को नमस्कार कर! जंगल का राजा मैं हूँ! मेरी प्रभुता चलेगी यहाँ!"

सिंह घोर निद्रा में था। फिर भी सिंहनी ने, ऐसी बातें सुन कर, उसे उठाया—"कोई 'राजा' तुम्हें बाहर बुला रहा है! कहता है, जंगल का राजा वही है!"

क्रुद्ध सिंह गुफा से बाहर निकला और देखते-ही-देखते दोनों में द्वंद्व-युद्ध आरम्भ हो गया। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों युद्ध का रूप भी बदलता गया और अंततः जंगल के सभी जानवर इसमें शामिल हो गये। किसी ने सिंह का पक्ष लिया, तो किसी ने बाघ का! लेकिन लड़ाई हो क्यों रही है, इसका ज्ञान कुछ ही जानवरों को था—बाकी सिर्फ लड़ने के लिए लड़ रहे थे।

लड़ते-लड़ते एक कुत्ते ने सियार से पूछा—"लेकिन भाई, तुम मुझसे लड़ किसलिए रहे हो?"

सियार ने सिर ऊँचा कर जवाब दिया—"अन्याय के प्रतिकार के लिए!"

तभी एक घायल घोड़े ने भी अपने से लड़ रहे एक रीछ से यही सवाल पूछा और रीछ ने जवाब दिया—"व्यवस्था कायम रखने के लिए। अराजकता की स्थिति पैदा होने देकर मत्स्यन्याय की छूट हम कभी नहीं बर्दाश्त कर सकते!"

इसी तरह भीषण युद्ध में दिन बीत गया और संध्या होने पर, चंद्रमा आकाश में आया। आज वह, वास्तव में, पीला था और उस पर काली पट्टियाँ पड़ी थीं; लेकिन साथ ही वह एकदम निस्तेज-सा भी लग रहा था। फिर भी, नित्य की तरह आज भी, उसने जंगल की सजीवता के दर्शन के लिए दृष्टि नीचे झुकायी और जंगल में चाँदनी फैल गयी; पर उसे एक उल्लू और एक चमगादड़ के सिवा, जो वहाँ के भयानक दृश्य को देख कर चीख रहे थे, और कोई जीवित प्राणी न दिखा। सभी प्राणियों का नाश हो चुका था और लहूलुहान बाघ भी मृत-प्राय जमीन पर पड़ा था। अंततः वह जंगल का राजा बन गया था; लेकिन निर्जन जंगल में राज किस पर करता! अचानक अपनी विजय के प्रतीक चंद्रमा पर उसकी दृष्टि पड़ी, तो अपनी पूरी शक्ति लगा कर वह उठा; पर तुरत ही चक्कर खाकर गिर पड़ा और उसकी आँखें पथरा गयीं।

*

सन् १९३७ में सरोजिनी नायडू जेल से छूटने पर गांधीजी से मिलीं, तो गांधीजी ने मुस्कराते हुए कहा—"देखता हूँ, इस बार जेल ने सिर के बाल भी सफेद कर दिये!" सरोजिनी भी मुस्करायीं—"जेल का क्या दोष, दोष तो आपके उपवासों का है। मेरे जेल जाने के बाद आपने न-जाने कितने उपवास किये और मुझे बराबर यह चिंता बनी रहती कि, यह कहीं आपका अंतिम उपवास न साबित हो।"

—सत्यदेव नारायण सिन्हा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्याना

[अफगानिस्तान का यात्रा-दर्शन]

कुछ समय पूर्व संसद-सदस्य रघुनाथ सिंह ने अफगानिस्तान की यात्रा की थी। उसी यात्रा के फलस्वरूप, अभी हाल ही में, उनकी पुस्तक 'आर्याना' ज्ञानमंडल से प्रकाशित हुई है, जिसमें यात्रा-वृत्तांत के साथ-साथ अफगानिस्तान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का भी विवेचन है। अफगानिस्तान-नरेश जब भारत-पर्यटन के लिए आये थे, तो उन्हें यह ग्रंथ भेंट किया गया था। हम यहाँ उक्त ग्रंथ के कुछ मनोरंजक पृष्ठ दे रहे हैं।

★

'आर्याना' नाम है, अफगान सरकार के वायुयान का। नाम पढ़ते ही चौंका। इसी वायुयान में हम अफगानिस्तान के लिए रवाना हुए।

....अमृतसर पड़ा। स्वर्ण-मंदिर चमका। लाहौर आया। रावी बहती चली जा रही थी। सन् १९२९ के दिसम्बर में इसी रावी के तट पर श्री जवाहरलाल नेहरू के संग घूमा-फिरा था।

हजारों फुट ऊपर से देख रहा था— लाजपतराय की कर्मभूमि, भगतसिंह की नगरी, सिखों की एक समय की राजधानी। मन-भर देख न सका। विमान बढ़ता गया। लाहौर छूट गया— अनंगपाल, जयपाल और सिखों के इतिहास का लाहौर!

सिंधु नद आया। ललचायी आँखें नीचे झुकीं। नीचे से जैसे कोई बुला रहा था। ओह! इसके साथ इतनी स्मृतियाँ थीं, इतने इतिहास थे, इतनी भावनाएँ थीं कि, मन करता था, कूद पड़ूँ—लहरों में समा जाऊँ, पूछूँ—"तूने हमें 'हिन्दू' नाम क्यों दिया? हमसे क्यों रुठ गयी? हम अपनी 'संध्या' में तुझे रोज याद करते हैं। तेरा गुणगान करते नहीं थकते और तू हमारी तरफ देखती भी नहीं। बोल, तेरे रूठने की हमें क्या कीमत अदा करनी पड़ेगी?"

मैं अपनी भावना में डूबा था। जहाज के परिचारक ने कहा— "डेरा गाजीखाँ।"

डेरा गाजीखाँ सिन्धु के पश्चिमी तट पर है। यहाँ वैष्णव वैरागियों का एक सम्प्रदाय था। वे 'महंथ' कहलाते थे— सुरमे का व्यवसाय करते थे। सन् १९२१ से उन्हें अनेक प्रदर्शनियों में देखता आया हूँ। उनका रामानंदी टीका, गले में मोटी तुलसी की माला, घनी दाढ़ी, प्रसन्न मुखमुद्रा, मुझे खूब याद है।

मन उचटा-सा था। परिचारक ने कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"वह है, तख्ते-सुलेमान।"

सिंधु नद पार करते ही सीमांत-प्रदेश आया। सूखी पर्वतमाला मिली। इसी पर्वत को 'सुलेमान' कहते हैं। दूर तक देखा। सूखी, पादप-दूर्वाविहीन फैली पर्वतमाला। जहाँ तक दृष्टि जाती, पहाड़ रेगिस्तान मालूम पड़ता था।

....हमारा विमान सुलेमान पर्वत को लाँघ चुका था। सुलेमान ही शायद पुरातन 'सोम-पर्वत' है। हमारा जहाज उस भूमि को स्पर्श करना चाहता था, जहाँ सभी सोम-सेवी रहते थे– जिसका नाम 'कुभ' था। वह 'कुभा' नदी के दोनों तटों पर बसा था। 'कुभ' का ही अपभ्रंश काबुल और 'कुभा' का काबुल नदी हो गया है।

अफगानिस्तान के वर्तमान शासक सम्राट् जहीरशाह

जहाज पर से ही पर्वत लाँघती, मैदान में होती, फिर पर्वत पर चढ़ती दूर तक खड़ी दीवार दिखायी दी। समझा, यही बालाहिसार का प्रसिद्ध दुर्ग होगा; किंतु यह भ्रम था। यह हिन्दू-रचना थी। आक्रामकों से काबुल की रक्षा के लिए हिन्दू-राजाओं ने इसे चीन की दीवार की तरह बनवाया था। इसे 'काबुल की दीवार' कहते हैं। दीवार अधिकतर मिट्टी की है। गत एक हजार वर्षों से यह यज्ञोपवीत के समान लोहित पर्वतमाला के वक्षःस्थल पर जैसे फैली है।

हमने समझा था, काबुल पुराना शहर होगा। लेकिन जहाज से ही चौड़ी अलकतरे की सड़क दिखायी दी। मैदान दिखायी दिये, बाग दिखायी दिये।

विमान एक पहाड़ी की तलहटी में घूमता उतरा। गर्द उड़ी, झुक कर देखा। मालूम हुआ, केवल कंकड़ बिछा कर हवाई अड्डा बना था। यहाँ रूस, हालैंड, अमेरिका, भारत और ईरान के विमान मिले। 'आर्याना' एयर-लाइन के भी तीन-चार विमान खड़े थे।

हिन्दुस्तानियों को यहाँ घर-जैसा मालूम होगा। हवाई जहाज आदि में काम करनेवाले ज्यादातर हिन्दुस्तानी हैं। हिन्दुस्तान से ही विमान लेकर अफगान सरकार ने 'आर्याना'-विमान-व्यवसाय आरम्भ किया है।

पासपोर्ट की जाँच की रस्म दस मिनट में खत्म हो गयी और हम चले काबुल की ओर। काबुल से 'आर्याना' हवाई अड्डा लगभग तीन मील दूर है।

हमारी गाड़ी एक नये बनते लाल दो-मंजिले भवन के सामने खड़ी हुई। यह अँग्रेजी ढंग का भवन था। यहाँ से भारतीय राजदूतावास मुश्किल से ४०० गज होगा। राजप्रासाद भी उतनी ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूरी पर था। यह होटल राजपथ पर है। इसके एक छोर पर हवाई अड्डा है और दूसरे पर काबुल का चौराहा है। इस चौराहे के मध्य में पख्तूनिस्तान का झंडा फहराता है। यह पख्तून-स्तम्भ है। पख्तूनिस्तान हमारा है, सब पख्तून एक हैं– यहाँ से यही ध्वनि उठती है। प्रत्येक पठान इस स्थान को बड़ी श्रद्धा-भक्ति की दृष्टि से देखता है।

यही 'आर्याना' होटल है– काबुल में ठहरने की एकमात्र जगह। राज-अतिथियों के लिए सरकार ने इसे बनवाया है। इस होटल का एक तरह से हम लोगों ने ही पहले-पहल ठहर कर उद्घाटन किया।

काबुल में मकान का किराया बहुत महँगा है। बनारस में जो मकान चालीस रुपये में मिलेगा, वही वहाँ चार सौ रुपये माहवार में भी सस्ता समझा जाता है। 'आर्याना' होटल में एक व्यक्ति के ठहरने और खाने का भारतीय बारह रुपया या अफगानी एक सौ बीस रुपया देना पड़ता है। भारतीय नोट और सिक्का यहाँ खुलेआम चलता है। इसे 'कलदार' कहते हैं। इसकी खुलेबाजार बिक्री होती है। अफगान राज्य-बैंक भी इसे खुलेआम खरीदता है। एक भारतीय रुपये की सरकारी दर साढ़े चार अफगानी रुपया है; परंतु यहाँ के सभी बैंकों और बाजार में एक भारतीय रुपया दस अफगानी रुपये में भुन जाता है।

अफगानिस्तान में तवे पर बनी रोटी कोई नहीं खाता। कमल के पत्ते से भी बड़ी, खमीर डाल कर, 'नान' रोटी पकायी जाती है। 'नान' और अंगूर, या 'नान' और गोश्त यहाँ का सार्वजनिक आहार है।

कस्बों तथा देहातों में भी नानबाई की दूकानें हमारे यहाँ-जैसी गंदी नहीं होतीं। प्रत्येक दूकान पर कीमती कालीन सुंदरतापूर्वक बिछा रहता है। हुक्का बीच में रखा रहेगा। बर्तन साफ होंगे। हाथ-पैर धोकर बड़े इत्मीनान से गलीचे पर पालथी मार कर बैठ जाइये, हुक्के

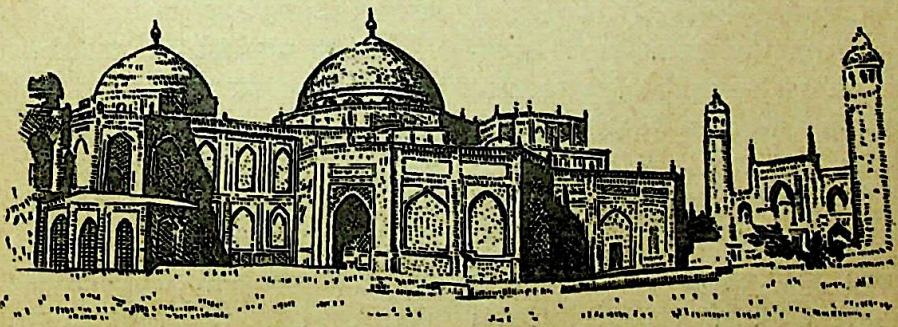

हजरत अली का मजार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कश लगाइये और जो खाना हो, शांति-पूर्वक खाइये। दूकानदारों में मेहमानदारी की भावना होती है और वे अपने ग्राहकों को खिलाने में गर्व का अनुभव करते हैं।

अफगानों और वहाँ के हिन्दुओं की पोशाक में बिल्कुल भेद नहीं होता। हिन्दू और मुसलमान, सभी स्त्रियाँ बुर्के का प्रयोग करती हैं। अफगानी लड़कियाँ बिंदी के स्थान पर काला टीका गुदवा लेती हैं। हमें भ्रम हुआ कि, वे हिन्दू होंगी; क्योंकि भारत और पाकिस्तान में मुस्लिम महिलाएँ गुदना नहीं गुदवातीं। पर अफगानिस्तान में यह रिवाज है।

अफगानिस्तान की कुल आबादी १ करोड़ २० लाख है। इनमें ९९.५ प्रतिशत मुसलमान हैं। काबुल की आबादी लगभग डेढ़ लाख होगी। काबुल में हिन्दुओं के भी दो मुहल्ले हैं। इन्हें 'हिन्दू गूजर' तथा 'आशामाई' कहते हैं। हिन्दुस्तानियों का मुख्य बाजार 'अफजल-बाजार' है।

हिन्दू-गूजर मुहल्ला आपको पुरानी दिल्ली का एक मुहल्ला मालूम होगा। दूकानों में पूड़ी-तरकारी, जलेबी, लड्डू, चावल-दाल, रोटी सब-कुछ दिखायी देगा। मकान ५ या ६ मंजिले तक हैं; पर सभी मिट्टी के। मैं कुरता-धोती में था, इसलिए किसी को भी यह समझने में किंचित्-मात्र देर न लगती कि, मैं हिन्दुस्तान से आया हूँ। हिन्दू-गूजर मुहल्ले में खिड़कियों से झाँकती हमें भारतीय नारियाँ मिलीं। उनकी कौतूहलपूर्ण स्नेहमयी मुद्रा मैं भूल न सकूँगा। उनके पुरखों के देश से हम आये थे। हमें देख कर एक वृद्धा की आँखों में आँसू आ गये। वह काशी-दर्शन के लिए लालायित थी।

हिन्दुओं का दूसरा स्थान 'आशामाई' का मंदिर है। वहाँ का पर्वत भी 'आशामाई' के नाम से प्रसिद्ध है। बच्चा सक्का ने इसी पहाड़ी पर अपना डेरा जमाया था।

काबुल में एक संत पीर रतनदास हो गये हैं। इनका भी यहाँ 'स्थान' है। इसमें अनेक महंतों की समाधियाँ बनी हैं। पीर रतनदास पहुँचे फकीर हो गये हैं। कथा है कि, वे एक सूखे शहतूत के नीचे बैठे थे। बादशाह के आदमी उसे काटने आये। संत के पूछने पर लोगों ने बताया कि, पेड़ सूख गया है, इसलिए काटने का हुक्म हुआ है। संत ने कहा—"वृक्ष तो हरा है।" दूसरे ही क्षण वह वृक्ष हरा हो गया। खबर बादशाह तक पहुँची और उसके बाद संत रतनदास की बड़ी प्रसिद्धि हुई। उनके नाम के 'स्थान' पेशावर तथा भारत में भी कई जगह हैं।

बाबर की कब्र देखने की इच्छा थी। अतः बाबर-बाग गया। यह स्थान काबुल से दो मील की दूरी पर है।

बाबर का मजार सादा है। उसकी बगल में उसके दो लड़कों, अर्थात् हुमायूँ के दो भाइयों की कब्रें हैं। कब्र देख कर लगा कि, बाबर उन्हीं के बीच चिरनिद्रा लेते रहना चाहता था, जिन्होंने उसे बिगड़े दिनों में आवास दिया था और जो उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ भारत फतेह करने आये थे।

काबुल में अमीर अमानुल्ला के महल के सामने अफगानिस्तान का संग्रहालय है। इस संग्रहालय में सिक्कों का संग्रह अपूर्व है। भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों के लिए जितनी अधिक सामग्री एक ही स्थान पर यहाँ मिलेगी, उतनी शायद ही कहीं प्राप्त हो सके।

अतीत के समान ही अर्वाचीन अफगानिस्तान का भी भारत से बड़ा गहरा सम्बंध है। बच्चा सक्का को पराजित कर अफगानिस्तान में स्वर्गीय शाहंशाह श्री नादिरशाह ने एक नये राजवंश की स्थापना की। उन्हीं के पुत्र शाहंशाह जहीरशाह अफगानिस्तान के बादशाह हैं। स्वर्गीय श्री नादिरशाह के पिता तत्कालीन काबुल के अमीरों-द्वारा भारत में निष्कासित थे। उनका जन्म देहरा-दून में हुआ था। वहीं पर उन्होंने शिक्षा पायी थी।

काबुल से १० मील दक्षिण-पूर्व में तसकरी बौद्ध-स्तूप है। यह नेपाल के चारुदेवी के स्तूप के समान है। कहा जाता है कि, तृतीय शताब्दी में इसका निर्माण हुआ था। स्तूप की मेखला का शृंगार खम्भे पर खड़ी मेहराबों से किया गया है।

अपनी अफगानिस्तान-यात्रा के प्रसंग में हम यहाँ दो चीजों का वर्णन और करना चाहेंगे। एक है—'मजार-ए-शरीफ'। यह मुसलमानों का तीर्थस्थान है। इसका निर्माण लगभग ५०० वर्ष पहले हुआ था। गाथा है कि, यह चौथे खलीफा हजरत अली की मजार है। हजरत अली पैगम्बर मुहम्मद साहब के दामाद थे—हसन तथा हुसैन के पिता और बीवी फातिमा के पति।

दूसरी महत्व की चीज, जिसका मैं जिक्र करना चाहता हूँ, बामियान की बुद्ध-मूर्तियाँ हैं। पहली मूर्ति १७५ फुट ऊँची है। इस मूर्ति के लिए पर्वत में लगभग २३० फुट ऊँचा विशाल ताखा खोदा गया है। विश्व में इतने बड़े ताखे की कल्पना शायद ही किसी ने की होगी।

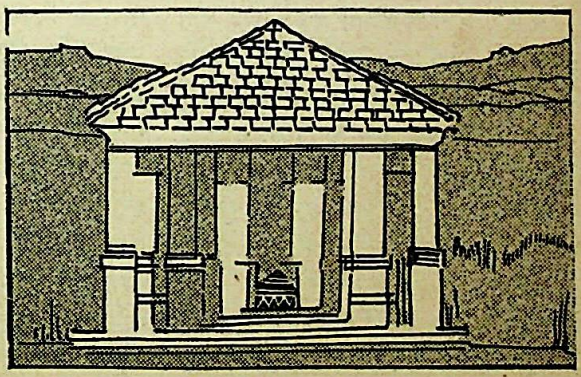

अपने बाहुबल से अतुलित वैभव कमा कर भी सादगीको ही परम महत्व देनेवाले बाबर का शरीर इस नगण्य-से मकबरे के भीतर चिरनिद्रालीन है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरातत्व की दृष्टि से, अफगानिस्तान बड़े महत्व का है। अभी वहाँ बहुत-सा काम करना शेष है। काबुल और मजार-ए-शरीफ के निर्माणकाल में– सन् १९३१ में– कुछ ईंटें प्राप्त हुईं। उन पर कुछ अक्षर अंकित थे। खनन-कार्य आरम्भ किया गया, तो अग्नि-मंदिर प्राप्त हुआ। मंदिर एक आँगन के मध्य में है और चारों ओर कच्ची ईंटों का घेरा है। इस मंदिर का सम्बंध अग्नि-पूजक पारसियों से है अथवा हिन्दुओं से, यह गवेषणा का विषय है। मंदिर वर्गाकार है। मंदिर के मध्य में एक बड़ी वेदी है। यहीं पर भारतीय कुशान-वंशीय राजाओं की वेश-भूषा में एक मूर्ति प्राप्त हुई है। सन् १९५३ में इसी स्थान पर एक दूसरा अग्नि-मंदिर भी मिला। उसके मध्यवर्ती चबूतरे पर अग्नि-वेदियाँ हैं।

कंधार अफगानिस्तान का दूसरा बड़ा नगर है। यह तीन ओर पहाड़ियों से घिरा है। पहाड़ियाँ मैदान से सीधे ऊपर उठ जाती हैं। यह जगह समुद्र की सतह से ३,५०० फुट की ऊँचाई पर है। शहर की जनसंख्या ६० से ८० हजार होगी। यहाँ की मुख्य नदी 'अर्गंधाव' है।

अर्गंधाव सुनते ही, मुझे गंधर्व नाम याद आ गया। शायद गांधार गंधर्व का अपभ्रंश हो। यहाँ गंधर्व-जाति आबाद रही होगी। यदि गंधर्व-जाति अपनी सुंदरता तथा गान के लिए भारत में प्रसिद्ध थी, तो कहना न होगा कि, गांधार अर्थात् कंधार के लोग सुंदरता में किसी जाति से पीछे नहीं हैं। उनके मुख पर श्री है, लावण्य है– उनका रंग चूने की तरह श्वेत नहीं है, हाथी-दाँत की तरह उज्ज्वल है।

अर्गंधाव नदी की नहर के किनारे-किनारे सड़क बनी थी। इसी के तट पर बाबासाहब बली का मजार है। मेरी धोती देखते ही वहाँ बैठे एक सज्जन उठे। वे वहाँ माला जप रहे थे। उन्होंने शुद्ध हिन्दुस्तानी में अपना नाम बताया। वे हिन्दू थे। हरिद्वार की यात्रा कर चुके थे। बोले–"यहाँ हिन्दू-मुसलमान सभी आते हैं। पूजा करते हैं।" मैंने पूछा–"आप क्या जपते हैं?" वे बोल उठे–"मैं 'राम-राम' जपता हूँ।"

कंधार में कब्रिस्तान बहुत मिलेंगे। इतने अधिक कब्रिस्तान शायद ही कहीं सुरक्षित होंगे। नहर कब्रिस्तान के बीच से निकाली गयी थी। मैंने शाह से पूछा–"यह कैसे सम्भव हो सका?" वह तुरत बोले–"पैगम्बर साहब की हदीस है–'अगर पानी की नहर और सड़क के रास्ते में मेरा मजार भी पड़ जाये, तो उस पर से नहर और सड़क ले जाना।'" मैंने कहा–"हिन्दुस्तान में तो हिन्दू और मुसलमान, दोनों ही मस्जिद, मंदिर, मजार आदि के लिए लड़ जायेंगे।" शाह ने कहा–"हमने सब कब्रों की हड्डियाँ और लाशें दूसरी जगह दफना दीं। मस्जिद की जगह दूसरी मस्जिद बनवा दी। लोगों को पानी मुफ्त मिल गया। तब भला कोई क्यों एतराज करता?"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानसरोवर हिमालय दर्शन

कवि : डा० शिवमंगलसिंह 'सुमन'

वड़ा सौभाग्य है मेरा कि
प्रातः नित्य खिड़की से
तुम्हारा रूप पीता हूँ,
अलौकिक लोक के उन्मान का
क्षण एक जीता हूँ।
तुम्हारे शुभ्र, निर्मल, मसृण
कर्पूरी कपोलों पर
फिसलती आँख की पुतली ;
किसी की स्निग्ध सुधि की राशि-सम
तुम जम गये कैसे ?
क्षितिज के छोर की उमड़ी हँसी
कब से समेटी है ?
अलौकिक कौन-सा अपरूप है
जिसको छिपाने को
बनाया मुग्ध अवगुंठन
कि जिसकी ओट ऋत औ' सत्य
रह-रह झिलमिलाता है,
सहस्रों पारदर्शी सम-स्तरों के पार
'तपसो अध्यजायत' कौंध जाता है।
युगों से योगियों के सार्थवाहों के
समुन्नत पग,
भटकते फिर रहे अहरह,
उसी उपलब्धि के पीछे
जिसे तुमने सँजोया

*

शुभ्र शिवता के तुषारों से ;
गगन की शून्य अभिलाषा
टिकी जिसके कँगूरों पर।
निपट आश्चर्य
बैठी पार्श्व में रत पार्वती
कुछ भी नहीं कहती
कि केवल देखती रहती
अकम्पित सहज पुंजीभूत
साधक की अचल मुद्रा ?
प्रतीक्षा की तितिक्षा में
उमस कर फूट पड़ती हैं
कहीं गंगा, कहीं जमुना,
तरंगित कामनाओं की सहेली-सी
अलकनंदा।
हमारे पूर्वजों से क्या कहा तुमने ?
नहीं मालूम,
न उतनी साधना मुझमें
न उतना आत्मचिंतन ही
मगर मैं नवस्फटिक के स्निग्ध सिहरनमय
अछूते ऊर्ध्वकलशों को
निहारा नित्य करता हूँ
यही आशा लिये मन में
कि शायद तुम कभी बोलो,
हमारी अर्चना तोलो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

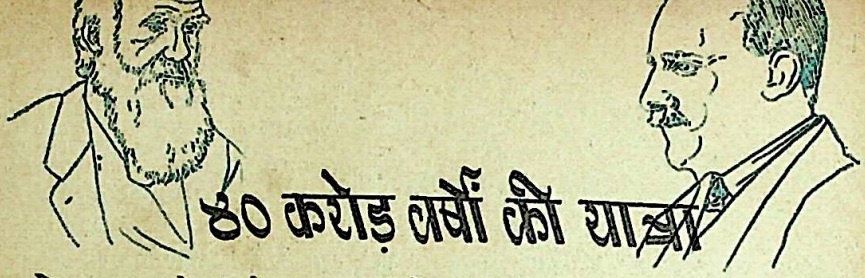

४० करोड़ वर्षों की यात्रा

पटेल-भाषणमाला के अंतर्गत आकाशवाणी से प्रसारित सुप्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता जे० बी० एस० हाल्डेन के भाषण का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

विकास के सिद्धांत के साथ-साथ मेरा भी विश्वास है कि, गाय और साँप आज इतने भिन्न हैं; पर किसी जमाने में उनके पूर्वज एक ही थे। यह उस युग की बात है, जब ब्रिटेन के भूगर्भ में कोयले की तहों का निर्माण हो रहा था। आज यह बात स्पष्ट हो गयी है कि, पृथ्वी के सब प्राणियों का पूर्वज एक ही था। भारतीय विचारक इस वैज्ञानिक तथ्य के बहुत निकट हैं। उन्होंने इस बात पर सदैव जोर दिया है कि, मनुष्यों और पशुओं में वंशगत सम्बंध है।

जंतुओं के जिन वर्गों से हमारा विशेष परिचय है, वे दो कक्षों में बाँटे जा सकते हैं—स्तनपायी और पक्षी। मनुष्य, गाय, कुत्ता, चूहा, चमगादड़, ह्वेल आदि सब स्तनपायी जंतु हैं। स्तनपायी जंतुओं की लगभग १० हजार और पक्षियों की ८ हजार जातियाँ हैं। अब इससे अधिक जातियों का पता चलने की सम्भावना कम है। मछलियों की लगभग २० हजार जातियाँ हैं और सर्प के समान पेट के बल चलनेवाले तथा मेढ़क की भाँति जल और थल, दोनों पर रहनेवाले जंतुओं की जातियों की संख्या कुछ कम है। कहना चाहिए, रीढ़ की हड्डीवाले जंतुओं की, कुल मिला कर ४० हजार जातियाँ हैं। इसके विपरीत कीड़ों की लगभग १० लाख ऐसी जातियाँ हैं, जिनके बारे में हमें ज्ञान है। सम्भव है, कीड़ों की १० लाख जातियाँ और हों, जिनकी जानकारी प्राप्त करना अभी बाकी है। बाकी जंतुओं—जैसे घोंघे, केचुए आदि—की संख्या लगभग ५ लाख है।

मैं इस लेख में रीढ़ की हड्डीवाले जानवरों का ही संक्षिप्त इतिहास बतानेवाला हूँ। ऐसे जंतु लगभग ४० करोड़ वर्ष पहले पानी में रहा करते थे। वे बहुत-कुछ मछली की तरह होते थे; परंतु उनके न तो मछलियों की भाँति पंख होते थे और न निचला जबड़ा होता था। वे वर्तमान मछलियों की भाँति नहीं खाते थे, बल्कि कीचड़ को चूस लेते थे। यह कीचड़ उनके मुँह के पीछे बने अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

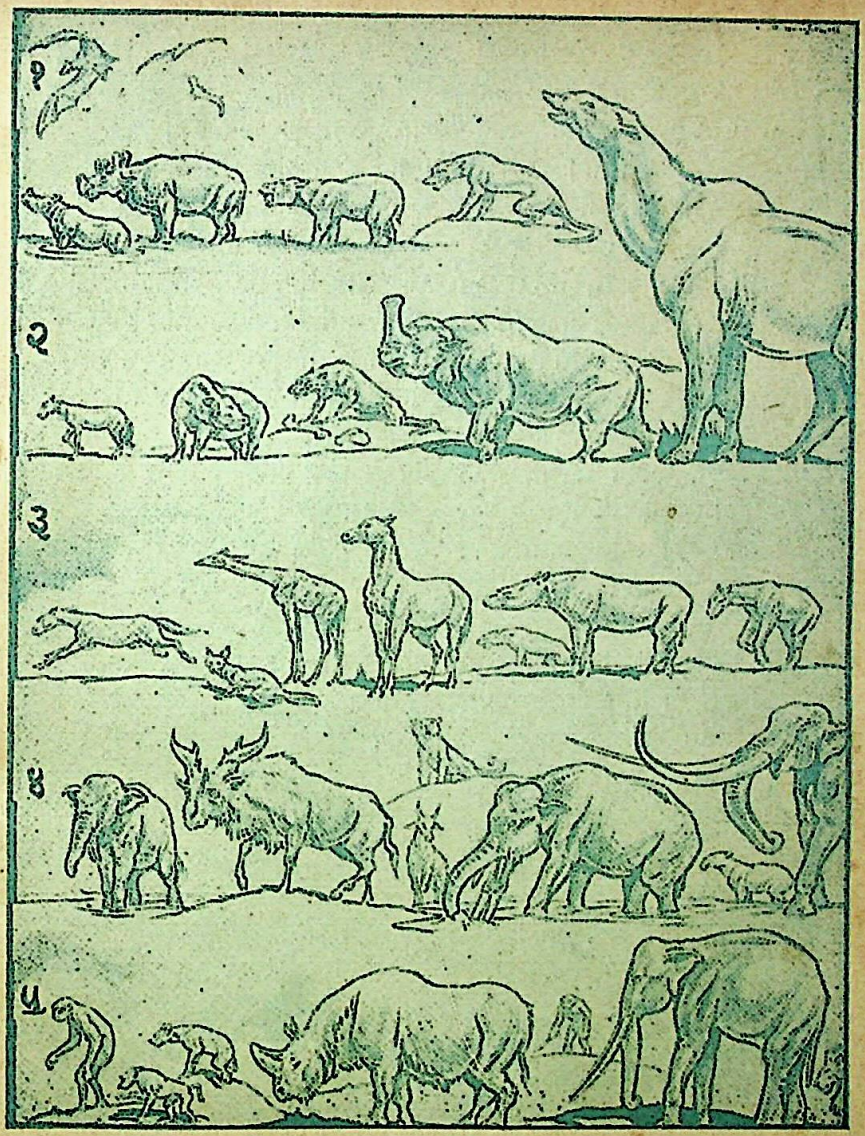

एशिया की जीव-परम्परा

(१) दस करोड़ वर्ष पहले के जीव-जंतु (२) पाँच करोड़ वर्ष पहले का दानवीय पशु बेलूचिटेरियम (३, ४ और ५) २ करोड़ से दस लाख वर्ष पूर्व के जीवों की विकास-परम्परा, जिसमें हाथी, गेंडा और आदि-मानव का अस्तित्व प्रकाश में आया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छिद्रों से छन जाता था। उनके आँख होती थीं; लेकिन उनका जीवन केंचुओं से बहुत भिन्न नहीं था। उनके कुछ वंशज, जो उन्हीं-जैसा जीवन बिताते हैं, अब तक शेष हैं।

इन जंतुओं के मुँह में, छलनी को सहारा दिये हुए, कोमल हड्डियों की सलाखों का एक ढाँचा होता था। लगभग ३५ करोड़ वर्ष पहले, या उससे भी पहले, इस ढाँचे की प्रथम सलाखें जुड़ गयीं और उनके जुड़ने से इन जंतुओं के दो जबड़े बन गये। अब ये जंतु पहले से बड़ी चीजें खा सकते थे। लगभग इसी समय मछलियों की भाँति इनके पंख भी उग आये और ये तैरने लगे। कुछ करोड़ साल तक मछलियों की बहुत-सी भिन्न जातियाँ रहीं। इनमें कुछ के तीन या चार पंख होते थे; लेकिन केवल दो पंखोंवाली मछलियाँ ही जीवित बचीं। यही हमारी वर्तमान मछलियों, पक्षियों तथा चौपायों के पूर्वज थे। यदि छः पंखोंवाले जंतु बचे रहते, तो आज शायद आदमी को भी फरिश्तों की तरह पंख और हाथ, दोनों ही होते या दैत्यों की तरह बहुत-से हाथ होते।

हमारी धरती पर लगभग ३२ करोड़ वर्ष पहले बहुत-सी छिछली खाड़ियाँ थीं, जो धीरे-धीरे सूखती रहीं। इन खाड़ियों की जो मछलियाँ बाहर निकल आयीं, केवल वही बची रहीं। इनके पंखों में जोड़ हो गये, जो बाद में पाँव बन गये।

अब मछलियाँ जमीन पर होनेवाले पौधों और कीड़ों को खाने लगीं। हमारे पास ऐसी ठठरियाँ मौजूद हैं, जिनसे इस प्रकार के विकास का पता चलता है। एक ऐसे जंतु की भी ठठरी है, जिसके चार छोटे-छोटे पाँव और मछलियों-जैसी पूँछ है।

ये आदिम चौपाये जंतु, पानी और जमीन, दोनों पर रहते थे और इनकी शक्ल गोह या छिपकलियों की तरह थी; लेकिन मेढ़कों की भाँति इन्हें भी अंडे देने के लिए पानी में जाना पड़ता था।

लगभग ३० करोड़ वर्ष पहले इनमें से कुछ जंतुओं ने जमीन पर भी खोलदार अंडे देने शुरू किये। यह क्रिया इन जंतुओं के दो दलों में या तो स्वाधीन रूप से हुई, या ये दो दल बाद में अलग हुए। इनमें से एक दल के जंतु, जो बाद में स्तनपायी जंतुओं के पूर्वज बने, लगभग १० लाख वर्ष तक स्थल पर रहनेवाले सबसे विशाल जीव थे।

फिर वे लगभग नष्ट हो गये और १ करोड़ वर्ष तक भूमि पर छिपकलियों या गोहों और पक्षियों की-सी शक्ल के जंतुओं का आधिपत्य रहा। इनमें से कुछ हाथियों से भी बड़े थे और कुछ चूहों से भी छोटे। बहुत-से जंतु पिछले पाँवों पर खड़े होकर चलते या दौड़ते भी थे। जंतुओं के दो दल ऐसे थे, जो हवा में भी उड़ने लगे। इनमें से पहला दल उन विशालकाय जंतुओं का था, जिनके पंख चमगादड़ों की तरह थे। बाद में, पक्षी भी हवा में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

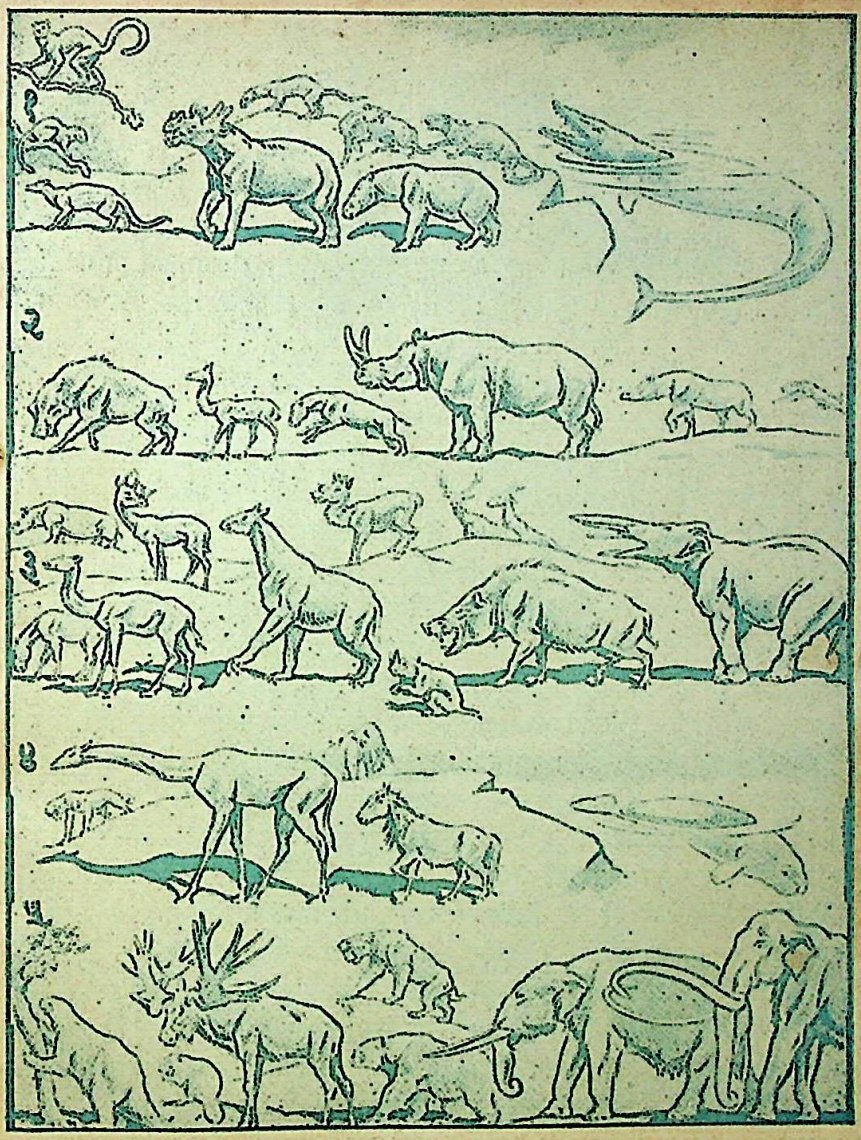

उत्तरी अमेरिका के स्तनपायी जानवर

(१) १० करोड़ वर्ष पूर्व के जानवर (२) ५ करोड़ वर्ष पूर्व के भीमाकार सूअर, ऊँट और गेंडे (३) दो करोड़ वर्ष पूर्व के घास खानेवाले जानवर, सूअर और हाथी (४) ५० लाख वर्ष पूर्व के घोड़े और ऊँट (५) १० लाख वर्ष पूर्व के दानवीय हाथी और रीछ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ने लगे। इन्हीं जंतुओं का एक दल जमीन खोद कर नीचे जाने और रहने लगा और कालांतर में उनके पाँव नहीं रहे। जब वे दोबारा भूमि की सतह पर आये, तो वे साँप आदि बन चुके थे। कुछ जंतुओं ने अपने को एक प्रकार के कवच से ढँक लिया और वे कछुआ बने।

बाद में, जंतुओं के कम-से-कम पाँच दल फिर समुद्र को लौट गये, हालाँकि उन्होंने हवा में साँस लेना जारी रखा। रीढ़ की हड्डीवाले और हवा में साँस लेनेवाले जंतुओं में आज जितनी भी जातियाँ हैं, १० करोड़ वर्ष पहले उससे शायद कहीं ज्यादा थीं। इसी काल में मछलियों का आकार और शरीर-रचना वर्तमान मछलियों की भाँति होती गयी।

लगभग ८ करोड़ वर्ष पहले एक ऐसी आश्चर्यकारी घटना घटी, जिसका आज तक कोई कारण नहीं मालूम हुआ। लगभग २ करोड़ वर्षों की अवधि में, रेंग कर चलनेवाले जंतुओं के अधिकांश वर्ग नष्ट हो गये और उनका स्थान स्तनपायी जंतुओं, मछलियों और पक्षियों ने ले लिया।

शुरू में स्तनपायी जंतुओं में बहुत विभिन्नता नहीं थी; लेकिन ७ करोड़ वर्षों तक उनका भिन्न-भिन्न ढंग से विकास हुआ। स्तनपायी जंतुओं में कोई भी इतना विचित्र नहीं है, जितना साँप या कछुआ, हालाँकि दक्षिण-अमेरिका के कुछ जंतुओं के शरीर पर कछुओं की भाँति कवच भी उत्पन्न हो गया था। ये जंतु अब बाकी नहीं हैं। सबसे मौलिक जंतु-वर्ग शायद हाथियों का था, जो ५० लाख वर्ष पहले आस्ट्रेलिया, दक्षिणी ध्रुव और कुछ द्वीपों को छोड़ कर सारे संसार में फैल गया।

तीन दुःखद घटनाओं के फलस्वरूप यह चमत्कारपूर्ण विविधता कम हो गयी। दक्षिण-अमेरिका पहले एक द्वीप था। लगभग ५० लाख वर्ष पहले वह उत्तर-अमेरिका से जुड़ गया और आज तक जुड़ा हुआ है। तब उत्तर के स्तनपायी जंतुओं ने दक्षिण पर धावा बोला और अधिकांश दक्षिण-देशीय जंतुओं को, जिनमें से कुछ बहुत सुंदर थे, नष्ट कर डाला। १० लाख वर्ष या उससे कुछ कम पहले अनेक हिमयुग आये, जिन्होंने जंतुओं की अनेक जातियों को नष्ट कर दिया।

अंत में, मनुष्य का विकास हुआ और उसने कम-से-कम अढ़ाई लाख वर्षों तक मुख्यतः जंतुओं का ही शिकार करके जीवन बिताया। कुछ जंतुओं को उसने पालतू भी बना लिया; लेकिन अन्य जंतुओं को उसने नष्ट कर डाला। गोली, बारूद और बंदूक आदि के बनने से जंतुओं के नाश का क्रम और भी तेजी से चल पड़ा और उष्णप्रदेश अफ्रीका को—जो हिमयुगों के आक्रमणों से बचा रहा था— मनुष्यों ने करीब-करीब जंतुहीन कर डाला। अब आखिर हम यह महसूस करने लगे हैं कि, जंतुओं के रूप में सृष्टि में जो विविधता शेष है, उसको बनाये रखना हमारा कर्तव्य है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

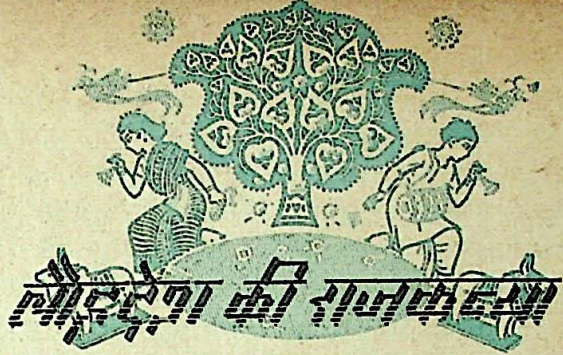

गृहिणी की गुप्त कहानी

गृहिणी की सुख-दुःख-संगिनी सूई के बारे में शिवनंदन कपूर-द्वारा नयी-पुरानी दो टूक बातें

★

अपने नहीं, किसी और के देवता के लिए फूलों के गजरे बनाती वह कौन सुंदरी है? वह किसी की माता नहीं, कन्या नहीं, फिर भी घर-घर में गृहिणियों का हाथ बँटाती रहती है। शीशे-सा गोरापन तथा पानी-सी आब लिये, रूपे-से उज्ज्वल रूपवाली रूपसी, तन्वंगी, कभी चंचल, कभी मंथर गति, जरखरीद दासी-सी दौड़ती ही रहती है। उसने आपसे कुछ माँगा नहीं; किंतु आपकी घरवाली की उँगलियों के इशारों पर चलती है। बिना हाथ की होते हुए भी वह कला-कौशल दिखाती है। बस, आप देखते ही रह जायें; किंतु न-जाने किस अभिशाप ने उसे एकाक्षी बना दिया। आप उसे अच्छी तरह जानते हैं—वही, लौहदेश की एकाक्षी राजकन्या सूचिका देवी, जो मुफलिसी में 'सूई' हो गयी!

कहते हैं, मानव-कल्याण के लिए देवी 'बेलोना' ने इसका निर्माण किया था। तब से आज तक यह मानव-जाति की सेवा करती आ रही है। मनुष्य जब वनवासी था, उस समय शरीर को ऋतुओं के प्रभाव से बचाने के लिए उसे आवरण की आवश्यकता का अनुभव हुआ होगा। वृक्ष की छालों या पशुओं की खालों को जोड़ कर पहनने के लिए सूई और तागे की जरूरत पड़ी होगी। निश्चय ही, काँटे ने सूई के आदिपुरुष का कार्य सम्पन्न किया होगा। और, काँटों के टूटने से परेशान होकर इंसान ने हड्डियों की सूइयाँ बनायी होंगी। मछली की हड्डी, हाथीदाँत, लकड़ी, पत्थर, लोहा, पीतल, आदि की बनी १०,००० वर्ष पुरानी सूइयाँ मिली हैं। इनमें से कुछ में छेद भी हैं। कुछ सूइयों के बीच में छेद बनाये गये हैं। उस समय कपड़े सूई से छेद कर वृक्ष की छालों से निकाले गये या चमड़े के तस्मे से बाँधे जाते थे। 'ऐतरेयब्राह्मण' में भी सूई की सहायता से दो वस्त्रों को जोड़ने का उल्लेख है—'सूच्या वासः संदधीयान्' (३-१८)। बेबीलोनिया तथा मिस्र की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरानी सभ्यता में सूई के अच्छे 'काम' मिलते हैं। पाम्पाई में सीनेवाली सूइयों के अलावा इंजेक्शन की सूइयाँ भी मिली हैं।

कहा जाता है, लोहे की सूइयों का आविष्कार चीनियों ने किया था। उनसे यह अद्भुत वस्तु मुसलमानों ने ली। फिर मूर लोगों ने इसका प्रचार सारे यूरोप में किया। नूरेम्बर्ग में १३७० ईसवी के लगभग इसका पहला कारखाना खुला था। इंग्लैंड में एलिजावेथ के समय से सूइयों का बनना प्रारम्भ हुआ। सूइयाँ पहले हाथ से ही बनायी जाती थीं। धीरे-धीरे मशीनों ने मनुष्यों का कार्य-भार इस दिशा में भी हल्का कर दिया। द्वितीय महायुद्ध से पहले सूइयों के उत्पादन के सम्बंध में कुछ देशों के आँकड़े इस प्रकार थे—

जापान	६,५०,००,००,००० प्रतिमास
जर्मनी	२,००,००,००,००० प्रति मास
अमेरिका	६५,००,००,००० ,,

'ऋग्वेद' में राका देवी से अच्छिद्यमान सूचि-द्वारा कर्म बुनने की स्तुति की गयी है (२-३२-४)। 'ऋग्वेद' में बड़े-बड़े सूजों पर माँस भूनने का भी उल्लेख है। ये 'शूलीपाक' कहलाते थे। 'वाजसनेयी-संहिता' (२३-३३), 'ऐतरेयब्राह्मण' (३-९-६-४), कात्यायन के 'श्रौतसूत्र' (२०-७-१), आदि में भी सूचि का उल्लेख है। 'सूचिकटाहन्याय' इस बात का प्रमाण है कि, उस समय के दार्शनिकों की दृष्टि में भी यह छोटी; पर महत्वपूर्ण वस्तु उपेक्षित नहीं थी। 'महाभारत' में जब दुर्योधन पांडवों को भूमि का एक कण भी देने को प्रस्तुत न था, उस समय इसी सूई का सहारा लेकर वह सूच्याग्र भूमि भी देना अस्वीकार कर देता है।

'अमरकोष' में दर्जियों का भी उल्लेख है—'तुन्नावायस्तु सौत्रिकः' (२–१०–६)। वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में सूई के चमत्कार को भी चौंसठ कलाओं में गिनाया है—'सूचि-वानकर्मणि'। 'विनयपिटक' के अनुसार बुद्ध ने भिक्षुओं को भिक्षुणियों के लिए वस्त्र सीने से मना किया है। 'चुल्लवग्ग' (५-११-२) में सूचिवलि-काओं का भी उल्लेख है, जिसमें सूइयों को जंग लगने

कलात्मक वेशभूषा

[चित्र : अजंता के एक भित्ति-चित्र की रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से बचाने के लिए मोम के बीच में रखा जाता था। पहले भिक्षु बाँस के सूजे से कपड़े सीते थे; पर बाद में उन्हें लोहे की सूई का प्रयोग करने की आज्ञा मिल गयी। सूई की धार बदस्तूर बनाये रखने के लिए उसे सूचिनलिका में, चूना, जौ का आटा, बालू तथा गोंद के मिश्रण के बीच रखा जाता था।

'जातकों' की कथा के अनुसार एक बार बोधिसत्व एक सूई बनानेवाले के रूप में पैदा हुए। वे गाँव की लुहार-कन्या से विवाह करना चाहते थे। अतः उन्होंने एक ऐसी सूई बनायी, जो पानी पर भी तैर सकती थी। इस सूई को एक कोश, कोश को नलिका तथा नलिका को एक मंजूषा में रख कर वे उस लड़की के घर के पास आवाज लगाने लगे—"मेरी सूई सीधी और चिकनी है। इसमें डोरा जल्दी पिरोया जा सकता है। सुंदर तेज नोक-वाली यह सूई कौन लेगा? शीघ्र पिरोई जा सकनेवाली यह सूई कौन खरीदेगा?" लड़की ने कहा—"हम गाँव के लुहार हैं। हमारे औजार सबसे अच्छे बनते हैं। यहाँ सूइयाँ कौन खरीदेगा?"

युग बदलते गये—जीवन के पृष्ठ उलटते गये। सूई नये-नये रूपों में नारी की आत्मीयता प्राप्त करती रही— निकट-से-निकट आती रही और एक दिन उसके जीवन का अंग बन गयी— ठीक कर्ण के कवच की भाँति। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक सूई से उसका साथ नहीं छूटता, जब तक नजर काम दे। इसी से वह उसमें अपने जीवन का उतार-चढ़ाव देखती है। वह गाती है—"छोटी बड़ी सुइयाँ रे, जाली का मोरा काढ़ना।" फिर उसे याद आता है, बाबा के 'राज' का सुख, भाई का स्नेह, विवाह और सास के राज की 'चक्कियाँ' और प्रियतम का आकर्षण! और, सूई चलती रहती है, जैसे उसकी जिंदगी चलती रही—जीवन के बिखरे फूलों की माला गूँथती!

✱

छूँछ पछोरे!

सीधी बात समय पर सूझे
कठिनाई से बढ़ कर जूझे
दिशा समझ कर चले बराबर,
उसे आदमी कहो सरासर।
दो दिन रूप
तीन दिन रूपा,
गुन-बिन
छूँछ उड़े ज्यों सूपा।

—'गीत-फरोश' से

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेड़-पौधों द्वारा डाके और हत्याएँ

वनस्पति-जगत् के अपराधों और अपराधियों पर शारदाचरण मिश्र का एक छोटा-सा प्रतिवेदन

*

पेड़-पौधे भी खूनी-डाकू हो सकते हैं— सहसा विश्वास होने-योग्य बात नहीं है; लेकिन है यह वास्तविकता। ऐसे पेड़-पौधों की संख्या एक-दो नहीं; बल्कि पाँच सौ से भी अधिक है। और, ऐसा भी नहीं है कि, हम उनसे अपरिचित हैं— उनमें से कई ऐसे हैं, जिन्हें हम अच्छी तरह पहचानते हैं। बरगद को ही ले लीजिये! हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि, वह महाधूर्त हो सकता है; पर वस्तुतः वह है ऐसा ही।

कलकत्ता के 'बोटानिकल गार्डेन' में एक बार बरगद का एक पौधा ताड़ के वृक्ष पर 'याचक' पौधे के रूप में उगा। फिर धीरे-धीरे उसने अपनी जड़ें फैलायीं और ताड़-वृक्ष को इस तरह दबा दिया कि, उसकी जीवन-लीला ही समाप्त हो गयी। आज उस स्थान पर आपको ताड़ का नहीं, बरगद का पेड़ मिलेगा। ऐसी ही एक घटना लखनऊ की भी है। वहाँ उसने खजूर के एक वृक्ष को अपना शिकार बनाया था।

पत्ती-रहित पीली लत्ती— अमर बेल— भी एक ऐसा ही पौधा है; पर इसकी कार्य-प्रणाली तनिक भिन्न है। इस बेल की यह विशेषता है कि, यह किसी भी पेड़-पौधे पर उग सकती है। इसकी जड़ें भी बड़ी विचित्र होती हैं— लत्ती के सारे तने पर फैली रहती हैं। किसी पेड़ या पौधे पर जन्म लेने के बाद, ये जड़ें अपने पोषक पौधे के तने में चली जाती हैं और उससे ही अपना भोजन लेना शुरू कर देती हैं। फलतः पोषक पौधे का जीवन खतरे में पड़ जाता है। सरसों, आलू, बैंगन, तम्बाकू आदि के पौधों में 'गठवाँ' लगने की शिकायत प्रायः ही किसान करते हैं। यह 'गठवाँ' रोग भी और कुछ नहीं, एक पौधे की करामात है, जिसकी जड़ें जमीन के अंदर-अंदर दूसरे पौधों की जड़ों के पास पहुँच कर अपना पोषण-तत्व ग्रहण करने लगती हैं।

इस तरह परस्पर एक-दूसरे को लूटने और सतानेवाले पौधों की संख्या तो काफी बड़ी है ही; वैसे पौधे भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं, जो कीट-पतंगों को मार कर उनका माँस खाते तथा खून पीते हैं। ये पौधे शिकारियों की तरह

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने शिकार की ताक में रहते हैं और ज्यों ही उन्हें पाते हैं, मार कर खा डालते हैं।

अफ्रीका और दोनों अमेरिकाओं में इस तरह के सैकड़ों खूनी पौधे पाये जाते हैं। इनमें से 'ब्लैडरवर्ट' नाम का पौधा, जो पानी की सतह के पास सामान्यतः पाया जाता है, बहुत अधिक प्रसिद्ध है। इस पौधे के पत्तों पर छोटे-छोटे थैले बने रहते हैं। यों देखने में यह पौधा जरा भी खतरनाक नहीं प्रतीत होता; पर जब कोई कीड़ा इसके पास आता है और थैले के मुँह पर लगे नुकीले बालों से छू जाता है, तो थैला फूल जाता है और अब तक बंद एक द्वार खुल जाता है, जिससे होकर थैले में पानी भर जाता है। पानी के साथ ही कीड़ा भी थैले में जा पहुँचता है और दम तोड़ देता है।

इस तरह का एक दूसरा पौधा है, 'पिचर प्लांट'। लेकिन यह पौधा अपने शिकार के पास आने और उससे कोई गलती होने की प्रतीक्षा नहीं करता। यह अपने रंग से (अपनी किस्म के अनुसार, यह पौधा बैंगनी, पीला, लाल आदि रंगों का होता है) या कभी-कभी अपनी गंध से, कीड़ों-मकोड़ों को आकर्षित करता है। जब कीड़ा लोभ-संवरण नहीं कर पाता और मटके-जैसे उसके फूल के अंदर प्रवेश करता है, तो अपने को एक पेटी में, जिसका कुछ भाग तरल पदार्थ से भरा रहता है, बंद पाता है। अब वह वहाँ से भागने की कोशिश करता तो है; पर भाग नहीं पाता; क्योंकि ऊपर की ओर से अंदर को झुके हुए पतले-पतले नुकीले बालों से निवट कर बढ़ना सम्भव नहीं होता। फलतः कुछ देर के व्यर्थ प्रयास के बाद, वह उस तरल पदार्थ में गिर कर अपने प्राण दे देता है।

'सनडिउ' नामक पौधा तो और भी विचित्र है। इसके गोलाकार पत्तों पर एक तरह का तरल पदार्थ फैला रहता है, जो धूप में चमकता है। कुछ कीड़े तो मात्र इस चमक से ही आकृष्ट होकर इसके पास आते हैं और कुछ इसकी गंध से आकृष्ट होकर। फिर जब कीड़ा पत्ते पर आकर उसके किसी सूक्ष्म बाल से छू जाता है, तब आसपास के दर्जनों दूसरे बाल उस पर झुक जाते हैं और उसे इस तरह फँसा लेते हैं कि, वह भाग नहीं पाता। अब वे बाल ही पाचनग्रंथि का रूप ले लेते हैं

ट्रेजेडी

हम सब फूल हैं, जिन्हें समय-सागर के वक्ष पर बहा दिया गया है---हम सब तैरा दिये गये हैं, ताकि कहीं जाकर अटकें और अभिषेक बनें; मगर होता यह है कि, हमें लहरें ही लील जाती हैं या हम कीड़ों के आहार बन जाते हैं...अभिषेक के लिए दुःख के ही मस्तक मिलते हैं।

---हिकमत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अपने शिकार से आहार ग्रहण करने के बाद पुनः अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं। यह पौधा आसाम और बंगाल के दलदलीय क्षेत्रों में भी पाया जाता है।

लेकिन सम्भवतः सबसे अधिक क्रूर पौधा होता है– 'वीनस फ्लाइट्रैप'। यह पौधा अमेरिका के कैरोलिना प्रदेश में अधिकांशतः पाया जाता है। इसके पत्तों के किनारे-किनारे अत्यधिक सचेतन काँटे निकले रहते हैं। ज्यों ही कोई कीट पत्ते पर उतरता है, त्यों ही पत्ता लिपट कर गोलाकार होने लगता है; फलतः उन काँटों से गुँथ कर कीड़ा मर जाता है। पत्ते के लिपटने की यह क्रिया आधे सेकंड में ही पूरी हो जाती है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि, कीड़े का आधा शरीर लपेट के अंदर चला जाता है और आधा बाहर ही रह जाता है। कीड़े से अपनी भोजन-सामग्री ग्रहण कर लेने के बाद पत्ता फिर खुल जाता है।

यह पौधा केवल 'नाइट्रोजन'-युक्त भोजन ही ग्रहण करता है। सम्भवतः इसीलिए वह उन्हीं कीड़ों को पकड़ता भी है, जिनमें नाइट्रोजन की मात्रा अधिक होती है। वनस्पति-शास्त्रियों ने इसे अन्य तत्ववाले खाद्यपदार्थ देने के भी प्रयत्न किये हैं; पर असफल रहे हैं। अतः वैज्ञानिकों को इसके बुद्धि-सम्पन्न होने की भी आशंका है!

इन खूनी पौधों में से कुछ तो केवल कुछ इंच ही ऊँचे होते हैं; पर कुछ ऐसे भी होते हैं, जो तीन फुट तक ऊँचे होते हैं। ये पौधे सामान्यतः दलदलीय क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं, जहाँ नाइट्रोजन की कमी होती है। वैज्ञानिकों का ऐसा खयाल है कि, यदि हमारे पृथ्वी-ग्रह का प्राणिविज्ञान-सम्बंधी-इतिहास थोड़ा भी दूसरा रुख अख्तियार करता, तो आज हमारे सामने मनुष्यों को खा डालनेवाले पेड़-पौधे भी उपस्थित होते!

दर्शन : विज्ञान

दुनिया एक ऐसी हस्तलिखित किताब है, जिसका पहला और आखिरी सफा खो गया है। दर्शन उन्हीं खोये हुए सफों की खोज का एक प्रयत्न है। लगभग ३००० वर्षों से यह खोज जारी है; लेकिन वे खोये हुए सफे अभी तक नहीं मिले। हालाँकि हमें मंजिल का कोई सुराग तो नहीं मिलता; पर जिज्ञासा और यात्रा की एक दिलचस्प कहानी जरूर है। दर्शन के इन यात्रियों ने भले ही अपनी खोज का उद्देश्य पूरा न किया हो, पर उन्हें एक बहुत कीमती कामयाबी तो अवश्य हासिल हो गयी– दर्शन की खोज में उन्होंने विज्ञान को हासिल किया। उसने इंसान को नयी ताकत जरूर दी; पर शांति नहीं।

—मौलाना आजाद, 'हिस्ट्री आव फिलासफी' की भूमिका में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाल्टर हंट
दिया बहुत: लिया कुछ नहीं

प्रतिभा और दुर्भाग्य के दुःसंयोग की एक करुण कहानी

परेशानी में डूबे उस व्यक्ति ने सिर उठा कर घड़ी की ओर देखा। दिन का तीसरा पहर होने में, बस, कुछ ही घंटों की देर थी। १८४९ ईसवी के उस शरत्काल में भी वाल्टर हंट के चेहरे पर पसीने की बूँदें छलछला आयीं। उसने एक व्यक्ति से १५ डालर कर्ज ले रखा था और तीसरे पहर तक वह कर्ज उसे चुका देना था। किंतु कहाँ से? कारखाने की मेज पर पड़े पीतल के एक तार से अनजाने ही उसकी उँगलियाँ खेलने लगीं—कोई सूरत नजर नहीं आती थी।

हंट उठ कर बेचैनी से कमरे में टहलने लगा। समय धीरे-धीरे बीतता जा रहा था और तभी, अचानक ही, हंट के दिमाग में एक विचार आया। लपक कर वह मेज के निकट पहुँचा। मेज पर पड़ा वह पीतल का तार उसने उठा लिया और उसे मोड़ने लगा। वह उसे तब तक मोड़ता रहा, जब तक तार के बीच में एक गोल गाँठ-सी नहीं बन गयी। फिर उसने तार के एक सिरे को मोड़ कर 'हुक' का रूप दिया और दूसरे सिरे को झुका कर उस 'हुक' में फँसा दिया। तीन मिनट—सिर्फ तीन मिनट—के अंदर ही वाल्टर हंट ने 'सेफ्टी पिन' का अविष्कार कर लिया और अपने १५ डालर के कर्ज को चुकाने के लिए, कुछ घंटों में ही, उसने मात्र चार सौ डालर में उसके अधिकार एक पेटेंट फर्म के हाथ बेच दिये।

वाल्टर हंट ने कर्ज चुका दिया, 'सेफ्टी पिन' का आविष्कार हो गया; पर कहानी वस्तुतः यहीं समाप्त नहीं होती। आज के हमारे सभ्य जगत् की ऐसी कई चीजें उस लम्बे-चौड़े, स्वप्निल आँखोंवाले व्यक्ति की देन हैं। फाउंटेनपेन का उसने सिर्फ आविष्कार ही नहीं किया, बल्कि यह नाम तक उसी का रखा है। सिलाई की मशीन का आविष्कारक भी वस्तुतः वाल्टर हंट ही है। फिर भी उसे जाननेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत कम ही व्यक्ति होंगे।

वाल्टर हंट का जन्म सन् १७९६ में हुआ था। उस जमाने में इन चीजों का आविष्कार करना कम योग्यता और बुद्धिमत्ता की बात नहीं थी। उसके माँ-बाप मार्टिसबर्ग (न्यूयार्क) में रहते थे और खेती ही उनकी आजीविका थी। वाल्टर की अधिकांश शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। अपने बचपन के दिनों से ही वाल्टर को विभिन्न यंत्रों और कल-पुर्जों से खेलने का बड़ा शौक था और एक दिन, जब वह पूर्णरूपेण युवा भी नहीं हुआ था, उसने एक आविष्कार कर डाला। घर के कामों में व्यस्त अपनी माँ को वह लगभग घसीटता हुआ अपने कारखाने में ले आया और उँगली से संकेत करते हुए अभिमानपूर्वक बोला—"देख तो माँ, मैंने क्या बनाया है!"

माँ ने एक कोने में रखे उस यंत्र की ओर देखा, जो उसके चरखे की तरह प्रतीत होता था; किंतु उससे काफी बड़ा था। उस पर रुई और सन दोनों काते जा सकते थे और वह अधिक सुविधा-जनक भी था। माँ की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं। उसने बढ़ कर स्नेह से बेटे के ललाट को चूम लिया।

कुछ वर्षों बाद हंट ने पौली लाउम्स नाम की एक युवती से विवाह कर लिया और सन् १८२५ में खेती-बारी का काम छोड़ कर, वह मार्टिसबर्ग से न्यूयार्क चला आया। अपनी माँ के लिए उसने जिस चरखे का निर्माण किया था, उसी का अधिक-से-अधिक उत्पादन करने के लिए उसने एक कारखाना स्थापित किया। साल-भर तक तो सब ठीक चलता रहा; किंतु उसके बाद, अचानक ही, वाल्टर का कारोबार मंदा पड़ गया। उसके दिवालिया होने तक की नौबत आ गयी, यद्यपि मशीन में कहीं कोई खराबी नहीं थी।

अब हंट ने दूसरे व्यवसाय की ओर ध्यान दिया, सफलता ने उसके चरण भी चूमे; किंतु उसके दिमाग में कोई-न-कोई नयी चीज आविष्कार करने की धुन सदा समायी रहती थी। सन् १८२७ में, एक दिन जब वह सड़क पार कर रहा था, तो एक घोड़ागाड़ी के नीचे दबते-दबते बचा। कोचवान चिल्ला-चिल्ला कर और चाबुक फटकार कर लोगों को जता रहा था कि, वे रास्ते से हट जायें। हंट दौड़ा-दौड़ा घर आया और पूरे सप्ताह-भर लोहे के एक टुकड़े को ढाल कर तश्तरी की तरह का रूप देने की चेष्टा करता रहा। बाद में, उसने उसमें एक स्प्रिंग लगा दी और एक छोटा-सा हथौड़ा। फिर लोगों को बताया—"बस! इसे घोड़ागाड़ी में लगा दीजिये और फिर पैर से दबा दीजिये। इससे जो आवाज निकलेगी, वह राहगीरों को सावधान करने के लिए पर्याप्त होगी। कोचवान को चीखना-चिल्लाना नहीं पड़ेगा।" हंट के इस आविष्कार का नाम 'घंटी' पड़ा और इसका उपयोग तत्काल होने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे जो रकम मिली, उसे लेकर हंट ने अपना सारा ध्यान नयी चीजों के आविष्कार की ओर लगाया। एक रेस्तराँ के लिए उसने एक वाष्प-मेज का आविष्कार किया। यह वाष्प-मेज विश्व की प्रथम वाष्प-मेज थी। फिर उसने रसोईघर में काम आनेवाले चाकू को तेज करने का एक उपकरण बनाया। किंतु अपने सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार का विचार उसके दिमाग में आया, सन् १८३२ में। वार्थेलेमी थिमोनियर ने उस वक्त तक सिलाई की मशीन का आविष्कार कर लिया था; किंतु उसमें बहुत त्रुटियाँ थीं। उसकी सिलाई तनिक भी टिकाऊ नहीं होती थी। हंट ने तय किया कि, वह टिकाऊ और सुंदर सिलाई-मशीन बनायेगा। सन् १८३४ तक उसने अपना यह आविष्कार पूरा भी कर लिया; किंतु पत्नी से किसी प्रकार का प्रोत्साहन न मिलने के कारण, उसने उसे पेटेंट नहीं करवाया। उसकी पत्नी का कहना था कि, मशीन में बहुत-सारी त्रुटियाँ हैं। बाद में, वह मशीन एक दुर्घटना में जल गयी। सन् १८४६ में इलियस होवे नामक एक अन्य वैज्ञानिक ने अपनी सिलाई की मशीन पेटेंट करवायी और यह मशीन बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी हंट ने १२ साल पहले बनायी थी।

हंट अब तक अपने दूसरे आविष्कार को लेकर व्यस्त था। पेनसिलवानिया से एक नयी किस्म का कोयला आ रहा था। इस कोयले में सबसे बड़ी खूबी यह थी कि, जलाने पर इससे तनिक भी धुआँ नहीं निकलता था। हंट ने इसे देखते ही समझ लिया कि, कमरे को गर्म रखने के लिए यह कोयला बड़ा उपयोगी साबित हो सकता है। और, हंट की इस नयी सूझ ने जिस नये आविष्कार को जन्म दिया, वह था, 'ग्लोब स्टोव'। किंतु हंट-द्वारा अपने सारे अधिकार बेच दिये जाने के तीस-चालीस वर्षों के बाद कहीं 'ग्लोब स्टोव' की खपत बड़ी तेजी से बढ़ने लगी।

अब तक हंट ने फिर एक आविष्कार कर लिया था। उसने एक ऐसी दावात बना डाली थी, जिसके साथ-साथ उसे बंद करनेवाला ढक्कन भी लगा था। आज भी वहाँ के सरकारी दफ्तरों में इसका उपयोग किया जाता है। किंतु इस आविष्कार ने हंट को एक नयी प्रेरणा दी। उसने सोचा, कोई ऐसी चीज क्यों न बनायी जाये, जिसमें स्याही बंद रखी जा सके, जरूरत पड़ने पर वह लेखनी की तरह काम दे और उसे आसानी से जेब में भी रखा जा सके—अर्थात् कलम और दावात का मिश्रण।

शीघ्र ही उसने ऐसी चीज तैयार भी कर ली और १८४७ ईसवी में उसे पेटेंट कराते समय उसका नाम रखा—'फाउंटेनपेन'! किंतु उसका फाउंटेनपेन टिकाऊ नहीं प्रमाणित हुआ और ३७ वर्षों के बाद जब लेविस वाटरमैन अपने फाउंटेनपेन के साथ आया, तो फाउंटेनपेन की बिक्री बढ़ने लगी। फलतः 'फाउंटेनपेन' बनाने का श्रेय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाटरमैन को मिला—हंट को श्रेय मिला सिर्फ नाम रखने का।

सन् १८५४ में, अपनी इस असफलता के सात वर्ष बाद, हंट ने अपने जीवन का अंतिम महान् आविष्कार किया। उसने कागज के कालरों का निर्माण किया। ये लिनेन के कालर से सस्ते थे और टिकाऊ भी उससे अधिक थे!

हंट ने निश्चय किया, इस बार अवश्य वह अपने दुर्भाग्य को पराजित करेगा। उसने 'यूनियन पेपर कालर कम्पनी' को स्पष्ट कह दिया—"जब तक मेरे पेटेंट की अवधि समाप्त नहीं होती है, तब तक बिकनेवाली प्रत्येक कालर पर मुझे रायल्टी चाहिए।" किंतु जब तक ये कालर लोकप्रिय हुए, हंट के पेटेंट की अवधि समाप्त हो चुकी थी।

अब हंट निरुत्साह हो उठा; पर तभी उसके सामने एक और अवसर आया। इलियस होवे को, जिसने सिलाई की मशीन पेटेंट करवायी थी, खबर मिली कि, कई अन्य कम्पनियाँ गैर कानूनी तौर पर उसकी सिलाई की मशीन की नकल कर वैसी ही मशीनें बना रही हैं। उसने उन पर दावा कर दिया। होवे के मुख्य विरोधी इजाक सिंगर को किसी प्रकार यह ज्ञात हो गया था कि, पहले हंट ने ही सिलाई की मशीन का आविष्कार किया था। अतः उसने हंट को बुला कर कहा—"हमारे लिए ठीक वैसी ही मशीन बना दो, जैसी तुमने बनायी थी और जो आग में भस्म हो गयी थी।" पर अमरीकी पेटेंट-विभाग के कमिश्नर ने इसकी स्वीकृति नहीं दी। यह ठीक है कि, मशीन का आविष्कार हंट ने किया था; किंतु जब उसने पेटेंट नहीं कराया, तो कानूनन उसका उस पर कोई अधिकार नहीं रहा।

बाध्य हो, सिंगर ने होवे को उसके पेटेंट का उपयोग करने के लिए रायल्टी देना स्वीकार कर लिया। परंतु कई वर्षों के बाद, १८५८ ईसवी में होवे का पेटेंट जब समाप्त होने को आया और उसने उसकी अवधि बढ़वाने के लिए उसे भेजा, तब सिंगर ने फिर हंट को अपने कार्यालय में बुलवाया—"देखो! हम किसी प्रकार का झंझट नहीं चाहते हैं। तुम अपनी मशीन हमारे लिए पेटेंट करवा लो और हम इसके लिए तुम्हें ५० हजार डालर (लगभग दो-ढाई लाख रुपये) देंगे।"

हंट की आँखों में आँसू आ गये। आखिर, उसके श्रम का पुरस्कार उसे मिलने जा रहा था। तय हुआ, प्रति वर्ष १० हजार डालर के हिसाब से उसे ५ वर्षों तक यह रकम मिलती रहेगी।

किंतु भाग्य के उपेक्षित इस अजाने आविष्कारक की आखिरी साँस पर भी खुशी नहीं लिखी थी। सन् १८५९ के जून में, १० हजार डालर की पहली किश्त मिलने ही वाली थी कि, हंट की मृत्यु हो गयी और उसके उत्तराधिकारी काफी दिनों तक अदालत का दरवाजा खटखटाते रहने पर भी उस पहली किश्त से अधिक कुछ नहीं पा सके!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

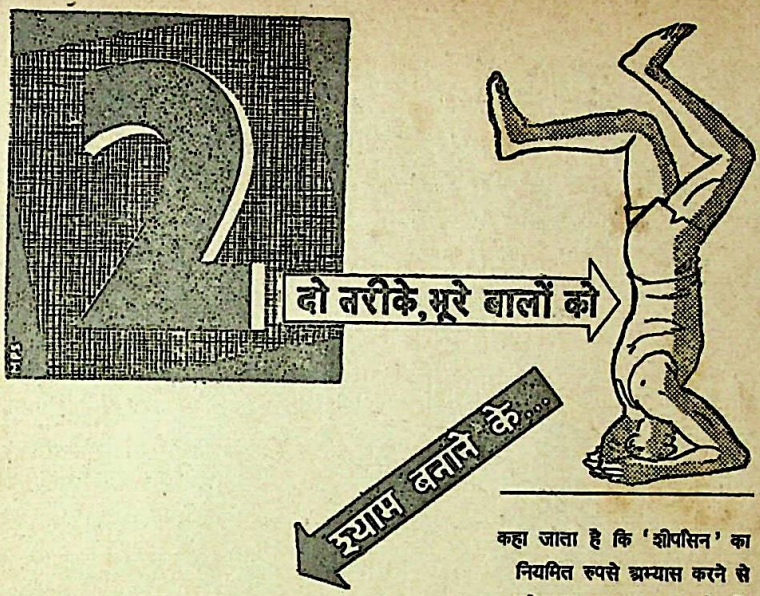

कहा जाता है कि 'शीपसिन' का नियमित रूपसे अभ्यास करने से भूरे बाल श्याम बन जाते हैं, परन्तु इसके लिए काफी समय व मानसिक शांति की ज़रूरत है।

आधुनिक जमाने में, भूरे बालोंको श्याम बनाने का सब से अचूक, सुरक्षित व आसान तरीका 'लोमा' का नियमित रूप से इस्तेमाल करना ही है।

अब 'लोमा' खासतौर पर बनी सीलबंद सुरक्षित कार्क वाली शीशीमें मिलता है।

लोमा

सोल एजेन्टस् : एम. एम. खम्भातवाला, अमदाबाद-१
एजेन्ट्स : सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी, मंगलदास रोड, बम्बई-२, फोन ३०५७५

निर्यात संबंधी जानकारी के लिये लिखिये मेसर्स एम० एम० खंभातवाला, अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे परिवार के लिए एकही टेल्कम् पाउडर

मनमोहक सुगंधियुक्त, प्रोटेक्स बढ़िया क्वालिटी का सर्व-उपयोगी पाउडर है, जो बड़े डिब्बे में...कमसे कम कीमत में मिलता है। सुहानी मोहक सुगंधवाला प्रोटेक्स हर प्रयोजन के लिए उपयोगी है। इसी कारण भारत में हजारों परिवार प्रोटेक्स को ज्यादा पसंद करते हैं...

अब सुन्दर पफ भी साथ में मिलता है!

प्रोटेक्स

सर्व-उपयोगी

टायलेट पाउडर

कोलगेट का एक और उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंगनमाता

सुखवीर सारथी पिछले चार वर्षों से 'यूनेस्को' की ओर से भारत के विभिन्न राज्यों में लोककथा-संग्रह का काम कर रहे हैं। गाँव-गाँव पैदल घूम कर उन्होंने कई अलभ्य कथाएँ संगृहीत की हैं। 'कंगनमाता' कर्नाटक की एक विशिष्ट-समाप्त लोककथा है, जो 'नवनीत' के लिए उन्होंने विशेष रूप से भेजी है।

शक-सम्वत् १४४० ! वेलगाँव-दुर्ग उस वक्त विजयनगर के कृष्णराय के अधीन था और कृष्णराय की ओर से वेलगाँव के शासन का उत्तरदायित्व था, सालुव तिम्मनायक पर !

वेलगाँव पर पुर्तगालियों और बीजापुर के सुलतानों की बहुत दिनों से आँख लगी थी। कभी तो उस पर पुर्तगालियों के हमले होते और कभी आदिलशाही सरदारों के; पर अभी तक कर्नाटक के वीरों न अपनी लाज नहीं खोयी थी !

सालुव तिम्म एक वीर और कुशल योद्धा था। उसने पुर्तगालियों और बीजापुर के सरदारों के प्रत्येक आक्रमण को बुरी तरह विफल किया था। पर इससे दुश्मनों के हौसले पस्त नहीं हुए थे। बेलगाँव पर उनकी लोलुप दृष्टि अभी भी लगी थी और वे उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में चुपचाप बैठे थे।

उन्हीं दिनों कुंचनूर नामक एक छोटे-से गाँव का मुखिया था, केंचेगोंड ! रायगोंड उसका इकलौता पुत्र था। स्वभावतः ही उसका लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से हुआ और इस लाड़-प्यार के कारण ही उसकी माँ लक्कवे ने उसे न तो कभी व्यायामशाला में भेजा, न घुड़सवारी सिखायी और न भाला-तलवार चलाना ही सिखाया— उसे कटार पकड़ना तक नहीं आता था। बस, सारा दिन उसे दूध पिलाती, तरह-तरह के पकवान खिलाती और रायगोंड खा-पीकर दिन-भर इधर-उधर भटकता फिरता। अठारह वर्ष की आयु हो जाने पर भी वह न कुछ पढ़-लिख सका, न और कोई काम सीख सका। तभी अपने पति की सलाह से लक्कवे ने अपने बड़े भाई की लड़की नागलवा से रायगोंड का विवाह कर दिया।

प्रथम बार जब नागलबा गौने पर आयी, तो उसकी उम्र अठारह वर्ष की थी और रायगोंड इक्कीस वर्ष का था। चार भाइयों के बीच अकेली बहन नागलबा का मायका नागनुर हिरिहोले था— एक झरने के पास बसा छोटा-सा एक गाँव। वहाँ के लोग बड़े वीर और योद्धा थे। छोटे-छोटे बच्चे भी भलीभाँति तलवार चलाना जानते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। नागलबा इसी वातावरण में पली थी। अतः अपने पति को इनकी ओर से उदासीन जान उसे स्वभावतः ही बड़ा दुःख हुआ। इधर उसका अनुपम रूप-लावण्य रायगोंड के लिए सर्वाधिक प्रिय वस्तु बन गया। किंतु नागलबा तो क्षत्राणी थी। अपने 'कायर' पति को कैसे प्रोत्साहन देती। उसने रायगोंड को अपना शरीर तक स्पर्श नहीं करने दिया। इस तिरस्कार से रायगोंड उसकी तरफ और अधिक आकर्षित हुआ– उसकी प्रेमाग्नि और भड़की; पर नागलबा की इच्छा के विरुद्ध कुछ करने का साहस भी उसमें न था। और, नागलबा अटल थी।

फलतः जैसे-जैसे रायगोंड का प्रेम बढ़ता गया, उसकी दिनचर्या भी बदलती गयी। दिन-भर वह मौन बैठा रहता– न किसी से मिलता-जुलता, न कहीं आता-जाता। उसके चेहरे पर सदा उदासी छायी रहती।

लक्कवे ने वास्तविकता का अनुमान लगा लिया और एक दिन जब घर में कोई नहीं था, तो उसने नागलबा से कहा–"नागा, एक बात सच बतायेगी?"

नागलबा शांत स्वर में बोली–"मैं कभी झूठ नहीं बोलती, माताजी!"

"तो यह बता कि, रायगोंड को क्या हो गया है!"

"क्या हो गया है, माँजी?"

"अनजान मत बन, पगली!"–लक्कवे ने सस्नेह कहा–"देखती नहीं, कितना बदल गया है वह?" पर नागलबा मौन रह गयी।

कुछ क्षणों की प्रतीक्षा के बाद लक्कवे ने फिर कहा–"सोचती क्या है, बेटी?... पर इतना ध्यान रखना कि, तूने झूठ न बोलने की कसम खायी है।"

नागलबा मौन ही रही। उसने दोनों हाथों से मुँह ढँक लिया। सास ने अत्यंत स्नेह से दुलारते हुए फिर कहा–"सच-सच बता, नागा, तेरे मन में क्या है?"

नागलबा की आँखें डबडबा आयीं। सास ने आँसू पोंछ दिये–"नागा... रायगोंड तुझे बहुत प्यार करता है न?'

नागलबा के कपोल सुर्ख हो उठे।

"तू भी उसे उतना ही प्यार करती है न?"– लक्कवे के इस प्रश्न को सुन, नागलबा ने शर्मा कर सिर झुका लिया; फिर कुछ क्षणों के मौन के बाद बोली – "आप इतना ही आग्रह कर रही हैं, तो मैं बता देती हूँ, माँजी! मैंने प्रण किया है, जब तक वे वीरोचित गुण नहीं अपनायेंगे, कुशल योद्धा नहीं बनेंगे, मैं उन्हें पति मान कर उनका साथ न दे सकूँगी। मैं क्षत्राणी हूँ, माँजी! एक 'कायर' को कैसे सर्वस्व समर्पित कर दूँ?"

नागलबा की ये बातें रायगोंड ने भी सुनीं! शर्म से वह गड़-सा गया! किंतु शीघ्र ही उसने स्वयं को संयत कर लिया। दूसरे दिन से ही वह नियमित रूप से व्यायामशाला जाने लगा। धीरे-धीरे वह घुड़सवारी, तलवार-भाला चलाना, आदि सीख गया। नागलबा का प्रण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरा हुआ। अपने पति को इस नये रूप में देख वह फूली न समायी और जिस दिन रायगोंड ने अपनी सैनिक शिक्षा समाप्त की, उसी दिन मानो नागलवा से उसका वास्तविक विवाह हुआ।

दूसरे वर्ष, दिवाली के दिनों में नागलवा जब पीहर से ससुराल लौट कर आयी, तो गोद में चाँद-सा बालक भी था। रायगोंड ऐसी पत्नी और ऐसा पुत्र पाकर धन्य हो उठा!

किंतु विधि का विधान कुछ और था। काली-चौदस के दिन सवेरे ही सालुव तिम्मनायक का दूत आ पहुँचा। बीजापुर का सरदार असदखाँ बड़ी भारी फौज के साथ बेलगाँव-दुर्ग पर चढ़ाई करने के लिए बढ़ा आ रहा था। कर्नाटक के एक-एक युवक की अभी जरूरत थी – अपनी जननी-जन्मभूमि की रक्षा के लिए।

यह पुकार कैसे खाली जाती! सर्वत्र से उत्साही भीड़ उमड़ पड़ी। नागलबा ने बड़े उत्साह-उछाह से, अपने पति को सजाया। उसका हृदय उस वक्त बल्लियों उछल रहा था। माँ-बाप ने आशीर्वाद दे, बेटे को विदा किया। नागलबा ने पति की आरती उतारी!

कर्नाटक-विजय का मधुर स्वप्न सँजोये, अपनी विशाल सैन्यवाहिनी को ले, आगे बढ़ते असदखाँ को रास्ते में ही रुकना पड़ा! कर्नाटक के एक-एक योद्धा ने अपनी मातृभूमि के लिए मर मिटने की ठान ली थी। वहाँ प्राणों का मोह न था। वे जम कर लड़े और स्वभावतः ही विजयश्री ने उन्हें वरण कर लिया। इसमें संदेह नहीं कि, उन्हें काफी क्षति उठानी पड़ी; पर अंततः असदखाँ की फौज को जान बचाने के लिए भागना ही पड़ा।

मातृशक्ति

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

विजय का यह शुभ समाचार तुरत ही गाँव-गाँव में पहुँच गया। लोगों के हर्ष की सीमा न रही। कुंचनूर में नागलवा ने जब यह समाचार सुना, तो हर्ष-विभोर हो उठी। और तब, उसके नारी-हृदय की स्वाभाविक चिंता प्रत्यक्ष हो उठी। वह बड़ी आतुरता से अपने पति की प्रतीक्षा करने लगी।

सारे गाँव के साथ ही, केंचेगोंड ने भी अपने घर को सजाया– बेटा युद्धभूमि से विजयी होकर घर जो आ रहा था।

उत्सुक पलकों ने दिन और रातें किस तरह गुजार दीं, पता तक न चला और ठीक नवरात्रि के दिन जब प्रतीक्षा परा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काष्ठा पर पहुँच गयी थी, तेजी से घोड़ा दौड़ाता एक घुड़सवार कैंचेगोंड के मकान पर रुका। उसने कैंचेगोंड के आशंका से कम्पित हाथों में एक पत्र थमा दिया। पत्र सालुव तिम्मनायक ने भेजा था। कैंचेगोंड ने पत्र खोला। उसका हृदय न-जाने क्यों बुरी तरह धड़कने लगा था और आँखें मुश्किल से उस कागज पर अंकित पंक्तियाँ पढ़ पा रही थीं– "भगवान् की असीम अनुकम्पा से कुंचनूर के वीरों ने अपने अपूर्व शौर्य का परिचय दे, हमारी लाज रख ली। कुंचनूर की भूमि वस्तुतः धन्य है, जिसने ये वीर-श्रेष्ठ पैदा किये। किंतु उनमें भी आपके पुत्र रायगोंड का पराक्रम अद्भुत था। उस युवक ने जिस साहस और वीरता का परिचय दिया, वह अविस्मरणीय है। पर भाग्य को हमारा इतना सुख सम्भवतः स्वीकार न था। युवक रायगोंड जिस वक्त अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न कर चारों ओर से शत्रुओं से घिरा अकेला युद्ध कर रहा था, कायरों ने पीछे से आक्रमण कर उसे हमसे सदा के लिए विलग कर दिया . . ."

कैंचेगोंड आगे न पढ़ सका। पत्र उसके हाथ से छूट गया और वह वहीं बेसुध हो गिर पड़ा। क्षण-मात्र में ही यह दुःखद समाचार सारे गाँव में फैल गया और विजयोत्सव के आनंद में मग्न गाँव में देखते-ही-देखते दुःख का मनहूस साया छा गया। लक्कवा तो सिर पीट-पीट कर रोने लगी। नागलबा के हृदय पर इस समाचार ने इतनी चोट पहुँचायी कि, उसके आँसू भी सूख गये। बावली-सी वह बैठी रह गयी। न आँखों में आँसू, न विलाप। काफी देर बाद उसकी आँखों से आँसू मौन बह चले; पर उसने शीघ्र ही स्वयं को संयत कर लिया और सास-ससुर को ढाढ़स बँधाने लगी।

ठीक पाँचवें दिन नागलबा ने सती होने की तैयारी की। सारा गाँव उमड़ पड़ा। सबने समझाया, बच्चे को गोद में रख दिया; पर नागलबा अटल रही।

निराश-हताश गाँववालों ने दक्षिण की ओर चिता सजायी। फिर नागलबा पूर्ण शृंगार किये वहाँ पहुँची। लोगों की आँखों से आँसू बह निकले। परंतु नागलबा स्थिर कदमों से चिता के पास पहुँची और तीन बार परिक्रमा कर सहज-सरल भाव से चिता पर बैठ गयी। फिर उसने अपने हाथ के कंगन को हिला कर लोगों को शांत रहने का संकेत किया और तभी मानो सती के अलौकिक प्रताप से चिता स्वयं ही प्रज्वलित हो उठी।

ऐसा कहा जाता है कि, सती होने के तीसरे दिन, अस्थि-संचय के समय, कैंचेगोंड को नागलबा का कंगन ज्यों-का-त्यों वहाँ पड़ा मिला। श्रद्धा-पूरित हृदय से वह उसे घर ले आया और एक चाँदी का हाथ बना कर उसने कंगन को उसमें पहना दिया। आज भी कुंचनूर के गाँववाले उस कंगन की पूजा करते हैं और सती नागलबा की कहानी सुन कर स्वयं को धन्य मानते हैं।

✶

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पद्मश्री बलबीरसिंह

बलबीरसिंह विश्व-विजयिनी हाकी-टीम के कीर्तिलब्ध कप्तान हैं—उनके हाथों भारतीय हाकी-खेल को एक नया शिल्प मिला है। विद्युत् को पराजित कर देनेवाली शारीरिक गतिमयता और मस्तिष्क की क्षण-नवीन उर्वरता का जैसा समन्वय बलबीरसिंह की व्यूहरचना में है, वैसा हाकी के खेल को आज तक प्राप्त नहीं हो सका है। दुनिया के क्रीड़ा-महोत्सवों में भारत के नाम को कीर्ति-अक्षरों में स्मरणीय बनानेवाले इस खिलाड़ी को गत वर्ष राष्ट्रपति ने 'पद्मश्री' के गौरव से विभूषित किया था।

*

अपने पिता से 'हाकी-स्टिक' उपहार में पाकर पुत्र का मन आनंद से खिल उठा; पर जब हाकी की छोटी गेंद पर उसकी नजर पड़ी, तो वह कुछ चिंतित-सा हो गया और बोला—"पिताजी, आपने इतनी छोटी गेंद क्यों ली—बड़ी क्यों नहीं ली?"

पिता ने स्नेहस्निग्ध स्वर में उत्तर दिया—"हाकी इतनी बड़ी गेंद से ही खेली जाती है, बेटा! सयाने लोग भी इसी गेंद से खेलते हैं।"

"सो तो मैं भी जानता हूँ, पिताजी; पर इतनी छोटी गेंद से हाकी खेलना मुझे पसंद नहीं। मैं तो बड़ी गेंद से—फुटबाल से—हाकी खेलूँगा। मेरे लिए वही ला दीजिये!"

पुत्र के इस भोलेपन पर पिता का हृदय गद्गद् हो गया और उन्होंने अपने अनोखे 'खिलाड़ी बेटे' के लिए फुटबाल की व्यवस्था की।

वही अनोखा खिलाड़ी आज हाकी की दुनिया में भारत का गौरव है—हाकी के खेल में विश्व-चेम्पियन भारत का अतिप्रवीण खिलाड़ी—बलबीरसिंह!

पद्मश्री बलबीरसिंह

सन् १९२८ से भारत ओलिम्पिक हाकी-प्रतियोगिता में भाग ले रहा है और तब से अब तक उसे दो ही कुशल 'सेंटर-फारवर्ड' खिलाड़ी प्राप्त हुए हैं—एक ध्यानचंद और दूसरे बलबीरसिंह। अपने समय में ध्यानचंद भारतीय हाकी-जगत् पर इस गहनता से छाये रहे कि, उनका स्थान कोई दूसरा खिलाड़ी ग्रहण कर सकेगा, इसका किसी को विश्वास नहीं होता था। पर बलबीरसिंह के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने आते ही, लोगों की यह निराशा-पूर्ण धारणा प्रत्यक्ष सत्य से टकरा कर चूर्ण-विचूर्ण हो गयी! बलबीरसिंह ध्यान-चंद के पूर्णतः योग्य उत्तराधिकारी बने!

बलबीरसिंह ने अब तक तीन ओलिम्पिक-प्रतियोगिताओं में भारत की ओर से भाग लिया है। सर्वप्रथम, १९४८ ईसवी में लंदन में हुई ओलिम्पिक-प्रतियोगिता में उन्होंने भाग लिया और फाइनल खेल में इंग्लैंड के विरुद्ध दो गोल करके अपनी असाधारण प्रवीणता का परिचय दिया। फिर, १९५२ ईसवी में हेलसिंकी में हुई ओलिम्पिक-प्रतियोगिता में तो उन्होंने चमत्कार ही कर दिखाया। 'सेमी-फाइनल' खेल में भारत ने इंग्लैंड पर जो तीन गोल किये, वे सब उन्हीं के द्वारा किये गये थे। फाइनल खेल में भी हालैंड पर किये गये छः भारतीय गोलों में से पाँच का श्रेय बलबीरसिंह को ही प्राप्त हुआ। १९५६ ईसवी में, मेलबोर्न में ओलिम्पिक-प्रतियोगिता होने के समय बलबीरसिंह का एक हाथ जख्मी था और एक तरह से उनका खेलना असम्भव ही प्रतीत होता था; पर वे कब पीछे रहनेवाले थे! उन्होंने घायल होने के बावजूद 'स्टिक' पकड़ी और अपने चमत्कारपूर्ण खेल से 'फाइनल' में पाकिस्तान को हरा कर भारत का विश्व-चेम्पियन-पद अक्षुण्ण रखा।

बलबीरसिंह का जन्म १० अक्तूबर, १९२४ ईसवी को पंजाब प्रदेश के जालंधर जिले के एक छोटे-से गाँव हरिपुर में हुआ था। बचपन से ही खेल-कूद में उन्हें बड़ी दिलचस्पी थी। खेल में उनकी रुचि कितनी अधिक थी, इसका अनुमान इस एक छोटी-सी बात से ही लगाया जा सकता है कि, जब वे स्कूल में छोटी कक्षा के विद्यार्थी थे, तब अल्पवयस्क होने के कारण उन्हें स्कूल-टीम में स्थान नहीं मिल पाता था; पर वे आरजू-मिन्नत करके किसी तरह 'लाइनमैन', या सम्भव हो तो, 'गोलकीपर' का स्थान अवश्य ही प्राप्त कर लेते थे। काफी अरसे तक 'गोलकीपर' का काम करने के बाद वे 'फुल बैक' बने और अंत में 'सेंटर-फारवर्ड' के लिए अपने को योग्य प्रमाणित किया। 'सेंटर-फारवर्ड' बनने के समय तक बलबीरसिंह कालेज के विद्यार्थी बन गये थे।

वे जब लाहौर के एक कालेज के विद्यार्थी थे, तभी उन्होंने पंजाब-विश्वविद्यालय की हाकी-टीम के चुनाव में भाग लिया। उस समय अमृतसर का खालसा कालेज हाकी के खेल में एक भारत-प्रसिद्ध शिक्षण-संस्था थी। उसी कालेज के एक अतिकुशल खिलाड़ी छात्र के कारण बलबीरसिंह चुनाव में तो सफल नहीं हुए; पर उनकी कुशलता भी छिपी नहीं रह सकी। कुछ समय बाद, खालसा कालेज का वह विद्यार्थी स्वतः ही अंतःकालेज-प्रतियोगिताओं से हट गया और तब खालसा कालेज एक योग्य 'सेंटर-फारवर्ड' की तलाश करने लगा। उस समय तक 'सेंटर-फारवर्ड' के रूप में बलबीरसिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसिद्धि पा चुके थे ; अतः खालसा कालेज उन्हें अपने यहाँ बुलाने के लिए प्रयत्नशील हुआ। उधर लाहौर का वह कालेज भी उन्हें छोड़ने को तैयार न था। इस प्रकार वे, दोनों कालेजों की खींचतानी का विषय बन गये। दोनों कालेजों ने तरह-तरह की युक्तियाँ अपनायीं, काफी सरगर्मी रही और अंत में, खालसा कालेज ने विजय पायी।

बलबीरसिंह के भर्ती होने के तुरत बाद ही खालसा कालेज की टीम 'सिंधिया गोल्ड कप टूर्नामेंट' में भाग लेने के लिए ग्वालियर गयी। खालसा कालेज ही इस कप का पूर्व-विजेता भी था; अतः यह उसके लिए सम्मान-रक्षा का अवसर था। वहाँ बलबीरसिंह को पंजाब के दो अति-प्रसिद्ध हाकी-खिलाड़ियों का मुकाबला करना पड़ा। उनकी दाहिनी ओर थे, मकबूल और बायीं ओर मोहिंदर सिंह। ऐसे विख्यात खिलाड़ियों से पहली बार सामना होते समय बलबीरसिंह में हीन-भाव का प्रादुर्भाव स्वाभाविक ही था; पर यह भावना शनैः-शनैः दुर्बल होती गयी और हिम्मत के साथ उन्होंने उनकी एक 'पासिंग' छीन कर गोल कर दिया। यह गोल उनके जीवन का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण गोल प्रमाणित हुआ। बलबीरसिंह कहते हैं—"इसके बाद फिर कभी मुझमें हीनता की भावना अधिकार न जमा सकी। छोटे-से-छोटा खिलाड़ी भी बड़े-से-बड़े खिलाड़ी को मात दे सकता है— खेल की दुनिया के इस परमसत्य सिद्धांत ने मेरे मन में गहरी जड़ जमा ली!"

विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त करने के बाद, बलबीर सिंह पंजाब-पुलिस में असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर के रूप में नियुक्त हुए और एक-दो वर्ष बाद ही, सन् १९४८ ईसवी में, लंदन में हो रही ओलिम्पिक-प्रतियोगिता में भारत की ओर से 'सेंटर-फारवर्ड' की हैसियत से खेलने के लिए भेजे गये। यहीं से वे ध्यानचंद के उत्तराधिकारी बने।

तत्पश्चात् सन् १९५० में जो भारतीय टीम काबुल गयी, उसके कप्तान वे चुने गये और जापान की जो भ्रमणकारी टीम भारत आयी, उसके साथ हुए पाँच टेस्ट-मैचों में से दो में उन्होंने भाग लिया।

अंतिम पैंतरा

भारत-विजय का स्वप्न ले बाबर समरकंद से काबुल आया। एक रात गुप्तवेश में घूमते हुए वह एक अखाड़े में पहुँचा, जहाँ शस्त्रगुरु शिष्यों को तलवार के दाँव-पेंच सिखा रहे थे। अंतिम दीक्षा देते हुए गुरु ने कहा—"अब एक पैंतरा और सीख लो, जो हार को जीत में बदल देता है। जब तुम हारने लगो, तो भगवान् से कहो कि, अभी तक अपने लिया लड़ा हूँ; अब से तेरा सिपाही बन कर लड़ूँगा।" बाबर ने यह मंत्र मन की गाँठ में बाँध लिया।

—जातवेद शास्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन् १९५२ की ओलिम्पिक-प्रतियोगिता में भी वे भारतीय टीम के कप्तान बने। फिर १९५४ ईसवी में जो भारतीय हाकी-टीम मलाया और सिंगापुर गयी, उसके कप्तान भी वही रहे। १९५५ ईसवी में न्यूजीलैंड जानेवाली भारतीय टीम में भी वे थे। इन सब खेलों में बलबीरसिंह ने अत्यधिक दक्षता का परिचय दिया—देशी-विदेशी सभी लोग उनके नैपुण्य से चमत्कृत रह गये।

यों बलबीरसिंह के दोनों साथी, बाबू और ऊधम सिंह, जो क्रमशः उनके 'इनसाइड राइट' और 'इनसाइड लेफ्ट' की हैसियत से खेलते हैं, कहीं अधिक कुशल खिलाड़ी माने जाते हैं; पर बलबीरसिंह के खेल का ढंग सर्वथा अनूठा है। वे कहते हैं—"खेल के मैदान में गोल प्राप्त करना मेरा सर्वोपरि लक्ष्य होता है।" वस्तुतः गोल करने के मामले में वे अपना मुकाबला नहीं रखते। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय टीम ने गोल करने की अपनी क्षमता से समस्त संसार को चकित कर दिया है।

१९५६ ईसवी की मेलबोर्न की ओलिम्पिक-प्रतियोगिता में विजयी होकर लौटने के बाद, भारत-सरकार ने अपने इस कुशल खिलाड़ी को 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया। अभी पंजाब-पुलिस में डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट के पद पर नियुक्त यह गोरा, लम्बा, इकहरे शरीरवाला फुर्तीला जवान वस्तुतः भारतीय क्रीड़ा-जगत् का एक जगमगाता सितारा है!

सम्पूर्णानंदजी की गजल

एक बार प्रकाशनारायण सप्रू के बँगले पर जस्टिस आनंदनारायण 'मुल्ला' की अध्यक्षता में उर्दू का एक मुशायरा हुआ था, जिसमें डा० सम्पूर्णानंद भी मौजूद थे। सम्पूर्णानंदजी ने उस मुशायरे में यह गजल पढ़ी थी :

बंदा, मौला, इबादत और इस्याँ[1]
इनके घड़कर हज़ार अफ़साने।
राज़े-वहदत[2] से ख़ुद तो नावाक़िफ़,
वाइज़ आया है हमको समझाने।
फ़ैज़[3] हरसू[4] है मोजज़न,[5] लेकिन,
हमको मारा है, ख़ौफ़े-उक़बा[6] ने।
मय 'आनंद' अब तो पीते हैं,
आक़बत की ख़बर ख़ुदा जाने।

१. पाप
२. ऐक्य का रहस्य
३. मेहरबानी
४. हर तरफ
५. मौजें मारती हुई
६. मरने के बाद का भय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नूतन-पुरातन ज्ञान-सामग्री

नूतन-पुरातन ज्ञान-सामग्री के आधार पर अमृता मेहता-द्वारा रेगिस्तानों की मरीचिकाओं का एक विश्लेषण-विवेचन

मरीचिका का भुलावा कभी-कभी बड़ा वेढव होता है। सन् १९०६ में कप्तान पीरी ने, जब वे उत्तरी ध्रुव-यात्रा से लौट रहे थे, मार्ग में एक बड़ा द्वीप देखा। अमेरिका पहुँच कर इसकी खोज करने के लिए उन्होंने मैकमिलन की अध्यक्षता में एक जहाज भिजवाया। यह जहाज एक चट्टान से टकरा कर टूट गया। पर द्वीप का कहीं पता न चला। इस खोज में ९ लाख रुपये खर्च हुए। तब भी मैकमिलन हताश न हुआ और दूसरी बार प्रयत्न करने पर वहाँ पहुँचा, जहाँ पीरी ने यह द्वीप देखा था। उस दिन आसमान साफ था। वह लिखता है कि, वहाँ पहुँचने पर वह द्वीप फिर दिखायी पड़ने लगा। दूरबीन लगाने पर वह और भी नजदीक जान पड़ने लगा। उसे देखने पर कुछ भी संदेह नहीं होता था; पर वह मरीचिका ही सिद्ध हुआ।

नक्शा बनाने के लिए एक बार गोबी मरुस्थल की पैमाइश हो रही थी। वहाँ एक लम्बी-चौड़ी झील दीख पड़ी। उसमें एक छोटा-सा द्वीप भी दिखलायी पड़ा, जिसमें खूब हरे-भरे वृक्ष लगे थे। नक्शे में वह द्वीप दिखलाना निश्चित कर लिया गया; पर वहाँ पहुँचने पर सब हवा हो गया। हिरनों का केवल एक झुंड बैठा हुआ था, जो चमकती हुई बालू में द्वीप-सा प्रतीत होता था और उनके काले सींग वृक्ष से जान पड़ रहे थे। वहाँ एक आदमी को ऐसा मालूम हुआ कि, वह पानी में चल रहा है। धीरे-धीरे पानी उसके घुटनों तक आ गया, तब उसे ज्ञात हुआ कि, वास्तव में, वह जमीन पर की गर्म हवा है, जिसमें सूर्य की किरणों से पानी की-सी झिलमिलाहट पैदा हो गयी है।

किसी-किसी मरीचिका में एक ओर की वस्तु, भिन्न रूप में, दूसरी ओर दिखलायी पड़ने लगती है। समुद्र के पहाड़ी तट के पास से जाते हुए जहाज के प्रायः दूसरी ओर वैसा ही जहाज दिखलायी देने लगता है। कभी कोई वस्तु आकाश में खड़ी या उल्टी दिखलायी देती है। क्रीमिया-युद्ध में अँग्रेजी जहाजी बेड़े को बहुतों ने उल्टा टँगा देखा था। न्यूयार्क-बंदरगाह के एक स्थान से कभी पूरा नगर आकाश में सिर के बल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खड़ा दीख पड़ता था। सन् १८६९ में पेरिस नगर का भी ऐसा ही दृश्य देखा गया था। एक बार एक जहाज इंग्लैंड से न्यूयार्क आ रहा था। तीसरे पहर भयंकर तूफान आया। उसमें वह जहाज उड़ता दिखलायी दिया। उसका एक भाग वहाँ पर मौजूद लोगों को स्पष्ट दिखलायी पड़ रहा था। कभी-कभी युद्ध में मरीचिका अपने विचित्र खेल दिखाती है। 'फंको-प्रशियन' (फ्रांस-जर्मन) युद्ध के समय स्वीडन तथा नार्वे के उत्तरी भाग के लोगों ने युद्ध-क्षेत्र में सुसज्ज सेनाओं को आकाश में उड़ते देखा था। सन् १९१६ में मैसोपोटेमिया में ब्रिटिश सिपाहियों ने तुर्की की खाई पर पहुँच कर उन्हें भगा दिया। तोपों ने भी गोलाबारी शुरू कर दी; पर थोड़ी देर में वह एकदम बंद कर दी गयी। बात यह थी कि, मरीचिका के कारण सामने भागते हुए शत्रु दृष्टिगोचर नहीं हो रहे थे। अल्जीरिया में युद्ध करते समय एक बार फ्रांसीसियों को ऐसा जान पड़ा कि, अरब घुड़सवार आ रहे हैं। उनकी खोज-खबर लेने को उन्होंने जासूस भी भेज दिये; पर अंत में, वे सवार लकड़ी के ठूँठ ही निकले।

कभी मरीचिका में छोटी-सी चीज भिन्न रूप में बड़ी भारी-सी प्रतीत होने लगती है। किसी स्टीमर पर सैर करते हुए कुछ लोगों ने देखा कि, सामने से एक बड़ा जहाज आ रहा है। उस पर आदमी भी दिखलायी पड़ रहे थे। अपने स्टीमर को उसकी टक्कर से बचाने के लिए वे १० मिनट तक प्रयत्न करते रहे। अंत में, जान पड़ा कि, बहुत दूर पर एक छोटा-सा जहाज झलक रहा था। अल्जीरिया-युद्ध में कुछ सैनिकों ने एक बार देखा कि, उनके घोड़े और वे स्वयं आकार में बढ़ते जा रहे हैं। बादल आ जाने से जब सूर्य की किरणों का प्रकाश कम पड़ा, तब उन्हें वास्तविक स्वरूप का अनुभव हुआ। उड़ाकों को कभी-कभी हवाई मरीचिका बड़े चक्कर में डाल देती है। सन् १९२४ में 'विश्व उड़ान' में अमेरिका के उड़ाके मेजर मार्टिन ने एक ऊँचा पर्वत अपने सामने देखा और उससे बचने के लिए वे बायीं तरफ मुड़े। इतने में ही उनका जहाज एक चट्टान से टकरा कर चकनाचूर हो गया। बात यह थी कि, जो चोटी सामने दीख रही थी, वह बायीं ओर ही थी; पर दिशा-भ्रम हो रहा था।

आँख का भ्रम

प्रसिद्ध सूफी संत जलालुद्दीन रूमी जब दौड़ कर उस कुंड के पास पहुँचे, तो देखा कि, एक आदमी सिर पीट-पीट कर वहाँ रो रहा है। उन्होंने पूछा, तो वह बोला—"जहाँ जाता हूँ, पानी नहीं मिलता। यहाँ भी वही भ्रम। पानी दिखता है; मगर कहीं पानी नहीं!" रूमी ने उसे कुंड में से पानी पिलाते हुए कहा—"भाई, ऐसा ही होता है, आँख का भ्रम! मन पर घाव छोड़ ही जाता है!"

—'फारस के मोती' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुशल इतना ही हुआ कि, मार्टिन साहब किसी तरह बच गये। प्रसिद्ध उड़ाका लिंडिनवर्ग भी अपने हवाई जहाज पर जब एक बार पेरिस जा रहे थे, तब आयरलैंड के समुद्रतट पर उन्होंने कई पर्वत और घाटियाँ देखीं। उनके अस्तित्व में कोई संदेह न होता था; पर वे जानते थे कि, वास्तव में, वहाँ कोई पहाड़ नहीं है।

इस तरह मरीचिका का भ्रम मरुस्थल में ही नहीं, जल और आकाश में भी होता है। अपने यहाँ प्रायः इसे नहीं मानते। 'अमरकोश' की टीका में लिखा हुआ है– 'न मरीचिकेन प्रसिसद्धर्कोकोमादो वन्होच'! परंतु 'गंधर्वनगर' का उल्लेख अपने यहाँ भी मिलता ह। वेदांत-ग्रंथों में 'गंधर्व-नगर' की तरह संसार को मिथ्या बतलाया गया है। 'चरक' में कहा गया है कि, आकाश में जो बिना मेघ के मेघ देखता है और बिना मेघ के विद्युत् देखता है, उसकी मृत्यु निश्चित है। (इन्द्रियस्थान, अध्याय ४) ज्योतिष के अनुसार भी आकाश म नगर-जैसा कोई दृश्य दिखायी पड़ने से कोई-न-कोई अशुभ होता ह। इसे 'स्वपुर' भी कहते हैं। 'वृहत्संहिता' के ३६-वें अध्याय में इसके किस प्रकार के भाव में वहाँ उदित होने से क्या फल मिलता है, इसका विस्तृत वर्णन दिया हुआ है! उसमें लिखा है कि जब, अनेक कर्णा-कृति पताका, ध्वज तथा तोरणादि-युक्त गंधर्वपुर आकाश में चढ़ आता है, तब बड़ा घोर संग्राम छिड़ता ह।

आजकल वैज्ञानिक इस प्रकार के दृश्य को भी मरीचिका मान रहे हैं। तेज धूप की गर्मी के कारण हवा का घनत्व बराबर नहीं रहता। उस समय जमीन के निकट की वायु अधिक गर्म होकर ऊपर उठना चाहती ह। परंतु ऊपरवाली तहें उसे उठने नहीं देतीं, तब हवा की लहर जमीन से सटी हुई बहने लगती है, जो दूर से जल-धारा-सी दिखलायी पड़ती है।

एक जमींदार के यहाँ उसके कुछ मित्रों की दावत थी। मेहमानों के स्वागत-सत्कार में जब वह व्यस्त था, उसका नौकर उसके पास पहुँचा। बाहर कोई आया हुआ था और उसने नौकर के द्वारा जमींदार के पास पत्र भिजवाया था। पत्र में उसने लिखा था–"खेत में कुछ जरूरी काम एक मजबूत बैल के अभाव में अटका हुआ है। कृपया अपना एक बैल कुछ देर के लिए भेज दें।" बाहर वह व्यक्ति पत्र के जवाब के लिए खड़ा था। समस्या यह थी कि, जमींदार न पढ़ सकता था, न लिख सकता था। किंतु इतने मेहमानों के सामने वह इसे कैसे स्वीकार करता! अतः उसने पत्र खोल कर कुछ क्षणों तक पढ़ने का अभिनय किया; फिर अपने नौकर की ओर मुड़ कर गम्भीर स्वर में कहा–"जाओ, पत्र देनेवाले उस व्यक्ति से कह दो कि, दावत समाप्त होते ही, मैं स्वयं चला आऊँगा।"

—'चाइना रिकंस्ट्रक्ट्स' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप कितने हँसमुख हैं

शहद की मक्खी से एक दिन गुलाब ने पूछा—"क्यों तू हमेशा ही इतनी व्यस्त और गहन-गम्भीर बनी रहती है? हर बार एक जैसा ही बँधा-बँधाया चेहरा, पत्थर की मूर्ति-जैसा, न कभी चौड़ा, न कभी सँकरा! क्या बात है यह?" मक्खी ने मधु चूसते-चूसते ही कहा—"शरीर काम के लिए बना है। एक क्षण भी व्यर्थ नहीं खोना चाहिए। जीवन बार-बार नहीं मिलता।" फूल ने सुना, तो उसकी हँसी नहीं रुकी; बोला—"रे...रे! कैसी खो गयी तुम? क्या मुँह बना कर ही काम होना चाहिए— हँस-खिल कर नहीं! देख, मैं भी तो काम करता हूँ— तुमसे कम काम नहीं मेरे जिम्मे भी!" नीचे दिये गये मनोविश्लेषण-सम्बंधी मूल्यांकन को जरा इस कहानी के साथ भी सम्बद्ध कर लीजिये।

सदैव हँसता-मुस्कराता चेहरा! बात-बात पर हँसी की फुलझड़ियाँ! जवाब देने में भी कितना माहिर! कैसे कर लेता है वह?

सम्भव है, ये विचार आपके दिमाग में कभी किसी व्यक्ति से मिलने पर उत्पन्न हों और तब, निश्चय ही, उपर्युक्त प्रश्न का जवाब पाने को आप आतुर हो उठेंगे। इस प्रश्न का विश्लेषण करते हुए नीचे आठ उपप्रश्न दिये गये हैं। जीवन में फूल-सा उल्लास और जिंदादिली जिन लोगों को प्राप्त हुई है, ये प्रश्न उनके स्वभाव के प्रतीक हैं।

आप इन्हें ध्यान से पढ़िये और 'हाँ' अथवा 'ना' में उनके जवाब एक अलग कागज पर लिख लीजिये। उपर्युक्त प्रश्न का जवाब काफी अंशों में आपके सामने स्पष्ट हो जायेगा। आपको ज्ञान हो जायेगा कि, हास्य को समझने और हँसी-मजाक का लुत्फ लेने की कितनी योग्यता आप में है और जहाँ आप में कमी है, उसे कैसे पूरा किया जा सकता है। जीवन एक खिलखिलाता झरना है, यदि आप इस ज्ञान के प्रकाश में अमल शुरू कर देंगे, तो निश्चय ही यह वाक्य पूरा-पूरा आपके भीतर चरितार्थ हो जायेगा।

(१) अगर आपका नाम कोई जान-बूझ कर अथवा अनजाने ही गलत ढंग से ले लेता है, या ऐसी ही कोई साधारण बात होती है, तो क्या आप झुँझला उठते हैं?

(२) क्या आपको किसी खास बात अथवा नाम से चिढ़ है और लोग आनंद उठाने के लिए जब उसे आपके सामने कहते हैं, तो क्या आप बौखला जाते हैं?

(३) क्या आप इतने गम्भीर और चिड़चिड़ हैं कि, आपके पहुँचते ही लोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हँसना-बोलना बंद कर देते हैं?

(४) जब आप किसी आवश्यक कार्य में व्यस्त होते हैं और कोई किसी कार्य से क्षण-दो-क्षण के लिए भी वहाँ आ जाता है, तो क्या आप नाराज हो उठते हैं?

(५) अगर कोई छोटा बच्चा आपकी बात नहीं मानता है, अथवा आपके बार-बार कहने पर भी अपनी मूर्खतापूर्ण हरकतें बंद नहीं करता है, तो क्या आप झल्ला उठते हैं?

(६) आपसे कोई कम उम्र का व्यक्ति जब आपकी किसी बात का जवाब दे बैठता है, अथवा आपकी बात की ऐसी आलोचना करता है कि, लोग हँस पड़ते हैं, तो क्या आप स्वयं को अपमानित अनुभव करते हैं?

(७) संयोग से अगर आप कभी किसी हास्यास्पद परिस्थिति में पड़ जाते हैं और जब दूसरे हँसते हैं, तो क्या आप उन पर रुष्ट हो जाते हैं?

(८) और, अगर स्वयं आपकी गलती से किसी अन्य के लिए कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, तो क्या आप व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए उसका आनंद लूटते हैं?

अगर ऊपर के ६ प्रश्नों के जवाब में भी आपने 'हाँ' कहा है, तो इसका अर्थ है कि, आप में न तो हास्य को समझने की शक्ति है और न आपको हँसी-मजाक करने का तरीका ज्ञात है। अगर सिर्फ ४ प्रश्नों के जवाब में भी आपने 'हाँ' कहा है, तो इसका अर्थ है कि, आपकी मनःस्थिति दुविधा-जनक है। आप तय नहीं कर पाते कि, आपको किधर झुकना चाहिए। और, अगर आपने सिर्फ एक-दो प्रश्नों के जवाब में 'हाँ' कहा है, तो इसका अर्थ है कि, आपने सफल जीवन के इस पक्ष पर अच्छा-खासा काबू पा लिया है और एक-दो सीढ़ी ही आपको और चढ़नी है!

*

मुँह

कह रहा हूँ सत्य आप टटोलिये,
व्यर्थ की बातें न इससे बोलिये।
सिर्फ भोजन और नाश्ते के समय,
आप अपना बेधड़क मुँह खोलिये।

नाक

यह प्रतिष्ठा की अनोखी धाक है,
यह नहीं तो जिंदगी बेबाक है।
कोई पीछे से इसको न काट ले,
इसलिए आँखों के नीचे नाक है।

—बेधड़क बनारसी

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोस्तों से बचाओ

सैयद सज्जाद हैदर-लिखित एक उर्दू-प्रबंध का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

और कोई तलब अबनाये-जमाने (दुनियावाले) से नहीं,
मुझ पे अहसां जो न करते, तो यह अहसां होता।

एक दिन मैं दिल्ली के चाँदनी चौक में से गुजर रहा था कि, मेरी नजर एक फकीर पर पड़ी, जो बड़े मुअस्सर (प्रभावशाली) तरीके से अपनी हालतेजार (दुर्दशा) लोगों से बयान करता जा रहा था। दो-तीन मिनट के वक्फ (मौन) के बाद यह दर्द से भरी स्पीच उन्हीं अल्फाज, उसी तर्ज, में दोहरा दी जाती थी। यह तर्ज मुझे कुछ ऐसा खास मालूम हुआ कि, मैं उस शख्स को देखने और उसके अल्फाज सुनने के लिए ठहर गया। उस फकीर का कद लम्बा, जिस्म खूब मोटा-ताजा और चेहरा एक हद तक खूबसूरत था ; मगर बदमाशी और बेहयाई ने सूरत मस्ख कर दी (बिगाड़ दी) थी। यह तो उसकी शक्ल थी। रही उसकी सदा, तो मैं ऐसा कसयु-त्कल्ब (संकीर्ण हृदय) नहीं हूँ कि, उसका मुख्तसिर-सा खुलासा लिख दूँ। वह इस काबिल है कि, लफ्ज-ब-लफ्ज लिखी जाये। चुनाँचे वह स्पीच या सदा, जो कुछ कहिये, यह थी—

"ऐ भाई मुसलमानो! खुदा के लिए मुझ बदनसीब का हाल सुनो। मैं आफत का मारा सात बच्चों का बाप हूँ। मैं भीख नहीं माँगता हूँ। अब रोटियों का मोहताज हूँ और अपनी मुसीबत कहता हूँ। मैं भीख नहीं माँगता हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि, अपने वतन को चला जाऊँ; मगर कोई खुदा का प्यारा मुझे घर भी नहीं पहुँचाता। भाई मुसलमानो, मैं गरीबुलवतन (परदेशी) हूँ। मेरा कोई दोस्त नहीं। खुदा के बन्दो। मेरी सुनो, मैं गरीबुलवतन हूँ।"

फकीर तो यह कहता हुआ और जिन पर उसके किस्से का असर हुआ, उनसे खैरात लेता हुआ आगे बढ़ गया; लेकिन मेरे दिल में चंद खयालात पैदा हुए। अपनी हालत का मुकाबिला उससे किया और मुझे खुद ताज्जुब हुआ कि, अक्स में मैंने उसको अच्छा पाया। यह सही है कि, मैं काम करता हूँ और वह मुफ्त में दिन गुजारता है। मैंने तालीम पायी है, वह जाहिल है। मैं अच्छे लिबास में रहता हूँ, वह फटे कपड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहनता है। बस, यहाँ तक मैं उससे बेहतर हूँ। आगे बढ़ कर उसकी हालत मुझसे बदरजहा (बहुत ज्यादा) अच्छी है। उसकी सेहत पर मुझे रश्क करना चाहिए। मैं रात-दिन फिक्र में गुजारता हूँ और वह ऐसे इतमीनान से बसर करता है कि, बावजूद बसूरने और रोने की सूरत बनाने के उसके चेहरे से बशाशत (खुशी) नुमाया (जाहिर) थी। बड़ी देर तक मैं गौर करता रहा कि, उसकी यह काबिले-रश्क हालत किस वजह से है? और, आखिरकार, मैं बजाहिर इस अजीब नतीजे पर पहुँचा कि, जिसे वह मुसीबत खयाल करता है, वही उसके हक में नियामत है। वह हसरत से कहता है कि, मेरा कोई दोस्त नहीं। मैं हसरत से कहता हूँ कि, मेरे इतने दोस्त हैं। उसका कोई दोस्त नहीं– अगर यह सच है, तो उसे मुबारकबाद देनी चाहिए।

इतनी भी क्या नाराजी?
बरसों में मिलते हो मियाँ!

[चित्र : 'शंकर्स वीकली' से साभार]

पर क्या उसके अहबाब (मित्र) सचमुच ही वक्त-बे-वक्त उसे दावतों और जलसों में खींच कर नहीं ले जाते? क्या कभी ऐसा नहीं होता कि, उसे नींद के झोंके आ रहे हैं; मगर यार-दोस्तों का मजमा है, जो किस्से-पर-किस्सा और लतीफे-पर-लतीफा कह रहे हैं और उठने का नाम नहीं लेते? क्या उसे दोस्तों के खुतूत का जवाब नहीं देना पड़ता? क्या उसके प्यारे दोस्त की तस्नीफ की हुई (लिखित) कोई किताब नहीं, जो उसे ख्वाहमख्वाह पढ़नी पड़े और 'रिव्यू' लिखना पड़े? अगर इन सब बातों से वह आजाद है, तो कोई ताज्जुब नहीं कि, वह हट्टा-कट्टा है और मैं नहीफ बनजार (कमजोर) हूँ। या अल्लाह! क्या इस बात पर भी वह शुक्र अदा नहीं करता? खुदा जाने, वह और कौन-सी नियामत चाहता है!

लोग कहेंगे कि, इस शख्स के कैसे बेहूदा खयालात हैं। बगैर दोस्तों के जिंदगी दूभर होती है और यह उनसे भागता है। मगर मैं दोस्तों को बुरा नहीं कहता। मैं जानता हूँ कि, वह मुझे खुश करने के लिए मेरे पास आते हैं और मेरे खैरतलब (शुभाकांक्षी) हैं; मगर अमली नतीजा यह है कि, अहबाब का इरादा होता है मुझे फायदा पहुँचाने का और हो जाता है नुक्सान।

मसलन मेरे दोस्त अहमद मिर्जा हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें मैं 'भड़भड़िया' कहता हूँ। वह निहायत माकूल आदमी हैं और मेरी-उनकी दोस्ती निहायत पुरानी और बेतकल्लुफ है। मगर हजरत की खिलकत में यह दाखिल है कि, दो मिनट निचला नहीं बैठा जाता। जब आयेंगे, शोर मचाते हुए—चीजों को उलट-पुलट करते हुए। गरज यह कि, उनका आना भूचाल के आने से कम नहीं है। जब वह आते हैं, तो मैं कहता हूँ—कोई आ रहा है, कयामत नहीं है। उनके आने की मुझे दूर से खबर हो जाती है, बावजूद इसके कि, मेरे लिखने-पढ़ने का कमरा छत पर है। अगर मेरे नौकर कहते हैं कि, मियाँ इस वक्त काम में मशगूल हैं, तो वह फौरन चीखना शुरू कर देते हैं कि, कम्बख्त को अपनी सेहत का भी तो खयाल नहीं। नौकर की तरफ मुखातिब होकर कहते हैं—

"खैराती! कब से काम कर रहे हैं? बड़ी देर से? तौबा! तौबा! अच्छा, बस, एक मिनट उनके पास बैठूँगा—मुझे खुद जाना है। छत पर होंगे ना? मैं पहले ही समझता था!"

यह कहते हुए, वह ऊपर आते हैं और दरवाजे को इस जोर से खोलते हैं कि, गोया कोई गोला आकर लगा। आज तक उन्होंने दरवाजा खटखटाया नहीं। आँधी की तरह ही दाखिल होते हैं।

"आ-हा-हा-हा! आखिर तुम्हें मैंने पकड़ लिया। मगर देखो, मेरी वजह से अपना लिखना बंद मत करो। मैं हर्ज करने नहीं आया। खुदा की पनाह! किस कदर लिख डाला है। कहो, तबीयत तो अच्छी है? मैं तो सिर्फ यही पूछने आया था। वल्लाह! मुझे किस कदर खुशी होती है कि, मेरे दोस्तों में एक शख्स ऐसा है, जो मज्मून-निगार के लकब (नाम) से पुकारा जा सकता है। लो, अब जाता हूँ। मैं बैठूँगा नहीं। एक मिनट नहीं ठहरने का। तुम्हारी खैरियत दर्याफ्त करनी थी। खुदा हाफिज!"

यह कह कर वह निहायत मुहब्बत से मुसाफा करते (हाथ मिलाते) और अपने जोश में मेरे हाथ को इस कदर दबा देते हैं कि, उँगलियों में दर्द होने लगता है और मैं कलम नहीं पकड़ सकता। यह तो अलाहिदा रहा, अपने साथ मेरे कुल खयालात को भी ले जाते हैं और मैं खयालात को जमा करने की कोशिश करता हूँ। अगर देखा जाये, तो वह मेरे कमरे में एक मिनट से ज्यादा नहीं रहे; ताहम अगर रहते, तो इससे ज्यादा नुकसान न करते।

और लीजिये, दूसरे दोस्त मुहम्मद तहसीन हैं। यह बाल-बच्चोंवाले साहब हैं और सब दिन उनकी ही फिक्र में रहते हैं। जब कभी मिलने आते हैं, तो तीसरे पहर के करीब आते हैं, जब मैं काम से फारिग हो चुकता हूँ; लेकिन इस कदर थका हुआ होता हूँ कि, दिल चाहता है, एक घंटे आरामकुर्सी पर खामोश पड़ा रहूँ। मगर तहसीन आये हैं और उनसे मिलना जरूरी है। उनके पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखिये! सनलाइट की केवल
आधी टिकिया से यह सारी
धुलाई हुई है!

यह इस के ज़्यादा भाग
का ही कमाल है!

SUNLIGHT SOAP

सनलाइट साबुन
कपड़े सफ़ेद और उजले धोता है

S. 248-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी किफ़ायतपूर्ण ! एक ही बार ब्रश करने से
कोलगेट डेन्टल क्रीम
१५% तक
दंत-क्षय और दुर्गंध-प्रेरक जीवाणु ख़त्म कर देता है !

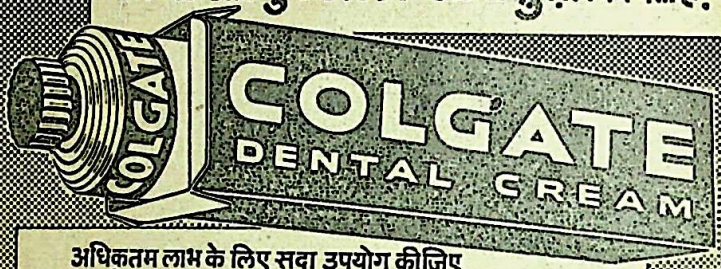

अधिकतम लाभ के लिए सदा उपयोग कीजिए
कोलगेट टुथ ब्रश

OCC/24 R2

जल्द तथा
विनयशील
सेवा के लिये

दि
बैंक ऑफ जयपुर लि.
हमारे आफिस:- कुन्ज बिल्डिंग, सनेरी रोड

HBS 143

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

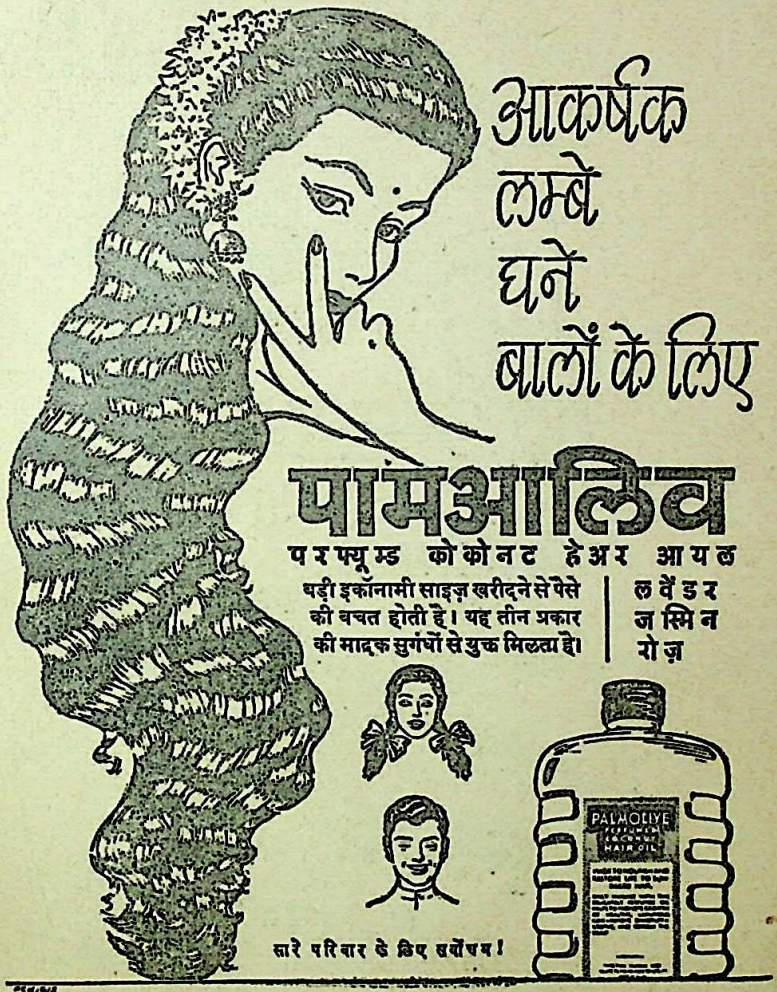

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब सिर्फ उम्दा सिगरेट से ही संतोष हो

पनामा पीजिये

ये आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती हैं

GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता:
गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४.

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रिय उद्योग

G.T. 221

Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें करने के लिए सिवाय अपनी बीवी-बच्चों की बीमारी के और कोई मजमून नहीं। मैं कितनी ही कोशिश करूँ; मगर वह उस मजमून से बाहर नहीं निकलते। अगर मैं मौसम का जिक्र करता हूँ, तो वे कहते हैं—"हाँ, बड़ा खराब मौसम है। मेरे छोटे लड़के को बुखार आ गया। मँझली लड़की खाँसी में मुबतला है।" अगर 'पालिटिक्स' या 'लिट्रेचर' के मुताल्लिक गुफ्तगू करता हूँ, तो तहसीन साहब फौरन माजुरत (सफाई) पेश करते हैं— "भाई! आजकल घर-भर बीमार है। मुझे इतनी फुर्सत कहाँ कि, अखबार पढ़ूँ!" अगर किसी आम जल्से में आते हैं, तो अपने लड़कों को जरूर साथ लिये होते हैं और हर एक से बार-बार पूछते रहते हैं कि, तबीयत तो नहीं घबराती? प्यास तो नहीं लगती? बीच-बीच में नब्ज भी देख लेते हैं। वहाँ भी किसी से मिलते हैं, तो घर की बीमारी का ही जिक्र करते हैं।

तीसरे दोस्त, शाकिर साहब, मौजा सलीमपुर के रईस और जिला-भर में निहायत मुअज्जिज आदमी हैं। उन्हें लियाकत के मुताबिक 'लिट्रेचर' का बहुत शौक है। 'लिट्रेचर' पढ़ने का उतना नहीं, जितना 'लिट्रेरी' आदमियों से मिलने और तअर्रुफ (परिचय) पैदा करने का। उनका खयाल है कि, अहले-इल्म की थोड़ी-सी कदर करना उमरा के शायाने-शान है। एक मर्तबा मेरे यहाँ तशरीफ लाये और बहुत इसरार से मुझे सलीमपुर ले गये, यह कह करके—

"शहर में रात-दिन शोर व शगब (चीख-पुकार) रहता है। देहात में कुछ अर्सा रहने से तबदीले-आबोहवा भी होगी और वहाँ मजमूनिगारी (लेखन-कार्य) भी ज्यादा इतमीनान से कर सकोगे। मैंने एक कमरा खास तुम्हारे वास्ते आरास्ता कराया है, जिसमें पढ़ने-लिखने का सब सामान मोहय्या है। न हो, तो वहाँ थोड़े दिन रहके चले आना।"

मैं ऐसे मुहब्बत-आमेज इसरार पर इन्कार कैसे कर सकता था? मुख्तसिर-सा सामान पढ़ने-लिखने का लेकर उनके साथ हो लिया। एडिटर-'मआरिफ' से वादा कर चुका था कि, एक खास अर्से में

प्रेमिका

जिसे भुलाना चाहते हैं, वे भूलते नहीं हैं। कल शाम उसके पैरों की आवाज-जैसी कुछ मैंने सुनी। उठ कर बाहर गया, तो पाया कि, वह कोई और ही थी। कल सपने में भी वह आयी और मेरे गले से लिपट कर उन अगाध आँखों से प्रेम माँगने लगी। जब से वह मुझे छोड़ कर गयी है, कुछ भी सुहाता नहीं— जीवन ही जैसे फीका हो गया है। कल शाम से, जब से कि कबाड़-खाने में उसका पट्टा देखा, वह फिर मेरी स्मृति पर छा गयी है....!

—महमूद तैमूर की 'कुतिया' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी खिदमत में एक मजमून भेजूँगा। शाकिर खान साहब की कोठी पर पहुँच कर मैंने वह कमरा देखा, जो मेरे लिए तैयार किया गया था। यह कमरा कोठी की दूसरी मंजिल में था और निहायत खूबी से आरास्ता था। उसकी एक खिड़की पाँईबाग की तरफ खुलती थी और एक निहायत ही दिलफरेब मंजर मेरी आँखों के सामने होता था। सुबह को मैं नीचे नाश्ते की गरज से बुलाया गया। जब दूसरा प्याला चाय का पी चुका, तो अपने कमरे में जाने के लिए उठा। तभी चारों तरफ से इसरार होने लगा—"हैं-हैं! कहीं ऐसा गजब न करना कि, आज ही से काम शुरू कर दो। अपने दिमाग को कुछ तो आराम दो। और, आज का दिन तो खास कर इस काबिल है कि, सब्जी का लुत्फ उठाने में गुजारा जाये। चलिये, गाड़ी तैयार कराते हैं। दरिया पर मछली का शिकार खेलेंगे। फिर वहाँ से दो मील पर, अहमदपुर में, आपको वहाँ के रईस राजा तालिबअली साहब से मिलायेंगे।"

मेरा माथा वहीं ठनका कि, अगर यही हाल रहा, तो यहाँ खैरियत नहीं।

खैर, सैकड़ों हीले-हवालों से उस वक्त तो मैं बच गया और मेरे मेजबान भी मेरी वजह से न गये। मगर मुझे बहुत जल्द मालूम हो गया कि, जिस यक्सूई (एकाग्रता) की तलाश में मैं सरगर्दा (परेशान) था, वह मुझे यहाँ भी नहीं मिल सकेगी।

मैं जल्दी से उठ कर अपने कमरे में आया और उस वक्त जरा गौर से उस मेज के सामान को देखा, जो मेरे लिखने-पढ़ने के लिए तैयार की गयी थी। मेज पर निहायत कीमती कामदार कपड़ा पड़ा था, जिस पर सियाही का एक कतरा गिराना गुनाहे-कबीरा (महापाप) से कम न होता। चाँदी की दावात; मगर सियाही देखता हूँ, तो सूखी हुई। अँग्रेजी कलम— निहायत कीमती और नायाब; मगर अक्सर में निब नदारद। जाजिब कागज एक मखमली जिल्द की किताब में; मगर लिखने के कागज का पता नहीं।

इस तरह मेरे बहुत-से मुख्तलिफ (भिन्न-भिन्न) किस्मों के दोस्तों के भी किस्से हैं। अब अगर मैं यह दुआ माँगा करता हूँ कि, खुदा मुझे मेरे दोस्तों से बचाये और उस फकीर को अपने से खुशनसीब मानता हूँ, तो क्या बुरा करता हूँ!

स्वयं पंचमुखः पुत्रौ गजानन षडाननौ,
दिगम्बर कथं जीवेदन्नपूर्णा न चेद्गृहे।

—यदि साक्षात् अन्नपूर्णा पार्वती घर की स्वामिनी न होती, तो बेचारे महादेव कैसे जीते? धन-दौलत उनके पास कितनी है, यह तो उनके दिगम्बर नाम से ही स्पष्ट है। इस पर खाने के लिए उनके खुद के ही पाँच मुख नहीं हैं, बल्कि एक बेटा छः मुखवाला है तथा दूसरा हाथी है। —'भामिनी-विलास' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूंद-बूंद का विज्ञान

★

भौंहें क्यों होती हैं

भौंहों का होना बहुत जरूरी है। भौंहें हमारी आँखों की रक्षा करती हैं। भौंहें अगर न होतीं, तो हमारे पसीने की बूँदें ललाट से होकर सीधी आँखों में चली जातीं। आँखों में इनका जाना हानिकारक है। पसीने में शरीर के त्याज्य और बेकार तत्व रहते हैं। आँखों के रास्ते उनका शरीर में पुनः प्रवेश पाना उचित नहीं। भौंहें आँखों की दीवारें भी हैं।

अलावा, भौंहें सुंदरता की भी प्रतीक हैं। इनसे आँखों का आकर्षण बढ़ जाता है। आँखें हमारे शरीर के सर्वाधिक सुंदर और उपयोगी अंग हैं। यह सुंदरता उनके रंग को लेकर नहीं होती; बल्कि आँखों की पुतलियाँ जिस तीव्रता से चलती हैं और पल में जिस तेजी से झपकती रहती हैं, उनसे हममें एक प्रकार की सजीवता का आभास होने लगता है।

★

पत्ते क्यों झड़ते हैं

वृक्षों की मुख्यतः दो किस्में होती हैं। एक वृक्ष ऐसे होते हैं, जिन पर सदा हरियाली छायी रहती है और जो 'सदाबहार' के नाम से जाने जाते हैं। दूसरी तरह के वृक्ष वे हैं, जिनकी हरियाली अस्थायी होती है। इन वृक्षों के पत्ते पतझड़ आते ही रंग बदलने लगते हैं तथा अंत में वृक्षों का साथ छोड़, धरती की गोद में आ जाते हैं। दूसरी किस्म के वृक्षों की ही संख्या अधिक है। पूरे वसंत और ग्रीष्म-भर वृक्षों की पत्तियों में निहित 'क्लोरोफिल' उन्हें हरा और खूबसूरत बनाये रखता है; किंतु पतझड़ के मौसम में चलनेवाली हवा जब आनेवाले शरत्काल की सूचना-सी देने लगती है, तब इन पत्तों की हरीतिमा धीरे-धीरे इनका साथ छोड़ने लगती है— शायद आनेवाले असह्य ठंड से भयभीत होकर! जिस प्रकार अत्यधिक भयभीत हो जाने पर हमारे मस्तिष्क से हृदय तक जानेवाले स्नायु सिकुड़ जाते हैं और रक्त-प्रवाह में अवरोध उत्पन्न हो जाने से हमारा मुख रक्त-विहीन हो, पीला पड़ जाता है, कुछ-कुछ वैसा ही हाल इन पत्तों का भी होता है। हरीतिमा जैसे-जैसे गायब होने लगती है, पत्तों में पाये जाने वाले अन्य तत्व उभरने लगते हैं। इन्हीं तत्वों के अनुसार इन पत्तों का रंग बदलता जाता है और हरीतिमा के पूर्णरूपेण गायब होते ही ये पत्ते सिकुड़ जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'क्लोरोफिल' अथवा यह हरीतिमा ही इन पत्तों का जीवन-रस है। अतः इसके अभाव में ये सूख कर झड़ जाते हैं।

★

पशु जल्दी क्यों बढ़ते हैं

मक्खी अपने जन्म के समय जितनी बड़ी होती है, वह आजन्म उतनी ही बड़ी रहती है; कभी बढ़ती नहीं। कुत्ते का बच्चा साधारणतया साल-भर में अपना पूर्ण विकास प्राप्त कर लेता है। कुछ जाति के कुत्तों को इससे अधिक समय भी लगता है। किंतु तीन वर्ष की उम्र तक पहुँचने के पहले ही वे अपनी पूरी ऊँचाई पा चुके होते हैं। मनुष्य तो तीन वर्ष की उम्र तक अपने बचपन की पूरी सीढ़ियाँ भी नहीं लाँघ पाता। उस वक्त उसकी ऊँचाई साधारणतया बहुत ही कम होती है।

जानवरों के इतनी जल्दी बढ़ने के कई कारण हैं। प्राणी की जीवन-अवधि और अपनी पूरी ऊँचाई तक पहुँचने में वह जितना समय लेता है, दोनों के बीच सामान्यतया एक अनुपात होता है। मनुष्य और कुत्ते में ही अगर देखें, तो कुत्ते की जीवन-अवधि मनुष्य की तुलना में बहुत कम होती है। कुत्ता पंद्रह वर्ष की अवस्था में ही अपना जीवन पूरा कर लेता है, जब कि मनुष्य ९०-९५ वर्ष की अवस्था तक भी जीवित रह सकता है। जीवन-अवधि के अंतर के इस अनुपात में ही, उनके विकसित होने की अवधि में भी अंतर है। मनुष्य और कुत्तों के विकास का अनुपात १:७ है। अर्थात्, मनुष्य की जो स्थिति ९८ वर्ष की आयु में होती है, कुत्ता १४ वर्ष की आयु में ही उस स्थिति में पहुँच जाता है।

एक बात और है। जो जानवर कद में बड़े होते हैं, उनके बच्चे छोटे कदवाले जानवरों के बच्चों की तुलना में अपनी माँ पर काफी दिनों तक निर्भर रहते हैं। हाथी और मुर्गी की बात ले लीजिये। मुर्गी १५ वर्ष की उम्र में बूढ़ी हो जाती है और हाथी सौ वर्षों तक भी जीवित रह सकता है। लेकिन मुर्गी के बच्चे कुछेक सप्ताहों में ही अपनी माँ का साथ छोड़, आत्मनिर्भर हो जाते हैं, जब कि बच्चा हाथी दो वर्षों तक तो दूध पीकर रहता है तथा उसके बाद दो वर्ष और वह अपनी माँ के संरक्षण में रहता है। कोई भी हाथी बीस वर्ष की आयु के पहले अपनी पूरी ऊँचाई नहीं पा लेता।

और, इसका एक ही अर्थ है कि, शरीर-विकास तथा मस्तिष्क-विकास एक-दूसरे से सम्बंधित हैं। तीव्र दिमागवाले प्राणी का शारीरिक विकास, कुंद दिमाग-वाले प्राणी की तुलना में, बहुत धीमी गति से होता है! मनुष्य और पशुओं के शारीरिक-विकास की गति के बीच जो अंतर है, उसका भी सम्भवतः यही कारण है!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूढ़ा ही जीता

ठाकुर जयमलसिंह-लिखित एक रोमांचक शिकार-अनुभव

*

केणु दुसाध को, अपने ईख के खेत में घुसते सूअर की चौड़ी पीठ दिखायी दे गयी। वह तड़प कर उछला और खेत से होता हुआ उस ओर भागा। किसी ने सूअर के साथ उसकी मुठभेड़ नहीं देखी; किंतु कुछेक घंटों के बाद जब गाँववाले उसे उठा कर मेरे बँगले पर ले आये, तो वह अचेत था। उसका सारा शरीर क्षत-विक्षत था और उसके जीवित बचने की उम्मीद बहुत कम थी। पर उसकी आयु अभी समाप्त नहीं हुई थी। वह बच गया।

भारत के उस सीमावर्ती गाँव भेलवा में जंगली सूअर के पाये जाने की यह पहली घटना थी। यह सूअर, जैसा कि अंदाज लगाया जा रहा था, नेपाल से इस ओर चला आया था। भेलवा में मेरी जागीर थी और मैं उसी सिलसिले में उन दिनों वहाँ था। ईख की फसल के दिन थे। इस दुर्घटना के बाद कई ग्रामवासी मेरे पास उस सूअर के सम्बंध में बताने आये। ४० एकड़ जमीन में फैले घास के जंगल में उसने डेरा डाल रखा था। जिन गाँव-वासियों ने उसे देखा था, उनके कथनानुसार वह बड़ा ही भयावना और लम्बा-चौड़ा दीखता था। उसकी ऊँचाई के सम्बंध में वे जिस प्रकार की बातें करते थे, उससे उनकी बातों पर मुझे विश्वास नहीं हुआ; किंतु बाद में, एक-पर-एक इतनी दुर्घटनाओं के समाचार मिले कि, अविश्वास का स्थान ही नहीं रहा।

एक बार कुछ किसान जब ईख की फसल काट रहे थे, वह सूअर उधर आ निकला। सौभाग्य से वे संख्या में अधिक थे और सूअर के डर से अपने कुत्ते भी साथ ले गये थे। कुत्तों की सहायता से उन्होंने उसे घेरना चाहा; पर उनका दुश्मन उनसे अधिक मजबूत था— उन्हें घायल करता निकल गया। रामदेनी चमार को तो जान से भी हाथ धोना पड़ा।

तीसरी बार उसे एक व्यापारी ने देखा। घोरसहान बाजार से वह अपनी बैलगाड़ी पर लौट रहा था। जल्दी पहुँचने के लिए उसने घास के उस लम्बे-चौड़े मैदान से होकर बैलों को हाँक दिया। पर मुश्किल से आधा मार्ग उसने तय किया था कि, सूअर एक ओर से निकल कर तेजी से टूट पड़ा। बैल जान बचाने के लिए गाड़ी पटक, भागने की तैयारी करने लगे; पर सूअर उन्हें कहाँ छोड़नेवाला था। हाँ, व्यापारी को उसने कुछ नहीं कहा, जो एक ओर दुबका जान की खैर मना रहा था।

स्वभावतः ही ग्रामवासी बुरी तरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयभीत हो उठे। मारे डर के कोई खेतों की ओर जाने को तैयार ही नहीं होता। सारा काम-काज रुक गया।

हाथी पर सवार होकर मैं कई दिनों तक घूमता रहा; पर नेपाल का वह जंगली सूअर मुझे कहीं नहीं मिला। निश्चय ही, वह घनी घासों में कहीं छिप कर बैठा था। उस समतल और आबादीवाले प्रदेश में राइफल चलाना कम खतरनाक न था। अतः मुझे एक मामूली-सी बंदूक चलानी पड़ती थी, जिससे निकली गोली अधिक दूर तक नहीं जाती थी। अगर अपनी इस बंदूक की किसी गोली से मैं सूअर को अजाने ही घायल कर देता, तो परिस्थिति और भयंकर हो उठती और आश्चर्य नहीं, अगर शिकारी खुद शिकार बन जाता। अतः सूअर जब तक दिखायी न पड़े, कुछ भी नहीं किया जा सकता था। और, इसके लिए सिर्फ एक ही सूरत थी। घास के उस जंगल को जला देना। पर ग्रामवासियों को यह स्वीकार न था; क्योंकि घास उनके लिए हर प्रकार से उपयोगी थी।

अब प्रतीक्षा करने के सिवा कोई मार्ग न था। ईख की फसल जब तक पूरी तरह कट नहीं गयी, मैं महीने-भर खामोशी से इंतजार करता रहा। सूअर के लिए अब उस घास के जंगल के बाद एक ही स्थान छिपने के लिए शेष था— 'तीन मील दूर, फुलवार दलदल! उस दलदल में पहुँचने के पहले ही उसका शिकार करना था, अन्यथा बड़ी कठिनाई हो जाती। और, इसके लिए जरूरत थी, एक तेज घोड़े तथा नुकीले और मजबूत भाले की।

मैंने तैयारी पूरी कर ली। शिकार में साथ देने और सूअर को घास के उस जंगल से बाहर निकालने के लिए बीस गाँववासी और थे। वे अपने-अपने भैंसे पर सवार थे। अपने अब तक के अनुभवों से मैं जानता था कि, भैंसा ही एक ऐसा जानवर है, जो कभी-कभी शेर सामने आ जाने पर भी भागने की नहीं सोचता—

सूअर से कुश्ती

शिकार तो सूअर का! पिताजी और मैं बर्छे लेकर जमीन पर खड़े हो जाते थे और ललकारते थे जंगल के इस सूरमा को। ललकार सूअर को बर्दाश्त नहीं होती। वह उतरता मैदान में। फिर पैंतरेबाजी शुरू हो जाती—धर-पकड़ भी। बल में तो भला सूअर से कौन जीते—पर आप मानें या न मानें, दर्जनों बार मेरे ५० वर्ष के पिताजी ने सूअर को हाथों से उठा कर कुम्हड़े की तरह जमीन पर दे मारा है। सूअर की उनकी लड़ाई बस, देखते ही बनती थी। उनके बाद तो मैंने इस तरह के शिकार न देखे, न सुने!

—कर्नल जोरावरसिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शायद इसलिए कि, उसमें सोचने की शक्ति होती ही नहीं।

मई महीने की एक सुबह हम उस घास के जंगल के निकट पहुँच गये। मोर्चेबंदी हो गयी और हमारा अभियान शुरू हुआ।

दोपहर तक प्रयास करने के बाद कहीं सूअर के दर्शन हुए; किंतु खुले स्थान में आने के बजाय वह भाग कर एक काँटेदार झाड़ी में घुस गया। भैंसे अब तक बुरी तरह थक गये थे और थके हुए भैंसों से कोई भी काम लेना आसान नहीं होता, यह सोच कर मैं चिंतित हो उठा। हमारा सारा श्रम, हमारी सारी तैयारी व्यर्थ जा रही थी। लेकिन तभी हमारी बगल के गाँव के जमींदार सिंघेश्वर सिंह उधर आ निकले। वे काफी सजे-धजे थे और हाथी पर सवार हो, किसी बारात में शामिल होने के लिए जा रहे थे।

किसी पैराशूट के समान हवा में चक्कर काट छतरी उधर बढ़ने लगी और इसका असर भी तत्काल ही हुआ।

मैंने उनसे बात की, तो वे तुरत तैयार हो गये। हम फिर सतर्क हो गये और सूअर को खदेड़ कर बाहर निकालने के लिए फीलवान ने हाथी आगे बढ़ाया। हाथी कँटीली झाड़ी के निकट होता गया और हम साँस रोके प्रतीक्षा करते रहे। कहीं कुछ नहीं हुआ। मुझे ऐसा लगन लगा कि, सूअर शायद उस झाड़ी से भी निकल भागा है; लेकिन तभी हाथी ठिठका और पीछे की ओर चलने लगा। फीलवान को उसे सँभालने में बड़ी कठिनाई होने लगी।

"उसे वहीं रोको!"—मैं चिल्लाया—"पीछे मत जाने दो!"

"सूअर हमें दिखायी दे रहा है—" सिंघेश्वर सिंह ने बताया—"किंतु हाथी आगे बढ़ने से इन्कार करता है।"

"सूअर को बाहर निकालने के लिए कोई उपाय करो—" मैंने कहा—"न हो, तो सूअर पर कुछ फेंको।"

पास में कुछ नहीं रहने से फीलवान ने अपने हाथ का अंकुश ही सूअर की ओर फेंका; किंतु कुछ नहीं हुआ। तब सिंघेश्वर सिंह हौदे पर आगे की ओर झुक आये और अपनी खुली छतरी उन्होंने सूअर की ओर फेंक दी! किसी पैराशूट के समान हवा में चक्कर काट उधर छतरी बढ़ने लगी और इसका असर भी तत्काल ही हुआ। सूअर बाहर निकला। उसने एक चक्कर लगाया और फिर क्रुद्ध-भाव से हाथी की ओर झपटा। इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचानक के हमले से हाथी एक झटके से पीछे हटा और फिर उसने अपना अगला पाँव उठा कर सूअर के ऊपर रखना चाहा। सूअर तो वाल-वाल बचा ; किंतु संतुलन अस्त-व्यस्त हो उठने से सिंघेश्वर सिंह मय हौदे के जमीन पर आ गिरे। अपने घोड़े मैगोग को मैंने एँड़ लगायी; किंतु सिंघेश्वर सिंह की ओर ध्यान दिये बिना सूअर फुर्ती से घास में घुस गया और क्षण-भर बाद ही एक ओर से किसी के चीखने की आवाज सुनायी पड़ी। अवश्य ही, किसी के प्राणों पर बन आयी थी।

मैंने सिंघेश्वर सिंह को वैसे ही छोड़ दिया और जिधर से चीख आयी थी, उधर घोड़ा दौड़ा दिया। कुछ ही दूर पर एक भैंस अपनी पीठ के बल जमीन पर पड़ा था, उसके चारों पैर ऊपर उठे हुए थे और उसकी उस ओर एक व्यक्ति (उस भैंसे का सवार) जान बचाने के लिए एक पेड़ की ओर भागा जा रहा था। उसके पीछे ही तेजी से दौड़ता हुआ सूअर था। पेड़ के निकट पहुँच कर जैसे ही वह उसकी डाल पकड़ने के लिए उछला, सूअर भी आगे की ओर उछला। सूअर के पैने-उजले दाँत सूर्य के प्रकाश में चमक उठे और दूसरे ही क्षण एक खून की धारा अपने पीछे छोड़ता, वह आगे निकल गया।

मेरे दूसरे घोड़े पर सिंघेश्वर सिंह का ही एक आदमी सवार था। उस घोड़े पर मैंने प्राथमिक चिकित्सा के सामान रख छोड़े थे। वह घायल व्यक्ति की चिकित्सा करने के लिए वहीं रुक गया ; लेकिन वहाँ रुकना मेरे लिए सम्भव न था। वृक्षों पर नियुक्त मेरे व्यक्तियों में एक संकेत दे रहा था कि, सूअर खुले स्थान में निकल आया है और फुलवार दलदल की ओर भागा जा रहा है। अगल-बगल में कोई व्यक्ति नहीं था और मेरे पास सिर्फ एक भाला था। मेरी बंदूक उस व्यक्ति के पास थी, जो दूसरे घोड़े पर सवार था। किंतु अधिक सोचने का समय नहीं था। मैंने अपना घोड़ा दौड़ा दिया।

घास के उस जंगल से होकर निकलने में थोड़ा समय लगा और जब मैं खुली जगह में आया, तो सूअर मुझसे आधा मील आगे था। बड़ी तेजी से वह भागा जा रहा था और इतनी दूर पर भी उसका शरीर बड़ा विशाल प्रतीत हो रहा था।

गर्मी असह्य थी। इतनी गर्मी में घोड़ा दौड़ाना उचित नहीं था ; किंतु सूअर को इस तरह छोड़ा भी नहीं जा सकता था। दौड़ता-दौड़ता मैगोग पसीने से तर-ब-तर हो गया ; पर उसने भी सूअर को देख लिया था और प्राणपण से उसे पकड़ने की चेष्टा कर रहा था।

दूरी कम होती गयी। सूअर दलदल के लगभग करीब पहुँच चुका था और तब मैंने लक्ष्य किया कि, हमारे लिए दलदल को पार कर जाने की कोई सूरत नहीं थी। अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए मैंने मैगोग की चाल धीमी करने का प्रयास किया और तभी एक आश्चर्यजनक घटना घटी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंगोग की चाल जैसे ही धीमी हुई, सूअर रुक गया। फिर वह मुड़ा और तेजी से हमारी ओर दौड़ा। किसी अनुभवी और शिक्षित घोड़े के समान ही मैंगोग इस चुनौती का उत्तर देने के लिए आगे बढ़ा। इस तरह की मुठभेड़ बहुत खतरनाक होती है; क्योंकि इसमें कुछ भी सोच कर करने का अवसर नहीं मिलता। मैं मन-ही-मन मना रहा था कि, सूअर लौट जाये; किंतु वह दौड़ा आ रहा था। खून में रँगे उसके नुकीले दाँत उसे और भी भयावह बना रहे थे। निकट आने पर मैंगोग सधे घोड़े के समान उछला और मैंने अपने भाले से सूअर पर प्रहार किया। भाले की नोक सूअर के अगले हिस्से की कड़ी हड्डी पर लगी और मेरा हाथ झनझना उठा। मैंगोग तब तक आगे बढ़ चुका था।

धूल का गुब्बार खत्म हो जाने पर मैंने देखा, सूअर उसी स्थान पर खड़ा था– अविचलित और अप्रत्याशित रूप से क्रुद्ध! मैंने फिर एक बार उस पर आक्रमण किया और उसे दलदल से इस ओर ले आने में सफल भी हो गया; किंतु तभी मेरी नजर मैंगोग पर गयी। वह बुरी तरह लँगड़ा रहा था। उससे अब कोई आशा नहीं की जा सकती थी।

मैंने हताश भाव से सिर उठाया। मेरे दूसरे घोड़े अंजाक पर सवार व्यक्ति इधर ही आ रहा था। सूअर ने भी उसे देख लिया और जैसे ही मैं उस व्यक्ति से मिलने के लिए आगे बढ़ा, सूअर पुनः दलदल की ओर भागा।

अंजाक को शिकार का अनुभव नहीं था। अतः उस पर सवार हो, जंगली सूअर का– वह भी, जब सूअर घायल हो चुका था– पीछा करना सुरक्षित नहीं था; किंतु इसका निर्णय करना मेरे वश की बात नहीं रही। पीछे से सैकड़ों गाँववाले शोर मचाते चले आ रहे थे। आगे-आगे सिंघेश्वर सिंह हाथी पर सवार थे। उन लोगों ने अनुमान लगा लिया था कि, सूअर मारा गया। अब अंजाक पर सवार हो, सूअर का

जैसे ही वह उसकी डाल पकड़ने के लिए उछला, सूअर भी आगे की ओर उछला। (पृष्ठ ७२)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीछा करने के सिवा कोई मार्ग न था।

अंजाक विद्युत्-सी तेजी से दौड़ पड़ा। आभास मिलते ही सूअर रुका और मुड़ कर फिर हमारी ओर दौड़ा। निकट आते ही मैंने भाला उसकी ओर फेंका; किंतु जैसी कि आशंका थी, पहले से अनुभव नहीं होने से अंजाक उछला नहीं। भाला जमीन में जा धँसा, अंजाक भी संतुलन सँभाल न पाने के कारण कलवाजियाँ खाने लगा और मैं हवा में उड़ता घास पर जा गिरा। किंतु जमीन पर गिरते ही पलक झपकाये बिना मैं खड़ा हो गया। सूअर मेरे पास ही था। वह झपटा; पर तब तक मैंने जमीन में गहराई से धँसे भाले का इस ओर का हिस्सा पकड़ लिया था। मजबूत बाँस किसी लचीली कमान की तरह झुक गया। उधर सूअर जमीन में धँसे हिस्से पर अपना पूरा वजन देकर बैठ गया। बाँस चरमराया। मैं जानता था, भाला के टूटते ही सूअर का पलड़ा भारी पड़ जायेगा; किंतु उस वक्त और कुछ नहीं किया जा सकता था। मैं अपने प्राणपण से चेष्टा कर रहा था कि, सामने से सिंघेश्वर सिंह की आवाज सुनायी पड़ी। हाथी पर हौदा नहीं था; किंतु सिंघेश्वर सिंह एक और व्यक्ति के साथ उस पर बैठे थे। महावत हाथी को इधर ही ला रहा था। थोड़ी देर पहले के आक्रमण को हाथी भी शायद भूला न था। वह भरसक तेजी से बढ़ा आ रहा था और जब तक सूअर को अपने पीछे से आनेवाले इस खतरे का आभास हो, हाथी का पाँव उठा और सूअर पर पूरा भार डालते हुए उसने अपने घुटने मोड़ दिये।

मैंने भाला छोड़ दिया और सूअर के कुचले शरीर की ओर से आँखें फेर, उस ओर देखने लगा, जिधर से गाँववाले हल्ला मचाते चले आ रहे थे।

दो विज्ञापन

कल्याण स्टेशन के 'वेटिंग-रूम' में एक महाशय का 'पर्स' खो गया। 'पर्स' में कम-से-कम सौ रुपये थे। 'पर्स' किसने चुराया, यह बतलाना बहुत कठिन था। इसलिए उन्होंने चोर को पकड़ने का एक नया उपाय सोचा। दूसरे दिन 'लोकमान्य' में उन्होंने विज्ञापन दिया—

"कल दोपहर को कल्याण के 'वेटिंग-रूम' में से हमारा 'पर्स' जिसने चुराया है, उसे हम अच्छी तरह पहचानते हैं। अतः अच्छा हो, पुलिस में 'रिपोर्ट' होने से पहले वह व्यक्ति हमारा 'पर्स' हमें लौटा दे।"

दूसरे दिन के दैनिक 'प्रभात' में एक दूसरा विज्ञापन प्रकाशित हुआ—

"कल्याण के 'वेटिंग-रूम' से 'पर्स' मैंने ही चुराया था, यह बात सच है। अब चूँकि 'पर्स' के मालिक ने मुझे पहचान ही लिया है, अतः उनसे मेरा निवेदन है कि, वे मुझसे मिलकर अपना 'पर्स' ले जायें।"

—आचार्य अत्रे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़वे-मीठे जीवन-घूँट

★

अंतिम पंक्ति

लंदन आये मुझे अधिक दिन नहीं हुए; किंतु इन थोड़े दिनों में ही मैं यहाँ से बहुत-कुछ परिचित हो गया हूँ। उस रात एक मित्र के यहाँ दावत थी। जब मैं ग्यारह बजे लौट रहा था, तब एक व्यक्ति पर नजर पड़ी, जो बड़े ऊँचे स्वर में गाता हुआ, मुझसे कुछ आगे-आगे चल रहा था। इस तरह सड़कों पर चिल्ला कर गाना सभ्यता के विरुद्ध होने के साथ-साथ, मेरे इन चार-छः महीनों के जीवन के लिए एक नयी घटना थी। मन-ही-मन आश्चर्य-सागर में गोते लगा रहा था कि, तभी मेरी बगल से एक पुलिस-कांस्टेबुल आगे बढ़ा। वह उसी युवक की ओर जा रहा था। स्वभावतः ही मेरी उत्सुकता तीव्र हो उठी और मैंने अपनी चाल तेज कर दी। पुलिस-कांस्टेबुल एक-दो मिनट तक चुपचाप उसका गाना सुनता रहा; फिर बोला—"क्षमा कीजियेगा, महाशय! लेकिन अगर मैं गलती नहीं कर रहा हूँ, तो आपने जो अभी गाया, वह इस गीत की अंतिम पंक्ति थी—है न?"

युवक संकेत समझ गया और गाना बंद कर मौन चलने लगा।

—एस० के० वेदक, लंदन

★

स्नेहदान

उस दिन जब मैं गिरजाघर पहुँचा, तो बाहर कुछ बच्चे बड़ी अच्छी पोशाक पहने खड़े थे। आसपास के अन्य व्यक्तियों को देख कर यह समझते देर नहीं लगी कि, आज किसी का विवाह है। तभी सीढ़ियाँ उतरते दम्पति पर भी नजर पड़ी। उन्हें देखते ही, बच्चे एक कतार से खड़े हो गये। निकट ही, सड़कों की धूल में लोट-पोट कर बड़े होनेवाले, मैले-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुचैले वस्त्र पहने कुछ दूसरे बच्चे भी खड़े थे। स्वाभाविक कौतूहलवश वे भी खड़े हो गये। जैसी कि प्रथा है, वधू ने एक-एक बच्चे का बड़े स्नेह से चुम्बन लेना आरम्भ किया। जब वह उन गंदे बच्चों के निकट पहुँची, तो घृणा एवं क्रोध में वर की भौंहें सिकुड़ गयीं। किंतु वधू पूर्ववत् प्रेम-भाव से माँ के 'स्नेहदान' की रस्म अदा करती जा रही थी। एक छोटे-से बच्चे ने मचल कर उसकी गर्दन में बाँहें डाल दीं, तो वह रुकी, मुस्करायी और उसे गोद में उठा लिया। वर महोदय की हालत दर्शनीय थी! वधू ने इसे भाँप लिया और उस बच्चे को गोद से उतार, दूसरे बच्चे को चूमती हुई, बड़े शांत-स्थिर स्वर में बोली—"जॉन, मैंने तो बाइबिल की आज्ञा का शब्दशः पालन किया है—तुम खफा क्यों हो गये?"

—के० एल० डिसोजा, नागपुर

सौभाग्य

मैं बचपन से ही अंधा हूँ; किंतु काफी वर्षों से आदी होने के कारण मुझे यहाँ-वहाँ आने-जाने में कोई विशेष असुविधा नहीं होती। जब राह भूल जाता हूँ, तब अवश्य ही, सही रास्ते को फिर से पकड़ने में थोड़ी कठिनाई होती है।

उस शाम को भी कुछ ऐसा ही हुआ। सौभाग्य से मैं रास्ता भूल गया। मैं इसे सौभाग्य ही कहूँगा। पूरी घटना सुन कर आप भी इसे सौभाग्य ही मानेंगे। अगल-बगल सर्वत्र सन्नाटा छाया था। शायद मैं शहर से दूर किसी मार्ग पर निकल गया था। अतः मन-ही-मन चिंतित मैं खड़ा सोच रहा था, क्या करूँ कि, किसी ने पूछा—"आप कहीं राह तो नहीं भूल गये हैं?"

सड़क की चढ़ाई, ठंडी-ठंडी हवा और नजदीक ही किसी नदी के बहने का स्वर—स्पष्ट था कि, मैं किसी पुल के करीब हूँ। पूछनेवाले की आवाज भी उसके नारी होने का परिचय दे रही थी। वह फिर बोली—"आप मुझे अपने घर का पता बताइये, मैं आपको वहाँ छोड़ आऊँगी।"

मैंने पता बता दिया। घर तक पहुँचा कर जब वह जाने लगी, तो मैंने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। किंतु उसने सस्नेह दोनों हाथों से मेरा हाथ थामते हुए कहा—"नहीं, भाई! कृतज्ञ तो मैं हूँ आपकी। आज से हफ्ता-भर पूर्व मेरे पति घर छोड़ कर कहीं चले गये। उस पुल पर मैं आज अपनी इस अतल निराशा से मुक्त होने के लिए ही गयी थी; किंतु अब नहीं"—उसके स्वर में दृढ़ता आ गयी—"आपने मुझे नयी प्रेरणा दी! मुझे विश्वास है, उन्हें भी अपने मार्ग भूलने का ज्ञान होगा। हाँ, जो आँखें रहते रास्ता भूल जाये, उसे रास्ता पाने में देर जरूर लग सकती है। तब तक मैं प्रतीक्षा क्यों छोड़ दूँ!"

—बी० डी० व्यास, आगरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमताज मुफ्ती की एक उर्दू-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

मीना विस्तर पर लेटी हुई थी। वगल के कमरे में मन्नान अपना सामान वाँध रहा था। आज वह आदत के खिलाफ खामोश था– सारा घर ही खामोश था।

अमान सुवह-सवेरे जा चुका था। जव रात को मन्नान ने अपने जाने की खवर दी थी, तो अमान को भी अचानक याद आ गया था कि, उसे भी सुवह-सवेरे एक जरूरी काम से जाना है। मीना जानती थी, यह जरूरी काम क्या था।

"हूँ, तो वह जा रहा है!"–मीना ने सोचा–"हमेशा के लिए जा रहा है। शर्मिंदा है, इसलिए मेरे सामने कैसे आये? वेवकूफ ने हिमाकत करके सव विगाड़ दिया! अव चला जायेगा, तो यहाँ फिर धूल उड़ेगी।"

मन्नान के आने से उनका घर सचमुच घर बन गया था। वह सारा दिन कहकहे लगाता रहता– भाभी के गले का तो हार ही वन गया था। मन्नान के आने से खुद अमान ने भी शाम को घर पर रहना शुरू कर दिया था और उसका वर्ताव विल्कुल वदल गया था, जैसे मीना, सीमा वन गयी हो और घर, इशरत कालोनी वन गया हो!

"सीमा!"–मीना के होंठों पर घिनावनी-सी मुस्कराहट फैल गयी। उसकी समझ में नहीं आता था कि, उसे अमान की तवज्जह अपनाने के लिए किसी मन्नान या परवेज की क्यों जरूरत पड़ती थी? क्या किसी और मर्द की तवज्जह का सहारा लिये वगैर वह अपने शौहर को अपनी तरफ माइल नहीं कर सकती?

"नहीं, नहीं"–मीना ने अपने-आपसे कहा–"अगर मन्नान चला गया, तो..... नहीं, नहीं।" वह विस्तर से एक-व-एक उठ कर वैठ गयी।

उसे अपने शौहर अमान से वड़ी मुहव्वत थी और वह उसकी तवज्जह को अपनाने के लिए वड़ी-से-वड़ी कोशिश करने को तैयार थी। यही वजह थी कि, उसने मन्नान को शह देकर गले का हार वना रखा था। लेकिन हर वात की हद होती है और अव वह हद टूट गयी थी। अगर वह इस हद का टूटना वर्दाश्त कर लेती, तो शायद आज भी वे दोनों घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हँसते-खेलते नजर आते और अमान को वह जरूरी काम न याद आता।

मन्नान का जाना तो अब भी रोका जा सकता था। सिर्फ एक आवाज "मुन्नू," सिर्फ एक मुस्कराहट, एक नजर उसे रोकने के लिए काफी होती। लेकिन.... यह 'लेकिन' उसके सीने में फाँस की तरह अटक जाता था। इस एक 'लेकिन' के साथ उसके होंठों पर पिछली रात का लमस फिर से ताजा हो जाता।

मीना को सोचने की आदत न थी। लेकिन अमान ने ही उसे सोचने पर मजबूर कर दिया था। शादी के बाद पहली बार जब अमान ने उससे कहा था—"किसी रोज चलो, तो मैं तुम्हें सीमा से मिलाऊँ—बड़ी अच्छी लड़की है वह!" तो मीना के दिल पर साँप लोट गया था।

और, उस रोज इशरत कालोनी जाने से पहले वह बहुत रोयी थी—रो-रोकर आँखें लाल कर ली थीं। लेकिन फिर उसने सोचा था कि, सीमा उसकी रोयी-रोयी आँखें देखेगी, तो उसके होंठों पर एक जीत-भरी मुस्कराहट छा जायेगी। उसने फौरन उठ कर आँखों पर ठंडे पानी के छींटे दिये थे, काजल लगाया था, भौंह की धार बनायी थी, पलकों को सँवारा था और सिंगार करके अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने थे। फिर अमान का इंतजार इस तरह करने लगी थी, जैसे उसकी जिंदगी में कोई सीमा आयी ही न हो। शाम को अमान घर आया था, तो मीना को इस शान से बैठी देख कर चौंक-सा गया था।

कुछ देर बाद, इशरत कालोनी जाने के रास्ते में अमान ने चलते-चलते मीना की तरफ देखा था, जो बड़ी बेपरवाही के साथ चल रही थी। एडवर्ड रोड पर मटरगश्ती करनेवाले सभी लोगों की नजरें मीना की तरफ उठी हुई थीं। जब अमान ने इस बात को महसूस किया था, तो उसने ताज्जुब से मीना की तरफ देखा था, बिल्कुल वैसे ही, जैसे दूसरे लोग उसे देख रहे थे। और, उस वक्त वह भूल गया था कि, वह मीना को सीमा के सामने पेश करने जा रहा था; बल्कि ऐसा लगता था, जैसे वह सीमा को मीना के सामने पेश करने जा रहा था!

फिर इशरत कालोनी में मीना सीमा के सामने यूँ बैठी थी, जैसे सीमा के शौहर की तवज्जह को किसी काबिल न समझती हो। उधर, सीमा का शौहर, जो हर 'मीना' को देख कर आपे में न रहता था, बात-बात पर मीना से बात करने का बहाना ढूँढ़ रहा था। अमान भी मीना की तरफ से बेखबर नहीं था। बातें सीमा की सुन रहा था और ध्यान मीना की तरफ था। बार-बार उसकी तवज्जह सीमा की तरफ से मीना की तरफ यूँ पलट जाती थी, जैसे सीमा ही उसकी बीवी हो और मीना कोई नयी-नवेली लड़की।

उसी दिन मीना को पता चला कि, रोना-धोना काम आनेवाला नहीं है। उसे अमान को जीतने के लिए कुछ-न-कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करना ही पड़ेगा।

कितने अच्छे दिन थे, जब वह कनवेंट स्कूल में पढ़ती थी। सुबह को जब वह बस से उतर कर स्कूल के मदान में टहलती, तो ऐसा लगता था, जैसे वह एक बाग हो और जब कोई मैडम उस तरफ आ निकलती, तो सब लड़कियाँ उस तरफ मुड़ कर देखने लगतीं।

हर लड़की किसी-न-किसी मैडम की दीवानी थी। मीना को भी मिस नोरा बड़ी प्यारी लगती थी। वह हर वक्त यह कोशिश करती कि, नोरा की तरह ही बोले, नोरा की तरह ही चले। बात करते वक्त भी वह लफ्जों को होंठों में घुमाती, जिससे आवाज में गोलाई पैदा हो जाये।

फिर वे दिन भी आये, जब मीना जूनियर में थी। उस वक्त वह पंद्रह साल की थी और 'सीनियर स्टूडेंट्स' में गिनी जाती थी। कनवेंट की तमाम मैडम 'सीनियर स्टूडेंट्स' से दोस्ताना बर्ताव रखती थीं।

मिस नोरा मीना को पहली बार अपने घर ले गयी, तो वह बड़ी खुश हुई। उसने मिस नोरा की मेज पर, उसके साथ बैठ कर, उसी के हाथों की बनी चाय पी!

इसके बाद तो आना-जाना बाकायदा होने लगा। बैडमिंटन, ताश और लूडो की बाजियाँ लगती रहतीं। एक दिन वे दोनों लूडो ही खेल रही थीं, जब बाहर किसी ने दरवाजा खटखटाया। मिस नोरा ने बेखबरी में 'कम-इन' कह दिया और मीना के उठ कर अंदर जाने से पहले ही अमान अंदर आ गया। यह अमान से उसकी पहली मुलाकात थी।

शुरू में तो मिस नोरा ने अमान से बड़े खुश्क लहजे में बातें कीं, जो किसी लड़की की पढ़ाई, वगैरह के बारे में थीं; लेकिन पंद्रह मिनट के बाद ही मीना ने देखा कि, मिस नोरा अमान से बड़ी घुलमिल कर बातें कर रही थी।

मुमताज मुफ्ती
[चित्र : पाकिस्तानी चित्रकार असगर बेग]

एक रोज मीना नोरा के घर गयी, तो उसने कहा— "मीना, तुम जरा बैठो, मैं मिसेज जार्ज को देख आऊँ। अभी आयी, चली न जाना।" और, नोरा के जाने के कुछ ही देर बाद वहाँ अमान आ पहुँचा।

"तुम मीना"—उसने बेतकल्लुफी से कहा— "और वह तुम्हारी मैडम ?" और, फिर वह उससे अनापशनाप बहुत सारी बातें करने लगा।

मीना को उसके बर्ताव पर पहले तो गुस्सा आया; लेकिन फिर धीरे-धीरे उसकी बेतकल्लुफी की वजह से गुस्सा काफूर होता गया।

कुछ देर बाद अमान ने पूछा— "तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैडमिंटन खेलना जानती हो ?"

"बैडमिंटन! स्कूल की चैम्पियन हूँ!" —मीना ने गर्व से जवाब दिया था।

"तो, आओ मिस चैम्पियन, हो जाये दो हाथ। मगर शर्त होगी— अगर तुम जीत गयीं, तो हर सजा मंजूर है और अगर मैं जीत गया..." वह रुक कर सोचने लगा और फिर बोला—"अगर मैं जीत गया, तो तुम्हारी नाक काट खाऊँगा, दाँतों से काट लूँगा और फिर तुम नककटी रह जाओगी।"

"मैं क्यों नककटी रह जाऊँगी?"— मीना ने धीरे से कहा और फिर खेल शुरू हो गया।

लेकिन मीना हार गयी और अमान उसे पकड़ कर शोर मचाने लगा—"तुम्हारी नाक, तुम्हारी नाक!"

इससे मीना बेतरह घबड़ा गयी, उसकी साँस रुक-सी गयी और दिल धड़कने लगा। फिर एक हवा-सी चली और चारों तरफ अँधेरा-सा छा गया।

मीना को होश आया, तो खुद को उसने मैडम के बिस्तरे पर पाया। मिस नोरा उस पर झुकी हुई थी और अमान गुनहगार की तरह पास खड़ा हुआ था।

इस घटना के लगभग आठ दिन बाद एक रोज जब वह 'डैडी' से मिलने उनके कमरे में गयी, तो सामने ही अमान को बैठे देखा। वह घबड़ा कर वापस जाने ही वाली थी कि, उसके डैडी ने आवाज दी— "ठहरो मीना, हम तुम्हारी ही बातें कर रहे थे। अमान मुझसे कह रहा था कि, एक स्वेटर बुनवा दो। अब अगर तुम स्वेटर बुन दो, तो...।"

इसके बाद अमान रोजाना घर आने लगा और वह आते ही शोर मचा देता— "मीना, मीना कहाँ है? अब तो मेरा स्वेटर पूरा हो गया होगा। ....अरे, अभी इतना ही हुआ है! इसी हिसाब से बुना, तो अगले साल तैयार होगा!"

अमान की बातें सुन कर उसके अब्बा हँसने लगते और मीना शर्मा जाती।

रोज आकर अमान अपना स्वेटर देखता, पैमाना लेकर नापता और मीना का मुँह चिढ़ाता। दोनों अकेले होते, तो वह बुने हुए स्वेटर को उधेड़ने लगता और फिर धीरे से कहता—"धीरे-धीरे री, मीना, धीरे-धीरे।"

वे चार महीने मीना की जिंदगी के सबसे ज्यादा रंगीन महीने थे; लेकिन जल्द ही वे बीत भी गये। अमान की बेकरारी कम होने लगी। फिर आने में नागा होने लगा और धीरे-धीरे आना ही बंद हो गया। फिर कुछ दिन बाद, जब मीना ने अमान के नाम के साथ गजाला का नाम सुना, तो उसकी आँखों में आँसू आ गये। अमान की बेवफाई से उसे बड़ा सदमा हुआ; लेकिन वह उसके खयाल को दिल से न निकाल सकी।

फिर वे दिन आये कि, मीना की खाला का लड़का परवेज उसके यहाँ आकर ठहरा, जिसे तसवीरें बनाने का शौक पागलपन की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

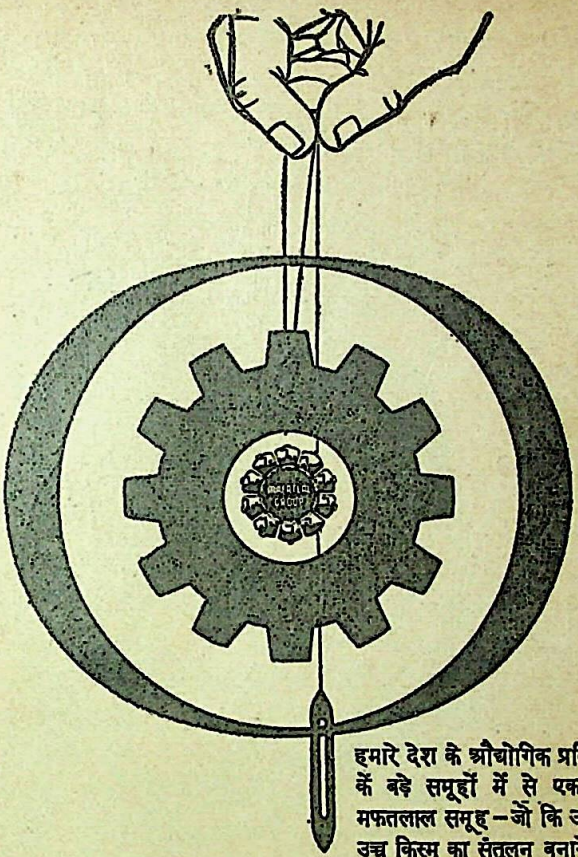

हमारे देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों
कें बड़े समूहों में से एक है
मफतलाल समूह—जो कि उत्पादन में
उच्च किस्म का संतुलन बनाये हुए है।
इस समूह से संबधित अनेक कपड़े की
मिलें जो कपड़ा बनाती हैं वह डिझाइन बनावट व रूपरंग में बेजोड़
होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह समूह प्रत्यक्ष रूप में हजारों
और अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों की रोजी का साधन है।
कई लाख लोग इस समूह से लाभान्वित हैं।

मफतलाल मिलों का समूह प्रगति के साथ चलनेवाला
शॉरॉक, अहमदाबाद। न्यू शॉरॉक, नड़ियाड़। स्टेण्डर्ड, बम्बई। न्यू चाइना,
बम्बई। ससून, बम्बई। न्यू यूनियन, बम्बई। सूरत कॉटन, सूरत व
देवास। मफतलाल फाइन, नवसारी। गगलभाई जूट, कलकत्ता।

दूसरे उद्योग: रुई - शक्कर - रंग मफतलाल हाउस, बैकबे रिक्लेमेशन, बंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा

लाइफ़बॉय

से नहाते हैं।

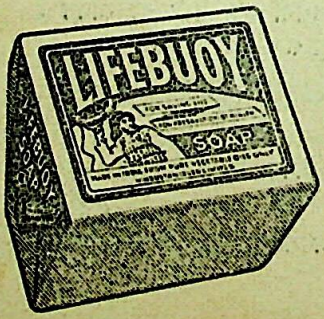

घर की रौनक़ इसी में है कि बच्चे क्या और बड़े क्या—सभी हंसते खेलते रहें। हंसना खेलना तभी संभव है जब हम तंदुरुस्त रहें। लेकिन तंदुरुस्ती को गंदगी से खतरा है। गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के इन कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है। हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये—यह आप के शरीर को ताज़गी देता है।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, का बनाया हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हद तक था। जब भी वक्त मिलता, मीना उसके पास बैठ कर उसे काम करते हुए देखा करती और वह उसे समझाया करता—"मीना, यह रंग देखो—जैसे शाम के वक्त बादलों में आग लग गयी हो। वाह, यहाँ आकर देखो, तसवीर को पास से नहीं देखा करते—दूर, मेरे पास आकर देखो।"

यह देख, अमान ने फिर आना-जाना शुरू कर दिया। अमान के वहाँ आने और मीना से मुहब्बत जताने का यह दूसरा दौर था, जो परवेज के वापस जाने पर फिर खत्म हो गया। पहले मीना कुछ न समझ सकी थी कि, अमान की बेरुखी और फिर तवज्जह की वजह क्या थी? लेकिन अब वह समझ गयी कि, अमान के दुबारा आने-जाने की वजह यह थी कि, उसकी तवज्जह परवेज की तरफ से हट जाये।

फिर एकाएक उसने सुना कि, उसकी शादी अमान से तय पा गयी और जल्दी ही दोनों की शादी भी हो गयी।

शादी के बाद कुछ दिन तक तो अमान उसके गले का हार बना रहा, सारा-सारा दिन उसके साथ खेलता, उसे छेड़ता, मुँह चिढ़ाता और दाँतों से नाक काट लेने की धमकी देता। लेकिन कुछ दिन बाद उसका बर्ताव बदल गया। वह ज्यादा वक्त घर से बाहर रहने लगा और मीना को पता चला कि, वह अपना ज्यादा वक्त सीमा के साथ गुजारता था, जो इशरत कालोनी में अपने शौहर के साथ रहती थी।

अचानक मायूसी के इस अँधेरे में रोशनी की एक किरण पैदा हुई। अमान का छोटा भाई, मन्नान वहाँ आ गया। मन्नान के आते ही उनके घर में रौनक की एक लहर दौड़ गयी। वह हर बात पर "भाभी, भाभी" चिल्लाता हुआ मीना की तरफ लपकता।

मन्नान को मीना के गले का हार बना देख कर अमान ने अपनी शाम घर पर ही गुजारनी शुरू कर दी और मीना को ऐसा लगने लगा, जैसे वह सीमा हो गयी हो और घर इशरत कालोनी बन गया हो।

मन्नान को आये एक महीना हो गया था। कितना जल्दी गुजर गया था वह एक महीना! मीना को उम्मीद थी कि, मन्नान यहीं कालेज में दाखिल हो जायेगा और उन्हीं के साथ रहेगा। वह दुआएँ माँगा करती थी कि, मन्नान का कालेज में दाखला हो जाये; इसीलिए उसने मन्नान से मेल-जोल बढ़ाया था। उसको उम्मीद थी कि, इस बहाने वह अमान को अपनी तरफ खींच सकेगी। लेकिन ...लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि, ऐसा हो जायेगा! उन्होंने लूडो की बाजी लगायी थी और मीना ने कहा था—"अगर मैं हार गयी, तो तुम्हें रोस्ट-मुर्गा खिलाऊँगी और अगर तुम हार गये, मुन्नू, तो"—वह सोचने लगी थी और अमान की शर्त याद आ जाने पर बोल उठी थी—"और, अगर तुम हार गये, तो मैं तुम्हारी नाक काट लूँगी, दाँतों से।"

मन्नान हार गया था और मीना ने उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों हाथ पकड़ कर, मुँह खोल कर उसकी नाक की तरफ बढ़ाया था। लेकिन मन्नान ने बेहोश होने के बजाय अपने दोनों होंठ उसके मुँह पर रख दिये थे!

मीना सटपटा कर भागी थी और तब से अब तक उसने मन्नान को बुलाया न था, न ही वह खुद उसके सामने आया था।

"बेवकूफ! बना-बनाया काम बिगाड़ कर रख दिया!"—मीना ने दिल में कहा—"पर वह चला गया, तो?" उसकी आँखों के नीचे अँधेरा छाने लगा।—"उसे चाहिए था कि, आकर माफी माँग लेता; लेकिन वह भी तो अमान का ही भाई है! तो क्या मैं ही उसे बुला लूँ? लेकिन—" और फिर यह 'लेकिन' उसके सामने पहाड़ बन कर खड़ा हो जाता।

"नहीं, नहीं, मैं उसे नहीं जाने दूँगी।" वह इरादा कर उठी—"हद टूट चुकी है, तो क्या हुआ? क्या खुद अमान ने ही पहले हद नहीं तोड़ी? और, फिर जब मैं हद तोड़े बिना अमान को अपना नहीं बना सकती, तो और क्या करूँ?"

वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गयी और चिल्लायी—"मन्नान, मुन्नू!" लेकिन उसकी आवाज ही हलक से बाहर न निकल सकी। फिर उसने सोचा कि, लिख कर ही क्यों न भेज दे—"मुन्नू, तुम नहीं जा सकते।" और, वह कागज का टुकड़ा ढूँढ़ने लगी।

अमान के तकिये के नीचे एक कागज का टुकड़ा पड़ा नजर आया। उठाया, तो उस पर दो सुर्ख होंठों के निशान थे। "ऐं!" उसने हैरानी से कागज की तरफ देखा और फिर वह समझ गयी कि, यह सीमा की तरफ से अमान को बुलावा था। गुस्से से उसकी नाक तक सुर्ख हो गयी—"कमीनी औरत!" उसने दाँत मींच कर कहा—"यहाँ तो रोज हदें टूटती हैं और मैं एक हद टूटने पर घबड़ा रही हूँ!" और, फिर उसने सोचा—"क्यों न यही कागज का टुकड़ा मन्नान को भेज दूँ? आखिर हर्ज ही क्या है?"

पासवाले कमरे में मन्नान नौकर से कह रहा था—"जाओ, ताँगा ले आओ, हम जा रहे हैं।" "ठहरो!"—वह चिल्लायी; लेकिन न-जाने उसकी आवाज को क्या हो गया था। उसने नौकर को आवाज देने की कोशिश की—"रहमत, रहमत!"

"आपने बुलाया है, बेगम साहिबा?"—रहमत की आवाज सुन कर वह जाग-सी गयी। "हूँ"—उसने गौर से नौकर की तरफ देखते हुए कहा और एक नजर हाथ के कागज के टुकड़े पर डाली। फिर बोल पड़ी—"नहीं, नहीं!" और नफरत से कागज के पुर्जे-पुर्जे कर दिये।

"मैं सीमा नहीं बनूँगी!"—मीना ने एक इरादे के साथ जैसे खुद से कहा—"अगर अमान की मुहब्बत किसी परवेज या मन्नान को बीच में लाये बिना हासिल नहीं हो सकती, तो न सही। यह हद नहीं टूट सकती—कभी नहीं टूट सकती!" साथ ही, उसके गले से एक हिचकी निकल गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मामा वरेरकर की एक मराठी-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

बात पच्चीस साल पुरानी है। तब मैं रेडियो पर बच्चों के 'प्रोग्राम' प्रसारित करता था। 'प्रोग्राम' सुननेवाले बच्चे अक्सर पत्र लिखा करते थे। इन पत्रों में बच्चों के जिज्ञासा-भरे प्रश्न होते थे, जिनके उत्तर मैं अगले सप्ताह दे दिया करता था।

मगर उस दिन जो पत्र आया, वह एकदम अजीब था। पत्र एक लड़की ने लिखा था और उस पर एक अनाथ-आश्रम का पता था। लिखा था—"मैं यहाँ रहती हूँ। मेरे माँ-बाप नहीं हैं। सगा-सम्बंधी कोई भी नहीं है। कहते हैं कि, आप सबके मामा हैं। क्या आप मेरे भी मामा बन सकते हैं? —आपकी भानजी।" 'पुनश्च' में लिखा था—"आप आकर कृपया मुझसे मिलिये। क्या मैं अपने मामा के दर्शन की आशा रखूँ?"

दूसरे ही दिन, मैं उक्त अनाथ-आश्रम पहुँच गया। 'मेट्रन' उस लड़की को बुला लायी और जब उसने मेरे परिचय में कहा "ये तुम्हारे मामा हैं।" तो वह हठात् रो पड़ी। और, जब मैं उसकी आँखें पोछने लगा, तो वह और भी अधिक चीख पड़ी। यही कोई दस-बारह साल की लड़की होगी, सितारे-सी सुंदर। वह पाँच-छः वर्ष की थी, तभी कोई उसे आश्रम में छोड़ गया था। उसके बाद कभी किसी ने खोज-खबर नहीं ली थी।

काफी देर तक बातें करके मैं उसे हँसा पाया था और जब वह हँसी, तो उसके हीरे-से दाँतों से जैसे मोहिनी ही बरस पड़ी। हाँ, उसके चेहरे में अगर कोई दोष था, तो वह यह कि, उसके बायें गाल पर एक चवन्नी-जैसा काला दाग था। नजर लगने के डर से शायद स्वयं ब्रह्मा ने वह 'दिठौना' लगा दिया था।

यह ममत्व दिन-प्रति-दिन गाढ़ा होता गया। मेरी यह भानजी मेरे मन में प्रेम का पूरा अधिकार प्राप्त करने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक-दो सप्ताह में मैं उससे मिलने जाया करता। उसके लिए कभी कोई किताब ले जाता, कभी मिठाई। मुझे देखते ही—"मामा आ गये! मामा आ गये!" कह कर वह खुशी से नाचने लगती थी। 'मेट्रन' से मुझे मालूम हुआ कि, दूसरे बच्चों से अलग बैठनेवाली वह उदासीन लड़की अब काफी हँसने-खेलने लगी थी।

एक साल बीत गया। इस अर्से में हमारे मिलने की मियाद भी बढ़ती ही गयी। एक बार तो दो महीने के बाद मैं उससे मिलने गया। समय ही नहीं निकाल सका। वहाँ पहुँचने पर 'मेट्रन' ने बताया कि, एक मालदार आदमी वहाँ आये थे— उन्हें बेटी चाहिए थी। वे उसे अपनी बेटी बना कर साथ ले गये। जाते वक्त लड़की ने मामा से मिलने की इच्छा प्रकट की; किंतु मामा कहाँ रहते हैं, यह वह नहीं बता पायी। आखिर उसने 'मेट्रन' से कहा था कि, यदि मामा आयें, तो उन्हें 'मेरे घर' आने के लिए जरूर कह देना।

'मेरे घर' शब्द सुन कर मेरे मानस को बड़ी तृप्ति मिली। 'मेरा घर' कहने की प्यास शायद वह जन्म से ही बुझाने को मजबूर हो गयी थी!

'मेट्रन' से उसके घर का पता लेकर मैं उससे मिलने के लिए चल पड़ा। पर उसके 'पिता' जगह बदल कर कहीं अन्यत्र चले गये थे। पड़ोसियों से इतना ही ज्ञात हो पाया कि, वे या तो नागपुर गये हैं या कलकत्ता। पर पता कोई नहीं जानता था। इस प्रकार कहानी यों खत्म होने को आयी कि, जैसे अचानक वह मेरे जीवन में आयी, वैसे अचानक चली भी गयी।

आठ-दस वर्ष यों ही गुजरे। मुझे अक्सर उसकी याद आती रहती। मेरे मन में प्रायः आता कि, बड़ी होकर वह अवश्य ही मेरा पता लगायेगी। मगर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, मेरी आशा उजड़ती गयी। मुझे लगा, जैसे वह सुखी जीवन में हमेशा के लिए मुझे भूल चुकी है!

पर कुछ दिन बाद, नागपुर के एक विद्यालय में मैं व्याख्यान देने गया और 'वंदे मातरम्' समाप्त होने पर जैसे ही मंच से नीचे उतरा, एक लड़की ने आकर मेरे पैरों पर अपना सिर रख दिया। उसके आँसुओं से मेरे पैर भीग गये। "मनू ही हो न तुम?"—मैंने उससे पूछा और उसने स्वीकारार्थ गर्दन हिला दी। मेरी ओर जी-भर कर देखते हुए, वह बार-बार अपनी आँखें पोंछ रही थी।

हमारे बाहर आते ही एक बढ़िया कार सामने आयी। मनू ने मुझे भीतर बैठाया और स्वयं भी मेरे पास बैठ गयी।

मैं उसके घर गया— उसके नये 'माँ-बाप' से मिला। दोनों बड़े सहृदय थे। मैंने मनू से पूछा—"मनू, अब तो तुम बड़ी होकर कालेज में पढ़ने लगी हो! फिर भी तुमसे दो लाइनें नहीं लिखी गयीं? मैं नाम-विहीन तो था नहीं।"

सुन कर उसकी आँखें भर आयीं। उत्तर उसके पिताजी ने दिया। वे कहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे—"कृपया क्षमा करें। अपराध मेरा है। यह तो हमेशा मुझसे कहा करती थी कि, न हो तो रेडियो के पते पर ही पत्र लिखो ; पर मैंने उसे नहीं लिखने दिया। हमारी यह इच्छा रही है कि, उसकी पहली कहानी किसी पर प्रकट न हो। मैं फिर आपसे क्षमा माँगता हूँ!"

उस दिन मैं उन्हीं के यहाँ रहा। वहाँ वह बड़ी सुखी थी। उसके माँ-बाप सबको यही बताते थे कि, वह उनकी अपनी संतान है। कालेज में वह हमेशा प्रथम आती थी। उस साल वह बी० ए० की परीक्षा में बैठ रही थी।

चलते वक्त उसके पिता ने मुझे शपथ दिला दी कि, मैं उसका पूर्व-इतिहास किसी पर प्रकट नहीं होने दूँगा।

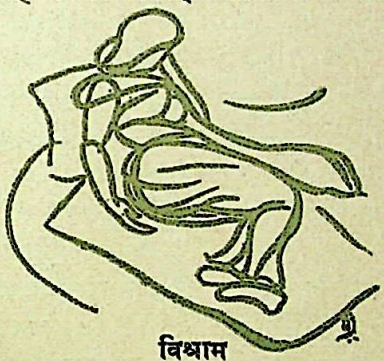

विश्राम

[चित्र : नीलिमा सेन-निर्मित एक रेखाचित्र]

इसके करीब पाँच महीने बाद अचानक निमंत्रण मिला। एक सम्पन्न घराने के इंजीनियर लड़के से उसका विवाह होनेवाला था। इस अवसर पर मैंने उसे अपनी नयी पुस्तक भेंट में भेज दी।

साल-भर बाद उसके पिता का देहांत हो गया और उसके कुछ ही दिन बाद, उसकी माँ भी चल बसी। वसीयतनामा न होने के कारण उनकी सारी सम्पत्ति किसी भतीजे को मिली। इसके एक महीने बाद ही मनू का एक पत्र आया। उसने मुझे बहुत जल्दी बुलाया था। पत्र पर आँसुओं के धब्बे देख मेरा दिल काँप उठा।

तत्काल कलकत्ता के लिए रवाना हो गया। वहीं उसके पति की फर्म थी। जब मैं ठहरने के लिए 'महाराष्ट्र-मंडल' पहुँचा, तो आश्चर्यचकित रह गया। वह भी वहीं ठहरी हुई थी! मुझे देखते ही उसके चेहरे का रंग उड़ गया—रुलाई रोकने की वह भरसक चेष्टा करने लगी। मैं उसे अपने कमरे में ले गया और वहाँ तो आँसुओं का बाँध वह नहीं ही थाम सकी। रोते-रोते ही उसने कहा—"मुझे घर से निकाल दिया!"

"तुम्हारे पति ने?"

गरदन हिला कर उसने 'हाँ' कहा। फिर उसने सारा वृत्तांत कह सुनाया—

"एक दिन मेरी सास की भेंट अनाथ-आश्रम की उस 'मेट्रन' से हो गयी। दोनों का पुराना परिचय था। बात-बात में सारा रहस्य खुल गया। लड़की अनाथ-आश्रम की है, जान कर घर के सभी लोग आगबबूला हो गये। प्राणों से अधिक प्रेम करनेवाला पति भी क्षण-भर में दूर जा खड़ा हो गया। और, जब पति ने भी मुझे ठुकरा दिया, तो सबके चरणों पर सिर नवा कर मैंने भी घर छोड़ दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले-जैसी फिर अनाथ हो गयी! सहारा खोजने लगी। सोचा, मेरे मामा हैं—उन्हें पुकारा। अब आगे क्या होगा?"

"आगे क्या होगा? कैसा प्रश्न है यह तुम्हारा? तुम्हारे पिता की सम्पत्ति भले ही किसी और को मिली हो; पर उन्होंने तुम्हें पढ़ाया-लिखाया तो है न! तुम भूखों नहीं मर सकती। बम्बई में सबके लिए रोटी है। तुम्हें कहीं भी नौकरी मिल जायेगी। चलो, मेरे साथ।"

वह घर से बिल्कुल खाली हाथ निकली थी। जाते समय भी, उसके पति ने एक शब्द तक उससे बोलना आवश्यक न समझा था। उसके माँ-बाप की मृत्यु के बारे में सब जानते थे; फिर भी किसी ने यह न पूछा था कि, वह कहाँ जाती है — कहाँ रहेगी!

संयोगवश मेरे पास दोनों के टिकटों के पैसे थे। न होते, तो किसी के सामने हाथ फैलाना ही पड़ता और फिर शायद उसकी कहानी सुना देने की नौबत आ जाती। वह चाहती थी कि, कम-से-कम कलकत्ता में तो उसका रहस्य किसी पर न खुले। वहाँ के समाज में उसकी अच्छी पैठ थी। अनेक समारोहों में वह भाग लिया करती थी। उत्सवों के लिए उसने खुले हाथ से चंदा दिया था।

उसी दिन हम दोनों चल पड़े। रात की गाड़ी में उसे गहरी नींद लगी देख कर मुझे बड़ा परितोष मिला। मेरे पहुँचने के पहले वह कैसी बावली हो रही थी! कलकत्ता छोड़ने से शायद उसके मन का बोझ हल्का हो गया था।

सवेरे चक्रधरपुर स्टेशन पर हमारे डिब्बे के सभी मुसाफिर उतर गये। बस, हम दोनों रह गये। "अच्छा हुआ, अब हम दिल खोल कर बातें कर सकेंगे।"—वह कह ही रही थी कि, एक प्रौढ़ा अंदर आयी और सामने की बेंच पर बैठ गयी।

उसने ज्यों ही मनू को देखा; मुझे लगा, जैसे वह चौंक-सी गयी। वह अपलक मनू को देख रही थी। उसकी वेशभूषा से मैंने पाया कि, वह विधवा थी और महाराष्ट्रियन थी। मैं छिपी-छिपी नजरों से उसे देखता रहा। सहसा उसने मुँह फेरा और आँचल से आँसू पोंछे— लगा कि, वह अपने रोने के आवेग को रोकने का प्रयत्न कर रही है।

फिर वह उठी और मनू के पास आकर बैठ गयी। अपने भावावेश को भरसक दबाते हुए उसने मनू से पूछा— "तुम्हारा क्या नाम है, बेटी? तुम्हारे पिताजी कौन हैं?"

मुझे यह बुरा लगा। मनू को विचलित देख, आखिर मैंने ही उससे पूछा—"क्या आप बतायेंगी कि, आप कौन हैं?"

पर वह टाल गयी। मनू के गाल के जन्मजात निशान को घूरते हुए उसने कहा—"यह दाग तो नहीं जान पड़ता, पैदाइशी निशान है क्या?"

उत्तर में मेरे 'हाँ' कहते ही उसकी आँखें भर आयीं। आँचल से आँखें पोंछ कर बोली—"जरा 'बाथरूम' में चलोगी बेटी?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह अजीब प्रश्न सुन कर मनू और भी घबड़ा उठी। मुझे बड़ा विचित्र लगा। मैंने उक्त महिला से कहा–"कैसी बातें करती हैं आप भी! आप दोनों पहले से परिचित नहीं और फिर भी आप उसे 'बाथरूम' ले जाना चाहती हैं? मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ– उसके शरीर पर रत्ती-भर भी सोना नहीं है.....।"

वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि, वह बोल पड़ी–"क्षमा करें। मैं यह देखना चाहती थी कि, ऐसा ही निशान इसके शरीर पर और कहीं भी है क्या? ऐसा निशान मेरी....." कहते-कहते वह सुबक पड़ी। मनू भी अनायास ही रोने लगी। शायद उसके हृदय में भी किसी बात को लेकर उथल-पुथल मची हुई थी।

"'बाथरूम' में जाने की आवश्यकता नहीं।"–मनू ने कहा–"मेरी पीठ के बिल्कुल नीचे बायीं ओर ऐसा ही एक रुपये के बराबर निशान है।"

मनू का उत्तर सुना, तो वह महिला जैसे अपने में डूब गयी। तरल स्वर में उसने पूछा– "क्या बम्बई के 'गुरुदेव अनाथ-आश्रम' में थीं तुम?"

मनू को असमंजस में देख कर मैंने ही कहा–"हाँ, बचपन में उसी आश्रम में थी।"

मेरा वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि, वह उठी और मनू को छाती में भर कर रोने लगी। रोते-रोते वह अपने-आप ही कह रही थी–"मेरी बेटी! मेरी बेटी!"

इस प्रकार मनू को माँ मिल गयी। उन दोनों के चेहरों में अद्भुत साम्य था, यह मैंने पहले ही देख लिया था! बड़ा मर्मद्रावक प्रसंग था। मनू माँ की बाँहों में अपने को निश्चित-निर्विघ्न पाकर अपनी चेतना तक खो बैठी थी! और करती भी क्या बेचारी? दुर्भाग्य के कितने तूफान उस नन्ही-सी आत्मा ने झेले थे– अनाथ-आश्रम में पली; लेकिन बड़ी हुई अमित सुख-वैभव में– सम्भ्रांत घराने में बहू बन कर गयी। फिर इधर माँ-बाप चल बसे, तो उधर ससुराल भी छूट गया.....पति के जीवित होते हुए भी वह विधवा बनी।

उसकी माँ का पूर्व-इतिहास मुझे बाद में ज्ञात हुआ; पर उसे किसी पर प्रकट न करने की उसने शपथ दे दी।

वे दोनों नागपुर उतर पड़ीं। विदा होते समय माँ-बेटी, दोनों ने मेरे पैरों पर सिर रखा। "मेरे मामा ने ही मुझे माँ दी है, शुरू से ही....।" तभी मैंने उसके मुख पर हाथ रख दिया–"मनू, अब इस प्रसंग को छोड़। माँ के साथ घर जा। आनंद से रह। अपने मामा को भूलना मत।"

मनू सिसकती रही, कहती रही–"मामा, भूल मत जाना।"

मैं भी अपने को रोक न पाया। रोने लगा। गला रुँध गया। मुँह से बात न निकल पायी। गाड़ी चल दी और जब तक ओझल न हो गयी, वे दोनों आँखें पोंछती हुई हाथ उठा कर मुझे प्लेटफार्म से संकेत करती रहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़का लापता है

प्रेमेन्द्र मित्र की एक बँगला-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर। गत मास प्रेमेन्द्र बाबू के रचना-शिल्प-वैशिष्ट्य को भारत-सरकार ने २५०० रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया है। 'नवनीत' इस अवसर पर प्रेमेन्द्र बाबू का हार्दिक अभिनंदन करता है!

आज सोमेश गम्भीर था! और दिनों की तरह न तो उसके चेहरे पर चंचलता के भाव थे और न अधरों पर मुस्कराहट। आकर पास ही गुमसुम बैठ गया। अंत में, मैंने ही चुप्पी तोड़ी– "आज के अखबार की यह विलक्षणता देखी तुमने?" और, अखबार का दूसरा पृष्ठ खोल कर उसकी ओर बढ़ा दिया।

"यह तो विज्ञापनों का पृष्ठ है। इसमें क्या विलक्षणता देखी तुमने?"–उसने अनमने स्वर में पूछा।

"अरे, देखते नहीं, 'लड़का लापता है' शीर्षक के नीचे एक साथ सात विज्ञापन!" –मैंने उत्तर दिया; पर सोमेश को मानो इस चर्चा में कोई दिलचस्पी नहीं थी– वह चुपचाप सिगरेट जला कर पीने लगा। मैंने फिर बात छेड़ी– "इन विज्ञापनों के बारे में तुम्हारी क्या राय है? मैं तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि.....यही समझ लो कि, ये तमाशा हैं– हास्यास्पद! ज्यादातर मामले ऐसे ही होते हैं कि, पुत्र महाशय को सिनेमा जाने की लत पड़ गयी है; अतः वे काफी रात गये घर लौटते हैं। पिताजी को यह पसंद नहीं। वे भोजन करते समय पत्नी से कहते हैं–'इतनी रात तक वह बाहर क्यों रहता है?' पत्नी पति की बात चुपचाप सुन लेती हैं और फिर पुत्र को समझाती हैं; पर पुत्र एक नहीं सुनता। आखिर एक दिन पिताजी उखड़ ही पड़ते हैं–'देख लेना, तुम्हारा लाड़ला हम सबको डुबा कर छोड़ेगा। पिछले साल भी परीक्षा में फेल हुआ– इस साल भी होगा; कहो तो लिख दूँ।'

"दैवयोग से उसी समय पुत्र महोदय भी मटरगश्ती करके आ जाते हैं। पिताजी का क्रोध अपने चरम पर पहुँच जाता है। वे कह उठते हैं–'मुझे नहीं चाहिए ऐसा बेटा! जाओ, निकल जाओ घर से!' पुत्र महोदय भी उल्टे पाँवों वापस चले जाते हैं। माँ पुकारती रहीं–'अरे, सुनो तो, सुन तो लो!' पर जवानी का खून, अपमान का मामला– पुत्र महोदय नहीं लौटते। अब माँ अपने पतिदेव पर क्रोध उतारती हैं–'अभी ही यह सब कहने की क्या जरूरत थी! कल सवेरे नहीं कह सकते थे! बेचारा भूखे वापस लौट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया। इस जाड़े की रात में न-जाने कहाँ-कहाँ मारा फिरेगा!'

"रात कट गयी; पर न पिताजी को नींद आयी, न माताजी को। माँ ने तो भोजन भी नहीं किया। सवेरे पुत्र की प्रतीक्षा होती है; पर निराशा हाथ लगती है। शाम को घर लौट कर भी जब पुत्र के न आने की बात पिता सुनते हैं और पत्नी को खाट पकड़े देखते हैं, तो उनका हृदय हिल उठता है और वे पत्नी को समझा-बुझा कर, पुत्र महोदय की खोज में निकलते हैं। पुत्र के दो-चार मित्रों से मिलने के बाद उनकी परेशानी बढ़ जाती है और पत्नी के अनशन की बात ध्यान में आते ही, वे किसी समाचारपत्र के कार्यालय में जाकर 'लड़का लापता है' शीर्षक विज्ञापन दे आते हैं। पर जब लौट कर घर आते हैं, तो देखते हैं कि, पुत्र महोदय पहुँचे हुए हैं—अवश्य ही, रहने के लिए नहीं, अपनी पुस्तकें ले जाने के लिए। और तब, दोनों पति-पत्नी मिल कर पुत्र की मनौती करते हैं, समझाते हैं और पुत्र देव का क्रोध शांत करने में सफलता पाते हैं। क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है?"

आज सोमेश गम्भीर था।...आकर पास ही गुमसुम बैठ गया। [पृष्ठ ८८]

अब तक सोमेश अपना सिगरेट समाप्त कर चुका था और बचे हुए टुकड़े को 'ऐश ट्रे' में डाल रहा था। उसने इस बार भी कुछ नहीं कहा। मुझे ऐसा लगा, जैसे वह मेरी बातें सुन ही नहीं रहा था। अतः कुछ क्रुद्ध हो, मैंने कहा—"आखिर बात क्या है? मैं बड़बड़ाता जा रहा हूँ और तुम गूँगी साधे हो!"

इस पर वह बोला-"सभी रोगों पर एक ही नुस्खा नहीं चलता, मित्र! कुछ मामले तुम्हारे कथनानुसार भी होते हैं; पर सभी वैसे होते हों, ऐसा नहीं है। कितने घर, कितने आदमी बर्बाद हो गये हैं इसके चलते—मालूम है तुम्हें? ऐसा एक मामला मुझे बखूबी मालूम है! क्या-से-क्या हो गया उस मामले में, उफ!"

मेरी उत्सुकता स्वभावतः जगी। मैंने उसके चेहरे पर अपनी दृष्टि जमा दी और वह कहने लगा—"कई वर्ष पहले की बात है। एक जमींदार का लड़का घर से भाग गया। इकलौता बेटा था! अतः माँ-बाप की परेशानी का क्या पूछना! हाँ, लड़के का नाम था, सोवेन! सोवेन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर से जाने के बाद, एक सप्ताह तक नाते-रिश्तेवालों से पूछताछ की गयी और तब अखबार में विज्ञापन दिया गया। इस विज्ञापन में उससे घर लौट आने के अनुरोध के साथ-साथ यह भी लिखा था कि, उसकी माँ ने अन्न-जल त्याग दिया है और खाट पकड़ ली है। फिर दूसरा विज्ञापन निकला, जिसमें लिखा था कि, माँ की अवस्था बिगड़ती जा रही है; अतः वह जल्दी चला आवे। पर इसका भी कोई परिणाम न निकला, तो विज्ञापन में लिखा गया कि, जल्दी नहीं लौटने से वह माँ से मिल भी नहीं पायेगा। पर सोवेन का हृदय नहीं पसीजा— माता-पिता को निराशा ही हाथ लगी।

"अब विज्ञापन में सोवेन से लौटने के अनुरोध के स्थान पर उस व्यक्ति को पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की गयी, जो उसका पता बतलावे या घर पहुँचा दे। इस विज्ञापन में उसकी १६ वर्ष की आयु, दुबले शरीर, कान के नीचे घाव के निशान और गोरे रंग का भी विवरण दिया गया था। लेकिन इसका भी कोई परिणाम न निकला और तब पुरस्कार की राशि बढ़ा कर दुगुनी कर दी गयी। इसी तरह एक लम्बे अरसे तक सोवेन के लापता होने का प्रचार उस समाचारपत्र में किया जाता रहा।"

सोमेश थोड़ा रुका, फिर कहने लगा— "मैं सोवेन से भलीभाँति परिचित था। किसी तरह का कष्ट होने के कारण उसने घर छोड़ा हो, ऐसा नहीं था। उसका मन कुछ-कुछ वैराग्य की ओर झुका था और एक दिन अपनी उसी सनक में वह बिना किसी से कुछ कहे-सुने लापता हो गया था। घर छोड़ने के बाद भी उसके मन पर वैराग्य हावी था; अतः कोई भी विज्ञापन उसे द्रवित न कर सका।

"प्रायः दो वर्ष पश्चात्, अकस्मात् एक दिन सोवेन अपने घर लौटा। शायद सांसारिक ठोकरों ने उसका विराग का नशा उतार दिया था और फिर सांसारिकता में पड़ने के लिए वह विवश हो गया था। इन दो वर्षों में उसमें काफी परिवर्तन आ गये थे; फिर भी उसे इस बात की उम्मीद न थी कि, उसके पिता के नौकर-चाकर उसे पहचान भी नहीं सकेंगे। वह ज्यों ही घर के अंदर प्रविष्ट होने लगा, नायब ने उसे रोक दिया—'क्या है? किसे चाहते हैं?'

"सोवेन ने किंचित् मुस्करा कर कहा— 'मैं सिर्फ अंदर जाना चाहता हूँ।'

"उसका उत्तर सुन, नायब ने उसे ध्यान से देखा, फिर जरा मुस्करा कर कहा—'लेकिन इतनी जल्दी क्या है! चलिये, जरा ड्योढ़ी में बैठ कर आराम तो कर लीजिये।'

"सुन कर सोवेन को बड़ा आश्चर्य हुआ, बोला—'क्यों, बात क्या है?'

"'बात क्या रहेगी— कुछ नहीं!'— नायब ने उत्तर दिया।

"'मेरी माँ अच्छी तो हैं न?'—सोवेन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने व्यग्रता से प्रश्न किया।

"नायव के होंठों पर एक कुटिल मुस्कराहट खेल गयी ; पर अपना स्वर संयत कर बोला–'हाँ जी, बिल्कुल ठीक हैं। चलिये, इधर आइये!'

"अब सोवेन को क्रोध आया–'उधर क्यों जाऊँ ? इधर जाऊँगा– अंदर।'

"'उधर नहीं जा सकते। चलिये इधर!'–नायव ने जरा रौब के साथ डपटा, तो सोवेन हतप्रभ-सा हो गया और नायव के पीछे-पीछे ड्योढ़ी में, जो कि जमींदारी का कार्यालय भी था, चला गया। इन दो वर्षों में कार्यालय का रूप थोड़ा-बहुत बदल गया था। पुराना मुनीम जा चुका था– दो नये आदमी बैठे कुछ लिख रहे थे। लेकिन खजांची वही पुराना था। उसे देख कर सोवेन को न-जाने क्यों प्रसन्नता हुई।

"कार्यालय में पहुँचने पर नायव ने सोवेन को बैठने के लिए कह कर खजांची से कहा–'ये अंदर जाना चाहते हैं।' खजांची ने अपना चश्मा ऊपर उठा कर ध्यान से सोवेन को देखा, फिर नायव से पूछा–'अभी तुरत आये हैं?' नायव ने सिर हिला कर 'हाँ' किया।

"सोवेन को यह सब अजीब-सा लग रहा था– रहस्यमय; अतः अधीर हो, वह बोल उठा–'आप लोग साफ-साफ बतलाइये न! मेरी माँ ठीक तो हैं न? पिताजी तो अच्छी तरह हैं न?'

"उत्तर नायव ने दिया–'हाँ, वे सब ठीक हैं। चिंता की कोई बात नहीं; पर अभी आप उनसे नहीं मिल सकते!'

"'क्यों? क्यों नहीं मिल सकता मैं? आप लोगों का दिमाग तो ठीक है? मैं अभी जाता हूँ। देखूँ, कौन रोकता है मुझे!'–दाँत पीसता हुआ सोवेन उठ खड़ा हुआ ; पर तभी नायव ने शिष्टता-पूर्वक कहा–'देखिये, व्यर्थ का हंगामा मत खड़ा कीजिये। इसमें आपका ही नुकसान है! समझे?'

"इसी क्षण सोवेन के मन ने प्रश्न किया– 'कहीं ऐसा तो नहीं कि, ये लोग मुझे पहचान नहीं रहे हैं?' और, तत्क्षण वह बोल उठा–'आप लोग मुझे पहचान नहीं रहे हैं क्या? मैं सोवेन हूँ– सोवेन!'

"पर इसका कोई उत्तर न दे, नायव एक मेज के पास गया और दराज से एक चित्र निकाल लाया। यह चित्र सोवेन का ही था और कई साल पहले खींचा गया था। चित्र को सोवेन के हाथ में देकर नायव ने पूछा–'इसे पहचानते हैं?' सोवेन ने देखते ही कहा–'क्यों, यह तो मेरी तसवीर है!'

"'हाँ, कुछ-कुछ मिलती तो है आपसे ; लेकिन आपसे पहले जो दो सज्जन आये थे, उनके चेहरे भी मिलते थे– उनके कान के नीचे भी घाव का निशान था। खैर, जो हो, हमें आदेश मिला है कि, सोवेन बाबू के चेहरेवाले जो लोग सोवेन बाबू होने का दावा करने आवें, उनसे हम झगड़ा न करें, चुपचाप वापस भेज दें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपसे भी हमारा यही अनुरोध है।'

"'लेकिन मैं अपने माता-पिताजी से मिले विना नहीं जाऊँगा।'—सोवेन ने अपना संकल्प व्यक्त किया।

"'सुनिये, आप व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं। सोवेन वावू मर चुके हैं। एक कार से दब कर उनकी मृत्यु हो गयी है। जिन लोगों ने देखा, उन्होंने यही कहा और शव-परीक्षा करनेवाले डाक्टरों ने भी उनकी पुष्टि की। हम लोगों-द्वारा वतलाये गये पूरे हुलिये का उन्होंने समर्थन किया।' संदेह की कोई गुंजायश नहीं है।'

"सुन कर सोवेन की अजीव अवस्था हो गयी। उसे लगा, जैसे अधिक देर वहाँ रुकने से वह पागल हो जायेगा। वह जेल की दीवार फाँदे कैदी की तरह वहाँ से भागा और दनदनाता हुआ घर के अंदर प्रविष्ट हो गया। फिर दौड़ते हुए अपने पिता के कमरे के पास पहुँच कर चिल्लाया—'पिताजी!'

"कमरे में वैठे वृद्ध ने गौर से सोवेन की ओर देखा, फिर विरक्त भाव से पूछा—'कौन हो तुम?'

"'आप भी नहीं पहचानते, पिताजी!'—सोवेन ने रुद्ध स्वर में कहा।

"तभी पीछे से आकर नायव ने सोवेन की बाँह पकड़ ली और कहा—'मैंने बहुत रोका, हुजूर; पर यह व्यक्ति चकमा देकर भाग आया!'

"'उसे छोड़ दो, कुछ मत कहो। खुद ही चला जायेगा।'—कह कर वृद्ध उठ खड़े हुए और सोवेन पर एक तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर वाहर चले गये। फिर वाहर से उन्होंने नायव को भी पुकार लिया। सोवेन चुपचाप किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रहा—अपने विचारों में डूबता-उतराता। अपने ही घर में आज वह अजनवी वना था!

"कुछेक क्षणों के वाद ही नायव अपने हाथ में कुछ नोट लिये लौटा और सोवेन से वोला—'देखिये, सोवेन वावू की माँ की अंतिम घड़ी आ पहुँची है। अब वे मुश्किल से एक दिन की मेहमान हैं। सोवेन वावू के मरने का समाचार अब तक उन्हें नहीं वतलाया गया है। हम चाहते हैं कि, वे शांतिपूर्वक मर सकें; अतः ये रुपये लीजिये और उनके पास चलिये। अपनी अंतिम घड़ी में वे अपने असली पुत्र और आप के अंतर को नहीं पहचान सकेंगी और उन्हें संतोष होगा कि, मरते समय उनका पुत्र उनकी आँखों के आगे रहा।.... चलिये!'—कह कर नायव मुड़ गया। सोवेन इसका कुछ उत्तर न दे सका—वुत बना, भरा हृदय और आँखों में आँसू लिये, उसके पीछे-पीछे चल पड़ा!"

इतनी कहानी सुना कर सोमेश कुछ क्षण के लिए रुका, तो मैंने उसके चेहरे पर एक गम्भीर दृष्टि डाली; फिर कहा—"सोमेश, कान के नीचे घाव का निशान तो तुम्हारे चेहरे पर भी है!"

सोमेश के अधरों पर करुण मुस्कराहट खेल गयी; वोला—"तभी तो इतने विस्तार से यह कहानी तुम्हें बतला सका हूँ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ तो कोई सूरत भी है, वाँ अल्लाह ही अल्लाह है!

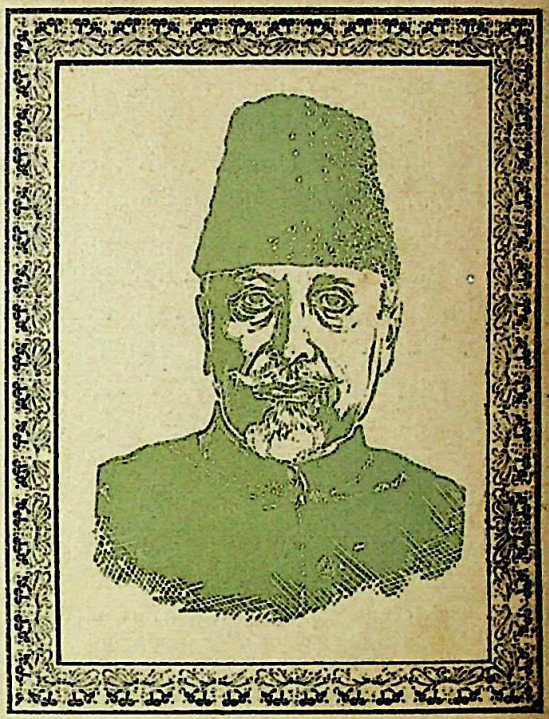

स्वर्गीय मौलाना आज़ाद वास्तविक अर्थों में प्रतिभा-पुत्र थे। ज्ञान की समस्त उपलब्ध निधि से शक्ति-सामर्थ्य संचित कर, उनकी प्रज्ञा ने जीवन-महासागर की गहराई में पैठ, निःश्रेयस के जो रत्न संसार को दिये, उस देन को मानव-समाज सर्वदा ऋषि-प्रसाद ही मानेगा। संसार के दूरस्थ देशों में फैली समस्त इस्लामी मनीषा ने जिसकी वाणी और लेखनी से पैगम्बर की वाणी का दिव्यार्थ समझा और कृतज्ञ भाव से तदनुकूल अपने संस्कार निर्धारित किये, क्या वह साधारण 'मौलाना' था? नहीं। यास्काचार्य के 'साक्षात्कृत धर्माण ऋषयः' सूत्र के अनुसार उसकी संज्ञा वस्तुतः 'ऋषि' ही हो सकती है!

अन्य सैकड़ों व्यक्तियों एवं संस्थाओं की भाँति 'नवनीत' को भी इस युग-मनीषी का आशीर्वाद प्राप्त था। अपने निर्माण में 'नवनीत' को उनसे बहुत मिला। 'नवनीत' उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। यहाँ उनकी पुण्य स्मृति को प्रेरणा-दीप की भाँति सँजोते हुए, हम अपने पाठकों को उनकी तीन रचनाओं का पाठ करवाते हैं।

*

इंसान अपनी एक जिंदगी के अंदर कितनी ही मुख्तलिफ (भिन्न-भिन्न) जिंदगियाँ बसर करता है। मुझे भी अपनी जिंदगी की दो किस्में कर देनी पड़ीं। एक कैदखाने से बाहर की और एक कैदखाने के अंदर की। दोनों जिंदगियों की तस्वीरें अलग-अलग रंगों से रंगीन की गयी हैं। आप शायद एक को देख कर दूसरी को पहचान भी न सकें।

कैद से बाहर की जिंदगी में अपनी तबीयत की उफ्ताद (प्रणाली) बदल नहीं सकता, खुदरफ्तगी (आत्ममग्नता) मिजाज पर छायी रहती है, दिमाग अपनी फिक्रों से बाहर आना नहीं चाहता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल अपनी नक्श-आराइयों (तस्वीरें सजाने) का गोशा (कोना) छोड़ना नहीं चाहता। बज्मो-अंजुमन (महफिल) के लिए बारे-खातिर (बोझ का कारण) नहीं होता; लेकिन यारे-शातिर (अभिन्न मित्र) भी बहुत कम बन सकता हूँ।

लेकिन ज्यों ही हालात की रफ्तार कैदो-बंद (गिरफ्तारी) का पयाम (संदेश) लाती है, मैं कोशिश करने लगता हूँ कि, अपने-आपको एकदम बदल दूँ। मैं अपना पुराना दिमाग सर से निकाल देता हूँ और एक नये दिमाग से उसकी खाली जगह भरना चाहता हूँ। हरीमे-दिल (दिल के रंगमहल) के ताकों को देखता हूँ कि, खाली हो गये, तो कोशिश करता हूँ कि, नये-नये नक्शो-निगार (तस्वीरें) बनाऊँ और उन्हें फिर से आरास्ता कर दूँ (सजा दूँ)।

दिल कि जमअस्त, ग़म अज़
बे सरो-सामानी नेस्त।
फ़िक्रे-जमईत अगर नेस्त,
परेशानी नेस्त।

—अगर दिल को यकसूई (अनुरक्ति) हासिल है, तो फिर बेसरो-सामानी का कोई गम नहीं; क्योंकि अगर यकसूई की फिक्र न हो, तो कोई भी परेशानी नहीं।

अगर आप मुझे इस हालत में देखें, तो खयाल करें कि, मेरी पिछली जिंदगी मुझे कैदखाने के दरवाजे तक पहुँचा कर वापस चली गयी और अब एक दूसरी ही जिंदगी का साथ है। जो जिंदगी कल तक अपनी हालतों में गुम और खुशकामियों और दिल-शगुफ्तगियों (प्रसन्नता) से बहुत कम आशना (परिचित) थी; आज अचानक एक ऐसी जिंदगी की सूरत में बदल गयी, जो शगुफ्ता-मिजाजियों (प्रसन्न-चित्त) और खंदारूइयों (हँसमुख) के सिवा और किसी बात से आशना ही नहीं। "हर वक्त खुश रहो और हर नागवार हालत को खुश बनाओ" जिसका उसूल है!

हासिले कारगहे कौनो-मकाँ ई हमाँ नेस्त,
बादा पेश आर कि अस्बाबे-जहाँ ई हमा नेस्त।
पंज रोजे कि दरीं मरहला मौहलत-दारी,
खुश बयासाये ज़माने कि ज़माँ ई हमाँ नेस्त।

—माल-दौलत इकट्ठा कर लेना ही दुनिया में आने का मकसद नहीं, शराब ला। यह धन-दौलत काफी नहीं है। यह पाँच दिन जिंदा रहने की मोहलत मिली है, हँसी-खुशी में गुजार दे। जमाने में यह धन-दौलत ही सब-कुछ नहीं है।

मैंने कैदखाने की जिंदगी दो मुतजाद (विपरीत) फलसफों से तरतीब (क्रमबद्ध) दी है। इसमें एक हिस्सा 'रिवाकिय्या' (निवृत्ति) का है और दूसरा 'लज्जतिया' (प्रवृत्ति) का। जहाँ तक हालात की नागवारियों का ताल्लुक है, रिवाकिय्यत से उनके जख्मों पर मरहम लगाता हूँ और उनकी चुभन भूलने की कोशिश करता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरवक़्ते-बद कि रूये-दहद
आबेसैल वाँ।
हर वक़्त-खुश कि जलवा कुनद
मौजे-आबगीर।

—हर बुरा वक्त जो सामने आता है, पानी की मौजों की तरह एक अच्छी तस्वीर छोड़ जाता है।

जहाँ तक जिंदगी की खुशगवारियों का ताल्लुक है, लज्जतिया (प्रवृत्ति) का जाविया-ए-निगाह (दृष्टिकोण) काम में लाता हूँ और खुश रहता हूँ।

हर वक़्ते-खुश कि दस्त दहद
मुग़तनिम शुमार।
कसरा वकूफ़ नेस्त कि
अंजामे-कार चीस्त।

—जो भी अच्छा वक्त हाथ आये, उसे गनीमत समझो; क्योंकि किसी को अपने कामों का अंजाम देखने की फ़ुर्सत नहीं।

मैंने अपने 'काकटेल' के जाम में दोनों बोतलें उड़ेल दीं। मेरा जौके-बादा-आशामी (शराब पीने का शौक) बगैर इस जामे-मुरक्कब (मिली हुई शराब) के तस्कीन (संतोष) नहीं पा सकता था। अलबत्ता 'काकटेल' का यह नुस्खा हर खामकार (अनाड़ी) के बस की चीज नहीं; सिर्फ बादागुसाराने-कोहना-मश्क (पुराने शराबी) ही इसे काम में ला सकते हैं। 'वरमूथ' और 'जिन' का मुरक्कब पीनेवाले इसे बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। मालाना-ए-रूम ने ऐसे ही मामलात की तरफ इशारा किया था—

बादा-ए-आँ दरखुरे—
हर होश नेस्त।
हल्क़ा-ए-आँ सिख़रा-ए-
हर गोश नेस्त।

—वह शराब हर किसी के होश के लायक नहीं और न उसकी गुलामी की बाली हर किसी कान के लायक है। आप कहेंगे, कैदखाने की जिंदगी रिवा-कियत के लिए, तो मौजूँ (मुनासिब) हुई; क्योंकि जिंदगी के रंजो-राहत से बेपरवाह बना देना चाहती है; लेकिन 'लज्जतिया' की इशरत-अंदाजियों (ऐशो-आराम करने) का वहाँ क्या मौका? जो नामुराद कैदखाने से बाहर की आजादियों में भी जिंदगी की ऐश-कोशियों (ऐश उठाने) से तहीदस्त (खाली हाथ) रहते हैं, उन्हें कैदो-बंद (कैद) की महरूम जिंदगी में इसका सरो-सामान कहाँ मयस्सर आ सकता है? लेकिन मैं आपको याद दिलाऊँगा कि,

ईद

दूसरों की ईद
कल होगी,
हमारी तो इसी क्षण
हो चुकी!

चद्रमा कल दूज का
देखा करें
वे रोजादार,
देख लीं हमने भवें
उनकी झुकी!

सादी : भवानी प्रसाद मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंसान का असली ऐश (आराम) दिमाग का ऐश है, बदन का नहीं। मैं 'लज्जतिया' से उनका दिमाग ले लेता हूँ; जिस्म उनके लिए छोड़ देता हूँ। 'दाग' ने नासेह (नसीहत करनेवाले) से सिर्फ उसकी जबान ले लेनी चाही थी।

मिले जो हश्र में,
ले लूँ ज़बान नासेह की।
अजीब चीज़ है यह
तूले-मद्दुआ के लिए।

—क़यामत के दिन मौका मिला, तो नसीहत करनेवाले की जबान लें लूँगा; क्योंकि इसकी यह खूबी है कि, मतलब की बात को लम्बी करती चली जाती है।

और, गौर कीजिये, तो यह भी हमारे वहमो-खयाल का एक धोखा ही है कि, सरो-सामाने-कार (जरूरत का सामान) हमेशा अपने से बाहर ढूँढ़ते रहते हैं। अगर यह परदा-ए-फरेब (धोखे की टट्टी) हटा कर देखें, तो साफ नजर आ जाये कि, वह हमसे बाहर नहीं है, खुद हमारे अंदर ही मौजूद है। ऐशो-मसर्रत की जिन गुल-शगुफ्तगियों (खिले हुए फूल) को हम चारों तरफ ढूँढ़ते हैं और नहीं पाते, वह हमारे निहाँखाना-ए-दिल के चमनजारों (हृदय के बगीचों) में हमेशा खिलते और मुझते रहते हैं।

कहीं तुझको न पाया
गरचे हमने इक जहाँ ढूँढ़ा
फिर आखिर दिल ही में पाया
बग़ल ही में सेतू निकला।

जंगल के मोर को कभी बागो-चमन की जुस्तजू (तलाश) नहीं हुई— उसका चमन खुद उसकी बगल में मौजूद रहता है। जहाँ कहीं अपने पर खोल देगा, एक रंगारंग चमनिस्ताँ (उपवन) खुल जायेगा।

न बा सहरा सरे दारम
न बा गुलज़ार सौदाय।
बहरजा मी खम,
अज़ ख्वेश मी हूशद तमाशाय॥

—हसर में न तो जंगलों का पागलपन है और न बागों का। मैं तो जहाँ कहीं भी जाता हूँ, खुद ही तमाशा बन जाता हूँ।

कैदखाने की चहारदीवारी के अंदर भी सूरज हर रोज चमकता है और चाँदनी रातों ने कभी कैदी और गैर-कैदी में फर्क नहीं किया। अँधेरी रातों में जब आसमान की कंदीलें रोशन हो जाती हैं, तो वह सिर्फ कैदखाने के बाहर ही नहीं चमकतीं, असीराने-कौदो-मुहिन (कैदियों) को भी अपनी जलवा-फरोशियों का पयाम (संदेश) भेजती रहती हैं। सुबह जब तबाशीर (सफेदी) बखेरती हुई आयेगी और जब शफका (उषा) की गुलगूँ (गुलाबी) चादरें फैलाने लगेगी, तो इशरतसराओं (रंगमहलों) के दरीचों से ही उनका नज्जारा नहीं किया जायेगा, कैदखानों के रोजनों (झरोखों) से लगी हुई निगाहें भी उन्हें देख लिया करेंगी। फितरत (प्रकृति) ने इंसान की तरह कभी यह नहीं किया कि, किसी को शाद-काम (सफल मनोरथ) रखे, किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को महरूम (वंचित) कर दे। वह जब कभी नकाब उलटती है, तो सबको एकसाँ तौर पर हुस्न के नज्जारे की दावत देती है। यह हमारी गफ्लत-अंदेशी (बेपरवाही) है कि, नजर उठा कर देखते नहीं और सिर्फ अपने गिर्दो-पेश (आस-पास) में ही खोये रहते हैं।

महरम नहीं है तू ही
नवाहाये-राज़ का।
या वर्ना जो हिजाब है
परदा है साज़ का।

—सिर्फ एक तू ही उन राजभरी आवाजों से वाकिफ नहीं। जो पर्दा नजर आता है, वह भी साज के रहस्य को जाननेवाला है।

जिस कैदखाने में सुबह हर रोज मुस्कराती हो, जहाँ शाम हर रोज परदा-ए-शब (रात के परदे) में छिप जाती हो, जिसकी रातें कभी सितारों की कंदीलों से जगमगाने लगती हों, कभी चाँदनी की हुस्न-अफ्रोजियों (खूबसूरतियों) से जहाँ-ताब (दुनिया को चमकानेवाली) रहती हों, जहाँ दोपहर हर रोज चमके, शफक (उषा) हर रोज निखरे, परिंद हर सुबह-शाम चहकें, उसे कैदखाना होने पर भी ऐशो-मसर्रत (खुशी) के सामानों से खाली क्यों समझ लिया जाये? यहाँ सरोसामाने-कार (जरूरत का सामान) की तो इतनी फरावानी (ज्यादती) हुई कि, किसी गोशे में भी गुम नहीं हो सकता। मुसीबत सारी यह है कि, खुद हमारा दिलो-दिमाग ही गुम हो जाता है। हम अपने से बाहर सारी चीजें ढूँढ़ते रहेंगे, मगर अपने खोये हुए दिल को कभी नहीं ढूँढ़ेंगे; हालाँकि अगर उसे ढूँढ़ निकालें, तो ऐशो-मसर्रत (आराम और खुशी) का सारा सामान इसी कोठरी के अंदर सिमटा हुआ मिल जाये।

बग़ैरे-दिल हमा
नक़्शो-निगार बे मानीस्त।
हमीं वरक़ कि सियहगश्त,
मद्दआ ईं जास्त।

—दिल के बिना सब गुल-बूटे और तस्वीरें बेकार हैं, बेमतलब हैं; लेकिन दिल की मौजूदी में अगर एक सादे कागज को सियाही पोत कर काला कर दिया जाये, तो वह रंगीन बेलबूटों से कहीं बेहतर नजर आता है।

ईवानो-महल न हों, तो किसी दरख्त के साये से काम लें, देबा-व-मखमल का फर्श न मिले, तो सबजा-ए-खुदरौ (खुद से उगी घास) के फर्श पर जा बैठें। अगर बरकी (बिजली की) रोशनी के कंदल मयस्सर नहीं हैं, तो आसमान की कंदीलों को कौन बुझा सकता है? अगर दुनिया की सारी मस्नुई (बनावटी) खुशनुमाइयाँ ओझल हो गयी हैं, तो हो जायें, सुबह अब भी हर रोज मुस्करायेगी, चाँदनी अब भी हमेशा जलवाफरोशियाँ करेगी। लेकिन अगर दिलेजिंदा पहलू में न रहे, तो खुदारा बतलाइये, इसका बदल कहाँ ढूँढ़ें? इसकी खाली जगह भरने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप का रंग-रूप

उतना ही आवश्यक है जितना कि चित्र तारिकाओं का !

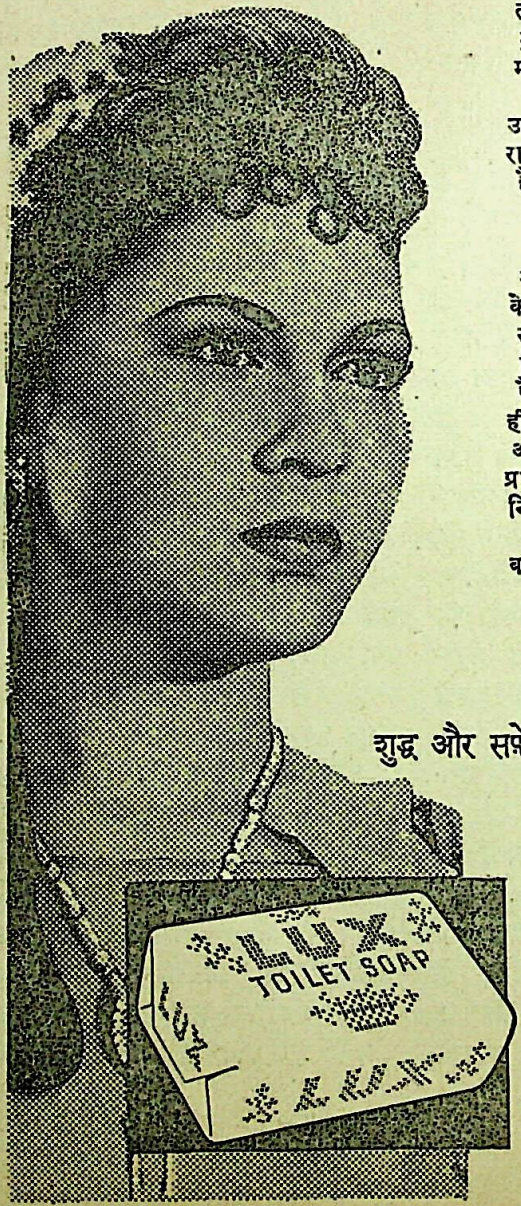

तारिकाओं का काम उन से अधिक मुलायम और दोषरहित जिल्द की मांग करता है, परन्तु आप के लिये भी अपने रंग-रूप की देख भाल उतनी ही जरूरी है। सुन्दरी निरूपा राय के कहने पर चलिए। वे कहती हैं—"अपने रंग-रूप की देख भाल करने के लिये मेरी पहली पसंद लक्स टॉयलेट साबुन है"।

आप भी नहाने या मुंह हाथ धोने के लिये एक बार यह शुद्ध और सफ़ेद साबुन इस्तेमाल कीजिये। आप की जिल्द में ऐसी नवीनता और चमक पैदा हो जायेगी जिसे न सिर्फ़ लोग ही प्रशंसा की नज़र से देखेंगे, बल्कि आप ख़ुद भी महसूस करेंगी। इस का प्रभावशाली झाग आप की जिल्द को निर्मल रखता है और इस की सुगन्ध आप के हर स्नान को आनंदमय बनाती है। आप भी दुनिया भर की चित्र-तारिकाओं की तरह रहिये और हर रोज़ अपने रंग-रूप की देख भाल लक्स से कीजिये।

शुद्ध और सफ़ेद **लक्स टॉयलेट साबुन**

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

निरूपा राय—मुक्ति फ़िल्मस के चित्र "सम्राट चंद्रगुप्त" की सुन्दर तारिका।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

LTS. 561-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए किस चूल्हे के अंगारे से काम लेंगे ?

मुझे यह डर है दिले-जिंदा
तू न मर जाये।
कि जिंदगानी इबारत है
तेरे जीने से।

मैं आपको बतलाऊँ, इस राह में मेरी कामरानियों (कामयाबियों) का राज क्या है ? मैं अपने दिल को मरने नहीं देता। कोई हालत हो, कोई जगह हो, इसकी तड़प कभी धीमी नहीं पड़ेगी। मैं जानता हूँ कि, जहाने-जिंदगी की सारी रौनकें इसी के दम से हैं। यह उजड़ा और सारी दुनिया उजड़ गयी।

अज़ सद सुख़ने-पीरम,
यक हर्फ़ मरा याद अस्त।
आलम नशवद वीराँ,
ता मैकदा आबाद अस्त।

—बुजुर्गों की पुरानी बातों में से एक तवा मुझे याद है कि, जब तक मयखाने आबाद रहेंगे, दुनिया बर्बाद न होगी।

बाहर के सारे सामाने-ऐशो-इशरत (सुख के सामान) मुझसे छिन जायें ; लेकिन जब तक यह नहीं छिनता, मेरे ऐशो-तरब (ऐशो-आराम) की सर-मस्तियाँ कौन छीन सकता है ?

मैं हमेशा सुबह तीन-चार बजे के अंदर उठता हूँ और चाय के फिंजानों से जामे-सबूही (सुबह की शराब) का काम लिया करता हूँ। ख्वाजा-ए-शीराज की तरह मेरी सदा भी यही होती है—

ख़ुर्शीदे-मय ज मशरिक़े
साग़र तुलूअ कर्द,
गर बर्गे-ऐश मी तलबी
तर्के-ख़्वाब कुन।

—शराब के सूरज को सागर के पूर्व से उठाओ ; क्योंकि ऐश चाहते हो, तो नींद को छोड़ना पड़ेगा।

यह वक्त मेरे औकाते-जिंदगी का सबसे ज्यादा पुस्कैफ (नशा-भरा) वक्त होता है; लेकिन कैदखाने की जिंदगी में तो इसकी सरमस्तियाँ एक दूसरा ही आलम पैदा कर देती हैं। यहाँ कोई आदमी ऐसा नहीं होता, जो इस वक्त ख्वाब-आलूद (नींदभरी) आँखें लिये हुए उठे और करीने से चाय बना कर मेरे सामने धर दे। इसलिए खुद अपने ही दस्ते-शौक की सरगरमियों से काम लेना पड़ता है। मैं इस वक्त बादा-ए-कुहन (पुरानी शराब) के शीशे की जगह चीनी चाय का ताजा डब्बा खोलता हूँ और चाय दम देता हूँ, फिर जामो-सुराही को मेज पर दाहिनी तरफ जगह दूँगा, कलम-कागज को बाईं तरफ रखूँगा, फिर कुरसी पर बैठ जाऊँगा और फिर कुछ न पूछिये कि, किस आलम में पहुँच जाऊँगा ! किसी बादा-गुसार (शराबी) ने 'शेम्पेन' और 'बोर्डो' के सैकड़ों साल पुराने अर्क में भी वह कैफो-सुरूर (नशा) कहाँ पाया होगा, जो चाय के इस दौरे-सुबहगाही (सुबह के वक्त) का हर घूँट मेरे लिए मुहय्या कर देता है ?

फिर दूसरा दौर दोपहर का होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाखों जानते हैं कि

'एनासिन'

सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों के दर्द से

फ़ौरन आराम के लिए बेहतर है

क्योंकि इसमें चार दवाइयाँ हैं

एक पैकट १२ नये पैसे

चिकित्साशास्त्र विशेषज्ञ बताते हैं कि 'एनासिन' विधिसे जो कि दर्द पर बहुत असरदार कई दवाइयों का सही परिमाण युक्त फ़ार्मूला है–दूसरे किसी भी एक दवाईवाले फ़ार्मूले से कहीं फ़ौरन...बिनाहानि...और अचूक आराम मिलता है। याद रखिये। 'एनासिन' में डाक्टर के नुस्खे जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक मिश्रण है। इसी लिए सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुखार, दान्तदर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम के लिए 'एनासिन' ही बेहतर है। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD. REGISTERED USER

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिखते-लिखते थक जाता हूँ, तो थोड़ी देर के लिए लेट जाता हूँ। फिर उठता हूँ, गुस्ल करता हूँ, चाय का दौर ताजा करता हूँ और ताजादम होकर फिर अपनी मशगूलियत में गुम हो जाता हूँ। इस वक्त आसमान की बेदाग नीलगूँनी (नीलापन) और सूरज की बेनकाब दरखशंदगी (चमक) का जी भर के नज्जारा करूँगा और रिवाके-दिल (दिल की कोठरी) का एक-एक दरीचा खोल दूँगा। तबीयत के गोशे-अफ्सुरदगी (उदासी के कोने) से कितने ही गुबार-आलूदा (धुँधले) क्यों न हों, आसमान की कुशादा-पेशानी (खुला माथा) और सूरज की चमकती हुई खंदारूई (हँसमुखपन) देख कर मुमकिन नहीं कि, रोशन न हो जायें।

लोग हमेशा इस खोज में लगे रहते हैं कि, जिंदगी को बड़े-बड़े कामों के लिए काम में लायें, लेकिन नहीं जानते कि, यहाँ एक सबसे बड़ा काम खुद जिंदगी हुई, यानी जिंदगी को हँसी-खुशी काट देना! यहाँ इससे ज्यादा आसान कोई काम न हुआ कि, मर जाइये और इससे ज्यादा मुश्किल काम कोई न हुआ कि, जिंदा रहिये। जिसने यह मुश्किल हल कर ली, उसने जिंदगी का सबसे बड़ा काम अंजाम दे दिया।

नासेहम गुफ़्त कि जुज़ ग़म चे
हुनर दारद इश्क़?
गुफ़्तम, "ऐ ख्वाजा-ए-आक़िल,
हुनरे बेहतर अज़ीं"।

—समझानेवाले ने मुझे समझाया कि, इश्क को छोड़ो, इसमें सिवाय गम के और क्या खूबी है? मैंने कहा कि, अच्छा, आप मुझे वह खूबी तो बतायें, जो इस खूबी यानी गम से बेहतर हो!

चीनियों ने जिंदगी के मसले को दूसरी कौमों से बेहतर समझा था। एक पुराने चीनी मकौले (कहावत) में सवाल किया गया—"सबसे ज्यादा दानिशमंद (अक्लमंद) आदमी कौन है?" फिर जवाब दिया है—"जो सबसे ज्यादा खुश रहता है।" इससे हम चीनी फलसफा-ए-जिंदगी का जाविया-ए-निगाह (दृष्टिकोण) मालूम कर सकते हैं। और, इसमें शक नहीं कि, यह बिल्कुल सच है।

न हर दरख़्त तहम्मुल
कुनद जफ़ा-ए-ख़िज़ाँ

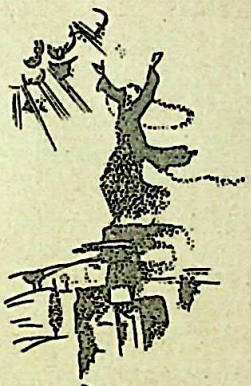

रे मानव

भोगने को होते तैयार
बहुत-से वर्तमान संसार,
पहुँचने को आगामी स्वर्ग
बहुत-से सहते कष्ट अपार;
अंधेरे की चढ़ कर मीनार
मुअज्जन यह करता आह्वान—
"रहेगा दोनों ओर निराश,
भटक मत, रे मानव नादान!"

—बच्चन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दान्तों के डाक्टर फोरहन्स टूथपेस्ट की सिफारिश क्यों करते हैं, इसके वैज्ञानिक कारण

फोरहन्स टूथपेस्ट

१ फोरहन्स से मसूढ़े स्वस्थ रहते हैं। दान्तों के डाक्टर आपको यह बतायेंगे कि यदि मसूढ़े रोगी व अस्वस्थ हैं तो आपके दान्त गिर जायेंगे। खूनी, नर्म, जलनेवाले व कमजोर मसूढ़ों पर फोरहन्स टूथपेस्ट धीरे-धीरे मलनी चाहिए। वे जल्द ही पहले जैसे मजबूत व स्वस्थ हो जायेंगे। फोरहन्स ही एकमात्र ऐसी टूथपेस्ट है जिसमें डा. आर. जे. फोरहन की पायोरियानाशक खास पौष्टिक दवा मौजूद है। यही वजह है कि वह मसूढ़ों की बीमारियों से होनेवाले नुकसान से आपकी बेहतर रक्षा करती है।

२ फोरहन्स दान्त गलने नहीं देती : रोजाना फोरहन्स टूथपेस्ट से दान्त साफ करने पर दान्तों को गलाने वाले रोगाणु प्रभावशाली ढंग से नष्ट होते हैं क्योंकि इसमें विशेष पौष्टिक दवा है। भारत में हाल ही में हुई फोरहन्स प्रतियोगितामें ४५ से ९३ साल की उम्रवाले प्रतियोगी भी शामिल हुए थे जिनके सारे दान्त अब भी मजबूत व स्वस्थ हैं। उन्होंने यही बताया कि रोजाना फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने से उन्हें यह लाभ हुआ।

३ फोरहन्स दान्तों के कीमती रंग को खराब नहीं होने देती : फोरहन्स टूथपेस्ट इतनी नर्म है जैसे कि मलाई जो दान्तों के रंग को खराब किये बिना उन्हें प्राकृतिक रूप में चमकाती है। दान्तों के नियमित आरोग्य से ही आपकी मुस्कान चमकदार बन सकती है। रोजाना फोरहन्स टूथपेस्ट ही इस्तेमाल कीजिये।

४ फोरहन्स मुंह के रोगाणुओं का नाश करती है : फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने से मुंह बिल्कुल स्वच्छ होता है–मुंह से बदबू भी नहीं आयेगी। यह न भूलिये कि सचमुच के साफ सांस के लिए जीभ व तालुका स्वच्छ रहना जरूरी है। इसलिए थोडी-सी फोरहन्स अपनी जीभ पर रखिये व टूथब्रश या उंगली से उसे हल्के-हल्के साफ कीजिये; फोरहन्स टूथपेस्ट दान्तों में फंसे हुए भोजन के सारे कणों व रोगाणुओं को फौरन हटा देगी।

दन्तचिकित्सक द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

H. 115

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग़ुलामे-हिम्मते-सर्वम कि
ई कदम दारद।

—हर कोई पेड़ खिजाँ के जुल्म वर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं सर्व की हिम्मत सराहता हूँ कि, उसके कदम नहीं डगमगाते।

अगर आपने हर हाल में खुश रहने का हुनर सीख लिया है, तो यकीन कीजिये कि, जिंदगी का सबसे बड़ा काम सीख लिया। अब इसके बाद इस सवाल की गुंजाइश ही नहीं रही कि, आपने और क्या-क्या सीखा? खुद भी खुश रहिये और दूसरों से भी कहते रहिये कि, अपने चेहरों को गमगीन न बनायें।

'आँद्रे जीद' की एक बात मुझे बहुत पसंद आयी—"खुश रहना सिर्फ एक तबई-एहतियाज (प्राकृतिक आवश्यकता) ही नहीं; बल्कि एक अख्लाकी (नैतिक) जिम्मेदारी है।" यानी हमारी हर हालत की छूत दूसरों को भी लगती है; इसलिए हमारा अख्लाकी फर्ज हुआ कि, खुद अफ्सुरदा-खातिर (म्लान-मुख) होकर दूसरों को अफ्सुरदा-खातिर न बनायें।

अफ़्सुरदा दिल अफ़्सुरदा कुनद
अनजुमने रा।

—जिसका दिल दुःखी होता है, वह पूरी महफिल को दुःखी बना देता है।

हमारी जिंदगी एक आईनाखाना है। यहाँ हर चेहरे का अक्स बयक वक्त सैकड़ों आईनों में पड़ने लगता है। अगर एक चेहरे पर भी गुंबार आ जायेगा, तो सैकड़ों चेहरे गुबार आलूद (गंदे) हो जायेंगे। हम में से हर फर्द (व्यक्ति) की जिंदगी सिर्फ एक इन्फरादी वाकेआ (व्यक्तिगत घटना) नहीं, वह पूरे मजमूए (समूह) का हादसा (घटना) है। दरिया की सतह पर एक लहर उठती है; लेकिन उसी एक लहर से बेशुमार लहरें बनती चली जाती हैं। यहाँ कोई बात भी सिर्फ हमारी नहीं होती। हम जो-कुछ अपने लिए करते हैं, उसमें दूसरों का भी हिस्सा होता है। हमारी कोई खुशी भी हमें खुश नहीं कर सकेगी, अगर हमारे चारों तरफ गमगीन चेहरे इकट्ठे हो जायें। हम खुद-खुश रह कर दूसरों को खुश करते हैं और दूसरों को खुश देख कर खुद-खुश होने लगते हैं। इसी हकीकत को 'उर्फी' ने इस तरह कहा था—

ब दीदारे-तो दिल शादंद
बा हम दोस्ताने तो।
तरा हम शादमाँ ख्वाहम
चो रूये-दोस्ताँ बीनी।

—तुझे देख कर दोस्त खुश होते हैं। मैं चाहता हूँ कि, तेरा चेहरा भी उनके खुश-खुश चेहरे देख कर खिल जाया करे।

यह अजीब बात है कि, मजहब (धर्म), फलसफा (दर्शन) और अख्लाक (नीति-शास्त्र), तीनों ने जिंदगी का मस्ला हल करना चाहा और तीनों में खुद जिंदगी के खिलाफ रुजहान पैदा हो गया। आम तौर पर समझा जाता है कि, आदमी जितना ज्यादा बुझा दिल और सूखा चेहरा लेकर फिरेगा, उतना ही ज्यादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उफ़—चौंधानेवाली रोशनी...

वाह ! आर्जेण्टा
बिना चकाचौंध के साफ़ रोशनी देता है !

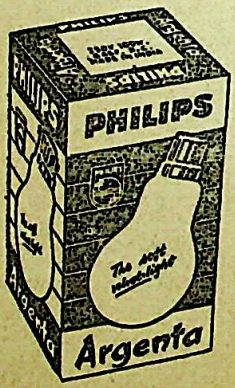

चाँदनी के समान मृदुल, फिर भी दिन की तरह साफ़ रोशनी देनेवाले परत चढ़े आर्जेण्टा बल्ब घर के लिए और कामकाज के स्थान के लिए सर्वोत्तम हैं। आज ही एक आर्जेण्टा बल्ब लीजिये और फिर देखिये कि उसकी रोशनी आपकी आँखों के लिए कितनी सुखद और आपके दिमाग़ के लिए कितनी आरामदेह रहती है।

उत्तम फ़िलिप्स बल्ब
सही दामों में ही ख़रीदिये

अपने दूकानदार से फ़िलिप्स की मूल्य-सूची दिखाने के लिए कहिये

PHILIPS

फ़िलिप्स इण्डिया लिमिटेड

PH 5766

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मजहबी, फलसफी और अख्लाकी किस्म का होगा। गोया इल्म और तकद्दुस (पवित्रता), दोनों के लिए यहाँ मातमी जिंदगी जरूरी हुई! मजहब की दुनिया में तो जुहदे-खुश्क (रूखी-सूखी परहेज-गारी) और तवा-ए-खुश्क (रूखी तबी-यत) की इतनी गर्म बाजारी हुई कि, अब जुहद-मिजाजी और हक-आगाही (धार्मिकता) के साथ किसी हँसते हुए चेहरे का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

यह सच है कि, जिन मसलों को दुनिया सैकड़ों बरसों की काविशों (प्रयत्नों) से भी हल न कर सकी, आज हम उन्हें अपनी खुश-तबई (खुशमिजाजी) के चंद लतीफों से हल नहीं कर दे सकते। ताहम् यह मानना पड़ेगा कि, एक हकीकत से इनकार नहीं किया जा सकता। एक फलसफी, एक जाहिद (परहेजगार), एक साधु का खुश्क चेहरा बना कर हम इस मुरक्के (अलबम) में खप नहीं सकते, जो नक्काशे-फितरत (प्रकृति के कलाकार) के मूकलम (चित्रकार की तूलिका) ने यहाँ खींच दिया है, जिस मुरक्के में सूरज की चमकती हुई पेशानी, चाँद का हँसता हुआ चेहरा, सितारों की चश्मक (चमक), दरख्तों का रक्स, परिंदों का नगमा (गीत), आबे-रवाँ का तरन्नुम (बहते पानी का संगीत) और फूलों की रंगीन अदाएँ अपनी-अपनी जलवातराजियाँ रखती हों, उसमें हम एक बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ जगह पाने के यकीनन मुस्तहिक (हकदार) नहीं हो सकते। फितरत (प्रकृति) की इस बज्मे-निशात (राग-रंग) में तो वही जिंदगी सज सकती है, जो एक दहकता हुआ दिल पहलू में और चमकती हुई पेशानी चेहरे पर रखती हो, जो चाँदनी में चाँद की तरह निखर कर, सितारों की छाँव में सितारों की तरह चमक कर, फूलों की सफ (पंक्ति) में फूलों की तरह खिल कर अपनी जगह निकाल सकती हो। दरअसल, जिंदगी में मातम नहीं, खुश-तबई जरूरी है।

★

अहम्

अहम् को लेकर मनुष्य के व्यक्तित्व के नित-नवीन मूल्यांकन हो रहे हैं—रेंडाल्फ इस परम्परा में सबसे ताजा है, जिसने फिर अहम् के निरोध का घोष फूँका है। मौलाना आजाद का सिद्धांत बिल्कुल निराला है। वे निरोध के बजाय अहम् की उर्ध्वगति के पक्षपाती रहे हैं। इस लेख में उन्होंने अहम् की क्रियाशक्ति को कई रूपों में समझाते हुए, इसी मत का प्रतिपादन किया है।

★

एक अदीब (साहित्यकार), एक शायर, एक मुसव्विर (चित्रकार) और एक अहले-कलम (लेखक) की अनानियत (अहम्-तत्व) क्या है? एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM-0

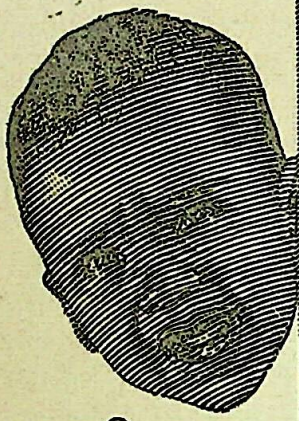

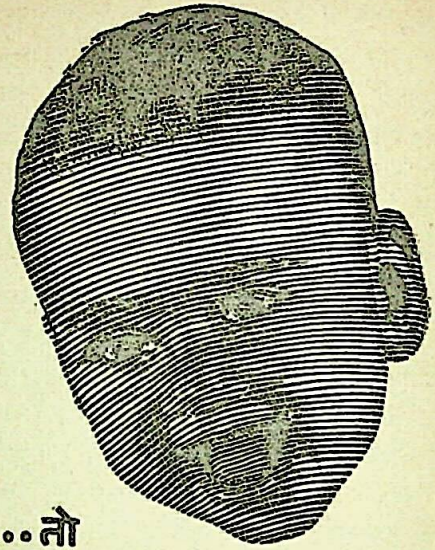

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

...तो
मॅनर्स ग्राइप
मिक्श्चर दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगानें के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण है।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आम जाविया-ए-निगाह (दृष्टिकोण) से देखिये, तो आपको साफ दिखायी देगा कि, यह अनानियत (अहम्-तत्व) असल में इसके सिवा और कुछ नहीं है कि, उसकी फिक्री (चिंतन-सम्बंधी) इन्फरादियत (व्यक्तित्व) का एक कुदरती जोश है, जिसे वह दबा नहीं सकता। अगर दबाना चाहता है, तो और ज्यादा उभरने लगता है। मसलन मीर 'अनीस' ने कहा था—

लगा रहा हूँ मज़ामीने-नौ के फिर अंबार,
खबर करो मिरे ख़र्मन के खोशाचीनों को।

—मैं नये-नये मजमूनों का ढेर लगा रहा हूँ। जो लोग मेरे खयालों की चोरी करते हैं, उन्हें इसकी सूचना दे दो।

यह सिर्फ शायराना तअल्ली (गर्वोक्ति) न थी। यह उनकी पुरजोश इन्फरादियत (व्यक्तित्व) थी, जो बेइख्तियार चीख रही थी।

लेकिन साथ ही हम देखते हैं कि, अनानियत (अहम्-तत्व) का यह शऊर कुछ इस किस्म का हुआ है कि, हर इन्फरादी अनानियत (व्यक्तिगत अहम्-तत्व) अपने अंदरूनी आईने (आंतरिक शीशे) में जो अक्स डालती है, बैरूनी आईने (बाह्य शीशे) में उसका अक्स बिल्कुल उल्टा पड़ने लगता ह। अंदर के आईने में एक बड़ा वजूद दिखायी देता है और बाहर के तमाम आईनों में एक छोटी-से-छोटी शक्ल उभरने लगती है।

यहीं से हर लिखनेवाले की, जो खुद अपने बारे में कुछ कहना चाहता है, सारी मुश्किलें उभरनी शुरू हो जाती हैं। वह जब कि खुद अपने अक्स को, जो उसके अंदरूनी आईने में पड़ रहा है, झुठला नहीं सकता, तो अचानक क्या देखता है कि, बाहर के तमाम आईने उसे झुठला रहे हैं। जो 'मैं' खुद उसके लिए बेहद अहमियत (महत्व) रखती है, वही दूसरों की निगाह में बिल्कुल गैर-अहम् (महत्वहीन) हो रही है। वह अपने-आपको एक ऐसी हालत में महसूस करने लगता है, जैसे एक मुसव्विर तस्वीर उतारने के लिए मूकलम (तूलिका) उठाये; मगर उसे यकीन हो कि, मैं कितनी ही मुसव्विराना कुव्वत काम में लाऊँ, मेरी निगाह के सिवा और कोई निगाह इस तस्वीर की दिलावेजी (सौंदर्य) को नहीं देख सकेगी।

आईना नक्श-बंदे तलिस्मे-खयाल नेस्त।
तस्वीरे-खुद बलौहे-दिगर मीकशेम मा।

—आईने में खयालों की तस्वीर नहीं खींची जा सकती; इसलिए मैंने अपनी तस्वीर एक और ही तख्ती पर खींची है।

इस मुश्किल से सिर्फ कुछ ही लिखनेवाले अपना दामन बचा सकते थे और बचा सके हैं। यह वह लोग हैं, जो अपनी अनानियत (अहम्-तत्व) को बगैर किसी नुमायशी वजा (दिखावटी 'पोज') में सजाये, दूसरों के सामने आने की सलाहियत (योग्यता) रखते थे। दुनिया के सामने उनकी अनानियत आयी; मगर इस तरह आयी, जैसे एक बेतकल्लुफ आदमी बगैर सज-धज बनाये सामने आ खड़ा हो। यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाइक्स पीक पर्वत चढ़ते समय

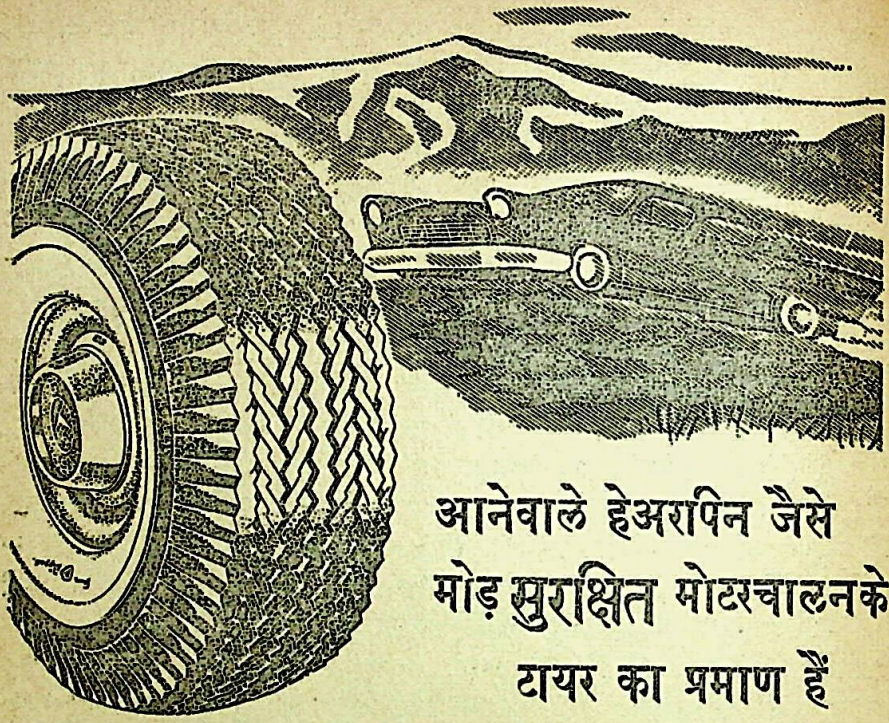

आनेवाले हेअरपिन जैसे मोड़ सुरक्षित मोटरचालनके टायर का प्रमाण हैं

पाइक्स पीक की चढ़ाई की रेस में, जब कि मोटरों को हेअरपिन जैसे मोड़वाले मिट्टी व कंकड़ों से भरे मार्ग पर होड़ लगानी पड़ती है, लगातार २९ वीं बार फायरस्टोन टायरोंवाली मोटरें ही विजयी हुईं। जिस निर्माण-कुशलता व किस्म संबंधी नियंत्रण से ये टायर बने हैं वे ही आपकी कार के फायरस्टोन टायरों को उतना ही अतिरिक्त सुरक्षित व विश्वसनीय बनाते हैं।

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यूबरहित या ट्यूबसहित

टायर जिससे मानसिक शांति बनी रहती है।

J. 378

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात कि, आदमी बगैर किसी बनावट के अपनी वाकई सूरत में सामने आ गया—नमूदे-हकीकत (असलियत के प्राकट्य) की एक खास दिलकशी रखती है और इसलिए दुनिया की निगाहों को बेइख्तियार अपनी तरफ खींच लेती है। जो खास-खास अदीब (साहित्यकार) ऐसा कर सके, उनकी 'मैं' खुद उनके लिए कितनी ही बड़ी और दूसरों के लिए कितनी ही छोटी बाके हुई हो ; लेकिन दुनिया उसकी दिलपजीरी (सुंदरम्) से इनकार न कर सकी। दुनिया को उनकी अनानियत की मिकदार नापने की मोहलत ही नहीं मिली, वह उसकी बेतकल्लुफाना वाकेयात देख कर बेखुद हो गयी !

एक आदमी जब अपनी तस्वीर उतरवाना चाहता है, तो खुद उसे इसका शऊर हो या न हो ; लेकिन इस ख्वाहिश की तह में उसकी अनानियत की एक धीमी आवाज जरूर बोलने लगती है। तस्वीर उतरवाने की मुख्तलिफ हालतें होती हैं। एक हालत वह है कि, जिसे मुसव्विराना वजा (पोज) से ताबीर किया जाता (संज्ञा दी जाती) है—यानी तस्वीर उतरवाने के लिए एक खास तरह का अंदाज तकल्लुफ के साथ इख्तियार कर लेना। एक माहिर मुसव्विर जानता है कि, किस चेहरे और जिस्म की मुसव्विराना वजा कैसी होनी चाहिए। वह जब तक बैठने की जगह और वजा ठीक नहीं कर लेगा, तस्वीर नहीं उतारेगा। सौ में निन्यानबे आदमियों की ख्वाहिश यही होती है कि, अच्छी और सजी हुई वजा में तस्वीर उतरवायें। लेकिन फर्ज कीजिये कि, एक आदमी बगैर किसी तैयारी और बावजा अंदाज के कैमरे के सामने आ गया और इसी हालत में तस्वीर उतर आयी, तो ऐसी तस्वीर किस निगाह से देखी जायेगी ? ऐसी तस्वीर महज इसलिए कि, बेसाख्तगी (बिला बनावट के) और वाकैयत (वास्तविक रूप) की ठीक-ठीक ताबीर (बिम्ब) पेश करती है, यकीनन एक खास कद्रो-कीमत पैदा कर लेगी और जिसके सामने जायेगी, वह यह नहीं देखेगा कि, जिसकी तस्वीर है, वह खुद कैसा है ? वह इसमें खो जायेगा कि, खुद तस्वीर कितनी बेसाख्ता है !

इसी तरह यह भी समझ लीजिये कि, जो लिखनेवाले अपनी अनानियत की बेसाख्ता (बिला बनावट के) तस्वीर खींच देते हैं, वह इस मामले की सारी मुश्किलों पर काबू पा जाते हैं। उन्होंने अपनी तस्वीर खुद अपने कलम से खींची, यह बात उसकी दिलावेजी में रुकावट न बन सकी ; क्योंकि तस्वीर बेतकल्लुफ और बेसाख्ता खिंची ।

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि, इंसान की दूसरी महसूसात की तरह उसकी इन्फरादियत (व्यक्तित्व) भी मुख्तलिफ तरह की हालतें रखती है। कभी वह सोयी रहती है, कभी जाग उठती है, कभी उठ कर बैठ जाती है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

For that Fascinating look

अन्य विशेषताएं:
साटन, क्रेप,
शानटूंग्स, प्लेन
तथा प्रिन्टेड,
बुश क्लाथ, साटन
और क्रेप फ्लावर
लाइनिंग क्लाथ,
टेपस्ट्री।

मोदी नाइलोन साड़ियां

- अधिकाधिक नवीन रंग तथा आकर्षक प्रिंट्स।
- सर्वोत्तम आयात किये गये माल से स्थायी चमकीले फिनिश में तुलनीय हैं।
- घर में आसानी से धोई जा सकती है तथा श्रिंक नहीं होती।

मोदी रेयन एण्ड सिल्क मिल्स, मोदीनगर (यू० पी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर कभी जोरो-शोर से उछलने लगती है। इंसान की सारी ताकतों की तरह वह भी नश्व-नुमा (जन्म और अभिवर्द्धन) की मोहताज हुई। जिस तरह इंसान का जहन-व-इदराक (अनुभूति) एक-से दर्जे का नहीं होता, उसी तरह इन्फरादियत का जोश भी हर देग में एक ही तरह नहीं उवलता। दर्जों का यही फर्क है, जो हम तमाम अदीवों, शायरों, मुसव्विरों और मौसीकी-नवाजों (संगीतज्ञों) में पाते हैं। कुछ की इन्फरादियत (व्यक्तित्व) वोलती है, मगर धीमे सुरों में और कुछ की इन्फरादियत इतनी पुरजोर होती है कि, जव कभी वोलेगी, सारा गिर्दो-पेश (आस-पास) गूँज उठेगा। ऐसे आदमी अपनी 'मैं' का जोश किसी तरह नहीं दवा सकते। उनकी खामोशी भी चीखनेवाली और उनका सुकून (शांति) भी तड़पनेवाला होता है। उनकी इन्फरादियत दवाने से और ज्यादा उछलने लगेगी। ऐसे आदमी जव कभी 'मैं' वोलते हैं, तो उसमें इरादे, बनावट और नुमायश का कोई दखल नहीं होता। वह असल हाल की एक वेइख्ति-याराना चीख होती है।

लेकिन हर कानून की तरह यहाँ भी मुस्तस्तियात (विकल्प) है। हमें तस्लीम करना पड़ता है कि, कभी-कभी ऐसी-ऐसी शख्सियतें भी दुनिया के स्टेज पर नमूदार (प्रकट) हो जाती हैं, जिनकी अनानियत की मिक्दार इजाफी (वाद में बढ़ायी गयी) नहीं होती ; वल्कि मुल्लक (अपने में पूर्ण) नौईयत (अस्तित्व) रखती है। यानी खुद उन्हीं की अनानियत जितनी वड़ी दिखायी देती है, उतनी ही वड़ी दूसरे भी देखने लगते हैं। उनकी अनानियत की परछाई जव कभी पड़ेगी, तो ख्वाह अंदर का आईना हो, ख्वाह वाहर का, हमेशा एक-सी ही दिखायी देगी।

ऐसे खासुल-ख्वास अफ्राद (व्यक्ति) को आम मेयारेनजर (सर्वसाधारण के मापदंड) से अलग रखना पड़ेगा। ऐसे लोग फिक्रो-नजर (चिंतन और पर्यवेक्षण) की आम तराजुओं में नहीं तोले जा सकते। मिसाल के लिए, कुछ शख्सियतों को ले लीजिए। सेंट आगस्टाइन, रूसो, स्ट्रेंडवर्ग, टाल्सटाय, अनातोल फ्रांस, आंद्रे जीद, इनके लिखे हुए खुद के सवानेह छः मुख्तलिफ तरह की तस्वीरें हैं और वेसाख्ता और वाकई हैं। मश्रिकी (पूर्वी) शख्सियतों में गजाली, इब्ने-खलदून, वावर, जहाँगीर और मुल्ला अब्दुल-कादिर वदायूनी के खुद-नविश्त हालात सामने लाइए। हम कितनी ही मुखालिफाना निगाहों से इन्हें पढ़ें ; लेकिन इनकी दिलावेजी (सुंदरम्) से इनकार नहीं कर सकते।

वदायूनी का मामला औरों से अलग है। हमें उसकी अनानियत वहुत छोटी दिखायी देती है; फिर भी हम अपनी निगाहों को उसकी तरफ उठने से रोक नहीं सकते। उसे पढ़ते हैं और जी लगा कर पढ़ते हैं। यह वही वात हुई, जो हम अभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल पियर्स ही एक ऐसा साबुन है, जिस की शुद्धता आप अपनी आंखों से देख सकते हैं!

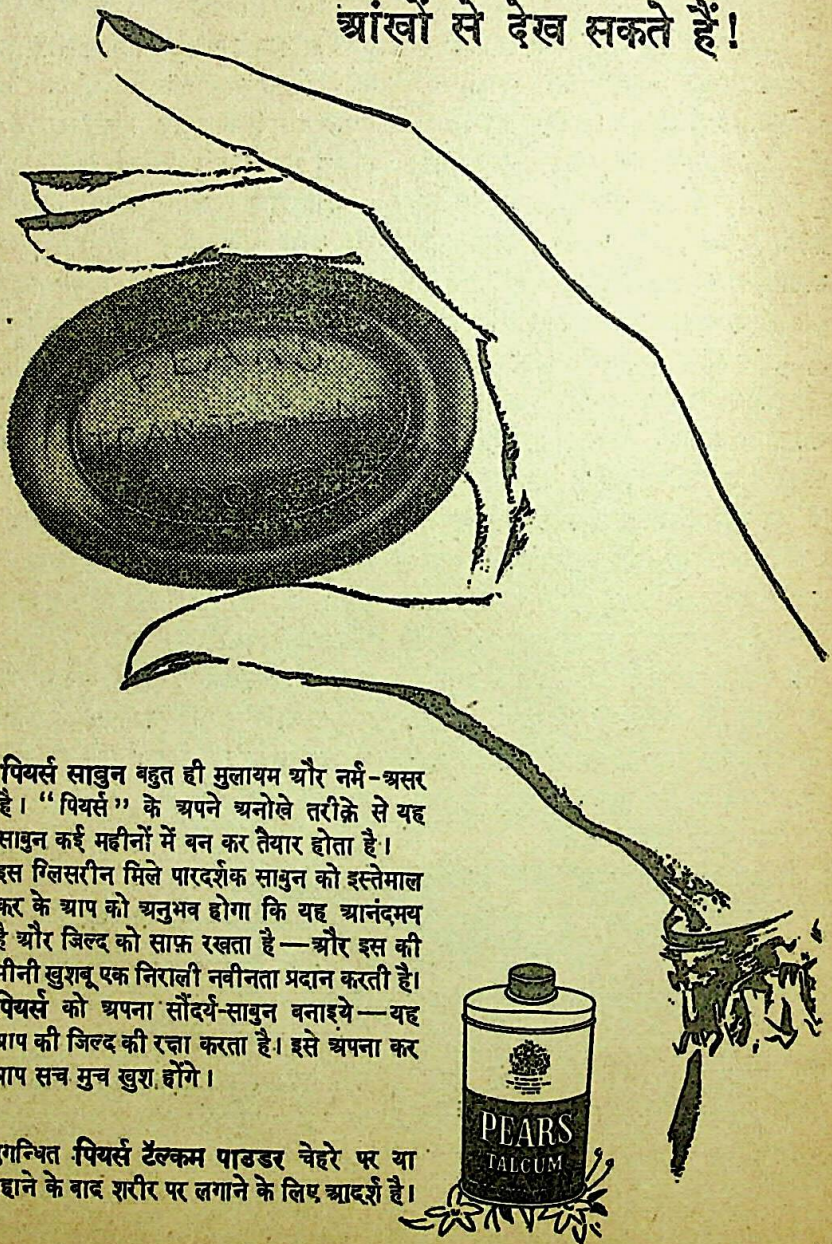

पियर्स साबुन बहुत ही मुलायम और नर्म-असर है। "पियर्स" के अपने अनोखे तरीक़े से यह साबुन कई महीनों में बन कर तैयार होता है। इस ग्लिसरीन मिले पारदर्शक साबुन को इस्तेमाल कर के आप को अनुभव होगा कि यह आनंदमय है और जिल्द को साफ़ रखता है—और इस की भीनी खुशबू एक निराली नवीनता प्रदान करती है। **पियर्स** को अपना सौंदर्य-साबुन बनाइये—यह आप की जिल्द की रक्षा करता है। इसे अपना कर आप सच मुच खुश होंगे।

सुगन्धित **पियर्स टैल्कम पाउडर** चेहरे पर या नहाने के बाद शरीर पर लगाने के लिए आदर्श है।

PSP. 7-50-55 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई, ने ए. ऐन्ड एफ़. पियर्स लि०, लन्दन, के लिये भारत में बनाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी देर पहले सोच रहे थे। जिस शख्स की यह तस्वीर है, वह खुद खूबसूरत नहीं ; लेकिन उसकी तस्वीर एक तस्वीर की हैसियत से बहुत खूबसूरत है !

टाल्सटाय उन लोगों में से था, जिनको उनकी अनानियत जितनी बड़ी दिखायी दी, दुनिया ने भी उसे उतना ही बड़ा देखा। पिछली सदी के आखिर और इस सदी के शुरू में शायद ही कोई लिखनेवाला इस खुदएतमादी (आत्म-विश्वास) के साथ 'मैं' बोल सका, जिस तरह यह अजीबो-गरीब रूसी बोलता रहा। उसकी लिखी हुई तमाम चीजों में उसकी अनानियत बगैर किसी नकाब के दुनिया के सामने आयी और दुनिया उन्हें आलमगीर नविश्तों (आलेखन) के साथ जमा करती रही। उसकी खुदनविश्त सवानेह (आत्मचरित) उसकी 'वार ऐंड पीस' से कम दिलपजीर नहीं। जमाना उसकी कलमकारियों का रंग-रोगन अभी तक मद्धम नहीं कर सका। पिछली जंग के जमाने में, लोग 'वार ऐंड पीस' ढूँढ़ने लगे थे और अब फिर ढूँढ़ रहे हैं।

पिछली सदी के आखिरी और इस सदी के शुरू में खुदनविश्त सवानेह-उमरियाँ (आत्मकथाएँ) बड़ी कसरत के साथ लिखी गयीं। कहा जा सकता है कि, उस जमाने के हर चौथे मुसन्निफ ने जरूरी समझा कि, अपनी गुजरी हुई जिंदगी को आखिरी उम्र में फिर एक बार दोहरा ले। दुनिया के कुतबखानों (पुस्तकालयों) ने इन सबको अपनी आलमारियों में जगह दी है ; लेकिन दुनिया के दिमागों में बहुत कम के लिए जगह निकल सकी।

★

तत्वानुभूति

जीव, जगत् और ईश्वर के प्रसंग में इस्लाम का भी अपना निर्धारित दृष्टिकोण है। कुरान को मथ कर मौलाना आज़ाद ने इस दृष्टिकोण को नीचे की पंक्तियों में बड़े हृदयग्राही ढंग से स्पष्ट किया है। औपनिषदिक तत्वज्ञान के साथ मौलाना साहेब के ये निष्कर्ष मननीय हैं।

★

यह क्या बात है कि, इंसान खुदा के उस तसव्वुर (रूप) पर कनाअत (संतोष) न कर सका, जो गैरशख्सी (अव्यक्त) और अक्ल से बाहर की चीज था। और, किसी-न-किसी शक्ल में अपने फिक्रो-अहसासात (चिंतन और अनुभूति) के मुताबिक एक शख्सी तसव्वुर (व्यक्त प्रतीक) पैदा करता रहा? मैं 'शख्सी तसव्वुर' यहाँ इस मानी में बोल रहा हूँ, जिस मानी में आजकल 'पर्सनल गाड' का लफ्ज बोला जाता है। शख्सी तसव्वुर के मुख्तलिफ दर्जे हैं। इब्तदाई (प्रारम्भिक) दर्जा तो शख्से-महज (मात्र इकाई) का होता है। लेकिन फिर आगे चल कर यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रवरूप मसाले

बचत करते हैं
ज्यादा देर टिकते हैं
स्वाद कभी नष्ट नहीं होता

द्रवरूप मसाले बुकनी किये हुये मसालों से हर प्रकार अच्छे हैं—स्वाद में उत्तम, उपयोग में सरल और आहार में श्रेष्ठ। बुकनी किये मसालों का प्रयोग करने का प्रचलन अब नहीं रहा। चतुर गृहिणी अब द्रवरूप मसालों का आधुनिक उपयोग करती है।

सायबा इंडस्ट्रिज़ बम्बई-२८

प्रमुख वितरक
बम्बई राज्य, मध्य प्रदेश, राजस्थान, आंध्र प्रदेश और विदेश में निर्याति के लिए

अकबरअली इब्राहिमजी
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१
फोन २५३९२१

मसाला के प्रयोग का आधुनिक ढंग

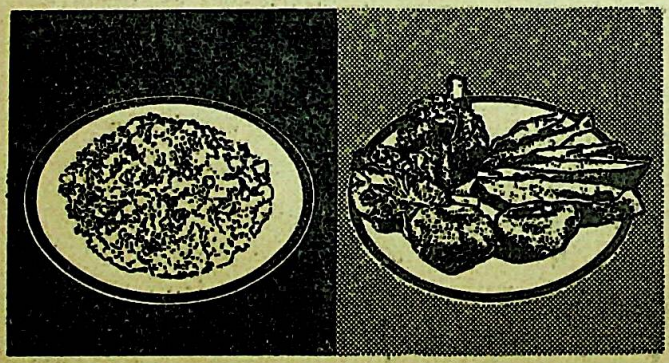

Shilpi S. 547

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शख्सियत खास-खास सिफतों (गुणों) का जामा (लिबास) पहन लेती है। सवाल यह है कि, यह जामा (लिबास) नागजीर (अपरिहार्य) क्यों हुआ? इसकी वजह भी यही है कि, इंसान को फितरत (प्रकृति) की बलंदी के एक नसबुलऐन (चरम लक्ष्य) की जरूरत है और इस जरूरत की प्यास बगैर एक मुशख्खस (व्यक्त) तसव्वर (प्रतीक) के बुझ नहीं सकती। हकीकत कुछ भी हो; लेकिन यह तसव्वर जब कभी उसके सामने आयेगा, तो तशख्खुस (व्यक्तिमयता) की एक नकाब चेहरे पर जरूर डाल लेगा। यह नकाब कभी भारी रही, कभी हल्की हो गयी, कभी डरानेवाली रही, कभी लुभानेवाली बन गयी, कभी चेहरे से उतरी, कभी नहीं और यहीं से हमारे दीदा-ए-सूरत-परस्त (रूप को ढूँढ़नेवाली नजर) की सारी दरमाँदगियाँ (थकावटें) शुरू हो गयीं।

बर चेहरा-ए-हक़ीक़त अगर माँद परदाए,
जुर्मे-निगाहे-दीदा-ए-सूरत परस्ते-मास्त।

—अगर सच्चाई के चेहरे पर परदा पड़ गया है, तो यह मेरी निगाह की खता है; जिसे सूरतें पूजने की आदत है।

दुनिया में 'वहदतुल-वजूद' (सर्वं खल्विदं ब्रह्म) के अकीदे का सबसे कदीम सर-चश्मा (सोता) हिंदुस्तान है, और गालिबन यूनान और सिकंदरिया में भी यहीं से यह अकीदा (विश्वास) पहुँचा। यह अकीदा (विश्वास) हकीकत (सत्) के तसव्वुर (बिम्ब) को हर तरह के तह-बुरी तशख्खुसात (प्रतीकात्मकता) से पाक (पृथक्) करके एक कामिले-मुत्लक (पूर्ण) तसव्वुर (प्रतीक) कायम कर देता है। इस तसव्वुर के साथ सिफतें (गुण) किसी शक्ल में नहीं आ सकतीं इस अकीदे (विश्वास) को माननेवाला उसकी जात के बारे में सिवाय इसके कि 'है', और कुछ नहीं कह सकता—यहाँ तक कि, इशारा भी नहीं कर सकता; क्योंकि अगर हम अपने इशारात की परछाईं भी इस पर पड़ने देते हैं, तो जाते-मुत्लक (सत् की पूर्णता), मुत्लक (पूर्ण) नहीं रहती, तशख्खुस (व्यक्तिमयता) और हद्दूद (सीमा) के गुबार से आलूदा (गंदी) हो जाती है।

यही वजह है कि, हिंदुस्तान के उप-निषदों ने नफी-ए-सिफात (निर्गुण ब्रह्म) की राह इख्तियार की। लेकिन फिर देखिये, इसी हिंदुस्तान को अपनी प्यास इस तरह बुझानी पड़ी कि, न सिर्फ 'ब्रह्म' जातेमुल्लक को ईश्वर, जाते-मुत्तसिफ-व-मुशख्खस (सगुण एवं व्यक्त) की नमूद (सूरत) में देखने लगे; बल्कि पत्थर की मूर्तियाँ भी तराश कर सामने रख लीं कि, दिल के अटकाव का कोई ठिकाना तो सामने रहे—

करे क्या काबे में जो
सिरें बुतखाने से आगाह है।
यहाँ तो कोई सूरत भी है,
वाँ अल्लाह-ही-अल्लाह है॥

—जिसे मंदिर के चाल-चलन से अच्छी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मलमल खरीदना हो तो

हमेशा

"गोल्डन ब्रूच"
या
"हाई सोसाइटी"

उत्कृष्ट मलमल
खरीदिये

दी फिनक्वे ग्रुप की मिलें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह जानकारी है, वह काबे में जाकर क्या करेगा। मंदिर में तो एक सूरत भी सामने नजर आती है; पर वहाँ तो केवल अल्लाह-ही-अल्लाह है।

यहूदियों ने खुदा को एक काहिरो-जाबिर (क्रुद्ध) शहंशाह की सूरत में देखा और इस्राइल के घराने से उसका रिश्ता ऐसा हुआ, जैसा एक गैरतदार (शीलकामी) शौहर का अपनी चहीती बीवी के साथ होता है। शौहर अपनी बीवी की तमाम खताएँ माफ कर देगा; लेकिन उसकी बेवफाई कभी माफ नहीं करेगा; क्योंकि उसकी मोहब्बत के साथ किसी दूसरे की मोहब्बत भी शामिल हो, यह वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। चुनाँचे 'तौरेत' (यहूदियों की धर्मपुस्तक) के दस अहकाम (आदेश) में से एक हुक्म यह भी था कि—"किसी की मूर्ति न बनाओ, न उसके आगे झुको; क्योंकि मैं खुदावंद खुदा, तेरा गयूर (मर्यादावान्) खुदा हूँ।"

लेकिन फिर ज्यों-ज्यों जमाना आगे बढ़ता गया, यह तसव्वर भी ज्यादा वुस्अत (विस्तार) पैदा करता गया, यहाँ तक कि 'यसइया' के जमाने में इस तसव्वुर की बुनियादें पड़ने लगीं, जो आगे चल कर मसीही तसव्वुर की शक्ल इख्तियार करने-वाला था। चुनाँचे मसीहियत ने शौहर की जगह बाप को देखा; क्योंकि बाप अपने बच्चों के लिए सर-ता-सर (पूरी तरह) रहमो-शफ्कत (दया और ममता) है।

मन बद कुनम व तू बद
मुकाफ़ात दही।
पस फ़र्क़ मियाने-मनो-तू
चीस्त, बगो।

—मैंने बुरा किया, जिसका बदला तूने मुझे बुरा ही दिया। फिर बता, तेरे और मेरे बीच क्या फर्क रह गया?

इस्लाम ने अपन अकीदे की बुनियाद सरासर तन्जीह (द्वैत के परिमार्जन) पर रखी। 'लैसा कमिसलेही शैयउन, (उसकी मिसाल किसी चीज से भी नहीं दी जा सकती) में तश्बीह (उपमान) की ऐसी आम और कतई नफी (निषेध) कर दी कि, हमारे तसव्वुरी तशख्खुस (प्रतीकोपासना) के लिए कुछ भी न रहा।

जबाँ ब बंद-व-नजर
बाज़ कुन कि मना 'कलीम'
इशारत अज़ अदब-आमोज़ी
तक़ाज़ा ईस्त।

—कलीम, जबान बंद कर और आँखें खुली रख कि, इस महफिल में अदब का तकाजा है कि, इशारा भी न किया जाये।

फिर भी इंसान के नजारा-ए-तसव्वुर (चिंतन-मनन) के लिए उसे भी सिफात (गुणों) की एक सूरत-आराई (रूप-विधान) करनी ही पड़ी और तन्जीहे-मुत्लक (निर्गुण अद्वैत) ने सफाई-ए-तशख्खुस (व्यक्त सत्ता) का जामा पहन लिया, वालिल्लाहिल-अस्मा-उल हुस्ना (और यह अल्लाह के नाम हैं) और फिर इतने पर मामला नहीं रुका, जा-बजा मजाज (भौतिक साधनों) के झरोके भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोलने पड़े, "अर-रहमान अलिल अर्शिस्तवा!" —खुदा अर्श (वैकुंठ) पर बैठता है।

हरचंद हो मुशाहिदा-ए-
हक़ की गुफ़्तगू।
बनती नहीं है बादा-व-
साग़र कहे बग़ैर।

—चाहे कितनी ही धार्मिक और संयम-निरोध की बातचीत हो, शराब और सागर का जिक्र किये बगैर रहा नहीं जाता।

इस सिलसिले में एक मुकाम और भी नुमायाँ होता है। और, इसकी वुस्अत (विस्तार) भी हमें दूर-दूर तक पहुँचा देती है। अगर यहाँ माद्दे (मौलिकता) के सिवा और कुछ नहीं है, तो फिर मरतबा-ए-इंसानी में उभरनेवाली वह कुव्वत, जिसे फिक्र-व-इदराक (चिंतन और अनुभूति) के नाम से पुकारते हैं, क्या है? किस अँगीठी से यह चिनगारी उड़ी? यह क्या है, जो हममें यह जौहर पैदा कर देती है कि, हम खुद माद्दे की हकीकत पर गौर करने लगते हैं और उस पर तरह-तरह के हुक्म लगाते हैं। यह सच है कि, मौजूदात (जो मौजूद है) की हर चीज की तरह यह जौहर भी धीरे-धीरे इस दर्जे तक पहुँचा। वह अर्से तक नबातात (वनस्पतियों) में सोता रहा, हैवानात में करवट बदलने लगा और फिर इंसानियत के मरतबे में पहुँच कर जाग उठा। लेकिन सूरतेहाल का यह इल्म हमें इस गुत्थी के सुलझाने में कुछ मदद नहीं देता। यह बीज फौरन बर्गो-बार (फूल-फल) ले आया या मुद्दतों के इर्तका (विकास) के बाद इस दर्जे तक पहुँचा हो, हर हाल में मरतबा-ए-इंसानियत का जौहर और खुलासा है। यही मुकाम है, जहाँ पहुँच कर इंसान हैवानियत की पिछली कड़ियों से जुदा हो गया और किसी आइंदा कड़ी तक पहुँचने की इस्तेदाद (योग्यता) उसके अंदर सर उठाने लगी। वह जमीन की हुक्मदारी के तख्त पर बैठ कर जब ऊपर की तरफ नजर उठाता है, तो फिजा के तमाम अजराम (नक्षत्र-मंडल) उसे इस तरह दिखायी देने लगते हैं, जैसे वह भी सिर्फ उसी की कारबरारियों के लिए बनाये गये हों। वह उनकी भी पैमायश करता है और उनके ख्वास (गुण) और अफ्आल (कार्यों) पर भी हुक्म लगाता है।

सवाल यह है कि, फिक्रो-इदराक (चिंतन और अनुभूति) की यह फिजा जो इंसान को अपनी आगोशे-पर्वाज (उड़ान की गोद) में लिये हुए उड़ रही है, क्या है? क्या इसके जवाब में इस कदर कहना काफी होगा कि, यह सिर्फ एक अंधी-बहरी ताकत है, जो तरक्की करती हुई फिक्रो-इदराक (चिंतन और अनुभूति) का दहकता हुआ शोला बन गयी। जो लोग माद्दियत (भौतिकवाद) के दायरे से बाहर देखने के आदी नहीं हैं, वह भी इसकी हिम्मत बहुत कम कर सके कि, इस सवाल का जवाब बिला झिझक इस्बात (हाँ) में दे दें।

और, फिर वह सूरते-हाल, जिसे हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तका (विकास) कहते हैं, क्या है और क्यों है? क्या वह एक खास रुख की तरफ उँगली उठाये इशारा नहीं कर रही है? हमने सैकड़ों वरस की सुराग-रसानियों (शोध) के वाद यह हकीकत मालूम की कि, तमाम मौजूदाते-हस्ती (सृष्टि) आजकल जिस शक्ल में पायी जाती है, यह एक ही दफा जाहिर नहीं हो गयी। यानी वराहे-रास्त (एकदम) तख्लीकी (सर्जनात्मक) अमल ने इन्हें यकायक यह शक्ल नहीं दे दी; वल्कि एक तदरीजी तगैयुर (दर्जा-व-दर्जा परिवर्तन) का आलमगीर कानून यहाँ काम करता रहा है और उसकी इताअत (आज्ञाकारिता) में यहाँ हर चीज दर्जा-व-दर्जा वदलती रहती है और एक आहिस्ता चाल से नीचे से ऊपर की तरफ वढ़ती चली आती है। यही नीचे से ऊपर की तरफ चढ़ती हुई रफ्तार फितरत है, जिसे हम इर्तका (विकास) के नाम से ताबीर करते हैं (नाम देते हैं); यानी एक तयशुदा, हम-आहंग (स्वर में स्वर मिलानेवाला) और मुनज्जम (क्रमवद्ध) इर्तकाई (विकास) तकाजा है, जो तमाम कारखाना-ए-हस्ती पर छाया हुआ है और उसे किसी खास रुख की तरफ उठाये और वढ़ाये लिये चला जा रहा है। **हर निचली कड़ी अपने से ऊपर की कड़ी का दर्जा पैदा करेगी और हर ऊपर का दर्जा निचले दर्जे की रफ्तार पर एक खास तरह का असर डालते हुए उसे एक खास साँचे में ढालता रहेगा।**

यह इर्तकाई (विकास) सूरते-हाल खुद तशरीह (व्याख्या) नहीं, यह अपनी एक तशरीह चाहती है। लेकिन कोई माद्दी तशरीह (भौतिक व्याख्या) हमें मिलती नहीं। सवाल यह है कि, क्यों सूरते-हाल (परिस्थिति) ऐसी ही हुई कि, यहाँ एक इर्तकाई तकाजा मौजूद हो और वह हर तख्लीकी जहूर (निर्माणात्मक सृजन) को निचली हालतों से उठाता हुआ वलंदतर दर्जों की तरफ बढ़ाये लिये जाये? क्या यह सूरते-हाल बगैर किसी मानी और हकीकत के है? क्या यह सीढ़ी बगैर किसी बालाखाने (कोठे) की मौजूदगी के वन गयी? और, यहाँ कोई बामे-रिफअत (ऊँची अट्टालिका) नहीं, जिस-तक यह हमें पहुँचाना चाहती हो?

यारॉ खबर दहेद किईं जलवागाह कीस्त?

—दोस्तो, मुझे वताओ कि, यह जलवागाह कहाँ है?

प्रो० लायड मार्गन ने इस मसले का वायलाजिकल (जीव-विज्ञान-सम्बंधी) नुक्ता-ए-खयाल (दृष्टिकोण) से गहरा मुताला (अध्ययन) किया है; लेकिन उसे भी इसी नतीजे पर पहुँचना पड़ा कि, इस सूरते-हाल की कोई माद्दी तशरीह (भौतिक व्याख्या) नहीं की जा सकती। एक इलाही (ईश्वरीय) ताकत की कारफर्माई यहाँ तस्लीम कर ली जाये।

हकायके-हस्ती (जगत् के अस्तित्व) का जब हम मुताला (अध्ययन) करते हैं, तो एक खास बात फौरन हमारे सामने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उभरने लगती है। यहाँ फितरत का हर निजाम कुछ इस तरह वाके हुआ है कि, जब तक उसे उसकी सतह से बलंद होकर न देखा जाये, उसकी हकीकत बेनकाब नहीं हो सकती। यानी फितरत के हर इंतजाम को देखने के लिए हमें एक ऐसा नजर का मुकाम पैदा करना पड़ता है, जो खुद उससे बलदंतर जगह पर वाके है।

आलमे-तबैयात (भौतिक विज्ञान) के गवामिज (मस्ले) इल्मुल-हयाती (प्राणि-शास्त्र) के आलम में खुलते हैं, इल्मुल-हयाती के गवामिज नफसियाती (मनोविज्ञान) के आलम में नुमायाँ होते हैं, व नफसियाती गवामिज़ के लिए हमें मंतकी (तर्कशास्त्र) के आलम में आना पड़ता है;

...और, इससे ऊपर भी एक मुकामे-नजर है, जो मावराये-महसूसात (अनुभूति से परे) है। वह एक ऐसी आग है, जो देखी नहीं जा सकती; मगर उसकी गरमी से हाथ ताप लिये जा सकते हैं!

*

समर्पण

ज्ञान की व्यापक दृष्टि की तरह मौलाना आजाद का पांडित्य भी अपने आकर्षण में सामान्य-से-सामान्य स्तरों तक व्यापक था। एक प्रमाण नीचे देखिये—

★

गालिबन दिसम्बर, १९१८ की बात है। मैं राँची में नजरबंद था। एक रोज इशा की नमाज पढ़ कर मस्जिद से निकला, तो मुझे महसूस हुआ, कोई शख्स पीछे आ रहा है। मुड़ के देखा, तो एक शख्स कम्बल ओढ़े पीछे खड़ा था।

"आप मुझसे कुछ कहना चाहते हैं?"

"हाँ, जनाब, मैं बहुत दूर से आया हूँ।"

"कहाँ से?"

"सरहद पार से।"

"यहाँ कब पहुँचे?"

"आज शाम। मैं बहुत गरीब आदमी हूँ। कंधार से पैदल चल कर क्वेटा पहुँचा। वहाँ वतन के कुछ सौदागर मिल गये। उन्होंने नौकर रख लिया और आगरा पहुँचा दिया। आगरा से यहाँ तक पैदल आया हूँ।"

"अफसोस, तुमने इतनी मुसीबत क्यों बर्दाश्त की?"

"इसलिए कि आपसे कुरानमजीद के बाज मुकामात समझ लूँ। मैंने 'अल-हिलाल' और 'अल-बलाग' का एक-एक हर्फ पढ़ा है।"

यह शख्स चंद दिनों तक ठहरा और फिर वापस चला गया। वह चलते वक्त इसलिए नहीं मिला कि, उसे अंदेशा था कि, मैं उसे वापसी के मसारिफ (यात्रा-खर्च) के लिए रुपया दूँगा और वह नहीं चाहता था कि, इसका बार (भार) मुझ पर डाले। उसने वापसी में भी मुसाफरत का बड़ा हिस्सा पैदल ही तय किया होगा।

मुझे उसका नाम याद नहीं। मुझे यह भी मालूम नहीं कि, वह जिंदा है या नहीं; लेकिन अगर मेरे हाफिजे (स्मृति) ने कोताही न की होती, तो मैं यह किताब उसके नाम से मन्सूब (समर्पित) करता।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ स्मरणीय मुकदमे—"सत्य एक बड़ी विचित्र चीज है और अजीबो-गरीब कहानी से भी अधिक रहस्यमय होती है।"—बड़ी प्रसिद्ध कहावत है; किंतु यह सत्य कितनी है, इसका प्रमाण प्रस्तुत पुस्तक में मिलता है। इस पुस्तक के विद्वान् लेखक डा० कैलासनाथ काटजू ने स्वयं इसकी भूमिका में लिखा है—"कचहरियों में जो कहानियाँ सुनने में आती हैं, उनका यदि संग्रह किया जाये, तो वह उपन्यास से भी अधिक मनोरंजक होगा।" उनके इस कथन का ही मूर्त रूप है, यह पुस्तक! डा० काटजू ने अपने वकील-जीवन के ३७ से भी अधिक ऐसे मामलों का संग्रह इस पुस्तक में किया है, जो अत्यधिक रोचक होने के साथ-साथ मानव-मनोवृत्ति के विभिन्न पहलुओं पर बड़े सुंदर ढंग से प्रकाश डालते हैं। 'तीन लड़कियों के मामले', 'पत्नी की चतुरता के दो उदाहरण' 'मेरठ-षड्यंत्र का मामला', 'नागपुर के युवक का मामला', आदि घटनाएँ बड़ी अनूठी और उल्लेखनीय हैं। निस्संदेह ही, यह एक उत्कृष्ट और संग्रहणीय प्रकाशन है। लगभग ढाई सौ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य है, ८ (आठ) रुपये और ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी से यह प्राप्त की जा सकती है।

भारतीय न्यायालय-जगत् के कथारस से अनुप्राणित अपने ढंग की अनूठी पुस्तक 'कुछ स्मरणीय मुकदमे' के लेखक डा० कैलासनाथ काटजू

नंदलाल बसु—शांतिनिकेतन-आश्रमिक-संघ, कलकत्ता ने कलाचार्य नंदलाल बसु पर हाल ही में एक कला-ग्रंथ प्रकाशित किया है। ग्रंथ में नंदलाल बसु का संक्षिप्त जीवन-चरित और उनके २९ चुने हुए रंगीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्र दिये गये हैं। नंदलाल वसु भारत में चित्रकला के नवोत्थान के एक सूत्रधार रहे हैं। यद्यपि अपने गुरु अवनींद्रनाथ ठाकुर की भाँति वे मार्गप्रेरक आचार्य नहीं रहे; किंतु अवनींद्रनाथ की खेती के वे ऐसे माली रहे हैं कि, भारतीय कला का उद्यान उनकी तपस्या-अर्चना से आज पूर्णकाम है। नूतन का स्वागत और पुरातन का सम्मान नंदबाबू की तूलिका में ऐसा उतरा है, जैसा कि गांधीजी के मानस में जीवन-दर्शन और रवीन्द्र की कलम में काव्यसर्जन! कला की दृष्टि से अत्यंत उच्च कोटि के चित्रों से सज्जित प्रस्तुत पुस्तक का जीवनी-खंड भी बड़ा महत्वपूर्ण है; क्योंकि उसमें केवल नंदबाबू की ही नहीं, भारतीय कला के नवोदय की भी जीवन-झाँकी प्राप्य है। मूल्य है, २० रु० और प्राप्तिस्थान है—शांति-निकेतन आश्रमिक-संघ, कलकत्ता।

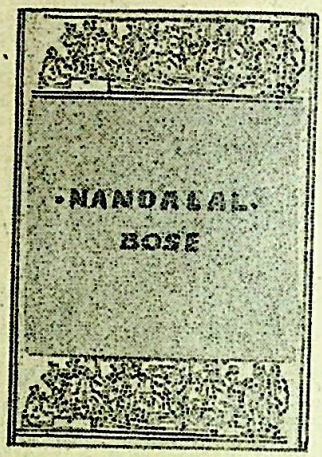

*

पठनीय साहित्य

अंगारे और फूल—सम्पादक : सैयद बहाउद्दीन अहमद। भूमिका-लेखक : मौलाना आजाद। ४१६ पृष्ठों की इस पुस्तक में उर्दू के चुने हुए शेरों का संग्रह—विषय-विभाग करके—किया गया है। १५ पृष्ठों की विषय-सूची से ही स्पष्ट है कि, कितने अधिक विषयों का चयन सम्पादक ने किया है।

प्रकाशक : अजंता प्रेस लिमिटेड, पटना ४. मूल्य ७ रुपये ७५ नये पैसे।

मेरे पिता—लेखक : श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति। २९७ पृष्ठों की प्रस्तुत पुस्तक में इंद्रजी ने अपने पिता स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानंद के सम्बंध में अपने अत्यंत जीवन-प्रेरक संस्मरण लिखे हैं।

प्रकाशक : वाचस्पति-पुस्तक-भंडार, दिल्ली। मूल्य ४ रुपये।

तत्वज्ञान—लेखक : डाक्टर दीवानचंद्र। २७६ पृष्ठों के इस ग्रंथ में विद्वान लेखक ने सत्-विवेचन, आत्म-मीमांसा, धर्म-विवेचन, आत्मा के स्वरूप-निरूपण, आस्तिकता, आदि विषयों पर प्रकाश डाला है।

प्रकाशक : प्रकाशन ब्यूरो, उत्तर-प्रदेश-सरकार। मूल्य ४ रुपये।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पायुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त संसार में सुपरिचित

लिचेन्सा—गर्म देशों में होनेवाले समस्त प्रकार के चर्मरोगों के लिए निर्दोष तथा आरामप्रद मलहम है। लिचेन्सा खाज़, खुजली, एकज़ीमा, दाद, चकता, फोड़ा तथा जलन और घाव आदि को शीघ्र आराम करता है। बवासीर की विश्व-विख्यात औषधि 'हडेन्सा' के प्रस्तुतकारक ही लिचेन्सा के भी निर्माता हैं।

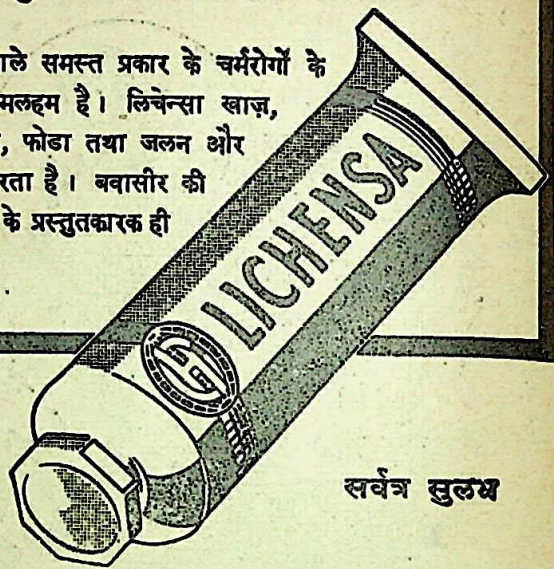

जर्मनी में प्रस्तुत

सर्वत्र सुलभ

DCZ-2 HIN

पुस्तक बिल्कुल मुफ़्त

किसी भी कारण से किसी भी आयु में खोए हुए।

को फिर से प्राप्त करने के लिये

शक्ति और यौवन

"शक्ति बिना औषध" मुफ़्त मंगावें

डी० ए० बी० लेबारेट्रीज़

पोस्ट बक्स १३७२ दिल्ली-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Cool, filtered drinking water?

Choose a **BLUE STAR** Water Cooler!

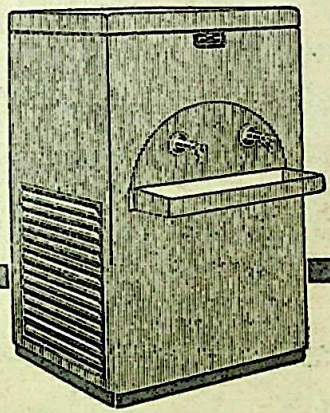

STORAGE TYPE

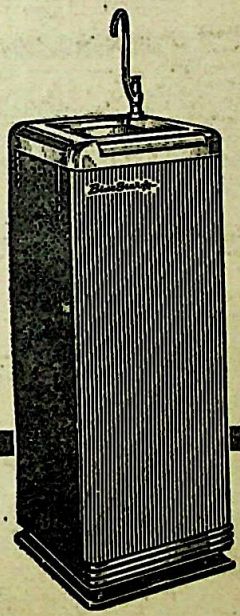

INSTANTANEOUS TYPE

PSBS-56

In factory, office, school, restaurant, club .. a BLUE STAR WATER COOLER is your guarantee of satisfaction.

BLUE STAR offers you a choice of 13 models, both Storage and Instantaneous ... each designed and engineered specially to suit Indian conditions.

BLUE STAR— *The Greatest Name in Water Coolers*

BLUE STAR

BLUE STAR ENGINEERING CO. (Bombay) PRIVATE LTD.
KASTURI BUILDINGS, JAMSHEDJI TATA ROAD, BOMBAY 1
Also at CALCUTTA, DELHI, MADRAS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दद्रु विनाश

दद्रु, खाज, खुजली एवं इक्जीमा की

शर्तिया दवा

तीन दिन में फायदा

प्रतावमल गोबिन्दराम

पो॰ वक्स नं॰ २४६० कलकत्ता-१

विज्ञापन की हुई

वस्तुएँ

ही खरीदिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओरियंट का
कागज आज
से भारतीय
उद्योगों की
सेवा में
तत्पर है

हमारे विशिष्ट
उत्पादन

- क्राफ्ट पेपर सादा
  और धारीदार
- वाटर प्रूफ पेपर
- बोर्ड सिम्प्लेक्स,
  डुप्लेक्स, ट्राईप्लेक्स
- रंगीन ट्राईप्लेक्स

ओरियंट पेपर
मिल्स लि०

मैनेजिंग एजेन्ट्स
बिड़ला ब्रदर्स प्राइ. लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

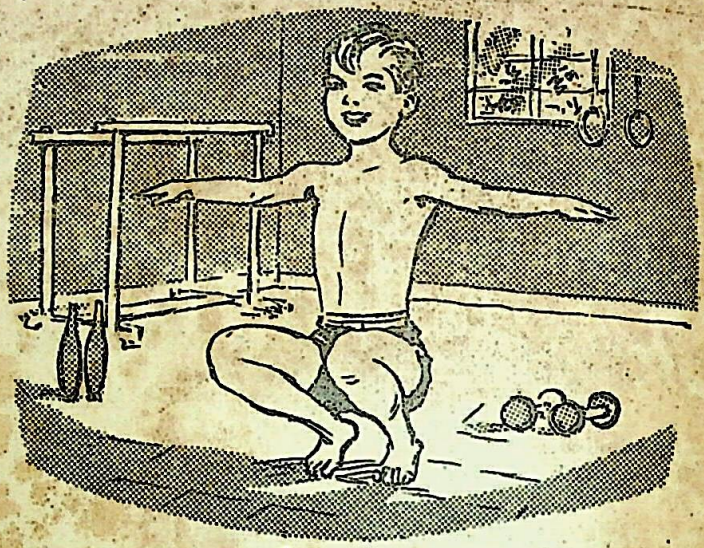

Daily exercise

...for children builds healthy strong bodies, protects from sickness, promotes discipline...

Another healthy habit for growing children is eating J. B. MANGHARAM'S ENERGY FOOD BISCUITS, hygienically made from sun-ripened wheat, malt, glucose, milk, etc.

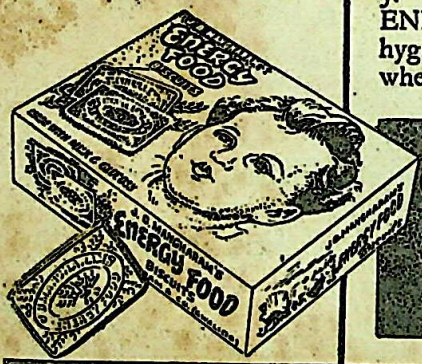

J. B. MANGHARAM'S
ENERGY FOOD
BISCUITS

J. B. MANGHARAM & CO.,
GWALIOR

एजेन्ट्स : नेशनल फूड एजेन्सीज ३१५ न्यू चर्नी रोड—बम्बई-४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुविधा और बढ़िया काम के लिए

ऊँचे दर्जे की रचना

प्रभात प्रेशर कुकिंग स्टोवों, ब्लो लैम्पों, गैस लाइट लैम्पों और गैस लाइट मैण्टलों का उत्पादन भारत में जब सन् १९२८ में शुरू हुआ उस समय ये अपने दर्जे में सर्व प्रथम थे।

तब से साल-पर-साल निरंतर सुधारों के फल-स्वरूप आज भी ये सर्वोत्तम माने जाते हैं ...

प्रभात

उत्पादन

"भारत के सर्वप्रथम... और आज भी सर्वोत्तम!"

प्रभात (स्टोव एण्ड लैम्प) प्रोडक्ट्स कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई – १

वार्षिक मूल्य १०)

मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल की तरह...

खिली सुंदरता के लिये

रेक्सोना

रेक्सोना साबुन मे 'कॅडिल' यानी 'तेलों का एक विशेष मिश्रण होता है जो जिल्द को स्वस्थ बनाने के साथ साथ आप की असली सुंदरता को उजागर करने में भी सहायक है।

'कॅडिल' युक्त एक मात्र टॉयलेट साबुन

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई, की रेक्सोना प्रोप्राइटरी लि., के लिये भारत में बनाया

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Varanasi. Digitized by eGangotri

RP. 151-769 HI

मई

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

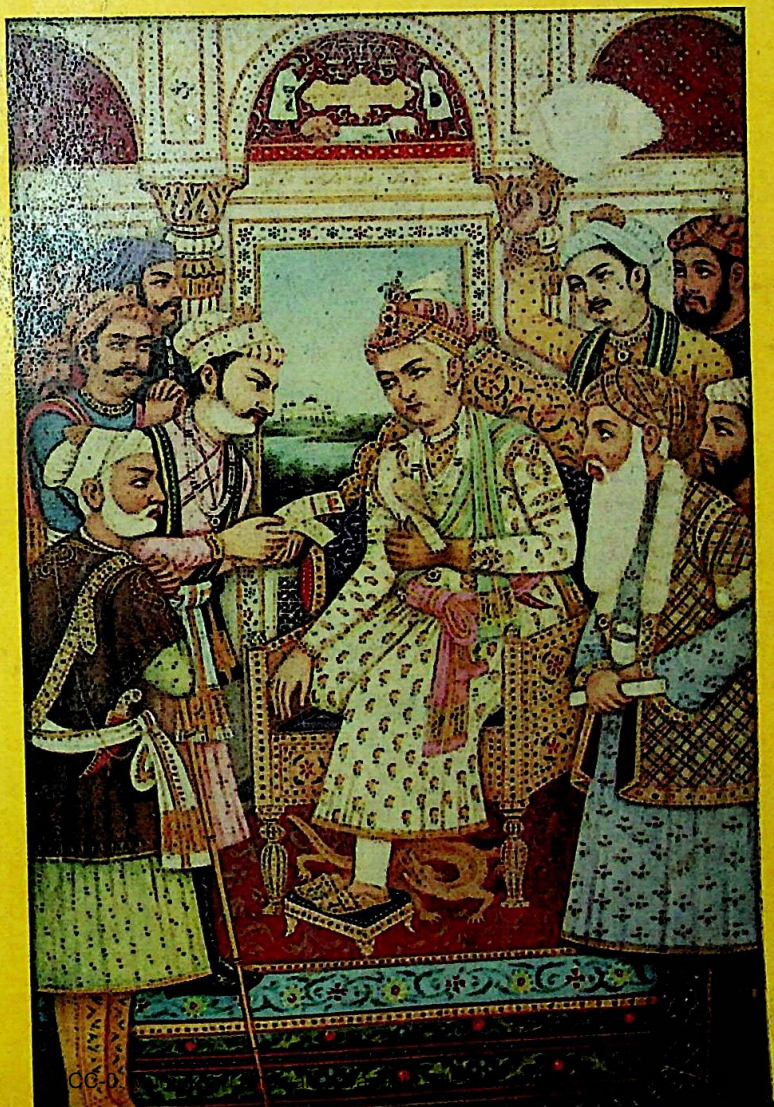

CC-0.

मुझे अपनी सीधी पीठ और मजबूत हाथ पांव पर, अभिमान है

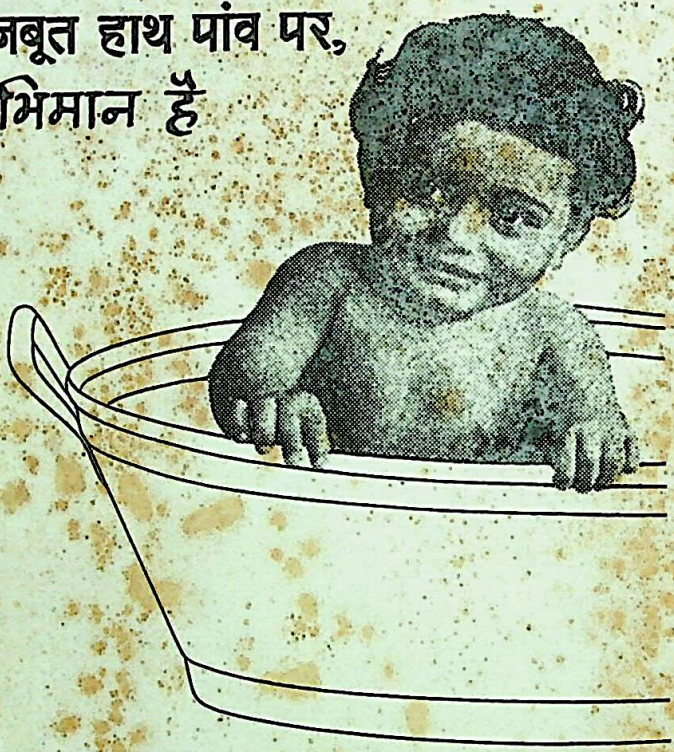

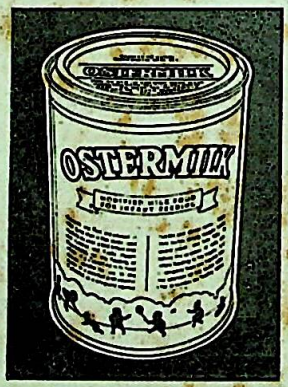

शुरू ही से माँ ने मुझे ओस्टरमिल्क पिलाया है। जो कि बच्चों के लिये अत्युत्तम है। अब मैं पुरा दिन इसी तरह सुदृढ, तन्दुरुस्त और खुशहाल रहता हूँ।

मैं ओस्टरमिल्कका शुक्र गुजार हूं।

OSTERMILK

ओस्टरमिल्क माँ के दूध के समान

बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · नई दिल्ली

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निराशा किस लिए ?

यह स्वभाविक है कि सफेद बाल चहेरे की सुंदरता में बाधक हैं, लेकिन इससे निराश होने की ज़रूरत नहीं। लाखों लोगों की तरह आप भी लोमा का व्यवहार करके चहेरे की शोभा को अक्षुण बनायें।

लोमा

बालों को स्वभाविक श्याम बनाने के लिए

विश्व भर में मान्यता प्राप्त

सोल एजेन्ट : एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद १.

एजेन्ट : सी. नरोतम एण्ड कं. बम्बई २ टे. ३०५०५

MPS- HIN.

निर्यात संबंधी जानकारी के लिये लिखिये मेसर्स एम. एम. खंभातवाला अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ीसा सिमेंट लिमिटेड

ताप अवरोधक उत्पादन :

शीघ्र ही प्रारम्भ होगा

आधुनिक उत्पादन विधि से निरन्तर भारी परिणाम में उच्चकोटि के ताप अवरोधक उत्पादन।

★ अग्नि मृत्तिका ★ कड़ा सफेद पत्थर ★ भ्राजांगिज ★ वर्णकायन ★ विसंवाहन आदि। ★ सभी प्रकार माप और आकार के मट्टी, परिभ्रम और स्थावर वस्तुओं की सभी प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए

इस्पात, सीमेण्ट, शीशा और अन्य उद्योगों के लिए

डा० सी० ओटो एण्ड कंपनी, जर्मनी के सहयोग से

अनुसन्धान करें—

उड़ीसा सिमेंट लि०

राजगांगपुर, उड़ीसा

प्रबन्धकर्त्ता — डालमिया एजेन्सीज प्राइवेट लि०

O.C.H-12-57

A.I.A.P

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वसंत की प्रातः समीर-सा

आपके लिए आज ही और फिर प्रत्येक दिन !

काश्मीर बोके टेल्कम पाउडर में जादू-सी मादकता है। यह उत्कृष्ट पाउडर आपके शरीर को प्रातःकाल सी स्फूर्ति देता है और बहुत समय तक उसे सुवासित और शीतल रखता है। अतिरिक्त नमी को सोखता है....त्वचा की चिपचिपाहट और जलन को मिटाता है....और आपकी मोहकता तथा लावण्य को निखारता है।

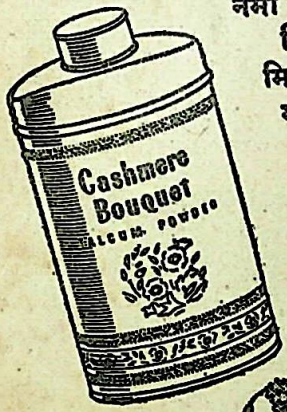

काश्मीर बोके

टेल्कम पाउडर

पुरुषों को मुग्ध करनेवाली सुगंध के साथ

कोलगेट—पामआलिव का एक उत्पादन

१८०६ से कोलगेट उत्कृष्टता का प्रतीक रहा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Cool, filtered drinking water?
Choose a BLUE STAR Water Cooler!

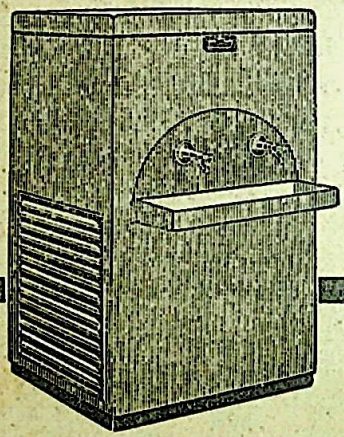

STORAGE TYPE

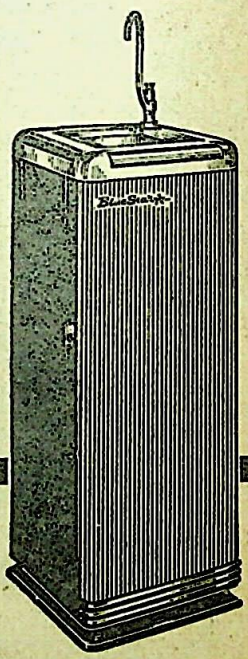

INSTANTANEOUS TYPE

PSBS-56

In factory, office, school, restaurant, club .. a BLUE STAR WATER COOLER is your guarantee of satisfaction.

BLUE STAR offers you a choice of 13 models, both Storage and Instantaneous . . . each designed and engineered specially to suit Indian conditions.

BLUE STAR— *The Greatest Name in Water Coolers*

BLUE STAR

BLUE STAR ENGINEERING CO. (Bombay) PRIVATE LTD.
KASTURI BUILDINGS, JAMSHEDJI TATA ROAD, BOMBAY 1
Also at CALCUTTA, DELHI, MADRAS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Arvind

QUALITY FABRICS

'SANFORIZED'
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT PEABODY & CO., INC., U.S.A.

शर्टिंग पापलिन
कोटिंग और
रंग बिरंगी छींट

अरविन्द मिल्स लि०
अहमदाबाद-२

REGISTERED USER OF THE TRADE MARK 'SANFORIZED'.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

REPRESENTATIONS

ARE

OFFERED

★

KANOI TEA
(PRIVATE) LTD

POST BOX No. 982
CALCUTTA-I

TWO THINGS
TO REMEMBER

"K"
for Kanoi
&
Kanoi
for
tea

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

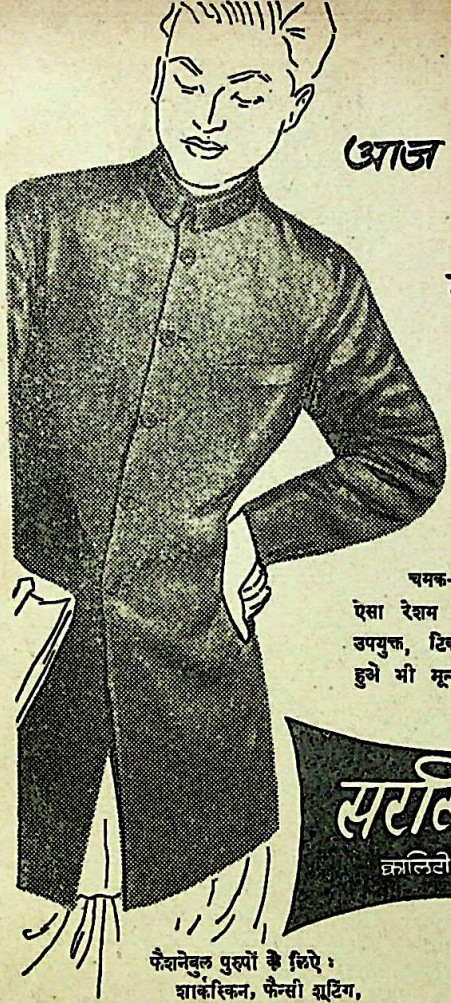

आज का फैशन

सरसिल्क का रेशम

भारत को अपने रेशम के उत्पादन के लिए प्राचीन काल से ही वैभवता प्राप्त है और उसी परम्परा को आज के मानव निर्मित एसीटेट सूत से नवीन कलेवर प्राप्त हुआ है। सुन्दरता, कोमलता, रंगों की शानदार चमक-दमक, इन सारी दृष्टियों से सरसिल्क एक ऐसा रेशम है जिसका कोई जोड़ नहीं। व्यवहार में उपयुक्त, टिकाऊ व आधुनिक फैशन का होते हुये भी मूल्य अधिक नहीं।

सरसिल्क

क्वालिटी फैबरिक्स

फैशनेबुल पुरुषों के लिए :
शार्कस्किन, फैन्सी शूटिंग,
शाण्टुंग, शर्टिंग इत्यादि
सुरुचि सम्पन्न महिलाओं के लिए :
टफेटा, साटिन, क्रेप, जार्जेट इत्यादि

सरसिल्क लिमिटेड सरपुर-कागज़नगर, आन्ध्र प्रदेश

कलकत्ता कार्यालय : ८, इन्डिया एक्सचेंज प्लेस

सोल सेलिंग एजेन्ट : मेसर्स तुलसीदास कानोड़िया ऐण्ड कम्पनी, इण्डिया एक्सचेंज बिल्डिंग, कलकत्ता

बम्बई कार्यालय : २६४।२६८ कालबादेवी रोड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवारोक
दफ़्ती के
डिब्बों में
बिस्कुट
ख़रीदिये

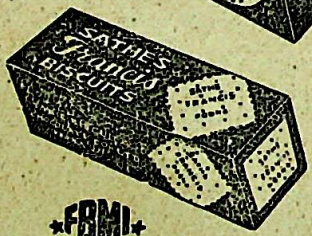

आकर्षक और
हवारोक दफ़्ती
के डिब्बों में
बिस्कुट ख़रीदकर अन्य
ऐसे पदार्थों के लिए
टीन बचाने में मदद
कीजिए जो काग़ज़ या
दफ़्ती के बक्सों में पैक
नहीं किये जा सकते ।

साठे
बिस्कुट
कसारे और स्वादिष्ट'

FBMI
FEDERATION
OF BISCUIT
MANUFACTURERS
OF INDIA

साठे बिस्कुट एण्ड चाकलेट कं० लि०, पूना-२

'VEROS' No. 8 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बालों का सौन्दर्य

सहजता से बनाए
रखनेवाला साधन है
मंद सुगंधि से परिपूर्ण
आल्हाददायी

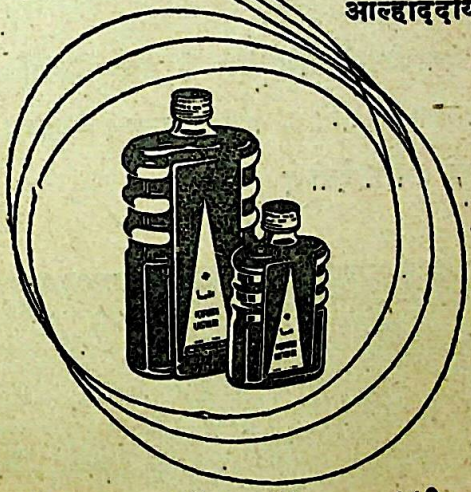

स्वस्तिक सुगंधित कॅस्टर ऑईल

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

SHILPI-SOM-545-A-HIR

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रगति का एक और कदम

३१ दिसम्बर १९५७
जमा पूँजी १२४ करोड़ रुपये से अधिक
कार्यगत कोष १५१ करोड़ रुपये से अधिक

ऊपर बतायीगयी राशि देश की इस प्रतिनिधि बैंकिंग संस्था के प्रति जनता के अक्षुण्ण विश्वास का स्पष्ट प्रमाण देती है

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : सन् १८९५ ई०
चेयरमैन
एस० पी० जैन

प्रधान कार्यालय — दिल्ली
जनरल मैनेजर
ए० एम० बाँकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अरे भागो, भागो!
ये लोग
फ़्लिट
मार रहे हैं!'

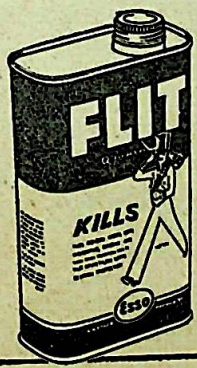

फ़्लिट
... स्टैन्वैक
द्वारा बेची जाती है।

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी
(सीमित दायित्व सहित
यू. एस. ए. में संस्थापित)

V. 6482

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने आरामप्रद होते हैं हाथकरघे के वस्त्रों से बने परिधान!
और ये लगते भी बड़े सुहावने हैं।

मुख्य अवसरों के लिए कच्चे रेशम से बने
टिकाऊ और धुल सकने योग्य ये भारतीय हाथकरघे के वस्त्र
बुनावट, नमूनों और रंगों में सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

हाथकरघे के वस्त्र

ALL INDIA HANDLOOM BOARD

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड
शाहीबाग हाऊस, विटेट रोड, बंबई

DA-57/346

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप में शक्ति होनी चाहिए

क्या आप शिथिलता और थकान महसूस करते हैं?

क्या आप में उत्साह की कमी है? आप ग्लूकोविटा लीजिए। ग्लूकोविटा आपको शक्ति देगा। ग्लूकोविटा में आपके लिए अनिवार्य रक्त-शक्कर ऐसे रूप में रहती हैं कि तत्काल ही रक्त में घुलमिल जाती हैं। यही कारण है कि ग्लूकोविटा आपको आवश्यकता पड़ने पर तत्काल ही शक्ति और उत्साह प्रदान करता है।

ग्लूकोविटा में शामिल विटामिन आपको शक्तिपूर्ण, जीवनपूर्ण और स्वस्थ रखते हैं।

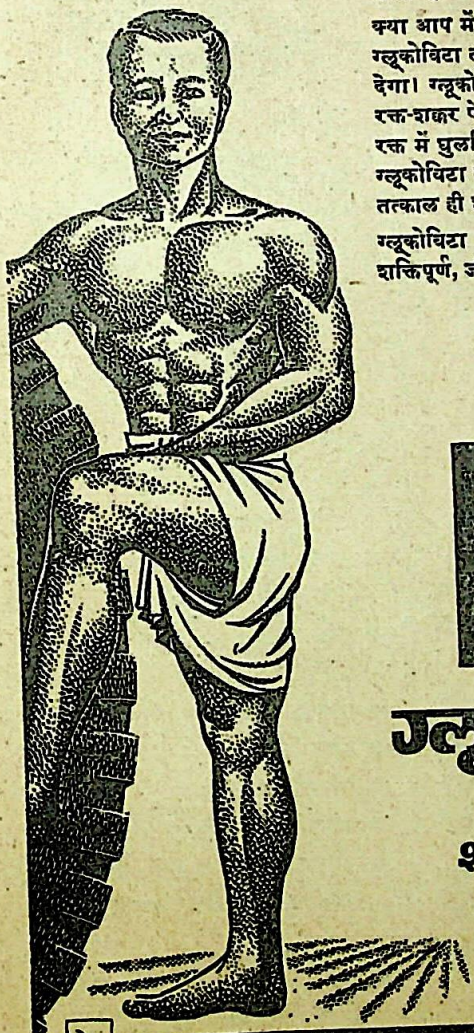

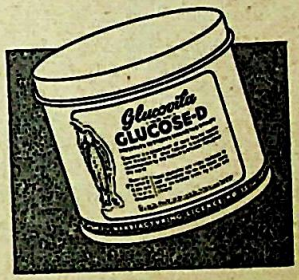

ग्लूकोविटा

तत्काल

शक्ति देता है!

कॉर्न प्रोडक्ट्स् कं. (इंडिया) प्राइवेट लि.

बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल

आयुर्वेदिक औषधि (रजिस्टर्ड)

सिरकी रुसी तथा गिरते बालों को रोकने के लिए एक अमूल्य हेयर टॉनिक शीघ्र ही गिरते हुए बालों को रोकता है और घने बाल उगाता है। प्राकृतिक काला रंग प्रदान करता है। सर्व ऋतु में सबके लिए उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ४/ छोटी शीशी २) रु. प्रत्येक स्थान पर मिलता है। ६/५० का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ४/- का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें। आसन चार्ट: स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक खर्च सहित रु. २/- में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर किये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

दादर, (सेन्ट्रल रेलवे) बम्बई–१४

टेलिफोन : ६२८९९

McK

McKENZIES LIMITED

हमसे परामर्श करें

निम्नलिखित विशेष कार्यों के सम्बन्ध में :—

- वाइब्रो और प्रीकास्ट पाइल फाउन्डेशन्स
- आर. सी. सी. सिलोज
- पानी की टंकी
- रिजर्वायर्स
- ट्रेलर, ट्रालियाँ
- टीपिंग वेगन्स
- एम्बुलेन्स, रेडियो और एक्सप्लोजिव की गाड़ियाँ
- मैल-मलीदा निकालनेवाली गाड़ियाँ
- सड़कें, बाँध और पुल
- वाटरप्रूफ छतें
- भीतरी सजावट
- आधुनिक फर्नीचर
- मोटर गाड़ियों के ढाँचे (सभी खात, अलुमिनियम और कम्पोजिट)

प्रधान कार्यालय :—

मैकेन्ज़ीस लिमिटेड

शीवरी, बम्बई.

(टे. नं. ६०००७/८/९)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत की धुलाई-पद्धति में क्रान्ति लानेवाला राष्ट्र का अग्रदूत परिष्कारक डेट

डेट एक सांश्लेषिक परिष्कारक है, वह साबुन की बुकनी नहीं है तथा तत्त्वतः साबुनविरहित है। किसी भी साबुन की तुलना में यह धुलाई में तेज है तथा गंदगी और चिकवाहट को पूरी तरह से हटाता है। यह आपको स्वच्छतम कपड़े के अधिक तर उपयोग तथा न्यूनतम घटाव का विश्वास दिलाता है, जो बढ़िया साबुन से भी मुमकिन नहीं है।

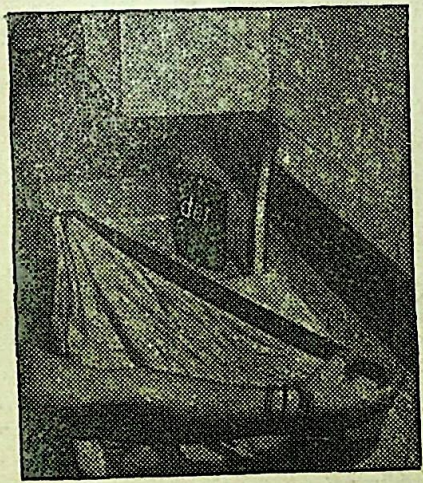

डेट फ़र्श, बर्तन, दीवारें आदि को भी धोता है क्यों कि वह परिष्कारक है। चाहे कपड़ा हों या फ़र्श, यह दोनो को समान कुशलता से धोता है।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि०, बम्बई

sbilpi s-o-m 513 a hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

FOR THE **FIRST TIME** IN INDIA

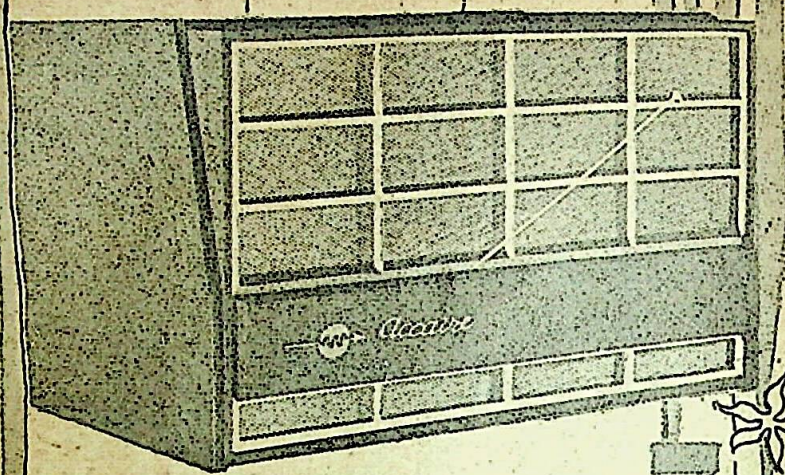

A RANGE OF

SIX COLOURS FOR YOUR CHOICE

Accaire AW—101

ROOM AIRCONDITIONER

Pick your new Accaire in a colour that blends with your room. Its unique design and compact construction makes it an excellent piece of furniture to adorn any room. What's more, it is made by an organisation with over a quarter century of experience in airconditioning.

OTHER ADVANTAGES INCLUDE :

- Better cooling capacity
- More silent operation
- Lower running cost
- Better service after sale
- One year's guarantee

Manufactured by

AIR CONDITIONING CORPORATION PRIVATE LTD.

Pioneers in Airconditioning in India

CALCUTTA • BOMBAY • NEW DELHI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

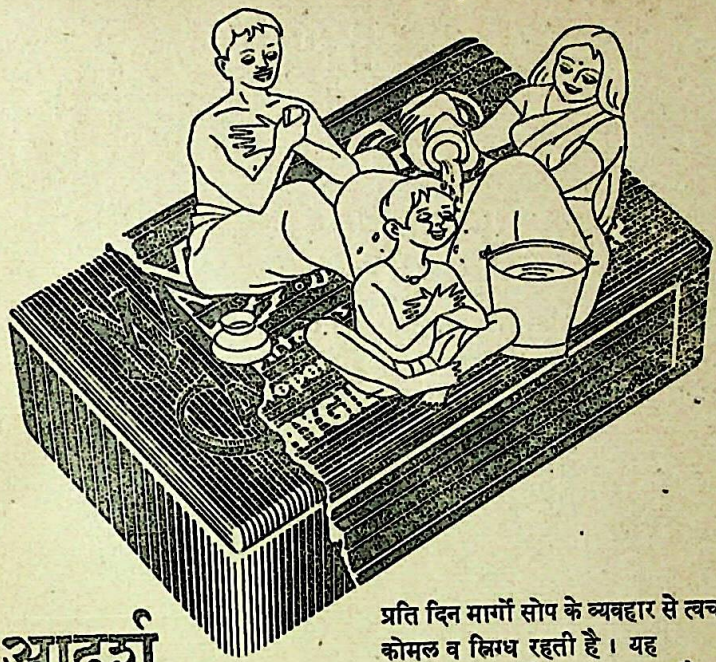

आदर्श पारिवारिक साबुन

प्रति दिन मार्गो सोप के व्यवहार से त्वचा कोमल व स्निग्ध रहती है। यह जीवाणुओं से चर्म की रक्षा करता है। मार्गो सोप की विपुल झाग रोम कूपों में प्रवेश कर शरीर को निर्मल रखती है। मधुर सुगन्ध युक्त यह आदर्श पारिवारिक साबुन कोमल से कोमलतम अंग के लिए निरापद है। शीतकालीन शुष्क आबहवा में भी मार्गो सोप ताज़गी प्रदान करता है।

मार्गो सोप

गंध विहीन नीम तैल से प्रस्तुत

प्रस्तुतकारक:

दि कैलकटा केमिकल क० लि० कलकत्ता २६

CMC-11 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर के लिये हेडेन्सा व्यवहार कीजिए

यह प्रसिद्ध जमन औषध कष्टप्रद खूनी बवासीर एवं फिशर्स की हालत में शीघ्र आराम पहुँचाती है।

हर जगह मिलती है

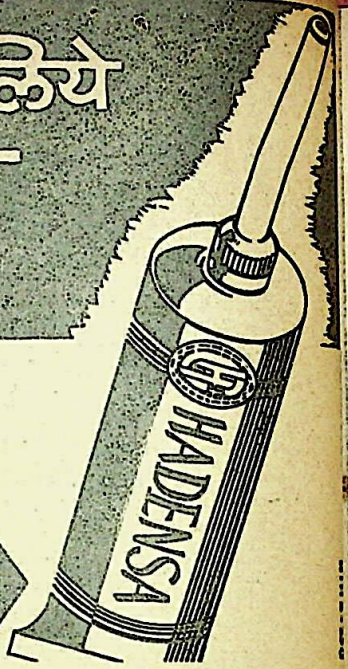

वर्षों का दीर्घ अनुभव

जम्मी पिछले ४५ वर्ष से बच्चों की तिल्ली-जिगर की बीमारी के इलाज के विशेषज्ञ हैं। प्रति वर्ष वे हजारों बच्चों को मृत्यु से बचाते हैं। शीघ्र ही जम्मी से सलाह लीजिए और उनके विशाल अनुभव से लाभ उठाइए।

जम्मी का लिवरक्योर

बच्चों की तिल्ली-जिगर की शिकायत के लिए जम्मी के डाक्टर प्रति मास सब बड़े शहरों का दौरा करते हैं। उनके कार्यक्रम की सूचना प्राप्त कीजिए।

जम्मी वेंकटरमणैया एण्ड सन्स
प्रधान कार्यालय-मद्रास

शाखाएँ: बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, नागपुर, बंगलोर, विजयवाडा, तिरुचिरापल्ली, और कुम्भकोणम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बम्बई में : राक्सी ☆ लोटस ☆ जैहिन्द

(एयर कन्डिशन्ड)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही कीटाणुनाशक
डाक्टर और
नर्सें व्यवहार करते हैं

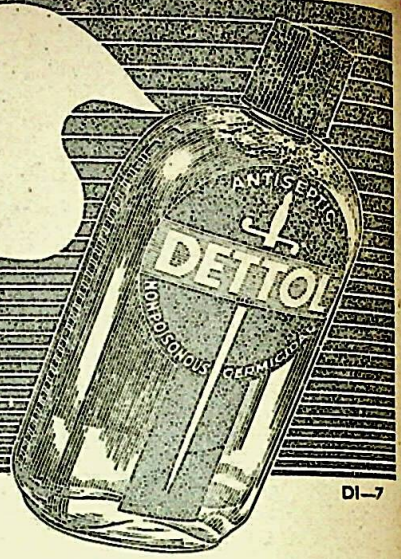

ऐटलांटिस (ईस्ट) लिमिटेड
(इँग्लैगड में संगठित)

DI—7

AEL 1991

सुलेखा
REGD.
पेन

संतोष जनक
कार्य के लिए

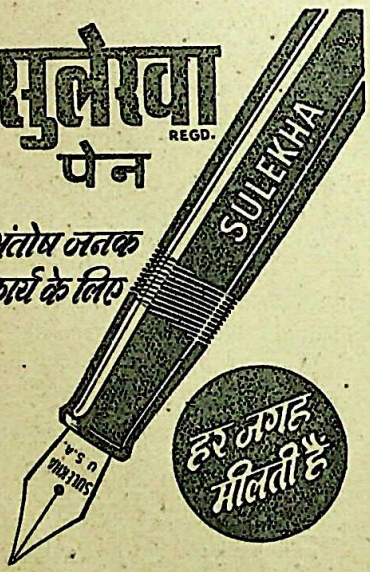

हर जगह
मिलती है

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :
पेन मेन्स इण्डस्ट्रियल सर्विसेज़
कांदीवली, बम्बई (एस० डी०)

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग—उर्दू)

मूल्य ८)

संपादक— पं. रामनरेश त्रिपाठी

उर्दू पढ़ना न आते हुए भी उर्दू शायरी का आनन्द लेने के लिए उर्दू शायरी हिन्दी में पढ़िए

प्रकाशक

नवनीत प्रकाशन लि. बम्बई-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे परिवार के लिए एकही टैल्कम् पाउडर

मनमोहक सुगंधियुक्त, प्रोटेक्स बढ़िया क्वालिटी का सर्व-उपयोगी पाउडर है, जो बड़े डिब्बे में...कमसे कम कीमत में मिलता है। सुहानी मोहक सुगंधवाला प्रोटेक्स हर प्रयोजन के लिए उपयोगी है। इसी कारण, भारत में हजारों परिवार प्रोटेक्स को ज्यादा पसंद करते हैं...

अब सुन्दर पफ भी साथ में मिलता है!

प्रोटेक्स

सर्व-उपयोगी

टायलेट पाउडर

कोलगेट का एक और उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर स्थान को
सुन्दर व आराम्प्रद
बनाइये

इस वर्ष और
प्रत्येक वर्ष

उषा
डि-लक्स पंखे

दि जे ईञ्जिनीयरिंग वर्क्स लि०
कलकत्ता

बम्बई एजेन्ट : बाम्बे प्रीमियर ट्रेडिंग कं., २३० हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

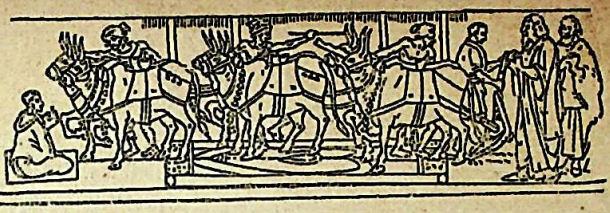

मई

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

शिल्प: गोपालकृष्ण भोबे

सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र विद्याभूषण

लेख-सूची

१	मूल्य	'प्रसंगतोया' से	१
२	...मैंने अपने को ढूंढ़ लिया	इलीनोर पालिन नोये	२
३	तस्मै सर्वात्मने नम:	डा० भगवान्दास	६
४	प्रेरणा-पुष्प	डा० भगवान्दास	७
५	नींव के पत्थर	बर्ट्रेंड रसेल : कृष्णमूर्ति	८
६	...कर्ण को भी खा गया था	जगन्नाथ करोड़िया	१०
७	पूजा के बदलते पथ	श्रीगोपाल नेवटिया	१३
८	कवि आया था	क्वामे नक्रुमा	१८
९	गृहस्थाश्रम	डा० वासुदेवशरण अग्रवाल	२२
१०	बुद्धि त्राण देती : बुद्धि प्राण लेती	हिडेकी युकावा	२४
११	बुद्धि	'हंसबोध' से	२५
१२	एक तारोंभरी रात	कुमार योगी	२७
१३	प्राणी बनाने के कारखाने खुलेंगे	डा० शिवतोष मुखर्जी	३०
१४	चंद्रलोक में लेनिनग्राड	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	३३
१५	...तय कर जाती सात समंदर	'अमेरिकन मर्करी' से	३८
१६	दीनबंधु	पैङ्ग वाम्	४१
१७	मानवबंधु-निर्मात्रीशाला	डा० ज्ञानेश्वरप्रसाद	४२
१८	पौदे : साम्राज्य : क्रांतियाँ	'मधुप'	४५
१९	असल और अमल	गगनविहारी मेहता	४९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०	...भारतवंधु जेम्स लांग	जातवेद शास्त्री	५१
२१	संसर्ग-दोष	'परिक्रमा' से	५२
२२	आखिरी हल	दादा धर्माधिकारी	५५
२३	दूरी	योन् नागोची	५६
२४	ये मर्दानी औरतें	'आरगोसी' से	५८
२५	दो शब्द गरमी के बारे में	'एक विज्ञानशास्त्री'	६२
२६	बूंद-बूंद का सागर	'नवनीत-ज्ञानकोष' से	६५
२७	दो बातें...मेरी अपनी	नरगिस	६७
२८	अभिनय क्या	ग्रेटा गार्बो	६८
२९	...आदमखोर मछली के साथ	अँग्रेजी शिकार-कथा के आधार पर	७२
३०	कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	राहुल सांकृत्यायन, हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, डा० बच्चन	७९
३१	शूल की शिला (बँगला-कहानी)	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	८२
३२	नसीब (उर्दू-कहानी)	अहमद नदीम कासिमी	८६
३३	पानदानी (गुजराती-कहानी)	पोपटलाल पंचाल	९२
३४	कुसुम-कलियाँ (काव्य-चयन)	महाकवि वल्लत्तोळ	९७
३५	स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	११९

अकबर अपने नवरत्नों के साथ

[चित्र : मुगल शैली (हाथी-दाँत पर) : वेणीप्रसादजी माहेश्वरी के सौजन्य से]

—स्केच—

वी० एन० ओके, खिलजी, मेलिंजो, एस० आर० वर्ग, असगर वेग, रामगोपाल विजयवर्गीय

वार्षिक मूल्य : दस रुपये
विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये

नवनीत प्रकाशन लि०
३४१, तारदेव, बम्बई-७

प्रति अंक : एक रुपया
विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नवदिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि पत्र

वर्ष ७ : : अंक ५ मई, १९५८

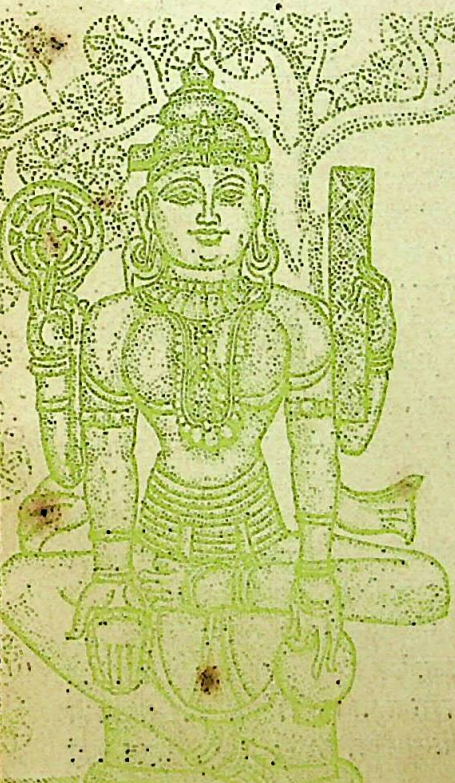

मूल्य

ऊँचे पर्वत-शिखर पर स्थित उस मंदिर की प्रस्तर-मूर्ति ने बड़े सदय भाव से नीचे तक चली गयी दुबली-पतली उस पगडंडी से कहा—"कौन-से पाप किये थे तूने री, जो रात-दिन मनुष्य के पदाघात की यह पीड़ा तुझे सहनी पड़ती है? तेरी दुर्दशा देख, मेरा तो कलेजा मुँह को आ जाता है।" लोल लहर-सी चपल उस तन्वंगी ने सहज प्रफुल्ल भाव से उत्तर दिया—"यह तो मेरे पुण्यों की कमाई है देव, कि मैं भगवान् और भक्तों की दूरी को पाटती हूँ। मंदिर तक पहुँचानेवाले यात्रापथ से अधिक सार्थकता जीवन की और क्या हो सकती है! दूसरों को दिव्यता के उन्नत शिखरों पर चढ़ाने का जो माध्यम बने, क्या वह कम महिमावान् है!" —'प्रसंगतोया' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी मुसकान के प्रकाश में मैंने अपने को ढूँढ लिया

सन् १९४४ में केलिफोर्निया-निवासिनी कुमारी इलीनोर पालिन नोये जीवन की अंतिम साँसें गिनती हुई भारत आयीं और किसी अज्ञात प्रेरणा में बँधी-सी अरुणाचल के रमणाश्रम में पहुँच गयीं। वहाँ महर्षि रमण के सामीप्य में उन्हें तन-मन के तापों से ही मुक्ति नहीं मिली, आत्मा की परम उपलब्धि– भगवदानुग्रह– भी मिल गया। कुमारी इलीनोर ने इतने वर्षों के बाद अपनी अनुभूतियाँ लिखी हैं– उनमें से एक हम 'नवनीत' के पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

तब मेरी स्थिति बड़ी नाजुक हो गयी थी। मैं उन्निद्र रोग से पीड़ित थी। वर्षों से मुझे पूरी नींद नहीं आयी थी। अति निराशा के उन क्षणों में, अपनी बहिन बेट्टी से मैंने परामर्श किया और निश्चय किया कि, मुझे भू-प्रदक्षिणा करनी चाहिए। मैंने अपनी यात्रा के लिए सीट रिजर्व करायी; पर मेरी हालत बहुत ही खराब हो गयी और मुझे अपनी यात्रा स्थगित कर देनी पड़ी। इसी प्रकार एक-न-एक बाधाएँ आती गयीं और मेरी यात्रा लगातार कई बार स्थगित होती गयी– ऐसा लगता, जैसे मैं यात्रा पर जा ही न सकूँगी।

कुछ सप्ताह विश्राम करने के बाद, मैंने फिर एक जहाज में सीट रिजर्व करायी और रेलगाड़ी-द्वारा न्यू आर्लियंस गयी; पर वहाँ पहुँच कर मेरी हालत और भी खराब हो गयी। पर मैं तो घर लौटने को तैयार नहीं थी। संयोग से जहाज दो सप्ताह देर में आया और इस बीच मेरा स्वास्थ्य कुछ सुधर गया। फिर भी जहाज के एजेंट ने जब मुझे देखा, तो बोला–"आप अब भी बहुत अच्छी नहीं दीख रही हैं। यदि जहाज का कप्तान आपको देख लेगा, तो वह आपको ले जाने को ही तैयार न होगा।" विशेष आग्रह पर वह मुझे ले चलने को तैयार हो गया; पर बोला– "देखिये, आप जहाज के कप्तान के सामने उस समय तक मत जाइयेगा, जब तक कि, जहाज दूर न निकल जाये; अन्यथा वह आपको उतार देगा।"

यद्यपि मेरी हालत उस समय भी अच्छी नहीं थी; पर परमात्मा का नाम लेकर मैं यात्रा के लिए निकल ही पड़ी।

न्यू आर्लियंस से हमारा जहाज केपटाउन के लिए रवाना हुआ। तीन सप्ताह की यात्रा थी। मैं रास्ते में फिर बीमार हो गयी– अच्छा यही हुआ कि, जहाज कहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीच में नहीं रुका; अन्यथा मैं लौट गयी होती। मैं रात को सोती, तो बड़े भयंकर स्वप्न देखती और चीख पड़ती। अतः मैंने अपने चिकित्सक को जहाज पर से ही रेडियो-संदेश भेज दिया था– "सहायता की आवश्यकता है– विशेष रूप से रात्रि में। भय से आक्रांत हूँ। केपटाउन पहुँच कर पत्र लिखूँगी।" मैं समझ नहीं पा रही थी कि, किस चीज का भय है; लेकिन मेरा मस्तिष्क बराबर अशांत बना रहता था। पर जब मेरा जहाज केपटाउन पहुँचा, उस समय लगा कि, जैसे मेरी तबीयत कुछ ठीक है।

डरबन से मैं मद्रास आयी। वहाँ एक होटल में ठहरी। मैं अपने कमरे में अकेली लेटी थी, तो मेरी आँखों से आँसू निकल रहे थे और पथ-प्रदर्शन के लिए मैं प्रभु से प्रार्थना कर रही थी। पूरी रात बहुत गर्मी थी। अतः सुबह होते ही मैंने होटल के मालिक से पूछा–"क्या कोई ठंडी जगह बता सकते हो?" उसने कोडाईकनाल जाने की सलाह दी और कहा–"वह बड़ा ही रमणीक स्थान है।"

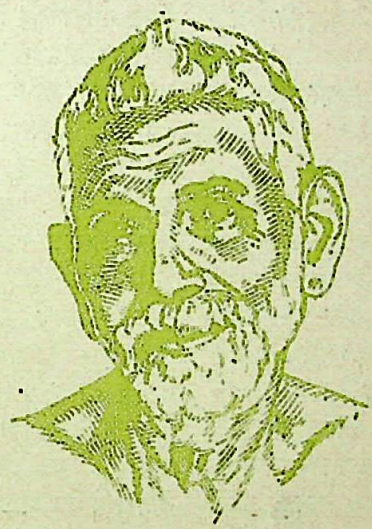

चिदानंद-स्रोतस्विनी मनोमय मुद्रा में महर्षि रमण

कोडाईकनाल में मुझे दो हिन्दू मिले। मैंने उनसे पूछा–"क्या आप लोग किसी संत को जानते हैं?" मैं अब यह नहीं बता सकती कि, यह प्रश्न मैंने उनसे पूछा क्यों? उन्होंने मुझसे कहा–"तिरुवन्नमलाई में एक रमण महर्षि हैं। बहुत दूर-दूर से लोग उनके पास आते हैं।"

मैंने दूसरे ही दिन तिरुवन्नमलाई के लिए रवाना होने का निश्चय किया।

आश्रम पर जब मैं पहुँची, तो आश्रमवासियों ने और महर्षि के भाई निरंजनानंद स्वामी ने बड़े प्रेम से मुझे बैठाया। उन लोगों ने मुझे बताया कि, श्रीभगवान् (रमण महर्षि) पर्वत पर गये हैं और शीघ्र ही 'हाल' में बैठने वाले हैं।

ज्यों ही मैंने 'हाल' में प्रवेश किया, मुझे लगा कि, वहाँ का पूरा वातावरण महर्षि की पावनता तथा आशीर्वाद से पूर्ण है। महर्षि की उपस्थिति में मुझे ऐसा लगता था, मानो किसी ईश्वरीय शक्ति के सामने खड़ी हूँ। वे अपने आसन पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल लुंगी बाँधे बैठे थे। चारों ओर उनके भक्त उन्हें घेरे हुए थे। जब वे मुस्कराते थे, तो लगता था कि, जैसे स्वर्ग का द्वार खुल गया हो। मैंने आज तक वैसी ज्योतिर्मयी आँखें नहीं देखीं। उन्होंने बड़े स्नेह से मेरे सम्बंध में पूछताछ की। उससे मुझे बड़ी सान्त्वना मिली। उनकी प्रेम-भरी दृष्टि जैसे मेरे हृदय के केंद्र में प्रवेश करती चली जा रही थी।

वहाँ से उठ कर मैं थोड़ी देर बाहर घूमती और आश्रमवालों से बातें करती रही। सात बजे के लगभग मैंने भोजन किया और उस वक्त मैं श्रीभगवान् से कुछ बातचीत कर सकी और उन्हें अपने आने का उद्देश्य बता सकी। भोजन के बाद मुझे एक बँगले में पहुँचा दिया गया; क्योंकि रात्रि में महिलाएँ आश्रम में नहीं रह सकतीं, ऐसा नियम है।

मैं यहाँ एक बात यह बता दूँ कि, मेरा स्वास्थ्य गिरने का एकमात्र कारण यह था कि, मैं वर्षों से पूरी नींद नहीं सोयी थी। मैं दवाएँ खाती थी; पर वे भी निष्प्रभाव रहती थीं। यद्यपि इसके बारे में मैंने श्रीभगवान् से कुछ नहीं कहा था; पर आश्चर्य की बात यह थी कि, उस रात मैं प्रगाढ़ निद्रा में सोयी— हालाँकि, उस दिन न तो मैंने दवा ली थी और न वे सब सुविधाएँ ही प्राप्त थीं, जिनकी मैं अभ्यस्त थी। मुझे सौ दवाओं की एक दवा मिल गयी थी— भगवान् का आशीर्वाद। दूसरे दिन सुबह जब मैं जगी, तो मेरी तबीयत ताजी थी— लगता था कि, जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो।

मेरे मन का प्रेम कुछ ही दिनों में अगाध श्रद्धा में परिवर्तित हो गया और मुझे अक्षुण्ण शांति का अनुभव होने लगा। जो चीजें अभी कल तक मुझे बड़ी भारी और भयंकर मालूम होती थीं; अब तुच्छ और नगण्य लगने लगीं। चीजें अब मुझे सही अनुपात में दिखायी देने लगीं— कल तक का दर्दसर और भविष्य की चिंता, दोनों ही धीरे-धीरे धूमिल पड़ने लगीं।

दो महीने वहाँ रहने के बाद, जब मेरे वहाँ से चलने का समय आया, मैं अपने आँसू न रोक सकी। इसलिए मैं भगवान् के दर्शन के लिए 'हाल' तक नहीं गयी; बल्कि तालाब के किनारे बैठी रही। अपराह्न में जब मैं भगवान् के पास गयी, तो वे बोले—"आज यह दिन-भर रोती रही ह। मुझे छोड़ कर यह जाना नहीं चाहती।" वहाँ से लौटने के बाद अपने मन में वेदना दबाये अपनी तैयारी करती रही। जब विदा के समय मैं उनसे आशीर्वाद लेने गयी, तो मुझे वहाँ से हटने का इतना दुःख था कि, मैं सहन नहीं कर सकती थी। मेरी आँखों में आँसू भरे थे। बड़ी श्रद्धा से मैं उनके सामने अवनत हुई। उन्होंने मुझे विदा देते हुए कहा—"चिंता मत कर। जहाँ भी तू रहेगी, मैं तेरे साथ रहूँगा।"

जब मैं मद्रास पहुँची, तो मेरी इच्छा फिर रमणाश्रम लौट जाने की हुई। मुझे भारत देखने की इच्छा नहीं हो रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर भी मैं मद्रास से कश्मीर गयी। योजना थी कि, श्रीनगर से कलकत्ता होते हुए अमेरिका लौट जाऊँगी।

यह यात्रा बड़ी ही सुखद और मनोरंजक थी। पर इस यात्रा में मुझे कुछ बड़े आश्चर्य-जनक अनुभव हुए। यात्रा-काल में तो मैं एक बार मौत से बाल-बाल बची। यद्यपि उस समय बड़ी सख्त गर्मी पड़ रही थी; पर उसका मुझ पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा। मेरे पास पैसे तो अधिक थे नहीं; इसलिए रास्ते में बिकती ऐसी चीजें खा लेती थी, जिनके खाने की मैं अतीत में कल्पना भी नहीं कर सकती थी; पर उससे भी मुझे कुछ क्षति नहीं पहुँची। मुझे स्मरण है कि, एक बार मैं अपने पति के साथ लैटिन अमेरिका में यात्रा कर रही थी, तो अच्छी-से-अच्छी चीजें खाने पर भी पूरी यात्रा में हम दोनों के पेट में दर्द बना रहता था। मैं यह सब केवल इस दृष्टि से लिख रही हूँ कि, भगवान् के पास केवल दो महीने रहने ही से मुझमें कितना परिवर्तन आ गया था।

एक दिन मैं बैठी थी, तो लगा कि, मेरे कान में भगवान् कह रहे हों—"फिर रमणाश्रम लौट आओ।" अतः मैंने अपना सारा कार्यक्रम बदल दिया और बजाय अमेरिका जाने के मैं तिरुवन्नमलाई के लिए रवाना हो गयी।

जब मैं उनके सम्मुख गयी, तो उन्होंने जिस मधुर रूप में मेरा स्वागत किया, उसे मैं आजीवन न भूल सकूँगी। मैं तो आनंद से रो पड़ी।

मुझे कई बार भगवान् के साथ भोजन करने का सौभाग्य मिला। एक दिन भगवान् ने देखा कि, चावल के तीन दाने रास्ते में पड़े हैं। उन्होंने उन दानों को स्वयं उठाया। अगर गार्हस्थ्य-शास्त्र पर मैं दर्जनों पुस्तकें पढ़ती, तब भी वह बात न समझ पाती, जो भगवान् के दाने उठाने ने मुझे सिखाया।

एक दिन प्रातःकाल मैंने एक गुलाब तोड़ा। एक संत ने उसे देख कर कहा—"बड़ा सुन्दर फूल है!" मैंने उत्तर दिया—"हाँ, भगवान् के लिए है।" मैं फूल लेकर भगवान् के पास गयी और चुपके से बैठ गयी। कुछ मिनटों के बाद धीरे से उठी और फूल को भगवान् के चरणों पर रख दिया। भगवान् ने पूछा—"क्या है?" मैं बोली—"गुलाब!" उन्होंने बड़े स्नेह से कहा—"मुझे दे दो।" और, जब मैंने उन्हें गुलाब दे दिया, तो वे उसे बड़े प्रेम से अपने मस्तक और गालों पर फेरने लगे। उनके स्नेह को देख कर मेरा मन फिर भर आया और मैं रोने लगी।

× × ×

जब मैं अमेरिका से चली थी, तो शांति के लिए भूखी थी। भगवान् के चरणों में मुझे सुख और शांति मिली। यह लेख मैं इतने दिनों बाद लिख रही हूँ; पर मैं ऐसा अनुभव करती हूँ कि, ज्यों-ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं, भगवान् मेरे सम्मुख अधिक स्पष्ट होते जा रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्त्वमैं सर्वात्मने नमः

युग-मनीषी डा० भगवान्दास की सत्यानुभूति का केंद्रालोक

मनुष्य का मन प्रायः विश्वास और अविश्वास के बीच झोंके खाता रहता है। अक्सर उसके मन को इससे बड़ा संताप पहुँचता है। एक ओर, उसके अंतर्मन को भगवान् के अनुग्रह पर अटल विश्वास रहता है; दूसरी ओर, स्वयं अपने ही भीतर के और अपने आसपास के कष्टों और अन्याय-उत्पीड़नों को देख कर उसे भगवान् के अस्तित्व में भी अविश्वास होने लगता है।

यह द्वंद्व तभी मिटता है, जब व्यक्ति यह अनुभव करने लगे कि, मेरे भीतर का 'मैं' ही सबके भीतर का 'मैं' है और यह सबमें व्याप्त 'मैं' ही 'ईश्वर' है। सब मेरे अंतर्गत हैं; सब-सब के अंतर्गत हैं; क्योंकि सब उसी एक ईश्वर के अंतर्गत हैं। बस, यह द्वंद्व इसी एक महासागर में जाकर निःशेष हो जाता; किंतु सर्वसाधारण के बूते की यह बात नहीं है। उनके विचार प्रायः विकास की दृष्टि से पर्याप्त रूप से परिपक्व नहीं होते हैं। अतः ज्ञान के इस स्तर तक वे नहीं पहुँच पाते हैं। सत्य की अनुभूति को विकसित करने के लिए अपने भीतर अंतर्दृष्टि पैदा करनी होगी। इसी को 'अंतर्नेत्र' कहते हैं। उस आँख के खुलने पर ही 'तू', 'मैं', और 'वह' का फर्क मिटता है।

मसीह ने कहा है—"मेरी इस बात पर विश्वास करो कि, मैं पिता के भीतर हूँ और पिता मेरे भीतर है।"

इसी सत्य की ओर इंगित करनेवाली मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें हैं—

"अहमद का मीम निकाल दो, तब भी मैं ही हूँ, यानी 'अहद' (एक अल्लाह) हूँ।"

"जिसने अपनी आत्मा को पहचान लिया, उसने परमात्मा को पहचान लिया।"

चीन का सत्यशोधी कन्फ्यूशियस भी कहता है— "अनजान-अज्ञानी दूसरों को ढूँढ़ता है, ज्ञानी अपने स्वयं को।"

भगवान् शंकराचार्य ने जीव और परमात्मा के सम्बंध को समुद्र और लहर का सम्बंध बताया है।

सूफियों ने भगवदानुभूति को बड़े अनुरागपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया है—"वह मेरे दिल के अंदर है और मेरा दिल उसके हाथ में है, जिस तरह आईना मेरे हाथ में होता है और मैं आईने में होता हूँ।"

तत्त्वदर्शन के इस सीमातीत विस्तार को मानो केंद्रबिंदु पर स्थिर करते हुए हमारे आरण्यकों ने घोषित किया है— "जो प्राणिमात्र को अपने भीतर देखता है और सबके भीतर अपने को देखता है, वह फिर माया के द्वारा छला नहीं जा सकता!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

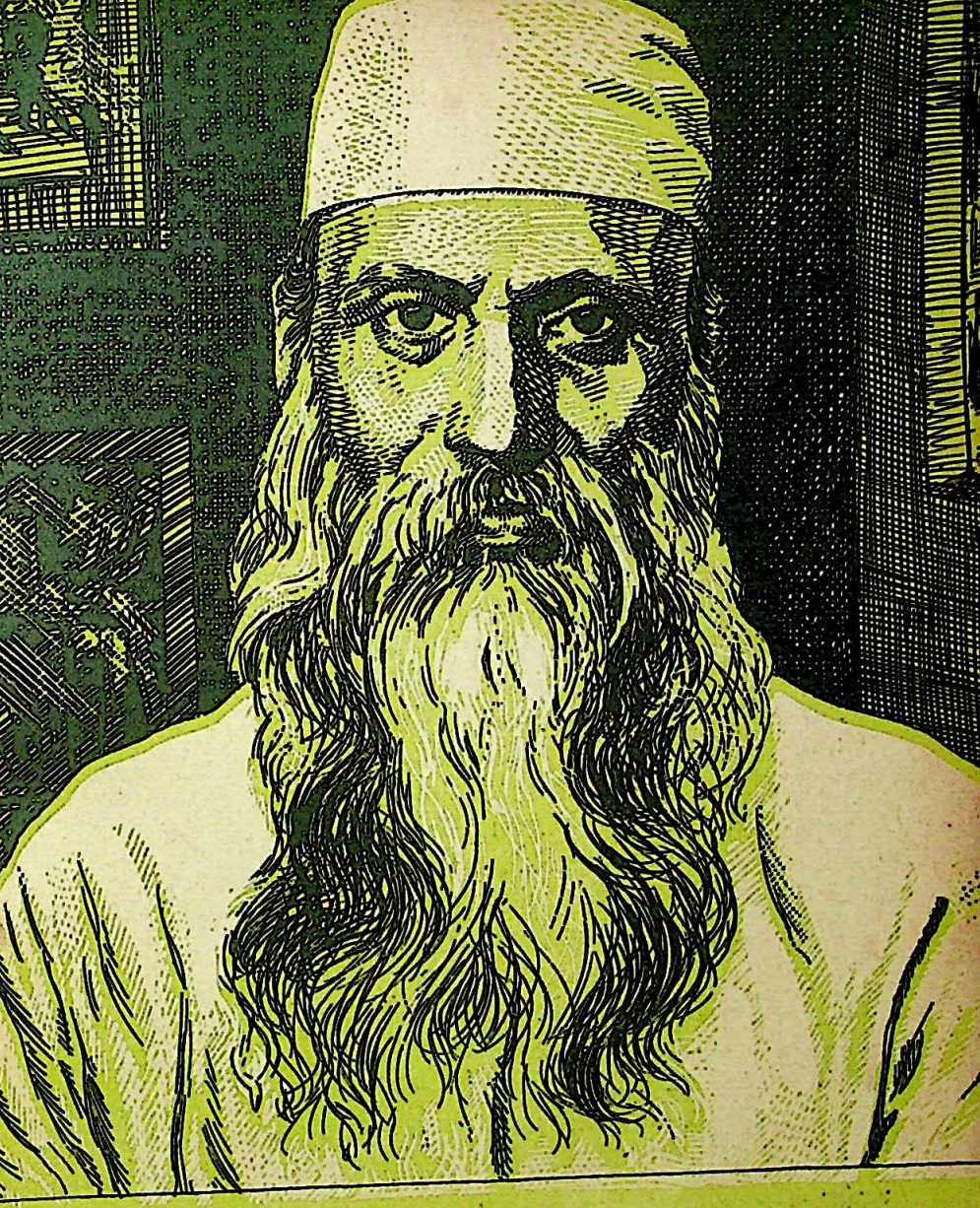

यह देहरूपी मंदिर जो जन्म के साथ हमें मिला है, उसमें एक शिवलिंग स्थापित है। दिनरात, आठों पहर बहनेवाली हमारी कर्मगंगा के जल से इसका अभिषेक होता है। गंगा का दूसरा नाम पुण्य-तोया है--भगीरथ के पावन कर्मों की पुण्यवाहिनी। अतः हमारे दैनिक जीवन का कर्मप्रवाह पुण्यतोया होकर महाशिव का अभिषेक बने, तभी उनकी ज्योतिर्मयता हमारे भीतर जागेगी। ---भगवानदास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन के पन्नों से

बर्ट्रैंड रसेल और कृष्णमूर्ति के बाल्यकाल के दो अनुभव-दीप

ग्रहण सबसे पहला कर्त्तव्य है, यह शिक्षा मुझे छः वर्ष की उम्र में एक बिल्ली से मिली। मेरी नानी ने एक स्यामी बिल्ली पाल रखी थी। बड़े नखरे थे उस 'छोटी शेरनी' के। हमेशा अपनी टेक ही रखती थी। यों प्यार का जवाब प्यार में ही देती थी और दिल खोल कर देती थी; मगर अपने कुछ खास-खास आग्रह वह प्रायः छोड़ती नहीं थी। नानी बड़ी कठोर शासिका थी। घर भर में सभी उससे काँपते रहते। जो वह चाहती, वही सदा होता था। मगर 'हेलेन' को वह भी बरदाश्त कर जाती थी। वह जमाना शान-शौकत और अच्छे खाने-पीने का था। बड़ी-बड़ी दावतें होती थीं; दर्जनों तरह के खाने बनते। फिर हमारा घर तो जैसे मेहमानघर ही था। चार-पाँच अतिथि रोज ही रहते थे। हेलेन को भी खाने का शौक था; मगर मैंने यह भी देखा था कि, वह स्वाद की परीक्षा खूब करती थी। नानी खुद उसे खिलाती थी। मगर जो नानी के लिए परोसा जाये, वह सब हेलेन के लिए भी होना चाहिए, नहीं तो हेलेन उठ कर चली जायेगी।

मैं नानी से हेलेन के इस स्वभाव की शिकायत करता था; मगर नानी कोई जवाब नहीं देती। कई बार टालती रही; मगर जब एक दिन मैं जिद पर अड़ गया, तो बोली—"हेलेन तो घमंडी है, शायद इसीलिए वह यह ढोंग रचती है; मगर मुझे लगता है कि, वह जीवन के एक बड़े भारी सिद्धांत को हमारे सामने रख रही है। जीवन में जो-कुछ आये, उसे स्वीकार करो। यदि नहीं कुछ आये, तो उसे बुलाओ—ऐसी योजना बनाओ कि, यहाँ-वहाँ से बहुत और विविध तुम्हारे पास आये। इस सबको तुम परखो। फिर जो रुचे, उसे अपनाओ। तुम तो हेलेन से भी गये-बीते हो। हर बात के लिए 'ना' कहते हो। जब सबको दरवाजे से खदेड़ दोगे, तो चाहोगे किसे? याद रखो, जो तिरस्कार करता है, वह अपने को खोता ही है। ग्रहण के भीतर ही पाना है। मैं चाहती हूँ कि, तुम 'हाँ' कहना सीखो।"

नानी के आदेश के मुताबिक नहीं, तो हेलेन से ईर्ष्या के कारण ही सही, मैंने 'हाँ'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहने की आदत डाली। आज उम्र पचासी वर्ष की है; मगर इस बीच कभी भी इस आदत ने मुझे छला नहीं– लाभ में ही मैं सदा रहा। —बर्ट्रेंड रसेल

✶

मौन रहो

मौन रहने की बात जो आज मेरे सामने है, वह कोई नयी बात नहीं है। जब से मुझमें समझ आयी, तभी से मेरे भीतर इस बात को अपनाने की इच्छा है। मगर जितनी बार लगाम थामी, छूटती ही चली गयी। बचपन में कई बार बड़ों के मुख से मौन की महिमा सुनी थी। मगर ऐसी यह कोई अकेली बात तो थी नहीं– और भी ऐसी कई चीजों की निंदा-स्तुति सुनने में आयी थी। एक दिन हम लोग बरामदे में खेल रहे थे कि, एक चीनी लोहार हमारे मोहल्ले में आया। वह काफी बूढ़ा था– आराम से एक पेड़ के नीचे लेट कर तम्बाकू पीने लगा। हम लोग उससे काफी हिलमिल गये थे। उसके आसपास बैठ गये। वह कई बार कहानियाँ भी हमें सुनाता था। मगर उस दिन वह एकदम खामोश था। हमें लगा कि, कहीं वह बीमार तो नहीं। हमने पूछा, तो भी वह नहीं बोला। मुझे बड़ा बुरा लगा; मगर उस पर दया भी हमें आ रही थी। वह काफी दुबला-पतला और बड़ा नेक था। उसके माँ नहीं थी, घर नहीं था और जब वह यों गाँव-गाँव मारा-मारा फिरता था, तो हमें लगा, शायद उसके पिता भी नहीं होंगे। एक लड़के ने उसका हुक्का छीन लिया। मैंने भी उसके कान में चिल्ला-चिल्ला कर पूछा–"पीले बाबा, बोलो, क्या बीमार हो? रोटी लाऊँ तुम्हारे लिए?" मगर वह तो जैसे जड़ पत्थर था। उसकी यह हालत देख, हम डर गये– कहीं वह मर तो नहीं गया। हम भाग खड़े हुए!

शाम को वह जब मेरे घर के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया, तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। चाचा ने उसे एक आना दिया और एक बर्तन की मरम्मत करवायी। काम करते-करते ही वह मुझसे बोला– "सवेरे तुम लोगों ने मुझे बड़ा परेशान किया। मैं तुम लोगों से बोल नहीं सकता था– वह मेरे मौन का समय था। मौन की ताकत तुम लोग जानते नहीं। ज्यादा बोलनेवाला लड़का कभी बड़ा आदमी नहीं बन सकता, इसे याद रखो। मौन हमारे चीन की देवी है, जो अपने भक्तों को सुख-सम्पदा देती है। तुमने कन्फ्यूशियस का नाम सुना होगा, मौन से ही वह महात्मा बन गया था!"

मुझे याद है, हम लोग तब चल दिये थे। मगर उस चीनी के ये शब्द कई बार मेरे एकांत में मुझे अपना महत्व बताते रहे और ज्यों-ज्यों दिन बीते, त्यों-त्यों मौन के प्रति मेरा आकर्षण भी गहरा होता गया। —कृष्णमूर्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दान का अहंकार तो कर्ण को भी खा गया था

बापू की सर्वसंतापहारिणी आत्मीयता के स्पर्श से नया जीवनोदय पानेवाले जगन्नाथ करोड़िया की एक मर्मस्पर्शिनी जीवनानुभूति

*

सुख हराम हो गया था। मन की उलझनों में तन की भी ऐसी धज्जियाँ उड़ती रहीं कि, न रात को नींद और न दिन को चैन। रोग ऐसे बढ़े कि, खुद डाक्टरों ने पनाह माँग ली। फूलों की कामना का उमंगित जीवन काँटों के पथ पर ऐसा जा गिरा कि, आह करना भी गुनाह हो गया।

जाति का वणिक् हूँ। बाप-दादे की परम्परा दूकानदारी रही थी। विरासत में मिले इस व्यवसाय में मैंने एड़ी-चोटी का पसीना सींच कर अच्छी-खासी जायदाद इकट्ठी कर ली। लखपति मैं नहीं हो सका; क्योंकि छोटे-से कस्बे में कमाई के इतने विविध और उर्वर साधन नहीं थे। फिर भी ६०–७० हजार नकद मेरे पास थे। बीस वर्षों की इस कमाई में मेरी निमग्नता ऐसी गहरी रही थी कि, भोग और त्याग मेरे लिए समान हो गये थे। केवल एक ही मोह –अर्थोपार्जन – में सुख-भोग के सारे स्रोत रिक्त हो गये थे। जाति, समाज और देश के बारे में सोचने का अवसर शायद ही कभी मेरी अनुभूति के द्वार तक आया हो। कोई संतान नहीं हुई, इससे भी जीवन का यह अंधप्रवाह कहीं भंग नहीं हो पाया– अनुराग का सारा अर्घ्य एक ही देवता पर अर्पित होता रहा। पुरुषार्थ के हजार हाथ दसों दिशाओं की कमाई बटोरने के बजाय एक ही खान की मिट्टी परखते रहे। आज मुझे खुद अपनी उस आग्रह-निष्ठा पर आश्चर्य होता है– क्या इतना लीन भी व्यक्ति हो सकता है? यदि मैं स्वयं प्रमाण नहीं होता, तो आज शायद ही मुझे किसी दूसरे के कहने पर यकीन आता!

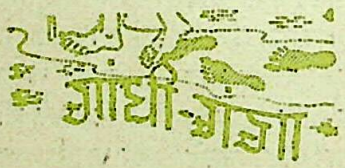

जब शरीर थकने लगा, तो पचपन वर्ष की उम्र थी। मगर इस थकान के साथ ही एक अजनबी-सी स्फूर्ति भी मेरे भीतर जागी। रह-रह कर मुझे जैसे कोई भीतर से बताने लगा कि, इस सम्पत्ति को, मृत्यु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बाद दावा करनेवाले वारिस के लिए छोड़ने के बजाय, जनसेवा के उपयोग में लगाऊँ। मैंने अपनी पत्नी से सलाह ली। उसने कहा—"मैं तो पहले से ही कहती आ रही हूँ कि, इस बला को इकट्ठा करने के लिए आपने यों ही इतनी माथापच्ची की! अब चलें तीर्थयात्रा कर आवें और फिर जितने की जरूरत नहीं हो, उसे धर्म-कर्म में लगा दें।"

अतः एक साल के भीतर ही मैंने एक छोटा-सा अस्पताल, एक स्कूल और एक गौशाला बनवा दी। लोगों में इस दान की बड़ी चर्चा फैली। कस्बे में मेरी कीर्ति एक छोर से दूसरे छोर तक विस्तार पा गयी। अपने दान पर चलनेवाली संस्थाओं के साथ-साथ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का चैयरमैन भी मुझे नामजद कर दिया गया। लगभग पाँच वर्ष तक कस्बे की कोई दो दर्जन संस्थाएँ मेरे संचालन में चलती रहीं; किंतु उसके बाद जैसे युग ने पलटा खाया। एक-एक करके सभी संस्थाओं में मेरे स्थान पर नये व्यक्ति आ गये। मेरी निःस्वार्थ सेवाओं, दान-सहायताओं का किसी ने भी कोई खयाल नहीं किया; यहाँ तक कि अपनी निजी संस्थाओं— स्कूल, अस्पताल और गौशाला— की कमेटियों से भी मुझे बाहर खदेड़ दिया। कई मिथ्या आरोप और इल्जाम भी मेरे ऊपर लगाये गये। मैंने भी मानहानि के दावे किये और फिर चला मुकदमों का सिलसिला और उसके साथ प्रचार-प्रदर्शनों के बवंडर! बस, जीवन जलता तवा हो गया!

तन और मन के संताप जब अत्यधिक बढ़ गये, तो पत्नी से मेरा दुःख नहीं देखा गया— सबसे बड़े परिताप और पीड़ा की बात उसके लिए थी, इस नारकीय जंजाल में उलझने की मेरी जिद। मुझे संसार में सर्वत्र शत्रु और पाखंडी ही नजर आते थे। पत्नी के सत्याग्रह को मैं टाल नहीं सका। तीर्थयात्रा को हम निकल पड़े। रामेश्वर से बम्बई आये, द्वारका जाने के लिए। पहले से सूचना दे दी थी, स्टेशन पर ही नारायणभाई मिल गये। दो दिन उनके भ्रातृत्वपूर्ण आतिथ्य में बिताये। मेरी पीड़ा उन्होंने बड़ी आत्मीयता के साथ सुनी और मुझे आश्वासन दिया कि, कल दुनिया के सबसे बड़े डाक्टर के पास वह मेरी चिकित्सा की व्यवस्था कर देंगे। और, दूसरे दिन नारायणभाई ने हमें वर्ली में गांधीजी के चरणों में बिठा दिया। दर्शन-मात्र से ही मेरे तो त्रिताप मिट गये। मैं तो कुछ कह नहीं सका। मेरी पत्नी और नारायणभाई ने ही मेरी कष्ट-कहानी उन्हें सुनायी। सहसा बापू की आँखें सतेज हो गयीं और उन्होंने जैसे घूरते हुए मुझसे कहा— "संताप को रोज-ब-रोज सींचते जाते हो और फिर कहते हो, तुम्हारा संताप मिटे— यह कैसे होगा? अच्छा होता, तुम्हारा धन तुम्हारे ही घर में सड़ जाता, तब साँप बन कर तो तुम्हारे गले में वह नहीं लिपटता। दान देकर तुमने मूर्खता की। अरे, जब दे दिया, तो उस पर कब्जा क्यों जमाते हो?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह तो दान नहीं; उधार भी यह नहीं— एक शब्द में, यह तो अनाचार का षड्यंत्र है। सत्ता और शक्ति खरीदने के लिए तुमने कीमत चुकायी है, दान नहीं दिया। फिर तो जो मिल रहा है, वही मिलेगा। और, चाहे कितने ही तीर्थ घूमो, यह फल सर्प की भाँति तुम्हारे आसपास ही रहेगा और इसके जहरीले डंक तुम्हें भोगने पड़ेंगे। एक देकर सौ लेने का जो छल करे, क्या उसकी सुगति होगी ?"

मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। आत्मीयता के ऐसे उद्गार मुझे जीवन में कभी नहीं मिले थे— हाँ कभी-कभी पिताजी के मुख से बचपन में ऐसा प्रखर ममत्व सुनने को मिला था। कितनी कठोरता से बापू मेरी गाँठें खोल रहे थे... उनका यह शस्त्र-छेदन भी कितना प्यारा लग रहा था मुझे—अपनों से दी गयी पीड़ा, आह, कितनी प्यारी लगती है ! कुछ रुक कर, मानो हृदयकोष का सारा प्रेम उड़ेलते हुए, वे बोले—"दान का अहंकार बड़ा घातक होता है—क्या तुझे याद नहीं, दानी कर्ण तक को वह खा गया था। तू अहंकार छोड़ दे, तब तो तेरा दिया दान है, नहीं तो तेरे लिए पग-पग पर विषपान तैयार है। जब दे दिया, तो सब दे दे— कुछ उसका लगाव अपने पास मत रख। अमीरी इसलिए त्यागी जाती है कि, चोरों का डर न रहे— तूने तो उल्टे और चोर अपने आसपास बुलवा लिये। अब तू यदि सुख चाहता है— जिंदगी के ये अंतिम दुर्बल दिन शांति से बिताना चाहता है,— तो उस अधूरे दान को पूरा कर दे— उससे पूरा नाता तोड़ दे !"

मैं घर आ गया। कोटि-कोटि तीर्थों के जल के समान बापू की वाणी ने मेरे सारे भवरोगों का शमन कर दिया था। उसी वाणी के बल ने मुझसे वह सब-कुछ भी करवाया, जिसकी सीख बापू से मुझे मिली थी। अगले वर्ष मैं अस्सी वर्ष का हो जाऊँगा। ज्यादा जीने की इच्छा है भी नहीं; किंतु संतोष यही है कि, मरने से पूर्व बापू के रूप में मैंने साक्षात् करुणा-सिंधु भगवान् के दर्शन किये हैं !

एक बार राष्ट्रपतिजी ने अपने जन्मदिन के सवेरे शय्या त्यागते ही अपनी डायरी के पन्ने में लिखा— "मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ कि, मुझको देश और समाज की ओर से इतना सम्मान मिला। गुरु के रूप में बापू मिले और धर्मपत्नी के रूप में राजवंशी देवी मिलीं, जिनकी सहायता और सहयोग से ही मैं देश की थोड़ी-बहुत सेवा कर सका। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि, अब मुझे सब चीजों से हटा कर अपनी ओर ले चलें और जब तक यहाँ रखना हो, आध्यात्मिकता की ओर चलने दें।"

— वाल्मीकि चौधरी-लिखित 'राष्ट्रपति और राष्ट्रपति-भवन' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

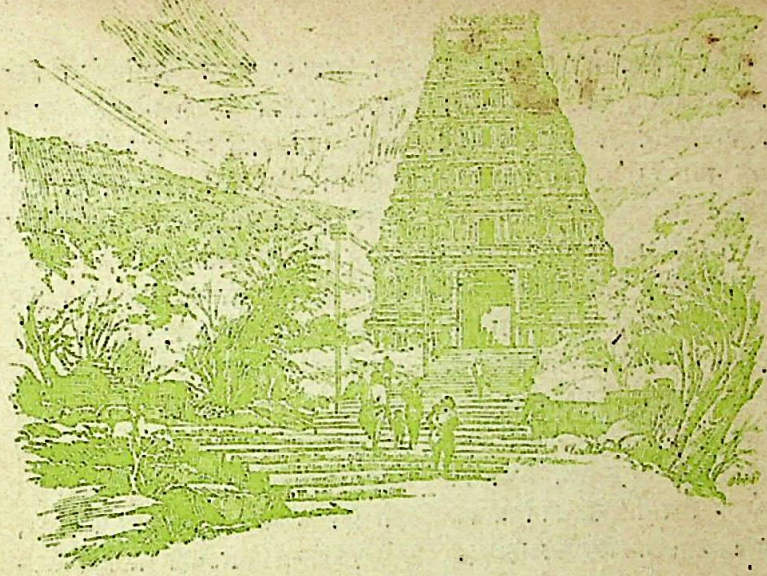

पूजा के बदलते पथ

"...और उस नवयुग में विचार निराकार न रहेंगे— भौतिकता के भीतर अपनी जड़ें फैला कर वे वहीं से अपना खाद्य प्राप्त करेंगे और इस धरती पर ही फले-फूलेंगे...और तब वैयक्तिक भी वे नहीं रह पायेंगे, एक समाज से दूसरे समाज के रंध्रों में प्रवेश कर विश्वजनीन हो जायेंगे। अतः वैयक्तिक ईश्वर भी इस युग में नहीं रहेगा। जन-जन-दुःखमोचन के स्रोत ही इस युग के ईश्वर के निवास होंगे...पूजा के शंख वहीं बजेंगे! विश्वास के लंगर वहीं अटकेंगे।" तीस वर्ष पूर्व की अरविंद की यह भविष्यवाणी आज सत्य के तोरणद्वार पर खड़ी है। दक्षिण के देवदर्शन के यात्राक्रम में श्रीगोपाल नेवटिया ने, लगता है, वहाँ के मंदिरों की आर्तवाणी में इसे सुना है— प्रस्तुत लेख में इसी की प्रतिश्रुति है। ऊपर चित्र में, तिरुपति-मंदिर के पथ में स्थित मैसूर-गोपुरम् और काली-गोपुरम् हैं।

*

आज श्रीरामेश्वरम् में हूँ। आज से ४२ वर्ष पहले भी यहाँ आया था। कितना समय बीत गया—कितना परिवर्तन हो गया! इन ४० वर्षों पर दृष्टिपात करने से, ये सामने दीखते स्वर्ण-कलश-भूषित गोपुरम्; कलापूर्ण मूर्तियों से मंडित शिखर; उनके नीचे विराजमान प्रतिमाएँ; उन प्रतिमाओं की पूजा करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुजारी और भक्ति से विनीत इन यात्रियों में कोई विशेष अंतर नहीं दीखता; पर उस जमाने और इस जमाने में अंतर अवश्य हो गया है।

उस समय का धनी या राजा अपने धन या बल से निर्माण-कार्य करता-कराता था, बड़े-बड़े मंदिर बनवाता था और उसमें प्रतिष्ठापित करता था देव-प्रतिमाएँ। आज का धनी टैक्स देता है, राज्य उससे बनवाता है निवासघर और उनमें बसाता है आर्त्तजनों को। चिदम्बर में देखा, प्राचीन युग के एक तेली ने भी धन अर्जित करके दिन-भर के अपने प्रत्येक श्वास के बदले में भगवान् को एक-एक मोहर से बने स्वर्ण-पत्रों का शिखर अर्पित किया था और उस कृत्य के द्वारा उसने अपने अगले जन्म को सुखी बनाने का साधन उपस्थित किया था। और, आज के धनी से राज्य सोना वसूल करके उसके बदले में कल-कारखाने लगाता है, जिससे लोगों का यह जीवन सुखी हो। प्राचीन निर्माता सरोवर बनाता था— उसमें स्नान करके पाप धोने के लिए और आज का निर्माता बनाता है बाँध — प्यासे खेत सींच कर भूखे पेटों को पालने के लिए।

अपने देश के छोटे-बड़े अनेक देवघर मैंने देखे हैं। भारत में और कहीं दक्षिण-जैसे देवघर नहीं हैं। अब भी इनकी लाखों की आमदनी और लाखों का खर्चा है। सोने का शिखर या हीरे का हार चढ़ानेवाले अब नहीं रहे और न ही रह गये चाँदी के कपाट चढ़ानेवाले। फिर भी, यथाशक्ति भेंट चढ़ानेवाले हजारों-लाखों यात्री प्रति वर्ष आते ही हैं और पूजा-अर्चना की प्राचीन परिपाटियाँ चली ही जा रही हैं। और, जैसा तिरुमलाई में हो रहा है, बहुजन-अर्पित धन में से १६ लाख रुपये खर्च करके श्री व्यंकटेश्वर के शिखर पर पुनः सोना चढ़ाया जा रहा है।

उत्तर-भारत का निवासी कल्पना भी नहीं कर सकता कि, मंदिरों एवं उनमें होनेवाली पूजा-अर्चना का इतना भव्य स्वरूप आज के युग में भी विद्यमान है। युगों पूर्व के वही समय-समय के दर्शन, शृंगार, पूजा-विधियाँ, वही चोटी, तिलक-धारी पुजारी, वही आरती, वही प्रसाद। व्यवस्था में अंतर हुआ है, तो यही कि, प्रायः सभी बड़े मंदिरों का प्रबंध राज्य-स्थापित ट्रस्टियों के हाथ में है। आमदनी से मंदिर-सम्बंधी व्यय-भार वहन किया जाता है। तिरुमलाई के श्री व्यंकटेश्वर तो इतने लक्ष्मीवान् हैं कि, उनकी आमदनी से सारे नगर की व्यवस्था चलती है— नीचे से ऊपर तक १५ मील लम्बी सीमेंट की सड़क बनी है, बड़ी-बड़ी शिक्षा-संस्थाएँ मंदिर के कोष से चलती हैं। तिरुमलाई के पश्चात् शिवकांचि, विष्णुकांचि, चिदम्बरम्, कुंभकोणम्, तंजौर, श्रीरंगम्, जहाँ भी गया, सर्वत्र मंदिर की व्यवस्था राज्य-स्थापित बोर्ड के अधीन देखी। अव्यवस्था के फलस्वरूप राष्ट्रीयकरण का-सा यह स्वरूप लगा। कुछ भी हो, पंडा-राज्य की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपेक्षा यह बोर्ड-राज्य ठीक ही है। विविध प्रकार की पूजा-अर्चनाओं के मूल्य निर्धारित हैं– रुपया दीजिये, रसीद लीजिये, पूजा करिये-कराइये और मनस्तुष्टि प्राप्त कीजिये।

दक्षिण के इन विशाल मंदिरों का निर्माणकाल १००० से ५००वर्ष पुराना है। सभी मंदिरों के आदि-मंदिर छोटे-से थे। उनके चारों ओर जैसे-जैसे भक्तों की आर्थिक उन्नति होती गयी, या कोई धनवान भक्त गणों में सम्मिलित हुआ, मंदिर का वैभव भी बढ़ता गया। रामेश्वरम् के मंदिर को यह रूप पाते-पाते ३५० वर्ष लगे। रामेश्वरम् की मूर्ति का प्रचलित नाम 'रामस्वामी' है। कहते हैं, सन् ११७३ ई० में श्रीलंका के राजा पराक्रमबाहु ने निस्संगेश्वर के लिए एक मंदिर बनवाया। सम्भवतः वही वर्तमान मंदिर का मूल होगा। कहा जाता है, उसके पहले रामस्वामीजी एक झोपड़ी में प्रतिष्ठित थे और किसी संन्यासी-द्वारा उनकी पूजा-अर्चना की जाती थी।

चिदम्बरम् में आदि-शंकर का स्वरूप, चिदम्बर का द्योतक एक शिलाखंड-मात्र है; पर उसको रूपवान करने के निमित्त उसके आगे चमकते सोने की मालाएँ लटका दी गयी हैं। उसी के पार्श्व में स्थित नटराज की मूर्ति की स्थापना तो बाद में हुई दिखती है। गर्भगृहों, विमानों (शिखरों), गोपुरों, प्राकारों का निर्माण और उनमें इतनी कलापूर्ण मूर्तियों और बेल-बूटों का उत्कीर्णन तो बहुत बाद का है। दक्षिण-भारत में उत्तर-भारत की भाँति मुसलमान विध्वंसकों का भीषण प्रहार

तिरुपति-मंदिर– गोविंदराजा-मंदिर से बाहर निकलते समय चतुर्स्तम्भी गोपुरम् और राजा-गोपुरम् के छवि-दर्शन

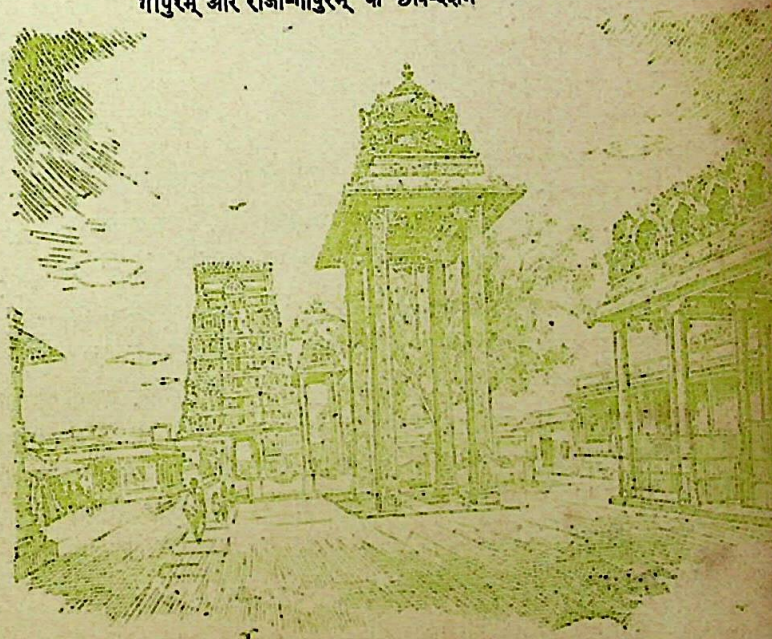

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं हुआ। ये जितने मंदिर हैं, वे एक हजार वर्ष से ज्यादा प्राचीन नहीं; पर देव-पूजा की यह संस्कृति तो उससे पुरानी है ही ! मंदिरों का तत्कालीन रूप, निश्चय ही, बहुत सादा रहा होगा।

यहाँ रामस्वामी की मूर्ति और उसके चारों ओर के मंदिरों का जो इतिहास मिलता है, उसके पौराणिक भाग से मालूम होता है कि, मूर्ति लाने के लिए हनुमानजी काशी भेजे गये ; पर उन्हें विलम्ब होता देख, सीताजी से बालू के महादेवजी का निर्माण करवा कर रामजी ने उनकी स्थापना कर दी। लौटने पर हनुमानजी यह देख कर क्रुद्ध हुए और अपनी पूँछ में लपेट कर बालू के महादेवजी को उखाड़ने लगे; पर रामजी का स्थापित शिवलिंग कैसे हिलता ? हनुमान का मान रखने के लिए उनके द्वारा लाये गये शिवलिंग की भी पार्श्व में स्थापना कर दी गयी। रामेश्वरम् के मुख्य मंदिर में दोनों शिवलिंग के गृह हैं। वह बालू का महादेव भी समय पाकर पाषाण का बन गया।

मंदिर के विभिन्न भागों को देखने से स्पष्ट दीखता है कि, वे एक समय के बने नहीं। प्राप्त प्रमाणों से मालूम पड़ता है कि, गर्भगृह सबसे प्राचीन है। वह काले पत्थर का बना है। इतिहास बताता है कि, इसे कैंडी (श्रीलंका) के राजा वरदराजशेखर ने लंका से चिकने पत्थर भेज कर बनवाया। लंका के ही राजा पराक्रमबाहु-द्वारा सन् ११७३ ई० में इस मंदिर के निर्माण के प्रमाण मिलते हैं। मंदिर में २४ तीर्थ, अर्थात् जलाशय कूप या वापिका-रूप में हैं। पार्वती और विष्णु के भी मंदिर हैं। सन् १४३४ ई० में सेतुपति उडयान तथा नागपट्टण के श्री कोमुट्टिचेट्टियार ने बिना भेदभाव के शिव एवं विष्णु के मंदिर एक ही स्थान में स्थापित करने का सुंदर कार्य किया। पश्चिमी गोपुर और परकोटा भी उन्होंने ही बनवाया। १५-वीं एवं १८-वीं शताब्दियों में कई धनपतियों ने मंदिर के विविध भाग बनवाये।

तपोलीन कामाक्षी

[चित्र : कामाक्षी-मंदिर के एक उत्कृष्टतम शिल्प की सरल रेखानुकृति]

यहाँ का गोपुरम् १२६ फुट ऊँचा है। ऊपर के स्वर्ण-कलश का स्पर्श करने के लोभ का संवरण नहीं किया जा सकता। छत पर से रामस्वामी, काशी विश्वनाथ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और विशालाक्षी के शिखर देखे। सामने दूसरा गगनचुम्बी गोपुर देखा। एक ओर स्वर्णिम रेत को विचुम्बित करता नीला सागर था। भगवान् के भीतर के निवास से भगवान् का यह बाहर का निवास कम प्रभावशाली नहीं था। चाहे बाहर चाहे भीतर, एक छाया सर्वत्र व्याप्त थी– वह थी वृद्धता की। आज का यह वृद्ध अपने जीवन में बड़ा प्रभावशाली रहा है। इसने अतुल यश एवं धन अर्जन किया है। और, वह अर्जित सम्पति अभी तक शेष नहीं हुई है। उसी के सहारे आज भी घी के दीये जलते हैं, अर्चनाएँ होती हैं, गंगोत्री से लाया हुआ रुपये-छटाँक का जल चढ़ाया जाता है। पर पद-पद पर, क्षण-क्षण पर, वृद्धावस्था तो अट्टहास करती ही है। वृद्धावस्था के बाद क्या मृत्यु है? यह चिरसत्य क्या देव-निवास के लिए भी लागू होगा? क्यों नहीं? आज ही एक पंडाजी अपने मन की शंका प्रकट कर रहे थे कि, सुना है, मंदिर का सोना सरकार ले जायेगी। मैंने उसके आगे जोड़ दिया– 'द्वितीय पंचवर्षीय योजना के लिए।'

घूम कर मैं उसी विषय पर आ गया। देवभवन-निर्माण या उसके जीर्णोद्धार में शक्ति एवं धन का व्यय करने की अपेक्षा दीन जनों के निवास बनाना क्या आज का युगधर्म नहीं है? एक घड़ा दूध शिवजी पर चढ़ाने की अपेक्षा उसे निर्धन बालकों के मुँह में पहुँचाना क्या अधिक श्रेयस्कर नहीं है? इन्हीं विचारों का प्राबल्य रहा और जैसा समय का प्रवाह है, ऐसा होगा ही। इन देव-मंदिरों की वृद्धता सवेग बढ़ेगी। उसे कौन रोक सकेगा? रोकेगी सम्पन्नता ही। देश इतना सम्पन्न हो कि, सम्पन्नता छलक कर मंदिरों और कला-कृतियों का रूप धारण करे!

पिछले कुछ वर्षों में मुझे विदेश के मंदिरों को भी देखने का अवसर मिला है। वहाँ भी भगवान् के निवासों को इसी प्रकार का– इनसे भी कहीं अधिक वैभवमय– स्वरूप दिया गया है। मुझे यह भी स्वीकार करने में संकोच नहीं कि, वहाँ की वास्तुकला एवं मूर्ति-निर्माण-कला हमारे यहाँ की कला से अधिक आगे बढ़ी हुई पायी जाती है। इस तुलना में हमारे इतने नीचे उतरने का कारण हमारी अयोग्यता नहीं; पर हमारी समृद्धि का अभाव, समय के दौरान में गृह-कलह और विदेशी आक्रमणों के कारण देश में शांति का अभाव ही है।

रामेश्वरम् एक टापू है, धनुषकोटि उसी का पूर्वी सिरा है। यहाँ राम आये थे। इस द्वीप का हर रज-कण एक-एक शिवलिंग है, ऐसी मान्यता है। किंतु जिस प्रवाह में आज का समय बह रहा है, उसमें देखें, इस स्थान के पाँव कितने दिन टिकते हैं! आज का मानव भगवान् के लिए स्वर्ण-विमान का निर्माण कर उनके दुग्धस्नान का प्रशंसक ज्यादा दिन नहीं रहेगा–वह तो उस भगवान् की खोज में रहेगा, जो आर्तजनों को घर-द्वार और भोजन प्रदान करे!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ति अभियान

अफ्रीका का घाना देश अभी-अभी ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्त हुआ है। वहाँ के प्रधानमंत्री क्वामे नक्रुमा, जो 'घाना के गांधी' कहलाते हैं, घाना के स्वातंत्र्य-संग्राम के अजेय सेनानी रहे हैं। एक बार ऐसी परिस्थिति आयी कि, मुक्ति-आंदोलन को बर्बर शक्ति ने लगभग कुचल दिया—छाया की भाँति साथ रहनेवाले साथी भी पथ छोड़ चले। नैराश्य के ऐसे ही तिमिराच्छन्न मुहूर्त में नक्रुमा ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर को स्वप्न में देखा—उन्होंने देखा, रवीन्द्रनाथ घाना के मुक्ति-अभियान को आशीर्वाद दे रहे हैं। यहाँ इसी प्रसंग का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर प्रस्तुत किया जा रहा है।

लगातार तीन दिन तक भयंकर अंधड़ चलता रहा। कई छोटी-छोटी बस्तियाँ, रेत और पानी के आक्रमण से, भू-लुंठित हो गयीं। सैकड़ों पेड़ उखड़ कर यहाँ-वहाँ सो गये। मैदान से लोग भाग-भाग कर पहाड़ियों और कगारों की ओट में बच्चों और स्त्रियों को लेकर छिप रहे। तुमुल मेघ-गर्जन के साथ अविराम बरसात महानाश की उस स्थिति को चरितार्थ कर रही थी, जिसमें शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं। एक पहाड़ी पर हमने एक तेंदुवे और हिरन को जिस्म-से-जिस्म सटाये शीत से काँपते देखा—सियारों और जंगली कुत्तों को एक ही झुंड में एक बड़ी चट्टान की सुरक्षा में परिपूर्ण मैत्री-भाव से रात और दिन काटते पाया। महाभय की यह स्थिति हमें भयंकर विपत्ति अवश्य दे रही थी; किंतु इसने हमें एक सबसे बड़ा सत्यानुभव भी दिया, जिसे मैं शायद ही कभी भूल सकूँ। इस दुर्दैव ने हमारे सामने स्पष्ट कर दिया कि, महाभय के सामने सभी छोटे-छोटे भय और आशंकाएँ अपनी औकात खो देते हैं और आत्मीयता की वह प्रसुप्त लहर जाग उठती है, जो प्राणिमात्र में निश्चित रूप में विद्यमान है; किंतु जड़, प्रवाहक्षीण-सी, दबी पड़ी रहती है। बड़ा भय, जिसे मैं 'श्मशान का भय' कहूँगा, सभी क्षुद्रताओं को तोड़ कर हमारी आत्मा को अपनी असली ज्योति में निखार देता है और तब कुछ भी अपरिचित नहीं रह जाता—देह की दीवारों के व्यवधान भी विफल हो जाते हैं!

उन दिनों हम क्रांतिकारियों के गिरोह प्रायः पहाड़ियों की कंदराओं में ही जीवन बसर करते थे। हरदम मृत्यु का फरमान हमारे स्वागत के लिए हर गाँव, हर नगर, हर डगर और उस छप्पर में तैयार रहता था, जो गोल्ड कोस्ट की भूमि पर खड़ा है। मगर वर्षा एवं वज्र-पात के इन तीन दिनों ने हमें जैसे स्वच्छंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वराज्य दे दिया था। गहरी-से-गहरी गड़ी अँग्रेज-सरकार की नींव उखड़ गयी थी और प्रजा के सुख-दुःख के बजाय उसे अपनी निजी सुरक्षा की पड़ी थी— सरकारी अफसर, शासक और सुरक्षा-विभाग के अधिकारी, सब अपने घरों और स्वार्थों के संरक्षण में लगे थे। इस बीच हमारे दल-के-दल अपने गुप्त स्थानों से बाहर निकले और फरिश्तों की भाँति मदद के हाथ और आत्मीयता का हृदय फैलाये प्रत्येक परिवार के द्वार पर गये। प्राणों की बाजी लगा कर हमने अपने देशवासियों के दुःखों को अपने सिरों पर ओढ़ा— मृतकों को दफनाया, बच्चों और स्त्रियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया। बची-खुची सम्पत्ति पर पहरेदार नियुक्त किये। बाढ़ को रोका, मवेशियों को पानी में से निकाल-निकाल, पर्वतों की घाटियों में पहुँचाया। पीड़ित व्यक्तियों के कैम्पों में रात-दिन भट्टियाँ जलती रहीं— जैसा भी सम्भव हो सका, खाना पकता रहा। घोर नैराश्य में, प्रकृति के इस रौद्र प्रकोप में, हमारे साथी सारे संतप्त इलाके में विद्युत्गति से घूम-घूम कर लोगों की सेवा-सहायता करते रहे! हमारे दल के लिए यह प्रथम अवसर था, जब हम जनता के इतने निकट आ सके थे!

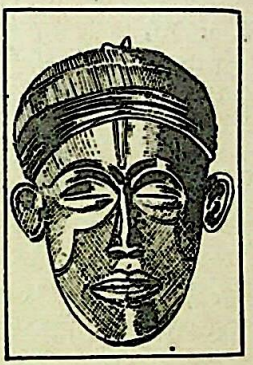

ज्ञानी

[चित्र : घाना के एक प्राचीन काष्ठशिल्प की सरल रेखानुकृति]

इससे पूर्व तो हमें जिस रूप में सरकार ने चित्रित किया था, उसी रूप में प्रायः अनजान जनता हमें समझती आ रही थी। हमें प्रायः खूनी, डाकू और समाज-विरोधी कार्रवाइयों में निमग्न अनाचारी व्यक्ति ही सरकार ने करार दिया था और इन विशेषणों को पुष्ट करनेवाले प्रमाण भी सरकार ने हजारों रुपये खर्च करके गढ़े थे। अतः यह दुर्दैव एक प्रकार से हमारे लिए वरदान ही साबित हुआ— हमें लगा, शायद भगवान् ने हमारे संकल्प एवं देशप्रेम की परीक्षा लेने के लिए ही यह कसौटी हमारे सामने प्रस्तुत की थी। हम इसमें कितने खरे उतरे, यह तो आज सर्वत्र प्रकट है— आज 'गोल्डकोस्ट' स्वतंत्र है और हमारा दल ही जनतंत्रीय शासन की लगाम अपने हाथों में थामे हुए है। मगर आज जो कुछ नवोन्मेष है, युगांतर है, उसके मूल में वे सात-आठ दिन ही हैं, जब हमारे और जनता के बीच के दुर्ग अकस्मात् ढह गये थे— जब जनता हमारे दिलों को अपने हाथों से जी-भर टटोल सकी थी।

मगर हमारे संकल्पों में जनता के विश्वास की फौलादी नींव जमानेवाला,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि सच मानिये तो, वह स्वप्न ही था, जो तूफान की उस दोपहरी में मैंने सुषुप्ति और जागृति की एक वय-संधि में देखा था। चरम विफलता एवं हतोत्साह के सर्प-दंशों का जहर हमारे दल के स्नायु-जाल में इतनी तीव्रता से संचारित होता जा रहा था कि, सारी गतिशीलता ग्रीष्म-कालीन पहाड़ी नदी की भाँति सूख गयी थी। प्राणों की क्रियाशीलता में ऐसा ही विपन्न-विघटित मैं उस अंधड़ में भी, और वह भी भरी दोपहरी में, सो गया। देखा, एक श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति मेरी तरफ धीमे-धीमे बढ़ता आ रहा है— सिर पर सफेद बाल, दाढ़ी भी बर्फ-जैसी सफेद, चम्पक-वर्णी शरीर-यष्टि! वृद्ध जैसे चंद्रमा का रूप हो— चंद्रमा की भाँति ही मेरे शून्य में निःशब्द-निर्वेग, सुमंद्र-मंद्र संतरण करता चला आ रहा था। उसके छविमुख को, उसके चारों तरफ प्रभासित ज्योत्सना-मंडल को, मैं अपलक, मुग्ध पशु की भाँति, देखता रहा। उसके कदम मेरे और भी निकट आ गये। मैंने ऊपर दृष्टि उठायी। देखा, उसका सिर चंद्रमा को छू रहा है और सारे अवकाश-अंतरिक्ष में उसकी देह प्रसारित है। आसमान से धरती तक उस वृद्ध की आकृति के सिवाय मुझे कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था। मेरी दृष्टि जैसे उस आकृति के श्वेतालोक में खो गयी थी!

फिर, क्षण-भर बाद ही, उसका दायाँ हाथ ऊपर उठा। तर्जनी मेरे सम्मुख आयी और उसके साथ ही ऐसी मोहिनी चारों दिशा में बिखरी कि, एक चाँद क्या, लाख-लाख चाँद भी धुँधले हो जाते! फिर जैसे किसी वंशी का समस्त मधुकोष फूट निकला हो, उस ऋषि-आकृति के होंठों से शब्द झरने लगे—"बावले हो गये हो! पूजा की एक पँखुड़ी, एक अक्षत, जल की एक बूंद भी कभी व्यर्थ गयी है! अर्पण भी क्या नश्वर होता है! व्रत-पालन का एक क्षण भी कभी देवता से विस्मृत हुआ है? बलिपथ पर बढ़े कदम चाहे रुक गये हों, विफल-मनोरथ हो गये हों; किंतु काल-सर्प के फण पर से उनके चिह्न क्या कभी मिट सके हैं? क्रांतिवीर की नसों में प्रवाहित रक्तराशि चाहे क्षणप्रवाही ही रही हो; किंतु क्या वरुणदेव उसे अपने शीश पर चढ़ाने के लिए लालायित दौड़ नहीं पड़ता! अरे भोले प्राणी, दाता सदैव वंदनीय है— कितना देता है, यह प्रश्न नहीं है! अरे अल्हड़ पुजारी, तुझे प्रभु की रीत नहीं मालूम। एक पँखुड़ी भी उन्होंने ले ली, तो वे बँध गये तेरी प्रीत की डोर में! भूल मत कर, सावधान रह! पँखुड़ी लेनेवाले वे प्रभु कभी फूल की माला भी माँग लेंगे तुझसे। कब माँग लेंगे, कहेंगे क्या तुझसे वे? जब उनकी प्रीति उमड़ेगी, वह प्रीति ही तुझसे माँग लेगी...तू समय मत खो। बैठ कर माला गूँथ...तैयार खड़ा रह..तेरा बुलावा आया ही समझ!" जैसे ही वह प्रकाश-पुरुष अंतर्धान हुआ, मेरी नींद भी समाप्त हो गयी और मैंने अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथियों से कहा—"आज...अभी-अभी, चिर शोषित-पीड़ित मानवता की संत्रस्त वाणी के गायक, भारत के रवीन्द्रनाथ ठाकुर मुक्तिपर्व के आह्वान की सूचना हमारे सामने रख गये हैं...उठो...समय आ गया है।"

मेरे साथियों में से एक ने कहा—"आजकल 'गीतांजलि' पढ़ रहे हो, इसीलिए अंतर्गत इतना आंदोलित है... थोड़ा विश्राम कर लो। देखना, कहीं पागल न हो जाना!"

मगर इस स्पष्टीकरण से मेरे जाग्रत चैतन्य की तृप्ति नहीं हो सकी। मैंने सबको सचेत किया—"मैं नहीं जानता, मैं सोया था, या जाग्रत था। मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि, अभी-अभी 'कवि' आया था और मुझे इस काल-निद्रा से झकझोर कर कह गया है कि, स्वराज्य की नींव खोदने का मुहूर्त आज है, इसी क्षण है—स्वयं प्रकृति ने जनपूजा का पर्व हमारी अर्चना के सम्मुख रख दिया है!"

★

उस रात को जब मैं सोया, तो बड़ा प्रसन्न था। मैंने चुपके-से जाकर खूब शराब पी थी और नशे में अपने साथी पियक्कड़ों के साथ दंगा-फसाद भी कम नहीं किया था। मेरे चेहरे पर चोटें आयी थीं; मगर मैंने उन पर मरहम-पट्टी लगा ली थी।

जब मैं वापस लौटा, तब भी 'वह' खुर्राटें भर रही थी। जूते हाथ में लेकर, बिना आवाज किये, मैं अपने बिछौने पर आकर सो गया। सवेरे उठा, तो पत्नी ने चाय सजा दी थी और बड़ी गम्भीर बनी, खड़ी-खड़ी, मेरा इंतजार कर रही थी। मैंने उसकी गम्भीरता को झकझोरते हुए कहा—"गम्भीरता में तो तुम और भी खूबसूरत लगती हो—एकदम फरिश्ता दिखती हो! क्या रात को नींद नहीं आयी थी?"

"बातें न बनाइये, मैं अब इस घर में नहीं रहूँगी। बस।" —वह बोली।

"क्यों, क्या हो गया आखिर इस घर को? अभी तक तो मुझसे ही नाराजी थी, अब घर से भी हो गयी... यह क्या हो गया है तुम्हें आजकल?"

"कल रात तुमने फिर शराब पी थी न?"

"नहीं तो! किसने कह दिया तुमसे?" —मैंने निर्दोष भाव से कहा।

"तुम्हारे दुश्मनों ने नहीं! मुझसे कहा है, बाथरूम के शीशे ने!"

"कैसे कहा?" —मैंने बहस की।

"सवेरे मैंने देखा कि, शीशे में जगह-जगह मरहम की पट्टियाँ चिपकी हैं!"

मैंने अपने चेहरे पर हाथ फेरा—उफ! बाल-बाल बच कर भी कैसा पकड़ाया! वह फिर गुस्से में ही बोली—"चेहरे पर हाथ क्या फेरते हैं? आपने अपना नहीं, शीशे में दिखनेवाली अपनी शक्ल का ड्रेसिंग किया था। आपने शराब पी थी, इसका इससे ज्यादा सबूत और क्या हो सकता है?" —जेक्वलाँ की एक फ्रेंच कथा के आधार पर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृहस्थाश्रम

भारतीय गृहस्थी की कल्पना जीवन के सर्वांगीण विकास का ऐसा चित्र है, जिसमें भोग-त्याग के अपूर्व समन्वय-द्वारा भौतिक से लेकर आध्यात्मिक, सभी अतृप्तियों को चरम तुष्टि मिल जाती है। भोग और त्याग के दो पहियों का यह रथ आनंद के एक-के-बाद-एक गंतव्य प्राप्त करता हुआ परम ध्येय की ओर निरंतर अग्रसर होता जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के इस लेख में भारत के गृहस्थाश्रम की इसी महत्ता के दर्शन कीजिये।

*

धर्म से तात्पर्य उन सत्यात्मक नियमों से है, जो व्यक्ति और समाज के जीवन को धारण करते हैं। यह धर्म कर्त्तव्य के रूप में परिवार के प्रत्येक प्राणी के सम्मुख आता है। पिता, माता, पुत्र, बंधु, जिनका परिवार से नाता होता है, वे सब कर्त्तव्य के ऋण से बँधे होते हैं। जहाँ कर्त्तव्य है, वहाँ विरोध की स्थिति नहीं रह जाती। कर्त्तव्य का आग्रह व्यक्ति के विचार और कर्म को तनाव से ऊपर उठा देता है। इसी भावना का दूसरा नाम 'यज्ञ' है, जिसमें व्यक्ति दूसरे के लिए अपने स्वार्थ और सुख का समर्पण करके दूसरों की सहायता करने की युक्ति प्राप्त करता है। हिन्दू-परिवार की व्यावहारिक स्थिति इसी भावना के बल पर टिकी है। यही पारिवारिक जीवन का रस है। यही स्थिति– जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे की सहायता और सेवा करने की सोचता है– वस्तुतः 'स्वर्ग' है।

गृहस्थी के परम रस– वात्सल्य रस– की एक अभिनव छवि
[चित्र : इटालियन चित्रकार मेलिंजो के एक रंगीन चित्र की रेखानुकृति]

इसके विपरीत जब हम प्रत्येक वस्तु को अपने ही स्वार्थ की दृष्टि से देखते हैं, तो संघर्ष को जन्म देते हैं। उस तनाव की स्थिति को ही नीतिशास्त्र की भाषा में 'नरक' कहा जा सकता है।

हिन्दू-समाज का जीवन मुख्य रूप में इसी परम्परा की शक्ति से संचालित होता है। ऐसा कुछ नहीं, जो इस परम्परा के अंतर्गत न आता हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीति, धर्म, दर्शन, विचार, ज्ञान, भक्ति, पुण्य, दान, कथा, वार्त्ता, तीर्थ, व्रत, पर्व, उत्सव, संस्कार, दया, उदारता आदि जीवन के मूल्यवान तत्त्व परम्परा के रूप में हमें अनायास ही सुलभ होते हैं।

इसी यज्ञ की परम्परा ने हमारे ज्ञान और कर्म के कितने ही मूल्यवान तत्त्वों को कई सहस्र वर्षों की अविच्छिन्न धारा से हमारे पास पहुँचाया है। साथ ही, यह भी सत्य है कि, प्राचीनता-प्रियता की हमारी सामाजिक प्रवृत्ति सदा नूतन को स्वीकार करते रहने से ही स्वयं बची रह सकी है।

इस सांस्कृतिक जीवन को सम्भालने के लिए कुल-संस्कृति को ठीक करना आवश्यक है। प्राच्य देशों की सभ्यता में कुल का अत्यधिक महत्व रहा है। मनुष्यों के सब प्रयत्न कुल की प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाने के लिए होते रहे हैं। इस प्रकार के श्रेष्ठ कुलों को 'महाकुल' कहा जाता था।

इस सम्बंध में महाभारत में एक कथा आयी है कि, एक बार विदुर ने युधिष्ठिर से कहा—"असत्य और बल से धन प्राप्त कर लेना संभव है; किंतु महाकुलों का आचार धन से नहीं प्राप्त किया जा सकता।"

इस पर धृतराष्ट्र ने कहा—"मैंने सुना है कि, जो धर्म और अर्थ में बढ़े-चढ़े हैं, बहुत पढ़े-लिखे हैं, वे भी महाकुल की प्रशंसा करते हैं। हे विदुर, मैं जानना चाहता हूँ, महाकुल किस प्रकार बनते हैं?"

विदुर ने कहा—"तप, दया, ब्रह्म, ज्ञान, यज्ञ, सदा अन्न-दान, शुद्ध विवाह और सम्यक् आचार— इन सात गुणों से साधारण परिवार भी महाकुल बन जाते हैं। जो किसी प्रकार सदाचार का अतिक्रमण नहीं करते, जो विवाह-सम्बंध ठीक प्रकार करते हैं, जो जीवन में झूठ का मार्ग छोड़ कर धर्म का आचरण करते हैं, जो अपने कुल के लिए विशिष्ट कीर्ति उपार्जित करने का प्रयत्न करते हैं, उनके कुल 'महाकुल' कहलाते हैं। जो आचार से हीन हैं, उन कुलों में कितना भी धन हो, वे प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर सकते। किंतु अल्प धन होने पर भी, सदाचार ठीक होने से, कुल यश-प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं और उनकी गिनती महाकुलों में होती है।"

यहाँ बलपूर्वक यह मत प्रकट किया गया है कि, धन कुलों की महत्ता का कारण नहीं, कुल की ऊँचाई तो धर्म के पालन से होती है। धर्म के सद्गुणों से परिवार का सिंचन करना, यही परिवार के प्रत्येक सदस्य के मन की अभिलाषा होनी चाहिए। परिवार को महान् बनाओ, श्रेष्ठ बनाओ, उसे रूप-सम्पन्न करो, प्राण-सम्पन्न करो, अर्थ, धर्म और काम-संज्ञक पुरुषार्थों से सम्पन्न करो, अपने जीवन की शक्ति की नवीन धारा उसमें प्रवाहित करो— इस प्रकार की उत्साहमयी मानसिक स्थिति परिवार की उच्चता का कारण बनती है। पिता, माता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहनों से लहलहाता हुआ शील-सम्पन्न परिवार-रूपी भवनोद्यान कितना रसपूर्ण होता है, इसे शब्दों में कहना कठिन है!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धि त्राण देती बुद्धि प्राण लेती

नोबेल-पुरस्कार-सम्मानित जापान के सुचेता-सुमना वैज्ञानिक हिडेकी युकावा के सामयिक विचार

*

विज्ञान की प्रगति-द्वारा हमने मानव के बाह्य संसार को बुद्धिपूर्वक समझने में सफलता प्राप्त की है। लेकिन जब तक हम आंतरिक और बाह्य जगत् को एक-दूसरे से पृथक् करके उनका विश्लेषण करते रहते हैं और दोनों के घनिष्ठ सम्बंध पर ध्यान नहीं देते, हमारा दृष्टिकोण अपूर्ण और एकांगी ही रहता है।

यह शायद एक ऐसा सवाल हो, जिस पर मुझ-सरीखे भौतिक-शास्त्री की अपेक्षा कोई मनोविज्ञानशास्त्री अधिक अच्छी तरह प्रकाश डाल सके; लेकिन मैं यह बात कहना चाहता हूँ कि, जब विज्ञान प्राविधिक ज्ञान से (जिसका मानव-जगत् के विभिन्न कार्यों से गहरा सम्बंध है) मिल जाता है, तो हम इस सवाल को मानवता के बौद्धिक विवेचन तक ही सीमित नहीं रख सकते।

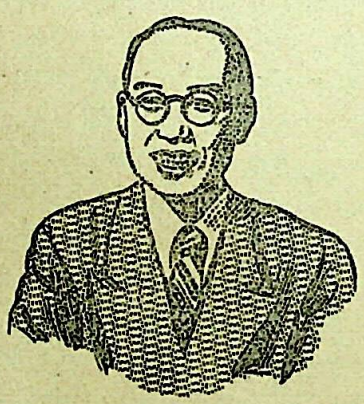

शिव-संकल्पी वैज्ञानिक युकावा

जब तक भौतिकशास्त्रियों ने पदार्थ की ही दृष्टि से उसकी बनावट का अध्ययन किया, तब तक यह प्रश्न करना आवश्यक नहीं हुआ कि, मनुष्य होने के नाते उनकी क्या इच्छाएँ हैं और वे कैसे जीवित रहते हैं। यह सर्वथा उचित ही था कि, जीवन के बारे में उनके विचारों को, उनके अध्ययन को छोड़ कर, उनकी किताबी छानबीन से पृथक् रखा जाये। किंतु जिस क्षण से आणविक भौतिकशास्त्र इस स्थिति में पहुँच गया कि, अणुशक्ति का क्रियात्मक उपयोग किया जा सके, तभी से वैज्ञानिक के रूप में इनके रहन-सहन और विचार के तौर-तरीकों को, अन्य मामलों में इनके रहन-सहन एवं विचार के तरीकों से अलग करके उन पर गौर करना असम्भव हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कहना कठिन हो गया कि, अणुशक्ति का प्रयोग चाहे किसी भी रूप में किया जाये, वैज्ञानिकों को उसमें टाँग अड़ाने की जरूरत नहीं है। अणु-वैज्ञानिकों का मामला एक सर्वाधिक उल्लेखनीय दृष्टांत है; पर बहुत-से मामलों में आचार-शास्त्र व नैतिकता का प्रश्न हमारी विचार-कोटि में तभी आया है, जब विज्ञान की उपयोगिता सिद्ध हुई। अब तक वैज्ञानिक प्रगति की यही प्रवृत्ति रही है कि, मनुष्य के आकार को मानव-समाज के विभिन्न पहलुओं को जोड़नेवाले और विकसित करनेवाले के बजाय, उसे भंग करनेवाला चित्रित किया जाये।

अनेक शाखाओं में विज्ञान के विभक्त हो जाने का फल यह हुआ कि, विश्वसनीय सूक्ष्म ज्ञान तथा प्रक्रियाओंवाले बहुत-से विशेषज्ञ हो गये। ज्यों-ज्यों मनुष्य-निर्मित मशीनों की विविधता बढ़ी, त्यों-त्यों उनमें से हरेक अधिक पेचीदा होती गयी। जो व्यक्ति किसी मशीन को चलाता था, वह उसके कार-बार को पूरी तरह समझने की दिक्कतें उठाने से बचता रहा और उसका उपयोग करने-मात्र से संतुष्ट रहा। जहाँ पहले मनुष्य अपने को मशीनों का संचालक मानता था, वहाँ अब वह उनकी सहायता पर निर्भर रहनेवाला बनता जा रहा है। यह बात तो अच्छी है कि, मशीनों के कारण बहुत-से कामों में मनुष्यों की जरूरत नहीं रही और उन्होंने मनुष्य के कार्यों में योग दिया है; पर हमें इस दिशा में सचेत रहने की जरूरत है कि, यदि हमने मशीनों से वे सभी काम लेने शुरू कर दिये, जो मानवीय मस्तिष्क से किये जाते हैं, तो एक दिन दशा क्या हो जायेगी।

हम यह नहीं कह सकते कि, इन सब विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों के इकट्ठे हो जाने से इस बात का खतरा नहीं कि, मानवता के विभिन्न पहलुओं की एकता खत्म हो जायेगी और अंततः समस्त मानव-समाज ही छिन्न-भिन्न हो जायेगा। हम इस खतरे के अलावा इससे भी इन्कार नहीं कर सकते कि,

बुद्धि

उस दिन विधाता अपनी ही मूर्खता पर खूब खीझे। बुद्धि को बना कर वे सचमुच पछताये– अत्यंत चांचल्य और गतिमयता के प्रतीक इस घोड़े ने उनके नाकों-दम कर दिया। आखिर उन्होंने पकड़ कर उसे श्रद्धा की लगाम लगा दी। मगर फिर भी घोड़ा भाग निकलता। तब उन्होंने क्रुद्ध होकर जड़ शरीर उसकी पीठ पर बैठा दिया और अनंत काल तक वजन ढोने के लिए उसे पृथ्वी पर छोड़ दिया। मगर शायद विधाता को मालूम नहीं, यह घोड़ा इतना वजन ढोकर भी प्रायः स्वेच्छा के मार्ग पर भाग निकलता है। — 'हंसबोध' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार की सामाजिक अस्त-व्यस्तता से मानव-जाति की सुख-समृद्धि समाप्त हो सकती है। आजकल अक्सर यह प्रश्न किया जाता है कि, विज्ञान से मनुष्य-जाति सुखी होगी या नहीं। इसका एक निश्चित उत्तर देना आसान नहीं है। हम २०-वीं शताब्दी के लोग भी निश्चय-पूर्वक यह नहीं कह सकते कि, विज्ञान से मनुष्य हर हालत में सुखी ही बनेगा।

इस बात का कोई भरोसा नहीं कि, विज्ञान की प्रगति से मानव का सदा कल्याण ही होगा। विज्ञान तो संसार के उन रहस्यों से लाभ उठाने के मानवीय प्रयत्नों का प्रकाशन-मात्र है, जिनके बारे में हम छानबीन कर सकते हैं और मानव-जाति के लिए नयी सम्भावनाओं की खोज कर सकते हैं। उस रहस्यमय संसार में क्या है? यह जरूरी नहीं कि, नयी सम्भावनाओं की खोज से मनुष्य सुखी ही होगा। सम्भव है, इस खोज से सुख तथा समृद्धि हाथ आये और यह भी संभव है कि, इससे समस्त मानव-समाज ही नष्टभ्रष्ट हो जाये।

प्रश्न हो सकता है कि, इस भूतल पर मानवीय सुख किसे समझा जाये? इसका सही उत्तर देना बड़ा कठिन है। क्या विज्ञान की कोई ऐसी शाखा हो सकती है, जो इसका सीधा उत्तर दे? लगता है कि, मानवीय सुख को अध्ययन का विषय भी नहीं बनाया जा सकता। हर्ष, क्रोध, भय और शोक-जैसे मानवीय भाव हमारे मन से उत्पन्न होते हैं। और, बहुत-सी दशाओं में, यहाँ मानवीय चेतना या अंतर्दृष्टि से भी परे की बात होती है। मनुष्य में बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जो आदि-मनुष्य का निर्माण होने से भी पहले से इसमें विद्यमान हैं। वह उन्हें समझे या न समझे, वे कायम हैं और मानवीय भावना उनसे घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध है। इसलिए जब मानवीय सुख के बारे में प्रश्न किया जाता है, तो उसे सिर्फ विज्ञान के सहारे हल करना बड़ा कठिन होता है। मानवीय भावना और इसी तरह मानवीय सुख की बात इन असाध्य वस्तुओं से अविच्छिन्न रूप में जुड़ी हुई है।

फिर प्रश्न यह है, ऐसा क्यों होता है कि, मानवीय संसार में जो वस्तुएँ अभीष्ट और सिद्धांत रूप में उचित प्रतीत होती हैं, उन्हें हम आसानी से प्राप्त नहीं कर पाते और विवादास्पद चीजें बहुधा हमें प्राप्त हो जाती हैं? इसका कारण यह है कि, मनुष्य सिर्फ तर्कसंगत विचार से ही प्रेरित नहीं होता है। तथापि, इसका यह अर्थ नहीं कि, हम मनुष्य अपनी विचार-शक्ति या बुद्धि का विशेष उपयोग ही नहीं कर सकते। इसके विपरीत, हम अपने मन के भीतर की गूढ़ बातों को उभार कर मानवता के व्यापक स्वरूपों को बुद्धि-संगत विचार-चिंतन के क्षेत्र में ला सकते हैं। इस प्रकार के प्रयत्न करके हम मानव-समाज को भावी विनाश के मार्ग पर आगे बढ़ने से रोक सकते हैं। इस नये युग में रहनेवालों के लिए क्या यह एक अपूर्व बुद्धिमत्ता की बात न होगी?

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बार की बात

हमेशा 'करते ही रहना' आज जिंदगी का ऐसा शाप हो गया है कि, आनंद के हमारे पंख ही कट गये। हमें लगता है कि, इंद्र ने पर्वतों के पंख नहीं काटे थे, वे स्वयं ही कट गये होंगे और मूल कारण रहा होगा– पर्वतों की अत्यधिक भाग-दौड़, गति के प्रति उनका खतरनाक मोह! कितना अच्छा हो, हम इन पंखों को साबित रहने दें... मगर यह तो तभी हो सकता है, जब हम 'हमेशा करते रहने' को कभी-कभी 'कुछ नहीं करने' के आनंद के साथ संतुलित करते रहें! इस प्रबंध में इसी आनंद के मुक्ताकाश की कुछ ज्योति-चंचल किरणों को शब्दबद्ध करने की चेष्टा है।

*

चैत का महीना। अमावस की रात। आधी ढल चुकी थी। चारों तरफ सुनसान– निःशब्द जगत्। कान लगाने पर केवल झींगुरों के झीने-झीने स्वर। कहीं कोई हलचल नहीं, गतिहीन सृष्टि। केवल हवा का झोंका भूला-भटका आता और चंचल शिशु-सा शरीर को छूता हुआ कहीं भाग जाता!

बीच मैदान में चारपाई पड़ी थी। अकेला मैं उस पर लेटा था। आँखों में नींद नहीं थी। चारों तरफ की सृष्टि सुप्त थी। मैं देख रहा था, कई बार अपलक एकाग्र-सा भी, आसमान के नीले वक्ष पर बिखरे उन तारों को, जो न-जाने मेरे पिछले कितने युगों को, मेरे कितने उद्गम-अवसानों को देखते आ रहे हैं! बचपन में इन तारों को गिनने का कितना प्रयत्न किया मैंने.....और जब हर बार विफल हो गया, तो माँ का आँचल पकड़ा। बड़ी जिद की। माँ ने एक ही दृष्टि में सबको गिन लिया और मुझे बता दिया–"अरे, तू इतना भी नहीं जानता, बगीचे में अपनी चमेली पर जितने फूल खिले हैं, उतने ही तारे वहाँ आसमान में हैं!"

...आँखें थकती नहीं थीं। कई बार लगता था, जैसे केवल आँखें ही हैं, शरीर है ही नहीं, मन भी नहीं है। क्रिया एकमात्र आँखों में ही केंद्रित होकर रह गयी थी। धरती और आसमान की उस असीम विच्छिन्नता को आँखें ही जोड़ रही थीं। मन तो शेष तन की तरह निश्चेष्ट था। अंग-अंग शिथिल, स्नायु-स्नायु निस्पंद, मन का कोष्ठ-कोष्ठ निर्जन। सब आत्मस्थ, अपने को पाकर अपने में लीन!

उस रात को मैंने तन और मन को एक-दूसरे के बहुत निकट ही नहीं, एकरूप भी पाया – निराकार को आकार में और आकार को निराकार में लय होते मैंने उस रात कई बार देखा, अनुभव किया। शायद कई वर्षों के बाद दोनों उस रात को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिले थे। उस रात को कान और आँख के सिवाय मेरी चेष्टा का कोई तुरंग मेरे पास नहीं था। कभी मैं केवल आँख-मात्र रह जाता था, कभी कान-मात्र। ऐसे में मेरे कानों ने तन-मन की बातचीत सुनी थी। मन ने तन के नजदीक आ उसे झकझोरा, जगाया; फिर कहा—"मित्र, पहचानते भी हो, या बिल्कुल ही भूल गये?" आँखें खोलते हुए तन ने देखा, चौंका; फिर किंचित् मुस्कराते हुए बोला—"पहचानता क्यों नहीं हूँ; मगर भाग्य-लिपि में जो लिखा है, उसे टालना क्या आसान है? तन कहीं और मन कहीं, यही तो आज के जीवन की कर्मलिपि है। युग ने आदमी को बाँट दिया है।"

मन ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"हाँ, है तो ऐसा ही। मगर यह तो बहुत बुरा है। बँटना तो विकास नहीं, विनाश है।"

तन ने बुजुर्गों-जैसी हामी भरते हुए मन के तर्क का समर्थन किया, कहा—"आज के आदमी ने एक भ्रम पकड़ रखा है। वह आज अपने को गति का पुजारी मान बैठा है; किंतु भागना गति नहीं—यह वह नहीं समझता। सारा रोना यही है। आज बौद्ध जातक के उस खरगोश की तरह आदमी भाग रहा है, जिसके सिर पर सोते में बेल का फल आ टपका था और जिसने पृथ्वी का अंत सुनिश्चित समझ लिया था। धरती के अंत से होनेवाले प्रलय से बचने के लिए वह खरगोश निर्लक्ष्य भाग रहा था और उसके पीछे-पीछे उसकी बात को सच मान कर जंगल के दूसरे सैकड़ों जीव-जंतु भाग रहे थे।"

मन ने कहा—"मगर भाई, वह खरगोश और उसके अनुगामी तो हाथी की बात को मान गये थे। सबका भ्रम-निवारण हो गया था; किंतु मनुष्य तो किसी की सुनता नहीं। कितने समझानेवाले आते हैं, वह नहीं समझता और उसके भ्रम में कमी नहीं आती।"

तन के स्वर में विषाद गहरा हो गया। उसने कहा—"उसके भ्रम में कमी कैसे आयेगी, भाई! वह खरगोश की भाँति अपने को बुद्धिहीन, क्षीण-संकल्प थोड़े ही मानता है। अपनी बुद्धि पर उसे असीम विश्वास है!"

उन्मुक्ति का अनमोल अवकाश था—निर्बंध, उपयोगिता-अनुपयोगिता के तर्क-वितर्क एवं आतंक-आग्रह से कतई मुक्त, स्वच्छंद अवकाश! मन ने तन के तर्कों पर विहँसते हुए कहा—"अरे भैया, कौन-सी बुद्धि और कैसा विश्वास! सब ढोंग है। अरे, जिसे सोचने का अवकाश नहीं, वह क्या बुद्धि का गर्व करेगा! और, विश्वास भी क्या उसका? विश्वास की तो जड़ें होती हैं—बाढ़ में बहते पौदों की भी कहीं जड़ें जमी हैं?" और, तब मैंने अनुभव किया, जैसे काया और कल्पना, जड़ और चेतन, दोनों दो दिशाओं से आये, पानी के दो बिछुड़े प्रवाहों-से... और दोनों ने एक-दूसरे को आत्मसात् कर लिया... फिर न काया रही, न कल्पना; न कर्म बचा, न विचार! केवल बच गया एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आह्लाद... तिल के बराबर का एक आनंद-बिंदु, जो क्षण-भर में ही फैल कर स्वयं आकाश की भाँति अनंत-असीम हो गया और मैं स्वयं बूंद से समुद्र हो गया।

मैंने देखा, आनंद के अनगिनत सैनिक चारों तरफ से, दसों दिशाओं से, घिर-घिर कर आये और मेरे दुर्ग पर टूट पड़े। आनंद को अपने में बंद किये यह दुर्ग अभी तक अजेय-अभेद्य था; किंतु आज इन सैनिकों ने उसकी दीवारें तोड़ दी थीं और वज्र की ईंटों से चुने उसके बुर्ज-प्राचीर मिट्टी के ढेलों की तरह नीचे लुढ़क रहे थे। क्षण-भर में ही गढ़ भूमिसात् हो गया। बंदी आनंद मुक्त होकर निकला और मेरे देखते-देखते उस आनंद-सैन्य में खो गया—इस मुक्ति के साथ कितनी विपुल पूर्ति थी!

निर्बंध समीरण अपना ममत्व लेकर हर दिशा से आया। कली से कहा—"पट खोल दे। गंध को मुक्त कर दे। बहुत हो गया। तू वही है, जो मैं हूँ। मुझसे विच्छिन्न होकर सूखेगी ही, सड़ेगी! अपने को खोल देगी, तो महक उठेगी। बँधे रहने में सुख कहाँ? खुलेगी, तभी खिलेगी! रुँधे रहने में तृप्ति कहाँ? पायेगी, तो अनिरुद्ध होकर ही पायेगी। तेरे ये रत्नकपाट, ये बिल्लौरी द्वार, ये हीरे के ताले और ये सोने की साँकलें—ये सब बंधन के सामान हैं, ये तू नहीं है। तू तो आनंद है, मुक्त-निर्विकार आनंद, जो इस कैद में खोकर बैठी है...अपने को भूल कर बैठी है! मुक्तपद हो जा; मुक्तहस्त हो जा, मुक्तकंठ हो जा! ...गाँठें खोल दे...अपनी निजता में मुखर हो जा... खोल दे सम्पुट....रुद्ध को प्रवाहित होने दे। प्रवाह को प्रवाह में मिलने दे—छिन्न को अविच्छिन्न बनने दे।"

कली बँधी-की-बँधी रही। खुली नहीं, अपने में से हिली भी नहीं; किंतु हवा के वे स्पर्श, दिशा-दिशा की वे मनुहारें, एकांत-अकूल काल का वह वंशीरव, निगोड़ी कब तक टालती? अपने हठ को कब तक सम्भालती—कब तक अपने निज से बैर पालती? बाहर के आग्रह ने भीतर के आग्रह को आखिर तोड़ ही दिया। जागृति और सुषुप्ति दोनों मिलीं और क्षण-भर में ही एकरूप हो गयीं। वायुमंडल सुगंध से भर गया। कली खिली, सार्थक हो गयी। हर पँखुड़ी मुखर थी...हर साँस तृप्ति थी!

★

जब शिव ने कालकूट विष सहर्ष पी लिया, तो विष्णु को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने नारदजी से पूछा—"शिव ने यह दुःसाहस कैसे किया?" नारदजी ने कहा—"देखते जाइये, एक रोज आपको भी इसी प्रकार आत्महत्या करनी पड़ेगी। घर-जमाई रहने का दुःख भुक्तभोगी ही जानता है। मेरी बात मानिये, हिमालय के घर रहते-रहते शिव के नाकोंदम आ गया है! आपने भी समुद्र-कन्या लक्ष्मी का वरण किया है और रहते क्षीर-सिंधु में हैं!" —'नावक के तीर' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणी बनाने के कारखाने खुलेंगे

विज्ञान की एक नवीन गतिरेखा का संक्षिप्त दिग्दर्शन

★

वस्तुतः आज की परिस्थिति में यह कह सकना बड़ा कठिन है कि, मानव अमुक काम कर सकेगा और अमुक नहीं। बीसवीं शताब्दी में विज्ञान ने बड़ी तेज और आश्चर्यजनक प्रगति की है। कई मामलों में तो इस शताब्दी के वैज्ञानिक परीक्षण १९-वीं शताब्दी के वैज्ञानिक निष्कर्षों को पूर्णतः गलत साबित कर चुके हैं। कुछ समय पहले वैज्ञानिक इस बात से संतुष्ट हो गये थे कि, काफी समय तक परिश्रम करने के उपरांत, अंत में, उन्होंने किसी पदार्थ के सूक्ष्मतम एवं अविभाज्य अंश की जानकारी प्राप्त कर ली। उनका तात्पर्य परमाणु से था; लेकिन अब यह प्रकट हो गया है कि, परमाणु अविभाज्य नहीं हैं – उनका निर्माण भी कुछ अति सूक्ष्म अणुओं के मेल से हुआ है। फिर, हाल में सोवियत रूस-द्वारा की गयी वैज्ञानिक प्रगति भी अपना अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। दरअसल, सोवियत प्रयोगशालाओं ने आकाश का विघटन किया है–कृत्रिम चंद्रमा का निर्माण इसी का परिणाम है। इसी तरह, इस शताब्दी में हमारे अनेक सपने विज्ञान ने साकार किये हैं।

मानव विधाता से होड़ लेने पर तुला है, यह इन सारे प्रयासों से स्पष्ट है। वह विधाता की हर सृष्टि को अपनी सृष्टि से ढँक देने को कृतसंकल्प दिखायी पड़ता है। पर क्या वह कभी प्राणियों का निर्माण करने में भी सफल होगा? सचमुच आज यह विनोद की बात नहीं है। विज्ञान-जगत् इस सम्भावना के विषय में अत्यधिक आशावान् है और रूसी चंद्र की तरह ही, निकट भविष्य में किसी दिन हमें यह सुनने को मिल सकता है कि, मानव ने विधाता का पद पा लिया!

पुरुष-शुक्राणु और नारी-डिम्ब को एक साथ रख कर प्रयोगशाला में उनके विकास की बात अब अपने में कोई विशेष कौतूहल नहीं रखती। परंतु कृत्रिम रूप से किसी प्राणी का निर्माण उससे कहीं बड़ी चीज है। पदार्थवादी दृष्टिकोण से, एक प्राणी, पदार्थ का भौतिक-रासायनिक स्वरूप है। इस विशिष्ट भौतिक-रासायनिक प्रणाली के अपने विशिष्ट नियम हैं, जो आधुनिक भौतिक विज्ञान और रसायन-विज्ञान के प्रचलित नियमों से भिन्न हैं। प्राणियों का भी निर्माण उन्हीं परमाणुओं से होता है, जिनसे जड़ पदार्थों का। इनके वजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का अधिकांश पानी होता है और शेष अंश प्रोटीनों, कार्बोहाइड्रेटों, चर्बियों, न्यूक्लिक एसिडों, नाइट्रोजेनस, पालिसैक्च-राइड्स तथा लिपिड्स, आदि का मिश्रण होता है। जीवित प्राणियों के शरीर में स्थित कोषों में ये जमा रहते हैं। विभिन्न प्राणियों के शरीर में इन कोषों की संख्या विभिन्न होती है– मानव-शरीर में ये खरबों की संख्या में रहते हैं।

यद्यपि इन कोषों का निर्माण कर सकना बड़ा कठिन है, तथापि प्रयत्न हो रहे हैं और अभी एक कोषवाले किसी प्राणी का निर्माण करने में वैज्ञानिक लगे हैं। किंतु एक कोषवाले प्राणी भी प्राणिविज्ञान के बड़े दुरूह नमूने हैं। केवल 'मालेक्यूलर वाइरस' नामक जीव इस कार्य के लिए अधिक उपयुक्त प्रतीत होते हैं; क्योंकि बनावट की दृष्टि से वे कम जटिल हैं और बहुत थोड़े में जीवन-तथ्य को व्यक्त करते हैं। अकर्मण्य अवस्था में 'वाइरस' को संपुष्ट करके अनिश्चित काल तक परीक्षण-नली में बंद भी रखा जा सकता है। 'वाइरस' की शरीर-रचना 'न्यूक्लियो-प्रोटीन' (न्यूक्लिक एसिड और प्रोटीन) से होती है, जो हर प्राणी के जीवन में प्रमुख स्थान रखता है।

अतः किसी प्रयोगशाला में एक प्राणी का निर्माण किये जाने की दिशा में पहली आवश्यकता इस बात की है कि, 'न्यू-क्लियो-प्रोटीन' में निहित जीवन-तत्त्व की पूरी जानकारी प्राप्त की जाये। 'न्यूक्लिक एसिड' जीवन का विधायक तत्व है और प्रोटीन उसके निर्माता। धीरे-धीरे प्रोटीन की रचना के बारे में हमें अधिक जानकारी मिल रही है और अब यह प्रकट हो चुका है कि, वह न॰ केवल अतिसूक्ष्म दर्शनजन्य है; बल्कि कल्पनातीत तौर पर पेचीदा भी है।

संक्षेप में, प्रोटीन की प्रकृति प्राणी की रचनात्मक गूढ़ता को व्यक्त करती है। प्रोटीन के कण बहुत शक्तिशाली होते हैं। उनमें कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन, नाइट्रोजन तथा कभी-कभी कुछ दूसरे तत्त्व भी होते हैं। विभिन्न प्रकार के परमा-णुओं को संयुक्त रखने में कार्बन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। प्रोटीन 'एमिनो-एसिडों' (उद्जन-अणुवाले गाढ़े तेजाब) से बनते हैं। हाइड्रोजन अथवा उद्जन है तो सबसे हल्का तत्त्व; पर उसका निर्माण– प्रोटीन– उससे ३० लाख-गुना वजनी होता है। प्रोटीन का व्यास भी उद्जन से सौ-गुना बड़ा होता है। प्रोटीन के जो लघुतम कण होते हैं, वे भी 'एमिनो-एसिड' के प्रायः तीन सौ कणों से मिल कर बनते हैं– उसके बड़े कण तो 'एमिनो-एसिड' के तीस-तीस हजार कणों के समूह होते हैं।

तो सवाल यह है कि, क्या वैज्ञानिक 'एमिनो-एसिड' के कणों के वैसे समूह बनाने में सफल हो सकते हैं, जो स्वयमेव द्विगुणित होने की शक्ति रखें? वास्तव में, किसी प्राणी का निर्माण करने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैज्ञानिकों को इस क्षेत्र में सक्षम होना ही पड़ेगा। यह काम निस्संदेह बड़ा कठिन है; क्योंकि अभी तक हम यह भी नहीं जानते कि, प्रोटीन के कण विकास कैसे पाते हैं। हमारा 'एमिनो-एसिडों' की शृंखला-सम्बंधी ज्ञान भी अत्यधिक साधारण बीज-संवर्द्धक तत्त्वों तक ही सीमित है। इसी कारण कृत्रिम वातावरण में मिश्र प्रोटीनों का निर्माण नहीं हो पाया है।

इस पृथ्वी पर प्रथम जीवनमय प्रोटीन के निर्माण की व्याख्या करते हुए प्राणि-विज्ञानवेत्ता कहते हैं कि, पहले यह पृथ्वी आज की तरह नहीं थी– इसका शनैः-शनैः विकास हुआ है। पृथ्वी का इतिहास बतलाता है कि, यहाँ प्रथम प्राणी का जन्म होने से पूर्व, वातावरण में सूरज की किरणों के विकिरण के कारण, स्थिर चेतन पदार्थों का उद्भव हुआ था। उनमें उस समय आक्सीजन तो पर्याप्त मात्रा में नहीं होता था; पर सम्भवतः हाइड्रोजन, अमोनिया और मेथाने– दूसरे बड़े ग्रहों की तरह ही– होते थे। आगे चल कर, वातावरण के फलस्वरूप, अचेतन तत्त्वों में भी सक्रिय कणों का जन्म हुआ। ऐसा अनुमान है कि, जीवनमय प्रोटीनों का अस्तित्व ५० करोड़ वर्ष पहले भी था।

यह सही है कि, पृथ्वी की वह प्राचीन अवस्था, जिसके प्रभाव से कण समूह में बदले और उन्होंने प्राणी का रूप धारण किया, अब वर्तमान नहीं है; लेकिन वैज्ञानिक इस सम्भावना के प्रति अत्यधिक आशावान् हैं कि, भविष्य में कम मात्रा में ही सही, वैसी अवस्था की रचना करने में वे सफल हो जायेंगे, जिसके अंतर्गत अचेतन कणों में चेतना की सृष्टि सम्भव होगी। उन्हें इसका दृढ़ विश्वास है कि, अंततः प्रोटीन के कणों का रहस्योद्घाटन एक दिन होगा ही और हम अपनी विवेक-बुद्धि से 'न्यूक्लियो-प्रोटीन' की कणात्मक रूप-रेखा तैयार कर लेंगे। मानव-निर्मित ये जीवनमय कण, अपनी दृढ़ता और अस्तित्व की रक्षा, द्विगुणित होने की स्वाभाविक क्रिया से कर सकेंगे।

जीवन-तत्त्व केवल दुरूह कणीय तत्त्व ही नहीं है; बल्कि एक दुरूह प्रणाली भी है। इस समस्या का केंद्र-बिंदु इसके संघटनात्मक रहस्यों में अवस्थित है। अतः जब जीवन-तत्त्व के सम्बंध में विस्तृत बातें वैज्ञानिक जान लेंगे, तब तत्त्व, प्रणाली और प्रक्रिया– ये सब एक चेतन इकाई में परिणत हो जायेंगे। निश्चय ही, अपने इस प्रयास में वैज्ञानिकों को बेहद परिश्रम करना पड़ेगा और उन्हें विश्वास है कि, एक-न-एक दिन वे इसमें सफल होंगे ही।

★

रात ने चकोर से कहा—"एकटक देखते ही रहते हो चाँद को—कभी कुछ उससे बोलो भी तो!" चकोर ने उसी प्रकार चाँद को एकाग्र देखते हुए जवाब दिया—"बहन, तुम नहीं समझोगी; अनुराग में मौन बोलता है, वाणी नहीं।" —'शतदल' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

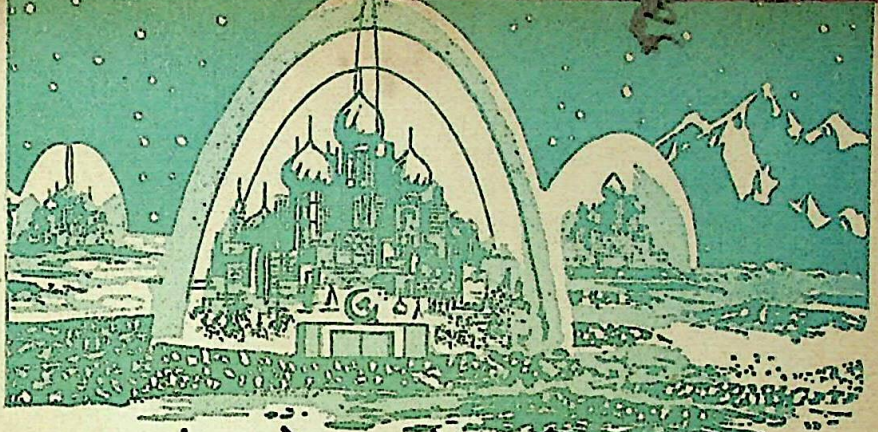

चंद्रलोक में लेनिनग्राड

अमेरिका के अंतरिक्ष-विज्ञानवेत्ताओं ने अभी इस आशय की सूचनाएँ प्रकाशित की हैं कि, रूस के वैज्ञानिकों ने चंद्रलोक में पहुँचने की ही नहीं, वहाँ नगर बसा कर रहने की भी पूरी योजनाएँ बना ली हैं। यहाँ इन्हीं सूचनाओं की पृष्ठभूमि लेकर एक कथा-प्रबंध प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुस्करा कर खारखोव ने हमारा स्वागत किया। राकेट से उतरते ही, धरा से उतनी दूर, उस रजत-लोक में जिस पहले प्राणी पर हमारी दृष्टि पड़ी, वह खारखोव था। कस्टम-अफसर की पोशाक में उसका स्वस्थ शरीर बड़ा सुंदर दीख रहा था। चंद्रलोक में बसे उस रूसी शहर में जाने का मेरा पहला ही मौका था; किंतु मेरा मित्र मेहता, जो मेरे साथ ही था, वहाँ यह दूसरी बार गया था। पहली बार ही, खारखोव से उसने मैत्री-सम्बंध स्थापित कर लिया था और राकेट से उतरते ही उसने उससे मेरा परिचय भी करा दिया। खारखोव के शिष्ट और नम्र व्यवहार ने तुरत ही मन की सारी झिझक खत्म कर दी।

कस्टम के कर्मचारियों ने अपना कर्त्तव्य निभाया और हम कस्टम-कार्यालय से बाहर आ गये। खारखोव भी हमारे साथ ही बाहर आया। हमारे ठहरने की व्यवस्था उसने अपने यहाँ ही की थी।

मेहता और खारखोव तो इधर-उधर की बातें करते चले जा रहे थे; पर मैं चारों ओर अपनी निगाहें दौड़ाता चल रहा था। चंद्रलोक में बसा वह शहर वस्तुतः बड़ा अनुपम था। मूक विस्मय से मैं जिधर देखता, देखता ही रह जाता। यों राकेट से उतरने के साथ ही जो नजर पड़ी थी, तो कुछ क्षणों तक अवाक् देखता रह गया था। चंद्रलोक की एक बड़ी-सी दरार में शीशे का एक विशालकाय गुम्बद-सा बना था। मेहता ने मुझे यों देखते देखा था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो हँस पड़ा था—"देख क्या रहे हो ? शीशे के गुम्बद के भीतर ही शहर बसा हुआ है।"

कुछ भी आश्चर्य नहीं ! जब चाँद पर धरावासियों-द्वारा शहर बसाना कोई आश्चर्य की बात नहीं रह गया, तब. . ! मैंने मेहता की बात का जवाब नहीं दिया था। शीशे के उस गुम्बद में बंद शहर को, बस, पहले के समान ही निहारता रह गया था। उस शहर में प्रवेश पाने के लिए हमें जिस मुख्य द्वार से गुजरना पड़ा था, वह अलम्यूनियम का बना था।

....अपने घर की ओर हम लोगों को ले जाते समय खारखोव एकाएक मुझसे पूछ बैठा—"आपको यहाँ कैसा लग रहा है ?... मेरा मतलब है, किसी प्रकार की विशेषता.... अर्थात् धरती और यहाँ के वातावरण में..."

"यही तो मैं भी सोच रहा था—" बीच में ही बात काट-कर मैं बोल पड़ा—" सच तो यह है कि, मैं स्वयं आपसे पूछनेवाला था। धरती से इतनी ऊँचाई पर आकर भी हमें किसी प्रकार का कष्ट नहीं हो रहा है। मेरा मतलब है, हम साँस उतनी ही आसानी से ले रहे हैं, जितनी आसानी से हम धरती पर लेते हैं, जबकि धरती के वायुमंडल के दबाव और यहाँ के वायुमंडल के दबाव में....."

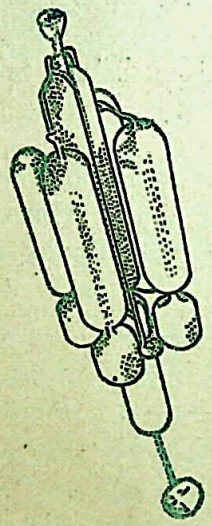

अमेरिका - द्वारा लगभग-निर्मित चंद्रयान की रूपरेखा

खारखोव मुस्कराया—"बहुत अंतर है। यही न ? किंतु हमने इसे अब कुछ अंशों में धरती की अनुकूल ही बना दिया है। धरती की सागरीय सतह पर जो वायुमंडल का दबाव है, उससे यहाँ के वायुमंडल के दबाव में सिर्फ एक-तिहाई का अंतर है; पर धरती की तुलना में यहाँ आक्सीजन की मात्रा अधिक उपलब्ध है। यही कारण है कि, साँस लेने में हमें किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता।"

बातें करते-करते हम काफी रास्ता तय कर चुके थे— लगभग आधा मील। यहाँ हमें शीशे की एक दीवार मिली। उसमें दो दरवाजे थे। एक दरवाजे से होकर उस ओर निकलते हुए मैंने खारखोव पर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली।

"हर आधा मील पर आपको शीशे की ऐसी दीवार मिलेगी—"खारखोव ने बताया—"और सबमें इसी प्रकार दो दर-वाजे होंगे। वास्तव में, यह एक प्रकार की सुरक्षा है—उल्कापात और अन्य किसी प्रकार की दुर्घटनाओं से होनेवाले नुकसान के अनुपात में कमी लाने का एक साधन ! धरती पर जिस प्रकार 'वाटर-टाइट कम्पार्टमेंट्स' (जिसमें जल प्रवेश न कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सके, ऐसा आवास) होते हैं, इन दीवारों को भी कुछ वैसा ही मान लीजिये। शीशे की ये दीवारें उन 'कम्पार्टमेंट्स' के समान ही हमारे लिए उपयोगी हैं।

"और तो और!"—खारखोव ने मेरी ओर देखते हुए कहा—"यह पूरा शहर किसी प्रकार के बाहरी दबाव—मेरा मतलब वायुमंडल के दबाव से है—से सुरक्षित है। इस शहर में आने के लिए आपने जो अलम्यूनियम के दरवाजे पार किये हैं, वे इसी उद्देश्य से बनाये गये हैं। पूरे शहर के निर्माण में हमने इसका ध्यान रखा है।"

हम बातें करते-करते शहर के बीच में आ गये थे। सर्वत्र चहल-पहल-सी थी। हाथ-में-हाथ डाले स्त्री-पुरुष हमारी बगल से बातें करते चले जा रहे थे। यह तनिक भी महसूस नहीं हो रहा था कि, मैं अपनी जानी-पहचानी धरती से दूर हूँ। हाँ, इसकी विचित्र बनावट, शीशे की दीवारें अलम्यूनियम के दरवाजे आदि अवश्य ही मुझे यह याद दिला देते कि, मैं धरती से दूर, चंद्रलोक में हूँ।"

"इधर देखो—" मेहता ने इतनी देर बाद पहली बार कहा—"इन लोगों को देख रहे हो न? अभी अधिक व्यक्ति तो यहाँ आकर नहीं बसे हैं; पर धीरे-धीरे यहाँ की आबादी बढ़ रही है। वह सामने-वाली इमारत देखते हो? उसमें यहाँ के सभी सरकारी कार्यालय हैं। खारखोव कह रहे थे—'पाँच साल ठहर जाइये। फिर चंद्रलोक में जो एक बार आयेगा, उसकी तबीयत यहाँ से वापस जाने की होगी ही नहीं। धरावासियों ने जो स्वर्ग की कल्पना कर रखी है, वह यहीं साकार होगी।'"

मैंने खारखोव की ओर देखा। उसने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाते हुए कहा—

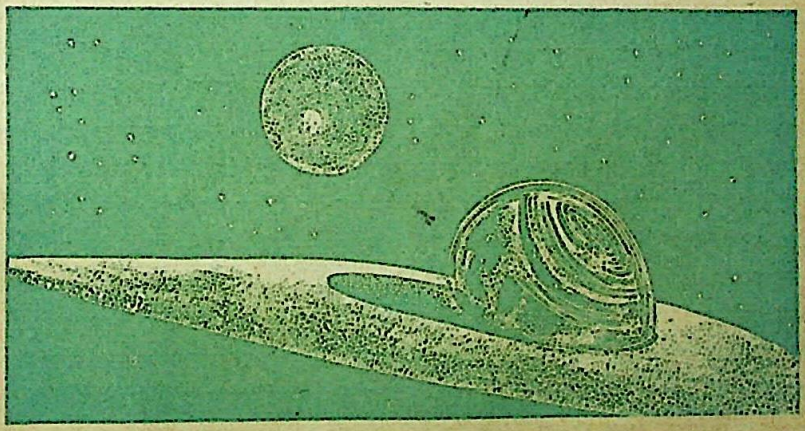

अंतरिक्ष-यान अपनी परिपूर्ण गति में चंद्रमा की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यहाँ अभी सबसे बड़ी कठिनाई है, खाद्य-पदार्थों की। धरती से यहाँ भोजन लाना हमें बड़ा महँगा सिद्ध होता है। एक रोटी का टुकड़ा ही लीजिये। उसे अगर हम यहाँ ले आयें, तो यहाँ आकर वह सोने के उतने ही बड़े ठोस टुकड़े के बराबर वजनी हो जायेगा। पर हम इस ओर से उदासीन नहीं हैं। खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनने का हमारा प्रयास जारी है और अगले दो सालों में ही हम अपनी इस कठिनाई पर विजय पा लेंगे।

"इस सम्बंध में एक और बात आपको अद्भुत लगेगी। यहाँ हमने खेती-सम्बंधी कुछ प्रयोग किये हैं। यहाँ की हर चीज धरती पर पैदा होनेवाली चीज की तुलना में कई गुना बड़ी होती है। उदाहरण के लिए, यहाँ पैदा होनेवाली मूली धरती पर पैदा होनेवाले किसी खजूर के वृक्ष के बराबर ही लम्बी होती है।

"मेहता साहब ने आपको अभी हमारी पंचवर्षीय योजना की बात बतायी है—" खारखोव ने कुछ क्षण मौन रह कर कहा—"वह ठीक ही है। यह सामने की इमारत देख रहे हैं? यह हमारा सौर शक्ति-केंद्र है। उससे थोड़ी दूर पर जो इमारत है, वह हमारा आणविक शक्ति-केंद्र है। ऐसे कई केन्द्र यहाँ स्थापित होनेवाले हैं। इन केंद्रों की सहायता से हम यहाँ आवश्यकतानुसार सारी सुविधाओं की व्यवस्था कर सकेंगे।

"पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत हम अपने 'स्पेस'-यान (अंतरिक्षीय वायुयान) बनानेवाले कारखाने को भी बढ़ानेवाले हैं। अभी जो इसका रूप है, उससे कहीं बड़ा इसे बनाने का विचार है। 'स्पेस'-यान के साथ-साथ 'स्पेस'-यान के लिए आवश्यक जलावन भी हम यहीं अधिकाधिक मात्रा में तैयार करनेवाले हैं। आप जानते तो हैं ही कि, यही यहाँ का मुख्य उद्योग है।

"यकीन मानिये—" खारखोव के स्वर में एक प्रकार की दृढ़ता और गम्भीरता थी—"कुछ वर्ष—कुछ ही वर्षों की बात और है—फिर जब आप यहाँ आयेंगे, तब हमारा 'स्पेस'-यान आपको मंगल और शुक्र पर ले जायेगा और वहाँ भी आपको ऐसे ही सुंदर शहर मिलेंगे— या इससे भी सुंदर; पर हम रूसवासियों-द्वारा ही बनाये गये शहर!" उसने कुछ गर्व से कहा और फिर मुस्करा पड़ा।

हम मौन बढ़ते रहे!

× × ×

अभी तो उपर्युक्त सारी वार्ता काल्पनिक ही कही जायेगी; किंतु निकट भविष्य में ही यह अक्षरशः सत्य प्रमाणित हो जाये, तो ताज्जुब नहीं। सोवियत रूस के विशेषज्ञ चंद्रमा पर राकेट भेजने के प्रयत्न में निरंतर व्यस्त हैं—पूरी गम्भीरता के साथ!

राकेट छोड़ने का काम रूस पिछले पचीस वर्षों से लगातार कर रहा है। सबसे पहला राकेट शोध के लिए सन् १९३३ में छोड़ा गया था। सन् '४९ के मई माह में एक राकेट सीधे ६८ मील की ऊँचाई पर भेजा गया। उस समय एक-

CG-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक कर कई राकेट भेजे गये। उन राकेटों में पाँच मंजिलें थीं और उनमें जो यंत्र और जानवर थे, वे सकुशल वापस आ गये थे। सन् १९५१ में १३२ मील की ऊँचाई तक जो राकेट छोड़े गये थे, उनके यंत्र और पशु भी सकुशल वापस आ गये थे। अभी हाल ही, २९ फरवरी, १९५८ को एक राकेट छोड़ा गया है। २९४ मील की ऊँचाई पर छोड़े गये एक मंजिल के इस राकेट ने इस प्रकार के राकेटों में संसार में अपना रेकार्ड स्थापित कर दिया है।

राकेटों के जरिये वायुमंडल के ऊपरी स्तरों की उड़ानों में जीवधारियों को भेजने के सम्बंध में रूस के प्रयोग सन् १९४९ से ही चल रहे हैं। पहली बार जो पशु भेजे गये, वे ६२ से १३० मील की ऊँचाई तक गये। उन्हें पैराशूट के जरिये बिल्कुल स्वस्थ और स्वाभाविक अवस्था में धरती पर वापस लाया गया।

रूसी वैज्ञानिकों का प्रयोग अभी भी चल रहा है और चंद्रलोक के सम्बंध में वे विशेष रूप से शोध कर रहे हैं। उन्हें अपनी सफलता का पूरा विश्वास भी है। पहले तो वे कुछ ऐसे राकेट चंद्रलोक पर भेजेंगे, जिनमें एक भी मनुष्य नहीं होगा। उस प्रयोग में सफलता मिलते ही राकेटों के जरिये रूसी विशेषज्ञ चंद्रमा पर पहुँचेंगे और वहाँ शहर बसायेंगे। एक-एक कर वे वहाँ कई शहर बसानेवाले हैं।

चंद्रमा और धरती की जो दूरी है, उसे अगर कोई पैदल चल कर तय करना चाहे, तो हिसाब लगा कर देखा गया है कि, बिना एक क्षण रुके चलते रहने पर वह ८ साल और २८० दिनों में वहाँ पहुँचेगा। इस हिसाब के अनुसार एक साइकिल-सवार यह दूरी १ वर्ष, १६८ दिन और ८ घंटों में तय कर सकता है। मोटर से १६० दिनों में, एक तीव्रगामी विद्युत्-गाड़ी से ५३ दिन और ८ घंटों में तथा एक वायुयान से २० दिनों में यह दूरी तय की जा सकती है। वह भी तब, जब क्षण-भर भी रुके बिना यह यात्रा पूरी की जाये। इतनी ही दूरी प्रथम स्पुतनिक ने लगभग १३ घंटे और ४३ मिनट में पूरी की है। रूसी विशेषज्ञों के कथनानुसार उनका राकेट २५ हजार मील प्रति घंटे की रफ्तार से, १० घंटे से भी कम समय में यह दूरी तय कर, चंद्रमा पर पहुँच जायेगा और तब कोई भी धरतीवासी बिना अधिक समय खर्च किये ही चंद्रलोक की सैर कर, पुनः धरती पर आ सकेगा!

✱

मुद्दतें गुजरीं, तेरी याद भी आयी न हमें—
और हम भूल गये हों तुझे, ऐसा भी नहीं।
गौर कर इस कैफियत पर कुछ समझ यह सोजो-साज—
इश्क में दिल दर्द हो जाता है, दिल दुखता नहीं। —फ़िराक़

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिड़िया नहीं पैसे भर तय कर डाली सात समंदर

पक्षिजगत् के एक 'आश्चर्य' का सरल-संक्षिप्त परिचय

सबसे शक्तिशाली जीवों का विचार आते ही सिंह और हाथी का चित्र हमारी आँखों के सामने घूम जाता है; परंतु शरीर के अनुपात के अनुसार देखा जाये, तो संसार का सबसे अधिक शक्तिशाली प्राणी होने का श्रेय मिलेगा एक छोटे-से पक्षी को– इतना छोटा कि, कुछ कीड़े-मकोड़े भी उससे बड़े होते हैं और किसी-किसी का वजन तो एक तोले से भी कम होता है। इस पक्षी का नाम है 'हमिंग-बर्ड'। लगभग एक हजार पर, शक्तिशाली माँसपेशियाँ और अनुपम रुधिर-परिवहन-तंत्र इसके शरीर के मुख्य अंग होते हैं। परंतु इसकी सबसे बड़ी खूबी है, इसकी जीवित रहने की बलवती इच्छा-शक्ति।

जिस तरह यह चिड़िया जीती है, उस तरह यदि मनुष्य को जीना पड़े, तो उसे प्रति घंटा १६ के बजाय १,००० क्वार्ट से अधिक आक्सीजन की आवश्यकता होगी और साढ़े चार सौ-गुना अधिक शक्ति की।

जीने के अपने तरीके में इतनी शक्ति का यह चिड़िया उपयोग करती है कि, यदि बराबर भोजन न करती रहे, तो कुछ ही घंटों में भुखमरी से मर जाये। दिन-भर में अपने वजन से तीन-गुना अधिक भोजन यह करती है। फूलों का शहद और छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े इसका प्रमुख भोजन हैं।

यह चिड़िया मुख्यतया शक्कर से शक्ति प्राप्त करती है। पर शक्कर भी कितनी! उसी अनुपात में अगर हमें शक्कर की आवश्यकता हो, तो प्रति दिन ३०० पौंड शक्कर हमें खानी पड़े!

खाने में समय नष्ट न हो, इसलिए प्रकृति ने इसे बड़ी लम्बी जीभ दी है– जितना बड़ा इसका शरीर होता है, उतनी ही बड़ी इसकी जीभ होती है। मध्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमेरिका में पायी जानेवाली इस चिड़िया की एक किस्म का शरीर लगभग तीन इंच का होता है और इसकी चोंच पाँच इंच की होती है। इसकी जीभ चोंच के आगे, और पाँच इंच तक पहुँच सकती है। जीभ दो खोखली नलियों-जैसी होती है और अपने भोजन को इस सफाई से यह उदरस्थ करती है कि, देखते ही बनता है।

यह चिड़िया सोती है कुम्भकर्ण की नींद। निद्रावस्था में इसके शरीर का तापमान हवा के तापमान के समान हो जाता है। कहना यह चाहिए कि, शक्ति का क्षय घटाने के लिए ही यह मुर्दे-जैसी हो जाती है। सोते में इसे ऐसे उठा लिया जा सकता है, जसे पेड़ से पका फल तोड़ लिया जाये और यह करवट तक नहीं लेती।

अधिकांश चिड़ियों का उड़ान-तंत्र संसार के बढ़िया-से-बढ़िया विमान से भी श्रेष्ठ होता है। हमिंग-बर्ड में यह खूबी तो है ही, इसके अलावा संसार में यही एक पक्षी ऐसा है, जिसके उड़ान-तंत्र में हेलिकाप्टर के सिद्धांत का भी श्रेष्ठतम समावेश है। इसके पंखों की बनावट अनोखी है, जिसके कारण यह हवा में स्थिर रह सकती है— जैसे आगे की ओर उड़ती है, वैसे ही पीछे की ओर उड़ सकती है, तिरछी उड़ सकती है और जमीन से सीधी आसमान की तरफ उड़ सकती है।

फूल में चोंच डाल कर जब यह शहद पीती है, तब भी उड़ती ही रहती है— अर्थात् पंख चलते रहते हैं और वह भी किस तेजी से! एक सेकंड में पचपन बार। इतनी शक्ति होती है इस पंख-चालन में कि, एक फुट से भी अधिक नीचे की पत्तियाँ ऐसी हिलती हैं, मानो तेज हवा उन्हें झकझोर रही हो। अपनी चरम रफ्तार, ६० मील प्रति घंटा के हिसाब से जब यह उड़ती है, तो इसके पंख एक सेकंड में लगभग २०० बार हिलते हैं।

अपने इन असाधारण पंखों के बल पर यह उड़ान में कई अनोखे दृश्य प्रस्तुत करती है। नर, मादा से प्रेम जतलाते समय घड़ी के पेंडुलम की तरह आगे-पीछे उड़ता है, मानो किसी अदृश्य धागे से बँधा हुआ कोई पत्थर डोल रहा हो। गति तो तीव्र होती ही है; पर इस उड़ान में यह फासला कोई चालीस फीट का तय करता है और लगभग पचास बार इधर-से-उधर, उधर-से-इधर उड़ना तो मामूली-सी बात होती है। प्रेम-प्रदर्शन का अंतिम चरण होता है, तीव्र आकाशोन्मुख उड़ान के रूप में, जिसमें यह पचास फुट तक सीधा ऊँचा उड़ जाता है।

नर, लड़ाकू भी जबर्दस्त होता है। जब एक नर प्रेम-प्रकरण में पेंडुलम की तरह उड़ रहा हो, उस समय यदि कोई दूसरा नर जरा-सी भी बाधा देने को आ जाये, तो जंग छिड़ जाती है। दोनों की तेज लम्बी-लम्बी चोंच ऐसे चलने लगती है, जैसे दो तलवारबाज अपने करतब दिखा रहे हों। कुछ ही देर में दोनों जमीन पर आ रहते हैं; परन्तु लड़ाई बंद नहीं होती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी-कभी आधे घंटे की लड़ाई के बाद ही कहीं अंतिम निर्णय हो पाता है।

इसके बाद जीता हुआ प्रेमी जीवन की अपनी सामान्य तीव्र गति से ही अपने प्रेम-प्रकरण को पूरा करता है। एक मादा को अपना कर, उसका त्याग करन तक उसे कुछ घंटे ही लगते हैं और वह दूसरी मादा की तलाश में निकल जाता है। इधर मादा अपने सामान्य अत्यंत व्यस्त समय में अपनी भावी संतान के लिए घोंसला बनाने का समय किसी-न-किसी प्रकार निकाल ही लेती है। कुछ जातियों की मादाएँ तो अंडों से बच्चे निकलते ही दूसरी बार अंडे दे देती हैं। इस तरह कभी-कभी एक चिड़िया को एक साथ तीन घोंसले सम्भालने पड़ते हैं।

लाल गलेवाली यह चिड़िया अपने बच्चों के लिए जो घोंसला बनाती है, वह अखरोट-जितना होता है। दो मोती-जैसे सफेद अंडे वह उसमें देती है। मकड़ियों से उनके धागे चुरा कर पेड़ की छाल के साथ उन्हें बुन कर यह घोंसला बनाती है और उसके बाहर नन्ही हरियाली को काई की तरह जमा देती है। परिणाम-स्वरूप घोंसला अच्छे-अच्छे जानकारों की आँखों को भी धोखा दे जाता है– ऐसा लगता है, टहनी में कोई गाँठ-सी हो!

यह पक्षी भय नाम की कोई चीज तो जैसे जानता ही नहीं। ६० मील प्रति घंटा की रफ्तार से आती हुई इसकी सूई-जैसी तेज चोंच बड़ा भयानक अस्त्र बन जाती है और मौका आने पर कौओं, चीलों तथा बाजों से भी लोहा लेती है।

यह पक्षी केवल अमेरिका में पाया जाता है। ७५० से भी अधिक इसकी जातियाँ हैं। यह अमेरिका के दो-तिहाई पूर्वी भाग में पाया जाता है। जाड़ा यह पनामा में बिताता है, अर्थात् मैक्सिको की खाड़ी के पार, इसे ५०० मील की उड़ान बिना रुके करनी पड़ती है। मौसम और वायु-मंडल की मुसीबतों के बीच यह उड़ान वस्तुतः जीवट का ही काम है।

परंतु प्रश्न यह उठता है कि, जो चिड़िया इतनी तेजी से शक्ति का क्षय करती है, बिना कुछ खाये निरंतर बारह घंटे की यह उड़ान करती कैसे है? इसे तो रास्ते में ही मर कर गिर जाना चाहिए। किंतु वास्तविकता हाल में ही प्रकट हुई है कि, स्थान-परिवर्तन के पहले यह अपने शरीर के हर सम्भव हिस्से में अधिक-से-अधिक चर्बी जमा कर लेती है – साधारणतया जितनी चर्बी इसके शरीर में रहती है, उससे पाँच-गुना अधिक चर्बी का यह भांडार उड़ान में इसे शक्ति प्रदान करता है और लगभग ६०० मील की अनवरत उड़ान के लिए पर्याप्त होता है– अर्थात् मार्ग में यदि तूफान का सामना करना पड़े अथवा दिशा गलत हो जाये, तो ऐसी आकस्मिक परिस्थिति के लिए भी इसके पास इतनी अतिरिक्त शक्ति का स्रोत रहता है, जिससे यह १०० मील की अतिरिक्त उड़ान कर सकती है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

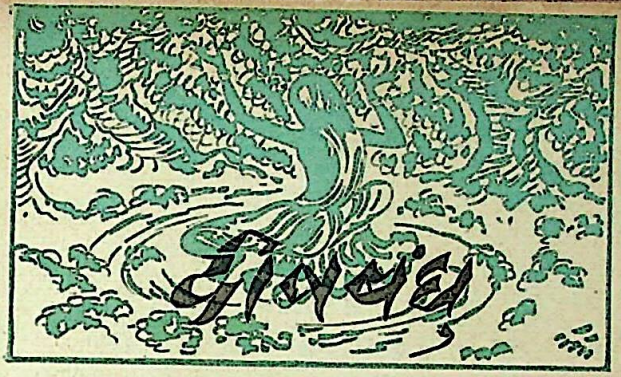

कम्बोडिया के कविर्मनीषी पैङ् वाम् की एक कविता का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

दानवीर तू नहीं है खुद भी जानता है,
अहंकार की तृप्ति दान यह भी मानता है;
फिर भी दिये ही जा रहा है—
आँख की थालियाँ मोतियों से भर-भर!
अवसाद इतना भयंकर? विषाद का फुँफकारता विषधर!
प्रमाद हो गया तुझे, उन्माद ने पकड़ लिया कस कर
फेंक यों जो दे रहा है– धन जो बच गया निरुपायता के घर!

अरे, नयनजल है यह– तीर्थजल नहीं है,
जिसे पूजता मनुज सौ कोस से भी नमन करता;
अरे, पुतलियों का मल यह– मुक्ताफल नहीं है,
जो मनुज क्या देव के भी शीश चढ़ता;
फूल भी मत समझ भाई इसे– धूल से भी जिसे उठा लेते सुर-नर-मुनिवर!

अरे, यह तो आँसू का केवल बिंदु एक–
चाहे इसमें समाये हों तेरे सिंधु अनेक
सम्पुट में ही रख इसे, न खो विवेक
आते ही होंगे दीनबंधु– पथ देख,
करना इससे उनका ही अभिषेक!
मूल्य अश्रु का आँक सके हैं केवल प्रभु ही करुणाकर!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

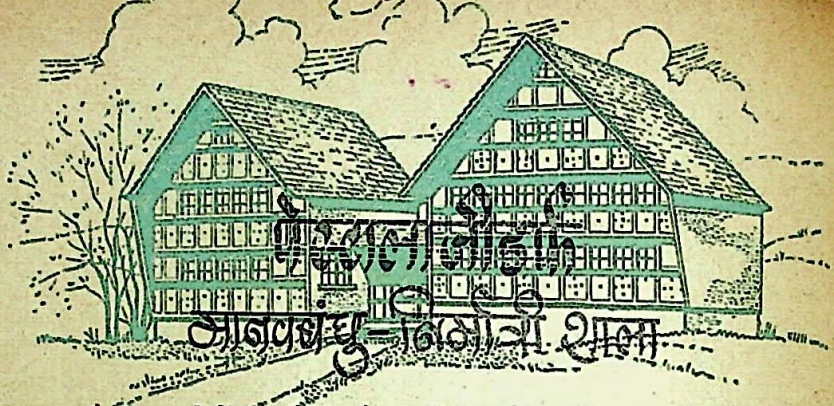

"जीवन और ईश्वर, दोनों अखंड-अभेद्य हैं; क्योंकि जीवन अपने प्रत्यक्ष रूप में ईश्वर का ही बाह्य प्रदर्शन है। अतः जीवन का विभाजन आत्म-विनाश है। तुम अपने-अपने ईश्वर बनाते हो, तो एक तरह से मिटते ही हो—सो उठो और खेमे उखाड़ दो! फिर देखो, यहाँ-से-वहाँ तक सारी धरती तुम्हारी, सारा आकाश तुम्हारा!"—विवेकानंद की इस सीख को कार्यान्वित करनेवाली स्विट्जरलैंड की एक पाठशाला का संक्षिप्त विवरण यहाँ पढ़िये।

"मनुष्य के ऊपर जो अगणित ऋण हैं, उनमें से सबसे पहला चुकाया जानेवाला ऋण है, बच्चों का ऋण। हर आदमी पर, समाज के हर सदस्य पर, बच्चों का कर्जा है और वह सबसे पहले अदा होना चाहिए—यह कर्जा है, बच्चों को शिक्षा देने का। वह सरकार मुर्दा है, जो अपने देश के बच्चों को शिक्षा के समान अवसर न दे, वह समाज क्षयग्रस्त है, जो अपने बच्चों की—प्रत्येक बालक की, चाहे वह अनाथ हो या अपंग—शिक्षा का प्रबंध न करे। बच्चे पढ़ें—पुस्तकों से पढ़ें, मनुष्य की वाणी से पढ़ें और सबसे अधिक कुदरत से पढ़ें। हर पैदा होनेवाले बालक का यह जन्मसिद्ध अधिकार है।"—स्विट्जरलैंड के १८-वीं शताब्दी के महान् मानवतावादी अध्यापक पेस्टालाजी महाशय की यह मनोकांक्षा अब साकार हो रही है। अपने जीवन-काल में वे पड़ोस से ही नहीं, दूर-दूर से भी अनाथ बच्चों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर लाते थे और उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करते थे। अब स्विट्जरलैंड के ट्राजेन नामक गाँव में उनके नाम पर स्थापित अनाथ बच्चों की बस्ती 'पेस्टालाजीडर्फ' उनके जीवन के उस पुनीत उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में संलग्न है। यहाँ अनाथ बच्चों को तब तक रखा जाता है, जब तक वे पूर्णतः आत्म-निर्भर नहीं बन जाते। हालाँकि अभी पेस्टालाजी महाशय का पूर्ण मंतव्य सिद्ध नहीं हुआ है; क्योंकि वे केवल अनाथ बच्चों के लिए ही नहीं; बल्कि सभी गरीब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों के लिए ऐसी व्यवस्था चाहते थे— फिर भी यह बस्ती उनकी उद्देश्य-सिद्धि के क्षेत्र में एक ठोस कदम अवश्य है।

ट्राजेन गाँव से थोड़ा हट कर, एक ढालुवें मैदान में, जहाँ से कांस्टेंस झील साफ-साफ दिखायी पड़ती है, लकड़ी के आठ मकान बने हुए हैं। अभी अनाथ बच्चों की अभिनव बस्ती का यही रूप है; पर काम पूरा हो जाने पर, वर्तमान योजना के अनुसार इन मकानों की संख्या १७ हो जायेगी। साथ ही, एक काफी बड़ा 'टाउन-हाल' भी बन जायेगा। निर्माण की दिशा में अग्रसर इस बस्ती को सम्पूर्ण स्विट्-जरलैंड की जनता का सहयोग प्राप्त है— बच्चे से लेकर बूढ़े तक इसमें दिल-चस्पी दिखा रहे हैं। कोई धन का दान कर रहा है, कोई पेड़ का, कोई भवन-निर्माणोपयोगी किसी अन्य वस्तु का और कोई श्रम का। और, जब सब लोग इस तरह सहयोग कर रहे हैं, तब उद्देश्य सिद्ध न हो, इसका कोई भी कारण नहीं दिखता।

"पूर्व और पश्चिम— दिशाओं के ये दो नाम— भूगोल के जड़ ग्रंथों से बाहर अपना कोई अर्थ नहीं रखते!" स्विट्जर-लैंड में रवीन्द्र और गेहीब का यह स्नेह-संयोग इस सत्य को चरितार्थ करता है।

इस बस्ती के मकान स्नेह के भांडार हैं— यहाँ के खुले क्षेत्र में स्नेह की सरिता बहती है! अनाथ बच्चों को जिस चीज की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, उसका अनंत कोष तो होना ही चाहिए अनाथों की बस्ती में! यहाँ की संरक्षिकाओं के मातृ-हृदय में मानो वात्सल्य का सागर उमड़ा पड़ता है! वे बच्चों को इतने प्यार से रखती हैं कि, यदि वे एकांत में सोचें, तो उन्हें स्वयं ही अपने पर आश्चर्य हो!

यहाँ के प्रत्येक मकान में बठने-उठने, सोने और विद्यालय के अलग-अलग विभाग हैं। सोने का विभाग तो देखते ही बनता है— छोटे-छोटे पलंग, छोटी-छोटी कुर्सियाँ और छोटी-छोटी मेजें! और, स्वच्छता तो इतनी कि, कुशल गृहिणी भी देख कर लजा जाये। विद्यालयवाला विभाग भी वैसा ही आकर्षक ह। इस कमरे में अनेक खिड़कियाँ हैं, जिनसे होकर हवा और धूप यथेष्ट मात्रा में पहुँचती है। विद्यालय की सभी मेजें और कुर्सियाँ मोड़ी जा सकने-योग्य हैं; क्योंकि प्रायः ही खुले मैदान में पढ़ाई होती है और वहाँ इन्हें उठा ले जाया जाता है। उठने-बैठने का कमरा भी सीधा-सादा; पर बड़ा आकर्षक है। हर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मकान में एक-एक कारखाना भी बना है; क्योंकि शारीरिक श्रमवाले कार्यों को यहाँ अधिक प्रमुखता दी जाती है।

पेस्टालाजीडर्फ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, यहाँ जिसे हम अनुशासन कहते हैं, वह प्रेममूलक निर्माण-प्रेरणा है। किसी बात के लिए दबाव दिया जाना यहाँ के संचालकों को मान्य नहीं ह।

मगर पेस्टालाजीडर्फ कोई अनाथालय नहीं है, बल्कि वह सच्ची मानवीय शिक्षा का ऐसा स्रोत है, जहाँ बालक को मनुष्य—सच्चे अर्थों में सीमा-परिधि-विहीन मानव-बंधु—बनने की शिक्षा दी जाती है। यहाँ का बालक राष्ट्रीय नहीं, अपने सम्पूर्ण दृष्टिकोण में अंतर्राष्ट्रीय होता है। यहाँ के विद्यार्थी के जीवनसूत्र हैं—

(१) सब जीवों का एक ही ईश्वर है।
(२) सब धर्मों का धर्म है— मनुष्यत्व।
(३) सब कर्मों की एक ही दिशा है— मानव-कल्याण।

संसार के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए, चाहे वह किसी धर्म या जाति का हो, यह विद्यालय अपने स्नेह-बाहु फैलाये तत्पर रहता है। आजकल इसके प्रिंसिपल पाल गेहीब हैं। हमारे कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ जब यूरोप गये थे, तो पाल गेहीब ने उन्हें इस विद्यालय में आमंत्रित किया था। शांतिनिकेतन और श्रीनिकेतन-जैसी संस्थाओं के निर्माता रवीन्द्रनाथ को इस विद्यालय को देख बड़ी प्रसन्नता हुई। पाल गेहीब भी बड़े प्रभावित हुए। कवि की इस भेंट को उन्होंने एक तरह से अमर कर दिया। विद्यालय की नियमावली के आवरण-पृष्ठ पर रवीन्द्र और पाल गेहीब का प्रेम-संलापपूर्ण चित्र है और उसके नीचे रवीन्द्रनाथ-द्वारा पाल गेहीब के नाम लिखा एक पत्र है—

मेरे प्रिय पाल गेहीब,

मानवता के परित्राण की एकमात्र आशा आज केवल उस प्रबुद्ध शिक्षण में अवशिष्ट रह गयी है, जो आपके विद्यालय या शांतिनिकेतन में दी जाती है। इन दोनों संस्थाओं पर सचमुच बड़ी गम्भीर जिम्मेदारी आ पड़ी है।

आपका स्नेहाधीन,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

कवि रवीन्द्रनाथ ने स्वयं इस विद्यालय के विद्यार्थियों को शांतिनिकेतन के शिक्षण का ध्येय बताया था और फिर दोपहर को छात्रों के साथ खुले मैदान में जमीन पर बठ कर भोजन किया था। यहाँ के छात्रों का सादा भोजन देख कर वे बड़े प्रभावित हुए थे और उसी के आधार पर उन्होंने शांतिनिकेतन के छात्रावास के भोजन में परिवर्तन किये थे।

मानव-बंधुत्व की शिक्षा देनेवाली यह संस्था यद्यपि आज छोटी है; किंतु 'शिविरों', 'वादों' और 'दीवारों' में बरबस बंदी मानव के लिए आशा की एक अजेय किरण अवश्य है। ऐसी किरणें ही जीवन की घनीभूत तमिस्रा को चीरनेवाले सूरज की अग्रदूतिकाएँ होती हैं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौदे: साम्राज्य: क्रांतियाँ

महत्वाकांक्षा-मात्र दावानल की चिनगारियाँ हैं। किंतु यह दावानल लोभ के स्पर्श से ही सुलगता है। साम्राज्यों के निर्माण और क्रांतियों के उद्घाटन प्रायः लोभ-प्रज्वलित महत्वाकांक्षाओं से ही होते हैं—इतिहास इसका साक्षी है। ऐसे कुछ पौदों का जिक्र किया जा रहा है, जिन्होंने लोभ की बयार बन कर, मानव की महत्वाकांक्षाओं के भीतर साम्राज्यों और क्रांतियों के दावानल सुलगाये हैं!

भारत के मालावार-तट की निवासिनी काली मिर्च अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण मसाला है। २००० वर्ष पूर्व केवल राजे-महाराजे अथवा धनी-मानी लोग ही उसका उपयोग कर सकने में समर्थ थे। ईसा की प्रथम शताब्दी में मिर्च इतनी बहुमूल्य वस्तु मानी जाती थी कि, रोम में उतना ही वजन-भर सोना उसके मूल्य-स्वरूप देना पड़ता था। ४०८ ई० में जब गोथ-राजा अलेरिक ने रोम पर घेरा डाला, तो उसने ३००० रत्तल काली मिर्च, ५००० रत्तल सोना और ३०,००० रत्तल चाँदी की माँग की थी। अटीला (४०६-४५३) ने भी जब रोम पर घेरा डाला था, तो घेरा उठाने के लिए ३००० रत्तल काली मिर्च की माँग की थी। १३-वीं, १४-वीं शताब्दी तक काली मिर्च का महत्व कुछ घटा नहीं था। जमींदार लोग अपने किसानों से काली मिर्च के रूप में लगान लिया करते थे।

यह वस्तुतः काली मिर्च का ही आकर्षण था, जिसने स्पेनवासियों और पुर्तगालियों को भारत के लिए समुद्री मार्ग ढूँढ़ निकालने को बाध्य किया। कोलम्बस ने इसी विचार से अपनी समुद्री यात्रा की थी। भारत तो उसे नहीं मिला; पर अमेरिका को उसने खोज निकाला। फिर वास्को द' गामा ने मई, १४९८ में कालीकट में अपने जहाज का लंगर डाला। इस प्रकार अमेरिका तथा 'केप आव गुडहोप' के अन्वेषण का बहुत कुछ श्रेय काली मिर्च को ही है।

बहुत-से लोग कैप्टेन ब्लिग की टिहटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वीप की यात्रा से और उनके पोत 'बाउंटी' के विद्रोह से परिचित होंगे। पर उस अभियान का कारण तथा उसका विवरण कम लोग जानते होंगे। १८-वीं शताब्दी की बात है। वेस्ट इंडीज में गन्ने की खेती करनेवाले अँग्रेजों ने 'ब्रेड-फ्रूट' नामक एक खाद्यपदार्थ ढूँढ़ निकला। इसे उन लोगों ने अपने दासों को खाने के लिए देना शुरू किया। दक्षिण-समुद्र के कतिपय यात्रियों के द्वारा यह समाचार ब्रिटेन पहुँचा। इस समाचार पर 'रायल सोसाइटी' के अध्यक्ष सर जोजेफ बैंक्स ने– जो स्वयं वनस्पतिशास्त्री थे– जार्ज तृतीय से, कैप्टेन ब्लिग के नेतृत्व में वहाँ एक जहाज भेजने का अनुरोध किया।

ब्लिग अपने जहाज 'बाउंटी' पर १५ अक्तूबर, १७८७ को ब्रिटेन से रवाना हुए और एक वर्ष बाद टिहटी पहुँचे। ब्लिग ने टिहटी-निवासियों को खरबूजे, 'स्टोन-फ्रूट' तथा बादाम के बीज दिये और उसके बदले में उनसे 'ब्रेड-फ्रूट' के कुछ छोटे पौदे लिये। टिहटी में ५ महीने रहने के बाद अप्रैल, १७८८ में ब्लिग वेस्ट इंडीज लौटने को उद्यत हुए। पर ब्लिग के सैनिक लौटने को तैयार नहीं थे; क्योंकि उनमें से कुछ ने वहाँ विवाह कर लिया था और खतरे से भरे जहाजी जीवन की अपेक्षा सुख-शांति से रहना उन्हें अधिक प्रिय था। ब्लिग ने उन्हें लौटने के लिए विवश करना आरम्भ किया और २८ अप्रैल को विद्रोह भड़क उठा। विद्रोहियों ने ब्लिग और एक दर्जन राजभक्त सिपाहियों को पकड़, एक खुली डोंगी में डाल कर, समुद्र में छोड़ दिया। ब्लिग इस दयनीय दशा में स्वदेश लौटे।

'ब्रेड-फ्रूट' की तृष्णा में ब्लिग ने एक वर्ष बाद पुनः टिहटी की यात्रा की और 'ब्रेड-फ्रूट' के कुछ पौदे प्राप्त किये। उसे वे वहाँ से क्यू ले गये और वहाँ से वे पौदे वेस्ट इंडीज भेजे गये। लेकिन दुर्भाग्य से वह फल नीग्रो लोगों को पसंद नहीं आया।

अफीम १५-वीं शताब्दी तक भारत से चीन जाती रही। जब अँग्रेज भारत आ गये, तो उन्होंने चीन पर भी अपना प्रभाव बढ़ाना चाहा। पर चीनी सम्राट् ने ब्रिटिश दूत से मिलना अस्वीकार कर दिया और व्यापारिक सुविधा दिये जाने के सम्बंध में ब्रिटेन के राजा को संदेश भेजा कि, हमारे पास सभी चीजें हैं और हमें आपके देश की किसी चीज की आवश्यकता नहीं है।

१८००ई० में चीन-सरकार ने अफीम के आयात पर रोक लगा दी। फिर भी चोरी से कुछ अफीम चीन जाती रही। १८३९ई० में चीन-सरकार ने लिङ्-त्से-हू को अफीम के तस्कर-व्यापार को रोकने के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किया। कैंटन उन दिनों अफीम के तस्कर-व्यापार का मुख्य केंद्र था। त्से-हू स्वयं वहाँ गये और २० हजार तस्कर-व्यापारियों को उन्होंने गिरफ्तार किया। चोरी से लायी गयी सारी अफीम नष्ट कर दी गयी और विदेशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यापारियों को चेतावनी दी गयी कि, यदि किसी विदेशी जहाज में अफीम मिली, तो उसे कैंटन न आने दिया जायेगा। और, यदि कोई जहाज चोरी से अफीम लेकर आया हुआ पकड़ा गया, तो उस जहाज का सारा सामान भी जब्त कर लिया जायेगा।

राष्ट्रीय मर्यादा के नाम पर १८४० ई० में ब्रिटेन ने चीन से युद्ध छेड़ दिया। चीन ब्रिटिश बेड़े के सम्मुख ठहर न सका और १८४२ ई० में नानकिंग की संधि के अनुसार कैंटन, शंघाई, अमोव, निङपू और फूचाऊ के ५ बंदरगाह विदेशी व्यापार के लिए खुल गये– जिसका अर्थ हुआ, अफीम का व्यापार। इस संधि के अनुसार उन पाँच बंदरगाहों में अँग्रेज व्यापार चला सकते थे। अलावा, नष्ट की गयी अफीम के हरजाने तथा युद्ध के हरजाने के रूप में चीन को काफी धन अँग्रेजों को देना पड़ा।

नील भारत में लगभग २००० वर्ष से उगाया जाता रहा है। प्राचीन यूनान और रोम में इसकी बड़ी माँग थी। रोम साम्राज्य के विनाश के बाद शताब्दियों

काली मिर्च का पौधा जिस भूमि में उगा, उसी भूमि को उसने रक्त से सींचा और दासता के हाथ बेचा। १५९६ ई० में बने इस चित्र में उन पुर्तगालियों को देखिये, जिनके साम्राज्य-अवशेष, भूमि के कोढ़ के रूप में, आज भी यहाँ-वहाँ अक्षुण्ण हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक रंग के रूप में नील यूरोप को अप्राप्य था। १६-वीं शताब्दी के मध्य में डचों ने यूरोपीय बाजारों में इसे पुनः पहुँचाया। बंगाल उन दिनों नील की खेती का मुख्य केंद्र था। इस काल में एक दिन में ३ लाख ३० हजार रत्तल नील तीन जहाजों पर यूरोप जाता था। यूरोपियनों को उस काल तक पता भी न था कि, यह रंग कैसे बनता है। १७०५ ई० तक वे यही समझते रहे कि, यह रंग खान से निकलता है।

जब अँग्रेज भारत आये, तो उन्हें नील का व्यवसाय इतना लाभकारक लगा कि, कुछ तो भारत में बस ही गये। अँग्रेज अपनी जमींदारी की भूमि किसानों को इस शर्त पर देते कि, उसमें से कम-से-कम इतनी भूमि पर नील की खेती करनी होगी। इसे 'तिन-कठिया' पद्धति कहते थे। अँग्रेज जमींदार ही किसानों-द्वारा उपजाये नील का भाव तय करते थे और बेगार आदि के रूप में किसानों को बहुत तंग करते थे। जब मजदूरी पर रखते, तो प्रति दिन मर्द को १० पैसे, औरत को ६ पैसे और बच्चों को ३ पैसे मजदूरी देते।

जब महात्मा गांधी अफ्रीका से भारत लौटे, तो सबसे पहले नील के प्रश्न ने ही उनको आकृष्ट किया। १९१७ में वे चम्पारण गये और उन्होंने किसानों के सम्बंध में निजी रूप से जाँच-पड़ताल करने का निश्चय किया। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपालानी, स्वर्गीय महादेव देसाई उनके साथ थे। कमिश्नर ने भारतीय दंड-विधि-संग्रह की १४४-वीं धारा के अंतर्गत उन पर नोटिस तामील की कि, वे चम्पारण छोड़ कर चले जायें। गांधीजी ने चम्पारण छोड़ने से इन्कार कर दिया और अदालत में अपने बयान में कहा—"मैं ऐसा नहीं मानता कि, मेरे आने से जन-शांति भंग होने की आशंका है। मेरी कर्तव्यपरायणता मुझे चम्पारण में बने रहने को कहती है।" भारत में गांधीजी का यह प्रथम 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' था। और, इसी के बाद गांधी राष्ट्रीय नेता हो गये।

मोहेन-जो-दाड़ो (३००० ई० पू०) की खुदाई में मिली सबसे अजीब चीज चाँदी में लिपटा हुआ एक कपड़ा था, जिसे वैज्ञानिकों ने जाँच कर के कपास का बना हुआ घोषित किया है। इसका यह अर्थ हुआ कि, उस समय भी कताई-बुनाई की कला काफी विकसित हो चुकी थी।

मध्य काल में तो सूती वस्त्र-व्यवसाय विश्व-विख्यात हो गया। तब भारत केवल निकटवर्ती देशों को ही नहीं, बल्कि वेनिस होते हुए सुदूर पश्चिम में भी वस्त्र का निर्यात करता था। ढाका के मलमल की बुनावट का कौशल तो एक कहानी ही बन गया।

धीरे-धीरे यह व्यवसाय भी घटा। ब्रिटेन भारत से रुई लेता और उसके कपड़े बना कर भारत भेजता। फलस्वरूप लंकाशायर दिन-दिन उन्नति करने लगा और भारत का किसान निर्धन होने लगा। अपने चरखे के साथ इसी समय गांधीजी ने विश्वख्याति अर्जित की!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चार दवाइयों वाली

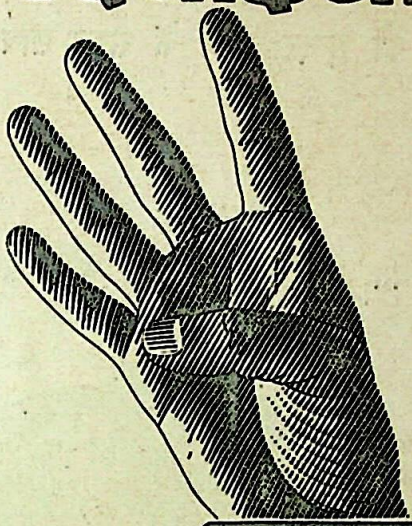

'एनासिन'

आपको सिरदर्द सर्दी-ज़ुकाम बुख़ार व रगपुट्ठों के दर्द से

फ़ौरन आराम देती है।

याद रखिये। सिर्फ़ एक दवावाली दर्द की कोई भी दवा आपको 'एनासिन' जैसा फ़ौरन...बिनाहानि व अचूक आराम नहीं दे सकती इसमें डाक्टर के नुस्ख़े जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक मिश्रण है। लाखों जानते हैं कि सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दान्तदर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम पाने के लिए 'एनासिन' ही बेहतर है। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

एक पैकट १२ नये पैसे

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & COMPANY PRIVATE LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों को सुन्दर रखने के सरल साधन

टाटा का
सुगन्धित नारियल का तेल और शैम्पू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असल और अमल

अमेरिका-स्थित भारत के राजदूत गगनविहारी मेहता-लिखित एक बोधकथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

सरिता को उसकी सातवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में पाँच-छः सचित्र पुस्तकें भेंट-स्वरूप मिली थीं। अतः स्वभावतः ही उस दिन वह बड़ी प्रसन्न थी और अपने पिताजी के कार्यालय से लौटने की उत्सुकता-पूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी। शाम हुई, तो पिताजी घर लौटे और सरिता खुशी से नाच उठी। उसने अपनी पुस्तकें उन्हें दिखलायीं। वे भी बड़े खुश हुए; पर साथ ही बोले—"इनमें से दो-तीन पुस्तकें अपने पड़ोसी रमेश को भी दे दो। देखो न, बेचारा कितना दीन-सा तुम्हारे घर में चक्कर लगा रहा है।"

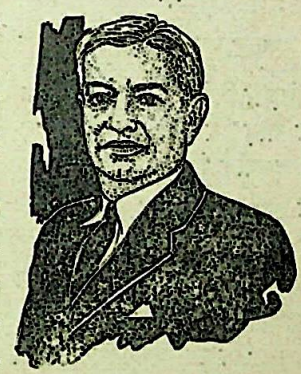

गगनविहारी मेहता

सरिता ने बरामदे में खड़े रमेश को, जो उसकी ओर ही टकटकी लगाये था, देखा; पर उसकी इच्छा अपनी पुस्तकों से अलग होने की नहीं हो रही थी।

उसके पिताजी ने उसका मंतव्य भाँप लिया और समझाते हुए कहा—"बेटी, प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि, वह अपनी इच्छा से, अपने पास की जरूरत से ज्यादा चीजें जरूरतमंदों को दे दे। स्वार्थ-जैसा कोई पाप नहीं है इसी के कारण लड़ाई-झगड़े होते हैं; दुश्मनी बढ़ती है और देश-के-देश नष्ट हो जाते हैं। इसलिए हम सबको एक-दूसरे का खयाल रखना चाहिए— जो चीज जिसके पास न हो, वह उसे अपने पास से देनी चाहिए। समझी बेटी, दे दे उसे दो किताबें!"

सरिता ने चुपचाप अपने पिताजी का उपदेश सुन लिया। क्या कहती उनसे! पर अब भी उसकी इच्छा अपनी पुस्तकों से बिछुड़ने की नहीं थी। उसकी पुस्तकों का स्वामी रमेश बने, इस बात की कल्पना-मात्र से ही उसका हृदय पीड़ित हो उठता था। फिर भी, पिता की वचन-रक्षा के खयाल से, उसने दो पुस्तकें रमेश की ओर बढ़ा दीं और उसके पिताजी ने उसे शाबाशी देते हुए कहा—"देख, वह भी खुश हो गया और तेरे पास चार पुस्तकें भी बची रह गयीं! है न?"

इसके बाद भी उन्होंने उसे गीता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बौद्ध धर्म में वर्णित दान की महत्ता, साम्यवाद और समाजवाद में निहित समानता के सिद्धांत आदि के बारे में बहुत-कुछ समझाया; लेकिन बेचारी सरिता की समझ में इसके सिवा और कुछ न आया कि, अपने पास जो-कुछ हो, उसमें से यथा-सम्भव जरूरतमंदों को देना चाहिए। बाकी सब बेकार था।

इस घटना के तीन-चार दिनों के बाद ही, एक दिन सरिता के पिताजी ने कार्यालय से लौटने के बाद कपड़े बदलने के लिए आलमारी खोली, तो चौंक पड़े। वहाँ छः कुरतों के बजाय तीन ही टँगे थे। जो कुरता वह पहनना चाहते थे, वह भी गायब था। उन्होंने सब जगह तलाश की; पर पता नहीं लगा। अतः वे बड़बड़ा कर अपना क्रोध शांत करने लगे।

तभी वहाँ सरिता आ पहुँची। उसने अपने पिताजी की बातें सुनीं, तो हँस पड़ी और बोली—"आप व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं, पिताजी। मैंने तो तीनों कुरते एक भिखारी को दे दिये। बेचारा बड़ा फटेहाल था। कहता था, ठंड के मारे रात-भर काँपता है। मैंने सोचा, आपके पास तो इतने कुरते हैं। अगर इनमें से दो-तीन इस गरीब को दे ही दूँ, तो क्या बुरा है? आपके पास इतने सारे कुरते हैं और उस बेचारे के पास एक भी नहीं था!"

*

सदाचारी लड़का

खिड़की के शीशे को फोड़ती क्रिकेट की वह गेंद ठीक रसोईघर में आकर गिरी। घर की मालकिन उसी क्षण दौड़ कर बाहर आयी; किंतु गली में कहीं कोई नहीं था। अतः गुस्सा पीकर वह चुपचाप भीतर चली गयी।

मगर करीब आधे घंटे बाद एक लड़का डरते-सहमते कमरे में आया और बड़ी नम्रता से बोला—"चाचीजी, मुझसे गलती हुई, मेरे अपराध को क्षमा करें। वे मेरे पिताजी आ रहे हैं, आपकी खिड़की में नया काँच लगा देंगे।"

नजदीक ही एक व्यक्ति काँच लेकर आ रहा था। लड़के के सदाचरण से घर की मालकिन बड़ी प्रसन्न हुई। उसने उसे पुचकार कर गेंद वापस कर दी।

पंद्रह मिनट के भीतर ही खिड़की दुरुस्त हो गयी और उस व्यक्ति ने बड़ी नम्रता से कहा—"आपसे सिर्फ अढ़ाई रुपये ही लूँगा, यों माल की लागत ही तीन रुपया है।"

मालकिन आश्चर्य में पड़ गयी; तुनक कर बोली—"कैसे पैसे? तुम्हारे लड़के ने खिड़की का शीशा फोड़ दिया, तुमने लगा दिया— अब अढ़ाई रुपये किस बात के?"

"आप यह क्या कह रही हैं? क्या वह लड़का आपका बच्चा नहीं? किंतु वह तो मुझे यही कह कर यहाँ बुला लाया है!" —'हँसी की तरंगें' से

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविस्मरणीय
भारतबंधु जेम्स लांग

राष्ट्र और संस्कृति की परिधियों से मुक्त मानवता के प्रतीक जेम्स लांग का जातवेद शास्त्री-द्वारा संक्षिप्त परिचय-प्रसंग

*

यद्यपि लगभग २ शताब्दियों तक भारत अंग्रेजों का दास रहा और इस काल में अंग्रेजों ने अपनी साम्राज्यशाही को कायम रखने के लिए कुछ कम अत्याचार नहीं किये; पर इसका यह अर्थ नहीं है कि, इस काल में जितने अंग्रेज भारत आये, सब बुरे ही थे। निश्चय ही, उन बुरों में कुछ ऐसे भी थे, जिनके लिए सरलता से कहा जा सकता है कि, इन पर "लाखन हिन्दुन वारिये!" उसी श्रेणी के अंग्रेजों में एक थे, जेम्स लांग, जो 'चर्च मिशनरी सोसाइटी' की ओर से १८४० में भारत आये और एक सच्चे धर्मगुरु की तरह—भारत के प्रश्न पर—सत्य के समर्थन में, अपने गोरे भाइयों से संघर्ष करते रहे। जितने दिन वे भारत रहे, उन्होंने भारत को कभी विजित राष्ट्र के रूप में नहीं देखा और अपने सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से भारतीयों के हृदय को इस प्रकार जीत लिया कि, अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी आज वे स्मरणीय हैं।

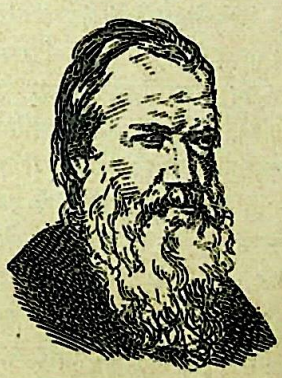

जेम्स लांग

[चित्र : वी०एन० ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

श्री लांग महोदय ठाकुरपुकुर के एक मिशनरी स्कूल में अध्यापक हो कर आये थे। अपने अध्यापन-काल में उन्होंने न केवल लड़कों को लिखाया-पढ़ाया और ईसाई धर्म का उपदेश दिया; बल्कि पूरे भारतीय समाज को खुली आँखों से देखा।

उन दिनों अंग्रेज भारत में नील की खेती कराते थे और अपने गोरे चमड़े के मद में भारतीय किसानों और उनकी बहू-बेटियों पर बेहद अत्याचार करते थे। उनके अत्याचारों पर प्रकाश डालते हुए दीनबंधु मित्र ने 'नील-दर्पण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामक एक नाटक प्रकाशित कराया था। दीनबंधु मित्र स्वयं रायबहादुर थे और डाक-तार-विभाग में काम करते थे। इसलिए लेखक के नाम के स्थान पर 'कस्यचित् पथिकस्य' नाम दे रखा था। लांग का ईसाई हृदय नील वाले साहबों के अत्याचार को सहन न कर सका। उन्होंने अपने देश-वासियों का ध्यान इन अत्याचारों की ओर आकृष्ट करने के लिए मधुसूदन दत्त से 'नील-दर्पण' का अंग्रेजी अनुवाद करवाया और कलकत्ते की सी. एच. मैनुएल कम्पनी से उसे छपवा कर, उसकी लगभग ५०० प्रतियाँ पार्लमेंट के सदस्यों के पास भेजीं।

निलहे साहबों को इस प्रकार का आंदोलन बड़ा बुरा लगा और 'इंग्लिश मैन' तथा 'बंगाल-हरकारा' के द्वारा उन्होंने आंदोलन-कारियों के विरुद्ध विष-वमन प्रारम्भ कर दिया। फल यह हुआ कि, तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने मैनुएल कम्पनी के विरुद्ध मुकदमा चला दिया।

मुकदमे की बात सुनकर लांग महोदय ने अदालत को लिखा—"उस पुस्तक के प्रकाशन का उत्तरदायित्व मुझ पर है। मैनुएल कम्पनी ने तो केवल उसका मुद्रण किया है। उसका प्रकाशक मैं हूँ। अतः उसके बजाय मुझ पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए।"

फलतः लांग महोदय पर मुकदमा चला। अपने मुकदमे में उन्होंने बयान दिया—"मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि, भारत में यूरोपियनों की सुरक्षा तथा इस देश के कल्याण की दृष्टि से, मुझे यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण मालूम होती है कि, हर यूरोपियन को भारतीयों के आचरण-संस्कारों को ध्यान में रखना चाहिए और उनका आदर करना चाहिए। भारतीय समाचारपत्रों की चेतावनियों के प्रति हम आँख बंद किये रखें, यह बात पूर्णतः मूर्खतापूर्ण और नासमझी की प्रतीक है।"

संसर्ग-दोष

बात ऐसी कड़वी हो गयी कि, न तो बंदर को सहन हुई, न गिद्ध को। महाभारत की तैयारियाँ हो गयीं। गिद्ध सौ गिद्धों की फौज लेकर आ धमका; उधर बंदर भी सौ बंदर इकट्ठे कर मैदान में आ डटा। परस्पर आक्रमण होने ही वाले थे कि, कोटर में बैठा उल्लू आकर दोनों सेनाओं के बीच खड़ा हो गया। उच्च स्वर से बोला—"भाइयो, जंगल की संस्कृति में तो यह बात नहीं थी। अभी तक यहाँ जाति-देश के संकुचित विचार फैले नहीं थे। लगता है, तुम दोनों जातियों ने मनुष्य के संसर्ग से यह विष अपने भीतर अंकुरित कर लिया है। हाय, हाय! तुम लोगों ने हमारी संस्कृति पर धब्बा लगा दिया!" उल्लू को दहाड़ मारते रोते देख, दोनों पक्ष लज्जित हो अपने-अपने घर लौट गये।

—'परिक्रमा' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लांग अपने निर्भीकतापूर्ण बयान के द्वारा भारतीयों के हृदय के और निकट पहुँच गये। कलकत्ते के राजा कालीकृष्ण बहादुर, राजा नरेन्द्रकृष्ण, रामनाथ ठाकुर आदि ४७ प्रमुख नागरिकों ने श्री लांग को पत्र भेज कर उनकी सराहना की।

श्री लांग के बयान का अदालत-विरुद्ध प्रभाव पड़ा और सुप्रीम कोर्ट में उन पर मानहानि का मुकदमा चला दिया गया। सर मार्डंट वेल्स के समक्ष १९-२० जुलाई, १८६१ को उनका मुकदमा पेश हुआ। पूरी अदालती कार्रवाई का नाटक दो ही दिनों में समाप्त हो गया और उन पर 'इंग्लिश-मैन', 'बंगाल-हरकारा' तथा निलहे अंग्रेजों की मानहानि का आरोप सिद्ध मान लिया गया।

'नील-दर्पण' के लेखक
दीनबंधु मित्र
[चित्र : वी० एन०ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

स्थिति की गम्भीरता को ध्यान में रखकर २४ जुलाई को मामला 'फुल बेंच' के समक्ष निर्णयार्थ पेश हुआ। प्रधान विचारपति बर्न्स पीक के समक्ष जब मामला पेश हुआ, तो श्री लांग ने अपने बयान में कहा—"मैं पादरी हूँ। क्या पादरी के रूप में मेरा यह कर्त्तव्य नहीं है कि, मैं शांति के लिए प्रयत्नशील रहूँ? मेरी धारणा है कि, भारतीयों को पूर्ण रूप से संतुष्ट रखने में ही शांति की सुरक्षा सम्भव है। इसके लिए यह आवश्यक है कि, समाचार-पत्रों अथवा अन्य माध्यमों से जो शिकायतें आयें, उन्हें हम ध्यान से सुनें और उनके निवारण की चेष्टा करें।"...

विचारपति ने उन्हें १ मास की सजा और १ हजार रुपये जुर्माना का दंड दिया। जिस दिन लांग महोदय के मुकदमे का फैसला होने वाला था, कलकत्ते के कितने ही धनी-मानी सज्जन खासी बड़ी रकमों के साथ अदालत में उपस्थित थे। और, ज्योंही फैसला हुआ, बंगला के सुप्रसिद्ध साहित्यिक कालीप्रसन्न सिंह ने अविलम्ब जुर्माने की पूरी रकम जमा कर दी। यहाँ यह भी बता देना अप्रासंगिक न होगा कि, पाइकपाड़ा के राजा प्रतापचंद्र सिंह ने लांग के मुकदमे का सारा व्यय-भार अपने ऊपर ले लिया था।

लांग महोदय की इस सजा का यह फल हुआ कि, सर्वसाधारण के भीतर की प्रसुप्त विद्रोहाग्नि जाग उठी और बंगाल में एक अच्छा-खासा आंदोलन उठ खड़ा हुआ। इस प्रकार, गोरों के विरुद्ध आंदोलन का श्रीगणेश भी भारत में वस्तुतः एक गोरे ने ही किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेल से छूट कर श्री लांग विलायत चले गये। विदाई देने के लिए कलकत्ते में एक बड़ी भारी सभा हुई और प्रायः सभी देशी पत्रों ने उनके प्रति आदर प्रकट किया।

पर यह राजनीतिक जागरण तो लांग महोदय के जीवन का एक अंग-मात्र है। श्री लांग नौ यूरोपीय भाषाओं के विद्वान् थे और यहाँ आकर उन्होंने हिन्दी, संस्कृत और बंगला का भी अच्छा अध्ययन कर लिया था। साहित्य-क्षेत्र में लांग महोदय की कुछ देनें भारतवर्ष के साहित्यिक इतिहास में बड़े महत्व की हैं। उदाहरण के लिए, हम 'बंगाल की लोकोक्तियों'-सम्बंधी पुस्तक ले सकते हैं। यह पुस्तक १८५१ ई. में प्रकाशित हुई थी और बंगला-लोकोक्तियों की प्रथम पुस्तक थी। इस पुस्तक के अतिरिक्त लांग ने दूसरी बार भारत वापस आने पर "सेलेक्शंस फ्राम द' अनपब्लिश्ड रेकार्ड आव गवर्नमेंट फार द' इयर्स १७४८ टू १७६९ रिलेटिंग टू सोशल कंडीशंस आव बेंगाल" नामक ग्रंथ प्रकाशित कराया, जो आज भी महत्वपूर्ण संदर्भ-पुस्तक मानी जाती है। उनकी दूसरी पुस्तक "ऐडम्स रिपोर्ट आन वर्नाक्यूलर एजुकेशन इन बेंगाल ऐंड बिहार विथ ब्रीफ व्यू आन इट्स पास्ट ऐंड प्रेजेंट कंडीशन" भी कुछ कम महत्व की नहीं है।

श्री लांग महोदय ने 'सत्यार्णव' नामक एक बंगला मासिक पत्र भी प्रारम्भ किया था। उस पत्र में वे ईसाई धर्म-सम्बंधी लेखों के अतिरिक्त हिन्दू तथा इसलाम धर्म-सम्बंधी लेख भी प्रकाशित करते थे।

भारतीय वातावरण में लांग महोदय ने अपने को पूर्णतः भारतीय बना लिया था और जब-कभी अवसर आया, भारतीय भाषा के अभ्युत्थान में हाथ बटाने में किंचित्-मात्र नहीं हिचके।

ब्रिटेन वापस जाने के पश्चात् भी लांग का भारत-प्रेम पूर्ववत् बना रहा। वहाँ से भी उन्होंने दो पुस्तकें प्रकाशित करायीं—'ओरियंटल प्रावर्ब्स इन देयर रिलेशंस टू फोकलोर, हिस्ट्री ऐंड सोशियालाजी; विथ सजेशंस फार देयर कलेक्शन, इंटरप्रेटेशन ऐंड पब्लिकेशन' और 'ईस्टर्न प्रावर्ब्स ऐंड ऐम्बलम्स इलस्ट्रेटिंग ओल्ड ट्रूथ'।

२३ मार्च, १८८७ में ३ ऐडम स्ट्रीट, एडेल्फी, लंदन में, भारत-भक्तों की परम्परा के इस मनीषी ने शरीर त्याग दिया। उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए देश के कई पत्रों ने 'काले बार्डर' प्रकाशित किये!

★

मार्ग में बैठी-बैठी प्रतीक्षा करती रही, देखती रही, आसमान से सीधे उतर कर मेरा हाथ पकड़ोगे और किरण-रथ पर मुझे चढ़ा कर ले जाओगे; किंतु जब संध्या हो गयी, तो तुम्हारा निःश्वास यह कहता हुआ निकल गया कि, मार्ग के छोर पर मेरी प्रतीक्षा करते-करते तुम अपना आकार ही खो बैठे थे!

—शबनम

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आखिरी हल

दादा धर्माधिकारी के एक विचारोद्बोधक मराठी लेख का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

उस दिन संसार के एक महान् राज-पुरुष ने कहा– "दैव ने हमें युद्ध की सजा सुना दी है। हम यदि उसको चुपचाप मंजूर कर लेंगे, तो मानवीय सभ्यता का अंत निश्चित है।" यह बड़ी गम्भीर चेतावनी है। गनीमत इतनी ही है कि, वह राजनेता हमको बतलाता है–"यह सजा दैव ने सुनायी है", भगवान् ने नहीं।

एक तरफ तो हमसे यह कहा जाता है कि, अगर युद्ध आया, तो सभ्यता का अंत हो जायेगा और दूसरी तरफ, संहार के एक-से-एक भयंकर अस्त्रों का आविष्कार करने में संसार के शक्तिशाली राष्ट्र अपनी शान समझते हैं। कोई भी यह नहीं कहता कि, अब युद्ध प्रलय का प्रतिहस्तक बन कर आयेगा; इसलिए युद्ध-विरोधी जीवन का उपक्रम हम अपने देश से करेंगे। युद्ध के साथ जब मानव-जाति का विनाश निश्चित है, तो जय-पराजय का कोई महत्व नहीं रह जाता। विजेता को भी विनाश से बचने का कोई रास्ता नहीं मिल सकेगा। ऐसी परिस्थिति निश्चित रूप से जब पैदा होनेवाली है, तो फिर संसार के जो प्रमुख राष्ट्र हैं, उन्हें शस्त्र-न्यास की वीरता दिखलाने में कौन-सी दिक्कत हो सकती है? शस्त्रास्त्रों की होड़ में यदि वे एक-दूसरे की राह देखते नहीं बैठते, तो शस्त्र-न्यास का उपक्रम करने में एक-दूसरे की राह देखने का कारण क्या है– सिवा इसके कि, उन्हें एक-दूसरे से डर लगता है? इसका अर्थ यह है कि, राजनीतिज्ञों में कोई भी क्रांतिकारी कदम उठाने की शक्ति नहीं रह गयी है।

दादा धर्माधिकारी
[चित्र : वी०एन०ओके-निर्मित एक रेखाचित्र]

संसार का एक दूसरा प्रमुख व्यक्ति, एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अपनी पुस्तक में लिखता है–"अब संसार में मनुष्य का कोई उपयोग ही नहीं रहेगा।" हम सुनते और समझते तो यह आये हैं कि, यह पृथ्वी मनुष्य का निवास-स्थान है। लेकिन विज्ञान का आधुनिकतम आविष्कार हमको यह बतलाता है कि, पृथ्वी में मनुष्य का अब कोई उपयोग नहीं रह गया है। उत्पादन के लिए मनुष्य का उपयोग करना अब बीते हुए जमाने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात हो चुकी है। अगर तीसरा महायुद्ध न हुआ, तो जितने समाजोपयोगी काम हैं, वे सब-के-सब यंत्रों-द्वारा सम्पन्न होंगे। सिर्फ बटन दबाने के लिए मनुष्य को अपने हाथ का उपयोग करना पड़ेगा। यहाँ तक कि, चुनाव में प्रचार के भाषण भी बड़ी प्रभावशाली आवाज में और ओजस्वी भाषा में, उचित अभिनय के साथ 'यंत्र-मानव' करेंगे। मनुष्य थकता है, यंत्र कभी नहीं थकेंगे। न उन्हें छुट्टी की जरूरत होगी और न वे हड़ताल करेंगे।

इन यंत्रों की देख-भाल के लिए, अत्यंत निपुण विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी और इन विशेषज्ञों की ही पृथ्वी पर वास्तविक आवश्यकता होगी। युद्ध के जमाने में मनुष्य, लड़ाई के मैदान में मरने के काम आयेंगे; लेकिन लड़ाई के बाद मनुष्य अपने-आपमें एक समस्या बन कर रह जायेगा।

संसार का तीसरा एक महापुरुष, तत्वचिंतक, बर्ट्रेंड रसेल, इसमें से, यह रास्ता सुझाता है कि, अब मनुष्य को सिर्फ ऐसे ही कार्य करने चाहिए, जो यंत्रों द्वारा नहीं किये जा सकते। उदाहरण के लिए, कविता करना, साहित्य लिखना, चित्र खींचना, नाचना, गाना, आदि। पहले सिर्फ धनिक ही रमणीय आलस्य में अपना समय बिताते थे, अब समस्त मानव-जाति इस शानदार आलस्य का उपभोग करेगी और केवल साहित्य, संगीत-कला और काव्य-शास्त्र-विनोद में अपना समय बिताया करेगी!

तीन प्रमुख जागतिक नेताओं के ये तीन प्रकार के विचार हैं। मनुष्य की इन त्रिविध प्रवृत्तियों में आज तक बहुत बड़ा प्रभेद रहा है। साहित्य-निर्माण के द्वारा समाज को बुद्धि-दान देने वाले सरस्वती के ये उपासक—जिनके जिह्वाग्र पर सरस्वती नाचती रही—ऐसे सरस्वती के ये भक्त, केवल शब्द-विलास में इतने खो गये कि, उनकी संगति से सरस्वती 'सर्कस' की नर्तकी

दूरी

प्रश्न और उत्तर दो जुड़वाँ बालक हैं। दोनों एक ही माँ के पेट से पैदा हुए। माँ के वात्सल्य के क्या कहने? कौन-सा समुद्र भला माँ के प्रेम से अधिक अगाध है। जब दोनों बच्चे रोने लगे, तो उसने दायाँ स्तन प्रश्न के और बायाँ स्तन उत्तर के मुख में दे दिया। उस बेचारी को क्या पता था कि, आनेवाले अनंत भविष्य में भी वे दोनों एक ही माँ का स्तन पीते हुए भी, एक-दूसरे से इतने अपरिचित रहेंगे — एक ही वक्ष का दूध पीते हुए भी दोनों में कभी न पटनेवाली दूरी रहेगी! और, प्रश्न-उत्तर के बीच की —दो स्तनों के बीच की— यह दूरी आज तक ज्यों-की-त्यों अनंत है!

—योन् नागोची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन गयी ! 'सर्कस' की नर्तकी जिस प्रकार, तलवार की धार पर, आल-पीनों पर और बताशों पर नाच लेती है, उसी प्रकार विद्या-व्यसनी और विद्या-विनोदी पंडितों की जीभ तथा उंगलियों के सिरों पर सरस्वती नाचने लगी।

उधर लक्ष्मी भी आलस्य और विलासिता की अधिदेवी बन गयी। साहस-पुरुषार्थ का मार्ग उसने त्याग दिया—जीवंत शक्ति वह नहीं रही, स्थावर सत्ता हो गयी !

सरस्वती और लक्ष्मी के ये हाल हुए; इसलिए दोनों को महाकाली की शरण लेनी पड़ी। महाकाली को तो विवेक से कोई मतलब नहीं – होश-हवास सँभाले रखने की कोई चिंता नहीं।

सरस्वती ने हमारे दिमागों को भीतर से स्वस्थ-संतुलित रखना छोड़ दिया है। लक्ष्मी ने हमारी उँगलियों का शिल्प छीन लिया है, इसलिए हमको निराशा और निष्फलता से बचाने के लिए, काली माता वात्सल्यपूर्वक हमारे सिर काट-काट कर उनकी माला अपने गले में पहनती है और अपनी सारी भुजाओं में अनंत संहारकारी आयुध रखती है।

युद्ध, उत्पादन तथा सांस्कृतिक विकास में परस्पर विच्छेद हो गया है। इसका यह परिणाम है कि, हमारी माता के तीन रूप इतने भिन्न-भिन्न और परस्पर-विरोधी हो गये हैं कि, शैव और वैष्णव तो आपस में लड़ते ही आ रहे हैं; लेकिन लक्ष्मी और सरस्वती की लड़ाई भी, हमारी पौराणिक संस्कृति में कुछ कम प्रसिद्ध नहीं है। इसलिए वे दोनों काली-कराली से घबराती रहती हैं।

इसका एक ही उपाय है। 'कराग्रे वसते लक्ष्मी' के इंगित को हम भलीभाँति आत्मसात कर लें। हमारी जिह्वा पर जो भारती नाचती है, उसके नृत्य के विषय हमारी उँगलियों की कारीगरी से उत्पन्न होने चाहिए। उत्पादन की प्रक्रिया कला-विषयक प्रेरणा का अनंत भांडार होनी चाहिए। जब ऐसा होगा, तब काली माता की संहार-क्रिया के लिए, जान-बूझ कर अपने होश गँवा देने की जरूरत नहीं मालूम होगी। उसकी भुजाओं में संहार के हथियार नहीं; बल्कि उत्पादन के औजार होंगे। जब ऐसा होगा, तभी हमारे साहित्य, कला, संगीत और नृत्य, सब विलासिता के प्रति-हस्तक बनने के बदले, मानवीय कल्याण के अग्रदूत बनेंगे। युद्ध की सजा से मुक्ति पाने का अन्य कोई उपाय नहीं।

★

गांधीजी की यह खूबी थी कि, जिसे मदद की सबसे ज्यादा जरूरत हो, उसकी सर्वप्रथम मदद करते थे। अभी कवि दुखायल ने मुझे सुनाया कि, मदद देने का गांधीजी का क्रम था– "पहले भुखिया, फिर दुखिया और बाद में सुखिया।" —विनोबाजी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे महिला अमेरिकी

परम्परागत नारी-वेशभूषा एवं कार्य-कर्त्तव्य त्याग कर पुरुषोचित कार्यों को अपनानेवाली कुछ अद्भुत स्त्रियों के रोचक प्रसंग

★

हाल ही में, न्यू जरसी (अमेरिका) की एक युवती ने एक अमरीकी कांग्रेस-सदस्य को एक पत्र लिखा था, जिसमें उसने निवेदन किया था कि, उसे 'यूनाइटेड स्टेट्स नेवल एकेडमी' में 'मिडशिप-वूमन' के पद पर नियुक्त कर दिया जाये। इससे प्रतीत होता है कि, वह पुरुषत्व के उस गढ़ पर धावा बोलने की तैयारी कर रही थी, जिस पर आधुनिक स्त्रियाँ अभी तक विजय नहीं पा सकी हैं। हाँ, बहुत दिन हुए, इस दुर्ग पर भी स्त्रियों की पताका फहरायी अवश्य थी।

अश्वारोहिणी

[चित्र : बोस्टन-संग्रहालय में सुरक्षित मथुरा-शैली के एक शिल्प की रेखानुकृति]

पिछली सदी में, स्त्रियों की एक बड़ी संख्या ने 'अबलात्व' की सीमाएँ लाँघ कर, पुरुष का रूप रखा और एक नाविक की भाँति सात-समुद्रों की परिक्रमा ही नहीं की, वीर-संकल्पी सैनिकों की भाँति वे लड़ीं भी। और, जब तक उनकी इच्छा स्त्री-जीवन अपनाने की न हुई, वे ऐसी रहस्यमयी रहीं कि, उन पर पल-भर को भी संदेह न किया जा सका।

इन असाधारण और अनुपम स्त्रियों में एक एमा बर्न्स थी, जिसने १५ वर्ष की आयु में ही व्हेल-मछली पकड़ने वाले एक जहाज 'जेम्स राइ' पर नौकरी कर ली थी। १८ महीनों तक, वह एक निपुण नाविक की भाँति काम करती रही; परंतु एक दिन, जबकि उसने रूखे और कठोर स्वर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के स्थान पर, असावधानीवश अपने स्वाभाविक स्वर में सरदार के एक प्रश्न का उत्तर दिया, तो उसकी जाति छिपी न रह सकी। और, इस प्रकार स्त्रीत्व की जानकारी होने पर जब कप्तान ने उसे वेतन देने से इन्कार कर दिया, तो उसने नगराध्यक्ष के यहाँ शिकायत की। सुनवाई के दिन, वह स्त्री-वेश में उपस्थित हुई। अपने लम्बे कद के कारण, वह उस समय बड़ी सुंदर दिखायी दे रही थी।

१८५६ के 'फिला डेल्फिया लैजर' में प्रकाशित उस सुनवाई के कुछ प्रश्न और उत्तर बड़े मजेदार हैं—

"तुम किस नाम से और कितने वेतन पर उस जहाज में काम करती थी?"

"जॉर्ज स्टुअर्ट नाम से तथा १८ डालर मासिक वेतन पर।"

"तुम्हारा कद और वजन कितना है?"

"श्रीमान्, मेरा कद बिना जूते पहने, ५ फुट ९½ इंच है और वजन, जब मैं धरती पर होती हूँ, तो १८० पौंड होता है और समुद्र-यात्रा में कुछ बढ़ जाया करता है।"

"तुम्हें समुद्र पसंद है?"

"बहुत। उसमें एक विशेष आकर्षण है। धरती के जीवन में कुछ नयापन नहीं होता। समुद्र में नाविक को आकस्मिक घटनाओं का सामना करने के लिए प्रतिपल व्यस्त रहना होता है।"

"क्या तुमने कभी एक अमरीकी कप्तान को पीटा था?"

"हाँ, बात ही बुरी थी। वह बड़ा लम्बा-चौड़ा आदमी था। शायद ऐसा, जैसी मैं हूँ। लेकिन कद ६ फुट से भी अधिक था। वह मुझसे झगड़ बैठा। उसने मुझे मुक्का मारा। मैंने उसे बायें हाथ से ही धक्का देकर नीचे गिरा दिया। वह जहाज के चौथे भाग में जा गिरा और बंछड़े की भाँति रेंकने लगा। वह था ही इस योग्य।"

"नाविकों के साथ रहने पर तुम्हें उनके ऊपर अविश्वास नहीं होता था?"

"यह तो भगवान् ही अच्छी तरह जानता है। वैसे मुझे उन पर तनिक भी

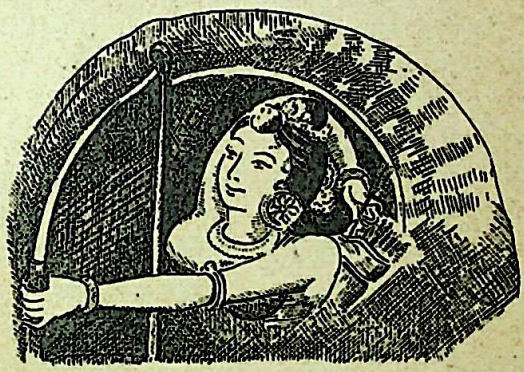

धनुर्धारिणी

[चित्र : अहिछत्रा में प्राप्त जिनेश्वरदास-संग्रह के एक शिल्प की रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अविश्वास न था। वे बहुत सरल होते हैं। देखा जाये, तो वे लोग विश्व के अत्यंत सहृदय व्यक्ति होते हैं। मैं पुरुषों के साथ किसी भी समय सिगरेट तथा शराब पी लेती थी। पुरुषों में जॉर्ज स्टुअर्ट का कोई शत्रु नहीं है।"

उग्र हो रही एमा को उसका वेतन दिला दिया गया और उसने सरलता से दूसरा नाम रख कर, फिर से समुद्री जीवन अपना लिया; क्योंकि हृष्ट-पुष्ट शरीर, समुद्र तथा जहाज-सम्बंधी ज्ञान और बायें हाथ से ६ फुट के पुरुष को धक्का देकर गिरा देने का बल, उसके लिए बड़े सहायक सिद्ध होते थे। नाविक के भारी वस्त्रों में, वह पुरुष की भाँति घूम-फिर भी सकती थी।

१८०२ में एक श्रीमती कोला, ब्रिटिश युद्धपोत पर, साधारण नाविक की भाँति काम करती थी। जब उसने अपनी कहानी सुनायी, तो एकदम प्रसिद्ध हो गयी। फिर उसने एक 'काफी-हाउस' खोल लिया, जो बाद में विशेष रूप से नाविकों के ही व्यवहार में आने लगा।

कॉर्नवाल की एक १४-वर्षीय लड़की एलिजाबेथ बाउडेन, जब असहायावस्था में थी, तब जीविका की तलाश में लंदन चली गयी। वहाँ पर, जब उसे कोई काम न मिला, तो उसने युवक का रूप धारण कर लिया और फालमाउथ में जाकर अपना नाम, हिज-मजेस्टी के युद्धपोत 'हैजार्ड' के छोकरों में लिखा लिया।

उसने कभी तैरना न सीखा था। एक दिन, जब वह जहाज की एक नाव में चप्पू चलाने का काम कर रही थी, तो गहरे समुद्र में नाव के डूबने पर, वह पानी में जा गिरी। वह लगभग डूब ही गयी थी; लेकिन जब उसे बाहर निकाला गया, तो प्रकट हुआ कि, वह लड़की थी।

किंतु उन स्त्रियों का कार्य, जिन्होंने सैनिकों का छद्म-वेश धारण किया था, और भी दुष्कर था; क्योंकि उन्हें केवल कठोर जीवन ही नहीं बिताना होता था, बल्कि युद्ध-परीक्षणों में भाग लेना और युद्ध की परिस्थितियों में रहना पड़ता था।

गृह-युद्ध छिड़ने पर, एक ऐसी ही युवती को, 'जोन आव आर्क' की कहानी के प्रभाव से इस बात का विश्वास हो गया कि, उसके भाग्य-स्वर उसे जोन के दुस्साहसों को दुहराने के लिए पुकार रहे हैं। उसके परिवार के सदस्यों न उसे बहुतेरा समझाया; परंतु वह भाग खड़ी हुई और मिशिगन-रेजीमेंट की नगाड़ा-वादक टुकड़ी में सम्मिलित हो गयी। चिकामौगा के युद्ध में वह घायल हो गयी और जब उसके घावों की मरहम-पट्टी की गयी, तो ज्ञात हुआ कि, वह युवती थी। यह जानने पर कि उसके घाव सांघातिक हैं, उसने अपने पिता को यह पत्र लिखवाया—

"अपनी मरती हुई पुत्री को क्षमा करना। मैं अब कुछ ही क्षणों की मेहमान हूँ। मेरी मातृभूमि मेरे रुधिर की बलि ग्रहण कर रही है। मैं अपने देश को मुक्त देखना चाहती थी; किंतु भाग्य यह नहीं चाहता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरने में मुझे संतोष है। पापा, मुझे क्षमा कर देना। ममी से कहना कि, अपनी एमिली को प्यार करें।

"पुनश्च – मेरी कलाई-घड़ी नन्हे ईफ को दे देना।"

इन आधुनिक वीरांगनाओं में कदाचित् सर्वाधिक छद्मवेशी मैडम लोरेटा जनेटा वेलाक्वेज थी। वह स्पेनिश पिता और फ्रेंच-अमरीकी माँ की पुत्री थी और उसका जन्म क्यूबा में हुआ था। फिर उसे अमेरिका भेजा गया और उसकी शिक्षा-दीक्षा दक्षिण के 'कान्वेंट' में हुई। वह भी 'जोन आव आर्क', सैन्य-कौशल तथा वीरोचित-कार्यों की ओर आकर्षित हो गयी।

उसने माँ-बाप द्वारा चुने गये वर का विरोध किया और एक नवयुवक सैनिक अफसर के साथ भाग खड़ी हुई। जब गृह-युद्ध छिड़ा, तो उसके पति ने अमरीकी सेना से त्याग-पत्र दे दिया और विद्रोही सेना में सम्मिलित हो गया।

मैडम वेलाक्वेज के तीन बालक हुए थे; परंतु जीवित एक भी न बचा था। इसलिए शोकाकुल वेलाक्वेज ने युद्ध में अपने पति का अनुसरण करने का निर्णय कर लिया; किंतु जब पति ने उसे अपने साथ रखने से मना कर दिया, तो अपना उद्देश्य अकेले ही पूर्ण करने के लिए वह 'न्यू ओर्लियन्स' के लिए चल पड़ी।

अपने संस्मरणों में मैडम वेलाक्वेज ने लिखा है–"जैसे ही मैं न्यू ओर्लियन्स पहुँची, बैरक स्ट्रीट में एक सैनिक दर्जी से आधे दर्जन तार के बुने कवच बनवाये। उन्हें पहन कर मैं अपनी असलियत को छिपाने में काफी सफल हुई। मैं पूरी तरह पुरुष-जैसी दीखने लगी।"

मैडम वेलाक्वेज नकली मूँछ और बकरेनुमा शाही दाढ़ी का उपयोग करती थी। छद्मवेश धारण करने के पश्चात् वह हाल ही में परिचित हुए एक व्यक्ति के घर गयी। वहाँ मट्ठा पीने के बाद उसे लगा कि, रहस्य का उद्घाटन जैसे होना ही चाहता है। वह भाग खड़ी हुई। बाद में, उसका भय निर्मूल सिद्ध हुआ; क्योंकि उसकी दाढ़ी और मूँछें अल्कोहल की सहायता से भी अलग न होती थीं।

उसने छद्मवेश इतनी अच्छी तरह धारण किया था कि, उसका पति भी उसे न पहचान सका। वह उस दल को, जिसमें वह सम्मिलित हुई थी, शिक्षा देता रहा।

वेलाक्वेज की असलियत शिलो के युद्ध में लगे एक घाव के कारण खुल गयी।

प्रश्न उठता है कि, इन स्त्रियों को साहसिक जीवन बिताने की प्रेरणा कहाँ से मिली? यदि उनसे कारण पूछा जाता, तो उनका उत्तर होता कि, वे खुली हवा में साँस लेना और साहसपूर्ण कार्य करना चाहती थीं। मडम वेलाक्वेज ने अपने बचपन के बारे में लिखा था– 'मैं चाहती थी, मैं पुरुष होती, बिलकुल कोलम्बस या कप्तान कुक के समान... मैं नयी दुनिया को खोजती या पृथ्वी के अनजाने प्रदेशों का पता लगाती!"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो शब्द गरमी के बारे में

गर्मी के मौसम को सहज सुख-भाव से बिताने की दिशा में आधुनिक विज्ञान के कुछ सुझाव-प्रस्ताव

*

आपका घर भले ही 'एयरकंडीशंड' न हो; पर शरीर अवश्य 'एयर-कंडीशंड' है। आपके भीतर शीत-ताप-नियंत्रक यंत्र चौबीसों घंटे काम कर रहा है। तभी तो, जुलाई के महीने में जब आप गर्मी से परेशान होकर पंखे और शीतल छाया की शरण लेते हैं एवं जनवरी में ठंड से बचने के लिए उष्णता की खोज करते हैं; तब भी—इन दो बिल्कुल विपरीत परिस्थितियों में भी—आपके शरीर का तापमान शायद ही अपनी औसत अवस्थिति ९८.६ डिग्री से अधिक इधर-उधर होता है। यों हर व्यक्ति का तापमान अलग-अलग—९७ से ९९ डिग्री तक—होता है; पर ऐसा कहीं नहीं होता कि, किसी व्यक्ति के शरीर का तापमान जाड़े में तो ९७ डिग्री रहे और गर्मी में बढ़कर ११०-१५ डिग्री हो जाये।

यह शीत-ताप-नियंत्रक यंत्र हमारे मस्तिष्क में है, कान के पास। इस छोटे-से यंत्र का नाम 'हाइपोथेलेमस' है और यह खून की गर्मी में आधी डिग्री की वृद्धि को भी बड़ी आसानी से अनुभव कर लेता है। ऐसा होने पर शरीर के उष्ण आंतरिक हिस्सों से खून ऊपरी हिस्सों में स्थित नाड़ियों में भेजा जाता है। ये नाड़ियाँ शरीर के इर्द-गिर्द की हवा की गर्मी से प्रभावित होती हैं। खून को इन नाड़ियों में भेजते समय 'हाइपोथेलेमस' समस्त आंतरिक अंगों में स्थित खून का संचालन करनेवाली छोटी-छोटी नाड़ियों को बंद कर देता है; पर त्वचा में जो खून का संचालन करनेवाली अनगिनत नाड़ियाँ हैं, उनको खुला रखता है। इन बाहरी नाड़ियों में आकर खून अपनी गर्मी का परित्याग करता है और काफी ठंडा होने के बाद हृदय-प्रदेश में लौट जाता है।

उष्णता को शीतलता प्रदान करने की यह मानवीय प्रणाली मोटर-कार में व्यवहृत प्रणाली की तरह ही है। कार में लगे 'मोटर' की गर्मी को पानी ग्रहण करता है और एक नली के सहारे, जो कुछ दूर जाकर खुल जाती है और बाहरी हवा से सम्पर्क स्थापित करती है, उसे ठंडा करता है। शरीर में खून पानी का काम करता है और उसका संचालन करनेवाली नाड़ियाँ कार में लगी लोहे की नली का।

शरीर की उष्णता को कम करने का एक दूसरा तरीका भी 'हाइपोथेलेमस' काम में लाता है। यह तरीका पसीने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्बंधित है। पसीने का स्राव एक प्रकार की ग्रंथियों से होता है, जो गेंडुरी-रूपिणी नली की तरह होती हैं। इन ग्रंथियों का एक छोर त्वचा पर खुलता है और दूसरा रक्तवाहिनी नाड़ियों से सम्बंधित है। पसीने के आवश्यक तत्व ये छोटी-छोटी ग्रंथियाँ रक्त से ग्रहण करती हैं और उन्हें पसीने के रूप में शरीर से निष्कासित करती हैं। पसीना निकल कर सूख जाने से त्वचा और अंतः-प्रदेश में स्थित रक्त, दोनों को शीतलता मिलती है। 'हाइपोथेलेमस' के आदेश पर ये ग्रंथियाँ एक घंटे में एक गैलन तक पसीना बहा सकती हैं। पसीने की यह क्रिया इतनी प्रभावकारी है कि, यदि हवा में खुश्की रहे और मनुष्य पर्याप्त पानी पीता जाये, तो वह २४० से २६० डिग्री तक की गर्मी बर्दाश्त कर ले।

अनुसंधानों ने यह साबित कर दिया है कि, ताप में आर्द्रता रहने से मनुष्य निष्क्रिय हो जाता है। एक बार, जबकि हवा का तापमान ९० डिग्री था और उसमें काफी आर्द्रता थी, कुछ सैनिकों पर यह परीक्षण किया गया, तो उनके शरीर से घंटे में एक-सवा गैलन के परिमाण में पसीना निकला और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी कि, यदि वे काम करते या 'मार्च' करते, तो मर ही जाते। उनका आंतरिक तापमान बेहद बढ़ गया था। इन परीक्षणों के फलस्वरूप यह निष्कर्ष निकला कि, मनुष्य बहुत गर्म आबहवा में भी काम कर सकता है; लेकिन हवा के साथ आर्द्रता का संयोग इसमें बाधक है। इस अवस्था में शरीर हवा से गर्मी तो ग्रहण कर लेता है; पर पसीना सूखता नहीं, जिसके कारण त्वचा शीतल नहीं हो पाती।

पसीना बहना कोई मामूली प्रक्रिया नहीं है। इसके कारण शरीर के अंदर स्थित जल और नमक के भांडार का अकथनीय क्षय होता है। अतः इन भांडारों को खाली न होने देने की व्यवस्था मनुष्य के लिए आवश्यक है। यह समझना कि, पसीने के रूप में केवल हमारे जल के कोश का ही क्षय होता है और केवल

ग्रीष्म

[चित्र : कांगड़ा-शैली के एक चित्र की बर्गे-निर्मित रेखानुकृति]

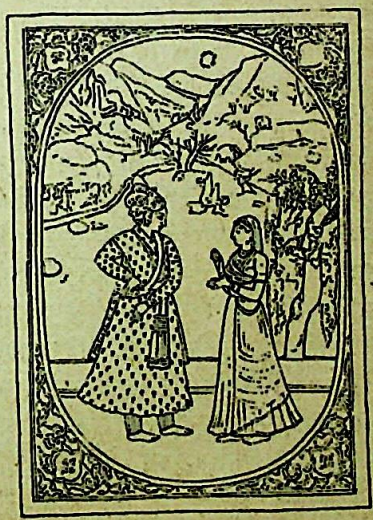

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी पीते रहने से काम चल जायेगा, गलत है। पसीना शरीर के अंदर स्थित नमकीन तत्वों को भी बहाकर बाहर ले आता है। इन दोनों पदार्थों का कितना बड़ा परिमाण पसीने के रूप में नष्ट होता है, इसका अनुमान केवल इस बात से ही लग जाता है कि, यदि समय रहते इनकी पूर्ति मनुष्य न करे, तो वह बहुत दुर्बल हो जाये और बहुत सम्भव है कि, प्राण भी गँवा बैठे। नमकीन पानी (आधे सेर पानी में एक चाय के चम्मच के बराबर नमक दिया हुआ) पीने, नमक की डली खाने और पर्याप्त परिमाण में नमक-मिश्रित भोजन करने से इस संकट को टाला जा सकता है।

भारत और गर्म जलवायुवाले दूसरे देशों में प्रति वर्ष अनेक लोग 'लू' लगने के कारण बीमार पड़ते और मर जाते हैं। 'लू' लगने पर मनुष्य के सिर में दर्द होने लगता है, चक्कर आते हैं, वमन होता है और मुँह तथा त्वचा सूख जाती है। शरीर का तापमान बढ़ कर १०८ से ११० डिग्री तक हो जाता है और शीघ्र ही बेहोशी आ जाती ह। निश्चय ही, यह स्थिति गर्मी बर्दाश्त न कर सकने के कारण पैदा होती है। 'लू' के शिकार अधिकांशतः प्रौढ़, शराबी, रोगी और धूप के अनभ्यस्त लोग होते हैं। पर तीखी धूप के प्रत्यक्ष सम्पर्क में न आने पर भी 'लू' लगने की सम्भावना रहती ही है। अतः गर्मी के दिनों में प्राण बचाना अपने यहाँ एक समस्या-सी बन जाती है।

लेकिन दरअसल, गर्मी के दिनों में शरीर का तापमान ठीक रखना कठिन नहीं है, जबकि 'एयरकंडीशन'-यंत्र आपके अंदर ही अवस्थित है। सिर्फ इस बात की जरूरत है कि, आप उस यंत्र की दो अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहें। वे दो आवश्यकताएँ हैं, जल और नमक। पसीना बहना ताप को कम करता है, यह सही है; पर यदि आप केवल पसीना बहने देंगे और उसके लिए आगे का कोश तैयार नहीं रखेंगे, तो आपका जीवन खतरे में पड़ जायेगा। अतः जितना भी हो सके, पानी पीजिये। यह निश्चय मानिये कि, यदि आप अधिक पानी पी भी लेंगे, तो वह नुक्सान नहीं पहुँचायेगा। दूसरी बात, पर्याप्त नमक खाइये; अर्थात् दिन-भर में कम-से-कम दो चाय के चम्मच के बराबर नमक तो आपको खाना ही चाहिए। यह समझना गलत है कि, गर्मी के मौसम में भोजन में परिवर्तन आवश्यक है। दूसरे मौसमों का ही भोजन इस मौसम में भी ग्राह्य है; पर भोजन की मात्रा कुछ कम कर देना अच्छा रहता है।

गर्मी के मौसम में वस्त्र पर भी ध्यान दिया जाना अपेक्षित है। इस मौसम में हल्के रंग के कपड़े पहनना अच्छा होता है—सफेद कपड़े तो बिलकुल ही उपयुक्त नहीं होते। और फिर, कपड़ों की मात्रा भी यथासाध्य कम होनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महत्वपूर्ण कारण कि

आप

भी उन लाखों लोगों के साथ फोरहन्स टूथपस्ट क्यों इस्तेमाल करें

१ आपके मसूढ़े : फोरहन्स आपको मसूढ़ों की बीमारियों से होनेवाले नुकसान से बचायेगी। सूनी, नर्म, जलनेवाले व कमजोर मसूढ़ों पर यह टूथपेस्ट धीरे-धीरे मलिये। वे जल्द ही पहले जैसे मजबूत व स्वस्थ हो जायेंगे। फोरहन्स ही एकमात्र ऐसी टूथपेस्ट है जिसमें डा. आर. जे. फोरहन्स की पायोरियानाशक खास पौष्टिक दवा मौजूद है।

२ आपका स्वास्थ्य : क्या आप महसूस करते हैं कि मसूढ़ों की बीमारियों का आम स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है? और यदि वहां पीप पड़ जाये तो वे फट जायेंगे व रक्तप्रवाह दूषित हो जायगा? खतरा मत मोल लीजिये – फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कर अपने मसूढ़ों को इन खौफनाक बीमारियों से बचाये रखिये व अपने स्वास्थ्य को भी संभाले रहिये।

३ आप की सांस : बदबूदार सांस के कारण अपने मित्रों को मत खोइये। फोरहन्स टूथपेस्ट लगाने से आपका मुंह बिल्कुल स्वच्छ हो जाता है–मुंह से बदबू भी नहीं आती। यह न भूलिए कि सचमुच के साफ सांस के लिए जीभ व तालु का स्वच्छ रहना भी जरूरी है। थोड़ी-सी फोरहन्स अपनी जीभ पर रखिये व ब्रश या उंगली से उसे हल्के-हल्के साफ कीजिए, फोरहन्स टूथपेस्ट दान्तों में फंसे हुए भोजन के सारे कणों व रोगाणुओं को फौरन हटा देगी।

४ आपकी मुस्कान : स्वस्थ, मजबूत व चमकदार दान्त हजार नियामत हैं। फोरहन्स टूथपेस्ट से आपके दान्त मजबूत व स्वस्थ रहते हैं क्योंकि इसमें मौजूद विशेष औषधि रोगाणुओं का नाश करती है व दान्तों को गलने नहीं देती। फोरहन्स टूथपेस्ट इतनी नर्म है जैसे कि मलाई जो दान्तों के रंग को खराब किये बिना उन्हें प्राकृतिक रूप में चमकाती है।

फोरहन्स
टूथपेस्ट

दन्तचिकित्सक द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

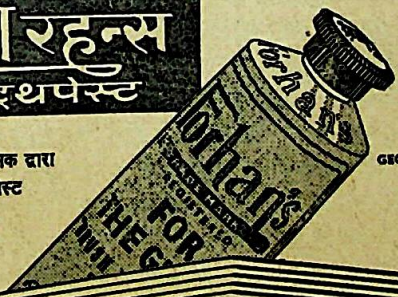

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

H-112

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छत्र छाया

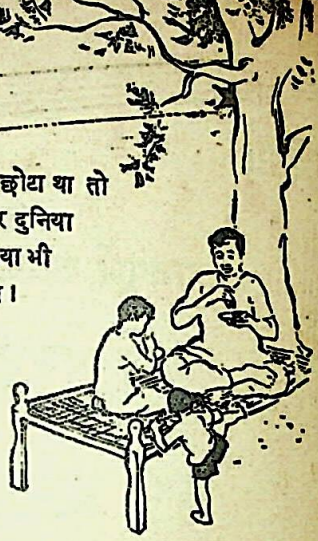

हमारे छोटे से आंगन में नीम का पेड़ है। यह पेड़ छोटा था तो सर्दियों में आंगन में बैठ कर हम धूप का मजा लेते और दुनिया भर की चर्चा करते। हमारे आंगन की तरह हमारी दुनिया भी छोटी सी है—बस आस पास के तीन चार गली मुहल्ले। परन्तु अब यह नीम इतना बड़ा हो गया है कि सारे आंगन पर छत्री लगाए खड़ा है। धूप पत्तों से छन कर भी नहीं आ सकती। अब या तो हम अपना आंगन बड़ा करें या फिर इसे काट डालें। अब यह हत्या तो हम से होती नहीं। हमारी आंखों के सामने यह फला फूला, बड़ा हुआ और बड़े काम भी आया। पड़ोसन के बेटे को जब कुत्ते ने काटा था तो इसी नीम का पानी उबाल उबाल कर उस के घाव धोए गए। मेरी ननद बच्चों को ले कर जब हमारे घर आई तो मारे फोड़े फुंसियों के उस के छोटे बच्चे का मुंह ऐसे था जैसे भिड़ों का छत्ता! इसी नीम के पत्तों का रस उसे भी पिलाया। रोज रस पीता और थू थू करने लगता, चीखता चिल्लाता, मगर जब तक ननद अपने आदमी के पास गई, बच्चे के चहरे पर फोड़े फुंसियों का नाम निशान न था।

अब आप ही बताइये! नीम का यह पेड़ काटने के लिये जी कहां से लाएं? और उन्हों ने तो इस का नाम भी रख दिया है। दुकान से आते ही कहते हैं—"हमारा हुक्का ताजा कर के ले आना छत्र छाया के नीचे।" वह बैठे हुक्का पीते हैं और मैं रोटी पकाती हूँ। हमारा तन्दूर भी तो आंगन ही में है। उन्हें तन्दूर की रोटी बड़ी अच्छी लगती है—साथ बैंगन का भुरता हो या साबत माश या फिर सरसों का साग, आंगन ही में बैठ कर गर्म गर्म रोटी हाथ पर रख कर खाने लगते हैं। लाख कहती हूँ—'घर में क्या थालियां कटोरियां नहीं?' पर उन्हें तो ऐसे ही मजा आता है। देखा देखी बच्चे भी ऐसे ही करने लगे हैं। बड़े लड़के को छोड़ बाकी सब हाथ ही पर रख के खाना पसन्द करते हैं। कोशिश एक बार उस ने भी की, मगर हाथ जला तो लगा नाचने—रोटी ज़मीन पर जा गिरी। अब बहस शुरू हुई रोटी कौवे को खिलायें या कुत्ते को? कुत्ता तो हर गली में होता ही है। जरा सा पुकारो तो दुम हिलाता चला आता है। आधी रोटी उसे दी तो झट हड़प कर के सब के मुंह की ओर देखने लगा जैसे कह रहा हो—घर बुला के निरादर करते हो? बुलाया है तो पेट भर खिलाओ—बाक़ी की आधी रोटी भी उसी के माथे मारी और दरवाजा बन्द कर दिया। इस का पेट भरने को तो कुनबे भर की रोटियां चाहियें। आप कहेंगे सावित्री बड़े छोटे दिल की औरत है मगर मँहगाई के इन दिनों में कोई करे भी क्या? और पचासों खर्चे हैं—बच्चों की पढ़ाई, लड़कियों का ब्याह और फिर दुकान की आधी कमाई तो हर महीने रोटी पर ही चली जाती है। खाने के बारे में वे इतने सावधान हैं कि दुकान पर आने वाले किसी ग्राहक या मित्र का

DL. 441A-X29 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुरझाया हुआ चेहरा देख लें, तो उसे फ़ौरन समझाते हैं कि यह सब सन्तुलित आहार न होने के कारण है। खाना हमेशा अच्छा खाओ। यह क्या कि आदमी कभी दाल और कभी सब्जी पर ही गुजारा करे। न मजा आये न ताक़त मिले। अब मैं अंगरेजी लिखी पढ़ी तो हूँ नहीं पर बुध्धू भी नहीं हूँ। जब वे समझाते हैं कि किस खोराक में कौन सी ताक़त है और उस का खाना हमारे लिये क्यों जरूरी है, झट उन्ही से कागज पर लिखवा लेती हूँ और फिर पैसों का हिसाब कर के उतनी ही ताक़त की सस्ती चीज ले आती हूँ। फल हमारी तन्दुरुस्ती के लिये बहुत जरूरी है, लेकिन अगर नारंगियां मँहगी हुईं तो आंवला खरीद लिया। एक आंवले में दो नारंगियों जितनी ताक़त है।

या फिर दालें फुटा कर कच्ची खा लीं, उन में भी फलों जितनी ताक़त मिल जाती है। मांस, मछली और अण्डे तो हम लोग खाते नहीं— उन की कमी को पूरा करने लिये दूध पी लेते हैं। गर्मियों में दूध अच्छा नहीं लगता तो दही जमा कर लस्सी पी लेते हैं। मतलब यह कि हम दिन में कई सब्जियाँ दाल रोटी वग़ैरा खाते है। साथ में कच्चे प्याज, मूली, गाजर और टिमाटर भी खाते हैं। कच्ची सब्जियाँ खाना भी बहुत जरूरी है। आप कहेंगे, घर में दस सेर से कम घी क्या आता होगा? पकाना, भूनना, तलना, छौंकना—हलवा और मिठाई भी बनती है। लेकिन हमारे घर अब कई बरसों से डालडा वनस्पति ही आता है—जब पहली बार वह 'डालडा' ले कर आप तो मैं बिगड़ी —"क्या घर को अस्पताल बनाना है?" वे कहने लगे—"बीमारियाँ उन को होती हैं, जो सोच समझ कर नहीं खाते—या तो एक ही खाने पर जोर देते हैं या फिर बहुत खाते है। वह लोग घी खायें या डालडा वनस्पति, नुक़सान तो होगा। और फिर दोष देते हैं 'डालडा' को।" गुस्सा दबाते हुए मैं बोली: "अच्छा, एक डिब्बा इस्तेमाल कर के देखती हूँ"—वह दिन गया और यह दिन आ गया, मैं सभी खाने 'डालडा' से ही बनाती हूँ। "डालडा' साफ़ और ताजा है, मुहरबन्द डिब्बों में आता है। देखने में अच्छा है और खाने में शक्तिदायक। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी। 'बाहर खजूर के पेड़ का निशान क्यों बना दिया? खजूर से तो बनता नहीं!' उन्हों ने सुना तो हुक्के की नली छोड़ हंसने लगे—"अरे भई! निशान तो पहचान के लिये होता है। इस नीम के पेड़ को ही ले लो। इस का नाम हम ने छत्र छाया रखा है—पर क्या यह सचमुच छत्र छाया है?" मैं झट बोली—"और नहीं तो क्या?" उन्हों ने ऊपर देखा और बोले—"हाँ! मिसाल ग़लत दे दी हम ने। देखो, जैसे तुम्हारा नाम है सावित्री, और हम तुम से प्यार करते हैं—" मुझे तो जैसे आग लग गई—बिगड़ के बोली, "और अगर मैं अपना नाम सावित्री के बजाए कुछ और रख लूँ फिर?"

"फिर हम दूसरी शादी कर लेंगे—लेकिन तुम्हीं से।"—मुझे तो शर्म आने लगी। फिर हौले से बोले—"अरी पगली नामों में क्या धरा है!"

DL. 441B-X29 III

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप का रंग-रूप

उतना ही आवश्यक है जितना कि चित्र तारिकाओं का!

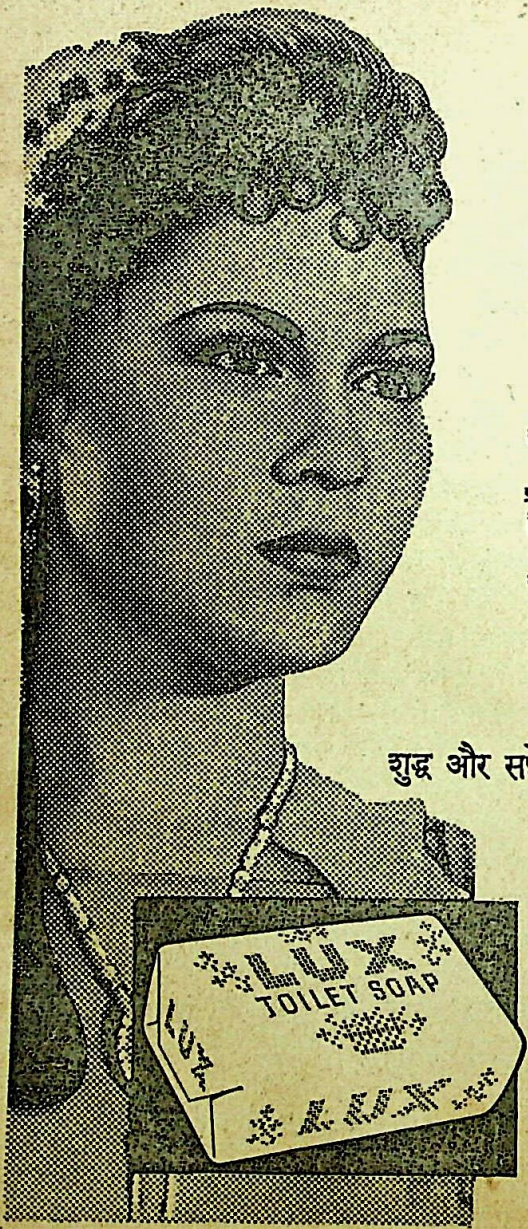

तारिकाओं का काम उन से अधिक मुलायम और दोषरहित जिल्द की मांग करता है, परन्तु आप के लिये भी अपने रंग-रूप की देख भाल उतनी ही ज़रूरी है। सुन्दरी निरूपा राय के कहने पर चलिए। वे कहती हैं—"अपने रंग-रूप की देख भाल करने के लिये मेरी पहली पसंद लक्स टॉयलेट साबुन है"।

आप भी नहाने या मुंह हाथ धोने के लिये एक बार यह शुद्ध और सफ़ेद साबुन इस्तेमाल कीजिये। आप की जिल्द में ऐसी नवीनता और चमक पैदा हो जायेगी जिसे न सिर्फ़ लोग ही प्रशंसा की नज़र से देखेंगे, बल्कि आप ख़ुद भी महसूस करेंगी। इस का प्रभावशाली झाग आप की जिल्द को निर्मल रखता है और इस की सुगन्ध आप के हर स्नान को आनंदमय बनाती है। आप भी दुनिया भर की चित्र-तारिकाओं की तरह रहिये और हर रोज़ अपने रंग-रूप की देख भाल लक्स से कीजिये।

शुद्ध और सफ़ेद **लक्स टॉयलेट साबुन**

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

निरूपा राय—मुक्ति फ़िल्मस के चित्र "सम्राट चंद्रगुप्त" की सुन्दर तारिका।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

LTS. 561-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूंद-बूंद का ज्ञान

★

समुद्र खारा क्यों है?

आकाश की गोद छोड़ कर धरती की गोद में आनेवाला पानी कभी तो उसके भीतर समा जाता है और कभी उछलता-कूदता वहीं बहने लगता है। धरती की गोद में समाया पानी भी बहुधा सोतों के रूप में बाहर निकल आता है। यह पानी पहाड़ों-पत्थरों से गुजरता, झरनों और नदियों में मिल कर अपना रास्ता बनाता है। इन पथरीली चट्टानों और स्वयं धरती में कुछ नमक का अंश रहता है। बरसात का पानी यह नमक ग्रहण कर लेता है। यह पानी जब नदियों से मिलता है, तो नमक का यह अंश उनमें घुल जाता है और नदियों के जरिये समुद्र तक पहुँच जाता है। समुद्र में इस तरह पहुँचनेवाला नमक यद्यपि बहुत कम होता है; किंतु एक बार जब वहाँ पहुँच जाता है, तो फिर वह बाहर नहीं निकलता। किसी नमक मिले पानी को अगर उबाल कर आप सुखाइये, तो पानी वाष्प बन कर हवा में विलीन हो जायेगा; पर नमक वहीं रह जायेगा। समुद्र भी सदा हवा में अपने जल-वाष्प भेजता है और वे वर्षा का रूप धारण कर, नदियों के जरिये फिर उससे आ मिलते हैं। फलतः समुद्र का भांडार ज्यों-का-त्यों रहता है। नदियाँ सदियों से इसी प्रकार थोड़ा-थोड़ा नमक अपने साथ लाकर समुद्र को सौंपती रही हैं और लाखों-करोड़ों वर्षों से इस प्रकार नमक जमा होने के कारण ही, आज सारे समुद्र का पानी खारा है!

★

मधुमक्खी भनभनाती क्यों है

मधुमक्खी के परों की बनावट ऐसी होती है कि, जब वह उड़ती है, तो उनसे एक प्रकार की आवाज निकलती है। यह आवाज हवा में लहरें पैदा करती है और ये लहरें ही 'भन-भन' के रूप में हमारे कानों से टकराती हैं।

दूसरे पक्षी भी उड़ते हैं; किंतु उनके पंखों का संचालन, मधुमक्खी के पंखों के संचालन की तुलना में, बड़ा धीमा होता है। मधुमक्खी प्रति सेकंड औसतन ४०० बार अपने परों को आगे-पीछे करती है। कभी-कभी एक मिनट में यह संख्या २६ हजार तक पहुँच जाती है। इस क्रिया से जो आवाज होती है, यदि उसे दो हजार गुना परिवर्द्धित कर दें, तो वह ठीक वसी ही लगेगी, जैसी कि हवाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाज के पंखों की आवाज होती है!

★

बादल गरजता क्यों है

तापमान जब बढ़ता है, तो हवा फैलती है, हल्की हो जाती है और परिणामस्वरूप ऊपर उठती है। तापमान जब कम हो जाता है, तो हवा सिकुड़ जाती है और नीचे की ओर बहने लगती है। साथ ही, अगर हवा का संयोग पानी के भाप से हो जाता है, तो अन्य परिवर्तन भी दिखलायी देते हैं। सर्द हवा की तुलना में गर्म हवा, वाष्प के रूप में, अधिक जल का संचय कर सकती है। तापमान के कम होने का अर्थ है कि, जल-वाष्प बूंदों का रूप लेने की स्थिति में आ गये हैं!

भाफवाली ये गर्म हवाएँ ऊपरी तापमान में पहुँचते ही तेजी से पिघलने लगती हैं। पानी की इन बूंदों में हमेशा विद्युत् संचारित रहती है, जिससे उनके आसपास की हवा भी विद्युत् से भर जाती है। पानी की बूंदें हवा से भारी होती हैं; अतः उनमें प्रवाहित विद्युत्-धारा नीचे की ओर बढ़ती है तथा हवा में प्रवाहित विद्युत्-धारा ऊपर की ओर। इस संघर्ष में कुछ विद्युत्-धाराएँ साथ छोड़ देती हैं। इसी को हम 'बिजली गिरना' कहते हैं।

इससे जो आवाज होती है और खाली स्थान को भरने के लिए जो हवा दौड़ती है, उसकी आवाज आपस में टकरा कर वायुमंडल में फैल जाती है। यही ध्वनि बादलों से टकरा कर प्रतिध्वनि के रूप में जब सुनायी पड़ती है, तो हमें लगता है, बादल गरज रहा है!

★

अँधेरे में हम क्यों नहीं देख पाते

अंधेरे में हम नहीं देख पाते हैं; क्योंकि देखने के लिए आँखों को प्रकाश मिलना जरूरी होता है। हम अपने आसपास जितनी चीजें देखते हैं, वे सब प्रकाश के कारण हमें दिखायी पड़ती हैं– सूर्य से अथवा किसी कृत्रिम प्रकाश से प्रतिबिम्बित होने के कारण! अंधेरे का अर्थ होता है, प्रकाश का अभाव। अतः अंधेरे में चीजों अथवा व्यक्तियों को प्रतिबिम्बित करने के लिए प्रकाश नहीं होता। इसी कारण हम अंधेरे में नहीं देख पाते।

बिल्लियों और उल्लुओं के बारे में कहा जाता है कि, वे अंधेरे में भलीभाँति देख सकते हैं। कुछ हद तक यह सही है। हमारी तुलना में वे अंधेरे में निश्चय ही अच्छी तरह देख सकते हैं; पर घोर अंधकार में उनकी आँखें भी काम नहीं करतीं। जहाँ अधिक अंधेरा नहीं हो, वहीं वे अच्छी तरह देख पाते हैं और इसका कारण है, उनकी आँखों की बनावट! उनकी आँखों की पुतली हमारी आँखों की पुतली की तुलना में अधिक फैल सकती है और स्वभावतः ही अधिक प्रकाश भी प्राप्त कर सकती है। इसीलिए अंधकार में भी उनकी दृष्टि काम करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो बातें.....मेरी अपनी

भारतीय फिल्म-क्षेत्र में कला-साधना के नये शिखरों का निर्माण करनेवाली अभिनेत्री नरगिस को इस वर्ष राष्ट्रपति ने 'पद्मश्री' की मान्यता से विभूषित किया है। कला की अनुभूत्यात्मक परिधि में पहुँच कर फिल्म-अभिनय भी लोकोत्तर आनंद का स्रोत बन जाता है, देश-विदेश के फिल्म-कलाकारों ने इसे अपनी साधना से प्रमाणित कर दिया है। यहाँ हम अभिनेत्री नरगिस के कुछ प्रासंगिक विचारों को उन्हीं की जबानी प्रकाशित कर रहे हैं।

★

२५ जनवरी, १९५८ की संध्या को, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के सचिव का तार पाकर कि, मुझे 'पद्मश्री' की उपाधि प्रदान की गयी है, अचानक ही मुझे विद्यालय-जीवन की एक घटना याद हो आयी। सात वर्ष की आयु में मेरे पापाजी ने मुझे बम्बई के 'क्वीन मेरी बालिका-विद्यालय' में भरती करा दिया था। दो वर्ष पूर्व, मैंने अपनी मम्मी के एक चलचित्र 'तलाश-ए-हक' में एक छोटी-सी भूमिका की थी। भूमिका करते समय मेरे बाल-हृदय ने यह न सोचा था कि, चलचित्र की भावभूमि मेरे जीवन के मूल मंतव्यों की माताभूमि बन जायेगी! उस संध्या को जब गत जीवन की सारी परछाईं पर फिर नजर पड़ी, तो लगा कि, हाफिज ने ठीक ही कहा था—"...और, एक दिन जब तुम अपनी उस परछाईं को देखोगे, जो जिंदगी की धूप ने वक्त की छाती पर बनायी है, तो अचरज नहीं कि, तुम खुद अपने ही साये से डर जाओ—उससे इन्कार करने लग जाओ कि, यह जो दीख रहा है, यह मेरा सोचा नहीं है, मेरे सोये में किसी ने मुझे उठा कर मिट्टी में बैठा दिया है।" बचपन से ही चलचित्र के प्रति मेरे आकर्षण में स्पर्श तक नहीं था। भावी जीवन के प्रति उस समय जो मनसूबे उठते थे, उनमें डाक्टर बनने का स्वर्ण-स्वप्न ही मेरी कल्पना-परिधि में इंद्रधनुष की भाँति छाया रहता था। डाक्टर बन कर समाज-सेवा का व्रत निभाया जा सकता था। किसी दुःखी का दुःख दूर करके जो आनंदानुभूति होती है, उसे तो

नरगिस

[चित्र : खिलजी]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकते हैं। मगर आदमी जो बयान दे, वही लिया जाये, यह तो होता नहीं है– नियति तो छल की इबारत ही लिखेगी। दूसरों की तरह, मुझे भी उसने नहीं बख्शा।

परंतु तब अभिनेत्री नरगिस को 'पद्मश्री' की उपाधि कैसे मिलती? हाँ, शायद यह हो सकता था कि, फातिमा रशीद के कुशल डाक्टर बनने और उसकी सेवाओं से संतुष्ट होने पर सरकार उसे कोई उपाधि प्रदान कर देती।

माताजी की भी यही इच्छा थी कि, मैं अभिनेत्री न बनूँ। इसीलिए फिर उन्होंने मुझे स्टूडियो के वातावरण से अलग रखा। धीरे-धीरे मैं उस छोटी-सी भूमिका को भूल गयी। पढ़ने-लिखने और खेलने-कूदने में मेरा सारा समय बीतने लगा और मैंने सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा पास कर ली।

मगर परिवर्तन तो अपना खप्पर लेकर उम्र के दरवाजे पर खड़ा रहता है, जहाँ आदमी निकले और वह अपना चाहा माँग ले। एक दिन निर्माता-निर्देशक महबूब मुझे अपने साथ स्टूडियो ले गये। स्टूडियो में उन्होंने मेरी स्क्रीन-परीक्षा ली। स्क्रीन-परीक्षा का परिणाम आया, तो उन्होंने मुझे अपने चलचित्र 'तकदीर' की हीरोइन घोषित कर दिया। और, फिर मैं अभिनेत्री के रूप में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती चली गयी– थकने या रुकने का कोई प्रश्न ही न था।

इस प्रसंग में एक और घटना मुझे याद आती है। विद्यालय के नाटक-विभाग की अध्यक्षा ने मुझसे कहा था– "तुम अभिनय करना नहीं जानतीं। तुम कभी भी अभिनेत्री नहीं बन सकतीं।"

विद्यालय में एक नाटक खेला गया था– 'एलिस इन वंडरलैंड।' मुझे उसमें 'पान के गुलाम' की भूमिका दी गयी थी। इससे पहले मैंने किसी नाटक में भाग नहीं लिया था; या यों कहिये कि, मिला ही न था। रिहर्सल के समय जब मैं 'पान की बेगम' के साथ उसका ताज सम्भाले सलाम करती आगे बढ़ी, तो सभी हँसते-हँसते लोटपोट हो गये। मैं विदूषक की भूमिका में खरी उतरी थी। परंतु

अभिनय क्या

अभिनय का मतलब है, अपनी मृत्यु और अपने भीतर पराये का पुनर्जन्म– याने असल को मार डाल और नकल को साँच। फिल्म का अभिनय तो और भी मुश्किल है–यहाँ तो प्रत्यक्ष के बजाय छाया में ही आदमी को आदमी के भीतर उतारना होता है। मैंने स्टेज का भी अनुभव लिया है और फिल्म का भी; मगर जितनी एकाग्रता का तकाजा फिल्म-कलाकार के सामने होता है, उतना मंच के कलाकार के सामने नहीं। –ग्रेटा गार्बो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदर्शन के दिन, जब मैं 'पान की बेगम' के पीछे चली, तो अचानक ही ठोकर खाकर गिर पड़ी और इससे पूर्व कि, मैं सम्भल कर खड़ी हो जाऊँ, मेरे हाथों से ताज छूट कर एक दर्शक की गोद में जा गिरा। फलस्वरूप अध्यापिका ने मुझे अभिनय के अयोग्य घोषित कर दिया।

नाटक के इस रूप में बिगड़ने से क्रुद्ध हुई अध्यापिका ने मेरे बारे में उपर्युक्त निर्णय दिया था। मगर जिस बात के लिए उन्होंने 'नहीं' कहा था, वह 'नहीं' उनके और मेरे, दोनों के लिए, सदैव के लिए, ऐसा 'हाँ' बन कर रह गया कि, जिंदगी को देखने की मेरी दृष्टि ही दूसरी हो गयी। मुझे विश्वास हो गया कि, आदमी नियति के हाथों में मात्र कठपुतली है।

कोई खींचे लिये जाता है
खुद जेबो-गरेबां को।

३१ दिसम्बर, १९४३ को बम्बई के छविगृह राक्सी में 'तकदीर' का प्रदर्शन हुआ था। फ्राक पहने शरमाती-सी फातिमा रशीद उसे देखने के लिए गयी; लेकिन जब ढाई घंटे के बाद हाल के बाहर निकली, तो उसका रूप-नाम बदल चुका था। उसको नरगिस का चोला पहना दिया गया था।

कला के बारे में अक्सर मुझसे कई सवाल पूछे जाते हैं और कई बार मैं दुविधा में भी पड़ जाती हूँ कि, मैं इन सवालों का जवाब कैसे दूँ? कला के बारे में मेरी थाह ही कितनी है? समुद्र की गहराई माप ली जा सकती है, आसमान के रहस्यों को इंसान की बुद्धि छू सकती है...मगर कला की गंगा में गोता लगाने के बाद क्या इंसान को कुछ कहने का जी होता है! मैंने खुद ऐसे सवाल दुनिया के अनुभवी कलाकारों से पूछे हैं; मगर प्रायः हिम्मत किसी की नहीं हुई कि, 'गूँगे के गुड़' की समस्या उनमें से कोई हल कर दे। ग्रेटा गार्बो से बड़ी कोई कलाकार मेरी धारणा में शायद ही आज तक हुई हो। कला के मँझधार में जितनी वह बूड़ी, शायद ही उतनी हिम्मत किसी ने कभी की होगी। मगर वह भी जो कह सकी, वह इतना ही—"माँ का स्तन पीनेवाला बच्चा क्या कभी माँ के ममत्व को नाप सका है?" मेरे खयाल में इससे ज्यादा अर्थमय शब्द कला और कलाकार के सम्बंध के बारे में कोई नहीं कह सका है।

होश किसी का भी न रख
जल्वागाहे-नियाज में,
बल्कि खुदा को भूल जा
सिज्दये-बेनियाज में।

कला को मैं पूजा और बलिदान का माध्यम मानती हूँ। अपने व्यक्तित्व की डाल पर खिले हर बेहतरीन फूल को देवता के अर्पण करने होते हैं। कला की यह शर्त है, माँग है। मंदिर पहुँचे कि, 'इन्कार' शब्द आपके कोष से मिट गया—अपने का सारा मोह बाहर दरवाजे पर छोड़ आइये। पीछे भी नहीं देख सकते—यहाँ तो 'शीश उतारे भुइं धरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब घर पैठो माँहि' वाली हालत है। जरा-सा भी चूके कि; सब खो दिया— जन्म-भर की कमाई, दरिया में डुबायी। एक ध्यान से देखते रहिये— हर कदम पर नजर हो, हर इंच पर निगाह रखिये; क्योंकि यहाँ हर क्षण एक इम्तिहान है। चूके कि गये—

आँख झपकी कैस की
और सामने महमिल न था।

कला के साथ-साथ जीवन के बारे में भी ऐसे ही सवाल सैकड़ों की तादाद में हर महीने मेरे पास आते हैं। उनमें अधिकांश मेरे अपने निजी जीवन के बारे में आते हैं। मेरी जिंदगी के हर पहलू के बारे में लोग सवाल पूछते हैं। इसे मैं उनका प्रेम मानकर अपने को वाकई भाग्यवती मानती हूँ; मगर इन सवालों का जो उत्तर मैं देती हूँ, लगता है, उससे अक्सर पूछनेवालों को संतोष नहीं होता है और इसी कारण कई लोग मुझसे चिढ़ भी जाते हैं। मगर इसमें मेरा बस ही क्या? जिंदगी के बारे में मेरी अनुभूति ही कितनी! नदी के किनारे खड़े उस इंसान की दरअसल मान्यता ही कितनी कि, वह इस पार और उस पार के बीच में हमेशा चलती रहनेवाली —एक क्षण के लिए भी नहीं रुकनेवाली— नदी का राज बता सके; प्रवाह को देख-देख वह खुद भी इतना खोया हुआ— अचरज में डूबा हुआ— है कि, उसे औरों की तो बात जाने दीजिये, अपने तक की खबर नहीं!

खलील जिब्रान ने जिंदगी, मौत और परमेश्वर के बारे में अक्सर बड़े पते की बातें कही हैं; मगर उसे खुद अपने कहने पर भरोसा नहीं। वह अपने श्रोता को आगाह करता है—"...तो तुम इसे भी सच मत मान लो...और कल कहा, वह भी सच नहीं था। हवा में उड़नेवाला पक्षी भला कभी कहेगा क्या कि, हवा को वह जानता है— हवा क्यों चलती है, इसके रहस्य से वह परिचित है!" दरअसल, जिंदगी को कह सकना बहुत कठिन है। फिलासफरों ने जहाँ घुटने टेक दिये, वहाँ मेरी क्या बिसात! मगर फिर भी हर आदमी का अपना एक रुख होता है, देखने की एक नजर होती है। मौत और जिंदगी को मैंने भी कभी-कभी अपने विचारों की रेखाओं से खींचने की कोशिश की है— कुछ खाके मैंने भी इस किस्म के बनाये हैं—

"मौत एक गीत है, जिसे जिंदगी गाती है और गाते-गाते एक दिन वह चुक जाती है, खुद गीत बन कर रह जाती है। मौत जिंदगी की प्रतिध्वनि है। जिंदगी बोलती है तथा बोलते-बोलते खत्म हो जाती है और प्रतिध्वनि में अमर हो जाती है। मौत प्रकाश है, जिसे जिंदगी का दीपक जलाता है। दीपक मिटता जाता है और अंत में केवल प्रकाश ही रह जाता है।"

और, इससे भी अधिक निश्चयात्मक मैंने जिंदगी के बारे में लिखा था— अपने स्वयं के जीवन-प्रवाह को देखकर!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दिन मैंने लिखा था—

"जीवन एक किताब है, जिसके हर पन्ने पर हमारे भविष्य की तसवीरें बनी होती हैं और हर तसवीर के नीचे हमारे अगले कदम का आदेश रहता है। हम नहीं चलते, शतरंज की तरह से अपनी जगहों पर रहते हैं। हमें चलाता और कोई है— इस किताब की हर लाइन, हर तसवीर के मुताबिक।" क्योंकि मैंने देखा है कि, हम जो सोचते हैं, वह तो होता ही नहीं; मगर जैसा हम कर रहे होते हैं, वैसा भी नहीं होता— हमेशा होता कुछ और ही है। उमर खैयाम की इस अनुभूति के साथ मेरे मन के तार खूब मिलते हैं— "हमेशा चलती रहनेवाली वह उँगली लिखती है और लिख कर आगे चल देती है। तुम्हारी सारी श्रद्धा, तुम्हारी सारी बुद्धि इसे लौट आने और आधी पंक्ति भी काट देने के लिए रजामंद नहीं कर सकती... और न तुम्हारे आँसू ही इस इबारत के अक्षरों को धो सकते हैं!"

भारत-सरकार ने मुझे जो 'पद्मश्री' की उपाधि प्रदान की है, मेरी दृष्टि में वह मेरा सम्मान न होकर समस्त चलचित्र-जगत का सम्मान है और इस बात का प्रतीक है कि, अब सरकार भी इस उद्योग को महत्वपूर्ण मानती है और समझती है कि, भारत के सांस्कृतिक विकास में यह भी बहुत बड़ा पार्ट अदा कर सकता है।

इसके अलावा मैंने एक और नजर से सरकार के इस अनुग्रह को देखा है। इस मान्यता ने मानो मुझे एक दीपक दे दिया है, जिसने मुझे आलोकित अवश्य किया है; किंतु एक बड़ी भारी जिम्मेदारी भी वह मेरे लिए बन गया है। इस दीपक को हाथों में लेकर मुझे अपनी जीवन-यात्रा में चलते रहना है। दीपक बुझ न जाये, इसकी ज्योति मंद न हो जाये, ये सब जिम्मेदारियाँ मेरे सामने हैं। हवा के झकोरों से, रास्ते की ठोकरों से, उतार-चढ़ाव की फिसलनों से, इस दीपक को सुरक्षित रख कर मुझे चलना हैं; क्योंकि इसके गौरव का सारा प्रकाश मुझे ही रोशन नहीं कर रहा है, बल्कि उस रास्ते को भी रोशन करेगा, जिस पर मैं खुद और मेरे पीछे और भी कई भविष्य में चलेंगे।

✱

प्रसिद्ध अँग्रेज आलोचक केलसी एलेन ने एक दिन अपने एक मित्र फिल्म-अभिनेता की कलाई-घड़ी की बड़ी प्रशंसा की, तो अभिनेता ने विनयपूर्वक कहा— "दरअसल, यह घड़ी आपको भेंट कर देने की इच्छा हो रही है; पर क्या करूँ— इस पर मेरा नाम खुदा हुआ है।" एलेन ने तनिक चिंतित स्वर में उत्तर दिया—"हाँ, यह तो है; पर नाम के साथ 'की-ओर से भेंट' खुदवा देने से काम मजे में चल जा सकता है!"

—इर्विंग हाफमन

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

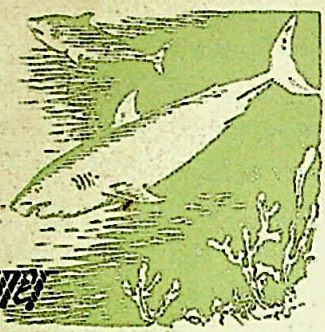

मौत के मुँह में — आदमखोर मछली के साथ

प्रशांत महासागर में शार्क मछली के शिकार की एक रोचक कहानी

★

यद्यपि उस भयंकर और विशाल शार्क मछली को बुलाने का यह तरीका था बड़ा विचित्र; लेकिन जो भी हो, इसमें सफलता मिली। पाइको ने एक पतले तार में नारियल की कई खोखली खोपड़ियाँ पिरो रखी थीं, जिन्हें वह हमारी नौका से लटका कर खड़खड़ की आवाज कर रहा था। दूर दिखायी पड़नेवाली वह बड़ी शार्क मछली इस विचित्र आवाज से आकृष्ट होकर धीरे-धीरे हमारे निकट आने लगी।

जब शार्क हमारे काफी निकट आ गयी, तब हमने पहचाना कि, वह 'माको' शार्क ही थी। शार्क की कई किस्में होती हैं। इनमें से अनेक बिल्कुल खतरनाक नहीं होतीं। लेकिन माको उन सीधी शार्क मछलियों में से नहीं है। इसका दूसरा नाम है 'आदमखोर', जो काफी हद तक उपयुक्त ही है। कई महीनों से यह खतरनाक मछली दक्षिणी प्रशांत महासागर के बोराबोरा नामक द्वीप के आसपास चक्कर लगा रही थी। इस दौरान वह तीन नौकाएँ उलट चुकी थी, एक मछुए को खा चुकी थी और एक अन्य की टाँग साफ कर चुकी थी। बेचारा लँगड़ा मल्लाह जब बचा कर किनारे लाया गया, उस समय बेहोशी की दशा में भी उसके मुख की आकृति भय से विकृत थी और रंग सफेद था। बचाने की तमाम चेष्टाओं के बावजूद जब वह चल बसा, तब डाक्टर ने मुझे धीरे से बताया था कि, इसकी मृत्यु घाव के कारण नहीं, दहशत से उत्पन्न प्रबल मानसिक आघात के कारण हुई है।

बोराबोरा द्वीप और आसपास के द्वीप-समूह के मछुओं में आतंक फैल गया था। यह स्पष्ट था कि, जब तक यह माको आस-पास के समुद्र में है, तब तक नौका लेकर मछली मारने जाना सुरक्षित नहीं है। कब किसकी नाव पर आक्रमण हो जाये और कौन व्यक्ति इसके विकराल जबड़ों के आरी-जैसे दाँतों में फँस कर अपनी जान खो दे, इसका कोई ठिकाना नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। किंतु मछली मार कर जीवन-यापन करनेवाले मछुओं के सामने इस मछली से बचने का दूसरा और अंतिम उपाय था कि, वह भूखे रह कर धीरे-धीरे प्राण त्याग दें।

किंतु इसी समय टुआमोटस द्वीप के प्रसिद्ध शार्क-शिकारी पाइको ने घोषणा की कि, वह इस विकराल दैत्य मछली से या तो द्वीप-वासियों को मुक्ति दिलायेगा, या फिर उसके साथ संघर्ष करने में अपने प्राणों की आहुति दे देगा। पाइको की इस घोषणा से द्वीप-निवासी मछुओं के निराश और आतंक-ग्रस्त दिलों में आशा और विश्वास की हल्की-सी एक रेखा कौंधी।

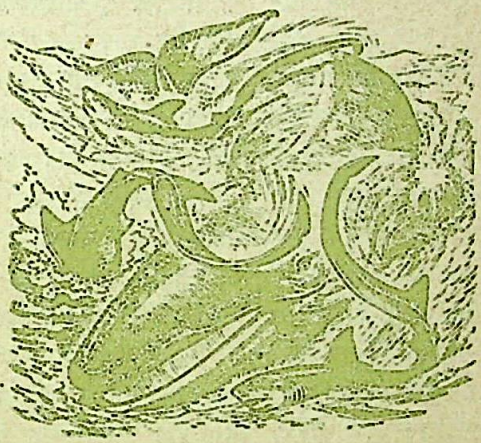

शार्क मछलियाँ ठीक भेड़ियों-जैसी होती हैं, झुंड मे रहती हैं और बड़े-से-बड़े शिकार पर टूट पड़ती हैं। चित्र में, शार्क मछलियों ने एक विशालकाय ह्वेल को घेर रखा है। थोड़ी ही देर में ह्वेल उनका भोज्य बन जायेगी!

उस छोटी-सी नौका पर पाइको के अतिरिक्त हम दो आदमी और थे। शीघ्र ही माको हमारी नाव के निकट आयी और लगभग ५ गज के अंतर से पानी के ऊपर सरसराती हुई तेजी से आगे निकल गयी। इतने निकट से हम अपने शत्रु को अच्छी तरह देख सके और यह मान लेने में मुझे कोई आपत्ति न होगी कि, यद्यपि मेरा हृदय उस भयंकर मछली के इतने समीप होने के कारण एक बार सिहर गया था, तथापि मुझे वह सुंदर लगी। अधिकांश शार्क मछलियाँ भद्दी और बदसूरत होती हैं और उनके जबड़े सूअर की भाँति थूथनदार होते हैं। शरीर की बनावट भी विशेष सुडौल नहीं होती। किंतु माको श्रेष्ठ जाति की शार्क थी। गहरे स्लेटी और नीले रंग की उस दैत्याकार मछली का शरीर भारी-भरकम होने के बावजूद कुछ इस ढंग से बना था कि, छरहरा और सुडौल प्रतीत होता था। गति की प्रतिमा-सरीखी यह माको जैसे क्षणों में समुद्र की लम्बाई-चौड़ाई नाप डालेगी—ऐसी तेजी थी उसके तैरने में। ऐसा प्रतीत होता था कि, उसे किसी का भय नहीं है। और, पानी से उछल कर हवा में कूदने का उसका ढंग कितना निराला था! कई बार तो वह पानी से इतना ऊपर उछल गयी कि, समुद्र की अन्य कोई मछली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना ऊँचा कूद सकती है, इसमें संदेह है।

मुझे माको की कलाबाजी देखने में बड़ा मजा आ रहा था; पर साथ ही ईश्वर से यह भी मना रहा था कि, वह अपनी कलाबाजी हमारी नाव से जरा दूर-ही-दूर करे। इस बात के अनेक प्रामाणिक उदाहरण हैं, जिनमें माको ने ऐसी कलाबाजी खायी कि, सीधी नाव पर गिरी और नाव टूट-टाट कर बराबर हो गयी।

अब माको हमारी नौका के चक्कर लगा रही थी। दूर-दूर, लगभग ५-६ गज की दूरी रख कर वह हमारे चारों ओर ठीक उसी प्रकार सधी हुई गोलाई में तैर रही थी, जैसे रहट के बैल चक्राकार घूमते हैं। अचानक ही वह एकदम रुक गयी, जैसे किसी मोटर-चालक ने कस कर ब्रेक लगा दिया हो और चलती हुई मोटर एकदम जाम होकर ठप हो गयी हो। २८ मन भारी वह मछली तैरते-तैरते एकदम इतनी स्थिर कैसे हो सकी, यह मेरे लिए रहस्य ही बना हुआ है। पाइको अब भी नाव के किनारे खड़ा नारियल की माला नाव से टकरा-टकरा कर खड़खड़ा रहा था। माको ने खड़खड़ाते नारियल की माला की तरफ अपना थूथन उठाया। हमने अपनी साँस रोक ली। पाइको के बायें हाथ में नारियल की माला थी और उठे हुए दूसरे हाथ में बर्छा और वह इतना स्थिर खड़ा था, जैसे पत्थर की कोई मूर्ति!

तभी एक साथ कई घटनाएँ घटीं। माको ने अपना सिर पानी से बाहर निकाला और अपने जबड़े खोल लिये। उसका मुँह इतना विशाल था कि, एक बार में एक आदमी उसके मुँह में सीधा समा जाये। उसके बड़े-बड़े विकराल और तेज दाँत नुकीले, मोटे और अंदर की ओर घूमे हुए सूजों की भाँति थे। टाइगर-शार्क या चीता-शार्क (शार्क की एक जाति) के दाँत भी माको-शार्क के समान भयंकर और विकराल नहीं होते। मैं कल्पना कर सकता था कि, हमारी नाव माको के विशाल जबड़ों और शक्तिशाली दाँतों में कच्चे अंडे की तरह चकनाचूर हो जायेगी।

किंतु माको की सारी दिलचस्पी केवल नारियल की माला में केंद्रित थी। तेज आवाज के साथ माको के विशाल जबड़े सपाक से बंद हो गये। नारियल की माला जबड़ों में आने से एक इंच से बच गयी। इसके साथ ही पाइको के दाहिने हाथ का उठा हुआ बर्छा तीर की तरह हवा में उड़ा और माको की चिकनी, सुदृढ़ पीठ में गहरा पैठ गया। बर्छे में लगी ५०० फुट लम्बी मजबूत डोर की गड़ारी नाव पर ही थी।

बर्छे का घुसना था कि, माको का सारा शरीर एकबारगी घूम गया। बिजली की तेजी से वह पानी में डूबी और अंदर-ही-अंदर भाग चली। नाव में सावधानी से लपेट कर रखी गयी डोर की गड़ारी से सर्सर् डोर खिंचती चली जा रही थी। सारी डोर लेकर माको भाग जायेगी, इसकी सम्भावना नहीं थी; क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका छोर मजबूती के साथ गड़ारी में बँधा हुआ था। किंतु एक खतरा यह था कि, यदि माको इसी वेग से भागती रही, तो समाप्त होने पर डोर मामूली कच्चे धागे की तरह टूट जायेगी।

किंतु गड़ारी पर डोर समाप्त नहीं हुई थी, तभी अचानक माको का भारी शरीर सतह तोड़ कर ऊपर आया और वह पानी की भारी बौछार के साथ सतह से १५ फुट ऊपर कूद गयी। एक भारी थपाके की आवाज के साथ माको पुनः पानी पर गिरी और फिर सतह के अंदर गोता लगा गयी।

थोड़ी ही देर बाद वह फिर सतह तोड़ कर उठी और इस बार पहले की अपेक्षा और ऊपर जाकर उसने वहाँ एक कलाबाजी खाई। फिर बिना किसी आवाज के कुशल गोताखोर की भाँति पुनः पानी में गोता लगा गयी।

इस बार बड़ी उत्सुकता से हम माको के पुनः जल के ऊपर आने की प्रतीक्षा करने लगे। हमें आशा थी कि, जितनी डोर गड़ारी से खिंच चुकी है, उस लिहाज से इस बार उसे नाव से काफी दूर निकलना चाहिए। किन्तु जब हमसे केवल २० फुट दूर पानी की सतह तोड़ कर माको का विशाल शरीर एकाएक बाहर निकला, तो हम अवाक् रह गये। पानी के ऊपर आते ही माको सीधी हमारी नाव की ओर झपटी। उसके तौर-तरीके से जाहिर था कि, इस बार उसके नाव की ओर आने का कारण केवल उत्सुकता-मात्र नहीं है; क्योंकि उसके जबड़े पूरे खुले हुए थे और उसकी आँखें उतनी ही रक्तवर्णा हो रही थीं, जितनी उसके घाव से निकलने वाले रक्त की पतली रेखा!

....और नाव पर चढ़ जाने के बाद उसने हाथ की डोर का एक सिरा, नाव की गड़ारी में बाँध दिया। (पृष्ठ ७८)

जिस वेग से माको नाव की ओर झपटी थी, उससे उसका इरादा स्पष्ट था। हम सब उसके इस अप्रत्याशित रूप से अपने निकट अवतीर्ण होने से यों ही भौचक्के हो गये थे, ऊपर से उसका विकराल स्वरूप देख कर हमारे होश गुम हो गये। यदि हमारे तीसरे साथी, एक आदिवासी लड़के, अट्टा ने तुरत बुद्धि से काम न लिया होता, तो हमारी नाव का और उसके साथ ही हमारा अंत निश्चित था। अट्टा ने तुरत एक डाँड़ उठा कर उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन फुट चौड़ा हिस्सा शार्क के जबड़े में घुसेड़ दिया। कुछ चौंक कर और कुछ गुस्सा होकर माको ने डाँड़ को ही अपने जबड़ों में कचकचा कर पकड़ लिया और अट्टा के हाथ से डाँड़ छूट गया। मुँह में डाँड़ लिये हुए शार्क कुछ दूर चली गयी और फिर उसे बाहर थूक दिया। डाँड़ वापस पाने की कोई भी चेष्टा करना बेकार था; क्योंकि वहाँ डाँड़ के स्थान पर लकड़ी के टूटे टुकड़े-मात्र तैर रहे थे।

इसके पश्चात् शार्क पुनः पानी में समा गयी। इस बार वह कहाँ निकलेगी, हमारे निकट या कहीं दूर? धड़कते हुए दिल से हम प्रतीक्षा करने लगे।

अकस्मात् हमारी नाव से लगभग १० फुट की दूरी पर पानी में बिना आवाज के विस्फोट-जैसा हुआ और हमारी पाल के जितने ऊँचे तक, माको का नीला टार-पीडो-जैसा शरीर उछल कर धड़ से नाव के एक सिरे पर गिरा। अगर सिरे पर न गिर कर वह बीच में गिरा होता, तो यह हमारा अंत था। किंतु सिरे पर गिरने के साथ ही नाव एक भारी भार के नीचे उसी ओर झुक गयी और माको फिसल कर पानी में चली गयी। नाव फिर सीधी हो गयी। सौभाग्य से नाव को किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँची थी। इसके पहले कि, हम इस आघात से सम्भल सकें, माको फिर उछली; किंतु इस बार निशाना चूक गया और वह नाव से २-३ फुट हट कर पानी में गिरी।

इसके बाद शार्क ने अपनी रणनीति में परिवर्तन कर दिया। उसने एक सीधी रेखा में नाव से दूर भागना आरम्भ किया। एक सौ फुट, दो सौ फुट, तीन सौ फुट...और नारियल की डोर गड़ारी पर से सरसराहट के साथ निकलती ही जा रही थी। लगभग चार सौ फुट डोर निकल गयी; किंतु माको का भागना जारी रहा।

पाइको ने एक लकड़ी का भारी टुकड़ा उठा कर गड़ारी के ऊपर डाल दिया। अपनी सारी शक्ति से उसने गड़ारी पर जितना सम्भव था, उतना बोझ डाल दिया। इसमें उसे सफलता हुई; क्योंकि डोर अब बहुत तेजी से नहीं खिंच रही थी। इससे एक लाभ यह था कि, डोर समाप्त होने पर गड़ारी से वह झटके से टूट नहीं सकती थी और न गड़ारी के उखड़ने का खतरा रह गया था। इसके साथ ही उसने चिल्ला कर हमसे कहा कि, नाव को उसी दिशा में खेवें, जिस दिशा में शार्क भाग रही है। हमने फौरन ही ऐसा करना शुरू कर दिया।

घन्! एक तेज आवाज के साथ रस्सी कड़ी हो गयी। ५०० फुट डोर समाप्त हो चुकी थी; किंतु गड़ारी से डोर टूटी नहीं थी। मछली अब डोर के सहारे हमारी नाव को खींच रही थी। नाव का अगला सिरा तेजी से पानी काटता हुआ फौव्वारे-जैसा पानी ऊपर फेंक रहा था। मछली हमें खुले समुद्र की ओर ऐसे खींचती चली जा रही थी, जैसे कोई बच्चा खिलौने वाली मोटर में डोर बाँध कर खींचता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पाल चढ़ाओ!"—पाइको चिल्लाया। अट्टा ने मस्तूल पर चढ़ कर लिपटा हुआ पाल खोल दिया और मैंने पाल की रस्सियाँ नीचे खूँटों में कस कर बाँधने में उसकी सहायता की। हवा समुद्र की ओर से बह रही थी। हवा के विरुद्ध पाल खुल जाने से नाव की चाल धीमी पड़ गयी। इसके साथ ही हमने नाव अब उल्टी दिशा में खेना शुरू किया। धीरे-धीरे थक रही मछली को अब नाव घसीटने में कठिनाई हो रही थी। नाव की गति धीरे-धीरे धीमी पड़नी शुरू हो गयी और फिर नाव के अगले सिरे के दोनों ओर पानी की उड़ती फुहारें समाप्त हो गयीं। इसका मतलब था कि, नाव रुक रही थी। स्पष्ट था कि, मछली को नाव का भारी बोझ हवा के उल्टे प्रवाह में घसीटना काफी मुश्किल जान पड़ रहा था।

उसके दिमाग ने फिर पलटा खाया। अब तक तनी हुई डोर ढीली पड़ गयी और हमने देखा कि, पानी में आधी डूबी हुई शार्क के दो डैने हमारी ओर सीधे चले आ रहे हैं। शीघ्र ही उनकी दिशा बदल गयी और वह विपरीत दिशा में जाते दिखायी पड़े। और, अचानक ही वह दृष्टि से ओझल भी हो गये।

पर हमें बहुत देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। इस बार डैने फिर नाव की ओर आते दिखायी पड़े। मेरा अनुमान था कि, वह जबड़े से नाव को चबा डालने के लिए जबड़े खोल कर आयेगी; किंतु इसके ठीक विपरीत, शार्क हमारी नाव के ठीक नीचे आयी और पूरे जोर से ऊपर की ओर उठी। इसके पहले कि, पाइको-जैसा व्यक्ति भी कुछ समझ सके, हमारी नाव उलट गयी।

दूसरे क्षण, हम खून से लाल हो रहे पानी में पड़े थे। नाव हमसे कुछ दूर आधी उलटी पड़ी थी। पाल के सहारे नाव ठीक उसी दिशा में पड़ी हुई थीं। नाव सीधी करने के लिए मस्तूल को नाव से अलग करना आवश्यक था और नाव सीधी करके उस पर चढ़ जाना जरूरी था।

जिस समय हम मस्तूल को नाव से अलग कर रहे थे, उसी समय शार्क पानी चीरती हुई हमसे कुछ गज की दूरी से गुजर गयी। उसके शरीर से रक्त की बहने वाली धारा अब और मोटी होती जा रही थी। वह बारबार हमारी ओर लौट रही थी और हम उसे डराने के लिए पानी में हाथ-पैर फेंकने लगते थे।

किंतु एक और संकट बढ़ गया था। अब माको अकेली नहीं थी। उसके शरीर से निकलनेवाले रक्त की गंध ने और अनेक शार्क मछलियों को आकृष्ट कर लिया था, जो घायल माको के पीछे-पीछे भाग रही थीं। इन भयानक शार्क मछलियों की हालत भूखे भेड़ियों-जैसी होती है। यदि इनका ही कोई साथी घायल हो जाये, तो शेष भेड़िये उसका काम तमाम करके चट कर जाते हैं। हमें डर था कि, खून की गंध से यह पानी के भेड़िये कहीं हम पर हमला न बोल दें। जब तक माको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डोर के ज़रिय हमारी नाव से बँधी थी, हमारी सुरक्षा को गम्भीर खतरा था।

अट्टा चिल्लाया—"डोरी काटो, डोरी काटो।" पाइको ने तुरत अपनी छूरी निकाली और डोर काट दी। डोर काटने के साथ ही उसने डोर का एक छोर अपनी मुट्ठी में लपेट लिया और इसके बाद वह घायल शार्क से खिंचता हुआ ऐसी भयंकर यात्रा पर रवाना हो गया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

हमने इस बात की कभी कल्पना नहीं की थी कि, पाइको-जैसा शिकारी इतना बड़ा दुस्साहस कर बैठेगा। हम अवाक् अपनी स्वयं की परिस्थितियाँ भूल कर पाइको को मछली के पीछे डोर से खिंचते हुए जाते देख रहे थे।

जब-जब माको डुबकी लगाती थी, तब-तब पाइको भी एक साँस लेकर पानी में डुबकी लगा जाता था। सौभाग्य से माको डुबकी लगाने के बाद पानी के अंदर बहुत देर तक रुकती नहीं और इन द्वीपवासी मछुओं के लिए तीन मिनट तक साँस रोक रखना साधारण-सी बात है।

फिर अचानक ही हमें अपनी स्थिति का ध्यान हुआ। किसी प्रकार हमने नाव को सीधा किया और अंदर भर गया जितना पानी बाहर निकाल सकते थे, निकाल दिया। इसके बाद हमने नारियल की खोपड़ी से अंदर का शेष पानी भी उलीच डाला।

इतना कर चुकने के बाद हमने अपनी नाव उस दिशा में खेना शुरू किया, जिस दिशा में मछली और उसके पीछे-पीछे पाइको गये थे। हममें और पाइको में उस समय कम-से-कम २ फर्लांग का फासला था। पूरी तेजी से डाँड़ चलाते हुए हम बढ़ रहे थे। जब हम पाइको के पास पहुँचे, वह आराम से अपनी पीठ के सहारे तैर रहा था और उसके हाथ में डोर अब भी थी। हमें देख कर वह बड़े प्रेम से मुस्कराया और नाव पर चढ़ आने के बाद उसने हाथ की डोर का सिरा गड़ारी में फिर बाँध दिया।

शार्क अब बिल्कुल स्थिर पड़ी थी, यद्यपि उसमें प्राण अभी शेष थे। अब हमने घर की ओर वापसी यात्रा आरम्भ की। डोर से बँधी मरणासन्न माको पीछे-पीछे घिसटती आ रही थी।

बोराबोरा द्वीप के तट पर मछुओं की भारी भीड़ हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। उनकी सहायता से हमने माको को किनारे पर घसीट लिया। माको २१ फुट लम्बी थी और सिर के निकट उसकी गोलाई बड़े भारी पीपे के समान थी। उसका निचला जबड़ा लटक गया था और उसके बड़े-बड़े दाँतों की शृंखला दिखायी पड़ती थी।

माको के उदर से अनेक चीजें निकलीं—पतवार के टूटे टुकड़े, बहुत सारी मछलियाँ। एक २ फुट चौड़ा कछुआ भी निकला—जीवित। कछुआ थोड़ी देर बाद हिला-डोला और फिर उसने समुद्र के जल की ओर रेंगना शुरू किया। पर थोड़ी देर बाद ही, कछुआ भी शार्क के गोश्त के साथ मछुओं की एक बड़ी कढ़ाई में पड़ा उबल रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़वे-मीठे जीवन-घूँट

★

पानी में भी मीन पियासी

उस दिन मेरे एक मित्र ने एक बात सुनायी। गत वर्ष बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए एक जिले में सरकार ने चार लाख रुपये मंजूर किये। एक अच्छे-खासे सम्पन्न सज्जन को इसकी खबर लगी। उन्होंने अपने तरुण लड़के को बुला कर फटकारा—"कैसा बेवकूफ है, कुछ देश-दुनिया की भी खबर नहीं रखता। सरकार बाढ़-पीड़ितों को सहायता दे रही है। हमें भी उसमें से कुछ लेना है।" स्मरण रहे कि, इनका बाढ़-क्षेत्र में कुछ भी न था।

जब लड़के की समझ में बात अच्छी तरह नहीं बैठी, तो पिताजी ने अपना पूरा उद्देश्य बताते हुए उसे यह भी बताया कि, कहाँ-कहाँ हस्ताक्षर कराने से अपना काम बन सकता है।

साहबजादे निकले अपनी कार पर। पिताजी ने जिन-जिन अधिकारियों एवं सज्जनों के हस्ताक्षर कराने के लिए कहा था, उन सबको भी 'बाढ़-पीड़ित' सज्जन से काम पड़ता रहता था। हस्ताक्षर उसने ले लिये और जब यह पूर्णतः प्रामाणिक आवेदनपत्र जिला-अधिकारी के पास गया, तो उसने भी 'एवमस्तु' लिख दिया!

× × ×

एक धनीमानी महाशय—जिन्हें दो हजार रुपया मकान का किराया मिलता था—मकान बनाने के लिए सरकार कुछ दे रही है, सुन कर दौड़ पड़े। ५०-६० हजार रुपया उनके हाथ आ गया। मकान बन गये और सब किराये पर चढ़े हैं। उन्होंने मेरे एक मित्र से कहा—"मकान बनाने की हमने एक 'को-आपरेटिव सोसाइटी' बनायी है। आप भी मेम्बर हो जाइये।" मित्र ने कहा—"पर मैं तो इस नगर में रहता नहीं।" बोले—"किराये पर दे देना।" "और, जो हजार-दो हजार जेब से देना पड़ता है, वह कहाँ से आयेगा?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे मित्र ने पूछा, तो सेठजी बोले—"उसकी चिंता न करो। उसका प्रबंध मैं कर दूँगा। इसके अलावा, सम्भव है, दो-चार सौ नकद भी हाथ आ जाये।"

—राहुल सांकृत्यायन, मसूरी

★

कोड़े लगाओ

मेरे पिताजी—अघोरनाथ चट्टोपाध्याय—जीवित थे, तब की बात है। एक बार मैं अपनी बहन के यहाँ कटक गया था। कुछ समय ही वहाँ रहा होऊँगा कि, गोदावरी में भयंकर बाढ़ आ गयी और जल्दी-जल्दी सामान आदि समेट कर हमें वहाँ से भागना पड़ा। उस समय मैं १२ वर्ष से अधिक उम्र का था; पर देखने में १० ही वर्ष का लगता था। अतः जो सज्जन हम सबके लिए टिकट खरीदने गये थे, उन्होंने मेरा आधा ही टिकट लिया। रास्ते में टिकटों की जाँच हुई और हवड़ा स्टेशन पर मैंने अपना टिकट दिया भी; पर कहीं किसी रेलवे-अधिकारी को मेरी उम्र के बारे में कुछ भी शक न हुआ। सब बड़े प्रसन्न थे कि, कम उम्र का दिखने के कारण कुछ रुपये बच गये।

मैंने इस बात की चर्चा पिताजी से कर दी। बात पूरी खत्म भी न हुई थी कि, उनकी आँखें लाल हो गयीं और वे गरज कर बोले—"यह क्या किया तुमने? रेलवे को धोखा दिया!"

मैं पत्ते की तरह काँप गया। तन-मन, दोनों से उठे पिताजी के इस वाक्य से मुझे जैसी आत्मग्लानि हुई, वैसी सौ जूते लगने पर भी शायद ही होती।

× × ×

अपने पिताजी-सम्बंधी एक और घटना मुझे स्मरण है। उस समय मैं और भी कम उम्र का रहा होऊँगा। एक दिन मेरे अहाते में एक पर्देदार सवारी आयी। पिताजी को जब सवारी की खबर लगी, तो वे बाहर आ गये। उनके ठीक सामने सवारी खड़ी थी। साईस ने कहा—"हुजूर, बेगम साहिबा आपसे कुछ बात करना चाहती हैं।" पिताजी बड़े ध्यान से बेगम साहिबा की बातें सुनते रहे और तब अचानक गरज उठे—"साईस, चाबुक लाकर इस औरत को कोड़े लगाओ।"

हम सभी स्तब्ध रह गये कि, क्या बात हुई। बाद में पता चला कि, वह औरत पिताजी से कोई गलत काम कराने के लिए आयी थी और उन्हें रिश्वत के रूप में देने के लिए एक थैली अशर्फियाँ ले आयी थी।

—हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, नयी दिल्ली

★

क्रांतिकारी की प्रेरणा

पंजाब में एक कवि-सम्मेलन हुआ—एक बड़ी संस्था के तत्वावधान में। रेडियो से उसे प्रसारित करने का भी प्रबंध था। सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई; पर स्वागताध्यक्ष ने अपने भाषण में कवियों को कुछ अपमानजनक बात कह दी। महाकवि 'निराला' भी उसमें उपस्थित थे। अपमान!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

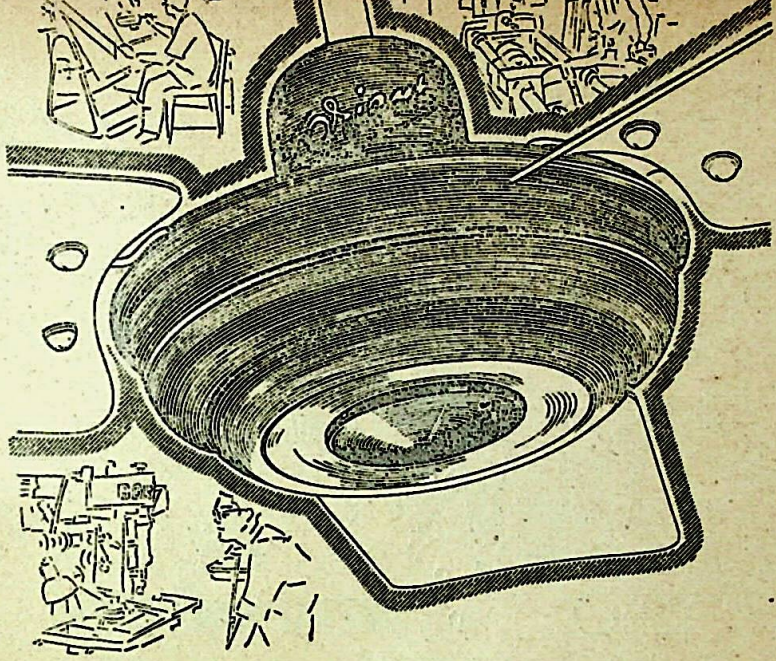

पंखा निर्माण में नवीन उन्नत-स्तर!

सुन्दरता, आराम, कार्यक्षमता और टिकाऊपन— इन सारी दृष्टियों से यह पंखा ठीक वैसा ही है, जैसा कि आप चाहते हैं। विभिन्न विशेषताओं से परिपूर्ण यह ओरिएन्ट पंखा निर्माण-कला की दक्षता का अपूर्व उदाहरण है। यह प्रगतिशील इंजीनियरिंग दक्षता से प्रेरित नवीन बनावट और कला-कौशल का अनुपम परिणाम है।

प्रेसर डाई कास्ट, सुदृढ़ रोटर, सम्पूर्ण डाई कास्ट केसिंग, सेन्टरलेस ग्राउण्ड सैफ्ट, स्टोव एनमिल्ड रंगाई— ये सब इसकी कार्य विशेषता और अद्वितीय फिनिश के कारण हैं।

यह पंखा आधुनिक डिज़ाइनरों, टूल इंजीनियरों तथा अन्यान्य विशेषज्ञों की सहायता प्राप्त ओरियेन्ट के दक्ष टेकनिशियनों की सृष्टि है, इसी कारण इस देश के तथा विदेशों के समस्त ग्राहकों की सारी मांगों को यह पूरा करता है।

Orient FANS

ओरिएन्ट पंखा—
सौन्दर्य और सेवा में सदैव अग्रगामी

ओरिएन्ट जेनरल इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
६, घोर बीबी लेन, कलकत्ता-११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वितरक : मसर्स ओरिएन्ट जेनरल एजेन्सीज

जब से कमला बेटी स्कूल की छुट्टियों में मेरे पास आई है, उस ने आते ही मेरे घर की काया पलट दी। पहिले मैं सारा दिन किसी न किसी काम में उलझी रहती थी— पर कमला बेटी का भगवान भला करे, अब तो वह सभी काम चुटकियों में होने लगे हैं।

कपड़ों को धोने की बात ले लो—कहने को तो कोई बात नहीं पर जब उस ने मुझे बताया कि कपड़े धोने का साबुन शुद्ध होना चाहिये, तो मुझे बड़ा अचंभा हुआ—उस ने कहा,

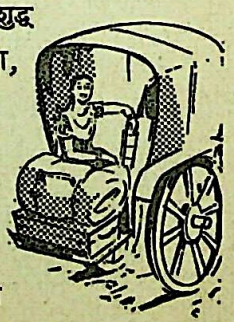

"शुद्ध साबुन से कपड़े अच्छी तरह धुलते हैं क्यों कि शुद्ध साबुन ज़्यादा झाग देता है और ऐसा झाग जो न कपड़ों को नुक़सान पहुंचाये, न हाथों को।"

वह सनलाइट साबुन घर ले आई और उस से कपड़े धो कर दिखाए। ज़रा सा मलने पर साबुन कितना भरपूर झाग देने लगा—मैं ने जो कमला को कपड़े धोने के लिए डंडा दिया, तो कहने लगी—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"न मासी, सनलाइट से कपड़े धोते समय पीटने पटखने की ज़रूरत नहीं पड़ती — बस थोड़ा सा साबुन मला, इतना भरपूर झाग निकला कि कपड़े बिना पीटे धुल गए।"

और कपड़े भी कितने साफ़ और उजले धुले कि जी चाहा गीले ही पहन लो।

कमला सच मुच बड़ी होशियार लड़की है। कहती है कि सनलाइट से कपड़े इतने साफ़ और उजले इस लिए धुलते हैं कि इस का प्रभावकारी झाग कपड़े के ताने बाने में से सारा मैल खेंच लाता है। यह सब बातें ठीक हुईं लेकिन घर चलाना तो मेरा काम है। इस लिए मेरे मन में जो एक बात थी वह भी कह डाली मैं ने, "बेटी, सनलाइट साबुन तो बहुत मँहगा है।"

कमला हंस पड़ी। कहने लगी :

"नहीं मासी! यह तुमहारा विचार ही है"। मैं हैरान हो गई। फिर कमला बेटी ने समझाया : "मासी! सनलाइट की एक ही टिकिया से ढेरों कपड़े धुल जाते हैं — सनलाइट से कपड़ा धोना तो सच मुच बड़ा सस्ता काम है।"

सनलाइट की एक और बात भी मन को बड़ी भाई। इस की सुगंध से कपड़ों में स्वच्छता की महक आती है और इस का झाग हाथों को मुलायम और कोमल रखता है।

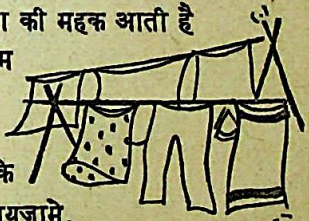

यह हमारी कमला आई तो हमें मालूम हुआ कि घर के सभी कपड़े जैसे कि, उन की क़मीज़ें, पायजामे, घर के तोलिये, चादरें, परदे, मुन्नी और काके के कपड़े मेरे कपड़े यानि कि सभी छोटे बड़े कपड़े धोने के लिए सनलाइट से अच्छा कोई साबुन नहीं। एक तो कपड़े इतने साफ़ और उजले धोए और दूसरे एक ही टिकिया से ढेरों कपड़े धुल जाएं। पैसे के पैसे बचे, पहनने को साफ़ कपड़े मिले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी किफ़ायतपूर्ण ! एक ही बार ब्रश करने से

कोलगेट डेन्टल क्रीम

८५ % तक

दंत-क्षय और दुर्गंध-प्रेरक जीवाणु ख़त्म कर देता है !

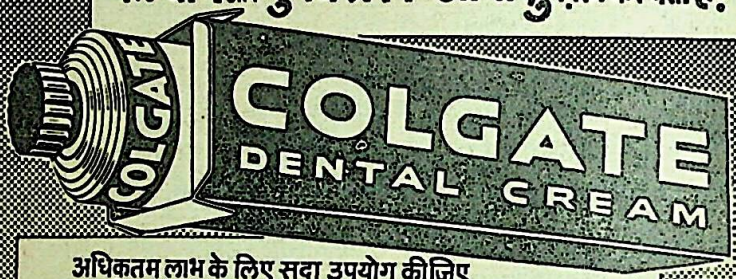

अधिकतम लाभ के लिए सदा उपयोग कीजिए

कोलगेट टुथ ब्रश

OCG/24 R2

स्त्रियों के लिये पुरानी और प्रसिद्ध औषधि.

"रजीस्टर्ड"

जीमस्त्री

शक्ति, स्फूर्ति एवं चैतन्य के लिये उपयोगी.

निर्माता :-

जसमाईन एजन्सी

नडीआद. (गुजरात)

एजन्ट : कंचनलाल वाडीलाल एन्ड कं. प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई–१

" कान्तिलाल आर. परीख, चांदनी चौक, देहली

कान्तिलाल आर. परीख, २७/८२, बीरहाना रोड, कानपुर

CC-0. Manuscript Shanti Vanaprastha Collection. Digitized by eGangotri

और, 'निराला' उसे पी जायें !..असम्भव। उठ खड़े हुए....." मैं कविता नहीं पढ़ सकता।" अब 'निराला' न पढ़ेंगे, तो कौन पढ़ेगा ?...कोई नहीं।

उधर प्रसार का समय आ पहुँचा। हार कर, संयोजकों ने कुछ अज्ञात कवियों से कविता पढ़ाना आरम्भ कर दिया। हमें बड़ी लज्जा आ रही थी कि, हिन्दी के नाम पर इस प्रकार की तुकबंदी प्रसारित की जा रही है। प्रसिद्ध कहानीकार यशपाल बगल में बैठे थे। उन्होंने मेरे कान में कहा कि, 'माइक' पर जाकर सारी स्थिति कह दो....लोग समझेंगे कि, तुम कविता पढ़ने जा रहे हो। मैंने बढ़ कर यही किया। किसी ने मुझे 'माइक' से ढकेला और हाथापायी हो चली। उसी दिन मैंने अनुभव किया कि, क्रांतिकारी के एक संकेत से क्या कुछ हो सकता है।.....इन सबकी जड़ में यशपाल थे, यह पहली बार बता रहा हूँ।

संयोजकों ने कवियों को मार्गव्यय-आदि देने का वचन दिया था; पर हमारे जाने का समय आया, तो सब गायब !

—डा० बच्चन, नयी दिल्ली

एक दिन हमने एक तोता खरीद लिया। तोता चमत्कारी था। वह पाँच भाषाएँ —फ्रेंच, जर्मन, अँग्रेजी, स्पेनिश और फारसी बोल सकता था। इस अनमोल जीव को बड़ी तवज्जह से हमने पाला।

एक रात हम उसे जुआघर में ले गये। हम हर मर्तबा इस जुआघर में हारे थे। आज हमारा दिल बाँसों उछल रहा था। जुआघर के मालिक को हमने ललकारा—"अगर हिम्मत हो, तो इस तोते पर बाजी लगाओ।" उसने पूछा— "कैसी बाजी ?" मैंने कहा— "यह पाँच भाषाएँ जानता है।"

उसने कहा—"अच्छा, बाजी लगायी। तुम्हारे तोते से हम अँग्रेजी में उसका नाम पूछते हैं।" मेरी खुशियों का क्या पूछना ! मैंने तुरत कहा —"पूछो !" उसने नाम पूछा ; मगर तोता नहीं बोला ! फिर उसने फारसी में पूछा; मगर तोता फिर भी मौन था। हमारी छाती पर साँप लोट गया। हम बाजी हार गये — पूरे १,५०० रुपये जेब से निकल गये। ऊपर से हँसी हुई, सो अलग। रास्ते में हमने तोते से पूछा, बड़े गुस्से में पूछा—"नमकहराम, तेरी गर्दन नोच लूँगा। तेरी चोंच दर्जी ने सी दी थी क्या ? बोला क्यों नहीं ?"

वह बड़ी शांति के साथ बोला—"मेरे मालिक ! मैंने नमकहरामी नहीं की। खुदा गवाह है। आपने देख लिया न, जुआ में हकीकत भी धोखा दे जाती है। मुझे यकीन है, अब आप कभी जुआ नहीं खेलेंगे !" तोते की इस बात ने एक झटके से मेरी आँखों का पर्दा खींच दिया।

—मिर्जा हिकमत बेग (फारसी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झूल की शिला

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक अप्रकाशित बँगला-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

बिनी को अकस्मात् बीमारी ने दबोच लिया। यथाशक्ति उपचार किया गया, अनेक डाक्टरों को बुलाया गया, कई छापों की दवाएँ घर में एकत्र हो गयीं– लगा कि, रोग से बड़ा उसका उपचार हो गया; किंतु डेढ़ वर्ष की चिकित्सा के बाद भी जब उसकी हड्डियाँ सुदृढ़ होने के बजाय और जर्जर हो गयीं, तो डाक्टरों ने हवा बदलने की सलाह दी।

इस प्रकार विवाह के बाद पहली बार बिनी ससुराल से बाहर चली। लम्बे-चौड़े परिवार में हम दोनों केवल चोरी-छिपे ही मिल पाते थे। कभी इधर-उधर आते-जाते कोई मजाक या एकाध टूटी-फूटी बात हो गयी, तो हो गयी; नहीं तो ज्यादातर इशारों से ही भावों का आदान-प्रदान हो पाता था।

आज जब वह पहली बार इस पारिवारिक पाश से मुक्त हुई, तो धरती ने जैसे अपने आकाशव्यापी प्रकाश से वर-वधू को नये सिरे से वरण किया। रोग-जर्जर चेहरे में गहरी धँसी दो सुंदर, विशाल आँखों से बिनी ने मानो प्रथम बार दुलहन के घूँघट-पट हटाये और इस जगत् से उसका प्रथम साक्षात् हुआ।

रेलयात्रा भी उसकी यह प्रथम ही थी। ये सारी नवीनताएँ उसके मन को नयी स्फूर्ति दे रही थीं। उसका उल्लास उसके क्षीण शरीर के भीतर से मानो उबला पड़ता था। जब कोई भिखारी करुण स्वर में माँगता हुआ आता, तो बिनी का सदय मन काबू में नहीं रहता और वह अपना बक्स खोल कर रुपया, अठन्नी, चवन्नी, जो-कुछ भी पाती, पूरे बालोचित उल्लास से उस ओर फेंक देती और लगता, जैसे किसी दूरस्थ मुक्ति की अनुभूति उसने पा ली है। आज का कालयोग, वास्तव में, उसके लिए मुक्ति का पर्वोल्लास ही था और इसकी समुचित सार्थकता बिना आसपास के सारे जगत् का दुःख मेटे उसकी भावना में कैसे सिद्ध हो जाती। जहाँ तक उसकी दृष्टि जाये, वहाँ तक तो कम-से-कम दुःख-दैन्य के चिह्न नहीं ही रहने चाहिए। जगत् के इस भग्नप्राय घाट के तट से आज हम दोनों जैसे अनंत प्रेम के स्रोत में बहते हुए आनंद-यात्रा को निकल पड़े थे। अतः यह स्थिति के आदेश का पालन ही था कि, वह अपने दान और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाक्षिण्य से इस प्रेम-यात्रा को सारे जगत् के कल्याण से पूरित कर दे। बिनी को आज स्पष्ट अनुभव हो रहा था कि, विश्व के सारे बंधन उसके लिए भग्न हो गये हैं। दायें-बायें, ऊपर-नीचे, कहीं भी सास-ससुर, जेठ-जेठानी की चौकसी नहीं है—केवल वह है और मैं हूँ एवं सारा विश्व हम दोनों की मुक्ति के इस आनंद में सहयोग दे रहा है!

विलासपुर स्टेशन पर गाड़ी बदलनी थी। दूसरी गाड़ी के लिए छः घंटे ठहरना था। बिनी के लिए मुझे यह असुविधाजनक लगा। किंतु बिनी को तो जैसे आज कुछ भी असुविधाजनक नहीं था। मेरी समस्या को अपने उत्साह से एक तरफ ठेलती हुई वह बोली—"रुक जायेंगे छः घंटे। फिक्र काहे की! कुछ देखेंगे ही।" उसका मन तो सुख के शतदल में खिल रहा था। पथ की वंशी आज पग-पग पर उसे हर्ष और उल्लास से चंचल किये हुई थी। अतः रास्ते में रुकने या जल्दी ठिकाने पर पहुँचने में उसके लिए कोई अंतर नहीं था।

पुलक इतना विरल भी होता है—वर्षा के अंकुरों की तरह सहस्र-सहस्र रूपों में फूट निकलनेवाला! प्रतीक्षालय का दरवाजा खोल कर वह मुझसे कहती—"देखिये, उधर देखिये, वह एक्के का घोड़ा कैसा मदमाता चला जा रहा है! और ...उधर देखिये, वह बछिया! कैसी कोमल...कितनी सुंदर! देखिये तो, उसकी माँ की आँखों में कैसा प्यार छलक पड़ रहा है। और देखिये, उन पेड़ों के पास वे छोटे-छोटे मकान। लगता है, वहाँ स्टेशन के बाबू रहते होंगे। अहा, कितने सुखी हैं ये, जो स्टेशन के इतने पास रहते हैं!"

यशोदा मैया

[चित्र : कालीघाट के पाट का वर्गे-निर्मित रेखाचित्र]

मुझे उसके इस वाचाल व्यवहार से बड़ा भय लग रहा था। मैं उसे आराम करने देना चाहता था! अतः एक बेंच पर उसका बिस्तर बिछा कर मैंने उससे कहा—"अपने को ज्यादा थकाओ मत। आराम से लेट जाओ।" मैं बाहर निकला और बुक-स्टाल से एक उपन्यास खरीद लाया। कई पैसेंजर और मालगाड़ियाँ प्लेटफार्म से निकल गयीं। काफी देर बाद, पीछे नजर फेरी, तो देखा कि, बिनी प्रतीक्षालय का दरवाजा खोले खड़ी है। छूटते ही बोली—"सुनो, एक बात कहनी है!"

वह मुझे अंदर ले गयी। देखा, एक पछाँही स्त्री वहाँ खड़ी है। मुझे देख कर वह बोली—"सलाम, बाबूजी!" बस, इतना ही और फिर धीरे से बाहर निकल कर एक किनारे खड़ी हो गयी।

उसकी तरफ इशारा करके बिनी ने कहा—"इसका नाम रुक्मिणी है। इसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पति भी यहीं रेलवे में कुली है। सामने कुएँ के पास के क्वार्टर में ये लोग रहते हैं। कई साल हुए, इनके गाँव में अकाल पड़ा था। जमींदार भी बड़ा अत्याचारी था। सात बीघा जमीन छोड़ कर दोनों यहाँ भाग आये।"

बीच में ही बात काट मैंने सस्मित कहा—"तुम्हारी इस रुक्मिणी की कहानी बड़ी लम्बी मालूम होती है— संक्षेप में कह डालो, कहीं गाड़ी न आ जाये।"

बिनी जैसे नाराज हो गयी। आँखें नचाती हुई कृत्रिम क्रोध से बोली—"नहीं, नहीं, मैं संक्षेप में कभी नहीं बताऊँगी। आज भी क्या आफिस जाने की जल्दी है। आज तो मुझसे पूरी बात करनी होगी।"

उपन्यास पढ़ने का सारा मजा किरकिरा हो गया और बिनी के मुँह से रेल के कुली की लम्बी कहानी सुननी ही पड़ी। तत्व की बात कहानी के अंत में ही सुनने को मिली। काफी खर्चीली बात थी। कुली की लड़की का ब्याह होनेवाला था, उसके गहने बनवाने थे। गहनों के लिए रुपये चाहिए थे, जो कुली-दम्पति के पास नहीं थे। इस चिंता से रुक्मिणी सूख कर काँटा हो गयी थी। कहानी सुना कर... स्थिति समझा कर बिनी ने कहा—"कम-से-कम पच्चीस रुपये तो उसे देने ही होंगे।"

बिनी के सरल औदार्य से मेरी तो बुद्धि जैसे सुन्न हो गयी। न-जाने कैसी औरत के प्रति ऐसी यह दयार्द्रता...बिनी के भोलेपन को मैं क्या कहता! उसे एकदम पच्चीस रुपये दे देने का आग्रह क्या विचित्र नहीं था? टालने के लिए मैंने बिनी से कहा—"अभी छुट्टे रुपये नहीं हैं। सौ रुपये का नोट है।"

बिनी वैसे ही सरल क्रोध में बोली—"तो क्या हुआ? इतना बड़ा स्टेशन है। सौ रुपये का नोट कहीं भी भुनाया जा सकता है!"

"अच्छा, मैं भुना कर दे दूँगा।" बिनी से ऐसा कह कर मैं उस औरत को अपने साथ दूर ले गया और उसे जी-भर डाँटा—"तुम भोले-भाले यात्रियों को ठगने का पेशा करती हो। मैं स्टेशन-मास्टर से अभी तुम्हारी शिकायत करता हूँ। तुम्हारी नौकरी न छुड़ाऊँ, तो कहना।"

वह रोने लगी और क्षमा-याचना के लिए मेरे पैरों पर गिर पड़ी। मैंने उसके हाथ में दो रुपये थमा दिये।

× × ×

वायु-परिवर्तनार्थ बिनी दो महीने तक रही; किंतु निरंतर परिचर्या करते रहने के बाद भी मैं उसके प्राणों की रक्षा करने में असमर्थ रहा। जीवन-मंदिर को अंधेरा करके दीप बुझ गया।

बिनी ने अपने अंतिम क्षण में मेरे पैरों की धूल अपने सिर पर रखते हुए कहा था—"इस जीवन में भले ही सब-कुछ भूल जाऊँ; मगर इन अंतिम दो महीनों की याद अनंतकाल तक मेरे हृदय में उज्ज्वल होकर अमिट बनी रहेगी। ये मेरे अंतिम दो मास तुमने सुधा से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भर दिये। विह्वल मन से यह स्मरण करती मैं विदा हो रही हूँ।"

बिनी चली गयी। अपनी झोली को भरी मानती हुई परम सुख की अनुभूति के सहारे पूर्णानंद के मार्ग में आगे बढ़ गयी। मगर मैं? मैं क्या करूँ? हे अंतर्यामी! बिनी को मैं कैसे कहता कि, इन्हीं दो महीनों के भीतर मैंने उसकी करुणा—अंतरस्थ दाक्षिण्य—के साथ छल किया है? और वह भी केवल पच्चीस रुपये के लिए! आज यदि मैं रुक्मिणी को लाख रुपये भी दे दूँ, तो उस धन से मेरा दामन निष्कलंक नहीं हो सकेगा। बिनी को क्या मालूम था कि, जिन अंतिम दो महीनों की सुधा-स्मृति वह अपने साथ ले गयी है, उसके अंतराल में मेरा छल भी कुंडली मार कर बैठा है!

जैसे ही विलासपुर स्टेशन आया, मैं उतर गया। मेरी आत्मा को चैन नहीं था—मैं रुक्मिणी की खोज में निकल पड़ा। मैंने एक-एक करके लोगों से पूछना आरंभ किया—"रुक्मिणी कहाँ है?"

जो प्रश्न सुनता, वही चकित भाव से मेरी ओर देखता रह जाता। अंत में, बहुत याद करने पर जब मैंने बताया कि, वह किसी झमरू कुली की स्त्री थी, तो कुलियों ने बताया, वे अब यहाँ नहीं रहते।

स्टेशन के बड़े बाबू के पास जाकर मैंने पूछा—"क्या आप बता सकते हैं कि, झमरू कुली और उसकी स्त्री, दोनों कहाँ चले गये?" वह बिगड़ उठे—"जाओ, जाओ, काम करने दो—कौन है यह झमरू कुली?"

मैंने टिकट बाबू से भी पूछा। मेरी चिंता से शायद उन्हें मुझ पर रहम आ गया। वे हँसते हुए बोले—"एक महीने से वे यहाँ नहीं हैं। वे या तो दार्जिलिंग चले गये हैं, या अराकान!"

मैं जितना ही पूछता था, उतना ही लोग बिगड़ बैठते थे।

मगर मैं कैसे उन लोगों के गले उतारता कि, जिस आदमी से जगत् में किसी का कोई काम नहीं है, उसी से आज मेरा सबसे बड़ा काम है। जो छल मैंने किया है—उसके बोझ को केवल वही उतार सकता है। बिनी ने जो यह अंतिम वाक्य कहा था—"ये मेरे अंतिम दो महीने तुमने सुधा से भर दिये", उसकी स्मृति तब तक मेरी छाती पर शूल की शिला बन कर पड़ी रहेगी, जब तक रुक्मिणी उसे वहाँ से उतार नहीं लेती!

★

उस दिन मृत्यु मेरे पास आ गयी और घूँघट उठा कर सीधे मेरी आँखों में घूरने लगी। मैं काँप उठी; किंतु मन ने कहा—"मूढ़, मरनेवाले को मरने से डर क्यों? मृत्यु तो प्यार की परिसीमा है, जहाँ प्यार कभी अतृप्त नहीं रहता।" मन की धृष्टता पर मुझे क्रोध आ गया—"चुप रह, वाचाल! हम दोनों का परिचय आज का नहीं, काल के जन्म से भी पुराना है!" —'शबनम'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नसीब

अहमद नदीम कासिमी-लिखित एक उर्दू-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

रजिया की जवानी तो जैसे अपने अब्बा की मौत के इंतजार में थी! कम-से-कम उसकी माँ को तो ऐसा ही महसूस हुआ। मातम से फारिग होने के बाद, जब माँ-बेटी ने बड़े कमरे की दरी लपेटी और उसके हाशिये के साथ चारों तरफ लगे पीकों के दाग धोने बैठीं, तो रईसा बेगम अपनी बेटी को देखती रह गयीं।

उस वक्त रजिया ने हफ्ते-भर के चिक्कट कपड़े पहन रखे थे। लट्ठे की शलवार के पाँयचे बिल्कुल काले हो रहे थे, जम्पर का दामन साफी की तरह मैला हो रहा था और बालों ने बिखर कर माँग को गायब कर दिया था। वह एक धज्जी भिगो-भिगो कर दरी के हाशिये पर रगड़ रही थी और हर रगड़ के साथ उसकी आस्तीन कोहनी तक हट जाती थी– मैले हाथों के पीछे उसकी संदली कलाई चमक-चमक जाती थी। रईसा बेगम दूसरे कोने में भीगी हुई धज्जी लिये बैठी थीं। जब पहली बार रजिया के बाजू का कौंदा लपका, वह जरा-सी चौंकीं और फिर रजिया की तरफ यूँ देखने लगीं, जैसे उसे पहचानने की कोशिश कर रही हों! "अच्छा, तो रजिया बेटी! यह तुम हो! तुम्हारी झुकी हुई आँखों में जुगनू-से कैसे झाँक रहे हैं? ठीक है, अब तुम सत्रह साल की हो रही हो और पड़ोस में सत्रह साल की उरूसा तीन बच्चों की माँ बन चुकी है। मगर बेटी! अभी कल तक तो तू गुड़िया खेल रही थी! यह एकाएक तुम्हें क्या हो गया, रजिया बेटी? लेकिन जब बाप की मौत बेटी की जवानी का इंतजार नहीं करती, तो बेटी की जवानी को बाप की मौत क्यों रोके? शौहर की मौत की तरह, बेटी की जवानी भी बेवा का नसीब है!"

"मेरे नसीब!"–रईसा बेगम माथे पर चटाख से हाथ मार कर उबल-उबल कर रोने लगीं और रजिया धज्जी फेंक कर माँ की तरफ लपकी। रोती हुई बेटी ने, बिलखती हुई माँ को अपने बाजुओं में ले लिया और पुकार-पुकार कर कहने लगी–"मत रोइये, अम्मी! इस तरह तो आपकी बीनाई (देखने की ताकत) भी आँसुओं में बह जायेगी!"

रोती हुई माँ जैसे सोच में पड़ गयी। बेटी के बाजू कितने लम्बे थे कि, उन्होंने पूरी माँ को घेरे में ले लिया था। बेटी के बदन में कितनी गर्मी और साँसों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसी शोले की-सी लपक थी ! माँ ने बेटी को फिर गौर से देखा, जैसे पूछ रही हो—"बेटी, तू अब तक कहाँ थी ?"

माना कि, बेटी के पैदा होते ही माँ के दिमाग में रिश्तों की गिरहें बँधने-खुलने लगती हैं। रईसा बेगम ने भी अपनी रजिया के लिए रिश्तों का एक दस्ता तैयार कर रखा था; मगर मुश्किल यह थी कि, वह अब तक सहज-सहज चल रही थी; क्योंकि शौहर के बाजू का सहारा लेकर सहज-सहज चलने में ही मजा आता है। वह सोचती थीं—"हामिद बुरा नहीं; मगर चार सौ की तनख्वाह भी कोई तनख्वाह है ? चार सौ में तो रजिया का एक जोड़ा भी नहीं आयेगा। शकूर भी बड़ा खूबसूरत लड़का है; मगर खूबसूरती को कोई कहाँ तक बैठा चाटा करे। और, फिर रजिया क्या कम खूबसूरत है ? दुनिया में उसकी-सी आँखें कोई दिखा दे तो ! अल्लाहकसम, अपनी आँखें निकाल कर उसके हाथों में थमा दूँ। और, फिर रजिया ने तो अभी एफ०ए० ही पास किया है, बी०ए० कर लेगी, तो रिश्ते अपने-आप जख्मी कबूतरों की तरह फड़फड़ा कर उसके कदमों में ढेर होने लगेंगे।"

और, अब खुद रईसा बेगम ने शहर के उन सब लड़कों की माँओं के कदमों में जख्मी कबूतर की तरह फड़फड़ा कर ढेर हो जाना शुरू किया, जो रजिया के अब्बा की जिंदगी में रईसा बेगम के जहन में भर्ती के उम्मीदवारों की तरह कतार बाँधे खड़े रहते थे। मगर किसी ने यह भी तो न पूछा कि, रजिया की तबीयत कैसी है ? सबने रजिया की माँ को बेवा की हैसियत से देखा। यह किसी ने न देखा कि, बेवा माँ भी होती है और माँएँ अपनी बेटियों के रिश्तों की डालियाँ सजा कर नहीं फिरा करतीं। यह काम तो बेटों की माँओं का होता है ! और, यहाँ तो बेटेवालियों का बर्ताव कुछ ऐसा हो रहा था कि, जैसे रईसा बेगम के शौहर के साथ उसकी बेटी भी मर गयी है !

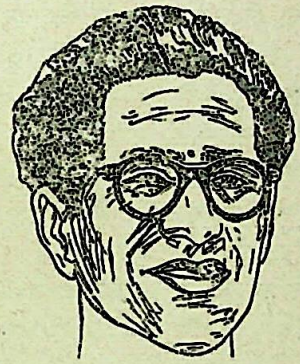

अहमद नदीम कासिमी

[चित्र : असगर बेग-निर्मित एक स्केच]

"हाँ, बहन रईसा बेगम—" सब कहतीं—"इसीलिए तो बड़ी-बूढ़ियाँ हर नमाज के बाद दुआ माँगती थीं कि, ऐ अल्लाह मियाँ, हमें इस जहान से हमारे सरताज से पहले उठा लीजियो, हमें वह फूल न बनने दीजो कि, जिसके आस-पास बुलबुलें नहीं मँडलातीं; बल्कि जिन पर चिड़ियाँ बीटें कर जाती हैं।" और, हर घर से रईसा बेगम यह कहती हुई उठतीं—"अब चलूँ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहना, भाँय-भाँय करते घर में रजिया बैठी हुई घबरा रही होगी।"

लेकिन सिर्फ एक घर में यह तरकीब कामयाब हुई। "अरे बैठो भी, रईसा बेगम! कहाँ चलीं? ऐसी भी क्या जल्दी? जैसे यह बताने आयी हो कि, हम जा रहे हैं।" रईसा बेगम ने घुटनों पर हाथ रख कर आहिस्ता-आहिस्ता उठते हुए कहा—"बस, चलूँ बहना, वहाँ उस वीराने में मेरी रजिया बेटी बैठी घबरा रही होगी।"

"अरी हाँ, वह रजिया बेटी"—बानो बोली—"अल्लाह रखे, वह तो अब पूरी सयानी होगी। मैंने तो उसे साल-भर पहिले अशरफुन्निसाँ के घर में देखा था। खुदा नसीब करे, कैसी है वह? अब्बा की मौत ने तो उसे निचोड़ लिया होगा।"

घुटनों पर हाथ रख कर उठती हुई रईसा बेगम अब धीरे-धीरे बैठ चुकी थीं, बोलीं—"ओह, न पूछो, मोम की मरयम हो रही है, मेरी जान।"

"अब तो उसकी सारी फिक्रें तुम्हीं को करनी होंगी।"—बानो बोली।

"हाँ बहना, और कौन है उसका?" रईसा बेगम अब फिर इत्मीनान से बैठ चुकी थीं—"बस सिर्फ इतना-सा काम बाकी है कि, बात कहीं तय पा जाये। दहेज तो उसका दो साल पहले से तैयार रखा है—नेकलेस से लेकर सिंदूर तक। बस, इतना-सा है कि, कहीं नसीब जागें।"

"नसीबों ने तो इस जमाने में भंग पी रखी है,! क्या बताऊँ, बहन!"—बानो बोली—"यह हमारे पड़ोस की आतिफा को ही देखो, बाप की इतनी बड़ी दूकान है कि, चाहो तो, ताँगे-समेत अंदर चली जाओ; पर पाँच साल तक माँ-बाप कान धरे बैठे रहे कि, दरवाजे पर कोई दस्तक दे, तो उठें। जब कोई रास्ता भूल कर भी न आया, तो बेटी को उठा कर एक स्कूल-मास्टर के पल्ले बाँध दिया। और, अब वह बेचारी उसके घरौंदे में बैठी जुड़वाँ बच्चे पैदा कर रही है।"

"तुमने अपने अनवर के लिए क्यों न पूछा?"—रईसा बेगम ने टोह लेनी चाही।

लेकिन उल्टे बानो उसकी टोह तक पहुँच गयी और मटक कर बोली—"उसने तो दर्जन-भर लड़कियों में से एक चुन भी ली है। उसके अब्बा हज से वापस आ जायें, तो अगले चाँद की चौदहवीं तक...।"

"मुबारक हो—" रईसा बेगम ने ऐसे लहजे में कहा, जैसे कह रही हों—"लानत हो" और घुटनों पर हाथ रखे बगैर उठ खड़ी हुईं— "अल्लाह का शुक्र है, फूले-फले, तरक्की करे।"

"आमीन—" बानो ने कहा—"बस बहना, चलीं?"

"हाँ बहना, चलूँ।"

"अच्छा, तो खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज।" रईसा बेगम ने कहा और रास्ते-भर सोचती आयीं कि, ठीक ही तो कहा बानो ने, सचमुच, अब हमारा खुदा ही हाफिज है।

बरामदे में रजिया पुराना अलबम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोले बैठी थी।

"अम्मी"—उसने कहा—"यह जो लाहौर-वाली खाला जुलेखा हैं, जो आपसे लिपटी खड़ी हैं, यह अच्छी सहेली हैं आपकी कि, अब्बा के इंतकाल पर हमदर्दी का एक कार्ड भी न लिखा!"

"तो हमने कहाँ लिखा था उसे।"—रईसा बेगम ने कहा, फिर कुछ सोच कर बोलीं—"उसे पता चलता, तो खत क्या लिखती, खुद पहुँचती। आ न सकती, तो सलीम को भेज देती; पर उसे कोई बताता भी तो।"

"अकबर मामू ने लाहौर में सबको तो बताया था। उस रोज कह नहीं रहे थे कि, इधर उन्हें तार मिला और उधर वह कार लेकर सब जाननेवालों को खबर कर आये थे।"

"जुलेखा का नाम नहीं लिया था उसने। मैंने उससे सबके नाम पूछे थे; मगर जुलेखा का नाम कहीं नहीं आया।"

"आपने भी तो याद नहीं दिलाया"—रजिया ने कहा।

"हाँ, मेरे उजड़े जहन से भी उतर गया। बरसों हो गये देखे हुए। उस वक्त सलीम की मसें भीग रही थीं। एफ० ए० में पढ़ता था—अब एम० ए० में तो जरूर होगा..." फिर जरा रुक कर बोलीं—"बेटी, जरा कागज-कलम तो उठा ला। अकबर को लिख दूँ कि, वह जुलेखा को जाकर बता दे। मैं तो जुलेखा का पता ही भूल गयी हूँ।"

खत लिख कर उन्होंने बुर्का ओढ़ा और नुक्कड़ पर के 'लेटरबाक्स' में डाल आयीं।

तीसरे रोज किसी ने दरवाजा खट-खटाया। रजिया ने जाकर खोला, तो चिल्लायी—"अकबर मामू आये हैं, अम्मी!"

मगर रईसा बेगम ने कोई ताज्जुब नहीं जाहिर किया। बड़े सुकून से बोलीं—"हाँ-हाँ, आये हैं, तो ठीक है। मैंने ही तो बुलाया था।"

"क्यों बुलाया था?"—अकबर ने कमरे में आते हुए कहा—"बुलाया था, तो साथ ही यह भी लिख देतीं कि, क्यों बुलाया है। अब तुम दोनों को जीता-जागता देखकर जान-में-जान आयी है, वर्ना कैसे-कैसे भयानक नक्शे आँखों के सामने आते रहे। यह 'फौरन पहुँचो' के अलफाज हैं तो अलफाज ही; मगर लगे पिस्तौल की गोलियों की तरह! घर-भर का कलेजा हिला दिया। तोबा है!" वह दोनों हाथों में सिर दबा कर पलंग पर बैठ गया।

"बुलाया है, तो यूँ ही नहीं—"रईसा बेगम बोलीं—"कोई बात है, तभी तो तुमको बुलाया है।"

"क्या बात है?"

"अब तुम्हें नहीं बुलाऊँगी, तो और किसे बुलाऊँगी?"

"ठीक है, मैं यह कब कहता हूँ! पर बाजी, यह भी तो बताओ, खैरियत तो है न? बात क्या है?"

कुछ देर इधर-उधर की बातें करके अकबर ने फिर पूछा—"भई बाजी, मुझे यह भी तो बताओ कि, बुलाया क्यों था?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बताती हूँ, बताती हूँ।"—रईसा बेगम ने रजिया की तरफ कुछ इस तरह देखते हुए कहा कि, वह उठ खड़ी हुई।

"तू कहाँ चली रज्जो?"—अकबर ने रजिया से पूछा।

"मामूजान, मैं जरा उधर...।"

"जाने दो"—रईसा बेगम बीच में ही बोल उठीं—"जाओ बेटी, मामू के लिए चाय तैयार करो।"

रजिया चली गयी, तो उन्होंने अकबर से कहा—"देखो अकबर, रजिया के अब्बा के मरने के बाद मुझे दो काम करने हैं। एक तो रजिया का ब्याह और दूसरा अपनी मौत का इंतजार।"

"बा... "

"सुनो तो, मुझ-जैसी बेवाएँ, जिनके कोई बेटा नहीं होता, यही तो किया करती हैं। और कर ही क्या सकती हैं! तो बात यह है कि, रजिया के रिश्ते का इंतजाम करना है हम लोगों को।"

"यह तुम मुझे बता रही हो, बाजी!" अकबर ने बहन का हाथ पकड़ लिया—"मैं भी तो रुखसाना और दुरदाना का बाप हूँ और वे रजिया से पाँच-पाँच और सात-सात साल बड़ी हैं।"

"फिर?"

"फिर यह कि, बड़ा मुश्किल है। मुझे देखो, लाहौर में रहता हूँ। इतना बड़ा कारोबार है, बँगला है, मोटर है; मगर 'दामाद' नहीं है। सब कहते हैं, लड़कियाँ ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं हैं।"

"पर रजिया ने तो एफ० ए० पास कर लिया है।"

"पर वह सियालकोट में रहती है न! लाहौर या कराची में होती, तो एक दिन भी न लगता।"

"तो मैं लाहौर में उठ आऊँ? मैं तो इस काम के लिए दुनिया के आखिरी किनारे तक जाने को तैयार हूँ।"

"आ जाओ!"—अकबर ने कहा।

"सुनो, एक रिश्ता है—"रईसा बेगम ने अचानक कहा और अकबर की साँस जहाँ थी, वहीं रुक गयी।

"कहाँ?"—अकबर ने पूछा।

"लाहौर में!"

"लाहौर में?"—अकबर ने यूँ पूछा, जैसे लाहौर में रिश्ते का मौजूद होना मुमकिन ही न हो।

"हाँ, हाँ, वह मेरी सहेली है न! तुम तो उसे जानते हो, जुलेखा!"

"हाँ, जानता हूँ।"

"उसका बेटा, सलीम।"—रईसा बेगम ने मुस्करा कर कहा।

"अरे हाँ-हाँ!"—अकबर भी जरा मुस्कराया।

अब रईसा बेगम इत्मीनान के साथ-धीरे-धीरे बोलने लगीं—"कुछ इतने अमीर भी नहीं हैं कि, नखरे करने लगें। सीधा-सादा दरमियानी घराना है। और फिर, जुलेखा के साथ मेरा इतना पुराना ताल्लुक है कि, वह इन्कार न कर सकेगी। तुम्हें इसलिए बुलाया है कि, मैं कहाँ बुढ़ापे में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारी-मारी फिरूँगी। फिर, अगर तुम्हारे साथ चली भी जाऊँ, तो रजिया को कैसे अकेली छोड़ूँ? उसे साथ ले जाऊँ, तो यह कैसे सुनूँ कि, रिश्ते की खातिर बेटी को साथ लिये फिरती है। सो, तुम यह करो कि, वापस जाकर स्टेशन से सीधे जुलेखा के घर पहुँचो और उससे सीधे कह दो कि, रईसा ने यूँ ही कहा था।"

"ठीक है।"—अकबर बोला।

चाय पीकर अकबर वापस लाहौर चला गया। उधर माँ-बेटी रात गये तक एक-दूसरे से झेंपी-झेंपी फिरती रहीं।

"जाग रही हो, मेरी रज्जो?"— आखिर रईसा बेगम ने खामोशी को तोड़ा।

"हाँ अम्मी, पढ़ रही हूँ।"

"मैं आज बहुत खुश हूँ!"— रईसा बेगम ने राज फाश कर ही दिया।

"शुक्र है!"—रजिया ने कहा।

फिर खामोशी छा गयी।

इसी हालत में एक दिन गुजरा, एक हफ्ता गुजरा और एक महीना गुजर गया। आखिर, रईसा बेगम ने फिर अकबर के नाम एक लम्बा खत लिखा।

तीन-चार दिन के बाद डाकिये ने दरवाजा खटखटाया। रजिया दरवाजे की तरफ लपकी और खत लाकर माँ के हवाले कर दिया। "अकबर का मालूम होता है—"माँ ने कहा। "हाँ, उन्हीं का लगता है—"रजिया ने कहा और चुपके से कमरे से खिसक गयी।

रईसा बेगम उसे जाती देख कर मुस्करायीं, लिफाफा फाड़ा। आधा खत पढ़ने तक यह मुस्कराहट उनके होंठों से चिमटी रही; फिर एकाएक चिराग की तरह बुझ गयी। रईसा बेगम एक चीख मार कर कमरे से बाहर निकल आयीं, उधर से रजिया भी आयी और रईसा बेगम ने खत उसके हाथ में देकर पूरी ताकत से कहा—"इसे पढ़ो, ऊँचा-ऊँचा पढ़ कर सुनाओ, सारे मुहल्ले को सुनाओ, दुनिया को सुनाओ।"

"अम्मी!"—रजिया ने उनसे लिपटते हुए कहा; मगर रईसा बेगम ने उसे अपने-आपसे जैसे नोच कर अलग कर दिया और डपट कर कहा—"पढ़ो!"

रजिया ने पढ़ना शुरू किया। उसके मामू अकबर ने अपनी 'प्यारी बाजी' को खबर दी थी—"....अजीब इत्तफाक हो गया। मैं तुम्हें खत लिखता, तो कैसे लिखता? हुआ यह कि, मैं अभी बहन जुलेखा से इधर-उधर की ही बातें कर रहा था कि, उसने फट-से अपने सलीम के लिए मेरी रुखसाना का रिश्ता माँग लिया। मैं हैरान कि, क्या करूँ? फिर सोचा, रुखसाना भी तो तुम्हारी ही बेटी है और रजिया से सात साल बड़ी भी है। आज रुखसाना के नसीब जागे हैं, तो कल रजिया के भी जरूर जागेंगे। सो, बात वहीं तय पा गयी। १५ रजब निकाह की तारीख तय हुई है, तुम एक हफ्ता पहले पहुँच जाना। रजिया को भी साथ लेती आना। यहाँ दो-तीन लड़के मेरी नजर में हैं!—दुआ का तालिब, अकबर"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

પાલદ્વાની

दक्षिण-अफ्रीका-निवासी पोपटलाल पंचाल-लिखित एक गुजराती कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

मेरे सारे प्रयत्न असफल हो गये। समझाने की कितनी कोशिश की; पर सतीश की माँ मानी ही नहीं।

बात यह थी कि, आज छः रोज से सतीश लापता था। लापता इसलिए कहता हूँ कि, उसके स्वेच्छा से भाग जाने का कोई कारण न था। यों मेरे मन में एक शंका-सी अवश्य थी। जिस दिन वह लापता हुआ था, उससे एक दिन पहले पड़ोसी के लड़के को मारने के लिए मैंने उसे डाँटा था। इससे पूर्व भी कई बार वह अपनी शिकायत के लिए डाँट सुन चुका था। अतः इसी डाँट को अपना अपमान मान कर बारह साल का सतीश घर छोड़ दे, यह मानने को मेरा मन तैयार न था।

लेकिन सतीश की माँ के मन में यही बात घर कर गयी थी। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा था, उसकी यह धारणा रात्रि के बढ़ते अंधकार की तरह दृढ़ होती जा रही थी। बच्चों को बहला कर उठा ले जाने के दो-तीन समाचार अखबारों में उन दिनों छपे थे। मैंने सतीश की माँ का ध्यान उस ओर दिलाया; पर इससे उसकी व्याकुलता और बढ़ ही गयी।

वह न कुछ खाती-पीती थी, न किसी से बोलती ही अधिक थी। बस, आँखों से सावन के मेह बरसते रहते। पाँच रातें गुजर गयीं; किंतु नींद कहाँ? सतीश आखिर हमारी इकलौती संतान था। कई व्रत, उपवास और मिन्नतों के बाद भगवान् ने मेरी पत्नी की गोद भरी थी।

एक पुलिस-अधिकारी होने के कारण, अथवा किसी अन्य कारण से ही सही, मैं उसकी माँ की तरह उद्भ्रांत नहीं हुआ था। सतीश की खोज के लिए सभी सम्भव उपायों का मैं अवलम्बन कर रहा था। पुलिस की जाँच तो जारी थी ही, अखबार में विज्ञापन भी दिये गये थे और सम्बंधियों तथा मित्रों को अलग से मैंने पत्र लिखे थे।

लेकिन जब छः दिन बीतने पर भी सतीश का पता न लगा, तो मेरा मन भी अधीर होने लगा। सतीश की माँ की चिंता की क्या सीमा! वह उसी प्रकार पागलों-सी 'सतीश' की रट लगाये हुई थी।

आखिर, उसे सांत्वना देने के लिए कहा—"तुम व्यर्थ ही रोती रहती हो। हमारे पड़ोसी को सतीश की कम चिंता नहीं है। कल वे जानकीदास महाराज से पूछने गये थे कि, सतीश कब तक वापस आयेगा? तुम जानती हो कि, महाराज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने क्या कहा ?"

और, उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही मैंने कहा—"महाराज ने कहा है कि, लड़का दक्षिण दिशा में गया है। भगवान् पर भरोसा रखिये। एक-दो दिन में वह स्वयं चला आयेगा।"

परंतु परिणाम विपरीत ही हुआ। सतीश की माँ झल्ला कर बोली—"चला आयेगा ? किसके लापता बच्चे स्वयं चले आये हैं, जो हमारा बच्चा चला आयेगा ?"

अब कोई रास्ता नहीं। कुछ देर चुप रह कर मैंने कहा—"तो मैं आज रात की गाड़ी से ही जाता हूँ। बड़ौदा, सूरत और बम्बई तक ढूँढ़ आता हूँ।"

उसे सहसा विश्वास न हुआ। इसी बात की तो वह रट लगाये हुई थी। पागलों-सी आँखों में अविश्वास भर वह मेरी ओर देखती रह गयी।

मैं क्या बोलता ? मौन बैठा था कि, अचानक दरवाजा खटखटाने की आवाज आयी। कौन हो सकता है, सोच ही रहा था कि, 'माँ' पुकारना भी सुनायी पड़ा। सतीश ? लेकिन ऐसे मौकों पर दिल तरह-तरह की शंकाएँ भी तत्काल ही पैदा कर देता है। हाँ, माँ की बात और है। उसका ममतामय दिल शंकाओं से यों भय नहीं खाता। अतः मैं तो उलझता ही रहा और वह दरवाजे की ओर दौड़ गयी।

दरवाजा खुला। सचमुच सतीश था। 'माँ' कह कर तुरत गले से लिपट गया।

मैं भी आगे बढ़ आया। तभी, सतीश के सिर पर सस्नेह हाथ फिराते-फिराते दरवाजे के बाहर नजर गयी। देखा, श्वेत परिधान में एक स्त्री खड़ी थी।

नयी चूनर

[चित्र : रामगोपाल विजयवर्गीय - निर्मित एक रेखाचित्र]

वह मौन खड़ी माँ-बेटे के इस प्रेम-मिलन को देख रही थी। उसके मुँह पर एक प्रकार के संतोष और प्रसन्नता की झलक थी! मेरी ओर उसने देखा भी नहीं।

मैं समझ ही न पाया कि, यह स्त्री कौन थी। सतीश के आगमन से उसका सम्बंध था भी, या किसी महिला-मंडल की ओर से, संयोग से, इसी समय चंदा लेने आयी थी ?

लेकिन कोई भी हो, उसे अंदर तो बुलाना ही चाहिए। और, मैंने उसे भीतर आने के लिए कहा—"आइये बहन, अंदर आ जाइये।"

इसी समय सतीश की माँ ने भी जैसे पहली बार उसे देखा। क्षमा-सी माँगती बोली—"माफ करना, बहन ! इसे पाकर मैं सब-कुछ भूल गयी थी। तुम ही मेरे सतीश को खोज लायी हो ?"

उसके बोलने के पहले सतीश ही बोल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठा—"हाँ, माँ! अनुसूया बहन ही मुझे बम्बई से यहाँ लायी हैं।"

"बहन, हम तुम्हारे बड़े आभारी हैं। भगवान् तुम्हें इस सत्कार्य का फल देगा।"

पहली बार वह बोली—"इसमें आभार व्यक्त करने की तो कोई आवश्यकता नहीं। मैंने तो केवल अपना कर्तव्य निभाया है।"

अनुसूया और सतीश की अचानक भेंट हो गयी थी। अहमदाबाद में, एक धनी सेठ के घर, बच्चों को सिलाई-कढ़ाई की शिक्षा देने के लिए अध्यापिका की आवश्यकता थी। इसी सिलसिले में अनुसूया अहमदाबाद आ रही थी। बम्बई में, वह स्टेशन आने के लिए बस-स्टैंड पर खड़ी थी कि, उसने सतीश को एक लड़के से बातें करते देखा। उनकी बातों से वह यह समझ गयी कि, सतीश को अहमदाबाद जाना है और उसके पास पैसे नहीं हैं। अचानक ही, उसके मन में शंका उठी कि, लड़के की सूरत कुछ पहचानी-सी है। उसने झट से समाचारपत्र उलट कर पिछले तीन-चार रोज से प्रकाशित होनेवाला विज्ञापन देखा। वह सतीश के सम्बंध में दिया हुआ मेरा ही विज्ञापन था। उसके बाद तो कोई दुविधा रही नहीं। उसने सतीश को अपने निकट बुला कर सारा हाल पूछ लिया। फिर उसे अपने साथ ही अहमदाबाद ले आयी।

सतीश की माँ तब तक चाय-नाश्ता ले आयी। चाय पीते हुए मैंने सहज शिष्टाचारवश अनुसूया से उसके 'इंटरव्यू' के विषय में दो-चार प्रश्न पूछ लिये।

चाय खत्म होने को आयी, तो सतीश पानदानी ले आया। इस पानदानी की भी कहानी थी। एक-दो साल पूर्व, जब मैं इलाहाबाद गया था, तब किसी निर्वासित की दूकान से यह खरीद लाया था। कश्मीरी बनावट की यह पानदानी केवल मेहमानों के लिए हमने रख छोड़ी थी।

पानदानी सामने रखते हुए मैंने अनुसूया से पान लेने का आग्रह किया और कहा—"जिन सेठ के यहाँ आप 'इंटरव्यू' देने जा रही हैं, उनसे मेरा अच्छा परिचय है। मैं फोन कर उन्हें आपके बारे में कह देता हूँ। आप निश्चित रहें, काम हो जायेगा; लेकिन 'इंटरव्यू' के बाद यहीं आइयेगा। शाम का खाना यहीं खाइये और लीजिये. . . ." विज्ञापन के अनुसार पुरस्कार के दो सौ रुपए उसकी ओर बढ़ाते हुए मैंने कहा—"अन्यथा मत समझियेगा, यह तो. . ." अचानक मैं चुप हो गया। वह तो तिपाई पर पड़ी पानदानी को एकटक देख रही थी। आँखों में आँसू थे। स्पष्ट था, उसने मेरी कोई बात सुनी नहीं थी।

क्षण-भर मौन रहा। उसकी एकाग्रता भंग करने का साहस न हो रहा था; लेकिन फिर भी पूछ बैठा—"क्या हुआ बहन? आपकी आँखों में आँसू?"

"जी!"— वह चौंकी, फिर भर्राये स्वर में बोली—"कुछ नहीं! ऐसी ही पानदानी मेरे पास भी थी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम मौन बैठे रहे और काफी आग्रह के बाद, बहते आँसुओं के बीच वह अपनी कहानी सुनाती गयी। भारत-विभाजन के पूर्व वह लाहौर में रहती थी। विवाह की प्रथम वर्षगाँठ पर उसके पति ने उसे एक कश्मीरी पानदानी भेंट में दी थी। विभाजन के बाद जो दंगे की आग भड़की, तो उन लोगों ने भारत आने का निश्चय किया। उसके पति ने उसे दिल्ली की गाड़ी में बैठा दिया। वह स्वयं दूसरे दिन सारा सामान लेकर आने-वाला था। पर वह आया नहीं। एक दिन दिल्ली में ही, लाहौर के उसके पड़ोसी ने उसके पति की मृत्यु की दुःखद सूचना दी; परंतु वह जाने क्यों, विश्वास न कर सकी। तभी से पति की खोज में वह भटक रही थी।

अपनी कहानी समाप्त करते हुए रुँधे गले से वह बोली—" उन्होंने पानदानी में मेरा नाम भी लिखवाया था !" और, पहली बार ही हमने पानदानी की नक्काशी में देखा। उसमें 'अनुसूया' साफ अक्षरों में लिखा था।

निर्णय करते देर न लगी। पानदानी उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला—"बहन ! पानदानी आप ले जाइये। यह आपकी ही है। साथ ही, हमारी ओर से यह तुच्छ भेंट भी स्वीकार कीजिये।" मैंने दो सौ के नोट बढ़ा दिये।

"नहीं, नहीं ! मैं कोई भेंट न लूँगी—" उसने दृढ़ स्वर में कहा—"यह पानदानी भी नहीं लूँगी।"

किसी के कुछ कहने के पूर्व ही अपनी कलाई-घड़ी देखती वह उठ कर खड़ी हो गयी—"मुझे देर हो जायेगी। मैं जाती हूँ।"

"लेकिन शाम का खाना यहीं खाइयेगा।"

"देखिये..." उसने विरोध करना चाहा; लेकिन सतीश की माँ कुछ भी सुनने को राजी नहीं थी। आखिर वह जाते-जाते शाम को आने का वचन देती गयी। किंतु रात के आठ बजने को आये, नौ भी बजे और हम अनुसूया की प्रतीक्षा में बैठे रहे। इतने में, सीढ़ी पर आहट सुनायी पड़ी। लपक कर मैं दरवाजे की ओर बढ़ा; किन्तु वहाँ नवलराम खड़ा था।

नवलराम हमारे मुहल्ले में ही रहने-वाला एक घड़ीसाज था। अभी-अभी ही आया था। कुछ दिन पहले वह मेरी घड़ी दुरुस्त करने ले गया था। एक दिन मैं बस-स्टैंड के समीप खड़ा था। वहीं नगरपालिका की जगह में उसने एक दूकान लगा रखी है। उसी ने मुझे नमस्ते करते हुए कहा था—"साहब, आपकी घड़ी में सुधार की जरूरत है। भला मेरे रहते आपकी घड़ी की यह हालत हो ? लाइये, लाइये—"कहते हुए उसने हाथ बढ़ा दिया था। पुलिसवालों को यह सम्मान प्यारा लगता है, सो मैंने भी कोई आपत्ति नहीं की थी।

नवलराम आज घड़ी लौटाने आया था। सतीश को देख, वह प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बोला—"देखिये साहब, आपकी घड़ी बिल्कुल ठीक कर दी मैंने।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अच्छा , देखूँ तो।"

सचमुच घड़ी नयी-सी लग रही थी।

"नवलराम, तुम वास्तव में, अच्छे कारीगर हो। बताओ, तुम्हारे लिए क्या करूँ मैं?"—घड़ी हाथ में बाँध कर मैंने पूछा—"कितने पैसे दूँ इसके?"

किंतु नवल ने उत्तर न दिया। वह उस पानदानी की ओर एकटक निहार रहा था। उसी ओर देखते हुए बोला—"साहब, यह पानदानी आप कहाँ से लाये हैं?"

मैं चौंका—कैसा अजीब संयोग! लेकिन सहसा ही मेरे सामने जैसे सब-कुछ स्पष्ट-सा हो गया। उसके प्रश्न का जवाब देने के बजाय उल्टा मैंने ही प्रश्न किया—"तुम कभी लाहौर में रहे थे?"

"जी हाँ!" वह चौंक कर बोला—"आपने कैसे जाना?"

मैं मुस्कराया—"पुलिस में काम करनेवाले को बहुत-सी बातों की जानकारी रखनी पड़ती है! अच्छा, यह बताओ, तुम्हारे घरवाले कहाँ हैं? तुम्हारी पत्नी?"

बस, उसकी आँखें बरस पड़ीं। उन्हीं गीली आँखों से बोला वह—"बड़ी दुःख-भरी कहानी है, साहब! जाने दीजिये इसे।"

लेकिन जब मैंने जोर दिया, तो वह बोला—"हम पहले लाहौर में रहते थे। विभाजन के समय मेरी पत्नी मुझसे बिछुड़ गयी। आपकी इस पानदानी की तरह ही मेरे पास भी एक पानदानी थी। अपने विवाह की प्रथम वर्षगाँठ पर मैंने अपनी पत्नी को भेंट में दी थी। किंतु अपनी मालकिन के साथ वह भी कहीं खो गयी।

"अच्छा साहब, इजाजत दीजिये, अब चलूँ।"

किंतु मैंने उसे रोक दिया—"ऐसी भी क्या जल्दी है, नवल! बुरा न मानो, तो आज हमारे साथ ही खा लो।"

इस अप्रत्याशित कृपा से वह चौंक पड़ा। मैंने मुस्कराते हुए कहा—"आज हमारे घर एक विशेष मेहमान आनेवाले हैं। क्या बुरा है, अगर तुम भी उनसे मिल लो। मेरी घड़ी मरम्मत कर तुमने जो मुझ पर....."

"बस! बस!"—वह बीच में ही लज्जित भाव से बोल उठा—"रहने भी दीजिये। आप तो व्यर्थ ही शर्मिंदा करते हैं।"

और हम भीतर जाकर बैठ गये। अब सिर्फ अनुसूया की ही प्रतीक्षा थी और ठीक साढ़े नौ बजे वह भी आ गयी। अंदर प्रवेश करते हुए बोली—"क्षमा कीजियेगा। मुझे थोड़ी देर हो गयी।"

नवलराम की पीठ दरवाजे की तरफ थी; किंतु आवाज कानों में पड़ते ही वह चौंक कर मुड़ा। दूसरे ही क्षण, दोनों अवाक् एक-दूसरे को देखते रहे। फिर बड़ी मुश्किल से नवल के मुख से निकला—"अनु! तुम?" अनुसूया दौड़ कर उसके पैरों से लिपट गयी। हर्ष से छलक आये आँसुओं को रोकने का तनिक भी प्रयास न करते हुए नवल ने उसे उठा कर अपनी बाँहों में समेट लिया और मैं होंठों पर संतोष की मुस्कान और खुशी से भीगी पलकें लिये कमरे से बाहर निकल आया।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नई चोली?

नहीं– लक्स में धुली है!

आप की रेशमी, सूती या नाज़ुक साटिन की सुन्दर चोलियाँ संभाल से धुलने के योग्य हैं। इन्हें सदा लक्स फ़्लेक्स से धोइये।
लक्स का मुलायम झाग सारा मैल बड़ी कोमलता से निकालता है।
अपने नाज़ुक कपड़ों की देखभाल कीजिये—घर में सदा लक्स रखिये।

LUX
For gentle washing of lovely clothes

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

LX. 141-50-55 HI.

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

For that Fascinating look

अन्य विशेषताएं:
साटन, क्रेप,
शानटूंग्स, प्लेन
तथा प्रिन्टेड,
बुश क्लाथ, साटन
और क्रेप फ्लावर
लाइनिंग क्लाथ,
टेपस्ट्री।

मोदी नाइलोन साड़ियां

- अधिकाधिक नवीन रंग तथा आकर्षक प्रिंट्स।
- सर्वोत्तम आयात किये गये माल से स्थायी चमकीले फिनिश में तुलनीय हैं।
- घर में आसानी से धोई जा सकती है तथा श्रिंक नहीं होती।

मोदी रेयन एण्ड सिल्क मिल्स, मोदीनगर (यू० पी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुसुम-कलियाँ

महाकवि वल्लत्तोळ मंत्र-द्रष्टा ऋषियों की श्रेणी में पूज्य हैं। उनकी काव्य-वाणी देवी सरस्वती के रस-विलास की नाद-व्यंजना है। मातृ-संस्कृति के दुःख-सुख, तिमिर-आलोक एवं त्याग-अनुराग के जो शब्दचित्र उनकी अनुभूति-प्रेरित लेखनी से प्रसूत हुए, वे सच्चे अर्थों में भावना-द्वार के मणिदीप हैं। 'नवनीत' के पाठकों के स्वाध्यायार्थ हम महाकवि के काव्य-कानन से चुन कर कुछ सुगंधित कुसुम, कुछ मोहक कलियाँ, के० सी० के० पणिक्कर के भाषांतर के साथ यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

★

महाभारत की रचना करने के बाद व्यासजी को मनस्तुष्टि का एक ऐसा आवेग आया कि, अपनी रचना पर वे खुद ही अत्यंत मुग्ध हो गये। भूर्जपत्र पर लिखे महाभारत के प्रत्येक श्लोक को वे उलट-पुलट कर देखते और आत्मगर्व का ऐसा अनुभव करते, मानो जो-कुछ उनके मानस ने व्यक्त किया, उसकी क्षमता अपौरुषेय है। अनायास ही उनकी मानस-दृष्टि ब्रह्मा की रचना पर जाती और जिस जीव-चराचर की सृष्टि प्रजापति के शिल्प-कौशल से हुई है, उसकी तुलना में वे अपने महाकाव्य की रस-सृष्टि को रखते और अप्रयास उनकी वाणी से फूट पड़ता—"बूढ़ा ब्रह्मा चौकड़ी भूल गया है— कितना अपूर्ण और रस-पंगु है उसका जगत्। हर जीव किसी-न-किसी अभिशाप से दग्ध, किसी-न-किसी पंगुता से दुर्बल। सही है कि, मनुष्य या जीव-सृष्टि के साथ समस्या की सीमाएँ रहनी चाहिए— कोई-न-कोई अपूर्णता, कोई-न-कोई दुर्जेय शिखर रहना चाहिए, जिसके आरोहण से भीतर का संकल्प और बाहर का श्रम प्रकट हो, विभूतियाँ अपने आकार ग्रहण करें... किंतु ब्रह्मा की सृष्टि में तो जहाँ देखो,

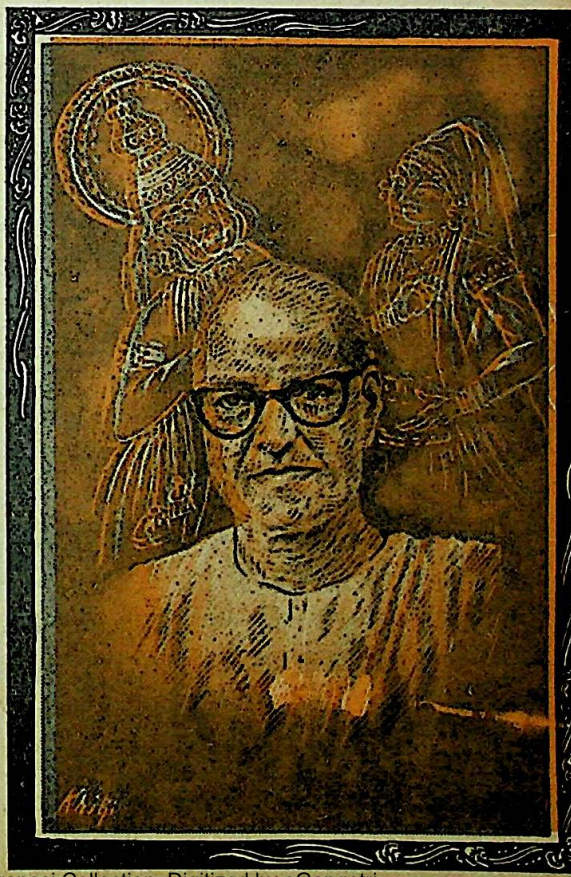

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ अभिशाप के सिवाय और कुछ है ही नहीं। मेरी कवि-सृष्टि महाभारत में ऐसा कुछ नहीं है। मैंने जीव-चराचर के साथ न्याय किया है, अपने हृदय की रस-रागात्मकता मैंने इस भूमंडल के प्राणियों को अकृपण भाव से प्रदान की है। मैं ब्रह्मा की भाँति वीतराग नहीं बना हूँ—सृष्टि से विराग कलाकार की दुर्बलता है.... मैंने अपनी परिपूर्ण आत्मीयता अपने जगत् को दी है। अपने धर्म का मैंने पूरा पालन किया है।"

इसी विचारधारा में व्यासजी की दृष्टि विष्णुलोक तक पहुँची। देखा, क्षीरसागर के उस विलास-विरल हिमकक्ष में समस्त चिंताओं से मुक्त महाविष्णु शयन कर रहे हैं। दिक् और काल हाथ बाँधे खड़े हैं; धरती, आकाश, अग्नि, वायु, वरुण, पाँचों योगियों की भाँति ध्यानस्थ प्रभु के नेत्र खुलने की प्रतीक्षा में न-जाने कितने युग-युगांतर से खड़े हैं...एक ओर कोने में चंद्र-सूर्य और अगणित तारा-मंडल अपलक विष्णु-मुख को निहार रहे हैं.... दूसरे कोने में, अपनी समस्त स्वर्गश्री में उद्भासित इंद्र तैंतीस कोटि देवताओं के साथ खड़े हैं। तीसरे कोने में समस्त ऋषि-मुनियों के समुदाय वेदगान एवं तत्त्वचिंतन में लीन उपस्थित हैं। ये तीन कोने देख लेने के बाद व्यासजी की उत्सुकता चौथे कोने को देखने के लिए भी जागी। किंतु वहाँ उन्होंने जो-कुछ देखा, उससे आश्चर्य-स्तब्ध रह गये। उन्होंने देखा, चौथे कोने में स्वयं व्यासजी खड़े हैं। प्रार्थना में उनके दोनों हाथ आबद्ध हैं। नेत्र बंद हैं और भाल पर आनंद की सहस्र-सहस्र ज्योतियाँ प्रतिभासित हो रही हैं। सारी देह ज्योतिर्मय है। उनके रोम-रोम से आनंद की ऊर्मियाँ प्रकाशित होकर वायु-तरंगों-द्वारा समस्त लोक-लोकांतर में फैल रही हैं। अपने-आपको महाविष्णु के जागरण की प्रतीक्षा में इस प्रकार लीन देख कर व्यासजी बड़े विस्मय-विह्वल हुए। स्वप्न है या सत्य? छल है या प्रत्यक्ष? परोक्ष है या साक्षात्? आदि द्विधात्मक प्रश्न उनके इर्द-गिर्द बनैले हिंस्र पशुओं की भाँति मँडराने लगे। जब समस्या का स्पष्टीकरण न हो पाया, तो वे बड़े उद्विग्न होकर अपने-आप ही बोले—"संसार की ही नहीं, आत्मा के धर्म-अधर्म तक की कोई समस्या ऐसी नहीं है, जो मेरे मस्तिष्क से सुलझी नहीं हो—जीव से लेकर ब्रह्म तक के सारे अगणित रहस्य मेरी प्रज्ञा पर रंगीन चित्रों की भाँति स्पष्ट हुए हैं। स्वयं काल मेरी काव्य-शक्ति के सम्मुख पराजित हुआ है। ब्रह्मा की भाग्यलिपि देवानुग्रह से मिटी है, शिव के शाप तक लोक-कल्याण की गंगा में धुल गये हैं; किंतु व्यास के वचन कभी अपने अर्थ में चूके नहीं हैं—मैंने जो लिखा, वह अविनाशी है, अक्षर है; मगर आज मेरे सामने यह जो मेरा ही रूप खड़ा है, इसके रहस्य को मेरी बुद्धि क्यों नहीं भेद पा रही है...क्या दिक्, काल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जीवन का विजेता कविर्मनीषी व्यास अपना अपराजेय पौरुष खो चुका है?

विष्णु के दरबार में खड़े उस 'व्यास' को व्यासजी इस प्रकार कई कल्प तक देखते रहे। विष्णुकक्ष के उस कोने में खड़े व्यास अपने स्थान एवं मुद्रा में ही अविचल नहीं थे, अपनी ज्योतिर्मयता में भी वे अखंड-अविभाज्य थे। सहसा एक दिन विष्णु के नयन खुले। तीनों भुवन देव, गंधर्व एवं किन्नरों के स्तव-गान से गूँज उठे। अंतरिक्ष का प्रत्येक पवन-कण मानो वेद की एक प्रतिध्वनित ऋचा थी। विष्णु ने अपने प्रफुल्ल-कमल-जैसे नेत्रों से चारों दिशाओं में देखा। व्यासजी को खड़ा देख कर वे किंचित् मुस्कराये, मानो अंधकार के पट पर लक्ष-लक्ष ज्योत्स्नाएँ एक साथ उदित हो गयी हों और गंध-मदिर कुमुदनियाँ अपने कृपण स्वभाव को भूल कर सर्वस्व दान-प्रदान में प्रवृत्त हो गयी हों। फिर वे व्यासजी से बोले—"महर्षे! आप यहाँ? क्यों? कृपया बतलाइये, अपने आगमन का कारण!

महाकवि वल्लत्तोळ अपनी धर्मपत्नी के साथ
[चित्र : खिलजी]

अपनी मानस-सृष्टि में ब्रह्मा को भी पराजित करनेवाले, महाकाल के सीमाहीन शासन में भी सर्जन को अमरत्व देनेवाले! विध्वंस क्षणिक है, अनित्य है और निर्माण शाश्वत है, नित्य है—इस सूत्र को काल के भाल पर अनश्वर अक्षरों में लिखनेवाले महाकर्मा, कहिये, आपने किस उद्देश्य में यहाँ पधार कर मेरे जागरण की प्रतीक्षा की है?"

कोने में योगस्थ खड़े व्यास ने सामगान-स्तुति के बाद सविनय कहा—"प्रभो, मेरे विषय में आपने जो-कुछ कहा, वह तो मेरे ही अहंकार की भाषा है, जिसे आपकी सर्वज्ञता ने मुझ दुरात्मा के ही सम्मुख उड़ेल दिया है। काव्य में मैंने मानवता की व्याख्या गायी है। मानवता स्वयं अमर-अच्युत है। अतः मेरे काव्य का अमरत्व तो मनुष्य की भीतरी ज्योतिर्मयता का अमरत्व है। उसके गुणगान से मुझे भी अमरता का स्पर्श मिल गया, यह तो मेरा भाग्य ही है। किंतु मैं इस सबसे संतुष्ट नहीं हूँ— अपने को देख मुझे कई बार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्लानि ही होती है, प्रसन्नता नहीं। प्रायः अनुभव करता हूँ कि, इतना सब होने पर भी कुछ नहीं कर पाया हूँ। कवि-कर्म की सिद्धि का अनुभव मेरे मानस पर कभी नहीं उतरा। वाल्मीकि को जो आह्लाद रामायण की रचना के बाद मिला, उसका सहस्रांश भी अष्टादश पुराण, 'ब्रह्मसूत्र' और महाभारत लिखने पर मुझे नहीं मिला है। कौन-सा दुर्भाग्य मेरी सिद्धि को इस प्रकार मुझ तक पहुँचने में बाधक हो रहा है... प्रभो?"

विष्णु के शतदल की पँखुड़ियों-जैसे होंठों पर द्वितीया के चंद्र-सी मुस्कान उदित हो गयी। क्षण-भर लोचनों की मोहक किरणों से व्यास को विह्वल करने के बाद अमृतवाणी में वे बोले—"आपके संताप से मुझे आश्चर्य हो रहा है, मुनिवर! मर्त्यलोक और देवलोक की कौन-सी श्री-सम्पदा आपसे दूर है। आप तो भारत-राष्ट्र के निर्माता, भावी मानवता के भाग्य-विधाता और ज्ञान-विज्ञान के मृत्युंजयी प्रवाह के अमित-अजस्र स्रोत हैं। आपने महाभारत रच कर देवी सरस्वती को ही चिरसुहाग नहीं दिया, भारत-युद्ध रचा कर दम्भाडम्बर और मिथ्या-विकृतियों को भी भारतभूमि से भस्मीभूत कर दिया है। आप तो सुर-नर-मुनि, सबके वंद्य हैं।"

व्यास ने वैकुंठाधीश की यह मर्मभरी वाणी सुनी, तो उनके नत नयनों से अश्रुधार बह चली। मुख रक्ताभ हो गया और देह रोमांचित हो गयी। भावावेग कम होने पर प्रत्युत्तर देने की चेष्टा में कहने लगे—"प्रभु-मुख से यह प्रखर वाणी ही, वास्तव में, मेरा परिमार्जन करेगी। यह अनल-प्रज्वलित वाक्यावली ही मेरे स्वर्ण को शुद्ध करेगी। किंतु प्रभो, कब तक सुनूँगा इसे? मेरे अंतराल का दाह क्या इससे किसी प्रकार कम है? मेरे श्वासोच्छ्वास के अग्निदंश क्या कम दाहक हैं— जिस पावक में मेरा मानस विदग्ध है, क्या उससे वह समस्त कुंठा-कदर्य क्षारशेष नहीं हो सकता.. प्रभो, अब तो डोर खींच लीजिये— यह पक्षी काफी भटक चुका है— मेरे पश्चाताप का वजन उतारिये, मुझे अब उबारिये।"

विष्णु के बिम्बाधरों की स्मिति सहसा लुप्त हो गयी। वे अपने आसन से उठे और आनत-अश्रुतरल व्यास को अपने बाहुओं में भर लिया— प्रेमांबुधि स्वयं सूखी सरिता में मानो परिव्याप्त हो गय हो! गद्गद् स्वर में विष्णु ने कहा— "ज्ञान साक्षात्कार अवश्य है; किंतु तादात्म्य नहीं! कर्म तीर्थयात्रा अवश्य है; किंतु तीर्थफल नहीं! महर्षे, साक्षात्कार और तादात्म्य की दूरी ही आपका संताप है; तीर्थयात्रा और तीर्थफल का यह द्वैत ही आपकी अतृप्ति का चीत्कार है। इसे मिटाइये। प्रेम इसे मिटायेगा। ज्ञानी, ज्ञेय और ज्ञान के त्रिकोण में तीनों भुजाएँ मिलती जरूर हैं; किंतु परस्पर की दूरी से वे मुक्त नहीं हो पाती हैं। किंतु प्रेम में यह नहीं होता। प्रेमी, प्रेमा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राध्य और प्रेम तीनों एक ही बिंदु में अपने उत्कर्ष की चरम सिद्धि प्राप्त करते हैं। मुनिवर, आप अब कुछ लीलागान गाइये। ज्ञान के शुष्क सरिता-पुलिनों में प्रेम का प्राण-प्रवाह प्रवाहित कीजिये। आनंद के स्पर्श के बिना क्या कभी चिंतन में जीवन आया है?"

...और, व्यासदेव अपने ज्ञान और चिंतन की गठरी वहीं प्रभु-चरणों में उतार कर विष्णु-भवन से बाहर निकल पड़े। वे प्रेम की खोज में देश-देशांतर का पर्यटन करते हुए अंत में व्रजभूमि में आये, जहाँ साक्षात् प्रेमरूपा गोपियाँ लीलाधाम के संयोग-वियोग में अपने समस्त कुत्सा-कल्मश को जला कर आराध्य के प्रेमांबुधि की पावन पुण्य-तरंगें बन गयी थीं— प्रेम के प्रत्यक्ष प्रणिधान ने जहाँ स्वयं प्रणव की सगुण-निर्गुण गंगायमुना को तीर्थराज की चरितार्थता प्रदान की थी!

साहित्य-अकादमी की ओर से श्री नेहरू महाकवि वल्लत्तोळ का सम्मान कर रहे हैं। [चित्र : खिलजी]

व्यासजी लीला की इस पूर्णिमा-भूमा में ऐसे वाणी-मुखर हुए कि, उनके 'श्रीमद्-भागवत्' को सुनने के लिए देवता तो क्या, स्वयं लीलाधाम पुरुषोत्तम भी छद्मवेश धारण करके आते थे... और श्रीमद्भागवत् के सर्जन के रूप में प्रवाहित बूंद-बूंद की वह रस-सृष्टि व्यासजी की प्रेम-साधना का ऐसा मधुकुंड बन गयी कि, जो भी उसके किनारे गया, स्वयं लीलानंद का रस-स्रोत हो गया!

"... प्रभो, व्यासदेव तो मैं नहीं हूँ— उनका उच्छिष्ट ही मेरे हिस्से में आया है... मैं तो अकिंचन वल्लत्तोळ हूँ। निपट निरक्षर, सर्जन-ज्ञान के नाम पर निपूता। मगर व्यासजी की भाँति आपके सामने युग-युगों से खड़ा हूँ। अंतर्ज्वाला में विदग्ध, अपनी अकर्मण्यता में सीमित, प्रत्येक रूप से दया-योग्य.. प्रभो, अब तो नेत्र खोलो। व्यासजी की तरह वल्लत्तोळ को भी परम रससृष्टि का पाथेय दो..लीला के आनंद की केवल एक किरण ही उसे दे दो... नयन खोलो, मेरे प्रेमनाथ.... मेरे श्वासोच्छ्वास के नादेश्वर! मेरी यात्रा के एकमात्र गंतव्य!"

★

भारतीय नारी लक्ष्मी नहीं, यशोधरा है, जिसने गौतम को महज्जीवन के यात्रापथ पर अपने सम्पूर्ण त्यागार्पण से अथक शक्ति प्रदान की। नारी का यह आत्मिक वैभव भारत के प्रत्येक परिवार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM-8

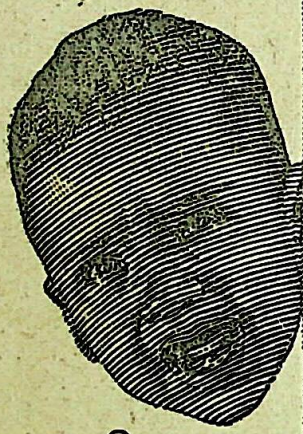

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

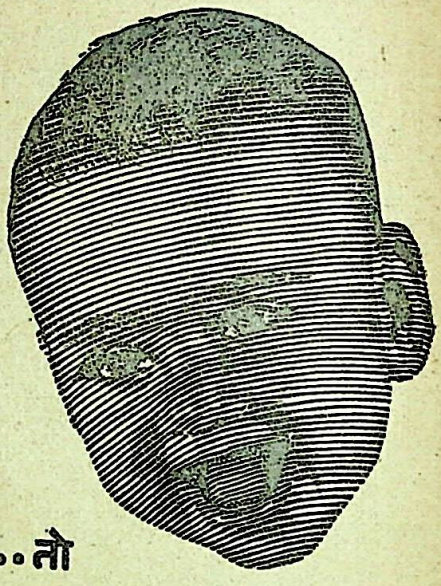

...तो
मॅनर्स ग्राइप
मिक्श्चर दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगानें के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण है।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की निधि है। वल्लतोळ ने इस सत्य को एक लघु पद्यकथा में बड़ी मार्मिक व्यंजना दी है।

भवदत्त अपने छोटे भाई भवदेवन को लेकर गुरु के पास पहुँचा। स्वयं तो उसने बचपन में ही दीक्षा ले ली थी। तभी से वह घर छोड़ चुका था और जब वर्षों बाद अनायास उधर जा निकला, तो उस वक्त भवदेवन ने अपने विवाह की पोशाक उतारी भी नहीं थी। भवदत्त को देख वह उससे लिपट गया। और, जब भिक्षु भवदत्त वहाँ से चला, तो भवदेवन भी साथ चल पड़ा। नवविवाहिता पत्नी को रोती छोड़, स्वजन-परिजन के लाख समझाने पर भी, भवदेवन नहीं माना।

भवदत्त जब आचार्य के आश्रम में पहुँचा, तो वे समाधिस्थ थे। समाधि-भंग के बाद उन्होंने भवदत्त से पूछा—"वत्स! तुम्हारे साथ यह कौन है? ऐसा प्रतीत होता है, अभी-अभी इसका विवाह हुआ है।"

"हाँ, आचार्य!" भवदत्त ने उत्तर दिया—"यह मेरा अनुज है। आपके पास दीक्षा लेने के लिए आया है।"

आचार्य मुस्कराये—"दीक्षा! किंतु यह तो अभी गृहस्थ है।"

भवदेवन ने हाथ जोड़ दिये—"देव! माया के इन्ही बंधनों को तो तोड़ कर फेंक देना चाहता हूँ। मेरे हृदय में आसक्ति एवं व्यामोह के जो बीज पनप रहे हैं, उन्हें मैं उखाड़ फेंकने को व्याकुल हूँ—

"इलताम विषयच्च टिकु पोन्मग—
वळमेकुम तोजिल कोण्डुतन करत्तिल
वळ रे च्चळि पट्टि निल्प तिय्याळ
कळप्रट्टे गुरुपाद तीर्थ नीराल!"

—"सांसारिक सुख-रूपी पौधे को हरा-भरा रखने के लिए जो-जो कार्य मुझे करने पड़े हैं, उनसे ये मेरे हाथ दूषित हो गये हैं। अब आप कृपया अपने पावन चरणों के स्पर्श का अवसर देकर मुझे इन्हें पवित्र करने दें।"

आचार्य ने फिर कुछ नहीं कहा। भवदेवन को श्रमणत्व की दीक्षा मिल गयी। उस समय उसके मुख पर संतोष का एक अपूर्व तेज प्रकाशमान् हो रहा था। किंतु उससे भी अधिक प्रसन्नता थी भवदत्त को।

भवदत्तनु चारितार्थ्य माई;
भवनीराज़ियिलाज़वतिन्नु मुन्ने
स्ववरानुज ने करयकु केट्टा—
नवना हन्त तरं लभिच्चु वल्लो!

—अपने अनुज को संसार-सागर में डूबने से बचाने में जो सफलता भवदत्त ने पायी थी, उसका हर्ष उसके मुख पर स्पष्ट झलक रहा था। वह उस क्षण स्वयं को 'धन्य' मान रहा था।

भवदेवन के भिक्षु बनने का समाचार सर्वत्र फैल गया। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते ही वैरागी! जिसने सुना, विस्मय प्रकट किया। किंतु भवदेवन तो सबका त्याग कर चुका था। उसने भिक्षुओं का परिधान पहना और उन्मुक्त भाव से सर्वत्र विचरने लगा।

धीरे-धीरे आठ साल बीत गये। भवदेवन भिक्षु बना, संसार से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाइक्स पीक पर्वत चढ़ते समय

आनेवाले हेअरपिन जैसे मोड़सुरक्षित मोटरचालनके टायर का प्रमाण हैं

पाइक्स पीक की चढ़ाई की रेस में, जब कि मोटरों को हेअरपिन जैसे मोड़वाले मिट्टी व कंकड़ों से भरे मार्ग पर होड़ लगानी पड़ती है, लगातार २९ वीं बार फायरस्टोन टायरोंवाली मोटरें ही विजयी हुईं। जिस निर्माण-कुशलता व किस्म संबंधी नियंत्रण से ये टायर बने हैं वे ही आपकी कार के फायरस्टोन टायरों को उतना ही अतिरिक्त सुरक्षित व विश्वसनीय बनाते हैं।

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यूबरहित या ट्यूबसहित

टायर जिससे मानसिक शांति बनी रहती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विरक्त, घूमता रहा; किंतु उसके मन को संतोष न था। एक अतृप्ति की भावना उसे सदैव व्याकुल बनाये रहती। रह-रह कर उसे यह जीवन मिथ्या प्रतीत होने लगता। कठोर संयम और निरंतर प्रयासों के बावजूद, उसे अपनी नवविवाहिता पत्नी का अश्रु-कातर मुख याद आ जाता और तब आत्म-निरोध के उसके सारे प्रयत्न ढीले पड़ जाते।

एन्नाळुमे तोटुकयिल्ल इनि ञान सुवर्ण-मन्नाम प्रतिज्ञ, 'दश-शील' परिग्रहात्तल; ए न्ना ल त्तु लोम पट्टु वि ज्जि न या गि, नञ्चिल-निन्ना स्वकान्तयुट पोन्नूटल नीक्कि वेप्पान। ध्यानक्रियकु मुर-पोले इवन विविक्त-स्थान त्तिरिप्प वळ-टच्च मिज़िकुमुन्निल; आनन्दकन्द मोरु रूप मुदिच्चु काणम, पीनस्थना वनत अर्ध विभूषि ताङ्गम।

—उसने (भवदेवन ने) अपने गुरु से प्रतिज्ञा की थी कि, मैं किसी भी वस्तु की कामना नहीं करूँगा; किंतु उसकी पत्नी का सुवर्णमय रूप तो सदा उसके हृदय में विराजता रहता। जब भी वह समाधि के लिए निर्जन स्थान में बैठता, आँखों के सामने पीले वस्त्राभूषण में लिपटी पत्नी की मनोहारिणी छवि अंकित हो उठती।

कथकली-नृत्य का पुनरुद्धार महाकवि के जीवन की कतिपय चरम आकांक्षाओं में से एक था। प्रस्तुत चित्र में वे एक कथकली-नर्तक को मंच पर आने से पूर्व अंतिम आवश्यक निर्देश प्रदान कर रहे हैं।

[चित्र : खिलजी]

भवदेवन के मन में अपनी पत्नी को पुनः पाने की लालसा इतनी बढ़ी कि, वह बहुधा उसे स्मरण कर कहा करता—

एन नागिले, भव-तिये त्तज़ुकाते मुक्ति वन्नालु, मिल्ल भव देवनु बंध मोक्षम, अन्नारितोर्त्तु ? यति धर्म मरुप्पर प्पिल-निन्नाणु पोल चिदमृ-ताप्ति, चतिच्चु शस्त्रम !

—नागिले ! तुम्हारी विरहाग्नि में दग्ध होनेवाला यह भव-देवन मोक्ष मिलने पर भी मुक्त न हो पायेगा। उस दिन मैंने इसकी कल्पना नहीं की थी। सच तो यह है कि, शास्त्रों ने ही मेरे साथ छल किया है। अपने भाई के लिए व्यर्थ ही मैं दुःख सहता रहा हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदना जब असह्य हो उठी और मन चंचल हो उठा, तो भवदेवन ने फिर से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया। वह अपने गाँव लौट चला।

कई वर्षों के बाद लौटने से अपना परिचित ग्राम भी उसे पूर्णतया अपरिचित-सा लगा और वह मुग्ध भाव से एक-एक चीज को निहारने लगा। सर्वपापहारिणी गंगा के तट पर जब वह पहुँचा, तो उसके तन-मन की सारी थकान जाती रही। यही नहीं, मन में अचानक फिर से संसार के प्रति विरक्ति के भाव जगने लगे।

वह वहीं पीपल की छाया में बैठ गया। मन के इस अंतर्द्वंद्व से मुक्ति पाने के लिए उसने आँखें मूँद लीं और चिंतन में लीन हो गया। काफी देर बाद, जब उसने आँखें खोलीं, तो सहसा विश्वास नहीं हुआ। उसकी दुविधा का समाधान मानो स्वयं उसके सम्मुख आ खड़ा हुआ था। गंगा-स्नान कर लौटती नागिल– उसकी पत्नी– उसके सामने खड़ी थी।

भवदेवन उठा और प्रेम-विह्वल हो उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया; किंतु नागिल पीछे हट गयी। स्थिर स्वर में बोली–"त्याज्य वस्तु का स्पर्श? श्रमण! यह पाप क्यों?"

"क्षमा करो, देवि!"–भवदेवन ने अनुताप-भरे स्वर में कहा–"मैं वस्तुतः लज्जित हूँ। किंतु यह दुःख मैंने भी भोगा है। भाई के प्रेम के वशीभूत हो, मैंने तुम्हारा त्याग तो किया; किंतु एक क्षण भी शांति से नहीं बिता पाया हूँ। परलोक के सुख की मिथ्या आशा में इस लोक में प्राप्त सुख का त्याग करना मूर्खता ही तो है। इस मूर्खता के लिए मुझे क्षमा करो, देवि!"

शांत-स्निग्ध स्वर में नागिल बोली–"रुको, श्रमण! मोह के आवेश में यों मत बहो। मुझे कोई शिकायत नहीं है। मैं तो अपने को 'धन्य' मानती आयी हूँ। भगवान् तथागत ने भी तो इसी प्रकार सर्वस्व त्याग दिया था। उनके बारे में सोचो। उन्हीं को अपना आदर्श मानो! मैं मुक्ति के इस पावन मार्ग का काँटा नहीं बनना चाहती। लौट जाओ, श्रमण, लौट जाओ। नागिल– तुम्हारी पत्नी– तुमसे अनुरोध करती है। लौट जाओ और लक्ष्य प्राप्त कर संसार का कल्याण करो! वह तुम्हारी साधना में विघ्न नहीं पहुँचायेगी। वह तो तुम्हारी सफलता के लिए भगवान् से प्रार्थना करेगी और उस दिन की प्रतीक्षा करेगी, जब तुम्हारी साधना फलवती होगी!"

नागिल इतना कह कर नीचे झुकी– उसने उस मिट्टी को श्रद्धापूर्वक अपने माथे से लगाया, जहाँ थोड़ी देर पूर्व उसके पति के पाँव पड़े थे और भवदेवन उसके चेहरे पर प्रकाशित एक दैवी तेज को एकटक निहारता रह गया!

आदिकवि ने क्रौंचवध के करुण दर्शन से अपने अंतःकरण को जिस प्रकार रसपूर्ण वाणी में मुखर पाया, वल्लत्तोळ के जीवन में भी ऐसा ही एक कारुणिक दर्शन उपस्थित हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिलकश...
मज़ेदार...
संतोषदायक...

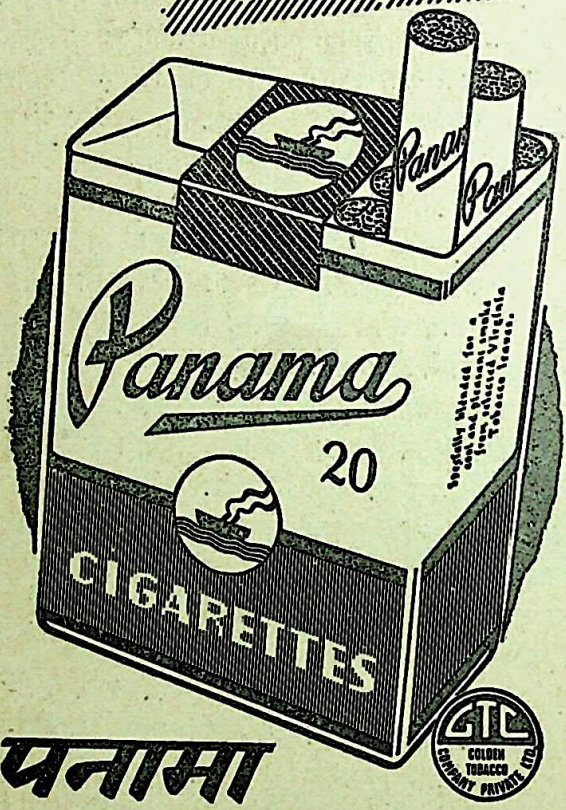

पनामा

ऐसी सिगरेट जिन्हें पीकर आप

लुत्फ उठायेंगे खुश होंगे और याद रखेंगे

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता:
गोल्डन टोबैको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४.

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रिय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। नीचे के कुछ पद्य इसी दर्शन से प्रेरित करुण-रस के व्यंजक हैं।

नीले आसमान में स्वच्छंद भाव से विचरनेवाले उस सफेद पक्षी को देख कर ऐसा प्रतीत होता है, मानो किसी बड़े-से तालाव के निर्मल जल में पवन-स्पर्श से कुमुद का फूल हिल रहा हो! वादल इधर-से-उधर प्रसन्नता से तैर रहे हैं और श्यामल-श्वेत, अपने इन दोनों पुत्रों को एक-दूसरे से यों हिल-मिल कर अठ-खेलियाँ करते देख नभ भी खुशी से नाच उठा है। चारों ओर बिखरी लालिमा जैसे इसी की द्योतक है! किंतु उस विस्तीर्ण सुर-प्रदेश में वह पक्षी क्या देखता हुआ चला जा रहा है? क्या इस मृत्युलोक को, जहाँ बात-बात पर, कदम-कदम पर, 'तेरा' और 'मेरा' की दीवार खड़ी हो जाती है?

नरनैड वीप्पिनकर
चेन्निटात्त काट्टे-
ल्कात्तत्र दूरत्तु परक कुञ्जे—
अय्यो, इता, निन करलिन चुवटिल—
अन्यन कटन्नेत्तिय काल दण्डम!

—पक्षी! तुम यहाँ मत उड़ो। ऐसी जगह जाकर स्वच्छंद भाव से उड़ान भरो, जहाँ स्वार्थरत मानव की गंध भी तुम्हारा स्पर्श न कर सके। यहाँ तो काल-स्वरूप शिकारी बंदूक लिये तुम्हारी ताक में बैठा है।

तुटुत्त स्वतम् चोरि-यातेदाहम—
तीरात्त मर्त्यन डे कराल देष्ट्रेम;
निन्ने चमच्चोरु
कटुंकरि कय्य—
इरुम्बिने पेलव
शुद्ध माक्कि!

—शिकारी के हाथों में काल ने जो बंदूक का रूप धारण कर रखा है, वह उसका परम नृशंस रूप है। क्या विडम्बना है यह भी — खून बहाये बिना काल की प्यास आज बुझती ही नहीं और जो हाथ उसका संचालन करते हैं, वे काल की नृशंस लिप्सा के माध्यम बनते हैं! हाय! वे कितने आत्म-भ्रमित हैं। विहग, यह शिकारी तुम्हारा सुंदर तन देख कर हर्षित नहीं हो रहा है। अरे, वह तो सौंदर्य को भ्रष्ट करने का आग्रही है— सौंदर्य का निर्माण या त्राण उसे भला कब आया है!

आनिर्दयन तन समसृष्टि हिंसा—
मलीमसाधंगळिल निन्नो रंशम,

तरुण वनवासी वल्लत्तोळ

केवल २२ वर्ष की अवस्था में वल्लत्तोळ ने संन्यासियों की तरह वन में रह कर आदिकवि वाल्मीकि की 'रामायण' का पद्यानुवाद आरम्भ किया।

[चित्र : खिलजी]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल की तरह...

खिली सुन्दरता के लिए रेक्सोना

रेक्सोना साबुन में 'कॅडिल'— तेलों का एक विशेष मिश्रन — होता है जो जिल्द को स्वस्थ बनाने के साथ साथ आपकी सुंदरता को उजागर करने में भी सहायक है।

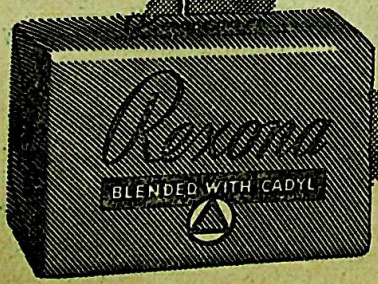

'कॅडिल' युक्त एक मात्र साबुन

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, ने, रेक्सोना प्रोप्राइटरी लि., के लिये भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

RP. 151-50-55 HI

उयर्न्न तोकिन कुर्ज़िलिग लूटे–
चन्नेरि विण वीधि यिलुम पुकमु।

–हाय! आखिर इस निर्दय ने तुम्हें गोली मार ही दी। आज तक संचित अपने पापों में इसने आज और एक नया पाप जोड़ लिया। देखो, उसके पाप ही उस धुएँ के रूप में, जो बंदूक की नली से निकल रहा है, चारों ओर फैल रहे हैं।

पण्डेत्त निन मकळ करुत्त रम्मे,
पराभि तृप्ति युटल कै वेटिमु;
अशक्त रिञ्जुल्ल वरो स्वगात्र–
पिण्डम तटिप्पि प्पावरन्य मय्याल्।

–मातृ धरित्रि! पहले तुम्हारी संतान दूसरों के लिए हर्षपूर्वक अपना बलिदान किया करती थी; किंतु अब यह कैसा समय आ गया कि, तुम्हारी संतान अपने सुख के लिए दूसरों के प्राण ले लेती है!

वधू समभ्यागति कात्तु कोण्डो,
वानिल चरिच्चु खग, मंद मायनी?
अल्लंगिल, निन गेहिनि बालरक्ष–
क्क कूट्टिले वाजुक यायि रिय्काम!

––हतभागे पक्षी! क्या तुम्हारे घोंसले में तुम्हारी पत्नी बच्चों को हृदय से चिपकाये तुम्हारी प्रतीक्षा में नहीं बैठी होगी? क्या तुम उनसे मिलने आतुर-हृदय घोंसले की ओर नहीं जा रहे थे? अब तुम्हारे घोंसले में भूख से वे बच्चे तड़प रहे होंगे और उनकी माँ आँखों में आँसू लिये व्याकुलता से चारों ओर निहार रही होगी। हा! एक दुखियारी माँ और उसके नन्हे-नन्हे बच्चों पर, जिनके अभी तक पंख भी नहीं निकले, यह कैसा दुर्भाग्य अचानक टूट पड़ा!

दुष्ट शिकारी! तुमने अपनी क्षणिक तृप्ति के लिए यह कैसा अनाचार कर दिया! किसी युद्ध में विजय पाये सैनिक के समान ही गर्व से सीना ताने तुम खड़े हो; किंतु जब निरपराध पर व्याघ्र टूटते हैं, उस समय तुम्हारी यह बंदूक क्यों दीवार पर टँगी रहती है? कायर, कभी तो आततायी के विरुद्ध खड़ा होकर अपना शौर्य दिखलाता!

कण्डीलयो देवि, जगत्सवित्रि,
निन पारिले दुर्न्नय सन्निपातम?
पावंगल तन प्राण मरुत्तु वेणम,
पाप प्रभुक्कळ किह पङ्क वीशान।

–जगन्माता! आज संसार में–तुम्हारे पुत्रों में–यह कैसी दुर्मति फैली है! अपने स्वार्थ के लिए, क्षण-मात्र के आनंद के लिए, लोग किस प्रकार दूसरे के प्राण लेने में भी संकोच नहीं करते! माँ! यह क्या हो रहा है, माँ?

मुगल सम्राट् हुमायूँ के चरित्र-वैभव की एक मर्मस्पर्शिनी कथा

मुगल बादशाह हुमायूँ उस समय दिल्ली के तख्त पर आसीन था। एक बार वह एक हिन्दू स्त्री के सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। उसमान नामक उसके दरबारी ने उस स्त्री को बादशाह के हरम में पेश करने का निश्चय कर लिया, जिससे बादशाह उससे प्रसन्न रहें। उसे अपनी चाल में सफलता भी मिल गयी। उस स्त्री को धोखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम विजय

अपने बच्चे की प्रथम विजय पर पिता का हृदय आनन्द तथा गर्व से खिल उठता है—क्यों कि उसने अपने होनहार बच्चे को हमेशा उत्साहित क के, उसकी सफलता में अपना योग दिया है।

क्या आप उसकी प्रगति और उन्नति के लिये उसे हमेशा सहारा दे सकेंगे? आप अपनी ये जिम्मेदारियाँ लाइफ इन्श्योरन्स को सौंप दें। लाइफ इन्श्योरेन्स की कई ऐसी पॉलिसियाँ भी हैं, जो कि आप की आवश्यकता के अनुकूल हैं।

एक प्रकार से होल लाइफ (संपूर्ण जीवन) पॉलिसी ही लीजिये। यह पॉलिसी, जीवन बीमा का सब से आसान और कमखर्चीला रुप है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप की आयु आज २८ वर्ष की है तो १६ रु. माहवार प्रीमियम के हिसाब से आप का बीमा १०,००० रु. का हो सकता है। बीमा की पूरी रकम मृत्यु के बाद ही परिवार को दी जाती है

आप ५ रु. या ५० रु. माहवार, जो भी खर्च कर सकें, उसे होल लाइफ (संपूर्ण जीवन) पॉलिसी में ही खर्च कीजिये। यह कम से कम खर्च में आप के प्रिय-जनों की सुरक्षा है।

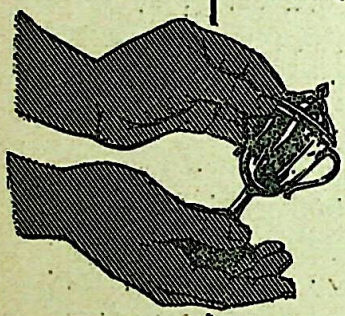

लाइफ़ इन्श्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

सेन्ट्रल ऑफिस: "जीवन केन्द्र", जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दे, वह अपने यहाँ ले आया।

स्त्री डरी-सहमी बैठी थी। उसमान ने तब उसे आश्वस्त करने के लिए कहा—"तस्कर नल्ल ञान; तेम्माटि यल्ल ञान, मुष्कर नल्ल ञान मुग्ध शीले; देविनिन दास्यम कोतिक्कु मोरुत्तन ञान ई वीट विटकु दासगृहम। भक्तंडै यल्पमा मर्चनम कैकोण्डु भद्र माक्कीडुकन भावि कालम!"

—"मुग्धे! घबड़ाओ मत, मैं धूर्त नहीं हूँ, मैं चोर भी नहीं हूँ और न ही कोई क्रूर व्यक्ति हूँ मैं। मैं तो केवल तुम्हारा दास बनने का इच्छुक हूँ। तुम अपने इस दीर्घ नयनों से एक भयभीत हिरणी की तरह क्यों देख रही हो? मैं कोई भेड़िया तो नहीं हूँ, जो तुम्हें मुझसे भय लगता है।

"भामिनी! तुम्हारा यह दिव्य सौंदर्य किसी सामान्य व्यक्ति के लिए नहीं है। यह अप्सराओं-सा रूप तो किसी बादशाह के लिए ही है। मैं भी तुम्हें यहाँ अपने आका— शंहशाह हुमायूँ— के लिए ही ले आया हूँ।"

वह स्त्री कुछ बोली नहीं। बस, पहले के समान ही मौन, भयभीत दृष्टि से देखती रही। उसमान ने पल-भर की निःस्तब्धता के बाद फिर कहा—"तुम सोच रही हो, मैं तुम्हें यहाँ कैसे ले आया? इसमें इतना परेशान होने की बात नहीं। तुम्हारे सब सेवकों को मैंने खरीद लिया है। किसमें इतनी ताकत है कि, सुवर्ण-मुद्राओं की अवहेलना करे?"

स्त्री इस बार भी कुछ नहीं बोली, तो उसमान ने कहा—"तुम्हें अपनी जाति और धर्म नष्ट होने का डर है न? लेकिन यह फिजूल है। बादशाह के हरम में कई हिन्दू स्त्रियाँ हैं और उनके धर्म पर कभी कोई आँच नहीं आती। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि, तुम इतने बड़े बादशाह की मलिका बनने जा रही हो!

"इंदिरा तुल्ययाम देविये वेट्टव—
निम्नोरु सम्बन्न नायिरिक्काम;
एन्नालि तोर्कणम, मूटल मञ्ञान्नौरु
कुन्नेंगी प्रालेय शैल मेङ्गो।"

—"तुम लक्ष्मी के समान ही हो; अतः तुम्हारा पति भी अवश्य ही कुलीन और भाग्यवान होगा; लेकिन यह तो सोचो, एक छोटी पहाड़ी और हिमालय की कहीं तुलना हो सकती है? कल तुम भारत की सम्राज्ञी होगी और उस वक्त मैं तुम्हारा प्रधान मंत्री रहूँगा।"

उसमान बहुत देर तक तरह-तरह के प्रलोभन देता रहा; पर उस स्त्री ने इस बार भी कुछ नहीं कहा। चुपचाप बैठी रही। अंत में, थक कर जब उसमान चला गया, तो उस स्त्री के बँधे हुए आँसुओं का बाँध टूट गया। वह घंटों रोती रही!

रात्रि के समय, जब बादशाह हुमायूँ अपने महल में अकेला उद्भ्रांत-सा टहल रहा था, उसमान उस स्त्री को लेकर पहुँच गया। बादशाह कुछ क्षणों तक तो मंत्रमुग्ध-सा उसे देखता रहा; फिर उसने उसमान की ओर देखा। उसमान ने बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

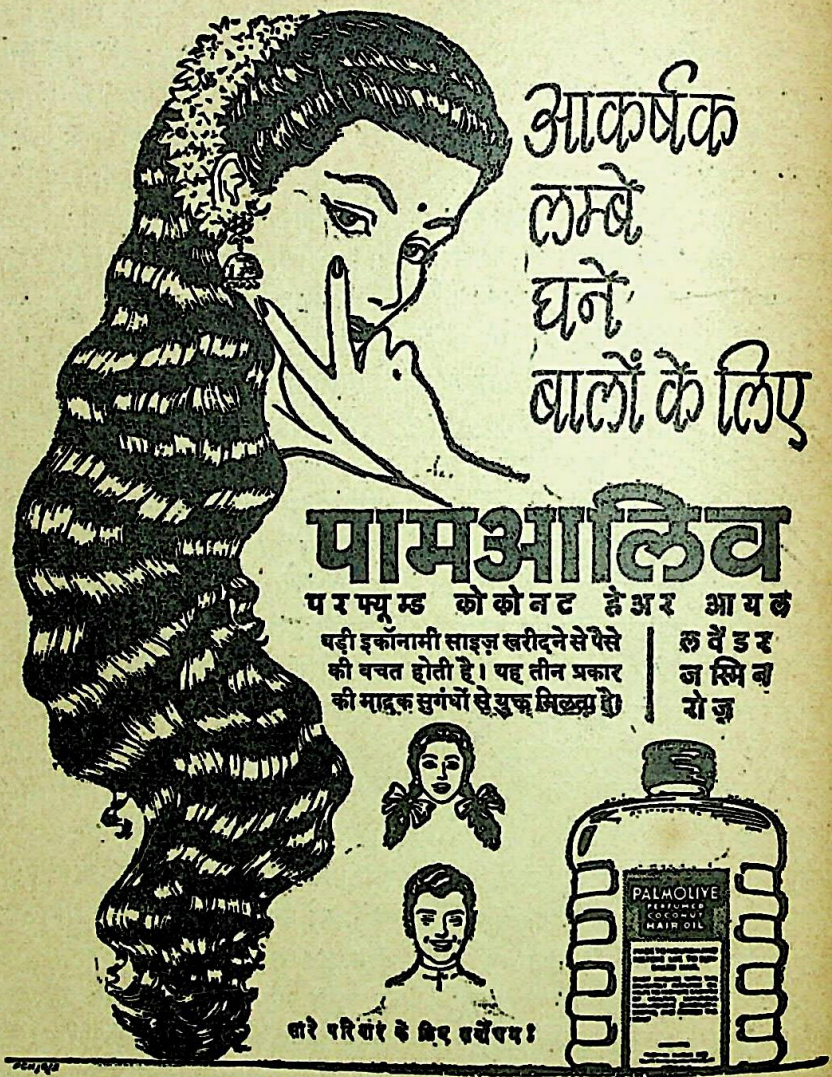

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुशलतापूर्वक सारी कहानी सुना दी कि, किस प्रकार वह उसे बादशाह के लिए ही वहाँ तक ले आया था।

हुमायूँ के होंठों पर मुस्कान फूट पड़ी। पुरस्कार की आशा में उसमान का दिल भी वल्लियों उछलने लगा। उसे विश्वास हो गया कि, उसके प्रधान मंत्री बनने में अब तनिक भी देर नहीं होगी।

बादशाह ने तब उस स्त्री से पूछा—"तो तुम्हें हमारी बेगम बनना मंजूर है?"

पहली बार उस स्त्री ने मुँह खोला—"जहाँपनाह! गुस्ताखी मुआफ! मैं विवाहिता हूँ और मेरा पति ही मेरे लिए सबसे बड़ा बादशाह है!"

सुनते ही हुमायूँ की भृकुटियाँ तन गयीं। वह उसमान की ओर मुड़ा—"उसमान! तुमने एक विवाहिता को यहाँ लाने का दुस्साहस कैसे किया? तुमने इस नारी का धर्म नष्ट करने की बात कैसे सोची?"

उसमान काँप उठा। उसकी जबान लड़खड़ा गयी। वह कुछ भी बोल नहीं सका।

बादशाह ने रक्षकों को बुलाया और उसमान की ओर संकेत कर आदेश दिया—"ले जाओ इस गद्दार और प्रजाद्रोही को और डाल दो जेलखाने में।"

फिर वह उस स्त्री की ओर मुड़ा और बड़े नम्र स्वर में बोला—"देवि! क्षमा करो हमें। हमारे एक नालायक नौकर ने आपको बहुत तकलीफ दी। अगर आप कुमारी होतीं और हमें अपना पति होने का अवसर देतीं, तो हम अपने को बड़ा खुशकिस्मत समझते। लेकिन आप तो किसी की अमानत हैं। हमारे लिए इज्जत के काबिल हैं। हम अपने इस नौकर की बेहूदगी के लिए आपसे फिर माफी माँगते हैं। अभी आपको हमारे सैनिक बाइज्जत आपके घर पहुँचा आयेंगे।"

स्त्री का मुखमंडल प्रसन्नता से खिल उठा। उसके चेहरे पर छायी उदासी की घटाएँ छट गयीं और उसने बादशाह से अनुरोध भरे-स्वर में कहा—"जहाँपनाह! जहाँ आपने मुझ पर इतनी कृपा की है, एक कृपा और कीजिये। अपने इस भृत्य को माफ कर दीजिये।"

हुमायूँ के मुँह से बरबस "वाह! वाह!" निकल गया और उसने बड़ी श्रद्धा से मन-ही-मन उस स्त्री को प्रणाम किया; फिर उसे आभूषणों से सजा कर विदा किया।

★

महाकवि को अपने देश—अपनी वसुंधरा—से अगाध प्रेम था। एक बार उन्होंने कहा था—"अगर विष्णु सारा वैकुंठ दें, तो भी मैं बदले में मेरी मातृभूमि का एक इंच भूभाग नहीं दूँगा।" नीचे उनके मातृभूमि-प्रेम-सम्बंधी तीन पद्य सानुवाद दिये जा रहे हैं।

भारतमाणन्ड जन्म भूवा; इशम—
धरिर्षी श्रोष्टरन प्रपिता महर!
बोधार्क रशम्यङ्कु रङ्लु पनिषल—
गीतकळेन्नुमेन कुल विध्यकळ;
विश्वत्रयत्तिल में प्राप्य मायुल्ल तो,
नश्वर मल्लात्त पूर्ण मुक्ति पदम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

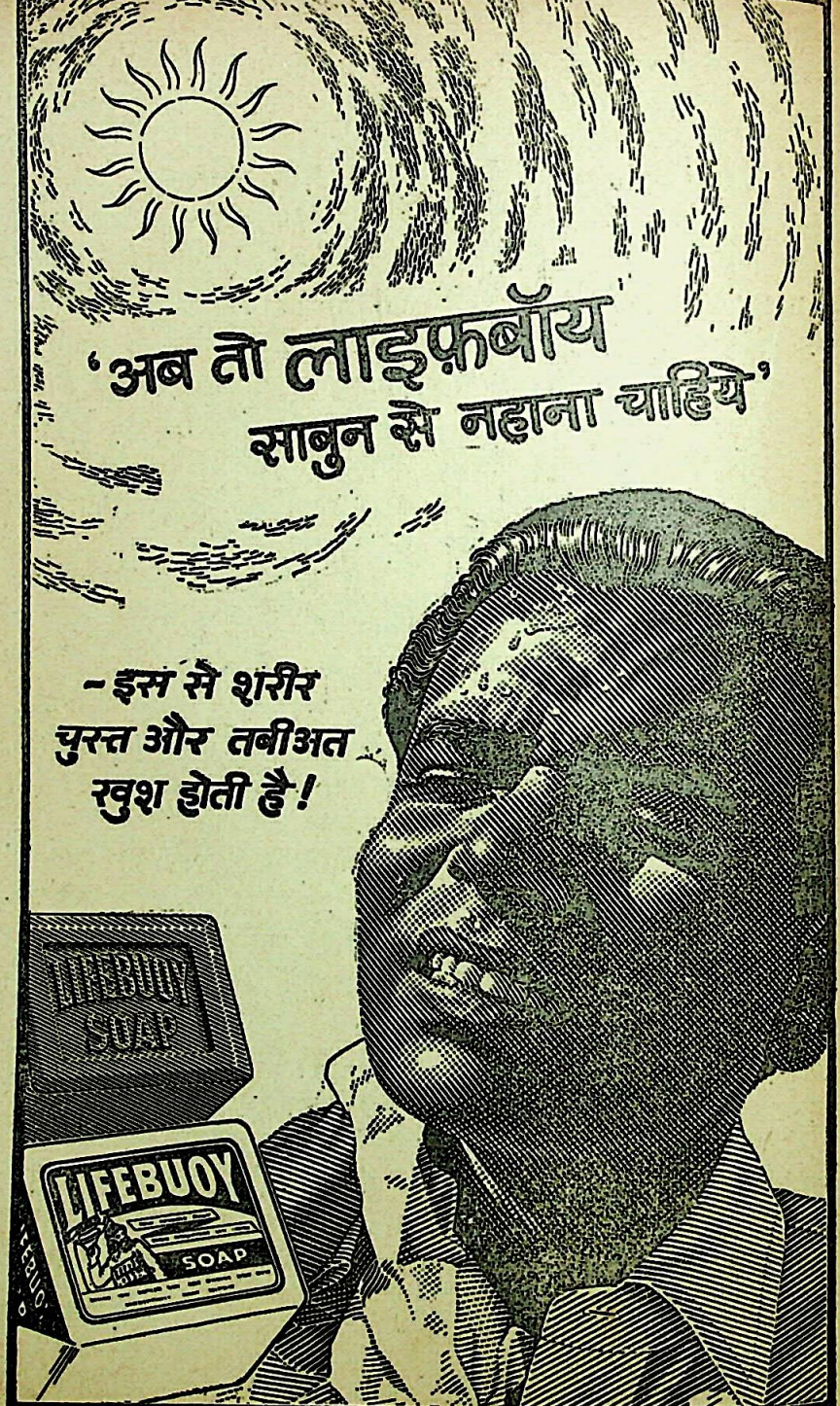

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के वितरण
L. 259A-50 HI

—भारत! मेरी जन्मभूमि भारत! मेरे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों की तपोभूमि भारत! उपनिषद् और गीता की पावन-भूमि भारत! बोध-सूर्य की रश्मियों से प्रकाशित भारत! भारतवासी होने के कारण त्रैलोक्य का परम पद— मोक्ष— सहज ही मुझे प्राप्त है!

एत्तेण्डता मिट्टत एत्तिप्पालुम शरि,
मध्ये मरणम विञ्ञुंडिप्पालुम शरि,
मुन्नोट्टु तन्ने नटक्कुम वञ्ञियिले
मुऱ्ऱुक ळोक्के च्चवुट्टी मदिच्चु ञान;
पिन्नाले वन्निटुम पिञ्चुपदङ्ङलक्कु
विन्यास वेलयिल वेदन तोन्नला
अल्लुटन वन्नु मऱ्ऱचाल मऱ्यकट्टे,
मुल्लतन पूक्कळ विरिकतान चैयतिटुम;
अन्तरीक्षतिलणयकयुम चैयतिटुम—
अन्तिक्कुळिर काट्ट अवट्टिटन परिमळम।

—मंजिल मिले अथवा न मिले, मैं अपने लक्ष्य तक चाहे न पहुँचूँ, बीच में ही चाहे मृत्यु मुझे अपनी गोद में समेट ले; फिर भी, मैं पथ के काँटों को कुचलता जाऊँगा, जिससे मेरे पीछे आनेवाले, भावी भारत के कर्णधारों के नन्हे-नन्हे पैरों में वे चुभ कर उन्हें कष्ट न पहुँचा सकें। अंधकार फैला हो या न हो, मोगरे का फूल अपना सौरभ बिखेरना नहीं छोड़ता। मैं ही क्यों अपने कर्त्तव्य-पथ से विमुख हो जाऊँ!

एन काल कळि लना चारक ळायास—
श्रृंखल क्कट्टोन्नु केट्टियिट्टुल्ला तो—
नेरे वलिञ्चु मुरिञ्चु पोरकोल्लु मि—
ञ्ञारेजडी नीट्टि नीट्टि वच्चाल मति।

—मेरे पैरों में अनाचार की बेड़ियाँ अवश्य पड़ी हैं। पर सीधा खड़ा होकर छः-सात कदम चलने की देर है। फिर वे स्वयं ही चूर-चूर हो जायेंगी।

★

भगवान् के द्वारा भक्त के परित्राण की एक लघुकथा

दिन-भर छायी शांति का मानो दाह करने के लिए, सांध्य गगनरूपी अनल का धुआँ-जैसा अंधेरा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। और, इसे देख, वह यात्री जल्दी-जल्दी अपना मार्ग तय करने लगा। बायें कंधे पर उसने पत्तों की गोल छतरी ले रखी थी; किंतु पसीने के कारण उसकी छाती से लिपटी जनेऊ दिन-भर की गर्मी और उसकी थकावट का परिचय दे रही थी।

अपने लक्ष्य पर शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने के लिए उसने अपनी गति और तेज कर दी। संध्या वह वहीं पहुँच कर करना चाहता था और इसी से जल्दी थी। अचानक चार भीमकाय और डरावनी आकृति के व्यक्तियों ने सुनसान मार्ग में उसे घेर लिया।

पांधर तन मुतल तट्टि प्परि च्चुटन
पार्पिनाय वन नर कंगळ निर्मि प्पोर
ततनु वस च्चान्ता लवयुटे
भित्ति तेप्पुम कज़िप्प वर ईकूटर
नन्नु मर्त्यं रे नाथन तलोडु वान
तन्न कै कळाल तल्लुविन लोकत्ते।

—एक ने उस ब्राह्मण के हाथ से पोटली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छीन ली, दूसरे ने उसकी छड़ी छीन ली, तीसरे ने उसके दोनों हाथ पीछे की ओर मोड़ कर पीठ पर बाँध दिये और चौथे ने एक तीक्ष्ण धारवाली छूरी निकाली।

—चारों दिशाओं में जैसे उनके इस दुष्कृत्य से और भी घना अंधकार छा गया। हवा मौन और निश्चल हो गयी। पेड़-पौधे भी निस्तब्ध हो, यह व्यापार देखने लगे; क्योंकि वह यात्री कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। वे तो भक्तशिरोमणि 'कवि पून्तानम' थे।

पून्तानम केरल के सुप्रसिद्ध गुरुवायूर कृष्ण-मंदिर में दर्शन के लिए जा रहे थे। प्रभु के दर्शन में विलम्ब होते देख, उन्होंने वहीं आँख मूँद भगवान् का ध्यान किया।

पून्तानम ने जब आँखें खोलीं, तो दृश्य ही बदल चुका था। जिस हाथ ने भक्तशिरोमणि पर चाकू उठाया था, वह कट कर भूमि पर पड़ा था और चारों चोर सिर झुकाये खड़े थे। सामने घोड़े पर मालाबार के राजा सामूरिन के महामंत्री मंडाट्ट अच्छन सवार थे। उनके हाथ में नंगी तलवार थी, जिससे अभी भी रक्त चू रहा था।

पून्तानम का हृदय गद्गद् हो उठा और उनकी वाणी फूट पड़ी—

"एन्तिति प्पुमान केरला साम्राट्टिन
मंत्रिमुख्यन महाप्रभु वन्निट्टुम
विलक याणो चरियोरु पोन तुण्डि
न्नर्घहीन माँ दीना वना पुण्यम"

—"केरल-सम्राट् के महामंत्री होकर भी आपने एक दीन और दुःखी ब्राह्मण के लिए इतना कष्ट उठाया! आप 'धन्य' हैं! मैं भी 'धन्य' हो गया। किंतु मैं आपके आभार का मूल्य कैसे चुका सकता हूँ; फिर भी कृपया आप इसे स्वीकार करने की उदारता दिखायें।"

और, पून्तानम ने उन्हें अपनी मुद्रिका दे दी। महामंत्री ने स्वीकार कर लिया और मुस्करा कर अपनी राह चले गये।

पून्तानम ने भी अपने आराध्य का नाम लिया और चलने लगे। जब वे गुरुवायूर में कृष्ण भगवान् के मंदिर में पहुँचे, तो उनके मन को एक अपूर्व शांति मिली। तभी मंदिर के प्रधान पुजारी ने आकर उन्हें एक मुद्रिका दी और कहा—"रात भगवान् ने स्वप्न में कहा कि, यह मुद्रिका आपके आने पर आपको दे दी जाये। आज सुबह यह मुद्रिका भगवान की उँगली में पड़ी मिली। भक्तप्रवर! कृपया आप ही हमारी जिज्ञासा शांत कीजिये।"

पून्तानम ने मुद्रिका पहचान ली। तत्क्षण ही उनके सामने अपने प्रभु का सारा खेल स्पष्ट हो उठा और उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बह चले। फिर वहाँ के पुजारियों को सारी कथा सुनाते हुए उन्होंने कहा—"भगवान् कृष्ण ने मंडाट्ट अच्छन के वेश में उस वक्त जैसे अपना ग्यारहवाँ अवतार लिया।" भाव-विह्वल होकर उन्होंने कहते-कहते प्रभु के चरण पकड़ लिये और वहाँ उपस्थित सारी भक्त-मंडली "धन्य-धन्य!" कह उठी!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत के संत महात्मा—"विशुद्ध, परमार्थ-रूप, अद्वितीय तथा भीतर-बाहर के भेद से रहित परिपूर्ण ज्ञान ही सत्य वस्तु है। वह सर्वांतर्वर्ती और सर्वथा निर्विकार है। वही भगवान् है, वासुदेव है!" इस चिर शाश्वत सत्य को जितनी निष्ठा से भारत ने ग्रहण किया है, उतनी निष्ठा से अन्य किसी देश ने नहीं। संत-महात्माओं की परम्परा युग-युगांतर से भारत की अमूल्य निधि रही है। निस्संदेह ही, भारत ने समय-समय पर बड़े-बड़े योद्धा, राजनीतिज्ञ, साम्राज्य-स्थापक और शासकों को भी जन्म दिया है; किंतु प्रत्येक युग में यहाँ महान् आत्माएँ अवतरित हुई ही हैं। सही माने में वे विभूतियाँ ही भारत की सच्ची निर्मात्री हैं। यहाँ की भूमि के कण-कण ने उन संतों की वाणियों से प्रेरणा ग्रहण की है। प्रस्तुत पुस्तक में सौ से अधिक ऐसे ही संतों का जीवन-चरित है। विद्वान् लेखक ने प्राचीन, मध्यकालीन और अर्वाचीन युग के संतों का संक्षिप्त जीवन-परिचय बड़े सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। उसने अपने चुनाव में पूरी सावधानी बरती है। जिन संतों के नाम चुने गये हैं, उनमें ज्ञानप्राप्त शैव, वैष्णव, शाक्त, बौद्ध, जैन, मुसलमान योगी, ज्ञानी, भक्त कर्मी, वैदिक, तांत्रिक, द्वैतवादी, अद्वैतवादी और विशिष्टाद्वैतवादी— सभी हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के नवीन-प्राचीन सभी संतों को इसमें परिगणित किया गया है और उनकी अमृत-वाणियाँ भी दी गयी हैं। इस प्रकार प्रथम बार सम्प्रदाय-निरपेक्ष संतों का अध्यात्म इस एक पुस्तक में केंद्रित किया गया है। भारतीय संस्कृति

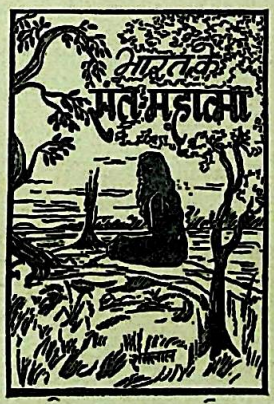

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के तत्वदर्शन की झाँकी प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है और इस श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं। पुस्तक का गेट-अप और छपाई भी साफ-सुथरी तथा सुंदर है।

१०२६ पृष्ठों की इस संग्रहणीय पुस्तक का मूल्य है दस रुपये; लेखक हैं रामलाल और प्रकाशक हैं—वोरा ऐंड कंपनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ३ राउन्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रास्ता, बम्बई २।

पालिटिक्स ऐंड साइंस:—लेखक: विलियम एसलिंगर; भूमिका-लेखक: अल्बर्ट आइंस्टीन; प्रकाशक: फिलासफीकल लाइब्रेरी, न्यूयार्क; मूल्य: ३ डालर (लगभग १५ रुपये)। प्रस्तुत पुस्तक में आधुनिक राजनीति की विफलता पर विश्लेषणात्मक प्रकाश डाला गया है। क्या कारण है इस गतिरोध का? लेखक ने मूल कारण की उद्भावना करते हुए लिखा है कि, विज्ञान का निरपेक्ष दृष्टिकोण जब तक राजनीति की गति-मति पर शासन नहीं करेगा, तब तक राजनीति अपने अंधविश्वासों और मिथ्या व्यामोह से मुक्त नहीं हो सकेगी और राजनीति की मुक्ति के बिना उसके संचालन का प्रत्येक कार्य दूषित होगा। श्री एसलिंगर का प्रतिपादन है कि, आनेवाली पीढ़ी को निरपेक्ष राजनीति के संसार का नागरिक बनाने के लिए स्कूलों और विश्वविद्यालयों में नये दृष्टिकोण के राजनीति-ग्रंथ तैयार करके पढ़ाने चाहिए! पुस्तक सारी पठनीय है — नयी पीढ़ी के लिए तो यह एक अनिवार्य मार्गदर्शिका है; किंतु इसका सबसे महत्वपूर्ण अंग है, महामना आइंस्टीन की भूमिका। आइंस्टीन ने आधुनिक राजनीति के रोगों का निदान स्पष्ट करते हुए, मानो बाहु उठाते हुए, कहा है—"राजनीति के सिद्धांत और आचरण-पक्षों के बीच जो द्वैत है, वह जब तक कायम है, तब तक मानव को युद्धों से मुक्ति नहीं मिल सकती।" यों तो सारी पुस्तक विचार-प्रेरक है; किंतु अकेली इस भूमिका के लिए ही यह प्रत्येक घर की शोभा हो सकती है!

★

मास का पठनीय साहित्य

१. **बौद्ध-दर्शन**— लेखक: आचार्य नरेन्द्रदेव; प्रकाशक: बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना; मूल्य १७ रुपये सजिल्द।

२. **बापू की कलम से**— संग्रहकर्ता: पन्नालाल जैन; सं० काका कालेलकर; प्रकाशक: नवजीवन-प्रकाशन-मंदिर, अहमदाबाद; मूल्य २.५० रुपये।

३. **दस्ते-सबा**— लेखक: फैज अहमद फैज; प्रकाशक: आत्माराम ऐंड संज, काश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य: २.५० रु० सजिल्द।

४. **इन डेज आव ग्रेट पीस**— लेखक: मौनी साधु; मूल्य १५ शिलिंग।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई–२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी सहायता करें ताकि हम आपकी सहायता कर सकें

एक पुरानी कहावत है कि, 'स्वच्छता की गणना देवत्व के बाद है।' साफ़-सुथरा वातावरण प्रसन्नता प्रस्फुटित करता है। बीमारियों के नियंत्रण में सफाई एक महत्वपूर्ण सहयोग देती है। रेलवे प्लेटफार्मों पर, प्रतीक्षालयों में और रेल के डिब्बों आदि में जहाँ अधिक संख्या में लोग जमा होते हैं, उनके स्वास्थ्य के लिए, यह अति आवश्यक है कि, हम स्वास्थ्य-सम्बंधी नियमों का पूर्णरूपेण पालन करें।

रेलवे की इन बीमारियों के प्रति जो मोर्चाबंदी है, उसमें आप निम्नलिखित रूप से सहायता कर सकते हैं—

—आप अपने आस पास के स्थानों को साफ रखने में सम्पूर्ण सहयोग दें और जरुरत पड़े तो रेलवे के 'सफाई विभाग' के कर्मचारियों की, भी मदद लें। वे हर स्टेशन पर उपलब्ध हैं।

भारतीय रेलों के लिए उत्तर रेलवे द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यार्थी के लिए

एक आदर्श कलम

क्लास नोट्स, स्वच्छ घरेलू पाठ,
परीक्षाओंके लिए, उसे एक विश्वस्त
आसानीसे लिखनेवाली कलम चाहिये।

- स्याही रुकती नहीं
- नियन्त्रित प्रवाह
- चलनेमें आसान

Price.
Rs. 4·75

सच ही, उसकी पसन्द है

चे म्पि य न (रजिस्टर्ड) ७७७

सब की मन पसन्द

गुजरात इन्डस्ट्रीज प्राइवेट लि०
बम्बई-२.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिभा

सौंदर्य के लिये..

रेमी स्नो

* त्वचा सुकोमल रखता है

Remy SNOW

ए. व्ही. आर. ए. ॲण्ड कं. बम्बई नं. २

पुस्तक बिल्कुल मुफ़्त

किसी भी कारण से किसी भी आयु में खोए हुए।

को फिर से प्राप्त करने के लिये

शक्ति और यौवन

"शक्ति बिना औषध" मुफ़्त मंगावें

डी० ए० बी० लेबारेट्रीज़

पोस्ट बक्स १३७२ दिल्ली-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय : २ इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी.....८,००,००,०००
लागत पूँजी.....४,००,००,०००
चुकती पूँजी.....२,००,००,०००
सुरक्षित कोष..... १३४,००,०००

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यवसायिक प्रसिद्धि के शहरों में–

पाकिस्तान : चटगाँव तथा करांची

बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्याव, मांडले तथा बेसीन

मलाया : सिंगापुर, पिनांग, कौला–लामपुर तथा क्लांग

यू० के० : लन्दन

अन्य हांगकांग,
युरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया, आदि सारे विश्व में एजेन्ट हैं।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफोर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्स्चेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्व-व्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा प्रदान करती है।

सुविधाजनक मूल्यों के रुपयों में ट्रेवेलर चेक दिए जाते है।

जी. डी. बिड़ला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिटा
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिएं

पेप्स टिकियाँ चूसिए और फिर देखिए कि इनकी आरामदेह भाप से दर्द किस खूबी से मिटता है तथा गले का दर्द, ब्रांकाइटिस, खाँसी व सर्दी पैदा करनेवाले कीटाणु कितने जल्द नष्ट होजाते हैं। पेप्स फ़ौरन आराम पहुँचाकर कष्ट को मिटाती हैं।

इनमें कोई
नुकसानदेह दवाएँ
नहीं होतीं
ये बच्चों को देखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

FPY 55 HIN

बम्बई के सोल एजेन्ट :
केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

★

जल्द तथा
विनयशील
सेवा के लिये

THE BANK OF JAIPUR LTD.
Head Office: JAIPUR

दि
बैंक ओफ जयपुर लि.
बम्बई आफिस:—कुम्स बिल्डिंग, हार्नबी रोड

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक गृहिणी के मुख पर ...

वास्तव में उसकी पसन्द का कारण है। उसे मालूम है कि वे देखने में सुन्दर हैं, बुनावट में मुलायम हैं, निर्दोष बुने हुये हैं, टिकाऊ हैं, पहनने में मजबूत हैं और इसके ऊपर भी वे उचित मूल्य के हैं। आप भी जब 'इन्दु फैब्रिक्स' पसन्द करेगें उसीकी भांति उत्सुक होंगे।

इन्दु फैब्रिक्स बम्बई

दि इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि.

भारत का सबसे बड़ा सूती मिल समूह

२,४०, ८४२ तकुये ६४१२ करघे.

एजेण्ट्सः मेसर्स अग्रवाल एन्ड कंपनी,
इन्दु हाउस, इगल रोड, बलार्ड इस्टेट, बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेलना शक्ति घटाता है...

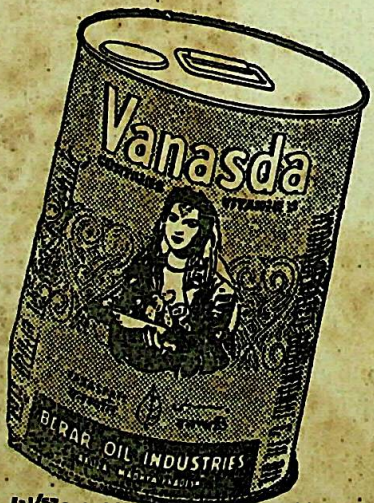

पौष्टिक भोजन इसकी पूर्ति करता है। वनसूदा में बना कोई भी भोजन खाद्य-उपयोगिता में श्रेष्ठतम हो जाता है।

वनसदा

एक विटामिन-युक्त वनस्पती है

बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज, आकोला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुविधा और बढ़िया काम के लिए

ऊँचे दर्जे की रचना

प्रभात प्रेशर कुकिंग स्टोवों, ब्लो लैम्पों, गैस लाइट लैम्पों और गैस लाइट मैण्टलों का उत्पादन भारत में जब सन् १९२८ में शुरू हुआ उस समय ये अपने दर्जे में सर्व प्रथम थे।

तब से साल-पर-साल निरंतर सुधारों के फल-स्वरूप आज भी ये सर्वोत्तम माने जाते हैं ...

प्रभात

उत्पादन

"भारत के सर्वप्रथम... और आज भी सर्वोत्तम!"

प्रभात (स्टोव एण्ड लैम्प) प्रोडक्ट्स कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई - १

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 6248

६०

६० विज्ञापन मनिमाल ५, रंगों के विकास से

कहाँ

अभिसार के लिए

[illegible] केलिक्लॉथ ऑरगण्डी में विभूषित होकर...

[illegible] collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जून

१९५८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरा मेरी सीधी पीठ और मजबूत हाथ पांव को तो देखिये

जब माँ नें खुद पिलाना बंद किया तो मेरे लिये शिशुओंका अत्युत्तम दुग्ध खाद्य "ओस्टरमिल्क" ही खरीदा, जो शुद्ध पौष्टिक और बहुत ही आसानीसे पचनेवाला है। अब मैं माँ का दूध पीनेवाले, किसी भी शिशु के इतना ही सुदृढ़ और तंदुरुस्त हूँ।

मैं ओस्टरमिल्क का शुक्र गुजार हूँ।

OSTERMILK

ओस्टरमिल्क माँ के दूध के समान

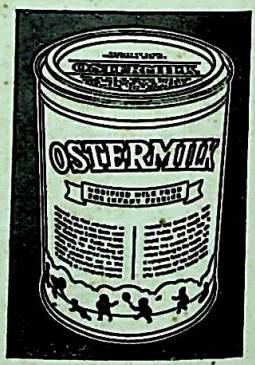

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • नई दिल्ली

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरते हुए बाल

आज की इस सामान्य तकलीफ का मुख्य कारण बालों की जड़ों को मिलनेवाले पोषक तत्वों की कमी है—जो.....

केशा

जैसा, अनेक सफल प्रयोगों के बाद तैयार किया हुआ तेल इस्तेमाल करने से आप सदा के लिए दूर कर सकते हैं। "केशा" बालों की वृद्धि करनेवाले जरूरी और सब पोषक तत्वों से बना है और इसीलिए जनता में ये इतनी जल्दी लोकप्रिय हो गया है।

★

सोल एजेन्ट :—

एम. एम. खंभातवाला रायपुर अहमदाबाद

एजेन्ट :—

सी. नरोत्तम एन्ड कं. मंगलदास रोड बम्बई—२. टे. नं. ३०५७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरिस्टोक्रैट

डिप्लोमैट

रोटेरियन

इलाइट

लोकप्रिय सूटिंग्स
और
सुपरशीन शाटुंग प्रिंट्स

सुन्दर डिजायनों व रंगों में

ग्वालियर रेयन

द्वारा

पहिनने में सुन्दर
देखने में प्रतिभाशाली
स्पर्श में मुलाइम

ऐसे वस्त्र जिन्होंने फैशन
में नया स्थान बनाया है

ड्राईक्लीनिंग की आवश्यकता नहीं

घर पर गुनगुने पानी में साबुन के चूरा
के साथ आसानी से धोये जा सकते हैं

GWALIOR RAYON FABRICS

ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यु० (वी०) कं० लि०,
बिरलानगर – ग्वालियर

१ मेसर्स डायाभाई ब्रदर्स,
सैन्डर्स्ट ब्रिज, बम्बई

२ ग्वालियर इन्डस्ट्रीज (प्रा.) लि०
११५ महात्मा गांधी रोड, बम्बई–१

३ मेसर्स जीवनदास दयालजी,
गोविंद गली, एम. जे. मार्केट बम्बई–२

४ मेसर्स चन्द्रकांत पोपटलाल, ५ वी गली
चन्द्रा चौक, एम. जे. मार्केट बम्बई–२

५ मेसर्स अजीत लाल ब्रदर्स, ४ थी गली,
चन्द्रा चौक, एम. जे. मार्केट, बम्बई–२

६ मेसर्स रंजीत कंपनी, माधवराय गली
एम. जे. मार्केट, बम्बई–२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे परिवार के लिए एकही टैल्कम् पाउडर

मनमोहक सुगंधियुक्त, प्रोटेक्स बढ़िया क्वालिटी का सर्व-उपयोगी पाउडर है, जो बड़े डिब्बे में...कमसे कम कीमत में मिलता है। सुहानी मोहक सुगंधवाला प्रोटेक्स हर प्रयोजन के लिए उपयोगी है। इसी कारण भारत में हजारों परिवार प्रोटेक्स को ज्यादा पसंद करते हैं...

अब सुन्दर पफ भी साथ में मिलता है!

प्रोटेक्स

सर्व-उपयोगी

टायलेट पाउडर

कोलगेट का एक और उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

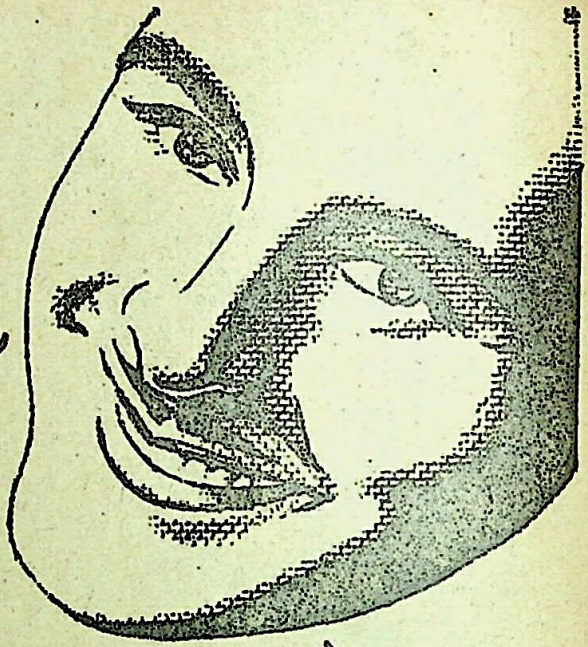

जलन मिटाता है

शीतलता देता है

आइसी-कूल

दाढ़ी बनाने के बाद लगाने का लोशन (शेव लोशन)

H. I.K 3

हरबार दाढ़ी बनाने के बाद आइसी-कूल लोशन इस्तेमाल कीजिये। इसे लगाने से मिलने वाली शीतलता और ताज़गी आपको प्रसन्न करेगी। आइसी-कूल फटन और घावों को ठीक कर देता है और इस में विशेष रूपसे पुरुषों के उपयोग की लेवेण्डर फूलों की सुगंध भी है।

हर जगह मिलता है।

PEARLINE-PARIS PRIVATE LTD.
P. O. Box 493 • • Bombay I.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

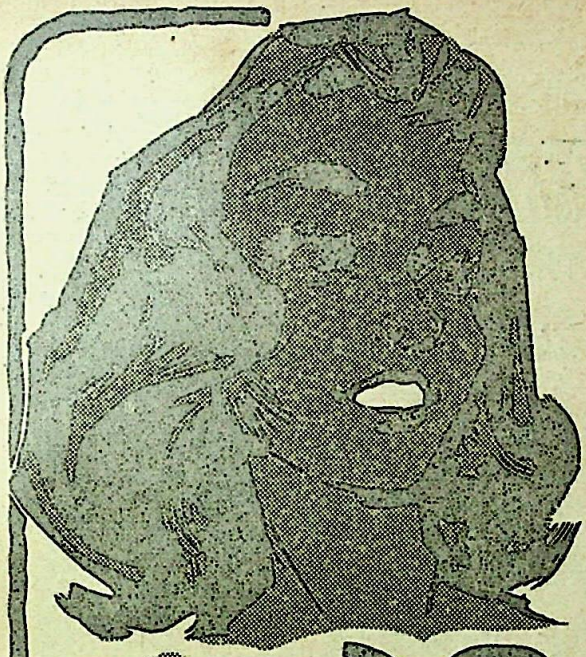

सदा

चमकीली

मुस्कान

ग्रीन कोलिनॉस

असरदार क्लोरोफिलवाले टूथपेस्ट का शुक्रिया

आज ही ग्रीन 'कोलिनॉस' टूथपेस्ट का इस्तेमाल शुरू कीजिये। इससे दान्त कितने चमकीले सफेद होते हैं, यह आप देखते ही रह जायेंगे। सारा रहस्य इसके असरदार क्लोरोफिल में है। ग्रीन 'कोलिनॉस' का बढ़िया झाग बारीक से बारीक दरार में पहुंचकर दन्तक्षय करनेवाले रोगाणुओं का नाश करता है और आपके दान्तों को पहले से कहीं अधिक स्वच्छ व सफेद रखता है।

हमेशा ग्रीन
'कोलिनॉस' ही लीजिये।

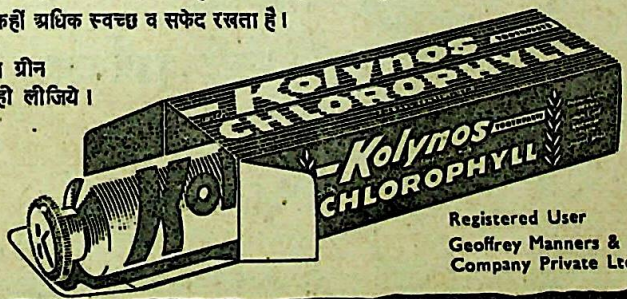

Registered User
Geoffrey Manners &
Company Private Ltd.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीटाणुओं को नोटिस:
इस घर में अब हमारे
लिए जगह नहीं। यहाँ
के लोग फ़्लिट
मारते हैं!

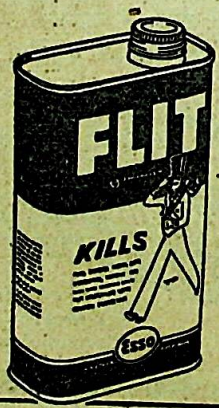

फ़्लिट
...स्टैन्वैक
द्वारा बेची जाती है।

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी
(सीमित दायित्व सहित
यू. एस. ए. में संस्थापित)

V. 6483

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

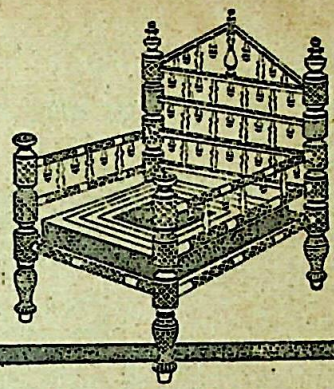

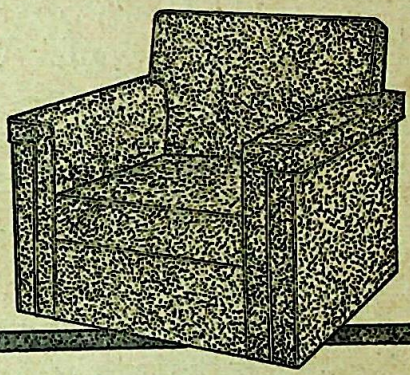

हर माप

हर आकार

हर डिज़ाइन की

डनलपिलो गद्दियाँ

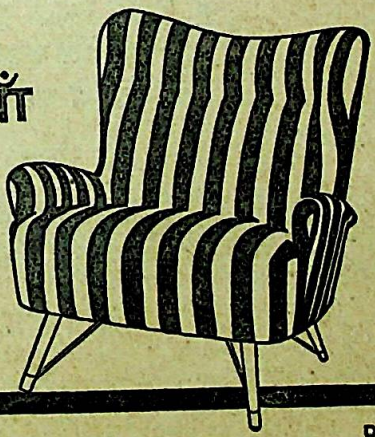

गद्दे व तकिये भी

DPC-36 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यार्थी के लिए

एक आदर्श कलम

क्लास नोट्स, स्वच्छ घरेलू पाठ,
परीक्षाओके लिए, उसे एक विश्वस्त
आसानीसे लिखनेवाली कलम चाहिये।

- स्याही रुकती नहीं
- नियन्त्रित प्रवाह
- चलनेमें आसान

Price.
Rs. 4.75

सच ही, उसकी पसन्द है

चेम्पियन (रजिस्टर्ड) ७७७

सब की मन पसन्द

गुजरात इन्डस्ट्रीज प्राइवेट लि०
बम्बई-२.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

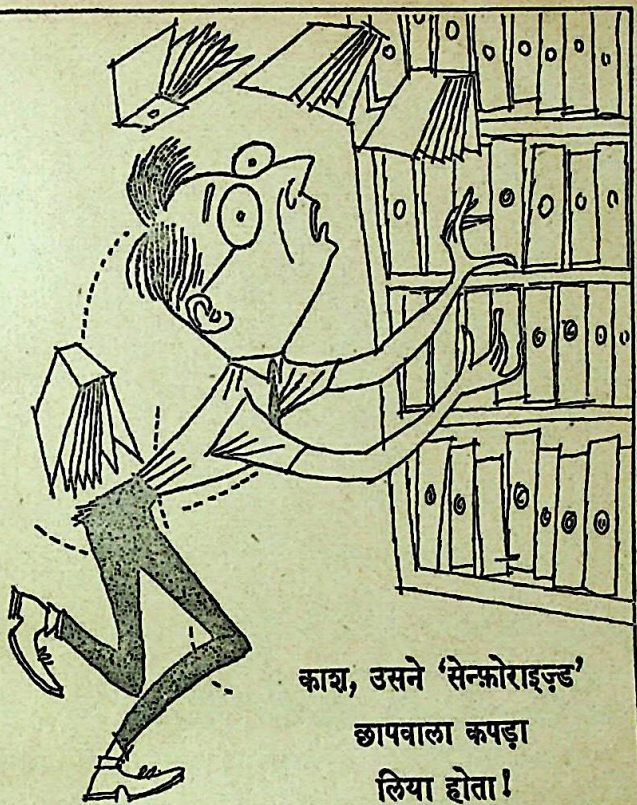

काश, उसने 'सेन्फ़ोराइज़्ड' छापवाला कपड़ा लिया होता!

अगर आप चाहते हैं कि आपके कपड़ों का माप सदा ठीक रहे तो सूती कपड़ा या सिले-सिलाये कपड़े खरीदने से पहले 'सन्फ़ोराइज़्ड' ('Sanforized') की छाप ज़रूर देख लीजिए। 'सेन्फ़ोराइज़्ड' की छाप से इस बात का निश्चय रहता है कि आपके कपड़े कभी सिकुड़कर तंग नहीं होंगे भले ही कितनी ही बार क्यों न धोये जायँ।

लेबल पर 'SANFORIZED' AGED TO ME

यह छाप देख लीजिए

उसके बाद आपके कपड़े सिकुड़कर कभी तंग न होंगे!

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क 'सेन्फ़ोराइज़्ड' के मालिक क्लुप्ट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित) द्वारा प्रचारित। 'सेन्फ़ोराइज़्ड' का ट्रेड मार्क केवल उन्हीं कपड़ों पर लगाने की अनुमति दी जाती है जो इस कंपनी द्वारा निर्धारित कपड़ा न सिकुड़ने की कड़ी शर्तों को पूरा करते हैं।

अधिक जानकारी के लिए: 'सेन्फ़ोराइज़्ड' सर्विस, ९५ मरीन ड्राइव, बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

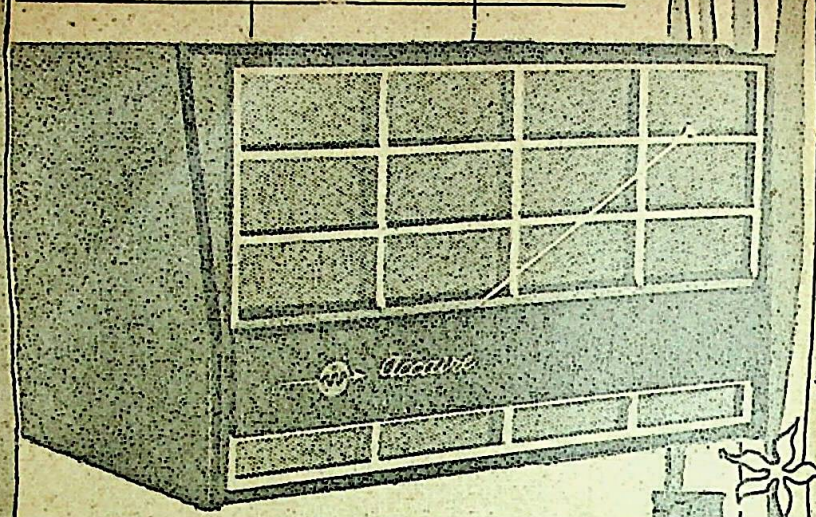

A RANGE OF

SIX COLOURS FOR YOUR CHOICE

Accaire AW—101

ROOM AIRCONDITIONER

Pick your new Accaire in a colour that blends with your room. Its unique design and compact construction makes it an excellent piece of furniture to adorn any room. What's more, it is made by an organisation with over a quarter century of experience in airconditioning.

OTHER ADVANTAGES INCLUDE :

- Better cooling capacity
- More silent operation
- Lower running cost
- Better service after sale
- One year's guarantee

Manufactured by

AIR CONDITIONING CORPORATION PRIVATE LTD.

Pioneers in Airconditioning in India

CALCUTTA • BOMBAY • NEW DELHI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

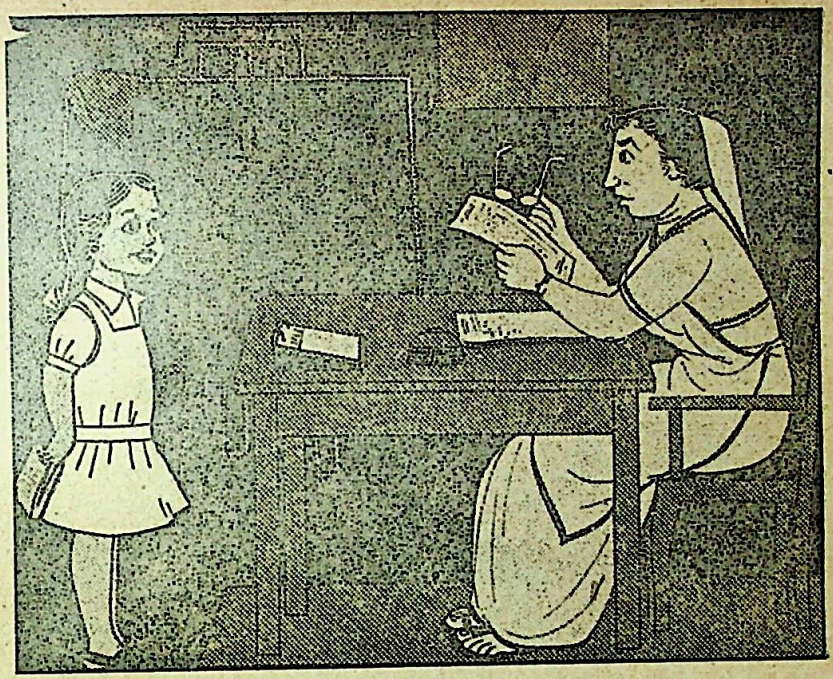

'कांता, तुम्हारे अंक तो खास अच्छे नहीं है परन्तु तुम्हारे स्कूल के कपड़े **टिनोपाल** के उपयोग से हमेशा चमचमाते सफेद होते हैं इस लिए तुम दूसरी कक्षा में चढ़ाने लायक हो।'

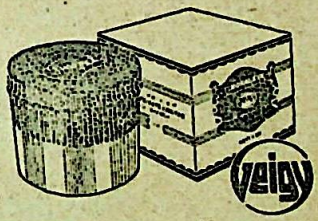

'टिनोपाल' जे. आर. गायगी, एस. ए., बाल, स्विटजरलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

निर्माता :

सुहृद गायगी प्राइवेट लिमिटेड, वाडी वाडी, बडौदा

एकमात्र वितरक :

सुहृद गायगी ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, पो. आ. बाक्स ९६५, बम्बई

थोडा-सा टिनोपाल सफेद कपडो को सबसे अधिक सफेद बनाता है

SISTA'S-SG-44-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवारोक
दफ़्ती के
डिब्बों में
बिस्कुट
ख़रीदिये

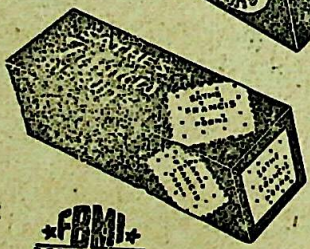

आकर्षक और
हवारोक दफ़्ती
के डिब्बों में
बिस्कुट ख़रीदकर अन्य
ऐसे पदार्थों के लिए
टीन बचाने में मदद
कीजिए जो काग़ज़ या
दफ़्ती के बक्सों में पैक
नहीं किये जा सकते ।

FBMI
FEDERATION OF BISCUIT MANUFACTURERS OF INDIA

साठे
बिस्कुट
'करारे और स्वादिष्ट'

साठे बिस्कुट एण्ड चाकलेट कं० लि०, पूना-२

HEROS' No. 8 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपमें शक्ति होनी चाहिए

क्या आप शिथिलता और थकान महसूस करते हैं? क्या आपमें उत्साह की कमी है? आप ग्लूकोविटा लीजिए। ग्लूकोविटा आपको शक्ति देगा। ग्लूकोविटा में आपके लिए अनिवार्य रक्त-शक्कर ऐसे रूप में रहती हैं कि तत्काल ही रक्त में घुलमिल जाती हैं। यही कारण है कि ग्लूकोविटा आपको आवश्यकता पड़ने पर तत्काल ही शक्ति और उत्साह प्रदान करता है। ग्लूकोविटा में शामिल विटामिन आपको शक्तिपूर्ण, जीवनपूर्ण और स्वस्थ रखते हैं।

ग्लूकोविटा

तत्काल शक्ति देता है!

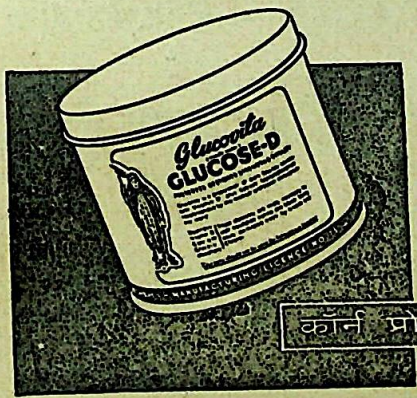

कॉर्न प्रोडक्टस क. (इंडिया) प्राइवेट लि.

बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

REPRESENTATIONS

ARE

OFFERED

★

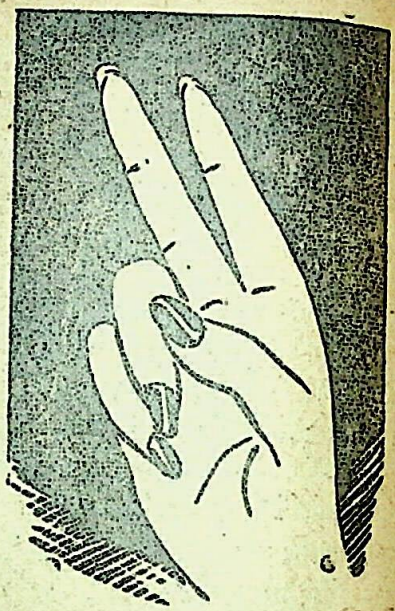

TWO THINGS
TO REMEMBER

"K"
for Kanoi
&
Kanoi
for
tea

KANOI TEA
(PRIVATE) LTD

POST BOX No. 982
CALCUTTA-1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज का फैशन

सरसिल्क का रेशम

भारत को अपने रेशम के उत्पादन के लिए प्राचीन काल से ही वैभवता प्राप्त है और उसी परम्परा को आज के मानव निर्मित एसीटेट सूत से नवीन कलेवर प्राप्त हुआ है। सुन्दरता, कोमलता, रंगों की शानदार चमक-दमक, इन सारी दृष्टियों से सरसिल्क एक ऐसा रेशम है जिसका कोई जोड़ नहीं। व्यवहार में उपयुक्त, टिकाऊ व आधुनिक फैशन का होते हुये भी मूल्य अधिक नहीं।

सरसिल्क

क्वालिटी फेबरिक्स

फैशनेबुल पुरुषों के लिये :
शार्करिकन, फैन्सी शूटिंग,
शाप्टुंग, शर्टिंग इत्यादि
सुरुचि सम्पन्न महिलाओं के लिये :
टफेटा, साटिन, क्रेप, जार्जेट इत्यादि

सरसिल्क लिमिटेड सरपुर-कागज़नगर, आन्ध्र प्रदेश

कलकत्ता कार्यालय : ८, इन्डिया एक्सचेंज प्लेस

सोल सेलिंग एजेन्ट : मेसर्स तुलसीदास कानोड़िया ऐण्ड कम्पनी, इण्डिया एक्सचेंज बिल्डिंग, कलकत्ता

बम्बई कार्यालय : २६४।२६८ कालबादेवी रोड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल

आयुर्वेदिक औषधि (रजिस्टर्ड)

सिरकी रुसी तथा गिरते बालों को रोकने के लिए एक अमूल्य हेयर टॉनिक शीघ्र ही गिरते हुए बालों को रोकता है और घने बाल उगाता है। प्राकृतिक काला रंग प्रदान करता है। सर्व ऋतु में सबके लिए उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ४/ छोटी शीशी २) रु. प्रत्येक स्थान पर मिलता है। ६/५० का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ४/- का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें। आसन चार्ट: स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा यौगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक खर्च सहित रु. २, ५० में प्राप्य है। यह आसन सरलता से घर पर किये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम

दादर, (सेन्ट्रल रेलवे) बम्बई–१४

टेलिफोन : ६२८९९

ब्रांकाइटिक जल्द ही ठीक हो जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली जग-प्रसिद्ध

पेप्स टिकियाँ लीजिए।

गले का दर्द, ब्रांकाइटिस, खाँसी व सर्दी—ये तकलीफें गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली पेप्स टिकियों से जल्द ही मिट जाती हैं। पेप्स चूसकर देखिए तो उसकी आरामदेह भाप से कितना आराम पड़ता है, रोग-कीटाणु कितने जल्द नष्ट होते हैं, और दर्द से किस खूबी के साथ छुटकारा मिलता है।

पेप्स

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली टिकियाँ

सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं।

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :

केम्प एण्ड कं. लि. पो. बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृश केस
वाइटेक्स द्वारा निदान

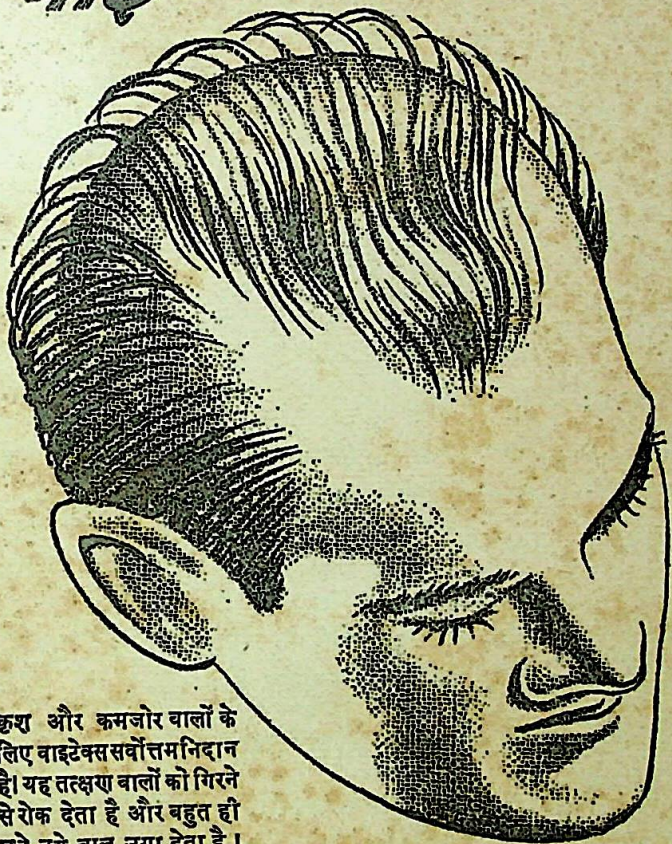

कृश और कमजोर बालों के लिए वाइटेक्स सर्वोत्तम निदान है। यह तत्क्षण बालों को गिरने से रोक देता है और बहुत ही घने नये बाल उगा देता है।

हर जगह प्राप्य।

H.
V. 110

वाइटेक्स

दुनिया में सब से अच्छा बाल उगाने वाला

PEARLINE PARIS PRIVATE LTD., P. O. Box 493 Bombay.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल्द तथा
विनयशील
सेवा के लिये

दि
बैंक ओफ जयपुर लि.
पम्बई आफिस:-कुक्स बिल्डिंग, हार्नबी रोड

BAJ 142.

बच्चों के पेट-दर्द को तुरंत आराम पहुंचाता है

ग्राइपानिल
(ग्राइप मिक्श्चर)

'टासानल' के निर्माताओ द्वारा प्रस्तुत

H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज रविवार है— सर धोना मत भूलिये

घने, काले तथा लम्बे सुन्दर केशों की अधिकारिणी होना कौन नहीं चाहती ? परन्तु सब वस्तुओं की तरह इसके लिये भी आवश्यकता है यत्न पूर्वक देखभाल की। सप्ताह में एक दिन अच्छी तरह सर धोने की अत्यन्त आवश्यकता है क्यों कि आपके केश अच्छे रखने के लिये उनमें धूल, मिट्टी तथा खुश्की न जमने पाये इसकी ओर सर्व प्रथम सतर्क दृष्टि देनी होगी। सर धोने के पश्चात केश सूख जाने के बाद कम से कम दस मिनट जवाकुसुम से मालिश कीजिये। यह सुप्रसिद्ध तेल आपके केशों को खाद्य देकर उन्हें सुन्दर तथा हरा भरा बनाये रखेगा।

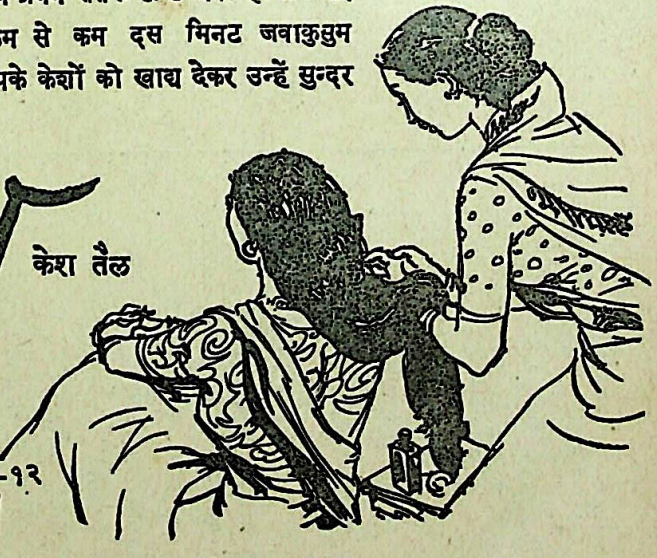

जवाकुसुम केश तैल

सी. के. सेन एण्ड कं० प्राइभेट लिमिटेड
जवाकुसुम हाउस, ३४, चितरंजन एभिन्यू, कलकत्ता-१२
११७, आर्मेनियन स्ट्रीट, मद्रास-१

JK.55.H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

McK
McKENZIES LIMITED

हमसे परामर्श करें

निम्नलिखित विशेष कार्यों के सम्बन्ध में :—

- वाइब्रो और प्रीकास्ट पाइल फाउन्डेशन्स
- आर. सी. सी. सिलोज
- पानी की टंकी
- रिजर्वायर्स
- ट्रेलर, ट्रालियाँ
- टीपिंग वेगन्स
- एम्बुलेन्स, रेडियो और एक्सप्लोजिव की गाड़ियाँ
- मैल-मलीदा निकालनेवाली गाड़ियाँ
- सड़कें, बाँध और पुल
- वाटरप्रूफ छतें
- भीतरी सजावट
- आधुनिक फर्नीचर
- मोटर गाड़ियों के ढाँचे (सभी खात, अलुमिनियम और कम्पोजिट)

प्रधान कार्यालय :—

मैकेन्ज़ीस लिमिटेड

शीवरी, बम्बई.

(टे. नं. ६०००७/८/९)

क्या बहुत दर्द है ?

सेरिडोन की

एक टिकिया

वयस्कों के लिए पूरी खुराक है

★ कष्ट में राहत देती है

★ आराम पहुँचाती है

★ ताज़गी देती है

Saridon

१२ नये पैसे

बच्चों के लिए १/४ से १/२ टिकिया तक

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स : वोल्टास लिमिटेड

VT. 6289

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलविन की नलीदार इस्पात की कुर्सियों व मेजों की तुलना अन्य कुर्सियों व मेजों से कीजिए जिनका आपने अब तक उपयोग किया है!

आलविन के फ़र्नीचर की बनावट का व्यावहारिक परीक्षण होता है। ये अत्यधिक आरामदेह हैं। इनकी मजबूती से कई वर्षों की सेवा सुनिश्चित है।

दफ़्तर की कुर्सियाँ व मेजें

फ़र्नीचर की बनावट में भारत में अग्रगण्य, आलविन की चीजें खरीदने से आपके दाम वसूल हो सकते हैं और केवल आलविन ही आपको बचत करने में सहायक होते हैं। चुनाव करने से पहले आलविन का फ़र्नीचर देखिए। स्प्रिंगदार बैठने की व टिकने की गद्दीवाली, नलीदार इस्पात की कुर्सियाँ। इनकी गद्दियों पर रेक्सिन चढ़ा होता है। गोल घूमनेवाली कुर्सियाँ भी मिलती हैं। नलीदार इस्पात की मेजें जिनमें बॉक्स व दराज होते हैं; ऊपर लिनोलियम चढ़ा होता है और अपने आप लगनेवाला ताला भी होता है।

आलविन से पूरा संतोष होता है।

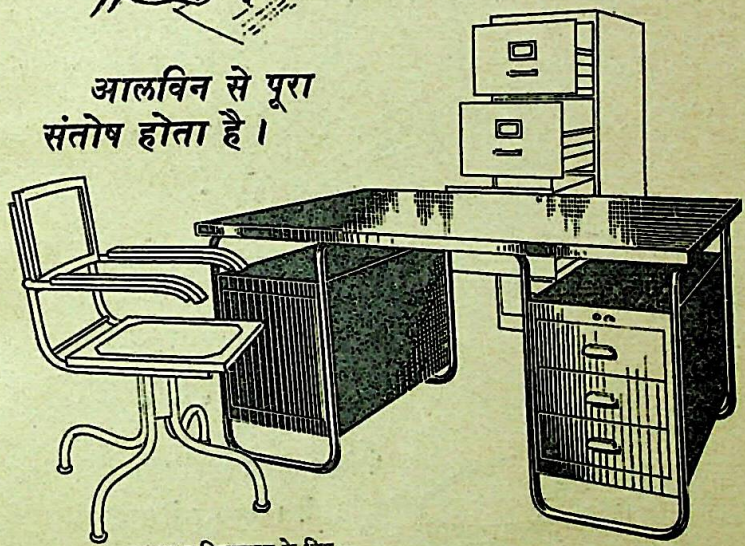

बनावट व टिकाऊपन के लिए—

आलविन

प्रसिद्ध फ़र्नीचर

अपने सबसे निकट के विक्रेता से मिलिए या सचित्र सूचिपत्र मँगाइए।

हैदराबाद आलविन मेटल वर्क्स लिमिटेड, सनतनगर, हैदराबाद-१८.

बम्बई, सौराष्ट्र, कच्छ और दक्षिण भारत में वितरक

मेसर्स रोनिओ लिमिटेड

बम्बई ऑफिस:
मेसर्स रोनिओ लिमिटेड,
३९, बॅस्टिअन रोड, फोर्ट, बम्बई-१

मद्रास ऑफिस:
मेसर्स रोनिओ लिमिटेड,
३५, माउंट रोड, मद्रास-२

हेड ऑफिस:
मेसर्स रोनिओ लिमिटेड,
पी. १३, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता-१

दक्षिण और पश्चिम भारत में सभी प्रमुख शहरों में हमारे डीलर और एजेन्ट्स हैं।

MAK.S.2A.JHN.

EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेलना शक्ति

घटाता है . . .

पौष्टिक भोजन इसकी पूर्ति करता है। वनस्दा में बना कोई भी भोजन खाद्य-उपयोगिता में श्रेष्ठतम हो जाता है।

वनस्दा

एक विटामिन-युक्त वनस्पती है

बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज, आकोला

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

किसी समय
किसी जगह
किसी अवसर पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीतल कीजिये और पिलाइये

पाइनेप

रोजर्स ऐण्ड कं. (प्राइवेट) लि.

साण्डू

ओरिजिनल
ब्राह्मी तेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रीति-गीतिका के
भाव-गन्ध की भाँति
विश्वव्यापी

स्वस्तिक सुगंधित कैस्टर ऑईल

कैस्टर-ऑईल भारत का परम्परागत
अलक—शृंगार साधन है यह केशों
का स्वास्थ्य सम्हालकर उनपर
जीवन की आभा चमकाता है
स्वस्तिक के मन्द सुगन्धीकरण से सराबोर यह
गत बीस सालों से लाखों की
चाह का उपहार बना है

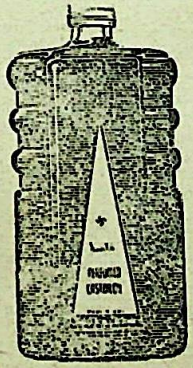

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि०, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीतल, फिल्टर किया हुआ पीने का पानी ?

इसके लिए 'जलशीतलकारी ब्लू स्टार' ही पसन्द कीजिये।

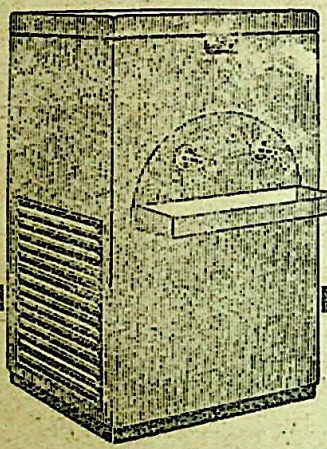

'स्टोरेज' किस्म का

कारखाना, कार्यालय, स्कूल, रेस्तराँ, क्लब म 'जलशीतलकारी ब्लूस्टार' आपको सन्तोष देगा।

पसन्द के लिए 'ब्लू स्टार' आपके सामने १३ माडेल प्रस्तुत कर रहा है– 'स्टोरेज व इनस्टेन-टेनियस'...विशेष रूप से भारतीय वातावरण के अनुकूल बनाये गये हैं।

'ब्लू स्टार' सर्वोपरि जलशीतलकारी यन्त्र है।

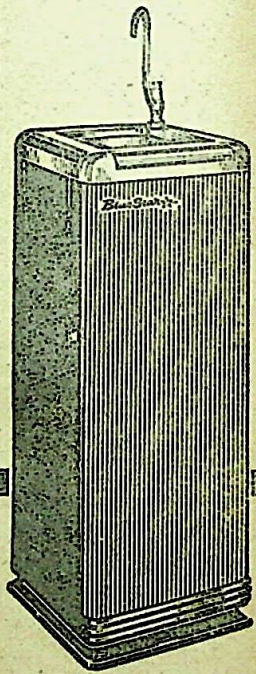

'इनस्टेनटेनियस' किस्म का

ब्लू स्टार इन्जीनियरिंग कं० (बम्बई) प्राइवेट लि.,
कस्तूरी बिल्डिंग्स, जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई
एवं कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये बम्बई राज्य की
द्वितीय पंचवर्षीय योजना

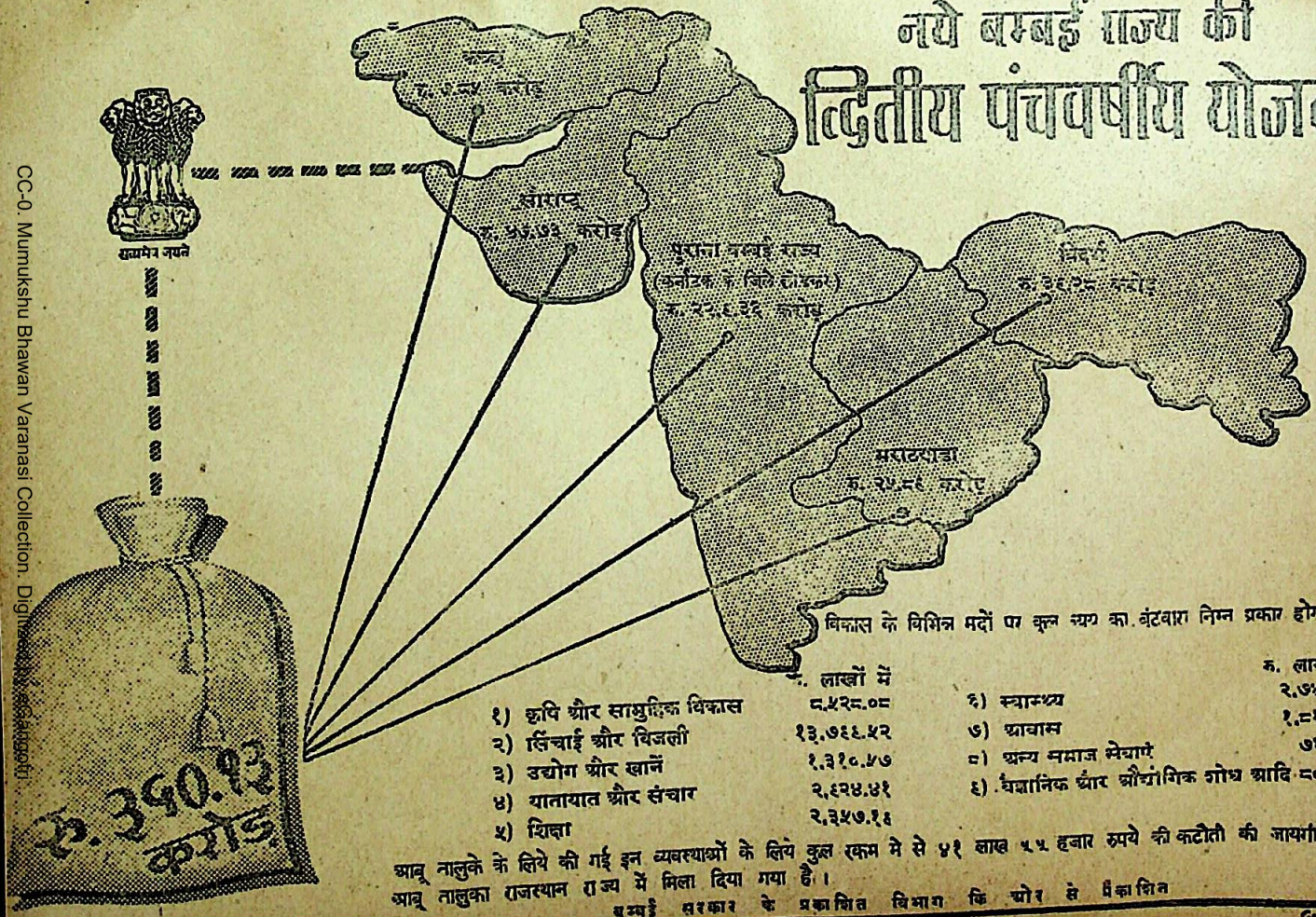

विकास के विभिन्न मदों पर कुल व्यय का बंटवारा निम्न प्रकार होगा :-

	रु. लाखों में		रु. लाखों में
१) कृषि और सामुदायिक विकास	८,५२८.०८	६) स्वास्थ्य	२,७४९.०५
२) सिंचाई और बिजली	१३,७६९.५२	७) आवास	१,८१७.२१
३) उद्योग और खानें	१,३१०.५७	८) अन्य समाज सेवाएं	७६५.२२
४) यातायात और संचार	२,९२४.४१	९) वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध आदि	८०३.४२
५) शिक्षा	२,३५७.१९		

आबू तालुके के लिये की गई इन व्यवस्थाओं के लिये कुल रकम मे से ४१ लाख ५५ हजार रुपये की कटौती की जायगी क्योंकि आबू तालुका राजस्थान राज्य में मिला दिया गया है।

बम्बई सरकार के प्रकाशित विभाग कि ओर से प्रकाशित

Graphic by U

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर स्थान को
सुन्दर व आराम प्रद
बनाइये

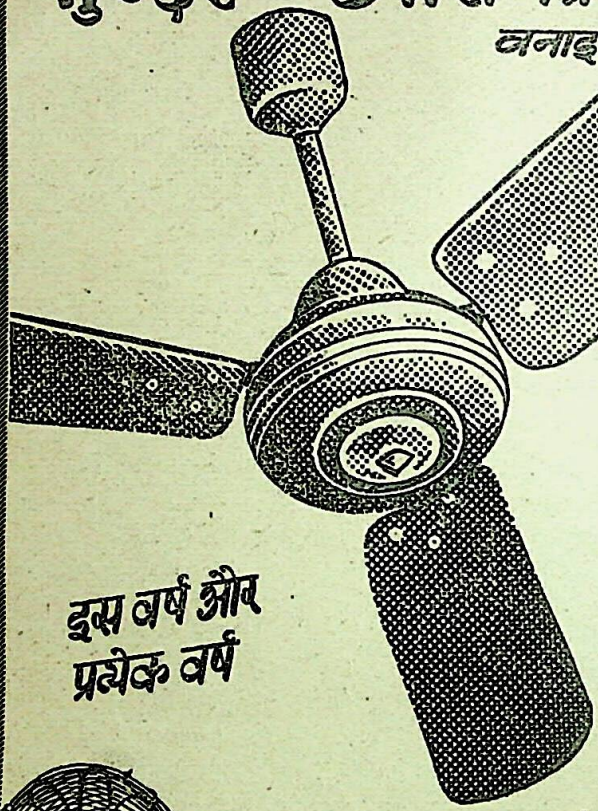

इस वर्ष और
प्रत्येक वर्ष

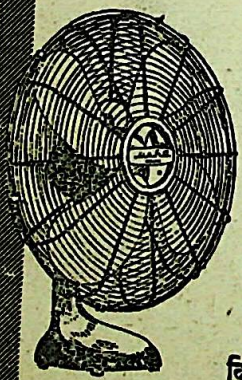

उषा
डि-लक्स पंखे

दि जे इंजिनीयरिंग वर्क्स लि०
कलकत्ता

बम्बई एजेन्ट : बाम्बे प्रीमियर ट्रेडिंग कं., २२० हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जून

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५८

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

शिल्प: गोपालकृष्ण भोले

सम्पादक
रतनलाल जोशी

सहकारी
रमेश सिन्हा : ज्ञानचन्द्र विद्याभूषण

लेख-सूची

१ अनुसरण	'तट-तपोवन' से	१
२ बंकिमचंद्र को ज्ञानलाभ	अचिंत्यकुमार सेनगुप्त	२
३ तुलना	रामदास	४
४ डा० तहाहुसैन	...	६
५ प्रेरणा-पुष्प	डा० तहाहुसैन	७
६ पश्चात्ताप तो गंगाजल है	शिवचरण सावंत	८
७ पश्चात्ताप	'पुण्यतोया' से	९
८ अभीप्सित (कविता)	सुमित्रानंदन पंत	११
९ नींव के पत्थर	मा० श्री० अगे : अब्दुल गफ्फार खाँ	१२
१० ...रसेल का खुला पत्र	बर्ट्रेंड रसेल	१४
११ आत्मभक्षी	महमूद तैमूर	१५
१२ 'नरसिंह' यतीन्द्रनाथ	रथींद्रनाथ मुखर्जी	१७
१३ आबदारखाना	अबुल फजल	२३
१४ ...राष्ट्रपति-भवन का ऐरावत	विद्याभूषण 'श्रीरश्मि'	२५
१५ बकरी : मनुष्य की शत्रु	डा० सुखवीर साहनी	२९
१६ ...रसमयी क्यों नहीं	नंदलाल बसु	३३
१७ मनचाही नस्लें बनेंगी	डा० लक्ष्मीकांत नरसिंहम्	३५
१८ यूरोप के पाँच अमरकाव्य	लक्ष्मीशंकर व्यास	४०
१९ स्पीती ... दूरस्थ छोर	कर्नल महादेव सिंह	४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२० अंग्रेज और कुत्ते	हमीद अहमद खाँ	४९
२१ आत्महत्या : रोग या निर्वाण	कपिल	५५
२२ ...व्यक्तित्व कितना मोहक है	... ...	५९
२३ ...जवानी ढले नहीं	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	६१
२४ प्रश्नोत्तर	महमूद तैमूर	६२
२५ बूंद-बूंद का सागर	'नवनीत-ज्ञानकोश' से	६५
२६ अंधेरे के क्षण में (कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	६७
२७ शुक्रबैंक	डा० रामेश्वर लोहानी	६८
२८ कुमायूँ का आदमखोर	प्रतापनारायण टंडन	७१
२९ वैचित्र्य	जोरावरसिंह	७६
३० कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	रेहाना तैयबजी, गुरुदयाल, अश्विनीकुमार	७८
३१ अजीब वहशी औरत है (उर्दू-कहानी)	अहमद नदीम कासिमी	८१
३२ माँ नहीं मानेगी (उड़िया-कहानी)	अमिता पट्टनायक	८६
३३ शेरशाह (तमिल-कहानी)	'कल्कि'	९१
३४ ठाकुर की आत्मा (पुस्तक-संक्षेप)	हेमेन्द्रनाथ	९७
३५ स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	११९

राम-शबरी

[चित्र : वेणीप्रसाद जी माहेश्वरी के सौजन्य से]

—स्केच—

वी० एन० ओके, खिलजी, एस० आर० वर्गे, सुबोध मजूमदार, रामकिंकर

वार्षिक मूल्य : दस रुपये
विशेष संस्करण : पन्द्रह रुपये

नवनीत प्रकाशन लि०
३४१, तारदेव, बम्बई-७

प्रति अंक : एक रुपया
विशेष संस्करण : डेढ़ रुपया

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७, के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

प्रधान सम्पादक:
श्रीगोपाल नवदिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ७ : : अंक ६ जून, १९५८

अनुसरण

बड़ी पुरानी बात है, सूरज ने चांद को धिक्कारते हुए कहा—"अरे, मूढ़ ! हमेशा मेरे पीछे ही क्या चलता है ! कभी स्वयं भी कुछ कर। पराये प्रकाश को ही सदा ओढ़ने में तुझे लज्जा नहीं आती ?" चंद्रमा ने अपनी विनम्र-गम्भीर दृष्टि से सूरज को ताकते हुए कहा—"इतना प्रमाद न करो, सृष्टि के शासक ! मैं जिस दिन तुम्हारे पीछे चलना छोड़ दूँगा, उस दिन तुम्हारी सत्ता ही समाप्त हो जायेगी। तुम अधूरे हो, मैं तुम्हारी पूर्ति हूँ—तुम कर्त्तव्य हो, मैं प्रेम हूँ। दोनों की परस्पर-पूर्ति के बिना शासन दूषित रहता है। कर्त्तव्य के पावक-चरणों से तुम जीवन-पथ पर जो घाव छोड़ते जाते हो, मैं पीछे-पीछे चल कर उन पर चंदन छिड़कता हूँ।"

—'तट-तपोवन' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंकिमचंद्र को ज्ञानलाभ

रामकृष्ण परमहंस से बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की प्रथम भेंट का पावन प्रसंग

*

डिप्टी मजिस्ट्रेट अधर सेन ने श्रीरामकृष्ण को नवागंतुक का परिचय दिया—"ये हैं मेरे सहयोगी, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय! बहुत बड़े विद्वान् हैं— कई पुस्तकें लिखी हैं इन्होंने। आपके दर्शनार्थ आये हैं!"

"हाँ, हाँ, नाम सुना है। लरेन ने कई बार आपकी चर्चा की है।" (स्वामी विवेकानंद का पहला नाम नरेन्द्र था और उनके संक्षिप्त नाम 'नरेन' का उच्चारण श्रीरामकृष्ण 'लरेन' करते थे।)

फिर अपने पास बैठा कर श्रीरामकृष्ण ने विनोद किया—"हाँ भाई, आप 'बंकिम' कैसे हो गये?" ('बंकिम' शब्द के अर्थ 'टेढ़े' को लेकर उन्होंने यह विनोद किया।)

बंकिम भी विनोदी थे, बोले—"अंग्रेज अफसरों के जूते खाते-खाते!"

सुन कर श्रीरामकृष्ण मुस्कराये—"मुझसे छिपाते हैं? श्रीमती के प्रेम में 'बंकिम' हुए हैं, जैसा कि श्रीकृष्ण हुए थे! है न?"

इस बार बंकिम से कोई उत्तर न बन पड़ा और उन्हें भी उपस्थित मंडली की हँसी का साथ देना पड़ा। जब हँसी का जोर थमा, तो बोले—"आप अपने अध्यात्म-दर्शन का प्रचार क्यों नहीं कराते?"

"प्रचार?"— श्रीरामकृष्ण अपनी मोहिनी स्मिति के साथ बोले—"कहिये, क्या करूँ? मंच पर खड़ा होकर भाषण दूँ, या बगल में झोली लटका कर 'शोभायात्रा' निकालूँ, या वृहत् आत्मचरित लिखवाऊँ? भाई, आप मानिये या नहीं, मैं प्रचार को अभिमान की बात मानता हूँ। जरा सोचिये, जो चाँद-सूरज का निर्माण कर सारे जगत् को प्रकाशित कर रहा है, उसके अस्तित्व और महत्ता को क्षुद्र मनुष्य प्रकाशित करेगा? और फिर, इस छोटे-से जीवन में मनुष्य कितना प्रचार करेगा उसका, जो अनादि है, अनंत है! उसके लिए तो बस इतना ही पर्याप्त है कि, वह उसकी सत्ता को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति प्रेम-भाव रखे। इससे बढ़ कर मनुष्य 'उसका' प्रचार नहीं कर सकता!"

बंकिम ने अनुभव किया कि, श्रीरामकृष्ण के सामने प्रचार का प्रसंग उठा कर उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षुद्रता का परिचय दिया। श्रीरामकृष्ण के उद्गार ने मानवीय अहम् की निकृष्टता को बहुत ही स्पष्ट रूप में सामने रख दिया था। बंकिम दत्तचित्त हो उनकी बातें सुनते रहे।

श्रीरामकृष्ण अपनी बात समाप्त कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछेक क्षण रुके, फिर बोले—"भाई, आप तो विद्वान् हैं—कई पुस्तकें लिख चुके हैं। पुनर्जन्म के बारे में आप क्या सोचते हैं?"

पर बंकिम तो अपने विचार व्यक्त करने के बजाय उनकी अमृतवाणी सुनने के अभिलाषी थे; अतः बोले—"पुनर्जन्म? मैं समझा नहीं!"

"क्या नहीं समझे? पुनर्जन्म का मतलब है कि, जब तक प्राणी ज्ञान प्राप्त करके ईश्वर-लाभ नहीं करता, तब तक उसे बार-बार इस संसार में आना पड़ता है। आपका इस बारे में क्या खयाल है?"

"मैंने इस बारे में कभी सोचा नहीं; पर आपने तो सोचा होगा। आप क्या अनुभव करते हैं?"—बंकिम ने प्रश्न किया।

"हाँ, मैंने इस बारे में सोचा है और इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि, पुनर्जन्म होता है। मान लीजिये, एक कुम्हार के आँगन में कुछ कच्चे और कुछ पक्के घड़े रखे हैं। अकस्मात् गाय आँगन में आ जाती है और कुछ घड़े उसके पैर लगने से टूट जाते हैं। अब कुम्हार पक्के घड़ों के टुकड़ों को नहीं, कच्चे घड़ों के टुकड़ों को ही फिर से गलायेगा और चाक पर चढ़ा कर नये घड़ों का रूप देगा। ठीक ऐसे ही, जब मनुष्य ज्ञान-लाभ करके ईश्वर को प्राप्त कर लेता है, तब उसे इस चक्र से मुक्ति मिल जाती है, अन्यथा नहीं। ...लेकिन छोड़िये इस प्रसंग को। आप जब यहाँ आये हैं, तो कुछ तो सीखें आपसे। यह बतलाइये कि, मनुष्य के कर्तव्य क्या हैं!"

अभयदान

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

"आप सीखेंगे, मुझसे?"—बंकिम को लगा, जैसे श्रीरामकृष्ण ने उनसे विनोद किया, बोले—"फिर तो 'आहारनिद्रामैथुन' के अलावा मनुष्य का और कोई कर्तव्य मुझसे नहीं सीखेंगे आप।"

लेकिन श्रीरामकृष्ण ने तो विनोद किया नहीं था—यह तो उनके सहज जिज्ञासु हृदय का प्रश्न था; अतः बंकिम की बात सुनते ही उनका मन विरक्ति से भर गया और 'आप' से 'तुम' पर उतर कर बोलने लगे—"यही कर्तव्य करते हो? यही पुस्तकों में भी लिखते हो? छिः छिः, पांडित्य केवल पढ़ने-सुनने की चीज नहीं है, भाई। जितना उसे आचरण में उतारोगे, उतने ही बड़े पंडित बनोगे। तुम्हें एक कहानी सुनाऊँ। एक राजा थे। खूब धर्मोपदेश सुनते थे—पंडितों का आदर करते थे। परंतु उन उपदेशों को वे आचरण में नहीं लाते थे—भोग-विलास में डूबे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहते थे। एक दिन एक संन्यासी उनके पास आया, तो राजा ने सिंहासन से उठकर उसका पदरज लेना चाहा। लेकिन संन्यासी ने उन्हें पदरज नहीं लेने दिया, वह पीछे हट गया। राजा ने विस्मित हो पूछा—'आप भला अपने पदरज से मुझे क्यों वंचित कर रहे हैं?' संन्यासी ने कहा—'आप मेरा पदरज क्यों लेना चाहते हैं?' राजा ने उत्तर दिया—'आप परमत्यागी हैं, इसीलिए!' संन्यासी हँसा, बोला—"लेकिन राजन्, मुझसे बड़े त्यागी तो आप हैं!' राजा विस्फारित नेत्रों से संन्यासी की ओर देखने लगे। और तब, संन्यासी के शब्दों ने उनके मन के अंधकार को दूर कर दिया—'मैंने तो केवल 'का म कां च न-भोगैश्वर्य' को त्यागा है; पर आपने तो उससे कहीं अधिक महान् चीज 'ईश्वर' का परित्याग कर दिया है।' सुनते ही, राजा के ज्ञानचक्षु खुले और वे साश्रुनयन संन्यासी के चरणों में लोट गये।... इसीलिए मैं कहता हूँ, केवल ज्ञान की बातें न करो— उन्हें आचरण में लाओ। आचरण-विहीन पांडित्य केवल शुष्कता ह, दाह है। कामिनी-कंचन का त्याग कर, आचरण को शुद्ध करो।..."

तभी बंकिम बाबू ने टोका—"कंचन के त्याग की बात तो समझ में आती है; पर कामिनीवाली बात नहीं आती। कामिनी तो आपने भी नहीं त्यागी।"

"आह, भूलते हो, पहले पूरी बात सुन लो!"—श्रीरामकृष्ण ने बात आगे बढ़ायी—"कामिनी-कंचन को ही संसार मानना माया है, जो ईश्वर को देखने नहीं देती। ये वे दीवारें हैं, जो परमसत्य-रूपी सूर्य को आँखों से ओझल कर देती हैं। किंतु कामिनी का अर्थ नारी नहीं है। मेरी श्रीमाँकाली भी तो नारी हैं। फिर नारी को त्यागने की बात कैसे कह सकता हूँ। नारी जननी है, तनया है, सहोदरा है— उसे कैसे त्यागेगा पुरुष? त्याग करो कामिनी का, दामिनी का नहीं! त्याग करो भोगिनी का, योगिनी का नहीं! त्याग करो अविद्या का, विद्याविनोदिनी का नहीं।"

बंकिम ने फिर प्रश्न किया—"तब यह सृष्टि कैसे चलेगी? नारी जननी, तनया, सहोदरा कैसे बनेगी?"

"तुम्हारी शंका सही है। पर मैंने यह तो नहीं कहा कि, पति-पत्नी का सम्बंध होना ही नहीं चाहिए। मैं तो यह कहता हूँ कि, जीवन सागर नहीं, नदी है। उसमें सब-कुछ व्यवस्थित रूप में

तुलना

धर्मात्मा और दुरात्मा में वस्तुतः कितना अंतर है? इतना ही, जितना कुएँ और नदी में। कुआँ दूर-दूर से जल समेट कर खेत को देता है और नदी जल इसलिए समेटती है कि, अपना सम्पूर्ण संचित भांडार खारे गड्ढे में डाल दे! —रामदास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उचित अनुपात में होना चाहिए। संतानोत्पत्ति भी मनुष्य का एक धर्म है पर वही एकमात्र धर्म है, ऐसा नहीं है। इसलिए मैं यह मानता हूँ कि, दो-एक संतान हो जाने के बाद पति-पत्नी को भाई-बहन की तरह रहना चाहिए और अध्यात्म-चर्चा करनी चाहिए। नारी के बिना पुरुष भला क्या कर सकता है? शक्ति के बिना शिव के पास कोई सामर्थ्य है? अतः नारी-सहित पुरुष को अपने जीवन के परमधर्म, परमपिता की प्राप्ति, की ओर अग्रसर होना चाहिए।"

बंकिम, अपनी शंका के समाधान से संतुष्ट हो, फिर बोले—"और, कंचन का भी एकदम परित्याग करने की बात मुझे नहीं जँचती। उसके बिना तो दान-धर्म-परोपकार भी नहीं हो सकता!"

"दान? परोपकार? दान और परोपकार तो ईश्वर करता है। इस संसार की एक-एक वस्तु उसकी है, स्वयं हम भी। फिर हम क्या दान करेंगे और किसको करेंगे! यह तो कंचन-प्रेम है, जिसने एक को धनी बना दिया और एक को दरिद्र। यदि कंचन-मोह टूट जाये, तो धनी-गरीब का प्रश्न कहाँ रह जायेगा? सब बराबर हो जायेंगे— बड़ा केवल परमात्मा रहेगा। इसीलिए कंचन-मोह का मैं कभी समर्थन नहीं कर सकता। कंचन से मनुष्य की समस्याएँ उलझती ही आयी हैं, सुलझी नहीं हैं। कंचन-मोह छोड़ो— छोड़ने की अभी से कोशिश करो। यह तुम्हें कभी भी सुख नहीं दे सकता, चाहे यह कितने ही परिमाण में तुम्हारे पास हो!"

बंकिम बाबू ने प्रश्न किया— "अच्छा, ईश्वर ने इस संसार की सृष्टि क्यों की?"

श्रीरामकृष्ण यह प्रश्न सुन कर गम्भीर वाणी में बोलने लगे— "ईश्वर के कार्यों को समझने की शक्ति आज तक किसी मनुष्य को प्राप्त नहीं हुई। वह क्यों सृष्टि करता है और क्यों संहार, यह कोई नहीं जान पाया।... मैं कहता हूँ, यह जानने की जरूरत भी क्या है? बगीचे में आम खाने आये हो, खाकर जाओ— इसके पेड़-पत्तों का हिसाब रख कर क्या करना है? बस, अपने जीवन को प्रेममय बनाओ। वही ब्रह्मानंद दिलायेगा। धन, ऐश्वर्य, मान, प्रतिष्ठा— ये सब व्यर्थ हैं। केवल अखिल चराचर के प्रति प्रेम ही ईश्वर-प्रेम है। यह विश्वानंद ही ब्रह्मानंद है।"

श्रीरामकृष्ण की बातें सीधे बंकिम बाबू के हृदय को छू रही थीं और वे आनंद-पुलकित हो रहे थे, तभी अचानक अधर सेन ने उनसे इशारे में कुछ कहा और वे श्रीरामकृष्ण के चरण छू उठ खड़े हुए— "आपके वचनामृत तो और सुनने की इच्छा थी; पर एक जगह समय दे रखा है। अतः विवशता है। किसी दिन मेरी कुटिया में पधार कर यदि चरण-धूल दे जाते, तो बड़ा कृतज्ञ होता!"

"जैसी हरि-इच्छा! आऊँगा, यदि कोई व्यवधान न पड़ा।"— श्रीरामकृष्ण का आश्वासन पा, बंकिम बाबू ने विदा ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डा. तहाहुसैन

[परिचय-झांकी]

सामने के पृष्ठ पर इस ज्ञान-मनीषी का चित्र एवं प्रबोध-सूत्र भी देखिये।

आंद्रे जीद को नोबेल-पुरस्कार मिलने के बाद नोबेल-समिति के सदस्यों ने उनसे कहा– "कुछ ऐसे नाम बताइये, जिन पर अगले वर्ष के नोबेल-पुरस्कार के लिए विचार किया जा सके।" आंद्रे जीद ने तुरत उत्तर दिया–"केवल एक व्यक्ति मेरी दृष्टि में है– तहाहुसैन।"

तीन वर्ष की उम्र से ही चक्षुहीन इस मिस्री विद्वान की गणना आज विश्व के इने-गिने साहित्यकारों तथा विचारकों में की जाती है। बचपन में, दूसरों से सुन कर, उन्होंने 'कुरान-शरीफ' कंठ किया और अलअजहर में शिक्षा प्राप्त करने गये। फिर, उन्होंने काहिरा-विश्वविद्यालय से, १९१४ ईसवी में, पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। तब से अब तक कितने ही विश्वविद्यालयों ने उन्हें 'डाक्टर' की उपाधि से सम्मानित किया है।

डाक्टर तहाहुसैन एक मामूली किसान के घर पैदा हुए थे। फलतः ज्ञानार्जन के लिए उन्हें बड़ा संघर्ष करना पड़ा। इन कठिन अनुभवों के ही कारण उन्होंने आगे चल कर एक आंदोलन शुरू किया और घोषणा की–"शिक्षा और ज्ञान का वितरण सूर्य के प्रकाश की तरह ही निर्बाध होना चाहिए!" इस आंदोलन के कारण १९४३ ईसवी में मिस्री सरकार को प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क करनी पड़ी। फिर सन् १९५० में डा० तहाहुसैन को शिक्षा-मंत्री का पद दिया गया और यह पद ग्रहण करते ही उन्होंने माध्यमिक शिक्षा भी निःशुल्क कर दी।

डाक्टर तहाहुसैन बड़े निर्भीक प्रवक्ता हैं। १९३० ईसवी में जब वे काहिरा-विश्व-विद्यालय के 'रेक्टर' थे, तब प्रधानमंत्री इस्माइल सिद्दिकी ने उन्हें लिखा– "या तो सरकार की आलोचना बंद कीजिये या पद-त्याग कीजिये।" पर तहाहुसैन ने शिक्षा-सम्बंधी कार्यों पर लगे प्रतिबंधों की आलोचना बंद नहीं की। फलतः ३ वर्षों तक उन्हें कारागार में रहना पड़ा।

निर्भय आचरण के ही कारण मिस्र के बादशाह भी उनसे रुष्ट थे और १९४६ ईसवी में उनके 'मिस्र का सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार' घोषित किये जाने पर पुरस्कार-व्यवस्था ही रद्द कर दी थी।

राष्ट्रपति नजीब के काल में तहाहुसैन को पुनः सम्मान मिला और उन्हें विधान-निर्मातृ समिति का सदस्य बनाया गया। १९५३ ईसवी में उनके लिए 'यूनेस्को' के डाइरेक्टर-जनरल का पद भी प्रस्तावित किया गया; पर स्पष्ट उत्तर मिला– "मिस्र तहाहुसैन को नहीं छोड़ सकता!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखना हो, तो ज्ञान के दर्पण में अपनी आत्मा को देखो; सुनना हो, तो ज्ञान की वापी में अपनी श्रुतियों को सुनो; चलना हो, तो ज्ञान की मंजिल तक अपनी यात्रा में चलो! रोशनी के लिए ज्ञान की एक चिनगारी ही बहुत है, अंधेरे के कितने पहाड़ रुई के ढेर बन कर जल जाते हैं। जीवन की सार्थकता का एक ही मार्ग है कि, हम ज्ञान की नहरें खोदें और अमर हो जायें! —तहा हुसैन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पश्चात्ताप तो गंगाजल है

शिवचरण सावंत की जबानी गांधीजी के वचनामृत से त्रयताप-हरण की प्रेरक कहानी

★

सात वर्ष पहले की वह जन्माष्टमी उस दिन अचानक मुझे घेर कर खड़ी हो गयी। उसने इस तरह घेर लिया, जिस तरह जंगल में लगी आग किसी पशु को घेर लेती है। सात वर्ष का निश्चेष्ट पड़ा यह प्रेत इतना दाह लेकर जागेगा और जागते ही मुझे इस तरह सतायेगा, मैंने कभी सोचा भी नहीं था। मगर आज तो वह मेरे आसपास मँडरा रहा है, जैसे मेरे शरीर और मन का हरेक कण वह नोच कर ही खा जायेगा!

सात वर्ष पहले की इसी जन्माष्टमी को मेरे हाथों एक ऐसा नाटक घटित हुआ था, जिसकी छाया शायद कई जन्मों तक मेरी आत्मा पर पड़ेगी और मेरे प्रत्येक सुख को कलंकित करती रहेगी।

मैं और मेरे मित्र नानकचंद अपने स्कूली जीवन से ही जीवनयात्रा में अभिन्न एवं एकप्राण रहे हैं। इंटरमीडियट से दोनों ने पढ़ाई छोड़ कर संयुक्त व्यापार प्रारम्भ किया। नानकचंद के पास आर्थिक गुंजाइश थी, मेरे पास नहीं। अतः उन्होंने पैसा लगाया—साथ ही, श्रम और वंशानुगत अनुभव भी। व्यापार चल निकला। दो वर्ष में ही हमें कानपुर में अपनी शाखा खोलनी पड़ी। मुझे दिल्ली छोड़ कर वे कानपुर जा डटे। दूकानें खूब फलीं। दिल्ली की दूकान के तंतु तो बम्बई, मद्रास और कलकत्ते तक फैल गये। मैं ही दूकान का मालिक था। सब-कुछ मेरे ही हस्ताक्षरों से होता था।

एक दिन स्थिति के इस एकांत प्रभुत्व ने मेरी निष्ठा पर अपना कबंध डाला और मौका पाकर वह ठीक उसके सिर पर सवार हो गया—मैत्री का अजेय दुर्ग ध्वस्त हो गया। ईमानदारी, प्रेम, अनुग्रह, विश्वास और कृतज्ञता, सब एक ही वार में शीशे के बर्तनों की तरह छर्र-छर्र बिखर गये। एक अशुभ घड़ी में— दुर्दैव के एक काले क्षण में— मैं कोर्ट गया और दिल्ली की दूकान के स्वामित्व की सारी कानूनी कार्रवाई अपने लिए करवा ली। यों सब कर्त्ता-धर्त्ता मैं ही था; कोई दिक्कत नहीं आयी। सूचना के लिए मैंने एक पत्र नानकचंद को भी लिख दिया। वे कानपुर से आये, दूकान के बजाय सीधे मेरे घर गये और मेरी पत्नी को यह कह कर वापस कानपुर चले गये—"अभी तक शिवचरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की देखभाल मैंने की, अब उसे तुम्हारे भरोसे छोड़ता हूँ। वह परों पर खड़ा जरूर हो गया है; मगर जिस जमीन पर वह खड़ा रहता है, उसका उसे कभी पता नहीं रहता। तुम नहीं सम्भालोगी, तो काम नहीं चलेगा।"

मैं घर लौटा, तो पत्नी ने रोते-रोते यह सुनाया। आवेश में मैं स्टेशन की तरफ भागा; मगर नानकचंद का वहाँ कोई चिह्न नहीं था। वापस लौटा, तो स्थिति को दोहराने का थोड़ा अवकाश मिल गया। सोचा—क्या बुरा हो गया है? मैंने श्रम किया है। रात-दिन एक किये हैं। सारी कमजोरी भावुकता के कारण है—कानपुर की दूकान उनके पास है ही, मैंने उनसे कुछ छीना नहीं है, कोई छल नहीं किया है!"

छः रोज ऐसे ही बीते। सातवें दिन सवेरे ही अचानक टेलिफोन मिला—गिरते-गिरते बचा। हृत्गति रुक जाने से नानकचंद मर गये थे। उनके भाई ने टेलिफोन किया था। सोफे पर टेलिफोन फेंक मैं सिर पकड़ कर बैठ गया।

मित्र-हत्या के इस पाप-पंकिल दिन को सात वर्ष बीत गये। मन का परिताप अग्निकुंड बन गया। आत्मा ने जो कहा, वह सब मैंने किया। दूकान में आधा हिस्सा नानक की पत्नी का रख दिया। नानक की दोनों लड़कियों के पालन-पोषण और भविष्य का सारा व्यय-भार दिल्ली की दूकान पर डाल दिया; मगर मन का दंश शांत नहीं हुआ—विष फैलता ही गया।

मन की ज्वाला में शरीर भी सूखता गया। एकांत में रहा। भगवद्भजन किये। तीर्थ नहाया। मगर आत्मा का ताप ज्यों-का-त्यों रहा। स्वाध्याय के सिलसिले में एक दिन गांधीजी की 'आत्मकथा' पढ़ी। मन ने कुछ निमग्नता दरशायी। रात-भर पढ़ता रहा। डूबते को जैसे पतवार मिली। गांधीजी की पावन मूर्ति मेरे मानस पर छा गयी—मानव-ममत्व के विराट्

पश्चात्ताप

उस दिन भी मैंने नदी के किनारे बैठे-बैठे फिर वही दृश्य देखा। मैंने देखा कि, एक सूअर कीचड़ में लथपथ प्रति सवेरे नदी के भीतर धँस जाता है। वह नदी के जल में ऐसा खो जाता है कि, उसके चिह्न तक नहीं दीखते—हाँ, कुछ देर बाद एक सुंदर पुरुष उस नदी से निकल कर बाहर आता है और जिधर से वह सूअर आया था, उधर ही चला जाता है। उस दिन मैंने उस आदमी को पकड़ लिया। पूछा कि, यह क्या छल है तुम्हारा? वह बोला—"मैं अभी तक पाप था; किंतु अब निष्पाप हूँ—इस पश्चात्ताप की नदी में घुसते ही मैं पशु से मनुष्य बन गया हूँ। भवसागर के तट पर रोज यही क्रम चलता है।" —'पुष्पतोवा' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान् मानो मेरे सामने खड़े थे!

'आत्मकथा' के तरीकों को अपनाते हुए मैंने आत्म-परिष्कार के प्रयोग शुरू किये। पूरी श्रद्धा के साथ, प्रायश्चित की हर सम्भव प्रणाली को अपनाया; किंतु मन का मैल नहीं कटा। अब क्या करता? आखिर, एक दिन आत्मा घसीट ही ले गयी प्रायश्चित के उस पारसमणि के पास! उन्होंने सुना, तो क्रोध उन्हें नहीं आया—मेरे परितप्त अहम् को उनके दयार्द्र नेत्रों ने शीतल स्पर्श ही दिया। फिर जैसे मेरे सारे दौर्बल्य को अपनी संजीवनी वाणी से धोते हुए वे बोले—"जो हो गया, उससे बुरा तो शायद ही कुछ हो सकता हो। मगर जो चला गया, वह तो उस रूप में फिर आने से रहा। अब बिगड़ी को जितना बना सको, उतना बनाओ। बनाना ढीला न पड़े, अब तो इस पर ही नजर रखनी है। बुराई अगर आत्मा को जगा दे, तो उसका कलंक धुल जाता है। तुम्हें अपने किये पर खेद है, कोई भी प्रायश्चित करने को तत्पर हो। मित्र के बलिदान का यह फल है! मित्र ने अहिंसा की शरण ली। अहिंसा ने दोनों को तार दिया। नानकचंद जैसा पवित्र था, वैसा चला गया। तुम्हें पश्चात्ताप है। पश्चात्ताप तो गंगाजल है। तुम्हें अवश्य पवित्र कर देगा। इसके किनारे बैठे रहो। धीरे-धीरे सब धुल जायेगा!"

....तब से इस गंगा के किनारे बैठा हूँ। लगता है, चादर धुलती जा रही है—मन को आश्वासन की बैसाखी मिल गयी है। लकुटी पकड़े मंजिल तय कर लूँगा, कदमों में विश्वास महसूस होता है।

महर्षि कर्वे ने अपने ही रिश्ते की एक बालविधवा का दुःख पहचान कर उससे शादी की थी। जमाना कट्टर रूढ़िवाद का था। समाज ने उनका बहिष्कार किया। यहाँ तक कि, अगर वे किसी से मिलने जाते, तो फर्श पर की दरी हटा कर उन्हें जमीन पर बैठने को कहा जाता था।

एक दफे वे अपने बचपन के देहात में गये। वहाँ पर ग्रामदेवता के मंदिर में समस्त ग्राम की ओर से एक उत्सव चल रहा था। कर्वे बिना बुलाये मंदिर में जा पहुँचे। उन्होंने कहा— "मान लिया कि, विधवा-विवाह करके मैंने महापाप किया, मैं आपकी पंक्ति में बैठ नहीं सकता। आपके अनुसार मैं ब्राह्मण से मिट कर चांडाल हो गया। पर मुझे आप चाहे मंदिर में न आने दें— मैं मंदिर के सामने, रास्ते पर पड़ा रहूँगा। अपना अँगोछा बिछा दूँगा। आप भगवान् का प्रसाद दूर से उस पर फेंक दीजिये। अछूतों को भी तो प्रसाद पाने का अधिकार है।"

इतनी नम्रता को भी जिन धर्म-मार्तंड समाजनेताओं ने ठुकरा दिया था, आज वे ही अपनी लड़कियों को कर्वे की संस्था में पढ़ने भेजते हैं! —काका कालेलकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभीप्सित

काव्य-चरण नित मुझे तुम्हारी ओर
अभय ले जायें,
हृदय में साध शेष अब :
खुलते रहें दृगों के सम्मुख
नवोन्मेष में
गुह्य प्राण--मन के प्रदेश सब !

सृजन हर्ष से, सूक्ष्म स्पर्श से
दीप्त हो उठें
मन के अंधे कोने अघ से आवृत :
पद-पद पर गीतों में तुमको
मुक्त भाव से
आत्ममोह कर सकूँ समर्पित !

अंधकार चल रहा धरा पर,
राग-द्वेष के
हिंस्र पगों पर गर्हित :
तुम्हें निकट ला सकूँ जनों के,
महानाश के
कर्दम में अपराजित- !
यही अभीप्सित !

– सुमित्रानंदन पंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नींव के पत्थर

माधव श्रीहरि अणे और अब्दुल गफ्फार खाँ के बाल्यकाल के दो अनुभव-दीप

★

तोड़ो मत, जोड़ो

प्रत्येक भारतीय माता की भाँति, मेरी माँ भी भगवान् की पूजा को पारिवारिक क्षेम का जीवंत स्रोत मानती थीं। सवेरे चार बजे उठना, मकान की सफाई करना, स्वयं स्नान करना और फिर अपने इष्टदेव की पूजा पर बैठ जाना। मुझे भी वे प्राय: इतनी ही जल्दी जगा देती थीं। बचपन में यों जगना बड़ा अखरता है; मगर माताजी जिस प्रेम से जगा कर हमें अपनी दिनचर्या में बहा ले जाती थीं, उसमें रुक कर सोचने का समय ही नहीं मिलता था। साथ ही, एक लोभ भी था—आत्मा का लोभ। माताजी अपनी इस व्यस्त दिनचर्या में भी कई बार अपने अनुभव-सागर के मोती मुझे दे दिया करती थीं। इन मोतियों की मनोभूमि में जब आज माताजी की याद आती है, तो मन होता है, क्या अच्छा हो कि, मनुष्य को माता का वात्सल्य आजीवन उपलब्ध होता रहे!

एक दिन माताजी के ठाकुरजी की रथयात्रा थी — याद नहीं पड़ता ठीक से; मगर ऐसा ही कोई उत्सव था। माताजी ने भगवान् को चढ़ाने के लिए मोगरे के फूलों की एक माला बनायी थी। थाली में से वह माला मैंने उठायी। उसकी सुगंध मुझे बड़ी मोहक लग रही थी। लोभ में आकर मैंने चुपके-से उसके कुछ फूल नोच लिये। माताजी की सजग आँखों ने मुझे देखा और देखे मेरे हाथों में रखे मोगरे के कुचले फूल! वे कुछ मुस्करायीं, बोलीं—"अब माला बेकार हो गयी। यह भगवान् के नहीं चढ़ सकती। खंडित माला को भगवान् ग्रहण नहीं करते। फूलों को जोड़-जोड़ कर माला बनायी जाती है। यह फूलों का जोड़ना नहीं, श्रद्धा का जोड़ होता है। माला श्रद्धा की निशानी है; साक्षी है। तोड़ने से श्रद्धा खंडित होती है। तोड़ने की यही नहीं, दूसरी आदतें भी बुरी हैं। जोड़ना सीखना चाहिए। चुन-चुन कर एकत्र करो, फिर उसकी माला बनाओ और उसे अपने भगवान् के चरणों में चढ़ा दो।"

माताजी के वे शब्द मेरे मानस-पट पर ऐसे अंकित हुए कि, जब-जब जीवन में विघटन के खतरे आये, उन शब्दों ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे सतर्क किया। मैं सम्भला और मैंने केवल अपने को ही नहीं, दूसरों को भी गिरने से बचाया। —अणे

★

पाँव मत छोड़

हमारे मोहल्ले में एक मौलवी साहब रहते थे। बड़े ज्ञानी-ध्यानी थे। मैं देखता था कि, उनके घर में दिन-भर लोगों का ताँता-सा लगा रहता था। मैंने पिताजी से पूछा, तो उन्होंने बताया कि, मौलवी साहब जिंदगी के मसलों को हल करने में लोगों की बड़ी मदद करते हैं। सबको सही सलाह देते हैं, भूलों को रास्ता बतलाते हैं। मगर मैंने पिताजी की बात पर पूरी तरह विश्वास नहीं किया; क्योंकि पिताजी की तो कभी उन मौलवी साहब से मुलाकात तक नहीं हुई थी। इसलिए मैंने एक दिन उन मौलवी साहब की परीक्षा लेनी चाही। मैं उनके पास जाने लगा— रोज किसी-न-किसी वक्त उनके यहाँ पहुँच जाता। लोग उनके यहाँ आते रहते, सवाल पूछते और मौलवी साहब उनकी दिक्कतें हल करते। मैं तो परीक्षक था। कुछ हल मुझे जँचते, कुछ नहीं जँचते। इसलिए मेरी मुद्रा व्यंग्य की ही रहती। मौलवी साहब ने इसे ताड़ लिया था; किंतु यह मुझे तब मालूम हुआ, जब कि मैं उनका जीवन-भर के लिए आभारी बन चुका था।

उस दिन बात यों हुई कि, मौलवी साहब ने अपनी एक शैतान बकरी मुझे थमा दी और कहा कि, इसे खूँटे से बाँध दो। मैं उसे बाँधने चला। मगर बकरी तो जैसे हवा की बेटी थी। उछल कर भागी। मैं लपका। रस्सी तो छूट गयी; मगर उसका पैर मेरे हाथों में आ गया। बस, बकरी भी रुक गयी— भला कहाँ भागती? मौलवी साहब ने पीछे फिर कर देखा, मुस्कराये और बोले—"बस, पैर पकड़े रहो, रस्सी भी हाथ में आ जायेगी और फिर बकरी भी! जड़ पकड़ लोगे, तो फिर पेड़ तुम्हारा है!"

मैं मौलवी साहब का दिल से अहसान मानते हुए कहता हूँ कि, इस सूत्र ने मेरे जीवन की कई कठिनाइयों को बड़ी आसानी से हल किया है। —अब्दुल गफ्फार खाँ

★

कभी ऐसा होता है कि, हम फूलों की सेज पर लोटते हैं और राहत नहीं पाते और कभी ऐसा होता है कि, काँटों पर दौड़ते हैं और उसकी हर चुभन में राहत और सरूर की एक लज्जत पाते हैं। राहत और अलम का एहसास हमें कोई बाहर से लाकर नहीं दे दिया करता। यह खुद हमारा ही एहसास है, जो कभी जख्म लगाता है, कभी मरहम बन जाता है। —मौलाना अबुलकलाम आजाद

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आइसनहावर-ख्रुश्चेव के नाम
रसेल का खुला पत्र

हाल ही में, अपनी शिव-संकल्प-भावना में प्रबुद्ध पश्चिम के कुछ ज्ञानी-विज्ञानियों की एक परिषद् अणु-विस्फोट के परीक्षणों को रोकने के उपाय सोचने के लिए लंदन में बैठी थी। रसेल ने यह भाषण इसी सभा में पढ़ा था।

*

मैं यह पत्र आपको विश्व के सर्वाधिक शक्ति-सम्पन्न दो राष्ट्रों के प्रधान होने के नाते लिख रहा हूँ। इन दो देशों—अमेरिका और सोवियत रूस—का नीति-निर्देशन करनेवाले व्यक्तियों के हाथों में आज भला या बुरा करने की इतनी अधिक क्षमता है, जितनी पहले कभी भी किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूह को प्राप्त न थी। आपके राष्ट्रीय हितों के परस्पर-गति-रोधवाले मुद्दों पर आपके देशों की जनता के विचारों से मैं परिचित हूँ; परंतु मुझे विश्वास है कि, आप-जैसे दूरदर्शी और बुद्धिमान व्यक्ति इस बात से अवश्य ही परिचित होंगे कि, रूस और अमेरिका के स्वार्थों की टक्करवाले विषयों से अधिक महत्वपूर्ण वे विषय हैं, जिनसे दोनों का स्वार्थ सधता है।

वर्तमान काल में हर व्यक्ति के लिए—चाहे वह किसी भी विचारधारा का पोषक हो—सबसे अधिक चिंता का विषय यही है कि, किस तरह मानव-जाति की अस्तित्व-रक्षा हो। पूर्व और पश्चिम के बीच की शत्रुतापूर्ण स्थिति के कारण यह समस्या आज बड़े विकट रूप में उपस्थित है और यदि दूसरे छोटे-छोटे राष्ट्र भी आणविक अस्त्र प्राप्त कर लें, तो इसका स्वरूप और भी भयानक हो जाये। तब तो किसी भी विक्षिप्त मस्तिष्कवाले व्यक्ति की मात्र एक गरजिम्मेदार कार्रवाई सारी मानवता को काल के गाल में ढकेल देगी।

समग्र संसार पर सैनिक या विचार-धारा-सम्बंधी प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयत्न अतीत में अनेक लोगों ने किये हैं और सबको एक ही परिणाम भुगतना पड़ा है—विनाश! स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय ने ऐसा प्रयास किया और अपने राष्ट्र को बुरी तरह कमजोर बना दिया। फ्रांस के राजा लुई चौदहवें ने भी ऐसी ही चेष्टा की, जिसका परिणाम निकला—फ्रांसीसी राज्यक्रांति! आधुनिक काल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में, हिटलर ने नाजी-दर्शन को विश्व में सर्वोपरि स्थान दिलाने का प्रयत्न किया और बुरी तरह विनष्ट हुआ।

आणविक अस्त्रों का अबाध प्रसार एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय अराजकता पैदा करेगा, जो न तो रूस के लिए हितकारी होगी और न अमेरिका के लिए। एक समय था, जब आणविक अस्त्र केवल अमेरिका के पास थे। फिर इन अस्त्रों के स्वामी अमेरिका और रूस, दोनों बन गये। अब आणविक अस्त्र अमेरिका और रूस के अतिरिक्त ब्रिटेन के पास भी हैं और यदि अभी उचित कार्रवाई नहीं की गयी, तो फ्रांस और जर्मनी भी शीघ्र ही इनका निर्माण करने लगेंगे। फिर चीन इस क्षेत्र में पीछे रहेगा, ऐसा समझना भी भ्रम ही होगा।

वर्तमान परिस्थिति से तो यही लगता है कि, आगामी कुछ वर्षों में ही सामूहिक विनाश के अस्त्रों का निर्माण काफी सस्ता और आसान हो जायेगा। तब, कोई संदेह नहीं कि, मिस्र और इजरायल भी बड़े राष्ट्रों का अनुसरण करेंगे। ऐसा ही दक्षिण-अमेरिका के राज्य भी करेंगे। इस स्पर्धा का कोई अंत नहीं होगा और तब हर कोई यही कहता दिखायी पड़ेगा—"हमारी शर्तें मानो, अन्यथा मरने को तैयार रहो।"

यदि सर्वप्रभुता-सम्पन्न राष्ट्रों के शासकों में सूझ-बूझ और समझदारी का लेश-मात्र भी हो, तो वे अपने नागरिकों की रक्षा की दृष्टि से ऐसा आचरण न करें; पर अनुभव बतलाता है कि, समय-समय पर 'इस' या 'उस' देश के शासन का सूत्र ऐसे लोगों के हाथों में चला ही जाता है, जो 'विक्षिप्त' से अधिक कुछ नहीं कहे जा सकते। क्या इस बात में किसी को संदेह हो सकता है कि, हिटलर, यदि वह ऐसा करने में समर्थ होता तो, अपने विनाश में सारी मानवता को समेट नहीं लेता?

इन सब कारणों से आणविक अस्त्रों के प्रसार पर प्रतिबंध अनिवार्य है। रूस और अमेरिका समझौते के द्वारा आसानी से ऐसा कर सकते हैं। वे सैनिक और आर्थिक सहायता बंद कर देने की चुनौती देकर दूसरे राष्ट्रों-द्वारा आणविक अस्त्रों का उत्पादन भी रुकवा सकते हैं। किंतु यह काम दोनों प्रमुख शक्तियों के

आत्मभक्षी

बार-बार फन फुँफकारते हुए उस दिन कालसर्प ने कहा—"आज मैं सबको खा जाऊँगा—जो कोई भी मेरा शत्रु बन कर आयेगा, मैं उसे खत्म कर दूँगा।" जब वह बहुत गरज चुका, तो उसकी ही प्रतिध्वनि ने कहा—"देख लिया कि नहीं तूने कि, शत्रु के सम्मुख आने से पूर्व तूने स्वयं अपने को कितना खा लिया है? चेत रे, मूढ़! यह मत भूल कि, सबको खानेवाला सबसे पहले अपने को खा लेता है! —तैमूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परस्पर-समझौते के विना नहीं होगा।

जब तक विश्व-युद्ध के भय से प्रभावित होकर नीति-निर्धारण होता रहेगा और समग्र विश्व के विनाश की आशंका बनी रहेगी, तब तक विनाश-सागर में धन और मानव-शक्ति का बहाना जारी ही रहेगा। यह स्पष्ट है कि, यदि रूस और अमेरिका परस्पर-संधि कर लें और विश्व-शांति स्थापित करने का संकल्प ले लें, तो दोनों ही देशों के वर्तमान व्यय में ९० प्रतिशत की बचत हो। पर यदि वे किसी भी तरह अपने वर्तमान वमनस्य की मात्रा में कमी लाने में असमर्थ होंगे, तो परस्पर-भय उन्हें आगे ढकेलता जायेगा और तब तक ढकेलता रहेगा, जब तक वे पूर्णतः मिट नहीं जायेंगे।

मुझे विश्वास है कि, अभी जो भय का आवरण मानवता की समस्त आशाओं पर बुरी तरह छाया हुआ है, उसे विदीर्ण कर डालने का प्रयत्न आप दोनों को अपार आनंद प्रदान करेगा। इससे पहले कभी भी —जब हमारे पूर्वज पेड़ों पर रहते थे, तब से अब तक—इस तरह के भय की स्थिति नहीं रही, न इसका कोई कारण ही रहा। पहले कभी भी ऐसे हिंसात्मक भाव हमारे नवजवानों की आँखों में नहीं दिखायी पड़े। इससे पहले ऐसा अनुभव करने का कोई कारण नहीं रहा कि, मानव-जाति एक ऐसे पथ पर चल रही है, जिसकी समाप्ति महाविनाश की अतल गहराइयों में है। व्यक्तिगत रूप से तो मृत्यु का आलिंगन मनुष्य शुरू से करता रहा है; पर सामूहिक मृत्यु— सम्पूर्ण मानव-समाज की मृत्यु—हमारे ही युग की विशेषता है।

इस गहन अंधकारपूर्ण वेला को दोपहर की भाँति प्रकाशमान करने के लिए केवल एक चीज की जरूरत है और वह यह कि, पूर्व और पश्चिम अपने-अपने अधिकारों को समझें, एक-दूसरे के साथ मिल कर रहना सीखें और अपनी-अपनी विचारधाराओं के प्रसार-कार्य में शक्ति-प्रयोग न कर विचार-विनिमय का सहारा लें। यह बिल्कुल आवश्यक नहीं कि, कोई पक्ष अपनी मान्यताओं और विचारों का परित्याग कर दे; आवश्यकता केवल इस बात की है कि, वे अपने विचारों का प्रसार शस्त्रास्त्रों के सहारे करने का पुराना तरीका बिल्कुल त्याग दें।

अतः, महाशयो, मेरा विनम्र सुझाव है कि, आप दोनों आपस में मिलें और अपने-अपने पक्ष के स्वार्थ-साधन के मुद्दों पर बातचीत न कर उन तरीकों पर खुले हृदय से विचार-विमर्श करें, जिनसे मानवता के सिर पर छाये काले बादल छँट जायें और सर्वत्र सुख-समृद्धि का प्रखर आलोक फैल जाये। मेरा दृढ़ विश्वास है कि, इस महान् कार्य के लिए सम्पूर्ण विश्व अपने अंतरतम से आपका आभार मानेगा।

*

मूर्खता सब कर लेगी; मगर बुद्धि का आदर कभी नहीं करेगी। —गेटे

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'जतींसिंह' यतीन्द्रनाथ

मातृभू के रजकण से प्राप्त शरीर के प्रत्येक रक्तबिंदु को मातृमुक्ति के बलिपथ पर चढ़ानेवाले एक प्रातःस्मरणीय भारतीय वीरात्मा का रथीन्द्रनाथ मुखर्जी की लेखनी से प्रसूत पुण्यस्मरण

★

अंग्रेज युवक ने अकस्मात् मूँगफली की फेरी करनेवाले उस दुर्बल व्यक्ति का खोमचा उलट दिया। भयभीत फेरीवाला हक्का-बक्का, कातर नेत्रों से गोरे युवक की ओर ताकने लगा; पर दूसरे ही क्षण उस पर घूँसों की बौछार भी शुरू हो गयी और वह कराहता हुआ भूमि पर लोट गया। गोरा युवक अपने चेहरे पर विजयी का दर्प ले आगे बढ़ने लगा; पर अभी वह चार-पाँच कदम ही चला होगा कि, पीछे से आकर किसी ने उसका कालर पकड़ लिया और जब तक वह सम्भले-सम्भले, उसके गालों पर चटाख्-चटाख् पाँच-छः तमाचे और फिर आठ-दस घूँसे पड़ गये। गोरा युवक वेदना से प्रताड़ित हो, वहीं गिर गया। आक्रमण करनेवाला वह बलिष्ठ भारतीय युवक उसके सामने खड़ा अब भी क्रोध से काँप रहा था।

गोरे युवक ने सिर उठा कर, सभीत दृष्टि भारतीय युवक पर डाली, तो वह भर्त्सना के स्वर में बोल उठा—"मैं सब देख रहा था अपने बरामदे से! एक गरीब पर अपनी शक्ति आजमाते तुम्हें शर्म नहीं आयी?... चलो, उसे हर्जाना दो और माफी माँगो, नहीं तो..." और, विवश होकर अंग्रेज युवक ने फेरीवाले को हर्जाना तो दिया ही, अपने दुराचरण के लिए क्षमा भी माँगी।

परपीड़ा से हार्दिक क्लेश अनुभव करनेवाला यही भारतीय युवक एक दिन जब कलकत्ता से अपने घर लौट रहा था, तब रास्ते में एक वृद्धा मुसलमान घसियारिन खड़ी मिली। उसके आगे घास का एक बड़ा बोझ पड़ा था — लगता था, जैसे बोझ उठाने का उसे साहस नहीं हो रहा था। युवक तत्काल वृद्धा की ओर बढ़ा और बोझ को अपने सिर पर उठा कर बोला—"माँ, आप आगे-आगे चलिये—मैं यह बोझ आपके घर तक छोड़ आता हूँ।" वृद्धा युवक की भलमनसाहत देख, गद्-गद् हो उठी और अपने अंतर्तम से उसे आशीर्वाद देती बढ़ने लगी। युवक बोझ उसके घर पहुँचा आया और फिर आजीवन उसके पास हर महीने पाँच रुपये भेजता रहा।

इसी युवक के सम्बंध में योगिराज श्री अरविंद ने एक बार कहा था—"ओह, वह अनोखा आदमी था। मानवता की सर्वोच्च श्रेणी में उसका स्थान था। सौंदर्य और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौरुष का वैसा संयोग मैंने पहले कभी नहीं देखा। वस्तुतः वह एक योद्धा था!" पर योद्धा होने के साथ-साथ वह एक उत्कट देशभक्त था। देश की सेवा के लिए ही वह क्रांतिकारी बना– युगांतर पैदा करने के लिए उसने 'युगांतर पार्टी'-जैसी विप्लवी संस्था की बागडोर सम्भाली। स्वयं नेताजी सुभाषचंद्र बोस कहा करते थे कि, देशसेवा की प्रत्यक्ष प्रेरणा उन्हें यतीन्द्रनाथ मुखर्जी से ही मिली थी।

पर यतीन्द्रनाथ मुखर्जी से लोग उतने परिचित नहीं हैं, जितने 'बाघा यतीन' से। वे सचमुच बाघ थे, बल्कि उससे भी बढ़ कर– सिंह थे वह! एक बार भारत के सबसे खतरनाक किस्म के बाघ 'रायल बंगाल टाइगर' से उनका अकेला मुकाबला हो गया। बाघ के पंजों में तो बड़े-बड़े नख और मुँह में खूँख्वार दाँत भी थे; पर यतीन बिल्कुल निहत्थे! दोनों का द्वंद्व-युद्ध हुआ और काफी देर के संघर्ष के बाद, बाघ ने अपनी अंतिम साँस गिन ली। उसी दिन से उनका 'बाघा यतीन' नाम प्रसिद्ध हुआ। उनके एक साथी डा० यदुगोपाल मुखर्जी उचित ही कहते हैं– "भय नाम की भी कोई चीज है, यह उन्होंने कभी जाना ही नहीं!"

केवल १६ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने एक मतवाले घोड़े को, जिसके कारण सारे कृष्णनगर में हंगामा मचा हुआ था और जिसे पकड़ने का कोई साहस नहीं करता था, विलक्षण ढंग से काबू में किया था। वे अत्यधिक दक्ष घुड़सवार थे। उनकी एक घोड़ी 'सुंदरी' तो उन्हें इतना प्यार करती थी कि, उनके अतिरिक्त और किसी को अपनी पीठ पर बैठने ही नहीं देती थी। शिकारी भी वे अच्छे थे; पर केवल अपने आनंद के लिए शिकार करना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। वे सार्वजनिक जीवन संकट में पड़ने पर ही किसी पशु के शिकार को जाते थे। इन्हीं सब कारणों से उनके परिचित उन्हें 'लौहशरीरः पुष्प-हृदयः' के नाम से सम्बोधित करते थे।

यतीन्द्रनाथ मुखर्जी का जन्म सन् १८७९ ईसवी में बंग-प्रदेश के नदिया जिले के कोया नामक छोटे-से ग्राम में हुआ था। उनके पिता श्री उमेशचंद्र उन्हें बचपन में ही छोड़ कर स्वर्ग सिधार गये थे। फलतः उनका पालन-पोषण उनके मामा के घर, गोराई नदी-तटवर्ती कुश्तिया नामक स्थान में, हुआ। उनकी माता श्रीमती शरत्शशि देवी बड़ी ही उदारहृदया और साहसिक स्वभाव की महिला थीं। उनके योग्य संरक्षण में यतीन्द्रनाथ ने अच्छी प्रगति की और पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त लाठी चलाने, कुश्ती लड़ने, घुड़सवारी करने, आदि में भी पर्याप्त प्रवीणता प्राप्त की।

एफ० ए० (वर्तमान आई० ए०) परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद वे एक व्यापारी के कार्यालय में नियुक्त हुए और उसके बाद बंगाल के गवर्नर के मुख्य सचिव श्री ह्वीलर के निजी सचिव बने। इसी अर्से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में उनका सम्पर्क कुछ ऐसे गुप्त संगठनों से हुआ, जो देश की स्वाधीनता के लिए कार्यरत थे। ये संगठन श्री जे० एन० बनर्जी और श्री अरविंद के लेखों से बहुत अधिक अनुप्रेरित थे। इन संगठनों के सामीप्य में आने के कारण उनके देशप्रेम की भावना भी भड़क उठी और १९०७ ईसवी तक वे गुप्त संगठनों में अच्छी तरह जाने-पहचाने जाने लगे। श्री अरविंद, श्री जे० एन० बनर्जी और श्री रासबिहारी बोस-जैसे क्रांतिकारी नेताओं के भी निकट सम्पर्क में वे आये और गुप्त रूप से क्रांति-कार्य में लगे रहे।

लेकिन क्रांति का काम गुप्त रूप से आखिर कब तक किया जा सकता था। सुप्रसिद्ध 'हवड़ा-षड्यंत्र' के साथ युगांतर पार्टी के नेता के रूप में उनका नाम प्रकाश में आया। सरकार उनकी खोज में लगी [illegible] करते हो रहे। कुछ ग्रामीण बालासोर के अधिकारियों को सूचित करने भी चले गये। फिर भी क्रांति के पुजारी आगे बढ़ते गये; दो दिनों तक पैदल चलते रहे।

लेकिन बाधा भी उनका साथ कब छोड़नेवाली थी! फिर कुछ ग्रामीणों ने उन्हें पहचान लिया और पुरस्कार पाने के लोभ में उन्हें रोकने का प्रयास किया! एक ग्रामीण ने तो यतीन्द्रनाथ का हाथ भी पकड़ लिया—सम्भवतः उसने उनके गठीले और कसरती शरीर पर ध्यान नहीं दिया था। फलतः दूसरे ही क्षण वह कुछ गज दूर गिर कर कराहने लगा। फिर मनोरंजन ने जो गोली चलायी, तो सब [illegible] पर दृष्टि पड़ी और क्रांतिकारी सचेत हो गये। कपड़ा हिलानेवाला वही ग्रामीण चिंतामणि साहू था, जो वस्तुतः पुलिस का एक कांस्टेबिल था।

अब सरकारी सैनिकों ने आगे बढ़ते हुए 'धाँय-धाँय' गोली चलानी शुरू कर दी; पर उनकी गोलियों का कोई उत्तर न मिला। क्रांतिकारी पहाड़ी की आड़ में सुरक्षित थे। लगातार गोली-वर्षा के बाद भी जब विपक्ष से गोली न चली, तो ब्रिटिश अफसरों को विश्वास हो गया कि, उनके प्रतिपक्षियों के पास दूर तक निशाना करनेवाले अस्त्र नहीं हैं। फलतः वे आगे और अंत में उन्हें गिरफ्तार करने में भी सफल हो गयी। उनका फाँसी पर चढ़ाया जाना प्रायः तय समझा जाने लगा; पर जिस व्यक्ति ने उनके विरुद्ध सरकार को सूचित किया था, वह उनकी गिरफ्तारी के दूसरे ही दिन फाँसी पर चढ़ा दिया गया। फलतः सरकार उनके विरुद्ध प्रमाण उपस्थित न कर सकी और वे रिहा कर दिये गये। पर इस समय से वे सरकार की आँख का काँटा जरूर बन गये और दुर्धर्ष क्रांतिकारी माने जाने लगे।

सन् १९१० ईसवी में श्री अरविंद ने राजनीति से संन्यास लिया और तभी यतीन्द्रनाथ सम्पूर्ण बंगाल के क्रांतिकारियों के नेता बने। इस नवयुवक नेता के नेतृत्व में क्रांतिकारी काफी सक्रिय हुए। उनकी सक्रियता किस हद तक पहुँच गयी थी, इसके अनुमान के लिए इतना कहना ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काफी होगा कि, उन्होंने राष्ट्रीय सरकार के स्वरूप और मुहर आदि के सम्बंध में भी निश्चय कर लिया था। क्रांतिकारियों को जर्मनी, बटाविया, बैंकाक, सिंगापुर, जापान और अमेरिका-स्थित भारतीय देशभक्तों से इसी समय सूचना मिली कि, शीघ्र ही एक महायुद्ध छिड़नेवाला है और उन्होंने तय कर लिया कि, युद्ध छिड़ने पर, जब ब्रिटिश सरकार अपने दुश्मनों से निबटती रहेगी और सभी अच्छे सैनिक भारत से बाहर ले जाकर मोर्चों पर रखे जायेंगे, यहाँ मुक्ति-आंदोलन छेड़ा जायेगा। उन्होंने एक जर्मन कप्तान से मुक्ति-सैनिकों को आधुनिक युद्ध-कौशल की शिक्षा दिलवानी शुरू कर दी और विदेशों से काफी परिमाण में शस्त्रास्त्र भी मँगवाये। क्रांति के लिए उनकी तैयारियाँ लगभग पूरी थीं।

[illegible] युद्ध हुआ और काफी देर के संघर्ष के बाद, बाघ ने अपनी अंतिम साँस गिन ली। उसी दिन से उनका 'बाघा यतीन' नाम प्रसिद्ध हुआ। उनके एक साथी डा० यदुगोपाल मुखर्जी उचित ही कहते हैं— "भय नाम की भी कोई चीज है, यह उन्होंने कभी जाना ही नहीं!"

केवल १६ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने एक मतवाले घोड़े को, जिसके कारण सारे कृष्णनगर में हंगामा मचा हुआ था और जिसे पकड़ने का कोई साहस नहीं करता था, विलक्षण ढंग से काबू में किया

फोर्ट विलियम पर अधिकार करने की। तय किया गया कि, बंगाल का शेष भारत से पूर्णतः सम्बंध-विच्छेद कर दिया जाये और तब देश की मुक्ति का अभीष्ट सिद्ध किया जाये। पर इस बार भी किसी 'मीरजाफर' के कारण क्रांतिकारियों के मन की मन में ही रह गयी और यतीन्द्रनाथ के लिए सरकार की ओर से पाँच हजार रुपये पुरस्कार की घोषणा कर दी गयी।

अतः सहयोगियों के आग्रह पर, यतीन्द्रनाथ अपने चार साथियों— चित्त-प्रिय रायचौधरी, मनोरंजन सेन, नीरेन दासगुप्त और ज्योतिश्चंद्र पाल— के साथ उड़ीसा प्रांत के बालासोर नगर के एक निकटवर्ती ग्राम काप्टीपोडा में जाकर समय काटने लगे। पर किसी तरह सरकार को इसकी भनक मिल गयी और बाला-सोर, नीलगिरि तथा मयूरभंज के सशस्त्र [illegible] हुआ। उनकी माता श्रीमती शरत्शशि देवी बड़ी ही उदारहृदय और साहसिक स्वभाव की महिला थीं। उनके योग्य संरक्षण में यतीन्द्रनाथ ने अच्छी प्रगति की और पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त लाठी चलाने, कुश्ती लड़ने, घुड़सवारी करने, आदि में भी पर्याप्त प्रवीणता प्राप्त की।

एफ० ए० (वर्तमान आई० ए०) परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद वे एक व्यापारी के कार्यालय में नियुक्त हुए और उसके बाद बंगाल के गवर्नर के मुख्य सचिव श्री ह्वीलर के निजी सचिव बने। इसी अर्से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिया और पुलिस को सूचित कर दिया। इस बीच बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे हो गये। इस संकट से छुटकारा पाना जरूरी था और दर्शक उनके अनुरोधों पर कान ही नहीं दे रहे थे; अतः हवाई फायर करके उन्होंने भीड़ को हटाया और आगे बढ़े। लेकिन फिर मजमा लग गया और लोगों से घिरे रह कर ही वे दमुद्रा पहुँचे।

दूसरे दिन, ९ सितम्बर को, वे वहाँ से चलने लगे, तो गाँव के मुखिया राजमहंती और उसके एक साथी सुदानी गिरि ने उनका मार्ग रोक लिया और जब सारे अनुरोध विफल हो गये, तो मनोरंजन ने गोली चला कर राजमहंती को मार डाला—सुदानी गिरि भी घायल हो गया। भीड़ इस बार छँट गयी और वे आगे बढ़ गये; पर लोग कुछ हट कर उनका पीछा करते ही रहे। कुछ ग्रामीण बालासोर के अधिकारियों को सूचित करने भी चले गये। फिर भी क्रांति के पुजारी आगे बढ़ते गये; दो दिनों तक पैदल चलते रहे।

लेकिन बाधा भी उनका साथ कब छोड़नेवाली थी! फिर कुछ ग्रामीणों ने उन्हें पहचान लिया और पुरस्कार पाने के लोभ में उन्हें रोकने का प्रयास किया! एक ग्रामीण ने तो यतीन्द्रनाथ का हाथ भी पकड़ लिया—सम्भवतः उसने उनके गठीले और कसरती शरीर पर ध्यान नहीं दिया था। फलतः दूसरे ही क्षण वह कुछ गज दूर गिर कर कराहने लगा। फिर मनोरंजन ने जो गोली चलायी, तो सब भाग खड़े हुए और तब क्रांतिकारी आगे बढ़े।

चासाखंड से आध मील की दूरी पर एक नदी बहती है। सुरक्षा की दृष्टि से क्रांतिकारियों का नदी के पार पहुँचना आवश्यक था; पर कोई नौका नहीं मिली। अतः तैर कर ही उन्होंने बाढ़ से उफनायी नदी पार की। इसी समय एक देहाती ने भी कुछ दूरी पर तैर कर नदी पार की।

उधर मजिस्ट्रेट किलबी, इंस्पेक्टर खुदा-बख्श, पटना के डी० आई० जी० रिलैंड और कप्तान रदरफोर्ड कुछ सैनिकों के साथ चासाखंड की ओर बढ़े आ रहे थे। लेकिन उन लोगों को यह नहीं मालूम था कि, क्रांतिकारी हैं कहाँ। अकस्मात् एक पेड़ की डाली से झूलता हुआ एक सफेद कपड़ा उन्हें नजर आया, जो विचित्र ढंग से एक खास दिशा की ओर निर्देश कर हिलाया जा रहा था। नीरेन की भी उस पर दृष्टि पड़ी और क्रांतिकारी सचेत हो गये। कपड़ा हिलानेवाला वही ग्रामीण चिंतामणि साहू था, जो वस्तुतः पुलिस का एक कांस्टेबिल था।

अब सरकारी सैनिकों ने आगे बढ़ते हुए 'धाँय-धाँय' गोली चलानी शुरू कर दी; पर उनकी गोलियों का कोई उत्तर न मिला। क्रांतिकारी पहाड़ी की आड़ में सुरक्षित थे। लगातार गोली-वर्षा के बाद भी जब विपक्ष से गोली न चली, तो ब्रिटिश अफसरों को विश्वास हो गया कि, उनके प्रतिपक्षियों के पास दूर तक निशाना करनेवाले अस्त्र नहीं हैं। फलतः वे आगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ते आये और तब अकस्मात् गोलियों की जो एक बौछार हुई, तो कई सरकारी सैनिक धरती पर लोट गये। उन्हें अविलम्ब पीछे हटना पड़ा। पर कुछ देर बाद वे पुनः एक नयी युक्ति लेकर वापस लौटे। इस बार वे सब-के-सब रेंगते आ रहे थे। फिर भी, ज्यों ही कोई सैनिक गोली चलाने के लिए सिर ऊँचा करता, 'विद्रोही गोली' उसे भेद डालती।

इसी तरह तीन घंटे तक संघर्ष होता रहा। पाँच स्वातंत्र्य-सैनिकों ने दर्जनों प्रशिक्षित सरकारी सैनिकों के छक्के छुड़ा दिये। किलबी भयानक क्षति से परेशान होकर वापस लौटने की बात सोचने लगा; पर तभी नियति का चक्र घूम गया। क्रांतिकारियों के पास बाहर जो गोलियाँ थीं, वे समाप्त हो गयीं और नयी गोलियाँ उस 'बैग' में थीं, जिसकी चाभी नहीं मिली। यतीन्द्रनाथ-जैसे बलवान व्यक्ति भी उस 'बैग' को तोड़ने में असमर्थ साबित हुए।

इसी बीच एक पेड़ पर चढ़ कर एक सरकारी सैनिक ने गोली चलायी और वह गोली चित्तप्रिय के सिर में आकर लगी। चित्तप्रिय ने फिर भी सिर उठाने की कोशिश की, तो दूसरी गोली ने उसे सदा के लिए भूमिसात् कर दिया। यतीन्द्रनाथ के भी बायें अँगूठे, पेट, काँख, और ठुड्डी में गोली लगी। नीरेन को भी एक गोली बड़े सांघातिक रूप से लगी। और, ऐसी विवश अवस्था में पड़े स्वातंत्र्य-सैनिकों को ब्रिटिश अधिकारियों ने बंदी बना लिया। पर गिरफ्तार होते समय, बुरी तरह घायल होने पर भी, यतीन्द्रनाथ यह कहना न भूले—"जो-कुछ हुआ है, सबकी जिम्मेदारी मेरी है! ये नवजवान पूर्णतः निर्दोष हैं!" दूसरे दिन, बालासोर-अस्पताल में यतीन्द्रनाथ का देहांत हो गया। मरने से पहले, उनके मुँह से जीवन का अंतिम वाक्य निकला—"हम कभी नहीं हारेंगे—हम हार नहीं सकते!" और, इस वाक्य ने देश के कोने-कोने में क्रांति, साहस और शौर्य की एक अद्भुत ज्वाला पैदा कर दी—सारा देश तड़प उठा!

बाद में, नीरेन और मनोरंजन को मृत्युदंड सुनाया गया और जय 'मातृभूमि' के उद्घोष के साथ उन्होंने अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी! ज्योतिश्चंद्र को भी पार्टी के भेद बताने के लिए इतना सताया गया कि, वह पागल होकर चल बसा।

यतीन्द्रनाथ कितने महान् और जीवट के आदमी थे, यह उस श्रद्धांजलि से ही स्पष्ट है, जो कलकत्ता के तत्कालीन अंग्रेज पुलिस-कमिश्नर चार्ल्स टेगर्ट ने उनकी लाश के पास खड़े होकर अर्पित की थी—"काश! ये अंग्रेज होते! ऐसा साहस मैंने पहले कभी नहीं देखा! यदि ये किसी स्वतंत्र देश में पैदा हुए होते, तो निश्चय ही वहाँ की सेना के सेनापति होते। आज मैं सबसे बहादुर भारतीय से मिला हूँ! मेरे मन में इनके प्रति अत्यधिक आदर का भाव है!"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आबदारखाना

गर्मी के दिनों में शीतल जल से बढ़ कर और कोई तृप्तिदायक पेय नहीं होता। यही कारण है कि, हमारे देश में अति प्राचीन काल से कई रूपों में बर्फ और शीतल पेय पीने की परम्परा चली आ रही है। चरक और सुश्रुत में पानी ठंडा करने की विधियाँ विस्तार के साथ दी गयी हैं। 'अमरकोश' में बर्फ का उल्लेख मिलता है। शूद्रक की अमर कृति 'मृच्छकटिक' में भी बर्फ से शीतल की गयी मदिरा का जिक्र है। आगे चल कर मुगल-शासन में तो अकबर ने पीने के पानी को शीतल, स्वास्थ्यप्रद एवं तृप्तिपूर्ण बनाने के लिए एक अलग महकमा ही 'आबदारखाना' के नाम से खोला था। परिमार्जन और नवीनता-सम्बंधित सम्राट् की अन्य कई रुचियों में यह रुचि भी कम महत्व की नहीं थी। 'आइन-ए-अकबरी' से लिये गये अबुल फजल के इस वृत्त में अकबर के 'आबदारखाना' का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

★

बादशाह पानी को जिंदगी मानते हैं। इस लिए आबदारखाना (पानी-विभाग) को उन्होंने बड़े काबिल शख्सों के हाथों में सौंप रखा है। हालाँकि बादशाह-सलामत खुद बहुत ज्यादा पानी नहीं पीते; पर वे पीने के पानी की सफाई के बारे में बड़ी दिलचस्पी रखते हैं। वे चाहे दारुलसल्तनत (राजधानी) में रहें या बाहर सफर में, हमेशा गंगाजल ही पीते हैं। गंगा के किनारे पर कुछ खास भरोसे के शख्स मुकर्रर हैं। वे ही मुहरबंद घड़ों में बादशाह के पीने के लिए गंगाजल भेजा करते हैं। जब दारुलसल्तनत आगरे में था, तो गंगाजल सोरों जिले से आता था; पर अब जब बादशाह पंजाब में हैं, तो गंगाजल हरद्वार से आता है। खाना पकाने के लिए बरसात के पानी

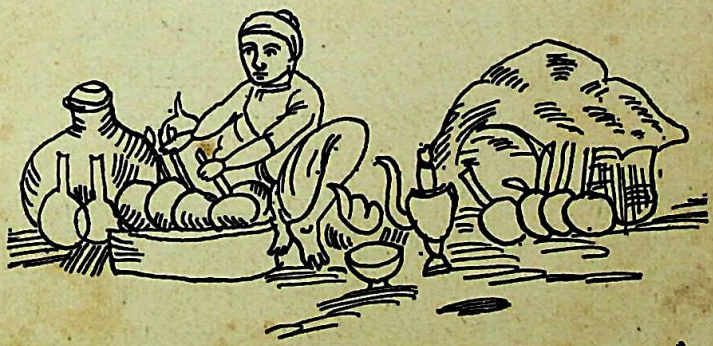

बादशाह-सलामत के लिए शोरे से पानी ठंडा किया जा रहा है।
[चित्र : 'आइन-ए-अकबरी' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या जमुना या चनाब के पानी में गंगाजल मिला कर इस्तेमाल किया जाता है।

बादशाह शोरे से पानी ठंडा करवाते हैं। इस ठंडे पानी का मजा आम-खास सभी दरबारी लेते हैं। ताम्बा, चाँदी या किसी दूसरी धातु के घड़े में एक सेर पानी डाल कर उसका मुँह बंद कर देते हैं। फिर एक घड़े में ढाई सेर शोरा और पाँच सेर पानी डाल कर उसमें वह सेर-भर पानीवाला बर्तन डाल देते हैं। लगभग चौथाई घंटे तक घड़ा हिलाया जाता है। इस तरह पानी ठंडा किया जाता है। शोरा एक रुपये में पौना मन से लेकर ४ मन तक मिलता है।

जब कि शाही पताका १५८६ ई० में पंजाब में फहरायी, तो बर्फ काम में लायी जाने लगी। बर्फ खुश्की और पानी, दोनों ही रास्तों से लायी जाती है। इसके अलावा उत्तरी पहाड़ों के पनहाँ (पठान-कोट) जिले से डाक के जरिये और आदमी के जरिये भी आती है। पनहाँ लाहौर से ४५ कोस की दूरी पर है।

बर्फ बेचनेवालों को खासा मुनाफा होता है– एक रुपये में २-३ सेर बर्फ लाहौर में मिलती है। पानी के रास्ते बर्फ लाने में सबसे ज्यादा मुनाफा होता है, उससे कम सवारी से लाने पर होता है और सब से कम मुनाफा तब होता है, जब कोई शख्स उसे खुद लाता है और बेचता है। पहाड़ी-प्रदेश में लोग बोझ-के-बोझ बर्फ लाते हैं और २५-३० सेर का एक ढेर ५ दाम में बेचते हैं। अगर वे बहुत दूर ले जाते हैं, तो उसकी कीमत २४ दाम १७ जीतल पड़ती है और अगर दूरी औसत हुई, तो १५ दाम मिलते हैं। (२५ जीतल=१ दाम; ४० दाम=१ रुपया) !

बर्फ लाने के लिए १० किश्तियाँ रखी गयी हैं। एक किश्ती हर रोज पहुँचती है। बर्फ ढेलों में आती है और एक ढेले में ६ से १२ सेर बर्फ होती है। वजन के इस फर्क की वजह गर्मी की कमो-बेशी होती है। एक गाड़ी पर ऐसे २ बंडल आते हैं। रास्ते में १४ जगहों पर घोड़ों की डाक बदली जाती है। इन घोड़ों के अलावा इस काम पर एक हाथी भी तैनात है। ४ से १० सेर तक के १२ टुकड़े रोज आते हैं।

गर्मियों में सभी बर्फ का इस्तेमाल करते हैं; पर रईस लोग तो बारहो महीने !

★

मुझे ख़याल है उन दिल-गिरफ़्ता कलियों का, जिन्हें नसीमे-सहर[1] छेड़ दे, खिला न सके।
कुछ ऐसे दर्द भी हैं जिंदगी की राहों में, जहाँ हिजाब[2] तबस्सुम[3] भी काम आ न सके।
करम[4] की आस के साथों में बुझ गया वो चिराग, हवाए-यास[5] के झोंके जिसे बुझा न सके।
अँधेरी शब थी, सितारों से क्या सुकूँ[6] मिलता, सितारे भी तो बहुत देर जगमगा न सके।

—फरीद जावेद

१ प्रातःसमीर २ परदा ३ मुस्कान ४ कृपा ५ निराशा ६ राहत

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उदयगिरि
राष्ट्रपति-भवन का ऐरावत

राष्ट्रपति-भवन के गज-शिरोमणि उदयगिरि का विद्याभूषण 'श्रीरश्मि' द्वारा संक्षिप्त परिचय

*

वह तनिक तिलमिलाया, फिर धड़ाम् से धरती पर गिर गया। सारे राष्ट्रपति-भवन में हलचल मच गयी। राष्ट्रपति को भी सूचना मिली—"उदयगिरि 'शेडयूल बी' में आकर अकस्मात् गिर पड़ा!" राष्ट्रपति भी चिंतित! तुरत डाक्टर को फोन किया गया और उनके आने तक उदयगिरि की हर सम्भव परिचर्या की गयी। शायद पाँव में मोच आ गयी हो और विना डाक्टरी सहायता के ही वह उठ खड़ा हो। पर ऐसा नहीं हुआ—उदयगिरि नहीं उठा। लोगों का मन आशंका से भर उठा—"अब यह नहीं बचेगा!"

उदयगिरि गणतंत्र-दिवस-समारोह के जुलूस में भाग लेकर लौट रहा था, तभी यह दुर्घटना घटी। उस दिन—२६ जनवरी, १९५६ को—उसे दुलहन की तरह सजाया गया था और उसकी सजावट देख कर लोग आत्मविभोर हो उठे थे। पहली बार ही वह गणतंत्र-दिवस-समारोह के जुलूस में शामिल हुआ था। राष्ट्रपति भी उस दिन बड़े प्रसन्न थे—एक तो, राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र-दिवस और दूसरे, पहली बार उनकी इच्छा के अनुसार गणतंत्र-दिवस-समारोह के जुलूस में एक हाथी ने भाग लिया था। पर कुछेक क्षणों के बाद ही उनकी प्रसन्नता निराशा में परिणत हो गयी। 'हाथी एक बार बीमार होकर गिरता है, तो फिर शायद ही उठता है!' यह कहावत उनके मानस को बार-बार उद्वेलित कर रही थी।

डाक्टर आये और पूरी तरह परीक्षा करने के बाद उन्होंने उदयगिरि को पेनिसिलीन का इंजेक्शन दिया। लोगों ने बड़ी उत्कंठा के साथ डाक्टर से पूछा—"क्या हुआ उदयगिरि को? बच तो जायेगा न?" उत्तर मिला—"इसे सर्दी लग कर न्यूमोनिया हो गया है!" और, सर्वत्र एक अजीब-सी उदासी छा गयी।

फिर भी 'जब तक साँस, तब तक आस' की उक्ति के अनुसार उदयगिरि की चिकित्सा आरम्भ हुई। उसे नित्य दवा के अतिरिक्त काफी परिमाण में शराब, दर्जनों अंडे और प्रायः चार मन साफ हरे पत्ते खिलाये जाने लगे। शरीर पर विशेष रूप से तैयार किये गये एक आयुर्वेदीय तेल की मालिश भी नियमित रूप से की जाने लगी। उसके आरोग्य-लाभ के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया गया और तब कहीं २८ दिनों के बाद, वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठ कर खड़ा हुआ।

उदयगिरि आसाम राज्य का, जो हाथियों का एक प्रसिद्ध इलाका है, निवासी है। सन् १९५४ ईसवी में जब राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद आसाम की राजकीय यात्रा पर गये थे, तभी वहाँ की सरकार ने उन्हें उदयगिरि भेंट में देने का प्रस्ताव रखा था। उस समय उदयगिरि की उम्र मात्र २३ वर्ष थी, यानी अभी पूर्णतः युवा होने में उसे ७ वर्ष बाकी थे; पर वह इतना स्वस्थ और सुडौल था कि, उसके अंग-अंग से यौवन फूटता प्रतीत होता था। राष्ट्रपति उसे देख कर मुग्ध हो गये और उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि, पूरे समारोह के साथ उदयगिरि राष्ट्रपति-भवन में पदार्पण करे। तदनुसार ही, उदयगिरि के राष्ट्रपति-भवन में प्रवेश की एक तिथि निश्चित कर दी गयी।

आज से कुछ हजार वर्ष पहले हस्तिनापुर (आधुनिक दिल्ली) में राजसूय-यज्ञ के अवसर पर महाराज युधिष्ठिर को प्राग्ज्योतिष और कामरूप देश के राजाओं ने आसाम देश के एक-से-एक सुंदर गज भेंट किये थे। इस युग में मानो उसी घटना की पुनरावृत्ति हुई-- दिल्ली को आसाम की ओर से हाथी की भेंट! निश्चित तिथि को आसाम के मुख्य मंत्री अपने कतिपय प्रमुख अधिकारियों के साथ उदयगिरि को लेकर दिल्ली पहुँचे। फिर नियत समय पर उदयगिरि को तिलक, आदि से अच्छी तरह सजा कर राष्ट्रपति-भवन के 'दरबार-हाल' के सामने उपस्थित किया गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, अपनी पूर्ण राजकीय मर्यादा के साथ, राष्ट्रपति उदयगिरि के स्वागतार्थ बाहर आये और उन्हें देखते ही उदयगिरि ने सूँड़ उठा कर अभिवादन किया। तदुपरांत राष्ट्रपति ने उदयगिरि को अपने हाथ से नारियल, गुड़ और गन्ना खिलाया तथा प्यार से उसकी सूँड़

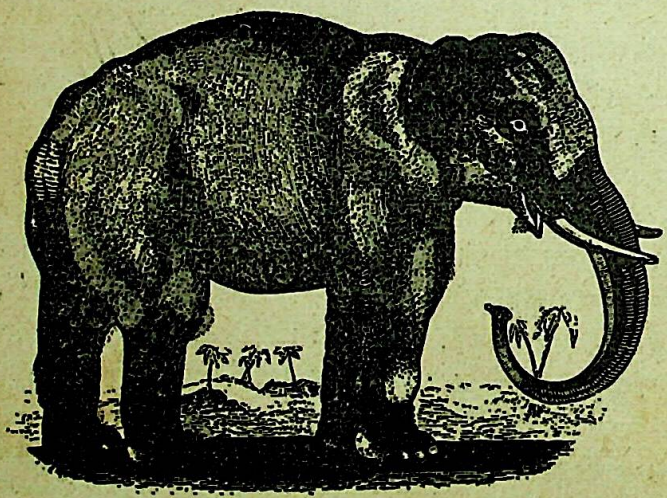

उदयगिरि : कलाकार की प्रथम दृष्टि में
[चित्र : सुबोध मजूमदार-निर्मित एक स्केच]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहलायी। इस अवसर पर सैकड़ों गण्यमान्य व्यक्तियों को निमंत्रित किया गया था, जिन्हें राष्ट्रपति ने काफी समारोह के साथ चाय-पार्टी दी और इस प्रकार परम हर्षोल्लास के बीच उदयगिरि 'राष्ट्रपति-भवन' का निवासी बना।

उदयगिरि अभी किशोर है, युवा नहीं हुआ; पर वह युवा से कम भी नहीं है। उसकी ऊँचाई साढ़े नौ फुट, लम्बाई १४ फुट और सीने का घेरा १४५ इंच है। उसके खाने के दाँत १६ हैं। मदोन्माद के समय उसकी कनपटी से निरंतर मद बहता रहता है और उसका स्वभाव भी चंचल हो जाता है।

अब उदयगिरि की दिनचर्या भी देख लें। सवेरे-सवेरे वह दस सेर आटे की नमकीन रोटी खाता है और चार-पाँच बड़ी बाल्टी पानी पीता है। फिर लगभग तीन घंटे के बाद, उसे दो सेर गुड़ खिलाया जाता है और उसके उपरांत दिन-भर में वह लगभग ६ मन गन्ना और घास खाता है। गर्मियों में उसे दो बार स्नान कराया जाता है और जब वह 'उन्माद' में होता है, तो नहाने की सारी जिम्मेदारी स्वयं उसी पर छोड़ दी जाती है। हाँ, इतना अवश्य है कि, उसके सामने पानी-भरी बाल्टियाँ रखवा दी जाती हैं। स्नान के बाद उसके सिर पर, यदि गर्मी का मौसम हुआ, तो तिल का और जाड़े का मौसम हुआ, तो सरसों का तेल मला जाता है। फिर रात को उसके सोने के लिए ५-६ मन घास का बिस्तरा लगता है, जो सवेरे उसके सोकर उठने पर उठा दिया जाता है। एक दिन बीच करके उसे टहलने के लिए भी ले जाया जाता है। उसका टहलना दस-बारह मील का होता है।

उदयगिरि के कान में कुछ सफेद बाल हैं, जो उसे विशिष्ट कोटि का हाथी प्रमाणित करते हैं। पर इससे भी अधिक विशिष्ट बात है, उसका स्वाभिमान। अपने इसी स्वाभिमान के वशीभूत हो उसने गत वर्ष एक मनुष्य की हत्या कर डाली—

शाही हाथी के नेतृत्व में एक समारोह-अभियान
[चित्र : एक प्राचीन राजपूत चित्र की सरल रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी ऐरे-गैरे की नहीं, स्वयं अपने महावत की! बात यों हुई कि, गत ६ सितम्बर को जब वह टहल कर आया, तो झाड़ू-बुहारू करनेवाले नौकर ने उसे थोड़ा हटने को कहा और इसी सिलसिले में गाली-गलौज तथा डाँट-डपट भी की। वह प्रायः ही उसे डाँटता था, सो उस दिन क्रुद्ध होकर उदयगिरि उसकी ओर झपटा। नौकर किसी तरह जान लेकर भागा और महावत के पास जाकर उसने उदयगिरि की शिकायत की। महावत ने भी आव देखा न ताव, आकर वह उदयगिरि को फटकारने लगा। उधर उदयगिरि का क्रोध शांत हुआ नहीं था, सो उसने महावत को सूँड़ से पकड़ कर उठा लिया और झुला-झुला कर मार डाला। लेकिन बाद में, अस्पताल से वापस आने पर, जब महावत की लाश उदयगिरि के सामने रखी गयी, तो वह उसे बार-बार सूँड़ से छूने लगा और उसकी आँखों से आँसू की धारा बह निकली। उसके बाद कई दिनों तक, बहुत जोर दिये जाने पर भी, उसने बहुत कम खाना खाया। उसकी आँखें प्रायः गीली रहतीं। खड्गबहादुर, दरअसल, केवल उसका महावत ही नहीं; बल्कि हमउम्र मित्र भी था – दोनों का जन्म एक ही साल हुआ था।

साधारणतः केवल गणतंत्र-दिवस के अवसर पर उदयगिरि सज-धज कर जुलूस में निकलता है। उस दिन उसकी पीठ पर सोने और चाँदी से जटित बहुमूल्य 'मोर हौदा' होता है और कमखाव की जड़ीवाली झूल लटकती होती है। चंदन और विभिन्न रंगों से उसके मस्तक और सूँड़ की भी बड़ी कलात्मक सजावट की जाती है। यों कभी-कभी विदेशी अतिथियों को भी उसकी पीठ पर सवार करा कर घुमाया जाता है। चीन के प्रधान मंत्री चाउ-एन-लाई तथा तिब्बत के दलाई लामा और पंचेन लामा उस पर बैठ चुके हैं। प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने भी एक बार उस पर सवारी की है।

★

दो प्रार्थनाएँ

प्रभो, बुढ़ापे में चेहरे पर तुम्हारी दी हुई झुर्रियाँ मुझे प्रिय हैं, मेरे लिए वे अनमोल वरदान हैं; किंतु दयासिंधो, केवल इतना अनुग्रह मुझ पर कीजिये कि, मेरे चेहरे पर वे ही झुर्रियाँ रहें, जो मेरी मुस्कानों से बन जाया करती हैं। —कगावा

प्रभो, आज अपने इस चालीसवें जन्मदिवस पर मैं सौ वर्ष तक जीने का वरदान नहीं माँगता। मुझ पर तो बस इतना अनुग्रह कर दो कि, सिर्फ एक और क्षण की जिंदगी मुझे दे दो—ऐसा क्षण, जिसमें मैं अपनी सारी संकीर्णताएँ, जो अब तक मुझे घेरे रही हैं, त्याग कर इस संसार को सच्चे दिल से प्यार कर सकूँ! —थोरो

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बकरी : मनुष्य की शत्रु

यूनेस्को के मरुथल-विशेषज्ञ वैज्ञानिकों के विचार-सम्मेलन में पठित लेखों के आधार पर डा० सुखवीर साहनी-लिखित एक नवीन तथ्य की ओर संकेत करनेवाला लेख

*

"एक गौरैया का मतलब है, तीन आदमी भूखों मर जायें।" पिछले महीने चीन ने गौरैयों को नष्ट कर देने के लिए जनमेजय के 'नागयज्ञ' की भाँति एक अभियान शुरू किया था। हिसाब लगाया गया था कि, एक गौरैया एक आदमी की औसत उम्र में अपनी संतानों का विस्तार इतना कर लेती है कि, वे सब मिल कर तीन आदमियों की खुराक खा जाते हैं। अनाज की यह बर्बादी आज की दिन-दूनी बढ़ती जनसंख्या सहन नहीं कर सकती। अनुमान लगाया गया है कि, चीन ने इस गौरैया-विनाश-सप्ताह में करीब चालीस लाख गौरैयों को खत्म कर दिया है।

इसके बाद दूसरा अभियान है, चूहों के खिलाफ! उनके द्वारा भी अनाज की क्षति गौरैयों से कम नहीं होती। एक ओर, अनाजखोर पशु-पक्षियों से छीन कर इस प्रकार अनाज बचाया जा रहा है और दूसरी ओर, फसल पैदा करनेवाली जमीन का विस्तार किया जा रहा है। रेगिस्तानों को सरसब्ज बनाने की दिशा में अणुशक्ति को नियोजित करने की जहाँ सैकड़ों योजनाएँ बन रही हैं, वहीं भूमि को रेगिस्तान बनने से भी रोकने की बातें चल रही हैं। रेगिस्तान-विशेषज्ञों ने इस दिशा में एक नया नारा दिया है; वह है—"बकरी मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है।" क्योंकि वह भू-क्षरण बढ़ाती है और परिणामस्वरूप संसार में रेगिस्तानों का दायरा बढ़ता जा रहा है।

अतः आज जहाँ कहीं भी भू-क्षरण और उसके कारण अनाज की पैदावार में कमी का सवाल आता है, वहाँ बकरे-बकरियों की चर्चा छिड़े बिना नहीं रहती। 'अंतर्राष्ट्रीय खाद्य एवं कृषि-संघ' तथा 'अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक साधन-सुधार-संघ' के विशेषज्ञ तो, लगता है, बकरी को नेस्त-नाबूद करके ही छोड़ेंगे। पिछले दस-बारह वर्षों के अनुसंधानों से उन्होंने साबित कर दिया है कि, यदि मनुष्य की नस्ल को जीवित रहना है, तो वह बकरी पालना बंद कर दे—वह अपने परम शत्रु को ही पाल रहा है!

भूमध्य-प्रदेश जो आज वृक्षरहित है, वह बहुत-कुछ अंशों में बकरियों के ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण। बकरियाँ केवल पत्तियाँ चर कर ही संतोष नहीं कर लेतीं ; पौधों को जड़ से भी उखाड़ देती हैं। कुछ बकरियाँ तो पेड़ों पर भी चढ़ जाती हैं। किसी पत्थर के नीचे उगी घास तक को खाने का लोभ वे संवरण नहीं कर पातीं—थुथना अंदर घुसा कर अथवा पैर से पत्थर को हटा कर वे उसे भी समाप्त कर देती हैं। इस प्रकार हरियाली के नष्ट हो जाने पर भूमि वर्षा और धूप के सीधे सम्पर्क में आती है तथा उसका भयानक रूप से क्षरण आरम्भ हो जाता ह। पहाड़ी क्षेत्रों में तो खुली भूमि क्षरण का बहुत जल्दी शिकार बन जाती है।

स्पेन को हरियाली से विहीन करने में दो जानवरों— बकरी और भेड़— का सर्वाधिक हाथ रहा है। यही बात भूमध्य-प्रदेश के बारे में भी लागू होती है। रोमन-साम्राज्य-काल में इन क्षेत्रों में, जो पहाड़ों और जंगलों से भरे थे, समय-समय पर भेड़ों और बकरियों के झुंड लाये जाते थे। फलतः धीरे-धीरे ये क्षेत्र जंगलों से खाली हो गये। उत्तरी अमेरिका का बर्बर-क्षेत्र भी बकरियों के झुंडों के बार-बार लाये जाने से ही विनष्ट हुआ। मोरक्को में पहले चिरहरित 'सीडर' के वृक्ष (ये वृक्ष देवदार की तरह होते हैं और सदा हरे रहते हैं) काफी संख्या में थे; पर आज तो बकरियों ने उनका पूरा सफाया कर दिया है— अब वहाँ भाग्य से ही कहीं-कहीं इस वृक्ष के दर्शन होते हैं। इसी तरह पश्चिमी सहारा के 'मूरों' ने भी बकरियों के मोह में पड़ कर सदा हरे रहनेवाले 'मिमोसा' वृक्षों से हाथ धो लिया!

एक प्रख्यात वनस्पतिशास्त्री, अगस्त चेवालियर, ने लिखा है कि, ये पशु केवल पौधों का ही भक्षण नहीं करते; बल्कि उनके बीज पाने के लिए धरती को भी खोद डालते हैं। इस प्रकार बीज के नष्ट हो जाने से भविष्य में उनके पुनः पनपने की सम्भावना भी प्रायः नष्ट हो जाती है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक सम्पूर्ण अफ्रीका और मैडागास्कर को इसी दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा है। एशिया में भी सीरिया, लेबनान तथा इजरायल के चूने के पत्थर के पहाड़ों को बकरियों ने इसी तरह दूर्वाविहीन करके अकथनीय क्षति पहुँचायी है। इस तरह पिछली कुछ सदियों से बकरियाँ— और कुछ अंशों में भेड़ें भी— पृथ्वी को ऊसर बनाने का काम लगातार कर रही हैं!

प्राचीन काल के नाविक जब नये स्थानों की खोज में निकलते थे, तो वे अपने साथ कुछ पालतू पशु भी रखते थे। इन पालतू पशुओं में अधिकतर बकरियाँ होती थीं और इनके कुछ जोड़े वे हर नये स्थान में छोड़ते जाते थे। गैर-आबाद या कम आबादीवाले क्षेत्रों में ये बकरियाँ मनमौजी ढंग से खातीं-पीतीं और अपनी संख्या में वृद्धि करतीं। बकरियों की संख्या में इस बेतहाशा वृद्धि के साथ-साथ उस स्थान की हरियाली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी विलीन होती जाती। फिर भी लोगों ने बकरियों की इस विनाश-लीला को नहीं समझा और बकरियाँ धीरे-धीरे सारे संसार में फैल गयीं।

अतलांतिक महासागर के प्रख्यात द्वीप 'संत हेलेना' को लोगों ने सन् १५०२ ईसवी में जब ढूँढ़ कर निकाला था, तब वह पूर्णतः गैर-आबाद क्षेत्र था और वहाँ जंगल भरे पड़े थे। सन् १५१३ ईसवी में पुर्तगाली वहाँ आये और साथ में बकरियाँ लाये। इसके दो शताब्दी बाद ही द्वीप में पेड़-पौधों की संख्या बहुत कम रह गयी। अतः १७४५ ईसवी में द्वीप के गवर्नर ने बकरियों की करतूत की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया; पर उसका कोई फल न निकला। द्वीप की रही-सही हरियाली भी विनष्ट होती गयी। और तब, सन् १८१० ईसवी में, वहाँ के गवर्नर ने मजबूर होकर सभी बकरियों को मरवा डाला। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी— द्वीप की अत्यंत उर्वरा भूमि पूर्णतः ऊसर बन चुकी थी।

१९-वीं शताब्दी में चार्ल्स डार्विन ने कहा था कि, प्रशांत-महासागर-क्षेत्र के जुआन फर्नैंडेज द्वीप पहले चंदन के वृक्षों से भरे थे। इन्हीं द्वीपों में से एक में प्रसिद्ध स्काट नाविक एलेक्जेंडर सेलकर्क, जिसका जहाज ध्वस्त हुआ था, सन् १७०४ ईसवी से सन् १७०९ ईसवी तक रहा था। पर उन द्वीपों में आज चंदन के पेड़ बहुत कम रह गये हैं— जो हैं, वे केवल गैर-आबाद इलाकों में। उन द्वीपों की अवस्था अब इतनी शोचनीय हो गयी है कि, १९५२ ईसवी में कैराकास में अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक साधन-सुधार-संघ की जब बैठक हुई, तो उन द्वीपों के स्वामी-राष्ट्र, चील, की सरकार से अनुरोध किया गया कि, वह द्वीप की सभी बकरियों को नष्ट करके बाकी पेड़-पौधों की रक्षा करे।

हवन्ना के द्वीपों में तो बकरियों का उत्पात इतना बढ़ गया है कि, वहाँ के बच्चे अभियानों का आयोजन करते हैं और बकरियों को खदेड़ कर समुद्र की गोद में पहुँचा देते हैं।

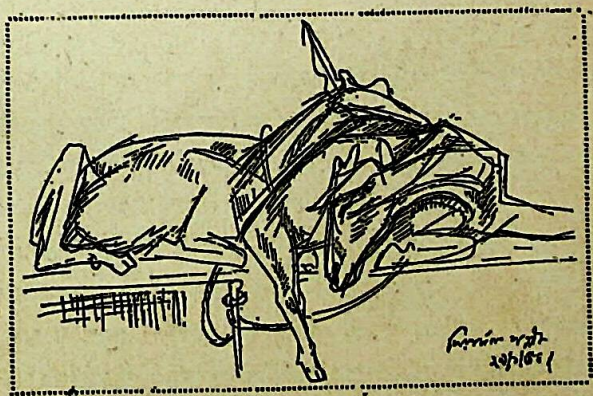

बकरी ('माडर्न आर्ट)'

[चित्र : रामकिंकर-निर्मित एक स्केच]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बकरी बड़ा खतरनाक पशु है, यह बात आज के मानव को भले ही अजीब लगे; पर अनेक लोगों ने बहुत पहले ही इसे लक्ष्य कर लिया था। सन् १६३६ ईसवी में फ्रांस की पार्लमेंट ने एक कानून पास किया था कि, बकरियों को जंगली क्षेत्रों में प्रविष्ट न होने दिया जाये। परंतु साधारण लोग बकरियों को क्षतिकारक नहीं मानते थे और इसीलिए उक्त कानून १७३१ ईसवी में रद्द कर दिया गया।

उत्तरी अफ्रीका में सहारा और उसके दक्षिणवर्ती प्रदेशों में बकरियों के झुंड अब भी पेड़-पौधों को बड़ी तेजी से नष्ट कर रहे हैं। यहाँ बकरियाँ इतनी तेजी से बढ़ रही हैं कि, देखते ही बनता है। केवल मडागास्कर के ही आँकड़े लीजिये, तो आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। वहाँ १९३६ ईसवी में पहली बार 'मोहर' बकरियाँ लायी गयीं। सन् १९३७ में उनकी संख्या कुल १,०००थी। यह संख्या सन् १९५५ में ३,७६,५८५ तक पहुँच गयी।

साइप्रस में बकरी-विरोधी अभियान बड़ी तेजी से और सफलतापूर्वक चलाया गया। जंगल-विभाग के अनुरोध पर वहाँ की स्थानीय सरकार ने एक 'बकरी-विरोधी कानून' बनाया, जो सन् १९१४ ईसवी में लागू किया गया। कानून को लागू करते समय सरकार ने नागरिकों को वचन दिया कि, वह बकरियों की कीमत तो उन्हें देगी ही, खेती करने के लिए जमीन भी देगी। इसके बाद कार्रवाई शुरू हुई। जिस गाँव के कम-से-कम दस ऐसे व्यक्ति, जो खेत और बकरियाँ रखते हों, पशुओं के मारे जाने का समर्थन कर देते, उस गाँव के निवासियों की एक सभा बुलायी जाती और उसमें बकरियों के कारण होनेवाली हानि पर प्रकाश डाला जाता। फिर मतदान लिया जाता और बहुमत से प्रस्ताव स्वीकृत होने पर बकरियों की हत्या कर दी जाती। फलस्वरूप आज साइप्रस की स्थिति पहले की अपेक्षा कहीं अच्छी है। वेनेजुएला में भी ऐसी ही कार्रवाई करके स्थिति सम्भाली गयी।

इसी प्रकार न्यूजीलैंड के माउंट एग्मंट नेशनल पार्क में सन् १९२६ से सन् १९४३ ईसवी तक १५ हजार बकरियों को मार डाला गया। किसानों ने भी प्रशासन से प्रेरणा पायी और अपनी बकरियों को मार डाला। इस प्रकार वहाँ बकरी-जाति का उन्मूलन हो गया।

किंतु बकरियों के खिलाफ सबसे सफल आंदोलन पिछले दस वर्षों में यूगोस्लाविया में हुआ। १९४७ में बकरी-विनाश का कानून यूगोस्लाव सरकार ने बनाया। इस कानून का पालन इतनी तत्परता से हुआ कि, आज वहाँ बकरियाँ केवल सर्कसों या अजायबघरों में ही शेष रह गयी हैं। इसके शुभ परिणाम भी वहाँ काफी प्रत्यक्ष हो उठे हैं– मेसीडोनिया, मांटे नेग्रो और डलमातिया का सारा पर्वतीय इलाका, जो प्रायः हरियाली-विहीन हो गया था; फिर वृक्षों की सघन हरीतिमा से छा गया है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भविष्यवाणी....

है कि

- केबिनेट की उत्कृष्ट सजावट एवं
- वर्षों तक उत्तम कार्यक्षमता

के कारण नया मर्फी मोडल ०७२४ किसी भी अन्य रेडीयो से अधिक प्रशंसित होगा।

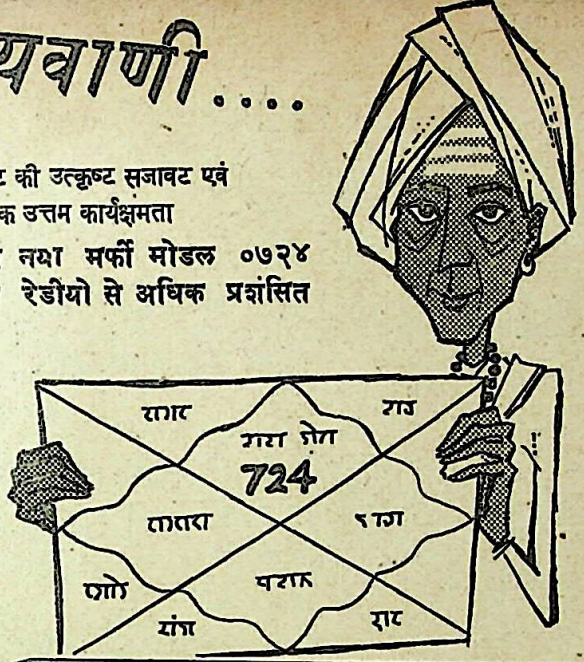

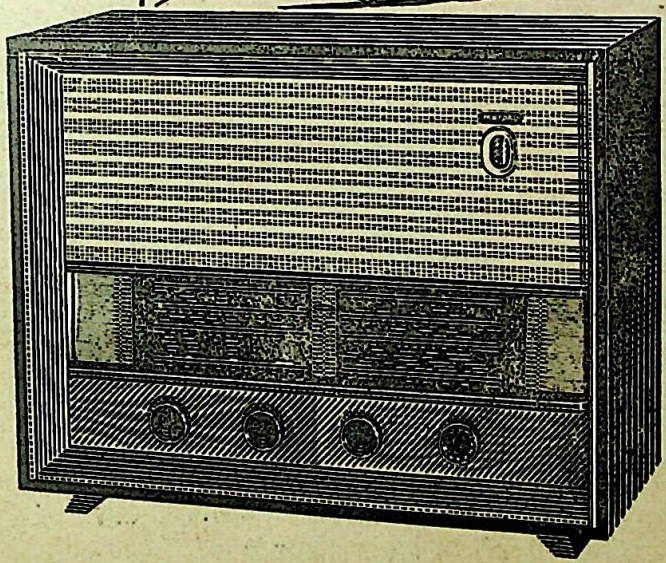

मोडल ०७२४

- ६-वाल्व
- सब वेव
- ४९५.०० रु. स्थानीय कर अतिरिक्त
- ८-बेन्ड, पूर्णतः बेन्डस्प्रेड
- ए.सी. या ए.सी./डी.सी. (दो मोडल)

murphy radio

वर्षों तक आपके लिये!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

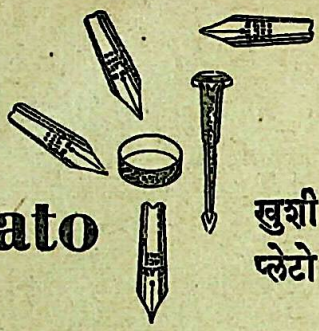

plato

खुशी से विभोर हो जाइए प्लेटो पेन अपनाकर !

लाखों के निर्वाचन के कठिनव्रत को इसने पार किया है। यह विदेशों में बने हुए सर्वश्रेष्ठ का सानी है रचना और उपयोगिता में।

प्राप्य हैं

* विभिन्न प्रकार के आकर्षक रंगों में
* स्याही भरने की अनेक पद्धतियों सहित
* स्वर्णलेपित और १४ कॅरेट नीब के साथ
* मूल्य की विस्तृत परिधि में

PLATO म्हात्रे प्राडक्ट

Shilpi MP. 533 HIN

व्यापारिक पूछताछ के लिए सम्पर्क स्थापित कीजिए प्रमुख वितरक:

बेस्ट फाउण्टन पेन डिपो

७९ देवकरण मॅन्शन, प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी जीवनयात्रा रसमयी क्यों नहीं

आचार्य नंदलाल वसु के एक प्रेरक प्रबंध का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

हमारी शिक्षा का आदर्श यदि सर्वांगीण शिक्षादान ही हो, तब तो कला का स्थान और मान विद्यालयों की पढ़ाई-लिखाई के साथ समान रूप में होना उचित है। इस देश के विद्यालयों में इस ओर जो-कुछ व्यवस्था हुई है, वह पर्याप्त नहीं है। हमारे विचार से इसका कारण हम लोगों में से अनेक का यह विश्वास है कि, शिल्प-चर्चा केवल पेशेवर शिल्पियों का काम है– सर्वसाधारण से उसका कोई सम्पर्क ही नहीं। शिल्प को न समझने के लिए अनेक शिक्षित मनुष्य भी अगौरव का अनुभव नहीं करते; फिर आम जनता की तो बात ही क्या! वह तो फोटो और तसवीर के भेद को भी नहीं समझती; जापानी गुड्डे को ही शिल्प का श्रेष्ठ निदर्शन समझ कर चकित होती रहती है; घटिया रंगों की लाल-नीली-बैंगनी जर्मन चादर को देख कर उसकी आँखें तनिक भी नहीं दुखतीं; सहज-सुलभ सस्ती मिट्टी के बने घड़े के स्थान पर, वह प्रयोजन की दुहाई देकर टीन के बने कनस्तरों का व्यवहार करती है। इसके लिए देश का शिक्षित-समाज और प्रधानतः विश्वविद्यालय ही जवाबदेह हैं। विद्या के क्षेत्र में देश की संस्कृति जिस तरह बढ़ती दीख रही है, लगता है, रसबोध का दन्य भी उसी तरह क्रमशः पीड़ादायक होता जा रहा है। इसके प्रतिकार का एकमात्र उपाय शिक्षित-समाज में कला-शिक्षा का व्यापक प्रचलन ही हो सकता है। कारण, वह शिक्षित-समाज ही जनसाधारण का आदर्श है।

आचार्य नंदलाल बसु

सौंदर्यबोध के अभाव में मनुष्य केवल रस के क्षेत्र से ही वंचित होता हो, सो नहीं, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की ओर से भी वह क्षतिग्रस्त होता है। सौंदर्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञान के अभाव में जो व्यक्ति आँगन और घर में कूड़ा-कर्कट जमा कर रखता है; अपने शरीर और लिबास का मैल साफ नहीं करता; घर की दीवार पर, राह-घाट-गली-कूचे में, अथवा रेलगाड़ी पर पान की पीक और थूक फेंकता है; वह सिर्फ अपने ही स्वास्थ्य की नहीं, समस्त जाति के स्वास्थ्य की हानि करता है।

हममें से बहुत-से लोग कला-चर्चा में मात्र धनी व्यक्ति का ही अधिकार समझते हैं। वे भूल जाते हैं कि, सुषमा ही शिल्पवस्तु का प्राण है– आर्थिक मूल्य से शिल्पवस्तु का विचार नहीं चल सकता। गरीब संथाल अपना मिट्टी का घर लीप-पोत कर उसमें मिट्टी के बर्तन और फटी गुदड़ी सजा कर रखता है; पर दूसरी ओर, कालेज में पढ़े अनेक शिक्षित छात्र और छात्राएँ प्रासादोपम होस्टल अथवा छात्रावास में कीमती कपड़े, बासन-बर्तन इधर-उधर फेंक कर, सब-कुछ गंदा करके रखती हैं। यहाँ दरिद्र संथाल का सौंदर्यबोध उसकी जीवन-यात्रा का अंगीभूत एवं प्राणवंत बोध है।

शिल्प की उपासना के नाम पर फ्रेम में जड़ी कलेंडर की मेमसाहबों की तसवीरों को पढ़े-लिखे लोगों के घर में वास्तविक तसवीर के पास ही स्थान मिलता है। छात्रों के कमरों में तसवीर की कीलों से कुर्ता लटक रहा है, पढ़ने की मेज पर चाय की प्याली, आईना, कंघी और कोको के डिब्बों में कागज के फूलों का गुच्छा सजा हुआ है। सज्जा के नाम पर, कुर्ते के ऊपर छाती तक खुला कोट, साड़ी के साथ मेमसाहबी खुरोंवाली चप्पल– इस तरह सर्वत्र ही सुषमा का अभाव है। चाहे हमारी हैसियत हो या न हो, इससे सौंदर्यबोध का दैन्य सूचित होता ही है।

और भी एक श्रेणी के मनुष्य हैं, जो कहते हैं–"आर्ट की साधना करके कैसे पेट भरूँगा?" यहाँ यह ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि, जिस तरह साहित्य-चर्चा के दो मार्ग हैं – एक आनंद और ज्ञान का मार्ग और दूसरा अर्थप्राप्ति का मार्ग, उसी प्रकार शिल्प-चर्चा के भी दो मार्ग हैं। एक आनंददायक और दूसरा अर्थदायक। इन दोनों धाराओं को हम क्रमशः 'चारुशिल्प' और 'कारुशिल्प' कहेंगे। चारुशिल्प हमारे रोज के दुःख-द्वंद्व-संकुचित मन को आनंद के जगत् में मुक्त कर देता है और कारुशिल्प हमारे रोज की प्रयोजनीय वस्तुओं में सौंदर्यमयी जादू की छड़ी का स्पर्श करा कर हमारी जीवन-यात्रा के मार्ग को सुंदर बना देता है; यही नहीं, अर्थागम का मार्ग भी सुरक्षित कर देता है। कारुशिल्प की अवनति के साथ-साथ देश की अधिकाधिक दुर्गति का भी आरम्भ हुआ है। इसीलिए व्यावहारिक क्षेत्र में शिल्प को छोड़ देना जाति अथवा समाज के हक में अर्थागम की ओर से भी अपना रास्ता बंद कर देना है। शिल्प-शिक्षा के अभाव में हमारी वर्तमान जीवन-यात्रा ही असुंदर नहीं हुई है, अतीत के रस-स्रष्टाओं के सृष्ट सम्पद से भी हम वंचित हो गये हैं!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगले २५ वर्षों में आदमी बदले होंगे

जनन और पोषण के नये अनुसंधानों के आधार पर लिखित डा० लक्ष्मीकांत नरसिंहम् का एक ज्ञानवर्धक लेख

*

आरम्भ इसका फ्रांस से होता है। 'पेरिस एकेडेमी आव साइंस' की प्रति सप्ताह होनेवाली बैठकों में से एक बैठक की यह घटना है। उस बैठक में यह बताया गया कि, एक विशेष रासायनिक उपचार के फलस्वरूप बत्तकों में कुछ परिवर्तन देखे गये हैं। किंतु इस छोटी-सी खबर ने विश्व के समस्त जीवशास्त्रियों में बड़ी जबर्दस्त सनसनी पैदा कर दी।

अब तक जीवशास्त्री यही कहते थे कि, किसी भी प्राणी की अनुवांशिकता उन संस्कार-तत्त्वों (जेनेस) से निर्धारित होती है, जो वह अपने माँ-बाप के यौन-संयोग के फलस्वरूप पाता है। किंतु वैज्ञानिकों की अभी हाल में हुई खोज ने पहली बार यह निष्कर्ष उपस्थित किया कि, बड़े जानवरों की नस्ल में परिवर्तन हो सकते हैं। इस शोध ने एक नया मार्ग खोल दिया। समाचारपत्रों ने बड़े विस्तार से इसका विवरण देते हुए भविष्यवाणी की कि, आश्चर्य नहीं, अगर एक दिन मनुष्य की नस्ल में भी इच्छानुसार परिवर्तन करने में वैज्ञानिक समर्थ हो जायें!

वैज्ञानिकों ने अपना यह प्रयोग बत्तकों पर किया। जब अंडे से बच्चे निकलने का समय आया, तो बड़ी उत्सुकता और आशा से वे प्रतीक्षा कर रहे थे। ७५ प्रतिशत बत्तकों में परिवर्तन दिखायी दिये और ये परिवर्तन वंशगत थे। वस्तुतः अपने इस प्रयोग का परिणाम वैज्ञानिकों को चार महीने पहले ही ज्ञात हो चुका था। कम-से-कम उन्होंने इसकी आशा अवश्य कर रखी थी। अपने इस प्रयोग से वे यह जानना चाहते थे कि, उनकी वंशगत विशेषताओं में परिवर्तन सम्भव है अथवा नहीं। और, इसके लिए उन्होंने अपने प्रयोग का आधार मादा तथा नर, दोनों ही बत्तकों को बनाया था। हाँ, एक बात अवश्य ही उनकी आशा के विपरीत थी। इसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि, जिन बत्तकों पर प्रयोग किये गये थे, उनकी नस्लें भी इससे प्रभावित हो जायेंगी।

यह बात तो बहुत दिनों से ज्ञात थी कि, किसी भी सजीव प्राणी की वंशगत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशेषताएँ (उदाहरणार्थ, फूल का रंग, मक्खी के पंख का आकार, मनुष्य का रक्त-वैशिष्ट्य आदि) उन संस्कार-तत्त्वों से निर्धारित होती हैं, जो उसके प्रत्येक कोश के केंद्रबिंदु में पाये जाते हैं। पर वैज्ञानिकों ने यह हाल में ही पता लगाया कि, इन संस्कार-तत्त्वों को 'डेसोजिरोबो न्यूक्लिक एसिड' की प्रधानता रहती है। संस्कार-तत्त्वों में यह एक बड़े कण के रूप में मौजूद रहता है। विभिन्न मध्यम आकार के कई कणों के मिलने से इस कण का निर्माण होता है। पर इन बड़े कणों में समानता नहीं हो सकती है। यह एक प्रकार से वास्तुकला के समान ही है! एक ही प्रकार के पत्थरों से कई प्रकार की इमारतें बनायी जा सकती हैं। उसी प्रकार एक ही प्रकार के तत्त्वों-द्वारा विभिन्न वस्तुओं से 'डेसोजिरोबो न्यूक्लिक एसिड' प्राप्त किया जा सकता है। किंतु इस खोज के बाद भी, इन संस्कार-तत्त्वों और उनकी विशेषताओं को परिवर्तित करने का ढंग किसी को ज्ञात नहीं था।

बर्नार्डो अलबर्टो हाउजे

"हम जो-कुछ हैं, अपनी ग्रंथियों के कारण हैं।" इसी सूत्र पर नोबेल-पुरस्कार पानेवाले अर्जेंटाइना के विज्ञानवेत्ता

प्रकृति में उत्पत्ति-सम्बंधी परिवर्तनों को, जो समय-समय पर होते हैं, 'नवोद्भव' कहा जाता है। उत्पत्तिशास्त्री अपने प्रयोगों के लिए अधिकतर फलों पर मँडरानेवाली मक्खी ही चुना करते हैं। इसी मक्खी पर किये गये प्रयोगों के आधार पर उन्होंने नवोद्भव के सम्बंध में भी अध्ययन किया है। और, इसके लिए उन्हें कम श्रम नहीं करना पड़ा। चालीस वर्ष तक उन मक्खियों की देखभाल की गयी, उन्हें पाला-पोसा गया और इस अर्से में उनकी १४०० से भी अधिक पीढ़ियों के सम्बंध में अध्ययन करने का अवसर मिला।

शोधों से यह ज्ञात हो चुका है कि, उन मक्खियों में अचानक एक ऐसे कीड़े का भी प्रादुर्भाव हो सकता है, जो उन साधारण मक्खियों से भिन्न हो। यह कीड़ा वस्तुतः उन मक्खियों के वंश और उनकी ही जाति का है, यह निश्चित हो जाने पर यह प्रमाणित हो जायेगा कि, ऐसा संस्कार-तत्त्व में सुधार से ही हुआ।

स्वेच्छानुरूप नवोद्भव बहुत कम देखने में आते हैं। जिन मक्खियों की देखरेख की गयी थी, उनके साथ १ लाख बार में सिर्फ एक बार ऐसा अवसर आता है। किंतु सन् १९२७ में, एक अमरीकी वैज्ञानिक ने यह लक्ष्य किया कि, क्ष-किरणों और आणविक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

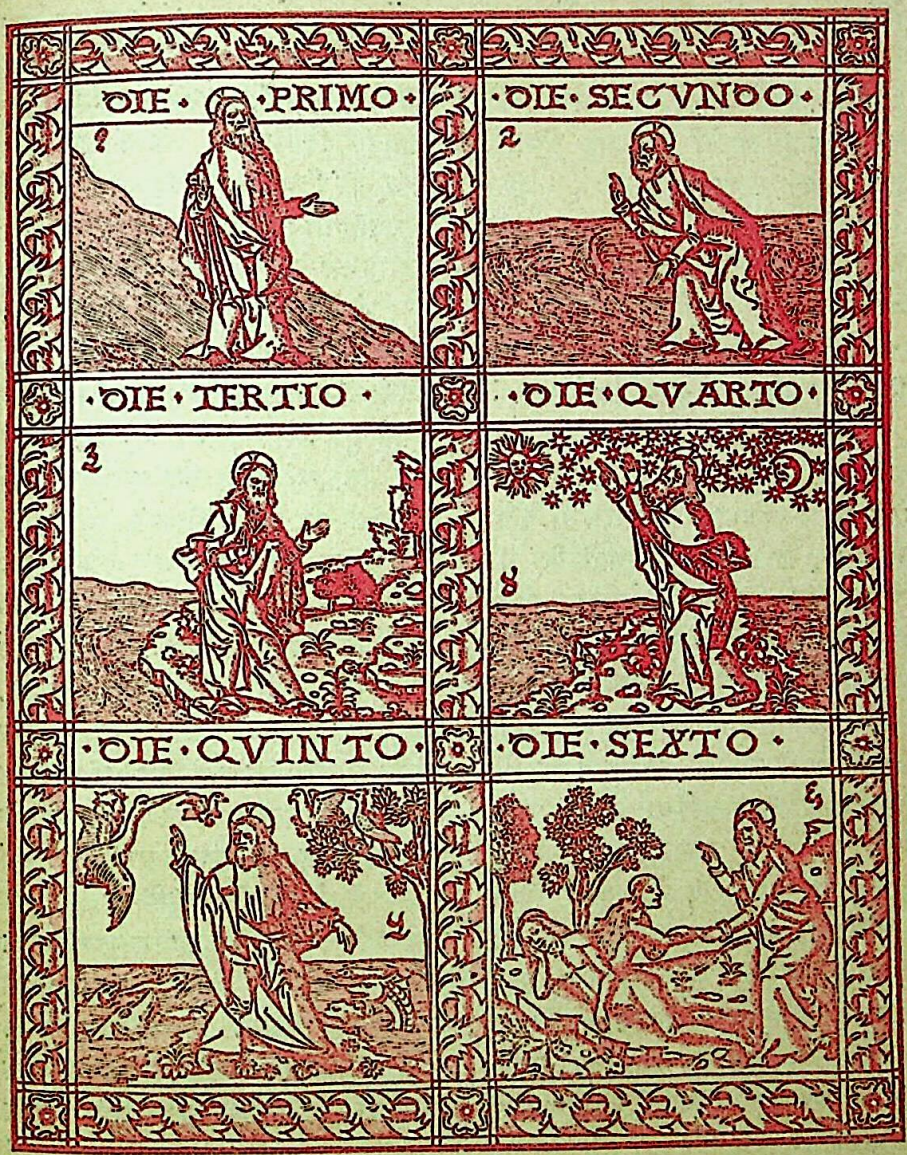

पहले दिन भगवान् ने स्वर्ग और पृथ्वी बनायी। दूसरे दिन उन्होंने पानी और आकाश को अलग किया। तीसरे दिन उन्होंने सूखी जमीन और वनस्पति बनायी। चौथे दिन उन्होंने सूरज-चाँद-तारे बनाये। पाँचवें दिन उन्होंने पक्षी और मछलियाँ बनायीं। छठे दिन उन्होंने पशु और मनुष्य बनाये।

[चित्र : १६-वीं सदी में लियोंस में छपी बाइबिल में प्रकाशित एक चित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकिरण से स्वेच्छानुसार नवोद्भव की आवृत्ति में वृद्धि सम्भव है। कुछ अन्य रासायनिक पदार्थों में भी– जैसे, मस्टर्ड गस– यह क्षमता ह। यह वैज्ञानिक था, हरमन मूलर।

मूलर की खोज का स्वागत हुआ; किंतु विकिरणों अथवा रासायनिक पदार्थों से भी वैज्ञानिकों को एक सीमा तक ही सफलता मिली। वे कुछ निश्चित दिशा में ही आगे बढ़ सकते थे।

इस खोज के एक वर्ष बाद, एक अंग्रेज वज्ञानिक फ्रेड ग्रिफिथ ने इस दिशा में एक प्रयोग किया। तत्काल तो नहीं; किंतु १५ से भी अधिक वर्षों के बाद, उस प्रयोग का महत्व वैज्ञानिक विश्व के समक्ष प्रत्यक्ष हो उठा। ग्रिफिथ ने कुछ चूहों पर अपना प्रयोग किया था। उसने कुछ सजीव कीटाणु, जो अधिक उग्र किस्म के नहीं थे, इंजेक्शन के जरिये इन चूहों के शरीर में पहुँचा दिये। साथ ही, उसने कुछ उग्र किस्म के कीटाणु भी चूहों के शरीर में पहुँचा दिये। ये कीटाणु अत्यधिक गर्मी से अपनी जीवन-शक्ति खो चुके थे। कुछ काल के बाद ग्रिफिथ के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने देखा कि, सजीव कीटाणु भी उग्र किस्म के कीटाणुओं में परिवर्तित हो गये थे।

वर्षों बाद, सन् १९४४ में, वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि, ग्रिफिथ के प्रयोग को वे संशोधित कर काम में ला सकते ह। और, यह संशोधन था, मृत कीटाणुओं के स्थान पर 'डेसोजिरोवो न्यूक्लिक एसिड' का प्रयोग। यह एसिड वैज्ञानिक विधियों से उन कीटाणुओं से प्राप्त कर लिया गया था।

नवोद्भव-सम्बंधी शोध-कार्य उस वक्त फ्रांस म चल रहा था। शोधकर्ता थे, प्रोफेसर बोइविन और उनके सहयोगी रोजर वेंड्रेली। १९४४ में वैज्ञानिकों-द्वारा प्राप्त निष्कर्ष ने उनके सामने एक नया मार्ग उपस्थित किया और इसी मार्ग का अवलम्बन कर वैज्ञानिकों ने बत्तकों पर प्रयोग किया।

बोइविन का सहयोगी वेंड्रेली एक रसायनवेत्ता था। उसने एक अन्य वैज्ञानिक जेक्वेइस बेनोइट की देख-रेख में शोध-कार्य करनेवाली एक युवती, कोलेटे, से शादी कर ली। शादी के बाद वेंड्रेली ने बोइविन का साथ छोड़ दिया और अपनी पत्नी के साथ स्ट्रैसबर्ग के अनुसंधान-केंद्र म चला गया। वहाँ दोनों पति-पत्नी 'डेसोजिरोवो न्यूक्लिक एसिड' के सम्बंध में विशेष रूप से अध्ययन करने लगे।

कोलेटे प्रोफेसर बेनोइट से यदा-कदा पत्र-व्यवहार करती रहती थी। उसने इसकी सूचना भी प्रोफेसर को दे दी और बेनोइट के दिमाग में सहसा एक विचार उठा–"क्यों न 'डेसोजिरोवोन्यूक्लिक एसिड' का प्रयोग कुछ बड़े जानवरों पर किया जाये और देखा जाये, नवोद्भव के क्षेत्र में क्या हासिल होता है ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने इस प्रयोग के लिए उन्होंने बत्तकों को चुना। बत्तकों को लेकर प्रोफेसर बेनोइट बहुत दिनों से अनुसंधान-कार्य में जुटे हुए थे और उन्हें कुछ दूर तक सफलता भी मिली थी।

वेंड्रेली-दम्पति के अलावा प्रोफेसर बेनोइट ने इस कार्य में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक फादर पियरे लेराय की भी मदद ली। अपने प्रयोग के लिए इन लोगों ने 'पेकिंग' बत्तकों (बत्तकों की एक नस्ल) को चुना। एक सप्ताह से लेकर चार-साढ़े चार महीने की उम्र के बत्तकों म इंजेक्शन के जरिये कुछ समय तक प्रति सप्ताह 'डेसोजिरोबो न्यूक्लिक एसिड' पहुँचाया गया। यह एसिड 'खाकी' बत्तकों (बत्तकों की एक दूसरी नस्ल) के रक्त और यौन-कोश से प्राप्त किया गया था। 'पेकिंग' बत्तकों के पर का रंग हल्का पीलापन लिये होता है और उनकी चोंच नारंगी रंग की होती है। 'खाकी' बत्तकों के पर भूरे रंग के होते हैं और उनकी चोंच का रंग गहरा हरा अथवा कालापन लिये होता है। 'पेकिंग' और 'खाकी' के नर-मादा बत्तकों का जब संयोग कराया जाता है, तब साधारणतः पैदा होनेवाले बत्तक के पर भूरे रंग के होते हैं और चोंच गहरे काले रंग की!

प्रो० बेनोइट और उनके सहयोगियों के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उन्होंने देखा कि, जिन बत्तकों पर प्रयोग किया गया था, उन्हीं की अनुवांशिकता में परिवर्तन हो रहा है। विशेष कर उनकी पीली चोंच का रंग या तो बदल कर गुलाबी होने लगा अथवा 'खाकी' बत्तकों की चोंच के रंग की तरह उनकी चोंच का रंग हो गया। उनके पर के रंग में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन दृष्टिगत हुआ। पीलापन लिये रहनेवाले परों का रंग श्वेत, बिल्कुल बर्फ के समान, हो गया। प्रो० बेनोइट ने सोचा था कि, उन बत्तकों के जब बच्चे पैदा होंगे, तब कहीं उन्हें अपने प्रयोग का परिणाम देखने को मिलेगा। प्रयोग के इस रूप ने अनेक नयी सम्भावनाओं को जन्म दिया।

स्वभावतः ही वैज्ञानिकों की दिलचस्पी बढ़ गयी और वे दूनी लगन से इस ओर प्रवृत्त हो गये। अभी उनका शोध-कार्य जारी है; अतः निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी, आश्चर्य नहीं, अगर निकट भविष्य में ही, श्रम-देवी के इन वरद पुत्रों को सफलता जयमाला पहनाये और मानव की अनुवांशिकता में इच्छानुसार परिवर्तन करने की धारणा कल्पनालोक की वस्तु न रह कर हमारी इसी धरा पर मूर्त रूप ले ले!

★

अगर कोई मूर्खों से राय ले, दुष्टों से प्रेम जोड़े, तथ्य से द्वेष करे, प्रमाद को अपनाये, शक्तिशाली से विरोध मोल ले, तो समझ लीजिये कि, विधाता उससे विमुख हो गया है, अर्थात् उसको दुर्भाग्य के दिन देखने पड़ेंगे। —अडिवि बापिराजू

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यूरोप के पाँच अमरकाव्य

होमर, वर्जिल, दाँते, गेटे और मिल्टन—पाश्चात्य जगत् के पाँच रससिद्ध कवीश्वर हैं। बाद का सारा पाश्चात्य काव्य साहित्य मूलतः इन्हीं पाँच रस-स्रोतों का ऋणी है। प्रेम और सौंदर्य के दो तटों में अजस्र बहनेवाली मनुष्य की जीवनानुभूति के जो मर्मस्पर्शी चित्र इन महाकाव्यों में यत्र-तत्र बिखरे मिलते हैं, वे स्पष्ट करते हैं कि, जीवमात्र एक ही चिरंतन सत्य– परम चैतन्य– में बँधा हुआ है और एक ही हृदय सर्वत्र अपनी धड़कनें ध्वनित करता है! नीचे लक्ष्मीशंकर व्यास-द्वारा लिखित इन पंचमहाकाव्यों का संक्षिप्त परिचय पढ़िये और साहित्य में अनुप्राणित जीवन के सनातन सत्य के दर्शन कीजिये!

★

पाश्चात्य कविता के आदिकवि महाकवि होमर ने 'इलियड' तथा 'ओडेसी' नामक महाकाव्यों का प्रणयन किया है। आज भी पाश्चात्य काव्य का ऐतिहासिक क्रम इन्हीं महाकाव्यों से आरम्भ होता है। इन काव्यों में और भारतीय 'रामायण' की कथा में अद्भुत् साम्य दृष्टिगोचर होता है। 'इलियड' की कथावस्तु का केंद्र उस युग की सर्वांगसुंदरी हेलेन है, तो 'ओडेसी' में पेनिलोपी मुख्य कथा की केंद्रबिंदु है। इन दोनों ऐतिहासिक प्रेम-आख्यानों के महाकाव्यों में यद्यपि शौर्य-वीर्य का वर्णन ही मुख्य है, तथापि इनकी मुख्य प्रेरणाएँ हेलेन और पेनिलोपी ही हैं। यूनान की इन असाधारण सौंदर्य की प्रतिमाओं के लिए होनेवाला राष्ट्रव्यापी संघर्ष यद्यपि प्रतीकात्मक है; किंतु प्रेम-तत्त्व की अखंड धारा उनमें आदि से अंत तक विद्यमान है।

होमर

[चित्र: ओके-निर्मित रेखाचित्र]

ट्राय का राजकुमार पेरिस, स्पार्टा की राजकुमारी हेलेन का हरण कर ले जाता है। इस पर यूनान के सभी राजकुमार राष्ट्रीय अपमान की भावना से प्रेरित हो, प्रतिशोध के निमित्त संघटित होते हैं। एकिलीज यूनानी पक्ष का सबसे योग्य शूरमा था। ट्राय-पक्ष का प्रख्यात वीर था, हेकटर। ट्राय दस वर्षों तक सैनिक घेरेबंदी में रहा। यही है, संक्षेप में 'इलियड' महाकाव्य की कहानी। 'ओडेसी' महाकाव्य में यूलिसीज के दस वर्षों के देश-देशांतर-भ्रमण एवं पर्यटन की कहानी है। इसी बीच उसकी सौंदर्यमयी प्रियतमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्जिल

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

पेनिलोपी से विवाह करने के लिए संघर्ष चलता है। जब यूलिसीज़ लौटता है, तो इन विवाहेच्छुओं को यथोचित पाठ पढ़ाता है। यूनान के ये महाकाव्य इतने अधिक लोकप्रिय हुए कि, इनकी गणना राष्ट्रीय महाकाव्यों में होने लगी।

रोम के महान् साहित्यकार तथा लैटिन भाषा के सर्वश्रेष्ठ महाकवि वर्जिल न केवल रोम के, अपितु शताब्दियों तक 'यूरोप के महाकवि' माने जाते रहे हैं। सदियों-पर्यंत यूरोपीय साहित्य की धारा को प्रभावित करनेवाले इस महान् साहित्य-स्रष्टा का आज भी कुछ कम महत्व नहीं। वर्जिल की कविताओं में प्रकृति-प्रेम तथा ग्राम्यजीवन के चित्रण अत्यधिक मर्मस्पर्शी हैं। 'इक्लोग्स' इनका प्रख्यात काव्य है, जिसमें प्रकृति-प्रेम के अलौकिक चित्र अंकित हैं। उसमें उत्तरी इटली के ग्रामीण जीवन की मनोरम झाँकी है। इटली का प्राकृतिक सौंदर्य समस्त संसार में प्रसिद्ध है। महाकवि वर्जिल ने उसका चित्रांकन कर और भी चार चाँद लगा दिये हैं। इटली के प्राकृतिक सौंदर्यस्थल, पूर्व की भाँति, आज भी उतने ही आकर्षक हैं। प्रति वर्ष वसंत ऋतु उनमें सोलहों शृंगार कर पदार्पण करती है। महाकवि वर्जिल ने अपने काव्य में इसका इतना सजीव वर्णन किया है, मानो शताब्दियों पूर्व प्रणीत ये काव्य अभी कल की रचना हों।

'इक्लोग्स' काव्य में एक ऐसी भविष्य-द्रष्टा कविता है, जिसे ईसाई धर्मावलम्बी अत्यंत आदर एवं श्रद्धा से पढ़ते हैं। इसका कारण यह है कि, उक्त कविता में एक ऐसे शिशु के अवतार की परिकल्पना की गयी है, जो प्रेम तथा शांति के युग का निर्माता होगा। आशय यह कि, इस संकेत को लोग महात्मा ईसा के अवतार की भविष्यवाणी मानते हैं। वर्जिल की दूसरी प्रख्यात काव्य-कृति है—'ईनिड'। इसमें रोम के निर्माण की रोमांचक कथा है और प्राकृतिक सौंदर्य के संश्लिष्ट चित्रण के अतिरिक्त वर्जिल ने

दाँते

[चित्र : बी० एन० ओके-निर्मित रेखाचित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाकवि गेटे

[चित्र : चंद्रमोहन-निर्मित रेखाचित्र]

'डीडो' की प्रेम-कथा भी लिखी है।

महाकवि दाँते की वह रचना, जिसके कारण वह छः शताब्दियों के पश्चात् भी आज समस्त संसार के साहित्य-प्रेमियों द्वारा असीम आदर के साथ स्मरण किया जाता है, 'डिवाइन कामेडी' है। इस महाकाव्य का नायक स्वयं कवि है। दाँते की कविता संकेतात्मक एवं प्रतीकमयी है। यह महाकाव्य इनफर्नो (नगर) पर्गेटेरियो (कर्मभूमि) और पैराडाइजो (स्वर्ग) नामक तीन खंडों में विभाजित है। इन तीन खंडों में 'पर्गेटेरियो' को सर्वोत्कृष्ट माना जाता है।

इस महाकाव्य का संक्षिप्त इतिवृत्त इस प्रकार है। कवि सर्वप्रथम एक विकट वन में पथच्युत होकर भटकता है। उस पथविहीन वन में कवि को अरुणाभायुक्त एक उत्तुंग पर्वत-शिखर दृष्टिगोचर होता है। यही स्वर्ग है। कवि इस पर पहुँचने का प्रयत्न करता है। इसके निकट पहुँचने पर काम, क्रोध, लोभ और अभिमान के मूर्तिमान पशु उस पर आक्रमण करते हैं। कवि मूर्च्छित होकर गिर पड़ता है। इस मर्मांतक वेदना को व्याकुल कर देनेवाली दशा में उसे महाकवि वर्जिल की प्रेतात्मा दर्शन देती है। वह कवि को उपदेश देती है और दिव्यदृष्टि प्रदान करती है। कवि पुनः मुक्ति-मार्ग की खोज करता है। मुक्ति-मार्ग के परिशोध में उसे सर्वप्रथम नरक-लोक मिलता है। फिर कर्मभूमि आती है। इसी कर्मभूमि के द्वार पर उसे बिट्रीस के दर्शन होते हैं। उसके स्नेहपूर्ण एवं अलौकिक सौंदर्य की शीतल-स्निग्ध छाया में कवि स्वर्गलोक में पहुँचता है। कवि का मार्ग-निर्देश करती हुई बिट्रीस उसे सूर्यलोक की ओर संकेत कर अनंत रहस्य समझाती है। महाकवि दाँते जन्मजात कवि थे और उनकी कवित्व-शक्ति ईश्वर-प्रदत्त थी। यूरोप के मध्य-कालीन साहित्य-समालोचकों का कथन है कि, दाँते में काव्य-प्रणयन की अभिरुचि का स्फुरण नौ वर्ष की अत्यल्पावस्था में उस समय हुआ था, जब कि उसने सर्वप्रथम प्रेम, काम और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति

मिल्टन

[चित्र : ओके-निर्मित रेखाचित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिट्रीस के दर्शन किये थे।

अठारहवीं शताब्दी का जर्मन महाकवि गेटे अमर साहित्य का निर्माता है। 'फाउस्ट' उसकी विश्वविख्यात काव्य-रचना है। गेटे जर्मनी का ही महान् साहित्यकार नहीं, अपितु विश्व के सुप्रसिद्ध साहित्य-निर्माताओं में उसकी गणना होती है। चौदहवीं शताब्दी में 'डिवाइन कामेडी' का जो प्रभाव यूरोपीय साहित्य एवं समाज पर पड़ा, अठारहवीं शती में वही प्रभाव डालनेवाली काव्य-कृति 'फाउस्ट' है। इसमें आधुनिक युग और उसकी समस्याओं का चित्रण तो है ही, नैतिकता का संदेश भी है। महाकवि गेटे की कविता में सर्वत्र आध्यात्मिकता का स्पर्श मिलता है।

विश्व-साहित्य की इनी-गिनी श्रेष्ठ रचनाओं में 'फाउस्ट' की गणना की जाती है। इस नाटक के प्रणयन में महाकवि गेटे को पंद्रह वर्षों का सुदीर्घकाल लगा। फाउस्ट ऐसा व्यक्ति है, जो जीवन की खोज में निकलता है। उसे विदित है कि, मुक्ति का मार्ग सिद्धांतों-द्वारा नहीं, अपितु अनुभूति के माध्यम से ही मिल सकता है। मेपहिस्टोफेल्स के निर्देश में वह अपने-आपको अर्पण कर देता है। असत्-भावना की अधीनता में शक्ति एवं विलास के प्रयोगों से वह ऊब जाता है और अंत में उसे मानवता की सेवा में ही मुक्ति एवं उद्धार के सत्यमार्ग के दर्शन होते हैं। इस प्रसंग में मारगरेट और फाउस्ट का प्रेम-चित्रण अत्यंत कलापूर्ण हुआ है।

शेक्सपियर के पश्चात् इंगलैंड के साहित्याकाश में जिस प्रकाशयुक्त प्रतिभावान् नक्षत्र का उदय हुआ, वह था— महाकवि मिल्टन। मिल्टन का 'पैराडाइज लास्ट' विश्व-साहित्य की श्रेष्ठतम काव्य-रचनाओं में प्रमुख है। मिल्टन वास्तविक अर्थों में मानवता का कवि था। 'पैराडाइज लास्ट' में आदम और ईव की प्रमकथा तथा मानवता के विकास की कहानी है। इस महाकाव्य में एक ओर तो शैतान के साहसिक कार्यों का चित्रण है और दूसरी ओर आदम-ईव के प्रेम-वैराग्य की अत्यन्त रोमांचक कथा है।

इडेन-उपवन में शैतान, मानवता के आदिम दम्पति, आदम और ईव, को किस प्रकार अपनी मोहमयी माया में फँसा कर मानवता के वरदान को अभिशाप में परिवर्तित कर देता है, यह सभ्यता के आदियुग का कुतूहलपूर्ण अध्याय है। शैतान की छाया के पूर्व जीवन स्वर्ग-सा सुखी-संतुष्ट था। उसके पश्चात् यह कैसा अभिशप्त हो गया, इसकी अत्यंत कलापूर्ण झाँकी इस अत्यधिक प्रशंसित महाकाव्य में मिलती है।

पश्चिमी साहित्य की ये अमर काव्य-कृतियाँ, शताब्दियों पूर्व की रचना होते हुए भी चिरनवीन हैं। समस्त मानवता इन अमर काव्यों से एक सांस्कृतिक सूत्र में आबद्ध होकर साम्यमूलक भावलोक में विहार एवं विचरण करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पीती

भारतमाता के आँचल का दृश्य छोर

कर्नल महादेव सिंह-लिखित हिमालय की एक विजनवती बस्ती का आँखों-देखा विवरण

*

"विधाता ने जब धरती को बनाया, तो सबसे पहले उसने हिमालय पर्वत की रचना की! यहाँ का एक सुरम्य स्थान उनको बड़ा प्रिय लगा— इतना प्रिय कि, स्वर्ग-वैभव त्याग, वे खुद वहीं रहने लगे। वैयक्तिक सुख-सुविधा के लिए वे अपने साथ एक सेवक और सेविका भी लाये थे। दोनों ने विधाता की बड़ी भक्ति के साथ सेवा-चाकरी की। काफी वर्षों तक हिमालय के इस खंड में रहने के बाद, एक दिन स्वर्ग के देवताओं के विजयोत्सव में सम्मिलित होने के लिए विधाता को स्वर्ग जाना पड़ा। उन सेवक-सेविका पति-पत्नी को वे वहीं छोड़ गये— कह गये कि, जब तक मैं न आऊँ, तुम यहीं रहना और मेरे निवास की देखभाल करना। किंतु स्वर्ग में पहुँच कर, देवताओं की प्रार्थना के अनुसार विधाता फिर सृष्टि बनाने में लग गये। तब से आज तक उन्हें हिमालय के अपने इस निवास में वापस आने का अवकाश नहीं मिला। किंतु विधाता के वचन भी कभी मिथ्या नहीं जाते। सृष्टि-रचना का काम समाप्त कर, एक-न-एक दिन संसार के इस परम सुंदर स्थान में वे आयेंगे अवश्य! विधाता के उस सेवक का नाम 'स्पी' और सेविका का नाम 'ती' था। उन्हीं दोनों के संयुक्त नाम पर इस अंचल का नाम 'स्पीती' पड़ा। हम सब यहाँ के निवासी उन्हीं दोनों की संतान हैं। विधाता के आदेशा-

मिशनरियों के संसर्ग में आनेवाला एक बूढ़ा स्पीतियन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नुसार हम आज तक उनके इस निवास की देखभाल करते आ रहे हैं और जब तक वे लौट कर नहीं आ जायेंगे, हम लोगों को यहीं प्रहरी बन कर रहना होगा।"

स्पीती के एक टूटे-फूटे चैत्य में एक बूढ़े लामा ने इस प्रकार स्वयं अपने एवं अपने देश के विषय में यह विश्वास-गाथा सुनायी। साथ ही, उन्होंने हमें यह भी बताया कि, यह परम गोप्य रहस्य है, स्वप्न म जिसके लिए विधाता अनुमति देते हैं, केवल उसे ही यह सुनाया जाता है!

हिमालय की गोद में बसे भारत के इस दूरस्थ अंचल में जब हम पहुँचे, तो हमें लगा कि, जैसे हम लोग आधुनिक सभ्यता से एकदम परे, काफी सदियों पीछे के युग में, ढकेल दिये गये हों। यहाँ हमारे सामने तिब्बत के लामा-जीवन की वे सारी रहस्यमयी कहानियाँ साकार हो गयीं, जिन्हें हम कई वर्षों से मौन रोमांच के साथ पढ़ते आये थे। हमने यहाँ-वहाँ सर्वत्र घूम-फिर कर देखा— लोगों के जीवन-क्रम को परखा। पाया कि, संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से स्पीती भारत के बजाय तिब्बत का ही एक छोर है। किसी अत्यंत प्राचीन युग में स्पीती बौद्ध धर्म-यात्रियों के तिब्बत-प्रवेश का तोरण-द्वार रहा होगा और फिर तिब्बत से आगे कोरिया तक, हमारे भिक्षु अमिताभ की धर्म-पताका लेकर गये होंगे। धर्मास्था का यह बल मनुष्य के अतीत पर कितने विस्मयजनक चमत्कार लिख गया है— हिमालय की गगनचुम्बी पर्वतश्रेणियाँ, हिंसक पशुओं से आच्छन्न जंगल एवं प्रकृति के निर्मम कोप-प्रकोप, सबको पराजित कर मनुष्य आत्मा के घोष पर आगे-आगे बढ़ता गया। कितने राह में ही खो गये, कितने अजाने ही विलीन हो गये . . . किंतु मार्ग-रेखा बनी, सो मिटी नहीं — आगे-आगे विकास पाती ही गयी, गंगा बहती ही गयी!

नये धनुष की परीक्षा में लीन स्पीती का एक लामा

स्पीती भारत का एक अत्यंत अगम छोर है। चंद्राघाटी में, १३,५०० फुट रोहतंग और १४,९५० फुट कुंजुम दर्रों को पार कर स्पीती की भूमि में प्रवेश मिलता है। तिब्बत को जानेवाले व्यापारी-काफिलों के मार्ग पर चलते हुए, जब जुलाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हम लोग इस इलाके में पहुँचे, तो हिमालय का सम्पूर्ण सौंदर्य अपनी विविध व्यंजनाओं में हमारी मुग्ध आँखों के सामने था। प्रकृति के शिल्प-कुशल हाथों से तराशे गये बर्फ के अभ्रभेदी शिखर– विविध आकृतियों में अपने-आप कटे-छँटे बड़े-बड़े शिलाखंड हमें बेलूर और मदुरा की मूर्तियों की याद दिला रहे थे। तेजी से बहते वे ग्लेशियर, हरियाली में लहराती वह ऊँची-नीची पर्वतीय भूमि और जहाँ नजर पहुँच जाये, वहीं एक नया फूल मोहक आमंत्रण देता-सा, हमारी प्रतीक्षा में वर्षों-से खड़ा-सा दीखे– देख कर हम आत्म-विस्मृत हो गये।

किंतु इन तीन-चार महीनों में ही स्पीती को प्रकृति अपना सुरम्य क्रीड़ांगन बनाती है। बाकी महीनों में तो यह भूभाग मानो ठंडा, बंजर रेगिस्तान ही है, जहाँ वृक्षों के दर्शन भी प्रायः नहीं होते। पानी के बादल यहाँ तक मुश्किल से पहुँचते हैं– नाममात्र की बारिश हो जाती है। गर्मी में जब ग्लेशियर पिघलते हैं, तभी पानी के विविध प्रवाह इस क्षेत्र में सुलभ होते हैं।

ऐसी स्थिति में यहाँ का जीवन बड़ा कठिन और श्रमसाध्य है। किंतु श्रम अधिकांशतः यहाँ नारी के ही भाग्य में बदा है। खेत हाँकना, बीज बोना, फसल काटना, आदि खेती के सारे श्रमजन्य काम यहाँ की औरतें ही करती हैं। यहाँ पुरुष-समाज खेती-बाड़ी को 'अधम' काम समझता है। पुरुष ईंधन के लिए झाड़ियाँ एकत्र करता है, उन्हें सुखा कर सुरक्षा के साथ रखता है। किंतु उसका सबसे प्रधान काम है, याकों को पालना। याक यहाँ का कामधेनु मवेशी है। स्पीतियन को याक से घी, मक्खन और दूध ही नहीं मिलता, वजन ढोने के लिए भी, तिब्बत की तरह, उनका यहाँ बहुतायत से उपयोग होता है। भूटियों और तिब्बतियों की भाँति स्पीतियन लोग भी घर में कई प्रकार की शराबें बनाते हैं और पर्व-उत्सवों पर दिन-रात

पीठ-पीछे बंदर को लादे
एक काफिलेवाला स्पीतियन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीते रहते हैं।

धर्मास्था की दृष्टि से स्पीतियन बौद्ध हैं और ल्हासा के दलाई लामा को अपना धर्मगुरु मानते हैं। भाषा उनकी भूटिया है। शरीर-आकृति की दृष्टि से मंगोलों के साथ ही उनका विशेष साम्य है। दुनिया के साथ स्पीतियनों का सम्पर्क बिल्कुल नहीं है—वैसे भी आकृति, वेश-भूषा, भाषा और रीति-रिवाजों की दृष्टि से वे देशी की अपेक्षा विदेशी विशेष लगते हैं!

स्पीती में प्रवेश करने से पूर्व, हमें जता दिया गया था कि, गाँव को आप लोग सूँघ पहले लेंगे, देखेंगे बाद में। बात यह है कि, स्पीतियन जीवन में केवल दो बार ही स्नान करते हैं— जन्म के समय और मृत्यु के बाद। इन दोनों के बीच के समय वे अपने-अपने शरीर और बालों में याक का मक्खन लपेटे रहते हैं। हिमालय के इस भाग में जैसी प्रखर शीतवाहिनी हवाएँ चलती हैं, वैसी शायद ही कहीं चलती हों। बेचारे पेड़-पौधे तो क्या, शिलाएँ तक अपने रंगों में विकृत हो जाती हैं। उधर गर्मियों में खुश्की भी कम नहीं होती।

स्पीती की एक भिक्षुणी

इन सबके अतिरिक्त यहाँ की सर्वाधिक मार्के की जो बात है, वह यहाँ की अर्थ-व्यवस्था और तदनुकूल यहाँ का अजीबो-गरीब समाज-तंत्र है। खेती-बाड़ी के लिए जमीन यहाँ बहुत कम है। कमाई के और दूसरे साधन-स्रोत भी यहाँ नहीं हैं। अतः यदि जनसंख्या बढ़ती जाये, तो सामूहिक भुखभरी का आक्रमण यहाँ सुनिश्चित है। यहाँ के किसी अति पुरातनकालीन समाजशास्त्री ने शायद इस दुर्दैव को पहले से ही अनुभव कर लिया था। अतः उसने यहाँ की भावी पीढ़ियों के लिए ऐसे समाजतंत्र की रचना की कि, आज तक जनसंख्या में कोई भयप्रद अभिवृद्धि नहीं हुई। और, उसके फलस्वरूप दुर्भिक्ष के दुःस्वप्न भी यहाँ चरितार्थ नहीं हुए।

यहाँ के नियमों के अनुसार परिवार का बड़ा पुत्र ही बाप की जायदाद का वारिस होता है। उससे छोटे भाई आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर भिक्षु हो जाते हैं और इस अंचल में बहुलता से फैले मठों में जाकर रहने लगते हैं। यहाँ की भाषा में इन मठों को 'गोम्पा' कहते हैं। पुरुषों की भाँति, अतिरिक्त नारियाँ भी भिक्षुणियाँ हो जाती हैं और अलग बने आश्रम में रहती हैं; क्योंकि यहाँ सामाजिक रीति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिवाजों के अनुसार एक पुरुष के एक ही पत्नी हो सकती है।

बाप की जायदाद का मालिक बड़ा भाई यदि मर जाता है, तो उससे छोटा भाई मठ के भिक्षु-जीवन को त्याग कर उसकी सम्पत्ति का वारिस और उसकी विधवा पत्नी का पति बनता है। इस प्रकार जायदाद सम्बंधी झगड़े यहाँ कभी खड़े नहीं होते।

अधिकांश लामा और भिक्षु अपढ़ होते हैं। दिन में एक बार ये लोग प्रार्थना करते हैं—"ओम् मणिपद्मये हुँ" की ध्वनि से हिमालय के शिखर प्रतिध्वनित हो उठते हैं। किंतु इसके अलावा उनकी शेष प्रार्थनाएँ, वास्तव में, बड़ी रोचक होती हैं। एक लकड़ी या धातु की तख्ती पर 'ओम् मणिपद्मये हुँ' शब्द लिख लिये जाते हैं और एक रस्सी में बाँध कर उस तख्ती को आसपास गोल घुमाया जाता है। जितनी आवृत्तियाँ तख्ती की होती हैं, उतने ही प्रार्थना-संदेश आराध्य तक पहुँचते हैं। एक जगह आसन पर बैठ, ध्यान लगाने की कोई आवश्यकता नहीं। धनी लामाओं के पास तो पनचक्कियाँ भी होती हैं और उनकी शक्ति का उपयोग इन तख्तियों के घुमाने के लिए होता है। दूसरा तरीका और भी आसान है। एक कपड़े पर उपर्युक्त मंत्र लिख लिया जाता है और उस कपड़े को एक लम्बे बाँस में टाँग कर हवा में फहराने के लिए छोड़ देते हैं— बस, वह हवा में उड़ता रहता है और लामा का मंत्रजाप होता जाता है। अपने अनुयायियों के उद्धार के लिए भी लामा लोग प्रायः मंत्रजाप की ऐसी व्यवस्था करते हैं। बाँस पर कपड़ा टाँग कर चले जाओ, कपड़ा हवा में उड़ता रहेगा, मंत्र की आवृत्तियाँ होती रहेंगी और दाता की सात पीढ़ियाँ तरती रहेंगी!

स्पीती के निवासी बौद्धिकतः कितने सरल हैं, उपर्युक्त धर्माचरण की प्रणालियों से यह काफी स्पष्ट हो जाता है।

नवीन भारत के सामने यह चुनौती है। नवनिर्माण के विशाल कार्यक्रम में स्पीतियों को भी पूरा-पूरा अवलम्ब मिलना चाहिए। किसी जमाने में यह भूमि इमारती लकड़ी के लिए प्रख्यात थी; किंतु आज तो स्वयं यहाँ के निवासी भी अपने निवासों के लिए पचास-पचास मील दूर से लकड़ियाँ लाते हैं। यदि यहाँ फिर से जंगल लगवाये जायें, तो अगले दस वर्षों में ही, सरकारी वन्य-विभाग के सर्वेक्षकों के अनुसार, यहाँ के निवासियों को जीविकोपार्जन का एक नया एवं अतिसमृद्ध साधन मिल सकता है। खनिज-शास्त्रियों के अनुसार चाँदी, लोहा, जिप्सम और सीसे की खानों के लिए भी यहाँ बड़ी उर्वर सम्भावनाएँ हैं।

मगर इन सबके बावजूद स्पीती का अपना भौगोलिक एवं सैनिक महत्व है। चीन और भारत के मिलन-द्वार पर स्थित यह इलाका आर्थिकतः एवं बौद्धिकतः विकसित होकर भारतीय संस्कृति का प्रकाशस्तम्भ होगा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

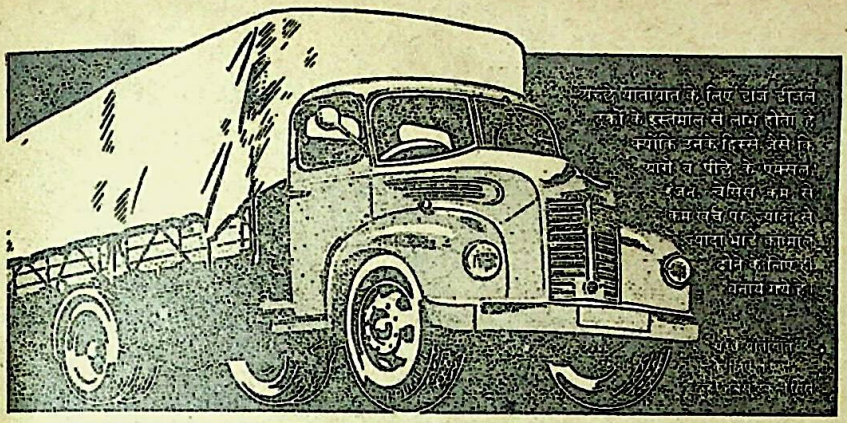

डीजल

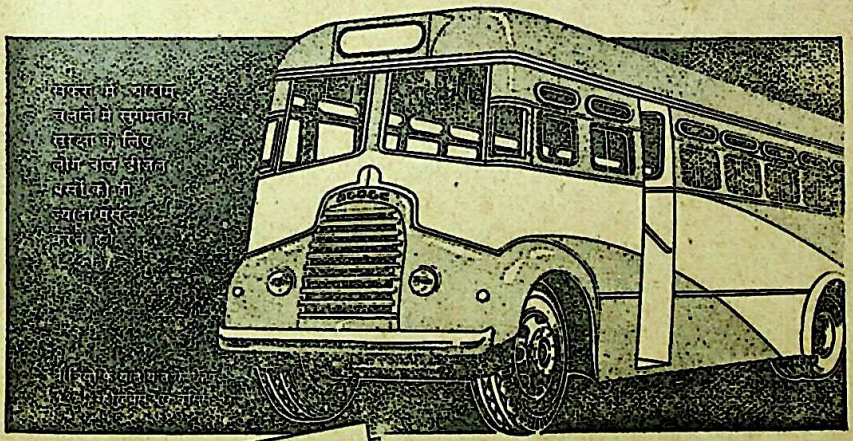

प्रगतिशील निर्माणकर्ता

दि प्रीमियर ऑटोमोबाइल्स लि.

बम्बई

अपने निकटतम् विक्रेता से सम्पर्क स्थापित कीजिए ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हँसे उसका घर बसे

हास्यरस के दो नामी कलाकार जोनीवाकर और आगा

मशहूर हास्य-लेखक
अदी मर्जबांन की
कामेडी में पहलीबार
हाजिर होते हैं
सुपर पिक्चर्स का
धूम मचानेवाला चित्र

निर्माता-दिग्दर्शक :
अस्पी

•

संगीत :
एस० महिन्दर

शुक्रवार ३० से शुरू

इम्पीरियल तथा बम्बई के और अन्य छबीघरों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नई चोली?

नहीं– लक्स में धुली है!

आप की रेशमी, सूती या नाज़ुक साटिन की सुन्दर चोलियाँ संभाल से धुलने के योग्य हैं। इन्हें सदा लक्स फ़्लेक्स से धोइये।
लक्स का मुलायम झाग सारा मैल बड़ी कोमलता से निकालता है।
अपने नाज़ुक कपड़ों की देखभाल कीजिये—घर में सदा लक्स रखिये।

LUX
for gentle washing of lovely clothes

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

LX. 141-50-55 HL

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM-6

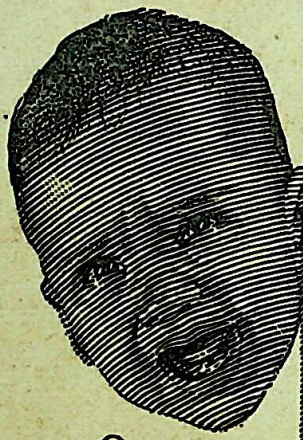

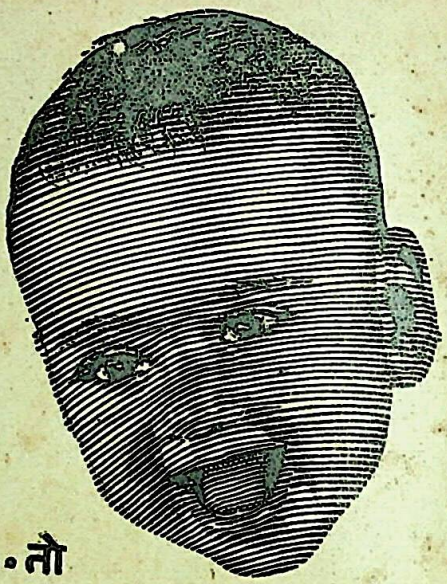

जब सब उपाय
निष्फल हो जायें...

...तो
मॅनर्स ग्राइप
मिक्श्चर दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके
चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगानें के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. ९७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण हैं।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंग्रेज और कुत्ता

जर्मनी में कुत्ता फुरसत का साथी, स्विट्जरलैंड में कुत्ता घर का प्रहरी, फ्रांस में कुत्ता लीला-लास्य का आलम्बन, हालैंड में कुत्ता परिवार का प्रिय सदस्य; किंतु इंग्लैंड में कुत्ता जीवन की उन सारी अतृप्तियों की तृप्ति है, जो व्यापक जीवन में वहाँ के निवासी के हिस्से में आती हैं। प्रस्तुत प्रबंध में प्रो० हमीद अहमद खाँ ने हास्य-रंजन के माध्यम से इंग्लैंड के पारिवारिक जीवन में व्यक्ति और कुत्ते के इसी सम्बंध को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है।

*

कुत्तों के साथ मेरे जाती ताल्लुकात कभी खुशगवार नहीं रहे। बचपन में जब मैं स्कूल जाया करता था, तो सड़क पर ख्वाहमख्वाह उनसे मुठभेड़ हो जाया करती थी। मेरे अहिंसावादी होने के बावजूद, वे मुझसे बुरी तरह पेश आते। और, जब उनकी हरकतों से तंग आकर मैं अपनी जेबें कंकड़-पत्थर से भरने लगा, तो वे मुझे देखते ही अपनी नजरें घृणा से फेर लेते, मानो सोचते हों कि, यह आदमी अब मुँह लगाने के काबिल नहीं रहा। कहने का मतलब यह कि, कुत्तों के बारे में मेरे खयालात अच्छे नहीं थे; मगर इंगलिस्तान जाने के बाद अपने नजरिये में बुनियादी तबदीली करना मेरे लिए जरूरी हो गया।

मैं चीज्स लेन में एक किराये के मकान में रहता था। मेरे सामनेवाले मकान 'मास्टर्स लाज' में चीज्स कालेज के प्रिंसिपल रहते थे। मेरे पड़ोसी करीब-करीब सभी अंग्रेज थे। मेजवान मिस्टर होल्ट जवानी में क्रिकेट का शौक रखते थे। उनकी जवानी के दिन वे दिन थे, जब रणजीतसिंह (रंजी) की तूती बोल रही थी। मकान के जीने चढ़ते हुए मुझे हर मोड़ पर क्रिकेट के किसी मशहूर खिलाड़ी की तसवीर नजर आती थी और जब मैं ऊपर पहुँच कर अपने कमरे में दाखिल होता, तो सबसे पहले मेरी नजर सामने की दीवार पर टँगी दो तसवीरों पर पड़ती। ये तसवीरें थीं, दो कुत्तों के रंगीन 'बस्ट' की।

अपने कमरे में इन तसवीरों की मौजूदगी पहले-पहल मुझे कुछ अजीब मालूम हुई; लेकिन बाद में मुझे पता चला कि, कुत्ता चौपाया होने के बावजूद अंग्रेजी सोसाइटी का एक मेम्बर है और उसे अपनी तसवीर घर की दीवार पर देखने का उतना ही हक है, जितना घर के किसी दूसरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी या दोपाया हजरत को !

कहने का मतलब यह कि, मिस्टर होल्ट के यहाँ की कुत्तों की इन दो तसवीरों ने बहुत जल्द मेरे दिल में जगह बना ली। मुझे यह कहने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं है कि, कुत्ते से कुत्ते की तसवीर बेहतर है। इसकी वजह साफ़ है। कुत्ते की तसवीर बोलवाइये, तो भी नहीं बोलती और कुत्ते को न बोलवाइये, तब भी बोलता है। कुत्ते की तसवीर से अफलातूनी (प्लेटोनिक) मुहब्बत की जा सकती है; लेकिन कुत्ते के जबड़ों को देखते ही हम पर एक खौफ हावी हो जाता है।

मुझे यहाँ आये अभी दो ही महीने गुजरे थे और कुत्ते की तसवीर से दोस्ती का एहसास अभी ताजा ही था कि, खुद कुत्ता एक ठोस हकीकत बन कर मेरी जिंदगी में दाखिल हुआ। एक दिन मैं मिस्टर हेनरी मार्टिन (जो १९२०ई०में मेरे अपने कालेज के प्रिंसिपल रह चुके थे) से मिलने सेंट एलबंस गया। मार्टिन साहब की उम्र उस वक्त ८२ वर्ष के क़रीब होगी और वह अपनी इकलौती बेटी और दामाद के साथ बड़ी खामोशी से रहते थे। उनके दामाद मिस्टर लेजली माइलैंड हवाई जहाज के कारखाने में इंजीनियर थे। मिस्टर और मिसेज माइलैंड के घर में छोटे-छोटे कुत्तों और बिल्लियों की एक खासी तादाद आराम से जिंदगी बसर कर रही थी। इन दोनों के कोई बच्चा न था; लेकिन नन्हे-मुन्ने कुत्तों और बिल्लियों की कसरत से घर में बेरौनकी का एहसास न होता था। घर में एक बड़ा कुत्ता भी जरूर मौजूद था; क्योंकि शाम को जब दोनों मियाँ-बीवी मुझे लेकर वेरुलम के तारीखी अजायबखाने को देखने निकले, तो एक खुशकिस्मत कुत्ते की डोरी मिसेज माइलैंड के हाथ में थी।

जब हम अजायबखाने पहुँचे, तो मालूम हुआ कि, चार बज चुके हैं और अजायबखाना बंद हो चुका है। हमारे बार-बार इलतिजा करने पर भी दरबान ने दरवाजा नहीं खोला। आखिर, मिसेज़ माइलैंड ने जब यह बताया कि, एक आदमी दुनिया के दूसरे सिरे से अजायबखाना देखने आया है, तो वह दरवाजा खोलने के लिए रजामंद हो गया; लेकिन फिर एक मुश्किल सामने आ गयी। दरबान ने बताया कि, कुत्ते को अंदर जाने की इजाजत नहीं है। मैं तो मायूस हो गया; लेकिन मिसेज माइलैंड बोलीं—"आप मेरे शौहर के साथ अंदर जाइये।" और, वे खुद कुत्ते की डोरी पकड़ कर बाहर एक बेंच पर बैठ गयीं। कुत्ता अगर निरा जानवर है (जैसा कि हम समझते हैं), तो उसे रस्सी से बाहर बाँध देना और खुद अंदर चले जाना क्या कठिन था; लेकिन यह काम अंग्रेजों की जिंदगी के बुनियादी उसूलों के खिलाफ था। कुत्ते को तनहा छोड़ जाना उनकी नजरों में उसकी तौहीन करना है। दूसरे लफ्जों में, अंग्रेजी कुत्ता महज रोटी-कपड़े पर घरवालों का गुलाम नहीं होता। उनकी इंसानियत से उसे वही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताल्लुक है, जो घर के बेजबान बच्चों का।

कुत्ते और इंसान के रिश्ते का यह फलसफा मेरे सामने एक माह बाद और भी साफ हो गया, जब मैं दुबारा सेंट एलवंस आया और लगातार कुछ दिनों तक माइलैंड घराने का मेहमान रहा। इस बार मैं क्रिसमस के दिनों में उनका मेहमान बना। जब मैं उनके मकान पर पहुँचा, तो दीवार पर मैंने एक लाड़ले कुत्ते का फोटो चौखट में सजा हुआ देखा। दूसरी ओर कुत्ते की एक पेंटिंग भी थी। यह पेंटिंग मिसेज माइलैंड की कला का नमूना थी। इस मुआइने के बाद मैं सोफे पर बैठने के लिए मुड़ा, तो क्या देखता हू कि, वहाँ एक मखमली पोस्तीनवाला पिल्ला बड़े मजे से सो रहा है। मैंने उसकी नींद में दखल देना मुनासिब न समझा और इसलिए आतिशदान के पास एक मसनद पर जा बैठा। इतने में लेजली माइलैंड (जो अब तक बावरचीखाने में अपनी बीवी का हाथ बँटा रहे थे) मेहमाननवाजी के लिए ऊपर आये। उन्होंने आते ही पिल्ले को उठा कर अपने साथ भींच लिया। यहाँ तक भी खैरियत थी, लेकिन जब उन्होंने कुत्ते को सीने से लगाये-लगाये उसका मुँह चूम लिया, तो मैं दिल-ही-दिल पुकार उठा—"या अल्लाह! यह मैं क्या देख रहा हूँ!" इसके बाद भी जब कभी लेजली माइलैंड आग के सामने बैठ कर मुझसे अपना दुःख-सुख कहते, तो उस वक्त कोई-न-कोई कुत्ता उनकी गोद में जरूर होता। वह उसको थपकते, उसे गले लगाते, उसका मुँह चूमते और साथ ही पूरी संजीदगी से मेरी और अपनी जाती जिंदगियों पर बहस भी करते जाते। कुत्ते और इंसान का यह प्यार महज एकतरफा नहीं था। दोनों तरफ से सच्ची मुहब्बत का इजहार होता था। दोनों गले मिलते, मुँह चूमते और नाक-से-नाक रगड़ते। मिसेज माइलैंड भी अपने कुत्तों के साथ इसी

नन्हे भाई से बिछुड़ने के बाद से एनी अपने प्यारे कुत्ते एंजिल के साथ ही खेलती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहब्बत से पेश आती थीं। क्रिसमस की शाम को हम सब आग के गिर्द बैठे बातें कर रहे थे। इसी दौरान में मिठाई का एक डिब्बा खोला गया। पहले मिसेज माइलैंड ने एक टुकड़ा निकाला और चखा। इसी वक्त पास बैठी हुई एक कुतिया ने बड़ी तमन्ना से मिठाई की तरफ देखा। मिसेज माइलैंड ने फौरन मिठाई का एक टुकड़ा उसके मुँह में दिया और अँगुलियाँ खुद चाट लीं।

यहाँ मुझे यह भी मालूम हुआ कि, माइलैंड-घराने में जो इतनी बिल्लियाँ और कुत्ते हैं, वे उनकी अपनी मिलकियत नहीं हैं। अच्छे खानदानों के अंग्रेज जब सैर वगैरह के लिए मुल्क से बाहर जाते हैं, तो अपने पालतू कुत्तों-बिल्लियों के लिए कोई शरीफ घराना तलाश करते हैं। माइलैंड-घराने के लगभग सभी जानवर इसी तरह आये थे। लेकिन उन लोगों का इखलाक और ईमानदारी यहाँ तक थी कि, चार दिन वहाँ ठहरने के बावजूद मुझे यह पता नहीं चल सका कि, कौन-सा कुत्ता उनका अपना है और कौन-सा बेगाना! अंग्रेजी दयानतदारी का यह कमाल देख कर मेरे दिल से यह दुआ निकलती थी कि, अल्लाह! हम अहले-पाकिस्तान को भी तोफीक दे कि, जो शराफत और दयानत अहले-इंगलिस्तान अपने कुत्तों से दिखाते हैं, हम और से नहीं, तो कम-से-कम इंसानों से वैसा ही इंसाफ का सलूक करें।

कुत्तों से यह सलूक इंगलिस्तान के कुछ घरानों तक महदूद नहीं। कुत्ते और इंसान का यह भाईचारा इंगलिस्तान के कौमी मिजाज में घुलमिल गया है। क्रिसमस की एक सुबह को मिस्टर और मिसेज माइलैंड अपने अमीर रिश्तेदार मिस्टर और मिसेज प्यू से मिलने चले। उन्होंने मुझे भी अपने साथ ले लिया। वहाँ पहुँचते ही मैंने दो सजे-सजाये धोये-धाये रेशमी बालोंवाले कुत्ते देखे। वे कुत्ते मेहमान नहीं थे, घरवाले थे और उनका दर्जा वैसा ही था, जैसा हमारे घरों में बच्चों का होता है। मिसेज प्यू ने एक कुत्ते को लाड़ से उठा कर गोद में ले लिया और दोनों खातूनों में बातचीत चली—

मिसेज प्यू—"कैसी प्यारी बच्ची है?"

मिसेज माइलैंड—"गुड़िया है, गुड़िया!"

लेकिन अँग्रेजी कुत्ते का फलसफा बखूबी समझ चुकने पर भी, मेरी तबीयत कुत्ते के साथ दोस्ताना जिंदगी बसर करने पर आमादा न हो सकी थी। इसलिए जब मैं चीज्स लेन का मकान छोड़ कर ईस्ट फील्ड में मिसेज डीन के यहाँ आया, तो दिल में एक ही खयाल था कि, खुदा करे, इस घर में कुत्ता न हो। लेकिन जिस वक्त अंदर कदम रखते ही 'एल्शेशियन' नस्ल का एक जंगली कुत्ता सामने आया, तो पाँव-तले से जमीन खिसक गयी। बाद में पता चला कि, यह कुत्ता 'शैंडी' मर्द नहीं, औरत है! मेरे दिल में एक ऐसी कशमकश शुरू हो गयी, जिसका अंजाम मुझे खुद मालूम न था। अंग्रेज के घर रहना और कुत्ते से बैर रखना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्ल की बात नहीं थी। मिसेज डीन के घर के बाकी किरायेदार मेहमान 'शैंडी' की कई तरह से खुशामद करते और मैं सबके बीच नक्कू बना रहता। मैंने कुछ दिन यह बहाना किया कि, मैं कुत्तों से डरता हूँ; लेकिन कुत्तों के साथ यह बहाना कब तक चलता! यह कम्बख्त जानवर बड़ा मुहब्बतवाला है। थोड़े ही दिन गुजरे थे कि, 'शैंडी' ने मेरी बलाएँ लेनी शुरू कर दीं। आखिर मरता क्या न करता। मैंने कुत्ते की मुहब्बत का जवाब निहायत किफायतशारी से देने का फैसला किया। इसकी सूरत यह सोची कि, जबान से 'हैलो' कहो और दोनों हाथ जेबों में बंद रखो। खैर, इस तरह कुछ दिन निकल गये; लेकिन अब 'शैंडी' की मुहब्बत में बराबर इजाफा होने लगा और मेरे सामने एक बड़ी भारी मुश्किल खड़ी हो गयी कि, कुत्ते को छुऊँ या न छुऊँ; क्योंकि बचपन से ही यह सबक पढ़ाया गया था कि, इंसान कुत्ते को छुए, तो नापाक हो जाता है।

बड़ी उधेड़-बुन के बाद इस नतीजे पर पहुँचा कि, जब इंगलिस्तान आ पहुँचे, तो कुत्ते से क्या परहेज! और, दूसरे रोज जब मैं नाश्ते की मेज पर पहुँचा, तो 'शैंडी' ने मेरे गिर्द चक्कर लगाने शुरू कर दिये। लेकिन मैंने उसका हर बार खाली देकर जबानी जमा-खर्च का ही सहारा लिया। दर-असल अभी नाश्ते के लिए अपने हाथ महफूज रखना चाहता था। नाश्ता कर चुकने पर, मैंने 'शैंडी' को दो-चार थप-कियाँ दीं और इस तरह मिसेज डीन को खुश कर मैं सीधा गुसलखाने में पहुँचा और अपने हाथ तीन बार साबुन से धो डाले। इस तरह चोरी-चोरी गुसलखाने में हाथ धोने का प्रोग्राम जारी रख कर मैंने उस घर में अपनी शराफत का सिक्का जमाया।

'शैंडी' और डीन-घराने का रिश्ता सचमुच प्यार-भरा था। जब मिस्टर डीन आते, तो 'शैंडी' खुशी से बेताब होकर अपने अगले पाँव उनके कंधे पर या सीने पर रख देती और उस वक्त तक चैन न

पुस्तक में आयी रम्य-रोचक बात से कुत्ते को क्यों वंचित रखा जाये!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेती, जब तक उनकी जबान से दो-चार प्यार-भरे बोल न सुन लेती। मिस्टर डीन सुबह-सुबह काम पर रवाना होते, तो 'शैंडी' दौड़ कर सड़कवाली खिड़की की ओर जाती, और अपनी आँख शीशे से लगा कर मिस्टर डीन को उस वक्त तक देखती रहती, जब तक वे सड़क के मोड़ पर गायब न हो जाते। एक दिन की बात है, विंडसर के त्यौहार पर मिस्टर और मिसेज डीन मुझे और अपनी लड़की को लेकर लूजफाट की सैर के लिए गये। किराये की मोटर थी; अतः 'शैंडी' और 'पम' (उनकी लड़की की कुतिया) को घर पर ही छोड़ गये। जब हम लोग सैर से वापस आये, तो दोनों कुत्ते इस बात पर रूठे हुए थे कि, आखिर हमें घर यूँ छोड़ जाने के क्या माने हैं! दूसरे दिन मिसेज डीन ने मुझे बताया कि, कल रात कुत्तों को मनाने के लिए हमें रात के बारह बजे फिर मोटर पर सवार होना पड़ा और जब हमने 'शैंडी' और 'पम' को चीज्स ग्रीन का पूरा चक्कर लगवाया, तब कहीं उनकी नाराजगी दूर हुई।

कुत्तों के मुतल्लिक इस रख-रखाव का नतीजा यह हुआ है कि, अंग्रेजी कुत्त सभ्यता से दूर नहीं रहे हैं। मसलन इंगलिस्तान में मने भौंकते कुत्ते बहुत कम देख हैं। हाँ, प्रो० आरबरी का कुत्ता अपवाद है, जो मुझे देखते ही भौंकना शुरू कर देता था। लेकिन उसके मालिक आरबरी साहब इतने शरीफ आदमी थे कि, मुझ यकीन है कि, वे उस कुत्ते के गले में जंजीर डालने से पहले जरूर उससे माफी माँग लेते होंगे। एक बार मैं फिट्ज विलियम हाउस के पादरी रीड से मिलने गया। जब हम विदा होते समय बातें कर रहे थे, तब उनका कुत्ता भी पास ही था। कुत्ते ने सड़क पर एक साइकिल को जो भागते हुए देखा, तो उसके पीछे भौंकता हुआ दौड़ने लगा। मिस्टर रीड ने अपने कुत्ते को डाँट कर बुलाया और यह लेक्चर झाड़ दिया—"कैसी शर्म की बात है कि, तुम बाइसिकलों के पीछे भौंकते हुए दौड़ते हो। अब मेरे पास आओ और यह कहो कि, मुझे बहुत अफसोस है और मैं अपनी हरकतों पर बहुत शर्मिंदा हूँ।" कुत्ता अपने मालिक के सामने सिर झुकाये चुपचाप खड़ा रहा। इंगलिस्तान में, शहरी जिंदगी की मामूली; लेकिन जरूरी बातें भी कुत्तों को सिखायी जाती हैं। सड़क पार करना हमारे लिए कोई खास ध्यान देने के लायक बात नहीं है; लेकिन वहाँ के कुत्ते इन कायदों को अच्छी तरह जानते हैं। खुद मैंने सड़क पार करना इंगलिस्तान के कुत्तों से सीखा है।

मुझे यकीन है कि, अगर हालात का रुख वही रहा, जो पिछली तीन सदियों से रहा है, तो मुस्तकबिल (भविष्य) का इंगलिस्तानी अंग्रेजी की पहली किताब इन लफ्जों में शुरू करेगा—

"मम्मी कुत्ते को गोद में लिये बैठी हैं। पप्पा रेडियो सुन रहे हैं और कुत्ते को देख-देख कर खुश होते हैं।"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्महत्या
रोग या निर्वाण

कायरता + अकर्मण्यता × सामाजिक निर्ममता = आत्महत्या ! युंग ने इस सूत्र के द्वारा आत्महत्या की प्रवृत्तियों का स्पष्टीकरण किया है। व्यक्ति जब अपनी विफलता को पचा नहीं सकता और उससे ऊपर उठने का भी जब कोई प्रयत्न नहीं कर सकता, तो उसकी निराशा आस्था के सारे बंधनों को काट देती है। इस निरवलम्बता में वह अपने आसपास के जगत् से अवलम्ब या सहारे की कामना करता है और जब वह नहीं मिलता है, तो वह जीने और मरने में कोई फर्क नहीं देखता ! यही आत्महत्या की मनोभूमि है। प्रस्तुत लेख में कपिल ने वैज्ञानिक अनुसंधानों के आधार पर आत्म-हत्या के कारणों की चर्चा की है।

★

लगभग ३,१०,००० व्यक्ति प्रति वर्ष आत्महत्या करते हैं और अनगिनत लोग इसके लिए प्रयत्न करते हैं। केवल अमेरिका में ही आत्महत्या से मृत व्यक्तियों की संख्या प्रति वर्ष २०,००० हो जाती है। जापान तो इस क्षेत्र में बहुत ही आगे है। अन्य देशों में भी आत्महत्या की घटनाएँ कम या बेशी घटती ही हैं। इससे कोई भी देश अछूता नहीं है।

अभी तक आत्महत्या के कारणों की कोई क्रमबद्ध जाँच तो नहीं हुई है; पर इस क्षेत्र में अनुमान अवश्य लगाये गये हैं और मत-विभिन्नता के बीच भी एक तथ्य पर सर्वसम्मति की स्थिति परिलक्षित होती है। वह यह कि, जब तक व्यक्ति का विवेक नष्ट नहीं होता, वह आत्महत्या की ओर नहीं झुकता। इस बात की इंग्लैंड के कानून से भी पुष्टि होती है। वहाँ विकृत मस्तिष्क के व्यक्ति को आत्महत्या करने की छूट है; लेकिन यदि कोई स्थिर मस्तिष्क का व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो उसके इस कार्य को गुरुतर अपराध करार दिया जाता है और दंड-स्वरूप उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाती है।

१९-वीं शताब्दी तक आत्महत्याओं के अंक सुरक्षित रखने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था। बाद में, कुछ छात्रों ने समाज-सुधार की दृष्टि से इस ओर ध्यान देना आरम्भ किया। 'आत्महत्या-सम्बंधी जाँच का पिता' कहलानेवाला व्यक्ति फ्रांस-निवासी एमिली दुरखेइम था, जिसने सन् १८९७ ईसवी में अपनी पुस्तक "ल' सुसाइड" प्रकाशित की थी। उसने जल-वायु और समाज से बाहर के प्रभावों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को आत्महत्या के कारणों में नहीं गिना और कहा कि, किसी व्यक्ति का उसके आसपास के लोगों-द्वारा सहानुभूतिपूर्वक न अपनाया जाना ही आत्महत्या का मुख्य कारण होता है।

आत्महत्या-सम्बंधी मानस-गतिशास्त्र का कुछ ज्ञान सिगमन फ्रायड के सिद्धांतों में मिलता है। उसके मेधावी शिष्य कार्ल अब्राहम ने भी विषाद और अंतरात्मा के अध्ययन से इस सम्बंध में महत्वपूर्ण योग दिया है। मनोविश्लेषणीय सिद्धांतों के अनुसार कहा जा सकता है कि, जब किसी व्यक्ति की अंतरात्मा, उसके हृदय में उसके प्रिय व्यक्ति के प्रति उत्पन्न हुई घृणापूर्ण और हिंसक इच्छाओं का दमन कर देती है, तो उन इच्छाओं का रुख मुड़ जाता है और वह स्वयं को अप्रकट पापों, अपराधों और बुराइयों का उत्तरदायी समझने लगता है। अधिकांश आत्महत्याएँ भावनात्मक विषाद के क्षणों में ही होती हैं। साथ ही, यह भी कहा जा सकता है कि, आत्महत्या वह प्रेरक उत्तेजना है, जिसमें विषाद के समस्त तत्त्व एक ही लघु कार्य में सिमट जाते हैं।

"सद्भावना और सदाशयता के दीपस्तम्भ संसार में सर्वत्र प्रकाशमान् हैं, फिर भी मनुष्य इतनी हीनता में क्यों डूब जाता है?" इस निराशा में क्षुब्ध साने गुरुजी ने जीने को समीचीन नहीं समझा।

[चित्र : ओके-निर्मित रेखाचित्र]

आत्महत्या के कारणों का अध्ययन वस्तुतः बड़ा जटिल विषय है। हर शोकाकुल व्यक्ति आत्महत्या की ओर प्रेरित नहीं होता; यहाँ तक कि, इस सम्बंध में वह गम्भीरतापूर्वक सोचता भी नहीं। अतः आत्महत्या की प्रेरणा को समझने के लिए, महीनों या वर्षों तक एक मानसरोगी की भाँति उसका अध्ययन करना आवश्यक होता है। मानस-रोग-विशेषज्ञों का ज्ञान उन रोगियों के क्रिया-कलापों पर ही आधारित होता है, जो आत्महत्या की प्रवृत्ति प्रकट करते हैं, या जो आत्महत्या का कभी-कभी प्रयत्न करते हैं और उपचार-काल में ही आत्महत्या कर लेते हैं।

व्यक्तिगत परिस्थितियों और बाहरी दवाव के संसर्ग का परिणाम, आत्महत्या का रूप धारण करता है और यदि हम आत्महत्या को असह्य स्थिति से पलायन कहें, तो यह असह्य स्थिति स्नेह का ह्रास ही ठहरती है। स्वयं को दंड देने का कार्य भी स्नेह पाने के लिए ही होता है। उस समय प्रतीत होता है, जैसे आत्महत्या करनेवाला व्यक्ति कह रहा हो—"तुम्हारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्ज आरवेल

"हाय! मनुष्य का त्रास नहीं मिटेगा!" इस निराशा को वे आत्महत्या से ही पाट सके।

स्नेह के लिए मैं सब-कुछ कर सकता हूँ—यहाँ तक कि, मर भी सकता हूँ!"

बालक बिरले ही आत्महत्या करते हैं; लेकिन जब करते हैं, तो वयस्कों की अपेक्षा उनका उद्देश्य अधिक स्पष्ट होता है। एक तरुणी को अकस्मात् ही यह भय हुआ कि, वह रात में अपनी माँ की हत्या कर देगी। जब उसकी माँ ने उसके इस विचार पर अधिक ध्यान नहीं दिया, तो उसने आत्महत्या कर ली। एक दस-वर्षीय लड़के ने, जिसका पिता युद्ध-काल में स्वर्ग सिधार गया था, स्वयं ही फाँसी लगा ली; क्योंकि उसकी माँ जिस व्यक्ति से दुबारा विवाह करने जा रही थी, उससे वह घृणा करता था।

आत्महत्या के पीछे यह विचार भी काफी महत्वपूर्ण प्रतीत होता है कि, व्यक्ति अपने प्रिय से जा मिलता है। मृत्यु-द्वारा प्रिय से मिलने की इच्छा को, जैसा कि 'रोमियो और जूलियट' में व्यक्त है, यदि माँ-बाप में से किसी के मृत या गायब होने का प्रमाण मिल जाये, तो काफी बल मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि, जो लोग आत्महत्या करते हैं, उनके माँ-बाप में से कोई एक नहीं होता। ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं, जब कि लोगों ने त्याग दिये जाने की अपेक्षा स्वयं ही घर त्याग कर भाग जाना उचित समझा है।

आत्महत्या के मामले में भावना के अलावा सामाजिक परिस्थितियों का भी अध्ययन आवश्यक है। युद्धों, युद्धोत्तर पुनर्व्यवस्थाओं, आर्थिक गिरावटों, एवं धार्मिक और सामाजिक नियमों का भी अपना-अपना महत्व है। आँकड़ों से प्रकट होता है कि, देश और काल के अनुसार आत्महत्याओं की संख्या में घट-बढ़ होती है। खुशहाली में आत्महत्याएँ कम होती हैं और आर्थिक गिरावट के दिनों में अधिक!

आँकड़े यह भी बतलाते हैं कि, उम्र के अनुसार आत्महत्या की संख्या बढ़ती जाती है। पुरुषों में, ६० वर्ष की उम्र के पश्चात्, २० वर्ष की उम्र से पूर्व की तुलना में, आत्महत्या की संख्या चौगुनी हो जाती है। स्त्रियों और पुरुषों की आत्महत्या की घटनाओं का

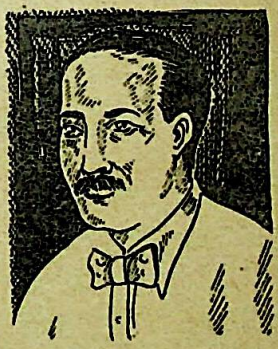

स्टेफेन ज्विग

"जीवन दुःखानुभूति है!" इस अवसाद ने उन्हें आत्म-हत्या के द्वार पर ला दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुपात तो १:३ या १:४ का ठहरता है; परंतु असफल प्रयत्नों की संख्या स्त्रियों में ही ज्यादा है। तलाक दिये व्यक्तियों में आत्महत्या की संख्या सबसे अधिक है और विवाहितों में सबसे कम। यह भी उल्लेखनीय है कि, बेरोजगारों की अपेक्षा रोजगार में लगे व्यक्ति, श्रमिकों की अपेक्षा बाबू वर्ग और निम्न श्रेणी के कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा अधिकारी-वर्ग अधिक आत्महत्या करते हैं। श्वेतांगों की अपेक्षा नीग्रो कम आत्महत्या करते हैं। गाँवों की अपेक्षा नगरों और कस्बों में आत्महत्या अधिक होती है।

आयरलैंड में आत्महत्याओं की संख्या आश्चर्यजनक रूप से कम है— केवल जनसंख्या के प्रति १,००,००० लोगों में प्रतिवर्ष लगभग ३। सम्भवतः इसलिए वहाँ आत्महत्या का कम प्रचलन है कि, वहाँ परिवारों की सामाजिक स्थिति अच्छी और लोगों में नेतागीरी की भावना बहुत कम है। आयरलैंड-निवासियों की देशभक्ति तो जगत्-विख्यात है। इसके परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि, उस समाज में, जहाँ नेतागीरी या व्यक्तिगत मानापमान की भूख नहीं है और जहाँ समाज को महत्व दिया जाता है, आत्महत्याओं की संख्या कम होती है।

लेकिन यह धारणा भी पूर्णतः युक्तियुक्त नहीं है; क्योंकि इसके अनुसार तो अमेरिका-जैसे देश में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों-द्वारा आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ जानी चाहिए। प्रतिष्ठा के लिए पुरुष ही तो अधिक लालायित रहते हैं! दूसरी ओर, चीन, जापान और भारत-जैसे देशों में, जहाँ स्त्रियों को अत्यल्प महत्व प्रदान किया जाता है, स्त्रियों में आत्महत्या की संख्या अधिक पायी जाती है। भारत में १९-वीं शताब्दी के प्रारम्भकाल में, सती-प्रथा बंद होने पर भी पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आत्महत्याएँ कहीं अधिक होती थीं।

मोटे तौर पर, आत्महत्या के कारणों में, प्रतिष्ठा पाने की अभिलाषा, अपराध का प्रायश्चित, दुबारा निष्कलंकित जीवन पाने की इच्छा, अपने प्रिय मृत या खोये व्यक्ति से मिलने की चाह, चिरनिद्रा का मोह, स्वर्ग-प्राप्ति की इच्छा, असह्य स्थिति से छुटकारा, आदि-जैसी अनेक बातें हो सकती हैं; पर एक बात दरअसल ध्यान देने की है और वह यह कि, आत्महत्या का वर्तमान कारण चाहे कुछ भी हो; उसकी जड़ें मनुष्य में बचपन में ही जम जाती हैं।

★

जल नहीं, बंधु, यह जलाभास जो बिखराता चलता हीरे!
उसकी चंचल चित प्रखर धार बहती जाती दिशि-दिशि चीरे!
पी पी कर रक्त प्राणियों का जो अपनी प्यास बुझाती है,
उस धारा से क्या पायेगा जो आएगा तृष्णा तीरे!

—नरेन्द्र शर्मा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका व्यक्तित्व कितना मोहक है

शरीर का रूप और सौंदर्य नहीं, मन के शील-संस्कार ही आपकी स्थायी सिद्धि हैं। व्यक्तित्व आत्मा की एक-एक पँखुड़ी के विकास का नाम है—फूल का यह सौरभ ही आदमी को अपने आसपास के वातावरण के सामने घोषित करता है। नीचे की पंक्तियों में इसका विस्तृत स्पष्टीकरण देखिये।

★

हर व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि, वह समाज का—लोक का—प्रेमभाजन बने, लोग उसे पसंद करें, उससे सम्बंध बनाने को उत्सुक रहें। जिस व्यक्ति को लोग पसंद करते हैं, उसकी सुख-सुविधा और रुचि का स्वभावतः ही वे बहुत ध्यान रखते हैं। जहाँ कहीं भी वह व्यक्ति जाता है, उसका लोग सम्मान करते हैं।

क्या आपके साथ भी ऐसा होता है? नीचे कुछ प्रश्न दिये गये हैं— यह जानने के लिए कि, लोग आपको पसंद करते हैं या नहीं। इन प्रश्नों को पढ़िये और फिर पूरी ईमानदारी से 'हाँ' अथवा 'ना' में जवाब दीजिये।

१. क्या आपके मिलने-जुलनेवालों में अधिकांश व्यक्ति आपको याद रखते हैं और मिलने पर नमस्कार करते हैं?

२. क्या अपरिचित व्यक्ति भी जरूरत पड़ने पर बिना किसी झिझक के आपसे बातचीत कर लेते हैं?

३. अगर आप किसी नयी जगह अथवा नयी नौकरी पर जाते हैं, तो वहाँ के अपरिचित-अजाने वातावरण को क्या आप शीघ्र ही अपने परिचित और जाने-पहचाने वातावरण की तरह बना लेते हैं?

४. सामाजिक त्यौहारों, जल्सों आदि में क्या आपको आमंत्रित किया जाता है?

५. सामाजिक संस्थाओं-द्वारा किसी खास पद के लिए क्या आपका नाम कभी प्रस्तावित किया जाता है?

६. क्या आपके मिलने-जुलनेवाले अपने परिवार के सम्बंध में भी आपसे बातें करते हैं— सलाह-मशविरा लेते हैं?

७. अगर आप अपने शहर से बाहर चले जाते हैं, तो क्या लोग आपसे पत्र-व्यवहार कर सम्बंध बनाये रखते हैं?

८. क्या प्रीतिभोजों अथवा इसी प्रकार के समारोहों में आपको निमंत्रण मिलता है?

९. क्या लोग आपको अपने घर का व्यक्ति समझते हैं और बिना किसी विशेष तैयारी के अपने घर खाने पर यदा-कदा बुलाते हैं?

१०. क्या आपके आमंत्रित करने पर लोग प्रसन्नतापूर्वक आपके घर आते हैं?

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

११. किसी संकटापन्न परिस्थिति में क्या लोग आप पर विश्वास रख, आपसे सलाह-मशविरा करते हैं?

१२. अगर किसी विषय पर आपकी राय भिन्न हो, तो भी क्या लोग आपसे पूर्ववत् मैत्री-सम्बंध बनाये रखते हैं?

१३. अगर आपसे कुछ समय तक मुलाकात न हो, तो क्या लोग दूसरों से आपके सम्बंध में पूछताछ करते हैं?

१४. अगर आप अस्वस्थ रहते हैं, तो क्या लोग आपसे मिलने आते हैं, अथवा पत्र लिख कर आपका समाचार पूछते हैं?

१५. अगर आप किसी विपत्ति में फँसे रहते हैं, तो क्या लोग आपकी सहायता के लिए पहुँचते हैं?

प्रत्येक 'हाँ' के लिए १० अंक प्राप्त कीजिये। जिस व्यक्ति को लोग वस्तुतः बहुत पसंद करते होंगे, उसे अवश्य ही पूरे अंक मिलेंगे; पर १०० अंक पाने का भी अर्थ है कि, लोग आपको पसंद करते हैं। ८० से १०० तक के अंक संतोषजनक हैं, ६० से ८० तक के अंक भी अच्छे ही कहे जा सकते हैं; किंतु अगर आपने ६० से भी कम अंक प्राप्त किये हैं, तो निश्चय ही, यह अच्छी बात नहीं। आप स्वयं को सँवारिये – अपने व्यक्तित्व को अधिक-से-अधिक प्रभावशाली और मोहक बनाइये– जीवन में सफल होने के लिए यह पहली और सर्वाधिक महत्वपूर्ण शर्त है। मोहक व्यक्तित्व के तीन स्रोत हैं, जो त्रिवेणी की भाँति किसी भी भूमि को यशस्विनी बना देते हैं। ये स्रोत हैं– क्षमा, सहिष्णुता और सेवा। क्षमा की सीमा को रोज दो कदम बढ़ाइये, हर स्थिति को सहिष्णुता की सुधा से सींचिये और सब धर्मों के धर्म– सेवाधर्म – का सर्वत्र पालन कीजिये!

*

मैं घर-घर भीख माँगने के लिए गाँव में गया हुआ था। तभी तेरा स्वर्ण-रथ मुझे दिखायी पड़ा और मुझे उम्मीद बँधी कि, मेरे बुरे दिनों का अब अंत होनेवाला है। तेरा रथ पास आकर रुका और मैं बिना माँगे, दान की प्रतीक्षा में, तेरे सामने जाकर खड़ा हो गया। तेरी दृष्टि मुझ पर पड़ी और तू मुस्कराता हुआ रथ से उतर आया। मैंने समझा, मेरा सौभाग्य मेरे पास आ गया; पर उल्टे तूने ही मेरे सामने हाथ पसार दिया। कैसा परिहास किया तूने भी– भिक्षुक से भिक्षा माँगी! मैं बड़ी उलझन में पड़ गया। दबे मन से मैंने अपनी झोली से एक अन्न का दाना निकाल कर तुझे दे दिया। वह दाना लेकर तू चला गया और मैं निराशा से भर उठा; पर सूर्यास्त के समय जब मैंने झोली खाली की, तो उसमें से सोने का एक दाना निकाला। मैं जार-जार रोने लगा – काश, मैंने तुझे सर्वस्व अर्पित कर दिया होता।

––रवीन्द्रनाथ ठाकुर

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ ऐसा हो कि जवानी ढले नहीं

प्रकृति की हर चीज, हर नियम अटल है; मगर मनुष्य की बुद्धि और साहस ने भी कब हार मानी है? वह प्रकृति को कभी जीतता है, कभी उससे संधि करता है और कभी उसे छलता है। हमेशा जवान बने रहने की उसकी मनोकांक्षा को लेकर भी ये ही दाँव-पेंच मनुष्य की तरफ से हुए हैं। डा० एस० के० कल्याणसुंदरम् ने यहाँ चिरयुवा बने रहने के मनुष्य के ऐसे ही कुछ प्रयत्नों का ब्यौरा दिया है।

*

उसका नाम था, क्रिश्चियन ड्रैकेनबर्ग! ख्यातिहीन होने पर भी ड्रैकेनवर्ग निश्चय ही मानव-जाति के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान का अधिकारी है। उसका जन्म डेनमार्क में १६२६ ईसवी में हुआ था और वह १७७२ ईसवी में, १४६ वर्ष की उम्र में, मरा। उसकी पूरी उम्र रोमांचक घटनाओं से पूर्ण है। स्वीडन के विरुद्ध वह तीन युद्धों में लड़ा और एक बार १५ वर्षों तक शत्रु-दल का बंदी रहा। ८५ वर्ष की उम्र में वह शत्रु के बंदी-गृह से भागा और पुनः युद्ध में सम्मिलित हुआ। १११ वर्ष की उम्र में उसने एक ६०-वर्षीया विधवा से विवाह किया; पर वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रही। अतः १३० वर्ष की उम्र में उसने पुनः विवाह करने की चेष्टा की। पर कोई नारी उससे विवाह करने को तैयार न हुई। इसके १६ वर्ष बाद उसकी मृत्यु हुई। सम्भवतः उसकी मृत्यु का कारण निराशा थी।

वैज्ञानिकों का कहना है कि, जितने काल में कोई प्राणी पूर्णतः वयस्क होता है, उसकी ६-गुनी उसकी आयु होनी चाहिए। अतः २५ वर्षों में वयस्क होनेवाले 'मानव' की स्वाभाविक आयु १५० वर्षों की होनी चाहिए। ड्रैकेनवर्ग इस सैद्धांतिक आयु के निकट तक पहुँचनेवाला सौभाग्यशाली पुरुष था।

मानव इस आदर्श आयु तक कैसे पहुँचे, इसके लिए आज के वैज्ञानिक प्रयत्नशील हैं और इस दिशा में उन्हें जो सफलता मिली है, वह भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह वस्तुतः विज्ञान का ही फल है कि, विगत ५० वर्षों में ६५ वर्षों से अधिक जीनेवालों की संख्या दूनी से अधिक हो गयी है।

मानव के आयुवर्द्धन के लिए आज चिकित्सा-जगत् इतना प्रयत्नशील है कि, मानव-आयु-सम्बंधी अध्ययन-अन्वेषण के लिए एक नये विभाग का ही उदय हो गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। इसका नाम है – 'जेरानटालाजी'। 'जेरानटालाजी' शब्द ग्रीक शब्द 'जेरान' से बना है, जिसका अर्थ होता है, बूढ़ा आदमी। इस शास्त्र के अंतर्गत इस प्रश्न का अध्ययन किया जाता है कि, व्यक्ति में बुढ़ापा क्यों आता है और मानव को उससे मुक्त कैसे रखा जा सकता है।

वृद्धावस्था पर नियंत्रण रखने की भावना बहुत ही पुरानी है। भारतीय पुराणों में इस तरह की कितनी ही कथाएँ मिलती हैं। इनमें च्यवन की कथा तो बहुतों को ज्ञात है। पर इसने विज्ञान का रूप अभी हाल ही धारण किया है। इस दिशा में शिकागो-विश्वविद्यालय के शरीर-विज्ञान के प्राध्यापक डा० कार्लसन का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जब उनकी उम्र ६५ वर्षों की हुई तो विश्वविद्यालय के विधान के अनुसार, उन्हें अवकाश ग्रहण करने के लिए बाध्य किया गया। कार्लसन को विश्वविद्यालय का यह आदेश अत्यंत मूर्खतापूर्ण लगा; क्योंकि उम्र ६५ वर्ष की हो जाने के बावजूद, उनमें बुढ़ापे का शैथिल्य न आया था। अतः उन्होंने विश्वविद्यालय से प्रार्थना की कि, मुझे उसी विभाग में रहने दिया जाये और वृद्धावस्था पर शोध-कार्य करने का अवसर दिया जाये। विश्वविद्यालय ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और १५ वर्ष से अधिक काल से वे तत्सम्बंधी अनुसंधान-कार्य में लगे हैं।

कार्लसन का वृद्धावस्था-सम्बंधी शोध-कार्य हवा में किले बनाना हो, ऐसी बात नहीं है। इस सम्बंध में पहले से काफी प्रयोग हो चुके हैं और यह बात सिद्ध हो चुकी है कि, 'प्राकृतिक रूप में मृत्यु' निश्चित बात नहीं है। डाक्टर अलेक्सिस कैरेल ने एक बार मुर्गी के भ्रूण को तरल पोषक पदार्थ में ३६ वर्षों तक जीवित रखा था और ३६ वर्षों के बाद उन्होंने अपना प्रयोग इस निष्कर्ष पर पहुँच कर बंद कर दिया था कि, वह भ्रूण सदा-सदा जीवित रखा जा सकता था। प्रकृति में ऐसी कितनी ही चीजें हैं, जो स्वाभाविक रूप में मृत्यु को प्राप्त नहीं होतीं – उदाहरण के लिए, अमेरिका का सिकोया वृक्ष! जब तक आँधी अथवा

प्रश्नोत्तर

दोपहर के सूरज को ढलता देख, घृणा से आकाश ने हँस कर कहा– "रे अकर्मण्य! यह रोज का उगना और रोज का चढ़ कर ढलना क्या तुझे बुरा नहीं लगता? इस उतार-चढ़ाव से मुक्ति का प्रयत्न क्यों नहीं करता?" सूरज भी उत्तर में हँसा, बोला–"भाई, अपने पर दया करो थोड़ी! कब से निश्चेष्ट पड़े हो – न मरते हो, न जीते हो! रोज-रोज मरनेवाला मैं रोज जवान भी तो होता हूँ।"

—महमूद तैमूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई रोग उसे विनष्ट न करे, तब तक वह जीवित ही रहेगा।

डा० कार्लसन का कथन ह कि, यद्यपि गणित से मानव की आयु १५० वर्ष आती है, तथापि चिकित्सा-विशेषज्ञों को मोटे तौर पर १०० वर्ष की आयु तो स्वीकार कर ही लेनी चाहिए।

मानव-जीवन के इस काल में उसकी विभिन्न शक्तियाँ भी एक क्रम से क्षीण होती हैं। सबसे पहला लक्षण आँख पर प्रकट होता है। आँख के 'लेंस' के लचीलेपन की कमी १०-वें वर्ष में ही प्रारम्भ हो जाती है और ६० वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते वह समाप्त हो जाती है। आँख की शक्ति के क्षय के दूसरे लक्षण हैं—दृष्टि के प्रसार में कमी, किसी चीज का साफ-साफ नजर न आना तथा हल्के प्रकाश में दिखलायी न पड़ना। ये लक्षण ४० वर्ष की उम्र में प्रारम्भ होते हैं। इसी प्रकार मानव की दूसरी शक्तियाँ भी कम होती हैं। स्वाद की तेजी ५० वर्ष की उम्र से घटने लगती है और घ्राण-शक्ति ६० वर्ष की उम्र से। श्रवण-शक्ति का क्षय तो २० वर्ष की उम्र से ही प्रारम्भ हो जाता है।

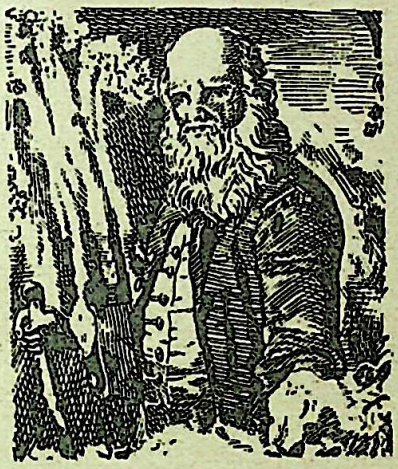

क्रिश्चियन ड्रैकेनबर्ग

जिसने १४६ वर्षों की आयु प्राप्त की थी।

[चित्र : एक सम-सामायिक चित्र का वी० एन० ओके-निर्मित रेखाचित्र]

२० वर्ष की उम्र से ही पेट के पाचक रस कम होने लगते हैं और ६० वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते उनका उत्पादन आधा हो जाता है। ३० वर्ष की उम्र में पेट में 'पेपसिन' और 'ट्रिपसिन' का उत्पादन बहुत ही घट जाता है। ये चीजें पाचन-शक्ति को ठीक रखने के लिए अत्यावश्यक हैं। वस्तुतः इन्हीं की कमी से हाजमे की तकलीफें उम्र के साथ बढ़ती हैं।

मानव - मस्तिष्क की ग्रहण-शक्ति २२ वर्ष की उम्र में सबसे अधिक होती है और उसके बाद वह घटती है; पर अत्यंत अल्प गति से। ४० वर्ष की उम्र के बाद घटने का क्रम कुछ बढ़ जाता है और ८० वर्ष की उम्र तक पहुँचने पर वह फिर उतनी रह जाती है, जितनी कि, १२ वर्ष की उम्र में।

पर मानव-शरीर का एक आवश्यक अंग और है, जो मानव को स्वस्थ और युवा बनाये रखने में बड़ा सहायक होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह है, उसका ग्रंथिभाग। वृद्धावस्था पर विजय पाने की कुंजी वस्तुतः इन ग्रंथियों के स्वास्थ्य में ही है।

डाक्टर अलेक्जेंडर बोगोमोलेट्स नामक एक रूसी वैज्ञानिक ने १९३० ई० के लगभग ए० सी० एस० नामक एक 'सीरम' का आविष्कार किया। यह 'सीरम' मानव की प्लीहा (स्प्लीन) से निकाला गया था। उनका कहना था कि, यह 'सीरम' मनुष्य में आये बुढ़ापे को रोक देने में समर्थ है। अपने इस आविष्कार पर ही उनको 'आर्डर आव लेनिन' से सम्मानित किया गया था। उनसे प्रभावित होकर स्टालिन भी उनके मुरीद बन गये थे।

इसी तरह का एक प्रयोग एक अन्य रूसी वैज्ञानिक डाक्टर सेरजे वोरोनाफ ने किया। उनका कहना था कि, मानव की यौन-सम्बंधी ग्रंथियों को बदल कर उसके स्थान पर यदि बंदर अथवा 'चिंपांजी' की ग्रंथि लगा दी जाये, तो वृद्ध मानव भी फिर से जवान हो जा सकता है। १९२६ ईसवी में जो 'इंटरनैशनल फीजियालाजिकल कॉंग्रेस' स्टाकहोम में हुई, उसमें उन्होंने तत्सम्बंधी अपना निबंध पढ़ा। उस सभा में कार्लसन भी उपस्थित थे और दोनों में इस सम्बंध में इतना वाद-विवाद बढ़ा कि, वोरोनाफ सभा छोड़ कर चले गये।

आज के चिकित्सा-जगत् में जो हार-मोन-चिकित्सा-प्रणाली प्रचलित है, वह भी वस्तुतः उम्र की ढलती को रोकने का ही एक साधन है।

उम्र के सम्बंध में आँकड़ा-विशेषज्ञों ने भी कुछ बहुत ही मनोरंजक निष्कर्ष निकाले हैं। आँकड़ा-विशेषज्ञ लुई डबलिन का कहना है कि, दीर्घ जीवन के लिए चिंतामुक्त शैशव और स्वच्छंद युवावस्था मानो नींव के पत्थर हैं। चिंतित बालक या संतप्त युवक कभी बड़ी उम्र नहीं प्राप्त कर सकता। जर्मन डाक्टर बोहर भी बीस वर्ष तक के जीवन के प्रफुल्ल निर्माण को दीर्घायु का आधार मानते हैं। स्वीडन के आयुर्विज्ञ का मत है कि, कफ-प्रधान भोजन से परहेज करनेवाले लोग अवश्य ही बड़ी उम्र पाते हैं। इसके विपरीत कैलिफोर्निया के खाद्य-विशेषज्ञ कार्बोहाइड्रेट-प्रधान भोजन को उम्र के लिए निरापद मानते हैं। वे प्रोटीन-प्रधान भोजन के विरोधी हैं।

इस प्रकार अभी निर्णयात्मक स्थिति काफी दूर मालूम पड़ती है। फिर भी, सैकड़ों प्रयोगशालाओं में प्रयोग चल रहे हैं और च्यवन ऋषि को नवयौवन देनेवाले अश्विनीकुमार भी इनमें से किसी में होंगे ही, ऐसा सोचा जा सकता है।

डाक्टर कार्लसन का कहना है कि, "बुढ़ापा रोकने के लिए सौ दवाओं की एक दवा, सुविधाजनक जीवन है। जिस काम से कष्ट का अनुभव होने लगे, उसे छोड़ देना चाहिए और उम्र के साथ-साथ अपने दैनिक कार्यक्रम में परिवर्तन करते रहना चाहिए। इसी सूत्र को पकड़ कर मैंने लम्बी उम्र पायी है और सैकड़ों बूढ़ों को उनके कष्टों से मुक्ति दिलायी है!"

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

For that Fascinating look

अन्य विशेषताएं:
साटन, क्रेप,
शानटूंग्स, प्लेन
तथा प्रिन्टेड,
बुश क्लाथ, साटन
और क्रेप फ्लावर
लाइनिंग क्लाथ,
टेपस्ट्री।

मोदी नाइलोन साड़ियां

- अधिकाधिक नवीन रंग तथा आकर्षक प्रिंट्स।
- सर्वोत्तम आयात किये गये माल से स्थायी चमकीले फिनिश में तुलनीय हैं।
- घर में आसानी से धोई जा सकती हैं तथा श्रिंक नहीं होती।

'मोदी रेयन एण्ड सिल्क मिल्स, मोदीनगर (यू० पी०)'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुलदान और लौंग

नीलामी पर जाने की मुझे कोई ऐसी आदत तो नहीं, लेकिन कभी कभी चला जाता हूँ। आप कहेंगे भई, घर में कौन सी चीज की कमी है जो आप ऊँट की तरह गरदन उठा कर नीलाम घर पहुँच जाते हैं? बात यह है कि मैं जब भी नीलामी से कोई चीज ले कर आता हूँ अपनी पत्नी की हंसी का शिकार बनता हूँ। फ़िर दिल में ठान लेता हूँ कि अब के लाखों की चीज कौड़ियों के दाम लाऊँगा और पत्नी के मुंह से कहलाऊँगा: "आप ख़ामख़्वाह दफ़्तर में क़लम घिसते रहते हैं—आप को तो कोई बड़ा कारोबार करना चाहिये।" पर सच मानिये कि आज तक हमारी पत्नी हमारी हुशयारी और अकलमंदी का सिक्का नहीं मानती—सच कहते हैं हीरे की क़द्र जौहरी ही जान सकता है।

अब के जब हम नीलाम घर पहुँचे तो नीलामी वाला एक गुलदान लिए उसकी तारीफ़ के पुल बांध रहा था—"यह गुलदान, यह पीतल का गुलदान, कभी नवाब वाजिद अली शाह के रनवास की रौनक़ था—आज भी साफ़ करने पर इस में वही चमक दमक पैदा हो सकती है। बोलिए, बोलिए साहिबान! सिरफ़ सौ रुपे मांगता हूँ—नहीं?—आप कहिये भाई साहब! आप—"मेरी तरफ़ इशारा करते हुए बोला—"कला के पुजारी मालूम होते हैं—आप ही बता सकते है इस के असली दाम क्या हैं?"—हमें जो मज़ाक़ सूझा, झट कह दिया—"पांच रुपये"—नीलामी वाला चीख़ उठा, "पांच रुपये हुज़ूर?? शुक्र कीजिये गुलदान के कान नहीं—नहीं तो अभी शरम से पानी पानी हो के मिट्टी में मुंह छुपा लेता"—हमारी तबीयत कुछ रंगीनी पर आई हुई थी—फ़ौरन जवाब दिया—"यही शुक्र कीजिये कि गुलदान न सुन सकता है न बोल सकता है—नहीं अब तक आप शरम से पानी पानी हो गए होते"—सब हंस पड़े और हम ख़ुशी से फूल गए। लेकिन जनाब दाने दाने पर मुहर है—किसी से सवा पांच रुपये बोली भी न दी गई और गुलदान हमारा हो गया।

रास्ते भर ज्यों ज्यों घर नज़दीक आ रहा था हमें अपनी श्रीमती जी का हंसी उड़ाता हुवा चहरा पास आते दिखाई दे रहा था—सख़्त परेशान थे—सोचा इसे कहीं फेंक दें—फिर दिल ने कहा—होश की दवा करो—मरद हो, चूड़ियाँ तो नहीं पहिन रखी हैं—पत्नी के पाँव की जूती तो नहीं हो—लेकिन घर पहुँचते ही हम फिर घबरा गए—सोचा कहीं छुपा कर रख दें—लेकिन गुलदान था निसवार की डिबिया तो नहीं थी—श्रीमती जी ने देख लिया और देखा भी ऐसी नज़र से जैसे हम कोई चोरी का माल छुपा रहे हों—फ़रमाने लगीं: "ए हे—कुछ हमें भी तो बताइये यह आज कोन सी सौग़ात हमारे लिए उठा कर लाए हैं?—" यह आज की भी ख़ूब रही जैसे हम हर रोज कोई ना कोई चीज कहीं से उठा कर लाते हैं—श्रीमती जी ने नज़रें गुलदान पर गाड़ दीं और हम तो जैसे ज़मीन में गड़े थे—बोलीं:

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पान न हम खाना खाएँ न आप — यह बूनमपान आप किस लिए उठा लाये हैं ?" जी में ही आया कि दीवार से टक्कर मार लें — लेकिन आप जानते ही हैं नुक़सान हमारा ही होता — मुंह तोड़ जवाब दिया : "जाट क्या जाने लौंग का भाव ?" —

इतना कहना था कि श्रीमती जी तो रूठ गईं — सीधे मुंह बात ही नहीं कर रहीं — हम मना रहे हैं, पुचकार रहे हैं लेकिन उनके कान पर जूं नहीं रेंगती — हम ने इतना भी कह दिया जाट हम हैं और वह भी खानदानी। और हमें गर्व है कि हम जाट हैं। जाट बहादुर, शूरवीर और सच्चा होता है — उस की मूँछ पर नीबू टिक सकता है —

हम स्त्री जाति के पुजारी जरूर हैं पर कभी कभी उन की बात पर हैरान हुए बग़ैर नहीं रह सकते। नीबू का नाम सुनते ही बोलीं : "घर में सब्ज़ी वग़ैरा नहीं है बाज़ार जा के पहिले ले आइये" — इतना कह कर एक परची हमारे हाथ में थमा दी और साथ में ज़रा मुस्करा भी दीं। उन की मुस्कराहट ! हाय — ग़ज़ब की मुस्कराहट है — अगर घर में परदा ना होता तो आप ख़ुद देख कर कह उठते, सच मुच जवाब नहीं।

बाज़ार पहुँचे — एक छोड़ बाक़ी सब चीजें ख़रीद लीं। कुछ फूल भी ले लिये गुलदान में रखने के लिये — जो चीज नहीं ख़रीदी 'डालडा' का बड़ा डिब्बा था! जहाँ तक हमारा ख़्याल है हमारे घर में 'डालडा' पहले कभी नहीं आया। या शायद आया हो क्यों कि यह काम नौकर का है कि बाज़ार जाए। आज कल नौकर छुट्टी पर है तो उस मुस्कराहट के सदक़े, हमें आना पड़ा। ख़ैर घर की ख़ुशी बनी रहे, इस लिए ख़रीद लिया — लेकिन घर पहुँच के हम शेर हो गए — "यह 'डालडा' क्या है जी ?" — वह बड़े भोले-पन से बोलीं : "सब से अच्छा और लोक प्रिय वनस्पति।" हम गरज उठे — "यह एक गंभीर बात है — हम नहीं चाहते कि हमारी तंदुरुस्ती ख़राब हो। लोग कहते हैं यह तंदुरुस्ती का दुशमन है" — लेकिन जवाब नहीं उस मुस्कराहट का। बड़े आराम से बोलीं : "आप जो इतने दिनों से 'डालडा' का बना खाना खा रहे हैं, कभी कोई तकलीफ़ हुई आप को ?" हम तो समझिये मारे शरम के झाग की तरह बैठ गए — और झिझकते हुए बोले : "मतलब है कि अब तक सब्ज़ी, तरकारी, पूरी, कचौरी, खिचड़ी पुलाव, पापड़, पकौड़े, दाल, रोटी, सब कुछ 'डालडा' से बना हुवा खाते रहे हैं ?"

"जी हाँ — और वह भी ज़बान चटख़ार कर और उँगुलियाँ चाट चाट कर"

हम ने सोचा अब बहस फ़िज़ूल है — तंदुरुस्ती के ख़राब होने का तो सवाल ही नहीं था हम तो पहिले से ताक़तवर हो रहे हैं। हम यह सब कुछ सोच ही रहे थे कि देखा — श्रीमती जी फूल सजा रही हैं, गुलदान चमक रहा है — श्रीमती जी अपने चहरे पर मेरी नज़रें महसूस करते हुए मुस्कराईं और बोलीं : "हम ने कहा जी, मालूम है लौंग का क्या भाव है ? — छः आने छटांक :"

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

DL. 335B-X29 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों के दर्द पर

'एनासिन'

बेहतर है

क्योंकि इसमें चार दवाइयाँ हैं

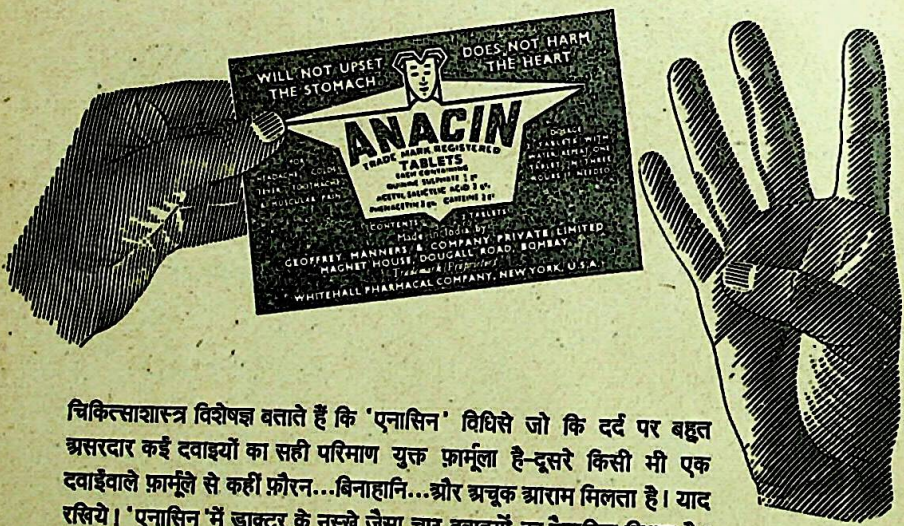

चिकित्साशास्त्र विशेषज्ञ बताते हैं कि 'एनासिन' विधिसे जो कि दर्द पर बहुत असरदार कई दवाइयों का सही परिमाण युक्त फ़ार्मूला है-दूसरे किसी भी एक दवाईवाले फ़ार्मूले से कहीं फ़ौरन...बिनाहानि...और अचूक आराम मिलता है। याद रखिये। 'एनासिन'में डाक्टर के नुस्खे जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक मिश्रण है। इसी लिए सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दान्तदर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फौरन पूर्ण आराम के लिए 'एनासिन' ही बेहतर है। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD. REGISTERED USER

K. 67 (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूंद-बूंद का ज्ञान

*

भूख क्यों लगती है

हमारा पेट एक खोखली नली के समान है। इसकी दीवारें सदा गतिशील रहती हैं, यानी आगे-पीछे होती रहती हैं। जब हम भोजन निगलते हैं, तो वह अंदर जाकर कुछ देर तक इन्हीं दीवारों की गतिशील माँस-पेशियों से टकराता रहता है। इसी क्रिया के फल-स्वरूप भोजन गलता और लुआब का रूप धारण करता है। जब पेट में भोजन रहता है, तब इस क्रिया को हम अनुभव नहीं करते; लेकिन जब पेट खाली हो जाता है, तब पेट के अंदर चल रही क्रिया स्पष्ट हो उठती है; क्योंकि माँस-पेशियों से संयुक्त नाड़ियाँ आघात पाकर मस्तिष्क को सूचना देती हैं और हम कष्ट का अनुभव करने लगते हैं। यह कष्टपूर्ण अनुभूति ही हमें तुरत कुछ खाने के लिए विवश करती है। यही भूख है।

*

पेड़ में पत्ते क्यों

पत्तों का मुख्य काम होता है, अपने ऊपर पड़नेवाले प्रकाश को ग्रहण करना। प्रकाश में शक्ति होती है। जब एक पत्ता प्रकाश ग्रहण करता है, तब प्राप्त शक्ति का एक बड़ा भाग वह अपने को उष्ण रखने और जल की थोड़ी मात्रा को वाष्प बना कर उड़ा देने में प्रयुक्त करता है। पत्तों की इस क्रिया से सम्पूर्ण पेड़ में रस-संचालन होता है। इसके बाद जो शक्ति बच जाती है, उसे पत्ते 'समीकरण' की क्रिया में प्रयुक्त करते हैं। हर पत्ते पर तश्तरी की तरह की छोटी-छोटी हरी आकृतियाँ होती हैं, जिन्हें 'क्लोरोप्लास्ट' कहते हैं। ये तश्तरियाँ— कुछ तो सजीव रहने के कारण और कुछ एक अद्भुत तत्त्व 'क्लोरोफिल' से सम्पन्न होने के कारण— उस 'कारबनिक एसिड गैस' को ग्रहण करने की असाधारण क्षमता रखती हैं, जिसे पत्ते हवा से प्राप्त करते हैं और जो पेड़ों की जड़ों से जलीय तत्त्वों में प्रवेश पाता है। इन दोनों को मिला कर तश्तरी-नुमा आकृतियाँ चीनी तैयार करती हैं, जिससे पेड़ को भोजन मिलता है। इस प्रकार, पत्ते पेड़ की जीवन-रक्षा में बहुत बड़े सहायक होते हैं।

*

रंग क्या है

रंग एक ऐसी अनुभूति है, जो आँखों पर प्रकाश पड़ने से पैदा होती है। प्रकाश का सम्बंध हमारी इंद्रियों से है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंग का हमारे मानस से। प्रकाश की तरंगें एक इंच के चालीस हजारवें से लेकर अस्सी हजारवें हिस्से तक की दीर्घता रखती हैं। एक लोलक शीशे से प्रकाश के गुजरने पर ये तरंगें पृथक्-पृथक् रूप में दिखायी भी पड़ती हैं; क्योंकि ऐसा होने पर एक सतरंगा वर्णपट सामने आ जाता है, जिसके एक छोर पर लाल रंग होता है और उसके बाद क्रमशः नारंगी, पीला, हरा, नीला, बैंगनी और सबूज रंग होते हैं। इन इंद्रधनुषी रंगों को ही मूल साधारण रंग माना जाता है; क्योंकि वर्णपट की प्रत्येक पट्टी एक निश्चित तरंगदैर्घ्य के प्रकाश को प्रकट करती है। लेकिन इन सातों में से भी तीन रंग ही सर्वथा मौलिक हैं। ये तीन रंग हैं – लाल, हरा और नीला। इन तीनों के मेल से कोई भी नया रंग पैदा किया जा सकता है– वर्णपट से बाहर के रंग भी। इस प्रकार, रंग प्रकाश के विभिन्न तरंगों के संयोग से उत्पन्न होते हैं। प्रकाश के अभाव में रंगों का कोई अस्तित्व नहीं होता।

★

आग क्या है

आग से हम एक ऐसी वस्तु की कल्पना करते हैं, जो बहुत गर्म हो और जिससे लपट निकलें। लपट जलने की क्रिया में 'गैस' है और जलन दो तत्त्वों का रासायनिक संयोग है। इन तत्त्वों में से एक 'आक्सीजन' है और दूसरा एक ऐसा तत्त्व है, जो 'आक्सीजन' से बहुत मेल खाता है। लकड़ी और कोयला इसीलिए अच्छी तरह जलते हैं कि, उनमें 'कारबन' और 'हाइड्रोजन' पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इन दो तत्त्वों का 'आक्सीजन' से बहुत शीघ्र मेल होता है। 'आक्सीजन' हवा का एक अंग है। इसीलिए जलने की क्रिया हवा के बिना सम्भव नहीं होती। हवा का दूसरा मुख्य अंग 'नाइट्रोजन' है; पर यह जलने की क्रिया में सहायक नहीं होता। कोयले का एक टुकड़ा जितनी अच्छी तरह विशुद्ध 'आक्सीजन' पाकर जलता है, उतनी अच्छी तरह खुली हवा में नहीं जलता। इसीलिए आग बुझाने के लिए जलन-प्रतिरोधी 'गैस' काम में लाये जाते हैं। जब जलानेवाले 'गैस' में ठोस कण होते हैं, तब लपटें सफेद और स्पष्ट रूप से निकलती हैं, जैसे कोयला। और, जब जलानेवाले 'गैस' में ठोस कण नहीं होते – जैसे 'हाइड्रोजन'– तो लपटें अदृश्य रहती हैं; पर दर-असल उनका ताप कोयले की सफेद लपटों की तुलना में कहीं अधिक होता है।

★

आप क्या हैं? आपके पितामह और प्रपितामह ने जो अन्न खाया, वही आप हैं। हिन्दुओं ने जो अन्न को सनातन, और अजर-अमर ब्रह्म माना है, उसे आज का विज्ञान सिद्ध कर देता है। वस्तुतः नस्ल खाद्य के सिवाय और कुछ नहीं है! —एलेक्सिस केरल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधेरे के क्षण में

कवि भवानीप्रसाद मिश्र की एक कविता

अभी तो शरीर में बल है,
यानी हाथों में
हर बात का हल है;
पाँवों में शक्ति है चलने की,
प्राणों में भक्ति है जलने की!

फिर यह उदासी क्यों?
आहों की यह वर-निकासी क्यों?
याने क्यों गाजे-बाजे से
गीत निराशा के!
लगभग मरसिये—
जीवित भाषा के, भावों के!
जीने के चावों के!

ना रे भाई भवानी,
पोंछ आँखों का पानी
कि संसार समझदार है,
उसे जीवन से प्यार है
मौत से नहीं;
वह रूठ न जाये कहीं
रोजमर्रा इस अटूट
दुःख के निवेदन से;
उसे तो प्रिय है उछाह;
खींच मत खाहमखाह आह,
क्योंकि एक तो वह गलत है,
दूसरे सच्ची भी उतनी नहीं
जितना तेरा खयाल है
बे-ईमानी कविता का काल है!

जब ठीक दुःख बरसे
वह दिन
ऐसे सहज नहीं आता।
तेरे जीवन में भी वह दिन नहीं आया है,
इसलिए इस थोड़े-बहुत
अंधेरे के क्षण में मैंने तुझे बुलाया है
कि चल, अभी तो तेरे शरीर में बल है,
हाथों में हल है,
पाँवों में शक्ति है चलने की,
प्राणों में भक्ति है जलने की,
स्नेह है, लौ है, सबको समेट;
अंधेरे को इस तरह भेंट,
जैसे वह तेरा बंधु है, सगा है,
तू जैसे इस अंधेरे क्षण के लिए ही
वर्षों से जगा है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुक्रबैंक

मेटरलिंक यद्यपि विज्ञानवेत्ता नहीं था; किंतु अपने एक गद्यांश में उसने एक भविष्यवाणी की थी। उसने लिखा था—"विज्ञान की कठपुतली बुद्धि की डोर पर चलती है और बुद्धि खाती है, चुकाती है, देती कुछ नहीं; जो देती भी है, वह निर्माण नहीं। आज बुद्धि की पूजा होती है; किंतु ऐसा भी दिन पास ही है, जब बुद्धि अपने पुजारी को चाट जायेगी।" आज अणुविज्ञान यही कर रहा है—अणु-विकिरण मानव के पुंसत्व को ही चाट रहा है। प्रस्तुत लेख में डा० रामेश्वर लोहानी ने मनुष्य की नस्ल के इस आसन्न विनाश को रोकने के उपायों को स्पष्ट किया है।

"बचाइये! शीघ्र बचाइये। मनुष्य की इस मिटती हुई नस्ल को आगे बढ़ कर बचाइये।"

पिछले सितम्बर में पैन-अमरीकी विज्ञान-परिषद् में भाषण करने से पूर्व डा० राफ लैप ने हर उपस्थित वैज्ञानिक के सामने इस चेतावनी का एक-एक कार्डबोर्ड रख दिया था। अपने भाषण के क्रम में डा० लैप ने कहा था—

"इस चेतावनी से कृपया चौंकिये मत! खतरा प्रत्यक्ष और निश्चित है। आणविक विकिरण (ऐटमिक रेडियेशन) से मनुष्य की नस्ल कई रोगों से घिर ही नहीं जायेगी, एक दिन नपुंसक भी हो जायेगी।... आराम से बैठ कर विचार करने का समय अब नहीं रहा। मेरा प्रस्ताव है कि, जल्द-से-जल्द राष्ट्रीय शुक्रबैंक की स्थापना की जाये। अगले दस साल बाद तो ऐसे बैंक की भी कोई उपयोगिता नहीं रहेगी; क्योंकि तब तक विकिरण का अंदरूनी प्रभाव मनुष्य के शुक्राणुओं को काफी रुग्ण कर देगा।" उपस्थित सभी वैज्ञानिक तथा कॉंग्रेस के सदस्यगण डा० लैप के इन शब्दों से आश्चर्यचकित रह गये; क्योंकि विकिरण-सम्बंधी डाक्टर लैप की नवीनतम पुस्तक "रेडिएशन: ह्वाट इट इज ऐंड हाऊ इट अफेक्ट्स यू" कुछ ही महीने पूर्व प्रकाशित हुई थी और उसमें इस प्रस्ताव का कोई उल्लेख नहीं था। जिस समय डाक्टर लैप भाषण कर रहे थे, 'सिनेट' के सदस्य और कुछ वैज्ञानिक आपस में गरमागरम कानाफूसी कर रहे थे। कुछ श्रोता इस घृणित प्रस्ताव को सुन कर तो क्रोध से लाल हो रहे थे और कुछ जानवरों की तरह आदमी के भी कृत्रिम गर्भाधान की इस कल्पना पर व्यंग्य में हँस रहे थे।

किंतु डा० लैप इस सारे हंगामे से निरु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्साहित होनेवाले जीव नहीं थे। अपने प्रस्ताव की नींव में उनके पास ठोस वैज्ञानिक प्रमाण थे। अपने पक्ष के समर्थन में उन्होंने कहा– "आपको ज्ञात ही होगा कि, हर जीवित कोष में बहुत-से 'क्रोमोसोम' होते हैं। हर 'क्रोमोसोम' में कई 'मोलेक्यूल' होते हैं, जिन्हें हम वैज्ञानिक 'जेनेस' कहते हैं। यही 'जेनेस' मूलतः हमारे बौद्धिक तथा कायिक स्वास्थ्य के आधार होते हैं। निरंतर बदलते रहना और अलग होते रहना 'जेनेस' की प्रकृति है। विकिरण (रेडियेशन) का सबसे घातक असर 'जेनेस' पर ही देखा गया है। वह 'जेनेस' के रासायनिक रूप में ही गड़बड़ी पैदा कर देता है। 'विकिरण' से प्रभावित होने के बाद ये 'जेनेस' अपनी शृंखला में नहीं रहते – इनकी गति में छंदोबद्धता नहीं रहती। वे अस्वाभाविक रूप में गतिभ्रष्ट हो जाते हैं। 'जेनेस' के इस अस्वाभाविक गतिभ्रम का प्रभाव, सम्भव है, हमारी संतान पर तत्काल न पड़े; लेकिन यह विकृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ती जायेगी और एक दिन सारे मानव-समाज को अभिशप्त कर देगी। पुत्र नहीं, तो पौत्र पर इसका असर स्पष्ट होगा और इस प्रकार विकृतियाँ निरंतर बहुगुणित होती जायेंगी। फलतः ऐसी संतान का मस्तिष्क पुष्ट नहीं होगा और शारीरिक विकृतियाँ भी उसमें काफी रहेंगी।

"कण से दानव तक पहुँचनेवाले इस खतरे को रोकने का एकमात्र उपाय आज यही है कि, हम राष्ट्रीय शुक्रबैंक की स्थापना करके, उसमें स्वस्थ शुक्र को संचित रखें। यह बैंक ठीक उसी तरह संचालित होगा, जैसे कि, आजकल रक्तबैंक संचालित होते हैं।"

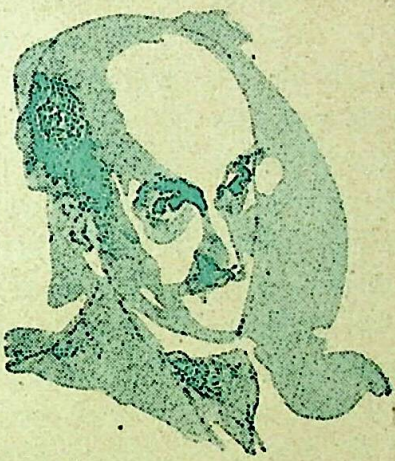

मेटरलिंक

"विज्ञान ऐसा कृपालु देवता है कि, वह मुँहमाँगा देता है; किंतु जिसको देता है, उससे सारी भोग-क्षमता ही ले लेता है!" जर्टूड को लिखे एक पत्र में मेटरलिंक

डाक्टर लैप-सरीखे चोटी के भौतिक विज्ञानवेत्ता का यह सुझाव वस्तुतः विकिरण से होनेवाली एक अति गम्भीर क्षति की ओर संकेत करता है।

अणुवेत्ताओं और स्वास्थ्य-विशेषज्ञों का यह समवेत मत है कि, "प्रत्येक आणविक विस्फोट– चाहे वह बम के परीक्षण में हो अथवा प्रत्यक्ष युद्ध में –वायुमंडल में रेडियो-सक्रियता बढ़ाता है। और, चाहे वह रेडियो-सक्रियता इतनी तीव्र न हो कि, हमारे चमड़े में प्रविष्ट हो जाये; लेकिन उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुरा प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता जरूर है... जो-कुछ भी हम खाते-पीते हैं, वह सब रेडियो-सक्रिय रहता है– यहाँ तक कि, गाय का ताजा दूध भी रेडियो-सक्रियता से मुक्त नहीं रहता; क्योंकि एक तो गाय स्वयं रेडियो-सक्रिय हो जाती है और दूसरे वह रेडियो-सक्रिय घास खाती है। इन सबका प्रभाव हमारी भावी पीढ़ी पर पड़ना निश्चित है।

"इस रेडियो-सक्रियता के प्रसार के कारण हम हैं; अतः उससे मानव-जाति की रक्षा के उपाय सोचने और ढूँढ़ निकालने का दायित्व भी हम पर है। इसलिए पुरुष-वर्ग के रेडियो-सक्रिय होने से पूर्व ही अपनी भावी पीढ़ी को उसके दोषों से विमुक्त रखने के लिए हमें शुक्रबैंक की स्थापना करके काफी स्वस्थ 'स्टाक' अवश्य ही संचित कर लेना चाहिए।"

रेडियो-सक्रिय पुरुष की संतान में विकृति होगी, इस सम्बन्ध में सभी वैज्ञानिक एकमत हैं। यद्यपि अभी तक रेडियो-सक्रिय व्यक्ति की दूसरी-तीसरी पीढ़ी देखने का अवसर वैज्ञानिकों को नहीं मिला, तथापि हिरोशिमा और नागासाकी से जो आँकड़े प्राप्त हुए हैं, वे किसी भी व्यक्ति को रोमांचित किये बिना नहीं रह सकते। प्राणिशास्त्री जैक शूबर्ट का कहना है कि, वहाँ के बच्चों में अंधापन तिगुना बढ़ गया है और रोग-निरोधिनी शक्ति नयी पीढ़ी में इतनी कम है कि, अकेला शीतज्वर (ब्रांकाइटिस) ही बीस प्रतिशत बच्चों की बलि ले लेता है। मगर इन दोनों से ज्यादा भयंकर जो व्याधि फैल रही है, वह है लैंगिक रोगों और ग्रंथियों के रस सूख जाने की, जिसके फलस्वरूप शारीरिक और मानसिक विकास एकदम शिथिल हो गया है।

स्पष्ट है कि, डा० लैप का यह प्रस्ताव युग के सबसे बड़े खतरे का क्रांतिकारी उपचार है– समाज और संस्कृति की प्रचलित मान्यताओं के लिए एकदम अजनबी सुझाव! मगर खतरा सच है और संसार की प्रमुख शक्तियाँ अणु-विस्फोट को बंद नहीं कर रही हैं। इसलिए डा० लैप का उपचार दूध में पड़ी मक्खी की तरह कचरे में फेंका भी नहीं जा सकता! यही कारण है कि, इसके स्वागत करनेवाले भी इतने ही प्रबल हैं, जितने इसका विरोध करनेवाले!

एक वर्ग में, विख्यात मनोविज्ञानवेत्ता डाक्टर नार्मन विंसेंट पील हैं, जो कहते हैं–"यह एक बहुत ही जटिल प्रश्न है। भावी पीढ़ी को विनाश से बचाने के लिए तो हमें डाक्टर लैप से सहमत होना पड़ता है; पर मुझे डर है कि, कृत्रिम गर्भाधान का प्रभाव हमारे परिवार के संघटन पर अच्छा नहीं पड़ेगा।"

दूसरे वर्ग में, सुप्रसिद्ध समाजवेत्ता फ्रैंकलिन फ्रेजियर हैं, जो कहते हैं कि, "मेरे विचार में कृत्रिम गर्भाधान से व्यक्ति के नैतिक अथवा सामाजिक रूप में कोई व्यवधान नहीं पड़नेवाला है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुमायूँ का शिकार

प्रतापनारायण टंडन का एक रोमांचक शिकार-अनुभव

कुमायूँ के घने जंगलों में जो लोग जाते हैं, वे केवल शिकार के उद्देश्य से। लेकिन मैं वहाँ अपनी पत्नी को लेकर उसके स्वास्थ्य-सुधार के लिए गया था। तीन-चार महीने पहले, जब मैं बरेली में था, तब डाक्टरों ने उसे टी० बी० बताया था। पहले मेरा विचार था कि, मैं भुवाली या उसके आस-पास की किसी जगह पर पत्नी को ले जाकर रखूँ; क्योंकि वहाँ का जलवायु टी० बी० के रोगी के लिए सबसे अच्छा होता है; मगर बाद में मैंने एक मित्र के आग्रह से कुमायूँ जाना ही अधिक पसंद किया।

मेरा मित्र एक वयोवृद्ध जमींदार की एकमात्र संतान है और शिकार में गहरा शौक रखता है। शायद इसीलिए उसने इस बियावान जंगल के ठीक बीच में यह बंगला बनवाया था। यों तो इस मौसम में वह खुद ही अपनी पार्टी-सहित यहाँ डटा रहता था; मगर इस बार अपने पिता की तबीयत खराब होने के कारण वह अभी तक बरेली में ही रुका हुआ था। उसने हँसते हुए कहा था कि, बंगला है तो जरा जंगल में घुस कर; मगर आबोहवा के लिहाज से जगह बड़ी मुफीद है।

मुझे शिकार का कभी शौक नहीं रहा है और न ही मैं कभी शिकारियों की किसी टोली में शामिल हुआ। परंतु इस बंगले में रहने के लिए मैं राजी हो गया। इसका एक कारण तो यह था कि, वहाँ चाहे जितने दिन रहना पड़ता, खर्च बहुत कम था और किराये का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

बस-स्टेशन छोड़ने के बाद पूरे दो दिनों तक पैदल सफर करने के बाद हम लोग इस बंगले तक आये। यहाँ आने पर बंगले की झाड़-पोंछ या सफाई करने की कोई जरूरत नहीं पड़ी; क्योंकि शिकारियों का दल अभी कुछ ही दिन पहले यहाँ लगभग एक सप्ताह तक रहने के बाद गया था। रास्ते में जो आखिरी गाँव हमें मिला था, वह इस बंगले से करीब छः या सात फर्लांग के फासले पर था। आते समय एक-डेढ़ फर्लांग से ही हमें बंगले की चहारदीवारी दिखायी पड़ने लगी थी। गहरे पीले रंग से पुती हुई इमारत। ऊँचाई ज्यादा नहीं थी।

यों तो हम लोग इस स्थान पर शाम के झुटपुटे में ही पहुँच गये थे; मगर पिछले गाँव में रहनेवालों के कहने से हमने रात गाँव में ही काटी।

शाम के वक्त जब हम गाँव में पहुँचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे, तो करीब साढ़े चार बज रहा था। गाँव में पूछने पर जब यह मालूम हुआ कि, यह बंगला सिर्फ कुछ फर्लांग के ही फासले पर है, तो एक बार तो मेरी यही तबीयत हुई कि, वहीं चल कर रुका जाय; क्योंकि इतना फासला अभी हम लोग बड़ी आसानी से तय कर सकते थे और इसमें आधा या पौन घंटा ही लगता; मगर गाँव के एक व्यक्ति ने हमें यह बताया कि, इधर कुछ समय से एक बाघ ने बहुत उत्पात मचा रखा है। वैसे तो यह सारा इलाका ही जंगली जानवरों से भरा हुआ है; पर उस बाघ के मुँह में आदमी का खून ऐसा लग गया है कि, वह अक्सर गाँव के भीतर तक घुस आता है और आदमियों को उठा ले जाकर खा जाता है।

अतः हम लोग रात-भर गाँव में ही रुके। सवेरे आठ बजे के करीब चाय पीकर हम लोगों ने वहाँ से कूच किया। जब हम लोग गाँव से चले थे, उस वक्त आसमान पर सूरज काफी चढ़ आया था। चमकीली धूप ऊँची-नीची पहाड़ियों पर बिछी हुई थी, जिससे पगडंडियाँ चमक रही थीं। गाँव छोड़ने के फौरन ही बाद घने पेड़ों के झुंड-के-झुंड हमें मिलने लगे थे। कहीं-कहीं तो वे इतने घने हो जाते थे कि, धूप छन ही नहीं पाती थी। वायु में इतनी शीतलता थी कि, हमारे हृदय स्फूर्ति से भर गये थे। हम लोग स्थिर गति से आगे बढ़ रहे थे। सबसे आगे हमारे कुली थे, जिन्होंने गाँव-वालों से बंगले का रास्ता पूछ कर समझ लिया था। उनके पीछे हमारा नौकर था और सबसे पीछे मैं अपनी पत्नी के साथ चल रहा था। कभी-कभी उसे सहारा भी दे देता था।

हम लोग करीब पाँच फर्लांग ही चले होंगे कि, एकाएक एक भयानक गर्जन से हमारे कलेजे दहल गये; हालाँकि आवाज काफी दूर से आयी लगती थी; मगर हम लोग जहाँ-के-तहाँ रुक गये। मेरे तो होश गुम हो गये। गाँव भी उस स्थान से काफी दूर था और बंगले का तो खैर कहीं पता ही नहीं था। कुलियों का अंदाज था कि, अब वह ज्यादा दूर नहीं था। हम लोगों में से किसी के पास कोई हथियार नहीं था और अगर होता भी, तब भी उस वक्त हममें से कोई उसका तत्काल उपयोग नहीं कर सकता था; क्योंकि हम सब बुरी तरह से डर गये थे।

मेरे इशारे से कुलियों ने बिना कोई शब्द किये हुये सारा सामान जमीन पर रख दिया। मेरी पत्नी हाँफने लगी थी। इसलिए वह एक पेड़ के तने का सहारा लेकर खड़ी हो गयी। शायद उसके मुँह से एक हल्की-सी चीख भी निकल गयी थी। पाँच या सात मिनट तक हम सब-के-सब जैसे साँस रोके खड़े रहे। जंगल के उस भीतरी भाग में स्तब्ध सन्नाटा छाया हुआ था। कोई आवाज नहीं। कोई शोर नहीं। केवल हवा की साँय-साँय और पत्तों की खड़खड़ाहट। हम लोग प्रत्येक पल पर यह आशंका कर रहे थे कि, धरती पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिछी हुई सूखी पत्तियों पर किसी भारी जानवर के पंजों के पड़ने की आवाज होगी!

मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि, क्या करना चाहिए। मैंने अपनी पत्नी को सहारा देकर बैठा दिया था और कान लगाये हुए खड़ा था। थोड़ी देर बाद, नौकर ने बहुत आहिस्ता से अपने जूते उतार कर अलग कर दिये और चुपचाप एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ने लगा। हम लोग कौतूहल से उसे देखते रहे। बहुत जल्दी ही पेड़ की पत्तियों में वह छिप गया।

थोड़ी देर बाद, नौकर उसी प्रकार निःशब्द नीचे उतर आया। नीचे आने पर उसने बताया कि, अब वह बंगला ज्यादा दूर नहीं है, मुश्किल से पचास गज के फासले पर बायीं तरफ को है। उसकी सलाह थी कि, हमें बिना रुके सीधे वहीं चलना चाहिए।

फिर से कुलियों ने सामान उठा लिया। हम लोग सधे हुए कदमों से आगे बढ़ने लगे। चूँकि नौकर पेड़ पर चढ़ कर बंगले का स्थान देख चुका था, इसलिए वह अब हम सबसे आगे था। उसके पीछे कुली और फिर पत्नी को सहारा दिये हुए मैं था।

अंत में, हमें बंगले की पीली पुती हुई चहारदीवारी दिखायी दी। हमने संतोष की साँस ली और जेब से ताली निकाल कर नौकर को दे दी।

बंगला मेरी आशा से अच्छा साबित हुआ। मैंने कुलियों को पैसे देकर विदा कर दिया। वे पैसे मिलते ही जल्दी-जल्दी वापस भागे। फिर मैंने नौकर से खाना बनाने के लिए प्रबंध करने को कहा और स्वयं सब सामान करीने से सजाने में लग गया। वहाँ फर-नीचर आदि काफी था, इसलिए हमें जरा भी परेशानी नहीं हुई। एक तरह से देखा जाये, तो हमें जरूरत की सारी सामग्री वहाँ आवश्यकता से अधिक मिली।

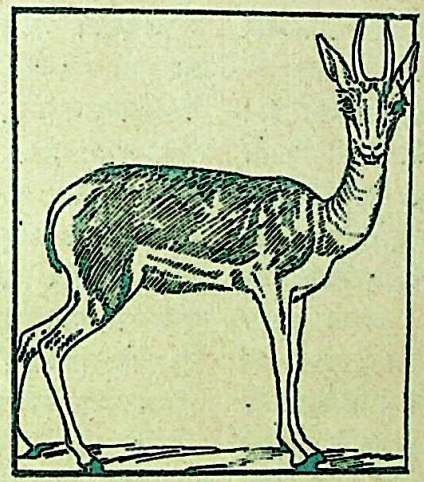

मृग

[चित्र : न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन म्यूजियम में संगृहीत एक चित्र की रेखानुकृति]

हमारे सारे दिन का कार्यक्रम निश्चित हो गया था। सवेरे सात बजे टहलने जाना, आकर चाय पीना, ग्यारह बजे स्नान करना, बारह-साढ़े बारह पर भोजन, दो घंटे धूप में टहलना, साढ़े चार बजे चाय पीना, कुछ देर फिर टहलना और साढ़े आठ बजे तक भोजन करके सो जाना। यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारा कार्यक्रम ऐसा था, कि इसके अनुसार चलने से मेरी पत्नी के लिए शारीरिक श्रम भी काफी हो जाता था और थक जाने पर वह जल्दी लौट आकर आराम भी कर सकती थी। इसीलिए मुझे जल्दी ही ऐसा लगने लगा कि, वह एक या दो महीनों में न केवल नीरोग हो जायेगी, वरन् पूर्ण रूप से स्वस्थ भी।

हमारा नौकर रोज ही दिन में दो बार सब्जी या दूध वगैरह लेने गाँव जाता था—एक बार सुबह और एक बार शाम को। वह प्रायः रोज ही गाँववालों से उस उत्पाती बाघ के बारे में कुछ-न-कुछ सुन कर आता था। वे बातें जब हमारे कानों तक पहुँचती थीं, तो हमें कुछ भय तो अवश्य लगता था; परंतु वहाँ के शांत वातावरण को देख कर हम उस पर विश्वास नहीं करना चाहते थे। अवश्य ही, सबसे पहली बार सुनी हुई बाघ की आवाज याद करके कभी-कभी हमारे शरीर में सिहरन-सी दौड़ जाती थी; मगर अब हमें ऐसा लगता था कि, वह आवाज भी हमारा भ्रम ही था।

हमें वहाँ रहते हुए सोलह दिन हो गये थे। उस दिन एकाएक मौसम खराब हो गया था और ठंडी हवा के साथ-साथ कुछ पानी भी बरसा था। उसी शाम को मेरे मित्र का भी यह संदेश आया था कि, अब उसके पिता की हालत ठीक है और वह दूसरे दिन अपने दो मित्रों के साथ यहाँ पहुँच जायेगा। मुझे यह जान कर खुशी ही हुई; क्योंकि इतने दिन रहने के बाद अब कभी-कभी यहाँ बहुत अकेला-सा लगता था। शाम को मैं अपनी पत्नी को लेकर थोड़ी देर तक घूमने के लिए निकलने-वाला था कि, फिर बादल घिर आये और रह-रह कर बिजली कड़कने लगी। फलतः हम लोग कहीं न जा सके। हमने जल्दी-जल्दी खाना खाया और मैं आलस्य के मारे हाल के भीतर सोफे पर लेटा-ही-लेटा सो गया। भोजन करने के बाद मेरी पत्नी बरामदे में ही लेटी लैम्प की रोशनी में, कोई पत्रिका उलटने लगी। उसने सोचा होगा कि, थोड़ी देर में वह भी भीतर आकर सो जायेगी। मैं भी बारिश की वजह से बरामदे में न सोकर भीतर ही सोने का विचार रखता था। नौकर भी खाना-पीना हो जाने पर, पीछे की तरफ जाकर सो गया।

कह नहीं सकता कि, उस वक्त क्या बजा होगा। मैं चौंक कर सोफे से उठ खड़ा हुआ। मेरे उठते ही हाथ में लैम्प लिये हुए नौकर भी लपकता हुआ आया। हम दोनों एक साथ ही बरामदे की तरफ लपके। मेरी पत्नी की खाट खाली पड़ी थी। पलंग से लगे हुए स्टूल पर पीले लैम्प की रोशनी एक हल्की बूंद-जैसी दिखायी दे रही थी। पलंग की सफेद चादर और पतले कम्बल में लिपटी हुई रेशमी रजाई आधी पलंग पर थी और आधी जमीन पर लटकी पड़ी थी, खिंची हुई-सी। छोटी तिपाई, जिस पर ढँका हुआ एक गिलास पानी रखा था, जमीन पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरी पड़ी थी।

इससे पहले कि, हम लोग परिस्थिति को स्पष्ट रूप से समझें, एक दूसरी चीख सुनायी पड़ी, जो चहारदीवारी के बाहर से आयी थी। मैंने आगे बढ़ कर झटके के साथ दरवाजा खोल दिया। काले बादलों के बीच से आधे चमकते चाँद की तिरछी रोशनी में मैंने जो दृश्य देखा, उसे देख कर मेरी आँखों में खून उतर आया– बहुत थोड़े फासले पर एक बड़ा बाघ दौड़ा जा रहा था। उसका मुँह खुला हुआ था। उसके लम्बे, नुकीले दाँतों में मेरी पत्नी असहाय-सी दबी हुई थी। उसकी साड़ी खुल कर झाड़ियों में फँस रही थी और उस पर खून के बड़े-बड़े धब्बे इतनी दूर से भी झलक रहे थे। स्तम्भित-सा मैं खड़ा देखता रह गया। मेरे नौकर ने जब यह दृश्य देखा, तो उसके हाथ से लैम्प छूट कर गिर पड़ा। पलक मारते ही वह भयानक बाघ हमारी दृष्टि से ओझल हो गया।

भावावेश में मैं पीछे लौटा और कमरे में से टार्च उठा कर बाहर की तरफ दौड़ा। मेरे नौकर ने पहले तो मुझे समझा कर रोकना चाहा; मगर बाद में वह भी मेरे पीछे दौड़ने लगा। हालाँकि उस समय मेरा यह काम निरी मूर्खता थी; मगर मैं अपने-आपको रोक न सका। आधी रात के वक्त उस जंगल में इस तरह से बिना हथियार के निकलना बड़ा खतरा मोल लेना था; पर मैंने परवाह न की। करीब एक फर्लांग दौड़ने के बाद मैंने अपनी पत्नी की साड़ी के कुछ हिस्से को एक टूटे पेड़ के खूँट-जैसे तने में फँसा पाया। मैंने सम्हाल कर उसे खूँट में से निकाला।

इसके बाद मुझे ठीक से होश ही नहीं रहा। मुझे इस बात की बहुत फीकी याद है कि, उस रात को कैसे मेरा नौकर मुझे कंधे पर लाद कर वापस लाया और मुझे सोफे पर बैठाया। जहाँ तक सोने का सवाल था, मैं पूरी रात को एक पल के लिए भी न सो सका। वास्तव में, उस समय मैं किसी अदृष्ट-द्वारा चालित होकर एक कठोर निश्चय कर रहा था। मैंने निश्चय किया था कि, मैं अपनी पत्नी का प्रतिशोध अवश्य लूँगा– लेकर रहूँगा!

मुझे याद है कि, सवेरे मुँह-अंधेरे ही मेरा मित्र अपने दो साथियों के साथ आ गया था। नौकर ने उठ कर दरवाजा खोला और वे भीतर आये। मुझे उदास बैठा देख कर उसने

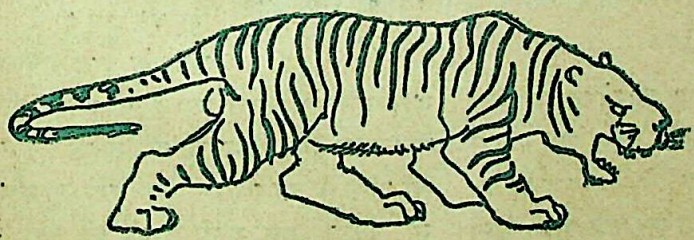

भूखा शेर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण पूछा तथा मेरी पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में जिज्ञासा प्रकट की। सब-कुछ सुन कर वह कुछ देर के लिए खुद गहरी चिंता में डूब गया।

काफी दिन चढ़ आने पर मैं अपनी जगह से उठा। मैंने अपने मित्र से राइफल माँगी और अपना विचार उसे बताया। उसने मुझे बहुत समझाया कि, जंगल में बाघ की तलाश करने से अच्छा यह होगा कि, एक-दो रातों में उसका इंतजार किया जाये और तब उसे मारा जाय; मगर मैं न माना और राइफल लेकर अकेला ही उस तरफ चल दिया, जिधर मैंने रात के वक्त साड़ी का टुकड़ा फँसा हुआ पाया था। थोड़ी ही देर में मैं उस बियावान जंगल के भीतर करीब दो मील घुस गया। एक तरफ निगाह डालने पर मुझे कुछ शक-सा हुआ। मैं उसी तरफ बढ़ा। मेरा विचार सही निकला! ढेर-सा खून जमीन पर जमा था और साड़ी का कुछ बाकी भाग भी वहीं पड़ा हुआ था। शायद बाघ ने अपने शिकार को कुछ देर वहाँ रखा था और साड़ी को निकाल कर अलग किया था; क्योंकि वह बराबर फँसती हुई आयी होगी। खून का ढेर और धब्बे देखता हुआ मैं और आगे बढ़ा।

मेरा आगे का मार्ग बहुत आसान था। कल दिन-भर थोड़ी-बहुत बूँदा-बाँदी होती रही थी, इसी वजह से भूमि नम थी। पंजों के निशान जमीन पर साफ दिखायी देते थे। मुझे करीब पौन मील और चलना पड़ा। फिर अचानक मैं चौकन्ना होकर रुक गया। मेरे सामने दस गज के फासले पर पेड़ों के झुंड के बीच बना हुआ रास्ता कुछ मुड़-सा गया था और जमीन पर कुछ काला-काला-सा, तारकोल-जैसा पड़ा हुआ था। मुझे विश्वास हो गया कि, वह खून ही है। मैं उसी के पास पहुँचा। वहाँ पानी के गिरने का काफी शोर था। मैंने देखा कि, पिछवाड़े की तरफ लगभग सौ फीट के फासले पर एक बड़ा जलाशय था, जिसमें एक मोटी पानी की धार के रूप में कोई सोता गिर रहा था।

खून के ढेर के पास आने पर मैंने देखा

वैचित्र्य

उस वक्त हम लोग मलाया में शिकार के लिए गये थे। रात को मचान पर सोये; मगर सवेरे एक साथी का पता नहीं मिला। ढूँढ़ने पर उसे एक नाले के किनारे पड़ा पाया। उसकी जाँघ में ही चोट आयी थी; मगर डर से वह बेहोश था। होश आने पर उसने बताया कि, शेर ने उसे खाने की बिल्कुल कोशिश नहीं की। इसके विपरीत वह उसे रात-भर चाटता रहा। बाद में, हमको पता चला कि, मलाया के जंगलों में यहाँ के निवासियों-द्वारा पाले गये शेर काफी संख्या में हैं। —जोरावरसिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि, वह अब जम कर काला पड़ चुका था। उसके पास ही एक मानव-शरीर पड़ा था; जो अधिकांश खाया जा चुका था। वह शरीर मेरी पत्नी का ही था। उसके लम्बे-चिकने बाल खून और धूल में सन कर जमे हुए गुंठल-से बन गये थे। मेरे प्रतिशोध की आग अब और भी भड़क उठी.. पर अब मुझे अधिक समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। थोड़ा और फासला तय करने के बाद, मैं एक खोह-जैसे ढँके हुए रास्ते के पास आया और मुड़ते ही मेरी निगाह उस बाघ पर पड़ी, जो आहट पाकर चौकन्ना खड़ा हो गया था। मैंने पूरी ताकत से रायफल को पकड़ लिया और निशाना साधा। मेरी सामने मेरी पत्नी का भक्षक खड़ा था!

मैं उससे प्रतिशोध न ले पाता, यदि मैं उसके हिलते ही दो गोलियाँ न चला देता। उनमें से एक उसके सिर में और दूसरी छाती में लगी थी। वह शायद मुड़ कर भागना चाहता था कि, मैंने गोलियाँ चला दी थीं। जंगल में आवाजें गूँजने के साथ ही वह जमीन पर गिर पड़ा। मैं उसके पास जाकर उसे गौर से देखना चाहता था; मगर मैं फौरन लौटा और शव के पास पहुँच कर आँसू बहाने लगा।

कुछ ही देर में मेरे मित्र और उसके दो साथी आ गये। बाघ को मरा देख कर वह उतावली से मेरी तरफ बढ़ा; मगर मुझे रोते देख, दूर ही खड़ा हो गया। वहीं जंगल में मैंने पत्नी का दाह-संस्कार किया।

और, दूसरे दिन अपने मित्र के बहुत रोकने पर भी, मैं अपने नौकर के साथ जब वापस आ रहा था, तो अपार पीड़ा के बावजूद मेरा हृदय संतुष्ट था; कम-से-कम मैं बाघ से प्रतिशोध ले सका था!

✱

विकासवाद का प्रवर्त्तक चार्ल्स डार्विन जब मरने लगा, तो उसके मित्रों ने प्रथानुसार पादरी को बुलवाया और उससे निवेदन किया कि, उसकी आत्मा की शांति के लिए वह भगवान् से प्रार्थना करे। मगर पादरी ने कहा कि, मेरी प्रार्थना व्यर्थ जायेगी; क्योंकि 'नास्तिक' डार्विन की आत्मा भगवान् तक नहीं पहुँच पायेगी। डार्विन के ही संस्कारों में पली उसकी लड़की भी वहाँ खड़ी थी। काफी गम्भीर बनते हुए उसने पादरी से कहा—"फादर, आपको तो पूरा विश्वास है कि, मेरे पिता नरक में जायेंगे और वहाँ भी उन्हें द्वारपाल की जगह कयामत तक खड़े रहना पड़ेगा। अब मान लीजिये, भगवान् ने कहीं आपको स्वर्ग के बजाय नरक में भेज दिया, तो मेरे पिता से ही सबसे पहले आपका काम पड़ेगा। अगर उन्होंने आपको नरक में भी नहीं घुसने दिया, तो सचमुच आपकी बड़ी दुर्गति हो जायेगी!"

सुन कर, डार्विन से मरण-काल में भी नहीं रहा गया। वह बोला—"नहीं, मार्था, मैं नरक में भी इन पाखंडियों को नहीं घुसने दूँगा!" — 'ऐटलांटिक' से

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़वे-मीठे जीवन-घूँट

★

दो रूप

दो जवान एक मोटर में कुतुबमीनार देखने गये थे। वापसी पर शाम के धुँधलके में उन्होंने एक युवती को देखा, जो बस-स्टाप के करीब किसी सवारी की प्रतीक्षा में खड़ी थी। उसने हाथ उठाया, युवक रुक गये। उसने पूछा—"आप लोग किधर को जा रहे हैं? कनाट सरकस से गुजरेंगे क्या?" युवकों ने देखा, स्त्री शरीफ लगती है। कपड़े वगैरह की टीपटाप से वह सभ्य और सुसंस्कृत लगी। निश्चिंत होकर युवक बोले—"जी हाँ। क्यों, आपको वहाँ जाना है क्या? हम बखुशी आपको वहाँ छोड़ सकते हैं!"

चुनाँचे उन्होंने उस बहन को पीछे बैठा लिया और कनाट सरकस में उसकी सूचना के मुताबिक एक जगह रुक गये। रास्तों पर काफी भीड़ थी और पुलिसवाला कुछ दूर तक न था। आगे का दरवाजा खोल कर स्त्री मोटर से उतरी और उन युवकों को उसने अपना कुरता बताया, जो उसने स्वयं ही फाड़ लिया था; बोली—"सौ रुपये दे दो, वरना चीख कर पुलिसवाले से कह दूँगी कि, तुमने मुझ पर बलात् किया है। उसका सबूत है, मेरा यह फटा कुरता।" भोले-भाले युवक बेचारे घबरा गये। जेबें टटोल कर जो हाथ आया, उसे दे दिया और जान छुड़ा कर वहाँ से भागे।

× × ×

मेरे एक बड़े सत्संगी मित्र की पालक बेटी है। डेढ़ साल तक काफी अच्छा दाम्पत्य सुख भोग कर अब छः-सात साल से बेहद दुःखी है। उसका पति कुछ बहक-सा गया है—शादी के बाद जल्द ही वह शराब, जुआ और दुष्टाचार के जहन्नम में विचरने लगा। मार-पीट, गाली-गलौज और अंतिम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपमान—अपनी पत्नी के चरित्र पर आक्षेप—भी करने लगा। मीरा ने तप शुरू कर दिया और पति से बोली—"मेरी अग्नि-परीक्षा ले लो। मेरा दिल साफ है। अग्निदेवता मुझे जला नहीं सकते। मेरा आग्रह है कि, मेरी अग्नि-परीक्षा ले लो!" पति सहम कर खामोश रह गया। तब मीरा ने कहा—"क्या फाँसी की सजा से डरते हो? कोई बात नहीं। मैं पत्र लिख कर देती हूँ कि, यह काम मेरे ही आग्रह से हुआ है। तुम बेगुनाह हो।" पति में हिम्मत कहाँ कि, इस चुनौती को झेले। उसने न तो परीक्षा ली और न आक्षेप त्यागे। अब बीवी को मायके बिठा दिया है। मीरा के घर के सब लोग उसे तलाक देने की सलाह दे रहे हैं। पर अस्थि-पंजर तपस्विनी मीरा का एक ही जवाब है—"कैसा भी हो, मेरा पति मेरा देवता है। इसके हाथ से मरने में मैं अपना कल्याण मानूँगी। आज इसकी बुद्धि भ्रष्ट है। दुनिया में कोई इसका हाथ पकड़नेवाला नहीं है। इसके माँ-बाप, भाई-बहन, मित्र, सभी इससे मुँह मोड़ रहे हैं। अगर मैंने भी छोड़ दिया, तो इसका क्या होगा?" —रेहाना तैयबजी, बम्बई

*

सौजन्य

मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ—जानता क्या हूँ, वे मेरे अभिन्न मित्र हैं। आजकल यहीं दिल्ली में ऊँचे पद पर तैनात हैं। काफी वर्ष पहले की बात है, उनके छोटे भाई का विवाह था। बारात बड़े स्टेशन पर जा चुकी थी और वे काफी कीमती गहने, रुपये, कपड़े, आदि लेकर छोटे स्टेशन से ही गाड़ी पर बैठनेवाले थे।

गाड़ी आने में कुछ देर थी। अतः वे स्टेशन पर टहल रहे थे। इसी बीच उनके एक मित्र उन्हें मिले। नमस्कार-प्रणाम के बाद वे बोले—"चलिये, लाइन-पार खुली जगह में टहला जाये।" और, दोनों लाइन के पार निकल गये।

टहलते-टहलते मित्र महोदय ने पान की मनुहार की। पान का शौक दोनों को था। मगर वे पान खाते ही बेहोश हो गये। जब होश आया, तो उन्होंने देखा कि, उनके पास के गहने और रुपये, सब गायब हैं।

क्या करते, वापस घर लौट आये और सबको पूरी कथा कह सुनायी। पर यह न बताया कि, वह परिचित व्यक्ति था कौन! इस घटना को आज कई वर्ष बीत गये हैं; किंतु आज तक मित्रों के प्रति उनके आचार-व्यवहार से भी कोई उस व्यक्ति को भाँप नहीं सका है! —गुरुदयाल, दिल्ली

*

अनुशासनहीन

उस दिन पटने में भीड़ का ठिकाना नहीं था। सौ-सौ मील से लोग नेहरूजी के दर्शनार्थ आये थे। मैं भी इसीलिए पटने गया था; पर उस भीड़ की कल्पना मैंने नहीं की थी। इतनी भीड़ में मैं अपने प्रिय नेता को पास से भला कैसे देखता!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर जगह, कुछ सौ फुट की दूरी से उनका भाषण सुना और दर्शन के नाम पर उनकी आकृति-भर ही देख सका। दूसरे दिन, सवेरे-सवेरे अखबार में पढ़ा कि, नेहरूजी सवेरे ८॥ बजे की गाड़ी से दिल्ली जा रहे हैं। तुरत ही मैं ६ मील आगे के स्टेशन, दानापुर, पहुँच गया।

वहाँ गाड़ी आयी, तो कुछ और लोगों को भी मैंने अपनी ही तरह नेहरूजी की खोज में व्यस्त पाया। अंत में, हमने उन्हें ढूँढ़ लिया। गाड़ी के करीब-करीब आखिर में एक प्रथम श्रेणी के 'रिजर्व' डिब्बे में वे थे। 'नेहरूजी गाड़ी में हैं' इस समाचार के फैलते ही क्षण-भर में एक-डेढ़ सौ लोग वहाँ इकट्ठे हो गये और जय-जयकार करने लगे। मैं सबसे आगे, दरवाजे के दोनों हैंडिल पकड़े, प्लैटफार्म पर खड़ा नेहरूजी के बाहर आने की राह देखने लगा। लोगों की भीड़ देख, नेहरूजी दरवाजे पर आये और उन्होंने हाथ जोड़ लिये। उनके सामने आने पर भी मैं अपनी पहले की मुद्रा में ही खड़ा उन्हें देखता रहा।

अकस्मात् नेहरूजी ने मेरे दोनों कंधों को पकड़ कर झकझोर दिया—"यह क्या तमीज है! इतने सारे लोग मेरे सामने खड़े हैं और तुम इस तरह मुझे घेर कर खड़े हो कि, मैं उन्हें देख भी नहीं सकता!" फटकार सुन कर मेरा चेहरा फक्! लज्जित-सा सिर झुकाये वहाँ से लौटने लगा। मुझे नेहरूजी पर बड़ा क्रोध आ रहा था! पर अभी मैं दो-चार कदम ही बढ़ा था कि, नेहरूजी की आवाज सुनी—"जरा सुनना!" मैंने घूम कर उन्हें देखा, तो वे सस्नेह बोले—"माफ करना, भाई, मैंने तुम्हें बुरा-भला कह दिया! 'डिसिप्लिन' मुझे इतना प्रिय है कि, उसके चलते मैं खुद ही कभी-कभी 'इनडिसिप्लिड' बन जाता हूँ! मेरी बातों का बुरा न मानना!..." सुनते ही, मेरा सारा आक्रोश गल गया और आँखें भर आयीं! मेरी भूल मेरी आँखों के सामने साकार हो उठी। मेरा हृदय बार-बार मुझे धिक्कारने लगा—"तुम कितने असभ्य हो कि, अपनी गलती के लिए पश्चात्ताप करने के बजाय उल्टे दम्भ का आश्रय लेते हो!"

—अश्विनीकुमार, गया

*

वसीयत

गये महीने की बात है। यूनान का एक जमींदार ६५ वर्ष की उम्र में मर गया। उसके तीन बेटे थे। जमींदार के मरते ही, वसीयत के बँटवारे को लेकर तीनों में लड़ाई शुरू हो गयी। तीनों असंतुष्ट थे; अतः बाप को कोसने लगे। इसी बीच संयोग ऐसा हुआ कि, जमींदार फिर जी उठा। पितृभक्ति का यह रूप देख कर उसे बड़ा क्रोध आया और उसने तुरत वकील को बुलवा कर अपनी सारी जायदाद अपने कुत्ते, बिल्ली और तोते के नाम लिख दी।

—'मिरर' से

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीका की सबसे कठिन रेस

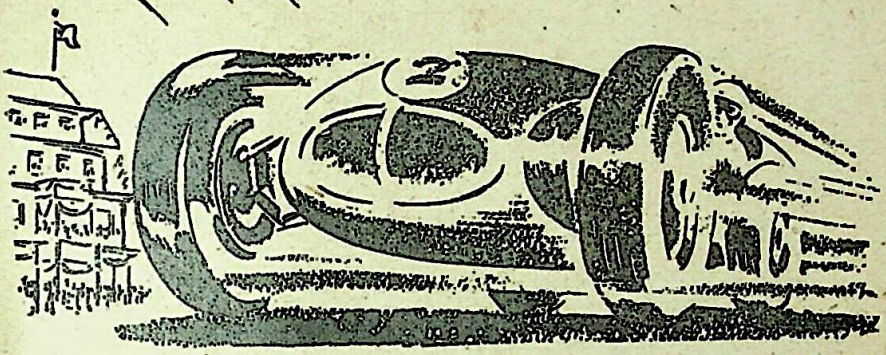

सुरक्षित मोटरचालन के टायर का प्रमाण

लगातार ३४ वर्षों से, प्रसिद्ध इण्डियानापॉलिस "५००" रेस फायरस्टोन टायरों के जरिए जीती जा रही ह। इन फायरस्टोन टायरों में रेस जीतने की अंदरूनी मजबूती जिस कार्यकुशलता व किस्म संबंधी नियंत्रण से बनी है वे ही आपके 'फैमिली कार' टायरों को बेजोड सुरक्षावाले बनाते हैं।

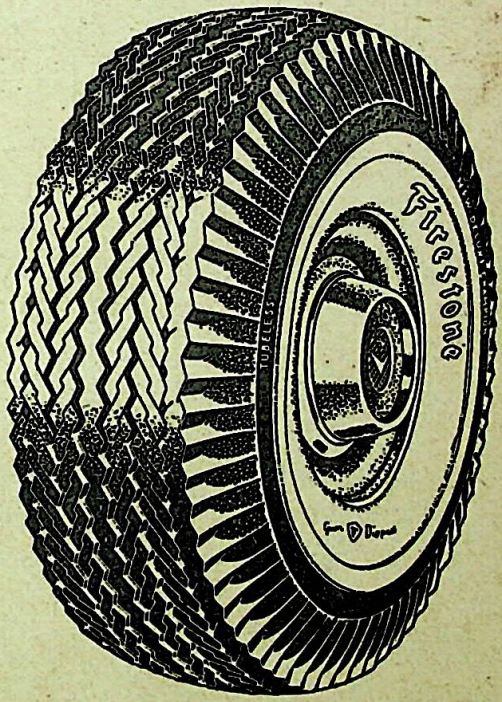

Firestone

फायरस्टोन

न्यू डिलक्स चैम्पियन

टयूबरहित या टयूबसहित

टायर जिससे मानसिक शांति बनी रहती है

I. 558

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी कितनी अच्छी कमला...

जब से कमला बेटी स्कूल की छुट्टियों में मेरे पास आई है, उस ने आते ही मेरे घर की काया पलट दी। पहिले मैं सारा दिन किसी न किसी काम में उलझी रहती थी— पर कमला बेटी का भगवान भला करे, अब तो वह सभी काम चुटकियों में होने लगे हैं।

कपड़ों को धोने की बात ले लो—कहने को तो कोई बात नहीं पर जब उस ने मुझे बताया कि कपड़े धोने का साबुन शुद्ध होना चाहिये, तो मुझे बड़ा अचंभा हुआ—उस ने कहा,

"शुद्ध साबुन से कपड़े अच्छी तरह धुलते हैं क्यों कि शुद्ध साबुन ज़्यादा झाग देता है और ऐसा झाग जो न कपड़ों को नुक़सान पहुंचाये, न हाथों को।"

वह सनलाइट साबुन घर ले आई और उस से कपड़े धो कर दिखाए। ज़रा सा मलने पर साबुन कितना भरपूर झाग देने लगा—मैं ने जो कमला को कपड़े धोने के लिए डंडा दिया, तो कहने लगी—

S. 254A-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"न मासी, सनलाइट से कपड़े धोते समय पीटने पटखने की ज़रूरत नहीं पड़ती — बस थोड़ा सा साबुन मला, इतना भरपूर झाग निकला कि कपड़े बिना पीटे धुल गए।"

और कपड़े भी कितने साफ़ और उजले धुले कि जी चाहा गीले ही पहन लो।

कमला सच मुच बड़ी होशियार लड़की है। कहती है कि सनलाइट से कपड़े इतने साफ़ और उजले इस लिए धुलते हैं कि इस का प्रभावकारी झाग कपड़े के ताने बाने में से सारा मैल खेंच लाता है। यह सब बातें ठीक हुईं लेकिन घर चलाना तो मेरा काम है। इस लिए मेरे मन में जो एक बात थी वह भी कह डाली मैं ने, "बेटी, सनलाइट साबुन तो बहुत मँहगा है।"

कमला हंस पड़ी। कहने लगी :

"नहीं मासी! यह तुमहारा विचार ही है"। मैं हैरान हो गई। फिर कमला बेटी ने समझाया : "मासी! सनलाइट की एक ही टिकिया से ढेरों कपड़े धुल जाते हैं — सनलाइट से कपड़ा धोना तो सच मुच बड़ा सस्ता काम है।"

सनलाइट की एक और बात भी मन को बड़ी भाई। इस की सुगंध से कपड़ों में स्वच्छता की महक आती है और इस का झाग हाथों को मुलायम और कोमल रखता है।

यह हमारी कमला आई तो हमें मालूम हुआ कि घर के सभी कपड़े जैसे कि, उन की क़मीज़ें, पायजामे, घर के तोलिये, चादरें, परदे, मुन्नी और काके के कपड़े मेरे कपड़े यानि कि सभी छोटे बड़े कपड़े धोने के लिए सनलाइट से अच्छा कोई साबुन नहीं। एक तो कपड़े इतने साफ़ और उजले धोए और दूसरे एक ही टिकिया से ढेरों कपड़े धुल जाएं। पैसे के पैसे बचे, पहनने को साफ़ कपड़े मिले।

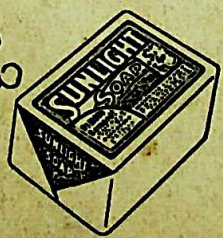

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

S. 254B-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके कमरे के

सौन्दर्य के

अनुकूल

ओरिएन्ट पंखे के नवीन डिजाइन से जिस उन्नत दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त होता है, वह इस उद्योग के क्षेत्र में अभूतपूर्व है।

जिससे आपके कमरे तथा उसके सारे असबाब का सौन्दर्य बना रहे, वैसा पंखा ही ओरिएन्ट के डिजाइनरों ने बनाया है। गठन-सौन्दर्य का आभिजात्य और मोती-सा शुभ्र सदास्थायी स्टोव एनामेल फिनिश इस पंखे की विशेषता है। पंखा क्या है, मानो भास्कर्य का एक नमूना हो। आनन्द के स्रोत इस पंखे में कला-कौशल का उत्कर्ष सम्पन्न हो गया है।

Orient FANS

ओरिएन्ट पंखा— सौन्दर्य और सेवा में सदा अग्रगामी

ओरिएन्ट जेनरल इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

६, घोर बीबी लेन कलकत्ता-११

वितरक : मेसर्स ओरिअन्ट जेनरल ऐजेन्सीज

हमाम हाऊस (पहला माला) हमाम स्ट्रीट फोर्ट, बम्बई

टेलिफोन : २५१७९२

OG-258

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अजीब वहशी औरत है

उर्दू के प्रख्यात कथा-शिल्पी अहमद नदीम कासिमी-लिखित एक कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

"कितने नम्बरवाली है?" – भीड़ के पीछे से एक बुढ़िया ने पूछा।

"पाँच नम्बरवाली है।"– बुढ़िया के पास से एक पनवाड़ी बोला और बुढ़िया हड़बड़ा कर भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ने लगी। सब लोग बस के बजाय बुढ़िया को देखने लगे।

"अजीब वहशी औरत है।"–एक आदमी ने अपनी ठोड़ी सहलाते हुए कहा–"जबड़ा तोड़ डाला मेरा!"

"अरे! पागल हुई है क्या?"– एक और ने फरियाद की।

इतने में बस आ गयी। कंडक्टर ने भड़ाक् से दरवाजा खोलते हुए कहा–"पहले औरतें!" भीड़ के बीच में पहुँच कर बुढ़िया रुक गयी और लोगों ने बड़ी नागवारी से दो भागों में बँट कर उसे रास्ता दे दिया।

बुढ़िया ने सिर पर से चादर उठा कर बालों पर हाथ फेरा; फिर चादर के एक पल्लू को मुट्ठी में पकड़ लिया और भीड़ पर विजय-भरी दृष्टि डाल कर कंडक्टर से कहा–"तेरी माँ ने तुझे 'बस्म अल्लाह' पढ़ कर जना है लड़के!"

"चल, आ भी माई।"–कंडक्टर ने थोड़ा शर्मा कर कहा।

"रास्ता तो मैं वैसे भी बना लेती। आधा तो बना भी लिया था; पर तूने जो बात कही है, वह हजार रुपये की है!"

बुढ़िया ने जरा-सा उठ कर सीट को हाथ से एक-दो बार दबाया और धीरे से कहा–"बड़ी नर्म है।" बस चली, तो उसने दाईं ओर देखा। एक गोरी-चिट्टी औरत दुधिया रंग की साफ-सुथरी साड़ी पहने, सुनहरे फ्रेम का ऐनक लगाये, सफेद चमड़े का बैग हाथ में लिये, बैठी थी और एक खिड़की से बाहर देखे जा रही थी। बुढ़िया ने भी गर्दन को जरा-सा खींच कर बाहर देखा। हर चीज पीछे की ओर भागी जा रही थी। वह आँखें मल कर सामने देखने लगी। पल-भर बाद उसने गोरी-चिट्टी औरत की ओर दोबारा देखा, फिर अपनी अँगुली उसके घुटने पर बजा दी। औरत ने भौंहें सिकोड़ कर उसकी ओर देखा, तो वह बोली–"चक्कर आ जायेगा। बाहर मत देखो।"

गोरी-चिट्टी औरत मुस्करायी और बोली–"मुझे चक्कर नहीं आता।"

"मुझे तो आ गया था।"–बुढ़िया बोली।

"तुम्हें आ गया था, तो तुम बाहर मत देखो; मुझे नहीं आता, इसलिए मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखूँगी।" औरत ने कहा।

बुढ़िया ने पूछा—"तो क्या तुम बाहर नहीं देखोगी, तो तुम्हें चक्कर आ जायेगा?"

औरत की मुस्कराहट एकाएक गायब हो गयी और वह बाहर देखने लगी।

बुढ़िया को अगली सीट पर एक औरत का केवल सिर नजर आ रहा था। उसने बालों में एक पीले रंग का फूल सजा रखा था! बुढ़िया ने जरा-सा आगे झुक कर फूल को गौर से देखा, फिर अँगुली से गोरी-चिट्टी औरत का घुटना बजा कर बड़ी राजदारी से बोली—"यह फूल असली है, या नकली?"

"नकली है।"— औरत बोली।

"नकली है, तो सोने का होगा।" —बुढ़िया ने राय जाहिर की।

"रंग तो सोने-सा है..."—औरत ने कहा।

"मुझे तो असली लगता है, किसी झाड़ी से उतारा है।"— बुढ़िया बोली।

"तो फिर असली होगा।"— औरत ने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा।

बुढ़िया ने जरा-सा हैरान होकर गोरी-चिट्टी औरत की ओर देखा और फिर अँगुली से उसका घुटना बजा दिया।

"क्या है?"— औरत ने भौंहें सिकोड़ कर जरा रुखाई से पूछा।

बुढ़िया बोली—"अजीब बात है; बाहर तुम देखती हो और चक्कर मुझे आता है।"

औरत जरा मुस्करायी।

"सुनो।"— बुढ़िया ने कहा।

"क्या है?"— औरत ने फिर भौंहें सिकोड़ कर पूछा।

"लेडी हो?"— बुढ़िया ने प्रश्न किया।

"क्या?"— औरत ने रुक्ष स्वर में पूछा।

"अस्पताल की लेडी हो?"

"नहीं।"

"तो फिर क्या करती हो?"

"कुछ नहीं करती।"

"कुछ तो जरूर करती हो।"— बुढ़िया ने दायें-बायें सिर हिला कर कहा।

"टिकट ले लो माई।"— बुढ़िया को सिर के ऊपर कंडक्टर की आवाज सुनायी दी।

"दे दो!"— बुढ़िया ने चादर के पल्लू को मुट्ठी से आजाद कर दिया।

"कहाँ जाओगी?"—कंडक्टर ने पूछा।

"घर जाऊँगी, बेटा।"— बुढ़िया बड़े प्यार से बोली।

कंडक्टर जोर से हँसा! गोरी-चिट्टी औरत भी बुढ़िया की ओर देख कर मुस्कराने लगी। कंडक्टर ने जैसे तमाम मुसाफिरों को सम्बोधित करते हुए कहा—"मैंने माई से पूछा, कहाँ जाओगी। बोली— घर जाऊँगी।" इस बार मुसाफिरों ने भी कंडक्टर के कहकहे का साथ दिया। कंडक्टर ने बड़ी नर्मी से बुढ़िया को समझाते हुए कहा— "घर तो सब लोग जायेंगे, माई। यह बताओ, मैं कहाँ का टिकट काटूँ?"

"वालटन का।"— वह बोली— "मेरा घर वालटन के पार एक गाँव में है।"

मुस्कराते हुए कंडक्टर ने टिकट काट कर बुढ़िया को दे दिया और कहा— "साढ़े पाँच आने दो।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"साढ़े पाँच आने ?"—बुढ़िया ने चादर के पल्लू की गाँठ खोलते हुए पूछा— "साढ़े पाँच आने कैसे ? गोशा तो कह रहा था कि, चार आने लगते हैं। उसने तो मुझे यह गोल-मोल चवन्नी ही दी।" उसने चवन्नी दो अँगुलियों के पोरों में थाम कर कंडक्टर की ओर बढ़ा दी। कंडक्टर बोला— "नहीं माई, चार आने नहीं, साढ़े पाँच आने लगते हैं।"

बुढ़िया की आवाज तेज हो गयी — "सारी दुनिया के चार आने लगते हैं— मेरे साढ़े पाँच आने लग गये। क्यों ? हड्डियों का तो ढेर हूँ। मेरा बोझ ही क्या है ? यह लो चार आने।"

"अजीब मुसीबत है!"—कंडक्टर ने तेवर बदल लिये और मुसाफिरों को साक्षी बना कर वह भाषण करने लगा— "मैं तो कहता हूँ कि, सरकार को कानून पास करना चाहिए कि, जो प्राइमरी पास न हो, वह बस में सफर न करे। अब इस माई को ही देखिये। मेयो अस्पताल के स्टैंड पर बस में बैठी है, वालटन जा रही है और कहती है, वालटन भी जाऊँगी और साढ़े पाँच आने भी नहीं दूँगी। सिर्फ इसीलिए कि, किसी ने इसे चार ही आने दिये।"

बुढ़िया बच्चे की तरह बोली—"किसी ने क्यों, अपने गोशे ने दिये हैं!" कंडक्टर ने भाषण का सिलसिला जारी रखते हुए और जरा मुस्कराते हुए कहा— "इसलिए कि, गोशे ने इसे केवल चार आने दिये हैं। अब इसे कौन समझाये कि, बस, सरकार की है, गोशे की नहीं। गोशे की होती, तो वह तुमसे चार ही आने लेता।"

"घर तो सब लोग जायेंगे, माई! यह बताओ, मैं कहाँ का टिकट काटूँ ?"... [पृष्ठ ८३]

"क्यों ? वह क्यों लेता चार आने ?" —बुढ़िया बोली— "वह तो मेरा भतीजा लगता है। कमाऊ है, रोज अपने रेढ़े पर दूध लाता है। आज मैं उसी के रेढ़े पर तो आयी थी। चार आने छोड़, चार पैसे भी नहीं माँगे। उसकी मजाल थी, जो माँगता! गोदी में खिलाया है! अब तुम साढ़े पाँच आने माँग रहे हो, तो यूँ करो। मुझे किसी चार आनेवाली जगह बिठा दो। मैं तो किसान औरत हूँ। नीचे भी बैठ जाऊँगी। तुम कहीं इस नर्म-नर्म गद्दे के तो साढ़े पाँच आने नहीं माँग रहे हो ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं, माई!"– कंडक्टर ने तंग आकर कहा–"सब सवारियों के नीचे गद्दा है।"

बुढ़िया ने हैरान होकर पूछा–"तो फिर, बोलो, मैं क्या करूँ?"

"डेढ़ आना और निकालो।"

"कहाँ से निकालूँ?"–वह बोली–"बता जो रही हूँ कि, मैं घर से खाली हाथ आयी हूँ। यह चवन्नी भी गोशे ने दी है, कल उसे लौटा दूँगी।"

कंडक्टर साफ तौर से अपने गुस्से पर काबू पा रहा था; बोला–"मुझे तो आज ही चाहिए, माई। मैं तो टिकट काट चुका हूँ। जल्दी करो। इतने सारे स्टैंड गुजर चुके हैं; इतनी सारी सवारियाँ जमा हो चुकी हैं। सबके टिकट काटने हैं। कोई चेकर आ गया, तो जान आफत में डाल देगा। भाई लोगो, खुदा के लिए इस माई को समझाओ। जाना वालटन है और किराया यह माडल टाऊन का भी नहीं दे रही है। फिर कहती है, चवन्नी से ज्यादा एक कौड़ी नहीं है।"

"अजीब वहशी औरत ह।"– किसी की आवाज सुनायी पड़ी।

"यह कौन बोला?"–बुढ़िया ने पलट कर बस के आखिरी सिरे तक नजर दौड़ायी–"जरा एक बार फिर बोले कि, मैं उसकी जबान खींच कर इस खिड़की से बाहर फेंक देती हूँ।"

कंडक्टर, जो इस बीच दूसरे मुसाफिरों के टिकट काटने लगा था, उसके निकट आ कर सख्ती से बोला–"साढ़े पाँच आने देगी, या नहीं?"

"तू तो थानेदारों की तरह बोलने लगा, लड़के। कह जो रही हूँ– चवन्नी यह रही। बाकी रहे छः पैसे, सो मैं तुमको पहुँचा दूँगी। कल वालटन में आकर बैठ जाऊँगी और तू आयेगा, तो तुझे दे दूँगी।"

"लो, और सुनो।"–कंडक्टर ने सब मुसाफिरों से फरियाद की। फिर एकाएक उसके तने हुए तेवर ढीले पड़ने लगे और वह एक सफेदपोश बुजुर्ग के पास जाकर झुक गया।

बुढ़िया ने गोरी-चिट्टी औरत का घुटना बजाया और जब औरत ने उसकी ओर देखा, तो वह बोली–"देख रही हो!"

औरत ने उसे समझाते हुए कहा–"लगते तो, माई, साढ़े पाँच ही आने हैं। फिर यह बस सरकार की है। यह लड़का सरकार का नौकर है! एक आना भी किसी से कम ले, तो या तो अपनी जेब से डालेगा, या नौकरी छूट जायेगी बेचारे की।"

"हाय, हाय, बेचारा।"–बुढ़िया ने प्यार से कंडक्टर की ओर देखा–"मैंने तो उम्र-भर अपनी रोजी अपने हाथों से कमायी है। मैं क्यों किसी की रोजी पर डाका डालूँ छः पैसों के पीछे? मुझे क्या खबर थी? वह गोशा ही धोखा दे गया। पर उसे भी क्या पता? वह बेचारा भी तो रेढ़े से लाहौर आता है। ....अब क्या करूँ?"

"यूँ करो।"– गोरी-चिट्टी औरत ने अपना पर्स खोलते हुए कहा–"मैं तुम्हें...."

इतने में कंडक्टर आ गया। बोला–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बस माई, अब सारा हिसाब ठीक हो गया। तुझे वालटन पर ही उतारूँगा।"

बुढ़िया खिल गयी—" मैंने कहा था न कि, तुझे तेरी माँ ने 'बसम अल्लाह' पढ़ के जना है। पर यह बता, लड़के! चवन्नी ही पर राजी होना था, तो साढ़े पाँच आने का झगड़ा क्यों चलाया?"

'हिसाब तो माई साढ़े पाँच आने से ही पूरा हुआ।" – कंडक्टर बोला।

"तो मैं छः पैसे कहाँ से लाऊँ?"– बुढ़िया फिर उदास हो गयी।

"छः पैसे मुझे मिल गये।"

"कहाँ से मिले?"

"उस चौधरी ने दिये हैं।" –कंडक्टर ने एक व्यक्ति की ओर इशारा किया।

"क्यों दिये?"– बुढ़िया ने हैरान होकर सवाल किया।

कंडक्टर बोला–"तरस खाकर दे दिये।"

बुढ़िया उठने की कोशिश में सीट पर गिर पड़ी। "किस पर तरस खाया?" –वह एकदम चिल्लायी।

"तुम पर, और किस पर।" –कंडक्टर बोला।

बुढ़िया भड़क कर उठी और चीख कर बोली–"जरा मैं भी तो देखूँ अपने तरस खानेवाले चौधरी को!"

गोरी-चिट्टी औरत फौरन पर्स बंद करके बुढ़िया को देखने लगी। बुढ़िया छत की सलाख और सीटों की पुश्तों के सहारे सफेदपोश बुजुर्ग की ओर जाने लगी– "ये छः पैसे क्या तेरी जेब में बहुत कूद रहे थे, जो तूने तरस खाकर मेरी ओर यूँ फेंक दिये, जैसे कुत्ते की ओर हड्डी फेंकी जाती है?"

"लीजिये, यह है भलाई का जमाना।" –कोई व्यक्ति बोला।

सफेदपोश बुजुर्ग का रंग मिट्टी का-सा हो गया और बुढ़िया बोलती रही–"अरे, सखी दाता कहीं के! तू मुझ पर तरस खाता है, जिसने साठ-सत्तर साल धरती में बीज डाल कर पौधों के उगने और बालियों के पकने के इंतजार में काट दिये हैं। तू उन हाथों पर छः पैसे रख रहा है, जिन्होंने इतनी मिट्टी खोदी है कि, इकट्ठी हो, तो पहाड़ बन जाये?.... तू मुझ पर तरस खाता है? क्या तेरे घर में तेरी कोई माँ-बहन नहीं है तरस खाने को? कोई अंधा फकीर नहीं मिला तुझे रास्ते में? शर्म नहीं आती तुझे, एक किसान औरत पर तरस खाते हुए?"

फिर वह कंडक्टर की ओर पलटी–"ये छः पैसे जो उसने मुझ पर थूके हैं, उसे वापस दे दे और मुझे यहीं उतार दे। मैं पैदल चली जाऊँगी! मुझे पैदल चलना आता है!"

बुढ़िया खामोश हो गयी। बस में केवल बस चलने की आवाज आ रही थी।

बस क्षण-भर के लिए रुकी और बुढ़िया सीढ़ियों की परवाह किये बगैर दरवाजे में से लटक कर बाहर सड़क पर ढेर हो गयी। फिर वह उठी, कपड़े झाड़े और आश्चर्यजनक तेजी से वालटन की ओर चल पड़ी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ नहीं मानेगी

अमिता पट्टनायक की एक उड़िया-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

बीस मिनट में गाड़ी आ पहुँची। ज्योतीन्द्र बाबू और वनलता ट्रेन पर चढ़ गये। दम्पति ने, स्टेशन पर उस भरी बरसात में खड़े मित्र-परिजन-समूह से, विदा ली। गार्ड ने सीटी बजायी और देखते-देखते ट्रेन हमारी दृष्टि से ओझल हो गयी।

छः वर्ष पश्चात्, वही ज्योतीन्द्रनाथ आज रंगून से लौट रहे थे। उनका स्वागत करने के लिए मैं स्टेशन पर पहुँचा। उनकी गाड़ी आयी। वे उतरे; किंतु आज उनके साथ वनलता नहीं थी। वे अकेले थे। हाँ, एक चार वर्ष का बच्चा उनके साथ अवश्य नीचे उतरा।

प्रथम दृष्टि में ही बालक को पहचान गया— सारा वनलता का चेहरा। वही बड़ी आँखें, वही तीव्र दृष्टि, वही सीधी-सरल नाक! कितना भोलापन भरा था उसमें! मैं ज्योतीन्द्र से लिपट गया। जितने हर्षोल्लास के साथ मैंने उनको विदा किया था, उतनी ही वेदना से मेरी आँखें छलछला आयीं। मगर उनकी आँखों में तो दुःख का लेश तक नहीं था। एक तीव्र प्रश्न मेरे मस्तिष्क को विदीर्ण कर गया— वनलता के मरण का ज्योतीन्द्र को दुःख क्यों नहीं? मगर दूसरे ही क्षण बुद्धि ने भर्त्सना भी की— क्या जीवन-भर मृतकों के लिए रोते ही रहना चाहिए? "यह है कमल, मेरा लड़का। हाँ, बेटे, चाचा के पैर छुओ!" —ज्योतीन्द्र ने मुझसे और बालक से, दोनों से जैसे एक साथ ही कहा।

"बिल्कुल माँ पर गया है।" —मैंने कहा।

कुली ने सामान टैक्सी में रखा और हम लोग घर की तरफ चल दिये। रास्ते में मौन-भंग करते हुए उन्होंने प्रश्न किया— "जानते हैं न, मैं यहाँ क्यों आया हूँ?"

पत्र में उन्होंने अपनी यात्रा का सारा विवरण लिखा था। वे अपने साथ एक जटिल समस्या लेकर आये थे।

टैक्सी में ही उन्होंने वनलता के अकाल मरण की कहानी सुनायी। हम तीनों की आँखें सजल हो गयीं। आँसू पोंछते हुए ही उन्होंने कहा—"वनलता के बिना अब तो मेरा जीवन ही शून्य है। वनलता-जैसी नारी का इस संसार में जन्म लेना शायद सम्भव हो, पर उस-जैसी सहधर्मिणी शायद ही कभी जन्मे।... उसकी मृत्यु के एक मास पहले की बात है। दफ्तर से लौट कर मैं जब घर आया, तो द्वार खट-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खटाया। मैंने देखा कि, वनलता की आँखें सूजी-सूजी और सजल थीं। उसके रोने का क्या कारण था, मालूम है? वैसी कोई बड़ी बात नहीं थी। हमारे घर से तीसरे मकान में एक उड़िया-परिवार रहता था। एक दिन उस घर में पिता ने अपने बच्चे को ऐसा पीटा कि, बच्चे के शरीर से खून बहने लगा। वनलता से न देखा गया। वह पिता से बचा कर उस बालक को अपने यहाँ खींच लायी। वह उसे मीठा खिला ही रही थी कि, राक्षस की तरह दौड़ता हुआ उस लड़के का पिता आया और उसे पकड़ कर वापस घसीट ले गया। उस बालक की माँ मर चुकी थी— विमाता घर में थी! पिता ने अपनी युवती पत्नी के कहने में आकर बेचारे छोटे बच्चे को इस प्रकार पीटा था।

"कहानी करुण थी—मेरा मन भी भारी हो गया। त्याग और प्रेम की गंगोत्री नारी में भी अनाचार - अन्याय के विष-स्रोत पलते हैं! हाय नारी, इसीलिए तो तू सृष्टि की सबसे बड़ी उलझन रही है—एक हाथ में वर, दूसरे में शाप!

"हाँ, तो आगे सुनिये। वनलता उस दिन जिस मूल को पकड़ कर रो पड़ी थी, वही आज मेरे प्रसंग में चरितार्थ हो रहा है।...उसी दिन से एक भीषण आशंका उसके मन को कुतर-कुतर कर खाने लगी—'यदि मैं मर जाऊँ, तो वे मेरे कमल को भी क्या ऐसे ही पीटेंगे?'

"इस कल्पना से वह काँप उठी और आँसू की अजस्र धारा उसकी आँखों से बहने लगी। इसी दुःस्वप्न में ग्रस्त वनलता बीमार पड़ गयी और एक दिन कमल को मेरी दया पर छोड़ कर भगवान् के धाम जा बसी।...मगर वनलता का दुःस्वप्न

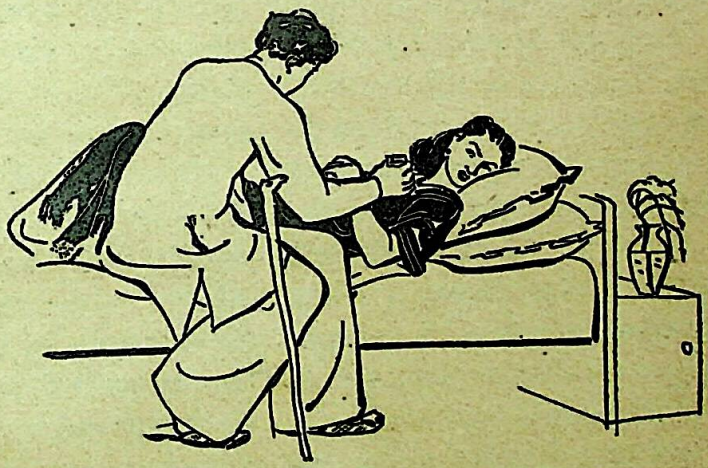

उसी दिन से एक भीषण आशंका उसके मन को कुतर-कुतर कर खाने लगी— 'यदि मैं मर जाऊँ, तो वे मेरे कमल को भी क्या ऐसे ही पीटेंगे?'

[चित्र : सुबोध मजूमदार-निर्मित रेखाचित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझसे कभी पूरा नहीं होगा. . . .वह जिस बात की आशंका से रो पड़ी थी, उस तरह की परिस्थिति मैं कभी आने न दूँगा। लेकिन बच्चे की देखभाल कौन करे? माँ का स्नेह उड़ेल कर संतान के पालन-पोषण की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। यही समस्या लेकर मैं यहाँ आया हूँ– मैं अपने माता-पिता के पैरों पड़ कर उनसे प्रार्थना करूँगा कि, वे इसकी देखरेख करें।"

टैक्सी मेरे घर के सामने आकर रुकी। मैं उतर पड़ा। पास में ही ज्योतीन्द्र के पिता का भी घर था।

ज्योतीन्द्र की माता खिड़की के पास खड़ी थीं। गाड़ी को अपने घर के सामने रुकते हुए उन्होंने देख लिया। ज्योतीन्द्र के पिता भी घर में ही थे।

"अगर उस बदजात ने घर में कदम रखा, तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।" –मैंने ज्योतीन्द्र के पिता को गरजते हुए स्पष्ट सुना; मगर वे पिता की धमकी की कोई परवाह किये बिना घर में घुस गये।

कई भय सहसा मेरे हृदय में कौंध उठे। ज्योतीन्द्र ने पिता की इच्छा के खिलाफ प्रेम-विवाह किया था। अतः सब उनसे असंतुष्ट थे। पिता तो उनका मुख भी नहीं देखना चाहते थे!

कई दिनों की प्रतीक्षा के बाद, एक दिन वे एकाएक चले आये। उनके पीछे, उनका कमल भी उछलता-कूदता आया। पास में मेरी बहन थी। वह कमल को गोद में उठा कर अंदर ले गयी–"आओ, कमल! जैसा नाम, वैसा रूप!"

ज्योतीन्द्र बड़े विचलित-उद्विग्न-से नजर आये। सुदीर्घ तनी भृकुटियों में रोष के साथ उग्र लाचारी का आवेश भी था। वे छूटते ही बोले –"तुम नाराज हो रहे होगे कि, मैं अभी तक तुमसे नहीं मिल पाया। बड़ी उलझनों में फँस गया हूँ– कितना अच्छा होता कि, मैं इस बच्चे को रंगून से ही नहीं लाता!"

"क्यों, ऐसा क्या हो गया?"

"स्वयं मेरे पिताजी ने भी मेरी हालत पर दया नहीं की। मैंने कहा कि, मैं कमल के लिए पचास रुपये प्रति मास भेज दिया करूँगा; मगर वे तो किसी शर्त पर भी कमल को अपने पास रखना नहीं चाहते!"

"आप उनके इन्कार का खयाल ही क्यों करते हैं? उन्हें कहने दें। आप बच्चे को छोड़ जायेंगे, तो वे उसे भूखों थोड़े ही मारेंगे! ऐसा कहीं होता है!"

"पिताजी कहते हैं कि, मुझे तुम्हारे बच्चे से विराग नहीं है। पर जिसने बीज बोया है, उसी को काटना चाहिए। जब मैंने उन्हें बहुत मनाया, तो उन्होंने आखिरी शर्त यह रख दी कि, मेरे पुनः व्याह के लिए जिस लड़की की वे सिफारिश करेंगे, यदि मैं उससे शादी कर लूँ, तो वे कमल को अपने पास रख सकते हैं! यह कहाँ का न्याय है; आप ही बताइये!"

मैं क्या कहता? वनलता में उनकी जैसी अनुरक्ति थी, वह मैं जानता था। दूसरा विवाह न करने का उन्होंने उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वचन भी दिया था। अजीब धर्मसंकट में थे वे बेचारे!

बात को आगे ढकेलते-से वे कहने लगे—"दूसरा विवाह तो मैं करने से रहा और पिताजी उस शर्त के बिना इस मातृहीन बच्चे को रखने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिए लाचार मैं वनलता के भाई के पास भी गया; पर उसने भी साफ इन्कार कर दिया।" मुझे लगा कि, उनके भीतर का बाँध इस झटके से टूट गया है। वे बच्चों की तरह आँसू बहाने लगे।

"अरे, यह क्या करते हैं आप? रोते हैं... कमल को मेरे पास छोड़ जाइये। मेरे बच्चों के पास रहेगा। अभी तक मैंने आपके सामने यह प्रस्ताव नहीं रखा था; क्योंकि आप जानते ही हैं, मैं गरीब आदमी हूँ। बच्चे को वह सुख-सुविधा नहीं दे सकूँगा, जो आपके पिताजी या साले के यहाँ मिल सकती है।"

उत्तर के लिए मैंने ज्योतीन्द्र की ओर देखा; मगर वे कुछ बोल नहीं पाये। कोई दुविधा उनके भीतर अटक गयी थी। मेरे दुबले-पतले बच्चे और मेरी गिरस्ती की कमजोरी वे देख चुके थे—शायद उन्होंने सोचा कि, यह आदमी मुझे धोखा तो नहीं देगा; फिर भी मैं जो रुपया भेजूँगा, वह शायद ही मेरे बच्चे के काम में आ सके।

उनके असमंजस को भंग करने के लिए मुझे सहसा याद हो आया कि, ज्योतीन्द्र के एक छोटे भाई भी हैं, जो एक अच्छी-खासी सरकारी नौकरी पर हैं। मैंने कहा—"अपने छोटे भाई हेमेंद्र से भी मिले थे क्या आप? उनके यहाँ तो सुविधा हो सकती है।" सुनते ही, जैसे वे उबल उठे—"उसका नाम मत लीजिये, मेरे सामने। उसने मुझसे साफ कह दिया कि, हम वर्णसंकरों को अपने यहाँ रख कर अपने बच्चों का भविष्य बिगाड़ना नहीं चाहते!" सुन कर मेरा मन भी आहत हो गया। फिर कमल को मेरी ओर बढ़ाते हुए वे बोले—"खैर, कमल को चार-पाँच दिनों के लिए आपके यहाँ छोड़े जाता हूँ। पुरी में मेरी एक बुआ रहती हैं। उनसे भी पूछ लूँ। यह मेरे साथ कहाँ-कहाँ भटकेगा, अभागा!"

और, कमल के हाथ के साथ पच्चीस रुपये भी उन्होंने मेरे हाथों में रख दिये। मैं अवाक् रह गया। रुपये वापस उनकी जेब में रखते हुए कहा—"इतना गरीब नहीं हूँ, भाई!"

बच्चा जितना प्यारा था, उतना ही चपल-वाचाल भी! अपनी मीठी बातों से सबके मन को मोह लेता था। अपनी माँ के बारे में उसने मेरी बहन को काफी कुछ कहा था। एक दिन जब दोनों की बातें हो रही थीं, तो मैंने रुक कर सुना—"तुम हमारे उस दोस्त को जानती हो, जो रंगून में रहता है। बड़ा अच्छा ह, दीदी। मगर उसके बाबूजी उसे बहुत मारते हैं। क्या करे बेचारा! उसकी माँ जो मर गयी है! दूसरी माँ जब आती है, तो वह तो मारती ही ह... भगवान् किसी को दूसरी माँ न दे! मगर दीदी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी माँ सबको मारती क्यों है? वह भी तो माँ ही होती है, फिर बेटों को इस तरह दुःख क्यों देती है?"

प्रश्न बालक की तुतली भाषा में था और ज्ञान-गांभीर्य-रहित हृदय से निकला था; किंतु नारी-हृदय के सैकड़ों रहस्यों में से यह भी एक शाश्वत रहस्य था— इतना ही अबूझ, जितना नारी का ममत्व!

चार-पाँच दिन के बजाय ज्योतीन्द्र तो पूरे पंद्रह दिनों में आये। दो-तीन और रिश्तेदारों के दरवाजे उन्होंने खटखटाये थे!

आते ही बोले—"बस, जहाँ जाइये, जहर के घूँट ही तैयार हैं। बुआ ने इन्कार ही नहीं किया, वह तो जैसे काटने के लिए तैयार बैठी थी— जानते हैं, क्या कहने लगी....."

मैंने बीच में ही कहा—"छोड़िये भी इसे! यदि मेरा एक प्रस्ताव मानें, तो आप यहीं बस जाइये न।"

"यह कैसे हो सकता है? मैं तो रंगून का नागरिक हूँ। एक हफ्ते के भीतर ही मुझे वहाँ जाना है — तब तक कोई इंतजाम अवश्य हो जाना चाहिए।"

इसी वक्त मेरी बहन ने मुझे अंदर बुलाया। इस बात की मैंने आशा नहीं की थी। इसी विचार से मैं चला कि, मुझको कुछ सदुपदेश दिये जानेवाले हैं।

वहाँ रति मेरी बहिन से कह रही थी— "हमारा घर बहुत बड़ा है। उसमें पानी का नल है। बिजली के सात पंखे हैं, सात और..." रति का मुँह बंद करके मेरी बहन बोलने लगी। उसकी बात सुन कर मैं हक्का-बक्का रह गया।

एक सप्ताह बाद ज्योतीन्द्र अपनी नयी पत्नी और कमल के साथ फिर प्लेटफार्म पर खड़े थे। मेरा मन बाँसों उछल रहा था। गाड़ी मेरे आँसुओं के बीच चल दी .... मैं देखता रहा! गाड़ी में मेरे माता-पिता की एक धरोहर जा रही थी— मेरी बहन सुमित्रा! आज वह ज्योतीन्द्र की पत्नी थी। घर की चहारदीवारी में पिछले दस वर्षों से कुँआरी बैठी इस बहन को मेरी गरीबी का नागपाश जकड़े थी... आखिर भगवान् ने उसकी स्वयं लाज रखी! मैं सोच ही नहीं पाया; यह सब कैसे हो गया? अकस्मात् ज्योतीन्द्र का आना, एक बिल्कुल नयी समस्या को लेकर... और तदर्थ चारों तरफ की भाग-दौड़; उनके माता-पिता का निरादर और निंदा; दूसरे लोगों का खरी-खोटी सुनाना; सबसे बढ़ कर कमल का मेरी बहन के साथ देश में ही रहने का आग्रह; व्याह के लिए ज्योतीन्द्र की सम्मति और मेरी बहन का न-जाने किस साहसिक अनुभूति में मुझसे कहना—"भैया, मेरी लज्जा को क्षमा करना! इस बच्चे ने मेरे भीतर मातृत्व की बड़ी पावन धाराएँ जगा दी हैं— मैं इससे विलग नहीं रह सकती। इस कारण मैं उनसे विवाह कर लेने को तैयार हूँ, अगर वे मान जायें। वरना उनसे इतना तो कहिये कि, वे इस बच्चे को मेरे पास छोड़ जायें!"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेरशाह

'कल्कि'-लिखित एक तमिल-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

प्रतिबंधपुरम् के महाराज या तो हिज हाइनेस जमादार जनरल, किलेदार मेजर, शतव्याघ्रसंहारी, महाराजाधिराज विश्वभुवन सम्राट्, सर जिलानी जंग-जंग बहादुर, एम० ए० डी०, ए० सी० डी० सी०, सी० आर० सी० -जैसे लम्बे नाम से सम्बोधित किये जाते थे अथवा 'शेरशाह'-जैसे छोटे नाम से। उनका नाम 'शेरशाह' कैसे पड़ा, इसकी भी एक बड़ी रोचक कहानी है। लेकिन कहानी बताने के पहले उनके सम्बंध में एक बात बता देना बड़ा जरूरी है; क्योंकि उनकी कहानी पढ़ते हुए आपके मन में यह लालसा बलवती हो सकती है कि, उन शूर-वीर-धीर पराक्रमी को एक बार आँख-भर कर देख लूँ। इसी से स्पष्ट कर दूं कि, यह लालसा पूरी होने से रही। भरत ने दशरथ की मृत्यु के बारे में बतलाते हुए राम से कहा था कि, इस संसार में जो आये हैं, उन्हें एक-न-एक दिन यहाँ से जाना ही पड़ता है। वैसे ही, हमारे शेरशाह भी चले गये।

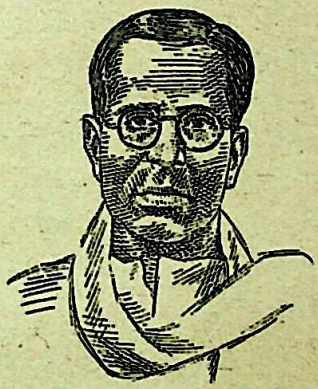

'कल्कि'

[चित्र : वी० एन० ओके-द्वारा निर्मित एक रेखाचित्र]

वे कैसे मरे, इसकी एक अजीबो-गरीब कहानी है। लेकिन इसे बाद में कहूँगा। हाँ, उनकी मौत के सम्बंध में एक विशेषता यह है कि, वे जब पैदा हुए थे, तभी ज्योतिषियों ने गणित लगा कर भविष्य-वाणी कर दी थी—"वे एक-न-एक दिन निश्चय ही मर जायेंगे।"

भविष्यवाणी के समय ही एक बड़ी विचित्र घटना भी घटी थी। जिलानी जंग-जंग बहादुर को तब इस धरा पर आये दस दिन भी पूरे नहीं हुए थे। अचानक उनके मुँह से बड़े आश्चर्यजनक ढंग से सुनायी पड़ा—"ओ, वृहस्पतियो!"

सब लोग भौचक्क रह गये और एक-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे की ओर आँखें फाड़-फाड़ देखने लगे।

फिर सुनायी पड़ा—"मैं ही बोल रहा हूँ, वृहस्पतियो।"

इस बार संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी। जिस शिशु को पैदा हुए दस दिन भी नहीं हुए थे, वह इस प्रकार बातें कर रहा था। आश्चर्यचकित प्रधान ज्योतिषी ने आँखों से चश्मा हटा लिया और बच्चे को वे एक टक निहारने लगे।

"जो जन्मते हैं, वे मरते ही हैं! यह तो सृष्टि का नियम है। फिर भविष्यवाणी क्या की आप लोगों ने? अगर यह बतायें कि, मृत्यु किस प्रकार होगी, तो समझूँ!" नन्हे-से शेरशाह के श्रीमुख से यह सुन, प्रधान ज्योतिषी ने दाँतों-तले उँगली दबायी। दस दिन का नन्हा-सा शिशु बोलता है—बेहद बुद्धिमानी की बातें करता है! महान् आश्चर्य! इसको घोर कलियुग कहा जाये, अथवा सतयुग का प्रादुर्भाव, समझ में नहीं आता।

प्रधान ज्योतिषी ने युवराज की ओर अपनी पैनी दृष्टि गड़ायी। फिर कहा—"युवराज का जन्म वृषभ लग्न में हुआ है। वृषभ और शेर में बड़ी दुश्मनी होती है। अतः इनकी मृत्यु व्याघ्र-द्वारा होगी!"

व्याघ्र का नाम सुनते ही, युवराज अचानक शेर के समान गरजने लगे और उस समय उनके मुख से निकला—"शेर? खबरदार!" बस, ये दो शब्द ही!

उपर्युक्त घटना के बाद, युवराज के जीवन में कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं घटी और वे दिन-पर-दिन बड़े होते गये। अन्य देशी रियासतों की तरह ही प्रतिबंधपुरम् के युवराज भी विलायती नस्ल की गायों का दूध पीकर, विलायती नर्सों की देखरेख में परवरिश पाकर, विलायती मास्टरों से पढ़ कर और विलायती खेल-कूद में शामिल होकर बड़े हुए। और, जब वे बीस वर्ष के हुए, तो 'कोर्ट आफ वार्ड्स' से राज्य उनके अधिकार में आ गया। युवराज बड़ी कुशलता से अपनी प्रजा का पालन करने लगे।

लेकिन राज्य-भर में ज्योतिषी की भविष्यवाणी सबको अच्छी तरह याद थी। लोग बहुधा इस सम्बंध में चर्चा करते। धीरे-धीरे महाराज के कानों में भी इसकी भनक पड़ी।

प्रतिबंधपुरम् की रियासत में जो जंगल थे, उनमें बाघ भी रहते थे। अतः प्रजा का भय देख, महाराज ने शेर का शिकार करने का निश्चय किया और निकल पड़े। पहले शेर को मारने पर उन्हें जो खुशी हुई, उसकी जैसे कोई सीमा ही नहीं थी। रियासत के प्रधान ज्योतिषी को बुलाने के लिए आदमी दौड़ाया गया। ज्योतिषी के आने पर महाराज ने मारे गये शेर को दिखा कर पूछा—"कहिये, अब क्या कहते हैं?"

ज्योतिषी ने हाथ जोड़ दिये—"अन्नदाता, आप इस प्रकार निन्यानबे शेरों को मार सकते हैं। लेकिन....."

"लेकिन क्या?"—ज्योतिषी की हिच-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किचाहट देख, महाराज ने कहा—"निडर होकर कहिये!" और ज्योतिषी ने बात स्पष्ट कर दी—"..लेकिन सौवें शेर के समय आपको सावधानी बरतनी पड़ेगी।"

"अच्छा!"—महाराज मुस्कराये—"सौवें शेर को भी अगर मार डालूँ तो?"

स्वभावतः ही ज्योतिषी को कुछ तैश आ गया—"तो मैं ज्योतिष की सारी किताबों को फाड़ कर आग में झोंक दूँगा!"

महाराज नाराज नहीं हुए। हँसते हुए ही बोले—"उसके बाद क्या करेंगे?"

"फिर?... चोटी के बाल कटवा कर यह धंधा छोड़ दूँगा और बीमा-कम्पनी का एजेंट बन जाऊँगा।"—कह कर ज्योतिषी ने महाराज से विदा ली।

उसी दिन से प्रतिबंधपुरम् के जंगलों में जितने शेर रहते थे, उनके जैसे भाग्य जाग गये। हुक्म जारी किया गया कि, महाराज को छोड़ कर और कोई शेरों का शिकार नहीं कर सकता। ढिंढोरा पिटवा दिया गया कि, कोई भूल से भी बाघों पर कंकड़ तक नहीं फेंके। जो कोई इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा, वह राज-द्रोही समझा जायेगा और उसकी सारी जायदाद जब्त कर ली जायेगी।

महाराज ने तय कर लिया था कि, पूरे सौ बाघों का शिकार करने के बाद ही वे आराम की साँस लेंगे। इस काम में पूरी लगन से वे जुटे भी थे। कई बाधाएँ आयीं; पर महाराज अपनी बात से डिगना नहीं जानते थे। धीर-वीर की तरह डटे रहे। कई बार तो प्राणों पर आ बनी। ऐसा हुआ कि, उनका निशाना चूक गया और उन पर शेर झपट पड़ा, दोनों में द्वंद्व भी हुआ; लेकिन जंगल का राजा प्रतिबंध-पुरम् के महाराजा से हमेशा हार गया।

किंतु एक बार तो ऐसी विपत्ति आयी कि, उनका राज्य छिनते-छिनते बचा। कोई बड़े ब्रिटिश अधिकारी प्रतिबंधपुरम् में आये थे। वे शेर के शिकार के बड़े शौकीन थे। उससे भी बढ़ कर उन्हें इस बात का शौक था कि, अपने शिकार के पास खड़े होकर फोटो उतरवायें। वे चाहते थे कि, प्रतिबंधपुरम् के जंगलों में भी शिकार खेलें। लेकिन महाराज ने साफ इन्कार कर दिया। कहला भेजा कि, अन्य सभी प्रकार के शिकारों का इंतजाम हो जायेगा—चाहें तो सूअर का शिकार करें, चूहे का करें, या मच्छर का करें; सबका उचित प्रबंध हो जायेगा। पर अफसोस है, शेर के शिकार के लिए इजाजत नहीं दी जा सकती।

ब्रिटिश अधिकारी ने एक मौका और दिया—अपने सेक्रेटरी के द्वारा यह खबर भिजवायी कि, हमारे साहब को शेर के शिकार का उतना शौक नहीं है, जितना शिकार के पास खड़े होकर फोटो खिंचवाने का। इसलिए शिकार आप स्वयं कर सकते हैं; पर इतना इंतजाम कर दें कि, साहब हाथ में बंदूक ले, शिकार के पास खड़े हो, फोटो खिंचवा लें।

लेकिन महाराज ने इसकी भी मंजूरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं दी। उनका विचार था कि, एक बार 'हाँ' कर देने पर, अधिकारी बार-बार आकर तंग करेंगे।

ब्रिटिश अधिकारी को इस बार गुस्सा आ गया। आखिर यह भी कोई बात हुई? महाराज को भनक दिला दी गयी कि, उनकी इस बेजा हरकत के लिए उनका राज्य छिन जा सकता है।

दीवान साहब और महाराज ने इस पर बड़ी देर तक सलाह-मशविरा किया। फिर कलकत्ता के एक ब्रिटिश जौहरी के नाम तार भेजा गया कि, फौरन नमूने के लिए कुछ कीमती हीरे की अँगूठियाँ भेज दो।

लगभग पचास अँगूठियाँ आ गयीं। महाराज ने उन्हें सीधे उन ब्रिटिश अधिकारी की धर्मपत्नी के पास भिजवा दिया। महाराज और दीवान साहब का यह खयाल था कि, मेमसाहिबा एक या दो अँगूठी चुन कर लेंगी और बाकी वापस भेज देंगी। पर थोड़ी देर बाद मेमसाहिबा के पास से उत्तर आ गया—"आपकी भेजी हुई सौगात के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया!"

दो-तीन दिन के बाद कलकत्ता के जौहरी का तीन लाख रुपयों का बिल भी आ गया। पर महाराज को इसका अफसोस न था। उन्हें तो बेहद खुशी थी कि, राज्य बच गया!

महाराज ने शेर के शिकार का जो व्रत ले रखा था, उसका वे ठीक तरह से पालन कर रहे थे। दस साल के दरम्यान वे सत्तर शेरों का शिकार कर चुके थे; किंतु उसके बाद उनके व्रत में एक विघ्न आ खड़ा हुआ। ऐसा लगा कि, प्रतिबंधपुरम् के जंगलों में शेर बचे ही नहीं।

परेशान महाराज ने एक दिन दीवान साहब को बुला कर कहा—"दीवान साहब, जल्दी यह पता लगाइये कि, किन-किन रियासतों के जंगलों में कितने शेर रहते हैं? फिर पता लगायें कि, जिस राज्य में शेर हैं, उस राज्य के राजा की ब्याहने-योग्य कोई कन्या भी है या नहीं? मैं अब शादी करना चाहता हूँ।"

दीवान साहब ने पूरी ईमानदारी के साथ महाराज के हुक्म की तामील की और एक दिन बड़े धूम-धाम से महाराज की शादी हो गयी। उसके बाद, महाराज जब कभी अपने ससुराल जाते, कम-से-कम चार-पाँच शेर अवश्य मार लाते। जब ससुराल के शेर भी खत्म हो गये, तो खालों को गिन कर देखा गया। संयोग ऐसा कि, वे निन्यानबे ही निकले।

महाराज को जब मालूम हुआ कि, सौ में सिर्फ एक की ही कसर रह गयी है, तो बहुत उतावले हो उठे। यों उन्हें यह भी याद था कि, इस आखिरी शेर के विषय में उन्हें अत्यंत सावधानी बरतनी होगी। स्वर्गीय प्रधान ज्योतिषी ने जो चेतावनी दे रखी थी, महाराज वह भूले नहीं थे। महाराज ने ढिंढोरा पिटवा दिया—"जो व्यक्ति शेर पाये जाने की खबर देगा, उसे राज्य से इनाम मिलेगा!"

इनाम का प्रभाव अथवा महाराज का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाग्य ! उनकी रियासत के एक पहाड़ी गाँव में बकरियाँ अचानक गुम हो जाया करती थीं। उस प्रदेश में कादर मियाँ और वीरास्वामी नायक्कर 'एक हड़प में पूरी बकरी निगलनेवाले' के नाम से मशहूर थे। किंतु पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि, ना, उन्होंने इस बार कुछ नहीं किया था। स्वभावतः ही यह मान लिया गया कि, शेर आया होगा।

शिकार की तैयारी की गयी और महाराज इस बार पूरी सावधानी से चले। पर शेर आसानी से मिला नहीं। शायद वह महाराज को खिझा रहा था। महाराज को भी जिद हो गयी कि, बिना शेर मारे जंगल से बाहर नहीं जायेंगे। उन्होंने दीवान साहब को बुला कर आदेश दिया– "बड़ा बदतमीज शेर है। इस गाँव की जमीन की लगान दुगुनी कर दीजिये और जल्दी से शेर को दुरुस्त करने का कोई उपाय कीजिये, अन्यथा दीवानी से इस्तीफा देकर जाइये !"

दीवान साहब अच्छी तरह समझ गये कि, महाराज को अगर शेर न मिला, तो अनर्थ हो जायेगा। बहुत सोच-विचार करने के बाद, उन्हें उस बूढ़े शेर की याद आयी, जिसे वे अपने शौक के लिए अत्यंत गुप्त रूप से मद्रास के 'पीपुल्स पार्क' से खरीद लाये थे। उन्होंने चैन की साँस ली।

उसी रात, आधी रात के सन्नाटे में, जब सारा शहर सो गया था, दीवान साहब और उनकी बूढ़ी धर्मपत्नी ने बड़े प्रयत्न से उस बूढ़े शेर को खींच कर गाड़ी पर चढ़ाया और दीवान साहब ने खुद गाड़ी 'ड्राइव' की। फिर महाराज जिस जंगल में शिकार खेल रहे थे, उस जंगल के निकट वह बूढ़ा शेर उतारा गया।

दूसरे दिन, जब महाराज शिकार के लिए निकले, तो वह बूढ़ा शेर सामने जाकर ऐसे खड़ा हो गया, मानो पूछ रहा हो–"क्या आज्ञा है, महाराज ?"

महाराज ने बड़े उत्साह के साथ बंदूक निकाली और गोली दाग दी। निशाना अचूक था। शेर जमीन पर लुढ़क गया !

महाराज के उछाह-उत्साह का क्या कहना ? उन्होंने सौवाँ शेर भी मार लिया था। ज्योतिषी की भविष्यवाणी झूठी हुई थी। महाराज ने आदेश दिया– "सौवें शेर का बड़ी धूमधाम से जुलूस निकाला जाये।" फिर वे वहाँ एक क्षण भी नहीं ठहरे– अपनी मोटर में चढ़ कर महल की ओर चल पड़े।

उनके जाने के बाद, उनके साथ के शिकारी जब शेर के निकट पहुँचे, तो वह अपनी दोनों आँखों से टुकुर-टुकुर उन्हें देखने लगा। शिकारी समझ गये। उसे महाराज की गोली लगी ही नहीं थी। वह तो गोली की आवाज सुन, भय से मूर्च्छित हो, लुढ़क पड़ा था !

लेकिन महाराज को यह मालूम हुआ, तो अनर्थ हो जायेगा, यह सोच कर तय किया गया कि, महाराज के कानों में इसकी भनक तक नहीं पड़े। स्वभावतः ही तब एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकारी शेर के बहुत निकट जा खड़ा हुआ और गोली चला दी। शेर बिना चीखे-चिल्लाये मर गया। फिर मरे हुए शेर का शानदार जुलूस निकाला गया और उसे दफना कर एक समाधि बनवा दी गयी!

× × ×

उपर्युक्त घटना के कुछ ही दिनों के बाद महाराज के सुपुत्र की तीसरी वर्षगाँठ आयी! अब तक शिकार की ही धुन में लगे रहने के कारण, महाराज ने अपने राज्य के उत्तराधिकारी युवराज की ओर पर्याप्त ध्यान ही नहीं दिया था। किंतु अब उनका ध्यान जब बच्चे की ओर आकृष्ट हुआ, तो उसका जन्मदिवस बड़ी धूम-धाम से मनाने का आयोजन किया गया।

अपने बच्चे को कोई अच्छा उपहार देने के लिए महाराज प्रतिबंधपुरम् के बाजार में पहुँचे। एक भी दूकान नहीं छोड़ी; पर उनके मन-मुताबिक कोई चीज नहीं मिली। आखिर एक खिलौने की दूकान पर उन्हें लकड़ी का एक शेर दिखायी दे गया। 'शेरशाह' महाराज को वह बहुत भा गया।

लकड़ी के उस बाघ का मूल्य केवल सवा दो आना था। लेकिन महाराज जब ग्राहक के रूप में आये थे, तो उतना कम दाम कैसे बताया जाता? बताने से हो सकता था कि, दूकानदार को कड़ी-से-कड़ी सजा भुगतनी पड़ती! इसलिए दूकानदार ने कहा—"महाराज! ऐसी कलाकृति आपको कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी! दाम भी ज्यादा नहीं, सिर्फ तीन सौ रुपये हैं!"

"बहुत अच्छा! युवराज के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में हम तुम्हारी यह भेंट सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं!"—कह कर महाराज उस खिलौने को ले चले आये।

युवराज के जन्मदिवस को महाराज और युवराज लकड़ी के उस शेर को लेकर खेलने लगे। वह खिलौना किसी गँवार बढ़ई के अनसधे हाथों का बना था; इसलिए उस पर तीलियाँ उभर आयी थीं।

महाराज जब उसे हाथ में लेकर खेल रहे थे, तब संयोगवश उनके दायें हाथ में एक तीली चुभ गयी। महाराज ने उसे बायें हाथ से निकाल फेंका और बच्चे के साथ खेलने में लग गये!

किंतु दूसरे दिन, जहाँ तीली चुभी थी, वहाँ एक छोटा-सा फोड़ा निकल आया।

दो दिनों के अंदर वह फोड़ा एक बड़े घाव के रूप में बदल गया और शीघ्र ही उसका जहर हाथ-भर में फैल गया!

मद्रास से एक साथ तीन बड़े 'सर्जन' बुलाये गये। उन तीनों ने मिल कर निश्चय किया कि, 'आपरेशन' करना चाहिए। 'आपरेशन' हुआ और उसके बाद सर्जनों ने बाहर आकर सूचना दी—"आपरेशन बड़ा सफल रहा; पर महाराज मर गये।"

ज्योतिषी की भविष्यवाणी सच्ची हुई। महाराज सौवें शेर का शिकार नहीं कर सके; पर इससे उन्हें 'शेरशाह' के नाम से नहीं पुकारा जाये, ऐसा तो कोई कारण नहीं दीख पड़ता!

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ोसी होकर भी

विचारों में वर्षों का अन्तर

देखने में तो दोनो पड़ोसी हैं—एक सा पहरावा, एक सा रहन सहन, परंतु कई बार साथ के पड़ोसिओं के विचारों और आदर्शों में पीढ़ियों का अन्तर होता है!

मनुष्य स्वभाव की जानकारी बड़ा दिलचस्प काम है। हिंदुस्तान लीवर में, 'मार्केटिंग रिस्र्च' के आधुनिक विज्ञान द्वारा, हम भारत के हर भाग के निवासियों के स्वभाव की सूचानाएं प्राप्त करते रहते हैं। उन की मांगें, उमंगें, उन की पसंद नापसंद ... हमें आप से परिचित कराती हैं; और आप की पसंद के अनुसार उत्पादन प्रस्तुत करने में हमारी सहायता करती हैं—ऐसे उत्पादन जो सस्ते भी हों और आप की रुचि और रहन सहन के अनुसार भी!

दूसरे शब्दों में 'मार्केटिंग रिस्र्च' द्वारा आप हमें नई नई राहें सुझाते हैं—क्योंकि हमारे उत्पादन आखिर आप ही के लिये तो हैं!

हिंदुस्तान लीवर का आदर्श
घर घर की सेवा

HINDUSTAN LEVER LIMITED
THE SEAL OF QUALITY

HLL. 10-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब सिर्फ़ उम्दा सिगरेट से ही संतोष हो

पनामा पीजिये

ये आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती हैं

GTC
GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता:
गोल्डन टोबैको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४.

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रिय उद्योग

Green' Adv.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेवाड़ की शौर्यप्राणा भूमि की भाँति भीलवाड़ की भूमाता भी अजर-अमर वीरात्माओं को जन्म देती आयी है। इसी भूमि के दो नर-पुंगवों की एक लोककंठ-निवासिनी कथा हम 'नवनीत' के पाठकों के मनोरंजनार्थ यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। इस कथा के आधार पर हेमेन्द्रनाथ ने अंग्रेजी में एक युग-प्रवर्तक उपन्यास लिखा है, जो लंदन और न्यूयार्क से एक साथ प्रकाशित हो रहा है। यह कथा इसी उपन्यास के आधार पर साभार प्रस्तुत की जा रही है।

★

ठाकुर की आत्मा

सतपुड़ा की टेकड़ियों की गोद में बसे तलावड़ी गाँव का अपना निजी व्यक्तित्व है। आसपास के इलाके में—चम्बल के दक्षिण में, जहाँ पार्वती, कालीसिंध और नेवज-नदियाँ अपनी छोटी-छोटी सहायक सर-सरिताओं के साथ प्राणवाहिनी शिराओं की भाँति खींचीवाड़े और ऊमट-वाड़े के भूभागों को सींचती हैं, वहाँ तलावड़ी गाँव का महत्व छोटे-छोटे बच्चों को भी याद है। यहाँ की भूमि के मुख में कितनी ही कहानियाँ भरी पड़ी हैं। सात टेकड़ियों की गोद में बैठी तलावड़ी—नानी की कहानी में आये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सात भाइयों के बीच एक बहन– सुरम्य ही नहीं, अन्नपूर्णा भी है। गाँव से नीचे उतर कर एक बावड़ी है– ७-८ फुट का छोटा-सा कुआँ– जिसमें सवेरे-शाम बारह गाँव के मवेशी पानी पीते हैं और पानी भी इतना सहज कि, ८-१० फुट की रस्सी बहुत काफी होती है। मारवाड़ की एक बेटी जब यहाँ बहू बन कर आयी, तो इस बावड़ी को कई महीनों तक आश्चर्यचकित नजरों से देखती रही। पितृदेश के जल-कष्ट को याद कर अक्सर वह अपनी सहेलियों से कहती–"बस चले, तो ऐसी झरी को मारवाड़ ले जाऊँ!"

इस बावड़ी के निकट एक टूटा प्राचीन परकोटा है। अच्छी-खासी तगड़ी भैंस के आकार की शिलाओं से चुना गया यह परकोटा, कहते हैं, पहले किसी तालाब का बाँध था। तालाब यहाँ अब भी है। वर्ष में करीब छः महीने यह तालाब, काँच के बेतरतीब कटे टुकड़े की भाँति नीले आसमान को अपने भीतर प्रतिबिम्बित किये, बहा करता है। दो पहाड़ियों को काटता हुआ एक गहरा, भयावना नाला इसके पानी को घोर जंगलों के बीच से समेट कर चार कोस की दूरी पर बहनेवाली नेवज नदी की ओर ले जाता है। सदियों से शेर-चीते इसी नाले के जल से अपनी प्यास बुझाते आये हैं। इस जंगल की वनस्पति का ही नहीं, पशु-पक्षियों का भी यह नाला प्राण-प्रवाह है। मगर सबसे बड़ा महत्व इस नाले का यह है कि, जोधा नामक एक भील-युवक ने इस नाले के किनारे एक गाय को शेर के मुँह में से छीनते हुए अपनी बलि दे दी थी। बीच जंगल में जोधा का स्मारक अब भी इस बलिदान की बुलंद गवाही दे रहा है।

जोधा सिर्फ बीस-बाईस वर्ष का अल्हड़ जवान था। खिले फूल-सा प्यारा-प्यारा मुखड़ा, जिस पर खंजनों-जैसी चपल काली आँखें। कद कोई खास लम्बा नहीं और शरीर भी इतना पुष्ट नहीं कि, देखने में गबरू-पट्ठा लगे। मगर तेजस्विता जोधा में ऐसी थी कि, प्रकट हुए बिना नहीं रहती थी। चार बहनों के बाद, देवी के द्वार पर महीनों गंगा ने आँचल बिछाया, तब आया था जोधा उसकी कोख में। पुरखों का एक खेत बेच कर गंगा ने अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए मीना गुजरी की काली गाय खरीदी थी। जमना था उसका नाम। शाम को मदमाती चाल से जब वह घर लौटती, तो लोग एकटक देखते रह जाते। शाही नस्ल की यह कामधेनु भटक कर ही शायद इस गाँव में आ गयी थी। गंगा के घर वह फलवती भी ऐसी रही कि, बाड़ा भर गया। गंगा रोज उसकी बलैयाँ लेती– सुहला-सुहला कर उसे चारा खिलाती।

जमना का दूध पीकर जब जोधा सयाना हुआ, तो दूसरे ग्वालों के साथ वह भी गाय चराने जाने लगा। साल-भर के भीतर ही उसने पास-पड़ौस के सारे जंगल छान डाले। बढ़िया-से-बढ़िया जगह वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी गायों को ले जाता और गुलेल से बंदरों का पीछा करता हुआ उन्हें चराता रहता।

एक शाम को जोधा जब गायों के आगे-आगे एक पहाड़ी से नीचे उतर रहा था, तो क्या देखता है कि, एक तेंदुवा उसे देख कर गुर्रा रहा है। जोधा ठिठक कर खड़ा रह गया। आगे बढ़ता हुआ तेंदुवा भी वहीं रुक गया। दोनों एक-दूसरे को ताकते निश्चल खड़े रहे। जोधा के मन में तेंदुवे के छल-कपट की सैकड़ों कहानियाँ उभर आयीं। शेर अपने रास्ते जाता, अपने रास्ते आता है— भूखा होने पर ही हमला करता है; मगर तेंदुवा तो लम्पट ठहरा— शैतानी किये बिना चकता नहीं। आखिर जब तेंदुवा गुर्राता ही रहा और अपनी जगह से नहीं हिला, तो जोधा स्वयं आगे बढ़ा। अपनी कुल्हाड़ी तानते हुए, वह तेंदुवे की तरफ उसके सम्भाव्य पैंतरों की कल्पना करते हुए आगे चला। तेंदुवा और भी जोर से गुर्राया; मगर जहाँ बैठा था, वहीं बैठा रहा। एक कदम भी हिला नहीं। जोधा और भी सतर्क हो गया। तीन-चार कदम वह और भी बढ़ा। तेंदुवा गुर्राता ही रहा— ठीक उस कुत्ते-जैसा, जिसे कई दिनों से जंजीर से बाँध रखा हो। ज्यों-ज्यों जोधा के कदम आगे बढ़ते जाते थे, तेंदुवे की गुर्राहट बढ़ती जाती थी।

वनदेवता

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

दोनों हाथों में कुल्हाड़ी ताने हुए जोधा तेंदुवे के एकदम निकट पहुँच गया। वह सोच ही रहा था कि, तेंदुवा अब उस पर लपकेगा; मगर यह क्या, वह तो अपनी बैठक से डिगा तक नहीं। जोधा के हाथों की उठी कुल्हाड़ी तनी-की-तनी ही रह गयी। वह कुछ भी नहीं समझ सका— यह गुर्रानेवाला तेंदुवा मुझ पर आक्रमण क्यों नहीं करता है? उसने सोचा, शायद खूब खाये बैठा है या आदमी का खून इसकी दाढ़ में लगा नहीं हो। जोधा ने भी तेंदुवे पर कुल्हाड़ी नहीं चलायी— क्यों रास्ते-चलते लड़ाई मोल ली जाये। वह उसके पास से ही एक पगडंडी की तरफ मुड़ गया और गायों को लेकर तालाब की तरफ चल दिया। मुड़ कर जब वह थोड़ी दूर निकल गया; तो उसने देखा कि, धीरे-धीरे गुर्राता हुआ वह तेंदुवा भी उस पगडंडी पर उसके पीछे-पीछे आ रहा है। शाम हो रही थी। जोधा ने ज्यादा रुकना उचित नहीं समझा। वह तालाब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर आकर गायों को पानी पिलाने लगा।

रात को अपने हमजोली ग्वालों से उसने तेंदुवे की इस अद्भुत भेंट का जिक्र किया, तो जैसे चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सब सुनते रहे। कोई कुछ नहीं बोला। जोधा ने कहा—"मेरे मन में तो बहुत आया कि, कुल्हाड़ी से उसके टुकड़े कर दूँ; मगर न-जाने क्यों, मेरे हाथ नहीं चले। बस, पाँव चलते रहे।" शंकर ने कहा—"जोधा, उस टेकड़ी पर अब कभी मत जाना। वहाँ 'ठाकुर' रहता है। वह किसी को नहीं छोड़ता।" जोधा ने पूछा—"कौन ठाकुर रे, कल ही जाकर देखता हूँ उस ठाकुर को!"

रात को जब उसका पिता अमरसिंह खाना खा रहा था, तो उसे भी जोधा ने उस तेंदुवे की बात बतायी। सुना, तो अमरसिंह के हाथ का कौर हाथ ही में रह गया। और, गंगा तो जैसे जिस दीवार से टिक कर बैठी थी, उसके साथ एकरूप हो गयी। एक क्षण रुक कर अमरसिंह ने कहा—"जोधा, अब तू काफी बड़ा हो गया है। गायें चराने मत जा। मैंने इस साल दो खेत और लिये हैं, उनके लिए मुझे तेरी जरूरत है। कल से तू मेरे साथ चलना।" गंगा अमरसिंह का अंदरूनी संकेत समझ गयी, बोली—"मैं तो तुझे कब से समझा रही हूँ कि, तू गायें चराना अब छोड़ दे। कल से खेत पर जा। अगले साल तेरा ब्याह करना है।" जोधा के कानों ने दोनों की बात सुनी; मगर दोनों ने जिन भेद-भरी आँखों से एक-दूसरे की तरफ देखा, उसे जोधा समझ नहीं सका।

थोड़ी देर चुप रह कर उसने माँ से पूछा—"माँ, लोग कहते हैं कि, वहाँ कोई ठाकुर रहता है! कौन है यह ठाकुर?" गंगा क्षण-भर सोचती रही। क्या कहे जोधा से? ठाकुर तो प्रेत है— पवित्र प्रेतात्मा कह लीजिये— इस इलाके में आज भी उसकी दुहाई चलती है। भय के कारण नहीं, हृदय की पूरी श्रद्धा से प्रेरित होकर ही लोग उसकी स्मृति को इतना आदर देते हैं। ठाकुर किसी को कष्ट नहीं देता; उल्टे दुःख ही हरता है। मगर प्रायः यह भी होता है कि, जिस पर ठाकुर कृपालु हो जाता है, आजीवन उसका साथ नहीं छोड़ता। उसे अपना माध्यम बना कर इलाके के निवासियों को व्याधिमुक्त करता रहता है। गंगा को ऐसे कुछ व्यक्तियों का पता है, जो ठाकुर के माध्यम रहे हैं। अक्सर उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के ऊपर ठाकुर की सेवा का अच्छा असर नहीं पड़ा है। उनमें कुछ थोड़ी-सी भावुकता, जिद पकड़ जाने की प्रवृत्ति और सांसारिकता से धीरे-धीरे पराङ्मुख होने की भावना आ जाती है। ये परिवर्तन गंगा के मातृमोह को भले नहीं लगते थे! वह जोधा को अपने पति का प्रतिरूप बनाना चाहती थी— जोधा का पिता सफल किसान, दस गाँव का आदरपात्र और व्रतनिष्ठ अनुरागी गृहस्थ था। उसे पाकर गंगा ने किस दिन अपने भाग्य को नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सराहा। इस प्रसंग में, कौन स्त्री उससे ईर्ष्या नहीं करती थी!

क्षण-भर के भीतर ही ठाकुर को लेकर ये सब झाँकियाँ उसके मानस पर चित्रित हो गयीं। उसने विगलित मन से, किंतु प्रत्यक्षतः एकदम बेपरवाह स्वर में कहा—"यहाँ के लोग तो अंधविश्वासी हैं। भूत-प्रेत-जैसी झूठी बातों में विश्वास करते हैं। ठाकुर-वाकुर कोई कुछ नहीं है रे! यों ही वहम है लोगों का! तू जा, जाकर सो जा!"

मगर जोधा तो इससे तुष्ट होनेवाला नहीं था। एक दिन गोपा भाट के यहाँ जाकर ठाकुर के बारे में सब-कुछ सुन आया। ठाकुर के प्रसंग ने उसके रोम-रोम को उत्तेजित कर दिया। कई दिनों तक वह सपने में ही नहीं, दिन में भी ठाकुर को, उसकी कहानी को, मानो प्रत्यक्ष देखता रहा। किसी जमाने में तलावड़ी गाँव का मालिक एक ठाकुर था—ठाकुर नवलसिंह। इस गाँव के साथ-साथ एक सौ आठ गाँव और उसके कब्जे में थे। रियासत तो उसकी यह छोटी थी; मगर ठाकुर नवलसिंह का रौब-दौब चम्बल के किनारों तक गूँजता था। उसका शौर्य, उसका दान-धर्म और प्राण देकर भी स्त्रियों और गौओं की रक्षा की उसकी प्रतिज्ञा आज भी हर भाट-बलाई के गीतों में बुलंद है।

× × ×

खिलजी का साला चारों तरफ के राजाओं को जीतता, उनकी बेटियाँ ब्याहता और गौओं को काटता चम्बल पार कर तेजी से बढ़ता आ रहा था। उसकी विजयवाहिनी के सामने रेत के ढेर की तरह गढ़-पर-गढ़, किले-पर-किला गिरता जा रहा था। नवलसिंह तक जब खिलजी की तूफानी फौज की खबर पहुँची, तो उसने तत्काल ही अपने भील-सरदारों की सभा बुलवायी।

लक्ष्यभेद

[चित्र : श्यावक्ष चावड़ा]

रात-भर सभा होती रही। कोई निश्चय नहीं हो सका। आखिर जब इसी प्रकार निर्णय-विहीन सभा चलती रही, तो नवलसिंह का सोलह वर्ष का भतीजा मदनसिंह अपने को काबू में नहीं रख सका। बुजुर्गों की उस भरी सभा में वह सिंह-शावक तमतमा कर बोला—"आप लोग सभा करते रहिये, 'क्या करना चाहिए, क्या न करना चाहिए?' प्रश्नों के उत्तर खोजते रहिये। आपके पास समय है। मगर मेरे पास समय नहीं है। माँ-बहनों की लाज लूटी जा रही है, गौओं को सरे-आम काटा जा रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेक्सोना साबुन में 'कॅडिल'—तेलों का एक विशेष मिश्रण—होता है जो जिल्द को स्वस्थ बनाने के साथ साथ आप की असली सुन्दरता को उजागर करने में भी सहायक है।

'कॅडिल' युक्त एक मात्र साबुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। रिआया अपनी खड़ी फसलें छोड़-छोड़ पराये राज्यों में शरण-संरक्षण खोज रही है और यहाँ हम लोग रात-रात-भर बैठ कर भी कोई निर्णय नहीं कर पा रहे हैं। शौर्य और प्रजा के परित्राण की साँसों पर जीनेवाली भील-जाति के लिए यह कभी भी शोभनीय नहीं है। काश, आज मेरे पिताजी जीवित होते! आज वे होते, तो इस भीलवाड़े को यह पराभव देखना नहीं पड़ता— धर्म-रक्षा के लिए सदैव हथेली पर प्राण रखनेवाले भील-सरदारों को रात-रात-भर यहाँ बैठ कर सोचना नहीं पड़ता।"

उस अर्ध-विकसित नवयुवक की यह आवेशमयी भर्त्सना सुन कर सरदारों की आँखें आवेश में चमक उठीं। ठाकुर नवलसिंह की प्रसन्नता का तो वारापार न था। अपने भतीजे पर उसे सदैव बड़ा गर्व रहा था। उसने मदनसिंह को संकेत से बिठाया और मेघ-गर्जन-जैसे स्वर में कहा—"निर्णय तो सारा हो चुका है। बस, एक सवाल तय होना बाकी है—इसके तय होते ही युद्ध का नकारा बज उठेगा। .... आक्रमण की व्यूह-रचना के अनुसार सारी फौज तीन भागों में बाँट दी जायेगी। एक भाग किले में रहेगा। बाकी के दो भाग दायें-बायें से शत्रुओं को खदेड़ते हुए किले के निकट लायेंगे। शाही फौज विशाल है और आसपास के राजाओं की मदद भी उसे मिल रही है, इसलिए सीधी-सम्मुख जम कर लड़ाई हमारे लिए हितकर नहीं है। चारों तरफ से छापे मारते हुए ही हमने युद्ध करने का निश्चय किया है। मगर छापे मारने की इस प्रणाली के पीछे भी एक उद्देश्य है— वह है, शाही फौज को इन सातों टेकड़ियों के नीचे, ठीक किले के सामने, लाना और फिर उसे यहाँ से निकलने नहीं देना। किला हमारा अजेय है। वर्षों तक प्रयत्न करके भी उसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता। सबसे मुख्य बात यही है कि, सेना को किसी भी मार्ग से भागने न दिया जाये। यदि शाही फौज भाग कर किसी पहाड़ी पर चढ़ गयी, तो हमारी हार निश्चित है; क्योंकि पहाड़ी पर से किले का ध्वंस बिल्कुल आसान है।

विदावेला

रानी ने कहा—"कर्तव्य से बड़ा कभी मनुष्य हुआ है क्या? कर्तव्य की डोर पर तो परमेश्वर भी नाचे हैं!"

".... यह तो हमारी व्यूह-रचना हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुविधा और बढ़िया काम के लिए

ऊँचे दर्जे की रचना

प्रभात प्रेशर कुकिंग स्टोवों, ब्लो लैम्पों, गैस लाइट लैम्पों और गैस लाइट मैण्टलों का उत्पादन भारत में जब सन् १९२८ में शुरू हुआ उस समय ये अपने दर्जे में सर्व प्रथम थे।

तब से साल-पर-साल निरंतर सुधारों के फल-स्वरूप आज भी ये सर्वोत्तम माने जाते हैं ...

प्रभात

उत्पादन

"भारत के सर्वप्रथम... और आज भी सर्वोत्तम!"

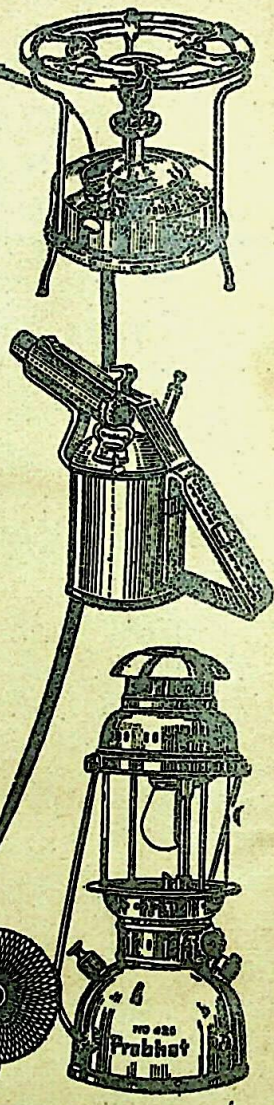

प्रभात (स्टोव एण्ड लैम्प) प्रोडक्ट्स कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड
नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई – १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब सवाल आता है सेनापति का। यों तो सारे आक्रमण का नेतृत्व मैं स्वयं करूँगा; किंतु जब तक शाही फौज किले के नीचे नहीं आ जाये, तब तक मैं किले और उसके आसपास के व्यूह को छोड़ कर शाही फौज से सीधे लड़ने नहीं जा सकता। सारे युद्ध को परिचालित करते हुए मैं अकेला ही किले और इन सात पहाड़ियों के व्यूहों की रक्षा करूँगा— फौज की जरूरत मुझे नहीं है। इस प्रकार हमारी सारी फौज शाही सैन्य से लड़ने के लिए पूर्णतः मुक्त हो जायेगी।

"... हाँ, तो जरूरत है ऐसे सेनापति की, जो शाही फौज को जाकर छेड़े और दायें-बायें से परेशान करता हुआ, मारता-दबाता, यहाँ तक ले आवे। यों तो यहाँ उपस्थित प्रत्येक सरदार इस काम के लिए उतावला बैठा है; मगर किसको चुना जाये और किसको नहीं, यह सवाल काफी जटिल हो गया है।" नवलसिंह कुछ रुके और नम्र दृष्टि से एक बार सभा-भवन में चारों तरफ देखा— एक जगह उनकी नजर टिकी। वे बोले— "हमारा सौभाग्य है कि, हमारे बुजुर्ग हीराजी भी यहाँ बैठे हैं। इस सौ वर्ष की आयु में भी ये युद्धस्थल में हमारे साथ रहेंगे। अतः इस प्रश्न का निर्णय अब मैं इन पर ही छोड़ता हूँ — जैसा इनका आदेश होगा, सबको शिरोधार्य होगा!...."

गेहुवें रंग के चेहरे पर बर्फ-जैसी सफेद लम्बी दाढ़ी को हाथ से सँवारते हुए, दीर्घायु के कोटर में बैठी उन दो तीव्र आँखों से सारे उपस्थित योद्धा-समुदाय को सम्बोधित कर, भीष्म पितामह-जैसे हीराजी बोले— "ज्यादा विचार का समय नहीं है। यों ही काफी वक्त हमने खो दिया है। अब काम शुरू कर देना चाहिए। मैं स्वयं इस कार्यभार को अपने ऊपर लेता हूँ और मेरा सहायक

युद्ध
[चित्र : जार्ज केयट]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

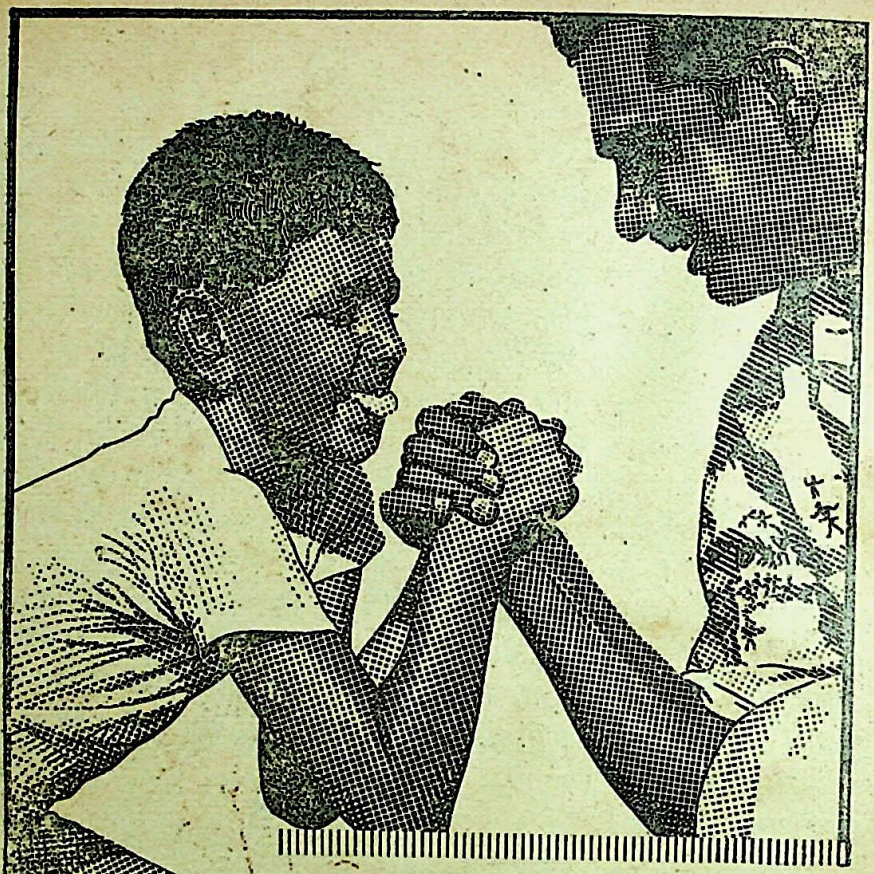

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं

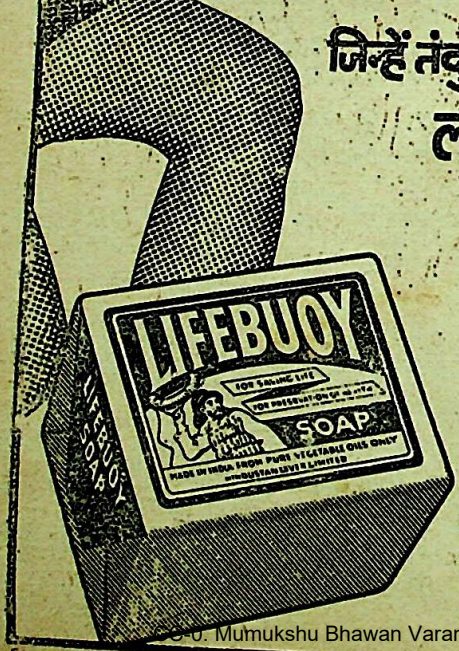

खेल कूद हो या काम काज हम गंदगी से बच नहीं सकते। और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को ख़तरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के इन कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है।

हर रोज लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये यह आपको ताज़गी देता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहेगा, यह कुँवर मदनसिंह !"

बस, सभा भंग हो गयी और सरदारगण अपने-अपने निर्धारित कामों पर चले गये। रह गये हीराजी और कुँवर मदनसिंह ! कानों के पास मुँह लगा कर दोनों काफी देर तक बातें करते रहे। फिर मदनसिंह मुस्कराता हुआ उठा और हीराजी के चरण छूता हुआ सीधा तन कर खड़ा हो गया। हीराजी ने आँखों के पुलक में आशीर्वाद बरसाते हुए उसकी पीठ थपथपायी और मृदु आदेश के स्वर में कहा— "देखभाल कर काम करना। अपनी सुरक्षा का तो सबसे अधिक खयाल रखना ही; मगर कल सवेरे तक काम भी पूरा करवा लेना। जा, भगवती का नाम लेकर घोड़े पर सवार हो जा !"

किले की खिड़की में से हीराजी और नवलसिंह ने देखा— कुँवर उछल कर घोड़े पर सवार हुआ है और एक ओर को सरपट निकल गया है !

चाँद अस्त हो गया था। पश्चिम के आकाश में एक काला बादल बिल्कुल स्थिर-सा खड़ा था, मानो किसी गंधर्व के अभिशाप से प्रस्तर-शिला हो गया हो। नीचे जमीन पर बारह आदमी काले कपड़ों में लिपटे, साँप की तरह सरकते हुए, शाही खेमे की तरफ जा रहे थे। लश्कर सोया पड़ा था। पूरे वातावरण में सन्नाटा था। वे बारहों आदमी सरकते-सरकते सईसों के डेरों की तरफ आ गये। डेरे के बाहर दो हथियारबंद संतरी पहरा दे रहे थे। आग के पास बैठे, दोनों किसी नर्तकी के रूप-लावण्य की चर्चा कर रहे थे। जमीन पर सरकनेवालों में से दो आदमी आगे बढ़े और भूतों की तरह अचानक प्रकट होते हुए ठीक उन दोनों के सामने खड़े हो गये। संतरियों ने देखा, तो आपा भूल गये। मगर दोनों 'भूत' एक क्षण भी वहाँ नहीं रुके, धीरे-धीरे विपरीत दिशाओं में भागने लगे। संतरियों को होश आया। तलवारें खींच कर उन्होंने दोनों का पीछा किया। दोनों 'भूत' पहले तो रुक गये; मगर फिर भाग खड़े हुए। सिपाही और तेजी से उनके पीछे भागे। इसी बीच बाकी दस आदमी जमीन पर से उठे और घोड़ों की रस्सियाँ खोलने लगे। एक-एक करके घोड़े ओझल होने लगे और एक मुठ्ठी चने चबाये जायें, इतनी-सी देर में तीन सौ घोड़े, नीचे ढाल पर बैठे हीराजी के सामने आ गये।

भीलों के पूज्य शेषनाग

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

मगर हीराजी को इस प्राप्ति से जैसे तुष्टि नहीं मिली—उनकी आँखें रह-रह कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

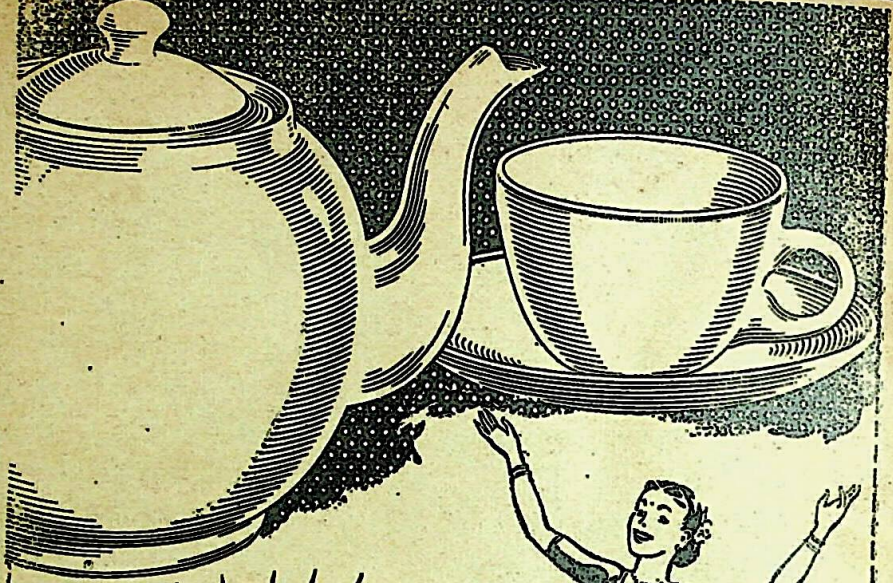

चमक

—जो केवल विम का चमत्कार है!

विम इस्तेमाल कर के देखिये आप हैरान होंगे कि आज से पहले आपको इस का ख़्याल क्यों न आया! चीनी और कांच के बरतनों के लिये इस से अच्छी चीज़ कोई नहीं। विम से साफ़ करने में न देर लगती है न मेहनत! विम से साफ़ की हुई चीज़ें तंदुरुस्ती के लिये सुरक्षित हैं। यह खाने के चिकने धब्बे बिल्कुल साफ़ कर देता है। विम मुलायम है, चिकना नहीं कि बर्तन हाथों से फिसल जायें।

रसोई के बर्तनों के अलावा गुस्लखाने, चिलमचियाँ और फ़र्श भी विम से साफ़ कीजिये जो तंदुरुस्ती का सहायक है। आप के घर की हर चीज़ विम से चमक उठेगी।

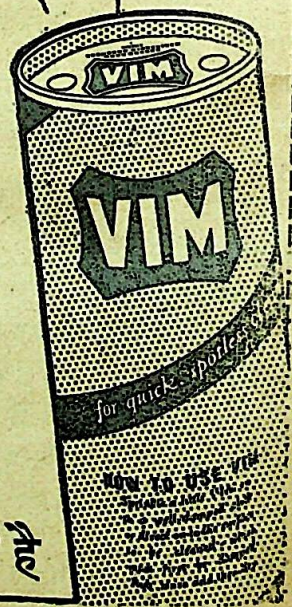

आप के घर को विम की ज़रुरत है

V. 93A-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेमों के पूर्व-दिशा में अवस्थित पीपल के पेड़ पर जा लगती थीं। हवा का एक तेज झोंका सारे जंगल को आंदोलित करता निकल गया। पीपल के पत्ते बजे और एक छरहरा व्यक्ति एक डाल से सरकता हुआ एक बड़े तम्बू के शिखर पर उतरा। क्षण-भर सारे वातावरण को जैसे नापते हुए उसने कटार से तम्बू में छेद किया। तम्बू के भीतर एक मद्धिम दीपक जल रहा था और उसके सामने एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति बैठा नकशे को देख रहा था। आगंतुक उसके बिल्कुल सामने जाकर खड़ा हो गया। नकशा देखनेवाला व्यक्ति पहले तो चौंका; मगर दूसरे ही क्षण उसने कमर से छुरी निकाल ली। दोनों में हाथापाई शुरू हो गयी। मगर सुदृढ़ शरीरवाले उस व्यक्ति की उस छरहरे आगंतुक की फुर्ती के सामने कुछ न चली। आगंतुक ने उसके मुख में कपड़ा भरा तथा उसे रस्सी से बाँध कर कंधे पर लाद लिया और जैसे आया था, वैसे ही कबंध के सहारे पीपल की डालों में ओझल हो गया।

...पत्ते बजे। जमीन पर किसी के कूदने की आवाज आयी। पहरेदार चौंके। तीन संतरी पीपल की तरफ दौड़े। कुछ नजर नहीं आया। घास के पूल्हे जला-जला कर चौकीदार चौकन्ने थे। इसी बीच दो मशालधारी सिपाही पीपल के पेड़ से कुछ दूर खड़े गूँदी के पेड़ की तरफ भागे। उन्होंने देखा, एक आदमी भाग रहा है। उन्होंने ललकारा। ललकार सारे लश्कर में गूँज गयी। सैकड़ों शरीर सतर्क हो गये। मशालोंवाले सिपाही और आगे बढ़े; मगर जब दो वन-बिलाव एकाएक उछल कर भागे, तो उनके कहकहे रुक न पाये। दोनों को सबने जी-भर गालियाँ दीं और थोड़ी देर में फिर सन्नाटा व्याप गया!

आगे बढ़ कर हीराजी ने मदनसिंह के कंधे के बोझ को नीचे उतरवाया और काफी देर तक उसे गले से लगा कर खड़े रहे। उसके सिर को सुहलाते और फुस-फुसाते रहे—"बिल्कुल अपने बाप की मूर्ति है। वही शौर्य, वही साहस, वही कौशल!"

सवेरे खिलजी-लश्कर में तहलका मच गया। खेमे का शिखर कटा हुआ था। शाही सेनापति शमशुद्दीन वहाँ नहीं था। जगह-जगह रक्त की बूँदें पड़ी थीं और सारा खेमा अस्त-व्यस्त था। हाँ, दीपक के पास, कटार के नीचे, एक चिट्ठी रखी थी। खोल कर पढ़ा गया, तो उसमें लिखा था—"भीलवाड़े में आना यम की दाढ़ में कदम रखना है। जान की खैर चाहते हो, तो यहाँ से वापस भाग जाओ और अगर हेकड़ी है, तो अपने सरदार को हमारी कैद से छुड़ाओ। तलावड़ी के किले में तुम्हारा सेनापति कैद है।"

किंतु सवेरा होने के साथ हीराजी और मदनसिंह ने तीन सौ घुड़सवारों के साथ शाही फौज पर ठीक सामने से जाकर धावा बोला दिया। उधर काली घटा की भाँति खिलजी-लश्कर भी उमड़ पड़ा। मगर जैसे ही दोनों दलों में मुठभेड़ हुई,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों को सुन्दर रखने के सरल साधन

टाटा का
सुगन्धित नारियल का तेल और शैम्पू

दि टाटा ऑयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीराजी के अश्वारोही भागने लगे। विजय के लोभ में खिलजियों ने तेजी से उनका पीछा किया। हीराजी का दल फिर रुका और मुकाबले के लिए खड़ा हो गया। समुद्री तूफान-सा उमड़ता खिलजी-लश्कर फिर तलवारें निकाल कर भीलों पर टूट पड़ा। भीषण युद्ध होने लगा। तीन सौ घुड़सवार मानो तीन लाख थे। दो-अढ़ाई घड़ी तक भीलों ने शाही फौज को जैसे रौंद दिया। इसी बीच दायें और बायें से तीरों की बौछारें शुरू हो गयीं। तीरों और गोफनों के पत्थरों से खिलजियों के सैनिक मक्खियों की तरह भिनभिना कर मरने लगे। इधर हीराजी के घुड़सवार फिर भागे। दायें-बायें से त्रस्त शाही फौज ने तेजी से उनका पीछा किया। अब उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम की टेकड़ियों से लश्कर पर बाण-वर्षा शुरू हो गयी।

शाम हुई, तो ठाकुर नवलसिंह और हीराजी को सारी व्यूह-रचना और सफलता पर संतोष था। अल्पकालीन भेंट के बाद दोनों फिर अपने-अपने निर्धारित मोर्चों पर डट गये।

किंतु यह रात बड़ी विश्वासघातिनी निकली। भोजगढ़ और किशनगढ़ के राजाओं ने रातों-रात चल कर तलावड़ी पर हमला बोल दिया। नवलसिंह का दर्प इन राजाओं की आँखों में वर्षों से खटक रहा था। किले की रक्षा में नवलसिंह ने एक पहर तक इन फौजों का सामना किया। सिंह की भाँति अपने चुने हुए भील-सरदारों के साथ वे इन फौजों से लड़ते रहे। छः-छः बार उन्होंने तलवार की तुमुल मार से इन फौजों को पीछे खदेड़ा; किंतु अकेले हजारों के साथ कब तक लड़ते? नवलसिंह का घोड़ा गिर पड़ा। कुछ देर तक वे पैदल ही लड़ते रहे और बढ़ती हुई फौज को पीछे ढकेलते रहे, किंतु विश्वासघात तो जैसे प्रतिशोध का यही अवसर ताक रहा था। जिस तलवार को वे प्राणों से भी अधिक विश्वस्त संगिनी समझते थे, वह बीच लड़ाई में टूट गयी। तब उन्होंने बर्छा उठा लिया। काफी देर तक वे बर्छे से शत्रुओं को त्रस्त करते रहे। मगर काल को तो यह शौर्य की बलि ही अभिप्रेत थी। पेड़ पर चढ़े उनके ही साले ने एक विष-बुझा तीर ठीक उनके हृदय में मारा। नवलसिंह ने ऊपर देखा, अपने साले को वे पहचान गये। शस्त्र फेंक कर उन्होंने दोनों हाथ जोड़ लिये और हरि-स्मरण करते हुए बोले—"भायले, तेरी खुशी इसी में थी, तो ले, यह भी हो गया। खैर, बहनोई की इतनी-सी पत रख लेना कि, भीलों की कुलदेवी गौमाता पर तेरे जीते-जी कोई शस्त्र न चलावे... बस, हो गया तेरे पाप का प्रायश्चित!"

तब नवलसिंह ने सप्तदुर्गाओं को प्रणाम किया, पूर्वजों के किले को शीश नवाया और भीलवाड़े की उस मिट्टी का एक टुकड़ा सिर पर चढ़ा कर मुख में रखते हुए आत्मोद्गार में कहा—"माँ, आखिरी वक्त भी तुम्हारा स्तन-पी सका नवलसिंह!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी किफ़ायतपूर्ण ! एक ही बार ब्रश करने से

कोलगेट डेन्टल क्रीम

८५% तक

दंत-क्षय और दुर्गंध-प्रेरक जीवाणु ख़त्म कर देता है !

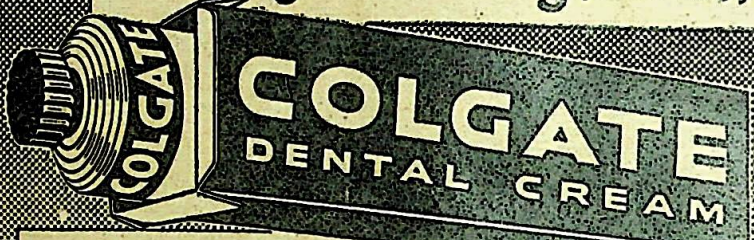

अधिकतम लाभ के लिए सदा उपयोग कीजिए

कोलगेट टुथ ब्रश

निश्चिंत सवारी के लिए

रैले रोबिन हुड

सेन-रैले की प्रत्येक सायकिल सबसे उच्चकोटि के कच्चे माल से बिल्कुल आधुनिक टेक्निकल प्रक्रियाओं द्वारा बनायी जाती है और इसके हर पुर्जे की अलग अलग जाँच होती है। आप इस पर निश्चिंत सवारी कर सकते हैं। इसे चालू रखने में खर्च भी नाममात्र ही होता है।

SEN RALEIGH

सेन-रैले

RC-47 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन्य हो माँ! स्वर्ग से भी प्यारी माँ! नवलसिंह का नश्वर शरीर तुम्हारी रक्षा नहीं कर सका....पर माँ, नवलसिंह की आत्मा तो मरेगी नहीं...आत्मा तो अमर है, अम्बे! तो सुन ले भूमाता, वीरों का स्वर्ग भोगने के बजाय नवलसिंह की आत्मा सदा, सनातन काल तक, इसी भूमि में मँडराती रहेगी।"

इन शब्दों की प्रतिध्वनि खत्म होते-न-होते राजाओं की फौज में भगदड़ मच गयी। हीराजी अपने तीन सौ अश्वारोहियों के साथ राजाओं की फौज पर टूट पड़े और जैसे काले बादलों को चीरती हुई बिजली कौंध जाती है, वैसे वे निर्विलम्ब नवलसिंह के पास आ गये। घोड़े से कूद कर उस नरपुंगव ने नवलसिंह के नीचे गिरते शरीर को अपनी गोद में थाम लिया। नवलसिंह ने आँखें बंद किये ही कहा—"तुम्हें ही याद कर रहा था, दा'जी। गौमाता की रक्षा का वचन दो, तो मेरे प्राण शांति से इस नश्वर शरीर को छोड़ दें।"

सवेरा होते-होते भीलों की चारों तरफ बिखरी सेना किले में आ गयी। सातों फाटक बंद कर लिये गये। छः महीने तक शाही फौजें एक-के-बाद-दूसरी काली घटाओं की भाँति किले को घेरती रहीं; किंतु किले में कोई भी प्रवेश न पा सकी। आखिर खिलजियों ने छल-बल से काम लिया। सौ मोहरें और एक गाँव जागीर में देकर, उन्होंने कालू धोबी को अपनी तरफ फोड़ लिया। कालू ने अवसर पाकर किले की बावड़ी में एक दिन गाय का कटा सिर डाल दिया। सवेरे पनिहारियों ने देखा, तो उनके हाथों से घड़े नीचे छूट पड़े। हीराजी और मदनसिंह ने देखा, तो क्रोध से होंठ काँपने लगे—दोनों ने विह्वलता में आँखें मूँद लीं। बिजली की गति से परमात्मा की मर्जी सब पर प्रकट हो गयी। मदनसिंह ने आखिर मौन भंग किया—"हीराजी, प्यासे मर जाने से तो रणस्थल में मरना श्रेष्ठ है। आप किले की स्त्रियों और गायों को लेकर मेरे ननिहाल, थाने, की तरफ रवाना हो जाइये। वहाँ दस हजार भील प्राण देकर भी इनकी रक्षा करेंगे। आप लोगों की सुरक्षा का संदेश आयेगा, तब तक मैं खिलजियों से लड़ता रहूँगा।"

हीराजी की आँखों में आँसू आ गये। बोले—"कुँवर, कल ही तो तेरा ब्याह हुआ है। अभी तो देवी-पूजन भी नहीं हुआ। हाथ के कंगन भी तो अभी नहीं छूटे हैं। मैं तुझे कैसे जाने दूँगा? कैसे तुझे मरने दूँगा? तू गायों को ले जा। मैं अपने अंतिम श्वास तक यवनों को रोकूँगा!"

मगर ठाकुर नवलसिंह का भतीजा मदनसिंह भला कैसे मान जाता? वीरगति कैसे खो देता? उसने हीराजी के चरणस्पर्श करते हुए कहा—"जीते जी इस भूमि को छोड़ नहीं सकूँगा, दा'जी! पुरखों की आत्माएँ जिस भूमि के अन्न-जल से अमर हुई हैं, उस माताभूमि से एक क्षण के लिए भी दूर नहीं जा सकूँगा!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/LIC-26 Hindi

प्रथम महत्वपूर्ण परीक्षा

आज आप के बेटे की मैट्रिक की परीक्षा है—आप ने कभी कल्पना भी न की होगी कि यह महत्वपूर्ण दिन इतना शीघ्र आजायेगा।

जैसे जैसे आप के बेटे की आयु बढ़ती जायेगी, उतना ही आप भी वृद्धावस्था के निकट आते जायेंगे—और शीघ्र ही, एक दिन आप कामकाज से अवकाश ग्रहण कर लेंगे। क्या आप ने अपने उस अवकाश-काल के समय के लिये कुछ भी प्रबंध किया है—जब कि आप की आय एक साथ ही कम हो जायेगी।

बहुत लोगों ने एन्डाउमेंट पॉलिसी द्वारा इसका प्रबंध किया है। यह एक 'निश्चित-काल' की योजना है। उदाहरणतः २५ वर्षीय काल की ५००० रु. की पॉलिसी के लिये, ३० वर्ष की आयु के व्यक्ति को लगभग १५ रु. माहवार प्रीमियम देना पड़ता है।

इस प्रकार से ५५ वर्ष की आयु पर, अवकाश-ग्रहण करने के समय आप को ५००० रु. प्राप्त होंगे—और इन रुपयों से आप अपनी घटती हुई आय का संतुलन कर सकेंगे। 'पॉलिसी-काल' के अन्दर ही बीमा कराये हुए मनुष्य की मृत्यु हो जाने पर, उसी समय, उसके परिवार को बीमा की पूरी रकम दे देनेका यह अतिरिक्त संरक्षण है।

अधिक से अधिक बचाइये—चाहे वह ५ रु. हो या ५० रु. लेकिन एन्डाउमेंट पॉलिसी में ही बचत का रुपया लगाइये। यह पॉलिसी आप की ढलती हुई आयु की संरक्षक है।

लाइफ़ इन्श्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

सेन्ट्रल ऑफ़िस: "जीवन केन्द्र", जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बस, निर्णय हो गया। किले के गुप्तद्वार से हीराजी और उनके दो सौ साथी स्त्रियों, बच्चों और गायों को लेकर थाने की दिशा में चलने लगे और इधर किले के फाटक खोल कर मदनसिंह और उसकी सेना भूखे बाजों की तरह शाही फौज पर टूट पड़ी। पाँच-पाँच बार खिलजियों के पाँव उखड़े। मगर चार सौ भील आखिर पच्चीस हजार की चतुरंगिनी से कब तक लड़ते ? एक-एक करके भील भूमि की गोद में लेटने लगे। मदनसिंह का शरीर भी छलनी हो गया। प्यास के मारे उसके प्राण कंठ में आ रहे थे। मगर उसके हाथ शिथिल नहीं पड़े। यमराज की भाँति वह उस पर्वताकार खिलजी-सेना से जूझता रहा। दोपहर हो गयी; सूर्य बिल्कुल सिर पर आ गया। प्यास के कारण मदनसिंह की जीभ बाहर निकल आयी। आँखों के आगे रह-रह कर अंधेरा छाने लगा। मगर संकल्प ने अपना वज्र हठ नहीं छोड़ा। एक ही गति से अविराम उसके हाथ की तलवार चल रही थी और वह जिधर निकल जाता, उधर भगदड़ मच जाती थी।

इसी समय दूर से एक आवाज मेघ-गर्जन-जैसी हवा को चीरती हुई निकल गयी—"हिम्मत मदन ! मामा की फौज आ गयी। घबरा मत !" बस, मदन को संदेश मिल गया कि, स्त्रियाँ और गायें सुरक्षित पहुँच गयी हैं। उसका सिर चकराने लगा। जीभ और बाहर निकल आयी। वह घोड़ी पर गिर पड़ा। 'लीली' घोड़ी— भानजे को दी हुई मामा की घोड़ी—अपना कर्त्तव्य समझ गयी। घायल मदनसिंह को लेकर वह भागी; मगर बेहोशी में ही मदनसिंह गरजा—"पाँव काट दूँगा री तेरे ! मुझे यहाँ से मत भगा। बस, तू मुझे उतार दे, जहाँ मेरे चाचा ने अपना शरीर छोड़ा था।"

मामा बलदेव आ गये। भीलों ने खिलजियों को मार भगाया। मगर तब तक मदनसिंह स्वर्ग के द्वार तक पहुँच चुका था। सजल आँखों और काँपते हाथों से, मामा ने उसके मुख में पानी उड़ेला। मदनसिंह की बुझती-झपकती आँखें खुलीं—"मामा, गायें सुरक्षित पहुँच गयीं न ?" मामा ने मदनसिंह को छाती से लगा कर एक धाड़ मार ली। पर मामा का ममत्व लेनेवाला मदनसिंह तो मामा से करोड़ों मील दूर किसी अगम देश में पहुँच चुका था !

× × ×

ठाकुर और उनके भतीजे की यह कहानी जोधा के मन-प्राण में पैठ गयी। भीलों का प्राचीन शौर्य और संकल्प उसकी अविकसित भावनाओं के सामने प्रेरणा के मणिदीप बन गये। अतीत के इस वैभव के प्रकाश में भीलवाड़े का वर्तमान दैन्य, उसकी लाचारियाँ, भीलों का दूसरों के दासत्व में जीवन बिता देना, उसे बड़ा अपमान-पूर्ण लगा। उसने फिर से गौपालन शुरू किया। चार-पाँच वर्ष में ही भीलवाड़े के दयनीय भीलों की आत्माएँ जैसे जाग उठीं। घरों में गायें नजर आने लगीं। बैलों के अभाव में बंजर पड़ी धरती फिर जुती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच ?

मैकेनिक : इसमें कोई शक नहीं है कि **हिन्द एम्बेसेडर** की रिमें सुडौल तथा परिपूर्ण हैं।

साइकिल सवार : हाँ भाई देखने में तो ये श्रेष्ठ लगती हैं और ये चमकीली भी तो हैं।

मैकेनिक : जी हाँ—इन्हें सावधानी के साथ क्रोमियम प्लेटेड किया गया है—और याद रखिये इनसे अच्छी रिमें आप को बाजार में कहीं नहीं मिलेंगी।

साइकल सवार : क्या ये इसी तरह हमेशा चमकदार रहेंगी ?

मैकेनिक : बेशक—इनकी क्रोमियम प्लेटिंग बरसात में सुरक्षित रहती है।

साइकिल सवार : तब तो यह **हिन्द एम्बेसेडर** साइकल मेरे ही लिये है।

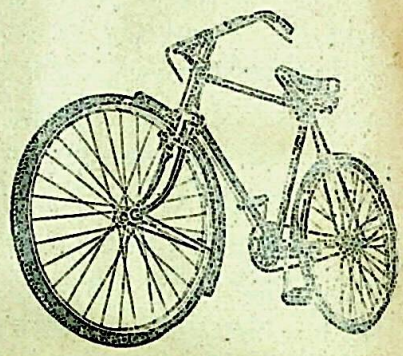

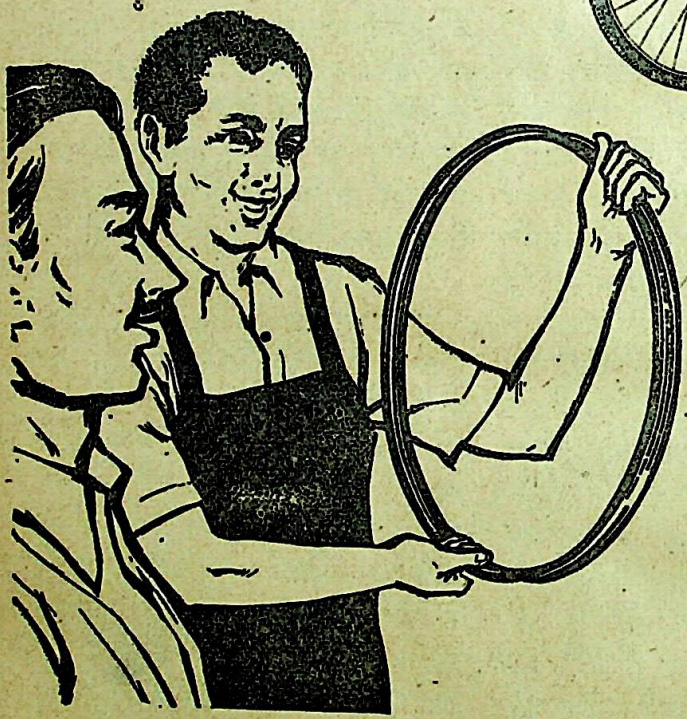

हिन्द एम्बेसेडर

हिन्द साइकिल्स लिमिटेड २५० वर्ली बम्बई १८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर गंगा को भीतर-ही-भीतर एक गहन भय सता रहा था। वह देखती थी कि, जोधा अक्सर रात को जंगल की ओर चुपचाप निकल जाता है। एक रोज उसने चुपचाप उसका पीछा किया। काफी दूर जाने के बाद, जोधा एक नीम के पेड़ के तले रुका और बड़े आदर के स्वर में उसने "काकाजी" "काकाजी" पुकारा। दूसरे ही क्षण एक तेंदुवा झाड़ी में से निकल कर आया और फिर दोनों झाड़ियों में घुसते हुए कहीं निकल गये। भय के मारे वहाँ तक गंगा नहीं जा सकी!

एक दिन जोधा से गंगा ने कहा—"जोधा, तेरे पिताजी तीर्थयात्रा पर जाना चाहते हैं। कुछ दिनों से उनका मन बिल्कुल विरक्त हो गया है। खाता ठीक से नहीं खाते, खेत पर भी मन मार कर ही जाते हैं। मेरा मन बड़ा डर गया है. . . . . मैं भी उनके साथ जाना चाहती हूँ. . अब तू मेरी एक बात मान। तू ब्याह के लिए राजी हो जा। बहू आने के बाद, मैं तेरी तरफ से कुछ निश्चिंत हो जाऊँगी।"

जोधा फटी-फटी आँखों में सजलता लिये अपनी माँ को देखता रह गया— कुछ बोला नहीं। माँ की छाती में मुँह छिपा कर सुबकने लगा—"गिरस्ती और ब्याह में मेरा मन नहीं लगता, माँ। अन्न-वस्त्रहीन खड़ी यह भीलवाड़े की भूमि मुझे अपनी ओर बुला रही है। कब से नग्न खड़ी है यह! मैं भीलवाड़े को फिर से गौओं से भर देना चाहता हूँ—गौधन ही हमारा दुःख काटेगा... मैं अपने को बहुत रोकता हूँ, माँ; मगर तुम्हारा दूध बड़ा हठी है— मेरी प्यारी माँ! मेरे सारे बाँधों को तोड़ देता है. . .।"

गंगा की आँखों में सावन के जैसे बादल उमड़ आये। जोधा को उसने छाती में भींच लिया और यह क्या. . . उसके स्तनों से दूध की धाराएँ बह चलीं। आँचल गीला हो गया। माँ के वक्ष की ऊष्मा ने जोधा के सारे मूक प्राणों को मुखर कर दिया; वह फिर भाव-विह्वल स्वर में बोला—"तुम क्या हो माँ? मेरी समझ में ही नहीं आ रहा है। प्रत्यक्ष में मुझे रोकती हो और अप्रत्यक्ष में तुम्हारा यह चेहरा, इन गहन-गम्भीर आँखों की भाषा में, मुझसे कहता है—'जोधा, जा मेरे प्यारे बेटे! ठाकुर कहे, वही कर. . . . वर्षों से उपेक्षित हुई बैठी गौमाता बलिदान भी माँगे, तो दे; मगर उसे इस भूमि पर फिर से ला. . .।' दिन में, रात में, सोते-जागते, कितनी बार तुम मुझसे यह कहती हो. . . भूल जाता हूँ, तो कितनी बार याद दिलाती हो. . . कैसी माँ हो? जो कराना चाहती हो, उसे मौन की भाषा में कहती हो और जो नहीं कराना चाहती, उसे चिल्ला-चिल्ला कर जताती हो. . . माँ, तुम्हें कोई नहीं समझ सकता. . . मेरी प्यारी माँ!"

तीन रोज की झड़ी लगी थी। मूसलधार पानी बरस रहा था। दोपहर में पानी कुछ थम गया था, तो गायें जंगल में चरने चली गयी थीं। मगर अपराह्न में फिर पानी बरसने लगा था। गायें भागती-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दौड़ती वापस बाड़ों में आ गयीं। पर जोधा नहीं आया। काफी रात हो गयी। बादल गरज रहे थे। आँधियाँ चल रही थीं। अंधेरा ऐसा कि, जैसे रात को काली चादर ओढ़ा दी हो! भय से जीव-जंतु काँप रहे थे!

...चिंतित-आशंकित गंगा को झपकी ही लगी थी कि, सहसा एक चीत्कार के साथ वह घर से बाहर दौड़ पड़ी— "जोधा! जोधा! मेरे लाल!" अमरसिंह ने पत्नी को बाहुओं में थाम लिया; मगर वह नहीं रुकी, भागती गयी। उसके मुँह से आर्त्त पुकार निकल रही थी— "मेरे बेटे, जोधा...।"

अमरसिंह गंगा के पीछे भागा..गाँव-वाले जगे। उठ-उठ कर वे भी भाग चले। किसी ने बत्तियाँ जलायीं...रूपा नाई अपनी मशाल लेकर दौड़ पड़ा।

...और गंगा भागती जा रही थी... अंधड़ को पराजित करती हुई, अंधकार को बिजली की तरह चीरती हुई!

इसी बीच कुछ दूर पर तेंदुवे की हुँकारें सुनायी पड़ीं। सब चौकन्ने हो गये—"ठाकुर बोल रहा है!" सब उधर ही दौड़े... देखा, एक झाड़ी के पास लहूलुहान जोधा पड़ा है... उसके मस्तक और छाती पर कई घाव हैं, जिनसे रक्त बह रहा है और पास ही जोधा की गोरी गाय अधमरी-सी बैठी, उसे चाट रही है। गंगा को देख कर गाय रँभायी—मशाल की रोशनी में देखा गया, एक शेर और शेरनी कुछ दूर पर मरे पड़े हैं!

बात सबकी समझ में आ गयी। जोधा ने शेर और शेरनी के मुख से गाय को छुड़ाया और अपने प्राण दे दिये।

तलावड़ी गाँव में जोधा का स्मारक अभी भी इस शौर्य और त्याग की साक्षी देता हुआ खड़ा है। आज भी दशहरे के सवेरे, गाँव के युवक जाकर जोधा की इस समाधि पर दूध चढ़ाते हैं...और भीलवाड़े की बहनें आज भी अपने भाई को गर्व से 'जोधा भाई' कहती हैं। नयी बहू जब पाँव लगती है, तो आज भी भील-बुढ़िया के मुख से यह आशीर्वाद निकल पड़ता है— "ठाकुर तुझे गंगा माँ बनाये और जोधा-जैसे बेटे दे!"

★

वीर नारी

भाभी देवर नींद बस, बोलीजै न उताल;
चवतां घावां चूंकसी जै सुणसी त्रांबाल।

—पति रणक्षेत्र में शत्रुओं को हरा कर और घावों से लहूलुहान होकर घर पर चला आया है। वह निद्रा के वशीभूत है। शत्रुओं ने फिर अपना दल बटोर कर आक्रमण किया है। ऐसी परिस्थिति देख कर पत्नी अपनी जेठानी से कहती है—"हे भाभी, तेरा देवर नींद में सो रहा है; जोर से न बोलो। यदि तुम जोर से बोलोगी और वह जाग उठेगा, तो चूते हुए घावों से ही नगारों की ध्वनि सुन कर वह चौंक कर उठ खड़ा होगा।" —चारणोक्ति

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

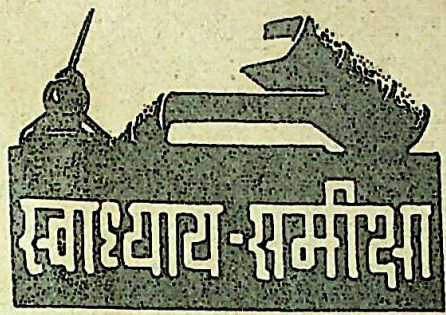

मेम्वायर्स आव रामकृष्ण– (अंग्रेजी) लेखक : स्वामी अभेदानंदजी; प्रकाशक : रामकृष्ण वेदांत-मठ, कलकत्ता; मूल्य : १२ रुपये।

रामकृष्ण परमहंस के संस्मरण किसी भी साहित्य-समाज के अनमोल रत्न हैं–जीवन-तत्त्व की सनातन मान्यताओं को प्रकाश में लानेवाले ये तिमिर-दीप मनुष्य की जीवन-यात्रा को कितने समृद्ध रूपों में अर्थमयी बना देते हैं, यह एक सर्वमान्य स्वीकृति है। फिर परमहंसदेव तो अभी निकट अतीत की ही विभूति थे। शरीर उनका पंचतत्त्व में लीन हो गया है; किंतु उनके प्रकाश की किरणें अभी भी सर्वत्र देखी जा सकती हैं। संस्मरण-लेखकों ने इन्हीं किरणों को शब्दों के माध्यम से कागज पर उतारा है। कई लोगों ने इस प्रकार के प्रयत्न किये हैं– एक-से-एक प्रयत्न प्रशंसनीय; किंतु स्वामी अभेदानंदजी-द्वारा लिखित संस्मरणों की उपयोगिता दोहरी है। प्रथम तो यों कि, स्वामीजी स्वयं उस वातावरण की देन हैं, जिसके निर्माता-विधाता परमहंसदेव थे; दूसरे, स्वामीजी ने ये संस्मरण अंग्रेजी भाषा में लिखे हैं और इस रूप में लिखे हैं कि, परमहंस रामकृष्ण का सारा जीवन-दर्शन सहज-सरल भाव से पाश्चात्य मुमुक्षुओं को हृदयंगम हो सके।

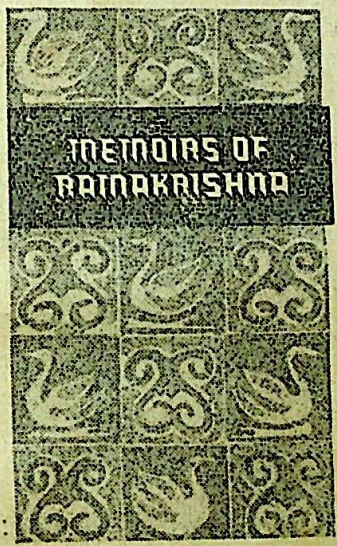

सरल भाषा के साथ अभिव्यक्ति भी काफी सीधी और अकृत्रिम है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, लेखक ने रामकृष्णदेव की सभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार की अनुभूतियाँ इसमें माला के पुष्पों की भाँति गूँथ ली हैं। पुस्तक पठनीय है– संग्रहणीय है!

उत्तरप्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास– प्रस्तुत ग्रंथ के नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि, इसका वर्ण्य विषय केवल उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास अथवा प्रसार है; पर दर-असल इसमें समाविष्ट विषय का क्षेत्र कहीं व्यापक है। बुद्ध ने बुद्धत्व-प्राप्ति के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार का कार्यक्षेत्र मुख्यतः पूर्वी उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बिहार को बनाया था; इसलिए जहाँ कहीं भी बौद्ध धर्म के विकास की बात आती है, उत्तर-प्रदेश स्वयमेव सामने आ जाता है। उत्तर-प्रदेश से बौद्ध धर्म के इस घनिष्ठ सम्बंध को प्रकाश में लाने के लिए ही इस ग्रंथ की रचना की गयी है; पर विद्वान् लेखकों ने इसके प्रणयन में संकुचित दृष्टिकोण न अपना कर अपनी उदारता का परिचय दिया है। इस ग्रंथ में बौद्ध धर्म के जन्म से पूर्व की धार्मिक एवं सामाजिक अवस्था का आधिकारिक वर्णन, गौतम बुद्ध का संक्षिप्त जीवन-चरित, उनका धर्म-दर्शन, भिक्षुओं की साधना-पद्धति और उनका विहार-जीवन, तत्कालीन नरेशों और जनता से बुद्ध के सम्बंध, बौद्ध मूर्तिकला और वास्तुकला का स्वरूप, चीनी परिव्राजकों-द्वारा वर्णित बौद्ध धर्म की तत्कालीन अवस्था, जातकों की कथाएँ, आदि कई विषयों का इस तरह समावेश किया गया है कि, मात्र इस एक ग्रंथ को ही पढ़ कर पाठक बौद्ध धर्म के सम्बंध में जानने-योग्य लगभग सभी महत्वपूर्ण बातें जान सकता है! इस प्रकार यह ग्रंथ बड़ा ही मूल्यवान बन गया है!

उत्तरप्रदेश-सरकार की हिन्दी-परामर्श-समिति की ग्रंथमाला के छठे पुष्प के रूप में प्रकाशित इस ग्रंथ के विद्वान् लेखक-द्वय हैं, डा० नलिनाक्षदत्त और श्री कृष्णदत्त वाजपेयी। प्रायः साढ़े तीन सौ पृष्ठों के इस सजिल्द ग्रंथ की कीमत है, छः रुपये और इसे प्रकाशन-ब्यूरो, उत्तरप्रदेश-सरकार, लखनऊ से प्राप्त किया जा सकता है। छपाई-सफाई सुंदर है।

✶

मास का पठनीय साहित्य

सभा-शास्त्र—ले० न० वि० गाडगिल; प्रकाशक : आत्माराम ऐंड संस, दिल्ली; मूल्य : छः रुपये।

आजाद की कहानी : आजाद की जबानी—संग्रहकर्ता : अब्दुल रजाक मलीहाबादी; प्रकाशक : हाली पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; मूल्य : ६ रुपये।

वाणी (कविता-संग्रह)—रचयिता : सुमित्रानंदन पंत; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; मूल्य : चार रुपये।

✶

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्र तारिकाओं की तरह

आप भी क्यों न ख़ूबसूरत बनें ?

श्यामा जैसी फ़िल्मी सुंदरियों का सुहाना रंग रूप देख कर कितनी ही बार आप को आश्चर्य हुआ होगा। लेकिन आप भी बड़ी आसानी से अपनी जिल्द में स्वास्थ्य और सौंदर्य की वैसी ही चमक पैदा कर सकती हैं। सुनिये श्यामा क्या कहती हैं: "लक्स टॉयलेट साबुन आप की जिल्द को एक नई चमक देता है और है भी कितना शुद्ध और नर्म-असर।"

आप आज ही से अपना रोज का सौंदर्य-सिंगार इसी सुगन्धित सफ़ेद साबुन से आरम्भ कीजिये और फिर देखिये दिन भर कैसी नवीनता का अनुभव होता है। यही कारण है कि सभी फ़िल्मी सुंदरियाँ अपने सौंदर्य की रक्षा के लिये लक्स को पसंद करती हैं। आप भी इसे अपना चहेता साबुन बना सकती हैं।

शुद्ध और सफ़ेद

लक्स टॉयलेट साबुन

श्यामा
दोस्ती फ़िल्म्स के
चित्र चन्दन की
रूपवंती तारिका

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

LTS. 562-50-HI
Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त संसार में सुपरिचित

लिचेन्सा—गर्म देशों में होनेवाले समस्त प्रकार के चर्मरोगों के लिए निर्दोष तथा आरामप्रद मलहम है। लिचेन्सा खाज़, खुजली, एकज़ीमा, दाद, चकता, फोड़ा तथा जलन और घाव आदि को शीघ्र आराम करता है। बवासीर की विश्व-विख्यात औषधि 'हडेन्सा' के प्रस्तुतकारक ही लिचेन्सा के भी निर्माता हैं।

जर्मनी में प्रस्तुत

सर्वत्र सुलभ

DCZ-2HIN

इकोनामिक डुप्लीकेटर

११) रु. तथा उच्चतर मूल्यों में

* स्टेन्सिल पेपरके बिना
* बिना अतिरिक्त खर्च के
* बिना किसी खास तरह की कलम या कागज के
* बिना छापने की स्याही के

एक बारके संचालन में ही एक या अधिक रंगों की सैकड़ों प्रतियां सुलभ हो जाती हैं।

सोल डिस्ट्रीब्युटर्स

सेलारका ब्रदर्स

जी पी. ओ. बाक्स नं. २६२ ए. बम्बई १

सुलेखा पेन

REGD.

संतोष जनक कार्य के लिए

हर जगह मिलती है

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :

पेन मेन्स इण्डस्ट्रियल सर्विसेज़

कांदीवली, बम्बई (एस० डी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथ्यों पर प्रकाश

- मूल्य में एम्बेसेडर छोटी कारों की बराबरी कर सकती है जबकि अन्य सब प्रकारों से बड़ी कार है।
- इसमें छः वयस्कों के बैठने की आरामदेह व्यवस्था है। बैठकें स्प्रींगदार और लेटेक्स फोम की गद्दियों से सुसज्जित हैं।
- इसकी बनावट शानदार है और प्रत्येक कोण से आंखों को मोहक है।
- पावर-युनिट की बनावट किफायत और क्षमता का सुन्दर मिश्रण सम्भव बनाती है।
- यह विश्वसनीय ब्रेकों से सुसज्जित है और शीघ्र ही गति पकड़ती है तथा जमकर चलती है।
- एम्बेसेडर अधिक सुरक्षित मोटर यात्रा प्रदान करती है क्योंकि यह गहरे-धंसे सेन्टर स्टीयरींग व्हील, सेफ्टी-लाक दरवाजे, चारों तरफ सेफ्टी ग्लास, गद्देदार रेल्स और पेनोरमिक व्यू विन्डशील्ड से सुसज्जित है।

एम्बेसेडर — अपने प्रकार की एकमात्र कार है।

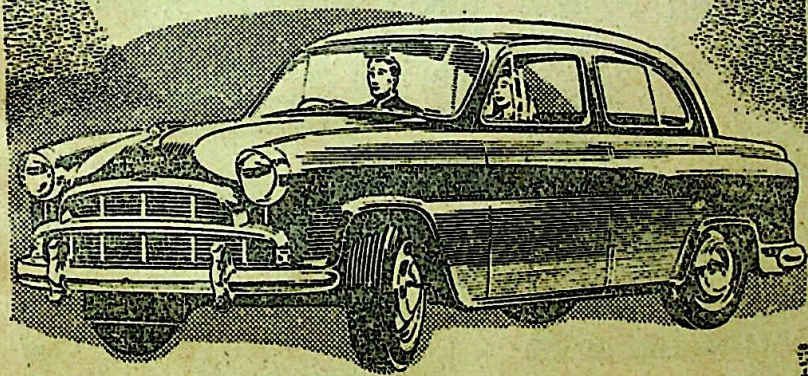

हिन्दुस्तान मोटर्स लि० कलकत्ता

विक्रेतागणः—आगरा, अम्बाला, अजमेर, अहमदाबाद, इलाहाबाद, बड़ौदा, बंगलौर, बम्बई, बरेली, बनारस, कलकत्ता, कटक, कोयम्बटोर, इंदौर, जयपुर, जोधपुर, जलगाँव, जोरहाट, जमशेदपुर, जालंधर सिटी, जम्मू, कानपुर, कोल्हापुर, लखनऊ, मद्रास, मदुरा, मंगलोर, मानभूम, नागपूर, नई दिल्ली, नेपाल, पटना, पूना, राजकोट, रांची, सम्बलपुर, सिकन्दराबाद, विजयवाडा, श्रीनगर, वेझपूर, त्रिचुरापल्ली, विजयानगरम्, दीब्रुगढ़, गोहाटी, पलयमकोटाइ, पान्डिचेरी, शिलोंग, शोलापुर, त्रिवेन्द्रम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

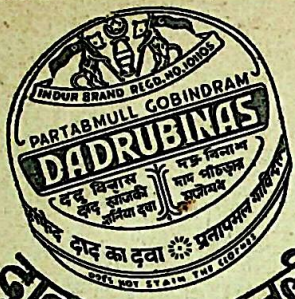

दद्रु विनाश

दाद, खाज, खुजली एवं इक्जीमा की

शर्तिया दवा

तीन दिन में फायदा

प्रताबमल गोबिन्दराम

पो॰ बक्स नं॰ २४६० कलकत्ता-१

स्त्रियों के लिये पुरानी और प्रसिध्ध औषधि.

"रजीस्टर्ड"

जीमेस्त्री

शक्ति, स्फूर्ति एवं चैतन्य के लिये उपयोगी.

निर्माता :-

जसमाईन एजन्सी

नडीआद. (गुजरात)

एजन्ट : कंचनलाल वाडीलाल एन्ड कं. प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई-१

" कान्तिलाल आर. परीख, चांदनी चौक, देहली

" कान्तिलाल आर. परीख, २७/८२, बीरहाना रोड, कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने कर्तव्य निभाया

मैं ग्रामीय अस्पताल में एक डाक्टर हूं। वह दिन मैं कभी न भूल सकूंगा जब कि गोपाल का इकलौता बेटा बीमार पड़ गया था—रोग भयंकर था और मेरे पास पूरा साज-सामान भी न था। पर भगवान की कृपा से उसका लड़का अच्छा हो गया। उस दिन उसे महसूस हुआ कि आसपास में डाक्टर का होना कितना जरूरी है। जब मैंने उसे बताया कि अब भी ऐसे अनेकों भाई हैं जिन्हें अस्पताल की सुविधा नहीं मिल पाती तो वह काफी प्रभावित हुआ। मैंने उसे बताया कि किस प्रकार उसकी बचतें अधिकाधिक लोगों का जीवन बचा सकती हैं। मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही जब कि मैंने देखा वह रुपये पैसों से भरी घड़िया मेरे पास लाया और कहा कि मैं उनसे उसके लिए राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेट खरीद दूं। उस दिन मैंने महसूस किया कि मैंने राष्ट्र के प्रति एक कर्तव्य निभाया है।

राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेटों और भारत सरकार द्वारा प्रमाणित अल्प बचत योजना की मदों में लगाया हुआ धन आपको कर-मुक्त ब्याज सहित वापस मिल जाता है। इसमें केवल आपका ही नहीं वरन् देश का भी लाभ है क्योंकि इससे अधिक अस्पताल, स्कूल, सड़कें, नहरें और बिजली बनाने के लिए धन इकट्ठा होता है।

१२-वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेट

- ★ प्रतिवर्ष ५.४१ प्रतिशत कर-मुक्त ब्याज।
- ★ ५ रुपये से लेकर ५,००० रुपये तक सभी डाकखानों में आसानी से मिल सकते हैं।
- ★ भारत सरकार द्वारा प्रमाणित।

अल्प-बचत-योजना के अंतर्गत अन्य सरकारी मद:

१०-वर्षीय ट्रेजरी सेविंग डिपॉजिट सर्टिफिकेट, पोस्ट आफिस सेविंग बैंक डिपॉजिट

राष्ट्रीय बचत संगठन

अधिक जानकारी और नियम आदि नेशनल सेविंग कमिश्नर, नागपुर से या अपने राज्य के रीजनल नेशनल सेविंग आफिसर से प्राप्त किये जा सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिभा

सौंदर्य के लिये

रेमी स्नो

* त्वचा सुकोमल रखता है

ए.व्ही.आर.ए.अँण्ड कं. बम्बई नं.२

पुस्तक बिल्कुल मुफ़्त

किसी भी कारण से किसी भी आयु में खोए हुए।

को फिर से प्राप्त करने के लिये

शक्ति और यौवन

"शक्ति बिना औषध"

मुफ़्त मंगावें

डी० ए० बी० लेबोरेट्रीज़

पोस्ट बक्स १३७२ दिल्ली-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रा के शिष्टाचार

★ सफाई की गणना देवत्व के बाद की जाती है। सफाई की आदत डालिये। खाद्य पदार्थों के कचरे, फलों के छिलके तथा पानी आदि प्लैटफार्म पर या डिब्बे में न फेंकें। प्लैटफार्म पर तथा डिब्बों में रखे कूड़े के बरतन को प्रयोग में लायें।

★ प्लैटफार्म पर इधर-उधर थूकना अस्वास्थ्यकर है। यह बुरी आदत है। कृपया थूकदान का प्रयोग कीजिये।

★ रेलवे-स्टेशनों पर ठंडा तथा साफ किया पानी पीने के लिए मिलता है। किसी अन्य काम के लिए उसका उपयोग न करें।

★ सीट पर पैर रख कर बैठने से दूसरे यात्री बुरा मानेंगे। कृपा करके डिब्बे में ठीक से बैठें।

★ अपने भारी सामान को 'ब्रेक-वान' में 'बुक' करा दें तथा अपने साथ के यात्रियों और स्वयं अपने लिए डिब्बे में अधिक स्थान की गुंजायश करें।

★ यदि साथ के यात्री सिगरेट पीने के लिए मना करें तो ट्रेन में सिगरेट पीना जर्म है। जब साथ के यात्री मना करें, या बहुत भीड़ हो, या दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द हो, तो सिगारेट न पियें।

★ रेलवे राष्ट्र की सम्पत्ति है। रेलवे की सम्पत्ति को क्षति पहुँचाने वाले या चोरी करने वाले व्यक्ति को पहचान लेकर उसकी सुरक्षा करने में आप हमारी सहायता कर सकते हैं। यूनीफार्म-धारी रेलवे कर्मचारी को—जो ड्यूटी पर हों—उनकी सूचना देनी चाहिए। गैर कानूनी रुप में खतरे का जंजीर खींचने वाले के साथ भी इसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए।

मध्यम तथा पश्चिमी रेलवे द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय की पाबन्दी

. . . नियमितता का गुण जीवन पर्यन्त लाभ देता है। समझदार माता-पिता और अध्यापक बच्चों को हमेशा समय का पावन्द होने की शिक्षा देते हैं।

बढ़ते हुए बच्चों की एक और अच्छी आदत है जे. बी. मंघाराम के एनर्जी फूड बिस्कुटों को खाने की; जो स्वास्थ्य-प्रद ढंग से धूप में पके हुए गेहूँ, माल्ट, ग्लूकोज़, दूध आदि से तैयार किये जाते हैं।

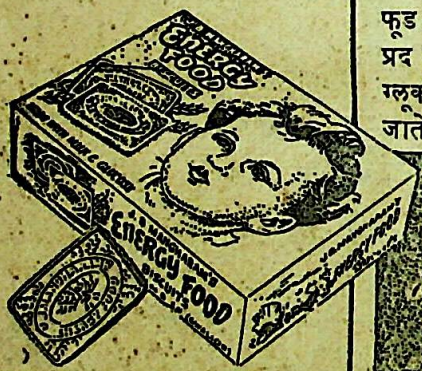

जे. बी. मंघाराम के
एनर्जी फूड
बिस्कुट

जे. बी. मंघाराम एण्ड कं.

ग्वालियर, भारत

एजन्ट्स: नेशनल फूड एजेन्सीज ३१५ न्यू चर्नी रोड—बम्बई—४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निराशा किस लिए ?

यह स्वभाविक है कि सफेद बाल चहेरे की सुंदरता में बाधक हैं, लेकिन इससे निराश होने की ज़रूरत नहीं। लाखों लोगों की तरह आप भी लोमा का व्यवहार करके चहेरे की शोभा को अक्षुण बनायें।

लोमा

बालों को स्वभाविक श्याम बनाने के लिए

विश्व भर में मान्यता प्राप्त

सोल एजेन्ट : एम. एग. खंभातवाला, अहमदाबाद १.

एजेन्ट : सी. नरोतम एण्ड कं. बम्बई २ टे. ०५७५

MPS– HIN.

निर्यात संबंधी जानकारी के लिये लिखिये मेसर्स एम. ए. खंभातवाला अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 6248

केवल पियर्स ही एक ऐसा साबुन है, जिस की शुद्धता आप अपनी आंखों से देख सकते हैं !

सुगंधित पियर्स टॅल्कम पाउडर चेहरे पर या नहाने के बाद शरीर पर लगाने के लिये आदर्श है।

पियर्स साबुन बहुत ही मुलायम और नर्म-असर है। "पियर्स" के अपने अनोखे तरीक़े से यह साबुन कई महीनों में बन कर तैयार होता है। इस ग्लिसरीन मिले पारदर्शक साबुन को इस्तेमाल कर के देखिये — यह आनंदमय है और जिल्द को साफ़ रखता है — इस की भीनी खुशबू एक निराली नवीनता प्रदान करती है। पियर्स को अपना सौंदर्य-साबुन बनाइये।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, ए. ऍन्ड ऐफ़.
पियर्स लि., लन्डन, के लिये भारत में बनाया

PSP. 6-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन पुस्तकालय,
के. ४०/६, भैरवनाथ,
वाराणसी-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri